ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक १ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, ८ जनवरी, से १४ जनवरी, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में

२३, २४, २५ एवं २६ मार्च २००१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन २३ २४ २५ तथा २६ मार्च २००१ (शुक्रवार शनिवार रविवार एव सोमवार) की तिथियो मे मुम्बई शहर मे आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मलन मे अमरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुखदेव चन्द्र सानी स्वागताध्यक्ष होग। मॉरीशस तथा दक्षिण अफ्रीका से भी सकडो की सख्या मे आर्यजनो के भाग लेन की उम्मीद है।

सार्वदशिक आर्य पतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शमा न विगत ६ दिसम्बर को इस महासम्मलन की तेयारियो का बेगुल बजाते हुए समस्त प्रान्तीय सभाओ के प्रधान/मन्त्रियो की एक आवश्यक बेठक देल्ली मे बुलाई जिसकी अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी ने की। मुम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य श्री ओकार नाथ आर्य, श्रीमती शिवराजवती, श्री अरुण अब्रोल आदि विश्व-विख्यात सन्यासी डॉ० स्वामी सत्यम के नेतृत्व मे भाग लेने पहुचे।

इस बैठक मे पजाब, हिमाचल प्रदेश हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राजस्थान, बिहार, मध्य-विदर्भ, महाराष्ट्र तथा गुजरात आदि प्रान्तो से सभा के अधिकारियो ने भाग लिया। दिल्ली से भी बहुत से गणमान्य आर्यनेताओं ने इस बैठक में उत्साह पूर्वक अपनी योजनाए प्रस्तुत की।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान होने के नाते यह घोषणा की कि, दिल्ली से एक विशेष रेलगाडी इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए चलाई जाएगी। इसी प्रकार हरियाणा सभा की ओर से भी प्रो० शेरसिह जी ने एक विशेष रेलगाडी ले जाने की घोषणा की।

डॉ० स्वामी सत्यम जी अमेरिका से विशेष रूप से इस सम्मेलन मे सहयोग करने तथा इसे सफल बनाने के लिए पधारे हैं। स्वामी जी ने इस बैठक मे अपने विचार रखते हुए कहा कि मुम्बई मे एक ऐसे समय मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो रहा है जो दो शताब्दियो की सन्धि वेला है। ऐसे महान् अवसर पर आर्यसमाज के अतीत का स्वर्णिम इतिहास भविष्य के अदभुत स्वप्न से मिलता दीख रहा है। महर्षि के अद्वितीय सदेश की ज्योति से जगमगाता हुआ आर्यसमाज का पिछला युग जो अनेकानेक महान् आत्माओ के बलिदानो की गाथाओ से भरा पडा है, विदाई ले रहा है और नई क्रान्ति नई चेतना, नए स्वप्न और परिवर्तनो के साथ कार्यभार सम्भालने के लिए नए युग को आह्वान दे रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि पिछली शताब्दी मे कई महान् आत्माओ ने अपनी सुविधाओ खुशियो परिवारो बच्चो और सम्बन्धियो का बलिदान देकर इस महान् सस्था को सम्पूर्ण शक्ति महर्षि के चरणो मे अटूट विश्वास और श्रद्धा तथा नि स्वार्थ त्याग भावना से इस उच्च स्थिति तक पहुचाया है। आज भी जब उनके बच्चे व सम्बन्धी उनके बलिदानो की कहानिया सुनाते हैं तो गर्व व प्रीति से उनकी आखे भर आती हैं। वे चाहते हैं कि कोई उनके माता-पिता, दादा-दादी नाना-नानी तथा अन्य ऐसे बलिदानी सम्बन्धियो के चित्र देकर और उनकी कहानी किसी महान् ग्रन्थ मे छापकर उन आत्माओ को अमर कर दे ताकि भविष्य मे भी उनके बच्चो और अन्य आर्य भाई-बहनो को उनके अदभुत जीवन से प्रेरणा मिलती रहे। इससे उनको अत्यन्त सुख मिलेगा और तृप्ति होगी कि उन्होने उन स्वर्गीय आत्माओ के लिए जिन्हे वे सम्मान व प्रीति से देखते हैं कुछ अमूल्य भेट प्रदान की है। उन आत्माओ के लिए श्रद्धाजलि अर्पित करने का यह सर्वोत्तम उपाय है।

कैप्टन देवरत्न ने बताया कि ऐसे बलिदानी महान आत्माओ के विवरण एकत्र करके एक महान ग्रन्थ तैयार करके इसी आर्य महासम्मेलन मे उसका विमोचन कराया जाएगा। ऐसे सभी व्यक्ति जो अपने बलिदानी पूर्वजो की गाथा देना चाहते है अपने ऐसे सम्बन्धियो (स्वर्गीय अथवा जीवित) का चित्र व जीवन की कहानी सक्षेप मे भेजने की कृपा करे और साथ मे आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के नाम से २५००/– रुपये (१०० अमेरिकन डॉलर/७० ब्रिटिश पौंड, अमेरिका तथा इग्लैड वासियो के लिए) ड्राफ्ट द्वारा **"आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) लिकिंग रोड मुम्बई - ४०००५४"** के पते पर भेज दे जो हमे दिनाक ३१ जनवरी २००१ से पहले मिल जाए। जिस क्रम से उक्त सामग्री हमें मिलती जाएगी उसी क्रम से जीवनिया उस महान् ग्रन्थ में प्रकाशित होगी।

उन्होने कहा कि हर परिवार को दो पृष्ठ दिए जाएंगे। बाए पृष्ठ पर सम्बन्धित महान व्यक्ति का चित्र होगा जिसके सामने दाये पृष्ठ पर उनकी जीवन गाथा सक्षेप मे दी जाएगी। चित्र के नीचे इस गाथा को देनवाले सम्बन्धित पुत्रों व पुत्रियो के नाम दिए जाएग।

बैठक मे सभा के उप प्रधान प्रो० शेरसिह ने कहा कि इस अवसर पर एक विशाल रथ का निर्माण करके दिल्ली से मुम्बई तक प्रचार यात्रा की जानी चाहिए। स्वामी सुमेधानन्द कार्यकर्त्ता प्रधान ने कहा कि यदि ऐसा कोई कार्यक्रम बनता है तो वे सेकडो वाहनो का प्रबन्ध करने मे सक्षम हे जिनका व्यय भी सभा पर नही पडेगा।

इस बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने उपस्थित महानुभावो का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि यदि आर्यसमाजी बन्धु कितने बडे से बडे काम प्रारम्भ कर दे तो भी उन्हे धन की कमी कदापि नहीं रह सकती।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई की सफलता तथा इस सम्बन्ध मे की गई तैयारियो के अवलोकन के लिए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट १४-१५ जनवरी को मुम्बई पहुच रहे हैं। ❑

श्री जगदीश आर्य तथा श्री सत्यवीर शास्त्री सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री नियुक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनाक ६ दिसम्बर २००० मे **श्री जगदीश आर्य** तथा **श्री सत्यवीर शास्त्री** को **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** का **उपमन्त्री** नियुक्त किया गया है।

श्री सत्यवीर शास्त्री मध्यविदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हे तथा श्री जगदीश आर्य दिल्ली के प्रमुख आर्यनेता तथा आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली के प्रधान है। श्री जगदीश आर्य स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के दामाद भी हैं।

खेद व्यक्त

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के दिवगत महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी के निधन के बाद कुछ अपरिहार्य प्रशासनिक अव्यवस्थाओ के कारण विगत् लगभग दो माह से साप्ताहिक आर्य सन्देश का प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाया। इसके लिए सम्पादक मण्डल अपने सम्माननीय पाठको से खेद व्यक्त करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में इस लोकप्रिय साप्ताहिक का प्रकाशन निर्विघ्न चलता रहे।

— सम्पादक

स्वामी श्रद्धानन्द जी नया जन्म लेकर अधूरे कार्य पूर्ण करने के इच्छुक थे

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली लौटे और डॉ० सुखदेव जी ने परीक्षा की तो मालूम हुआ – ब्राको निमोनिया था, डॉ० सुखदेव जी और डॉ० असारी के नुस्खो से उनका बुखार उतर गया। भयकर अवस्था टल जाने से स्वामीजी के नीरोग होने की घोषणा कर दी गई। चिन्तित जनता को समाचार से शान्ति मिली, परन्तु स्वामीजी ने कार्यकर्त्ताओ को बुलाया, उन्हे कहा – " अन्दर से यह आवाज नही उठती मै उठ खडा होऊगा।' दोपहर को उन्होने अपने सुपुत्र इन्द्र जी को निर्देश दिया – "इस शरीर का ठिकाना नहीं, तुम मेरे कमरे मे रखी सामग्री सम्भाल कर आर्यसमाज का इतिहास जरूर लिख डालना" कहते-कहते स्वामी जी का दिल भर आया और उन्होने आखे बन्द कर लीं।

पारिवारिक चिकित्सक डॉ० सुखदेव जी ने सहज भाव से हसते हुए कहा – "स्वामीजी, अब आप अच्छे हो रहे हैं बस, दो दिन मे आपको रोटी दे दूगा।" स्वामीजी ने कहा – **"आप लोग तो ऐसे ही कहते हैं, पर मैं अनुभव कर रहा हू मेरा यह शरीर सेवा के योग्य नहीं रहा। अब एक ही इच्छा है दूसरे जन्म में नए देह से इस जीवन का काम पूरा करूं।"** २२ दिसम्बर को व्याख्यान वाचस्पति दीनदयाल जी आए। उन्होने कहा –**"स्वामीजी मालवीय जी मुझसे एक वर्ष बडे हैं, आप उनसे एक वर्ष बडे हैं। आप इतनी जल्दी क्यो मोक्ष की तैयारी करने लगे, अभी हम लोगों की बहुत काम करना है।"** स्वामीजी ने – कहा – **"इस कलियुग मे मोक्ष की इच्छा नहीं, मै तो चोला बदलकर मातृभूमि भारत की सेवा करना चाहता हूं।"**

२३ दिसम्बर को देहावसान से कुछ समय पहले शुद्धि सभा के मन्त्री स्वामी चिदानन्द और सभा के प्रधान राजा रामपाल सिह को स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे जानकारी मालूम करने के लिए तारो के उत्तर मे लिखवाया – **"अब तो यही इच्छा है, दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि का अधूरा कार्य पूरा करूं।"**

२३ दिसम्बर, १६२६ को प० इन्द्रजी प्रतिदिन की भाति स्वामी जी के दर्शनो के लिए आए। फिर कई सज्जन दर्शनो के लिए आए, चार बजे सबको विदा कर दिया। स्वामीजी नित्य कर्मों से निवृत्त होकर, ऐसे बैठ गए मानो अमृत पीने के लिए बैठे हो। कमोड उठा कर बाहर ही रखा था कि सीढियो से एक युवक चढता दिखाई दिया, सेवक के रोकने पर भी उसने दर्शन का आग्रह किया। स्वामीजी ने आवाज सुनी। बोले – **"कौन है ? अन्दर आने दो।"** जैसे अन्तिम दिन का आदेश लेकर जिसके आने की इतने दिनो से प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्दर आकर वह बोला – **"स्वामीजी, मैं आपसे इस्लाम के बारे में कुछ बातचीत करना चाहता हूं।"** स्वामी जी बोले – **'भाई मैं बीमार हूं, तुम्हारी दुआ से ठीक हो जाऊगा तो बातचीत करूगा।"**

पानी मागने पर स्वामीजी के आदेश से सेवक ने उसे पानी पिला दिया। पानी पीकर हत्यारे ने भसनद के सहारे बैठे स्वामीजी पर पिस्तौल दाग दी। दो फायर किए, तीसरा फायर सेवक धर्मसिह ने झेला, वह जमीन पर लेट गया। हत्यारा भागने की कोशिश मे था धर्मपाल विद्यालकार उसे आधे घण्टे तक दबाए रखा।

२३ दिसम्बर, १६२६ (पौष ८ सवत् १६८३, गुरुवार) के दिन भारतीय आर्य सस्कृति एव जनता के हृदय सम्राट स्वामी श्रद्धानन्द ने छाती पर गोली खाकर अपने प्राणो का विसर्जन किया था।

२३ दिसम्बर के दिन उनके बलिदान को ७४ वर्ष हो गए है। उनके बलिदान की घडी आर्यसमाज और आर्यजनता का आहान कर रही है कि वे हुतात्मा के बलिदान से उचित प्रेरणा ग्रहण करे।

बोध कथा

चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न हो, सत्य ही कहूंगा

एक बार स्वामी दयानन्द जी बदायू पधारे। बेगम उद्यान मे लाला लक्ष्मीनारायण के यहा स्वामीजी के प्रभावजनक व्याख्यान हुए। उसमे पादरी और ऊचे राजकर्मचारी सम्मिलित हुए। एक दिन महाराज पुराणो की कथाओ की आलोचना करने लगे तब पादरी महाशय कलक्टर, कमिश्नर एव दूसरे यूरोपीय सज्जन जी खोल कर हसते रहे। थोडी देर बाद स्वामी जी ने कहा– **"यह तो थी पौराणिकों की लीला, अब किरानियों की सुनिए।"** इस पर अगले दिन कमिश्नर ने लाला लक्ष्मीनारायण को बुलाकर कहा – **" आप पण्डित महाशय से कह दीजिए कि अधिक कठोर खण्डन न किया करें, हम ईसाई लोग तो सभ्य और सुशिक्षित हैं, परन्तु यदि हिन्दु-मुसलमान उत्तेजित हो गए तो उनके व्याख्यान बन्द हो जाएगे।"**

लाल महाशय बहुत घबराए, अन्त मे खासते-खखारते रुक-रुककर स्वामीजी से बोले – **"महाशय, यदि नर्मी से काम लें तो अच्छा रहेगा, अंग्रेज भी प्रसन्न रहेंगे।"**

यह सुनते ही स्वामी जी हस पडे, बोले – **'इतनी-सी बात पर आप गिडगिडा रहे हैं। कमिश्नर महाशय ने यही कहा है कि आपका पण्डित बडा खण्डन करता है।'** अगले दिन नागरिकभवन श्रोताओ से खचाखच भरा था। बहुत से यूरोपीय भी उपस्थित थे। स्वामी जी ने गम्भीर गर्जना से कहा – **" लोग कहते हैं कि सत्य का प्रकाश न कीजिए, कलक्टर क्रुद्ध हो जाएगा, कमिश्नर खुश न रहेगा, गवर्नर पीडा पहुंचाएगा। अजी, चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए, हम तो सत्य ही कहेगे। यह आत्मा सत्य है, अमर है, शरीर जल सकता है, परन्तु इस देह की रक्षा के लिए सनातन धर्म-सत्य नहीं छोडेंगे।"**

सारी सभा मे सन्नाटा छा गया।

– नरेन्द

आपका कालम

माननीय पाठको को हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि उपरोक्त शीर्षक से एक नियमित स्तम्भ प्रारम्भ करने की योजना है जिसमे आर्यसमाज के कर्मठ त्यागी तपस्वी एव आधारभूत कार्यकर्ताओ, नेताओ आदि से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद जीवन झाकिया, महत्त्वपूर्ण घटनाए, चिन्तन शैली तथा अन्य विशिष्ट कार्यों को सचित्र प्रकाशित किया जाएगा। यह कार्य आप सबके सहयोग के बिना असम्भव है। आपके शरीर के माध्यम से जब कभी भी कोई श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हो अथवा पूर्वकाल में हुआ हो जिससे आपका उत्साहवर्धन हुआ हो और जिसकी आप अन्य आर्य महानुभावों से भी अपेक्षा करते हो ऐसी प्रेरणादायक गतिविधियो को नि सकोच अपने चित्र सहित **सार्वदेशिक प्रकाशन, १४८८, पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज नई दिल्ली-२ के पते पर भिजवा दें अथवा मुझे दूरभाष (निवास ७२२४०६०, प्रैस ३२७४२१६, ३२७०५०७) पर लिखवा दें।** **– विमल वधावन**

एक व्यक्ति ही मन्दिर है

दिल्ली की आर्य जनता मे श्री राजसिह भल्ला का नाम एक सुपरिचित नाम है। श्री राजसिह भल्ला पुरानी पीढी के आर्यसमाजी हैं और इस समय नौवे दशक मे चल रहे हैं। इनका परिवार भौतिक ससाधनो की दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न है। श्री राजसिह भल्ला इस आयु मे भी दोपहिया स्कूटर स्वय चलाकर दिल्ली की समस्त गतिविधियो मे अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

यह प्रतीक है उनके स्वास्थ्य का। इस स्वास्थ्य का रहस्य बडी सरलता के साथ वे गर्व से अपने आपको सच्चा आर्यसमाजी होना बताते हैं। चाय का बिल्कुल सेवन न करने वाले आर्यो मे इनकी गिनती होती है। यहा तक कि बाहर का भोजन आदि भी ग्रहण नहीं करते। यह तथ्य सम्भवत इतने महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु श्री राजसिह भल्ला के जीवन की प्रात कालीन बेला का वर्णन आपको अवश्य ही आनन्द दायक लगेगा। हमारा उददेश्य तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक आप उसका अनुकरण न प्रारम्भ कर दें।

श्री राजसिह भल्ला की दिनचर्या प्रात लगभग ४ बजे से प्रारम्भ हो जाती है और शारीरिक शुद्धि के बाद श्री भल्ला अपने घर बैठे-बैठे ही समाजशुद्धि के कार्य मे जुट जाते हैं। आपने अपने घर की मीनार पर ही एक लाउडस्पीकर लगा रखा है जिसका माइक भल्ला साहब के कमरे में है और भल्ला साहब सूर्योदय के समय को डायरी में से देखकर उससे ठीक १ घण्टा पूर्व, पहले सध्या उच्चारण करते हैं और फिर किसी न किसी विषय को लेकर अन्य मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपनी वाणी से वैदिक विचारों का प्रवाह वायुमडल में प्रसारित करते हैं।

श्री राजसिह भल्ला ने अपने घर से विधिवत् कोई मन्दिर या सस्था नहीं चला रखी परन्तु प्रात कालीन एक घटे के लिए वे स्वय ही अपने आपमें एक मन्दिर और एक सस्था भी है। यदि आप अशोक विहार या शक्तिनगर के क्षेत्र मे रहते हैं तो किसी भी दिन प्रात सूर्योदय से पूर्व एक घटे के दौरान स्वय जाकर भी यह नजारा देख सकते हैं। प्रारम्भ में कुछ पडोसियों ने इस प्रकार प्रतिदिन घर से लाउडस्पीकर द्वारा उच्चारण पर आपत्ति दर्ज कराई, पुलिस ने भी हस्तक्षेप किया परन्तु श्री राजसिह भल्ला ने विनम्र भाषा और परहितकारी थोडे से शब्दो से ही जनता का मन जीत कर उनका मुह बन्द कर दिया। यह वाक्य थे "मैं किसी को गालिया तो नहीं देता या किसी की निन्दा तो नहीं करता बल्कि आपको भारतीय सभ्यता, ऋषियों की सनातन वाणी आप तक पहुचाने का प्रयास करता हू और आपके बच्चों को सस्कारित करने का प्रयास करता हू तथा इसके बदले में अन्य धार्मिक स्थलों की तरह मैं तो आपसे दान-दक्षिण, भेट-चढावा या चन्दा तक भी नहीं मागता। फिर जब अन्य लोगो के उच्चारण बन्द नही हो सकते तो पर किस आधार पर आपत्ति है।"

पुन इस बात को दोहराने का कोई लाभ नहीं परन्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसी प्रवृत्तिया हम सब आर्यो के अन्दर जागृत हों।

हमारा लक्ष्य : सब सुखी हों सब दायित्व निभाएं

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु खभाग्भवेत्।।

सुखी बसे ससार सब दुखिया रहे न कोय, यह अभिलाषा हम सबकी मेरे भगवन् पूरी होय।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्यचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।। (ऋ० ५१/१५)

हम सूर्य चन्द्रमा की तरह कल्याण मार्ग का अनुसरण करे, पुनश्च हम स्वस्ति-कल्याण-मार्ग पर दानी, परोपकारी और ज्ञानी व्यक्तियो के सहयात्री बनें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

नवयुग में राष्ट्रीय लक्ष्य और दायित्व

अंग्रेजी नए वर्ष के पदार्पण के साथ नई शती और नई सहस्राब्दी का प्रारम्भ हो गया है, भारतीय विक्रमी कालगणना के अनुसार ५६ वर्ष और व्यतीत हो गए हैं। प्राचीन इतिहास की साक्षी के अनुसार हिमालय से लेकर समुद्र तक पश्चिम मे सिन्धु नदी से सिन्धु सागर तक विस्तीर्ण भारत राष्ट्र प्रत्येक दृष्टि से अग्रणी, सुखी, साधन-सम्पन्न समृद्ध था, परन्तु पिछली सहस्राब्दी मे आपसी मत भेदो एव अन्य अपूर्णताओ के कारण वह पराधीनता, गरीबी, विषमताओ और अनेक दु खद स्थितियो मे पहुच गया। पिछले ५४ वर्षो से भारत राजनीतिक दृष्टि से एक स्वाधीन राष्ट्र है और ५१ वर्षो से देश में गणतन्त्री व्यवस्था प्रचलित है, इस सबके बावजूद हमे स्मरण रखना होगा कि नई शती और सहस्राब्दी मे प्रवेश करने के बावजूद राष्ट्र मे गरीबी भूख रोग अशिक्षा, विषमताए व्याप्त है तो यह भी सदा याद रखना होगा कि अभी पश्चिमोत्तर अचल से पडोसी राष्ट्र और आतकवाद के खतरे का उन्मूलन नहीं हुआ है। हमारे पडोसी राष्ट्र के सैनिक तानाशाह ने धमकी दे डाली है कि जब तक कश्मीर का प्रश्न सुलझ नहीं जाता, तब तक वह आतकवाद की रोकथाम नहीं कर सकते। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हमारे पडोसी देश ने चार बार आक्रमण किया है, वहा के शासक के भाषण और दिन-प्रतिदिन आतकवादियो के हमलो से स्पष्ट है कि वर्तमान परिस्थितियों मे हम पश्चिमोत्तर सीमा पर किसी स्थायी शान्ति की अपेक्षा नहीं कर सकते। उसकी जासूसी सस्था आई एस आई देश मे निरन्तर तोडफोड और राष्ट्रविरोधी कार्य करने मे सलग्न है। इस सबको देखते हुए किसी स्थायी शान्ति या समझौते की आशा व्यर्थ है। वर्तमान लक्षण जो यही चेतावनी दे रहे हैं कि अतीत मे जिस प्रकार उसने चार बार आक्रमण किए हैं, उसी तरह वह मौका पाते ही जल्दी या देर मे पाचवा आक्रमण करेगा। अतीत मे हमारे राष्ट्र और हमारी सेनाओ ने उसका आक्रमण व्यर्थ कर विजयश्री प्राप्त की है, उसके भावी आक्रमण के समय भी ऐसा हो सकता है, परन्तु नए युग में विजय की स्थिति मे केन्द्रीय सरकार सब राष्ट्रीय दलो एव भारतीय जनता को शताब्दियो से ही नहीं इतिहास के प्रारम्भ से भारतीय राष्ट्र के पश्चिमोत्तर के इस अविच्छिन्न भूभाग को सयुक्त भारत मे पुन सयुक्त करने के ऐतिहासिक लक्ष्य को स्मरण करना होगा।

१६६५ की लडाई का प्रामाणिक सैनिक विवरण घोषित करता है कि उस युद्ध मे भारत ने निर्णायक विजय पाई थी। इस विजय के बावजूद शत्रु द्वारा युद्ध विराम करने पर वह अपनी विजय का लाभ नहीं उठा सका। शत्रु-सेना ध्वस्त हो गई थी हमारी ८० प्रतिशत सेना और हथियार सुरक्षित थे परन्तु हम अपनी जीती बाजी का ठीक मूल्याकन न कर उसका लाभ नहीं उठा सके। हमारा अपने पडोसी या किसी भी राष्ट्र से सघर्ष न हो, यह आकाक्षा रहने के बावजूद यदि वह हमे युद्ध मे घसीटे तो हमे उसे पश्चिमोत्तर के विवादग्रस्त क्षेत्र से हटा कर स्थायी शान्ति की आधारशिला रखनी चाहिए। नई शती-सहस्राब्दी मे भारत विश्व का एक अग्रणी सुखी, शक्तिसम्पन्न महाराष्ट्र के रूप मे अवतीर्ण हो, इसके लिए भारत को अनेक क्षेत्रो मे बहुत कुछ करना होगा। एक ओर इस बात का प्रयत्न करना होगा कि देश से गरीबी, भूख रोग निरक्षरता, सभी प्रकार के अभावो का अन्त कर दिया जाए। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवश्यक कानून बनाकर उन्हे कार्यान्वित करना चाहिए। इसी के साथ राष्ट्र को नवीनतम वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी विद्याओ मे विशेषज्ञता प्राप्त कर हमे अपना वर्चस्व प्रतिष्ठित करना होगा। प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थो और विवरणो के अनुसार उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक पश्चिम मे सिन्धु नदी से सिन्धु सागर तक फैला भारतवर्ष एक अग्रणी, साधन सम्पन्न सुखी महाराष्ट्र था यहा गरीबी, भूख, रोग, निरक्षरता, विषमता या भेदभाव का अता-पता नहीं था। ऐतिहासिक साक्षी भारत की इस उच्च स्थिति का प्रमाण देते हैं। मेगास्थनीज, ह्वेनसाग आदि विदेशी यात्री अपने दस्तावेजो मे भारत की गरिमा और महत्ता को प्रमाणित करते हैं। नई शती और सहस्राब्दी मे स्वाधीन भारत की राष्ट्रीय सरकार को दोनो ही दिशाओ मे सतत जागरूक रहकर प्रयत्नशील रहना होगा। एक ओर देश से भूख रोग गरीबी, निरक्षरता, भेदभाव का उन्मूलन कर उसे सुखी साधन सम्पन्न समृद्ध समुन्नत राष्ट्र बनाना होगा तो उसे आधुनिक प्रौद्योगिक वैज्ञानिक तकनीकी कृषि उद्योगो, तथा जीवन के सभी क्षेत्रो मे अत्यन्त समुन्नत महाराष्ट्र बनाना होगा। इन लक्ष्यों की पूर्ति व्यावहारिक हो सकती है और ये सभी लक्ष्य दृढ निश्चय कठिन, अध्यवसाय और सयुक्त प्रयत्नो से ही निर्धारित अवधि में पाए जा सकते हैं।

विश्व के सफल महापुरुषो का मन्तव्य है मानव के लिए कोई भी उदात्त व्यावहारिक लक्ष्य असम्भव नहीं है, यदि उसकी पूर्ति के लिए पूरी साधना, क्षमता और लगन से काम किया जाए। नई सहस्राब्दी मे नवीनतम वैज्ञानिक प्रौद्योगिक विधियो और जीवन के उद्योग कृषि वाणिज्य तकनीकी आदि सभी क्षेत्रो मे भारत यदि अपनी प्रतिभा, अनुभवों से अधिकतम अध्यवसाय करे तो उसे जीवन के सभी क्षेत्रो में स्वावलम्बी अग्रणी और अद्वितीय राष्ट्र बनने से उसे कोई शक्ति रोक नहीं सकती। यह चिन्ता और परीक्षा का विषय है कि अपनी कोटि-कोटि मानवशक्ति, प्राकृतिक भौतिक साधनो और अपूर्व प्रतिभा के बावजूद स्वाधीन भारत क्यो पिछड गया ? लम्बे राजनीतिक सघर्ष के बाद यद्यपि ५४ वर्ष पूर्व हम स्वाधीन हो गए थे, परन्तु हमे स्मरण रखना होगा कि विदेशी शासक भारत छोडते समय हमारे दोनो बाजू काट गए थे फलत हमे अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए अनेक सघर्ष करने पडे। यह चिन्ता की बात है कि अभी भी भारत के पूर्वी और पश्चिमी पार्श्व सुरक्षित नहीं है। नई सहस्राब्दी के नवयुग मे प्रवेश करते हुए भारतीय राष्ट्र के कर्णधारो और नीति निर्धारको को इस स्थिति का मूल्याकन कर नवीन राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित कर उनकी पूर्ति के लिए अपना दायित्व समझना होगा। हमारा देश पूर्व और पश्चिम मे सुरक्षित हो, उसके स्थायी गौरवपूर्ण भविष्य की पूर्ति के लिए हमे अपनी आकस्मिक और स्थायी सुरक्षा के लिए निरन्तर सावधान और सन्नद्ध होना पडेगा। यदि राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रीय नेता और प्रबुद्ध जनता निरन्तर सजग और सन्नद्ध रहे तो देश आकस्मिक चुनौतियो को ध्वस्त करता हुआ और अपने दायित्वो को पूर्ण करने के लिए अपने दोनो पार्श्व सुरक्षित कर अवसर पडने पर भौगोलिक, सास्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भारत के प्राचीन भूखण्ड को प्राप्त कर विश्व का प्रत्येक दृष्टि से स्वावलम्बी अग्रणी, महाराष्ट्र बन सकता है इसमे कोई सन्देह नहीं। हा भविष्य मे हम अपनी जीत की घडियो मे अपने राष्ट्रीय लक्ष्यो और दायित्वो को न भूले, इस बारे मे सबको सचेत रहना पडेगा। एक ओर हमे स्वधर्म, स्वभाषा स्वसस्कृति, स्वदेश, स्वराज्य के महर्षि के पच मन्त्र अपनाकर राष्ट्र का सर्वांगीण अभ्युदय करना है तो हमे शैशव मे विद्याभ्यास से यौवन मे गृहस्थ की जिम्मेदारिया निभाकर शेष जीवन मे सच्चे मुनि की तरह समाज और जीवन की मर्यादा का निर्वाह करना चाहिए।

प्रधानमन्त्री कार्यालय और हिन्दी

प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी के निर्देशन मे प्रधानमन्त्री कार्यालय द्वारा हिन्दी के प्रयोग के सम्बन्ध मे किया गया निर्णय महत्वपूर्ण एव उल्लेखनीय है। उक्त निर्णय के अनुसार हिन्दी भाषी राज्यो से पत्र-व्यवहार केवल हिन्दी मे किया जाएगा। केन्द्रशासित राज्यो एव अहिन्दी भाषी राज्यो के साथ भी पत्र-व्यवहार केवल हिन्दी मे किया जाएगा, परन्तु उसके साथ अग्रेजी प्रतिलिपि सलग्न की जाएगी। विदेशो से पत्र-व्यवहार उन भाषाओ मे किया जाएगा जिन भाषाओ मे वहा से पत्र आएगे अथवा हिन्दी में किया जाएगा। इस निर्णय के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं, इससे हिन्दी को देश की प्रमुख सरकारी एव सम्पर्क भाषा बनाने मे मदद मिल सकती है। प्रधानमन्त्री द्वारा ऐसा उचित सविधान सम्मत, भावात्मक एकता एव जन आकाक्षा पूरा करने वाला निर्णय स्वागतार्थ है।

– डॉ० शकुनचन्द्र गुप्त आर्य, लालगज, रायबरेली।

राष्ट्रीयता की प्रतीक है हिन्दी

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, उसका जन्म सस्कृत से हुआ है, सस्कृत हमारी ही नहीं, श्रीलका, बर्मा, थाईदेश और कम्बोडिया आदि अनेक देशो की भाषाओ को जीवन रस देती है। खेद है इसके बावजूद हम राष्ट्रभाषा बोलने मे शर्म अनुभव करते हैं और हमे बताया जाता है अग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है और उसके ज्ञान से सुविधा होगी। विश्व के सभी राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा को ही महत्ता देते है। चीन, इजराइल जापान आदि देशो के प्रधानमन्त्री देश से बाहर अपनी भाषा मे बोलते है। छोटे-छोटे देश भी अपनी भाषाओ के सहारे आगे बढ रहे है। भारत की बहुसख्यक जनता हिन्दी समझती है, लेकिन सरकारी काम केवल अग्रेजी मे होते है। खेद है कि देश का युवा वर्ग भी पाश्चात्य सस्कृति की नकल कर रहा है। यदि हमे अपने राष्ट्र का निर्माण और उत्थान करना है तो देशवासियो को अपनी राष्ट्रभाषा को उचित सम्मान देना होगा।

– ऋतु अग्रवाल, ५०२, सवेरा अपार्टमैण्ट, रोहिणी, दिल्ली-८५

अथर्ववेद से – नम: सप्तकम्

परमेश्वर तथा उसके सखा ही नमन के अधिकारी हैं

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) परमेश्वर सदृश कल्याणकर्त्ता को सदा नमन करे

यो नो भद्राहमकर सायं नक्तमथो दिवा।
तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नाम:।

अथर्व ६-१२८-४

ऋषि - अगिरा। देवता- शाकधूम सोम।
छन्दा - अनुष्टुप्।

अर्थ – हे (शकधूम) अपनी शक्ति से दस्युओ को कम्पित करके (करने वाले) (नक्षत्र राज) शत्रुओ तथा विपदाओ से अपना त्राण न करने वाली प्रजाओ के शासक। (य) जो आप (न) हमारे लिए (दिवा नक्त अथ सायम्) दिन, रात और इनके सन्धिकाल मे (भद्राह अकर) हमारा कल्याण करके सम्पूर्ण दिन को सुखकर बनाते हैं (तस्मै ते सदा नम) उनके लिए सदा नमस्कार है।

निष्कर्ष – शक्तिशाली रक्षक के प्रति सदा कृतज्ञ होना चाहिए तथा निर्बल की सदा रक्षा करनी चाहिए। नमन या कृतज्ञता का सत्य स्वरूप यह है कि जिन गुणो के कारण हम किसी के कृतज्ञ हैं, उन गुणो को अपनाए आपने से निर्बलो के साथ वही व्यवहार करे।

अर्थ पोषण – क्षत्रात् त्रायत इति क्षत्र क्षतात् त्रातु असमर्थ इति नक्षत्र।

भद्राहम् – भदिकल्याणे सुखे च अह भद्रकृत्वा सुखयतियस्मिन्कर्म वितत्।

(२) परमेश्वर सदृश अग्रणी और उपदेष्टा को सदा नमन करे

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।।

अथर्व ७।८७।१

अथर्वा। रुद्र। जगती।

अर्थ – (य रुद्र) जो वेदोपदेष्टा तथा अपन नियमो का उल्लघन करने वालो को रुलाने वाला (अग्नौ अप्सु) अग्नि और जल से उपलक्षित पञ्च महाभूतो मे (य ओषधी वीरुध) और जो फलपाकान्त अन्नो मे तथा विविध रूप में उगने वाली लताओं मे सोमरूप से (आविवेश) व्याप्त है (य इमा विश्वा भुवनानि चाकलृपे) जिसने इन सब भुवनो का निर्माण किया है (तस्मै अग्नये रुद्राय नम अस्तु) उन सर्वप्रथम सर्वाग्रणी रुद्र परमेश्वर को मेरा नमस्कार हो।

निष्कर्ष – हमे भी रुद्र के समान, बनने का प्रयत्न करते हुए सत्कर्म कर्त्ता बनकर दुष्टो को दण्ड देने वाला तथा सब आवश्यक कृत्यो को सुचारु रूप से सम्पन्न (पूर्ण) करना चाहिए।

(३) माता, पिता के सदृश सब गुरु जनों को नमस्कार करें

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तीक्षाय मृत्यवे।
मेक्षाम्यूर्ध्वस्तिष्ठन् मा मा हिंसिषुरीश्वरा.।।

अथर्व ७-१०२-१

प्रजापति.। मन्त्रोक्ता। विराट् पुरस्तात् बृहती।

अर्थ – (द्यावापृथिवीभ्या अन्तरिक्षाय नमस्कृत्य) द्यु, अन्तरिक्ष और पृथिवी तीनो लोको के निवासियो के प्रति आदर प्रकट करके अथवा शरीर, हृदय और मस्तिष्क को उनका अन्न=भोजन प्रदान करके (मृत्यवे) तथा तीनो लोको के स्वामी मृत्यु नामक परमेश्वर के लिए नमन करके (मेक्षामि-मा-ईक्षामि) मैं आत्म-निरीक्षण करता हू और तब (अर्ध्व तिष्ठन) अपनी कमियो और विषय वासनाओ से ऊपर उठकर (मेक्षणि) अपना जीवनयापन करता हू। अत (ईश्वरा) तीन लोको के अधीश्वर आदित्य, वायु और अग्नि (मामा हिसिषु) मुझे किसी प्रकार कष्ट न पहुचाए।

अर्थ-पोषण – नम:-णम प्रह्वत्वे शब्दे च-प्रणमति। नम अन्ननाम। *नि० २–७*

मृत्यवे – परमात्मा – **'स एव मृत्यु' सोऽमृत सोऽम्व रक्ष:'।** अथर्व १३-६-४

पृथिवी शरीरम्। अ० ५-६-७

मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनु। अथर्व ७-१२-४

द्यौ पिता पृथिवी माता। अथर्व ३-७-१ माता, पिता और आचार्य को नमन करके मेक्षमि-मा ईक्षामि ईक्षदर्शन। मेक्षतिर्गतिकर्मा। नि-२-२४

निष्कर्ष – यदि मनुष्य माता, पिता, आचार्य और परमात्मा को प्रतिदिन नमन करके तथा शरीर हृदय और मस्तिष्क की यथोचित आवश्यकताओ (भोगो) को पूरा करता रहेगा, तो चेतन या जड कोई भी देव उसे कष्ट देकर हिसा नहीं करेगे, और वह स्वस्थ तथा दीर्घायु होगा।

(४) कमनीय प्रभु तथा सात्विक कामनाओं के प्रति सदा नत रहें।

कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपु पितरो न मर्त्या।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महॉस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि।। अथर्व ६-२-१६
यास्ते शिवास्तन्व काम भद्रा - भिस्त्वमर्सो नम सविशस्वा।। *अथर्व ६-२-२५*

अथर्वा। काम। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (काम प्रथम जज्ञ) कमनीय परमात्मा सब से पूर्व प्रादुर्भूत हुए हैं। (एन देवा पितर मर्त्या न आपु) किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता मे देव, पितर या मनुष्य कोई उन तक नहीं पहुच सकता, उन की बराबरी नही कर सकता। (तत त्वमसिज्यायान्) इस प्रकार आप सबसे अधिक प्रशस्य है (विश्वहा महान्) सदा सबसे महनीय हैं। अत (तस्मै तेनम इत् कृणोमि) मैं ऐसे आपके प्रति सदा नतमस्तक रहता हू।

इसी प्रकार कामना सब से प्रथम प्रकट होती है। ये अच्छी और बुरी दोनो तरह की होती हैं, इसलिए उस कामना से प्रार्थना की गई है। हे (काम। या ते शिवा भद्रा तन्व) हे काम जो तेरे कल्याणप्रद सुख देने वाले स्वरुप हैं (ताभि त्व अरमान् सविशस्व) केवल उन स्वरूपों से मुझमे प्रविष्ट हो। किसी दु खदायी रूप मे मुझमे मत प्रवेश कर। क्योकि जैसी कामना होगी, वैसी ही क्रिया होगी और तदनुरूप फल मिलेगा। काम – कान्तिमय तथा सकल्पमय ईश्वर, कामना (वै०को०)

(५) प्रभु-सम श्रमी, तपस्वी तथा सुख प्रदाता को सदा नमन करो

य श्रमात्तपसो जातो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे।
सोम यश्चक्रे केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:।।

अथर्व – १०-७-३६

अथर्वा। स्कम्भ, अध्यात्मम्। उपरिष्टाद् विराड् बृहती।

अर्थ – (य) जो सर्वाधार प्रभु (सर्वान् लोकान् समानशे) सब लोकों मे व्यापक हैं, वह (श्रमात् तपस जात) प्रयत्न और तप से आविर्भूत (अनुभूति रूप मे प्रकट) हाते हैं। वह (सामम) सोम्य, जितन्द्रिय स्नातक को (केवलचक्र) आनन्द म विचरण करने वाला बनाते है। (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मण नम) उन सब तरह से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ ब्रह्म को मेरा नमस्कार है।

निष्कर्ष – वह ज्ञान के अनुरूप आचरण करने वाले, तथा तप पूर्ण कर्मो द्वारा सौम्य बने साधक (स्नातक) को, आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला बनाता है। के सुखे-बल सवरणे सचलने च वाला=केवल।

(६) प्रभु के समान दुष्टों का दमन करने वालो को सदा नमन करो

योऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टमितोऽयज्वन. प्रमृणन्देवपीयून्।
तस्मै नमो दशभि शक्वरीभि.।। *अथर्व ११-२-२३*

अथर्वा। भवशर्वरुद्रा। त्रिपदा विराट् गायत्री।

अर्थ – (य) जो परमात्मा सृष्टा, धर्ता सहर्ता रूप मे (अन्तरिक्षे)-सर्वत्र-जड जगत् तथा चेतना के अन्दर सर्वव्यापक होने से (अयज्वन देवपीयून् प्रमृणन्) यज्ञ की भावना से शून्य तथा दिव्यजनो (विशेषज्ञो तथा विशिष्ट पदो पर स्थित सज्जन पुरुषो) को कष्ट पहुचाने वाले लोगो को अदृष्ट रूप से नष्ट कर देने वाले सर्वव्यापक परमात्मा (विष्टमित) स्तम्भ के समान सदा स्थिर हैं – रहते हैं। (तस्मै) उन सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् परमात्मा को हम (दशभि शक्वरीभि नम) ज्ञानेन्द्रियो तथा कर्मेन्द्रियो के दशक से अथवा हाथ जोडकर सम्पूर्ण रूप से नमन करते हैं।

शक्वरभि – शक्वरीगोनाम, नि० २-११। आपो वै र्य, जै० ३-७२ अप कर्मनाम, नि-२-१

निष्कर्ष – प्रभु के सामर्थ्य को अनुभव करके, उन्ह सदा हृदय से नमन करते हुए यज्ञशील (यजमान) बने रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

(७) प्राण स्वरूप ईश तथा जीवनप्रद प्राण की सदा शुश्रूषा (नमन) करो

प्राणायनामो यस्य सर्वमिदवशे।
यो भूत सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

अथर्व ११–४–१

अथोमद् भेषज तव तस्य नो धेहि जीवसे।

अथर्व ११–४–७

भार्गवो वैदर्भि। प्राण। शङ् कुमतीअनुष्टुप्।

अर्थ – (भूत) अनादिकाल से वर्तमान सत्स्वरूप (य प्राण) समग्र जगत् के मुख्य प्राण परमेश्वर (सर्वस्य ईश्वर) सबको अधीश्वर तथा कर्मफल प्रदाता हैं (यस्मिन् सर्व प्रतिष्ठितम्) जिनमे सम्पूर्ण जगत् स्थित है, तथा (इद सर्व यस्य वशे) यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा इसकी व्यवस्था जिस के आधीन है उन्हें तथा अपने वैयक्तिक (प्राणाय नम) प्राण को नमस्कार है।

प्राण. (१) परमेश्वर – 'प्राणो सर्वस्येश्वरो यच्च प्राणतियच्चन।' *अथर्व ११-४-१०*

'प्राणे ह भूत भव्य च प्राणेसर्वप्रतिष्ठितम्'।।

अथर्व ११–४–१५

(२) वैयक्तिक प्राण - 'अर्ध्व: सुप्तेषु जागार ननु तिर्यङनिपद्यते।
न सुप्तमस्य सुप्तेषु अनुशुश्राव कश्चन।।'

अथर्व ११–४–२५

पञ्चधा विहितो वाऽयं प्राण शीर्षन्मनो वाक् प्राणश्चक्षु श्रोत्रम।'' शत० ६-२-२-५

निष्कर्ष – प्राण सबके अधीश्वर हैं। उन से जीवन के आध्यात्मिक आधिदैविक तथा आधिभौतिक प्रत्येक रोग की भेषज की जीवित रहन के लिए प्रार्थना की गइ है। इसी प्रकार हमे अधीनस्थ तथा सहयोगिया क प्रत्येक रोग (अभाव तथा अतिभाव) की भेषज (निराकरण का प्रयत्न करना चाहिए।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६**

राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में स्वामी दयानन्द के विचारों का महत्त्व

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विचारो की भारत की राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करने तथा देश की अखण्डता की रक्षा मे क्या उपयोगिता है। यदि हम संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ वेदो का अवलोकन करे तो हमें विदित होता है कि वैदिक वाङ्मय मे सर्वप्रथम राष्ट की विस्तृत चर्चा उपलब्ध है। अथर्ववेद के १२वे काण्ड का प्रथम सूक्तभूमि सूक्त या मातृभूमि की वदना है, जो हमारे समक्ष राष्ट्र की परिपूर्ण तथा सुविचारित कल्पना प्रस्तुत करता है। इसे वद का राष्ट्रीय गीत भी कह सकते हैं। वेदो मे राष्ट्र क प्रति जैसी धारणा व्यक्त की गई है तथा उसके प्रति नागरिको के जिन कर्त्तव्यो का निर्धारण किया गया उसे ही इन ६३ मन्त्रो मे सुस्पष्ट ढग से परिभाषित किया गया है। इस सूक्त के सभी मन्त्र इतने गम्भीर तथा व्यापक हैं कि किसी भी देश का वासी इनके अर्थो का चिन्तन कर एक सच्चा और अच्छा नागरिक बन सकता है। यहा यह स्पष्ट कर दिया गया है कि यद्यपि एक ही देश के निवासियो के आचार-विचार खान-पान रहन-सहन वेश-भूषा, भाषा आदि मे भिन्नता हो सकती है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि, उन्हीं विभिन्नताओ के कारण राष्ट्र और धरती की अखण्डता पर आंच आए।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस नाना धर्माण पृथिवी यथौकसम्।

यह धरती नाना प्रकार की बोलियो को बोलने वालो तथा नाना पेशो से जीविका चलाने वाले लोगो को उसी प्रकार धारण करती है, मानो वे एक ही घर के लोग हो। भाषा तथा व्यवसायगत भेद पृथ्वी के नागरिको मे भिन्नता तथा अनेकता नही लात। स्वामी दयानन्द ने वेद प्रतिपादित इसी तथ्य को हृदयगम किया था और वह पृथ्वी के समस्त नागरिको को एक ही परिवार का सदस्य मानते थे। इसलिए उन्होंने अपने द्वारा स्थापित आर्यसमाज का उद्देश्य किसी दश सम्प्रदाय तथा वर्ग, वर्ण का कल्याण करना नहीं बतायाँ, अपितु संसार के उपकार को ही इस सस्था का लक्ष्य ठहराया था।

राष्ट्र की सुस्पष्ट धारणा

राष्ट्र की परिभाषा अनेक प्रकार से की गई है किन्तु अधिकाश विचारको की राय मे राष्ट्र उस भौगोलिक इकाई का नाम है, जिसकी सीमाए बहुत कुछ प्राकृतिक होती हैं तथा जिसके निवासियो के इतिहास, सस्कृति, परम्परा जीवनदर्शन तथा आचार-व्यवहार मे एकरूपता दिखाई देती है। यो तो कोई भी राष्ट्र धरती का एक टुकडा ही होता है जिसमे नदी पर्वत, नाले झरने, वन, मैदान आदि के अतिरिक्त मनुष्यो द्वारा निर्मित बस्तिया भी होती हैं किन्तु उस भूभाग की सास्कृतिक एकता ही वह मूलभूत तत्व है जो भूखण्ड को राष्ट्र की सज्ञा प्रदान करता है। इस प्रसग मे पृथ्वीसूक्त का निम्न मन्त्र मननीय है –

"शिला भूमिरश्मा पासु सा भूमि· संधृता धृता।"

अर्थात् प्रत्यक्षतया तो यह धरती विभिन्न चट्टानो, मिट्टी के कणों, प्रस्तर खण्डो तथा बालू रेत का ही समष्टि रूप है किन्तु जब यही भूखण्ड देशवासियो द्वारा सुसस्कृत बनाकर सभ्यक्तया धारण करता है तो उसके साथ देश की गौरवमयी सस्कृति तथा इतिहास के गरिमामय प्रसग जुड जाते हैं। तब प्रस्तरमयी शिलाओ तथा धूल के कणो वाली यह धरती हमारे लिए वदनीय तथा रक्षणीय राष्ट्र बन जाता है। इसी वेदिक तथ्य का अनुभव कर ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्था मे सर्वत्र स्वदेश आर्यावर्त्त का कीर्त्तिगान किया हे तथा इसके विगत ऐश्वर्य, वैभव तथा गौरव का उन्मुक्त कठ से गान किया है। देशवासियो को स्वराष्ट्र के प्रति कर्त्तव्योन्मुख किया है। उनके अनुसार जिस देश के अन्न-जल से हमारा पालन हुआ है, क्या उसके प्रति हमारा कोई दायित्व और कर्त्तव्य नहीं है? स्वदेश मे स्वराज्य की स्थापना को अपना पावन कर्त्तव्य बताते हुए उन्होने लिखा था– **"चाहे कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। किन्तु विदेशियों का राज्य कितना ही मतामतान्तर के आग्रह से शून्य, न्यायमुक्त तथा माता-पिता के समान दया तथा कृपायुक्त ही क्यों न हो, कदापि श्रेयस्कर नहीं हो सकता।"**

– सत्यार्थ प्रकाश-अष्टम समुल्लास।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि राष्ट्र की सुस्पष्ट धारणा से पुराकालीन आर्य लोग सर्वथा परिचित थे। इस प्रसग मे यह लिखना भी आवश्यक है कि हमारे विदेशी शासकों ने यह तथ्य कभी स्वीकार नहीं किया कि भारत सुसगठित तथा सास्कृतिक एकता के सूत्र मे पिरोया एक राष्ट्र है। इस विचारधारा को देश के नागरिको मे प्रचारित करने के पीछे उनका एक गुप्त कार्यक्रम था। उनके निहित्त गोपनीय स्वार्थ थे। वे नहीं चाहते थे कि भारत के निवासी अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पहचाने तथा एकता के सूत्र मे बध कर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए सामूहिक उद्योग करे। अपने इसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए वे यहा के निवासियो को सदा यही पाठ पढाते रहे कि भारत के आदिम निवासी तो कोल, भील, द्रविड जातियो के लोग थे, जो कबीलो मे रहते थे ओर उन्नतिशील आर्यो से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं था। स्वामी दयानन्द ने पश्चिमी लोगो द्वारा प्रवर्ति इस मिथक को तोडा तथा इस बात को बलपूर्वक प्रतिपादित किया कि आर्यलोग ही आर्यावर्त्त क आदि निवासी थे। उनके वसने से पहले इस देश मे अन्य किसी जाति का निवास नहीं था। उन्होने आर्यो और द्रविडो मे धर्मगत भेद को नहीं माना। उन्होन अग्रेजो द्वारा लिखे गए इतिहासो से उत्पन्न भ्रान्तिया का प्रबल खण्डन किया और भारत के वास्तविक इतिहास के अनेक गौरवपूर्ण प्रसग उजागर किए।

आसेतु हिमाचल एक राष्ट्र

यदि हम आर्यो के विगत् इतिहास को देखे तो स्पष्ट हो जाता है कि इस देश के विदेशी दासता के काल को छोडकर अत्यन्त प्राचीन काल मे देश की एकता को मजबूत करने के प्रयत्न यहा सदा होते रहे हैं। महाभारत काल को ही देखे। उस समय इस देश को विखण्डित करने के अनेक कारण उत्पन्न हो गए थे। अन्यायी, अत्याचारी पराए, स्वत्व को छीनने वाले क्षुद्रमनस्क शासको के पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष के वशीभूत होकर हमारी प्रजा अत्यन्त पीडा तथा त्रास का अनुभव कर रही थी। उस समय श्रीकृष्ण जैसे महामनस्वी, नीतिज्ञ प्रज्ञापुरुष ने आर्य राष्ट्र के सरक्षण तथा नवनिर्माण की कल्पना को साकार किया। उन्होने ही धर्मराज युधिष्ठिर को आर्यावर्त्त का एकछत्र सम्राट घोषित कराने का पुरुषार्थ किया तथा आसेतु हिमाचल भारत को एक अखण्ड राष्ट्र बनाया। महर्षि दयानन्द ने उस युगपुरुष को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सर्वथा उपयुक्त ही लिखा था– **"देखो महाभारत मे कृष्ण का जीवन अत्युत्तम रीति से वर्णित हुआ है। उन्होने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई अधर्म का काम नहीं किया था।"**

इसी प्रकार समय-समय पर देश की आजादी तथा अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए महामति चाण्क्य तथा समर्थ रामदास जैसे मनस्वी पुरुषो ने सम्राट चन्द्रगुप्त तथा हिन्दू पर बादशाही के आदर्श को क्रियान्वित करने वाले शिवाजी महाराज को प्रेरित किया। उधर महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास तथा दशम गुरु गोविन्द सिह ने अत्याचारी केन्द्रीय शासको से अपने राज्यो को स्वाधीन रखने के लिए सर्वोच्च वीरता तथा त्याग के अप्रतिम आदर्श रखे। ऋषि दयानन्द ने इन सभी इतिहास-पुरुषा के राष्ट्रीय एकता मे योगदान का आदर क साथ स्मरण किय है।

यो तो इस्लामी अक्रमणकारियो के समय से ही देश की एकता तथा अखण्डता को क्षति पहुचने लगी थी क्योकि इन विदेशी हमलावारो की असहिष्णु नीति के कारण यहा के निवासी हिन्दुओ मे असुरक्षा के भाव पैदा हो गए थे। जो हिन्दू अपने मत को त्यागकर इस्लाम स्वीकार कर लेते उन्हे सुरक्षा की गारटी दी जाती जबकि स्वधर्म पर स्थित रहने वालो को द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनने के लिए मजबूर किया जाता। उन्हे जजिया नाम का कर देना पडता तथा अपनी मर्जी के अनुसार पूजा-उपासना के उनके मौलिक अधिकार भी छीने जाने लगे थे। इन्हीं तथ्यो को दृष्टि मे रख कर स्वामी दयानन्द ने मध्यकाल के असहिष्णु इस्लामी शासको की कठोर साम्प्रदायिक नीतियो का विरोध किया। अपेक्षाकृत उन्होने अग्रेजी राज्य की इसलिए सराहना की कि इस राज्य मे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुकूल धर्म पालन करने की स्वतन्त्रता है तथा राजनीतिक पराधीनता होने पर भी देशवासी बहुत कुछ सुरक्षित जीवन बिता रहे थे।

शताब्दियो के पश्चात् राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता को साकार करने का एक अवसर हमे तब मिला जब यूरोपीय जातियो के सम्पर्क मे आकर भारत में नवजागरण की स्फूर्तिमयी लहर उत्पन्न हुई राजा राममोहन राय को नवजागरण का अग्रदूत कहा गया है। उन्होने धर्म के क्षत्र मे वेदिक एकश्वरवाद की पुन स्थापना की। उन्होने मध्यकालीन पोराणिक विश्वासो से उत्पन्न बहुदेववाद का प्रबल खण्डन किया तथा वदो मे निहित्त एकेश्वर सिद्धान्त को ही आर्यो का मूलभूत सिद्धान्त ठहराया। आलोचको का तो कहना है कि राममोहन राय द्वारा एकेश्वरवाद का प्रतिपादन एक मजबूरी थी, क्योकि उन्हे ईसाइयत तथा इस्लाम मे स्वीकृत एकेश्वरवाद की प्रतिद्वन्द्विता मे हिन्दू एकेश्वरवाद को सिद्ध करना था, किन्तु यह आक्षेप सर्वथा मिथ्या तथा अन्यायपूर्ण है। ईसाइयत मे तो पिता, पुत्र तथा परमात्मा का त्रैत स्वीकार किया गया है जबकि इस्लाम मे अल्लाह की एकता पर जोर देने के साथ-साथ मोहम्मद के पैगम्बर होने की स्वीकृति आवश्यक समझी गई है। यथार्थत राममोहन राय ने जिस एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया था वह वैदिक औपनिषदिक तथा वेदान्त दर्शन पर आधारित एक सर्वोच्च सच्चिदानन्द सत्ता को स्वीकार करना ही था किन्तु वह शकर के सर्वेश्वरवाद तथा यथाश्रित अद्वैतवाद से सर्वथा भिन्न था। ऋषि दयानन्द ने भी उपर्युक्त प्रकार के एकेश्वरवाद को आर्य दर्शन के सर्वथा अनुकूल ठहराया तथा इसे देश की एकता के लिए अनिवार्य बताया।

राष्ट्रीय एकता के सूत्र

राममोहन राय के प्रारम्भिक प्रयत्नो के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने ही देश की स्वतन्त्रता एकता तथा अखण्डता के स्वर्णिम सूत्रो को प्रस्तुत किया। उन्होने स्वधर्म स्वदेशी स्वसस्कृति तथा स्वभाषा की एकता को राष्ट्रीय एकता के चार मजबूत स्तम्भ माना। उदयपुर प्रवास के समय प० मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया द्वारा पूछने पर उन्होने यह स्पष्ट कर दिया था कि जब तक इस देश के निवासियो मे भाषागत, उपासनागत तथा विचारगत एकता नहीं होगी तब तक समग्र राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता स्वप्नवत अयर्थाथ ही रहेगी। स्वामी दयानन्द के इस मन्तव्य का चिन्तन तथा तदनुकूल आचरण आज की प्रबल आवश्यकता है।

– ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर

1857 की क्रान्ति और महर्षि दयानन्द

– श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

बहुत वर्षों की बात हो गई, जब श्री पृथ्वी सिह मेहता विद्यालकार ने "टाड राजस्थान" नामक एक "टाड" अग्रेज द्वारा लिखी पुस्तक की प्रतिक्रिया स्वरूप हमारा राजस्थान नामक पुस्तक लिखी थी। आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली से वह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। उस पुस्तक मे एक स्तम्भ है **"क्रान्ति का अग्रदूत"** या " क्रान्ति का **अग्रदूत दयानन्द"।**

मेहता जी ने उस स्तम्भ मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द सन् १८५६ के अन्त मे कानपुर पहुच गए थे। कानपुर के नाना साहब के प्रधान मन्त्री श्री अब्दुल्ला बडे क्रान्तिकारी और अग्रेजी राज के प्रबल विरोधी थे। सन् १८५७ में विद्राह की वह चिन्गारी जो धीरे-धीरे सुलग रहीं थी, एकदम फूट पडी। अब्दुल्ला भी सशस्त्र विद्रोह के लिए सेना लेकर मैदान मे निकल आए। देश के अन्य भागो मे भी क्रान्ति की ज्वाला भडक उठी। दयानन्द जैसा क्रन्तिकारी उससे अछूता रहा हो, ऐसा नहीं लगता किन्तु दयानन्द ने इस क्रन्ति मे भाग लिया हो, कुछ किया हो, ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ऐसे विचार उस पुस्तक मे श्री मेहता जी ने व्यक्त किए थे। उसके पश्चात् ऋषिवर ने अपनी आत्मकथा मे तीन वर्षों की चर्चा नहीं की। इससे कुछ लोग यह सोचने लगे कि ऋषिवर ने इन तीन वर्षों की अपनी जीवन गाथा को इस लिए छिपा लिया कि वह सोचते रहे होंगे कि यदि इन तीन वर्षो की चर्चा की तो अग्रेज फांसी पर लटका देगे। एक बार पूछने पर उन्होंने यह कहा था कि उन तीन वर्षों में मैं नर्मदा किनारे भ्रमण करता रहा।

पृथ्वी सिंह मेहता की **"हमारा राजस्थान"** पुस्तक के दशाब्दियो पश्चात् श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी ने **"योगी का चरित्र"** नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक मे उन्होंने ऋषिवर देव दयानन्द को सन् ५७ की क्रान्ति का सूत्रधार सिद्ध करने के लिए बहुत कुछ लिखा। इस पुस्तक के कुछ अश भी "सार्वदेशिक" साप्ताहिक मे छपे थे। उनके उत्तर मे प्रबल युक्तियो और प्रमाणो से ही भवानीलाल भारतीय ने अनेक लेख "सार्वदेशिक" पत्र में ही लिखकर श्री स्वामी सच्चिदानन्द के उस ग्रन्थ को कल्पनाओ कर पिटारा सिद्ध कर दिया था। जिसके परिणाम स्वरूप उस पुस्तक के किसी भी अश को सार्वदेशिक में और आगे प्रकाशित करना बन्द कर दिया था।

स्वामी सच्चिदानन्द ने उस पुस्तक मे यह भी लिखा था कि नाना साहब, झासी की रानी लक्ष्मीबाई आदि (अन्य भी नाम लिखे थे) महर्षि दयानन्द से अग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए सम्मति, दिशा निर्देश और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कुम्भ मेले मे हरिद्वार चण्डी मन्दिर के निकट, जहा महर्षि ने "पाखण्ड-खण्डिनी" पताका लगाई हुई थी पहुच कर मिले थे।

कालान्तर में जब वह बुलन्दशहर जनपद के अनूपशहर मे गगा के किनारे बैठे थे तो उन्होंने देखा कि एक माता अपने बच्चे की लाश गगा में फेंक और उसका कफन उतार धोकर वापस लौटी तो उस माता से इसका कारण पूछ लिया। माता से पता चला कि उसके पास कफन के लिए पैसे नहीं थे तो उसने अपनी आधी धोती फाडकर कफन बना लिया था। अब इस धोती के टुकडे को पुन धोती में जोडकर पहनेगी। यह सुनकर ऋषिवर द्रवीभूत हुए और फूट-फूटकर रोए। उससे उनकी राष्ट्रभक्ति इतनी प्रबल हो उठी कि उन्होने **"गोकरुणानिधि"** नामक पुस्तक लिखी, जिसमे **"गोकृष्यादि रक्षिणी सभा"** कर विधान किया। महर्षि दयानन्द से आशीर्वाद, दिशा-निर्देशन आदि प्राप्त करने सन् ५७ की राज्य क्रान्ति के लिए कुम्भ मे नाना साहब तथा महारानी लक्ष्मीबाई पहुच गए थे, इस विचार के सस्थापक तथा उनके समर्थक जन्म-जन्मान्तर मे भी इसका समाधान नहीं कर सकेंगे। कब हरिद्वार का वह कुम्भ स्थल था तथा कब अनूपशहर में ऋषिवर ने वह घटना देखी, और कब **"गोकरुणानिधि"** पुस्तक का प्रणयन किया, जिससे उनके राष्ट्रीय भावना से अभिभूत होने का परिचय मिलता है। उस कुम्भ और इस घटना से काल का न तो परिवर्तन ही सम्भव है और न सगत ही लगती है।

इसके पश्चात् ही उन्होंने **"आर्याभिविनय"** नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ मे उन्होने वेद मन्त्रों की व्याख्याओं मे बार-बार लिखा **"प्रभु हम स्वराज्याधिकारी हों, हम स्वराज्याधिकारी हों।"** इस ग्रन्थ मे उन्होने परमात्मा के लिए भी सम्बोधन मे राजाधिराज तथा महाराजाधिराज शब्दों का प्रयोग किया। परन्तु उनके प्रथम कुम्भ में पहुचने पर किन्हीं राजा-रानियों के उनसे आशीर्वाद और दिशा-निर्देशन अंग्रेजी शासन से विद्रोह करने के लिए पहुचने की घटना अभी तक पुष्ट नहीं हुई है।

मेरठ मे कोई साधु लोगो को पानी पिलाया करता था और अग्रेजी राज के विरुद्ध भडकाया करता था तथा सैनिको को यह भी कहता था कि इन कारतूसो मे सूअर और गाय की चर्बी लगी होती है, जिसे तुम लोगो को दातो से खोलना होता है, वह महर्षि दयानन्द ही थे, यह भी अभी प्रमाणित नहीं हुआ है। जहा-जहा छावनिया थीं, उन फौजी छावनियो मे वैरागी साधु धार्मिक कथाओ के नाम पर स्वतन्त्रता की चिन्गारी सुलगाया करते थे। यह सब भी दयानन्द की योजना से ही हो रहा था, वही उसके सूत्रधार थे। इसके लिए भी अभी कोई प्रमाण नहीं है।

ऋषिवर दयानन्द के अनेक जीवन चरित्र छपे हैं, उनमे से अधिकाश मैंने स्वय पढे हैं, किसी में भी ऐसी चर्चा नहीं है। श्री घासीराम शर्मा एडवोकेट, मेरठ निवासी द्वारा प्रकाशित जीवन चरित्र तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ही प्रमाणित है और पर्याप्त विस्तृत है। उसमें एतद्विषयक कोई इगित भी नहीं है। स्वामी सत्यानन्द कृत **"श्रीमद् दयानन्द प्रकाश "** मे भी इस प्रकार की कोई चर्चा नहीं है। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित महर्षि चरित्र में भी ऐसी कोई चर्चा नहीं। महर्षि का एक जीवन चरित्र श्री हरिशचन्द्र विद्यालकारकृत भी है, उसमे भी इस प्रकार की चर्चा कहीं नहीं पाई जाती है। आर्य पथिक श्री पण्डित लेखरामकृत जीवन चरित्र में भी कोई चर्चा नहीं है।

ऋषिवर प्रबल राष्ट्रभक्त थे। राष्ट्रभक्त आर्यसमाजी होते ही हैं। अतएव जहा किसी ने यह कहा कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता सग्राम मे १८५७ ई० में भाग लिया था, वे भावुक हो उठते हैं। इनकी भावुकता की तब तो पराकाष्ठा ही हो जाती है, जब कोई यह कहता है कि सन् ५७ के विद्रोह के सूत्रधार तो थे ही दयानन्द।

आशा है यह विषय प्रस्तुत करते हुए उसका समुचित प्रमाण प्रस्तुत किया जाए।

– अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

आवश्यकता है

श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल को एक वैदिक विचारों वाले सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता हैं। जो वैदिक संस्कारों में दक्ष हो – वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा, इस पद के इच्छुक प्रार्थी तुरन्त सम्पर्क करें–

प्रबन्धक, श्रद्धानन्द नाथालय,
कर्णताल करनाल फोन : 271288

वैवाहिक विज्ञापन

राठौर राजपूत 23 वर्षीय एम०काम०, एम०बी०ए० (अध्ययनरत) सुन्दर, सुशील, सुसस्कारी आर्यसमाजी विचारधारा, कन्या हेतु व्यवसायी/सेवारत सुयोग्य वर चाहिए। सम्पर्क करें -
सौरभ सिंह राठौर मकान नं० 282, तानसेन नगर, ग्वालियर (म०प्र०) 474001

पूर्वी दिल्ली पटपड़गंज क्षेत्र में अत्यावश्यक बैठक

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र की आर्यसमाजो की एक अत्यावश्यक बैठक **१४ जनवरी, दोपहर ३ बजे आर्य समाज मन्दिर, निर्माण विहार, दिल्ली-९२** मे होगी। इसमे आगामी दयानन्द दशमी **(१७ फरवरी, २००१ शनिवार)** के अवसर पर **महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस को गोसंवर्द्धन दुग्धशाला केन्द्र गाजीपुर** मे मनाने पर विचार किया जाएगा। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सुरेन्द्रकुमार रैली प्रधान — **पतराम त्यागी** महामन्त्री — **रवि बहल** कोषाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द गो. सम्बर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में

महर्षि जन्मोत्सव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्बर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ शनिवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संगठनों से प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाएं।

श्री वेदव्रत शर्मा
सभा प्रधान

सच्चे संगठन से राष्ट्र की एकता सम्भव

आर्यसमाज हनुमान् रोड का वार्षिकोत्सव : एकता सम्मेलन में नेताओं का उद्‌बोधन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ७८ वा वार्षिकोत्सव ६ नवम्बर से १२ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य रामकिशोर शर्मा के ब्रह्मत्व मे हुआ। उनके सहयोगी डॉ० कर्णदेव शास्त्री थे। प्रात-साय भजन महाशय श्री वेगराज आर्य तथा प्रवचन श्री रामकिशोर शर्मा के हुए।

७ नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन हुआ तथा ११ नवम्बर को श्री रत्तनलाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता जिसमे रघुमल आर्य सी०से० स्कूल राजाबाजार, नई दिल्ली ने प्रथम, सूरज भान डी०ए०वी० स्कूल ने द्वितीय तथा टैगोर इण्टरनेशनल स्कूल, ईस्ट ऑफ कैलाश ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

१२ नवम्बर को ५ कुण्डीय यज्ञ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद हुए राष्ट्रीय एकता सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य रामकिशोर शर्मा ने की। पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि ससार की समस्याओ का समाधान महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश द्वारा सम्भव है। आर्यसमाजी करवट बदले तो युग बदल सकता है। हम सगठित होगे तो राष्ट्र की एकता सम्भव है। ब्रिगेडियर चितरजन सावत ने कहा कि हमारे वीरो के बलिदान से राष्ट्र आजाद हुआ। हमे अपने बाहुबल पर विश्वास है, हम शत्रु के सम्मुख दीनता न दिखाए। गीता के 'न दैन्यम् न पलायनम् वाक्य पर अडिग रहे। हम अपनी सतान को वैदिक साहित्य, वेद, रामायण, गीता, महाभारत आदि का अध्ययन कराए तथा राष्ट्र की विचारध ाराओ से जोडे। कारगिल मे हमारे वीरो ने अभूतपूर्व साहस दिखाकर राष्ट्र की रक्षा के लिए बलि दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा यद्यपि हम स्वतन्त्र हैं, पर विचारो मे परतन्त्र हैं। हमारे देश के नेताओ और आर्यसमाज के लोग सगठित हो तभी राष्ट्र मे एकता होगी। डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा – पितृभक्ति, देशभक्ति, राष्ट्र भक्ति सर्वोपरि हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सस्कार विधि लिखी हम विधि के अनुसार बच्चो मे सस्कार डाले। हम विचारो का प्रदूषण रोके। हम भाषा और सस्कृति का मान करे। भारत की नैतिकता सर्वोपरि है, जिसकी हम रक्षा करे।

गुरुकुल के कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० धर्मपाल ने कहा कि राष्ट्ररक्षा तभी सम्भव हे जब उसके टुकडे न हो। आज दूरदर्शन तथा समाचार पत्रो मे नग्न प्रदर्शन हो रहे हैं उन्हे रोकना चाहिए। हम एक होकर चलें और झुके नहीं तभी राष्ट्र सुरक्षित रहेगा।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य रामकिशोर शर्मा ने कहा हम वैदिक धर्म अपनाए। वेद के आधार पर 'स गच्छध्वं स वदध्वम्' अपनाए तभी एकता होगी। हम सभी सगठित होकर राष्ट्र की रक्षा करे।

यज्ञ कामनाओं को पूर्ण करता है

आर्यसमाज मुलुण्ड कालोनी में वेदप्रचार

आर्यसमाज मूलुण्ड कालोनी मे वेद-प्रचार कार्यक्रम दिनाक ३० अगस्त २००० से ३ सितम्बर २००० तक हर्षो-उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे भजनोपदेशक श्री आशाराम आर्य एव प्यारेलाल आर्य के सुमधुर भजन एव प० त्रिभुवन सिह जी के व्याववहारिक ज्ञान उपदेश हुए। यज्ञ के ब्रह्मा प० देव शास्त्री ने यज्ञ को कामनाओ की पूर्ति का साधन बताया एव यज्ञमय जीवन बनाने पर बल दिया।

रविवारीय कार्यक्रम मे अतिथि श्री सत्पाल सिह, अवर पुलिस आयुक्त ने कहा हमे अपने पूर्वजो की अमर धरोहर एव सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा करनी चाहिए।

वेद पथ पर ही चलकर प्रभु की कृपा का पात्र बन सकते हैं वर्त्तमान समय मे भारत मे स्वामी विवेकानन्द तथा विश्व मे महर्षि दयानन्द की मान्यताए एव शिष्यो की सख्या अधिक है। मुख्य अतिथि श्री आर०आर० सिह जी (पूर्व महापौर मुम्बई) ने आर्यसमाज की प्रशसा करते हुए कहा कि वर्तमान समय मे आर्यसमाज की महत्ती आवश्यकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कप्तान देवरात्न आर्य ने कहा कि आर्यसमाजी अपनी पहचान खोता जा रहा है। आज समाज मे हर व्यक्ति की अपनी अलग पहचान है, अत हमे भी अपनी पहचान को पुर्नजीवित करने की आवश्यकता है। स्वामी सुरेन्द्रानन्द, प० प्रकाश शास्त्री, प० नरेन्द्र वेदालकार, शिवदत्त सिह (महामन्त्री आर्यसमाज मु० का एव उत्तर भारतीय सघ), राजेश सिह (अधिष्ठात आर्यवीर दल) अनेक विद्वानो ने सम्बोधित किया। सभा अध्यक्ष स्वामी मेघानन्द ने कहा कि सत्य परमेश्वर का स्वरूप है सत्य मनुष्य को सदैव सुखी करता है। अत सत्य का अनुकरण करे।

सयोजक पी०आर० सिह ने धन्यवाद करते हुए कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुकरण एव वेद प्रचार का कार्यक्रम सभी के सहयोग से समाज करती रहेगी।

राष्ट्र को परोपकार की यज्ञीय संस्कृत से ओत प्रोत करें

गुलमोहर पार्क में चारों वेद के महायज्ञ की पूर्णाहुति पर आर्यविद्वानों का जनता से आह्वान

नई दिल्ली। रविवार १२ नवम्बर को प्रात ६ बजे दक्षिणी दिल्ली मे अवस्थित पत्रकार, कालोनी, गुलमोहर पार्क मे आठ दिनो से चल रहे विराट चारो वेदो के महायज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। पूर्णाहुति के समय गुलमोहर पार्क का बी ब्लाक का मध्यवर्त्ती विशाल पार्क धर्मपेमी जनता से भरापूरा था। पाचो यज्ञवेदियो पर समवेत स्वरो मे समर्पण के मन्त्र गूज रहे थे। आचार्य गुरुवचन शास्त्री, आचार्य योगेश शास्त्री आदि ने जनता का आह्वान किया – "यह यज्ञ विश्व की नाभि है। कण-कण मे व्याप्त परमेश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा तभी हो सकेगी, जब मानव प्रजापति, भगवान, ईश्वर, मानवता एव प्राणिमात्र के प्रति स्नेह भाव रखे और उनके प्रति 'स्वाहा' परूपी समर्पण का सकल्प करे कि वह अपने लिए नहीं 'इद न मम' की प्रतिज्ञा कर,जीवन के सार्थक करे। इसी के साथ वह 'विश्वमिदेव प्रार्थना मन्त्र के माध्यम से अपने स्वार्थ बुराइयो, दुर्व्यसनो को छोड कर विश्व एव मानवता-प्राणिमात्र के कल्याण के लिए प्रत्यनशील हो।

आर्य विद्वानो ने जनता का मार्गदर्शन करते हुए घोषित किया **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है, मानव अपने जीवन मे अपने दुरितो बुराइयो, अहकार का त्याग कर कल्याण मार्ग का सच्चा पथिक बने। इस अवसर पर वैदिक सत्सग समिति की प्रधाना डॉ० सुमेधा विद्यालकार ने छात्र-छात्राओ द्वारा वैदिक मन्त्रो की प्रस्तुति के बाद जनता का पथ-प्रदर्शन करते हुए कहा – 'ज्ञान तभी सार्थक होगा जब वह आचरण मे आएगा और भक्त मानव गुणवान बने।

इस अवसर पर गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य हरिदेव जी, आर्यसमाज मालवीय नगर के प्रधान प० मदनमोहन शास्त्री प० तीर्थराज श्री शास्त्री आदि अनेक विद्वानो ने जीवन मे परोपकार क लिए जीने की सस्कृति अपनाने की प्रेरणा दी।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 11-12 /01/2001 दिनाक ८ जनवरी से १४ जनवरी, २००१ Licence post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2000 11-12 /01/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

नई दिल्ली। प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी अमर हुतात्मा शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस साम्प्रदायिक सद्भावना दिवस के रूप म आयोजित किया गया। २५ दिसम्बर को प्रात १० बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार से एक भव्य शाभा यात्रा (साम्प्रदायिक सद्भावना यात्रा) प्रारम्भ हुई। लगभग ४०० आर्यसमाजो के हजारो कार्यकर्ता एव पदाधिकारियो ने इस यात्रा मे भाग लिया। यह यात्रा नया बाजार से चलकर लाहोरी गेट खारी बावली सीताराम बाजार, चावडी बाजार, नई सडक घटाघर चादनी चौक, दरीबा कला, जामा मस्जिद होती हुई लगभग २ बजे लालकिल मैदान पर जा पहुची तथा एक सभा में परिवर्तित हा गई।

सार्वदेशिक की ओर से सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक के मन्त्री एव दिल्ली सभा क प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य दिल्ली प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक, मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्त, श्री विमल वधावन एडवोकेट श्रीमती शशिप्रभा आर्या श्री रवि बहल, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० [illegible]र्मपाल हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के का[illegible] प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, आर्य ने श्री रामनाथ सहगल चौ० लक्ष्मी चन्द आदि आर्यनेता सम्मिलित हुए।

मार्ग मे स्वागत करने वालो मे प्रमुख सस्थाए थीं – आर्यसमाज नया बास, आर्यसमाज सीताराम बाजार, आर्य कन्या सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल, चावडी बाजार, दिल्ली स्थित गुरुकुल कागडी फार्मेसी का शाखा कार्यालय इत्यादि।

जब शोभा यात्रा चादनी चौक पहुची तो आर्य समाज दीवान हाल की ओर से ऐतिहासिक घण्टाघर पर, जहा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अग्रेज सरकार के फौजियो के आगे सीना तानकर ललकारा था –**"हिम्मत है तो गोली चलाओ"** भव्य मच सजाकर शोभायात्रिया का पुष्पमालाओ से स्वागत किया। स्वागत करने वालो में आर्यसमाज दीवान हाल के युवा मन्त्री डॉ० रविकान्त, प्रि० चन्द्रदव वैद्य इन्द्रदेव, उमेश गुप्ता ब्र० राजसिह तथा श्री विनय आर्य आदि प्रमुख थे। इसी स्थान पर आर्य समाज दीवान हाल की ओर स दशी चाय (गुरुकुल की चाय) आर्यसमाज गाधी नगर की ओर से सूजी का हलवा आर्यसमाज फुलबगश की ओर से अल्पाहार तथा नाइट क्वीन हवि की ओर से हवन सामग्री तथा शुद्ध पानी की थैलियो वितरित की गई।

शोभा यात्रा का सचालन आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली के मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा एव उप-मन्त्री श्री [illegible] भाटिया कर रहे थे। ❑

निर्वाचन

आर्यसमाज कैलाश - ग्रेटर कैलाश-१ नई दिल्ली

प्रधान	–	श्री महेन्द्र प्रताप आर्य
मन्त्री	–	श्री प्राणनाथ घई
कोषाध्यक्ष	–	श्री सुशील रत्न गुप्त

आर्यसमाज बैंक एन्कलेव, लक्ष्मीनगर दिल्ली-९२

प्रधान	–	श्री जेसाराम टुटेजा
मन्त्री	–	श्री जगदीश पाहुजा
कोषाध्यक्ष	–	श्री कृष्णलाल अरोड़ा

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

११६ गौतम नगर नई दिल्ली–४८ में अवस्थित गुरुकुल गौतमनगर में २० नवम्बर से १७ दिसम्बर तक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे चारो वेदों का ब्रह्मपारायण यज्ञ सम्पूर्ण हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार १७ दिसम्बर को हुई। इसी अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी इन्द्रवेश, श्री साहिब सिह वर्मा, डॉ० योगानन्द शास्त्री स्वामी शान्तानन्द, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री महेश विद्यालकार, हालैण्ड की माता सुमगला यति आदि आर्य नेताओ ने उद्‌बोधन किया।

इस अवसर पर ५ दिसम्बर को सायकाल महिला सम्मेलन गुरुकुल सम्मेलन १५ दिसम्बर को, आर्य सम्मेलन १६ दिसम्बर को किए गए। प० क्षितीज वेदालकार स्मृति प्रतियोगताए ६ एव १० दिसम्बर को आयोजित की गईं।

।। ओ३म्।।

आर्य पर्वों की सूची

सन् 2001 ई० तदनुसार विक्रमी सम्वत् 2057–58

क्र०स०		पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत् तिथि	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१		लोहडी	माघ बदी ४	२०५७	१३-१-२००१	शनिवार
२		मकर सक्रान्ति	माघ बदी-५	२०५७	१४-१-२००१	रविवार
३		वसन्त पचमी	माघ सुदी-५	२०५७	२६-१-२००१	सोमवार
४		सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-८	२०५७	१५-२-२००१	गुरुवार
५	ऋषि पर्व	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-१०	२०५७	१७-२-२००१	शनिवार
६		शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोधदिवस)	फाल्गुन बदी-१३	२०५७	२१-२-२००१	बुधवार
७		लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-३	२०५७	२६-२-२००१	सोमवार
८		नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-१५	२०५७	६-३-२००१	शुक्रवार
९		आर्यसमाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (नव-सम्वत्सर) उगाडी/गुडी पडवा/चेटि चाद	चैत्र सुदी-१	२०५८	२६-३-२००१	सोमवार
१०		रामनवमी	चैत्र सुदी-६	२०५८	२-४-२००१	सोमवार
११		वैशाखी	वैशाख बदी–६	२०५८	१३-४-२००१	शुक्रवार
१२		हरि तृतीया	श्रावण सुदी-३	२०५८	२३-७-२००१	सोमवार
१३	वेद जयन्ती समारोह	श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-१५	२०५८	४-८-२००१	शनिवार
१४		श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र वदी--	२०५८	१२-८-२००१	रविवार
१५		विजयदशमी	आश्विन सुदी-१०	२०५८	२६-१०-२००१	शुक्रवार
१६		गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी दिवस	आश्विन सु[illegible]-१२	२०५८	२८-१०-२००१	रविवार
१७		महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-१४	२०५८	१४-११-२००१	बुधवार
१८		स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	अगहन सुदी-५	२०५८	२३-१२-२००१	रविवार

***विशेष टिप्पणी :** आर्यसमाजे इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाए।*
देशी तिथियो मे घट-बढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

वेदव्रत शर्मा
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाउस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।**

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक २ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, १५ जनवरी, से २१ जनवरी, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

धर्मान्तरण निरोधक अभियान आज की आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा वनवासी कन्या प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

भारत के आदिवासी और पिछडे क्षेत्रो मे गरीब, निर्बल और असहाय लोगो को लोभ-लालच, छलकपट और दबाव के द्वारा ईसाई बनाने की गतिविधिया जोरो पर हैं जबकि धर्मान्तरण की इस बढती हुई प्रवृत्ति के खिलाफ मोर्चा लेने का साहस समूचा हिन्दू समुदाय जुटा नहीं पा रहा। इन विपरीत परिस्थितियो मे अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा आदिवासी क्षेत्रों के नागरिको मे धर्म-प्रचार के द्वारा आध्यात्मिक एव राष्ट्रवादी सुरक्षा कवच उपलब्ध कराने का जो कार्य माता प्रेमलता शास्त्री के नेतृत्व मे चल रहा है वही आर्यसमाज का असली कार्य है।

यह विचार लगभग उन सभी वक्ताओ ने किसी न किसी रूप मे व्यक्त किए जो ३ दिवसीय आदिवासी कन्या शिविर मे उद्बोधन और आशीर्वाद देने के लिए आमन्त्रित थे। यह शिविर २७ दिसम्बर से ४ जनवरी, २००१ तक अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की मन्त्रिणी माता प्रेमलता शास्त्री के नियन्त्रण मे आर्यसमाज मन्दिर रानी बाग मे आयोजित किया गया था। इस आशीर्वाद समारोह में वेदो के महान व्याख्याता पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने कहा कि दयानन्द सेवाश्रम सघ का जो पौधा स्व० श्री ओम प्रकाश त्यागी तथा रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी) ने लगाया था और जिसे सींचते-सींचते प० पृथ्वीराज शास्त्री जी ने अपने जीवन की आहुति दी उन्हीं की धर्मपत्नी माता प्रेमलता शास्त्री आज इसकी देख-भाल कर रही हैं। स्वामी जी ने कहा कि अन्य प्राणियों की आध्यात्मिक रक्षा सबसे महान धर्म है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ को जितना आगे बढना चाहिए था उतना नहीं बढ पाया। हमे सघ के कार्यों की प्रशसा सुनकर सन्तोष करके नहीं बैठ जाना चाहिए अपितु सारे देश के आर्यजनो को इस धर्मान्तरण विरोधी अभियान में भरपूर सहयोग देना चाहिए।

वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने कहा कि आज समाज मे जो भी गम्भीर कार्य होते हैं उनमे सदा धन का अभाव बना रहता है क्योकि गम्भीर कार्य दिखावट और सजावट से अछूते होते हैं। जबकि आजकल दिखावट और सजावट को देखकर ही लोग दान देने के लिए प्रेरित होते हैं। आर्य जनता बेशक सिद्धान्त रूप मे धर्मान्तरण की गम्भीरता को समझती है परन्तु व्यवहार रूप मे आर्यजनो के प्रयास को ही इस महान क्षेत्र की ओर मोडने की प्रबल आवश्यकता है। यदि देश के राष्ट्रवादी समुदाय ने इस धर्मान्तरण निरोधक अभियान के महत्त्व को न समझा तो वह दिन दूर नहीं जब आर्यसमाज मन्दिर भी धरे के धरे रह जाएगे और देश पर पुन विदेशी ताकतों और विदेशी सभ्यता का कब्जा हो जाएगा।

इस आशीर्वाद समारोह मे सार्वदेशिक सभा के उप-मन्त्री श्री जगदीश आर्य, आर्यसमाज दीवान हाल के मन्त्री डॉ० रविकान्त, डॉ० कैलाश चन्द्र तथा श्री जैमिनी आदि विद्वानो एव आर्यनेताओ ने भी अपने उद्बोधन दिए।

मच सचालन करते हुए श्री विमल वधावन ने घोषणा की कि भविष्य मे प्रत्येक शिविर मे सहयोग करने वाले महानुभाव को सेवाश्रम रत्न से अलकृत किया जाएगा। इसका शुभारम्भ करते हुए उन्होने सर्वश्री चमनलाल महेन्द्र, रामलाल आहूजा, वीरेन्द्र सैनी, जितेन्द्र खट्टर तथा माता ज्ञान देवी के नामो की घोषणा की। दयानन्द सेवाश्रम सघ का कार्य सुदूर क्षेत्रो मे करने वाले पाच सहयोगियो को भी सेवाश्रम रत्न से अलकृत करने की घोषणा की गई, जिनके नाम हैं ब्र० प्रशान्त आर्य (आसाम- नागालैण्ड), कु० शारदा आर्या (अरुणाचल प्रदेश), श्री अमर सिह, ब्र० बाबूराम तथा कु० रश्मि (मध्यप्रदेश)।

इस शिविर मे ५० से अधिक कन्याए विशेष रूप से सम्मिलित हुई थीं। जिनको लाने के लिए दयानन्द सेवाश्रम सघ का नेतृत्व उनके क्षेत्रो मे जा-जाकर सम्पर्क करता है। इसमे माता प्रेमलता शास्त्री, वेदव्रत मेहता तथा श्रीमती ईश्वर रानी मेहता का सर्वप्रमुख प्रशसनीय तथा अभिनन्दनीय योगदान रहता है। शिविरो की व्यवस्था विगत् लगभग १८ वर्षों से आर्यसमाज रानी बाग के कर्मठ और लगनशील अधिकारियो के सहयोग से इसी आर्यसमाज मन्दिर से की जा रही है।

श्री वेदव्रत शर्मा की बहन दिवंगत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा की बहन श्रीमती निर्मल शर्मा का आज दिनांक १७ जनवरी, को ६२ वर्ष की अवस्था में आज अचानक देहावसान हो गया। वे कुछ ही दिन से अस्वस्थ थी। उनके पीछे परिवार में उनके पति श्री सुदर्शन जी तथा सुपुत्र श्री राकेश शर्मा है। श्रीमती निर्मल शर्मा के पार्थिव शरीर को वैदिक रीति अनुसार अग्नि के समर्पित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में तैयारियां जोरों पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे आगामी २३, २४, २५ एव २६ मार्च २००१ की तिथियो में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियो का अवलोकन करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट २ दिवसीय दौरे से वापिस आ गये हैं।

मुम्बई के आर्यजनो ने प्रत्येक कार्य के लिए स्थानीय आर्यजनो की समितिया तैयार करके कार्य प्रारम्भ कर दिया है। विभिन्न भवनो, धर्मशालाओ मे लोगो के आवास की बुकिंग करवा दी गई है।

सभामत्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सारे देश के आर्यजनो से विशेष निवेदन करते हुए कहा है कि वे अपनी व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से सम्मेलन मे उपस्थित होने की पूर्व सूचना आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई के पते पर अवश्य भेजे अन्यथा आवास आवटित करने मे असुविधा हो सकती है।

इस सम्बन्ध मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समस्त कर्मठ कार्यकर्त्ताओ की एक महत्त्वपूर्ण बैठक २७ जनवरी शानिवार को दोपहर बाद ३ बजे आर्यसमाज हनुमान् रोड मे बुलाई गई है।

महर्षि के पांच प्रेरक प्रसंग

परोपकार एक महायज्ञ हैः पूर्णाहुति में सर्वस्व स्वाह का संकल्प

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत भूमि का व्यापक भ्रमण करते हुए अकाल पीडित प्राणियो का करुण क्रन्दन स्वय सुना था। अवध आदि प्रान्तो मे भ्रमण करके वहा के दीन-दुर्बलों दुखियो की हृदय-विदारक दशा अपनी आखो से देखी थी। विन्ध्याचल आदि प्रदेशो की यात्रा करते हुए कोल, भील और सथाल आदि भारत मा के पुत्रों की अमानुष अवस्था देखी थी। उन्होंने क्षत्रियो के ऐतिहासिक स्थानो में जाकर उनके तेजहीन क्षीण देहों को दृष्टिगोचर किया था। वैश्यों की अवस्था भी उनसे छिपी नहीं थी। साम्प्रदायिक राहु सत्य-धर्म के सूर्य को ग्रस्त करने के लिए जूझ रहा था। उन्होने देखा कि ईसाई धर्म की उफनती बाढ भोली ग्रामीण जनता को समेटने के लिए हाथ-पैर मार रही है। उन्हे मालूम था कि झूठे सस्कारों का जहरीला कीडा सामाजिक जीवन को खोखला कर रहा है।

किसी बडे कार्य को अकेले साधना कठिन होता है, इसलिए उन्होंने समाज के उच्चवर्गीय ब्राह्मणो को जगाने की कोशिश की। आगरा, ग्वालियर, जयपुर, पुष्कर अजमेर आदि स्थानो का पण्डित वर्ग अपनी विरासत खो चुका था। ऐसे में उन्हें हरिद्वार मे हर १२ वर्षों मे होने वाले कुम्भ पर साधु-सन्यासियो के सम्मिलन पर आशा की एक ज्योति का आभास हुआ, परन्तु सारा प्रयत्न करने पर भी वहा मेले मे एक भी सत्य का पुजारी साधु-सन्यासी नहीं मिला, जो बन्धु-प्रेम से प्रेरित हो, जो पर-पीडा की अनुकम्पा से ओत–प्रोत हो। गगा के पवित्र जल के किनारे भगवान भक्ति के साथ जनता के प्रेम की माला जपता एक साधक दिखाई नहीं दिया। ऐसे समय महाराज ने अपने आपको एकाकी अनुभव किया, फलत उन्होने चिन्तन किया कि परोपकार एक महायज्ञ है, उसे पुर्ण करने के लिए उन्होंने दीक्षा ली थी, फलत यह यज्ञ उस समय तक पूर्ण न हो सकेगा, जबतक उसकी पूर्णाहुति मे सर्वस्व की आहुति न दी जाए।

आवश्यकताओ का त्याग

स्वामीजी ने सारे उपकरण वहीं त्याग दिए और महाभाष्य का एक ग्रन्थ एक सोने की मोहर और मलमल का एक थान श्री गुरु विरजानन्द जी की सेवा मे मथुरा भिजवा दिए। पुस्तके आदि समस्त सामग्री त्यागते देखकर कैलाश पर्वत ने स्वामी जी से जिज्ञासा की– **"आप यह क्या करने लगे?"** स्वामीजी का उत्तर था– **"जब तक आवश्यकताएं कम न की जाएंगी, पूरी स्वतन्त्रता नही मिल सकती।"** स्वामीजी पुस्तके आदि त्याग कर शरीर पर राख लगा कौपीन धारणकर मौन हो गए, परन्तु जो महात्मा मौन से सत्य को विशिष्ट मानता रहा हो, वह कब तक चुप रहते। एक दिन उनकी कुटिया पर किसी ने ललकार लगाई –" **निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्- वेद से भागवत उत्तम है।"** सत्य की निन्दा स्वामीजी कैसे सहते, उन्होंने मौन व्रत छोडकर भागवत की आलोचना शुरु कर दी।

हिमालय की ३ चोटियां भारत भूमि की रक्षिका

स्वामीजी कुटिया से निकलकर सप्तस्त्रोत से ऊपर हिमालय की चोटिया देखी। उन्होने उन शिखरो में परोपकार, परहित और तपस्या के शिखर देखे। उन्होने अनुभव किया कि हिमालय की ये चोटिया ही सागर से उठे मेघो को उत्तर भारत में जाने से रोक कर भारत को लौटा रही हैं, फलत स्वामी जी ने प्रण किया कि जिस तरह प्रकृति भारतभूमि की निरन्तर रक्षा कर रही है, उसी तरह ईशकृपा से मिला यह ज्ञान धर्म प्रचार और लोकहित मे लगा कर उसे सफल करूगा। क्रियात्मक जीवन के ज्योति स्तम्भ कर्मयोग के आदर्श ऋषि दयानन्द के सप्तस्त्रोत से चलकर ऋषिकेश पहुचे। वहा पाच-छ दिन रहकर हरिद्वार-कनखल होते हुए लण्ढौरा मे आ विराजे। वहा वह तीन दिन निराहार रहे। भूख से व्याकुल होकर उन्होंने गगातीर वासी खेत के स्वामी से बैंगन लेकर क्षुधा-वेदना शान्त की। वहा से शुक्रताल और परीक्षितगढ होते हुए गढ मुक्तेश्वर पहुचे वहा स्वामीजी एक माझी की कुटिया के समीप दिन–रात रेत मे पडे रहे। कोई पास आता तो उसे सस्कृत में उपदेश देते थे। वहा भी तीन दिन निराहार रहे। चौथे दिन जब माझी की रोटी आई तो उसने विचारा कि यह परमहस तीन दिन से पडा है, न उसके पास कोई अन्न लाया और न यह मागने गया। उसने स्वामीजी के पास जाकर अपनी रोटी में से आधी तोडकर उन्हे दी स्वामीजी ने उसे ग्रहण कर लिया।

– शेष भाग पृष्ठ ५.पर

आपका कालम

माननीय पाठकों को हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि उपरोक्त शीर्षक से एक नियमित स्तम्भ प्रारम्भ करने की योजना है जिसमें आर्यसमाज के कर्मठ, त्यागी, तपस्वी एव आधारभूत कार्यकर्ताओं, नेताओ आदि से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद जीवन झाकिया, महत्त्वपूर्ण घटनाए, चिन्तन शैली तथा अन्य विशिष्ट कार्यों को सचित्र प्रकाशित किया जाएगा। यह कार्य आप सबके सहयोग के बिना असम्भव है। आपके शरीर के माध्यम से जब कभी भी कोई श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हों अथवा पूर्वकाल मे हुआ हो जिससे आपका उत्साहवर्धन हुआ हो और जिसकी आप अन्य आर्य महानुभावों से भी अपेक्षा करते हों ऐसी प्रेरणादायक गतिविधियों को नि सकोच अपने चित्र सहित **सार्वदेशिक प्रकाशन, १४८८, पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज नई दिल्ली-२ के पते पर भिजवा दें अथवा मुझे दूरभाष (निवास : ७२२४०६०, प्रैसः ३२७४२१६, ३२७०५०७) पर लिखवा दें।** – विमल वधावन

अनाथों को सनाथ बनाने में लगाया सारा जीवन

कुछ व्यक्ति आर्य समाज की विचारधारा को छूते हैं और छूकर अपने जीवन मे उस विचारधारा का एक निश्चित मात्रा में प्रभाव उत्पन्न कर लेते हैं। यह मात्राए प्रतिशत में अलग-अलग हो सकती हैं। मजाक की भाषा मे कहा जा सकता है कि कोई १० प्रतिशत आर्यसमाज है, कोई ५० प्रतिशत और कोई इससे भी अधिक। परन्तु असली आर्यसमाजी उसी को माना जाता है जो सिद्धान्तों की कसौटी पर १०० प्रतिशत वैदिक विचारों से ओत-प्रोत हो। इस कालम मे १०० प्रतिशत आर्यसमाजियो के जीवन को ही प्रेरणा रूप मे प्रकाशित करने का विचार है। श्रृखला के इस सप्ताह मे हमारे सामने तस्वीर है **पण्डित महेन्द्र कुमार शास्त्री जी की।** ८२ वर्षीय शास्त्री जी ने आर्यसमाज को केवल छुआ नहीं अपितु ऐसा गहरा प्रवेश किया कि कोई अजनबी भी उनके मुख से निकले २-४ वाक्यो में ही समझ सकता है कि इतनी स्पष्ट राष्ट्रवादी, सामाजिक आध्यात्मिक विचारधारा और दयानन्द के सच्चे अनुयायियों में ही हो सकती है।

शास्त्री जी का जन्म लगभग १९१८ ई० के आसपास जिला मेरठ मे हुआ परन्तु आर्यसमाज मे प्रविष्टि पजाब की धरती से ही हुई और उसके उपरान्त पाकिस्तान बनने तक कार्यक्षेत्र अविभाजित पजाब ही रहा। शास्त्री जी की गतिविधियों का मुख्य दृष्टिकोण निर्बलो और असहाय बच्चो का उत्थान ही रहा। केवल सामाजिक उत्थान ही नहीं अपितु आध्यात्मिक भी। शुद्धि के कार्यों को शास्त्री जी ने पूरी तन्मयता और निर्भयता के साथ सम्पन्न किया। इसे शास्त्री जी आध्यात्मिक रूप से अनाथ व्यक्तियों को वैदिक आश्रम की सज्ञा देते हैं।

शास्त्री जी की इन्हीं भावनाओं को एक नियमित मार्ग मिल गया जब उन्हें दरियागज पटौदी हाऊस स्थित आर्य अनाथालय की देखरेख का सुअवसर १९५१ ई० में मिला।

५० वर्षों तक अनाथों के बीच रहते हुए अनाथों को एक पिता ही नहीं बल्कि अपने पूरे परिवार को उनकी सेवा के लिए उपलब्ध करा दिया। यह अनाथालय आज समूचे विश्व में प्रसिद्ध है जहा एक हजार से भी अधिक बच्चे शास्त्री जी की देखरेख में जीवन निर्माण कर रहे हैं। यह जीवन निर्माण निजी साधारण अनाथालय के समान नहीं है बल्कि जहा १९५० में बच्चों को पिता का प्यार मिला करता था अब अनाथालय में जाकर ऐसा लगता है जैसे शास्त्री जी के रूप में दादा का दुलार मिल रहा है।

किसी भी सेवा को आयु के इस मुकाम तक पहुंचाना सरल कार्य नहीं होता इसीलिए सरकार ने भी सेवानिवृत्ति की आयु निर्धारित कर रखी है। परन्तु पवित्र सामाजिक कार्यों से निवृत्ति कभी नहीं मिल सकती और न ही किसी को इसकी कामना करनी चाहिए। इसी सिद्धान्त पर ही शास्त्री ने अपना सारा जीवन इन सेवा कार्यों में लगा दिया है और बडे उत्साह पूर्वक अनुमानतः हर पाच मिनट के बाद शास्त्री जी के मुह से निकलता है–महर्षि दयानन्द जी का यही विचार है। अपने जीवन पर भी महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए वे सत्यार्थ प्रकाश का हवाला देते हुए कहते हैं – **"जब मनुष्य शुभकर्म करता है तो उसके मन में हर्षोल्लास की लहरें उठती हैं, सुख, शान्ति और आनन्द से मन भरपूर हो जाता है। इसके विपरीत जब मनुष्य पाप कर्म या अशुभ कर्म करता है तो लज्जा ,भय और शंका की लहरें मन को बेचैन करती हैं।** – विमल

बोध कथा

प्रत्येक आर्य सदा आर्य-मर्यादा का पालन करे

[illegible]ष सम्वत् १९३१ मे स्वामीजी सूरत से चलकर भरुच मे सुशोभित हुए, वहा भृगु आश्रम मे उन्होने आसन लगाया। स्वामीजी भोजन के बाद अपने कर्मचारियों को भी कुछ काल के लिए विश्राम की अनुमति दे देते थे। एक दिन एक विद्यार्थी स्वामीजी की ओर पाव करके सो गया। जब सारे कर्मचारी जाग गए तब महाराज ने उनको अपनेपास बुला कर कहा–**"प्रत्येक आर्य को आर्य-मर्यादा काक पालन करना चाहिए, बिना बुलाए बोलना, बडों की बातों में स्वय बीच में बोलने लग जाना आर्य मर्यादा के विरुद्ध है। अपने पूज्य व्यक्तियो की ओर पीठ करना या पाव करके सोना आर्य-मर्यादा के विरुद्ध है।"** भरुच मे एक दिन स्वामीजी ने एक विद्यार्थी को कुए से जल लाने के लिए कहा। विद्यार्थी बोला मैं ब्राह्मण हू, मेरा काम पानी ढोना नहीं है। उस दिन स्वामीजी ने साझ के समय सब कर्मचारियों को एकत्र कर कहा–**"जिसके निकट कोई रहता है और जिनसे विद्या ग्रहण करता हो, उसके वचन को अवश्य मानना चाहिए। उसकी आज्ञा कभी भंग नहीं करनी चाहिए।"** फिर स्वामीजी ने उन्हें कहा–**"किस प्रकार गुरु-सेवा करनी चाहिए, इस बारे अपबीती सुनाता हूं। जिन दिनों मैं मथुरा में अध्ययन करता था तो अपनी स्मरण-शक्ति और विनय के कारण गुरु दण्डीजी की अपार कृपा का पात्र बन गया, फलत. सहपाठी ईर्ष्या करने लगे, वे सब गुरुजी से बोले- महाराज, दयानन्द बडा अविनीत है, वह आपके सामने तो नम्रता से मीठी बातें बनाता है, परन्तु छात्रों के सामने आपकी नकल करता है। लाठी लेकर आखे बन्दकर वह आपकी हसी उडाता है, परन्तु क्या करें, आप तो उसे अपना परम विश्वस्त विनीत मानते हैं। मेरे सहपाठियों की यह चाल चल गई, गुस्से में दण्डी जी ने कटु वचन बोले और लाठी लेकर मुझे इतना मारा कि घाव हो गया। स्वामी जी ने नगी बाह करके उस घाव का निशान दिखाया। हा, उस दिन से फिर किसी कर्मचारी ने उनके वचन का उल्लघन नहीं किया।"**

– नरेन्द्र

आइए, मिलकर सतयुग लाएं

आसते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भग।
कलि शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापर।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्।।

सोते रहना ही कलियुग है, निन्द्रा छोड कर जागना द्वापर है। उठ खड़ा होना त्रेता है और अग्रसर होना ही सतयुग है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

सतयुग आना सम्भव : एकता और कड़ी मेहनत से

नई शती और नई सहस्राब्दी के पदार्पण के साथ नए वर्ष मे कुछ नए लक्ष्य और नए दायित्व भी आ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस नए वर्ष मे ही महर्षि के जन्म, ऋषि-बोध और आर्यसमाज की स्थापना के सवा सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह सर्वथा उपयुक्त है कि इस शुभ अवसर पर मुम्बई में २३ से २६ मार्च तक अन्तर्राष्टीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। यह विराट आर्य महासम्मेलन न केवल आर्यों एव आर्यसमाज के जीवन मे एक नई ज्योति प्रज्वचलित करे, प्रत्युत वह भारत मे ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में नई चेतना और नए आह्वान के साथ नए युग का पदार्पण कर सके तो उसकी सच्ची सार्थकता होगी। आज राष्ट्र के स्वाधीन व गणतन्त्री होने के बावजूद हम भूल नहीं सकते कि देश से गरीबी, भूख, रोग, अशिक्षा, और विषमता का अन्त नहीं हुआ है। इसी के साथ यह भी कटु तथ्य है कि हमारे पश्चिमी पडोस देश ने चार बार आक्रमण किए हैं। आज भी वह आतंकवाद के माध्यम से और भविष्य मे कभी भी सीधे हमे चुनौती देता दीख रहा है, ऐसे मे जहा हमे भावी चुनौती से जूझते समय इस सकट के स्थायी समाधान की व्यवस्थित योजना बनानी चाहिए, वहीं हमे ऐसे प्रयत्न और कार्यक्रम बनाने चाहिए जिससे भारत विश्व का एक अग्रणी, पूर्णतया स्वावलम्बी, शक्तिसम्पन्न वैज्ञानिक महाराष्ट्र बने, जहा गरीबी, भूख, रोग, निरक्षरता विषमता का अन्त हो। ये प्रयत्न और कार्यक्रम असम्भव नहीं है यदि उनके लिए सभी राष्ट्रीय दल, सजग राष्ट्रीय जनता और सुधी नेता मिलकर कार्य करे। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत के स्वातन्त्र्य सग्राम मे योगदान करने वालो मे आर्य जनो की निर्णायक भूमिका थी। भारत राष्ट्र मे सच्चा सतयुग आ सकता है यदि सभी सुधी राष्ट्रजन विशेषत आर्यजन् इस बारे मे पूरी जिम्मेदारी और एकता से कार्य करे। जीवन मे कठिन या असम्भव कोई लक्ष्य नहीं है, यदि उसे प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित कार्यक्रम बनकर सच्ची एकता और ईमानदारी से कार्य किया जाए। कोटि-कोटि मानवशक्ति, अपूर्व भौतिक ससाधनो और अपूर्व प्रतिभा का समुचित सदुपयोग किया जाए तो उक्त सभी कार्यक्रम एव लक्ष्य पूर्ण किए जा सकते हैं। भारतीय गणतन्त्री राष्ट्र नई शती और सहस्राब्दी मे विश्व का एक अग्रणी, पूर्ण स्वावलम्बी, शक्ति सम्पन्न वैज्ञानिक साधन सम्पन्न महाराष्ट्र बने, इस सम्बन्ध मे राष्ट्र के शासको और नीति-निर्धारको का दायित्व है, उन्हे राष्ट्र की वस्तुस्थिति का मूल्याकन कर समुचित राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित कर उस बारे मे राष्ट्रीय कार्यक्रम बना कर उन्हे कार्यान्वित करना चाहिए।

स्वतन्त्र भारतीय गणतन्त्र नई शती और सहस्राब्दी मे सब अभावो, अपूर्णताओ से उन्मुक्त होकर प्रत्येक दृष्टि से अग्रणी महाराष्ट्र बने इस विषय मे आर्यजनो और आर्यसमाज को भी अपनी यशस्वी कर्मठ भूमिका अपनानी चाहिए जिस तरह राष्ट्र मे स्वाधीनता सग्राम मे उन्होने अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत की थी। यद्यपि सस्था और आर्य जनो को दैनन्दिन सक्रिय राजनीति से बचाना चाहिए, परन्तु जब राष्ट्र का वर्तमान और भविष्य दाव पर लगा हो तो उसमे प्रत्येक को अपनी राष्ट्रनिष्ठा, प्रामाणिकता को गम्भीरता से खरा सिद्ध करना चाहिए। इस वर्ष आर्यसमाज के यशस्वी सक्रिय जीवन मे सवा सौ वर्ष के इतिहास से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। हमे महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी, लेखराम जी आदि सभी आर्य नेताओ के त्याग बलिदान से पूर्ण जीवनों से त्याग, तथा समर्पण का सन्देश लेकर उनसे सस्था और राष्ट्र जनो के जीवन मे ओत-प्रोत करना चाहिए। यह चिन्ता और परीक्षा का विषय है कि अपनी अपूर्व मानवशक्ति, भौतिक ससाधनो और अपूर्व वैज्ञानिक तकनीक प्रतिमा के बावजूद विश्व के शक्तिसन्तुलन और व्यवस्थित आकलन मे स्वाधीन भारत क्यो पिछड गया ?

नई शती और नई सहस्राबदी मे राष्ट्र के सूत्र सचालकों को भावी राष्ट्रीय नीति-निर्धारण करते समय आकस्मिक चुनौतियो से जूझने के साथ राष्ट्र के लक्ष्य और कार्यक्रम निर्धारित करने चाहिए। राष्ट्र की सभी सीमाए सुरक्षित हो, उसका वर्तमान ओर भविष्य न केवल उज्ज्वल हो, प्रत्युत वह विश्व मे अपनी मानवशक्ति, प्राकृतिक भौतिक ससाधनो और वैज्ञानिक तकनीकी प्रतिभा का सदुपयोग कर विश्व मे अपनी उचित सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करे, इस बारे मे व्यवस्थित नीति और कार्यक्रम बनने चाहिए। नई शती और नई सहस्राब्दी मे आर्यसमाज और आर्यजनो की अतीत की तरह अपनी सक्रिय प्रेरक भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। मार्च के अन्तिम सप्ताह मे मुम्बई मे हो रहा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन इस सम्बन्ध मे उचित मार्गदर्शन कर सकता है। अधिक अच्छा हो कि इस आर्य महासम्मेलन मे भारत एशिया और विश्व के लिए आर्यसमाज और आर्यजनो का व्यविस्थत कार्यक्रम बनाया जाए। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उदात्त सन्देश दिया था। हम भारतीय आर्य विश्व भर मे आर्यत्व का सन्देश दे और हम 'इद न मम', – यह मेरे लिए नहीं प्रत्युत प्रजापति अग्निस्वरूप, समाज राष्ट्र और मानवता की उन्नति, अभ्युदय और कल्याण के लिए आहुति है – इस सकल्प के साथ नई कार्य योजना कार्यक्रम के साथ कार्य करे तो सब मिलकर सच्चे सतयुग की प्रतिष्ठा कर सकते हैं। वस्तुत सोते रहना ही कलियुग है, निद्रा छोड कर जागना द्वापर है, उठ खडा होना त्रेता है और अग्रसर होना ही सतयुग है। आर्यसमाज और महर्षि के सच्चे जीवन-दर्शन से आर्यसमाज और आर्यजन एकता रखकर कडी मेहनत करे तो इस परीक्षा की घडी मे सतयुग लाना सम्भव हो सकता है। भारत राष्ट्र के स्वाधीनता सग्राम मे आर्यजना ने अपनी यशस्वनी भूमिका प्रस्तुत की थी, यदि नई शती और सहस्राब्दी मे आर्यजन पूरी ईमानदारो, श्रद्धा निष्ठा और एकता से राष्ट्र के उन्नयन-अभ्युदय मे अपना योगदान करे तो आर्यसमाज और आर्यजनो के माध्यम से वस्तुत नई शती और सहस्राब्दी मे एक नए युग का शुभारम्भ हो सकता है। आइए सभी आर्यजन अपने तन-मन-साधनो से राष्ट्र का कायाकल्प करने के लिए इद राष्ट्राय स्वाहा इद न मम' यह राष्ट्र के लिए है मेरे लिए नहीं का व्रत-सकल्प करे। ❑

दिशाहीन शिक्षा

हमारी वर्तमान शिक्षा-पद्धति सक्षम लोगो की नहीं, केवल शिक्षितो की गिनती बढा रही है। एक डिग्री प्राप्त बिजली इजीनियर किसी सस्था या कम्पनी मे नौकरी कर सकता है, परन्तु घरेलू उपयोग के बिजली यन्त्र ठीक नहीं कर पाता। उस मरम्मत के लिए गली-मोहल्ले की दुकान से किसी कारीगर को ही बुलाना पडता है। शिक्षा पद्धति को अधिक व्यावहारिक और रोजगार के उपयुक्त बनाए जाने की जरूरत काफी समय से अनुभव की जा रही है। स्कूलो और कालेजो मे दी जा रही शिक्षा अधिक व्यावहारिक और असली जिन्दगी के उपयुक्त बनाई जानी चाहिए।

– सर्वेश गांधी, रोहिणी, दिल्ली

नमस्ते-नमस्कार कहें

हम जब एक दूसरे से मिलते या विदा होते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के लिए शुभकामना करता है। उस भावना को प्रकट करने के लिए एक दूसरे का अभिवादन किया जाता है। विभिन्न देशो मे अभिवादन की कई रीतिया प्रचलित है। इसमे 'नमस्ते' सर्वाधिक प्रचलित है और भारत का राष्ट्रीय और अन्तरार्राष्ट्रीय अभिवादन माना जाता है।

आर्यसमाज के अनुयायी उसे वैदिक अभिवादन कहते है। खेद है कि उसी क्रम मे हमारी नई पीढी एक दूसरे से मिलने पर शिष्टाचार मे 'हैलो हाय' बोलकर दूसरे का हालचाल पूछते है, जो भारत की गौरवशालिनी परम्परा के सर्वथा प्रतिकूल है। अधिक अच्छा हो कि नई पीढी आपसी भाई चारे-सद्भावना के लिए नमस्ते नमस्कार या प्रणाम की शालीन भारतीय परम्परा ही अपनाए।

– चन्द्रकान्ता यादव, चादीतारा, चन्दौली, उ०प्र०

बढती नशाखोरी

नई पीढी मे नशाखोरी दीमक की तरह फैलती जा रही है। सच कहा जाए तो युवा वर्ग मे यह एक फैशन बन गया है। सिगरेट के पैकेट या शराब की बोतलो पर वैद्यानिक चेतावनी लिखी होने के बावजूद इसकी खपत निरन्तर बढती जा रही हे। असल मे चिन्तन और मनन इस बात पर किया किया जाना चाहिए कि स्कूलो और कालजो के छात्रो और छात्राओ मे यह जो नशाखोरी भयावह रूप से फैल गई है उससे कैसे रोका जाए, एक ओर कहा जाता हे कि युवा देश मे भविष्य है और दूसरी ओर इस तरह की समस्याओ को सुलझाने का कोई सफल प्रयास नही किया जा रहा है।

– कविता चौधरी, पत्रकारिता विभाग, दक्षिणी परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

न किरन्यस्त्वावान सप्तकम्

तेरे जैसा संसार में कोई नहीं

– मनोहर विद्यालंकार

(१) हे त्रिलोकी के स्वामिन् ! आपके जैसा शक्तिशाली कोई नहीं

त्व भुव प्रतिमान पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहत पतिर्भू । विश्वमाप्रा अन्तरिक्ष महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान्।।

ऋ० १–५२–१३

सव्य आगिरस.। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे परमेश्वर (त्व पृथिवया प्रतिमान भुव) आप पृथ्वी के परिमाण (निर्माण) कर्ता हैं और (ऋष्ववीरस्य बृहत पति भू) महान् तथा दर्शनिय सुवर्ग अर्थात स्वय प्रदीप्त ग्रहनक्षत्रो के स्वामी हो तथा (विश्व अन्तरिक्ष महित्वा आप्रा) सम्पूर्ण अन्तरिक्ष को अपनी महिमा से व्याप्त किए हुए हो – सर्वव्यापक हो (सत्य अद्धा) अत वास्तव मे ही (अन्य नकि त्वावान्) आपके समान कोई दूसरा नहीं है।

अर्थ प्रमाण – बृहत् – बृहद्वै सुवर्गो लोक । ताण्डय १–१–३३ स्वर्गो लोको बृहत्। काठ

वीरस्य – न ह वै स वीरोयोऽन्पस्यवीर्यमनुवीर । सह वाव वीरो य आत्मन एव वीर्य मनुवीर । जै० २–२८२ अत स्वय प्रदीप्त ग्रहनक्षेत्रो का।

अद्धा – इत्था=अत, बट् श्रत् सत्रा अद्धा इत्था अत्रृतम्। सत्यनामसु नि० ३–१०

निष्कर्ष – आप सर्वव्यापक (ख ब्रह्म) हैं, आप के समान कोई नहीं।

(२) आपके समान न कभी कोई था, न है, न कभी होगा

आ पप्रौ पार्थिव रजो बद्बधे रोचना दिवि।

न त्वावॉं इन्द्र कश्चन न ज्ञातो न जनिष्यतेति विश्व ववक्षिथ।। ऋ १–८१–५

गोतमो राहूगण.। इन्द्र। पङ्क्तिः।

अर्थ – हे (इन्द्र) परमेश्वर! आपने ही (पार्थिव रज आ पप्रौ) पार्थिवलोक तथा हमारे शरीर को अपने आस्तित्व से व्याप्त किया (भरा) हुआ है और (दिविरोचना बद बधे) आपने ही द्युलोक मे सूर्यादि चमकते हुए ग्रह नक्षत्रो को तथा मस्तिष्क रूपी द्युलोक मे प्रदीप्त ज्ञान-विज्ञान के नक्षत्रो को बाधकर स्थापित किया हुआ है। हे इन्द्र! (त्वावान् न कश्चन) तेरे समान बली और विज्ञ कोई नहीं है (न जात) न कोई उत्पन्न हुआ है और (न जनिष्यते) न कोई उत्पन्न होगा। आप (विश्व अतिवक्षिथ) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बडी कुशलता वहन (धारण) कर रहे हैं।

, **निष्कर्ष** – वह प्रभु अद्वितीय हैं। उनका सामर्थ्य अद्भुत है। आश्चर्य होता है, इतने बडे लोक-लोकान्तरो को आकाश मे अत्यन्त तीव्र वेग से भागते देखकर फिर भी उनमे कभी टकराव नहीं होता।

ववक्षिथ - ववक्षे धारणे। आख्यातानुक्रमणी।

(३) हे सर्वज्ञ ! आपके जैसा भविष्य का ज्ञाता कोई नहीं

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावॉं अस्ति देवता विदान ।

न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुध्य प्रवृद्ध।। ऋक् १–१६५–७

अगस्त्य । इन्द्र.। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (मघवन्) ऐश्वर्यशालिन प्रभो! (नु ते अनुत्तमनकि) तेरी प्ररेणा के बिना कुछ (पत्ता) भी नहीं हिल सकता और (विदान देवता त्वावान् नकि) न ही तेरे जैसा ज्ञानी तथा दिव्यगुण सम्पन्न औघड दानी कोई है। हे (प्रवृद्ध) प्रत्येक दृष्टि से सबसे अधिक बढे हुए प्रभो! आप (यानि करिष्या) कब क्या करेंगे ? इस बात को (न जात न जायमान नशते) न तो किसी उत्पन्न हुए व्यक्ति ने जाना है और न कोई उत्पन्न होने वाला जान सकेगा, इसलिए आप अपनी व्यवस्था के अनुसार जो ठीक समझते हैं वह (कृणुहि) करते रहिए। नशत् व्याप्तिकर्मा। नि० २–१८ नशतेगतिकर्मा। गतेस्त्रयोऽर्था ज्ञान गमन प्राप्तिश्च।

निष्कर्ष – यदि यह मन्त्र ठीक है तो परमेश्वर के किसी कृत्य के सम्बन्ध मे भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, किन्तु आधुनिक विज्ञान बहुत सी प्राकृतिक घटनाओ (जो परमेश्वर के कृत्य हैं) की भविष्यवाणी करने का दावा करता है।

(४) हे अमृत ! आपके समान जन्म-मरण के चक्र से मुक्त कोई नहीं

इम उत्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कै । श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावॉं-अन्यो अमृत त्वदस्ति।।

ऋ ६–२१–१०

वार्ह स्पत्योभरद्वाजः। इन्द्रः त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (पुरु शाक) अत्यन्त शक्तिशलिन् तथा (प्रयज्यो) प्रकृष्ट रूप से पूजनीय तथा सम्माननीय प्रभो! (इमे जरितार) ये स्तोतागण (त्वा) आपकी (अर्के) स्तोत्रो तथा सत्कर्मो द्वारा (अभ्यर्चन्ति) सदा आप की पूजा करते हैं – मान देते हैं। हे (अमृत) अविनाशी, तथा अजन्मा परमेश्वर (त्वत् अन्य त्वावान् न अस्ति) आर्य से पृथक् दूसरा कोई आप के समान नहीं है। अत (हुवान) सहायता के लिए पुकारे जाने पर (हुवत) मुझ स्तोता की (हव आश्रुधि) पुकार को अवश्य सुने और पूरा कर।

(५) आलसियों को क्रियाशील बनाकर भवसागर को पार कराने वाला तेरे जैसा या तुझसे बृहत्तर देव या मानव कोई नहीं

सत्यमित्तन्न त्वावां अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान्। अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम्।।

ऋक् ६-३०-४

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। इन्द्र.। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (सत्य इत् तत्) यह पूर्ण रूप से सत्य है कि – हे (इन्द्र) परमेश्वर ! (त्वावान् अन्य न मर्त्य न देव) तेरे सदृश दूसरा न कोई मनुष्य है न देवता है और (न ज्यायान्) तेरे से बडा फिर कैसे सम्भव है ? बडा भी कोई नहीं है। तू ही (परिशयान अहि अहन्) गर्भ मे सोने वाले निष्क्रिय से पडे जीव की निष्क्रियता को समाप्त करके उसमे (अर्ण) बोध, विज्ञान तथा (अप) क्रियाशीलता को (अवासृज) उत्पन्न करता है फिर उसे (समुद्र अच्छ) भवसागर की ओर भेज देता है।

निष्कर्ष – गर्भ में निष्क्रिय से पडे जीव में बोध और क्रियाशक्ति सर्वज्ञ परमेश्वर ही प्रकट करके, उसे पिछले कर्मो को भोगने और नए कर्मों को करने के लिए जगत् मे भेजता है। अर्ण –बोध विज्ञान।

अहि –अ(न) +हि (हिगतौ वृद्धौच) अहि = निष्क्रियता *स्व० दयानन्द*

(६) हे परमेश्वर! शक्ति और ज्ञान के लिए आप के सिवाय किसे पुकारे ?

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते। अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तसत्वा हवामहे।।

ऋ ७–३२–२३

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। इन्द्र। प्रगाथ (बृहती)

यह मन्त्र ४ वेदो मे है। स्वामी दयानन्द जी ने यजुर्वेद मे इस मन्त्र का देवता इन्द्र न मानकर परमेश्वर माना है। यद्यपि अन्य वेदो मे भी इस मन्त्र में इन्द्र का अर्थ परमेश्वर (इदिपरमैश्वर्ये) से ही होता है।

· **अर्थ** – हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वावान् अन्य दिव्य पार्थिव च न जात न जनिष्यते) आप के समान दिव्य शुद्ध स्वरूप अथवा शक्तिशाली पृथ्वी पर न कभी उत्पन्न हुआ है और न कभी उत्पन्न होगा। हे (मघवन्) निष्पाप सब प्रकार के ऐश्वर्यों के स्वामिन ! (अश्वायन्त) घोडे अथवा उनसे उपलक्षित यान अथवा शक्ति की कामना होने पर अथवा (गाव्यन्त) गाय अथवा उनसे उपलक्षित सात्विक भोजन सामग्री की आवश्यकता होने पर अथवा (वाजिन) अन्न या किसी भी प्रकार की समृद्धि की कामना होने पर हम स्तोता (त्वा हवामहे) आप को ही स्मरण करते है, पुकारते हैं और आपसे ही प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष – वह परमेश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होने से अद्वितीय है। अत जब भी किसी भी पदार्थ या सहायता की आवश्यकता हो, उसे ही याद करें क्योकि वह पूर्ण रूप से दयालु है और न्यायकारी भी है।

(७) हे हिरण्यशते! मनोवाञ्छित सब कुछ देने वाला, आप जैसा औघड़ दानी कोई नहीं

आ प्रद्रव हरियो मा वि वेन पिशगराते अभि न सचस्व। नहि त्वदिन्दु वस्यो अन्यदस्ति, अमेनॉश्चिज्जनिवतश्चकर्थ।।

ऋ ५–३१–२

अवस्युरात्रेय.। इन्द्र । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (हरिव) सब के दुखो का हरण करने वाले (इन्द्र) परमेश्वर (नहित्वत् अन्यत् वस्य अस्ति) आपसे भिन्न कोई पदार्थ आपसे अधिक श्रेयस्कर नहीं है, आप (अमेनान् चित् जनिवत चकर्थ) वाणी विहीन गूगो को प्रवाहपूर्ण वाणी युक्त, और पत्नी विहीन पुरुषो को सपत्नीक बना देते हो, आप सब कुछ करने में समर्थ हो। अत हे (पिशगराते) पीत वर्ण सुवर्ण व अन्न के समान सुन्दर और हितकर पदार्थों को देने वाले परमेश्वर! (प्रद्रव) हमारी पुकार पर शीघ्र हमारे पास आए (मा वि वेन) हमारी पुकार के प्रति विगत काम न बनें – पुकार को अनसुना न करें, अपितु (न अभिसचस्व) हमारे पास आकर हमारी कामना का हमें सेवन कराए – हमारी कामना पूर्ण करे।

अर्थ पोषण – मेना वाङ्नाम, नि० १–११, स्त्री नाम निरु० ३–२१। जनिवत –जनी प्रादुर्भावे। पिशगराति. – दातरि, पिश पुत्रे स्त्रियाम् च। नामानुक्रमणी

वस्य – वसु प्रशस्ये, वस्य श्रेयान्। नानार्थकोष।

निष्कर्ष – परमेश्वर सर्वसमर्थ है, सब कुछ कर सकता है। जो कुछ मागना है, उसी से मागो लेकिन यह स्मरण रहे, पूर्ण प्रयत्न के साथ मार्गो से तभी मिलेगा क्योकि वह पात्रता होने पर ही देता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६

सर्वहित परतन्त्रता ही सर्वसुख स्वतन्त्रता का मूल

– आचार्य आर्यनरेश

विश्व मे जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान एव प्रचार-तन्त्र से जनता जाग रही है ठीक वैसे ही विश्व का हर व्यक्ति अधिक स्वतन्त्रता और सुख की इच्छा करने लगा है। एक छोटा सा बालक और कम पढा-लिखा व्यक्ति भी बन्धनो से मुक्त हो स्वेच्छा से जीना चाहता है। सुख और आजादी की होड से यह स्पष्ट है कि सुख और आजादी पहले की अपेक्षा बढे नहीं हैं, अपितु घटे हैं। अधिक सुख की चाह मे आज हर चतुर व्यक्ति स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता समझ स्वार्थ के लिए सब नियम छोड मनचाहा जीवन जीना चाहता है।

ससार की इस होड मे हर व्यक्ति अपने आपको दूसरे से अधिक चतुर समझता है। फलत वह अपनी कथित आजादी के लिए दूसरे व्यक्ति की कोई परवाह नहीं करता। जिसका फल आज अनुशासनहीन समाज है। समाज मे रहते हुए यदि हम दूसरो की उपेक्षा कर सुख और आजादी चाहे तो यह सम्भव नहीं।

समाज का यदि हर व्यक्ति दूसरो की उपेक्षा कर सुख चाहे तो उसे सुख की जगह दु ख और ढेर सारी चिन्ताए ही मिलेगी। जैसे किसी राजमार्ग पर यात्रा मे या किसी भीड भरी सडक पर चलते हुए यदि हम चाहे कि केवल हमारी ही गाडी आगे निकले और दूसरा कोई व्यक्ति या गाडी अथवा कोई नियम आडे नहीं आए। बाए अथवा दाए किसी भी ओर स्वच्छन्दता से गाडी बढाने से यातायात नहीं चलेगा।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि यदि समाज मे हमे अधिक सुख आजादी चाहिए तो हमे सर्वहितकारी नियम स्वीकार करने होगे। यही बात डेढ शताब्दी पूर्व आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कही थी। यदि हम स्वतन्त्रता के पश्चात् देव दयानन्द द्वारा रखे विश्वशान्ति के दस नियमो मे से अन्तिम दसवा नियम माने लेते हैं तो निश्चय ही भारत का वातावरण सुधर जाता। ऋषिवर ने दसवे नियम में लिखा है– **" प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"**

आज यह दु ख एव आश्चर्य की बात है कि ज्ञान-विज्ञान उन्नत होने पर भी देश मे सर्वत्र विद्यालय एव महाविद्यालयो खुलने पर, पहले से अधिक शिक्षित होने पर भी समाज मे अनुशासनहीनता, अपराधो की सख्या एव मानसिक तनाव बढे हैं। वस्तुत प्रत्येक व्यक्ति को सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए। देव देव दयानन्द द्वारा प्रस्तुत यह सर्वहितकारी परतन्त्रता ही वास्तविक सुख और स्वतन्त्रता का मूल है। एक और उदाहरण देखिए। एक व्यक्ति जीवन की सुख-सुविधाओ को एकत्रित करने के लिए किसी सस्था मे कार्यरत था। उस सस्था के आने-जाने, काम करने, उठने-बैठने तथा खाने-पीने के नियम निश्चित थे। दो-चार दिन बाद उस कार्यकर्त्ता ने कहा **मैं गुलाम बनकर कार्य नहीं कर सकता। इन नियमों को पालना और परतन्त्र होना मैं उचित नहीं समझता। मैं एक स्वतन्त्र प्राणि हू। मैं अंकुश मे रहना पसन्द नहीं करता। मैं तो अपनी ही संस्था चलाऊगा।"** सस्था प्रारम्भ हुई। अधिक लाभ के लिए वस्तुओ तथा समय का सदुपयोग आवश्यक था। अत उसने भी कार्यकर्त्ताओ के लिए आने-जाने, खाने-पीने, मशीनों पर कार्य करने व उनका प्रयोग करने के नियम प्रसारित कर दिए। उसकी सस्था मे उसका एक साथी (जो पूर्व सस्था मे कार्य कर चुका था) भी कार्यरत था। उसने इस सस्था में इन सब नियमो को देखकर अपने पुराने मित्र (वर्तमान मालिक) से कहा– **" देखो भाई ! अब आप वे ही सब नियम हम पर लगा रहे हैं जिन्हें आप गुलामी की सज्ञा देकर छोड आए थे।"** इस बात को सुनकर उसका मित्र मौन देखता रह गया।

हम परिवारों मे देखते हैं कि बच्चे नहीं चाहते कि माता-पिता उन पर नियमो का अकुश लगाए। विद्यालय मे विद्यार्थी, कार्यालयो मे कार्यकर्त्ता, राष्ट्र मे राष्ट्र के अधिकारी भी यही चाहते हैं कि उन पर किसी प्रकार के नियमो का बन्धन न हो। वे स्वच्छन्द हो, परन्तु क्या ऐसा होने से कोई भी सुखी हो सकेगा? कदापि नहीं।

अत महर्षि देव दयानन्द के शब्दों में यदि हमे सर्व सुख स्वतन्त्रता चाहिए तो उसकी प्राप्ती के लिए सर्वहितकारी सामाजिक नियमो में परतन्त्र रहना ही होगा। यही पूर्ण सुख का मूल मन्त्र है।

– वैदिक गवेषक
उद्गीथ साधना स्थली, ग्रा० डोहर,
डा० शाया, जिला- सिरमौर (हि० प्र०)

पृष्ठ २ का शेष भाग

परोपकार एक महायज्ञ है ....

महापुरुषों का स्वांग लज्जापूर्ण

वहा से १० भाद्रपद १६२४ को स्वामीजी अनूपशहर पहुचे। वहा प० अम्बादत्त से उनका मनोरजक शास्त्रार्थ हुआ। उनके पण्डितों ने अपनी मूर्त्तिया गगा मे प्रवाहित कर दीं, कण्ठिया तोड डालीं। स्वामीजी ने रामलीला का भी खण्डन कर कहा– **"श्रीराम जैसे महापुरुषो और जानकी जैसी देवियों का स्वाग बनाकर गली-बाजारो में घुमाना लज्जाजनक है।"** जनता पर स्वामीजी के कथन का प्रभाव पडा, फलत उन्होने रामलीला के स्थान पर श्रीराम पर भाषणो एव अन्य कार्यक्रम किए।

मनुष्यों को बधवाने नहीं छुडवाने आया हूं

अनूपशहर मे सैयद मुहम्मद तहसीलदार थे। वह अरबी-फारसी के अच्छे विद्वान थे। स्वामी जी के सत्सग और उनके भाषणो से वह स्वामीजी के भक्त हो गए। एक दिन एक ब्राह्मण ने स्वामीजी को विनयपूर्वक नमस्कार कर पान दिया। मुख मे पान रखते ही रस लेते ही वे जान गए कि पान विषयुक्त है, उन्होने नराधम से कुछ नहीं कहा परन्तु बस्ती-न्योली क्रिया करने के लिए गगापार चले गए। स्वामीजी को पान मे विष देने का भेद सबको मालूम पड गया। यह खबर तहसीलदार को मिल गई। स्वामीजी के प्रति श्रद्धा होने से उसने उस अपराधी को पकडवाकर कारागार मे डाल दिया। तहसीलदार प्रसन्न हो रहे थे, वह सोच रहे थे कि स्वामीजी के शत्रु को दण्ड देकर उनका बदला लेने से वह प्रसन्न होगे, परन्तु समीप पहुचने पर स्वामीजी ने दृष्टि हटा ली। तहसीलदार ने स्वामी जी से उनकी अप्रसन्नता का कारण पूछा। स्वामीजी ने कहा– **"मुझे मालूम हुआ है कि आपने मेरे लिए एक आदमी पकड लिया है, परन्तु मैं मनुष्यों को बन्धवाने नहीं, किन्तु छुडवाने आया हू। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोडते ते हम अपनी अच्छाई क्यो छोड दे।"** तहसीलदार यह बात सुनकर चकित हो गए उन्होने उस दिन तक क्षमा के ऐसे धनी शान्त मनुष्य के दर्शन नहीं किए थे। वह महाराज को हाथ जोडकर चले गए और उस ब्राह्मण को छोड दिया।

हवन-अग्निहोत्र की देन

सर सैयद अहमद खा प्राय नित्य स्वामी जी की सेवा मे जाया करते थे। उनका स्वामीजी से अनुराग हो गया। महाराज भी उनका सम्मान करते थे। एक दिन सैयद अहमद खा कई प्रतिष्ठित मुसलमान और अग्रेज सज्जनो के साथ स्वामीजी से कहा–" महाराज, आपकी दूसरी बाते तो ठीक मालूम पडती हैं, परन्तु यह बात थोडे से हवन से वायुमण्डल सुधर जाता है, हमें युक्ति सगत नहीं जान पडता।"

स्वामीजी ने हवन के अनेक लाभ बताकर पूछा– "सैयद महाशय, आप बतलाएगे आपके यहा रोज कितने आदमियो कर भोजन बनता है?" सैयद साहब का जवाब था–" रोज, लगभग पचास–साठ का। स्वामीजी का दूसरा सवाल था–" आपके यहा कितने सेर दाल बनती होगी?" सैयद साहब का जवाब था–" कोई छह-सात सेर।" स्वामी जी ने तुरन्त पूछा– "इस दाल मे आप हींग का छौंक भी लगवाते होंगे, वह कितनी होती होगी?" सैयद महाशय का उत्तर था– "माशा भर से कम तो न होती होगी।" स्वामीजी ने तुरन्त कहा– **"इतनी थोडी-सी हींग से सारी दाल महक जाती है, सुगन्धित हो जाती है?"** सैयद साहब का उत्तर था–" हा, इतनी सी हींग सारी दाल सुगधित कर देती है।"

इस पर स्वामीजी ने कहा – **"थोडी-सी हींग की तरह थोडी-सी सामग्री से किया हवन भी सुगन्धित हो जाता है, महक जाता है।"**

सैयद साहब और दूसरे अग्रेज और मुसलमान मेहमान स्वामी जी की स्तुति करते हुए घर लौटे।

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में

महर्षि जन्मोत्सव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ शनिवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संगठनों से प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाएं।

श्री वेदव्रत शर्मा
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक धर्म में आरोग्य का स्थान

वेदों में स्वस्थ जीवन के मौलिक सूत्र

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

मानव जीवन का लक्ष्य है पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति। धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति मे आरोग्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा भी है –

धर्मार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यं मूलमुत्तमम्।।

महाकवि कालिदास ने शिव-पार्वती सवाद में एक महत्त्वपूर्ण उक्ति लिखी है – **'शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्'** शरीर ही धर्म की साधना का प्रमुख साधन है। यह तो सत्य है कि मानव शरीर पाञ्चभौतिक होने के कारण नश्वर है, अन्तत नष्ट होने वाला है तथापि वह ऐसी क्षुद्र वस्तु भी नहीं है जिसकी सदा उपेक्षा की जायेगी। जब कबीर ने मानव शरीर को 'पानी का बुदबुदा' बताया तो उनका भाव यही था कि सीमित कालावधि के लिए जन्म लेने वाले मनुष्य के लिए उचित है कि वह यथाशीघ्र परमात्मा को पहचाने तथा श्रेयमार्ग का पथिक बने।

चारों वेद सहिताओं में मानव को स्वस्थ तथा नीरोग रहने की बार-बार प्रेरणा दी गई है। वस्तुत: वेद मानव के हित की विद्याओं तथा विज्ञानो का भण्डार है, अत उसमे यदि शरीर की उन्नति तथा आरोग्य के उपायो का वर्णन मिले तो इसमे आश्चर्य ही क्या ? भगवान् मनु के अनुसार वेद पितर, देव तथा मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए सनातन चक्षुओं के तुल्य हैं जिनके द्वारा लोग अपने हित और अहित को पहचान कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्धारण कर सकते हैं। वेदों मे जहा भौतिक एव लौकिक विषयों की विवेचना मिलती है, वहा दार्शनिक तथा आध्यात्मिक प्रश्नों का समाधान भी मिलता है। मानव स्वास्थ्य के लिए उपयोगी शरीर-विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा का विशद निरूपण इस वाङ्मय मे उपलब्ध है। वेदो की दृष्टि मे यह शरीर न तो हेय है और न तिरस्कार के योग्य। भारत के इतिहास मे एक ऐसा युग भी आया था जब हमारे चिन्तको और दार्शनिको ने स्थूल शरीर की सर्वथा उपेक्षा ही नहीं की, अपितु देहदण्डन तथा शरीर को पीडा देना ही तप का पर्याय मान लिया। वेद की दृष्टि इसके विपरीत है। अथर्ववेद तो शरीर को अयोध्यापुरी से उपमित करता है –

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृत्।।

(अथर्ववेद १० /२ / ३१)

आठ चक्रों (मूलाधार आदि योगकथित) तथा नौ इन्द्रियों रूपी तारो वाली यह देवनगरी अयोध्या है, जिस पर विजय पाना कठिन है।

वेदो में मनुष्य के लिए दीर्घायु की कामना की गई है जो शरीर को नीरोग रखने से ही सम्भव है। आयुर्यज्ञेन कल्पता प्राणो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्यज्ञेन कल्पता श्रोत्र यज्ञेन कल्पताम् (यजु० ६ /२१) आदि मन्त्रो मे मनुष्य के दीर्घायु होने तथा स्वजीवन को लोकहित (यज्ञ) मे लगाने की बात कही गई है। यह तभी सम्भव है जब उसकी चक्षु तथा श्रोत्र आदि इन्द्रिया तथा पञ्च प्राण पूर्ण स्वस्थ एव बल युक्त रहे। वेदो मे ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो को बलिष्ठ स्वस्थ तथा यशस्वी बनाने के लिए कहा गया है। प्राणश्च मेऽपानश्च मे (यजु० १८ । २७) मे प्राण, अपान तथा व्यानादि को स्वस्थ रखने के साथ–साथ वाक्, मन, नेत्र तथा श्रोत्र आदि को भी बलयुक्त रखने की बात कही गई है। सन्ध्योपासना के अन्तर्गत उपस्थान मन्त्र म स्पष्ट कहा है कि मनुष्य को चाहिए, उसके नेत्र, कान तथा वाणी इतने बलशाली हो जिससे वह सौ वर्ष पर्यन्त पदार्थों को देखता रह शब्दो को सुनता रहे वचनो को बोलता रहे तथा स्वस्थ एव सदाचार युक्त जीवन जीता रहे। केवल सौ वर्ष पर्यन्त ही नहीं, इससे भी अधिक भूयश्च शरद शतात्। वैदिक उक्ति में शरीर को पत्थर की भाति सुदृढ बनाने की बात कही गई है –

अश्मा भवतु ते तनूः।

आरोग्य लाभ के विविध साधनो तथा उपायो की चर्चा भी वेदों में आई है। उषाकाल में सूर्योदय से पूर्व शय्या त्याग को स्वास्थ्य के लिए अतीव उपयोगी बताया गया है। इसलिए वेदो में उषा को दिव्य ज्योति प्रदान करने वाली तथा सत्कर्मों में प्रेरित करने वाली देवी के रूप में चित्रित किया गया है। जब प्रात काल में सन्ध्या के लिए बैठते हैं जो हम उपस्थान मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। उसी समय हमे पूर्व दिशा में भगवान् भास्कर उदय होते दिखाई देते हैं। इस पवित्र तथा स्फूर्तिदायिनी, वेला मे साधक एक ओर तो आकाश में उदय होने वाले प्रचण्ड मार्तण्ड को देखता है, दूसरी ओर वह अपने हृदयाकाश में प्रकाश युक्त परमात्मा के दिव्यालोक का अनुभव कर कह उठता है –

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

(यजु० २० /२१)

अन्धकार का निवारण करने वाला यह ज्योतिषुञ्ज सूर्य प्राची दिशा में उदय हुआ है, वहीं देवों का देव परमात्मा रूपी सूर्य मेरे मानस-क्षितिज पर उदय हुआ है और उससे निस्सृत ज्ञानरश्मियों की ऊष्मा को मैं अन्त करण मे अनुभव कर रहा हू।

यो जागार तमृचः कामयन्ते। (ऋग्वेद ५ /४५ /१४) ऋग्वेद की इस ऋचा मे स्पष्ट कहा गया है जो जागता है, जल्दी उठ कर प्रभु को स्मरण करता है, ऋचाए उसकी कामना पूरी करती हैं। सामादि अन्य वेदो का ज्ञान भी उषाकाल में उठकर स्वाध्याय में प्रवृत्त होने वाले व्यक्ति के लिए ही सुलभ होता है। आलसी,प्रमादी, दीर्घसूत्री तथा देर तक सोते रहने वाले लोग सौभाग्य और आरोग्य से वञ्चित रहते हैं। जल्दी उठकर वायु सेवन के लिए भ्रमण करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे वेद का कहना है कि पर्वतो की उपत्यकाओ मे तथा नदियो के सगम स्थल पर प्रकृति की छटा अवर्णनीय होती है। यहा विचरण करने वाले लोग अपनी बुद्धियो का विकास करते हैं –

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया अविप्रो अजायत।। (ऋग्वेद ८ । ६ । २८)

शरीर को स्वस्थ और नीरोग रखने के लिए शुद्ध, पुष्टिदायक, रोगनाशक अन्न तथा जल का सेवन आवश्यक है। जल के बारे मे वेद कहते हैं –

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।। *(यजु० ११ / ५०)*

जल हमे सुख प्रदान करने वाला तथा ऊर्जा प्रदान करने वाला हो।

अन्न विषयक अनेक मन्त्र वेदो मे आये हैं। जिन पुष्टिकारक अन्नो का हम सेवन करे उनकी गणना निम्न मन्त्र मे की गई है –

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे
गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पताम्।।
(यजु० १८ / १२)

भोजन मे गाय के दूध का सेवन अत्यन्त आवश्यव है। वेदों में गोमहिमा के अनेक मन्त्र आये हैं। गाय की महत्ता का वर्णन करते हुए उसे रुद्रसञ्ज्ञक ब्रह्मचारियो की माता, वसुसञ्ज्ञको की दुहिता तथा आदित्यसञ्ज्ञक तेजस्वी पुरुषों की बहिन कहा गया है।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।।

(ऋग्वेद ८ । १०१ । १)

अथर्ववेद निम्न मन्त्र में गायों को सम्बोधन कर कहा गया है कि आप कृश तथा दुर्बल व्यक्ति को पुष्ट और स्वस्थ बना देती हो। उसके शरीर की सौन्दर्यवृद्धि का कारण आपका दूध ही है। **'यूयं गावो'** आदि (अथर्व मन्त्र) अन्न के विषय मे वेद मे कतिपय आवश्यक निर्देश मिलते हैं। प्रथम तो यह कहा गया है कि अन्नपति परमात्मा ही है। वही हमें रोगरहित तथा बलवर्द्धक अन्न प्रदान करता है। वह इतना उदार तथा समदर्शी है कि दो पैर वाले मनुष्यो तथा चौपाये जानवरो सभी प्राणियो को अन्न प्रदान करता है –

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

(यजु० ११ /८)

भोजन के बारे मे एक अन्य प्रसिद्ध मन्त्र निम्न है –

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमित वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।

(ऋग्वेद १० / ११७ / ६)

अकेला खाने वाला, अन्यों को भोजनादि से वञ्चित रखने वाला वास्तव में पाप ही खाता है। जो स्वार्थी व्यक्ति न तो राजा को ही पोषित करता है और न अपने मित्रो को। जो स्वार्थी व्यक्ति न तो राजा को ही पोषित करता है और न अपने मित्रों को ऐसा अकेला खाने वाला, अन्यो को भोजनादि से वञ्चित रखने वाला पापपूर्ण अन्न को खाता है। भगवान् कृष्ण ने वेद की इसी उक्ति की पुष्टि निम्न प्रकार से की –

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

(३ /१३)

जो पापी अपने लिए ही पकाते हैं वे वस्तुत. पाप ही खाते हैं। आहार और अन्न की शुद्धता के अनेक निर्देश वेदाश्रित उपनिषदादि ग्रन्थो मे भी मिलते हैं, जहा कहा गया है।

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।

सात्त्विक आहार ग्रहण करने से मन की शुद्धि होती है और मन के शुद्ध होने पर अविचलित स्मृति प्राप्त होती है। उपनिषदों में ही अन्न की निन्दा न करने का उपदेश दिया गया है – **अन्नं न निन्द्यात् तद् व्रतम्।** भोजनपान आदि को भाति शान्त और स्थिर निद्रा भी आरोग्य के लिए आवश्यक मानी गई है। ऋग्वेदीय रात्रिसूक्त (१० /१२७) को देखे। रात्रि मे उचित समय पर सोना स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। वेद मे रात को द्युलोक की पुत्री कहा है। यह रात्रि वस्तुत उषाकाल में बदल कर अन्धकार का विनाश करती है – **ज्योतिषा बाधते तम ।** *(ऋग्वेद १० / १२७ /२)*

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली का ३३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वाधान मे आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली का ३३वा वार्षिकोत्सव २७ नवम्बर से ३ दिसम्बर,२००० तक बडे समारोह पूर्वक मनाया गया।

२७ नवम्बर से २ दिसम्बर तक रात्रि को ८ से १० बजे तक पण्डित जर्नादन जी सगीताचार्य द्वारा मनोहर भजन हुए व पण्डित प्रणव प्रकाश जी द्वारा वेद कथा हुई।

रविवार ३ दिसम्बर को विशेष कार्यक्रम प्रात ८ से डेढ बजे तक सम्पन्न हुआ। प्रात आठ बजे से साढे दस बजे तक मनोहर भजन हुए। १०.३० बजे से १२ बजे तक आर्य आदर्श विद्यालय, आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के बच्चो द्वारा आर्यसमाज के विचारो के आधार पर विशेष सास्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। जिसकी सबने प्रशसा की। बच्चों को पारितोषिक भी दिए गए।

आर्य साहित्य पुरस्कार स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को भेंट

आर्यसमाज हिण्डौन का श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को उनके लिखित सर्वस्व ग्रन्थमाला व ६५ से अधिक पुस्तको के प्रकाशन के लिए गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली मे दिया गया। इसके अन्तर्गत उन्हें शाल, स्मृति चिह्न और ११ हजार रुपये भेट किए गए।

आर्यसमाज बाकनेर का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाकनेर का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव ८ से १० दिसम्बर, २००० तक हुआ। यज्ञोपदेश के समय स्वामी अग्निदेव भीष्म ने वेदज्ञान के विषय मे बताया 'वेदोऽखिल धर्ममूलम्' अर्थात् सम्पूर्ण वेद ही धर्म का मूल है। आर्य युवक सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० महावीर मीमासक, दिल्ली विश्वविद्यालय ने मानव मानव-निर्माण पर बल देते हुए आर्य समाज जैसी गैर सरकारी सस्थाओं की भूमिका रेखाकित करते हुए कहा कि जिस प्रकार आर्यसमाज बाकनेर ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी दिए हैं जैसे सरिता सुपुत्री श्री रणधीर सिह, हाकी (अमेरिका), मुकेश तथा रोहताश, एशिया स्वर्णपदक तथा अजय (रजत पदक) ईरान, इसी प्रकार भविष्य मे और अधिक सफलता प्राप्त करेगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने उत्सव मे पधारकर मार्ग दर्शन किया। डॉ० साहिबसिह वर्मा, सासद एव पूर्व मुख्य मन्त्री दिल्ली ने बाकनेर के अन्तर्राष्ट्रीय पहलवानो का स्वागत करते हुए कहा कि ओलम्पिक मे स्वर्ण पदक जीतने वाले को उनकी ग्रामीण स्वाभिमान सस्था एक करोड रुपये का पुरस्कार देगी। डॉ० भीम सिह डागर ने शिक्षा क्षेत्र मे अभिभावको व विद्यार्थियो के क्या-क्या कर्त्तव्य हैं इस पर चर्चा की। आर्यसमाज बाकनेर के प्रधान श्री मागेराम आर्य ने स्वर्णजयन्ती महोत्सव की सफलता के लिए दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर स्मारिका का भी विमोचन हुआ।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन ३१ दिसम्बर को सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे हर्षोल्लास के साथ गुरुकुल आश्रम आमसेना मे हुआ। इस अधिवेशन में सारे उडीसा की लगभग १६० समाजो के १८० से अधिक प्रतिनिधियो ने भाग लिया। जिसमे सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए–

प्रधान – स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
उप-प्रधान – स्वामी सुधानन्द सरस्वती
प० विशिकेसन शास्त्री
महामन्त्री – श्री अनादि वेद सेवक
उपमन्त्री – श्री सुदर्शन देवार्य, पद्मनाभ स्वाई
कोषाध्यक्ष – श्री तेजकरण ओझा

इन्हीं के साथ अन्तरग सदस्यो एव सार्वदेशिक के लिए आठ प्रतिनिधियो का भी निर्वाचन हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन डी०ए०वी० कालेज लखनऊ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री की देख-रेख मे सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन के लिए प्रमुख पदाधिकारी निर्वाचित हुए –

प्रधान – जयनारायण आरुण (बिजनौर)
मन्त्री – श्री चन्द्रकिरण शर्मा
कोषाध्यक्ष – श्री अरविन्द आर्य (मुज्जफर नगर)
पुस्तकाध्यक्ष – श्री दल सिगार

नागालैण्ड के राज्यपाल का उद्‌बोधन
आर्यसमाज की पहले से अधिक आवश्यकता है

वनचारी (होडल)। महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र वनचारी का छटा स्थापना दिवस महाशय धर्मपाल के अध्यक्षता में हुआ।

नागालैंड के राज्यपाल एव समारोह के मुख्य अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व भारतीय समाज मे बाल विवाह, सती प्रथा मूर्तिपूजा आदि कुरीतियो का प्रचलन था। विधवाओ की घोर दुर्दशा थी। उन्होंने कहा महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर कुरीतियो के निवारण हेतु प्रयास किया। स्वाधीनता आन्दोलन मे भी महर्षि दयानन्द सरस्वती का सक्रिय योगदान था।उन्होंने कहा आर्यसमाज ने महान क्रान्तिकारी प० रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खा, शहीद शिरोमणि सरदार भगत सिह आदि क्रान्तिकारी देश को दिए। देश आर्यसमाज का सदैव ऋणी रहेगा। उन्होने आगे कहा कि आर्यसमाज की देश को अब पहले से अधिक आवश्यकता है।

वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य नेता लाला लाजपत राय निझावन का निधन

आर्यसमाज प्रताप नगर के सरक्षक एव पूर्व प्रधान लाला लाजपत राय जी निझावन का निधन ७ जनवरी को हो गया। वे ५२ वर्ष के थे। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ८ जनवरी को प्रात ११ बजे निगम बोध घाट पर किया गया। अतिम सस्कार में दिल्ली के असख्य आर्यनेताओं के अतिरिक्त राजनीतिक नेता भी उपस्थित थे। श्री निझावन की स्मृति में शोकसभा का आयोजन प्रताप नगर में किया गया जिसमें पूर्व शिक्षा मन्त्री श्री कुलानन्द भारतीय, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक, वरिष्ठ मन्त्री श्री विमल वधावन, केन्द्रीय सभा के प्रधान डॉ० शिव कुमार शास्त्री, श्री सुरेश बत्रा, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा श्री प्रेम पाल शास्त्री आदि उपस्थित थे।

लाला जी हर प्रकार के सामाजिक और सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। वे आर्यसमाजों की बहुत सी सस्थाओं के अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव सार्वदेशिक सभा में भी प्रतिनिधि रहे हैं। काग्रेस में रहते हुए वे सदर जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। लायलपुर के 'आर्य परिवार' में श्री लाजपत राय निझावन का जन्म हुआ। माता-पिता महर्षि दयानन्द की शिक्षा, तथा शहीदे आजम भगत सिह के आन्दोलनो से प्रभावित होकर वे आजादी की लडाई में कूद पडे। कई बार सत्याग्रह के लिए जेल गये। देश विभाजन के पश्चात विधवा आश्रम, आर्य समाज प्रताप नगर, आर्य विद्या मन्दिर आदि सस्थाओं की स्थापना की। जिसमे ५०० बच्चों को उत्तम व चरित्र निर्माण की नियमित शिक्षा दी जाती है। उनके पुत्रवत् दामाद श्री के०के० सेठी (मन्त्री, आर्यसमाज प्रताप नगर) उत्तरी दिल्ली मण्डल व आर्य सस्थाओ के प्रमुख प्रतिनिधि रुप मे लालाजी के पद चिह्नो पर चलते हुए अपना कर्त्तव्य निभा रहे है।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

R.N No 32387/77 Posted at N D P S O on 18-19/01/2001 दिनांक १५ जनवरी से २१ जनवरी, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 18-19/01/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स (सी०) १३६/२००१

प्रतिष्ठा में

पृष्ठ ६ का शेष

वेदों में स्वस्थ ....

मनुष्य का नीरोग और स्वस्थ रहना केवल शरीर–रक्षण से ही सम्भव नहीं है। इसी अभिप्राय से उपनिषत् पञ्चकोशों का उल्लेख करते हैं जिनमे अन्नमय कोश, प्राणामय कोश तथा मनोमय कोश के बाद ही विज्ञानमय कोश तथा आनन्दमय कोश की चर्चा हुई है। स्वस्थ प्राणशक्ति आरोग्य का प्रमुख कारण बनती है। वेदों ने तो प्राणो को परमात्मा का ही वाचक माना है –

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे। (अथर्व० ११/४/१)

इसी अभिप्राय को भगवान् बादरायण ने अपने सूत्र 'अतएव प्राण' में कहा है। प्राण नाम से परमात्मा ही कथित हुए हैं।

आरोग्य का एक महत्त्वपूर्ण साधन है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य पालन की महिमा के लिए अथर्ववेद का ब्रह्मचर्य सूक्त द्रष्टव्य है। यहा स्पष्ट कहा गया है कि ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा विद्वान् देवगण मृत्यु पर भी विजय पा लेते हैं –

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

(अथर्व० ११/५/१७)

अथर्ववेद में रोगों, रोग के कारणो, उसके निवारण के उपायों, रोगनाशक औषधियों एव वनस्पतियों तथा रोग दूर करने वाले वैद्यों (भिषक्) आदि की विस्तृत चर्चा मिलती है। ये सभी प्रकरण शारीरिक स्वास्थ्य से ही सम्बद्ध हैं। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के सकेत भी वेदो मे मिलते हैं। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम् (यजु० ३४/१–६) आदि मन्त्र मन की दिव्य शक्तियों का उल्लेख कर उसे शिवसकल्प वाला बनाने की बात करते हैं। स्पर्शपूर्वक रोग निवारण के सकेत भी अथर्ववेद के अय मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। (अथर्व ४/१३/६) आदि मन्त्रो मे मिलते हैं जिसमें सहानुभूति प्रवण वैद्य का कोमल स्पर्श रोगी के लिए औषधि का काम करता है।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की विशेष अन्तरंग बैठक

२७ जनवरी, २००१ (शनिवार) को दोपहर २ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान् रोड में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की एक विशेष अन्तरग बैठक बुलाई गई है। जिसमे महर्षि जन्मोत्सव (१७ फरवरी, २००१) तथा मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन पर विचार विमर्श किया जाएगा। अन्तरग सदस्यों के अतिरिक्त सभा द्वारा गठित समस्त समितियो के सदस्ये भी इसमें भाग ले।

तेजपाल मलिक
महामन्त्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री जयप्रकाश आर्य के स्वास्थ्य में सुधार

आर्यसमाज बिरला लाईस के प्रधान श्री जय प्रकाश आर्य विगतमाह पीलिया रोग, से ग्रस्त होकर काफी समय अस्वस्थ रहे और इसके कारण उनका लीवर बढने से भी उन्हें काफी तकलीफ उठानी पडी। वे लगभग ७ दिन एक प्राईवेट अस्पताल मे भी उपचार कराते रहे परन्तु कोई विशेष लाभ न होने पर उन्होने आयुर्वेदिक पद्धति की शरण ली। अब श्री जयप्रकाश के स्वास्थ्य में लगातार सुधार हो रहा है। परन्तु अभी उन्हे विश्राम की सलाह दी गई है। समूचा आर्य जगत उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है।

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

कीर्तिनगर स्त्री समाज की स्तम्भ श्रीमती ज्ञान देवी नहीं रहीं

कीर्तिनगर आर्यसमाज की प्रमुख नेत्री श्रीमती ज्ञानदेवी का गत् माह हृदय गति रूक जाने से आकस्मिक देहावसान हो गया। वे ७५ वर्ष की थी। श्रीमती ज्ञानदेवी आर्यसमाज की प्रधाना एव मन्त्रिणी भी रही हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य मे उनका चहुमुखी सहयोग रहता था। धन सग्रह से लेकर उच्च कोटि के विचार विर्मश तक। श्रीमती ज्ञानदेवी के चारों सुपुत्र सर्वश्री शान्ति लाल, अशोक, गुलशन तथा जितेन्द्र खरबन्दा पूर्णरूपेण आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत हैं।

श्रीमती ज्ञानदेवी की क्रिया रस्म एव शोक सभा आर्यसमाज मन्दिर कीर्ति नगर के हाल में आयोजित की गई जिसमे आर्यजगत के समस्त प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया। वैदिक विद्वान् श्री वेदप्रकाश जी, आचार्य सुभाष जी के अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा वरिष्ठ मन्त्री श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री नरेन्द्र आर्य के अतिरिक्त पश्चिम दिल्ली की आर्यसमाजों के बहुत से प्रमुख अधिकारियों सर्वश्री मदन मोहन सलूजा, बलदेव राज, भीमसेन गुलाटी, उपस्थित होकर श्रीमती ज्ञान देवी के श्रद्धाजलि अर्पित की।

पं० शिवपूजन जी कुशवाहा नहीं रहे

समस्त आर्यजगत् को यह जानकर अति कष्ट होगा कि आर्यसमाज के प्रबुद्ध विद्वान् और मनीषी साहित्यकार श्री प० शिवपूजन जी कुशवाहा का ६ जनवरी २००१ को गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) मे निधन हो गया उनकी अन्त्येष्टि ग्रीनपार्क (दिल्ली) के श्मशानघाट मे पूर्ण वैदिकरीति से की गई। वे लगभग ८ वर्षो से गुरुकुल गौतमनगर में अध्यापन कार्य कर रहे थे।

आदरणीय पण्डित जी ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों की पुष्टि तथा अन्य मतो की समीक्षा के लिए साठ से अधिक ग्रन्थो की रचना की थी। लगभग इतने ही ग्रन्थ अप्रकाशित रूप मे उनके घर पर भी रखे हुए हैं। इनका जन्म आरा (बिहार) मे हुआ था। इनके पुत्रादि वाराणसी में रह रहे हैं। पण्डित जी ८२ वर्ष के थे। इनके दिवगत हो जाने से आर्यसमाज की बहुत क्षति हुई है। इसकी पूर्ति होनी असम्भव है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इनके आत्मा को कर्मानुसार सद्गति प्रदान करे तथा हम सभी आर्य बन्धुओ को धैर्य प्रदान करे।

आपकी व्यक्तिगत योग्यता आर्यसमाज का बल

यदि आप अपनी शक्ति एव योग्यता का सदुपयोग वैदिक सस्कृति की रक्षा एव प्रचार प्रसार हेतु करने के लिए सकल्पबद्ध हैं तो आपको अपने कार्यों और सकल्पो को आर्यसमाज के विश्व स्तरीय सगठन के साथ एकरूप होकर अपनी पहचान स्थापित करनी चाहिए। जिससे आपके कार्य अन्य लोगो की प्रेरणा बन सकें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अधिकाधिक आर्यबन्धुओं के नाम कम्प्यूटर में दर्ज करने के लिए एक विशेष प्रयास किया जा रहा है।

आपकी व्यक्तिगत शक्ति और योग्यता ही आर्यसमाज का बल है। अत प्रत्येक आर्य महानुभाव अपनी सूचना को निम्न प्रारूप के अनुसार एक अलग कागज पर हिन्दी अथवा अग्रेजी में लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के *'दिल्ली आर्य सूचना पत्र' १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली – ११०००१* के पते पर भेजें। कृपया अपना एक फोटो भी साथ भेजें।

वेदव्रत शर्मा, प्रधान

दिल्ली आर्य सूचना पत्र

१ नाम
२ जन्म तिथि
३ पिता/पति का नाम
४ पूरा पता
५ निवास तथा आर्यसमाज का दूरभाष (कोड सहित)
६ विवाहित हैं या अविवाहित
७ शैक्षणिक एव अन्य योग्यताए
८ भाषाओं का ज्ञान
९ आजीविका हेतु कार्यक्षेत्र
१० समाज सेवा के लिए क्या किसी अन्य सस्था से सम्बन्धित रहे हैं ?
११ किस आर्यसमाज अथवा सभा के सभासद हैं और कब से ?
१२ किसकी प्रेरणा पर आर्यसमाज मे प्रवेश किया ?
१३ आर्यसमाज में किन पदों पर रहे है।
१४ आपके द्वारा अब तक सम्पन्न विशेष गतिविधिया (सक्षेप मे)।
१५ प्रतिदिन या प्रति सप्ताह आप कितना समय बिना असुविधा के सामाजिक कार्यों के लिए

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५०** के लिए प्रकाशित।

गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, २२ जनवरी, से २८ जनवरी, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भविष्य के लिए आशा की किरण उपलब्ध कराएगा

मुम्बई में विशाल स्तर पर तैयारियां तथा कार्यक्रम सत्रें की घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे २३ से २६ मार्च को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप मे एक अनूठा अनुशासनात्मक, आध्यात्मिक एव बौद्धिक सम्मेलन होगा जो विगत १२५ वर्षों के गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराते हुए भविष्य के लिए एक आशा की किरण प्रस्तुत करेगा। यह उद्गार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के ब्रह्मा डॉ० स्वामी सत्यम् ने इस महासम्मेलन की तैयारियो के लिए बुलाई गई बैठक मे व्यक्त किए। यह बैठक आर्यसमाज सांताक्रुज मे १४ जनवरी को बुलाई गई थी। इस बैठक मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन भी पहुचे।

डॉ० स्वामी सत्यम् ने इस महासम्मेलन मे आयोजित कार्यक्रमो का ब्योरा प्रस्तुत करते हुए बताया कि आर्य परम्परा के अनुसार महासम्मेलन के चारो दिन प्रात ७ ३० बजे से १० बजे तक यज्ञ एव वैदिक प्रवचन होगे।

२३ मार्च, २००१ (शुक्रवार) को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी के द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण होगा।

प्रथम दिवस प्रात कालीन सत्र ११ बजे से १ बजे तक होगा। इस सत्र का नाम **"वैदिक धर्म संसद"** रखा गया है जिसमे मुख्य विषय होगा, **"प्रकाश की तलाश में"**।

प्रथम दिवस मे ही भोजनोपरान्त विशाल उद्घाटन समारोह सम्पन्न होगा। जिसके लिए बडे बडे राष्ट्रीय नेताओं को आमन्त्रित करने का प्रयास चल रहा है।

प्रथम दिवस के तीसरे सत्र मे रात्रि ७ बजे आर्य सम्मेलन आयोजित होगा।

द्वितीय दिवस २४ मार्च २००१ (शनिवार) को पूर्ववत् प्रात कालीन यज्ञ के बाद प्रात १० ३० बजे प्रथम सत्र में पुन **'वैदिक धर्म ससद'** आयोजित होगी जिसका विषय होगा **'इन्सान की तलाश में'**।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र मे भोजनोपरान्त विशेष आयोजन और इसी दिन तीसरे अर्थात रात्रिकालीन सत्र मे वेद सम्मेलन आयोजित किया गया है जिसके मुख्य विषय इस प्रकार हैं –

१ **वेद प्रचार की व्यूह रचना**, २ **वेद और परिवार**, ३ **वेदों में विज्ञान और ज्योतिष**, ४ **वास्तु और वेद**, ५ **वेद विश्व का विधान है**, ६ **वेद और मानव अधिकार।**

तीसरे दिन २५ मार्च २००१ (रविवार) को भी तीन सत्र आयोजित होगे। पहला सत्र **"वैदिक धर्म ससद"** जिसका विषय है **वर्ग की तलाश में**। तीसरे दिन के दूसरे सत्र मे आर्य महिला सम्मेलन तथा तीसरे सत्र में आर्य युवा सम्मेलन आयोजित होगे।

२६ मार्च २००१ (रविवार) को यज्ञ के उपरान्त समापन समारोह होगा।

इस बैठक के सयोजक कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि भाग लेने वाले आर्यजनों के लिए लाखों रुपये खर्च करके अच्छी अच्छी धर्मशालाओं में बुकिंग कराई जा रही है, जिसमे आर्यजनो का मुम्बई आवास सुखद हो। उन्होने बताया कि मुम्बई मे ५००/– रुपये प्रतिदिन से लेकर ३०००/– रुपये प्रतिदिन तक के बहुत से होटल भी है। जो लोग इन होटलों में ठहरना चाहते हैं उन्हें इसका व्यय स्वय देना होगा। वे चाहे तो राष्ट्रीय स्तर की होटल सूचियो मे से देखकर रिकलेमेशन ग्राउण्ड दादर, बान्द्रा अथवा सान्ताक्रुज आदि क्षेत्रों में ही अपने आवास का प्रबन्ध करे। बैठक मे मध्य विदर्भ से प्रान्तीय सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री भी उपस्थित थे।

श्री वेदव्रत शर्मा ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि सारे देश के लोग इस मुम्बई महासम्मेलन मे आने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अत मुम्बई वासियो को उनके स्वागत के लिए पूरी तरह से तैयार रहना चाहिए। दूसरी तरफ उन्होने सारे देश के आर्यजनो से आह्वान करते हुए कहा है कि वे इस महासम्मेलन मे आर्थिक सहयोग भी करे। क्योकि लाखो रुपयो के खर्च का प्रबन्ध सीमित हाथो द्वारा नहीं हो सकता।

वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मेलन के विभिन्न विषयो को लेकर जो सत्र आयोजित किये जा रहे हैं उन सभी सत्रो मे एक एक विशिष्ट प्रस्ताव भी पारित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर घोषणा पत्र भी तैयार होगा जो आने वाले समय के लिए लोगो को प्रेरणाए तथा मार्ग दर्शन भी प्रदान करेगा। ❑

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में

महर्षि जन्मोत्सव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ शनिवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संगठनों से प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाएं।

वेदव्रत शर्मा
सभा प्रधान

गुरुकुल के संस्थापक महात्मा मुंशीराम जी और उनके कुलपुत्रों के उत्सर्ग और त्याग की स्वर्णिम कहानी

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

गुरुकुल कागडी की स्थापना के साथ **'जो बोले, सो कुण्डा खोले'** पुत्रो की लोकोक्ति महात्मा मुशीराम जी पर अक्षरश चरितार्थ होती है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने शिक्षा की जिस पुरातन आर्ष गुरुकुल-प्रणाली पुनर्जीवित करने पर अपने ग्रन्थो और भाषणो मे बल दिया था, उसके लिए महात्मा मुशीराम जी के हृदय मे ऐसी लगन लगी कि वह उसके पीछे भिखारी बन गए।

आर्यजनता के सम्मुख गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने का प्रस्ताव महात्मा मुशीराम जी ने ही प्रस्तुत किया था। उस प्रस्ताव को मूर्त्तरूप देने के लिए उन्हे ही भिक्षा की झोली गले मे डाल कर गाव-गाव मे घूम कर चालीस हजार रुपए जमा करने पडे और घर-द्वार त्याग कर स्वय भी गुरुकुल मे डेरा डालना पडा। गुरुकुल को पालने-पोसने और उसे आदर्श शिक्षणालय बनाने के लिए उसके आचार्य और मुख्यधिष्ठाता होने का कठिन दायित्व भी उन्हे ही सम्भालना पडा। इसी के साथ सस्था को नई पौध देने के लिए उन्हे अपने हृदय के दो टुकडो – दो पुत्रो को प्रारम्भिक ब्रह्मचारियो के रूप मे भेट करना पडा। गुरुकुल के पीछे ही पजाब मे फलती-फुलती वकालत की बगिया की भी उपेक्षा करनी पडी।

गुरुकुल-स्थापना के पहले ही वर्ष सवत् १९५६ विक्रमी मे उन्होंने अपना विशाल पुस्तकालय गुरुकुल को भेट कर दिया। पाच वर्ष बाद सवत् १९६४ विक्रमी मे आर्यसमाज लाहौर के तीसवे महोत्सव पर उन्होने अपना बहुमूल्य सद्धर्मप्रचारक प्रेस भी जिसका मूल्य ८-१० हजार रुपयो से कम नहीं था। गुरुकुल के चरणो मे भेंट कर दिया। गुरुकुल की स्वामिनी पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने वह कोठी भी बीस हजार रु० मे बेचकर वह धनराशि गुरुकुल के स्थिर कोष मे जोड दी। उल्लेखनीय है कि महात्मा मुशीराम ने यह सब तब किया, जब उनके सिर हजारो का ऋण था और वह वह अपने निर्वाह के लिए गुरुकुल से कुछ नहीं लेते थे। यह भी उल्लेखनीय है कि महात्मा मुशीराम जी ने जल्दी ही वह सब ऋण उतार दिया था और अपनी सन्तान को गुरुकुल की सर्वोच्च शिक्षा से अलकृत कर दिया।

गुरुकुल प्रणाली का पुन. आविर्भाव

वि० सम्वत् १९६८ मे गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी विश्वविद्यालय मे उत्सव मे विद्यालकार की उपाधि से विभूषित कर आचार्य महात्मा मुशीराम जी ने अपने दीक्षान्त भाषण मे विदाई का सन्देश देते हुए उद्बोधन किया था – 'यज्ञ रूप परमात्मा धन्य हैं, जिनकी अपार कृपा से आर्यसमाज द्वारा रचे गए इस ब्रह्मचर्य आश्रम रूपी महायज्ञ का पहला चरण आज समाप्त हो रहा है। आर्य जाति का कौन ऐसा प्रतिनिधि होगा, जिसे सहस्रों वर्ष से लुप्त हुई इस प्रणाली के पुन आविर्भाव पर प्रसन्नता न हुई हो। गुरुकुल के नव स्नातको तुम गुरुकुल रूपी उद्यान के फल हो। सारे सभ्य ससार की आखे तुम पर लगी हुई हैं। परमात्मा आशीश दें कि तुम ससार में धर्म और शान्ति फैलाने के माध्यम बनकर अपने कुल का यश और गौरव सारे ससार में फैलाओ। तुम्हारा उत्तरदायित्व इस कारण भी अधिक है कि तुम्हारे पीछे आने वाले स्नातक तुम्हारा अनुकरण करेंगे। उनके लिए केवल तुम ही आदर्श होगे।"

आचार्य जी ने कहा – "नव स्नातको, मैं भली प्रकार जानता हू कि तुम्हे बडी कठिनाई होगी, क्योकि तुम लोगो के सम्मुख इस समय कोई जीवन-आदर्श नहीं है परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारे आचार्य और उनके साथी गुरुओ ने जो-जो प्रयत्न तुम्हारी शिक्षा को पूर्णतया सफल बनाने के लिए किए हैं, वे अवश्य ही सर्वोत्तम फल लाएगे मुझे यह भी विश्वास है कि आने वाले युग मे तुम आने वाले स्नातको के लिए सर्वोत्तम आदर्श बनोगे।"

आचार्य मुशीराम जी ने नवस्नातको के माध्यम से उद्घोषणा की – "मैं आज आर्यसमाज को सौभाग्यशाली मानता हू, जिसके निरन्तर प्रयत्न आज यशस्वी हो रहे हैं। मैं आर्यसमाज के उन सदस्यो और सेवको को भी बधाई देता हू, जिन्होने अपने कठिन परिश्रम से कठिन से कठिन आन्धियो का सामना कर अपना विश्वास सुदृढ किया, उन सबको आज परम दयालु प्रभु के प्रति अपने सिर कृतज्ञता और धन्यवाद स्वरूप झुका देने चाहिए।

गुरुकुलो का सूत्रपात

आचार्य मुशीराम जी ने यज्ञभूमि मे एकत्र सभी देवियो और सज्जनो से अनुरोध एव आह्वान किया' – देवियो ओर भद्रपुरुषो आप सब सयुक्त होकर इन नव स्नातको को आशीर्वाद दे जिससे ये नव स्नातक अपने धर्म और राष्ट्र का यश विश्व के सभी देशो-देशान्तरो मे पहुचाने मे सफल हो।'

दयालु प्रभु से प्रार्थना करते हुए आचार्य जी ने कहा – "हे करुणासागर प्रभु आप शक्ति और ज्योति के भण्डार हैं। आप हम सब को ऐसी शक्ति और सामर्थ्य दे, जिससे हम शक्ति सम्पन्न होकर वह तेज धारण करे जिसके दर्शन मात्र से हमारे सब दु ख दूर हो जाए।"

आचार्य मुशीराम जी और उनके साथी गुरुओ की निष्ठा और साधना से गुरुकुल कागडी जल्दी ही लोकप्रिय हो गया कि हिमालय की उपत्यका मे गगा के किनारे की गुरुकुल भूमि मे बढती हुई आवश्यकताओं और छात्रो की सख्या देखते हुए गुरुकुल का वह स्थान अपर्याप्त दिखाई देने लगा, इस कमी को वही पूरा करने की जगह शाखा-गुरुकुलो के खोलने से वह समस्या बिना कठिनाई के सुलझ गई।

महात्मा मुशीराम केवल गुरुकुल कागडी को ही समुन्नत, विशाल और अग्रणी बनाना नहीं चाहते थे, प्रत्युत वह देश भर में उसकी शाखाओ का जाल बिछाना चाहते थे। उन्होंने लिखा था – "यदि मेरे पास पचहत्तर लाख रुपए हों तो वह गुरुकुल की सौ शाखाए तुरन्त खोलना चाहेगे।"

यद्यपि यह आशा फलवती नहीं हुई, तथापि गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की महत्ता इस रूप मे प्रमाणित हो गई कि जल्दी ही सनातनी और जैन भाइयो ने भी गुरुकुल खोलने प्रारम्भ कर दिए। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली सार्थक हो गई, फलत महात्मा मुशीराम जी क्रान्तिकारी शिक्षक और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा के सूत्रधार के रूप मे भारत की शिक्षा के इतिहास मे सदा स्मरण किए जाएगे। इसी के साथ जल्दी ही पजाब, गुजरात उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशो मे गुरुकुलीय शिक्षा का प्रसार करने के लिए गुरुकुलो का सूत्रपात हो गया। गुरुकुल की अनेक शाखाए कार्य करने लगीं।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

जगतगुरु ऋषि दयानन्द की महिमा गाओ रे

– पं० नन्दलाल निर्भय

आर्यवर्त्त के वीर सपूतों, मिलकर कदम बढाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

देव दयानन्द ने सोई दुनिया को, सुनो जगाया था।
वेद धर्म की महिमा को, सारे जग को बतलाया था।।
सत्य-असत्य अरु भले-बुरे का सबको बोध कराया था।।
विघ्न और बाधाओ से वह योद्धा न दहलाया था।।

ईश्वर-विश्वासी, योगी की जग को याद दिलाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

सच कहता हू देव दयानन्द अगर जगत में न आते।
वेद शास्त्र की चर्चा करने वाले जग से मिट जाते।।
राम-कृष्ण के पुत्र-पुत्रिया, ढूंढे से भी न पाते।
ऋषियों की गौरव-गाथाएं, कहीं नहीं गायक गाते।।

सुख चाहो यदि वेद ऋचाए, जग को सभी सुनाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

नजर उठाकर देखो तुम, बिगड़ गया जग सारा है।
और किसी का दोष नहीं, यह सारा दोष हमारा है।।
नकल विदेशों की कर-करके, अपना रूप बिगाड़ा है।
धूर्त, विधर्मी, कुकर्मियों को, हमने नहीं लताड़ा है।।

भूल सुधारो अपनी पहले, फिर जग को समझाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

पहले से भी ज्यादा जग में गऊए मारी जाती हैं।
जीवित पशुओ की भारत में खाल उतारी जाती हैं।।
लाखों विधवाए अब भी, जग में फिरती डकारती हैं।
वेश्याए बनकर बेचारी, जीवन व्यर्थ गवाती है।।

दुखियाओं को गले लगाओ, अपना फर्ज निभाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

कौन तुम्हारे बिना जगत में, वैदिक नाद बजाएगा।
धर्म-अधर्म अरु पाप-पुण्य का जग को ज्ञान कराएगा।।
महानाश की ज्वालाओ से, जग को कौन बचाएगा।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, आगे कदम बढ़ाएगा।।

'नन्दलाल' अब जन्म जाति का, जग से रोग मिटाओ रे।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, अब सब महिमा गाओ रे।।

– ग्राम बहीन, जिला– फरीदाबाद (हरियाणा)

बोध कथा

जो भी कार्य करो, लगन से करो

एक नगर मे एक मन्दिर का निर्माण कार्य प्रचलित था। मन्दिर के निर्माण-कार्य मे तीन मजदूर लगे हुए थे। एक सज्जन पुरुष ने पहले मजदूर से पूछा – 'भाई यहा तुम क्या कर रहे हो ?' वह कठिन परिश्रम से पसीने से सराबोर था और कडी मेहनत के काम से खीजा हुआ था – बोल उठा – देख नहीं रहे हो मैं क्या कर रहा हू। मैं अपने पापी पेट के लिए पत्थर तोड रहा हू।

उन सज्जन पुरुष ने दूसरे मजदूर से जिज्ञासा की "भाई तुम क्या कर रहे हो ?" वह भी भारी मेहनत से तग था, बोल उठा – ' मैं क्या कर रहा हू, देखते नहीं, अपने बीवी-बच्चो के लिए मजदूरी कर रहा हू।"

जब तीसरे मजदूर से उस सज्जन ने जिज्ञासा की भाई, क्या कर रहे हो ?" उस मजदूर ने बडी शान्ति और प्रसन्न मन से कहा – "भाई मैं अपने लिए कुछ नहीं कर रहा, भगवान् का मन्दिर बना रहा हू।"

थोडा चिन्तन-विचार करे तो देखेगे तीनो ही श्रमिक मजदूर भाई परिश्रम-मेहनत कर रहे थे, तीनो को ही एक समान पैसे भी मिलेगे, परन्तु तीनों ने अपने मानसिक भाव को अपने जवाबो मे अभिव्यक्त किया। जो मजदूर क्रोध से भरे थे, उन्होने काम को बोझा समझा, परन्तु जो प्रसन्नचित था, वह कार्य को प्रसन्नता से कर रहा था। शास्त्र कर्म की इसी उदात्त भावना के लिए गीता में कहा गया है – **'योग कर्मसु कौशलम्'** कार्य को कुशलता से करना ही सच्चा योग है।

– नरेन्द्र

इदं राष्ट्राय स्वाहा, इदं न मम :
राष्ट्र के लिए सच्ची समर्पण

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये त्वहं दुःखतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

न मुझे राज्य चाहिए न मुझे मुक्ति चाहिए मेरी एकमात्र आकाक्षा है कि दुखी प्राणियो के कष्टो का निवारण हो।

नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्तेत्र देवता

जहा नारियों की पूजा हो, वहीं देवता रहते हैं।

"दरिद्र नारायण की सेवा ही भगवान की पूजा" – गाधीजी

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

नए भारत राष्ट्र का निर्माण : सच्ची जनसेवा - नई दृष्टि से

नई शती और नई सहस्राब्दी मे प्रत्येक देशवासी को अतीत की उपलब्धियो और वर्तमान स्थिति का सच्चा मूल्याकन करना चाहिए। इतिहास साक्षी है कि युगो तक उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धु सागर तक विस्तीर्ण भारत प्रत्येक दृष्टि से अग्रणी, सुखी, साधन-सम्पन्न, समृद्ध राष्ट्र था। परन्तु पिछली सहस्राब्दी मे आपसी मतभेदो और दूसरी अपूर्णताओं के कारण पराधीन निर्धन एवं विषम स्थिति मे पहुच गया। यद्यपि पिछले ५४ वर्षों से हम राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन है और ५१ वर्षों से राष्ट्र मे गणतन्त्री व्यवस्था भी प्रचलित है, परन्तु हम यह भूल नहीं सकते कि हमारे पश्चिम और पूर्वी बाजुओ से हमारे ही देश के भूभाग पृथक हैं। इसी के साथ यह भी कुट तथ्य है कि इन वर्षों मे हमारे पश्चिमी पडोसी राष्ट्र ने चार बार आक्रमण किए हैं और आज भी वह आतंकवाद के माध्यम से निरन्तर हमारे अस्तित्व को चुनौती दे रहा है। यह भी सच्चाई है कि एक अरब से अधिक देशवासियों के अस्तित्व के बावजूद, सभी तरह के भौतिक प्राकृतिक ससाधनो एव वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी प्रतिभा के होने पर भी देश मे गरीबी, भूख, रोग, विषमताए विद्यमान हैं। सर्वेक्षणो से ज्ञात हुआ है कि अनेक क्षेत्रो मे हम समय के साथ आगे नहीं बढे। हम सच्ची जनसेवा समाज-सुधार और नई विद्याओ को अपनाने मे चूक गए। समाज-सुधार को ही लीजिए, यद्यपि आर्यसमाज के दस नियमो मे ६, ७ और १० वा नियम समाज-सुधार के लक्ष्य का सन्देश देते है और स्वय महर्षि दयानन्द सरस्वती अपना सारा जीवन समाज-सुधार के कार्यक्रमो मे ही अर्पित कर गए, यह भी उल्लेखनीय है कि गाधी जी दरिद्र नारायण की सेवा को ही भगवान् की पूजा मानते थे, उन्होने भी समाज-सुधार दरिद्रो की सेवा का व्रत लिया, अपने सारे कार्यक्रम भी पिछडे लोगो और हरिजन बस्तियो ने केन्द्रित किए। यह ध्यान देने की बात है कि ईसाइयो ने समाज-सुधार के कार्यक्रमो से विश्व के डेढ अरब लोगो को अपने पन्थ मे लाने मे सफलता पाई है। आर्यसमाज एव दूसरी समाज सुधार के सगठनो को समाज-सुधार के कार्यक्रमो पर भी उतना ही ध्यान देना चाहिए जैसा कि सन्ध्या-हवन, सत्सग आदि पर दिया जाता है।

आज हमे जनसेवा और समाज सुधार के कार्यक्रम अपनाकर ही देश के आदिवासी, वन्य एव पिछड इलाको की जनता तक पहुचा जा सकता है। इसी के साथ हमे अपनी सामाजिक दुरावस्था रोकनी होगी। देहजप्रथा के अभिशाप के कारण तथा जाति-पाति के भेद से आज भी नारी की स्थिति ठीक नहीं है। स्त्रियो की गिनती लगातार घट रही है, पिछली जनसख्या मे एक हजार पुरुषो के पीछे ८०० औरते रह गई थीं। पैदा होते ही नारी शिशु को अल्ट्रासाउण्ड की भेट चढाने के आकडे भी हमे सचेत कर रहे है। नई शती और नई सहस्राब्दी मे हम नए भारत राष्ट्र का निर्माण सभी पिछडे वन्य क्षेत्रो मे सच्ची जनसेवा, शिक्षा चिकित्सा आदि का प्रसार कर सकेगे। उपेक्षितो, अशिक्षितो, निर्धन वर्गो मे भी उतना ही ध्यान लगाया जाना चाहिए जितना नागरिक क्षेत्रो मे लगाया जाता है इसी के साथ केवल भक्ति और पूजा के स्थान पर जीवन मे कर्मयोग अपनाकर ही आगे बढा जा सकता है। पिछडे अविकसित क्षेत्रो मे महिला सिलाई केन्द्र, कढाई बुनाई केन्द्र, मुफ्त शिक्षा एव चिकित्सा केन्द्र खोलकर और सार्वजनिक कल्याण जनसेवा के दूसरे माध्यम बताकर जन-जन और प्राणी मात्र को सवारकर ही सच्ची जनसेवा की जा सकती है।

नई शती और नई सहस्राब्दी मे विपक्षियो एव दूसरे पक्षो से जूझने मे कोरे धर्मप्रचार और भाषणो से कार्य नही चलेगा। जहा जनता तक पहुचने के लिए सच्ची जनसेवा-सार्वजनिक जनकल्याण के कार्यक्रम अपनाने चाहिए, वहा उनके आधुनिक साधनो के सम्मुख हमे विश्वभाषाओ, कम्प्यूटर, नवीन वैज्ञानिक तकनीकी विद्याओ मे भी पारगत होना पडेगा। हम यह भी नहीं भूल सकते कि अपनी सच्ची जनसेवा और व्यापक भाईचारे के माध्यम से दूसरे धर्मों के प्रचारक आगे बढे हैं। नई शती और नई सहस्राब्दी मे केवल भाषणो और लेखो के माध्यम से हम प्रगति नहीं कर सकते। सच्चे समाज-सुधार और दरिद्रनारायण की सेवा अपनाकर ही जन-जन के हृदयो तक पहुचा जा सकता है। ऐसे मे सभी सामाजिक सस्थाओ की विशेषत आर्यसमाज को सच्ची जन-सेवा, समाज-सुधार के अपने प्रारम्भिक इतिहास को दोहराना होगा। जहा हम स्वदेश और विदेशो में जनसेवा के विविध कार्यक्रम अपनाए वहा इन कार्यक्रमो को क्रियान्वित करने वाले सच्चे कर्मठ जनसेवको की भी एक बडी टोली तैयार करनी होगी। जीवन की कर्मभूमि मे 'असम्भव' नाम की स्थिति सत्ये सन्मार्गी कल्याण मार्ग के लिए तन-मन-धन की आहुति देने वालो के सम्मुख कमी नहीं आती। आर्यसमाज एव उसके नियमो और लक्ष्यो मे आस्था और निष्ठा रखने वालो के लिए देश की वर्तमान स्थिति यदि बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं है, क्योकि आज देश अनेक आन्तरिक और बाह्य सकटो से जूझ रहा है तो उस निराशाजनक भी नहीं कहा जा सकता। विदेशी शासन के कडे नियन्त्रण मे भी आर्यसमाज और उसकी सस्थाओ ने राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य सघर्ष, शिक्षा, समाज-सुधार के अनेक प्रगतिशील कार्यक्रमो मे अपना यशस्वी योगदान किया था, आज फिर समय आ गया है कि नए भारत राष्ट्र का निर्माण करने के लिए आर्यजन और आर्यसस्थाए पूरी निष्ठा, समर्पण और त्याग से कार्य करे। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्थाओ, बौद्धिक चिन्तको, नेताओ और आर्यजनता को मिलकर आर्यसमाज को उसकी पुरानी निष्ठा, एकता और समर्पण की स्थिति मे पहुचाने के लिए योजना एव कार्यक्रम बनाने चाहिए।❑

गरीब रोगी कहां जाए ?

नीम तुलसी, जामुन अदरक पुदीना, हल्दी आदि को किसी प्रयोगशाला मे नहीं परखा जाता था उन्हे गुणी, अनुभवी जनो ने परखा और जनता को बताया। जब एम०बी०बी०एस की परीक्षा नही थी, तब शहरों और गावों तक मे गुणीजन और दादी मा ही इलाज कर लेते थे – घर मे बीमारी का। आज निजी नर्सिंग होम कन्सल्टिंग डाक्टर किस तरह खून चूस रहे हैं मरीजो का, यह तो हर भुक्तभोगी ही बेहतर जानता है। गलत डाइगनोसिस के मामले भी आमचर्चा मे आते रहते हैं। राह चलते यदि किसी को छोटी-मोटी चोट लग जाए तो उसे मे पट्टी करने वाला डक्टर नहीं मिलता। डिग्री वाला डाक्टर छोटी-मोटी कालोनियो, गावो, कस्बो मे जाना पसन्द नहीं करता। झोलाछाप डाक्टर कानून के डर से लोगो की सेवा नहीं कर पाते। छोटे झोला छाप डाक्टर तो डाक्टरी कर नही पाएगे और डिग्री वाले डाक्टर पैसे के पीछे रहेगे। नब्ज देखकर मरीज का हाल बताने वाले वैद्य तो भूतकाल की बात हो गए। अब कोई रास्ता तो निकलाना ही पडेगा कि गरीब लोगो का इलाज भी हो सके। बिना डिग्री के डाक्टरो हकीमो और वैद्यो आदि का कानून का डर दिखाने की बजाय उन्हे कानून के दायरे मे लाने का कोई रास्ता खोजना होगा। सरकार को छोटे स्तर पर डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट आदि का प्रावधान ऐसे लोगो के लिए करना चाहिए, जिससे डाक्टर और मरीज दोनो खुश रहे।

– जगन्नाथ शर्मा, आचार्य निकेतन, दिल्ली

नारी का सम्मान

भारतीय सस्कृति विश्व मे एक अग्रणी गरिमा से पूर्ण सस्कृति है। इसमे रानी लक्ष्मीबाई, सती सावित्री, साध्वी सीता और विदुषी अनुसूया जैसी अग्रणी महिलाओ ने अपनी यशस्विनी भूमिकाओ मे भारत का गौरव बढाया है लेकिन खेद है आज भारत की महिलाओ का शोषण किया जा रहा है। बहुत से पुरुष उन्हे मात्र 'भोग्या' मान रहे हैं। वस्तुत नारी को सम्मान सहित जीने का अधिकार है। केन्द्रीय शासन को नारी के सम्मान की रक्षा के लिए उचित कानून बनाना चाहिए, उसको भग करने वाले को दण्ड मिले।

– नितीन कुमार कोंडली, दिल्ली

परमेश्वर-स्तुति-सप्तकम्

परमेश्वर की किस किस रूप में स्तुति करें?

– मनोहर विद्यालंकार

(१) दुष्ट दमनकर्ता और सुखवर्षी रूप में प्रभु की स्तुति करें

तमुष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः। अषाह्लमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्वर्ध वृषभं चर्षणीनाम्।।

ऋ० ६-१८-१

ऋषि - बार्हस्पत्यो भारद्वाज। देवता. इन्द्र। छन्द -त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (भरद्वाज) किसी भी समृद्धि की कामना करने वाले साधक! (तंउ स्तुहि) केवल ऐसे ऐश्वर्यशाली की स्तुति करो (य इन्द्र पुरुहूत) जो आवश्यकता पडने पर इन्द्र प्राय सभी से स्मरण किया जाता है। (अभिभूत्योजा) जिसका पराक्रम और तेज शत्रुओ को पराभव करने वाला है, (अवात) जिस की कोई हिसा नहीं कर सकता, किन्तु जो स्वय (बन्वन्) सब दुष्टो और शत्रुओ की हिंसा करने मे समर्थ है और (चर्षणीना वृषभम्) मनुष्यो की इच्छाओ को पूरा करने वाले (अषाह्लम्) अ-सहनीय तेजवाले (उग्रम्) दुष्टो के लिए उग्रस्वरूप (सहमानम्) शत्रुओ का पराभव करने वाले इन्द्र को (आभि गीर्भि) इन वेद-वाणियो द्वारा (वर्ध) अपने अन्दर सदा बढाता रह।

बन्वन् – वनुयाम हिसासायाम्। आख्यातानुक्रमणी

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का भाष्य करते हुए भावार्थ मे लिखा है – हे राजन्! आप सत्कार योग्य व्यक्तियो का सदा सत्कार करे और दण्डनीय व्यक्तियो को दण्ड दे।

(२) बहुप्रज्ञ, ऐश्वर्यश्ली तथा आनन्ददाता के रूप में प्रभु की स्तुति करें

य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्र त गीर्भिरभ्यर्च आभि। य पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्य सत्वा पुरुमाय सहस्वान्।।

ऋ० ६-२२-१

बार्हस्पत्यो भरद्वाज। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (य एक इत् हव्य) केवल अद्वितीय परमेश्वर ही आपत्तिकाल या कष्ट मे स्मरण तथा प्रार्थना करने याग्य है, (य वृषभ) जो प्राणियो की कामनाओ की वर्षा करने वाला (वृष्ण्यावान्) सर्वोपरि बलवान् (सत्य) त्रिकाल सत्य (सत्वा) आवश्यकताओं का प्रदाता (पुरुमाय) बहुप्रज्ञ (सहस्वान्) दुष्टो का पराभवकर्त्ता (पत्यते) सब लोको का ईश्वर है, (त इन्द्र आभि गीर्भि) उस परमेश्वर की इन वेद-वाणियों द्वारा (अभ्यर्च) स्तुति किया कर। (अभ्यर्चे) मैं स्तुति करता हू।

निष्कर्ष – स्वामी दयानन्द द्वारा दिया गया भावार्थ ही वास्तविक निष्कर्ष है –

हे मनुष्या! योऽद्वितीय सर्वोत्कृष्ट सच्चिदानन्द स्वरूपो न्यायकारी सर्वस्वामीवर्तते त विहायान्यस्योपासना कदापि मा कुरुत।

हे मनुष्यो! अद्वितीय, सर्वोत्कृष्ट सच्चिदानन्दस्वरूप, न्यायकारी, सर्वेश्वर को छोडकर अन्य किसी की उपासना कभी न करो।

(३) सत्याचरण के प्रेरक, हितकर तथा मधुरवक्ता के रूप में प्रभु की स्तुति करो

तमुष्टुपि यो अन्त सिन्धौ सूनु. सत्यस्य युवानम्। अद्रोधवाच सुशेवम्।। अथर्व ६-१-२

अथर्वा। सविता। पिपीलिकामध्या पुर उष्णिक्।

अर्थ – हे मानव! तू (त उ स्तुहि) केवल उसकी स्तुति तथा उपासना किया कर (य अन्त सिन्धौ), जो सबके हृदय समुद्र मे सदा विद्यमान रहते हुए (सत्यस्य सूनु) सत्य विचार और सत्य आचरण की प्रेरणा करने वाला है तथा (युवानम्) बुराइयो को पृथक् करके अच्छाइयो से मिलाने वाला और सदा युवा – एक समान क्रियाशील (अद्रोधवाचम्) द्रोहरहित – सबका हित करने वाली वेदवाणी का स्वामी तथा (सुशेवम्) सब को सुख देने की कामना रखता है।

अर्थपोषण – सिन्धौ – हृदय समुद्र मे – 'हृद्यात् समुद्रात्' यजु २७–६३

युवानम् – युभिश्रणामिश्रणयो,। शेवम् – सुखनाम, नि० ३-६।

निष्कर्ष – अपनी स्तुति के अनुरूप सदा सत्य की प्रेरणा दे, सत्य का आचरण करे। मधुर वचन बोले और सबको सुख देने का प्रयत्न करे।

(४) प्रभु की जीवनदाता, रोगविनाशक तथा शान्तिप्रदाता रूप में स्तुति करें

तमुष्टुहि य स्विषु सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य। यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य।।

ऋ० ५-४२-११

भौम अत्रि। विश्वेदेवा (रुद्र) त्रिष्टुप्।

अर्थ – (य रुद्र) रोगो और शत्रुओ को दूर करने वाला जो रुद्र (विश्वस्य भेषजस्य क्षयति) सब ओषधियो का स्वामी है तथा (स्विषु सुधन्वा) सब प्रकार के प्रक्षेपास्त्रो तथा शस्त्रो से सज्जित योद्धा की तरह सब शत्रुओ को परे धकेलने मे समर्थ है (त उ स्तुहि) केवल ऐसे महादेव रुद्र की ही स्तुति किया करो यह महादेव रुद्र परमेश्वर ही है, कोई अन्य नहीं। इसी प्रकार (महे सौमनसाय रुद्र यक्ष्व) मन की महत्ती शन्ति के लिए भी वातावरण को सुगन्धित करने वाले त्रिलोकी के रक्षक रुद्र-परमेश्वर का ही सत्सग किया करो। उसकी उपासना से मन शान्त रहता है। इसके साथ ही (असुर देव नमोभि दुवस्य) प्राणो (जीवन) को देने और रक्षा करने वाले उस रुद्र परमेश्वर की नमन के साथ स्वय अन्नभोजी बनकर और दूसरे अभावग्रस्त जनों को अन्न प्रदान करके – परिचर्या (पूजा) किया कर।

मनन – सासारिक दृष्टि से – धनुष-बाण धारण करने वाला महान् सेनापति रुद्र है – जो बाह्य शत्रुओ को परास्त करके भगाता है और सब प्रकार की भेषज्ञो का ज्ञाता भिषक् ही रुद्र है, जो सब रोगो का निदान करके उन्हे दूर करता है। प्राण दान करके उनकी रक्षा करने वाला असुर योगी ही रुद्र है, जो प्राणसाधना की शिक्षा देकर मन को शान्त करता है और मृत्यु से पार करता है

(य प्राणद प्राण दवान् – तेनाति तराणिमृत्युम्। अ० ४-३५-५)

निष्कर्ष – शरीर से स्वस्थ रहने के लिए भिषक् रूप मे, शत्रुओ से अनाक्रान्त होने के लिए वृत्रहन् इन्द्र रूप में, मन को शान्त रखने के लिए प्राणद् योगीराज रुद्र रूप मे केवल परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। यह भी सकेत है कि शरीर के स्वास्थ्य और मन की शान्ति के लिए स्वय अन्नभोजी बने और अन्न का दान करते रहे।

(५) विनम्र दानियों के सहायक रूप में विश्वविश्रुत प्रभु की स्तुति करो

स्तुहि श्रुतं विपश्चित हरी यस्य प्रसक्षिणा। गन्तारा द्वाशुषो गृह नमस्विनः।। ऋ० ८-१३-१०

नारद काण्व। इन्द्र। उष्णिक्।

अर्थ – हे साधक! तू (श्रुत विपश्चित स्तुहि) विश्वविख्यात वाणी ओर मेघा को चैतन्य करने वाले परमेश्वर की स्तुति कर, (यस्य हरी प्रसक्षिणा) जिसके गतिशील अश्व अर्थात् कल्याण का आहरण करने वाली और दुरितो को दूर करने वाली शक्तिया (नमस्विन दाशुष गृह गन्तारौ) स्तुतिशील तथा विनम्र और परार्थ अन्न, धन और सहायता देने वाले के घर में सदा आती रहती हैं। सक्षति गतौ, नि० २-१४। हरी- हरत इति तौह्रौ सामर्थ्यौ।

निष्कर्ष – परमेश्वर के स्तोता के घर मे, आध्यात्मिक और सासारिक दोनो प्रकार के सुखो को देने वाली शक्तिया (हरी=अश्वौ) सदा विराजती हैं।

(६) विचक्षण द्रष्टा, सत्संकल्पों एवं सत्कर्मों के प्रेरक प्रभु की स्तुति करो

य एक इत्तुम ष्टुहि कृष्टीना विचर्षणि.। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः।। ऋ० ६-४५-१६

शयुर्बार्हस्पत्य। इन्द्र। गायत्री।

अर्थ – हे स्तोता! (य) जो परमेश्वर (एक इत्) अद्वितीय एक ही (विचर्क्षणि) विचक्षण द्रष्टा=सर्वज्ञ (कृष्टीना पति) मनुष्यो तथा जात मात्र सभी पदार्थों का स्वामी (वृषक्रतु ...... सकल्प सपन्न और धर्म (सत्) कर्मो का प्रेरक (जज्ञे) व्युत्पन्न है (त उ स्तुहि) केवल उसकी स्तुति किया करो तथा वैसा बनने का प्रयत्न किया करो।

स्तुति किए जाने वाले गुणो को धारण करके वैसा बनने का आशय को लेकर स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखा है –

" हे प्रजाजनो! जो सम्पूर्ण विद्या और श्रेष्ठ गुण कर्म, स्वभाव वाला, तथा निरन्तर न्याय से प्रज पालन मे तत्पर हो, उसी को राजा बनाओ, किर्स दूसरे क्षुदाशय को नहीं।"

अर्थपोषण – वृष कपिर्वराह श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते। महाभारत

जज्ञे – व्युत्पादने, आख्यातानुक्रमणी, व्युत्पन्न– मूल रूप मे उत्पन्न तथा मन्तव्य। सस्कृत धातुकोष

(७) सर्वप्रकाशक तथा उत्साहप्रदाता रूप में प्रभु की स्तुति करें

दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देव सवितारम्। साम० १७७

दध्यङ् आथर्वणः। इन्द्र। गायत्री।

अर्थ – (द्युमद् गामन्) सद्गुणो से द्योतित आचरण वाले (आथर्वण) अपने स्वीकृत मार्ग पर अडिग रहने वाले साधक! (दोषा आगात्) काम, लोभ, मोह आदि दोषों को प्रेरणा देने वाली रात आ गई है। अत उनके आक्रमण को निरर्थक करने के लिए (बृहद् गाय) ब्रह्म का प्रचुर मात्रा मे स्तुतिगान कर। रात भी सदा नहीं रहेगी (रात्रिर्गमिष्यति, भविष्यति सुप्रभातम्) प्रभात होगा। इसलिए ब्रह्म के प्रतिनिधि, सुप्रभात के जनक (सवितार देव स्तुहि) सविता देव की स्तुति करे।

निष्कर्ष – मनुष्य स्वधर्म पर चाहे जितना, अडिग रहने का प्रयत्न करे, फिर भी दोष आ ही जाते हैं, उनसे बचने का एक ही उपाय है कि सबके प्रेरक सविता अथवा बृहद् – ब्रह्म का ध्यान या स्तुति करे।

अर्थपोषण – ब्रह्म सूर्यसम ज्योति। यजु। इस मन्त्र का ऋषि दध्यङ – अपने नाम से ध्यान व उपासना करने की प्रेरणा देता है। दोषा=रात्रि निरुक्त ३-३-१५

– श्याम सुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

श्री प्रकाशवीर शास्त्री श्रेष्ठ वक्ता थे उन्हें सरस्वती का वरदान था :

प्रधानमन्त्री श्री अटल जी द्वारा दो ग्रन्थों का लोकार्पण और शास्त्रीजी के प्रति श्रद्धासुमन

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने धाराप्रवाह भाषणो से लोकसभा मे हिन्दी की प्रतिष्ठा की थी। वह ऐसा समय था जब लोकसभा मे अग्रेजी का बोलवाला था। हिन्दी के भाषणो को कोई पूछता नहीं था, परन्तु प्रकाशवीर शास्त्री ने हिन्दी मे भाषण देकर ऐसा समा बाधकर बतला दिया कि हिन्दी मे जटिलतम विषयो भी बखूबी रखा जा सकता है। प्रधानमन्त्री अटल जी ने यह तथ्य शास्त्रीजी की स्मृति मे प्रकाशित दो पुस्तको का लोकार्पण करते हुए प्रकट किया। प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि जब श्री अनन्तशयनम आय्यगर लोकसभा के अध्यक्ष थे तब उनसे यह पूछा गया कि सदन मे सबसे अच्छा वक्ता कौन है ? इसके उत्तर में श्री आय्यगर ने श्री हीरने मुखर्जी और श्री प्रकाशवीर शास्त्री के नाम लिए थे। अहिन्दी भाषी भी शास्त्री जी के भाषणो को ध्यान से सुनते थे तथा उन्हे पसन्द करते थे। प्रकाशवीर जी कभी उत्तेजित नहीं होते थे। वह अपने भाषणो मे बडे सयत और नपे-तुले शब्दो को प्रयुक्त करते थे। यदि वह प्रहार भी करते थे तो वे शालीनता की मर्यादा मे होते थे।

प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लेते ही उनके सामने एक शालीन, सयत और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व उपस्थित हो जाता है। मेरे उनके सम्बन्ध बडे आत्मीय और प्रगाढ थे। हम दोनो मे अच्छी पटती थी। शास्त्री जी के साथ अपनी इजराइल यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा हमारी यह यात्रा विशिष्ट थी, क्योकि सत्तारूढ दल व सरकार को उससे प्रसन्नता नहीं थी। हमने अन्य अनेक मोर्चों पर भी साथ-साथ काम किया। हमारे विचारो मे भी सामनता थी।

हिन्दी के बारे मे प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा किए गए प्रयासो की सराहना करते हुए अटल जी ने कहा कि सरकारी कार्यों मे यदि हिन्दी का आज कुछ प्रयोग है तो उसका श्रेय शास्त्री जी को ही है। हिन्दी के लिए किए गए उनके कार्य चिरस्मरणीय रहेगे। सरकारी कामकाज मे हिन्दी के कम प्रयोग पर प्रधानमन्त्री ने अपनी वेदना प्रकट करते हुए कहा कि फाइलो में मेरी हिन्दी टिप्पणियो का सही अंग्रेजी रूपान्तर करने मे बडा समय लगता है तथा परेशानी होती है। हिन्दी जानने एव पढने वालो की सख्या बढने के बावजूद प्रशासन मे उसका उचित प्रयोग नहीं हो रहा हैं।

प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर जी प्रखर राष्ट्रवादी थे। भारतीय सभ्यता, सस्कृति देश की अस्मिता और गौरव की रक्षा के लिए वह सदा सतर्क और सजग रहते थे। उनका भविष्य बडा ही उज्ज्वल था। हम समझते थे कि वह देश के लिए महत्वपूर्ण ऊचाइयो पर पहुचेगे तथा अनेक क्षितिजो को छुएगे पर रेल दुर्घटना मे उनकी मृत्यु मित्रो, परिचितो के लिए तथा विशेषत देश के लिए एक भारी आघात सिद्ध हुआ। उन्होने शास्त्रीजी के भाषणो को भी प्रकाशित करने का आग्रह किया।

वेद प्रतिष्ठान एव प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति ग्रन्थ समिति के अध्यक्ष डॉ० लक्ष्मीमल सिघवी ने शास्त्रीजी की स्नेह भावना और सहजता का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हे देवी सरस्वती का वरदान प्राप्त था। उन्होने एक वेद के मन्त्र को पढते हुए कहा कि इसमे कामना की गई है कि ससद मे अपने भाषणो से यह यश प्राप्त करे। शास्त्रीजी ने ससद मे अपने भाषण निपुणता से यह यश स्वय अर्जित किया। डॉ० सिघवी ने कहा कि हमे मातृऋण, पितृऋण और आचार्य ऋण तीन ऋणो को चुकाने को कहा जाता है। पर मैं एक चौथा ऋण भी मानता हू। वह है, मित्रऋण। हमने इन ग्रन्थो के द्वारा मित्रऋण चुकाने का प्रयास किया है।

वेद प्रतिष्ठान एव समिति के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने घोषणा की कि वेद प्रतिष्ठान शास्त्री जी के ससद के भाषणो को भी दो खण्डो मे शीघ्र ही प्रकाशित करेगा।

इस अवसर पर प्रधानमन्त्री द्वारा ग्रन्थ के तीनो सम्पादक – सर्वश्री दत्तात्रेय तिवारी, अशोक कौशिक और शिव कुमार गोयल एव मुद्रक श्री राकेश भार्गव शाल एव स्वर्ण पदक से सम्मानित किए गए।

डी०ए०वी० के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने प्रधानमन्त्री जी से प्रार्थना की किं अप्रैल, २००१ मे आर्यसमाज की स्थापना की १२५वी वर्षगाठ सारे देश मे मनाई जाएगी। उस अवसर पर वह मार्गदर्शन करे।

वैदिककालीन गणतन्त्र

गणराज्य अथवा गणतन्त्र का अर्थ सख्या या बहुसख्यक का शासन अथवा सम्पूर्ण समूह का शासन है। इसी अर्थ में हमारे देश मे जनतन्त्र और गणराज्य शब्द का प्रयोग किया जाता है।

वैदिक ग्रन्थो मे विभिन्न स्थानो पर हुए उल्लेखो से ज्ञात होता है कि हमारे देश मे अधिकाश क्षेत्रो मे 'गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था' थी। ऋग्वेद के एक सूक्ति मे कहा गया है कि समिति की मत्रणा एक मुखी हो, सदस्यो के मत पराम्परानुकूल हो तथा निर्णय भी सर्वसम्मति से हो। यह सूक्ति हमारी गणतन्त्रीय व्यवस्था की ओर सकेत करता है। कुछ स्थानो पर राजतन्त्र था जो बाद मे गणतन्त्र मे बदला गया। सिवियो का राज्य पहले राजतन्त्रीय था जो बाद में गणतन्त्रीय शासन में बदला। कुरु और पाचाल मे भी राजतन्त्रीय व्यवस्था थी और ईसा से लगभग चौथी अथवा पाचवी शताब्दी पूर्व उन्होने गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था की अपना लिया।

उल्लेखो के अनुसार वैदिककाल से लेकर लगभग चौथी-पाचवीं शताब्दी तक हमारे देश मे जनतन्त्रीय शासन रहा। इनमे चर्चित गणराज्य, बुली, कालाम, मौर्य, कोलिया, काशी के मल्ल पावा के मल्ल, कुशीनगर के मल्ल, कपलिवस्तु के शाक्य विदेह लिच्छवी मालव निसोई आदि थे। इनके अतिरिक्त राजपूताना, मालवा और पजाब मे कई गणराज्य थे जिनमे विशेष उल्लेखनीय है यौधेय, कुनिन्द, मालव तथा विणी सघ। आगरा और जयपुर के क्षेत्र मे विशाल अर्जुनायन गणतन्त्र था। यौधेय गणराज्य सहारनपुर से भागलपुर तथा उत्तर-पश्चिम मे लुधियाना मे और दक्षिण-पूर्व मे दिल्ली तक फैला हुआ था। गोरखपुर और उत्तर बिहार मे भी कई गणतन्त्र थे।

महाभारत के सभा पर्व में अर्जुन द्वारा कई गणराज्यो को जीतकर एक करने का उल्लेख है। श्रीकृष्ण अधक, वृष्णि गणराज्य के अध्यक्ष थे जो महाभारत काल मे एक महत्वपूर्ण गणराज्य था। उस समय यादव, भोज आदि अनेक गणराज्यो का भी उल्लेख है जिनके सम्बन्ध मे कहा गया है कि उन राज्यो मे कोई राजा नहीं है तथा जनता स्वय शासन चलाती है।

– गुलाब चन्द विश्वकर्मा

साधारण सन्देश का विशेष उत्तर

प्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने गत माह जितने भी क्रिश्चियन वर्ष के शुभ कामना सन्देश प्राप्त किये उनके उत्तर में भेजने वालो को उनकी श्रद्धा के लिए धन्यवाद करते हुए एक विशेष सन्देश भेजा है जो वास्तव में एक प्रशसनीय प्रयास है। विशेष रूप से इस कारण कि शुभ कामना सन्देश भेजने वाले महानुभाव वैदिक मान्यताओं के शत प्रतिशत प्रभाव मे नहीं थे। श्री रामफल बसल के पत्र में से विशेष सन्देश को यहा प्रकाशित किया जा रहा है –

आपकी जानकारी के लिए गायत्री मत्र के सम्बन्ध में कुछ लिखना उचित समझता हू। इस मत्र का हम सभी लोग हर अवसर पर उच्चारण करते हैं। यह महामत्र है जो चारों वेदों में मिलता है। यजुर्वेद में यह मत्र 36वें अध्याय का तीसरा मत्र है। मत्र इस प्रकार है -

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अर्थ - हे प्रभु तूने ही हमें उत्पन्न किया है,
तू ही हमारा पालन कर रहा है,
तुझसे ही हम प्राण पाते है,
तू ही दुखियों के कष्टों को हरता है,
तेरा तेज महान है।
तू ही सर्वव्यापी है,
तू ही सर्व विद्यमान है,
सृष्टि की हर वस्तु में तू ही तू है।
तेरा ही हम ध्यान करते हैं।
तेरे से तेरी ही दया मांगते हैं।
तुझसे प्रार्थना करते हैं कि
हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

आप देखेंगे परमात्मा से अन्त में ही कुछ मागा गया है कि वह हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाये। इसी में सब कुछ निहित है। सद्बुद्धि नहीं तो कुछ भी नहीं इसलिए सद्बुद्धि पर चलाने की प्रार्थना की गई है। ***धियो यो नः प्रचोदयात्*** - इससे पूर्व प्रभु का केवल गुणगान है।

धर्म तो वैदिक धर्म है जो सत्य और सनातन है। आज की स्थिति में इस पर आन्तरिक और बाह्य प्रहार हो रहे हैं। हम सभी परमात्मा से प्रार्थना करें कि वह हमें शक्ति प्रदान करे जिससे हम इसके प्रहारों का मुकाबला कर सकें। यह धर्म अमर बना रहे।

मेरी वाणी और मेरे व्यवहार में परमपिता प्रभु एकता प्रदान करें।

इन्ही शब्दों के साथ समाज सेवा में आपका अपना -

(रामफल बंसल)

सच्ची जनसेवा समाज सुधार एवं नई विधाओं से आर्यसमाज चुनौतियों को जीत सकेगा

– डॉ० के० एस० बालियान एवं ईश्वरदयाल शर्मा

सब जानते हैं कि महर्षि दयानन्द के कार्यक्षेत्र मे आने से पहले हमारा समाज गिरावट की चरम सीमा तक पहुचा हुआ था। अवैदिक ग्रन्थो के प्रसार ने सारा धार्मिक स्वरूप ही बिगाड दिया था। सारा समाज मूर्त्तिपूजा और अन्धविश्वास के घोर अन्धकार मे फसा था।

ऐसे समय में स्वामी दयानन्द ने आकर धर्म तथा समाज-सुधार का बीडा उठाया। उन्होने हमें एक नया जीवन दिया। हमे धर्म का अच्छा और सच्चा स्वरूप दिखलाया। फलत स्वामीजी के समाज-सुधार के सभी कार्यक्रम सफल हुए साथ ही विकृत हुए समाज मे महत्ती जागृति आई।

किन्तु यह बडे खेद की बात है कि स्वामीजी के वर्षों में स्वामीजी द्वारा चलाए आन्दोलन शिथिल हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, तथा गुरुदत्त जैसे आर्यसमाज के दीवाने उनके बाद आर्यसमाज मे नहीं आए। दूसरी ओर देखते ही देखते अनेक प्रकार के मत-मतान्तर बडी गति से फैले। आर्यसमाजो के दैनिक तथा साप्ताहिक सत्सगो में अधिक सख्या वृद्ध पुरुष और महिलाए ही आती हैं। ऐसी अवस्था देखकर निराश होती है।

समाज सुधार कार्यक्रम

जान पडता है कि हम आलस्य से या किसी भूल के कारण स्वामी दयानन्द द्वारा बताए समाज-सुधार के कार्यक्रम से उदासीन हो गए। हम याद रखे कि स्वामीजी द्वारा बनाए आर्यसमाज के दस नियमों में नियम ६ और नियम ६ व १० आदि तीन नियम स्वामीजी समाज-सुधार के लिए ही बनाए थे।

अपनी शिक्षा-दीक्षा के बाद ऋषि दयानन्द ने अपना सारा जीवन समाज-सुधार मे लगाया था। उन्होने समाज-सुधार के लिए ही अपना जीवन भेट चढा दिया। स्वामीजी ने कहा था – 'परोपकार के बिना नरजीवन पशु-जीवन जैसा है।'' उन्होने इसे स्पष्ट करते हुए कहा था – **''संसार के व्यथित और दुःखी मानवों की सेवा मुझे चक्रवर्ती राज्य के सुख से बढकर सुखद है।''**

चिन्ता की बात है कि आज आर्यसमाज समाज-सुधार के सभी कार्यक्रम से दूर हो गया है। हमारा सारा कार्य केवल सन्ध्या-हवन तक ही सीमित रह गया है। ऐसी परिस्थिति में आर्यसमाज की विचारधारा किस प्रकार फले-फूलेगी।

यदि आर्यसमाज को आगे बढाना है तो हमे भी समाज-सुधार के ये सभी कार्यक्रम अपनाने होंगे। जैसे, दहेज प्रथा को रोके, जाति-पाति का विरोध करे, शर्म की बात है कि दहेज के कारण आज भी महिलाए जिन्दी जलाई जा रही हैं। आकडे बताते हैं कि सन् १६६६ में केवल दहेज के कारण ही ६६३७ महिलाओं को मौत के घाट उतारा गया।

इसी प्रकार जाति-पाति का मर्ज भी समाज में बढा है। हममें से कितने आर्यसमाजी हैं जो अपनी सन्तानो के विवाह अपनी जाति छोडकर अन्य जातियों में खुशी से करते हैं। तो क्या कहने मात्र से ही जाति-पाति का भयंकर रोग समाज मे समाप्त हो जाएगा। समय रहते हम इसके लिए सक्रिय हों अन्यथा चिडिया खेत चुग जाएगी।

दरिद्रनारायण की सेवा ही भगवान की पूजा

इन सभी बुराइयों से पीछा छुडाए बिना समाज-सुधार का सपना देखना व्यर्थ है। हम यह न भूलें कि गाधीजी ने समाज सुधार से ही अपना कार्य आरम्भ किया था। इसी के बल पर ही उन्होंने देश को एक हजार वर्षों की गुलामी से छुटकारा दिलाया। उनकी दरिद्र-सेवा एव प्यार तथा उनके साथ मिलकर चलने की ऊची भावना ने ही उन्हे जीवन की ऊचाइयो तक पहुचाया। गाधीजी कहते थे – **''दरिद्रनारायण की सेवा ही भगवान की पूजा है।''** गाधीजी ने अपने सारे कार्यक्रम हरिजन बस्तियों में रहकर ही चलाए। निर्बल तथा दलित भाइयों के उत्थान के लिए आर्यसमाज महिला सिलाई केन्द्र कढाई-बुनाई केन्द्र आदि कुछ रोजगार परक कार्यक्रम चालू करे। आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अन्य रोजगार बढाने वाले दस्तकारी के काम भी चालू करे। ये बस्तिया हमारी सेवा का अग हो इन कार्यक्रमो को आर्थिक सहयोग देकर आर्यसमाजी भाई-बहन उदारवृत्ति तथा दानशीलता से बढावा दे। गरीब तथा आदिवासी बस्तियो मे मुफ्त शिक्षा तथा उपचार का प्रबन्ध प्राथमिकता से करे।

कर्मयोग पर भक्तियोग हावी

इतिहास गवाह है कि जब तक हमने कर्म तथा भक्ति मे समन्वय रखा, तभी हमारा समाज बढा, फला-फूला परन्तु महाभारत के बाद हम भक्ति में ऐसे उलझे कि कर्म को तिलाजलि देकर भक्ति और अन्धविश्वास के बन्धन मे फस गए। इसी निष्क्रियता से मौहम्मद गौरी जैसे आक्रान्ता को भी खुला रास्ता दे दिया। इस झूठे विश्वास पर कि भगवान् ही हमारी सहायता करेगा और देखते-देखते सोमनाथ का मन्दिर लुट गया।

सदियों की गुलामी

कर्म से विमुख होकर तथा अन्धविश्वास के कारण ही हम सदियों तक मुसलमानों और अंग्रेजो के गुलाम रहे। क्या श्रीराम, श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीष्म जैसे महारथियों की सन्ताने गुलामी की यह सडान्ध सहन करते हुए अपने आप पर तरस न करे ? इस सारी नपुसकता का कारण खोजने पर हमारी कर्म से विमुखता ही है। आडम्बर भरी भक्ति, मूत्तिपूजा तथा अन्धविश्वास ने और जगत् मिथ्या के सिद्धान्त ने इन दोषों को बढाने मे योगदान किया।

इस हालात मे यह कोई आश्चर्यजनक नहीं कि एक अरब की आबादी के हम भारतीय सिडनी २००० ओलम्पिक में कवेल एक कासे का पदक लेकर लौटे। इसके विपरीत हमसे कई गुना कम आबादी वाले अमेरिका, रूस आदि देशों के खिलाडियो ने तमगों ने अपनी झोली भरी। क्या यह स्थिति उनके कर्मयोग की जीत और हमारी अकर्मण्यता का फल नहीं ?

अत अब यह आवश्यक है कि समाज व देश के उद्धार के लिए आर्यसमाज कर्मयोग का बीडा उठाए। प्रभुभक्ति व सन्ध्या-हवन अपने आत्मिक उत्थान के लिए हैं उनसे रणक्षेत्र और खेल के मैदान नहीं जीत जा सकते। कई भाई अपने घर मे निकले हुए जहरीले साप को मारने मे सकोच करते हैं। यह तथ्य है कि साप के निकलने पर कई लोग आखे बन्द करके भगवान से प्रार्थना करते देखे गए हैं, कि भगवान साप देवता से बचा ले बजाय इसके कि वे उसे मारे।

स्वामी दयानन्द द्वारा बनाए आर्यसमाज के नियमो मे से एक नियम यह भी है कि **''सबके साथ प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।''** फिर दुश्मन तो दुश्मन ही है और उसे मारना ही अच्छा है। अब समय आ गया है कि हम कर्मयोग दृढता के साथ अपनाए।

आर्यसमाज आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

अब समय आ गया है कि आर्यसमाज नए विचारो, नए प्रयोगों तथा ज्ञान-विज्ञान की अन्य नवीनतम उपलब्धियों से अपने आपको जोडे। कुछ उदाहरण लें –

सरल हिन्दी – हिन्दी को जनसाधारण की भाषा बनाने के लिए आवश्यक है कि उसमें तमिल, तेलगू, कन्नड तथा अग्रेजी आदि सभी भाषाओं के शब्दा शामिल किए जाए। इससे राष्ट्रीय एकता पनपेगी तथा आर्यसमाज का ज्यादा प्रचार-प्रसार होगा। हम याद रखें कि अहिन्दी भाषी होते हुए स्व० केशवचन्द्र सेन ने स्वामी दयानन्द से जन साधारण की भाषा हिन्दी में ही लिखने और बोलने का आग्रह किया था। स्वामीजी ने उनकी बात मानकर हिन्दी अपनाई। इससे स्वामीजी को जो सफलता मिली, उसे हम भूलें नहीं।

गुरुकुल – गुरु-शिष्य की परम्परा तथा वैदिक सस्कृति को ध्यान में रखते हुए आज के गुरुकुलो को अग्रेजी तथा कम्प्यूटर से जोडना अनिवार्यता है। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारे गुरुकुल का विद्यार्थी प्रगति की दौड में न कैवल पिछडेगा प्रत्युत गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रति जनमानस मे कोई चाव नहीं रहेगा।

इस समय विदेशों मे रहने वाले भारतीय लगमग दो करोड हैं, उन्हे अपनी सस्कृति, धर्म तथा धार्मिक धरोहर जीवित रखने के लिए आधुनिक शिक्षा के माध्यम से बडी गिनती मे शिक्षित आचार्यों व पुरोहितों की आवश्यकता है। ऐसे में कि गुरुकुलो को आधुनिक करके ही उनकी यह माग पूरी कर सकेंगे।

आधुनिक शिक्षा मे परम्परागत विद्वान और धर्म प्रचारक तैयार कर उनकी यह माग पूरी करें जो विदेशों मे जाकर अपनी सस्कृति और धर्म का प्रचार कर उनकी जिज्ञासा शान्त करें। यह कार्य प्राथमिकता के आधार पर आरम्भ करें।

अल्पसंख्यको के प्रति मानवीय दृष्टिकोण

वेदो मे किसी एक धर्मविशेष का नाम लेकर उस की चर्चा नहीं है। वहा तो मानवधर्म की चर्चा है। इसके पश्चात् स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश मे दो अलग-अलग समुल्लासो मे इस्लाम तथा ईसाई मतो मे प्रचलित अवैदिक मान्यताओ का खण्डन तो अवश्य किया है परन्तु वह इसलिए कि हिन्दुओ का एक बडा भाग जो अछूत दलित एव पिछड़ा वर्ग के नाम से जाना जाता था, उनके उत्थान की चर्चा की है। हमें दलित अथवा पिछडे वर्ग के लोगों को अपनाना चाहिए और उन्हें [illegible]

पृष्ठ २ का शेष भाग

त्याग और श्रम से अपूर्व उत्सर्ग – १६१३-१४ ई० मे जब महात्मा गाधी द० अफ्रीका मे भारतीयों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह का धर्मयुद्ध कर रहे थे, उन दिनों श्री गोखले उस सत्यग्रह के लिए चन्दा एकत्र कर रहे थे। तब गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने भोजन मे कुछ कमी करके और हरिद्वार मे गगा नदी के दूधिया बाध पर ठिठुरती सर्दी मे कठोर मजदूरी करके १५०० रुपये उस धर्मयुद्ध की सहायतार्थ भेजे थे।

श्रीयुत गोखले के पास जब वे ऊँपर पहुचे, तब वह हताश होकर चिन्ता मे डूबे हुए थे। कहते हैं श्री गोखले न उस रकम को पन्द्रह हजार रुपये से भी अधिक श्रीमती घोषित किया और वह खुशी में कुर्सी से उछल पडे थे। श्री गोखले मे २७ नवम्बर १६१३ का दिल्ली से एक पत्र मे महात्मा कि किस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारी दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रह के लिए घी-दूध छोडकर और साधारण कुलियो और मजदूरो की तरह मजूरी करके रुपये इकट्ठे कर रहे हैं। दिल हिला देने वाले इस देशभक्ति भरे कार्य के लिए मैं उन्हे क्या धन्यवाद दू ? यह तो उनका वैसा ही अपना काम है, जैसे आपका और मेरा है।'

'वे इस प्रकार भारतमाता के लिए अपने दगा से अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे है, फिर भी भारतमाता की सेवा के लिए त्याग और श्रद्धा का जो आदर्श उन्होने देश के युवकों तथा वृद्धों के लिए रखा है, उसकी अन्त करण से प्रशसा किए बिना मैं नहीं रह सकता। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ होऊगा, यदि आप मेरे ये भाव किसी तरह उनके पासपहुंचा देगे। यदि अवस्था अनुकूल रही तो जनवरी, १६१५ मे वहा आऊगा।'' उल्लेखनीय है कि गाधी जी के भारत आने से पहले उनके द० अफ्रीका घोषित के सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थी सम्वत् १६७१ में भारत आकर महीनों तक गुरुकुल आकर रहे थे। सम्वत् १६७२ के कुम्भ पर गाधी जी हरिद्वार आए थे और बिना किसी पूर्व सूचना के गुरुकुल कागडी भी पधारे थे। इतने महान पुरुष में नम्रता इतनी थी कि गुरुकुल आने पर उन्होने चरण छूकर महात्मा मुशीराम जी को नमस्कार किया था।

गांधी जी को 'महात्मा' घोषित किया गया – यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हरिद्वार और कनखल के मध्य गुरुकुल की मायापुर वाटिका मे एक विशेष मण्डप में ६ अप्रैल, १६१५ के दिन गुरुकुलवासियों और ब्रह्मचारियों की ओर से गाधीजी विशेष अभिनन्दन किया गया था। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि गुरुकुल की ओर से जो मान पत्र भेंट किया गया था, उसमें गाधी जी के लिए पहली बार 'महात्मा' शब्द का प्रयोग किया गया था, वह शब्द उसके बाद जगत् ख्यात् हो गया।

जन्म दिवस २३ जनवरी पर विशेष –

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के अनमोल वचन

१ जब तक हम अपने महापुरुषों का उपयुक्त सम्मान करना नहीं सीखेंगे तब तक इस भारत का उद्धार सम्भव नहीं।

२ भारत की महिलाए नहीं जागी तो भारत कभी नहीं जागेगा। जब तक भारतवासी इन्द्रिय सुख के पीछे भागते रहेगे तब तक भारत उन्नति नहीं कर सकता।

३ मातृभूमि के चरणों में उत्सर्ग करने के लिए मेरे पास कुछ विशेष नहीं है, केवल मन और यह तुच्छ शरीर है।

४ समाज सेवा के लिए बहुत धैर्य चाहिए।

५ भक्ति और प्रेम से मनुष्य नि.स्वार्थी बन जाता है।

६ जीवन दिए बिना जीवन नहीं मिल सकता।

७ आदर्श को प्रतिक्षण सामने न रखने से जीवन में प्रगति करना असम्भव है।

८ यदि सिर पर भगवान् है और पृथ्वी पर सत्य की प्रतिष्ठा है तो हमारे ह्रदय की बात एक न एक दिन भविष्य मे देशवासी अवश्य समझेगे।

९ कार्य करते समय सफलता या असफलता की ओर ध्यान न दो।

१० जिसने जीवन मे कभी जेल नहीं देखी उसने जगत् मे कुछ नहीं देखा।

११ जिस वस्तु से बाहर देखने पर कष्ट दिखाई देते है, उसमें भीतर झाकने पर आनन्द का बोध होता है।

१२ हे प्रभो ! जिसे तुम अपनी पताका दो उसे वहन करने का सामर्थ्य भी दो।

१३ मनुष्य के विचार ही मनुष्य को गति देते हैं।

१४ ससार मे मेरी आसक्ति नहीं है, इस कारण मैंने गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश ही नहीं किया। क्या मैं देश की वर्तमान दशा में शान्ति का मार्ग छोडकर नए सिरे से ससार-जाल मे लिप्त होऊ ? नहीं कभी नहीं।

१५ स्वय मनुष्य बने बिना दूसरो को मनुष्य नहीं बनाया जा सकता।

१६ जैसा बनना चाहते हो वैसा कर्म करो, कर्मण्यता ही जीवन है।

१७ देश के सबसे बडे भू-भाग मे बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

१८ मेरे पास देने के लिए (देशवासियो से) केवल मौत है मगर याद रखो तुम्हारी मौत ही तुम्हारे देश की जिन्दगी है, तुम मरकर अमर हो जाओगे।

१९ मिट्टी, पत्थर, नदियो, जगलो और पहाडो से देश नहीं बनते हैं। धन-दौलत कमा लेने या पढा-लिखा लेने और मरने से भी देश नहीं बनते हैं। हजारो लाखों के पैदा होने और मरने से भी देश नहीं बनते हैं। देश बनते हैं वीरो के शौर्य से, वीरागनाओ के सत्य से, और शहीदो के रक्त से। इस भारत देश के निर्माण मे हमारे पूर्वजो ने भी इसी प्रकार अपने खून की खाद दी है, माताओं-बहनो ने अपने सिन्दूर चढाए है, शस्त्रास्त्रो के लिए ऋषियो ने अपनी हड्डिया अर्पित की हैं। आइए आजादी के इस यज्ञ मे हम भी अपनी आहुति देकर पूर्वजो की परम्परा जारी रखे।

२०. जुल्म करने वाले से जुल्म सहनेवाला अधिक अपराधी होता है। इस अन्याय के विरुद्ध हमे युद्ध करना है, उसके बदले मे चाहे हमे कितना ही बलिदान क्यो न करना पडे।

ऋषि पर्व (महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषि बोधोत्सव पर्व) पर क्या करें?

समस्त आर्य बन्धुओ को सूचनार्थ है कि इस वर्ष ऋषि पर्व अर्थात आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का **जन्म दिवस** फाल्गुन बदी दशमी, विक्रमी सम्वत २०५७ तदनुसार १७ फरवरी, २००१ (शनिवार) ऋषि बोधोत्सव अर्थात् महाशिवरात्रि फाल्गुन बदी १३ सम्वत् २०५७ तदनुसार २१ फरवरी २००१ (बुधवार) को है। अत इस पावन पर्व (ऋषि पर्व) को बडी धूमधाम से समारोहपूर्वक अपने-अपने क्षेत्र मे मनाए।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्गदर्शन के ही कारण है। स्वामीजी ने यह ज्ञान हम तक पहुचाया है इसके लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान् ऋषि के विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाकर अन्य बन्धुओ को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहे। आर्यसमाज की सदस्य सख्या बढाना हमारा लक्ष्य नहीं। हमारा एकमात्र उद्देश्य है अधिक से अधिक लोगो और अन्तत समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना – **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**

ऋषि पर्व (जन्मदिवस समारोह एव ऋषि बोधोत्सव) पर स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार एक या अधिक निम्न गतिविधियो का समावेश किया जा सकता है –

१ **बृहद यज्ञों का आयोजन** (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त, जनसामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए, सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त **ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद** आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगो मे करे।

२ यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन अवश्य आयोजित करे, जिससे जन सामान्य को **वैदिक, आध्यात्मिक** तथा **आर्य (श्रेष्ठ) विचारों** से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

३ अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओ, महिलाओ, वृद्धो, बच्चो आदि के लिए अलग-अलग **विचार-विमर्श** या **मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियो** या **लघुसम्मेलनो** अथवा कार्यशालाओ के रूप मे आयोजित करे। "सुखी परिवार कैसे रहे ?" विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ **सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथा** का भी आयोजन करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारो का लाभ लोगों को **धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय** तथा **राजनैतिक** उत्थान के लिए मिल सके।

५ आर्यसमाज भवनो पर **विशेष लाईटों का प्रबन्ध** सम्भव हो तो ऋषि पर्व पर तथा सभी आर्यजन **अपने घरों** को भी दीपावली की तरह सजाए। शर्म न करें ऋषि पर्व एक सप्ताह **पूर्व प्रभात फेरियों** के द्वारा दयानन्द एव प्रभु भक्ति के भजन गाते हुए भी प्रचार करें।

६ अपने-अपने क्षेत्र मे **वाक/भाषण** या **अन्य प्रतियोगिताए** आयोजित करके बच्चों मे **सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार की तरह वितरित करें।** आर्य शिक्षण सस्थाओ इस प्रकार के आयोजन अपने विद्यालय के बच्चो के मध्य अवश्य आयोजित करने चाहिए।

७ क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रो सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता मे मुफ्त वितरित करे।

८ आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक विशेष बैठक आयोजित करके **"आत्मावलोकन"** अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक है? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नहीं! तो उसके कारण व समाधान पर चर्चा करे।

९ उपरोक्त के अतिरिक्त, कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

१० अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट स्थानीय पत्र-पत्रिकाओ तथा हमे अवश्य भेजे।

आपकी सेवा मे
वेदव्रत शर्मा सभा प्रधान

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 25-26/01/2001 दिनाक २२ जनवरी से २८ जनवरी, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 25-26/01/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३९/२००१

प्रतिष्ठा में

११६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

आर्यसमाज राजौरी गार्डन में बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के तत्वावधान मे गत माह बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य सुभाष थे। यह बृहद यज्ञ एक प्रकार से उस अभियान की पूर्णाहुति था जो लम्बे समय से आचार्य सुभाष के ब्रह्मत्व एव नेतृत्व में राजौरी गार्डन क्षेत्र मे चल रहा था। इस अभियान के तहत् आचार्य सुभाष कई परिवारो मे जा जाकर यज्ञ कराते थे और लोगों को दैनिक यज्ञ के लिए प्रेरित करते थे।

वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि यज्ञ पूरी सृष्टि के उत्पन्न होने और पालन होते रहने की ही एक प्रतीकात्मक प्रक्रिया है। ईश्वर द्वारा सृष्टि का निर्माण भी यज्ञ है क्योकि सृष्टि निर्माण के पीछे ईश्वर का कोई स्वार्थ साबित नहीं हो सका। इसी प्रकार ईश्वर द्वारा दिन प्रतिदिन आत्माओ और प्रकृति के पालन मे भी कोई स्वार्थ नहीं है। इसी तरह यज्ञ करने वाला मनुष्य, यज्ञ केवल अपने लिए नहीं करता अपितु उससे वायुमण्डल में उपस्थित समस्त जीवात्माओ को लाभ होता है। इस दृष्टिकोण से यज्ञ करने वाला यज्ञमान भी दाता बन जाता है। शुभ वायुमण्डल को पैदा करने वाला और उसकी पवित्रता को बनाए रखने वाला।

प्रमुख वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने यज्ञमान दम्पतियो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यज्ञ करने वाले दम्पति सदैव परस्पर प्रेम और शान्ति से रहते हैं सासारिक दुख इन्हें दुखी नहीं कर सकते। ऐसे दम्पतियो की सन्ताने सदैव उत्तम हुआ करती है।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य, श्री मदान, श्रीमती शशि प्रभा, श्रीमती विभापुरी, श्री नन्द किशोर भाटिया तथा श्रीमती राज पाण्डेय आदि ने यज्ञमानो का धन्यवाद किया। □

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस (बसन्तोत्सव) का आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर, वाई ब्लॉक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली मे रविवार ४ फरवरी को प्रात ८.३० बजे से दोपहर १.३० बजे तक धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ८.३० बजे से ६.३० बजे तक यज्ञ, ६.३० बजे से १० बजे तक श्री गुलाब सिह राघव के मनोहर भजन, १० बजे से १२ बजे तक स्कूल मे बच्चो के गायन, भाषण एव रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल में बच्चों द्वारा विशेष कार्यक्रम होंगे। १२ बजे से १.३० बजे तक सम्मेलन होगा। जिसमे श्रीमती शकुन्तला आर्या, पूर्व महापौर डॉ० धर्मपाल, कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, श्री वेदव्रत शर्मा, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ० महेश विद्यालकार, श्री रामभज जी, विधायक, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री पधारेंगे और अपने विचार रखेंगे। अन्त में १.३० बजे ऋषि लगर होगा।

शनिवार ३ फरवरी को प्रात १० से १२ बजे तक हकीकत राय के जीवन पर भाषण व कविता गायन आदि की प्रतियोगिता होगी। जिसमें पाँचवी कक्षा से १२वीं कक्षा तक के बच्चे भाग ले सकेंगे। विजेता बच्चों को तथा अन्य भाग लेने वाले बच्चों को स्वर्गीय श्री रतनलाल सहदेव की स्मृति में पारितोषिक – स्मृति चिन्ह, रविवार ४ फरवरी को मुख्य समारोह में दिया जाएगा।

– रोशन लाला गुप्ता,
महामन्त्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा

आइए, यज्ञ करना सीखें

फुटपाथो पर गरीब लोग अपने बच्चे छोडकर भाग जाते हैं। चार महिलाए ५ से ८ वर्ष तक की एक सौ कन्याए अपने आश्रम मे ले आईं और रहने, खाने, पहनने और पढाई का प्रबन्ध किया। सस्था का नाम 'प्रेमदान विद्यालय' रखा है। अब वे कन्याए कोई दसवी श्रेणी मे है, कोई कालेज जाती है – उनका व्यवहार, बोल-चाल और सस्कार देखते ही बनते हैं। ये लडकिया बडी होकर क्या कहलाएगी ? चार महिलाओं ने उन्हे बडा किया और इन्सान बनाया और इन बालिकाओ का निर्माण किया है। यह एक ऐसा यज्ञ है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है।

जब तक इस प्रकार के यज्ञ नहीं किए जाएगे तब तक कर्मकाण्ड से कुछ नहीं बनने वाला नहीं है। पीछे कारगिल का युद्ध वीर जवानों ने जीता है। शत्रु को शक्ति से हराया गया था।

जिन चार महिलाओं ने सौ लडकियों को जीवन दान दिया है, क्या हमे इन महिलाओ से प्रेरणा ले। जो प्रतिदिन इस प्रकार का यज्ञ करती हैं। यदि हम कोई ऐसा कार्य का सके तो हमारा यज्ञ सफल होगा।

आओ ! यज्ञ करना सीखे।

– ओंकार नाथ
मामकटलता, २७६ ओ३म सदन, २६वां रास्ता, बान्दरा मुम्बई

वेद की ज्योति घर-घर पहुंचाए आर्य विचारधारा का प्रचार करें

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५७वा वार्षिकोत्सव १५ से १७ दिसम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पवर त्रिदिवसीय चतुर्वेद शतक यज्ञ, भजन एव प्रवचन किए गए। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० स्वामी सत्यम (अमेरिका) थे। यज्ञ में वेदपाठी प० नामदेव आर्य, प० विनोद शास्त्री, प० उमेश आचार्य, प० नरेन्द्र शास्त्री तथा प० प्रमारजन पाठक थे। १७ दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। रात्रिकालीन सत्र में श्रीमती शिवराजवती आर्या एव श्री राकेश आर्य के भजन तथा स्वामी सत्यम के "सत्य सनातन वैदिक धर्म का जीवन एवं व्यवहार से निकट का सम्बन्ध" एव "आर्यसमाज नए मोड पर" विषय को लेकर प्रमाणिक प्रवचन हुए।

डॉ० स्वामी सत्यम ने कहा कि वेद ज्योति घर-घर पहुचाइए। विभिन्न प्रतियोगिताओ का उद्देश्य छात्रों में आर्य विचारधारा का प्रचार करना तथा आर्ष साहित्य की उत्तम शिक्षा से परिचित कराना है।

वार्षिकोत्सव मे जनता भारी सख्या में आई। २७ विद्यालयों के ३५० छात्रों ने भाग लिया। □

आपकी व्यक्तिगत योग्यता आर्यसमाज का बल

यदि आप अपनी शक्ति एव योग्यता का सदुपयोग वैदिक सस्कृति की रक्षा एव प्रचार प्रसार हेतु करने के लिए सकल्पबद्ध हैं तो आपको अपने कार्यों और सकल्पो को आर्यसमाज के विश्व स्तरीय सगठन के साथ एकरूप होकर अपनी पहचान स्थापित करनी चाहिए। जिससे आपके कार्य अन्य लोगो की प्रेरणा बन सके।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अधिकाधिक आर्यबन्धुओं के नाम कम्प्यूटर में दर्ज करने के लिए एक विशेष प्रयास किया जा रहा है।

आपकी व्यक्तिगत शक्ति और योग्यता ही आर्यसमाज का बल है। अत प्रत्येक आर्य महानुभाव अपनी सूचना को निम्न प्रारूप के अनुसार एक अलग कागज पर हिन्दी अथवा अग्रेजी मे लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के *'दिल्ली आर्य सूचना पत्र' १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली – ११०००१* के पते पर भेजें। कृपया अपना एक फोटो भी साथ भेजें।

वेदव्रत शर्मा, प्रधान

दिल्ली आर्य सूचना पत्र

१ नाम
२ जन्म तिथि
३ पिता/पति का नाम
४ पूरा पता
५ निवास तथा आर्यसमाज का दूरभाष (कोड सहित)
६ विवाहित हैं या अविवाहित
७ शैक्षणिक एव अन्य योग्यताए
८ भाषाओ का ज्ञान
९ आजीविका हेतु कार्यक्षेत्र
१० समाज सेवा के लिए क्या किसी अन्य सस्था से सम्बन्धित रहे हैं ?
११ किस आर्यसमाज अथवा सभा के सभासद हैं और कब से ?
१२ किसकी प्रेरणा पर आर्यसमाज में प्रवेश किया ?
१३ आर्यसमाज में किन पदों पर रहे हैं।
१४ आपके द्वारा अब तक सम्पन्न विशेष गतिविधिया (सक्षेप मे)।
१५ प्रतिदिन या प्रति सप्ताह आप कितना समय बिना असुविधा के सामाजिक कार्यों के लिए निकाल सकते हैं।

टकारा में ऋषि बोधोत्सव पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के तत्वावधान में इस वर्ष २०, २१ तथा २२ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रम कर रहा है। १४ फरवरी से २२ फरवारी, २००१ तक आचार्य विद्यादेव और रामदेव के निर्देशन में यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। मुख्य अतिथि हीरो उद्योग समूह के बृजमोहन मुजाल होंगे।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यम, स्वामी आत्मबोध सरस्वती, डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी, आचार्य रामकिशोर शास्त्री आदि विद्वानों के पधारने की आशा है। जामनगर कन्या विद्यालय और कन्या गुरुकुल देहरादून की कन्याओं और आर्यवीर दल के विशेष कार्यक्रम होगे। □

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुदित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष . ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक ४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, २९ जनवरी से ४ फरवरी, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुजरात में दैविक विनाश-लीला

आर्यसमाज गांधीधाम सहायता कार्यों का केन्द्र घोषित

प्रकृति की विनाशलीला का भयानक रूप है – भूकम्प। मनुष्य के न चाहते हुए भी यह बार बार आ जाता है। इस विनाशलीला से सैकडो परिवार त्राहि-त्राहि कर उठते हैं। अपरिचित लोग बेशक उनके दुख को कम न कर पाए, परन्तु स्वय उनके साथ गमगीन अवश्य हो जाते हैं या इससे भी बढकर कुछ न कुछ सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं। उस समय पीडित व्यक्ति को महसूस होता है कि जहा एक तरफ ईश्वरीय लीला ने उसे पटकनी दी है वहीं ईश्वर के ये दूत सामाजिक कार्यकर्त्ताओ के रूप मे उसे सहायता उपलब्ध कराने आए हैं।

गुजरात मे आए भूकम्प से हुई जान और माल की क्षति पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा है कि पीडितों को हर सम्भव सहायता करना प्रत्येक आर्य पुरुष का सामाजिक एव आध्यात्मिक कर्त्तव्य है।

अनुमान है कि इस भूकम्प मे कई हजार लोग काल का ग्रास बने हैं और उनसे भी अधिक अन्य गम्भीर रूप से घायल भी हुए हैं। इसके अतिरिक्त, रिहायशी स्थलो की भी काफी क्षति हुई है। समाचार पत्रो के आकलन के अनुसार भूकम्प का सबसे अधिक प्रभाव भुज, कच्छ, गाधीधाम, अहमदाबाद आदि क्षेत्रों में पडा है, जहा लगभग ६० प्रतिशत मकान ध्वस्त हो गए हैं। मौसम विभाग से प्राप्त सूचनाओ के अनुसार अभी और झटको की आशका है।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज ने प्रत्येक दैविक त्रासदी मे जनता की निस्वार्थ भाव से सेवा की है। पूर्व की भाति अब भी हम भूकम्प पीडितो को हर सम्भव सहायता उपलब्ध कराने का भरसक प्रयास करेगे।

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्य जनता से **अधिकाधिक धन, कपडे, गरम वस्त्र, दवाइया, कम्बल, टैण्ट** तथा **अन्न** इत्यादि दान देने की अपील की है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा **१ लाख रुपये की राशि से गुजरात भूकम्प पीडित सहायता कोष स्थापित किया गया है।** गुजरात मे सहायता सामग्री का वितरण करने एव सेवा कार्यों को सम्पन्न करने के लिए **आर्यसमाज मन्दिर गांधीधाम, झण्डा चौक को प्रमुख केन्द्र घोषित किया गया है।** सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उप-प्रधान सचालक श्री आर्य नरेश के नेतृत्व मे एक सहायता दल गाधीधाम पहुच गया है। वहा सहायता कार्य **गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य** तथा **आर्यसमाज के प्रधान श्री पटेल की** देख रेख मे सम्पन्न होगा।

मुम्बई से सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान कै० देवरत्न आर्य लगातार टेलीफोन द्वारा सार्वदेशिक सभा के सम्पर्क मे हैं और आशा है कि वे आगामी एक सप्ताह मे ही लगभग १० लाख रुपये का दान एव सामग्री गुजरात भूकम्प पीडितो के लिए जुटा कर भिजवाएगे।

दूसरी तरफ दिल्ली मे सहायता-सामग्री एकत्र करने तथा गुजरात पहुचाने का प्रबन्ध करने के लिए दिल्ली के प्रमुख आर्यजनो की एक समिति भी गठित की गई है जो इस प्रकार है –

(१) श्री सोमदत्त महाजन, अध्यक्ष, नि० 5551587, 5505543, (२) श्री विमल वधावन, सदस्य, नि० 7224090, सार्वदेशिक प्रेस 3270507, 3274216, (३) श्री रोशनलाल गुप्त, सदस्य, नि० 2411741 स्कूल 4677063, (४) श्री पतराम त्यागी, सदस्य, नि० 2462321 का० 3361521, (५) श्री अजय भल्ला, सदस्य, नि० 6865698, (६) श्रीमती शशि आर्या सदस्य, नि० 5436828 (७) श्री नरेन्द्र आर्य, सदस्य, नि० 5457755, (८) श्री विनय आर्य सदस्य, नि० 5049999 (९) श्री प्रियतमदास रसवंत, सदस्य नि० 5119614, (१०) श्री तेजपाल मलिक, (सयोजक), नि० 5087952

सहायता-सामग्री तथा दान राशि एकत्र करने के लिए – **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२** मे केन्द्र स्थापित कर दिया गया है। **सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के तहत कर से मुक्त है।** □

ईश्वरीय प्रलय भी आध्यात्मिक शक्ति के सामने झुकती है

ऋषि जन्म स्थली टंकारा पूर्णतः सुरक्षित

शुक्रवार २६, जनवरी की प्रात वेला मे आए भूकम्प का नाभि केन्द्र महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली गुजरात प्रदेश का कच्छ और मौरवी क्षेत्र था। ईश्वर की प्रलयकारी शक्ति जब भूकम्प के रूप मे महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टकारा पहुची तो महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक ताकत के सम्मुख नत मस्तक होती हुई टकारा ऋषि जन्म स्थली को बिना छुए मुह मोडकर चली गई। हालाकि टकारा के ही अन्य हिस्सो मे कुछ क्षति हुई है। ग्रीनपार्क आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री गुरुदत्त तिवारी विगत ३ सप्ताह से टकारा मे ही थे उन्होने टेलीफोन द्वारा सार्वदेशिक सभा को सूचित किया कि ईश्वर की कृपा से टकारा स्थल पूर्णत सुरक्षित है और टकारा भवन के माध्यम से भी सहायता कार्य शुरू कर दिए गए हैं।

इसी प्रकार भुज शहर मे भी आर्यसमाज मन्दिर के विशाल प्रागण मे सैकडो व्यक्ति तीन दिवसीय जलसे पर एकत्र हुए थे और प्रवचन आदि का भव्य कार्यक्रम चल रहा था जब धरती माता की समाधि मे विघ्न उत्पन्न हुआ, परन्तु आर्यसमाज के आध्यात्मिक वातावरण को निर्विघ्न सम्पन्न होने की अनुमति मिल गई। भुज मे बहुत से आर्यजनो की व्यक्तिगत सम्पत्तियो की काफी क्षति हुई है।

आर्यसमाज गाधीधाम से भी समाज मन्दिर के भवन को किसी प्रकार की क्षति न होने के समाचार है। हालाकि गाधीधाम शहर भी भयकर तबाही की चपेट मे आ गया है। □

आर्य सच्ची उपासना पद्धति अपनाएं

— आचार्य वेदभूषण

आर्य श्रेष्ठ मनुष्य को कहते हैं। जो प्रगतिशील है वास्तविक लक्ष्य की ओर जो आगे बढे वे आर्य है। सृष्टि के आरम्भ मे जिन महान आत्माओ ने जन्म लिया वे ज्ञान की दृष्टि से उन्नत थे।

आज समस्त ससार यह तथ्य मानने लगा है कि ससार के पुस्तकालयो मे सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं और सृष्टि के आरम्भ मे परमेश्वर की ओर से चारो वेदो का ज्ञान चार महर्षियो के हृदय मे प्रस्फुटित हुआ। यजुर्वेद के ४०वे अध्याय के ८वे मन्त्र द्वारा स्पष्ट है कि आदि सृष्टि मे जो ज्ञान परमात्मा ने चार ऋषियो के मुखारबिन्द से दिया वह ज्ञान आदि सृष्टि के ज्ञानी हृदयगम करने मे समर्थ थे।

'सपर्यगा छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर मन्त्र की अन्तिम पक्ति मे अभिव्यक्त है कि **स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य** अपनी सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातिन विद्या से यथावत् अर्थो का बोध वेदो द्वारा कराता है, और वह प्रजा अमैथुनि सृष्टि मे उत्पन्न हुई वेद मन्त्रो के अर्थो यथा तथ्य वास्तविक यथातथ्य रूप मे जानने मे समर्थ थी। यदि वह सामर्थ्य जनता मे न होता तो केवल चार ऋषियो के हृदयो मे वेदो के प्रकाश से किसी भी प्रकार का ज्ञानवर्धन का अभिप्राय सिद्ध न होता। इस तथ्य की पुष्टि के लिए कुछ ऐसे शब्द हैं जो उक्त वक्तव्य की पुष्टि करते है। जैसे हिन्दी भाषा मे ज्ञान की खोज के लिए एक शब्द है अनुसन्धान। अग्रेजी भाषा मे इसका समान्तर शब्द रिसर्च है। अनुसधान शब्द अनु उपसर्ग पूर्वक सन्धान शब्द से बनता है। अनु का अर्थ पीछे अथवा बाद मे होता है। सधान का अर्थ खोज है या ढूढना है। अर्थात् जो खोज बाद मे की जाती है वह अनुसन्धान कहलाती है। अग्रेजी भाषा मे रि शब्द का अर्थ अगेन पुन या दुबारा ओर सर्च शब्द का अर्थ खोज है अर्थात जो चीज दुबारा पुन या बाद मे खोजी जाए, वह रिसर्च है। स्वय वेद भी इस तथ्य के साक्षी है यदि आप ससार के पुस्तकालय के सबसे प्राचीन ग्रन्थ अर्थात् चारो वेदो का अनुसन्धान करेगे तो आपको ज्ञात होगा कि सृष्टि के आरम्भ मे अनेक बुद्धिजीवियो ने वेद के मन्त्रो का सध ान किया सर्च किया। ये शोध करने वाले या सर्च करने वाले लोग ऋषि शब्द से सम्बोधित किए गए।

ऋषयो मन्त्रद्रष्टार जिन्होने मन्त्रो का साक्षात किया वे ऋषि कहलाए। इसलिए ससार की प्रत्येक भाषा मे 'अनु' या 'रि' यह शब्द आज के जीवन सधाताओ के साथ जोडा जाता है।

उन्नति के तीन सोपान

मानव उन्नयन की सबसे पहली स्थिति सत्य-ज्ञान की प्राप्ति है। उन्नयन का दूसरा सोपान ज्ञान के अनुरूप आचरण है। ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा उस ज्ञान को क्रियात्मक रूप देने के लिए उपासना अनिवार्य होती है। जो ज्ञान है या जो ज्ञान को क्रियात्मक स्वरूप दे सके उसके निकट जाए और उससे ज्ञान ले और कर्मविधि जाने यह उन्नयन की तीसरी स्थिति है। ज्ञान का फल मनुष्य को सुख और आनन्द के रूप मे मिलता है। उसी ज्ञान की विशिष्ट शाखा या कक्षा विज्ञान कहलाती है। आज जिसे विज्ञान कहा जाता है उसके परिणाम मानव जाति के लिए घोर दु खदायी हो रहे हैं। इसलिए हमारा पुन निवेदन है कि आज का युग ज्ञान-विज्ञान का युग नहीं है, क्योकि उसके द्वारा नाना प्रकार की असाध्य समस्याए हमारे समक्ष आ रही हैं। ससार को सत्य-ज्ञान या वेदो की ओर आना ही पडेगा और जबतक हम सच्चे अर्थो मे उपासना नहीं करेगे, तब तक सत्य-ज्ञान और सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नही हो सकती। महर्षि दयानन्द ने उपासना का फल सत्य ज्ञान की प्राप्ति लिखा है इसके लिए केवल तोते के समान वेद मन्त्रो का पारायण करना या उनके अर्थो को जान लेना पर्याप्त नहीं। ज्ञान की सार्थकता कर्म से ही सिद्ध होती है यदि हम सत्य-ज्ञान ग्रहण करे उस ज्ञान के अनुरूप आचरण करे तभी हम सच्चे अर्थो मे सच्चे उपासक बनेगे। आज ससार मे नाना सम्प्रदाय और मत-मतान्तर है जिनके पास न सत्य-ज्ञान है और न ही सत्याचरण। फिर कैसे इस ससार के उन्नयन की कल्पना करे। हमारी उपासना पद्धति का मूल आधार हमारा अपना जीवन है। इस जीवन-यात्रा के लिए हमे शरीर का अनमोल रथ प्राप्त है। उस शरीर के एक-एक अग की रचना कैसे हुई और उन अगो का हम कैसे भलीप्रकार विकास करे और पूर्ण स्वस्थ रहते हुए अपनी सौ वर्ष की यात्रा निर्विघ्न पूर्ण करे। सौ वर्ष तक स्वस्थ रहना इसका ज्ञान प्राप्त करना तथा उस ज्ञान के अनुरूप आचरण करना अर्थात् पूर्ण स्वस्थ जीवन हमारा रहे, यह वैदिक उपासना-पद्धति का पहला सौपान है शारीरिक उन्नयन के ज्ञान के साथ-साथ हमे सृष्टि के ज्ञान का भी बोध आवश्यक है। दोनो को जानकर ही हम पहले भौतिक सुख की मजिल प्राप्त करते हैं और फिर हमारी उपासना अधिदैविक क्षेत्र मे प्रवेश करती है, इसे हम मनसा परिक्रमा अर्थात मानसिक मजिल कह सकते हैं। मन की शुद्धि मानसिक उन्नयन उपासना का दूसरा सौपान है पहले तन को ठीक रखो, फिर मन ठीक रखो। राग-द्वेष से शून्य मन निरन्तर पवित्र होता है तथा पचभूतो एव चन्द्रमा इन छह पदार्थों की विकृति से जो छह प्रकार के दोष हमारे मन में होते, है जिन्हे हम काम क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि षड् रिपु कहते हैं। इन ६रिपुओ के दमन से मन शुद्ध होता है और स्वस्थ तन और पवित्र मन हमे परमात्मा के निकट ले जाता है। तब हमारी अन्तिम मजिल उपासना की सिद्धि होती। इन तीनो सोपानो से क्रियात्मक रूप से जो पढता है उसकी ही उपासना सिद्ध होती है और वह जन्म-मरण के चक्र से छूटकर मोक्ष का अधिकारी बनता है। मन्त्र पढना उपासना नहीं है अपितु देह और मन की पवित्रता प्राप्त करना ही उपासना है। प्रतिदिन प्रात्-साय दो बार जीवन के इन लक्ष्यो को प्राप्त-विचार एव चिन्तनपूर्वक ऐसे आचरण करे जिनसे हमारा तन व मन पवित्र करना ही सच्ची नाम उपासना है। वैदिक उपासना पद्धति परमात्मा के निकट जाने का मार्ग स्पष्ट करती है और निरन्तर उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करती है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए स्तुति अर्थात परमात्मा के गुणो का गान, प्रार्थना अर्थात अभीष्ट की प्राप्ति के लिए याचना करना, ये दो विद्याए प्रत्येक मत एव पथ की पूजा पद्धति मे है, परन्तु उपासना का मार्ग वैदिक धर्म के सिवाय अन्य किसी भी धर्म या सम्प्रदाय की पूजा पद्धति मे नहीं है। कुछ उपासको का शकर कैलाश पर्वत पर रहता है कुछ भाइयो का गॉड चौथे आसमान मे वास करता है तो तीसरे भाइयो का अल्लाह सातवे आसमान मे बेर के वृक्ष के नीचे बैठा है परन्तु ये सभी सम्प्रदायो मजिल तक जाने की पद्धति नही जानते। परमपिता प्रभु का मार्ग वैदिक अष्टाग योग का मार्ग है। योग के इन आठो अगो का ज्ञान सृष्टि के आदि मे ही योगियों को हो गया था, जिसका स्पष्ट उल्लेख स्वयभव मनु के ऐतिहासिक ग्रन्थ मनुस्मृति मे है। अष्टाग योग पर महर्षि पतजलि ने पातजल योग शास्त्र मे स्पष्ट प्रकाश डाला है। आर्यों के पाच महायज्ञो का प्रभाव दूसरे सम्प्रदायो पर भी पडा है। पच महायज्ञो की महत्ता देखकर ये भाई भी पाच बार नमाज पढते हैं। दुर्भाग्य से आर्यजन अपने पच महायज्ञो के ब्रह्म यज्ञ एव वेदयज्ञ की विधि बिगाडते जा रहे है। जब विधि मे दोष आता है तब परिणाम मे भी दोष आ जाता है। महर्षि देव दयानन्द ने स्वरचित सस्कार विधि मे ब्रह्म यज्ञ एव देवयज्ञ की शुद्ध विधि लिखी है उसे हमने बदल दिया है। परिणामत- हम उन्नयन की और न जाकर भटक रहे हैं।

— अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद - २७

मातृभूमि के लिए सब कुछ कुर्बान

सिद्ध भारतीय सन्त स्वामी रामतीर्थ जापान की यात्रा कर रहे थे। वहा दिए उनके भाषण सुनकर वहा की जनता भारतीय सस्कृति की ओर आकर्षित होने लगी थी। एक दिन एक कालेज के आचार्य ने उन्हे अपने महाविद्यालय मे भाषण करने के लिए आमन्त्रित किया।

स्वामीजी उस कालेज मे गए तथा वहा के छात्रो छात्राओ के समक्ष अपना भाषण दिया। अपना भाषण समाप्त होने पर स्वामीजी ने प्रश्न किया— **"प्यारे बच्चो, यह बताइए यदि महात्मा बुद्ध नया जन्म लेकर किसी सेना का नेतृत्व कर जापान पर आक्रमण कर दें तो आप लोग क्या करोगे?"**

स्वामीजी की बात सुनकर सभी बच्चो के चेहरे गुस्से से आग की तरह लाल हो गए। एक छात्र ने खडे होकर मुक्का तानकर कहा— **"स्वामीजी आप महात्मा बुद्ध की बात कर रहे हैं, यदि स्वय भगवान भी हमारे देश पर आक्रमण करेगे तो हम उनका मुकाबला करने से पीछे नहीं हटेगे। हमें अपनी मातृभूमि से बढकर कोई चीज प्यारी नहीं। हम देश के पीछे हर चीज कुर्बान कर सकते हैं।"**

स्वामीजी को जापान की उन्नति के राज का पता चल गया।

— नरेन्द्र

अनुकरण आचरण का : सत्कर्म ही श्रेष्ठ

यद यदा चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरा जन ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

गीता ३/२१

श्रेष्ठ पुरुष जैसा-जैसा आचरण करता है, सामान्य मानव उसी का अनुकरण करता है।

मनस्वी कार्यार्थी न गणपति दु.खं न च सुखम।

मनस्वी, उदार और श्रेष्ठ चित्तवान दु ख और सुख का ख्याल नहीं करता।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्द पार्थ युज्यते।।

गीता १७,२६

सदभाव और साधुभाव मे सत् शब्द प्रयुक्त होता है। श्रेष्ठ गुण, उत्तम कर्म और सत्कर्म ही इस लोक शास्त्र मे सत विख्यात हैं।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

शक्ति और प्रगति का सामंजस्य

२६ जनवरी के दिन राष्ट्र ने अपना ५२वा गणतन्त्र दिवस मनाया। नियति का चक्र कहिए, उसी प्रात की वेला मे ८.४६ बजे देश के पश्चिमी गुजरात मे भीषण भूकम्प आया, इस भूकम्प ने यद्यपि सारे देश को हिलाया, परन्तु उससे गुजरात मे हजारो व्यक्ति मरे, हजारो घायल हुए और सैकडो नहीं हजारो मलबे मे दब गए। बहुमजिली इमारते धराशायी हो गई। सर्वत्र मौत, विनाश और क्षति का ताण्डव देखने को मिला। यह विडम्बना ही कहिए कि ५० वर्ष पूर्व भी इसी क्षेत्र मे ऐसा ही भूकम्प आया था उसने भी ऐसी ही क्षति की थी। भूकम्प से सारा देश हिल गया परन्तु यह मर्यादा की बात रही कि राजधानी और राज्यो मे गणतन्त्र दिवस के कार्यक्रम विघ्न बाधा के बिना सम्पन्न हो गए। राजधानी मे राजपथ पर राष्ट्र की शक्ति और प्रगति की गौरवमयी झाकी, सैनिक परेड और झाकियो के माध्यम से दिखाई दी। गणतन्त्र दिवस की पूर्व सन्ध्या पर राष्ट्रपति के उदबोधन मे देश मे निरन्तर बढ रही असमानता की ओर ध्यान खींचा गया। वस्तुत गणतन्त्री व्यवस्था का अर्थ केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं है प्रत्युत उससे राष्ट्र मे सच्चे सामाजिक और आर्थिक लोकतन्त्र की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। इसी के साथ सभी राष्ट्रवासियो को अधिकारों की प्राप्ति के साथ कर्त्तव्यो का उत्तरदायित्व भी समझना चाहिए। गणतन्त्र की विशाल परेड मे यद्यपि विविधता मे एकता के दर्शन हुए परन्तु इस परेड ने प्राचीनता के साथ आधुनिकता का भी सन्देश दिया। एक ओर आधुनिक ज्ञान विज्ञान का सदुपयोग अनिवार्य होना चाहिए वहा प्राचीन सस्कृति, शिक्षा, कला की अनमोल धरोहर को सजोकर उसे भी समुन्नत करना अभीष्ट होना चाहिए। इसी के साथ भव्य परेड से एक ओर राष्ट्र और उसकी जनता की स्थाई शान्ति, सुरक्षा और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य होना चाहिए वहा समाज ओर राष्ट्र के निम्नतम, उपेक्षित वर्गों को समानता, मानवता और न्याय के समूचे अधिकार मिलने चाहिए।

गणतन्त्र दिवस की भव्य परेड मे सेनाओ अर्धसैनिक बलो तथा भव्य झाकियो के माध्यम से स्पष्ट है कि यदि यत्न किया जाए तो भारत सॉफ्टवेयर तकनीक और शिल्प प्रौद्योगिकी के क्षेत्रो मे शक्ति सामर्थ्य सजोकर विश्वशक्ति बनने मे जहा सफल हो सकता है, वहा कुछ तथ्य राष्ट्र और राष्ट्रवासियो को वस्तुस्थिति से जूझने का सन्देशा दे रहे हैं। विडम्बना की बात है कि राजधानी के विद्यालयो मे शिक्षा-स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाए उपलब्ध नहीं हैं और शिक्षा क्षेत्र मे ८३ प्रतिशत आबण्टित राशि का उपयोग नहीं हुआ। चिकित्सालयो मे उपयुक्त चिकित्सा सेवा नहीं है। उच्च शासनाध्यक्ष की यह चिन्ता भी ठीक नहीं है कि नदी घाटी योजनाओ के लिए मूल भूमिपुत्र उजाडे गए हैं। देश की आर्थिक दुरावस्था के निवारण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक उदारीकरण का सहयोग वहा तक सार्थक हो सकता है आदि अनेक प्रश्न और समस्याए है तो स्वदेशी के नाम पर वास्तविकता से न जूझना अव्यावहारिक लगता है। भारत राष्ट्र को स्वाधीन हुए ५४ वर्ष हो गए है और हमारी गणतन्त्री व्यवस्था का यह ५२वा वर्ष है, ऐसे मे गणतन्त्र दिवस की भव्य, व्यवस्थित परेड और झाकिया जहा राष्ट्र की शक्ति और प्रगति का सन्देश दे रही हैं, वहा देश मे विद्यमान गरीबी, भूख, रोग, आर्थिक एव सामाजिक विषमता हमे चेतावनी दे रही हैं कि जबतक देश से अभाव, कष्ट, अन्याय विषमता का अन्त नहीं होता, तबतक देश मे स्वराज्य के साथ सुराज की प्रतिष्ठा नहीं हो सकेगी। इसी के साथ ज्ञान विज्ञान, प्रोद्योगिकी शिल्प एव विविध क्षेत्रो मे राष्ट्र के कीर्तिमान तभी साथक हो सकते हे जब राष्ट्र अपनी शक्ति गरीमा क्षमता का लाभ उठाकर अपन मानवीय ससाधनो भौतिक साधनो, वैज्ञानिक प्रतिभा के अनुरूप प्रत्येक दृष्टि से एक समुन्नत, उद्यमी अग्रणी विश्वशक्ति के रूप मे उभरकर एशिया और विश्व मे प्राचीन इतिहास और परम्परा के अनुरूप अपनी समुन्नत भगीदारी प्रस्तुत करे।

मानवीय इतिहास और वाड्मय मे वे ही राष्ट्र और राष्ट्रजन श्रेष्ठ अग्रणी और महान बने हैं जिन्होने जीवन शक्ति साधनो एव प्रत्येक क्षेत्र मे अजेय स्थिति पाई है। नई सदी और सहस्राब्दी का आगमन भारतीय जनता और राष्ट्र को चेता रहे हैं कि वह अपनी शक्ति साधनो, क्षमता, प्राकृतिक, आर्थिक ससाधनो, वैज्ञानिक तकनीकी प्रतिभा के अनुरूप जन-जन का कल्याण एव समुन्नति कर भारतीय सस्कृति, चिन्तन एव धरोहर के अनुरूप मानवता और विश्व के खाते, मानचित्र मे अपनी प्राचीन स्थिति प्रदान करे। विश्व के इतिहास भी साक्षी है कि अपने मानवीय प्राकृतिक ससाधनो वैज्ञानिक बौद्धिक प्रतिभा और राष्ट्र की क्षमता के बावजूद भारत ने कभी भी शस्त्रो के बल पर ससार मे फैलने का प्रयत्न नहीं किया। भारत से श्रीराम, श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध और सम्राट अशोक ने भारतीय तत्वज्ञान और चिन्तन को देश-देश मे – सम्पूर्ण भूलोक मे फैलाया, परन्तु शस्त्रो सैनिको के माध्यम से नही, प्रत्युत सच्चे सन्यासियो, भिक्षुओ शिक्षको, व्यापारियो और तत्वज्ञानियो के माध्यम से व्याप्त किया। स्वतन्त्र स्वाबलम्बी, शक्तिशाली भारत अपनी शक्ति और प्रगति के दूसरे माध्यमो को भविष्य मे जन-जन देश-देश मे तभी पहुचा सकेगा जब वह प्राचीन परम्परा के अनुरूप अपना चिन्तन, विचार और अमर जीवन मूल्य अपने सास्कृतिक, सामाजिक तपस्वियो साधको और स्वयसेवको के माध्यम से अतीत की तरह देश-देश और द्वीप-द्वीपान्तर मे पहुचाने का लक्ष्य निर्धारित कर उस तन-मन-धन से निष्ठापूर्वक कार्यान्वित करे। इतिहास और जीवन मे असम्भव नामक कोई स्थिति और लक्ष्य नहीं है यदि उसे पूरी साधना, सकल्पो और क्षमता से कार्यान्वित किया जाए। कितना समीचीन हो यदि भारतीय बुद्धिजीवी समाज सुधारक, राष्ट्र भक्त, शिक्षा सस्कृति राजनीति के क्षेत्रो मे कुछ कर सकने के इच्छुक सभी राष्ट्रजन, आर्यचिन्तक इस विषय मे चिन्तन कर अपने सामूहिक सामाजिक एव राष्ट्रीय कर्त्तव्यो का निर्धारण कर समुचित कार्यवाही कर सके। ☐

आर्य बाहर से नहीं आए

राष्ट्रीय सहारा' के २ जनवरी, २००१ के अक मे श्री के० मेनन ने पुरावलोकन स्तम्भ मे 'आर्यों का मूल स्थान' शीर्षक लेख मे ऋग्वेद के मन्त्रो के अर्थ का अनर्थ करते हुए बेतुके और निर्बल तर्कों के सहारे भारत मे आर्यो के कहीं बाहर से आने का कुत्सिक असफल प्रयास किया है।

यदि श्री मेनन भूगोल और इतिहास के ज्ञाता होते तो समझ सकते थे कि आर्य सभ्यता भारत मे ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व मे फैली हुई थी और सभी भाषाओ का उदगम सस्कृत से है। आर्यस (ईरान), आर्यक (ईराक) त्रिविष्टप (तिब्बत), जर्मनी, आयरलैंड या आर्यभूमि आर्यलैड, चेकोस्लोवाकिया, ब्रह्मावर्त (बर्मा-म्यामार), सुमात्रा, इण्डोनेशिया (हिन्देशिया), जावा, बाली, इण्डीज, वेस्ट इण्डीज,रूशमा, गान्धार आदि सभी जगह आर्य फैले हुए थे। वैदिक सस्कृति, सभ्यता और वैदिक धर्म (मानवधर्म) सार्वभौम सार्वकालिक, सार्वग्राही है।

हिन्दू कोई धर्म नहीं राष्ट्रीय अवधारणा, राष्ट्रीयता या भारतीय सम्प्रदायो का समुच्चय है। मेनन ! साहब भागवत, रामायण, महाभारत आदि धर्मग्रन्थ नहीं महाकाव्य या साहित्यिक ग्रन्थ हैं, जिनके उदाहरण देकर आप जैसे लोग हिन्दुओ को बदनाम करते हैं।

एक ओर आप जैसे लोग हिन्दुओ को बदनाम करते हैं और दूसरी ओर आप लोग सिन्धु शब्द से हिन्दु शब्द सस्कृति के निर्माण की बात कहते हैं और आर्यो को हिन्दू मानते हैं। जब सिन्धुवासी हिन्दू हैं, हिन्दकुश पर्वत उनका है और वर्त्तमान हिन्दू ही आर्य हैं तो सिन्धुवासी किसे कहते हैं? कृपया वेदो का अर्थ करने से पूर्व सस्कृत का गहन अध्ययन करे।

– आचार्य मुनीश, गाजियाबाद (उ०प्र०)

भयावह स्थिति

आज भारतभूमि मे युद्ध जैसी स्थिति हो गई है। पूरा देश आतकवाद की आग से झुलस रहा है। पूर्वांचल को लपटे निगल रही हैं और पृथ्वी के स्वर्ग कश्मीर मे नित्यप्रति लाशे बिछ रही हैं, सभी धर्मो के लोगो की और साथ ही नौजवानो की। अब यह समझ से बाहर है आखिर सरकार की यह कौन-सी नीति है मातभूमि की रक्षा की। आखिर इन देशभक्तों मे कैसी देशभक्ति बची है। वाह रे ! मेरे देश, कितना दु ख होता है, तेरा भाग्य जलता देख।

– राजेन्द्र नटखट, सरस्वती विहार दिल्ली

सुरक्षा में असावधानता

पिछले वर्षो की घटनाओ से स्पष्ट है कि भारत विरोधी ताकते अपना बुनियादी काम पूरी अक्लमन्दी से करती हैं और अपने छिपने के ठिकाने समझदारी से चुनती हैं जबकि भारतीय नीति-निर्माता अधेरे मे ही टक्करे मारते हैं। इण्डिया टुडे के ८ जनवरी २००१ के अक मे छपे ब्योरे से इस तथ्य की पुष्टि होती है। मौजूदा सरकार की उम्मीद थी कि वह आतकवाद से जमकर लडाई लडेगी, परन्तु घटनाए बतला रही हैं कि सुरक्षा व्यवस्थाओ मे पूरी ढील दी गई है, चाहे वह कश्मीर में चट्टानी कारगिल के क्षेत्र का सवाल हो अथवा दिल्ली के शानदार लालकिले की रखवाली का प्रश्न हो।

ऋग्वेद से यत्-तत् सप्तकम् (१)

क्या करने वालों के साथ परमात्मा क्या करता है ?

– मनोहर विद्यालंकार

(१) सर्वेश्वर प्रभु सब प्राणियो को सब प्रकार के आवश्यक पदार्थ देता है, किन्तु कर्मफल देने मे किसी स्तोता की भी रियायत नहीं करता

य एकश्च चर्षणीना वसूनामिरज्यति। इन्द्र पञ्च क्षितीनाम्।। ऋ० १-७-९

वृषा यूथेव वसग कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुत।। ऋ० १-७-८

ऋषि- मधुच्छन्द । देवता- इन्द्रः। छन्द - गायत्री।

अर्थ – (य एक इन्द्र) जो परमेश्वर अकेला ही (पच) पाचो (चर्षणीनाम्) गतिशील तथा देखने वाले (भूचर, जलचर, नभचर, उभयचर तथा सर्पणशील) प्राणियो का (वसूनाम्) निवास के योग्य पदार्थों तथा धनो का और (क्षितीनाम्) लोको तथा मनुष्यो का (इरज्यति) ऐश्वर्य देने वाला तथा सेवन करने योग्य स्वामी है।

स – वह परमेश्वर – (वसग वृषा यूथा इव) जैसे सुन्दर गतिवाला ग्वाला या साड गायो के झुण्डो के साथ रहकर देखभाल करता है और जरूरतमन्द की रक्षा करता है या वीर्यसिचन करता है, वैसे ही (अप्रतिष्कुत) कर्मफल देने मे किसी के प्रतिवाद को न सुनने वाला (ईशान) सबका स्वामी (ओजसा कृष्टी इयर्ति) अपने ओज से सब कर्मशील प्राणियो की देखभाल तथा रक्षा करता है और उन्हे कर्मानुसार निवास के लिए शरीर तथा अन्य साधन देता है।

निष्कर्ष – (१) अत सब उसके द्वारा प्रदत्त पदार्थो और परिस्थितियो का सेवन तथा उसकी स्तुति उपासना करे। (२) परमेश्वर प्राप्ति के लिए अपने अन्दर किसी न किसी प्रकार का ओज (प्रभाव उत्पादक विशिष्टता) उत्पन्न करे।

महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखा है – जो मनुष्य ऐसे परमैश्वर्य के स्वामी और प्रदाता को छोडकर किसी अन्य को ईश्वर मानता है वह भाग्यहीन घोर दु ख पाता है।

अर्थपोषण – चर्षणय क्षितय कृष्टय मनुष्यनामसु। नि०२-३ इन्द्र – इदिपरमैश्वर्य।

इरज्यति–ऐश्वर्यकर्मा नि०२–२१, परिचरण कर्मा नि० ३-५

(२) सर्वेश्वर अपने सखा को हंसी खुशी कर्मफल भोगने में समर्थ बनाता है

तमित्सखित्व ईमहे त राये त सुवीर्ये।
स शक्र उत न शकदिन्द्रो वसु दयमान ।। ऋ० १-१०-६

ऋषि -मधुच्छन्दा । देवता-इन्द्र । छन्द -गायत्री

अर्थ – (स इन्द्र) वह (जो) परमेश्वर (शक्र) सर्वसमर्थ होने से (वसुदयमान) धन देता है और छीन भी लेता है। (राये) किसी भी धन की प्राप्ति के लिए, अथवा (सुवीर्ये) किसी भी बल की प्राप्ति के लिए (त इत् सखित्वे ई महे) केवल उसे ही अपना मित्र माने और उससे ही (ई हे) याचना करे। इन्द्र – दु खाना विदारयिमता।

अर्थपोषण – दयमान– दयदान गति, रक्षण हिंसा, आदानेषु।

निष्कर्ष – वह दु खो का दूर करने वाले सर्व समर्थ है। यदि हम उसके सखा=समानख्यान बनकर उसके जैसे काम करे तो वह हमे भी प्रत्येक कर्मानुरूप सामर्थ्य प्रदान करेगा।

(३) अग्रणी प्रभु-अपने गुणों का (अनुकरण) करने वालो की रक्षा करता है

यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूत देव सपर्यति।
तस्य स्म प्राविता भव।। ऋ० १-१२-८

ऋषि -मेधातिथि काण्व । देवता-अग्नि । छन्द -गायत्री।

अर्थ – हे (अग्ने देव) हे सर्व मार्गदर्शक प्रभो ! ज्ञानाग्नि से दीप्त आप सबको सब कुछ देने मे समर्थ हे किन्तु (य हविष्पति) दानपूर्वक भोग करने वाला (यज्ञ-शेष भक्षी) मनुष्य काण्व (कण-कण करके निरन्तर दान करता है) बनकर (दूतम्) भक्तो को तप की अग्नि मे तपाकर दु ख दूर करने तथा ज्ञान और सुख देने वाले आप की (सपर्यति) सेवा करता है – आपके गुणो का अनुकरण करता है (तस्य प्राविता स्म) उसके आप अवश्य ही रक्षक, तथा वर्धयिता हो।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का भावार्थ लिखा है – जो मनुष्य आस्तिक भाव से हृदय मे सर्वद्रष्टा परमेश्वर का ध्यान करते हैं वे उसके सरक्षण मे रहते हुए, पाप कर्मो को छोडकर धर्माचरण करते हैं और सुख पाते हैं। इसी प्रकार जो लोग यानयन्त्रादि में अग्नि का प्रयोग करे, वे युद्धो मे सुरक्षित हो प्रजा के रक्षक बनते हैं।

अर्थपोषण – हवि – हुदानादनयो। सपर्यति– परिचरति– सेवते।

निष्कर्ष – (१) जो साधक केवल स्वार्थी नहीं परार्थ करने के साथ प्रभु की पूजा उसके गुणो का सेवन-अनुकरण करता है परमेश्वर स्वभावत उसकी रक्षा और वृद्धि करता है।

(२) वेद मे प्रार्थनाए और कामनाए सार्थक हैं जिन्हे परमात्मा स्वभावत पूरी करता है।

(४) देवजन-संदीप्त, मनीषी व यज्ञशील स्वभक्तों को मर्यादा तथा माधुर्य देते हैं

धृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नन ।
आ देवान्तसोमपीतये।। ऋ० १-१४-६
तान्यजत्रों ऋतावृधोऽग्ने पत्नीवतस्कृधि।

मध्व सुजिह्व पायय।। ऋ० १-१४-७

ऋषि -मेधातिथि काण्व । देवता विश्वेदेवा । छन्द -गायत्री।

अर्थ – (धृत पृष्ठा) ज्ञान दीप्ति रा सदा सस्पृष्ट रहने वाले, (मनोयुज) मन से वासनाए पृथक कर आत्मा से जोडने वाले (सोमपीतये) सोम (वीर्य तथा शान्ति) के पान तथा रक्षण के लिए (देवान् वह्नय) दिव्यजनो से सम्पर्क रखने तथा दिव्य पदार्थो को धारण करने वाले (ये) जो मनुष्य (त्वा आवहन्ति) सदा अपन हृदय मे तेरा ध्यान करते है –

हे (सुजिह) उत्तम वेदवाणी के प्रणेता ! (तान्) उन उपरिलिखित गुण धारण करने वाले साधको को (यजत्रान्) यज्ञो द्वारा अपना त्राण करने वाला (ऋता वृध) जीवन मे ऋतो का वर्धन करने वाला तथा (पत्नीवत कृधि) उत्तम पत्नी वाला बनाइए और (मध्व पायय) मधुर ज्ञान रस का पान कराए, क्योंकि ऐसा करना आपका स्वभाव है – आप ऐसा करते हैं।

अर्थ पोषण – सुजिह्व – जिह्वा वाणी नाम। नि० १–११, मधु– ज्ञान, कर्म उपासना। वैदिक कोष

निष्कर्ष – जो शरीर से दीप्त, मन से वासना शून्य, सोमपान के निमित्त सदा तुझे अपनी आत्मा मे धारण करे उनकी, तू यज्ञ भावना उत्पन्न कर रक्षा करे उत्तम पत्नी देकर उनमे ऋत का वर्धन करता है, और वेदवाणी के मधुर ज्ञान का पान कराता है।

(५) ज्ञानीजन, हमारे रोगों व क्लेशों को दूर करके हमारा पोषण वर्धन व सेवन करें

यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धन ।
स न सिषक्तु यस्तुर ।। ऋ० १-१८-२

मेधातिथिः काण्व । ब्रह्मणस्पति । गायत्री।

अर्थ – (य) जो ब्रह्माण्ड का स्वामी परमात्मा, या राष्ट्रपति राजा, या ब्रह्मज्ञान का उपदेष्टा आचार्य (रेवान्) अपनी आवश्यकताओ के लिए आवश्यक धन से सम्पन्न है, (अभीवहा) अपनी प्रजा व शिष्यो के रोगो को नष्ट करने मे समर्थ है (वसुवित्) निवास के लिए आवश्यक पदार्थों से निश्चिन्त है (पुष्टि वर्धन) शरीर मन, मस्तिष्क तीनो के पोषण को बढाने वाला तथा (य तुर) जो प्रत्येक समस्या या कमी का तुरन्त पूरा करने वाला है (स न सिषक्तु) वह सदा हमे सुलभ हो, हमारी कमिया दूर करे और आवश्यकताए पूरी करे।

सिषक्तु – षच् सम वाये (सेवमानस्य) निक० ३–२७

महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र का भावार्थ में इस प्रकार प्रस्तुत किया है

जो मनुष्य ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट सत्यभाषणादि आज्ञाओ का अनुष्ठान (आचरण मे लाना) करते हैं, वे अविद्यादि रोगो से मुक्त होकर शरीर व आत्मा से सपुष्ट होकर चक्रवर्त्तिराज्यादि धनो तथा सर्वरोगहर ओषधियो को प्राप्त करते हैं।

(६) सोम (वीर्य, ओषध, शान्ति) सेवन से मनुष्य सदा बढता है, कभी निराशन नहीं होता

स घा वीरों न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पति ।
सोमो हिनोति मर्त्यम् ।। ऋ १-१७-४

मेधातिथि काण्व । ब्रह्मणस्पति , इन्द्र सोमश्च। गायत्री।

अर्थ – (य मर्त्यम्) जिस मानव को (इन्द्र) राज्य प्रमुख – सम्पूर्ण शासन (ब्रह्मणस्पति) ज्ञान का स्वामी–आचार्यकुल और (सोम) सोमादि ओषधियो अध्यक्ष – स्वास्थ्यविभाग (हिनोति) अपने सुशासन और सहयोग से बढाता है (स धा वीर) वह निश्चय ही वीर है अर्थात् जिस क्षेत्र या धर्ण को स्वीकार करता है, उसमे वह कभी (न रिष्यति) हिंसित अर्थात असफल अपमानित या पराजित नहीं होता।

निष्कर्ष – जिनका पालन-पोषण उत्तम शासन व्यवस्था और सद्‌गुरुओ की देखरेख मे होता है, वे सदा उत्साहित होते हैं नेता बनते है निराश नहीं होते वीर पुरुष के समान स्वय कष्टो और आपत्तियो से निपट राष्ट्र को आगे बढाते है।

(७) ब्रह्माण्डपति की अनुमति के बिना, ज्ञानी का श्रेष्ठ कर्म भी सफल नहीं होता

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीना योगमिन्वति।। ऋ० १-१८-७

मेधातिथि काण्व । सदसस्पति । गायत्री।

अर्थ – (विपश्चित चन) बडे से बडे ज्ञानी पुरुष का (यज्ञ) लोक सग्रहात्मक उत्तम कार्य भी (यस्माद् ऋते) जिस ब्रह्माण्ड पति की अनुकूलता के बिना (न सिध्यति) सफल नहीं होता, क्योंकि (स धीना योग इन्वति) केवल वही मनुष्यों की आन्तरिक नीयत और बाह्य कर्मों के सयोजन को व्याप्त करता है। जानता है और तदनुरूप सफलता प्रदान करता है।

निष्कर्ष – कई बार बडे विशेषज्ञ जो काम नहीं कर पाते, एक सामान्य मनुष्य कर देता है। एक ही रोग मे कई बार एक जैसे समर्थ रोगियो की समान चिकित्सा होती है, किन्तु एक ठीक होता है एक ठीक नहीं होता। सब आश्चर्य करते हैं। वास्तव मे यह स्थिति केवल बाह्य और वर्तमान कार्य को देखकर होती है। आन्तरिक भूतकाल की कर्म श्रृखला तो वही सदसस्पति जानता है, पूर्ण कर्म श्रृंखला के परिप्रेक्ष्य मे ही कार्य सिद्ध या असिद्ध होता है अत कहते हैं कि अपने पूर्ण प्रयत्नो के बाद भी कार्य सिद्धि मे प्रभु की अनुकूलता अनिवार्य है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६

हे प्रभु ! हम रोगमुक्ति के लिए ये नियम अपनाएं
नीरोग होकर निजी एवं देशसेवा करें

– जगदीशचन्द्र मल्लिक

हे पिता ! आप ज्ञानस्वरूप है। आप हमे देशवासियो के कष्टो की अनुभूति दे और उनके समाधान का ज्ञान और शक्ति दे, जिससे अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका कष्ट निवारण कर हम उन्हे सुखी बनाए।

यह जन्मभूमि हमारी माता है, पूरी तरह से हमारा पोषण कर रही है। इसके विपत्तिकाल मे हम स्वय सेवक बनकर इसकी रक्षा करे।

हे पिता ! मादक द्रव्यो और दवाइयो के अधिक प्रयोग से और खान-पान की गडबडी से ससार मे रोगी बहुत बढ गए हैं। देश की प्रगति के लिए उनके सुधार और उनकी रोगमुक्ति आवश्यक हो गई है।

साधारण रोगी और मधुमेह के रोगी अपने चिकित्सक की अनुमति से (१) सप्ताह मे एक या दो बार आधे दिन का उपवास करे। (२) स्वास्थ्य रक्षा के नियमो का पालन करे। (३) स्वास्थ्य वर्द्धक चाय घर मे कूट-छान कर बनाकर प्रयोग करे। (४) प्रतिदिन पाचन शक्ति के अनुसार १०० ग्राम पका टमाटर, १०० ग्राम कच्चा खीरा, २५ ग्राम कच्चा प्याज, २ ग्राम अदरक धोकर कद्दू कस करके, १० ग्राम धनिया पत्ता, दिन मे एक-दो बार नाश्ता करे। (५) दोनो बार के भोजन मे ५०० ग्राम तक मलाई उतरे दूध की दही के साथ उबली सब्जी (हर तरह के शाक, पत्तेदार भाजिया, खीरा ककडी, तोरई परमल, मिण्डी, शलजम, आदि) हो और बाकी सलाद और फल आदि से पेट भरे। ५० ग्राम से अधिक अन्न न खाए। स्वास्थ्य लाभ के बाद १०० ग्राम कर सकते है। अन्न की मात्र बढाने से रोग फिर से बढ़ सकता है। फलो मे जामुन, चकोतरा, ताजा आवला, अनार रसभरी, नारगी, नीबू, आदि खट्टे फल भी खाए, एक बार मे एक किस्म का फल हो , फल बदल-बदल कर ले। भूख से कम खाए ताकि आराम न करना पडे। नाश्ते और भोजन का अन्तर तीन से चार घण्टे हो। हर वक्त खाने की आदत छोड दे।

आठ सौ ग्राम शुद्ध जल नीबू रस मिलाकर दिन मे चार बार ले। पहली बार प्रातः दूसरा दो घण्टे बाद (दोनो खाली पेट) बाकी दो बार भोजन के दो घण्टे बाद। शुद्ध जल अन्दर की धुलाई या स्नान है। चाय-काफी आदि गदला जल है। शरीर रक्षा के लिए प्रतिदिन तीन लीटर शुद्ध जल आवश्यक है। उससे जोडो के दर्द, प्रोस्टे रक्त अल्पता आदि बहुत कुछ बचाव होगा। भोजन के दो घण्टे बाद की भूख झूठी भूख है, कुछ खाना हानिकारक है, केवल शुद्ध जल लो। रात का भोजन ७ बजे समाप्त कर दो, न रूको तो सोने से तीन घण्टे पहले खा लो या केवल फल रस लो। दोनो भोजन के बाद पेशाब अवश्य करो। बाद मे ५ मिनट वज्रासन पर बैठ जाओ।

तिल ३०० डिग्री पर उबर कर खाद्य को विष का रूप दे देता है। आवश्यक हो तो भोजन धीमी आग पर या बहुत कम पानी व भाप पर पकाने के बाद केवल तेल का छोक दो।

तेल मे तले खाद्य मास मछली, अण्डे आदि अन्दर जाकर पूरी तरह से नही पचते। इनका बचा हुआ कुछ भाग अन्दर ही अन्दर सडकर गैस बनाता है और शरीर मे घूमकर जगह-जगह दर्द पैदा करता है। रक्त नालिकाओ की दीवारो मे सख्त परत बनाता जाता है। रक्तप्रवाह का रास्ता सकरा करके रक्त सचालन कम करते हुए कैन्सर हृदयरोग गठिया आदि कई भयानक रोगो को जन्म देता है। एन्टीबायोटिक दवाइया लेने से सूजन आदि कम होने से रोगी धोखे मे आकर समझता है कि वह ठीक हो गया है। किन्तु अन्दर की मैल बढकर परते और सख्त होती जाती है और अन्त मे लाखो खर्च करके जानलेवा शल्यक्रिया करानी पडती है। कुछ भाग सूख जाने से गैस बनकर पेडु आदि मे जम कर पथरी, शोथ अगो के विकार का भयानक कष्ट देता है।

स्नान से पहले खुदरे तोलिए से शरीर के प्रत्येक अग को स्वय खूब घिसो, शरीर गर्म होकर छिद्र खुल जाएगे। पेडु छाती, जोडो (तीनो तरफ अलग-अलग) आदि मे स्वय तेल की मालिस करो। रीढ मे किसी दूसरे से एक-दो मिनट मालिस कराओ।

योगासन और हस्त-पाद सचालन सीखो और करो। प्रात-साय उत्तान पाद आसन, पवन मुक्तासन लम्बे सास लो और छोडो । बाद मे ५ मिनट लम्बे सास खीचो और छोडो। प्रतिदिन तीन मील सैर करो या अवस्थानुसार तीन मिनट की दौड अपनी गली मे लगाओ। इसमे सगठन के लिए पडोसियो को साथ ले लो।

आशा है कि हम ये नियम पालन कर नीरोग हो स्वस्थ होकर अपना और राष्ट्र सेवा का कार्य कर सकेगे।

– ३, जेसोर मार्ग, दमदम, कलकत्ता- २८

यज्ञ हवन, संध्या का पावन

– हरिकुमार साहू

यज्ञ हवन सध्या का पावन जहा हो रहा काज है।
बिना मूरत बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।
छुआछूत या ऊच नीच का जहा न कोई भाव है।
जात-पात या नगर प्रात का जहा न कुछ अलगाव है।।
द्वेष दम्भ है नही तनिक भी, प्रेम परस्पर है सब मे।
एक दूसरे से आपस मे सबको स्नेह लगाव है।।
जहा गूजती वेद, उपनिषद की पावन आवाज है।
बिना मूरत बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।
स्वामी दयानन्द ने जिस पर अपना सब कुछ न्यौछारा।
लेखराम ने जिसकी खातिर हसकर जीवन को वारा।।
श्रद्धानन्द शहीद हो गए सीने पर गोली खाकर।
दक्षिण मे थी बही आर्य वीरो की रक्तमयी धारा।।
ऐसे अमर शहीदो पर आर्यों को बेहद नाज है।
बिना मूरत, बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।
भाई परमानन्द, लाजपत, रोशन, गेदा आर्य है।
बिस्मिल अर्जुन अजित, किशनसिह भगत श्यामजी आर्य हैं।।
आर्य समाजी अमर शहीदो ने रक्तिम इतिहास रचा।
अनुकरणीय सभी की खातिर, जिनके पावन कार्य हैं।।
इन आर्यो के बलिदानो से हमको मिला सवराज है।
बिना मूरत, बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।
निराकार ईश्वर का अर्चन जहा आर्यजन करते हैं।
भूत-प्रेत से मगल शनि से जहा न कोई डरते हैं।।
मिट्टी पत्थर के पुतलो की जहा न पूजा होती है।
वद ज्याति से जहा अविद्या का अधियारा हरते हैं।।
अखिल विश्व को आर्य बनाने जो सकल्पित आज है।
बिना मूरत बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।
यज्ञ हवन सध्या का पावन जहा हो रहा काज है।
बिना मूरत बिन घटे का यह मन्दिर आर्य समाज है।।

– मन्त्री, आर्यसमाज गोडपारा, बिलासपुर (म०प्र०)

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में
महर्षि जन्मोत्सव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ शनिवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संगठनों से प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक संख्या मे पधारकर समारोह को सफल बनाएं।

वेदव्रत शर्मा
सभा प्रधान

भीषण भूकम्प ने पूरे देश को हिलाया

- गुजरात में भीषण विनाश : ३०००० से अधिक मरे
- हजारों जख्मी : हजारों के मलबे में दबे होने की आशंका

अहमदाबाद। स्वाधीनता के बाद देश मे आए दूसरे सर्वाधिक तीव्रता वाले विनाशकारी भूकम्प ने २६ जनवरी की सुबह सारे देश को बुरी तरह झकझोर दिया। गणतन्त्र की खुशिया मना रहे सारे देश मे आतक छा गया। भीषण भूकम्प के झटको मे तीस हजार से अधिक लोग मरे मलबे मे भी हजारो लोगो के दबे होने की आशका है।

२६ जनवरी को सुबह ८ बजकर ४६ मिनट पर आए भूकम्प की तीव्रता ६.६ आकी गई, उसका केन्द्र गुजरात मे भुज से २५ किलोमीटर उत्तर-पूर्व मे था। भूकम्प इतना शक्तिशाली था कि उसके झटके उत्तर मे हिमालय से दक्षिण मे कन्याकुमारी तक अनुभव किए गए। इतना जबर्दस्त भूकम्प ५० वर्ष पूर्व आया था और नियति यह है कि उस दिन भी देश स्वाधीनता दिवस मना रहा था।

भूकम्प का सर्वाधिक असर गुजरात मे हुआ, परन्तु उसके झटके महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश, बिहार, प० बगाल, उत्तर-पूर्वी राज्यो, दक्षिण मे पाण्डीचेरी और केरल आदि मे भी महसूस किए गए।

गुजरात के अहमदाबाद, भुज, कच्छ आदि के क्षेत्रो मे रोज की तरह सूरज निकला था कि देश कि ५२वे गणतन्त्र दिवस पर मौत और विनाश का नजारा देखने को मिला। इसमे बहुमजिली इमारते ऐसे ढह गई, जैसे रेत के महल। सैकडो बिजली के खम्बे, पेड धराशायी हो गए, मलबे के नीचे हजारो जिन्दगियो ने कराहते हुए दम तोडा। सबसे विनाशक दृश्य साबरमती के क्षेत्र मे था जहा दर्जनो बहुमजिली इमारते ताश के पत्तो की तरह ढह गईं।

हैदराबाद के राष्ट्रीय भूभौतिक अनुसधान ने भूकम्प की तीव्रता ७.६ दर्ज की। उसने यह सूचना भी दी कि इससे पहले १९५० मे असम मे सर्वाधिक भीषण भूकम्प आया था, जिसकी तीव्रता ८.६ थी। ❑

राजपथ पर राष्ट्र की शक्ति और प्रगति की गौरवभरी झांकी

दिल्ली। राष्ट्र ने २६ जनवरी के दिन अपनी ५२ वा गणतन्त्र दिवस पूरी गरिमा से मनाया। राजधानी दिल्ली के राजपथ पर आयोजित मुख्य समारोह मे राष्ट्रपति के०आर० नारायणन ने ध्वजारोहण किया और परेड की सलामी ली। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अल्जीरिया के राष्ट्रपति अजीत बूत्फलिका थे।

परेड मे भारत राष्ट्र के निवासियो को जहा एकता के अटूट बन्धन मे बाधने वाली राष्ट्र की सास्कृतिक धरोहर की रगारग झाकिया प्रस्तुत की गई वहा विज्ञान एव प्रौद्योगिकी की प्रगति तथा सेना के तीनो अगो की प्रहारक क्षमता वाले अस्त्र-शस्त्रो का भी प्रदर्शन किया गया।

समारोह का शुभारम्भ प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इण्डिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर शहीद सैनिको को श्रद्धाजलि देने के साथ हुआ। मुख्य समारोह स्थल पर राष्ट्रपति के० आर० नारायणन् द्वारा ध्वजारोण के बाद अरक्षको ने राष्ट्रीय सलामी दी। उसी समय राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए हेलीकाप्टर आए फिर गणतन्त्र दिवस परेड का शुभारम्भ हुआ। परेड मे अदम्य साहस प्रदर्शित करने वाले अनेक पदक विजेता चल रहे थे। फिर घोडो पर ६१वीं घुडसवार सेना का दस्ता आया। देश मे निर्मित युद्धक अर्जुन टैंक, अजय टैंक बोफोर्स तोपो के बाद वायु रक्षा प्रणाली का सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया। अनेक सैनिको, अर्द्ध सैनिको, नौसेना, वायुसेना के दस्तो के बाद विमानवाहक युद्धपोत विक्रान्त और पनडुब्बी '**सिन्धुरक्षक**' के साथ २८ हैलीकाप्टर और लडाकू विमान प्रदर्शित किए गए। जमीन से जमीन पर २००० कि०मी० दूर तक मार करने वाली अग्नि-२ का भी प्रदर्शन किया गया।

परेड मे पूर्व सैनिको का दस्ता, सीमा सुरक्षा के जवान, ऊटो के दस्ते, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस, अनेक सुरक्षा बलो के प्रदर्शन के बाद मनमोहक झाकिया प्रदर्शित की गई। ❑

धन्वन्तरी विधि से एड्स की सफल चिकित्सा का दावा

दिल्ली। आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री भूपनारायण मण्डल ने दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष दावा किया है कि उसने प्राचीन धन्वन्तरी विधि से एड्स के कई रोगियो की चिकित्सा कर उन्हे स्वस्थ कर दिया है, इसलिए उसे और अवसर और सहायता दिलाई जाए। न्यायालय ने इस बारे मे केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव से कहा है कि याचिकाकर्ता के दावे पर विचार कर उचित कार्यवाही करे।

याचिका कर्ता श्री भूपनारायण मण्डल ने अपने वकील सुग्रीव दुबे के माध्यम से दी गई याचिका मे कहा है कि पिछले बीस वर्षो से वह प्राचीन धन्वन्तरि विधि से एड्स के रोगियो का इलाज कर रहे हैं, उनके इस इलाज से सभी रोगी ठीक हो गए। वह एड्स रोग के बढने को रोकने के लिए शोधकार्य भी कर रहे हैं। श्री मण्डल ने कहा – एक ओर एड्स की रोकथाम के लिए सरकार करोडो रुपए खर्च कर रही है और इस बारे मे कई विज्ञापन भी निकालती है। याचिका मे कहा गया है कि इस विलुप्त हो रही आयुर्वेदिक विधि पर सरकार ध्यान दे और एड्स पीडितो की चिकित्सा धन्वन्तरी विधि से करवाई जाए। सरकार उनके दावे की जाच करे। न्यायालय से अनुरोध किया गया कि वह सरकार को निर्देश दे कि वह आवेदन करने वाले को रोगियो के इलाज के लिए किसी केन्द्र या जगह की व्यवस्था करवाए और वहा रोगियों को भी भिजवाए। ❑

आज शास्त्र के साथ शस्त्र धारण करने की आवश्यकता

वसन्तोत्सव सम्पन्न

दिल्ली। दिल्ली प्रान्तीय ब्राह्मण सभा द्वारा विट्ठलभाई पटेल भवन मे सरस्वती पूजन वसन्तोत्सव और वीर हकीकतराय बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मगलाचरण एव द्वीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर भाषण देते हुए पूर्व सासद बैकुण्ठलाल शर्मा ने घोषित किया कि भारतीय सस्कृति ऋषि-मुनियो की सस्कृति है। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' और '**सर्व भवन्तु सुखिनः**' का मूल मन्त्र लेकर चलने वाली यह सस्कृति मानव-मानव मे भेद नहीं करती।

श्री शर्मा ने कहा कि ब्राह्मण इस सस्कृति के मुख्य ध्वजवाहक रहे हैं, मगर खेद है कि आज ब्राह्मण भी अपने मार्ग से विमुख हो रहे हैं। श्री शर्मा ने आगे कहा कि ब्राह्मणों का कर्त्तव्य शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा देना है मगर आज कुछ ब्राह्मण अपने पथ से च्युत हो गए हैं। देश, समाज और धर्म की सेवा करने के लिए आज पुन शास्त्र के साथ शस्त्र धारण करने की आवश्यता है। समारोह मे गुजरात मे आए भूकम्प मे मृतको को भी श्रद्धाजलि दी गई।

सासद श्री मदनलाल खुराना ने कहा – भारतीय सस्कृति सेवा भाव पर बल देती है, आज आवश्यकता है कि गुजरात मे हुई त्रासदी से लोगो को बचाया जाए इसलिए हम सब तन-मन-धन से सहायता के लिए जुट जाए। शहीदो का स्मरण करते हुए हमे देश सेवा और धर्म पर चलने की प्रेरणा लेनी चाहिए। ❑

एक ऐतिहासिक भूल सुधारिए

अयोध्या के राममन्दिर सरीखे मामले अदालतो या सरकार द्वारा नहीं सुलझाए जा सकते। दोनो के ही निर्णयो से स्थिति नहीं सुधरेगी क्योंकि कट्टरपन्थी और राजनीतिज्ञ दोनो ही समस्या सुलझाने की जगह अपने वोटो-मतो की पिटारी भरने मे अधिक दिलचस्पी रखते हैं। स्थिति तभी सुधर सकती है जब दोनों ही पक्षो के समझदार एव दृढ नेता ऐतिहासिक तथ्यो और पुरातत्त्वीय निष्कर्षों के फलस्वरूप इस विवादहीन साक्षी को स्वीकार कर ले कि विदेशी आक्रान्ता बाबर ने प्राचीन मन्दिर ध्वस्त किया था और १५२८ में मस्जिद बनवाई थी।

फैजाबाद कलक्टर के पुराने दस्तावेज यह स्पष्ट करते हैं कि १७ वीं, १८ वीं, १९वीं शताब्दियो में हिन्दुओ और मुसलमानों के बीच अदालती मुकदमे चले हैं। फलस्वरूप अकबर ने भगवान पूजा करने के लिए मस्जिद से बाहर परन्तु चारदीवारी के अन्दर २३x१७ फुट का चबूतरा रामलला की मूर्ति की पूजा निमित्त बनाने की इजाजत दी। वे दिन ऐसे थे जब हिन्दुओ की आवाज नहीं सुनी जाती थी।

परन्तु अब भारत स्वतन्त्र है, ऐसे मे यह मुसलमान भाइयो का नैतिक दायित्व है कि इतिहास द्वारा की गई भूल सुधार की जाए। १८८५ मे सुन्नी वक्फ बोर्ड फैजाबाद की अदालत मे मस्जिद के मालिकाना हक का मामला हार चुका है। इस देश की मुसलमान यह सच्चाई जानकर कोई ऐतराज नहीं करते, परन्तु राजनीतिज्ञ मतो-वोटों को खातिर अपने वोटो का बैंक बनाने के लिए स्थिति का दुरुपयोग कर रहे हैं। असल में बाबर का कारनामा मजहबी था। इस धरती के पुत्रों की खातिर १५२८ से पूर्व की पूजा की स्थिति मे पहुचा कर मामला सदा के लिए सुलझा देना चाहिए।

– टाइम्स ऑफ इण्डिया, २१ जनवरी, २००१

ऋषि पर्व (महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषि बोधोत्सव पर्व) पर क्या करें?

समस्त आर्य बन्धुओ को सूचनार्थ है कि इस वर्ष ऋषि पर्व अर्थात आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का **जन्म दिवस** फाल्गुन बदी दशमी, विक्रमी सम्वत २०५७ तदनुसार १७ फरवरी, २००१ (शनिवार) ऋषि बोधोत्सव अर्थात् महाशिवरात्रि फाल्गुन बदी १३ सम्वत् २०५७ तदनुसार २१ फरवरी २००१ (बुधवार) को है। अत इस पावन पर्व (ऋषि पर्व) को बडी धूमधाम से समारोहपूर्वक अपने-अपने क्षेत्र मे मनाए।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगो की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारो के मार्गदर्शन के ही कारण है। स्वामीजी ने यह ज्ञान हम तक पहुचाया है इसके लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान् ऋषि के विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाकर अन्य बन्धुओ को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहे। आर्यसमाज की सदस्य सख्या बढाना हमारा लक्ष्य नही। हमारा एकमात्र उद्देश्य है अधिक से अधिक लोगो और अन्तत समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना – **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**

ऋषि पर्व (जन्मदिवस समारोह एव ऋषि बोधोत्सव) पर स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार एक या अधिक निम्न गतिविधियो का समावेश किया जा सकता है –

१ **बृहद यज्ञो का आयोजन** (यदि सम्भव हो तो पार्को अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यो आदि के अतिरिक्त, जनसामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए, सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त **ऋषि लगर, जलपान, प्रसाद** आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगो मे करे।

२ यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन अवश्य आयोजित करे, जिससे जन सामान्य को **वैदिक, आध्यात्मिक** तथा **आर्य (श्रेष्ठ) विचारों** से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

३ अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओ, महिलाओ, वृद्धो, बच्चो आदि के लिए अलग-अलग **विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघुसम्मेलनों** अथवा कार्यशालाओ के रूप मे आयोजित करे। "सुखी परिवार कैसे रहे ?" विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ **सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथा** का भी आयोजन करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारो का लाभ लोगो को **धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय** तथा **राजनैतिक** उत्थान के लिए मिल सके।

५ आर्यसमाज भवनो पर **विशेष लाईटो का प्रबन्ध** सम्भव हो तो ऋषि पर्व पर तथा सभी आर्यजन **अपने घरो** को भी दीपावली की तरह सजाए। शर्म न करे ऋषि पर्व एक सप्ताह पूर्व **प्रभात फेरियों** के द्वारा दयानन्द एव प्रभु भक्ति के भजन गाते हुए भी प्रचार करे।

६ अपने-अपने क्षेत्र मे **वाक/भाषण** या **अन्य प्रतियोगिताए** आयोजित करके बच्चो मे **सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार की तरह वितरित करें।** आर्य शिक्षण सस्थाओ इस प्रकार के आयोजन अपने विद्यालय के बच्चो के मध्य अवश्य आयोजित करने चाहिए।

७ क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारो से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रो सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता मे मुफ्त वितरित करे।

८ आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक विशेष बैठक आयोजित करके **"आत्मावलोकन"** अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक है? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नही! तो उसके कारण व समाधान पर चर्चा करे।

९ उपरोक्त के अतिरिक्त, कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क मे उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

१० अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट स्थानीय पत्र-पत्रिकाओ तथा हमें अवश्य भेजे।

आपकी सेवा मे –
वेदव्रत शर्मा
सभा प्रधान

श्रीमती सन्तोष कुमारी दीवान का आकस्मिक निधन

श्रीमती सन्तोष कुमारी दीवान धर्मपत्नी श्री आत्मदेव दीवान का आकस्मिक निधन उनके निवास स्थान ओ-२७ जगपुरा विस्तार नई दिल्ली-१४ मे ४ नवम्बर शनिवार को हृदयगति रुकने के कारण प्रात ११ बजे हो गया। वे ८२ वर्ष की थी।

इनकी अन्त्येष्टि ५ नवम्बर को दयानन्द घाट लोधी रोड पर पूर्ण वैदिक रीति से श्री हुक्मदेव वेदालकार ने करवाई। इनके पार्थिव शरीर को अग्नि डॉ० कपिल देव ने दी। श्रीमती दीवान बहुत ही कमशीला, दानशीला, ममतामयी, आतिथ्य सत्कार मे अग्रणी थी। उन्होने आर्यसमाज जगपुरा विस्तार की आर्य महिला समाज के प्रधान एव मन्त्री पद को सुशोभित किया। पारिवारिक सत्सगो तथा आसपास की बस्तियो मे वेदप्रचार करने मे उनका योगदान अनुकरणीय रहा। वे अपने स्व० पति श्री आत्मदेव जी दीवान के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्य सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार मे सलग्न रहती थी। Keep Smiling स्टीकर आज भी उनके पति का स्मरण कराते हैं।

उनके परिवार मे दो सुपुत्र – डॉ० ब्रह्मदेव दीवान एव डॉ० कपिल देव दीवान तथा तीन सुपुत्रिया है – श्रीमती मोनिका अरोडा, श्रीमती रेणुकुमार एव श्रीमती नूतन ढींगरा हैं।

इनकी रस्म पगडी १२ नवम्बर २००० को आर्यसमाज जगपुरा विस्तार, नई दिल्ली मे की गई जिसमे दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजो के अधिकारी सदस्य तथा सगे सम्बन्धी उपस्थित थे। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति एव परिवार के सदस्यो को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 1-2 /02/2001 दिनांक २६ जनवरी से ४ फरवरी, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल-- 11024/2001, 1-2 /02/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०)-१३६/२००१

नन्दकिशोर भाटिया दिवंगत
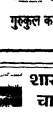
अश्रुपूर्ण नेत्र दुखी हृदय और भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री नन्दकिशोर भाटिया का १२ जनवरी २००१ की रात्रि मे हृदय गति अवरोध से प्राणान्त हो गया। श्री भाटिया जी दिल्ली मे आर्यसमाज के एक सुदृढ स्तम्भ थे। श्रद्धा, निष्ठा, लगन और समर्पण के प्रति भाटिया जी का व्यक्तित्व बहुत ही उज्ज्वल था। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। महर्षि दयानन्द के वे अनन्य भक्त थे। विगत अनेक वर्षों से नियमित रूप से शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि जन्म भूमि टकारा मे महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए जाना उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। टकारा मे निर्माणाधीन महर्षि स्मारक के लिए धन सग्रह कर स्मारक को सुन्दरतम बनाना भी उनका लक्ष्य था। आर्यसमाज के किसी भी कार्य मे वे बडी निष्ठा, लगन और श्रद्धा से जुट जाया करते थे। वे अपने धुन के धनी थे। वे सदा सजग और तत्पर रहते थे। सबके प्रति मित्र भाव रखना, सबके दुख और सकट मे सहायता के लिए भाटिया जी सदा तत्पर थे।

आर्यसमाज से जुडने से पूर्व वे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के ५-७ वर्ष तक प्रचारक रह चुके थे। सघ में भी उन्होने अपनी निष्ठा लगन से कार्य किया। सघ पर प्रतिबन्ध लगने पर उन्होने कारागार की यातनाए भी सही थीं।

भाटिया सूचना पत्र के वे सस्थापक थे। वर्तमान मे वे उसक प्रबन्ध सम्पादन का कार्य देख रहे थे। पत्र की उन्नति के लिए वह प्रयत्नशील रहते थे।

वास्तव में श्रद्धा, लगन, निष्ठा और समर्पण भाव भाटिया जी के पर्याय बन गए थे। भ्रष्टाचरण और असत्य भाषण उन्हे तनिक भी सहन नहीं था। वे उनके विरुद्ध सदा ही अपनी आवाज उठाते रहे। ऐसे ध्येयनिष्ठ कर्मठ लगनशील, समाजसेवी के निधन से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।

११ नवम्बर, १६२६ को फतेहगढ चूडिया जिला गुरदासपुर (पजाब) मे जन्मे श्री नन्दकिशोर की शिक्षा अमृतसर मे ही सम्पन्न हुई। लगभग ७२ वर्ष का सफल तप करते हुए श्री नन्दकिशोर भाटिया आर्य जगत् के एक निष्ठावान नेता के नाते अपनी प्रवृत्तियों की एक प्रभावशाली छाप छोड गए हैं। आर्यसमाज राजौरी गार्डन के विभिन्न पदों पर रहकर तथा बिना पदाधिकारी बने उन्होने आर्यसमाज की किसी गतिविधि से स्वय को अछूता नहीं रहने दिया। इस समय वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत समस्त स्कूलों पर नियन्त्रण रखने वाली आर्य विद्या परिषद् के रजिस्ट्रार (प्रस्तोता) के रूप में कार्य कर रहे थे तथा राजौरी गार्डन आर्यसमाज के तहत चल रहे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के सचिव भी थे। इससे पूर्व वे अल्प समय के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष भी बने।

श्री नन्दकिशोर भाटिया के आकस्मिक निधन से दिल्ली के असख्य आर्यजनो को व्यक्तिगत क्षति हुई है क्योकि श्री भाटिया स्वभाव से अत्यन्त हसमुख और प्रेमशील व्यक्ति थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक, सर्वश्री रामनाथ सहगल मदनमोहन सलूजा, बलदेव राज, दयानन्द मदान, आचार्य सुभाष डॉ० महेश विद्यालकार, श्रीमती शशि आर्या आदि अनेक आर्य नेताओ ने दिवगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इनके अतिरिक्त, दर्जनो आर्यसमाजो, शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य कल्याणकारी सामाजिक एव व्यापारिक सस्थाओ की ओर श्री भाटिया की स्मृति मे मर्मस्पर्शी शोक सन्देश प्राप्त हुए।

दिल्ली में सहायता एकत्र करने का कार्य युद्ध स्तर पर

दिल्ली के राजौरी गार्डन क्षेत्र से गुजरात भूकम्प पीडितों के लिए सहायता-सामग्री तथा धन का सहयोग एकत्र करने का समाचार सर्वप्रथम प्राप्त हुआ है। आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य तथा मन्त्री श्री दयानन्द मदान ने समाज के अन्य महानुभावो की सहायता से हजारो रुपये दान एकत्र कर लिया है तथा प्लास्टिक शीट्स के बडे-बडे टैण्ट जो दो तरफ उसी शीट की दीवार बनाएगे तथा दो साइडो पर परदा होगा। इन टैण्टो की अनुमानित लागत ३०० रु० प्रति टैण्ट की दर से है और ऐसे हजारो टैण्ट गुजरात के विभिन्न क्षेत्रो मे भेजे जाएगे।

पश्चिम क्षेत्र से ही श्री सोमदत्त महाजन, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री रामजी लाल गोयल, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्री प्रियतमदास रसवन्त तथा श्री नरेन्द्र आर्य आदि भी इन कार्यों मे जुटे हैं। दक्षिण दिल्ली क्षेत्र मे श्री सतेन्द्र मिश्र श्री रोशनलाल गुप्ता तथा श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता भी सहायता सग्रह के कार्यों में जुटे हैं। पूर्वी दिल्ली मे श्रीमती ईश्वरी देवी धवन, श्री पतराम त्यागी, श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, श्री विशम्भर नाथ अरोडा एव श्री रवि बहल तथा उत्तरी दिल्ली मे महाशय रामविलास खुराना ने भी धन सग्रह का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इसी के साथ ही श्री कृष्ण कुमार भाटिया एव श्री रामशरण भाटिया ने भी सूचित किया है कि भाटिया बिरादरी की तरफ से वे भी इस कार्य में जुटे हुए हैं।

दिल्ली में गुजरात भूकम्प पीडितों के लिए सामग्री एकत्र करने हेतु स्थापित केन्द्र

दिल्ली मे सहायता सामग्री के लिए निम्न आर्यसमाज मन्दिरों मे केन्द्र खोल दिए गए हैं, जहा राहत-सामग्री पहुचायी जा सकती है –

(१) आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली, (मध्य दिल्ली) 2967440
(२) आर्यसमाज प्रीत विहार, दिल्ली (पूर्वी दिल्ली) 2204698
(३) आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली (पूर्वी दिल्ली) 2050892
(४) आर्यसमाज, तिमारपुर, दिल्ली (उत्तरी दिल्ली) 3953762
(५) आर्यसमाज, लाजपत नगर, नई दिल्ली (दक्षिण दिल्ली) 6834876
(६) आर्यसमाज, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1, नई दिल्ली (दक्षिण दिल्ली) 6440762
(७) आर्यसमाज, रमेश नगर (5153901), राजौरी गार्डन (5101266) तथा पखा रोड, सी०ब्लॉक (5544486) नई दिल्ली (पश्चिमी क्षेत्र)
(८) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५,हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१, 3360150
(६) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२, 3274771, 3260985

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता

"सत्यार्थप्रकाश ने न जाने कितने असख्य व्यक्तियों की काया पलट दी।" – स्वामी श्रद्धानन्द

"यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपए होता तो उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता।" – गुरुदत्त विद्यार्थी, एम०ए०

"मैंने सत्यार्थप्रकाश पढा, इससे तख्ता पलट गया। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास मे एक नया पृष्ठ जोडा।" – रामप्रसाद बिस्मिल

"सत्यार्थप्रकाश की महत्ता को कम आंकना वेदों की अनमोल देन की गरिमा और मूल्यों को घटाना है।" – सी०एस० रगास्वामी अय्यर

"युगनिर्माता तथा चतुर्मुखी प्रगति का सन्देशवाहक सत्यार्थप्रकाश एक महान् ज्योतिस्तम्भ है, वह सम्पूर्ण मानव की सर्वतोमुखी उन्नति का आह्वान कर रहा है।" – डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक : नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली—११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष · ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, ५ फरवरी से ११ फरवरी, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक सभा अधिकारी राहत सामग्री लेकर गुजरात पहुंचे

समूचा आर्यजगत् गुजरात भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जुटा

आर्यसमाज द्वारा गुजरात में रचनात्मक सहयोग का आश्वासन

विगत् २६ जनवरी को गुजरात के भुज और गाधीधाम क्षेत्र को नाभि बनाकर आए भूकम्प की विनाश लीला अब सारे विश्व के सामने प्रकट हो चुकी है।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज गाधीधाम को सहायता कार्यो का प्रमुख केन्द्र घोषित किया गया था इसके अतिरिक्त भुज में भी एक अन्य केन्द्र स्थापित किया गया है। इन दोनों केन्द्रों का सयोजन गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य बडी कर्मठता और कुशलता के साथ कर रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी राहत कार्यों का निरीक्षण करके वापस लौट आए हैं। सभा के दूसरे उप-प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा उप-मन्त्री श्री जगदीश आर्य अब गाधीधाम पहुच चुके हैं। इनके अतिरिक्त सैंकडो की सख्या मे आर्य जन भी सहायता कार्यो मे सहयोग करने के लिए अपनी सुविधानुसार कुछ दिनो के लिए बारी-बारी से इन केन्द्रो मे पहुच रहे है। आचार्य आर्यनरेश श्री राजसिह आर्य श्री प्रेम भाटिया श्री वीरेन्द्र आर्य श्री विनय आर्य श्री मुशीलाल सेठी, श्री बलदेवराज आर्य श्री आर्यमुनि, गुरुकुल गौतम नगर के ब्र० श्री रामभज, श्री मनोहर लाल जी, श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री अजय एव मनोज आर्य आदि के अतिरिक्त कई अन्य महानुभाव कार्यकर्ता भी इन केन्द्रो मे पहुचे है। दिल्ली मे सहायता सामग्री एकत्रित करने तथा इन केन्द्रो से सम्पर्क करके यथायोग्य कार्यवाही का सयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट पूरी तन्मयता के साथ कर रहे हैं।

दिल्ली से अब तक चार ट्रको मे लाखो रुपए की बहुमूल्य सहायता सामग्री सहायता केन्द्रो मे भिजवाई गई है।

निरीक्षण रिपोर्टो तथा सहायता केन्द्रो से जैसे ही सूचना मिली कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता मृत शरीरो के सस्कार करने के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं क्योकि दस-दस दिन पुराने मृत शरीरो से उत्पन्न दुर्गन्ध के सामने किसी भी सरकारी अधिकारी की वहा खडे रहने की हिम्मत नही होती। ऐसी विकट एव प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी आर्यसमाज के कार्यकर्ता मलबे से लाशे निकालने तथा उनके सस्कार का कार्य सम्पन्न करते हैं। कुछ सरकारी अधिकारी तो मिट्टी का तेल छिडककर भी लाशो का सस्कार करने से भी परहेज नहीं करते। इन प्रतिकूलताओ से निपटने के लिए सार्वदेशिक सभा ने लगभग दस टन हवन सामग्री इन केन्द्रो मे भेजने की व्यवस्था की है। इसमे पाच टन सामग्री महाशय धर्मपाल जी के द्वारा तथा ढाई टन सामग्री आदर्शनगर आर्यसमाज के बत्रा परिवार द्वारा तथा एक टन सामग्री राजौरी गार्डन आर्यसमाज द्वारा आहूत की गई है।

शेष पृष्ठ ४ पर

प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी गुजरात के भूकम्प पीडितो के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में ट्रक भेजी जा रही सामग्री को झण्डी दिखाते हुए। साथ में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन, श्री बलदेव राज जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री जगदीश आर्य, आर्यसमाज राजौरी गार्डन के श्री सुदर्शन आहूजा तथा श्री आर्य मुनि जी।

मुम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार होगा

मुम्बई मे २३ से २६ मार्च, २००१ की तिथियो मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही सम्पन्न होगा ।

इस कार्यक्रम के लिए केन्द्र सरकार के बहुत से मन्त्रियो तथा अन्य विशिष्ट महानुभावो ने अपनी स्वीकृति दे दी है। देश-विदेश से बहुत बडी सख्या मे आर्य महानुभावो के पहुचने की आशा है ।

सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान तथा महासम्मेलन के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य ने सूचित किया है कि बेशक हमे दो-तीन सप्ताह का समय गुजरात के सहायता कार्यो के लिए लगाना पडेगा और जनता को गुजरात के लिए धन का सहयोग भी देना होगा । परन्तु गुजरात के लोगो की सच्ची सहायता और आध्यात्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति तभी होगी जब उनके लिए किसी स्थाई और विशाल परियोजना को क्रियान्वित किया जाए ।

कै० देवरत्न ने कहा कि आगामी एक माह मे अनाथालय, विधवाश्रम तथा एक आधुनिक आवासीय विद्यालय की योजनाओ को सयुक्त रूप से लागू करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का मच सार्थक साबित होगा ।

क्या स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द के दीक्षा गुरु एक ही थे?

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

सह लेख लिखने की प्रेरणा मुझे सर्वहितकारी के १४ अक्तूबर के अक मे छपे प० सुखदेव शास्त्री के लेख 'महर्षि दयानन्द के आदि गुरु ब्रह्मर्षि विरजानन्द सरस्वती' से मिली। उसमे लिखा है – "यह दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती (स्वामी विरजानन्द को सन्यास दीक्षा देने वाले) वही हैं, जिन्होने १८५४ ई० मे महर्षि दयानन्द को भी सन्यास की दीक्षा देकर दीक्षित हुए शुद्ध चैतन्य का नाम दयानन्द सरस्वती रखा था।" ध्यान दे कि दण्डी विरजानन्द के अब तक प्रकाशित अनेक जीवनचरितो मे मुख्य हैं– प० लेखराम रचित महर्षि दयानन्द की जीवनी जो १८६७ ई० मे (उर्दू मे प्रथम छपी), के परिशिष्ट (तृतीय भाग) मे दण्डी विरजानन्द के दीक्षा-गुरु के बारे मे लिखा है – 'एक विद्वान् गौड स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से (विरजानन्द की) भेट हुई और वहीं उनसे (हरिद्वार मे) विरक्तवीर ने सन्यास धारण किया और अपना नाम विरजानन्द रखा। यह स्वामी (पूर्णानन्द) उत्तरदेशी पर्वत (सम्भवत गढवाल) के निवासी थे।" पृ० ८५७ (दिल्ली सस्करण)

देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने दण्डी जी के जीवन चरित मे दीक्षा देने वाले का नाम पूर्णाश्रम स्वामी नाम दिया है। (डॉ० भारतीय द्वारा सम्पादित जीवनचरित पृ० २०) स्वामी विरजानन्द पर प्रामाणिक अनुसधान करने वाले कोटा के प्रो० भीमसेन शास्त्री थे। उनका लिखा ग्रन्थ विरजानन्द प्रकाश रामलाल कपूर ट्रस्ट से छपा है। उसमे दण्डीजी के दीक्षा-गुरु के बारे मे लिखा है –' हरियाणा प्रदेश के एक गोड ब्राह्मण अच्छे विद्वान हुए है। उनका पूर्वाश्रम नाम ज्ञात नही है। सन्यासी होकर वह पूर्णानन्द सरस्वती नाम से विख्यात हुए। उनसे सन्यास दीक्षा लेकर विरजानन्द सरस्वती नाम पाया। (पृ० ६ स० २०२६ का सस्करण)

स्वामी वेदानन्दजी ने दण्डी जी के जीवन चरित मे लिखा है –' यहा (हरिद्वार-कनखल) आकर उन्होने दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास दीक्षा ली और उनसे विद्या भी प्राप्त करने लगे।" (पृ० ७३ विरजानन्द वैदिक सस्थान से प्रकाशित) प्रो० भीमसेन शास्त्री ने मुखोपाध्याय जी के इस मत से असहमति प्रकट की है कि दण्डीजी के गुरु का नाम पूर्णाश्रम था। यदि पूर्णाश्रम होता तो सन्यास मर्यादा के अनुसार विरजानन्द का नाम विरजाश्रम होता। सन्यास की दश कोटियो मे गुरु की पदवी (गिरी पुरी, भारती, सरस्वती, बन, पर्वत, अरण्य, आश्रम, तीर्थ) ही शिष्य को दी जाती है। अत पूर्णानन्द सरस्वती के शिष्य का नाम विरजानन्द ही उचित है। निष्कर्ष निकाला कि दण्डीजी के दीक्षा गुरु गढवाल या हरियाणा के थे।

आइए, स्वामी दयानन्द के दीक्षा-गुरु का ब्योरा देखे। स्वामीजी ने अपनी आत्मकथा (तीन किस्तो मे) थियोसोफिस्ट बम्बई से प्रकाशित कराई थी। इसकी प्रथम किस्त मे उन्होने लिखा है– " वह (स्वामी. जी के दीक्षा-गुरु) श्रृगेरी मठ से आकर द्वारिका की ओर जाते थे। उनका नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। उनसे उस वेदान्ती (स्वामीजी का एक साथी) के द्वारा कहलाया कि यह ब्रह्मचारी (शुद्ध चैतन्य) विद्या पढना चाहते है। यह मैं ठीक जानता हू कि किसी प्रकार का अवगुण उनमे नहीं है। उन्हे आप सन्यास दे दे। तब उन्होने (दीक्षा-गुरु पूर्णानन्द सरस्वती ने) कहा कि किसी गुजराती स्वामी से कहो क्योकि हम तो महाराष्ट्रवासी हैं। तब उनसे कहा कि दक्षिणी स्वामी गौडो को भी सन्यास देते हैं तो यह ब्रह्मचारी (शुद्ध चैतन्य) तो पच द्राविड हैं। इसमे क्या चिन्ता है। तब उन्होने मान लिया और उसी ठिकाने पर तीसरे दिन सन्यास की दीक्षा दे दण्ड धारण कराया और दयानन्द सरस्वती नाम रखा। फिर वह स्वामी (पूर्णानन्द) द्वारिका की ओर चले गए।' स्वामी दयानन्द के दुख के कथन से ज्ञात होता है कि उनके दीक्षा-गुरु पूर्णानन्द सरस्वती महाराष्ट्र के थे। उन्होने गुजराती दयानन्द को प्रथम तो सन्यास देने मे सकोच किया पुन मान गए। सन्यास देने के पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द द्वारिका चले गए। इसके बाद स्वामीजी की अपने दीक्षा-गुरु से कभी भेट नही हुई।

उक्त विवरण से पता चलता है कि विरजानन्द के गुरु या तो हरियाणा के गौड ब्राह्मण थे (प्रो० भीमसेन शास्त्री के अनुसार) या प० लेखराम के अनुसार उत्तर देशी पर्वत (गढवाल-उत्तराचल) के निवासी थे। इधर स्वामी दयानन्द के सभी चरित लेखक इस बात से सहमत हैं कि उनके दीक्षा-गुरु महाराष्ट्रवासी थे। अत यह धारणा अपुष्ट है कि इन गुरु-शिष्यो (विरजानन्द-दयानन्द) के दीक्षा-गुरु एक ही थे। प० सुखदेव शास्त्री के अनुसार विरजानन्द के गुरु पूर्णानन्द ने १८५५ में स्वामी दयानन्द को स्वशिष्य विरजानन्द के पास मथुरा जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहा। यह कथन भी अपुष्ट है क्योकि प्रथम तो दण्डी जी के दीक्षा-गुरु का समग्र वृतान्त अनुपलब्ध है। उनकी स्वामी दयानन्द से भेट हुई यह भी अपुष्ट है। १८५५ मे स्वामी दयानन्द उत्तराखण्ड का भ्रमण कर रहे थे और वहा का सम्पूर्ण वृतान्त उन्होने अपनी आत्मकथा मे लिखा है। वहा किसी पूर्णानन्द से भेट होने का जिक्र नहीं है। प० लेखराम ने लिखा है कि दयानन्द ने नर्मदा तट पर परिभ्रमण के समय किसी से विरजानन्द की विद्वता सुनी थी और इसी से वह दण्डी जी के पास विद्या ग्रहण करने के लिए आए थे।

एक अन्य विवादास्पद प्रश्न १८५७ की क्रान्ति मे महर्षि दयानन्द के कथित योगदान की बात शास्त्री जी ने उठाई और इतना ही लिखा है कि अनेक दस्तावेजो तथा महर्षि के ग्रन्थो से इसकी पुष्टि होती है। लेखक इस विषय मे गत ३०-३५ वर्षों से निरन्तर लिख रहा है और उसने कलकत्ता से लाई गई कथित अज्ञात जीवनी तथा शोरम ग्राम से प्राप्त सामग्री पर भी लिखा है। अत इस प्रसग पर पुन लिखना मात्र पिष्टपेषण है।

–८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

आओ, दानव-वृत्ति भगाएं !

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आज अनय का अन्यायो का बढता है भू पर अतिजाल
मण्डरा रहा मनुजता ऊपर, निर्भय होकर दानव-काल
रक्षक बनकर मानवता के, दानवता से हम टकराए।
आओ दानव-वृत्ति भगाए।

भीषण पैदा हुई परिस्थिति, बढते जाते हैं अब रावण
हाहाकार मचा है जग मे, आर्त्तनाद है करता कण-कण
उठो, राम के वशज, अब तो, मिलकर अरि से युद्ध रचाए
आओ, दानव-वृत्ति भगाए।

रक्षक बन बैठे हैं भक्षक, काप रहा सम्पूर्ण चराचर।
बहती है उल्टी युग-धारा, आग उगलता आज सुधाकर
बढो, कृष्ण के वशज, वीरो ! कसो को फिर मार भगाए
आओ, दानव-वृत्ति भगाए।

– मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ०प्र०)

बोध कथा

सच्चे भारत का थोड़ा स्पर्श

महात्मा गाधी शिमला सम्मेलन मे भाग लेने जा रहे थे। वह रेल के तीसरे दर्जे मे बैठे। अमेरिकी पत्रकार पेस्टन ग्रोवर भी रेल मे थे। उन्होने गाधीजी के पास एक पर्चा भिजवाया – 'क्या यह अक्लमन्दी नहीं होगी कि आप पहले दर्जे मे सफल करे। वहा आप थोडी देर आराम भी कर सकेगे। आप चौबीस घण्टे से जरा भी सो नहीं सके हैं। आप थके-मादे शिमला पहुचे, इससे कोई फायदा नहीं।

गाधीजी ने जवाब लिखा – "आपके ममता भरे पत्र के लिए अनेक धन्यवाद, लेकिन मुझे स्वाभाविक गर्मी मे पिघल जाने दीजिए। किस्मत की तरह यह भी निश्चित है कि इस गर्मी के बाद ताजगी लाने वाली ठण्डक मिलेगी और मैं उसका आनन्द लूगा। मुझे सच्चे भारत का थोडा स्पर्श अनुभव करने दीजिए।

– नरेन्द्र

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

सच्चे आरोग्य से जीवनी शक्ति बढे

वाङ् म आसन्नसो· प्राणश्चक्षुरक्ष्णो· श्रोत्र कर्णयो·। अपलिता· केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्।।

अथर्व १६/६०/१

हे प्रभु, मेरे मुख में वाणी की शक्ति हो नासिका मे प्राणरूपिणी जीवनशक्ति हो, आखो मे देखने का सामर्थ्य हो, कानो मे श्रवणशक्ति हो, मेरे केश सफेद न हो, दात मलहीन हों और बाहुओ में बल हो।

ऊर्वोरोजो जङ्धयोर्जव पादयो· प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मनिभृष्ट ।। *अथर्ववेद १६/६०/२*

मेरे पैरो मे ओजशक्ति हो, जघाओ मे वेग हो, पैरों मे दृढता हो, मेरे सब प्राण नीरोग हो, मेरा सारा शरीर विकारहीन और अजय हो।

अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा· मुषकाः शुका· प्रत्यासन्नाश्च राजान षडेता ईतमः स्मृताः।

१ अतिवृष्टि, २ अनावृष्टि, ३ टिड्डी दल, ४ चूहे, ५ तोते और बाह्य आक्रमण, महामारी बुरा मौसम ये सभी ६ ईतिया कही· गई हैं।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

भूकम्प की सीख : तात्कालिक एवं स्थायी उपाय

२६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस की परेड के समय ही आया गुजरात का भीषण भूकम्प एक विराट राष्ट्रीय त्रासदी के रूप मे उभरा है, वह पश्चिमी भारत के साथ देश के अन्य सवदेनशील क्षेत्रो की जनता को स्मरण करा गया है कि देश के पश्चिमी क्षेत्रो के साथ भारत की राजधानी और देश के दूसरे भूभाग भी भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक सवदेनशील क्षेत्रो मे होने से सर्वाधिक खतरो और आपदा के क्षेत्र मे हैं, जिनके लिए जनता और शासन सबको तात्कालिक एव स्थायी उपायों का सहारा लेना चाहिए। जनता को उन सभी करणीय और अकरणीय उपायों की जानकारी होनी चाहिए, जो कि किसी भी भूकम्प की स्थिति मे उसके दायित्व हैं। उसी के साथ उसे किसी भी मकान या कक्ष आदि बनाते हुए अथवा उसका हस्तान्तरण करते हुए किन बातो का ध्यान रखना चाहिए। भारत की राजधानी मे ही नहीं, छोटे-बडे सभी नगरो मे बहुमजिली इमारतो की अनियमित बढोतरी हुई है। आकाश की ओर इन उर्ध्वाधर भवनो की अनियमित बढोतरी ने त्रासदी बढ़ाई है, गुजरात मे आई त्रासदी ने यह उजागर कर दिया हे कि जहा भवन निर्माताओ ने भवन-निर्माण के मानक नियमो की उपेक्षा की वे बहुमजिली या छोटी इमारते ताश के पत्तो की तरह ढह गईं, उनके ही साथ पूरा हरिनगर और वे इमारते बच गईं, जिन्होने भवन-निर्माण की मानक सहिता का पालन किया था। भूकम्प ने सीख दी है कि भवनो की नींव मे इस तरह की प्राकृतिक आपदा से बचाव की पर्याप्त क्षमता की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। भवन-निर्माण की मानक सहिता का पालन करने वाली नई इमारते और बस्तिया बच गईं, इसी क्षेत्र मे ५००० हजार वर्ष पुरानी ऐतिहासिक इमारत का बचना भी इसी तथ्य को पुष्ट कर रहा है। गुजरात के भूकम्प की त्रासदी से बची हुई जनता की सुरक्षा और पुनर्वास तो प्राथमिकता देना पहला दायित्व है, परन्तु उसके साथ जनता और देश को प्रत्येक नागरिक को आवासीय व्यवस्था के बारे मे कर्त्तव्यपारायण बनना होगा।

भारतीय मौसम विभाग की भूकम्प विज्ञान शाखा के निदेशक डॉ० ए० के० शुक्ल ने यह सामयिक चेतावनी दी है कि दिल्ली के भवनो का बेतरकीब ढाचा भूकम्प के दौरान सम्भावित खतरे बढा सकता है, क्योकि यदि मौजूदा हालात में यहा भूकम्प आए तो जनता को वैसा ही हादसा देखने को मिल सकता है, जैसाकि गुजरात मे ४०० स्कूली बच्चो के साथ हुआ। श्री शुक्ल ने कहा – यदि हमे इस समस्या से बचना है तो भारतीय मानक सस्थान के भवन कोड का पालन करना होगा क्योकि भूकम्प से बचाव के लिए दूसरा विकल्प नहीं है। डॉ० शुक्ल के आनुसार भूकम्प की सवेदनशीलता की दृष्टि से भारत राष्ट्र पाच भागो मे बाटा जा सकता है। इसका पाचवा भाग या क्षेत्र भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक सवेदनशील खतरनाक है। इसी क्षेत्र मे कच्छ का इलाका जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्से हिमाचल प्रदेश का भूभाग, उत्तर-प्रदेश और हिमालय की पर्वत श्रृखला, उत्तर पूर्व का क्षेत्र, अण्डमान-निकोबर द्वीप समूह सम्मिलित है। इस क्षेत्र के काफी हिस्सो में भूकम्प के झटके आते रहते हैं। डॉ० शुक्ल के अनुसार भूकम्प रिक्टर तापमान ८ पर आने की सम्भावना बनी रहती है। इस स्थिति मे २० किलोमीटर तक के क्षेत्र मे सभी कुछ ध्वस्त हो सकता है उसका प्रभाव २०० किलोमीटर तक के क्षेत्र मे रहता है। डॉ० शुक्ल की सूचना के अनुसार भारत का चौथा क्षेत्र भी भूकम्प की दृष्टि से खतरनाक समझा जाता है उसमे दिल्ली जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश हिमालय की पर्वत श्रृखला गुजरात का पर्याप्त हिस्सा महाराष्ट्र और प० बगाल का कोलकाता सम्मिलित है। यहा रिक्टर तापमान ६ तक का भूकम्प आ सकता है। अभी तक विश्व मे कोई भी ऐसी तकनीक विकसित नहीं हुई है जिससे भूकम्प के पूर्वानुमान की सूचना दी जा सके।

हुडको की एक वरिष्ठ अधिकारी तरणजोत कौर गढोक के अनुसार १ अरब की जनसख्या वाले भारत राष्ट्र की राजधानी दिल्ली, भूकम्पो का सामना करने मे सर्वाधिक असावधान है, दिल्ली क्षेत्र भूकम्प की दृष्टि से चौथे सवेदनशील क्षेत्र मे आता है। पिछले ८० वर्षों मे ५.५ क्षमता वाले यहा भूकम्प के ५ धक्के मापे गए हैं। गुजरात की भूकम्प त्रासदी से देश की जनता और शासन को सीख लेनी होगी। गुजरात की बची जनता की सुरक्षा और पुनर्वास को तो प्राथमिकता देनी चाहिए, प्रसन्नता की बात है, इस बारे मे गैर सरकारी सगठन जनता और शासन सभी अपना दायित्व निभाह रहे हैं। गुजरात ही नही दिल्ली उत्तर भारत की जनता और शासन को इस तरह के प्राकृतिक हादसो के समय अपने दायित्व का बोध होना चाहिए, सभी सस्थाओ और जनता को पूरी सावधानता बर्तनी चाहिए कि क्या उनके भवन भूकम्प रोधी है ? गुजरात की त्रासदी की सीख है कि भवन का समापन प्रमाणपत्र या आपत्ति शून्य पत्र तभी दिया जाए जब उसने भूकम्परोधी क्षमता के मानक का पालन किया गया हो। राजधानी एव दूसरे नगरो मे भूकम्प के समय प्लास्टर उखडा या नही, कोई छोटी-मोटी क्षति हुई या नही इसका भली प्रकार सर्वेक्षण होना चाहिए। देश मे बिहार हिमालय गुजरात आदि विभिन्न क्षेत्रों मे पहले भी भूकम्प आए है, परन्तु जैसा भीषण विनाश आर जनक्षति इस शती और सहस्राब्दी के प्रारम्भ मे गणतन्त्र दिवस की शुभवेला मे हुई है वैसी त्रासदी कम हुई है, भूकम्प सारे राष्ट्र और उसके निवासियो को चेतावनी दे गया है कि यदि इस भूमिमाता मे सुखी और दीर्घजीवी बनना चाहते हो जिस प्रकार जीवन मे समुन्नति के लिए मर्यादापूर्ण जीवन आवश्यक है तो स्वस्थ नागरिक राष्ट्रीय जीवन मे सर्वोत्तम स्थिति प्राप्त करना उसी समय सम्भव है जब हम अपने छोटे-बडे कार्यो और जीवन के सभी क्षेत्रो मे सच्चाई, ईमानदारी और श्रेष्ठ जीवन मर्यादा का पालन करेगे। ❑

चिट्ठी-पत्री

भारत में विदेशी ईसाई मिशनरी

भारत में अंग्रेज व्यापार करने आए, किन्तु भारत की आन्तरिक दुर्बलता का लाभ उठा कर छोटे-छोटे क्षेत्रो मे अपना राज्य स्थापित कर लिया। भारत मे अनेक छोटे-बडे राज्य थे, उनकी लड़ाइयो का लाभ उठा कर अपनी सेना खडी कर ली। सेना मे अफसर अग्रेज होते थे, सिपाही भारत के ही लोग होते थे। विदेशी ईसाई पादरी भी भारतीयों को ईसाई बनाने के कार्य मे जुट गए। इस प्रकार धर्मान्तरित भारतीय ईसाइयो की सख्या बढी। वे किसी भी सघर्ष मे अग्रेजी राज्य के प्रति निष्ठावान रहते थे। विदेशी पादरियो ने स्कूल खोल कर शिक्षा के क्षेत्र मे अपना विस्तार कर लिया। लोग अग्रेजी पढने लगे। अग्रेजी राज्य मे अग्रेजी पढे-लिखे लोग ही ऊचे पद प्राप्त करते थे। इस प्रकार ऊचे पदो पर केवल अग्रेजी पढे भारतीय होते थे। अत समाज मे अग्रेजी का आदर बढा किन्तु दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के पश्चात् भी मिशनरी स्कूल बढे अग्रेज़ी का प्रसार भी हुआ। तत्कालीन भारत के कुछ नेता अग्रेजी शिक्षा की उपज थे, वे अग्रेजीवादी थे, उन्होने स्वतन्त्र भारत मे भी राष्ट्रभाषा को उसका उचित स्थान नहीं दिया साथ ही विदेशी पादरियो को प्रचार से नहीं रोका, जिसका परिणाम जहा एक ओर ईसाई राज्य स्थापित करने मे वे सफल हो गए दूसरी ओर अग्रेजी का वर्चस्व बढाने का भी पूरा अवसर उन्हे मिल गया। हमारी शिक्षा प्रणाली भी वही गुलामी के समय की अग्रेजो द्वारा चलाई हुई चलती रही, जिस मे राष्ट्रभाव नहीं था। नागालैण्ड, मिजोरम तथा मेघालय के तीन ईसाई राज्य उग्रवाद के केन्द्र बने। राष्ट्र मे वर्ग-विद्वेष भडका। 'आर्य लोग बाहर से आए' जैसी अनर्गल बाते सिखाई गईं। यह सब विदेशी मिशनरियो का कमाल है। विदेशी मिशनरियो के राष्ट्रविरोधी कार्यों पर रोक लगाई जाए और शिक्षा को भारतीय सस्कृति तथा राष्ट्र भक्ति से जोडा जाए तभी राष्ट्र का कल्याण होगा।

– गौरीशकर चौधरी, १०१ सुनहरी बाग अपार्टमेंट, रोहिणी-१३, दिल्ली-८५

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग

समूचा आर्यजगत् गुजरात भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जुटा

आगामी दिनो मे वैदिक रीति से सस्कार करके जहा एक तरफ मृतको के परिजनो को सन्तोष होगा वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण प्रदूषण का मुकाबला भी सम्भव हो स॰ गा।

श्री विमल वधावन के विशेष प्रयास से ट्रको की ... विशाल कम्पनी भण्डारी इन्टरस्टेट कैरियर ने आर्यसमाज के इस सहायता अभियान मे सहयोग करते हुए अपनी तरफ से ट्रको की सुविधा नि शुल्क उपलब्ध करा दी है। इस कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक श्री नवीन भण्डारी ने कहा कि आर्यसमाज को इन सेवा कार्यो के लिए जितने भी ट्रको की आवश्यकता होगी वे सब नि शुल्क उपलब्ध कराए जाएगे। आर्यसमाज के चार-पाच कार्यकर्त्ताओं को इन ट्रकों मे जाने की सुविधा रहेगी तथा ये ट्रक गाधीधाम और भुज मे आर्यसमाज के केन्द्रो पर ही सामान उतारेंगे और यदि आवश्यकता पडी तो गुजरात के क्षेत्रों में भी आवागमन के लिए यह ट्रक उपलब्ध रहेगे।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के द्वारा लगभग ६ सौ कम्बल २०० टैन्ट एक टन हवन सामग्री चार बोरी चने दो बोरी गुड पाच बोरी चावल तथा सैंकडो की सख्या मे नए कपडे, बीस गद्दे तथा भारी मात्रा मे बर्तन आदि एकत्र करने के अतिरिक्त हजारों रुपए की धनराशि भी आहूत की गई है। यह सामग्री दो ट्रकों मे गुजरात पहुचा दी गई है।

भण्डारी इन्टरस्टेट कैरियर के प्रमुख प्रबन्ध निदेशक सरदार स्वर्ण सिंह जी तथा प्रबन्ध निदेशक श्री नवीन पाल सिंह भण्डारी जिन्होंने दिल्ली से भुज तथा गांधीधाम के लिए किसी भी संख्या में निःशुल्क ट्रक उपलब्ध कराने का भीष्म आश्वासन दिया तथा उसे क्रियान्वित भी कर रहे हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इस समूचे ट्रांसपोर्ट संगठन को हर प्रकार की समृद्धि प्रदान करें।

एक ट्रक सामग्री पूर्वी दिल्ली के योजना विहार क्षेत्र से एकत्रित की गई, जिसे भण्डारी इन्टरस्टेट कैरियर के प्रमुख निदेशक सरदार स्वर्ण सिह भण्डारी ने ओ३म् ध्वज पताका दिखाकर विदा किया। इस ट्रक मे शामिल सामग्री में प्रमुख सहयोग श्रीमती ... गम्भीर श्री सुरेन्द्र एव नरेन्द्र गम्भीर, श्री के० के० चौधरी एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दिरा चौधरी, दिनेश कुमार, श्री कृष्ण चावला आदि का था। श्री के० के० चौधरी ने अपने कपडा उद्योग मे से लगभग पन्द्रह सौ विभिन्न किस्म के नए कपडे उपलब्ध कराए तथा इसके अतिरिक्त अपने उद्योग पवन एक्सपोर्टस् के समस्त कार्यकर्त्ताओ की ओर से इक्यावन हजार रुपये का सात्विक दान भी दिया।

राजौरी गार्डन से गए एक ट्रक को महाशय धर्मपाल जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर विदा किया।

पूर्वी दिल्ली के प्रियदर्शिनी विहार क्षेत्र मे श्री प्रेम भाटिया तथा उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला भाटिया के सात्विक प्रयासो से भी लाखो रुपए की राहत सामग्री एकत्र करके ट्रक द्वारा भिजवाई गई है।

मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि भुज और गाधीधाम क्षेत्रों के मकानो में आई हल्की दरारों की मरम्मत के लिए पांच टन प्लास्टर ऑफ पेरिस भिजवाया गया है। इसके अतिरिक्त तीन हजार पाच सौ कम्बल, दरिया, दो हजार टैन्ट भी भिजवाए गए हैं। इग्लैण्ड से प्राप्त नए वस्त्रों की भी गाठें भिजवाई गई हैं।

जारी पृष्ठ ५ पर

१. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी के साथ गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य, गाधीधाम आर्यसमाज के प्रधान श्री पटेल तथा श्री आर्य नरेश, श्री राजसिह, श्री विनय आर्य भूकम्प पीडित राहत केन्द्र के सामने। २, ३ ट्रकों द्वारा भारी मात्रा में पहुच रही राहत सामग्री का वितरण करते हुए।

१ आर्यसमाज राहत केन्द्रों पर पहुंचा समिधा से भरा एक ट्रक, २. ग्राम वासी राहत सामग्री प्राप्त करते हुए। ३ सार्वदेशिक आर्य वीर दल की गुजरात शाखा द्वारा भेजा गया ट्रक, ४. ट्रकों द्वारा गाव गांव जाकर बाटी गई राहत सामग्री।

१ आर्यसमाज राहत केन्द्र मे चल रहा राहत कार्य, २ भीषण तबाही का एक दृश्य ३ खुले चिकित्सा केन्द्रों में रोगियों से पूछताछ करते आर्यसमाज के कार्यकर्ता।

पृष्ठ ४ का शेष भाग

समूचा आर्यजगत् गुजरात भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जुटा

कै० देवरत्न आर्य जो स्वय एक आर्य रिलीफ मिशन नामक सस्था के प्रमुख हैं, उन्होने इस सस्था की ओर से एक वातानुकूलित एक्सरे वैन भी मुम्बई से भिजवाई है। जिसमे तत्काल एक्सरे की सुविधा उपलब्ध है।

अजमेर से कै० देवरत्न जी के स्व० पिता तथा आर्यसमाज के प्रसिद्ध आर्य प्रचारक आचार्य भद्रसेन की स्मृति में गठित एक न्यास की ओर से भी एक एम्बुलेन्स गाधीधाम एव भुज केन्द्रो के लिए भेजी गई है।

अजमेर से श्री दत्तात्रेय बावले जी के द्वारा भी लगभग दो लाख रुपए एकत्र करके सहायता कार्यो के लिए गुजरात भेजा गया है।

गाधीधाम से गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने सूचित किया है कि स्थानीय प्रशासन द्वारा भी गाधीधाम शहर तथा गलपादर नामक गाव पूरी तरह से आर्यसमाज के सुपुर्द किए गए है। जिनमे हर प्रकार की सुविधा का प्रबन्ध करना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होने बताया कि अजमेर विद्यालय से आई बस का सदुपयोग इन सहायता कार्यो के सयोजन के लिए किया जा रहा है। कार्यकर्त्ताओ के आठ दल बारी बारी से अलग अलग स्थलो पर सहायता कार्यों के लिए भेजे जाते है। सहायता कार्यो का प्रारम्भ प्रतिदिन विशाल यज्ञ से किया जाता है, जिसमे सभी स्थानीय निवासी उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। ☐

यह सभी चित्र आर्य कार्यकर्त्ताओ द्वारा मलबे से लाशे निकालने तथा उनके संस्कार के लिए की गई कार्यवाही को दिखा रहें हैं। इस कार्य में बहुत से मुसलमान भाइयो की लाशो को निकालकर उनके परिवारो को सौपने का कार्य भी आर्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा सम्पन्न किया गया।

९ से २८ फरवरी तक होने जा रही जनगणना में निम्न बातों का ध्यान रखें

प्यारे आर्य हिन्दू भाइयो ! यह तो आपको पता ही है कि अपनी आर्य हिन्दू जाति छ सौ वर्ष मुस्लिमो की दास बनकर रही है और उनके असहनीय अत्याचार अपमान ही सहे हैं और दो सौ वर्ष अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी है। बडे त्याग और बलिदान करने के पश्चात् सन् १६४७ मे हिन्दुओ को अग्रेजी दास्ता मिली है। परन्तु हिन्दुओ को स्वराज्य, हिन्दू राज्य, धार्मिक हिन्दू राज्य, आर्य राज्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। सम्पूर्ण आर्य हिन्दू जाति के दुर्भाग्य का अवसर है कि सविधान मे भारत को हिन्दुओ का देश नहीं माना गया है जबकि थोडे से मुस्लिमो ने अपना इस्लामी देश पाकिस्तान बना लिया। भारत को आर्य राष्ट्र हिन्दू देश घोषित न किया जाना भारतीय हिन्दुओ की विवेकहीनता को बताने वाला है।

यदि हिन्दू शीघ्र ही सावधान न हुए तो २५० वर्ष पश्चात भारत से हिन्दुओ का नामोनिशान ही मिट जाएगा। भारत एक मुस्लिम देश बन जाएगा और हिन्दू उद्योगपतियो की सारी धन, सम्पत्ति, जायदाद के स्वामी मुस्लिम होगे।

भारत मे प्रत्येक दस वर्ष पश्चात जनगणना होती है। सन १६८१ मे जो गणना हुई, फिर १६६१ मे जनगणना हुई है, सन १६८१ से १६६१ तक मुस्लिम भारत मे ३२ ७६ प्रतिशत बढ गए और इसी अवधि मे हिन्दू केवल २२ ७८ प्रतिशत बढे हैं।

इस हिसाब से सन २२५१ की जनगणना मे मुस्लिम भारत मे १५० अरब ८३ करोड के लगभग होगे और हिन्दू १३६ अरब ६६ करोड होगे। तब भारत मे मुस्लिम, हिन्दुओ की तुलना मे ग्यारह अरब अधिक होगे।

धर्म मानवता को मरने दो या बचा लो, अब भी समय शेष है आत्मरक्षा का। हिन्दुओ का भविष्य अधिकाधिक सकटमय बनता जा रहा है। इस बार की जनगणना मे अपना धर्म वैदिक (हिन्दू) लिखवाए तथा मातृभाषा सस्कृत (या हिन्दी) लिखवाए।

जनगणना में ध्यान रखें

जनगणना अधिकारी द्वारा सम्पर्क किए जाने पर निम्न दो बातों का विशेष ध्यान रखे –

१ हमारा धर्म ....वैदिक धर्म (हिन्दू)

२ मातृभाषा .... संस्कृत (या हिन्दी)

अक्सर देखने में आता है कि जनगणना अधिकारी हिन्दू परिवारो मे स्वत ही धर्म के खाने में हिन्दू और मातृभाषा के खाने मे हिन्दी लिख देते हैं । परन्तु हमे यह ध्यान रखना चाहिए कि समस्त हिन्दू समुदाय का मूल धर्म वैदिक धर्म है और उसी प्रकार मूल भाषा सस्कृत है । यदि सस्कृत की रक्षा होगी तो हिन्दी की रक्षा स्वत ही हो जाएगी ।

अत जनगणना अधिकारी से आग्रह किया जाए कि वे धर्म के स्थान पर वैदिक धर्म (हिन्दू) तथा मातृभाषा के स्थान पर सस्कृत (या हिन्दी) ही लिखे ।

– सभा प्रधान

आंख खोलने वाले आंकडे

नीचे जनगणना का एक गणितीय अनुमान दिया जाता है, जिसमें प्रति दस वर्ष मे बढने वाली मुस्लिमो की सख्या ३२ ७६ प्रतिशत बढने और हिन्दु संख्या २२ ७८ प्रतिशत बढने के आकडे दिए गए हैं –

सन् प्रति दस वर्ष में वृद्धि	हिन्दू जनसंख्या वृद्धि (२२ ७८ प्रतिशत)	मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि (३२ ७६ प्रतिशत)
सन् १६८१	५४७७६४२६६	७१७२८०६३
सन् १६६१	६७२५६६४२८	६५२२२८५३
सन् २००१	८२५८१७५७७	१२६४१७८५६
सन् २०५१	२३०४२११११८	५२१३६८३३५
सन् २१०१	६४२६२५१४७४	२१५०२०६६६
सन् २१५१	१७६३६०१३५६७	८८६७८२४४६१
सन् २२०१	५००५३७५६६१२	३६५७२३८७०६१
सन् २२५१	१३६६६०६०३६८०	१५०८३०६२३५५०

चुनाव समाचार

आर्यसमाज नारायणा विहार, जी ब्लाक, नई दिल्ली-२८

प्रधान	–	श्री सतीश कुमार कामरा
मन्त्री	–	श्री करणसिह तवर
कोषाध्यक्ष	–	श्री टेकचन्द सन्दूजा

गुजरात की पीड़ा से हम सब चिन्तित क्यों ?

हमारे शरीर के किसी भी अग मे जब भी कोई विकार उत्पन्न होता है तो पूरा शरीर उस विकार को दूर करने के लिए प्रयासरत हो जाता है। यदि हम पूरी सृष्टि को ईश्वर निर्मित एक शरीर ही समझे तो जब उस सृष्टि के एक हिस्से मे रह रही आत्माए दर्द से कराह रही हो तो सृष्टि के अन्य हिस्सो मे रह रही आत्माओ को उस दर्द को बाटना ही अभीष्ट है।यदि पाव का दर्द शरीर के अन्य हिस्सो मे सवेदना उत्पन्न न करें तो वैज्ञानिक दृष्टि से लकवे की सम्भावना प्रबल हो जाती है। लकवे को सवेदनहीनता के रूप मे भी परिभाषित किया जा सकता है।

इन वैज्ञानिक सिद्धान्तो के बाद वैदिक सिद्धान्तो पर जब हम ध्यान लगाते हैं तो हमे भगवान की वेदवाणी यह स्पष्ट निर्देश देती है कि जो आत्माए अन्य आत्माओ के सुख-दु ख मे भागीदारी के लिए प्रयासरत रहती हैं वे शोक और मोह के जजाल से सदैव मुक्त रहती है।

गुजरात मे आए भूकम्प ने गुजरात की बहुतायत जनता के सुचारू रूप से चलते जीवन को एकदम रोक सा दिया है। असख्य घर खण्डहर बन चुके है असख्य आत्माए बेसहारा हो चुकी हैं असख्य लोगो का भविष्य अनिश्चित सा हो गया है। इन असख्य लोगो की पीडा इनसे भी कई गुणा असख्य लोगों को पीडित कर रही है।

२६ जनवरी से ही हम सब लोग गुजरात की पीडा से ग्रस्त है। गुजरात के लिए सहायता सामग्री का प्रबन्ध करने की इस सामाजिक प्रक्रिया के दौरान एम०डी०एच० मसाला कम्पनी के मुखिया महात्मा धर्मपाल जी ने कहा कि आपकी शक्ल देखकर ऐसा लग रहा है कि गुजरात मे भूकम्प आया है या आपके निजी जीवन मे। महाशय धर्मपाल जी भी गुजरात वासियो की पीडा मे आवश्यकता से अधिक सवेदनशील नजर आए। लगभग डेढ लाख रुपये की हवन सामग्री उन्होने तत्काल देने की स्वीकृति प्रदान की। इसके अतिरिक्त और भी सामग्री तथा धन देने का आश्वासन दिया। इनके अतिरिक्त जिन-जिन लोगो से भी सम्पर्क हुआ वे सभी गुजरात वासियो की पीडा मे पूर्ण सवेदनशील नजर आए।

मुम्बई में कैप्टन देवरत्न भी विगत् लगभग ४ महीन से मार्च में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियो मे जुडे हुए है। वहा कई लाखो की प्रबन्ध व्यवस्था को सम्भालने के बावजूद उन्होंने गुजरात के लिए लाखो रुपये की सहायता एकत्र करके भिजवाई है। जिसका विवरण पृथक समाचार के रूप मे भी दिया जा रहा है।

२६ जनवरी से आज तक मैंने कई बार इस प्रश्न की व्याख्या पर जितनी बार भी विचार किया ध्यान और चिन्तन किया मुझे हर बार एक ही उत्तर मिला। प्रश्न था **– गुजरात की पीडा के साथ हम सब चिन्तित क्यों ?**

जैसा कि मैं पहले कह चुका हू हम सब ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीव विज्ञान सृष्टिविज्ञान और मनोविज्ञान के सिद्धान्तो के तहत एक ही बडे शरीर का हिस्सा हैं जिसका नाम है सम्पूर्ण सृष्टि।

इस सारी सृष्टि मे जहा कहीं भी व्यवधान उत्पन्न हो, अप्राकृतिक घटनाए हो, दर्द और पीडाए हो, पाप, अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार आदि के कारण अव्यवस्थाए उत्पन्न हो तो हमारे सवेदनशील होने का परिचय तभी प्राप्त होगा जब हम इनकी रोकथाम के लिए अपनी प्रतिक्रियाए व्यक्त करे और ईश्वर का स्मरण करते हुए सद्प्रयास करें।

यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमें सवेदनहीन मानते हुए यदि कोई हमें लकवा ग्रस्त कहता है तो हमें बुरा नहीं मानना चाहिए।

गुजरात के घटना चक्र को अर्थात् ईश्वर के काल चक्र को यदि सहायता एकत्र करके या शोक-प्रस्ताव पारित करके अपना कर्त्तव्य पालन समझ ले तो श्रेष्ठता का परिचय उपलब्ध होगा। परन्तु यदि असह्य, अवला तथा अनाथो के लम्बे दु ख पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो आपको अवश्य ही महसूस होगा कि आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का पालन अभी प्रारम्भ भी नहीं हो पाया। वैसे आपकी सूचना के लिए कहना चाहता हू कि आर्यसमाज के इस आध्यात्मिक कर्त्तव्य को बडे प्रेम और श्रद्धा के साथ सम्पन्न करने की ठोस योजना तैयार हो रही है। मुझे पूरी आशा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की आध्यात्मिक शक्ति आर्यो क इस पवित्र कार्य के लिए भी एक सुन्दर मार्ग पर प्रेरित करेगी

– विमल वधावन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

शनिवार १७ फरवरी, २००१

यज्ञ	:	प्रात ६.०० से १०.०० बजे
ब्रह्मा		**डॉ० कर्णदेव शास्त्री**, सहयोगी **श्री प्रणव शास्त्री**
अध्यक्षता		**स्वामी ओमानन्द सरस्वती**, प्रधान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रातः १०:०० से १२:३० बजे

स्थान	:	महर्षि दयानन्द गौ-सवर्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर, दिल्ली
ऋषि लगर		धन्यवाद एव शान्तिपाठ के बाद

आपसे विनम्र निवेदन है कि कार्यक्रम की सूचना अधिक से अधिक लोगों को दे और समय पर पधार कर धर्मलाभ उठाए और महर्षि को सच्ची श्रद्धाञ्जलि प्रदान करें।

निवेदक

स्वामी सुमेधानन्द	**वेदव्रत शर्मा**	**तेजपाल सिंह मलिक**
कार्यकारी प्रधान,	प्रधान,	महामन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी दिल्ली

दामोदर प्रसाद आर्य	**सुरेन्द कुमार रैली**	**पतराम त्यागी**	**रवि बहल**
सरक्षक	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404

प्रवेश सूचना 2001-2002

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं -

1. **मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन** (एम०बी०ए० - द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
2. **मास्टर ऑफ इकोनोमिक्स** (एम०बी०ई० - द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
3. **मास्टर ऑफ बिजनेस फाइनेन्स** (एम०बी०एफ० - द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

अर्हताएं - न्यूनतम 50 प्रतिशत अको के साथ त्रिवर्षीय स्नातक की उपाधि (अ०जा०/अ०ज०जा०/गु०कां०वि०वि० स्नातकों के लिए 45 प्रतिशत)

न्यूनतम आयु : 30-9-2001 को न्यूनतम 20 वर्ष तथा अधिकतम 23 वर्ष तथा प्रायोजित/अप्र० भारतीय हेतु अधिकतम 28 वर्ष।

सीटों की संख्या :

एम०बी०ए०	छात्र वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)
	छात्र वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)
एम०बी०ई०	छात्र वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)
	छात्र वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)
एम०बी०एफ०	छात्र वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)
	छात्रा वर्ग 20 (10 प्रायोजित/अप्र० भारतीय)

आवेदन कैसे करें :

प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य जानकारी निम्न पतों पर रु० 100/- (प्रायोजित/अप्र० अभ्यर्थियों के लिए रु० 100/-) नकद भुगतान द्वारा 30 अप्रैल, 2001 तक प्राप्त की जा सकती है। डाक द्वारा रजिस्ट्रार के नाम रु० 140/- का बैंक ड्राफ्ट (प्रायोजित/अप्र० भारतीय अभ्यर्थियों के लिए अतिरिक्त रु० 140/-) प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य जानकारी निम्न पतों पर भेजकर प्राप्त की जा सकती है। अन्तिम वर्ष की अर्हता परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी प्रवेश परीक्षा में बैठ सकते हैं। प्रा०/अ०प्र० अभ्यर्थीयों को प्रवेश परीक्षा के साथ प्रायोजित/अ०प्र० के लिए निर्धारित आवेदन पत्र भी जमा करना होगा।

छात्र वर्ग : प्राचार्य, प्रबन्धन महाविद्यालय, गु० का० वि० वि०, हरिद्वार, ☎ 0133 416699

छात्रा वर्ग : प्राचार्य, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, 47, सेवक आश्रम रोड, देहरादून, ☎ 0135 742164

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि :
एम०बी०ए० - **7 अप्रैल, 2001**
एम०बी०एफ०/एम०बी०ई० - **30 अप्रैल, 2001**
प्रायोजित/एन०आर०आई० श्रेणी, **30 जून, 2001**

आवेदन पत्र 5-2-2001 से कार्यदिवस में (कार्यालय समय) प्राप्त हो सकेंगे
प्रवेश परीक्षा तिथि : 6-5-2001 (11 00 से 1.00 बजे तक)

परीक्षा केन्द्र :

1. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (छात्र वर्ग - एम०बी०ए०)
2. कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, 47 सेवक आश्रम रोड, देहरादून (छात्रा वर्ग - एम०बी०ए०)
3. दिल्ली (छात्र व छात्रा वर्ग - एम०बी०ए०)

नोट : अभ्यर्थियों की सख्या वांछित-स्तर से कम होने पर दिल्ली केन्द्र हरिद्वार अथवा देहरादून स्थानान्तरित किया जा संकता है।

प्रो० महावीर अग्रवाल
कुलसचिव

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

८ साप्ताहिक आर्य सन्देश ११ फरवरी, २००१

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 8-9 /02/2001 दिनाक ५ फरवरी से ११ फरवरी, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 8-9 /02/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३९/२००१

☎ : 3360150

।। ओ३म् ।।

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

सार्वदेशिक सभा द्वारा गांधीधाम में राहत-केन्द्र स्थापित टैण्ट, टीन की चादर, तिरपाल तथा रोजगार हेतु स्थायी साधनों के लिए धन की अत्यन्त आवश्यकता

भूकम्प-पीड़ितों की सहायता कर पुण्य लाभ कमाएं

राहत-सामग्री देने हेतु निकटतम केन्द्रों से सम्पर्क करें :-

क्षेत्र	केन्द्र	सम्पर्क
पूर्वी दिल्ली	(1) आर्यसमाज मन्दिर, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 (2050892)	श्री बिशम्भर नाथ अरोड़ा, प्रधान (2469577) डॉ० हरभगवान मलिक, मन्त्री (2411028)
	(2) आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली-92 (2204698)	श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान (2411706) श्री कृष्ण कुमार ढींगरा, मन्त्री (2244622, 2443595)
पश्चिमी दिल्ली	(1) आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली-27 (5101266)	श्री जगदीश आर्य, प्रधान (5436828) श्री दयानन्द मदान, मन्त्री (5143419)
	(2) आर्यसमाज पखा रोड, सी० ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58 (5544486)	श्री सोमदत्त महाजन, प्रधान (5551587) श्री रमेश चन्द्र, मन्त्री (5597671)
	(3) आर्यसमाज, रमेश नगर नई दिल्ली (5153901)	श्री नरेन्द्र आर्य, प्रधान (5457755) श्री सत्यपाल नारंग, मन्त्री (3718510)
उत्तरी दिल्ली	(1) आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-54 (3953762)	श्री तेजपाल सिंह मलिक, प्रधान (3932972) श्री विमल कान्त शर्मा, मन्त्री (2114501)
दक्षिणी दिल्ली	(1) आर्यसमाज लाजपतनगर, नई दिल्ली - 24 (6834876)	श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त, सरक्षक (6834882) श्री सोमनाथ कपूर, प्रधान (6843294)
	(2) आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-I नई दिल्ली (6440762)	श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, प्रधान (6412404) श्री प्राणनाथ घई, मन्त्री (6419914, 6234217)
	(3) आर्यसमाज विजय नगर (सरोजनी नगर), नई दिल्ली - 23	श्री देसराज बुद्धिराजा, प्रधान (6565782) श्री रोशनलाल गुप्त, उपप्रधान (4677063) श्री पुरुषोत्तम लाल, मन्त्री (6879741)
केन्द्रीय दिल्ली	(1) आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली-6 (2967440) (2) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1 (3360150)	

चैक/ड्रॉफ्ट मनीआर्डर हेतु **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**
3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-2

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

निवेदक

वेदव्रत शर्मा, प्रधान — **तेजपाल मलिक**, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ३९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २२ अक्तूबर से २८ अक्तूबर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल भूमि घोटाले के सम्बन्ध में सर्वोच्च सीनेट की बैठक

कुलपति समेत 11 पर चलेगा मुकदमा

जस्टिस जयभूषण गर्ग नए विजिटर

हरिद्वार, २० अक्टूबर। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च सीनेट ने आज कुलपति समेत उन सभी ग्यारह अधिकारियो के खिलाफ एफ० आई० आर० दर्ज कराने का निर्णय लिया है जो जमीन विक्रय मे शामिल हैं।

विक्रय मे शामिल विजिटर प्रो० शेरसिह के स्थान पर पजाब हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त जस्टिस जयभूषण गर्ग को विश्वविद्यालय का नया विजिटर चुना गया है। सीनेट ने कुलपति डॉ० धर्मपाल के त्यागपत्र पर इसलिए विचार नहीं किया ताकि उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाही हो सके।

आज की महत्वपूर्ण बैठक मे यू० जी०सी० के प्रतिनिधि एम० एम० शकधर और भारत सरकार के प्रतिनिधि अशोक चतुर्वेदी ने भी भाग लिया। कुलपति की नियुक्ति करने का अधिकार चूकि विजिटर को होता है अत भूमि घोटाले मे लिप्त कुलपति डॉ० धर्मपाल के सम्बन्ध मे निर्णय कुलाधिपति एव नए विजिटर जस्टिस जयभूषण गर्ग पर छोड दिया गया है।

गुरुकुल मे बीस करोड की जमीन चुपचाप बेचने पर कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा की अध्यक्षता मे हुई बैठक मे जमकर हगामा हुआ। सीनेटर देवराज, राजेन्द नाथ पाडेय, डॉ० अम्बुज शर्मा, कौस्तुभ पाडेय, महेश विद्यालकार, राममेहर आर्य और देवेन्द्र शर्मा ने जमकर प्रहार किए। बचाव पक्ष मे केवल श्रीमती प्रभात शोभा और स्वामी ओमानन्द ही नजर आए। वक्ताओं ने माग की कि कुलपति डॉ० धर्मपाल का त्यागपत्र स्वीकार करने के बजाय उन्हे बरखास्त कर दिया जाए।

बैठक मे जमीन बेचने वालो के खिलाफ मुकदमा चलाने और हर सूरत मे बेची गई जमीन वापस लेने का फैसला हुआ। कुलसचिव को निर्देशित किया गया कि वे विजिटर और एक अधिवक्ता की सलाह लेकर भूमि विक्रेताओ के खिलाफ कानूनी कार्रवाई तत्काल शुरू करे। कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा ने कहा कि भूमि विक्रेताओ ने खरीदार से जितना कमीशन लिया है, वह विश्वविद्यालय को लौटा दे।

किसी भी कीमत पर भूमि वापस ली जाएगी : कुलाधिपति

खरीदार को बाकी पैसा वे चुका देगे।

श्रीमती प्रभात शोभा और स्वामी ओमानन्द ने जब पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अश्विनी कुमार पर भी भूमि विक्रय के आरोप लगाए तो सीनेटरो ने उन्हे घेर लिया। भारी शोर-शराबे के बीच विक्रय मे शामिल दोनो आर्य नेता बैठक से उठकर चले गए। महेश विद्यालकार, वेदव्रत शास्त्री और देवेन्द्र शर्मा ने प्रो० शेरसिह खेमे पर अत्यन्त तल्ख टिप्पणिया की। सीनेट बैठक मे ४० मे से ३३ सदस्यो ने भाग लिया। जिसमे ३१ सदस्य एक पक्ष मे नजर आए। हरियाणा के राम मेहर ने सविधान मे सशोधन की बात कही।

बैठक के उपरान्त कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा और अन्य सीनेटर धरनास्थल पर आए। कुलाधिपति ने घोषणा की कि उन्हे चाहे जो भी कुरबानी देनी पडे, जमीन वापस ली जाएगी।

सीनेट के सदस्य एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि गुरुकुल की स्थापना का यह १००वा वर्ष चल रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसी वर्ष मे यह शर्मनाक घटना स्वय को आर्यसमाजी नेता बताने वाले लोगो ने कर डाली। मैने पहले ही विद्या सभा के अधिकारियो को यह कार्य न करने की चेतावनी दे दी थी। इसी कारण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यो को इन बैठको मे शामिल न होने के लिए भी कहा गया था। परन्तु कुछ लोगों ने इस महापाप मे शामिल होकर स्वय अपना चरित्र प्रदर्शन ही किया है।

पजाब के श्री देवेन्द्र शर्मा ने कडे शब्दो मे भूमि विक्रय मे लिप्त व्यक्तियो को चेतावनी देते हुए कहा कि हमने अपने रक्त को साक्षी मानकर सकल्प लिया है कि यदि हम इस भूमि विक्रय को रद्द करा पाने मे सफल हुए तभी हम अपने पूर्वजो की त्याग और तपस्या और उनकी विरासत का औचित्य सिद्ध कर पाएगे।

हरियाणा के श्री राम मेहर एडवोकेट ने कहा कि इस घटना ने हमारा सबका सिर नीचा कर दिया है परन्तु हम सकल्प करते हैं कि लेन-देन की इस घटना की गहराई तक छानबीन होगी, दोषियो पर कार्यवाही होगी और यह विक्रय रद्द किया जाएगा, जिससे हम पुन सम्मानपूर्वक जी सके। इस पवित्र भूमि के एक टोकरे मिट्टी की कीमत कोहनूर हीरे से भी बढकर है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि गुरुकुल कागडी का सगठन भूमि की मलकियत और कब्जा किसी व्यक्ति को नही होने देगा, यह बात तो आज की सीनेट बैठक से स्पष्ट हो जाती है, परन्तु ७० लाख रुपयो के अतिरिक्त जो काले धन का लेन-देन हुआ है उसकी छानबीन केवल सी० बी० आई० ही कर सकती है।

उन्होने कहा कि कुछ वरिष्ठ अधिवक्ताओ और राष्ट्रीय नेताओ के सहयोग से इस भूमि घोटाले को पूरी तरह अवश्य ही उजागर करने का हर सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए।

उन्होने बताया कि सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष एव वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल कुछ दिन बाद गुरुकुल मे पधारकर अधिकारियो से विचार विमर्श करेगे। उल्लेखनीय है कि श्री बसल इस घटना को पहले ही दुर्भाग्यपूर्ण बताकर इस भूमि विक्रय को रद्द कराने का सकल्प व्यक्त कर चुके हैं और वे अपनी हर प्रकार की सेवाए देने को तैयार हैं।

कुलाधिपति की अपील पर शिक्षको एव कर्मचारियो ने आदोलन समाप्त करने की बात स्वीकार कर ली है।

सीनेट की बैठक मे कुलाधिपति ने सात नए मनोनीत सदस्यो प्रेम प्रकाश भारद्वाज, सुधीर कुमार राजेश कुमार, डॉ० विनय कुमार, मनीष सहगल अतुल मगन और विजय साथी का स्वागत किया। यू० जी० सी० के एम० एम० शकधर और भारत सरकार के अशोक चतुर्वेदी का भी स्वागत किया गया।

सिडीकेट के ४, शिक्षा पटल के ५, वित्त समिति के एक सदस्य को चुनने और सीनेट का कोषाध्यक्ष मनोनीत करने का अधिकार कुलाधिपति को दिया गया। नए विजिटर के नाम का प्रस्ताव प्राचार्य स्वतत्र कुमार ने रखा। अनुमोदन ओमानन्द, देवेन्द्र शर्मा व देवराज द्वारा किया गया।

(अमर उजाला २१ अक्टूबर मे प्रकाशित समाचार के आधार पर)

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम। वे कत्ल भी करते हैं तो शिकवा नहीं होता।।

– स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

२ जनवरी १९८३ ई० को बिजनौर नगर (उ०प्र०) मे जिला हिन्दू सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन से (हिन्दू विरोधी कहो या) जयचन्दी लोगो मे तिलमिलाहट उत्पन्न हो गई। किन्हीं बाबूराम कश्यप ने इस तिलमिलाहट का प्रतिनिधित्व अपनी कराहट द्वारा 'बिजनौर टाइम्स' मे सम्पादक के नाम पत्र लिखकर किया।

उन्होने लिखा इसका औचित्य क्या है ? क्या इस तरह के सम्मेलन से राष्ट्र या हिन्दू मजबूत. होगे ? आज देश मे नाजुक स्थिति है। आए दिन कहीं न कहीं साम्प्रदायिक दगे होते ही रहते हैं, तब ऐसे समय मे इस तरह के सम्मेलनो से हिन्दू मुस्लिम एकता की बजाय उनके बीच नफरत की खाई और गहरी होगी। आज के युग मे आवश्यकता है हिन्दू-मुस्लिम एकता की ताकि देश मजबूत हो और ऐसा तब होगा, जब इस तरह के सम्मेलन न हो। सरकार को चाहिए कि वह देश मे किसी भी व्यक्ति को इस तरह के सम्मेलन करने की इजाजत न दे।'

पत्रलेखक महोदय की सम्मति मे हिन्दू बिखरे रहकर लुटते-पिटते रहने से मजबूत होगे। एकत्र होकर अपनी समस्याओ पर विचार कर उनका हल निकालने से नहीं।

बिजनौर मे हिन्दू सम्मेलन हुआ तो स्थिति की नजाकत दिखाई देने लगी। मेरठ म पी०ए०सी० द्वारा मुसलमानो को काफिरो को कत्ल करने के उनके मजहबी अधिकार से रोक लिया गया, वह भी इन्दिरा जी जैसी धर्मनिरपेक्ष की दृढता से, अन्यथा वहा हिन्दुओ का कत्ल-ए-आम होता। तब इसी मेरठ के प्रश्न को लेकर दिल्ली मे तीस मुस्लिम सासदो मे एकत्र होकर ससद के कुछ ही दिन बाद होने वाले सत्र मे सभी ८५ मुस्लिम सासदो द्वारा एक दिन ससद मे अनुपस्थित रखने का प्रस्ताव स्वीकृत किया, जिसमे गाधी टोपी के नीचे अपना साम्प्रदायिक स्वरूप रखते हुए १५ सासद इन्दिरा काग्रेस के थे। तब उक्त पत्रलेखक और उनके दृष्टिकोण के किसी व्यक्ति के सीने मे साम्प्रदायिकता की पीडा नहीं हुई।

४५ मुस्लिम सासदो ने जब प्रधानमन्त्री को मेरठ मे पी०ए०सी० द्वारा हिन्दुओ की रक्षा किए जाने के विरुद्ध ज्ञापन देकर अपनी घोर साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रद्रोही मनोवृत्ति का परिचय दिया, तब इस प्रकार के लोगो के सीने मे साम्प्रदायिकता की पीडा नहीं हुई।

सन् १९८० मे जब इमाम बुखारी ने यह बयान दिया था कि मुसलमान भारत का वफादार नहीं हो सकता, तब इन लोगो को साम्प्रदायिकता नहीं दिखाई दी।

इमाम बुखारी ने अकालियो की घोर साम्प्रदायिकता और राष्ट्रद्रोही मनोवृत्ति का समर्थन आनन्दपुर साहब और अमृतसर मे उनकी सभाओ मे न केवल सम्मिलित होकर अपितु सभा की अध्यक्षता करके किया, तब भी इन आलोचको को पीडा नहीं हुई। अब हिन्दू जागते, एकत्र होते और सगठित होते दिखाई देने लगे, तब उन्हे मर्यान्तक वेदना हुई।

हिन्दुओ के सगठित होने मे इन्हे औचित्य नहीं दिखाई देता औचित्य तो हिन्दुओ के लुटने-पिटने, मारे जाने और इनकी बहु-बेटियो के कलाकित होते देखने मे दिखाई देता है, सगठित होने और सुरक्षित रहने मे नहीं।

बडे प्रबल राष्ट्रवादी बेचारे ! यद्यपि यह पता नहीं कि राष्ट्र क्या है और राष्ट्रवाद किसे कहते है ? भारत मे यदि कोई राष्ट्र है तो हिन्दू है और कहीं राष्ट्रीयता है तो वह भी हिन्दुओ मे ही है, जिनकी मातृ-पितृ भूमि भारत है, जिनका मरना और जीना भारत मे है और भारत के लिए है, जो केवल भारत का खाते-पीते ही नहीं, अपितु जो स्वप्न भी भारत के ही लेते है।

जिनकी निष्ठा कहीं अन्यत्र है, जो खाते-पीते भारत का हैं, मरते-जीते भारत मे हैं तथा गीत दूसरे देशो के गाते हैं, दूसरे देशो के प्रति वफादारी की स्पष्ट घोषणा करते और भारत के प्रति अपने को गैर वफादार बताते हैं, वे लोग भारत के राष्ट्रीय कदापि नहीं हो सकते। अपने आप को भारत का वफादार व राष्ट्र मानते ही नहीं, झूठमूठ भी करने को तैयार नहीं, किन्तु हिन्दुओ मे कुछ जयचन्दी तत्व हैं, जो न केवल उनकी वकालत करते हैं, अपितु उनकी ओर से शपथ पत्र भी स्वय ही प्रस्तुत करते है।

जब हिन्दू बोलता है, जागता है, करवट बदलता है अथवा कम से कम अगडाई ही लेने लगता है, तब कुछ लोगो को साम्प्रदायिकता के साथ-साथ नाजुक स्थिति भी दृष्टिगोचर होती है और अराष्ट्रवादी तत्व हिन्दुओ को खा जाए, चाहे इस देश मे आग लगाते रहे, किन्तु तब इन स्वय सिद्ध तथा भ्रष्ट राष्ट्रवादी विचारको का मुख नहीं खुलता।

पत्रलेखक ने देश मे साम्प्रदायिक दगे होने का भी रोना रोया है। साम्प्रदायिक दगे कौन करता है ? दगे होते वहीं हैं जहा कम से कम १५-२० प्रतिशत मुस्लिम आबादी हो। यदि पूरे नगर मे नहीं तो कम से कम एक मोहल्ले मे जहा भी १५-२० प्रतिशत आबादी मुसलमानो की होती है वहीं साम्प्रदायिक दगे होते हैं। जहा इससे कम आबादी केवल दो-चार घर मुसलमानो के हैं, वहा कभी साम्प्रदायिक दगे नहीं होते। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ये अल्पसख्यक साम्प्रदायिक दगे करते हैं। हिन्दू साम्प्रदायिक होते और दगे करते तो भारत के अधिकतर मुसलमान समाप्त हो जाते, क्यो १५-२० प्रतिशत तथा इसके अधिक मुसलमान तो भारत मे कहीं-कहीं ही है, अधिकतर स्थानो मे तो उनकी सख्या नगण्य ही है।

उक्त पत्र मे हिन्दू-मुस्लिम एकता की भी चर्चा की गई है। यह एकता किस मूल्य पर होती है ? यह आज तक किसी ने नहीं बताई। यह लेखक तो क्या ? कोई भी भारत का बडे से बडा हिन्दू-मुस्लिम और एकता का हामी आलमदार अलमबरदार इस एकता का सूत्र तो बताए।

भारत-पाक युद्ध के दिनो मे रेडियो सुना था पाकिस्तान का। भारत की विजय पर शोक छा जाए, गर्दने लटक जाए और भारत की पाकिस्तान से पराजय सुनकर चेहरे खिल जाए और तो और भारतीय खिलाडियो से पाकिस्तानी खिलाडियो की जीत पर 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगे, मिठाइया बाटी जाए और हिन्दू इसे यह कहकर सह ले कि 'मूर्ख है' और उधर से उपेक्षापूर्वक आखे फेर ले, फिर भी हिन्दू साम्प्रदायिक। यहा तक कि लका से भारत मैच मे हार जाए तो पटाखे छोडे जाए, बन्दूको से फायरिंग की जाए, क्यो ? क्योकि उनका शत्रु देश भारत हारा है, पाकिस्तान से न सही, लंका से ही सही, अन्ततोगत्वा भारत है तो काफिरिस्तान दारुल्लहरब ही।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

साहस और कुर्बानी की वह झांकी

रोलट एक्ट के विरोध मे ३० मार्च, १९१८ को भारत की राजधानी दिल्ली मे व्यापक हडताल की गई। स्वामी श्रद्धानन्दजी जी प्रात नगरभर मे विभिन्न क्षेत्रो की स्थिति का निरीक्षण एव प्रचण्ड जनसमूहो का उचित मार्गदर्शन कर दोपहर को जब अपने निवास पर पहुचे ही थे कि उन्हे रेलवे स्टेशन पर गोली चलने की खबर मिली। वह तुरन्त घटना स्थल पर पहुचे। हजारो का विराट जनसमूह उनका अनुसरण कर रहा था। उसी समय घण्टाघर की ओर से गोली चलने की आवाज आई और पता चला कि कुछ लोगो को चोटे आई हैं।

हजारो का जनसमूह लेकर स्वामीजी स्टेशन से घण्टाघर की ओर लौटे। वहा उनके सामने गोरखा पल्टन के कुछ जवान सगीने तानकर खडे। हो गए और गुस्से से भी बोले – 'यदि आगे बढे तो छेद देगे।' गुस्ताख सैनिको का उदण्डतापूर्ण व्यवहार वीतराग सन्यासी को कब विचलित कर सकता था। स्वामीजी ने एक हाथ उठाकर जनता को शान्त किया और दूसरे से छाती की ओर इशारा करते हुए कहा – **"मैं खडा हूं, गोली मारो।"** कुछ और सैनिक भी आ गए और बन्दूको की सगीने स्वामीजी के वक्षस्थल तक पहुच गई, किन्तु उसी समय एक अग्रेज अफसर के वहा पहुचने और तुरन्त हस्तक्षेप से एक ऐसी घटना घटने से रह गई, जिसकी कल्पना भी भयावह है।

घण्टाघर के चौक मे सगीनो के आगे अपनी छाती तानकर वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने मानो जता दिया कि मातृभूमि के लिए वह बडी से बडी कुर्बानी करने के लिए प्रस्तुत हैं।

– नरेन्द्र

आगे बढो - विजयी बनो :
हम मातृभूमि के लिए बलिदान करें

प्रता जयता नर·। *अथर्व० ३/१६/७*
हे वीरो, आगे बढो, विजय प्राप्त करो।
सं वो मनांसि जानताम्। *ऋ० १०/१५१/२*
तुम ज्ञानी हो, तुम्हारे सकल्प एक हो।
समाना हृदयानि वः। *ऋ० १०/१५१/४*
तुम्हारे हृदय एक हो।
वयं तुभ्यं बालिहृता· स्याम। *अथर्व० १२/१/६२*
हे मातृभूमि, हम तुम्हारे लिए समर्पित हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

सीमापार का आतंकवाद : भारत को स्वतः जूझना होगा

भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ठीक कहा है कि आज आतकवाद विश्व मे एक खतरा बन गया है और उसका मुकाबला सगठित अन्तर्राष्ट्रीय कार्रवाई से ही किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि ११ सितम्बर को कुछ विदेशी आतकवादियो ने कुछ अमेरिकी विमानो का अपहरण न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सैण्टर की दो सर्वाधिक ऊची भव्य इमारते ध्वस्त कर दी और अमेरिकी राजधानी वाशिगटन मे सेना के मुख्यालय पेटागन पर सीधा आक्रमण कर दिया। महीनेभर बाद इन आक्रमणो के जवाब मे अमेरिकी सेना आतकवादियो के सरगना ओसामा बिन लादेन की गिरफ्तारी के लिए अफगानिस्तान के शासकों तालिबान के विरुद्ध सीधी कार्रवाई कर रही है। प्रमुख अफगान नगर उसके लक्ष्य बने हैं, जहा व्यापक विध्वस हुआ है, इस सीधी कार्रवाई के बावजूद आफगानिस्तान मे वहा के शासको तालिबान की स्थिति मे विशेष अन्तर नहीं आया है। दूसरी ओर सीमापार का बढता आतकवाद भारत को सीधी चुनौती दे रहा है। अनेक वर्षों से पश्चिमोत्तर के सीमावर्त्ती प्रदेश से भारत मे बडी सख्या मे घुसपैठिए आते रहे हैं। पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने दो बातो पर ध्यान आकर्षित किया है भारत किसानो, मजदूरो और नौजवानो का देश है, नेता और सरकारे तो आती-जाती रहती हैं, परन्तु सरकारो को आतकवाद और अराजकता का माहौल खत्म करना होगा, दूसरी उन्होने बहुत चिन्ताजनक बात पर ध्यान खींचते हुए कहा यह कितनी चिन्ता की बात है कि देश के भण्डारो मे अनाज भरा पडा है, पर लोग भूख से मर रहे है। यह दुरवस्था इसलिए है कि सरकार और नेता अपने पुराने राष्ट्रनेताओ के सपनो और आदर्शों को भूल गए हैं। रक्षा मन्त्रालय का कार्य सम्भालने के बाद श्री जार्ज फर्नांडिस ने कहा है कि कश्मीर मे घुसपैठ रोकने के लिए सुरक्षाबलो को दृढता से कार्रवाई करनी होगी। इस स्थिति पर ध्यान दिलाना इसलिए आवश्यक हो गया है कि पिछले दिनो अमेरिका के विदेश मन्त्री पावेल ने इस्लामाबाद और नई दिल्ली मे कश्मीर के बारे मे दो विरोधी दृष्टिकोण प्रस्तुत किए उन्होने इस्लामाबाद मे पाक अधिकारियो के स्वर मे स्वर मिलाकर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच अशान्ति की जड कश्मीर है।

दूसरी ओर उन्होने नई दिल्ली मे भारतीय प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी से भेट के बाद स्वीकार किया कि भारत-पाकिस्तान के बीच कश्मीर केन्द्रीय मुद्दा नहीं है। वस्तुत अब भारत को जहा स्वय मूल स्थिति पर जोर देना होगा, वह उसे यह मूल स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी मान्य करवानी होगी। इस बुनियादी तथ्य से किसी को इन्कार नही है कि भारत मे कश्मीर का जो विलय हुआ था, वह कभी भी विवादास्पद नही हुआ। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिण्टन ने भी भारत की यह बुनियादी स्थिति मान्य की थी। भारत को अपनी यह सवैधानिक स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे स्पष्ट कर देनी चाहिए साथ ही इस बारे मे कोई भ्रान्ति नही रखनी चाहिए जैसे कि नए अमेरिकी दृष्टिकोण मे कहा है कि कश्मीर समस्या के समाधान के लिए कश्मीर की जनता को भी विश्वास मे लेना चाहिए। भारत और जम्मू-कश्मीर के सीमावर्त्ती क्षेत्रो मे तो निरन्तर देश के साथ-कानून और सविधान के अनुसार निर्वाचन किए गए है, हा, हमारे पडोसी पाकिस्तान मे इस जनतान्त्रिक परम्परा का पालन उपेक्षित रहा है। अब सीमापार के आतकवाद को देखते हुए भारत को इस उलझी समस्या के समाधान के लिए स्वय ही जूझना होगा। यह ठीक है कि सीमापार के आतकवाद का उन्मूलन कोई सरल कार्य नहीं है, इसके स्थायी कारगर समाधान के लिए शासन, सेना और सीमावर्त्ती नागरिको को सयुक्त-सगठित प्रयास करने होगे। समस्या इतनी गम्भीर और पेचीदा है कि केवल शासन और सेना के सगठित प्रयास से ही उसका स्थायी एव कारगर उन्मूलन सम्भव नही है, जब तक इस अभियान को सीमावर्त्ती पश्चिमोत्तर प्रदेशो की जनता का सक्रिय सहयोग न मिले।

सीमा-पार के आतकवाद से जूझने मे शासन और सेना का जैसा सीधा दायित्व है, ठीक वैसा ही दायित्व पश्चिमोत्तर सीमावर्त्ती प्रदेशो मे रहने वाली जनता का भी है। यह कार्य बडी जिम्मेदारी का और सच्ची राष्ट्ररक्षा का है। यदि सीमावर्त्ती प्रदेशो मे स्त्री-पुरुष, बच्चे समस्त नागरिक इस भीषण समस्या के बारे मे सतर्क सयुक्त और जागरुक हो जाए तो सीमावर्त्ती गावो की पचायते या उनके निर्वाचित सगठन सीमा का अवैध उल्लघन करने वाले छोटे-बडे राष्ट्रविरोधी तत्वो की पहचान कर उनकी व्यवस्थित कारगर रोकथाम कर सकते है। यदि सीमावर्त्ती जनता सजग और सन्नद्ध हो तो सीमा पार के सभी आतकी, राष्ट्रविरोधी तत्वो का अवैध प्रवेश रोका जा सकता है, प्रत्युत उन्हे बन्दी बनाकर उनके विरुद्ध समुचित कार्रवाई की जा सकती है। समस्या बडी गम्भीर जटिल और उलझी हुई है। केवल शासन पुलिस और फौज के बल पर उन्हे रोकना कठिन ही नहीं असम्भव है। इसके स्थायी कारगर समाधान के लिए जन-जन को उसी प्रकार जूझना होगा जैसे कि विदेशी शासन के विरुद्ध कोटि-कोटि देशवासियो ने अपने स्वातन्त्र्य सघर्ष मे अपनी तन-मन-सर्वस्व की विनम्र आहुति दी थी। ऊपर से समस्या सीधी सरल मालूम पडती है, परन्तु वैसी सरल और सीधी नहीं है। आज आतकवाद ने अमेरिका, अफगानिस्तान आदि क्षेत्रो मे भीषण तबाही मचाई है वैसी स्थिति भारत मे कभी न हो प्रत्युत हम सीमापार के आतकवाद का अपने सयुक्त, सगठित और व्यस्थित प्रयास से उसका तुरन्त स्थायी कारगर समाधान कर सके, इसके लिए सभी देशवासियो छोटे-बडे सभी तत्वो को न केवल जागरुक, सन्नद्ध और सगठित होना पडेगा, प्रत्युत सबको अपनी विनम्र आहुति प्रस्तुत करनी होगी।

चिट्ठी-पत्री

आतंकवाद का सूत्रधार

पाकिस्तान का उद्देश्य एक न्यायपूर्ण, समतामूलक, मानवीय कल्याणकारी समाज की स्थापना नहीं है। उसका लक्ष्य है एक शात धर्मनिरपेक्ष समाज को कट्टरपथी बनाना। अमेरिका के दबाव मे मुशर्रफ कुछ समय के लिए तालिबान को दबने की सीख देते हैं पर यह नहीं कहते कि बर्बर मध्ययुगीन मान्यताओं वाले समाज की स्थापना पर उतारू भस्मासुर का खात्मा अति आवश्यक है। बहरहाल पाकिस्तान लाख सफाई दे कि वह आतकवाद के खिलाफ है, लेकिन इस तथ्य को झुठला नहीं सकता कि अफगानिस्तान की तबाही का सूत्रधार वह खुद है। सिर्फ ओसामा बिन लादेन की दहशतगर्दी के खिलाफ लडाई नहीं जुडी है। दहशतगर्दी के खिलाफ लडाई का मैदान अलग है। मुशर्रफ अगर लडना चाहते हैं तो वह भारत को अलग कैसे कर सकते हैं। यह कहना आसान नही कि आतकवाद के खिलाफ अमेरिकी मुहिम के पीछे कितनी सदाशयता एव गम्भीरता है पर यह बात सही है कि अब अमेरिका को समझ मे आया है कि आतकवाद क्या होता है। उसके सूत्रधार कौन और कहा है। अफगानिस्तान से रूस के हटने के बाद वहा मिलीजुली सरकार बनाने और जल्द से जल्द लोकतन्त्र की बहाली की जरूरत थी, पर यह पाकिस्तान को कबूल नहीं था। पाकिस्तान अफगानिस्तान को अपने कब्जे मे चाहता है क्योकि वह एक ऐसे वृहत पाकिस्तान का सपना देखता है, जो पश्चिम एशिया, मध्य एशिया और दक्षिण एशिया की बडी ताकत हो। इसके लिए उसने कट्टरपथी फार्मूला अपनाया। हजारो अफगान शरणार्थियो को शिक्षा देने के लिए मदरसे खुल गए। उनमे आतकवाद की शिक्षा दी गई। तालिबान मे पैदा आतकवादी सगठन धीरे-धीरे विश्व मे फैल गए। पाकिस्तान का मार्गदर्शन एव हर प्रकार का सहयोग तालिबान को मिलता रहा है। यह तालिबानी-अफगानी सगठनो के आतकवादी कश्मीर मे लम्बे अर्से से आतकवादी गतिविधया चला रहे हैं जिसमे आई०एस०आई का पूरा हाथ है। अमेरिका व्यापारी है, वह साथी नहीं बन सकता है। इसलिए भारत को आतकवाद के खिलाफ स्वय अपने बल पर लडना है।

— डॉ० जयप्रकाश आर्य, मगोलपुरी, नई दिल्ली

लडाई के नियम

आतकवादियो की घिनौनी कार्रवाई से आज इस्लाम धर्म को जो भी नुकसान पहुचा है उसका आकलन नहीं किया जा सकता। यह कोई इस्लाम नहीं है। इस्लाम लडाई लडने की सिर्फ इस हिसाब से इजाजत देना है कि अगर शत्रु तुम्हारे घर मे घुसकर तुम्हे मारे-पीटे और अत्याचार करने से बाज न आए तो तुम इस कदर लडो कि तुम्हारी जान बच जाए और शत्रु भाग जाए। इस्लाम मे जग की जो शिक्षा दी गई है, उसमे बहुत सारी शर्ते भी है। इनमे लडाई सामने से हो न कि पीछे से लडाई मे बच्चे बूढे औरत, पुजारी, पडित, पादरी, बीमारो को नुकसान न पहुचे मन्दिर गिरिजा, पूजा स्थल श्मशान घाट सार्वजनिक स्थल इत्यादि को नुकसान न हो। अगर तुम्हारे हाथ शत्रु की मौत हो जाए तो उसकी लाश को इज्जत के साथ सौंप दो। इस्लाम मे यह भी लिखा है कि अगर तुम्हे किसी से प्रतिशोध लेना है तो सिर्फ उतना ही ले सकते हो जितना कि तुम्हे नुकसान पहुचा हो लेकिन अगर तुम माफ कर दो तो भगवान इससे खुश होते हैं। अब बात साफ है कि इन नियमो के अनुसार जो जग होगी वही जेहाद यानी धर्म युद्ध कहलाएगा, इसके विपरीत जो भी होग वह मन का युद्ध है न कि धर्म का युद्ध।

— अलामुद्दीन खान, चरखी दादरी, भिवानी

यजुर्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१८) पूर्वार्द्ध

कर्मफल व कार्य-कारण शृंखला

– प० मनोहर विद्यालंकार

(१) ओषधि, हमारा सखा या आज्ञाकारी सेवक बनकर सदा साथ रहे

त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपास्तयः।
उपस्तिरस्तु सोऽस्माक योऽस्मा अभिदासति।।
यजु १२-१०१

वरुणः। भिषजः (ओषधि)। निचृदनुष्टुप्।

अर्थ – वेद के बहुत से विद्वान् एक ही मन्त्र के विभिन्न भाष्यकारो द्वारा पृथक् और कभी-कभी विरोधी अर्थो को देखकर, हतप्रभ से होकर इसी आधार पर वेद को अपौरुषेय मानने से इन्कार कर देते हैं, किन्तु लौकिक साहित्य मे इन दोनो विद्याओ को गुण मानने मे उन्हे कोई आपत्ति नहीं होती। वेदार्थ करते हुए और वेद के समझने के लिए, उपनिषद् मे आई प्रजापति की उस कथा को सदा ध्यान मे रखना चाहिए, जिसमे उन्होने शिष्य भाव से उपस्थित हुए देवो, मनुष्यों और असुरो को एक ही अक्षर 'द' उपदेश दिया था और वे तीनो उसके भिन्न भिन्न अर्थ 'दाम्यत, दत्त और 'दयध्वम्' समझकर सन्तुष्ट हो गए थे।

एक ही शब्द के कई-कई और कई बार विरोधी अर्थ होते है। उस अवस्था मे प्रत्येक भाष्यकार अपने ज्ञान और क्षेत्र के अनुसार एक ही मन्त्र का भिन्न अर्थ करता है। यह मन्त्र भी इसी तरह का है।

ओषिध – ओष ताप सन्ताप ध्यति पिबतिनाशयतीति – सब सन्तापों को शान्त करने से (१) परमात्मा मन के सन्तापो को तर्क द्वारा क्षीण करने से (२) बुद्धि रोगो को दूर करने से (३) जडी बूटी या भिषक् भूख और प्यास की बेचैनी को दूर करने से (४) अन्न और जल। उपस्ति समीप रहने वाला साथी – उपकार और सहायता करने वाला (१) हितैषी मित्र, आज्ञा मानने और सेवा करने वाला (सेवक)

वृक्षा . – छाया, आश्रय और फल देने वाले (१) मित्र जडी बूटी की उत्पत्ति के लिए वृक्ष छेदने-भेदन विनाश करने वाले (२) शत्रु अन्न की खेती के लिए।

दासति – दासृदाने, देने वाला मित्र, दाशृ हिंसायाम् – दुख देने वाला शत्रु।

अर्थ – हे (ओषधे त्व उत्तमा असि) हे ओषधि वाचक पदार्थो तुम मे से प्रत्येक उत्तम है (तब वृक्ष उपस्तय) वृक्ष तुम्हारे साथी है। इन मे से (य अस्मान् अभिदासति) जो हमे सहयोग, सहायता या कोई पदार्थ देता है, वह हमारा मित्र बनकर साथ रहे, और जो हमे कष्ट देता या हिंसा करता है, (स अस्माक उपस्ति अस्तु) वह हमारा वशवर्ती अज्ञापालक सेवक बनकर साथ रहे।

निष्कर्ष – वेद मन्त्रो के विभिन्न भाष्यकारो द्वारा विभिन्न अर्थ देखकर उन्हे घटिया या पौरुषेय नहीं मान लेना चाहिए। यह भिन्नार्थता तो उनके ज्ञान के स्तर, अथवा क्षेत्र स्थिति के कारण होती है। कोई अध्यक्ष का, कोई मनोविज्ञान का, कोई चिकित्साशास्त्र का और कोई खेती का विशेषज्ञ होता है। वे क्रमश ओषधि का अर्थ परमात्मा, बुद्धि, भिषक् या जडी-बूटी और अन्न या ओषधि करते हैं।

उपस्ति – उप समीपे अस्ति भवतीति-सदा साथ रहने वाला, मित्र या सेवक

(२) पवमान सोम हमें, पवित्र क्रियाशील और शान्त बनाए

पवमान सो अद्य न· पवित्रेण विचर्षणि·।
य· पोता स पुनातु मा।।
यजु० १६-४२

वैखानस। सोमः। गायत्री।

अर्थ – (पवमान विचर्षणि पवित्रेण) सर्वद्रष्टा तथा सर्वज्ञ परमात्मा पवित्र ज्ञान से, प्रगतिशील तथा विज्ञ विद्वान् अपने आचरण द्वारा (य पोता) जो पवित्रता और प्रगति प्रदान करने वाले हैं (स अद्य मा न पुनातु) वे इस जीवन मे मुझे और हम सबको विद्वान् सदाचारी और कर्मठ बनाए।

अर्थपोषण – पवमान – पूञ् पवने, 'नहि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते।' *गीता*

विचर्षणिः पश्यतिकर्मा। *नि० ३–११।*
पवते गतिकर्मा। *नि० २-१४*

निष्कर्ष – हम परमात्मा से जिस पदार्थ की प्रार्थना करे, उसी पदार्थ के स्वामी, ज्ञाता, कर्ता दाता रूप वाले नाम से उसे पुकारना चाहिए और उसको जानने प्राप्त करने या स्वामी बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

(३) सर्वप्रेरक देव ! हमें अनायास ही सन्मार्ग का राही बनाए रख

ये ते पन्था सवितः पूर्व्यासोऽरेणव सुकृता अन्तरिक्षे।
तेभिर्नो अघ पथिभि सुरेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव।।

आंगिरसो हिरण्य स्तूप·। सविता। विराटत्रिष्टुप्। *यजु ३४-२७*

अर्थ – हे (सवित देव) मार्गदर्शक व प्रेरक देव ! (ते अन्तरिक्षे) तेरे मन मे (ये पूर्व्यास अरेणव सुकृता पन्था) हमारी उन्नति के लिए पूर्व निर्धारित, दोष रहित और सुगम मार्ग हैं (न अधि ब्रूहि) उनका हमे उपदेश और निर्देश दे (च) और यदि हम (तेभि सुगेभि) उन सरल और सन्मार्गो से विचलित होने लगे तो (न रक्ष) प्रेरणा द्वारा, विचलित होने से हमारी रक्षा कर।

निष्कर्ष – परमेश्वर ने सरल, सादे और त्रुटि रहित मार्गों का सनातन काल से निर्देश किया हुआ है। यहा हमारी उससे यह प्रार्थना है कि इन मार्गो को छोडकर यदि हम कुटिल, खर्चीले और त्रुटिपूर्ण मार्ग पर जाने लगें, तो हमारी रक्षा कर, और हमे पुराने सरल मार्गो पर चलने की प्रेरणा कर।

(४) क्रियाशील बनकर ही कल्याण का भागीदार बना जा सकता है

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिवमातरः।। *यजु० ३६-१५*

सिन्धु द्वीपः। आपः। गायत्री।

अर्थ – (आप) हे सर्वव्यापक परमात्मन्, तथा जलो ! (य व शिवतम रस) आप का जो अत्यन्त कल्याण कर ज्ञान (रस, अथवा स्फूर्ति व उत्साह देने वाला सार-रस है (तस्य न इह भाजयत) इस जीवन मे हमे उस रस का भागीदार बना लीजिए। (इव उशती मातर) जैसे बच्चो से प्रेम करने वाली माताए-बच्चो के बिना मागे या मना करने पर भी, आवश्यकता होने पर अपना दूध पिलाती हैं, वैसे ही आप भी अपने ज्ञान और आनन्द तथा स्फूर्ति व उत्साह का कल्याणतम रस हमे पान कराइए।

आप – अप कर्म नाम, *नि० २–१,*
उदकनाम, *नि०१–१२* (अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारीबावली, दिल्ली-६

रावण को जलाने वालो तुम, रावण को जलाना सीख तो लो

– सुभाष चन्द गुप्ता

रावण को जलाने वालो तुम, रावण को जलाना सीख तो लो।
शत-शत समाज में जो रावण, तुम उन्हें मिटाना सीख तो लो।।

पर धन का जो हरण करे, वह ही तो असली रावण है,
रिश्वत चोर बाजारी से धन लूटने वाला रावण है,
करे मिलावट, नकली चीजे बेचने वाला रावण है,
करे तस्करी देश का दुश्मन हर शैतान ही रावण है,
ऐसे रावणो से समाज को मुक्त कराना सीख तो लो।
शत शत समाज में जो रावण तुम उन्हें मिटाना सीख तो लो।।

ऊच-नीच और भेद-भाव जो पनपाता बनता रावण,
घृणा द्वेष की चिगारी जो सुलगाता होता रावण,
निर्धन का जो रक्त चूसता, शोषक क्रूर वही रावण,
दयाहीन लोभी-कामी जो नास्तिक कुकर्मी रावण,
ऐसे असुरो मे देवत्व का भाव जगाना सीख तो लो।
शत-शत समाज में जो रावण, तुम उन्हें मिटाना सीख तो लो।।

देख तो लो अपने भीतर कितने ही रावण घूम रहे,
क्रोध रूप मे भेडिए कितने मत्सर नाग भी झूम रहे,
अहकार के दानव का साम्राज्य तुम्हारे भीतर है,
दुर्व्यसनो और दुराचार का जारी नृत्य निरन्तर है

'सुभाष' अरे मानव बनना औरों को बनाना सीख तो लो।
शत-शत समाज में जो रावण, तुम उन्हें मिटाना सीख तो लो।।

– १५६, ए०जी०सी०आर०, एन्क्लेव, दिल्ली-९२

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा और संस्कृति

– विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त बन्धु',

आर्य (श्रेष्ठ) भाषा हिन्दी विश्वभाषा बनने योग्य है

हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह राष्ट्रभाषा भी है। राजभाषा से राष्ट्रभाषा का पद ऊचा होता है, क्योकि राज्य की अपेक्षा राष्ट्र बहुत बडा होता है। राष्ट्र मे बहुत से राज्य होते हैं, जिनकी भाषाए अलग अलग (हिन्दी से भिन्न) भी हो सकती हैं। राष्ट्र का क्षेत्र बहुत बडा (वेद के अनुसार) सारी पृथ्वी का है, क्योकि राष्ट्रीयता मे परिवारी भावना भी निहित है, जिसकी व्यापकता का आदर्श सारी पृथ्वी ही है ('वसुधैव कुटुम्कम्' और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (श्रेष्ठ विश्व) बनाने की ओर सयुक्त राष्ट्र सगठन अग्रसर है।

हिन्दी का उद्भव ही विश्वभाषा बनने की दृष्टि से हुआ है और विद्वान् लोग शताधिक वर्षों से इसे आर्य (श्रेष्ठ) भाषा कह रहे हैं। हिन्दी बोलने समझने वाले ससार मे सबसे अधिक हैं ही यह 'सुभाषा', बल्कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा भी है, इसमे सन्देह नहीं।

एक सुधरी हुई भाषा

हिन्दी सभी मनीषियो द्वारा पारस्परिक व्यवहार की आपस में मिलने जुलने की भाषा के रूप में विकसित होकर एक महान् राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, योजक भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह सस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधर कर पुष्ट हुई है और सभी प्रकार से 'सुभाषा' है। सस्कृत से भी सुधरी हुई भाषा है हिन्दी जैसे, सस्कृत का 'देवर' शब्द, जिसका अर्थ है 'पति का भाई (जेठा या छोटा)'। महाभारत के बाद भारतीय सस्कृति मे आए परिवर्तन के फलस्वरूप, नियोग के लिए केवल छोटा भाई उपयुक्त समझा जाता है जेठा वर्ज्य है (तुलना कीजिए अनुज-वधु, भगिनी, सुत नारी, सुनु शठ कन्या सम ये चारी, इन्हहिं कुदृष्टि विलोकई जोई, ताहि बधे कछु पाप न होई' – मानस)। अतएव हिन्दी मे पति का छोटा भाई ही 'देवर' होता है, बडा भाई देवर नहीं 'जेठ' कहलाता है।

इसी प्रकार व्याकरण मे 'लिग' और 'वृचन' के प्रकरण भी हिन्दी मे सुधरे हुए हैं। उदाहरण के लिए 'ते' सर्वनाम पुल्लिग मे बहुवचन है किन्तु स्त्रीलिग और नपुसक लिग मे द्विवचन है, और इनके विशेष्य (पूर्वपद, antecedent) दूर होने पर भ्रम की स्थिति पैदा होती है। हिन्दी मे सर्वनाम लिग से अप्रभावित रहते हैं और क्रिया प्रभावित होकर यह भेद खोलती है। सस्कृत मे सख्यावाची शब्द 'एक' सदा एकवचन, 'द्वि' सदा द्विवचन, 'त्रि' सदा बहुवचन, और 'चतुर' भी सदा बहुवचन होते हैं, किन्तु इन सभी के तीनो लिगो में अलग अलग रूप होते है, जबकि विशति (२०) से आगे केवल एकवचन में ही और सदा स्त्रीलिग मे ही रूप होते हैं। किन्तु किसी ऐसी विसगतियो या जटिलताओं से मुक्त होकर श्रेष्ठ विश्वभाषा बनी है।

भारत में हिन्दी की स्थिति

हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप मे देश मे सर्वत्र होता आ रहा है, राजभाषा के रूप मे प्रयोग के लिए भी सरकार के पर्याप्त प्रयास आदेश, अनुदेश हैं जिनके कारण कहीं भी किसी काम के लिए भी सविधान सम्मत प्रयोग में कोई अडचन नहीं है। फिर भी इस आर्य (श्रेष्ठ) भाषा के प्रयोग पर भारत मे ही झिझक है, इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए भारत के गृहमन्त्री माननीय लालकृष्ण आडवाणी ने १४ सितम्बर, २००० को राजधानी दिल्ली मे हिन्दी दिवस समारोह मे कहा था कि आजादी मिलते ही इजराइल की भाति हम अपनी भाषा अपना लेते तो कोई कठिनाई न होती, किन्तु हमने १५ वर्ष तक अग्रेजी से चिपके रहने का निर्णय कर लिया और अब उसके शिकजे मे फस गए। यह हमारी भारी भूल थी। उन्होने बहुत ही सामयिक सलाह दी कि "हम हीन भावना त्यागकर अपनी भाषा और सस्कृति पर गर्व करे। अपनी भाषा के उत्थान के लिए सास्कृतिक चेतना पैदा करना जरूरी है।"

बस हमे हीन भावना त्यागकर अपना खोया हुआ स्वाभिमान जगाना है। यह हमारी शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। इसी से मानव ससाधन का अपेक्षित विकास/परिष्कार या मानव की सस्क्रिया/सस्कृति सम्भव है। हमारा भा-रत (विश्वभारत) कोई हजार दो हजार साल से गुलाम चला आ रहा है। एक आक्रान्ता गया तो उसकी जगह दूसरे ने ले ली। गुलामी का सीरियल चलता रहा। बीच बीच सत्ता परिवर्तन के कई अवरोध भी हुए। अन्तत अग्रेजो की गुलामी से १६४७ मे हम आजाद हुए। अग्रेज चले गए, लेकिन इसके बावजूद हमारी जीवन शैली और आचार विचार मे अग्रेजियत अभी भी समाई हुई है और हमे दिन मे अनेक बार अग्रेजियत का स्मरण कराती रहती है। हमे इससे पीछा छुडाना है। साक्षरता भी किसी विदेशी भाषा की नहीं, श्रेष्ठ विश्वभाषा हिन्दी की चाहिए। हमारे विद्यालय फैलते जाते हैं, उनसे निकलने वाले दिमाग सिकुडते जाते है, भवन उठते जाते हैं आसमान मे, चरित्र गिरता जाता है गड्ढे में। हमारी शिक्षा ऐसी सकीर्ण मानसिकता की नहीं, उदार विश्व राष्ट्रीयता की होनी चाहिए।

देश के चारित्रिक पतन का कारण

चारित्रिक पतन का कारण भी यही है कि श्रेष्ठ भारतीय (पर्यावरण मैत्री वाली) सस्कृति मिटाने के लिए श्रेष्ठ भाषा हिन्दी को जड मूल से उखाडकर पर्यावरण विरोधी भाषा अग्रेजी रोपने की जी भर कोशिश हो रही है। सहसा कोई विश्वास नहीं करेगा कि कोई भाषा भी पर्यावरण को हानि पहुचा सकती है। किन्तु पर्यावरण विरोधी पश्चिमी अपसस्कृति का आक्रमण दुतरफा हुआ है। भाषा 'सस्कृति' के प्रवाह का माध्यम होती है इसलिए एक ओर पर्यावरण मैत्री वाली भारतीय सस्कृति के प्रवाह के माध्यम सस्कृत/हिन्दी को ही मिटाने की कोशिश की गई शिक्षा मे इनको स्थान न देकर और बच्चो को बचपन से ही इनसे वचित रखकर, दूसरी ओर पर्यावरण विरोधी भाषा अग्रेजी लादकर बचपन से ही पर्यावरण विरोधी मानसिकता भी पैदा की गई।

हॉ, अग्रेजी भाषा पर्यावरण विरोधी है। इसकी कुछ गहराई से छान-बीन करने की आवश्यकता है। 'भारत' की पहचान इसकी चारित्रिक और सास्कृतिक श्रेष्ठता के कारण ही है। इसलिए यह राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। कोई भाषा जिनके द्वारा विकसित की जाती है, उनकी मानसिकता ही उसमे झलकती है और वह उसी मानसिकता का प्रसार भी करती है, सीखने वाले मे उसी का अध्यारोपण करती है। उदाहरण के लिए 'एक पन्थ दो काज' या 'नौ नगद न तेरह उधार' साधारण कामकाजी या महाजन लोगो की कहावते हैं, जिनके लिए दो ही अग्रेजी अभिव्यक्तिया हैं 'टु किल टू बर्ड्स विद वन स्टोन और 'ए बर्ड इन हैण्ड इज वर्थ टू इन दि बुश'। ये अभिव्यक्तिया साफ बताती हैं कि ये शिकारियो, बहेलियो-चिडीमारो की अभिव्यक्तिया हैं, जिनकी शिकार और मासाहार की मानसिकता भी इनसे साफ झलकती है, और यही मानसिकता इन्हे सीखने वाले की बन जाएगी। परपीडन और मासाहार जिनका स्वभाव ही हो, उनके द्वारा ऐसी ही भाषा की सृष्टि हो सकती है क्योकि (अमेरिकी सन्त एमेट फाक्स के शब्दों मे) 'भोजन का हमारे जीवन मे सर्वाधिक महत्व है। यही हमारे जीवन चरित्र का निर्धारण करता है'। अवधी मे तो कहावत ही है 'जैसा पिए पानी वैसी बने बानी जैसा खाए अन्न वैसा बने मन।' अत इमरती, खोया गुलाब जामुन, घेवर, जलेबी, बरफी रसगुल्ला आदि भाति-भाति की स्वादिष्ट मिठाइया सब उन्हे मास ही दिखती हैं। कहा मिठाई और कहा मास ? पर हाय रे अग्रेजी ! 'स्वीट' पहले जोडकर हर मिठाई को 'मास' (sweet-meat) बना दिया।

सस्कृति के ऊपर आक्रमण

सबको जोडने वाली हिन्दी विश्वमैत्री पर्यावरण-मैत्री का प्रसार करके एक श्रेष्ठ विश्व का निर्माण करने का प्रयत्न करती आ रही है। डॉ० मैग्रेसर (इग्लैण्ड) के शब्दो मे **'हिन्दी दुनिया की महान् भाषाओं में से एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य हैं, क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग, तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।'** भारत मे जब अग्रेजी शिक्षा रोपी जा रही थी तभी ब्रिटिश सरकार के विरोधी दल के सदस्य हागसन ने इसे **'सस्कृति-अपहारक'** प्रयास कहकर विरोध किया था। किन्तु चालाक 'मेकाले' ने एक कुचक्र रचा कि किसी तरह भारतीय अपना स्वत्व भूल जाए, अपना इतिहास भूल जाए, अपनी भाषा-सस्कृति भूल जाए, और वश-भूषा भी बदल ले। उसने बडी चतुराई से एक योजनाबद्ध शैक्षिक कुचक्र चलाया। ईसाई मिशनरियो ने हिन्दी मे इतिहास, भाषा-विज्ञान, लिपि-विज्ञान पुरातत्व के ग्रन्थ। लोगो ने एक मुहावरा उछाला कि 'हिन्दी' शब्द विदेशी। उन्होने आर्य को विदेशी आक्रान्ता बताकर आर्यो-अनार्यो के बीच भीषण सघर्ष की कहानी भी गढी। डॉ० हार्नले और ग्रियर्सन आदि विद्वानो ने आर्यभाषाओ का वर्गीकरण करते हुए आर्यमूल तथा द्रविडमूल के भाषा-परिवारो की सकल्पना कर उत्तर-भारत और दक्षिण-भारत मे भेद-भाव तथा अलगाव पैदा करने का प्रयास किया।

दुर्भाग्यवश आजादी के बाद अग्रेजी के मानस-पुत्रो ने यह विवाद और गहराया। चोटी के कुछेक बडे-बडे राजनेता भी इस मरीचिका के जाल मे फस गए, जबकि वास्तविकता कुछ और थी। सन् १६८१ की जन-गणना के अनुसार अग्रेजी आधे प्रतिशत से भी कम भारतीयो की मातृभाषा थी। यह भारतीय भाषा भी नहीं है। फिर भी हम इसके शिकजे मे कसे हैं। पहले यवन-आक्रान्ता आए थे और स्वभाषा भूल फारसी सीखना शुरू हुआ फिर अग्रेज आए और अग्रेजी थोपी गई, उन्नति का साधन बनी, देशी भाषाए गवारपन की निशानीं, vernacular, अपवित्र भाषा, गाली की भाषा) हो गई, वेदो मे उपलब्ध भारतीय ज्ञान के भ्रष्ट अग्रेजी अनुवाद विश्व मे प्रचारित किए गए, वही पढा-पढाकर हमारे भी दिमागो मे ठूसा गया कि हम मूर्ख चरवाहो, गडरियो की सन्तान हैं और अग्रेजी-शासन हमे सभ्य बनाने आया है। हमे अपने साहित्य से, अपनी श्रेष्ठ सस्कृति से, अपनी उत्कृष्ट परम्पराओ से काटकर दरिद्र, दीन-हीन घोषित कर स्वाभिमान नष्ट किया गया। इस प्रकार हमारी शिक्षा पर अधिकार करके, हमारा मत-परिवर्तन करके, अग्रेजी को हमारे लिए अर्थ-काम-सिद्धि का साधन बताकर हमे दासता-पाश मे ऐ ा कसा गया कि आजाद होकर भी हम उनके दास-भक्त ही बने रहे। कवि ने ठीक ही कहा है –

आक्रान्ता करता सदा, जन सस्कृति का नाश।
शिक्षा पर अधिकार कर कसे दासता-पाश।।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

१००१ पारिवारिक यज्ञ - एक अभियान

यज्ञ हर काल मे श्रेष्ठतम कर्म है चाहे वह वैदिक काल हो या आधुनिक काल। जिस तरह वेदो का महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आधुनिक काल मे पुनरुद्धार किया, उसी तरह उन्होने यज्ञ का वैदिक स्वरूप दुनिया के सामने रखा। आर्यसमाज राम नगर, लातूर महाराष्ट्र ने स्व० गोविदलालजी बाहेती की प्रथम स्मृति मे १००१ परिवारो मे यज्ञ करने का सकल्प लिया है और उसकी शुरुआत बडे ही क्रातिकारी ढग से प्रारम्भ हुई। इस सकल्प को पूरा करने के लिए आर्यसमाज, रामनगर, लातूर की ओर से ३० पुरोहित स्वय स्फूर्ति से इस कार्य मे जुट गए। हर पुरोहित को अलग-अलग विभाग मे नियुक्त किया गया। पुरोहित के साथ एक सहायक (आर्यसमाज का सदस्य) होता है वह यज्ञ मे पुरोहित की सहायता करता है। जो परिवार इसके लिए तैयार होता है वहा पुरोहित और सहायक अपनी आवश्यक वस्तुओ के साथ पहुच जाते हैं। यज्ञ मे उस परिवार और आस पास के अनेक परिवार सम्मिलित होते हैं। यज्ञ सक्षिप्त व दैनिक यज्ञ के रूप मे किया जाता है। १० या १५ मिनट का प्रवचन होता है, जिसमे यज्ञ का शुद्ध सामाजिक और धार्मिक स्वरूप रखा जाता है। साथ मे सस्कारो पर भी विचार रखे जाते हैं। इस यज्ञीय कर्म मे यह बात ध्यान मे रखी जाती है कि, यज्ञ-विधि मे कोई आडम्बर न हो। यज्ञ के यजमानो पर 'दक्षिणा के लिए कोई जोर नहीं डाला जाता। इस तरह हर पुरोहित महर्षि दयानन्द के यह मिशन पूरा करने मे लगा है। यज्ञ के इस सरल और शुद्ध स्वरूप को देखकर लोग इतने प्रेरित हो रहे हैं कि एक या करने पर अन्य ४-५ परिवार यज्ञ के लिए प्रेरित हो रहे है। हमने इन तीन महीनो मे १००१ यज्ञो का सकल्प लिया। जो आज के अनुभव से ऐसा लगता है कि, यह उपक्रम दो ढाई महीनो मे ही पूरा हो जाएगा।

यज्ञ की विधि और उसके महत्व की बतलाते समय पुरोहित किसी का खण्डन न करते हुए सिर्फ यज्ञ का वैदिक सवरूप बतलाते है। वेदो, उपनिषदो और गीता के उदाहरण देकर महर्षि दयानन्द की दिव्य दृष्टि को बतलाते है इसका यह परिणाम हो रहा है कि, आज आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द हर घर हर परिवार मे पहुच रहे हैं। यज्ञ के पश्चात दैनिक यज्ञ विधि की एक पुस्तक उस परिवार को भेट दी जाती है। इससे लोग आर्यसमाज से जुड रहे है आर्यसमाज को समझने की कोशिश कर रहे है। १००१ यज्ञो की पूर्ति के पश्चात् आर्यसमाज, राम नगर, लातूर उन परिवारो की उपस्थिति में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करने जा रहा है। इसमे सभी का योगदान मिल रहा है। कोई भी कार्य यदि अभियान के रूप मे सगठित होकर चलाया जाए तो वह सफल हो सकता है। यही बात इस उपक्रम से सिद्ध होती है। इस या अभियान के सयोजक और प्रेरक स्व० गोविंदलाल बाहेती के कनिष्ठ पुत्र श्री ईश्वरचन्द्र बाहेती है उन्हीं की प्रेरणा और सहयोग से यह अभियान लातूर जनपद मे रूप से चलाया जा रहा है। इनमे जिन पुरोहितो का योगदान प्राप्त हो रहा है इनमे है सर्वश्री प्रा० अखिलेश शर्मा, प्रा० सोमदेव शास्त्री, हरिदास जी सावत, चन्द्रहास मेटे (आर्य), शेरसिह शास्त्री, श्रीमती इन्दुमती सावत, दिलीप कधारे, सौ० सुमन कधारे, सुमत्र चन्द्रशेखर लोखण्डे, ज्ञानकुमार आर्य, महादेवराव शिदे, शिवाजीराव निकम, दिनकरराव देशपाण्डे, प्रभाकरराव बेडदे, श्रीमती कमलबाई भौसले, बबुवाहन शिदे, बाबुराव व्यवहारे, स्वामी केवलानन्द, श्रीमती साबळे बाई देवदत्त मोरे, मणिकराव भोसले, योगेन्द्र भोसले, ओदुम्बर सोमवशी, गुरुकुल येडशी के आचार्य सुभाषचन्द्र तथा वहा के ब्रह्मचारी तथा व्यवस्थापक डॉ० चन्द्रशेखर लोखडे। उक्त पुरोहित वर्ग बडी ही लगन के साथ इस कार्य मे जुट गया है।

आर्यसमाज के प्रधान शकरराव मोरे मन्त्री ज्ञानकुमार आर्य तथा अन्य पदाधिकारियो का इस तरह से सहयोग प्राप्त हो रहा है।

— **डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे**

स्वागत योग्य कदम

हमारे देश के आस पास आज युद्ध के बादल मण्डरा रहे हैं और हमारा देश भी दशको से आतकवाद की पीडा झेल रहा है। ऐसी स्थिति मे हमारी केन्द्रीय सरकार ने वास्तव मे सूझ-बूझ एव साहस का परिचय देते हुए, देश विरोधी पाकिस्तान परस्त मुस्लिम सगठन सिमी की गतिविधियो पर राष्ट्र व्यापी प्रतिबन्ध लगाकर प्रशसनीयकार्य किया।

— *सीताराम आर्य*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर, सेक्टर ६, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-२२

प्रधान – श्री ओमप्रकाश रस्तोगी
उपप्रधान – श्री सत्यप्रकाश आर्य
मन्त्री – श्री रविन्द्र कुमार
उपमन्त्री – श्री कृष्ण मुरारी
कोषाध्यक्ष – श्री महेन्द्र आर्य

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् सेक्टर ६ का विशेष वेदप्रचार

नए परिवारों को सामूहिक यज्ञ की प्रेरणा

विशिष्ट विषयों पर अभिव्यक्ति के लिए बच्चे प्रोत्साहित

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम सेक्टर ६ ने तीन वर्ष पहले विशेष वेद प्रचार कार्यक्रम प्रारम्भ किया था। समाज के पदाधिकारी वर्ष मे दो बार नवरात्रो पर आस-पास के आवासो मे प्रतिवर्ष लगभग १८ नए-नए परिवारो को ढूढ कर उनके घरो मे उच्च कोटि के वैदिक विद्वानो द्वारा हवन व प्रवचन कराते हैं। पूर्णाहुति के दिन ये सब परिवार यजमान बनाकर हवन पर बैठाए जाते हैं तथा समाज मे आने की प्रेरणा दी जाती है। इन परिवारो के सुयोग्य बच्चो को इस अवसर पर आर्यसमाज से सम्बन्धित विषय पर बोलने के लिए प्रोत्साहित किए जाते है सुयोग्य वैदिक विद्वान इन सभी को योग्यतानुसार समाज की ओर से पारितोषिक भी दिया जाता है।

इसके फलस्वरूप आज इस समाज के साप्ताहिक सत्सगो मे आगन्तुक १० से बढकर ५० या ६० के लगभग हो गए हैं।

मास के अन्तिम रविवार बच्चे हवन करते हैं। ६० या ७० जनो मे २५ या ३० बच्चे की होते हैं। कुछ बच्चे हवन की प्रक्रिया मे पारगत हो गए हैं। वे यह इच्छा भी व्यक्त करते हैं कि उस दिन वक्ता के स्थान पर वे स्वय भी प्रवचन देगे। प्रोत्साहन और उचित अवसर मिलने से इस समाज मे बच्चो की सख्या लगातार बढ रही है।

स्वतन्त्रता सेनानी स्व० राधेश्याम त्यागी का ६२वां जन्मदिवस सम्पन्न

स्वतन्त्रता सेनानी स्व० राधेश्याम त्यागी का ६२वा जन्म दिन १० अक्तूबर, २००१ को आर्यसमाज, राधेश्याम भवन बुराडी दिल्ली मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तेजपाल मलिक ने स्व० राधेश्याम त्यागी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा उन्होने समाज द्वारा सचालित स्व० राधेश्याम आर्य पब्लिक स्कूल के छात्रो को पुरस्कार वितरित किए इस अवसर पर क्षेत्र के प्रमुख समाज सेवी श्री रामकुमार त्यागी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का सयोजन समाज के प्रधान श्री ओमदत्त त्यागी जी ने किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओ ने देशभक्ति के गीतो से कार्यक्रम को प्रभावकारी बनाया।

गिरि-कन्दराओं में वैदिक नाद गुंजाने वाले स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती नहीं रहे

उडीसा, बिहार (झारखण्ड प्रान्त) मध्य प्रदेश (छतीसगढ) प्रात के वनवासी क्षेत्रो मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सर्वस्व आहुति देने वाले, शुद्धि आन्दोलन के सूत्राधार, वनवासी जनता को महाभारतीय स्रोत मे शामिल करने का भागीरथ प्रयत्नकारी, विभिन्न गुरुकुल, सस्कृत विद्यालय, महाविद्यालय, दयानन्द हाईस्कूल, मिडिल स्कूल, अनाथाश्रम, गोशाला, दातव्य चिकित्सालय, आर्यसमाज आदि विभिन्न अनुष्ठान के स्थापना के साथ प्राकृतिक विपदाओ मे पीडित जनता की सेवा करने वाले परी मे आर्यसमाज, केन्द्रपाडा मे कन्या गुरुकुल स्थापना करते हुए उडीसा के बाढ पीडित जनता की सेवा करते हुए अजस्र अनुष्ठानो के सस्थापक पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती का दिनाक ६ सितम्बर, २००१ को रात २ बजे भुवनेश्वर मे हृदयाघात से निधन हो गया। स्वामीजी के निधन से आर्य जगत् की अपूणीय क्षति हुई है। वह ८६ वर्ष के थे।

८ सितम्बर शनिवार ११ बजे पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज का प्रथम सस्थापित और केन्द्रस्थली गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पर शोकसभा का आयोजन किया गया। जिसमे दिवगत आत्मा की सद्गति और शान्ति के लिए प्रार्थना की गई तथा विनम्र श्रद्धाजलि आर्पित की गई।

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार, दिल्ली—११००९२ का १८ वा वार्षिक उत्सव मगलवार २० नवम्बर, २००१ से रविवार २५ नवम्बर, २००१ तक उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ७ ३० से ६ ०० बजे तक यज्ञ तथा रात्री ७ ४५ से ६ ३० बजे तक वेदो के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य राजकिशोर जी कथा करेगे। तथा भजन श्री गुलाब सिह जी राघव प्रसिद्ध भजनो पदेशक द्वारा होगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार २५ नवम्बर को प्रात होगी, उसके पश्चात् वेदोपदेश तथा प्रवचनो का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। सभी आर्यसमाज के भाई-बहनों से अनुरोध है कि वे सम्पूर्ण कार्यक्रम मे अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर धर्मलाभ उठाए तथा आर्यसमाज निर्माण विहार के कार्यकर्ताओ का उत्साह बढाए।

— **रवि बहल, मन्त्री**

भू-माफियाओं द्वारा लोकतन्त्र का नाजायज लाभ उठाकर

गुरुकुल कांगड़ी की 198 बीघा जमीन बेचने के विरुद्ध प्रधानमन्त्री को पत्र

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गौरी शकर कौशल ने एक विशेष पत्र प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजेपयी गृहमन्त्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी एव मानव ससाधन मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी को लिखकर गुरुकुल के भूमि विक्रय को रद्द कराने की माग की है। यह पत्र इस प्रकार है –

अमर हुतात्मा स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी पू० स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली जिसका निर्माण भारत की देशभक्त जनता ने लार्ड मेकाले की राष्ट्र द्रोही शिक्षा पद्धति के मुकाबले में भारतीय शिक्षा पद्धति हेतु अपार धन राशि देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल कागडी की स्थापना की उसको कुछ स्वार्थी तत्वो ने अवैध रूप से बेच दिया। जिससे भारत ही नहीं विश्व की आर्य जनता तथा हिन्दु समाज में गहरा रोष और आक्रोश व्याप्त है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय जिसको शासन से लाखो रुपया अनुदान दिया जाता है जिसकी १९८ बीघा जमीन जिसका मूल्य २० करोड रुपये वर्तमान मे है वहा के कुछ प्रबधको ने ७५ लाख रुपये मे गुपचुप बेच दी।

यह उत्तराचल राज्य का पहला भूमि घोटाला है जिसमे नख से शिख तक गुरुकुल के प्रबन्ध शासन के अधिकारी और तथाकथित राजनैतिक लोग शामिल हैं।

वर्तमान मे कमिश्नर श्री सुभाष कुमार ने स्थगनादेश देकर दाखिला खारिज, स्वामित्व परिवर्तन पर रोक लगा दी है जिससे आर्य जनता ने राहत की सास ली है।

पता चला है कि गुरुकुल समिति के कुछ लोगो ने गुपचुप एक आर्य विद्या सभा के नाम से मेरठ मे चुपचाप पजीयन कराकर ४ जून २००१ को बेच दी।

न तो शासन से स्वीकृति प्राप्त की जबकि शासन से अनुदान मिलता है न गुरुकुल विश्वविद्यालय और पजाब प्रतिनिधि सभा जो इस की स्वामिनी है उससे स्वीकृति ली।

पता चला है कि गत ३० वर्षो मे गुरुकुल मे घुसे भू-माफियाओं ने ८० करोड की भूमि बेच खाई।

आर्य जनता आप से अपेक्षा करती है कि आजादी के बाद बगैर शासन और आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल की साधारण सभा द्वारा जो भूमि बेची गई है उसे शासन अवैध घोषित कर गुरुकुल को वापिस दिलावे, बेचने वालो और खरीदने वालो पर अपराधिक प्रकरण चलाए जाए।

हमारी यह भी प्रार्थना है कि यदि कानून मे सशोधन करना पडे तो किया जाए कि जो सम्पत्ति जनता के धन से जन कल्याण को बनाई है उसको बगैर शासन सस्था की आम सभा तथा स्थानीय जिला पचायत की अनापत्ति के बाद ही बेची जावे जो आजादी के बाद बिके है वापिस की जावे।

गुरुकुल कांगड़ी की जमीन बेचना महापाप है

इस समय पूरा आर्यजगत गुरुकुल कागडी की जमीन बिकने से चिन्तित और दु खी है। जो भी सुनता है, वह इस जमीन घोटाले की निन्दा करता है। गुरुकुल का यह दुर्भाग्य है कि करोडो की जमीन कौडियो मे, गुरुकुल के रक्षको ने बेच दी। गुरुकुल जैसी सस्था की जमीन बेचना अपने मे पाप और अपराध है। उस महापुरुष स्वामी श्रद्धानन्द की सस्था की जमीन बेची गई, जिसने अपना तन-मन-धन, घर-परिवार सन्तान आदि सभी कुछ गुरुकुल बनाने मे लगा दिया। विचारधाराओ के लोग अपनी सस्थाओ की जमीनो को बढाते हैं आगे बढते हैं। हम बेच रहे हैं, इससे बढकर हमारा और क्या पतन होगा ? क्या इसीलिए स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल बनाया था ? हमारा किसी से बैर-विरोध नहीं है। जब आम भावनाशील जनता पूछती है तो हमारे पास कोई उत्तर नहीं होता है।

सम्पूर्ण आर्य जनता गुरुकुल कागडी की भूमि बेचने की पुरजोर निन्दा करती है, यह जमीन किसी हालत में भी खरीदने वाले के पास नहीं जानी चाहिए, इसी मे आर्यसमाज और गुरुकुल की इज्जत है जो भी इस जमीन बेचने के काण्ड मे और रिश्वत लेने के काण्ड मे सम्मिलित है, उनकी निन्दा होनी चाहिए। उन पर सब ओर से जनता का दवाब आना चाहिए। वे जमीन के सौदे को कैन्सिल कराए। जो दो नम्बर का लेन-देन हुआ है, उसको वापिस कराया जाए। यदि वे नहीं मानते है तो आन्दोलन, सामाजिक बहिष्कार, कोर्ट-कचहरी आदि का सहारा लेना चहिए। इस समय हमारा एक ही नारा और उद्देश्य है – गुरुकुल की बेची हुई जमीन वापिस हो। हर कीमत पर जमीन को वापिस कराना है।

यदि दोषी व्यक्ति किसी हालत मे जमीन की बाबत खाए हुए रुपये वापिस नहीं करते तो जनता उनके घरो पर धरने देने के लिए तैयार है। जनता चन्दा देकर, गुरुकुल की जमीन बचाने के लिए तैयार बैठी है। जनता इस पाप और अपराध को पचा नहीं पा रही है। आर्य जनता जब जाग गई है, जमीन वापिसी का आन्दोलन अब तेज होगा।

जो जमीन के घोटाले में लिप्त हैं, उन्हे दण्ड मिलना ही चाहिए। सच्चाई जनता के सामने आनी चाहिए। तभी गलत स्वार्थी व्यक्तियो पर अकुश लग सकेगा।

मेरा आर्यसमाज के उच्च अधिकारियों, गुरुकुल के सीनेट सदस्यो, कुलाधिपति, गुरुकुल के स्नातकों, आर्य सदस्यो तथा सभी गुरुकुल प्रेमियों सज्जनों से नम्र निवेदन है कि गुरुकुल कागडी की जमीन को बचा लो। हमसे जो तन-मन-धन की कुर्बानी चाहिए, हम करने को तैयार हैं। हम जनता से झोली फैलाकर चन्दा इकट्ठा कर गुरुकुल की जमीन की भरपाई करने को तैयार हैं। यह मेरे शब्द नहीं है जनता की आवाज है।

– सोमदत्त महाजन, प्रधान, आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली-११००५८

पृष्ठ २ का शेष भाग

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।

इस प्रकार की अराष्ट्रीय गतिविधिया भारत मे ही सहन होती हैं। इसका कारण यह है कि एक तो हिन्दू आवश्यकता से अधिक सहनशील है, इतना सहनशील कि विष उगलने वाले सापो को भी दूध पिलाना धर्म समझता है और दूसरे भारत १५ अगस्त १९४७ से ही ऐसे लोगो के हाथो मे पड गया है, जो न भारत को जानते हैं और न भारतीयता को। उनके सामने व राष्ट्र है, न राष्ट्रवादिता। यदि कुछ है तो केवल मात्र येन-केन प्रकारेण शासन की कुर्सी हथियाए रहना। नहीं तो १५ अगस्त सन् १९४७ से लेकर अब तक की इस लम्बी अवधि मे भारत मे वास्तविक राष्ट्रीयता का विकास हो गया होता और जिन्होने उसे स्वीकार नहीं करना था, वे लोग यहा से विदा हो जाते।

जहा तक हिन्दू का प्रश्न है, यह घोर राष्ट्रवादी है, पचास वर्ष हो गए इसे सहते-सहते। मीनाक्षीपुरम् मे सामूहिक विधर्मीकरण से हिन्दुओ को मुसलमान बनाने के लिए अरब देशो से धन और विदेशी मुसलमान बडी सख्या मे आए तो साम्प्रदायिकता की पीडा से भारत को मुक्त कराने वाले अगडाई भी न ले। मेरठ, रामपुर, मुरादाबाद मे तोपे, हथगोले और बन्दूक व रिवाल्वर सहस्रो की सख्या में मुस्लिम घरो और मस्जिदो मे से सरकारी अधिकारियो ने पकडे। मेरठ में यदि पी०ए०सी० न होती तो हिन्दूओ का सर्वनाश निश्चित था।

इमाम बुखारी साम्प्रदायिकता की आग भडकाने वहा बार-बार आया। सरकार भी उक्त अवसरो पर जागी, परन्तु यह धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी पता नहीं कहा चले गए थे ? राष्ट्रभक्त जागते हैं तो इन्हे पीडा होती है।

प्रश्न फिर वहीं है कि अन्ततोगत्वा यह 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' किस मूल्य पर होगी ? सन् १९५० मे भारतीय ससद ने राष्ट्रीय अभिवादन 'नमस्ते' निश्चित किया, किन्तु अभी तक भी भारत के मुसलमानो ने उसे व्यवहार मे लाना स्वीकार नहीं किया। आपस मे दो मुसलमान मिलते हैं, तब तो क्या ? हिन्दू से मिलते समय भी नहीं। रूस और चीन आदि देशो के निवासी मुसलमानो के नाम उन्हीं देशो की भाषा मे होते हैं, किन्तु भारत के मुसलमानो के अरबी और फारसी भाषा मे भारत की राष्ट्र-भाषा मे नहीं।

हम 'पताका' से 'ध्वजा' पर आए और फिर 'ध्वजा' से 'झण्डे' पर आ गए, किन्तु भारत मे रहने वाले मुसलमान 'परचम' से नीचे आने को तैयार नहीं।

भारत के आर्थिक ढाचे के मेरुदण्ड गोवश की रक्षा के लिए मुसलमान भारत की स्वाधीनता के इन ५० वर्षो के बाद भी हमारे स्वर मे स्वर तो क्या मिलाते ? अब भी चोरी-छिपे कानूनी अपराध होने पर भी गो-वध करता रहते हैं। देश की बढती हुई आबादी और खाद्य समस्या के हल के लिए उपयोगी 'परिवार कल्याण' कार्यक्रमो को कुफ्र बतलाता है और कहता है – **''गर्दन कट सकती है, नस नहीं कट सकती।'**

हिन्दू प्रत्येक नगर की दर्जनो-दर्जनो मस्जिदो से होने वाली ध्वनि-विस्तारको पर अजान की आवाज को प्रात काल ब्रह्म मुहूर्त मे भी सहन करते हैं और साय-काल दिन छिपते समय भी किन्तु विरोध तो क्या ? कभी शिकायत तक भी नहीं करते। यहा प्रात ब्रह्म मुहूर्त मे और सायकालीन सध्या समय भी की जाने वाली सध्या-उपासना के लिए ध्वनि विस्तारको द्वारा अजान किया जाना नितान्त बाधा है, परन्तु मुसलमान मेरठ के एक मन्दिर से आने वाली आरती की ध्वनि को भी सहन नहीं कर सके और वहा के पुजारी 'रामभोले' की हत्या कर दी।

उपर्युक्त तथा इसी प्रकार के सैकडो के प्रश्न है, जिनका उत्तर इन तथाकथित स्वय सिद्ध राष्ट्रभक्तो तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के अलमबरदारो से कभी भी नहीं दिया जा सकता। यदि ये लोग ईमानदार हैं और सही अर्थो मे राष्ट्रभक्त है तो अपने बिरादारी ने वतन की राष्ट्रभक्ति दिखाए, उन्हे धर्मनिपरेक्ष और हिन्दू मुस्लिम एकता का हामी बनाए। उन्हे कभी नेक सलाह नहीं देगे, चाहे जितने अत्याचा वे हम पर करे। हम चोट खाकर कराहे तो भी ये लोग तिलमिला उठते हैं।

हम आह भी भरते हैं, तो हो जाते हैं बदनाम।
वो कत्ल भी करते है तो शिकवा नहीं होता।

– अध्यक्ष, वैदिक सस्थान नजीबाबाद, उ०प्र०

R N No 32387/77 Posted at N D PS O on 25-26/10/2001 दिनांक २२ अक्तूबर से २८ अक्तूबर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 25-26/10/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

पृष्ठ ५ का शेष भाग

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा और संस्कृति

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

अंग्रेजी द्वेष बढ़ाने वाली भाषा

हिन्दी जोडने वाली भाषा है, मैत्री वाली भाषा है, इसके विपरीत अग्रेजी भाषा के विकास मे द्वेष-भावना ही उभरकर आई। उदाहरण के लिए जवान (युवा)' के लिए शब्द है एडल्ट (adult) और उससे व्युत्पन्न है एडल्टरी (adultery)। इन्हे 'ब्रेव ब्रेवरी' (बहादुर बहादुरी), ड्रज, ड्रजरी' (चाकर, चाकरी), 'नेव नेवरी' (धोखेबाज धोखेबाजी), 'स्लेव, स्लेवरी' (गुलाम, गुलामी) 'राइवल, राइवलरी' (प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिद्वन्द्विता) आदि की पक्ति मे रखकर 'एडल्टरी' का सीधा-सच्चा अर्थ 'जवानी (यौवन)' निकालना चाहिए था, किन्तु शब्द-कोश मे इसका अर्थ है जार-कर्म, पर स्त्री-गमन व्यभिचार। ऐसा क्यो है? कारण यही है कि भारतीय सस्कृति ब्रह्मचर्य को जीवन का अनिवार्य तप मानकर वीर्य-नाश का और काम-वासना का भरसक निषध करती है (कल्याण के देवता शिव 'कामारि हैं')। इसलिए हठी, दुराग्रही और वेद (सत्य-ज्ञान) विरोधी मानसिकता ने आसुरी सस्कृति मे इसके ठीक उलटे अर्थ मे, जार-कर्म, पर-स्त्री-गमन और व्यभिचार को 'जवान का स्वधर्म (सामान्य लक्षण) घोषित कर दिया।

देवभाषा/आर्यभाषा और उनकी ज्ञानमूलक सस्कृति के प्रति भीषण विद्वेषाग्नि मे जलते हुए अज्ञान तमसान्ध ये लोग अर्थ-काम-प्रधान अपसस्कृति से चिपके रहकर व्यभिचार-जन्य फिरग (एड्स के नए नाम से कुख्यात) रोग पालने मे भी निर्लज्जता-पूर्वक गर्व ही अनुभव करते है इसे 'बडे लोगो को बीमारी' कहते हैं। (सिह-सिहल-द्वीप-श्रीलका या सीलोन) भी त के ही भाग थे जिन्हे अग्रेजो ने काटकर अल सुदूर पूर्व मे स्याम, जावा (यव-द्वीप), सुमात्रा, मलाया (मलय-द्वीप), बाली-द्वीप तक भारतीय सस्कृति का प्रसार था। इसके बहुत मे प्रमाण अब भी जगह-जगह मिलते हैं। यह बृहत्तर भारत 'एक विश्व श्रेष्ठ विश्व' की कल्पना साकार करने वाले 'भारत-जगत् या 'विश्वभारत' की प्रगति का मानो एक पडाव था। अग्रेजो ने फूट डालकर भारत छोडते-छोडते भी विभाजन करके इसके तीन खण्ड कर दिए गए।

भारत की दुर्गति और राष्ट्रीय शोक

अमेरिका-सहित सारे पश्चिम को भरपूर विषाक्त करके भारत पर भी अग्रेजी के विष-दन्त गडने लगे। सभी शिक्षा-शास्त्री राष्ट्र-प्रेमी राजनेता और न्यायालय/उच्चतम-न्यायालय तक बार-बार कह चुके हैं कि बच्चो को शिक्षा उनकी मातृभाषा मे ही दी जानी चाहिए। राष्ट्र-पिता महात्मा गाधी ने तो २७ दिसम्बर १६१७ को कोलकाता मे अग्रेजी शिक्षा आरम्भ होते ही इसे 'दुर्गति' और 'राष्ट्रीय शोक' कह दिया था और आजादी मिलते ही इसे निकाल फेकने का आहान किया किन्तु जो भयकर भूल अग्रेजी से चिपके रहने की हो चुकी थी उसका फल तो भुगतना ही है।

दुर्भाग्य तो यह है कि यही अग्रेजी भाषा भारत के दुधमुहे बच्चो को घुट्टी मे पिलाकर अपसस्कृति मे ही उन्हे दीक्षित किया जा रहा है और अपनी भाषा से उन्हे वचित रखकर उनका स्वस्थ विकास का अधिकार मारा जा रहा है। पढाने का ढग और पाठ्य-पुस्तको की रचना भी ऐसी है कि वे भाषा ज्ञान देने की अपेक्षा प... मत-आरोपण अधिक सफलता-पूर्वक कर सके। एक उदाहरण है छा... बच्चो को वर्णमाला की सचित्र पुस्तक का। अग्रेजी वर्ण एफ में आरम्भ होने वाले फैन, फॉक्स पउण्टेन फ्रेम, फोर फ्लो, फुट आदि अनेक सरल शब्द है, जिने चित्र देकर इस वर्ण का ज्ञान दिया जा सकता है, किन्तु तीन शब्द चुने गए 'फिश, फायर और फ्राइग जिन्हें व्यक्त करता हुआ एक ही चित्र दिया गया जिसमें नीचे आग (फायर) जलती है और मछली (फिश) एक धागे से लटकी हुई भूनी (फ्राई की) जा रही है। इसे देखकर सन् १८५७ बावन इमली जिला उ०प्र० फतेहपुर डाली से लटकते शहीदो के शवो के चित्र याद आते जिन्हे अन्य कोई व्यवस्था न होने के कारण गाव-बाहर इमली के पेड से ही लटकाकर सामूहिक फासी दी गई थी।

हजारो साल से ससार भर मे फिरग और फिरगी शब्द यूरोपीय और यूरोप के समानार्थी कुख्यात हो चुके है। कि बहुना, इस भाषा के जानकर एक 'रिचर्ड लैडरर महोदय ने तो **'क्रेजी इग्लिश' (अर्थात् पागलपन की भाषा 'अग्रेजी') नाम का एक ग्रन्थ ही लिखा था (जिसे १६६६ में 'साइमन ऐण्ड शुस्टर', न्यूयार्क ने प्रकाशित किया था)**। फिर भी भाषा मे सुधार के नाम पर कुछ करने की बजाय स्वभाववश अपसस्कृति का विष ही फैलाया गया। कुछ विद्वानो ने सुधारने की कुछ कोशिश की, जैसे प्रोग्राम की वर्तनी programme (इग्लैण्ड वाली वर्तनी) के बजाय program (अमेरिका वाली वर्तनी) सुझाई, किन्तु उनकी तूती भाषा के दुराग्रही कठमुल्लाओ के नक्कारखाने मे बोलकर ठप्प हो गई।

इतिहास साक्षी है कि राज्य, भाषा, धर्म, खान-पान, रीति-रिवाज की स्थान-स्थान पर विभिन्नता होने पर भी आचार-विचार से एकात्म, अर्थात् एक सामान्य सस्कृति के उपासको का यह 'भा-रत' (भा=ज्ञान की शोध और प्राप्ति मे रत=लगा हुआ) वेद-काल से एक विशाल राष्ट्र ही था (जिसे अब 'बृहतर भारत' नाम दे सकते हैं)। इसी की प्रशसा मे विष्णु-पुराण के रचयिता ने पूरा एक अध्याय लिखा है। इसकी भौगोलिक सीमा बताते हुए (विष्णु पुराण २/३/१ मे) ऋषि कहते हैं कि **'जो भूखण्ड समुद्र (हिन्द-महासागर) के उत्तर में और हिमादि (हिमालय पर्वत-श्रेणी) के दक्षिण में है वह भारत है और उस भूमि की सन्तान भारती (भारतीय) है।'** इस सीमा-रेखण के अनुसार पश्चिम में गान्धार (वर्तमान अफगानिस्तान) और फारस या ईरान (आर्य-आर्यन-ईरान) भारतीय (आर्यो के) देश थ। पूर्व मे ब्रह्म-देश (म्यामार), दक्षिण मे श्रीलका

अंग्रेजी पढाएं पर कब, किसे ?

उपर्युक्त छान-बीन का उद्देश्य तथ्यो की जानकारी देना है विद्वानो/राष्ट्रप्रेमियो/न्यायाधीशो के मत की पुष्टि करने के लिए, ताकि न्यायालय की उपेक्षा बन्द हो। पर-दोष-दर्शन या किसी के प्रति द्वेष फैलाने का उद्देश्य नहीं है। हमे भले-बुरे किसी से घृणा नहीं, करनी चाहिए, क्योंकि 'जड-चेतन, गुण-दोष-मय विश्व कीन्ह करतार।' अग्रेजी भाषा के जानकार इसमे भी कोई गुण खोज सकते हैं। फिर भी हमे जब इसी दुनिया मे रहना भी है तो जिन्हे अग्रेजी जाननी जरूरी हो, वे अवश्य उसे सीखे किन्तु **'सन्त हस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार'** की सलाह पर ध्यान देते हुए उसके विष-दन्त उखाडकर ही, अथवा पहले अपनी सुभाषा का मन्त्र पढकर उसे भली-भाति कीलित कर दे तब उस पर हाथ लगाए।

— **बी- १५४, लोक विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-३४**

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाउस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (**दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७**) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के** लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
वर्ष २४, अक ४० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २९ अक्तूबर से ४ नवम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता और राष्ट्रभक्ति कलियुग से लड़ने का पवित्र माध्यम है

– रामफल बंसल

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" यह नारा मात्र नही अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वैदिक धर्मियो को वेद की ओर ईशारा करते हुए वेद के एक मन्त्र मे से समाज के सचालन का वैदिक उद्देश्य निर्धारित करते हुए बडी पवित्र दृढ और मानव धर्म की सेवा भावना से प्रेरित होकर दिया गया दिव्य निर्देश था। इस निर्देश को शिरोधार्य करते हुए स्वामीजी के अनुयायियो ने वैदिक धर्म के प्रचार और जन-सामान्य को आर्यत्व के लक्षणो से अभिभूषित एव सुसज्जित करने का सुगम मार्ग निर्धारित करते हुए पहले स्वय को एक श्रेष्ठ पुरुष के रूप मे अभिलक्षित किया। उनकी श्रेष्ठता, उनके गुणो, उनके चरित्र, उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता, उनकी ईमानदारी, उनकी राष्ट्रभक्ति, उनके प्रेम, उनकी श्रद्धा, उनका ज्ञान, उनका जल की तरह निश्चल और पारदर्शी जीवन एक चुम्बक की तरह समाज से जन-सामान्य रूपी लोहे तक को अपने साथ आकर्षित करता चला गया। इस आकर्षण के कारण ही महर्षि दयानन्द के अनुयायियो की उस पहली पीढी के नेतृत्व ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को केवल मात्र नारा ही नहीं अपितु सफलता से प्राप्त हुआ लक्ष्य बनाकर दिखा दिया। आर्यो के निर्माण की परम्परा और उनके ज्ञान की सर्वोच्चता ने जन-सामान्य को अपना तन, अपना मन, अपनी भावना, अपनी श्रद्धा अपना धन और यहा तक की सम्पत्तिया आदि भी उन आर्य नेताओ के चरणो मे न्यौछावर करने के लिए प्रेरित किया। आज सारे विश्व मे ८००० से अधिक आर्यसमाज रूपी शाखाओ का हम दावा करते है, यह झूठ नहीं है। बेशक इसमे कुछ बिना बिल्डिगो की भी शाखाए होगी। ऐसी शाखाओ मे एक या अधिक व्यक्ति की चलती-फिरती बिल्डिगो का रूप है। इसके अतिरिक्त अन्य कई प्रकार की भव्य और मानव कल्याण मे लगी छोटी-बडी योजनाए शिक्षा से लेकर अस्पताल, वृद्धाश्रम, महिला आश्रय केन्द्र और अनाथ बच्चो के पालन केन्द्र भी है।

श्री रामफल बसल

१२५ वर्षो की इस लम्बी यात्रा के बाद सगठन मे कही-कही सिद्धान्तो से हटने की हलचल, कही चरित्र पर दोषारोपण, कहीं ईमानदारी के सिद्धान्त मे खोट, कही कर्मठता, त्याग और तपस्या का अभाव और कही राष्ट्रभक्ति की प्रेरणाओ के प्रचार-प्रसार मे लापरवाही, महसूस हो रही है। परन्तु सच्चा मन, सच्चा समपर्ण, सच्चा त्याग और महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व के प्रति सच्ची श्रद्धा इन कमियो को किसी भी सूरत मे बर्दास्त करने को तैयार नही।

आर्यसमाजो, सभाओ या अन्य सस्थाओ मे जिस प्रकार एक सुन्दर, सभ्य, और शालीन प्रजातान्त्रिक प्रणाली लागू की गई थी उसका अर्थ केवल मात्र यह नहीं होना चाहिए कि चुनाव मे अधिकार प्राप्त करके अगले चुनाव की तैयारी। चुनाव मे या नेतृत्व को सम्भालने की लालसा हर दृष्टिकोण से बुरी है। परन्तु कलियुग के इस समुद्र मे दोषी-आरोपी और कलकित इतिहास वाले लोग भी गोता-खोरी करना चाहते हैं। परन्तु उन्हे रोकना हर पवित्र आत्मा का परम कर्त्तव्य है।

जब तक यह अक आर्यजनता के हाथ पहुचेगा तब तक आर्यो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनावी सफर एक और मील का पत्थर तय कर चुका होगा।

इस बार चुनाव सम्पन्न कराने का गुरुत्तर दायित्व सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी के मजबूत और धर्मनिष्ठ कन्धो पर है।

श्री बसल जी ने इस चुनाव के माध्यम से आर्यजनो के समक्ष एक छोटा सा परन्तु विशाल और दूरगामी परिणाम वाला सकल्प व्यक्त करते हुए कहा है कि ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठता और राष्ट्रभक्ति मे परिपूर्ण (शत-प्रतिशत) आर्यो का दल समूचे विश्व को महर्षि दयानन्द जी के द्वारा निर्देशित उस वैदिक मार्ग पर ले जाने के लिए जुट पडे, जिस मार्ग पर हर मील के पत्थर पर लिखा हो – **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**

गायत्री महामन्त्र का वैज्ञानिक प्रयोग

चिकित्सा शास्त्र की अनेक पहेलियो को पूरी तरह सुलझाने में सक्षम गायत्री महामन्त्र का वैज्ञानिक प्रयोग देश की सीमा के अन्दर और बाहर किया जा रहा है। विभिन्न शोधों के माध्यम से प्राप्त परिणामो को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास जोरो पर है। जिन शारीरिक व्याधियो को दूर करने मे आधुनिक चिकित्सा पद्धति विवश हो जाती है। उसे आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से आदिकालीन पद्धति दूर कर देती है।

प्राचीन काल से भारतवर्ष मे मन्त्रो द्वारा अनेक व्याधियो का उपचार किया जा रहा है। अनेक सत मुनि तथा तपस्वी उन मन्त्रो के बल पर अपनी हृदय गति व शरीर की अन्य क्रियाओं को नियन्त्रण मे रख पाते थे तथा सम्पूर्ण जीवन का लाभ ले पाते थे। धीरे–धीरे उन मन्त्रो के ज्ञान का ह्रास होता गया तथा उनका उपभोग भी उचित जानकारी के अभाव मे लुप्त होता गया। अभी भी अनेक सिद्ध पुरुष व महिलाए इन मन्त्रो के सफल उपयोग के कारण लाभान्वित हो रहे हैं। पर सुदृढ विधि के अभाव मे सामान्य जन इन मन्त्रो का प्रभावी उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। आदि महामन्त्र के शरीर पर पडने वाले प्रभावो को जाचा परखा गया, उसके अतिरिक्त उच्च रक्तचाप, हृदयगति की अनियमितताओ, जीवन की लम्बाई पर इस मन्त्र के नियमित जाप करने के प्रभावो की समीक्षा की गई। प्रारम्भिक तौर पर १६ से ७० वर्ष आयु के समूह के २७७ व्यक्तियो को अपने अध्ययन का विषय बनाया। उन पर १७ दिन से लेकर १ वर्ष तक गायत्री मन्त्र के जाप से पडने वाले प्रभाव का परीक्षण किया। इस मन्त्र के नियमित तथा उचित उच्चारण से रक्तचाप के ६० प्रतिशत से ज्यादा मरीजो मे हृदय गति भी कम हो गई। इसी तरह हृदय गति की अनियमितता के विभिन्न कारणो मे भी इस विधि से प्राप्त परिणाम अत्यन्त आशाजनक रहे हैं। इस विधि मे ओ३म् शब्द को जितना लम्बा खींचा जा सके उतना खींचा जाना चाहिए। " ओ" तथा "म्" दोनो शब्दो को एक सास में लम्बा खींचने मे हृदय गति रक्तचाप पर तुरन्त प्रभाव पडता है। ओ. म म तत्पश्चात् मन्त्र को तेज गति से पढे या बोले। यदि इस मन्त्र को लगातार पाच मिनट तक हर दो घण्टे मे बोला जावे तो अत्यन्त अनुकूल प्रभाव मिलते हैं। परीक्षणो से यह तथ्य प्रकट हुआ है कि गायत्री मन्त्र जाप मनुष्य की जीवनी शक्ति को असाधारण रूप से बढाता है चिकित्सा विज्ञान जिसे "इक्युनिटी" या रोग प्रतिरोधी क्षमता कहता है वस्तुत वह प्राणशक्ति की प्रचुरता है।

प्राणशक्ति का क्षरण ही मनुष्य को रोगी बनाता है। गायत्री मन्त्र जाप प्राणशक्ति को प्रखर करता है। गायत्री जाप श्वसन क्रिया को प्रभावित करता है। श्वास को बचा कर प्राण को प्रखर बनाया जा सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति द्वारा (२४ घण्टे मे) २१६०० श्वास ली जाती है अर्थात् प्रति मिनट मे १५ श्वास ली जाने वाली गायत्री जाप से घटकर प्रतिमिनट ७ रह जाती है। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि प्रतिदिन एक घण्टे जप कर व्यक्ति ५०० श्वास बढा सकता है। और निरन्तर चलने वाली यह क्रिया उसके आयुष्य में चमत्कारिक वृद्धि कर सकती है। मन्त्र नियमित जप करने वालो मे दीर्घायु होने तथा उच्च रक्त चाप व हृदय रोग के दौरे की कम सम्भावना होने का पता चलता है। एक ही परिवार के दो व्यक्ति इस अध्ययन मे लिए गए। उनमें से एक व्यक्ति नियमित पाठ करता है।

इस तरह के २० परिवार इस अध्ययन मे लिए गए ५ वर्षो से अधिक समय तक नियमित पाठ करने वालो मे न केवल उच्च रक्तचाप व हृदय रोग के दौरे कम थे वरन् अगले तीन वर्ष भी उन रोगो के होने की सम्भावना बहुत कम थीं इन परिणामों से अत्यन्त दूरगामी लाभ मिलने की पूर्ण सम्भावना है।

(– दैनिक जागरण से साभार)

ऋषि–निर्वाणोत्सव

14 नवम्बर 2001, बुधवार, प्रातः 8 से 12 बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००१

में समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। दीपावली के पावन पर्व पर आप सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीयसभा, दिल्ली राज्य

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाज दयानन्द विहार, दिल्ली-९२ में दिव्य सत्संग समारोह

दिनाक ७–११–२००१ से ११–११–२००१ तक

कार्यक्रम

भक्ति सगीत	श्रीमती सुदेश आर्या संगीताचार्या प्रतिरात्रि ८.०० से ९.०० बजे तक
अमृत वर्षा	ऋषिका साध्वी आत्मदीक्षिता जी सरस्वती प्रतिरात्रि ९.०० बजे से १०.०० तक
यज्ञ एवं प्रवचन	प्रात ६.३० बजे से ७.४५ तक
समापन समारोह	रविवार ११ नवम्बर, २००१
यज्ञ व आशीर्वाद	प्रात ७.४५ से ९.१५ बजे तक

आर्य बाल सम्मेलन, आर्य श्रेष्ठियों का सम्मान व आर्य सम्मेलन

प्रातः ६.३० बजे से दोपहर १.३० बजे तक

अध्यक्षता	श्री वीरेश प्रताप चौधरी, प्रधान, आर्य अनाथालय
मुख्य अतिथि	श्री वेदव्रत शर्मा, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विशिष्ट अतिथि-वक्ता	श्री धर्मपाल जी आर्य, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
उद्बोधन :	श्रीयुत श्रीकात जी शास्त्री
भक्ति सगीत	सुश्री अर्चना सिंह व साथी, रेडियो, टी०वी०, कलाकार
आशीष	ऋषिका मां आत्मदीक्षिता जी
संचालिका बाल सम्मेलन :	मिताली वधवा

ऋषि लंगर १.३० बजे

नोट बाल सम्मेलन मे भाग लेने के लिए ७–११–२००१ तक अपने नाम कु० मनीषा २०७, (एफएफ) दयानन्द विहार, दिल्ली ९२ को लिखवा दे।

मन्त्री

बोध कथा — ज्ञान की ज्योति

एक बार एक आलोचक ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से कहा – **"आप जिस वैदिक ज्ञान की गरीमा का बखान कर रहे हैं यदि आपको अंग्रेजी आती तो वह ज्ञान की ज्योति आप विदेशों में भी फैला सकते थे। आप विदेशों में भी जाने जाते।"**

स्वामीजी ने हसकर उत्तर दिया – **"लेकिन एक भूल आपसे भी हुई है, जो आपने सस्कृत नहीं पढी। अगर आपने पढी होती तो हम मिल कर देश का सुधार करते, उसके बाद विदेशों की ओर मुंह करते। जो ज्ञान की ज्योति अपने घर में ही प्रकाश न कर सके, वह दूसरों के घरों का अन्धकार कैसे दूर करेगी?"**

स्मरण रहे कि उन दिनो अग्रेजी राज अपने यौवन पर था और यातायात के साधन भी विकसित नही हुए थे, फिर भी स्वामी दयानन्द ने पूरे भारत देश मे हिन्दी और सस्कृत के माध्यम से ज्ञान की ज्योति सारे देश मे प्रदीप्त की।

– नरेन्द

मातृभूमि समुन्नत हो ! हम बलि दें, जागरूक हों और तेजस्वी बनें

सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना।

अथर्व० १२,११३

हमारी समुन्नति हो, हम भी उन्नत हो

वयं तुभ्यं बलिहृताः स्याम।

अथर्व० १२१६२

हम मातृभूमि के लिए बलि के लिए प्रस्तुत हो।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।

हम भक्त राष्ट्र के प्रति जागरुक रहे।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। *यजु० १९७*

हे अग्नि, आप तेजस्वी हैं, मुझे भी तेजस्वी बनाए

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : समाधान-विवेक और दृढ़ता से

२६ अक्तूबर के दिन विजयदशमी का पर्व था और आगामी १४ नवम्बर को दीपावली का पर्व है। ये दोनो ही भारत के राष्ट्रीय पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के यशस्वी जीवन के दो राष्ट्रीय पर्वों का स्मरण कराते हैं, परिस्थितिया अनुकूल होतीं तो ये दोनों अवसर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की स्मृति मे मर्यादा का सन्देश देते, परन्तु जैसी स्थिति है उससे जूझने के लिए राष्ट्र को अधिक विवेक और दृढता से उनका समाधान करना होगा। यह जानकर सभी जागरुक देशवासियो को प्रसन्नता हुई कि केन्द्र सरकार ने २५ अक्तूबर के दिन पुराने टाडा कानून के स्थान पर नए आतकवादी निरोधक अध्यादेश के अन्तर्गत २३ आतकवादी सगठनो को आतकवादी घोषित करते हुए उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस समय स्थिति कितनी सवेदनशील और विस्फोटक है, इसका अन्दाजा दो ताजा समाचारो से होता है। पहले समाचार के अनुसार अफगानिस्तान मे चल रहे युद्ध मे इस्लाम के लिए जेहाद करने वालो मे कश्मीरी आतकवादियो ने भी अपने नाम लिखवा दिए हैं। यह सवाद भी मिला है कि अफगानिस्तान में मारे गए हरकत उल मुजाहिदीन के आतकवादियो मे दो का सम्बन्ध कश्मीर से था। स्थिति की गम्भीरता का अन्दाजा इस समाचार से मिलता है कि पाकिस्तान के दक्षिणी महानगर कराची मे २५ अक्तूबर के दिन अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में हो रही बमवर्षा मे मारे गए कश्मीरी आतकवादी की अन्त्येष्टि मे जनता ने भाग लिया। यह प्रसन्नता की बात है कि सीमावर्ती पश्चिमोत्तर प्रदेशो मे विस्फोटक स्थिति देखते हुए भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल विहारी वाजपेयी ने पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ को उनकी ही भाषा मे जवाब देते हुए ठीक चेतावनी देते हुए घोषित किया कि पाकिस्तान तय कर ले कि वह क्या चाहता है– **शान्ति या युद्ध** ? श्री वाजपेयी ने पाकिस्तान और तालिबान का उल्लेख किए बिना घोषित किया कि हम जिससे दोस्ती करते हैं, उससे निभाते हैं, चाहे उसकी कोई कीमत चुकानी पडे। उन्होने स्वीकार किया पर पाकिस्तान के साथ ऐसी कोई बात नहीं है।

उल्लेखनीय है कि भारत की स्वाधीनता का ५४वा वर्ष है, इस अवधि मे भारत ने यत्न करके पडोसी से सदा शान्ति रखी, परन्तु भारत विरोधी उसका दृष्टिकोण और स्थाई व्यवहार देश को सावधान कर रहा है कि उसके भारत विरोधी दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली पर विश्वास नहीं किया जा सकता। आज विश्व और भारत मे आतकवाद जिस तरह से गम्भीर चुनौती दे रहा है, उसके बारे मे शासन और जनता को समय रहते अधिक जागरुक और सगठित होना पडेगा। ११ सितम्बर को आतकवादियो ने ससार के सर्वाधिक शक्तिशाली और धनी राष्ट्र सयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सैंटर की भव्य इमारत और राजधानी वाशिगटन स्थित प्रधान सैनिक कार्यालय पेटागन पर आक्रमण कर उन्हे ध्वस्त किया, उससे स्पष्ट हो गया कि बढते हुए आतकवाद के उन्मूलन के लिए यदि सम्भव हो तो अनेक राष्ट्रो को अन्यथा कम से कम भारत सरीखे राष्ट्र को समय रहते सावधान और सन्नद्ध होकर उनसे जूझकर उसके उन्मूलन के लिए कटिबद्ध होना पडेगा। कश्मीर मे सीमापार के आतकवाद ने जैसी जड जमा ली है और जिस प्रकार पश्चिमोत्तर के सीमावर्ती क्षेत्रो मे आतकवादी हलचल कर रहे है, ऐसे मे उनकी गतिविधि के निवारण के लिए सबको अपना सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। नई सहस्राब्दी के प्रारम्भिक वर्षों मे अपनी उपलब्धियो का ख्याल कर भावी प्रगति के नए लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते तो कहीं अच्छा होता, परन्तु स्थिति का तकाजा है कि शासन और जनता व्यवस्थित होकर आतकवाद की गहरी भीषण समस्या का ठीक लेखा-जोखा कर उसके उन्मूलन के लिए विवेक और दृढता से सगठित अभियान करे।

यह समझदारी की बात है कि विश्वव्यापी सकट के रूप मे उभर रहे आतकवाद के उन्मूलन मे सयुक्त राष्ट्र महासभा के विश्व सहस्राब्दी सम्मेलन मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सभी सदस्य देशों से बिना समय गवाए अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद के उन्मूलन के लिए भारतीय प्रस्ताव को पारित कर उसे कार्यान्वित करने का अनुरोध किया था। पिछले दिनो न्यूयार्क और वाशिगटन मे अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद को बर्बरता और वीभत्स रूप से विश्व की जनता परिचित हो गई है, ऐसे मे कहीं अच्छा हो कि भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तावित भारतीय सन्धि पर विचार कर उसे कार्यान्वित करने के लिए विजयादशमी और दीपावली के पवित्र पर्वो पर देश और उसकी जनता मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन और रामायण से हम स्थायी शान्ति और प्रेम के लिए मर्यादा का जीवन जीने का सकल्प करते परन्तु आतकवाद ने ऐसी भीषण स्थिति पैदा कर दी है कि पहले उससे भारत राष्ट्र और उसकी जनता को खतरे से सावधान होकर उससे जूझने मे दायित्व से जूझना चाहिए।

जागो भारतीय

आज सम्पूर्ण विश्व आतकवाद की चपेट मे है और कई वर्षों से भारत भी इसे झेल रहा है। अनेक निर्दोष सैनिक और नर-नारी इसके शिकार हो चुके हैं, परन्तु समस्त विश्व के इस समस्या से चिन्तित होने के बावजूद अभी हम सजग नहीं हुए हैं। लगभग बीस वर्षों से देश मे आतकवाद बढ रहा है। लगभग प्रतिदिन सीमावर्त्ती प्रदेशो में आतकी जनता का शिकार कर रहे हैं। भारतीय जनता से आह्वान है कि अब तो वह जागे, इस आतकवाद को जड से खत्म कर दो, वह याद करे कि बातो से नहीं प्रत्युत लातो और ताकत से आतकवाद के भूतो का उन्मूलन होगा।

– जगमोहन भटनागर, नेहरू विहार, दिल्ली-५४

आतंकवाद का सफाया

११ सितम्बर को अमेरिकी विश्व व्यापार केन्द्र और पेटागन पर आतकवादी हमलो के बाद अमेरिका आतकवाद को खत्म करने की बात कर रहा है। तालिबान को सत्ता से हटाने और ओसामा बिन लादेन को पकडने से आतकवाद खत्म नहीं होगा। समस्या आतकवाद के खात्मे की है, उसके लिए आतकवाद शुरू करने वाले तत्वो की जानकारी प्राप्त कर उसके उन्मूलन के लिए विश्व स्तर की रणनीति बनानी होगी। हा, आतकवाद का सफाया सम्भव है, यदि तालिबान के साथ-साथ कश्मीर, एव विश्व के दूसरे भागो से आतकवाद खत्म किया जाए। फिलपीन्स, आयरलैण्ड आदि से भी आतकवाद का खात्मा किया जाए जहा कहीं भी। सीमा पार से साम्प्रदायिक आतकवाद की घुसपैठ की गई हो, उसका निवारण होना ही चाहिए।

– शहरे आलम, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

पाक को सबक

अफगानिस्तान और अमेरिका युद्ध मे उलझे हुए हैं इसके पीछे कई कारण हैं। पर पाकिस्तान ने लगभग एक दशक से भारत मे छद्म युद्ध छेड रखा है। सीमावर्त्ती चौकियो पर पाकिस्तानी बन्दूके तोपे गरजती रहती हैं पर अधिकतर मामलो मे भारत शान्त होकर यह सब देखता रहता है। कोई कारगिल प्रकरण को भूला नहीं है, अब जरूरत सीमा की रक्षा करने की ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान मे चल रहे आतकवादी प्रशिक्षण शिविरो को नष्ट करने की है। कश्मीर पर वार्त्ता होनी चाहिए तो केवल इस बात पर वार्त्ता हो कि अनधिकृत कश्मीर राज्य से कब अपनी सेनाए हटाता है। असली मामला यह है कि पाक ने कश्मीर के आधे हिस्से पर गैर कानूनी कब्जा कर रखा है। चिन्ता की बात यह है कि बाग्लादेश से भी सीमा-विवाद चल रहा है। जब हमारे दोनो ओर सीमा सम्बन्धी विवाद हो तो आगे-पीछे हमे अपनी आत्म-रक्षा के लए उन्हे सबक सिखाना ही होगा, जैसा कि कश्मीर के मुख्यमन्त्री फारुख अब्दुल्ला ने कहा है।

– इन्द्रसिंह धिगान, किग्जवे कैम्प, दिल्ली

यजुर्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१८) उत्तरार्द्ध

कर्मफल व कार्य-कारण शृंखला

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(५) यस्मान्न जात परो अन्य.।
न त्वावा अन्यो दिव्यो न जातो न जनिष्यते।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश.।
हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हिंसीदित्येष यस्मान्न जात.
परऽइत्येष *यजु० ३२/३*

स्वयभु ब्रह्म। हिरण्यगर्भ परमात्मा।

अर्थ – (यस्य नाम महद्यश) जिसका प्रत्येक नाम परमात्मा को धारण किए हुए है, अतएव जिसके नाम का स्मरण अर्थात् तदनुकूल आचरण, अत्यन्त कीर्ति प्रदान करता है। (तस्य प्रतिमा न अस्ति) उसका प्रतिमान सदृश या उससे बडा कोई नहीं है अत उसकी आकृति या प्रतिकृति (प्रतिमा) बनाना भी सम्भव नहीं है।

शेष तीन प्रतीक अन्यत्र आए मन्त्रो का निर्देश करते हैं जिनमे उसका यशोगान करके, उससे प्रार्थना की गई है कि हमसे निराश या क्रुद्ध होकर हमें कभी प्रताडित न करे। उनका भावार्थ निष्कर्ष मे दिया गया है।

ये मन्त्र प्रतीक मूलपाठ के साथ न होकर, बाद मे किसी व्याख्याकार द्वारा जोडे गए प्रतीत होते है।

निष्कर्ष – वह असख्य हितकर तथा रमणीय पदार्थो को अपने अन्दर धारण करने से **हिरण्यगर्भ**, सृष्टि से पहले होने से **अजन्मा** और **अनादि**, जगत् का स्वामी होने से **जगदीश्वर**, त्रिलोकी का धारण करने से **धर्ता** या **विधाता**, और सुख प्रदाता होने से **क.** है।

वह दोपाए और चौपाए, निमेषोन्मेष और प्राणापान लेने वाले जीवधारियो का राजा होने से **ईश्वर** तथा आनन्दस्वरूप होने से **क.** है।

वह सबको शरीर और मन तथा बल प्रदान करता है अत सारा विश्व उसकी उपासना करता है। उसके आश्रय मे रहने वालो को जीवन और शान्ति मिलती है। उससे विच्छेद या विमुख होने पर दु ख और मृत्युभय सताते हैं।

ये हिमवान् विशाल पर्वत, अगाध जलमय सागर और अनन्त विस्तार वाली दिशाए (अनन्त आकाश) उसकी महिमा का गाण करते है।

जिससे पर या परम कोई नहीं, वह सब लोको और प्राणियो मे व्याप्त होने से **विष्णु**, सब प्रजाओ का रमण करने से **प्रजापति**, अग्नि, विद्युत, सूर्य तीनो ज्योतियो ये समवेत होने से **त्रिवृत्** और त्रिषन्धि, षोडश कला सम्पन्न होने से **षोडशी**= सर्वथा सम्पूर्ण (एब्सोल्यूट) नाम वाला है।

इन महत्वपूर्ण नामो वाला तथा भूमण्डल का जन्म, अनन्त धुलोक (आकाश) मे व्याप्त जलो और चन्द्रमा का उत्पादक वह ख ब्रह्म – मुझे कभी प्रताडित न करे।

भावार्थ – स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखा है कि – **'हे मनष्यो ! जो कभी देह धारण नहीं करता, जिसका कोई परिमाण नहीं, जिसकी आज्ञा का पालन ही नाम स्मरण है, जो उपासना करने पर उपासकों पर अनुग्रह करता है, वेदो के अनेक स्थलों पर जिसका महत्व प्रतिपादन किया गया है, जो न मरता है, न विकृत होता है, न क्षीण होता है, उसी की सदा उपासना किया करो। यदि इससे भिन्न किसी (व्यक्ति या पदार्थ) की उपासना करोगे, तो पाप से युक्त होकर दु:ख और क्लेशों से प्रताडित होते रहोगे।'**

इसी मन्त्र से नाम जप का प्रचलन हुआ प्रतीत होता है, किन्तु स्वामीजी ने यह भी लिखा है कि प्रार्थित वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। केवल गुड-गुड कहने से मुख मीठा नहीं होता और अग्नि-अग्नि कहने से शीत दूर नहीं होता।

(६) परमात्मन्! देवों और पितरों के समान मुझे जीवनधारक तत्व प्रदान करो

या मेधा देवगणाः पितर श्चोपासिते।
तया मामघ मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। *यजु० ३२–१४*

मेधाकाम.। परमात्मा। निचृद् अनुष्टुप्।

अर्थ – हे परमात्मन् ! (या मेधाम्) मानव को धारण करने वाली प्रज्ञा और धन को (देवगणा·) विविध विद्याओ के विद्वानो के समूह (पितर च उपासते) और पिता बनकर अपने गृहस्थ का पालन करने वाले ज्ञानी जन प्राप्त करके सेवन और सदुपयोग करते हैं। हे (अग्ने) सबको आगे बढाने वाले प्रभो ! (तथा मेधया) करते हैं। हे (अग्ने) सब को आगे बढाने वाले प्रभो ! (तया मेधया) उस मेधा से (मा अध मेधाविन कुरु स्वाहा) सदुपदेश और प्रेरणा द्वारा मुझे मेधा से सयुक्त कीजिए।

विशेष – नि० २–१० धन वाची शब्दो मे - मेध गय (गृह) नृम्ण (बल) भोजन (भोज्य पदार्थ) यश (कीर्ति) श्रव (शास्त्र ज्ञान) और वृत (व्यवहार ज्ञान) परिगणित हैं। अत यहा मेधा की प्रार्थना से इन सब चीजो की प्रार्थना समझनी चाहिए, क्योकि ये सब मनुष्य को धारण करती हैं।

(७) बृहस्पति देव ! मेरी कमियों को दूर करके, मुझे शान्ति दीजिए

यन्मे छिद्र चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृष्णं बृहस्पतिर्मे तद्धातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पति·।। *यजु. ३६-२*

दध्यडाथर्वणः। बृहस्पतिः। निवृत् पंक्ति.।

अर्थ – (मे चक्षुष हृदयस्य मनस वा अति तृष्ण यत् छिद्रम्) मेरे नेत्र, हृदय या मन-मस्तिष्क की चाहे जितनी बडी जो कमी हो (बृहस्पति तद् दधातु) छोटे-बडे लोक लोकानतरो का स्वामी परमात्मा अथवा बृहती वेदवाणी का अधिकृत विद्वान् गुरु उस कमी को पूरा कर दे। और (य भुवनस्य पति) सम्पूर्ण ससार का जो स्वामी है, वह (न श भवतु) हमारे लिए कल्याणकारी हो।

विशेष – इस मन्त्र के ऋषि का शब्दार्थ सकेत करता है कि – यदि कोई सशय रहित होकर, पूर्ण विश्वास के साथ, बृहस्पति देव का ध्यान करेगा और वैसा बनने का प्रयत्न करेगा, तो उसकी सब कमिया दूर हो जाएगी और शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तीनो तरह की शान्ति मिलेगी।

अथर्वा० अ+थर्वतिश्चरति चर सशये।

दध्यड् – दध धारणे, ध्यान धारणा करने वाला।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

आर्यसमाज तुम्हें जगाना है

राम आर्य 'व्यथित'

आर्यसमाज तुम्हें जगना है, पौरुष अपना दिखलाओ।
मानवता फिर सिसक रही है, ढाढस उसको बधवाओ।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

जिनको तुमने वाणी दी थी चलना जिन्हे सिखाया था।
सोये थे निद्रा मे तुमने जाकर जिन्हे जगाया था।
जागे बढे दिशाए जागी एक जमाना जागा था।
हुये अचम्भित देख-देख सब दूर अन्धेरा भागा था।
वे लेकर सब काम तुम्हारे अपने नाम लिखाते हैं।
तुम निराश होकर घर बैठे, दीन दशा पर शरमाओ।।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

आज वही जो कल तक अपने थे हमसे मुह मोड रहे।
युगो युगो का नाता क्यो वे आज अचानक तोड रहे।।
नित्य विधर्मी होते जाते लाल हजारो जाति के।
तिरस्कार पाकर वे कितने चले गए इस जाति के।
और आज भी लाखो वनवासी कष्टो मे जीते है।
इन्हे प्यार से गले लगाओ, दूर न हों यह समझाओ।।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

आज सत्य पर झूठ चढ रहा आडम्बर अड कर बैठा।
पाखण्डो की भीड लगी है अनाचार यो ही ऐठा।
और सहज भोले मानव का होता है अपमान यहा।
दुर्जन फैल रहे धरती पर दूर दूर तक यहा वहा।
सत्य सनातन वैदिक पथ का दिग्दर्शन करवाओ।
मानवता के तुम प्रहरी हो अपनी हस्ती बतलाओ।।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

उठो ! आज फिर बढो रवानी लेकर मार्ग प्रशस्त करो।
आज जवानी लेकर जागो दुष्चालो को ध्वस्त करो।
मिलजल कर ही रहना होगा सज्जनता का मान करो।
मानवता का मान घटाने वालो का अपमान करो।
आतकी, हत्यारो के मसूबो को नाकाम करो।
यह सकट का समय कठिन है, अपनी शक्ति दिखलाओ।।
आर्यसमाज तुम्हें जगना है

देखो रे ! निर्लज्ज मीडिया ने सस्कृति पर घात किया।
फूलो, कलियो पर बेमौसम आज तुषारापात किया।
मानवता की पुण्य धरोहर शील बेचती नारी है।
अर्धनग्न अश्लील दृश्य मे नाच रही बेचारी है।
हत्या, लूट, बलात्कार के चित्र यही दर्शाता है।
घृणित सस्कारो के दर्शन की मनमानी हटवाओ।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

जिन कुरीतियो के उन्मूलन हेतु तुम्हारा जन्म हुआ।
वे विषवेली सी बढती जाती हैं जीवन कठिन हुआ।
बरसाती घासो की भाति फैल रही है बेहद आज।
लोग प्रश्न करते हैं बोलो क्या करता है आर्यसमाज।
उन्हें बता दो हम जागे हैं नया दौर फिर लाएगे।
और क्राति का बिगुल बजाओ ओमृध्वजा फिर लहराओ।।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

कुठा मे जीने वालो को कह दो मत विषवमन करो।
राष्ट्र-विरोधी, देशद्रोहियो का ताकत से दमन करो।
लेखराम श्रद्धानन्द के बलिदानो को स्मरण करो।
शक्तिवान वनशक्ति दिखाओं मत दुश्मन को सहन करो।
हसराज की भाति जीवन को हस-हस कर होम करो।
दयानन्द के सपनो को साकार बनाने लग जाओ।
आर्यसमाज तुम्हे जगना है

– १८६, 'आर्यनिकुंज', शिक्षक कॉलोनी, विदिशा, मध्यप्रदेश

अंग्रेजी के रहते ईमानदारी भी आना असम्भव

– स्व० डॉ० राम मनोहर लोहिया

अंग्रेजी जबान अब हिन्दुस्तान के सार्वजनिक मामलो से खत्म हो जानी चाहिए। इसमे देर करना न केवल भाषा के मसले को उलझा देना और बिगाड देना होगा बल्कि देश के दूसरे मसलों को भी बिगाड देना होगा। भाषा से देश के सभी मसलो का सम्बन्ध है। जिस जबान मे सरकार का काम चलता है, इससे समाजवाद तो छोड ही दो प्रजातन्त्र भी छोडो, ईमानदारी और बेईमानी का सवाल तक जुडा हुआ है। यदि सरकारी और सार्वजनिक काम ऐसी भाषा मे चलाए जाए जिसे देश के करोडो आदमी न समझ सके तो होगा केवल एक प्रकार जादू टोना। जिस किसी देश मे जादू, टोना टोटका चलता है वहा क्या होता है ? जिन लोगो के बारे मे मशहूर हो जाता है कि वे जादू वगैरह से बीमारिया आदि अच्छी कर सकते हैं, उनकी बन आती है। लाखों-करोडो उनके फदे मे फसे रहते है। ठीक ऐसे ही जबान का मसला है। जिस जबान को करोडो लोग समझ नहीं पाते, उनके बारे मे यही समझते है कि यह कोई गुप्त विद्या है, जिसे थोडे लोग ही जान सकते हैं। ऐसी जबान मे जितना चाहे झूठ बोलिए, धोखा दीजिए सब चलता है, क्योकि लोग समझेगे ही नहीं। आज शासन मे लोगो की दिलचस्पी हो तो कैसे हो ? वह कुछ जान ही नहीं पाते कि क्या लिखा है क्या हो रहा है। सब काम केवल थोडे से अग्रजी पढे लोगो के हाथ मे है। बाकी लोगो पर इन सबका वही असर पडता है – जो जादू टोने या विद्या का।

अपने देश मे पहले से ही अमीरी गरीबी, जात–पात–धर्म और पढे–वेपढे के आधार पर एक जबरदस्त खाई है। यह विदेशी भाषा उस खाई को और चौडा कर रही है। अपनी भाषाए पढे–लिखे केवल दस फीसदी लोग हो सकते हैं। पर समझ सब सकते हैं। लेकिन अग्रेजी तो अधिक से अधिक १०० मे से एक आदमी समझ सकता है, वह भी मुश्किल से। मैंने जानबूझ कर अपनी भाषा कहा है, हिन्दी नहीं कहा देश मे और भी भाषाए है, केवल हिन्दी नहीं और सभी एक सी है।

बेवकूफ हैं वे

झगडे, हिन्दुस्तान की सभी भाषाओ और अग्रेजी के बीच है, हिन्दी और दूसरी भाषाओ के बीच नहीं। मेरी समझ मे वे लोग बेवकूफ हैं जो समझते हैं कि अग्रेजी रहने पर जनतन्त्र भी आ सकता है। हम तो समझते है कि अग्रेजी के होते यहा ईमानदारी आना भी असम्भव है। थोडे से लोग इस अग्रेजी के जादू द्वारा करोडो को धोखा देते रहेगे। आप कहेगे कि बेईमानी चलेगी। जब कोई किसी अफसर से मिलने जाता है तो उसका काम होना इस पर भी निर्भर करता है कि उसके कपडे कैसे हैं। सफेद कपडे पहनने वाले का काम वह जल्दी करता है क्योकि आम तौर पर सफेद कपडे वाला ही अग्रेजी जानने वाला भी होता है।

दलालों का राज

इसी तरह हमारे अफसर आपसी बातचीत मे भी अग्रेजी का ही इस्तेमाल करते हैं। दूसरे उनके चारो ओर मातहत भी ऐसे ही लोग रह पाते हैं, जो अग्रेजी जाने। हिन्दुस्तान के करोडो लोग इन अफसरो की बाते समझ ही नहीं पाते और उन्हे अग्रेजी जानने वाले दलालो की मदद लेनी पडती है। दूसरे के रिश्तेदारो की जो आम तौर पर ऊची जात वाले ही होते हैं, बन आती है और कुनबापरस्ती का बाजार गर्म होता है। अपने रिश्तेदारो और सम्बन्धियो को ही वे अपने साथ नौकरी पर रखते हैं। इसका कारण यह है कि वे अग्रेजी अच्छी तरह जानते हैं और उनसे काम चल जाता हैं। जो अग्रेजी नहीं जानते उनका गुजारा नहीं हो पाता। इसी तरह अफसरो की बाते हिन्दुस्तान के करोडो लोग नही समझ पाते और जो दलाल वगैरह होते हैं उन्हे पैसा बनाने का मौका मिल जाता है। और अफसरो को अपना काम निकालने मे आसानी रहती है। कहने का मतलब यह है कि जब तक अग्रेजी की बीमारी बनी रहेगी, तब तक ईमानदारी कायम हो ही नहीं सकती। एकदम नामुकिन है। मेरा यह मतलब नहीं कि अग्रेजी के खत्म होते ही ईमानदारी आ जाएगी। हा, इतना मेरा विश्वास है कि अग्रेजी खत्म हो जाएगी तभी ईमानदारी कायम हो सकती है, और हो भी जाएगी।

प्रस्तुत लेख स्व० डॉ० राममनोहर लोहिया ने अपने जीवन काल में काफी वर्षो पूर्व लिखा था। वे अत्यन्त दूरदर्शी व्यक्ति थे उस समय व्यक्त किए गए हिन्दी भाषा सम्बन्धी उनके विचार वर्तमान समय में पूर्णत: सटीक बैठ रहे है। यदि उस समय उनकी बात पर ध्यान दिया जाता तो देश में हिन्दी भाषा की यह दुर्दशा नहीं होती जो आज हो रही है।

– सम्पादक

घातक उदासीनता

भाषा की वजह से सब बाते लोग समझ ही नहीं पाते और खुफिया तौर पर ही सब बेईमानिया चलती रहती हैं। खुफिया से मतलब यहा आम जनता से छिपी हुई है। इन सब कार्यवाहियो मे हिन्दुस्तान मे करीब तीस लाख अग्रेजीदा लोगो के अलावा किसी को दिलचस्पी या शिरकत नहीं है। ४० करोड लोग इन ३० लाख के आपसी झगडे और तनावो से अपने को दूर रखते हैं। और उनका केवल यही कहना रहता है कि हमे क्या कोई बने। सामान्य लोगो को न तो इतनी समझ ही है कि इस व्यापार को समझे और न दिलचस्पी ही। वही ३० लाख लोग आपस मे बटवारा कर लेते हैं और उन्हीं के बीच सारी छीना–झपटी चलती रहती है। यह सब बाते ३० करोड तक पहुच पाने की पहली शर्त यही है कि सब काम ऐसी भाषा मे हो जिसे आम लोग समझ पाए। उस समय योग्यता का चुनाव भी केवल ३० लाख मे से नहीं बल्कि ४० करोड मे से होगा। योग्यता भी हिन्दी–उर्दू आदि दूसरी भाषाओ के आधार पर देखी और जाची जाएगी।

पलटन में भी असन्तोष

इस भाषा के घपले की वजह से हमारी पलटन मे भी काफी असन्तोष है। हिन्दुस्तान मे पलटन की हालत कोई अच्छी नहीं चल रही है। अफसर काफी नाखुश है। देश की पलटन का असन्तुष्ट रहना कितना खतरनाक हो सकता है, खास तौर पर तब जब उस असन्तोष के कारण भी सही हो। असन्तोष का एक हिस्सा तो नौकरी और तनख्वाहो की वजह से है सो उसको तो मैं छोड देता हू।

पर एक दूसरा हिस्सा सब के ध्यान देने लायक है। हमारे यहा सिविल अफसर का ओहदा पलटनी अफसर से ऊचा समझा जाता है। सिविल नौकरी का बाबू तक पलटनी बाबू से ऊचा रहता है। आप इससे इस चीज को समझ लीजिए कि जब रक्षा विभाग मे ऊचे पलटनी अफसरो की बैठक होती है तो उसका सभापतित्व एक सिविल अफसर, जो रक्षा सचिव होता है, करता है। यह भी नहीं कि रक्षा–मन्त्री ही कर ले। पुराने वक्त से ही हमारे यहा यह चला आ रहा है कि पलटन के ऊचे अफसरो की अग्रेजी बहुत अच्छी होनी चाहिए। पहले ऊचे अफसर विलायत से पढकर ही आते थे तो सीख भी जाते थे, पर अभी यह हाल है कि बिना अग्रेजी का बढिया ज्ञान हुए ऊची अफसरी मिलना मुश्किल है। अब भला बताइए, पलटनी अफसरो की योग्यता इस बात से परखी जाएगी कि वह अग्रेजी कैसी बोलता है या इस बात से कि वह दुश्मन का मुकाबला कितनी अच्छाई से कर सकता है और लडाई की कला कैसी जानता है। पिछली लडाई का सबसे बडा जनरल एक जर्मन था, और अग्रेजी का एक लफ्ज भी नही जानता था, हा लडना जानता था। हिन्दुस्तान मे एक से एक वीर जातिया बसती है। वे लडाई की कला मे प्रतिभा दिखा सकती है। पर अफसरी के लिए उन्हे सीखना पडती है अग्रेजी, न सीखे तो अफसर नहीं बन सकते। केवल भाषा की वजह से ही उनकी काबिलियत का इस्तेमाल नहीं हो पाता। इसलिए मै कहता हू कि सार्वजनिक उपयोग से अग्रेजी हटाए बिना कोई काम नहीं बन सकता। अग्रेजी हट जाने पर ही ४० करोड को अपनी योग्यता दिखलाने का मोका मिलेगा।।

जापान का उदाहरण

अब सवाल उठता है कि क्या हिन्दुस्तान मे ऐसी हालत है कि बिना अग्रेजी काम चला सकते हैं। कुछ लोग कहते है कि कैसे करोगे ? हिन्दी मे शब्द नहीं है। इसके जवाब मे मैं जापान का एक किस्सा बता देता हू। यह किस्सा १९४५ का है, जब अमरीकी फौजो ने जापान पर कब्जा कर लिया था। उसी जमाने मे जापान से बहुत से लोग विज्ञान और दूसरी नयी चीजो की जानकारी के लिए विदेश पढने भेजे गए। जब ये लोग वापस आ गए तो इनके सामने यह सवाल उठा कि किस भाषा मे काम चलाया जाए। उन लोगो ने कहा कि हमारे पास जापानी शब्द इतने नहीं है कि हम जिन शब्दो को पढ कर आए है उनके बदले अपने शब्द इस्तेमाल कर सके। **शेष भाग पृष्ठ ७ पर**

कर्मवीर जयानन्द भारतीय की जयन्ती समारोह पूर्वक सुसम्पन्न

आचालिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के तत्वावधान मे गढवाल के इतिहास मे क्रान्तिकारी समाज सुधारक, परमदेशभक्त, क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सेनानी, भारतीय आन्दोलन के ज्वाज्ल्य नक्षत्र, तेजस्वी-निर्भीक-दृढ प्रतिज्ञ वैदिक धर्मावलम्बी ऋषिभक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२० वीं जयन्ती दिनाक १७ अक्तूबर, २००१ को साय ३ ३० बजे से ७ ३० बजे तक श्री मोहनलाल जिज्ञासु जी के निवास स्थान बी–१/७७ यमुना विहार दिल्ली मे श्री गोविन्दराम शास्त्री की अध्यक्षता मे समारोहपूर्वक मनाई गई। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे श्री अरमवत्त आर्य यज्ञमान बने तत्पश्चात समारोह का आरम्भ हुआ जिसमे विशिष्ट आर्यनेताओ, समाज सभासदो ने भाग लिया। श्री मोहनलाल जिज्ञासु द्वारा कर्मवीर जयानन्द भारतीय की सक्षिप्त जीवनी पर तथा उनके अनेकानेक सामाजिक राजनैतिक कार्यों पर प्रकाश डाला गया। उन्होने स्व० श्री पीताम्बर सुधाशु द्वारा स्व० भारतीय पर लिखी कविताओ को भी समारोह मे पढा। समारोह मे स्व० श्री शान्तिप्रकाश जी प्रेम को भी याद किया गया जिन्होने कर्मवीर जयानन्द भारतीय नामक पुस्तक तथा जयानन्द गौरव गान नामक पुस्तिका प्रकाशित कर उनकी स्मृतियो को मानव समाज के इतिहास मे प्रेरणास्रोत्र प्रकाशित किया। समारोह मे श्री अमरदत्त जी द्वारा जयानन्द गौरव गान पढी गई। श्री जिज्ञासु जी ने कहा कि 'हमे कृणवन्तो विश्वमार्यम के मार्ग पर चलना चाहिए ताकि समाज प्रगति के पथ पर चले। हमे किसी भी प्रकार आशक्त नहीं होना चाहिए क्योकि भारतीय जी की आत्मा हमारे पास है जिनकी प्रेरणाओ से हमारी समाज तथा अनेकानेक आर्य समाजे कार्य कर रही हैं। जिस प्रकार से भारतीय जी ने सामाजिक कुरीतियो, धार्मिक आडम्बरो, अन्धविश्वास के विषमताओ का सामना किया वह हमारे समाज मे प्रेरणादायक ही नहीं बल्कि चिरस्मरणीय है। समाज प्रधान श्री धर्मसिह शास्त्री जी ने कहा कि 'उत्तराचल के इतिहास मे उन्हे सच्चे देशभक्त और समाज के जर्जर सामती ढाचे को एक ही झटके मे तोडने के लिए तत्पर एक प्रखर क्रान्तिकारी के रूप मे सदैव याद किया जाएगा। समाज मन्त्री श्री हीरासिह जी ने कहा कि हम भारतीय जी के ऋणी हैं, उऋण होने के लिए हमे गढवाल मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को आगे ले जाकर वहा की सामाजिक विषमताओ को दूर करना होगा।

अध्यक्षीय भाषण मे श्री गोविन्दराम शास्त्री ने कहा कि उत्तराचल राज्य बनने के पश्चात उत्तरांचल विधानसभा मे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के कार्यालय मे स्व० भारतीय का चित्र लगा होना चाहिए तथा वहा के पाठ्य पुस्तको मे भारतीय जी का जीवन परिचय का पाठ होना चाहिए क्योकि भारतीय जी ने ही सबसे पहले उत्तराचल मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा आर्यसमाजो की स्थापना की थी और देश की आजादी के लिए ६ सितम्बर १९३२ मे हाथ मे तिरगा थामे इन्कलाब जिन्दाबाद काग्रेस जिन्दाबाद, मालकम लेली गौ बैक जैसे गगनभेदी नारो की गूज से पौडी मे आए तत्कालीन गवर्नर सर-विलियम मालकम हैली को भगा दिया था और उन्होने अपने आस्तीन मे छुपाकर रखे तिरगे झण्डे को निकालकर विलियम हैली की सभा मे खलबली मचा दी थी।

वनचारी में महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र का स्थापना दिवस

दिल्ली–आगरा राजमार्ग पर ८२ किलोमीटर दूर अवस्थित जिला फरीदाबाद की तहसील होडल मे अवस्थित बनचारी के महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र का ७ वा स्थापना दिवस रविवार ४ नवम्बर, २००१ को मनाया जाएगा। दिल्ली सरकार के खाद्यमन्त्री डॉ० योगानन्द शास्त्री मुख्य अतिथि होगे। सभा के अध्यक्ष महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती और विशिष्ट अतिथि श्री भगवान सहाय रावत विद्यमान होगे। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्म प० मदनमोहन शास्त्री होगे।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज करौल बाग, नई दिल्ली-५

प्रधान – श्री कीर्ति शर्मा
वरिष्ठ उपप्रधान – श्री ओमप्रकाश आहूजा
उपप्रधान – श्री सतीश कल्हन
मन्त्री – श्री तिलकराज खुल्लर
उपमन्त्री – डॉ० प्रदीप सुनेजा
उपमन्त्री – श्री कमल आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री हर्षवर्धन बत्रा
कार्यालयाध्यक्ष – श्री मेलाराम सोनी
पुस्तकालयाध्यक्ष – आचार्य श्री हरिदेव सिद्धान्त भूषण

आर्यसमाज डी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली ५८

प्रधान – श्री हर्षदेव सिन्हा
उपप्रधान – श्री रामचन्द्र तवर
मन्त्री – श्री योगी मिगलानी
कोषाध्यक्ष – श्री सुरेन्द्र नाथ धीर

वेदविज्ञान दयानन्द पुरोधा – दिवस्पुत्र भारथी नहीं रहे

दयानन्द के गम्भीरोदात्त वैज्ञानिक चिन्तक ७१ वर्षीय प० दिवस्पुत्र भारथी (पूर्वनाम प० अभिविनय भारथी) का ५ अक्तूबर २००१ को अचानक निधन का उनके सुपुत्र आर्षपाणि शर्मा से समाचार पाकर स्तब्ध रह गया। मैं अपने मन से कहा रहा था कि अहो ! आज दयानन्द मन्तव्यो तथा वैदिक सिद्धान्तो का अदभुत प्रखर व्याख्याता तथा ज्ञान कोष हमसे विदा हो गया।

रगून (बर्मा) मे ब्रह्मण कुल मे जन्मे प० अभिविनय भारथी नाम से विख्यात, बाद मे पश्चिमी पटेल नगर नई दिल्ली को अपनी कर्मस्थली बनाया। वर्णाश्रम की व्यवस्था का पालन करते हुए लगभग ६० वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ की विधिवत् दीक्षा लेकर पण्डित जी भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी' के नाम से प्रसिद्ध हुए। भारत मे आने के बाद पदवाक्य प्रमाणज्ञ प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जैसे महामनीषी विद्वानो से शास्त्रो का अध्ययन कर वेदो, ब्राह्मणग्रन्थो, उपनिषदो, श्रौत-गृह्यसूत्रो व वेदागो का परम्परागत अध्ययन करके विद्वद्वरेण्य बने।

प० युधिष्ठिर मीमासक, आचार्य विश्वश्रवा जैसे विद्वद्धौरेय शास्त्रार्थवेत्ताओ के साथी रहे प० भारथी अपने अनोखे व्यक्तित्व प्रतिभा एव वक्तृत्वकला के धनी थे।

आर्यसमाज के क्षेत्र एव अन्यत्र भी उन्हे प्राय बडा ही अक्खड स्वभाव वाला 'दुर्वासा' सदृश माना जाता रहा, यह केवल उन्हीं लोगो के मस्तिष्क मे छवि स्थापित थी, जो उनके सान्निध्य एव वैदिक सिद्धान्तो व आचरण से दूर रहा हो। प्रारम्भ में मेरी भी ऐसी ही धारणा थी। आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में जब मे धर्माचार्य था, सौभाग्यवशात् ज्यो-ज्यो उनके सन्निकट आकर सान्निध्य पाया तो मेरा सारा भ्रम काफूर होता गया और पाया कि ये तो 'नारिकेल समाकारा' हैं। वेद एव दयानन्द सिद्धान्त विरोधियो के लिए वस्तुत वे कडक थे, ऐसे लोगो के साथ उनका कोई तालमेल नहीं था। यदि उनसे कोई छोटी अवस्था वाला उनको अपनी प्रतिभा, आचरण, विद्यादि सद्गुणो से प्रभावित कर देता था, तो उसके सरे आम चरण स्पर्श करने मे अपना सौभाग्य समझते थे।

सावला रग व कद के छोटे होते हुए भी सदा सफेद धोती, कुर्त्ता, सफेद जाकेट एव सफेद पगडी इस एकमात्र वेशभूषा के धारण करने पण्डित जी बहुत आकर्षक तथा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे। पण्डित जी की गुणग्राहकता एव विद्याशयता से प्राय लोग कम ही परिचित थे। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे देशी-विदेशी भाषाओं, विद्याओ को पढने के अतिरिक्त वाद्य-सगीत, नृत्यादि विद्याओ को भी सीखने का वर्णन किया है। पण्डित जी इस कसौटी पर भी खरे उतरे, फलत उन्हे अनेक प्रकार के वाद्य, ठुमरी, दादरा आदि ताल तथा नृत्य आदि अनेक शास्त्रीय विद्याओं मे दक्षता प्राप्त थी। संस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी आदि भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान होने के अतिरिक्त उन्हें कुरान, पुराण, बाईबिल तथा गुरुग्रन्थ साहिब की बहुत अच्छी जानकारी थी। वैदिक वाङ्मय के अगाध पाण्डित्य का प्रतिमान उनके भाषणो, व्याख्यानों तथा प्रवचनो से अजस्र स्रविज होता ही था। उनके द्वारा व्यक्त अश्यानर्षत्-समाम्नाय उपदेशकालीय सदृश ज्ञान धारा से प्रसूत शोध चिन्तन व लेखों के माध्यम से उनकी त्रैमासिक 'वेदोद्धारिणी' पत्रिका उनके जीवन्त ज्ञानिक इतिवृत्त तथा प्रशस्त यशोगाथा को बताती है।

अपने जीवन को आद्यन्त सघर्षपूर्ण जीने के आदि रहे प० जी ने कभी भी हार नहीं मानी, लेकिन मृत्यु के दुर्दान्त शाश्वत काल से ५ अक्तूबर, २००१ को हार मानते हुए हम सभी को अपनी स्मृतिया देकर हमे बिलखता छोड गए। वस्तुत भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी वैदिक सिद्धान्तो एव महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों की वैज्ञानिक, तार्किक तथा सटीक सारगर्भित व्याख्या करने वाले विशुद्ध तापसी ब्राह्मण एव आर्यजगत् के तेजस्वी उत्साही नक्षत्र थे।

श्री हरगोविन्द सिंह जी आर्य दिवंगत

कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्य डॉ० सुमेधा जी पिता जी तथा गुरुकुल के सस्थापक महाशय श्री हरगोविन्द सिह का ८५ वर्ष की आयु मे २६-०६-२००१ को देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कार कुलभूमि मे वैदिक विधि से किया गया।

उनकी महर्षि दयानन्द मे अगाध श्रद्धा थी, आजीवन आर्य सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार तत्पर रहे। अपने सकल्प कार्यान्वित करने के लिए उन्होने अपनी पुत्री डॉ० सुमेधा जी आचार्या को कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका बनाया तथा भूमि का दान कर अपने क्षेत्र मे गुरुकुल की स्थापना करके पुत्री को उसके सचालन के लिए समर्पित कर दिया।

७ अक्तूबर २००१को उनकी स्मृति मे शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमे दिल्ली-हरियाणा आदि के गणमान्य जनो ने भाग लिया तथा दिवगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि दी।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

अंग्रेजी के रहते ईमानदारी भी आना असम्भव

सरकार ने उत्तर दिया कि सब काम जापानी में होगा। अगर ऐसे लफ्ज आए जिनकी जापानी न हो सके तो उन्हें वैसे के वैसे ही इस्तेमाल किया जाए और धीरे-धीरे उनके जापानी पर्याय निकालने की कोशिश की जाए। इस तरह से उन्होने किया और आज आप देखे कि उनका काम काज कितने मजे मे चल रहा है और अब तक कोई सवाल नहीं उठा। पर हमारे यहा मामला उलटा है। कहते हैं जब शब्द बन जाएगे तब देशी भाषाए शुरू करेंगे। यह कितनी खतरनाक हालत है कि अपनी भाषाए प्रतिक्रियावाद की और विदेशी भाषा प्रगति की प्रतीक समझी जाती है। कई लोग सिर्फ इसी वजह से खुलकर देशी भाषाओ की हिमायत नहीं कर पाते कि कहीं वह भी प्रगति के दुश्मन न समझ लिए जाए। इन सब बातो का फायदा उन लोगो ने उठाया, जो अंग्रेजी पढे-लिखे हैं और देश से अपने एकाधिपत्य को उठने देना नहीं चाहते।

एक षड्यन्त्र

देश के तीस लाख आदमी नहीं चाहते कि अंग्रेजी खत्म हो और उनकी ताकत घटे। इसके लिए उन्होने दुनिया भर के अडगे खडे किए। हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओ से हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता चलवायी। सरकार ने उनकी मदद की। हिन्दी और अंग्रेजी के असली झगडे को नजरअन्दाज कराने के लिए ये झूठे झगडे दूसरी भाषाओ से चले। सरकारी नीति रही कि अंग्रेजी की साम्राज्यशाही उन्हे खत्म नहीं करनी थी, तो उन्होने किया यह कि हिन्दी को भी उसी साम्राज्यशाही का एक छोटा हिस्सा दिलाने की कोशिश की। अंग्रेजी का कुछ हिस्सा हिन्दी को भी मिल जाए, यही सरकारी नीति रही।

अब यह साफ बात है कि हिन्दी साम्राज्यशाही नहीं चल सकती। गैर हिन्दी इलाके इसको कभी स्वीकार नहीं करेगे। सरकार की इस साजिश ने हिन्दी को बहुत नुकसान पहुचाया। गैर हिन्दी लोगो को अपनी नौकरियो वगैरह का डर लगा। सरकारी नीति के कारण ही कई बडे इलाको के लोग हिन्दी की कट्टर मुखालफत करने लगे। आपको जानकर ताज्जुब होगा कि महात्मा गांधी के बाद मैं पहला आदमी हू जो तमिलनाडु मे लगातार २५ सभाओ मे हिन्दी में बोला। लोगों ने मुझे क्यों सुना ? तमिलनाडु मे हिन्दी का घोर विरोध है। मैं जानता हू कि मुझे लोगों ने इसलिए सुना कि मैं हिन्दी और तमिल को बराबरी देना चाहता हू।

अंग्रेजी नामपट

आज आप किसी बाजार मे निकल जाइए। दोनो तरफ सब नाम पट मिलेगे अंग्रेजी मे। यहा तक कि नाई की दुकान पर भी बोर्ड होगा – फैंसी हेयर ड्रेसर, इससे फायदा क्या ? कौन समझता है ? आप सब से मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर सोचे और दुकानदारो से कहे कि ये अंग्रेजी नामपट गुलामी का नक्शा हमारे दिमाग मे ताजा रखते हैं।

गुलामी की निशानियां

किस-किस बात का जिक्र किया जाए। चारो तरफ गुलामी की निशानिया बाकी हैं। अंग्रेजी अखबारो को ही लीजिए। ये गुलामी के सबसे बडे प्रतीक हैं। दुनिया के किसी भी देश मे आप दैनिक अखबार विदेशी भाषा में नहीं पाएगे। हा, मासिक पत्र या साप्ताहिक पत्र जो विशेष विषयों से सम्बन्ध रखते हैं कभी विदेशी भाषाओ में भी निकाले जाते हैं। पूरे यूरोप से मैंने सिवाय पेरिस और कहीं विदेशी भाषा का दैनिक पत्र निकलते नहीं देखा। पेरिस मे एक है और वह अमरीकनो ने अपने लोगो के लिए, जो लाखों की तादाद मे वहा है, निकाला है। हमारे यहा तो अखबार ज्यादातर अंग्रेजी मे है। नतीजा यह है कि आप लोगो को यह विश्वास हो गया है कि अंग्रेजी के अखबार ज्यादा अच्छे हैं। हमारे यहा अंग्रेजी मे छपने वाले अखबारो की करीब आठ लाख प्रतिया निकलती है। थोडे से अखबार जो हिन्दी मे निकलते हैं, उनकी दशा ही खराब है और हो भी कैसे नही आप लोग खुद भी विज्ञापन देना हो तो अंग्रेजी अखबार ही पसन्द करते हैं। सरकार खुद अधिक विज्ञापन अंग्रेजी अखबारो को ही देती है। ख्याल बन गया है कि अंग्रेजी अखबार अधिक लोग पढते हैं और उनमे सूचनाए भी अधिक होती है। असल बात यह है कि यदि आप और सरकार इन्हे विज्ञापन देना बन्द कर दे तो ये अखबार दूसरे दिन बन्द हो जाए। मैं तो आप से कहना चाहता हू कि सरकार को यह नीति फौरन अपनानी चाहिए, नहीं तो हिन्दी के अखबार उठ ही नही सकते और मुल्क के ज्यादातर आदमी दुनिया की जानकारी हासिल नहीं कर सकते। सरकारी विज्ञापन केवल देशी अखबारो को मिले और दूर मुद्रक भी देशी कर दिए जाए तो यह मामला अपने आप सुधर जाएगा। आप लोगो से भी मेरी यही प्रार्थना है कि अंग्रेजी अखबार छोडकर अपनी देशी भाषा के अखबार पढे। तभी उनकी उन्नति हो सकती है।

वे बेवकूफ हैं जो कहते हैं कि अंग्रेजी रहने पर जनतन्त्र भी आ सकता है। हम तो समझते हैं कि अंग्रेजी के होते यहां ईमानदारी आना भी असम्भव है।

देशीय भाषाओं को प्रतिष्ठा मिले

हमारा कहना है कि सबसे पहले तो अंग्रेजी सब जगह से आज ही समाप्त कर दी जाए। यह पहली बात है। इसके बाद हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओ का प्रश्न रह जाता है। इसके लिए हमारा कहना है कि केन्द्र की भाषा हिन्दी रहे और हर सूबे मे अपनी-अपनी भाषा चले। सूबे केन्द्र को अपनी भाषा मे लिखे और केन्द्र हिन्दी मे लिखे। बी०ए० तक पढाई और छोटी अदालतो का काम क्षेत्रीय भाषाओ मे चलाया जाए और एम०ए० की पढाई और हाईकोर्ट का काम हिन्दी मे हो। बी०ए० तक अपनी भाशा के साथ हिन्दी भी वैकल्पित विषय रहे।

गलतफहमी

बहुत से लोग डरते है कि मुल्क टूट जाएगा। मेरी तो समझ मे नहीं आता कि मुल्क अंग्रेजी से कैसे जुडा हुआ है ? इस गलतफहमी का बहुत बडा कारण यह भ्रम भी है कि अंग्रेजी विश्व भाषा है। मैं आप से प्रार्थना करता हू कि आप इस भ्रम को दूर कीजिए। अंग्रेजी विश्व भाषा नहीं अंग्रेजी तो क्या कोई भी भाषा विश्व भाषा नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेजी दुनिया मे फैली उसी तरह उससे पहले सस्कृत, अरबी, लैटिन आदि भाषाए भी फैल चुकी हैं। आज उनका साम्राज्य नहीं है और मैं कहता हू कि अंग्रेजी का भी नहीं रहेगा। क्या आप समझते है कि चालीस करोड चीनी और बीस करोड रुसी कभी भी इस बात को स्वीकार करेंगे कि अंग्रेजी विश्वभाषा मानी जाए। सब बातो मे राष्ट्रीय आत्म सम्मान का प्रश्न आ जाता है। मैं समझता हू कि यदि कभी भी कोई भाषा विश्व भाषा बन सकी तो वह किसी देश की भाषा नहीं होगी, बल्कि सभी देशो की भाषा का सम्मिक्षण होगी।

एक जरूरी विषय

दस साल मे भी अंग्रेजी हमारे यहा से गयी नहीं, घटी भी नहीं। इस तरह से घट भी नही सकती। आज स्कूलो व कालेजो मे अंग्रेजी एक जरूरी विषय है और उससे राष्ट्र का महान नुकसान हो रहा है। हमारे सत्तर-अस्सी फीसदी बच्चे औसत बुद्धि के होते हैं और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान हासिल करने के प्रयत्न मे उनका इतना कचूमर निकल जाता है कि भूगोल, इतिहास, विज्ञान आदि विषय मे पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। मै हिन्दुस्तान की जनता से और खास तौर से उनसे जो इस भाषा नीति को मानते हैं, अपील करता हू कि वे सारे देश मे सभाए करे और जुलूस निकाले और प्रतिज्ञा करे कि – **'हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अंग्रेजी का सार्वजनिक इस्तेमाल हम खुद तो आज से ही बन्द करने हैं और सरकारी स्तर पर भी हर शान्ति पूर्ण तरीके से इसे बन्द कराएगे।'** नाम पटो पर से अंग्रेजी भाषा व अक्षर मिटाने के लिए सीढी, रग व कूची समेत अभियान करे। स्कूल, कालेजो मे माध्यम विषयक नीति पर और अंग्रेजी को केवल ऐच्छिक विषय बनाने के लिए सबल आन्दोलन होना चाहिए। जहाअंग्रेजी दैनिको के वर्तमान पाठक अपनी आदतो को, चाहे कितनी ही कम सख्या मे क्यो न हो, बदलने को तैयार हो, वहा अंग्रेजी दैनिको की होली जलाई जाए। अदालतो मे व फैसलो मे अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध हो और जहा जनमत तैयार किया जा सके वहा सामूहिक अडगा वाला जाए। तीन या चार महीने का नोटिस देकर अंग्रेजी मे खबर भेजने वाले तार दूरमुद्रक मशीनो को तोडा जाए। ऐसी दुकानो का बहिष्कार कराए जा अपने नामपट से अंग्रेजी हटाने को तैयार नही हो।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 1-2/11/2001 दिनाक २६ अक्तूबर से ४ नवम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 1-2/11/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

क्रोध को कैसे दूर करें

– विवेक भूषण दर्शनाचार्य

क्रोध को छोडने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने चाहिए।

- क्रोध को दूर करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए, कि 'मैं इस क्रोध से बहुत दु खी हो चुका हू। अब मैं इसे छोड ही देना चाहता हू।
- क्रोध को छोडने के लिए दृढ सकल्प होना चाहिए, कि 'मैं पूरा परिश्रम करके क्रोध को छोडकर श्वास लूगा।'
- जब तक क्रोध पूरी तरह छूट न जाए, तब तक क्रोध को छोडने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते ही रहे।
- शान्त स्वभाव के व्यक्तियों के साथ उठना-बैठना आदि व्यवहार रखें, क्रोधी स्वभाव वालों से दूर रहे।
- 'दूसरे लोग मेरे साथ कम से कम ऐसा – (अच्छा) व्यवहार तो अवश्य ही करे,' इस प्रकार की इच्छाओ को कम करते जाए।
- प्रतिदिन कुछ समय – (२–३ घण्टे) मौन रहने का अभ्यास करे।
- जब कोई क्रोध की घटना उपस्थित होने वाली हो, तब अवश्य ही मौन हो जाए। इसके लिए तबतक मुह मे थोडा पानी भर कर रख सकते हैं, जब तक वह क्रोध की घटना समाप्त न हो जाए। बाद मे उस पानी को फेक देवे।
- यदि क्रोध की घटना के समय मौनरहना सम्भव न हो और बोलना आवश्यक ही हो तो बोलने से पूर्व उसी समय यह दृढ सकल्प करे, कि 'बिना क्रोध किए ही बातचीत करूगा।'
- यदि किसी घटना मे बहुत अधिक क्रोध आने की सम्भावना हो और आप उसे नियन्त्रित करने मे अपने आप को असमर्थ अनुभव करते हो, तो उस स्थान से हटकर दूर चले जावे।
- यदि कभी भूल से क्रोध कर बैठे हो, तो अपनी स्थिति को ठीक करने के लिए एक गिलास ठण्डा पानी पीए।
- यदि क्रोध कर बैठे, तो उसका कुछ प्रायश्चित करे, अर्थात् उस दिन एक घण्टा विशेष रूप से मौन रहकर ईश्वर का ध्यान, प्रार्थना करे और फिर से सकल्प करे, कि 'अब क्रोध नहीं करूगा।'
- प्रतिदिन दोनो समय – (प्रात और साय) ईश्वर का ध्यान करे और ईश्वर से प्रार्थना करे, कि प्रभो! मुझसे यह क्रोध दूर कर दीजिए और मेरी बुद्धि को अच्छे मार्ग पर चलाइए।'
- निम्नलिखित को प्रतिदिन कम से कम तीन बार पढे

क्रोध करने से हानियां

क्रोध करने से सिर मे दर्द होता है।

- क्रोध करने से ब्लड प्रेशर बढता है।
- क्रोध करने से एसिडिटी होती है।
- क्रोध करने से शरीर मे कम्पन रोग होता है।
- क्रोध करने से शरीर मे कमजोरी आती है।
- क्रोध करने से व्यक्ति पागल हो जाता है।
- क्रोध करने से दूसरे लोग घृणा करते हैं, कोई पास बैठना नहीं चाहता।
- क्रोध करने से समाज मे प्रतिष्ठा कम हो जाती है, निन्दा भी होती है।
- क्रोध करने से बुद्धि का ह्रास होता है, तथा निर्णय लेने की क्षमता घटती है।
- क्रोध करने से मन, वाणी और शरीर पर नियन्त्रण नहीं रहता, परिणामस्वरूप व्यक्ति कुछ भी गलत बोल देता है, या गलत काम कर बैठता है।
- क्रोध करने के बाद जब व्यक्ति होश मे आता है, तब पश्चाताप करता है, अर्थात दु खी होता है, कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।'
- क्रोध करने से अगला जन्म भी अच्छा नहीं मिलता।

प्रेमपूर्वक व्यवहार से लाभ

- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर की वृद्धि होती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन प्रसन्न होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से बुद्धि का विकास होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से निर्णय लेने की क्षमता बढती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से समाज मे प्रतिष्ठा बढती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से परस्पर सबका सुख बढता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से सभी लोग उसे चाहते हैं, प्रेम करते हैं, और उससे सम्बन्ध रखना चाहते हैं।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन, वाणी और शरीर पर नियन्त्रण रहता है, परिणामस्वरूप व्यक्ति अच्छे काम करता है और मीठी वाणी बोलता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से अगला जन्म भी अच्छा मिलता है।

इन उपायो को लम्बे काल तक अपनाते रहने से व्यक्ति का क्रोध धीरे–धीरे कम हो जाता है और एक समय ऐसा आता है, जब क्रोध पूरी तरह छूट जाता है। आशा है, आप इन उपायो से लाभ उठाएगे।

– दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड, पत्रा. - सागपुर, जिला साबरकाठा, गुजरात-३८३३०७

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ४१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द · १७८ सोमवार, ५ नवम्बर से ११ नवम्बर, २००१ तक

मूल्य एक प्रति : २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन · ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

श्री विमल वधावन वरिष्ठ उप-प्रधान, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री एवं श्री जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष

नई दिल्ली, ४ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन ३ व ४ नवम्बर, २००१ को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हॉल में सम्पन्न हुआ, जिसमें आगामी तीन वर्षों (२००१-२००४) के लिए सर्वसम्मति से मुम्बई के आर्य नेता कै० देवरत्न आर्य को प्रधान चुना गया।

यह चुनाव सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की देखरेख एव निगरानी में सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि श्री रामफल बसल को दिल्ली की एक अदालत द्वारा चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया गया था।

के कारण मैं अपना नाम वापस लेता हू और कै० देवरत्न आर्य को प्रधान बनने के लिए अपना आशीर्वाद देता हू। इस पर चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल ने साधारण सभा के प्रतिनिधियो से किसी अन्य महानुभाव के प्रधान पद का प्रत्याशी होने के बारे मे पूछने पर कोई अन्य नाम प्रस्तुत नहीं हुआ। इस प्रकार कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से प्रधान पद पर निर्वाचित घोषित हुए।

साधारण सभा ने कै० देवरत्न आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान चुनने के साथ ही उन्हे सर्वसम्मति से ही यह अधिकार

अन्तरग सभा के सदस्यों एव **पदाधिकारियों की सूची पृष्ठ पाच पर** प्रकाशित की जा रही है।

कै० देवरत्न आर्य ने समूचे देश की आर्यजनता को यह विशाल दायित्व सौंपने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं हर सम्भव प्रयास करूगा कि आपके इस विश्वास को बनाए रख सकू। कै० देवरत्न ने प्रधान चुने जाने के बाद की गई घोषणा मे सर्वप्रथम प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि मैं कभी असत्य, अन्याय और अनाचार से समझौता नहीं करूगा। एक सच्चे आर्य के रूप मे नि स्वार्थ त्याग भावना

कै० देवरत्न आर्य ने आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए कुछ विशेष कार्यक्रमो और नीतियो की घोषणा भी की। उन्होंने ईमानदारी और अनुशासन का भी इस घोषणा-पत्र में विशेष रूप से उल्लेख किया है।

उन्होंने कहा कि तीन "श" अर्थात शस्त्र, शास्त्र और शुद्धि के कार्य लुप्त नहीं होने चाहिए।

उनके द्वारा की गई समस्त घोषणाओ को अगले अक मे विस्तारपूर्वक प्रकाशित किया जाएगा।

४ नवम्बर, २००१ को भी भोजनोपरान्त

कै० देवरत्न आर्य, *प्रधान*

श्री विमल वधावन, *वरिष्ठ उप-प्रधान*

श्री वेदव्रत शर्मा, *मन्त्री*

श्री जगदीश आर्य, *कोषाध्यक्ष*

जब प्रधान पद के लिए कै० देवरत्न आर्य का नाम प्रस्तुत हुआ तो दो-तीन सदस्यो ने उडीसा के स्वामी धर्मानन्द का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत कर दिया। चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल द्वारा स्वामी धर्मानन्द जी को मच पर आमन्त्रित किया गया। स्वामी धर्मानन्द जी को कुछ सदस्य सहारा देकर मंच पर लाए, जहा उन्होंने माईक पर कहा कि अस्वस्थता

भी दिया कि वे अपनी अन्तरग सभा के अन्य अधिकारियो एव सदस्यो का चयन भी स्वय ही करे। कै० देवरत्न आर्य द्वारा ३५ महानुभावों की अन्तरग सभा के सदस्यों के नामो की घोषणा होते ही साधारण सभा ने इस पर अपनी स्वीकृति दे दी।

सार्वदेशिक सभा के नवनिर्वाचित प्रधान कै० देवरत्न द्वारा घोषित एव साधारण सभा द्वारा स्वीकृत ३५ सदस्यीय

और समर्पण भाव से आर्य सगठन को उन्नत और प्रगतिशील बनाने मे अपना सर्वस्व लगा दूगा। उन्होने कहा यदि मैं इस प्रतिज्ञा के विरुद्ध चला या निष्क्रिय, प्रमादी व आलसी सिद्ध हुआ तो मुझे बेशक इस पद से वचित कर दिया जाए।

नवगठित अन्तरग सभा की बैठक भी आयोजित की गई। इसमें सभा के सुचारु सचालन तथा नियमित गतिविधियों एव कार्यों के लिए कई समितियो आदि का गठन भी किया गया जिनकी विस्तृत सूचना अगले अक मे प्रकाशित की जाएगी।

विश्व आर्य महासम्मेलन स्थगित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की चुनाव प्रक्रिया अगस्त माह मे प्रारम्भ हो जाने के कारण नवम्बर माह मे होने वाला प्रस्तावित विश्व आर्य महासम्मेलन स्थगित कर दिया गया था। सम्मेलन की नई तिथिया निकट भविष्य मे पुन निर्धारित की जाएगी। इस बीच कुछ आर्य जनो से यह सूचना प्राप्त हुई है कि इस निमित्त कुछ व्यक्तियो ने धन सग्रह प्रारम्भ कर दिया था। आर्य जनता से निवेदन है कि जिस किसी महानुभाव ने भी २३, २४ एव २५ नवम्बर, २००१ के लिए प्रस्तावित विश्व आर्य महासम्मेलन के लिए दान दिया हो वे तत्काल उसकी सूचना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के कार्यालय को भेजे।

दीपावली मंगलमय हो
निर्वाण दिवस प्रेरणादायक हो

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वेदव्रत शर्मा एवं समूची अन्तरंग सभा, आर्य जनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख समृद्धि और शान्ति की कामना से परिपूर्ण बधाई देती है।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बनें ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

रामायण पहले : महाभारत बाद में

– श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

पिछले दिनो एक सज्जन ने ऐसे विचार व्यक्त किए कि महाभारत रामायण से पहले हुआ था। उन्होने डॉ० डी०पी० सरकार के इस मिथ्या वक्तव्य के खण्डन मे कि 'महाभारत हुआ ही नहीं' अपने वक्तव्य मे कह दिया कि' महाभारत हुआ तो है, किन्तु रामायण से पहले हुआ था।' इस प्रकार एक भ्रान्ति का निवारण करते हुए वह दूसरी भ्रान्ति का प्रसारण कर बैठे।

महाभारत मे रामायण का सक्षेप से सम्पूर्ण वर्णन है। इसे पाश्चात्य विद्वान् विण्टर्निट्रज् ने भी स्वीकार किया है। उन्होने लिखा है कि 'महाभारत का रामोपाख्यान रामायण कथा का सक्षिप्त रूप है।" इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि विण्टर्निट्रज महोदय ने महाभारत ग्रन्थ को पढा था किन्तु इन भारतीयो ने नहीं पढा, जो महाभारत को रामायण से पहला बताते हैं। यदि पढी होती तो यह ऐसी भ्रान्तियुक्त बात न कहते।

महाभारत तो रामायण का वर्णन करके उसके अपने से पहले होने पर अपनी मुद्रिका अकित करे और कुछ लोग यह कहे कि महाभारत का युद्ध रामायण काल से पहले हुआ था तो इसका एक परिणाम तो यह होगा कि जिन्होने महाभारत नहीं पढा वे भ्रान्ति मे पडेगे और दूसरा परिणाम यह होगा कि जिन्होने महाभारत पढा है, वह ऐसा वक्तव्य देने वाले को अविद्वान समझेगे। महाभारत के बाद मे और रामायण के पहले होने का हम केवल एक प्रमाण महाभारतान्तर्गत गीता से प्रस्तुत करते हैं। गीता के दशम् अध्याय का श्लोक ३१ इस प्रकार है –

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि प्रोतसामस्मि जाह्नवी।।

अर्थात् पवित्र करने वालों मे वायु है और शस्त्रधारियो मे राम हैं और मछलियो में से मगरमच्छ हू और स्रोतो मे जाह्नवीं (गगा) हू।

यदि रामायण-काल महाभारत से बाद का होता तो योगीराज श्रीकृष्ण स्वय को शस्त्रधारियो मे राम कैसे बता सकते थे ? जो उत्पन्न ही न हुआ हो, उसकी उपमा कैसे दी जा सकती है ? महाभारत के अतिरिक्त एक प्रमाण महाभारत से रामायण के न केवल पहले अपितु लगभग दो करोड वर्ष पहले होने का हम यहा प्रस्तुत किए देते हैं। इससे उक्त भ्रान्ति के निराकरण मे सहायता मिलेगी तथा भारतीय इतिहास में रुचि रखने वालो को लाभ पहुचेगा। वायु पुराण उत्तरार्द्ध अध्याय ६ के ४८वे श्लोक मे वर्णन है –

त्रैतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपसः क्षयात्।
राम दाशरथि प्राप्य समण क्षयमीयिवान्।।

अर्थात् २४ वे त्रेतायुग मे रावण का सामर्थ्य क्षीण हुआ और तब वह दशरथ-पुत्र राम को प्राप्त होकर बन्धु-बान्धुवो सहित मारा गया।

इस श्लोक मे राम का २४वें त्रेतायुग मे होना बताया है। अब २८वीं चतुर्युगी कलियुग है इसका अर्थ है कि राम और रामायण को चार चतुर्युगी पूरी-पूरी बीत चुकी है। चारो युगों अर्थात् एक चतुर्युगी की आयु युगानुसार काल गणना से ४३,२०,००० वर्ष है, इसे चार से गुण करने पर १,७२,८०,००० वर्ष को चारो चतुर्युगियो का समय होता है। यह अवधि इस २८वीं चतुर्युगी के त्रेता के अन्त के साथ बीत चुकी। यदि हम यह मान लें कि रामायण-काल त्रेता के अन्त के साथ बीत चुकी। यदि हम यह मान ले कि रामायण-काल त्रेता के बिल्कुल अन्त का काल है, त्रैता का एक दिन भी जब शेष नहीं रहा था, तब भी द्वापर युग का पूर्ण समय ८,६४,००० सहस्त्र वर्ष इन चारो चतुर्युगियो के समय १,७२,८०,००० वर्षों मे और सम्मिलित करना पडेगा क्योकि महाभारत युद्ध द्वापर के अन्त मे हुआ था। द्वापर और चारों चतुर्युगियो के काल की सयुक्त सख्या १,८१,४४,००० वर्ष होती है अर्थात् महाभारत से इतने वर्ष पहले रामायण युद्ध हुआ था। ऐसा प्रमाण उपलब्ध होने पर भी कुछ लोग यह कहे कि महाभारत रामायण से पहले हुआ था तो पाठक समझ ले कि ऐसे लोगों को किस श्रेणी में रखा जाना चाहिए ?

बोध कथा

भारतीय संस्कृति का नवजागरण

भारत पर अग्रेजो के राजनीतिक प्रभुत्व के पहले विषैले प्रभाव को प्रारम्भ मे ही रोक दिया गया, यदि उस पर रोक न लगती तो सम्भवत अफ्रीका के कई देशो की तरह सारा भारत ईसाई उपनिवेश बन जाता, परन्तु भारतीय सस्कृति की जीवनी शक्ति ने उसे प्रारम्भ मे ही रोकने का प्रयत्न किया। एक के बाद दूसरे जन-सुधारक ने देशवासियो को उनके अतीत के गौरव की याद दिलाई। सन् १८२० मे राजा मोहनराय ने ईसाई पादरियो के दावो को निर्मूल सिद्ध करने के लिए कलम उठाई। उन्होने उपनिषदों और अन्य शास्त्रो की ओर देशवासियो का ध्यान खींचा उन्होने ब्रह्मसमाज की स्थापना की। महर्षि देवेन्द्रनाथ, बाबू केशवचन्द्र ने बाद मे सस्था का नेतृत्व किया। हा, इस सस्था के नेता पश्चिम की लहर मे बह गए।

टकारा सौराष्ट्र मे जन्मे स्वामी दयानन्द ने विद्याध्ययन के तुरन्त बाद कार्यक्षेत्र मे प्रवेश किया। उन्होने धर्म, समाज, शिक्षा और राजनीति के चारो क्षेत्रो मे नई सुधारणाए प्रस्तुत कीं। मूर्ति के स्थान पर उन्होने निराकार ईश्वर की उपासना प्रस्तुत की। वह गुण-कर्मानुसार वर्णव्यवस्था, स्त्री शिक्षा और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रवर्त्तक थे। अपने मिशन को स्थायित्व देने के लिए १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की। उन्हीं दिनो स्वामी विवेकानन्द और लोकमान्य तिलक आदि सुधारको ने देश में जागृति की ज्योति प्रज्वलित की।

ऐसे समय पश्चिमी विद्वानो ने स्वीकार किया कि भारत का प्राचीन वाड्मय सास्कृतिक रत्नो की खान है। टामस कोलब्रूक ने वेदो की गरिमा स्वीकार की। जर्मन विद्वान शोपनहार ने उपनिषदो को मानव की श्रेष्ठ विद्या का भण्डार कहा। मैक्समूलर ने पूर्व के पवित्र ग्रन्थो की महत्ता स्वीकार की और कहा भारत हमे बहुत कुछ सिखा सकता है। एलफिन्स्टन, प्रो० विल्सन, मैक्डानल्ड ने संस्कृत साहित्य के रूप मे भारत की अमर देन स्वीकार की। गणित, चिकित्साशास्त्र में भारतीयो की उपलब्धियो के बाद शिल्प-वास्तु विज्ञान मे भारतीय उपलब्धिया सराही गईं। भारतीय संस्कृति की जीवनी शक्ति ने ईसाइयत और पश्चिमी सस्कृति का प्रवाह रोक दिया।

१९वीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय साहित्य और सस्कृति ने भारतीय राष्ट्र मे सर्वांगीण जागरण मे अपनी भूमिका प्रस्तुत की। शान्ति निकेतन और गुरुकुल कागडी आदि ने शिक्षा-साहित्य के क्षेत्र मे अपना योगदान किया। युग के तेजस्वी प्रभाव से धार्मिक और सामाजिक जागृति की लहर ने शिक्षा और साहित्य को क्षेत्र मे ही नई क्रान्ति प्रस्तुत की फलत राष्ट्र मे भारतीय संस्कृति को नवजागरण का शखनाद हो गया।

– नरेन्द्र

जगमग दीप जलाएं

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

आओ ! आर्य सपूतों आओ ! जगमग दीप जलाएं !
गहन तिमिर में भटक रही जगती को राह दिखाएं।।

मिट्टी के दीपों से निश्चय, मिटता नहीं अन्धेरा,
अगणित तारों के उगने से, होता नहीं सबेरा,
दानवता के तिमिर सैन्य ने, महिमण्डल है घेरा,
रहा नहीं है मानवता का, सुन्दर-सुखद बसेरा,
बिखरा किरणें ज्ञान ज्योति की, नया सबेरा लाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।

तम के अचल में सोया है, आज यहां दिनमान,
ज्ञान हमारा कहा लुप्त है, विस्तृत क्यों अज्ञान ?
चलो, देख लो, कहां सो रहा, भारत का अभिमान,
सत्य-शिवम्-सुन्दरता प्रतिति, कहा गए प्रतिमान ?
बन करके आलोक पुंज हम, जाग्रत ज्योति जगाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।

लोभ-मोह-मद मत्सर का है फैला पारावार,
काम-क्रोध बढ़ रहे चतुर्दिक, नष्ट धर्म का सार,
मानवता के तत्वों का क्यों ? होता है व्यापार,
भौतिक सस्कृति नहीं कभी, कर सकती है उपचार,
धर्माध्यात्म प्रदीप प्रेमामृत, पुन प्रदीप्त कराएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।

ऐसा दीप जले जिससे, न रहे तिमिर का लेश,
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा यह, प्रगटे ज्ञान दिनेश,
दम्भ द्वेष-मिथ्या-हिंसा का बचे नहीं अवशेष,
प्रेम-दया-ममता का सदा रहे उन्मेष,
शाति-सफलता-समृद्धि के सगीत मनुज सब गाए।
गहन तिमिर में भटक रही जगती को राह दिखाए ।।

–मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

मातृभूमि हमें ऐश्वर्य दे : हम दीर्घजीवी हों।
भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु। *अथर्व १२-१-५*
मातृभूमि हमे ऐश्वर्य और तेज दे।
जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु। अथर्व १२-१-२२
मातृभूमि मुझे दीर्घजीवी करे।
वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। *अथर्व १२-१-६२*
मातृभूमि हम तुम्हारे लिए बलि के लिए प्रस्तुत हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

भारतीय जीवन का लक्ष्य : सदा मर्यादा रखें

दीपमालिका का पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के समुन्नत एव मर्यादा से परिपूर्ण जीवन का सन्देश देता है। भारत के राष्ट्रीय जीवन की समुन्नति के लिए यदि प्रत्येक देशवासी जीवन मे मर्यादा का परिपालन करे, जिस प्रकार त्रेता युग मे श्रीराम ने अनुसरण किया था तो न केवल जन-जन का कल्याण हो सकता है, प्रत्युत समग्र भारतीय राष्ट्र की सर्वांगीण समुन्नति हो सकती है। रामायण में श्रीराम के उदात्त जीवन के प्रसग की झाकी लीजिए बाल्मीकि ने रामायण मे लिखा है – **आहूतस्या भिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च न मया** गुणो पर आधारित ध्रुव है। यह लोकोक्ति सच्ची और सार्थक है – सत्य बृहदुग दीक्षा ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति। वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति से टिकी है, परन्तु यह भी पूर्णतया सत्य है कि इस सारी पृथ्वी में विश्व के छोटे-बडे राष्ट्र पारस्परिक मर्यादा और अनुशासन से जीवित हैं तो उनके मध्य मे सत्य, तेज, दीक्षा, ब्राह्मणत्व और यज्ञ के मौलिक आधार हैं, उनके ही आश्रय मे इस भूमण्डल की सारी व्यवस्था प्रचलित है। वैसे इस लोकोक्ति मे भी बडी सच्चाई है – **लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः।।**

श्रीराम को पिता जब राज्याभिषेक के लिए आमन्त्रित किया और जब उन्हें माता कैकेयी की इच्छा का सम्मान करते हुए १४ वर्ष के वनवास के लिए कहा गया – दोनो ही अवस्थाओ मे उनके मुखमण्डल पर हर्ष और विषाद की थोडी-सी भी झलक नहीं दिखाई दी। दोनो अवस्थाओ मे उन्होने सयम एव मर्यादा का पालन किया। १४ वर्ष के वनवास की अवधि मे उन्होने पत्नी सीता का हरण करने वाले लकाधिपति रावण को पराजित किया, उस समय उन्हे अनुज लक्ष्मण ने सलाह दी थी – "भाई जी, इस सोने की लका पर राज कीजिए।" अपने अनुज लक्ष्मण के इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए श्रीराम ने तुरन्त उत्तर दिया – **"अपि स्वर्णमयी लंका न मे रोचते लक्ष्मण, जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**

भाई लक्ष्मण, मुझे यह सोने से परिपूर्ण लका नहीं सुहाती, मुझे तो मेरी माता और मेरी मातृभूमि जन्मभूमि ही स्वर्ग से भी श्रेयस्कर है। इसी रामायण का एक और प्रसग भी छोटे-बडे प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत जीवन का मूलमन्त्र दे रहा है। वनवास के प्रसग में जब लका का स्वामी रावण विमान से सीताजी का अपहरण कर ले गया तो एक पर्वत के शिखर पर सीताजी ने वानरसमूह को देखा, उन्होंने अपने तीन आभूषण गहने उस पर्वत चोटी पर फेंक दिए।

श्रीराम और लक्ष्मण के वहा पहुचने पर वानरो ने वे गहने दोनो भाइयो को दिखाए। उस समय श्रीराम ने लक्ष्मण से उन आभूषणो के बारे मे पूछा था कि क्या तुम इन्हे पहचानते हो। श्री लक्ष्मण का उत्तर था **नाहं जानमि केयूरे नाह जानामि कुण्डले, नुपुर स्वाभिजानाभि नित्यं पायाभिवन्दनात्** – भाई जी, न तो मस्तक के आभूषण को जानता हू न मैं कानो के कुण्डल पहचानता हू, हा, उनके पैरो के नुपुर अवश्य पहचानता हू, क्योकि प्रतिदिन मैं उनके पैरों मे झुककर उनका अभिवादन-सम्मान करता था। वास्तव मे यह भूमिमाता कुछ मौलिक सच्चाइयो, **कलि शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापर उत्तिष्ठस्त्रेता भवति, कृतं सपद्यते चरन्** सोते रहना ही कलियुग है, निद्रा छोड कर जागना द्वापर है, उठ खडा होना त्रेता है और अग्रसर होना सतयुग है। वस्तुत छोटे बडे देशो की प्रगति ही मानव जाति की समुन्नति उसके जाग्रत होकर अपने सभी दायित्वो को पूर्ण कर ही श्रेष्ठतम स्थिति मे पहुचा जा सकता है। दीपमालिका-दीवाली का पर्व भारत राष्ट्र का एक सास्कृतिक सोपान है जो श्रीराम सरीखे महापुरुष द्वारा प्रस्तुत श्रेष्ठतम मर्यादा का प्रतीक है।

हमारे सास्कृतिक पर्व भारतीय राष्ट्र के दीर्घकालीन जीवन के अमर पाथेय हैं। वे केवल हमारे राष्ट्रीय पर्व एव त्योहार ही नहीं, वे इस राष्ट्र के यशस्वी जीवन के अमर सिद्धान्त, ऊची जीवन मर्यादा का भी स्मरण कराते हैं। हमारे श्रीराम, श्रीकृष्ण, प्रहलाद, ध्रुव, युधिष्ठिर, चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त, राणा प्रताप, शिवाजी सरीखे अनेक ऐसे महापुरुष एव युगपुरुष हुए हैं, जिन्होने न केवल अपने जीवनों मे प्रत्युत भारतीय सास्कृतिक इतिहास की लम्बी यात्रा में यशस्वी अमर जीवन सन्देश सजोए हैं। हजारो लाखो वर्षों की लम्बी ऐतिहासिक यात्रा के बावजूद यदि भारत राष्ट्र जीवित है, यदि उसकी सास्कृति सामाजिक जीवनगाथा आज भी विश्व और मानवता को एक प्रेरणा का सन्देश दे रही है तो उसके इस दीर्घकालीन राष्ट्रीय जीवन और सास्कृतिक समृद्धि का राज राष्ट्र और उसकी कोटि-कोटि जनता द्वारा अपने जीवन भारत राष्ट्र और उसकी सस्कृति ने सहस्त्रो सैकडो वर्षों के लम्बे दीर्घकालीन जीवन मे एक नई सहस्त्राब्दी मे प्रवेश किया है। भारत की स्वाधीनता का यह चौवनवा वर्ष है, आर्यसमाज के यशस्वी जीवन के भी सवा सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, भावी जीवन की हमारी सारी सफलता भी हमारी जनता और राष्ट्र की ऊची और सच्ची मर्यादा पर ही अवलम्बित रहेगी, यह अमर सचाई सदा स्मरण रखनी होगी।

नैतिकता का ह्रास

नैतिक मूल्यो मे प्रतिदिन आ रही गिरावट आज पूरे विश्व के सम्मुख एक गम्भीर समस्या बन गई है। भारतवर्ष की महती सभ्यता, सस्कृति, नैतिकता एव चारित्रिक मूल्यो की महत्ता एक समय सर्वत्र सराही जाती थी। हमारा इतिहास साक्षी है कि त्रेता युग मे बालक श्रवण कुमार जैसे सपूतों ने इसी पवित्र धरती पर जन्म लिया था। उन्होंने अपने अपग माता-पिता को कन्धो पर बिठाकर धार्मिक तीर्थों की यात्रा कराई थी। खेद है आज हमारी नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है। आज की युवा पीढी नैतिकता का पाठ पढना आवश्यक नहीं मानती। पश्चिमी जगत की नग्न सस्कृति आज के युवा वर्ग छात्रो-छात्राओ मे इस सीमा तक प्रवेश पा चुकी है कि आज उन्हे न शिष्टाचार की मर्यादा का ध्यान रहा और न ही नैतिक सात्विक सद्गुणो का। युवाओ की स्थिति उस कौए जैसी है जो हस की चाल चलने मे अपनी स्वत की चाल के साथ अपनी पहचान भी खो बैठे है।

– रवीन्द्र केन, फखरपुर, बागपत

जेहादी मानसिकता

इस्लाम की जो तस्वीर कट्टरपन्थी तत्व दुनिया के सामने रखते हैं, उससे स्पष्ट है कि जेहादी मानसिकता के विषबीज पैदा हो गए और पले-बढे उनसे ये साम्प्रदायिक कट्टरपन्थी और आतकवादी गुट किसी न किसी रूप मे, अपने मजहब को ही सन्देह के घेरे मे प्रस्तुत कर रहे हैं। कुछ देश आतकवाद को मानवता के लिए सकट मानते हैं और इसे जड से खत्म करना चाहते हैं तो कुछ आतकवाद को सही ठहराते हुए जेहाद के झण्डे के तले अपने मजहबी साथियो को उकसा रहे है। अफगानिस्तान पर हुए हमलो के बाद खुद को अपने सम्प्रदाय वालो का रहनुमा समझने वाले पाकिस्तान की हालत दयनीय है। तालिबानो का नेता मुल्ला उमर खुद पाकिस्तानी मदरसे की उपज है और ज्यादातर तालिबानो की शिक्षा दीक्षा पाकिस्तान मे हुई है।

– सुनील, दिल्ली

एहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होगे
सौ बार जनम लेगे, सौ बार फिदा होगे।
एहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होगे।
– श्रीमती सुकान्ति साहामनुर्भव सदन,
कण्ठीपाली, रायगढ

गर्व से कहो हम आर्य हैं

यजुर्वेद से – एकोन यत्-तत् सप्तकम् (१६)

कर्मफल व कार्य-कारण शृंखला

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) सवितादेव का तेज, हमारी मति व क्रिया को प्रकृष्ट मार्ग पर प्रेरित करे

तत्सवितुर्व रेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न· प्रचोदयात्।। *यजु० ३–३५*

विश्वामित्र। सविता। गायत्री।

अर्थ (य) जो सविता सबका उत्पादक और बुद्धियो का प्रेरक है (सवितु)= देवस्य) उस सविता देव के (वरेण्य तत भर्ग धीमहि) श्रेष्ठ और वरणीय तथा दु खो के मूल पाप को नष्ट करने वाले उस तेज को अपने मे धारण करते हैं, (यत् न धिय प्रचोदयात्) जो तेज हमारी बुद्धियो और क्रियाओ को सन्मार्ग पर प्रेरित करेगा – करे।

इस मन्त्र मे 'य' के साथ 'तस्य' और 'तत्' के साथ 'यत्' का काल्पनिक अध्याहार किया गया है।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ में प्रार्थना का सिद्धान्त स्थापित किया है –

'अयमेव प्रार्थनाया मुख्य सिद्धान्त, यत् यादृशी प्रार्थना कुर्यात् तादृशमेव कर्मकुर्यादिति।' अर्थात् जैसी प्रार्थना करे वैसा ही कर्म का आचरण करे।

२. उपासकों के लिए, सर्वव्यापक प्रभु, सुर्यवत् सदा प्रत्यक्ष रहता है

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सुरयः। दिवीव चक्षुराततम्।। *यजु ६–५*

मेधातिथि। विष्णु·। आर्षीगायत्री।

अर्थ – (ये सूरय) जो बुद्धिमान व वेदवित् स्तोता होते है वे (सदा विष्णो तत् परम पद पश्यन्ति) सर्वव्यापक परमात्मा के अनुभव होने वाले उस परम स्वरूप को, सदा वैसे ही देखते हैं (इव दिवि आतत चक्षु) जैसे सामान्यजन आकाश मे व्याप्त सूर्य को सदा देखते हैं।

अर्थपोषण – सूर्यश्चक्षु। काश ४-२-२-१२

सूरय स्तोतार। *नि० ३-१६*

(३) सोते-जागते या जाने-अनजाने पापों से सूर्य का सेवन ही छुडा सकता है

यदि जाग्रघदि स्वप्न एनांसि चकृमावयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः।। *यजु० २०-१६*

प्रजापतिः। सूर्यः। अनुष्टुप्।

अर्थ – (यदि जाग्रत्) यदि जागते हुए अथवा जानबूझ कर (यदि स्वप्ने) और यदि सोते हुए अथवा अनजाने मे (वय एनासि चकृम) हम मे से किसी ने जो पाप या प्राकृतिक नियमोल्लघन किया हो, (सूर्य) प्राकृतिक देवो का प्रमुख सूर्य अथवा सर्व नियन्ता परमेश्वर (तस्मात् विश्वात् अंहस) उस समस्त पाप से (मुञ्चतु) मुक्त कर दे।

निष्कर्ष – सूर्य के समुचित सेवन से समस्त प्राकृतिक दोषों से और परमेश्वर के ध्यान और स्तुति द्वारा मानसिक दोषों से शारीरिक मुक्त हुआ जा सकता है। प्रार्थना के सिद्धान्त के ध्यान में रखकर यदि हम प्रार्थना अनुरूप कर्म, सूर्य सेवन या परमेश्वरोपासन करेंगे ये, तभी मुक्त होंगे, अन्यथा नहीं।

(४) पवित्र और मनीषी सन्तों के संग द्वारा हमें भी हर स्थिति में सन्तुष्ट रहना सीखना चाहिए

नराशंसस्य महिमानमेषामुपस्तोषाम यजतस्य यज्ञैः। ये सुकृतवः शुचयो धियन्धाः स्वदन्ति देवा उभयानिहव्या।। *यजु· २७-२६*

जमदग्निः। विद्वान्। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (ये सुक्रतव शुचय· धिय धा. देवा:) जो शुभ सकल्प और पवित्राचरण वाले बुद्धिमान् और क्रियाशील विद्वान् (यज्ञै.) यज्ञमय पदार्थ कर्मों द्वारा (यजतस्य नराशसस्य महिमान उप) मनुष्य मात्र से उपासनीय तथा पूजनीय परमात्मा की उपासना या पूजा करते हैं, वे वेद (उभयानि हव्या=स्वदन्ति) शरीर और मन दोनो के सुखो का आस्वादन करते हैं। या अच्छी और बुरी दोनो स्थितियो मे सन्तुष्ट रहते हैं। (ऐषा उप स्तोषाम) हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे मनुष्यो के पास जाए, उनकी स्तुति करे और उनके सत्सगो से लाभ उठाए और यथा प्राप्त मे सन्तुष्ट रहना सीखे।

निष्कर्ष – पवित्राचरण वाले, क्रियाशील विद्वान् अपने परार्थ कार्यों द्वारा शरीर और मन दोनो का सुख भोगते हैं। ऐसे सन्तो का सत्सग करके हम सबको भी सन्मार्ग पर चलना चाहिए।

(५) मन पवित्र करो, भटकने की जरूरत नहीं, वह सबके हृदय में स्थित है

सहस्रशीर्षा पुरुष. सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।। *यजु ३१–१*

नारायणः। पुरुष.। अनुष्टुप्।

अर्थ – जो (पुरुष.) ब्रह्माण्डपुरी रूप शरीर मे रहने वाला सर्वव्यापक महान् पुरुष (सहस्रशीर्षा) अनन्त प्राणियो मे व्याप्त होने से, अनन्त शिरों वाला (सहस्राक्ष) अनन्त आखो वाला सर्वज्ञ और (सहस्रपात्) अनन्त पैरो वाला पर ब्रह्म है (स.) वही (भूमि सर्वतस्पृत्वा) सम्पूर्ण भूगोल को व्याप्त करके (दशांगु अति अतिष्ठत) प्राणीमात्र के दशागुल परिमाण हृदय में अतिक्रमण करके प्रेरणा देने के लिए विराजमान है।

निष्कर्ष – सर्वज्ञ सर्वव्यापक ब्रह्म सर्वव्यापक होते हुए सबके हृदय मे प्रेरणा देने के लिए सदा उपस्थित है। अनुचित विचार या कर्म करने से पूर्व उसके द्वारा प्रेरित आन्तरिक आवाज को सुनकर, उस पर अमल करने से लाभ होता है।

(६) ब्रह्मज्ञानी के सत्संग से ब्रह्म को जानकर ही मृत्युभय दूर होता है

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।। *यजु० ३१-१८*

अर्थ – जो मनुष्य (अहम्) सर्वव्यापक (तमस परस्तात्) अज्ञान तथा अन्धकार से पृथक् वर्तमान (आदित्यवर्णम्) आदित्य के सदृश स्वय प्रकाश (एत महान्त पुरुष वेद) इस प्रथम मन्त्र मे वर्णित महान् पुरुष (परमेश्वर) को जानता है (त पुरुष विदित्वा) उस ब्रह्मज्ञानी पुरुष को प्राप्त करके (त एव विदित्वा) अथवा उसके द्वारा उस महान् पुरुष (परब्रह्म) को जानकर ही (मृत्यु अत्येति) दु खप्रद मृत्यु को लाघ जाता है। (अयमाम) दु खरहित स्थिति को प्राप्त करने के लिए (अन्य) इससे भिन्न (पन्था) दूसरा मार्ग (न विद्यते) नहीं है।

निष्कर्ष – ब्रह्मज्ञानी पुरुष की सहायता से महान् पुरुष (ज्येष्ठ ब्रह्म) को जाने बिना दु खद मृत्यु से छूटकर सुखद स्थिति या परमात्मा को प्राप्त करने का दूसरा कोई उपाय नहीं।

जन्म लेने वाला प्राणी, मृत्यु से तो बच नहीं सकता (जातस्य हि ध्रुवोमृत्यु), केवल मृत्यु के भय या दु ख से ही बचा जा सकता है। ब्रह्मज्ञानी के सत्सग (उपासना) के बिना, आदित्य समान प्रकाश-पुज और मार्गदर्शक प्रभु को जानना सम्भव नहीं, अत गुरु की बडी महिमा है। किन्तु सच्चा गुरु वही होता है, जिसमें कम से कम ब्रह्मा, विष्णु और महादेव मे से किसी एक के गुण विद्यमान हों।

अर्थ पोषण – अहम् – सर्वव्यापक, अहव्याप्तौ।

आदित्यवर्णम् – ब्रह्म सूर्यसम ज्योति·। यजु सूर्य के समान स्वय प्रकाश।

(७) ब्रह्म और सूर्य का सेवन करो, २०० वर्ष तक अदीन और स्वस्थ रहोगे

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। *यजु० ३६-२४*

दध्यङ्. आथर्वणः। सूर्यः। भुरिग् ब्राह्मी त्रिष्टुप्।

अर्थ – जो (चक्षु) चेतन ब्रह्म या सूर्य (देव हित शुद्धम्) देवो के लिए या इन्द्रियो के लिए हितकर है और (उत्चरत् पुरस्तात्) सनातन काल से सब कुछ जानता है या उत्कृष्ट है। (तत् शरद· शत-पश्येम) उसकी कृपा से इस सुन्दर सृष्टि को १०० वर्ष तक देखते रहे, (जीवेम शरद शतम्) १०० वर्ष तक इस जीवन मे जीवित रहे, (शृणुयाम शरद. शतम्) १०० वर्ष तक उसका वेद ज्ञान सुनते रहें, (प्र ब्रवाम शरद शतम्) उस की कृपा से १०० वर्ष तक उसके सम्बन्ध मे प्रवचन करते रहे।

(शरद शत अदीना स्याम) उसकी कृपा से किसी पर आश्रित हुए बिना, स्वस्थ रहते हुए ऊपर वर्णित सब काम १०० वर्ष तक करते रहे। (भूयः च शरद शतात्) १०० वर्ष ही नहीं, इस से अधिक भी जब तक जीवित रहे, किसी पर आश्रित हुए बिना अदीन होकर जीवित रहें, हमारी इन्द्रिया भी स्वस्थ और क्रियाशील रहें।

निष्कर्ष – सूर्य भी ब्रह्म के समान सब देवों और इन्द्रियों के लिए हितकर है। सूर्य के समीचीन सेवन से सब इन्द्रियाँ स्वस्थ और क्रियाशील बनी रहती हैं।

प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि वह जब तक जीए, स्वस्थ रहे। रोगी होकर बिस्तर पर पडा रहे। इस मन्त्र मे इस निमित्त दो सकेत हैं .– (१) परमेश्वर का नित्य उपासना, ध्यान और अर्चन करे। (२) सूर्योदय से पूर्व उठकर उदित होते हुए सूर्य का नित्य दर्शन करें। इससे से रोग आक्रमण नहीं करते। यदि कोई रोग हो जाए तो और विशेष रूप से मस्तिष्क और हृदय रोगों के शमन के लिए सूर्योदय दर्शन विशेष लाभ कर है।

अर्थ पोषण – चक्षुर्ब्रह्म। गो० पू० २–१० सूर्यश्चक्षुः। काश ४–२–२–१२

यदेमतत्रपरमे व्योमन-पश्मेन ततुदितौ सूर्यस्य। *अथर्व २-५-३*

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

नव-निर्वाचित अन्तरंग सदस्यों ने यज्ञोपरान्त कार्यभार सम्भाला
दयानन्द भवन के प्रथम तल पर कार्यालय का उद्घाटन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के उपरान्त ५ नवम्बर, २००१ (सोमवार) को प्रात १० बजे आचार्य भद्रकाम वर्णी के ब्रह्मत्व मे नवनिर्वाचित पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो तथा विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधियो ने कार्यालय की पहली मजिल पर यज्ञ एव शान्ति सुचारु व्यवस्था की प्रार्थनाओ सहित नए कार्यकाल का शुभारम्भ किया। कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, उपमन्त्री श्री जयनारायण अरुण, आचार्य जगतदेव, श्री भूपनारायण शास्त्री, श्री सत्यवीर शास्त्री, सु० ब० काले, श्री दयानन्द बसैये, श्री चन्द्रकिरन, चौ० लक्ष्मीचन्द्र, स्वामी चेतनानन्द, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, श्रीमती उज्ज्वला वर्मा आदि आर्य नेताओ तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे। यज्ञ के उपरान्त यज्ञाग्नि को प्रथम तल पर स्थित हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी के पास किराए पर था। इस कम्पनी की लगभग ६ लाख रुपये धरोहर राशि थी, जिसे वापस कर दिया गया। इसके अतिरिक्त, फर्नीचर, लकडी की दीवारे, जनरेटर सेट, फोटो स्टेट मशीन, बिजली और टेलीफोन की अन्दरूनी व्यवस्था आदि के एवज मे पाच (५) लाख रुपये देकर यह कार्यालय विगत माह ही खाली कराया गया था।

श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द जी एव स्वामी सत्यम् जी से सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल आशीर्वाद लेते हुए। चित्र मे श्रीमती सुनीता आर्या एव स्वामी चेतनानन्द जी भी दिखाई दे रहे हैं।

यज्ञ अग्नि का प्रवेश प्रथम तल कार्यालय मे ले जाकर उद्घाटन सम्पन्न करते हुए — बाए से श्री जगदीश आर्य, कै० देवरत्न आर्य, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री रामफल बंसल एव श्री विमल वधावन।

यज्ञ पर चुनाव अधिकारी एव प्रशासक श्री रामफल बसल, नवनिर्वाचित सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता आर्या, वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री आनन्द कुमार, राव हरिश्चन्द्र, आचार्य यशपाल, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, कार्यालय मे ले जाया गया जिसका विधिवत उद्घाटन स्वामी दीक्षानन्द जी के निर्देशानुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बसल ने किया। उल्लेखनीय है कि अब आर्य प्रतिनिधि सभा का कर्यालय प्रथम तल पर आ जाएगा। पहले यह तल इसे खाली कराने मे श्री रामफल बसल, कै० देवरत्न आर्य, विमल वधावन तथा वेदव्रत शर्मा का विशेष सहयोग रहा। उद्घाटन के उपरान्त पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी तथा स्वामी डॉ० सत्यम् ने आर्य जनो को आशीर्वाद दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली की
कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

पदाधिकारी

१	प्रधान	–कैप्टन देवरत्न आर्य (मुम्बई)
२	वरिष्ठ उप-प्रधान	–श्री विमल वधावन (दिल्ली)
३	उप-प्रधान	–श्री गौरी शकर कौशल (मध्य भारत)
४		–श्री राव हरीशचन्द्र (मध्य विदर्भ)
५		–डॉ० राधाकृष्ण वर्मा (कर्नाटक)
६		–श्री सुदर्शन शर्मा (पजाब)
७		–श्री आनन्द कुमार आर्य (बगाल)
८		–श्री आचार्य यशपाल (हरियाणा)
६	मन्त्री	–श्री वेदव्रत शर्मा (दिल्ली)
१०	उप-मन्त्री	–श्री वाचोनिधि आर्य (गुजरात)
११		–श्री रोशनलाल आर्य (हरियाणा)
१२		–श्री भूपनारायण शास्त्री (बिहार)
१३		–श्री कृष्णराव (आन्ध्र प्रदेश)
१४		–श्री आचार्य जगतदेव (मध्य विदर्भ)
१५		–श्री सुग्रीव काले (महाराष्ट्र)
१६		–श्री जयनारायण अरुण (उ०प्र०)
१७	कोषाध्यक्ष	–श्री जगदीश आर्य (दिल्ली)
१८	पुस्तकाध्यक्ष	–श्री सोमदत्त महाजन (दिल्ली)

अन्तरंग सदस्य

१६	श्री लक्ष्मीचन्द चौधरी (उ०प्र०)
२०	डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री (उ०प्र०)
२१	श्री दयाराम बसैय्या (महाराष्ट्र)
२२	श्री टी० वी० नारायण (आन्ध्र प्रदेश)
२३	श्री भगवानदास अग्रवाल (मध्य भारत)
२४	डॉ० महेश विद्यालकार (दिल्ली)
२५	श्री प्रदीप आर्य (राजस्थान)
२६	श्री स्वामी व्रतानन्द (उडीसा)
२७	श्री आचार्य रामानन्द (हिमाचल प्रदेश)
२८	श्री पी० एन० आर्य (कर्नाटक)
२६	श्री सुबोध कुमार (तमिलनाडू)
३०	माता प्रेमलता शास्त्री (दयानन्द सेवाश्रम सघ)
३१	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू-कश्मीर)
३२	श्री ओकार नाथ आर्य (मुम्बई)
३३	श्री कल्याण देव (गुजरात)
३४	श्री देवेन्द्र शर्मा (पजाब)
३५	श्री मुकेश सैनी (प्रतिष्ठित)

मुम्बई यज्ञ के 'ओ३म् स्वाहा' पर लेखान्दोलन !

– सत्यानन्द वेदवागीश

अभी कुछ मास पूर्व मुम्बई मे आयोजित आर्य महासम्मेलन के अवसर पर हुए पारायणयज्ञ मे श्री ब्रह्माजी के द्वारा मन्त्रान्त मे स्वाहा के पहले 'ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति दिलवाने पर पत्र-पत्रिकाओ मे उसके विरोध मे अनेक लेख लिखे गए। और एक स्वामी जी ने उन सब लेखों को पुस्तकाकार में छपवाकर वितरित भी किया। एक प्रति मेरे पास भी आई है। मानो ब्रह्माजी ने कोई आपराधिक कृत्य कर दिया हो। उन्हे 'अनधिगत शास्त्र', विद्वन्मन्य', 'शास्त्रविरोधी', 'अज्ञ', 'अदयानन्दी', 'मिथ्या क्रियाप्रवर्त्तक' आदि विशेषणो से विभूषित किया गया।

क्या श्री ब्रह्माजी द्वारा 'ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति दिलवाना इतना बुरा कर्म था ? थोडा इस पर विचार करना है।

पहली बात तो यह है कि श्री स्वामी सत्यम् जी ने ही इसे 'इदम्प्रथमतया' आरम्भ नहीं किया है। पुस्तिका मे जिन विद्वानो की सम्मति उद्धृत की गई है उनमे श्री मीमासक जी, श्री विश्वश्रवा जी, श्री वेदश्रमीजी और श्री धर्मदेव जी वि०मा० अब नहीं रहे अथार्त् उनके जीवन काल मे भी इस 'ओ३म्' स्वाहा' का प्रयोग होता था, जिसका निवारणार्थ उन्हे लिखना पडा। अभी २५ जून से १ जुलाई तक ब्यावर (राज०) आर्यसमाज मे वर्षा हेतु किए गए यज्ञ मे सकलित १०५ (१०४) मन्त्रो के पाठ हेतु एक स्थानीय महामना वृद्ध शास्त्रीजी को भी सादर आहूत किया गया। उन्होने स्वीकार किया, पर उन्होने मन्त्रान्त मे रि स्थान पर प्रणवसहित स्वाहा बोलने का (=ओ३म् स्वाहा) बोलने का अथवा अभ्यास बताया। तब वैसा ही किया गया। सन् ५७ से ६५ तक राजस्थान के ब्यावर आदि नगरो के आर्यसमाजो मे श्री आनन्दभिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता मे जो पारायण यज्ञ होते थे उनमे भी 'ओ३म् स्वाहा' से आहुति दी जाती थी। इन पक्तियो का लेखक दस वर्ष की आयु में सन् ४३ मे श्री स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा सस्थापित–सचालित चित्तौडगढ गुरुकुल मे प्रविष्ट हुआ। वहा प्रतिदिन साय व प्रात यज्ञ समय मे क्रमश वेद के तीस मन्त्रो से आहुति दी जाती थी, जिसके एक वर्ष मे चारो वेदो का पारायण हो सके, तब भी 'ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाती थी।

इस प्रकार कम से कम ५८ वर्ष से यह 'ओ३म् स्वाहा' का प्रयोग कहीं न कहीं होता रहा। पूर्वोद्धृत ब्यावर के श्री प० वासुदेव जी शास्त्री जी के दादाश्री रामप्रतापजी ने महर्षि जी के दर्शन किए थे तब से उनके वशज परिवार निष्ठापूर्वक वैदिक धर्म कर्मानुयायी हैं और निस्पृह भाव से आर्यसमाज के प्रचार'प्रसार मे सलग्न हैं। श्री स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य थे और सन् १६१५ के लगभग वे गुरुकुल कागडी के प्रतिष्ठित स्नातक बने। इन स्वामी जी ने और श्री रामप्रताप जी के परिवार ने जो यह 'ओ३म् स्वाहा' की पद्धति अपनाई, उसका मूल निश्चय ही उनसे पुराना है।

अब इस 'ओ३म् स्वाहा' पर जो माम्मट वक्रदृष्टि हुई है, उस विषय मे थोडा विचार करे।

(१) पहला दोष यह लगाया गया है 'ओ३म् स्वाहा'' बोलकर आहुति देने से होम की मूल भावना 'मन्त्रो से आहुति देना' का लोप हो जाता हैं, क्योकि ओकार मन्त्र से भिन्न हैं।' यह हेत्वाभास है क्योकि ''विश्वानि आसुव।'' मन्त्र तो इतना ही हैं। जब स्वाहा लगाया गया तो वह भी मनत्र से भिन्न हुआ कि नहीं ? यदि कहे कि ' वह तो मन्त्र से बहिर्भूत है तो उससे पहले लगाए गए 'ओ३म्' को भी मन्त्र से बहिर्भूत मान लेने पर मन्त्र से ही आहुति क्यो नहीं मानी जाएगी ? फिर जब आप 'विश्वानि ' से पहले 'ओ३म्' लगाते हैं, तो वह भी तो मन्त्र भाग नहीं है, तो भी आप मन्त्र से आहुति मानते हैं तो अन्त मे 'ओ३म्' लगाने पर मन्त्र से आहुति क्यो नहीं मानी जा सकती ?

मन्त्रो से ही आहुति देने की बात पर बल दिया जा रहा है। 'मन्त्र' किसे कहते हैं ? वेदवचन (=ऋचा, यजु और साम) ही मन्त्र हैं महर्षि जी ने भी आहुति देने में वेद मन्त्र को ही मन्त्र माना है। वे 'वसुभ्यस्त्वा '(यजु० २ १६) के भावार्थ मे लिखते हैं – 'अग्नौयाऽऽहुति क्रियते सा वेद मन्त्रैरेव कर्त्तव्या, यतस्तस्या फलज्ञाने नित्य श्रद्धोत्पद्येत और गृह्यसूत्र वेदमन्त्रो से भिन्न अहित एव कल्पित मन्त्रो से भी भरे पडे है। स्वय महर्षि जी के 'सस्कारविधि' मे शतश मन्त्र (?) दिए गए हैं, जो वेदमन्त्र (=वेदवचन) नहीं हैं। 'ओम् अधर्माय स्वाहा' ओ विविष्ट् यै स्वाहा' 'ओ कषोत्काय स्वाहा।' (सन्यासविधि ।) आदि वेदमन्त्र नहीं हैं। वेदो मे अधर्म विविष्टि, कषोत्क का नामोनिशान नहीं है। ये तै०आ० के वाक्य हैं। जब इन्हे भी मन्त्र मानकर आहुति दी जा सकती है, तो क्या 'ओ३म्' सहित स्वाहा से नहीं ? क्या 'ओ३म्' शब्द अधर्म और कषोत्क से भी बुरा हो गया जो उस पर इतना होहल्ला मचे।

विवाह सस्कार के जया होम मे 'चित, चित्ति , विज्ञातं, विज्ञाति' इतने एक एक पदमात्र को मन्त्र मानकर आहुति का विधान किया गया है। सन्यास मे 'भू' पदमात्र को मन्त्र नाम देकर पूर्णाहुति कराई गई है, तब 'ओ३म्' स्वाहा के साथ लग गया तो उससे पूर्व बोला जा रहा वेदमन्त्र क्या मन्त्र सज्ञा से हीन होकर आहुति लायक नही रहा ? कहा जाएगा कि 'चित' 'भू' आदि भले ही वेद मे मन्त्ररूप मे नहीं हैं किन्तु वेदमन्त्रो मे वे शब्द आए तो हैं। इस पर हमारा कथन है कि 'ओ३म्' शब्द भी तो वेदमन्त्रो मे आया है। यजु० के २ १३ मन्त्र मे 'ओ३म् प्रतिष्ठ' के रूप मे और ४० १४ मन्त्र मे 'ओ३म् क्रतोस्मर के रूप मे फिर' भू' 'चित्त' आदि की तुलना मे 'ओ३म्' के श्रेष्ठत्व को देखे। ओ३म् का नाम 'प्रणव' इसीलिए रखा गया है, कि नाम के द्वारा ही प्रभु की सबसे बढिया स्तुति=गुणवर्णन किया जा सकता है। प्रकृष्टो नव=स्तव=स्तुतिर्येन स प्रणव (प्र+णू स्तुतौ+ अप भावे–प्र+नव (बहु)।

नस्यणत्वे प्रणव। ओम् से उन्नीस अर्थ हैं। वे सब ईश्वरगुणानुवाद मे घटित होते है। समिदाधान का प्रथम 'अयन्त इध्म' और स्विष्टकृत् का 'यदस्यकर्मणो वाक्य का कही वेदमन्त्र है ? ये 'आश्वाला गृह्य' के वचन हैं जलसेचन के तीन वाक्य भी वैदमन्त्र नहीं हैं। तब फिर 'ओ३म् पर इतना 'अमन्त्रत्व दोष' क्यो ?

(२) दूसरा दोष 'ओकार सहित स्वाहा बोलने के कारण ऋक्त्वनाश हो जाता है अर्थात् छन्दो भग होता है'। यह भी चिन्त्य है। जब रि के स्थान पर 'ओ३म्' बोला जाएगा तो छन्दोभग नहीं होगा। यदि च स्वतन्त्र रूप से ओ३म् बोला जाए, तब भी छन्दोभग दोष नहीं लगेगा। क्योकि जैसे मन्त्र के आरम्भ मे बोले गए 'ओम्' से छन्दोभग या ऋक्त्वनाश दोष नहीं होता वैसे स्वाहा से पहले लगाए गए 'ओ३म्' से भी वह दोष नहीं माना जाना चाहिए। यदि आदि मे बोला गया 'ओम्' ऋचा से बहिर्भूत है तो स्वाहा के साथ 'ओ३म्' भी ऋग्बहिर्भूत है।

(३) तीसरा दोष 'यह शास्त्रविरुद्ध है'।

पहले तो यह सोचना है कि 'शास्त्र के अन्तर्गत कौन से ग्रन्थ हैं ? महर्षि के मतव्यानुसार जो वेद सहिता 'शास्त्र' हैं। उनमे श्रौतसूत्र और गृहसूत्र एव ब्राह्मणग्रन्थ और मानुस्मृति हैं। जबकि पुस्तिका में 'बृहत् पाराशर स्मृति और लघु हारीत स्मृति' (पृ० ७–८) के प्रमाण दिए हैं। ऐसा क्यो ?

विरोध भी दो प्रकार का होता है। एक तो जहा जिस बात का या कर्म का निषेध किया गया हो उसको करने का विधान या सम्पादन करना। दूसरा जिस कार्य को जैसे करने का उल्लेख हो उसको छोड देना या न करना। यथा 'स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाए। यह विधान है, तो 'स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाए। यह विधान है, तो 'स्वाहा' पद बिना बोले आहुति करना यह विरोध हुआ।

किन्तु यदि यह माना जाए कि शास्त्र मे जो नहीं लिखा हो, उसे मानना या करना शास्त्र विरुद्ध है चाहे वह लाभकारी क्यो न हो। तब तो अनेकत्र महर्षि ग्रन्थो मे भी शास्त्रविरोध रूपी दोष लगेगा। (अ) प्रचलित साप्ताहिक सोमवार, शनिवार आदि नाम अवैदिक ही नहीं अभारतीय सर्वथा काल्पनिक है। किसी वेद–ब्राह्मण–कल्पसूत्र–स्मृति आदि शास्त्रो मे तो क्या रामायण–महाभारतादि मे भी इन वारो का उल्लेख नहीं है। वेद मे 'वार' शब्द तो आया है, पर सर्वत्र उसका अर्थ अन्न (ऋ १ १२८ ६), वरणीय प्रदेश (ऋ १ १५१ ५) वरणीय धन (ऋ० ५ १६ २) वरणीय तेज (ऋ० १० ७४ २), आवरक अन्धकार (ऋ० ६ ११० ६) आदि हैं। प्रचलित सप्ताहनामों के रूप मे कहीं वार नहीं है। किन्तु महर्षि जी ने अपने ग्रन्थो मे इन नामों का प्रयोग किया है, यथा – 'अमाया शनिवारेऽय ग्रन्थारम्भ कृतो मया' त्रयोदश्या रवौवारे (सस्कार)। 'गुरोर्वारे प्रात प्रतिपद' (यजु० भाष्य०)।आदि। तो इस वार प्रयोग से महर्षि जी का यह कार्य क्या शास्त्र विरुद्ध हो गया ?

(ब) कल्पसूत्रो मे हविष्यान्न के रूप मे व्रीहि (=चावल) और यव (=जौ) का विधान है, किन्तु महर्षि जी ने हविरन्न मे 'गेहू का भी उल्लेख सस्कारविधि मे किया है। तो कल्पसूत्रों मे गेहूं (=गोधूम) का क्वचित् भी उल्लेख न होने पर भी महर्षि जी द्वारा उसे हविरन्न कहने से 'शास्त्र विरोध' हो गया ? विदित हो कि तै० ब्रा० (१ ३ ७ २) में गोधूम को चषाल (=यूपकटक) के निमाणर्थ श्रेष्ठ तो माना है पर वहा भी हविरन्न का प्रसग नहीं हैं।

(स) 'अयत इधम' मन्त्र से ५ बार घृत आहुति दी जाती है। यहा पाच सख्या की विद्वानो ने भिन्न–भिन्न व्याख्याए की हैं। पर किस कल्पसूत्र मे पाच बार का विधान हैं ? तो क्या यह 'शास्त्र विरोध' हो गया ? फिर यह मन्त्र घृताहुति का है ही नहीं समिदाहुति का है। इध्म कहते ही इन्धन (=काष्ठ=समिधा) का है। यदि कहा जाय कि 'इध्यते प्रदीप्यतेऽग्निरनेनेति' इस व्युत्पत्ति से धात्वर्थ बल से घृत भी 'इध्म' है तब तो कपूर व्यजन, नलिका, वायु आदि भी 'इध्म' पदवाच्य होगें। फिर किसी वेद मे या वेद भाष्य में इध्म का अर्थ घृत नहीं किया गया है। महर्षि जी ने जितना वेदभाष्य किया है उसमे ६ या ७ बार 'इध्म' शब्द आया है, पर कहीं भी उसका अर्थ घृत नहीं किया गया है। फिर दो मिनट पूर्व ही जिस मन्त्र को समिध् की आहुति में प्रयुक्त किया गया है। उसे तुरन्त घृताहुति के रूप में प्रयुक्त करना कैसे प्रशस्य है ? हा यदि वेद में घृत पद वाले मन्त्र नहीं होते, तब तो इस मन्त्र से भी काम चलाया जा सकता था। किन्तु जब वेद में अनेक मन्त्र घृतपदबहुल हैं, तब घृताहुत्यर्थ इध्म वाले मन्त्र का प्रयोग चिन्त्य ही है। उदा 'आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृत प्रतीको घृतयोनिरेधि घृत पीत्वा मधु चारु गव्य पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा' (यजु० ३५ १७)। क्या शास्त्रानुमत न होने से किसी ने महर्षि जी के इस विधान को शास्त्र विरुद्ध करार दिया जाए ?

(द) कल्प सूत्रो (=कात्या श्रौ० २ १२ ७,३ २ १, २ १४ १,३ ३ १०) के अनुसार ओम् प्रजापतये, और ओम् इन्द्राय' मन्त्र आपाराहुति के और 'ओम् अग्नये' तथा 'ओ सोमाय मन्त्र आज्याभागाहुति के हैं, किन्तु महर्षि जी की सस्कारविधि में शास्त्र से विपरीत विधान है तो क्या इसे शास्त्र विरोध कहकर किसी ने आन्दोलन किया ?

(य) किस शास्त्र मे लिखा है कि वेद मन्त्रो के शब्दो का स्वरूप बदल दिया जाए और तदनुसार अर्थ कर दिया जाए। 'गृहाश्रम प्रकरण' के २१, २२, २३ मन्त्रो मे अथर्ववेद के सृष्टा, श्रिता, आवृता, प्रावृता, परीवृता परिहिता, पर्यूढा, गुप्ता और प्रतिष्ठिता इन स्त्रीलिग प्रथमा विभक्ति के एकवचन के रूपो को पुलिग प्रथमा बहुवचन बना दिया गया और तदनुसार अर्थ भी कर दिया गया। अथर्व० १२ ५ १–३ मन्त्रो के ये शब्द वस्तुत 'ब्रह्मगवी' के विशेषण हैं। और अतएव स्त्रीलिग प्रथमेकवचन के ही रूप हैं। शास्त्रविरुद्ध होने से या किसी ने विरोध का झण्डा खडा किया ? इत्यादि को शास्त्रानुमत न होने पर भी जब सहन किया जा रहा है, तब 'ओ३म् स्वाहा' पर असह्यता क्यो दिखाई जा रही है ? माना कि कल्पसूत्रादि मे 'ओ३म् स्वाहा' का विधान नहीं है, पर स्वाहा से पूर्व ओ३म् लगाने का निषेध भी तो कहीं नहीं किया गया है। जिन महानुभवो ने इसे आरम्भ किया होगा, लाभ की दृष्टि से ही तो किया होगा।

शेष पृष्ठ ८ पर

विश्वव्यापी संकट के रूप में उभर रहे आतंकवाद के उन्मूलन के लिए भारत का प्रस्ताव

– दिनकर शुक्ल

अमेरीका मे ११ सितम्बर, २००१ को हुए भयानक हादसे से काफी पहले से, भारत अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद के खात्मे के लिए अपनी व्यापक सधि के मसौदे को जल्दी से जल्दी पारित कराने के लिए सयुक्त राष्ट्र मे लगातार कोशिश कर रहा था। सधि का मसौदा कई सालो से सयुक्त राष्ट्र मे लम्बित पडा है। भारतीय मसौदे की मूल भावना यह है कि आतकवाद विश्वव्यापी खतरे के रूप मे उभर रहा है, जिसके उन्मूलन के लिए एकजुट अन्तर्राष्ट्रीय कार्रवाई की जरूरत है। सन्धि का मसौदा इस विषय से सम्बन्धित सयुक्त राष्ट्र की समिति के सामने पहले ही विचारार्थ आ चुका है। छठी समिति के कार्यकारी दल की बैठक मे पिछले साल अक्तूबर मे इस सधि पर पहले दौर की चर्चा हो चुकी है। समिति – स्तर पर दूसरे दौर की चर्चा इस साल फरवरी में हुई। जैसाकि सयुक्त राष्ट्र मे परस्पर है कि इस प्रकार के किसी भी तकनीकी प्रसताव की मजूरी के लिए सिफारिश से पहले चर्चा के कई दौर चलते हैं।

इन चर्चाओ के दौरान भारतीय सधि के मसौदे का कई देशो और अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो ने व्यापक समर्थन किया। उनमे अमेरीका तथा जी–८ के अन्य सदस्य देश, यूरोपीय सघ, राष्ट्र मण्डल के देश और कई एशियाई अफ्रीकी तथा दक्षिणी अमेरीका देश शामिल थे। उदाहरण के लिए, इन देशो ने भारतीय सधि के मसौदे मे आतकवादी गतिविधियों से दूर रहने की राज्य की जिम्मेदारी के साथ-साथ इस बात पर भी जोर दिया गया है कि उनकी जमीन पर आतकवादी ठिकाने और आतकवादी शिविर न बनाए जाए।

भारतीय सधि का मसौदा एक व्यापक दस्तावेज है। इसके व्यापक प्रावधानो मे आतकवादियो और उनके सहयोगियो के खिलाफ कानूनी कार्रवाई या उनके प्रत्यर्पण की व्यवस्था है। आतकवादी कार्रवाई को समर्थन देने वाले देश और सगठन भी प्रस्तावित सधि के दायरे मे लाए गए। उसमें सभी सम्मिलित देशो से एक दूसरे के साथ सहयोग करने और अपनी गतिविधियो में सामजस्य रखने पर जोर दिया गया है, जिससे आतकवाद के उन्मूलन लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

दायरा

प्रस्तावित सधि के पहले ही अनुच्छेद में सधि मे शामिल देशों मे अपने अपने क्षेत्रों के भीतर आतकवाद रोकने और आतकवाद रोकने और आतकवादी कार्रवाइयो को दण्डित करने के लिए सभी कारगर उपाय करने की जिम्मेदारी की बात कही गई है। आतकवाद के अपराध को पारिभाषित करने वाले अनुच्छेद के दायरे मे विमानो पर गैर-कानूनी कब्जा, नागरिक उड्डयन की सुरक्षा के खिलाफ गैर-कानूनी कार्रवाई, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरक्षित व्यक्तियो के खिलाफ अपराध, बधक बनाने, समुद्री नौवहन को खतरा और आतकवादी बमबारी जैसे आतकवाद से जुडे अपराधो शमिल किए गए हैं।

एक लम्बे समय से सीमा-पार के आतकवाद के शिकार भारत ने अपनी प्रस्तावित सधि मे सयुक्त राष्ट्र के सदस्यो को इन अपराधिक कार्रवाइयो की रोकथाम और हतोत्साहन के लिए उचित कानून बनाने की सलाह दी है। इन कार्रवाइयो के दायरे मे किसी दूसरे देश के खिलाफ आतकवादी गतिविधिया चलाना, सगठित करना, बढावा देना, उनमे मदद करना और उनके लिए धन की व्यवस्था करना सम्मिलित है। मसौदे मे यह भी प्रस्ताव है कि सदस्य राष्ट्र ऐसी गतिविधियो से दूर रहेगे, जिनसे आतकवादी कार्रवाइयो को किसी प्रकार का बढावा मिलता हो। मसौदे के अनुसार ऐसी आपराधिक कार्रवाइयो एव अपराध की गम्भीरता देखते हुए उचित प्रकार से दण्डित किए जाना चाहिए।

सधि मे शामिल होने वाले देशो का यह भी दायित्व है कि वे ऐसे कदम उठाए जिनसे सुनिश्चित हो सके कि उनकी जमीन का प्रयोग किसी दूसरे देश के खिलाफ आतकवादी गतिविधिया चलाने के लिए न किया जाए। भारतीय सधि मे प्रस्ताव है कि सदस्य देश किसी व्यक्ति या पूर्वाग्रह से ग्रस्त गतिविधियो मे लिप्त या व्यक्तियो को शरण देने से पूर्व उचित कदम उठाएगे और सावधानिया बरते। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आतकवादी पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति किसी दूसरे देश मे शरण न पा सके। सदस्य देशो से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे प्रत्यर्पण तथा आपसी न्यायिक सहायता के अनुरोधो पर तत्काल कार्रवाई करे।

सधि के मसौदे मे सदस्य राष्ट्रो पर यह भी जिम्मेदारी सौपी गई है कि वे एक-दूसरे को आतकवादी अपराधो से जुडे आपराधिक मामलो मे परस्पर न्यायिक सहायता से सम्बन्धित व्यापक सुविधाए उपलब्ध कराए। सधि के अन्य प्रावधान अपराधो, प्रत्यार्पण की पद्धतियो और क्षेत्राधिकारो के विशेष ब्योरो के बारे मे है।

आतकवादी गतिविधियो से निपटने के विषय पर भारत का विश्व सस्था के सामने लम्बित यह तीसरा मसौदा है। रूस और फ्रास ने अपनी-अपनी सधियो के मसौदों को पारित करने के प्रस्ताव किए हैं, जिनमें रूस ने परमाणु आतकवाद से निपटने और फ्रास ने आतकवादी गतिविधियो तथा आतकवादी सगठनो के लिए धन की व्यवस्था से जुडे मुद्दे उठाए हैं।

प्रगति

पिछले तीस सालो मे सयुक्त राष्ट्र ने विमानो के गैर-कानूनी कब्जे, नागरिक उड्डयन की सुरखा के खिलाफ गैर-कानूनी कार्रवाइया, राजनयिक एजेंटो के खिलाफ अपराध, स्थापनाओ के खिलाफ गैर-कानूनी कार्रवाइया और आतकवादी बमबारी जैसी कुछ सन्धिया पारित की हैं। लेकिन भारतीय सधि का मसौदा इन सबसे इस मायने मे अलग है कि यह अपने स्वरूप और दायरे के लिहाज से काफी व्यापक है। यह प्रस्तावित सधि, माट्रियल तथा हेग सधियो से पहले के कानूनो और सधियो के सगत मुद्दो को शामिल करके आतकवाद से निपटने के लिए एक व्यापक ढाचा प्रस्तुत करती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि अमेरिका भारत की प्रस्तावित सधि के लिए समर्थन जुटाने के लिए सहमत हो गया है और अब जबकि वह इतनी बुरी तहत आहत हो गया है तब वह निश्चित रूप से भारतीय प्रस्तावित सधि को भविष्य मे जल्दी ही पारित कराने के लिए सहयोग करेगा। ११ सितम्बर को विश्व ने मानवता के खिलाफ जो शैतानी कार्रवाइ देखी, उसके बाद प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि भारत आतकवाद के खिलाफ विश्वव्यापी अभियान चलाने मे अमेरीका का साथ देने के लिए तैयार है। राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश को भेजे गए एक सहानुभूति पत्र मे प्रधानमन्त्री ने अमेरीका को हरसम्भव सहयोग देने का प्रस्ताव किया है।

पिछले साल सयुक्त राष्ट्र महासभा के विशेष सहस्राब्दी सम्मेलन मे श्री वाजपेयी ने सभी सदस्य देशो से बिना समय गवाए अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद की रोकथाम के लिए भारतीय सधि के मसौदे को पारित करने और उसे लागू करने की अपील की थी। अब जबकि, न्यूयार्क और वाशिगटन मे बर्बरता के वीभत्स रूप के परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद के भयावह स्वरूप से दुनिया परिचित हो चुकी है, तब भारतीय प्रस्तावित सधि की प्रासगिकता बहुत ही अधिक बढ गई है।

– पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार

दीवाली का नवसन्देश

– कुलानन्द भारतीय

सबके आनन्द भवन मे दीपावलि के अनुपम दीप जले।
घर, आंगन, कुटिया-बगिया में, खुशियो के बासती फूल खिले।।
दीप-दीप के अनेक दीप मे, एक ही ज्योति-प्रकाश समाया है।
गुरु नानक के शब्दो में, प्रभु ने एक नूर से जग उपजाया है।।
प्रभु गगन में हैं, चमन में, गुलशन मे, सबके जीवन मे हैं।
उस सृष्टिकर्त्ता जगन्नियन्ता परमपिता को शतबार नमन हैं।
यह शुभ दीवाली भाव-भक्ति का नवसन्देश लेकर आई है।
हमको तुमको सबको जग में, दीवाली की बधाई है बधाई है।

— ३०/२१, शक्ति नगर, दिल्ली—७

R N No 32387/77 Posted at N D P S O. on 8-9/11/2001 दिनाक ५ नवम्बर से ११ नवम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 8-9/11/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

पृष्ठ ६ का शेष भाग

मुम्बई यज्ञ के 'ओ३म् स्वाहा'

(४) **चतुर्थ दोष** यह बताया गया कि 'स्वाहा' से पहले 'ओ३म्' लगाना वेद विरुद्ध है क्योंकि वेद मे 'स्वाहाकृत हविरदन्तु देवा' कहा गया है (पृ० २५)। यहा प्रथम तो यह विचारणीय है कि 'स्वाहा कृतम्' पद मे 'स्वाहा' का शब्दरूप मे प्रयोग है अथवा अर्थरूप मे ? महर्षिजी ने यहा 'स्वाहा' का शब्द रूप प्रयोग नहीं माना है। ऋग्वेद (१० ११० ११) का यह मन्त्र यजुर्वेद (२६ ३६) मे भी है। वहा महर्षि जी ने 'स्वाहाकृतम्' का अर्थ 'सत्येन निष्पादित कृत होम वा' (=सत्यव्यवहार से सिद्ध किए वा होम किए से बचे) अर्थ किया है। ऐसी स्थिति मे विदुषी जी का किया अर्थ चिन्त्य ही है। किच यदि मान भी लियजाए कि 'स्वाहाकृतम्' मे 'स्वाहा' शब्दरूप ही है तब भी उससे 'ओ३म्' साथ लगाने का खण्डन नहीं होता। क्योकि उपरि उद्धृत चतुर्थ चरण से पूर्व मन्त्र का तृतीय चरण है – 'अस्य होतु प्रदिशि+ऋतस्य वाचि' 'अस्य ऋतस्य होतु प्रदिशिवाचि' (उच्चारिताया) स्वाहा कृत हवि देवा अदन्तु ऐसा अर्थ लगा। प्रदिशिवाचि का अर्थ हुआ प्रदिष्ट=निर्दिष्ट वाणी के प्रयुक्त होने के पश्चात् 'स्वाहा' कृत=स्वाहा शब्द लगाकर दी गई हवि का=हविराहुति का देव लोग उपभोग करे। यह निर्दिष्ट वाक् क्या है ? वेदवाक् ही तो। क्या 'ओ३म्' शब्द वेदवाक् के अन्तर्गत नहीं है ? अत 'स्वाहा' कार से पूर्व 'ओ३म्' लगा दिया तो वह वेद विरुद्ध कैसे हो गया।

(५) **पञ्चम दोष** . बताया गया कि पिछले महासम्मेलनो मे कभी 'ओ३म् स्वाहा' नहीं बोला गया अपनी व्यक्तिगत पहचान के लिए कुछ भी आदि। यह बात भी सर्वाश मे सत्य नहीं है। सन् १६६८ मे हैदराबाद के नुमाइश मैदान मे हुए आर्यमहासम्मेलन मे आयोजित पारायणयज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य कृष्ण जी (= वर्त्तमान मे स्वामी दीक्षानन्द जी) थे। तब पारायण वेद मन्त्रो के अन्त मे ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति दी गई थी। वेदपाठियो मे श्री ज्ञानेन्द्र जी, श्री सत्यप्रिय जी, आदि के अतिरिक्त इन पक्तियो का लेखक भी था। उस महासम्मेलन मे सर्वश्री विश्वश्रवा जी, श्री धर्मदेवजी वि०मा० श्री मीमासक जी आदि भी आए हुए थे। सम्भावना थी कि वे 'ओ३म् स्वाहा' का विरोध करेगे। पर वैसा नहीं हुआ। यदि विरोध किया जाता, तो समाधान कर दिया जाता।

(६) **षष्ठ दोष** यह बात कही गई कि फिर मध्य भाग मे भी 'ओ३म् लगाइए' आदि (पृ०२७)। यह कोई बात नहीं है कि स्वाहा से पहले ओ३म् लगा दिया तो मन्त्र मध्य मे भी लगाया जाए। मन्त्र का अपना कथ्य है, उसके मध्य मे लगाने की आवश्यकता नहीं है। और यदि सम्भव हो तो वहा लगाया ही जाता है। क्या महर्षि जी ने मन्त्रो के अन्तर्गत आए पदो के आरम्भ मे ओ३म् लगाकर अनेक मन्त्र अहित नहीं किए ? देखिए 'यजु. (३६) के मन्त्र के छ मन्त्र बनाकर उनमे छ बार 'ओ' लगाया कि नहीं ? यजु० (यजु० २२ २०) के एक मन्त्र 'काय स्वाहा शिपिविष्टाय स्वाहा' के १७ मन्त्र (वानप्र० सस्कार मे) बनाए कि नहीं ? यदि कहो कि नहीं बोला जाएगा तो 'ओकार वेदेषु' और 'स्वाहात्र प्रणवादिक मन्त्र प्रयोजयेत्' के विपरीत होगा। किच महर्षि जी ने तो एक मन्त्र मे ही सात बार ओ का प्रयोग किया है वह है प्राणायाम मन्त्र 'ओ भू ओ भुव आदि। यहा यह नहीं माना जा सकता कि इन्हे सात मन्त्र मान लेगे। महर्षि जी के शब्द हैं – 'नीचे लिखे मन्त्र का जप भी करता जाए' यहा एकवचन ' मन्त्र' शब्द है। इस एक मन्त्र में सात बार ओ लगाने का उत्तर ? सिवाय इसके कि ओकार प्रणव है, इससे ईश–गुण–स्तवन उत्तम रीति से होता है, अत सात बार भी लगा दिया गया।

(७) **सप्तम दोष** · बात यह कही गई कि 'हो सके तो फिर मन्त्र बोलिए ही नहीं, ओ३म् ही ओ३म् काहिए' (पृ० २७)। इस पर निवेदन है कि ऐसा ही हो रहा प्राय सर्वत्र हो रहा है। साय आहुतियो के दो मन्त्रो के बाद 'ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाती है। इस पर कहा जाएगा कि वहा मन्त्र है 'अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि ।' और इसका मन मे उच्चारण करके फिर आहुति देना है। निश्चय ही ऐसा विधान है, किन्तु कौन इसका पालन करता है ? । नब्बे प्रतिशत लोग मन्त्र का मन मे उच्चारण नहीं करते। 'ओ३म्' शब्द को अवश्य लम्बा (प्लुत सा) बोलते हैं और तुरन्त स्वाहा बोलकर आहुति देते हैं। प्राय सर्वत्र यह कहना पडता है कि 'भाई !' 'ओ३म् स्वाहा' इतना कोई मन्त्र नहीं है, 'अग्निर्ज्यो. मन्त्र को मन मे बोलो फिर स्वाहा बोलो, और यदि मन मे बोलने का धैर्य नहीं है, तो उस मन्त्र का उच्चारण ही कर लो, उसका लोप तो न करो। यही बात स्विष्टकृदाहुति के बाद की प्राजापत्याहुति के समय की है जब प्रतिदिन प्राय लोग 'ओ३म् स्वाहा' बोलकर आहुति देते हैं, तब उसको दूर करने का क्या प्रयास हुआ ? इस पर कथन होगा कि ये तो लोगो की त्रुटि है। पर महर्षि जी ने तो मन्त्रान्त मे 'ओ स्वाहा' का प्रयोग नहीं किया। अब हम बताते हैं कि महर्षि जी ने भी प्रयोग किया है –

महर्षि जी द्वारा 'ओ स्वाहा' का प्रयोग

महर्षि दयानन्द जी ने मन्त्र के अन्त मे स्वाहा से पूर्व ओ का प्रयोग किया है और एक बार नहीं दो बार किया है देखिए दैनिक यज्ञ के मन्त्रो मे –

'ओम् आपो ज्योति रसोऽमृत ब्रह्म भूर्भुव स्वरो स्वाहा'

यहा स्पष्ट ही 'स्वाहा' से पूर्व ओकार का प्रयोग हुआ है। और सभी लोग प्रात तथा साय इसे बोलते हैं, तो क्या यह शास्त्रविरुद्ध प्रयोग है ? कोई चिल्लाया इस पर ? इसी प्रकार सन्यास सस्कार के होम मे भी – 'त्व तदाप आपो ज्योति रसोऽमृत ब्रह्म भूर्भुव स्वरो स्वाहा' प्रयोग है। जब स्वय महर्षि जी ने दो स्थानो पर मन्त्रान्त मे 'ओ स्वाहा' का प्रयोग किया है, तो अन्य मन्त्रो मे कोई पारायण आदि के समय सोद्देश्य स्वाहा से पहले ओम् लगादे तो अपराध कैसे हो गया ? यदि कहे कि महर्षि जी ने जिस मन्त्र मे 'ओ स्वाह' लगाया वहां तो ठीक है अन्यत्र नहीं ? तो इस मन्त्र मे 'ओ स्वहा' लगाने का क्या हेतु है ? यहा लगेगा तो और मन्त्र, . . 'महर्षि जी ने तो तै० आरण्यक से यह मन्त्र लिया है, और वहां ओ स्वाहा' का सकेत है। यदि कहें कि यह मन्त्र वेदेतर ग्रन्थ का है, अत स्वाहा से पूर्व ओं लगा दिया होगा। फिर तो सस्कारविधि में वेदेतर ग्रन्थों के शतश मन्त्र हैं, वहा भी स्वाहा से पूर्व ओ लगाना चाहिए। फिर वेदेतर ग्रन्थीय मन्त्रो मे 'ओं स्वाहा' लगे, तो वेदस्थमन्त्रों में 'ओं स्वाहा' क्यो नहीं ? क्या वे अछूत हैं ?

समयाल्पता के कारण पत्र–पत्रिकाओं के सब लेखो को मैं नहीं पढ पाता, पर जब मुम्बई से इन 'ओ३म् स्वाहा' से सम्बद्ध एक पुस्तिका ही मुझे प्राप्त हो गई तब मैंने अपने विचार प्रकट किए हैं।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मेरा स्वामी सत्यम् जी से कोई विशेष परिचय नहीं है। जीवन मे कुल ३ या ४ बार ही उनके दर्शन हुए हैं। एक सन् ४४ मे जब वे 'सत्यशील' नाग के ब्रह्मचारी थे। दो सन् ७५ मे कीर्त्तिनगर आर्य समाज मे जब मेरी कथा थी। तीन अभी सन् ६६ मे गुरुकुल गौतमनगर मे। तब मैंने उनसे 'सत्यम्' ऐसा नपुसक लिग नाम न रखने का निवेदन किया था। इसके अतिरिक्त मेरा इनसे कोई व्यवहार नहीं है। अत मेरा निवेदन उनका पक्ष लेकर नहीं, अपितु मेरे अपने विचारो का ही प्रकटीकरण है।

– २७२, आर्यनगर, अलवर-३०१००१ (राज०)

प्रतिष्ठा मे

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक ४२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, १२ नवम्बर से १८ नवम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 'जीवन प्रभात' अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम हेतु २० लाख रुपये प्रदान

दिल्ली, ६ नवम्बर। आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख और नियन्त्रण मे गुजरात के भूकम्प पीडित परिवारो के अनाथ बच्चो और विधवाओ के लिए **'जीवन प्रभात'** नाम से एक भव्य आश्रम की स्थापना गाधीधाम आर्यसमाज के तहत की गई है।

इस विशाल परियोजना के लिए २० लाख रुपये की राशि सभा की ओर से दी गई है। यह राशि केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली के कर कमलो से **'जीवन प्रभात'** के प्रबन्धको को प्रदान की गई। इस समारोह मे सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल, सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचित प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, गुजरात के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य, बगाल सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य, बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, चौ० लक्ष्मी चन्द, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पी०एन० आर्य श्री सोमदत्त महाजन, राजेन्द्र दुर्गा आदि उपस्थित थे।

यह समारोह सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की अध्यक्षता मे हुआ। गत् माह ही श्री अरुण जेटली एव जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल ने गाधीधाम मे इस आश्रम का शिलान्यास किया था। जिसके लिए दो एकड भूमि केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई है।

श्री वधावन ने बताया कि इस योजना पर लगभग दो करोड रुपये व्यय होने की सम्भावना है। वर्तमान मे भूकम्प मे अनाथ हुए २१ बालक बालिकाए और १० विधवा बहने इस आश्रम मे प्रवेश प्राप्त कर चुकी है।

केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली अपने कर कमलो से २० लाख रुपए की राशि के चैक श्री वाचोनिधि आर्य को प्रदान करते हुए। साथ में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य, न्याय सभा अध्यक्ष श्री रामफल बसल, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन एव चौ० लक्ष्मीचन्द।

उन्होने बताया कि यह आश्रम सयुक्त परिवार के सिद्धान्त पर आधारित होगा। इसमे प्रारम्भ से लेकर विशेष शैक्षणिक योग्यताओ तक का प्रबन्ध किया जाएगा। विधवा बहने इन बच्चो का पालन पोषण करेगी उनके लिए कुटीर उद्योगो के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होगी।

गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने देश विदेश के साधन-सम्पन्न महानुभावो को आह्वान किया है कि वे इस महान मानवीय कार्य मे अपनी सात्विक आय मे से अपनी क्षमतानुसार सहयोग अवश्य करे।

श्री वाचोनिधि ने कहा है कि जहा कही भी बेसहारा अनाथ बच्चे व विधवा बहने जनता के सम्पर्क मे आए उन्हे आश्रम सहर्ष स्वीकार करेगा।

इस से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक मे इस विषय पर समस्त तथ्य प्रस्तुत किए गए तथा यह राशि आर्य समाज गाधीधाम को प्रदान करने की स्वीकृति सभा ने दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य द्वारा जारी घोषणा-पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित होने पर मै समूचे आर्य जगत् के प्रति आभार व्यक्त करता हू।

मैं प्रतिज्ञा करता हू कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप मे मैं कभी असत्य, अन्याय और अनाचार से समझौता नहीं करूगा। एक सच्चे आर्य के रूप मे नि स्वार्थता, त्यागभावना और समर्पण भाव से आर्य-सगठन को उन्नत और प्रगतिशील बनाने मे अपना सर्वस्व लगा दूगा। मैं साधारण सभा को पूर्ण अधिकार देता हू कि इस प्रतिज्ञा के विरुद्ध चलने अथवा निष्क्रिय प्रमादी व आलसी सिद्ध होने की स्थिति मे किसी भी समय वह मुझे इस पद से वचित कर सकती है।

योजना एव संकल्प पत्र

आर्यसमाज की सर्वांगीण और सार्वभौमिक उन्नति को समक्ष रखकर निम्नलिखित कार्य करने की मेरी योजना है –

सगठन :- आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ और क्रियाशील बनाने के लिए मै पूर्ण प्रयत्न करूगा कि –

१ सब समाजो के सत्सग व यज्ञ पद्धति मे एकरूपता हो।

२ सत्सग आकर्षक हो जिनमे उच्चवर्ग के परिवार भी सम्मिलित होने की इच्छा करे।

३ सत्सगो मे होने वाले भजन व प्रवचन उच्च स्तर के हो जिनसे सदस्य जीवनोपयोगी सन्देश प्राप्त कर सके।

४ कोई भी आर्यसमाज, समाज के किसी भी नियम उपनियम का कभी भी जाने या अनजाने उल्लघन न करे। इस सम्बन्ध मे आनेवाली सभी शिकायतो पर न्याय सभा ध्यान दे तथा तुरन्त उसका उपाय करे।

५ जिन समाजो मे नियमित चुनाव नहीं होते अथवा कुछ ही व्यक्तियो की सम्पत्ति बन [illegible] हैं उन्हे न्याय सभा

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

स्वामी धर्मानन्द जी का व्यक्तित्व पदों से ऊपर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत् चुनावो मे सर्वसम्मति से कै० देवरत्न आर्य को प्रधान चुना गया। यह चुनाव सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की देख रेख, नियन्त्रण एव निगरानी मे हुआ। जिन्हे दिल्ली की एक अदालत द्वारा चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया गया। श्री रामफल बसल दिल्ली उच्च न्यायालय एव सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता होने के साथ साथ एक ईमानदार और राष्ट्रवादी व्यक्ति के रूप मे जाने जाते हैं। श्री बसल डी० ए० वी० कॉलेज प्रबन्ध समिति के उप प्रधान भी है। अदालत ने श्री बसल के साथ एक अन्य अधिवक्ता तथा पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के सेवानिवृत न्यायाधीश श्री आर० एन० मित्तल को भी इस कार्य के लिए नियुक्त किया था। श्री मित्तल भी डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष हैं। परन्तु श्री मित्तल ने बाद मे अपनी असमर्थता एव अनुपलब्धता व्यक्त करते हुए श्री बसल से ही इस दायित्व के निर्वहन करने की लिखित प्रार्थना की थी। निर्णय मे भी यह स्पष्ट किया गया था कि यदि एक व्यक्ति अनुपलब्ध हो तो दूसरा व्यक्ति कार्यवाही सम्पन्न करेगा। रामफल बसल ने हरियाणा सभा से

यह निर्णय स्वामी ओमानन्द जी एव उनके सहयोगियो स परामर्श के उपरान्त ही हुआ था। श्री मरवाह द्वारा दाखिल प्रार्थना पत्र के उत्तर पर श्री आर० एस० तामर ने हस्ताक्षर किए थे जो ओमानन्द जी के अनन्य भक्त है।

चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ होन से पूर्व ही गुरुकुल कागडी का भूमि घोटाला आर्य जनता के समक्ष स्पष्ट हो चुका था। श्री बसल द्वारा इस आर्य समाज और सगठन विरोधी कार्य की भी घोर भर्त्सना की गई। इस कार्य मे स्वामी ओमानन्द प्रो० शेरसिह इन्द्रवेश तथा इनके इर्द गिर्द रहने वाले कई व्यक्तियो का आचरण स्पष्टतया सदिग्ध प्रतीत हुआ। दैनिक समाचार-पत्रो मे यह घटना लगातार प्रकाशित होती रही।

इस बीच सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की चुनाव प्रक्रिया जब प्रारम्भ हुई तो भूमि विक्रय मे शामिल इस समूह को अपना भविष्य अन्धकारमय नजर आने लगा क्योकि आर्यजनता इस भूमि विक्रय का विरोध करने और कडे रुख से किसी प्रकार भी यह समझौता न तो करना चाहती थी और न ही किसी को ऐसा करते हुए देखना चाहती थी।

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यजनो मे भी इस बात को लेकर काफी रोष था। इसके अतिरिक्त कई अन्य अवैधताओ और अनियमितताओ को आधार बनाकर श्री केदार सिह ने एक याचिका सार्वदेशिक न्याय सभा के समक्ष प्रस्तुत की। न्याय सभा के अध्यक्ष श्री उत्तर मागा जो सन्तोषजनक नही था। परिणामत हरियाणा सभा के लिए चुनाव अधिकारी एव प्रशासक को सर्वाधिकारी बनाया गया।

इस कानूनी, वैधानिक और धाधलेबाजी को रोकने वाले दृष्टिकोण के विरोध मे स्वामी ओमानन्द जी एव इन्द्रवेश के नाम से सार्वदेशिक सभा के चुनाव को रुकवाने के लिए विभिन्न अदालतो मे लगभग दस मुकदमे किए गए। हर मुकदमे मे यह झूठ बोला जाता रहा कि चुनाव अधिकारी की नियुक्ति हमारी स्वीकृति से नहीं हुई। परन्तु किसी अदालत ने इनकी दलीलो को नहीं माना। कहीं सफलता मिलती न देख अन्तत यह सारा समूह ३ नवम्बर को आर्यसमाज दीवान हॉल के सामने आकर अन्तिम कदम के रूप मे चुनाव प्रक्रिया रुकवाने के लिए प्रयासरत हो गया।

इस विषय को लेकर एक अच्छी खासी पुस्तक भी लिखी जा सकती है।

३ नवम्बर, २००१ को चुनाव प्रक्रिया मे जिस प्रकार चुनाव सम्पन्न हुआ वह गत अक मे सक्षिप्त रूप से प्रकाशित किया जा चुका है। कै० देवरत्न आर्य जी के नाम का जब प्रस्ताव हुआ और सारी पर्चा प्रकाशित किया गया है जिसमे ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे एक सभा ने उसका अनुमोदन किया तो एक दो सदस्यो ने यह कहा कि स्वामी धर्मानन्द जी भी प्रधान पद के प्रत्याशी हैं। चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल जी के निर्देश पर स्वामी धर्मानन्द जी को मच पर आमन्त्रित किया गया। कुछ सदस्य उन्हे सहारा देकर मच पर लाए जहा उन्होने माईक पर कहा कि अस्वस्थता के कारण मैं अपना नाम वापस लेता हू और कै० देवरत्न आर्य को प्रधान बनने के लिए अपना आशीर्वाद देता हू।

इसके अतिरिक्त, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से प्रधान घोषित हुए तो उनके स्वागत के साथ साथ स्वामी धर्मानन्द जी का भी सम्मान स्वाभाविक था।

बाद मे श्री रामफल बसल ने भी स्वामी धर्मानन्द जी से कहा कि आपने स्वय को इन पदो से ऊपर साबित कर दिया है। मैं आपके द्वारा किए जा रहे धर्मान्तरण विरोधी कार्यो से अवगत हू और मेरे मन मे अपके प्रति बहुत आदर है। इस पर स्वामी धर्मानन्द जी ने उन्हे बताया कि मैं तो बिल्कुल इस पद दायित्व के लोभ मे नहीं हू परन्तु मुझ पर मेरे गुरु स्वामी ओमानन्द जी का दबाव था।

स्वामी धर्मानन्द जी ने श्री रामफल बसल को उडीसा मे आकर उनके कार्यो और प्रयासो का अवलोकन करने के लिए आमन्त्रित भी किया।

जो लोग सदस्य नही थे और वैधानिक रूप से चुनाव मे भाग नहीं ले सके उनकी सह पर एक छ (६) पृष्ठीय असवैधानिक और गैर-कानूनी सूची तैयार की गई जिसे सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियो के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। इसी पर्चे मे एक हस्तलिखित लेख भी छापा गया है, जिसे स्वामी धर्मानन्द जी का वक्तव्य कहकर प्रचारित किया जा रहा है। स्वामी धर्मानन्द जी के नाम से यह झूठ प्रचारित किया जा रहा है कि उन्होने अपना नाम वापस नहीं लिया और कै० देवरत्न आर्य को अपना आशीर्वाद नहीं दिया।

सच और झूठ की लडाई मे, आर्यसमाज की प्रगति बनाम भूमि विक्रय के इस युग मे कौन किस पक्ष का साथ देता है यह तो हर व्यक्ति की प्रवृत्ति और मनोवृत्ति पर निर्भर करता है परन्तु स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जैसे साक्षात स्वामी श्रद्धानन्द के अनुयायी के रूप मे प्रतिष्ठित महान आत्मा के नाम से झूठ का पोषण करवाना उनके साथ घोर अन्याय है।

स्वामी धर्मानन्द जी ने चुनाव से कई दिन पूर्व कई आर्य महानुभावों को टेलीफोन द्वारा स्वय निवेदन किया कि इस बार चुनाव मे कै० देवरत्न आर्य को ही प्रधान बनाना चाहिए। चुनाव से दो दिन पूर्व स्वामी धर्मानन्द जी दिल्ली पहुच चुके थे। इन दो दिनो मे भी उन्होने बहुत से लोगो के समक्ष यही बात दोहरायी। यहा तक कि उनके शिष्य स्वामी व्रतानन्द ने टेलीफोन द्वारा श्री विमल विधावन एडवोकेट को स्वामी जी का सदेश दिया कि वे कै० देवरत्न आर्य जी के साथ स्वामी जी स मिले। चुनाव अधिवेशन से एक दिन पूर्व कै० देवरत्न आर्य स्वामी धर्मानन्द जी से मिलने गुरुकुल गौतम नगर गए। वहा भी स्वामी जी ने कै० देवरत्न आर्य को अपने आशीर्वचनों से प्रधान पद का उत्तरदायित्व सम्भालने के लिए उत्साहित किया।

इतना सब कुछ होने के बावजूद उनके नाम से जो वक्तव्य कुछ स्वार्थी तत्वो ने प्रचारित किया है उसमे लेशमात्र भी सच्चाई का कोई अश नहीं है। यह पत्रक पूरी तरह से जालसाजी का एक नमूना है और झूठ से भरा हुआ है।

आर्यजनता ऐसे भ्रामक प्रचारो से सावधान रहे। ऐसे कार्य आर्य धर्म की मर्यादा और सत्य के सिद्धान्त के विपरीत हैं। चुनाव प्रक्रिया से सम्बन्धित कुछ और तथ्य भी भविष्य मे विस्तार पूर्वक दिए जाएगे।

कैलाशनाथ, अग्निवेश और इन्द्रवेश का पुनः निष्कासन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत साधारण अधिवेशन दिनाक ३-४ नवम्बर, २००१ मे श्री कैलाश नाथ सिह यादव, अग्निवेश और इन्द्रवेश के आर्यसमाज विरोधी कार्यो पर चर्चा के उपरान्त सर्वसम्मत प्रस्ताव के द्वारा इन तीनो व्यक्तियो को पुन सार्वदेशिक एव आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से १० वर्ष के लिए निस्काषित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि इन्ही तीनो व्यक्तियो को निस्काषित करने का प्रस्ताव पहले १२ मार्च, १९९५ की सार्वदेशिक सभा की एक बैठक में भी सर्वसम्मति से पारित किया गया था क्योकि इन्होने सार्वदेशिक सभा के नाम पर एक बोगस समूह गठित करने का प्रयास किया था। उनकी इस गैरकानूनी एव असवैधानिक हरकत पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने इनके विरुद्ध आदेश भी दिया था।

इस बार के त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन मे भी ये सदस्य नहीं थे। इसके बावजूद इन्होने फिर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर अनुशासनहीनता के प्रयास किए हैं।

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि किसी रूप मे भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर इनके प्रतिनिधित्व अथवा उपस्थिति को मान्यता न दी जाए।

श्री कैलाश नाथ सिह यादव विगत कई वर्षों से उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों मे भी विघ्न और बाधाए पहुचाने का कार्य कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश की कई आर्यसमाजो और शिक्षण सस्थाओ की चल-अचल सम्पत्तिया खुर्द पुर्द करने के इन पर आरोप हैं।

हाल ही मे गुरुकुल कागडी की महत्वपूर्ण भूमि को कौडियो मे बेचने के कारण स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिह तथा इन्द्रवेश आदि की भूमिका भी सदिग्ध रही है।

इस सारी अनुशासनहीनता और आर्यसमाज सगठन को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रयोग करना तथा पदलिप्सा के वशीभूत होकर अग्निवेश ने भी आर्यसमाज की छवि को काफी नुकसान पहुचाया है।

आर्य जनता इन व्यक्तियो और इनके समूह से सावधान रहे।

...कुल कांगड़ी में संघर्ष, चार घायल

पथराव, पन्द्रह हवाई फायर, विधायक स्वामी ओमवेश के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की बेची गई करोडो रुपये मूल्य की भूमि और विश्वविद्यालय के सीनेट हाल पर चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश की अगुवाई मे कब्जा करने आए बाहुबली आर्य नेताओ को भूमि बचाने के लिए सघर्षरत विश्वविद्यालय कर्मचारियों ने वापस भागने के लिए मजबूर कर दिया।

इस दौरान करीब एक घण्टा तक चले सघर्ष मे विधायक ओमवेश के सुरक्षाकर्मी और साथ आए शस्त्रधारियो ने जमकर फायरिग की। कर्मचारियो पर लाठी-डण्डो व सरियो से हमला किया गया, जिसमे चार कर्मचारी घायल हो गए। जवाब मे आदोलनरत कर्मचारियो ने हमलावरो पर पथराव किया तथा विश्वविद्यालय के सुरक्षाकर्मियों ने भी फायरिंग की। गनीमत यह रही कि हवाई फायरिंग मे दोनो ही पक्षो ने एक-दूसरे को निशाना नही बनाया। घटना के सम्बन्ध मे विश्वविद्यालय के सम्पदा अधिकारी ने विधायक ओमवेश समेत नौ लोगो के खिलाफ थाना कनखल मे रिपोर्ट दर्ज कराई है।

विदित हो कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की करोडो रुपये की जमीन अवैध रूप से बेच देने के विरोध मे भूमि बचाओ सघर्ष समिति के तत्वावधान मे विश्वविद्यालय के शिक्षक और गैर शिक्षक कर्मचारी सघर्षरत है। समिति का नियमित धरना २१ अक्तूबर को स्थगित हो गया था लेकिन बीच-बीच मे आन्दोलन के भावी स्वरूप और इस दिशा में चल रही प्रगति की समीक्षा के लिए बैठकें समिति द्वारा आयोजित की जाती रहती हैं।

आज भी सीनेट हाल परिसर मे सघर्ष समिति के आहवान पर आमसभा आहूत की गई थी जिसमे सघर्ष समिति के अध्यक्ष प्रो० भारत भूषण, सयोजक प्रदीप जोशी, शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्रवण कुमार, कमलकान्त बुधकर, डॉ० कश्मीर सिह राही, यू०एस०बिष्ट, कर्मचारी सघ के अध्यक्ष बलजीत सिह बिडला, डॉ० ज्ञानचन्द्र शास्त्री, कौशल कुमार, राजपाल सिह, मदन मोहन सिह आदि कर्मचारी आन्दोलन के भावी स्वरूप पर चर्चा कर रहे थे।

आरोप है कि तभी आर्य नेता रणजीत सिह अपनी गाडी से सीनेट हाल के बाहर उतरे और यह कहते हुए कि आर्य विद्या सभा हरिद्वार की बैठक सीनेट हाल मे बुलाई गई है, हाल मे जाने लगे। उनका सघर्ष समिति के सदस्यो ने पुरजोर विरोध किया और कहा कि आर्य विद्या सभा के पदाधिकारियो द्वारा चूकि गलत ढग से विश्वविद्यालय की करोडो रुपये की भूमि बेच दी गई है और सभा को भग कर दिया गया है, अत यहा बैठक नहीं होने दी जाएगी।

जबरन सीनेट हाल मे घुसने का रणजीत सिह का प्रयास विफल कर कर्मचारियो ने उन्हे वापस लौटने को मजबूर कर दिया, लेकिन उनके जाने के बाद समिति के सदस्य सभा स्थल पर आकर बैठे ही थे कि चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश के नेतृत्व मे स्वामी इन्द्रवेश, पूर्व कुलाधिपति प्रो० शर सिह की पत्नी श्रीमती प्रभात शोभा, तेजपाल मलिक, सूबे सिह, वीरेन्द्र प्रधान, यतीश्वरानन्द आदि लोग गाडियो के काफिले के साथ आ धमके और अमन चौक से जबरदस्ती सीनेट हाल मे घुसने लगे।

सघर्ष समिति के सदस्यो ने उनका विरोध किया तो आरोप है कि विधायक स्वामी ओमवेश ने अपनी गाडी से सरिया उठाकर कर्मचारी नेता महावीर यादव के सिर पर दे मारा। महावीर का सिर फटते ही उत्तेजित कर्मचारियो ने पथराव शुरू कर दिया। हमलावरों की ओर से कर्मचारियो पर लगातार लाठी-डण्डो से प्रहार किया जाता रहा जिससे महावीर यादव के अलावा मदन मोहन सिह, जितेन्द्र कुमार और फूल सिह घायल हो गए। आरोप है कि कर्मचारियो पर हावी होने के नजरिए से स्वामी ओमवेश के सुरक्षाकर्मी तथा साथ आए बदूकधारियो ने हवाई फायरिंग भी शुरू कर दी।

— अमर उजाला ब्यूरो, हरिद्वार, ६ नवम्बर, से साभार

पृष्ठ १ का शेष भाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ....

५ जिन समाजो में नियमित चुनाव नहीं होते अथवा जो कुछ ही व्यक्तियो की सम्पत्ति बन गए है उन्हे न्याय सभा की सहायता से तुरन्त ठीक किया जाए। समाजो मे जहा कहीं झगडे हैं उन्हे आर्योचित निर्णय लेकर निपटा लिया जाए।

६ सत्सगो मे उपस्थिति बढाने के लिए आर्य परिवारो को प्रोत्साहित किया जाए तथा अन्य बन्धु-बाधवो को जो आर्यसमाज के सदस्य नहीं हैं, सत्सगो मे लाने का प्रयत्न किया जाए।

७. प्रयत्न हो कि एक नगर मे जितने भी आर्यसमाज हैं वे एक केन्द्रीय सभा बनकर वर्ष मे कम से कम दो बार अवश्य ही सामूहिक सामाजिक उत्सव करे और उसमे नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को आमन्त्रित किया जाए।

८ आर्यसमाजो को राजनीतिज्ञो तथा राजनयिक सस्थाओ से पूर्णतया मुक्त रखा जाए, कोई भी व्यक्ति जो किसी राजनयिक सस्था का सदस्य हो पदाधिकारी अथवा कार्यकारिणी का सदस्य न बने।

कोष और लेखा –

प्रत्येक आर्यसमाज, प्रतिनिधि सभा तथा सम्बन्धित सस्थाओ का लेखा पारदर्शी हो। किसी प्रकार की धोखाधडी की गुजाइश न हो। कोषाध्यक्ष इसके लिए पूर्ण जिम्मेदार हो तथा कार्यकारिणी मे प्रतिमास हर एक मद पर विस्तृत चर्चा हो ताकि अनावश्यक कार्यो पर अपव्यय न हो।

क्रय-विक्रय

सार्वदेशिक सभा की स्वीकृति के बिना किसी भी आर्य सस्था के किसी भी व्यक्ति या पदाधिकारी को समाज से सम्बन्धित जमीन जायदाद आदि बेचने का अधिकार नहीं होगा।

(ऐसे सभी मामले जो पहले हो चुके हैं फिर से खोलकर उनको वापस दिलाने को पूरी कोशिश की जाए।)

भवन निर्माण

भवन-निर्माण को अधिक महत्व न देकर 'प्रचार कार्य' को मुख्यता दीजिए। किसी भी भवन-निर्माण कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व सार्वदेशिक सभा से सहमति ले लीजिए तो ठीक रहेगा। किसी समाज का मूल्याकन समाज-सेवा, युवको की उपस्थिति, सत्सग का स्तर आदि के आधार पर किया जाए न कि सम्पत्ति के आधार पर। केवल जितनी आवश्यक है उतनी ही सम्पत्ति बनाई जाए। भवन-निर्माण भव्य एव प्रभावशाली होना चाहिए।

विद्वानों की गोष्ठी व संगठन

१ सभी उपदेशक, प्रचारक व भजनोपदेशक सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा से सम्बद्ध हो तथा सभा उनके और उनके परिवारो के लिए आर्थिक सहायता का यथावश्यक प्रयत्न करे।

२ समाज मे काम करने वाले, उस नगर मे रहने वाले सभी उपदेशक व पुरोहित अपने परिवारो के साथ आर्यसमाज के सत्सगो मे नियमित रूप से उपस्थित हो।

३ उपदेशक आदि के प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था की जाए।

४ समय-समय पर इन के लिए गोष्ठिया की जाए।

टी० वी० चैनल –

टी०वी० चैनल पर अथवा अन्य किसी चैनल पर कम से कम आठ घण्टे का 'वैदिक जीवन कार्यक्रम प्रसारित हो सके इसके लिए प्रयास हो। सभा से सम्बन्धित उपदेशको विद्वानो, भजनोपदेशको, सगीतकारो तथा भजन मण्डलियो की सहायता से इसका कार्यक्रम बनाया जाए। इन चैनलो पर वैदिक धर्म की व्याख्या इस रूप मे की जाए जिससे विश्व के अन्य लोग भी इसको अपनाए। कोई आलोचना, निन्दा आदि न हो।

अन्य आर्य संगठन

आर्य स्त्री समाज, आर्य युवा सभा, आर्य कुमार सभा तथा आर्यवीर दलो का सगठन सुदृढ किया जाए। तथा युवाओ व महिलाओ को आर्यसमाज की मुख्य कार्यकारिणी मे एक अनुपात मे लिया जाए।

आर्य राष्ट्र –

आर्य जगत् को एक आर्य राष्ट्र के मार्ग पर बढाने के लिए आवश्यक प्रयत्न किए जाए। सभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आर्य राष्ट्र-सम्मेलन के नाम से किए जाए।

गर्व से कहो हम आर्य हैं।

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

साप्ताहिक आर्य सन्देश — १८ नवम्बर, २००१

R N No 32387/77 Posted at N D PS O on 15-16/11/2001 दिनाक १२ नवम्बर से १८ नवम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 15-16/11/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

उड़ीसा के वैदिक विद्वान दम्पत्ति का दिल्ली में स्वागत

प्रतिष्ठा में

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी द्वारा उडिया, हिन्दी अग्रेजी, सस्कृत एव बगला भाषा के विद्वान श्री प्रियव्रत दास एव उनकी विदुषी धर्मपत्नी

श्री प्रियव्रतदास जी के अभिनन्दन समारोह पर लिया गया चित्र

श्रीमती शन्नो देवी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन, श्री विनय विद्यालकार, वाराणसी कन्या गुरुकुल से ब्र० नन्दिता तथा कई अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

श्री प्रियव्रतदास ने कहा कि मै १८ वर्ष की आयु से वैदिक चिन्तन एव आर्य समाज क सिद्धान्तो पर लगभग ७०० से अधिक लेख तथा ४० से अधिक छोटे–बडे ग्रन्थ लिख चुका हू। यह सभी लेख राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुए हैं।

इसके अतिरिक्त श्री प्रियव्रत दास जी ने रेडियो पर भी कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आपको उडीसा के साहित्य एकाडमी पुरस्कार के अतिरिक्त कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि श्री प्रियव्रत दास जी के जीवन कार्य वैदिक प्रचारकों को प्रेरणा देते है कि उन्हे अपनी लेखनी का प्रयोग अधिक से अधिक दैनिक समाचारो के लिए करना चाहिए जिनका समाज पर व्यापक प्रभाव हो।

इसी प्रकार सगठन के पदाधिकारियो को भी ऐसे कार्यक्रम बनाने चाहिए कि वैदिक विद्वानो के प्रवचन आर्य समाज मन्दिरो के अन्दर करने के साथ-साथ बाहर सार्वजनिक स्थलो पर भी करने चाहिए।

श्री प्रियव्रतदास को अभिनन्दन पत्र भेट किया गया।

श्री सोमदत्त महाजन ने आर्य समाज ... साहित्य प्रकाशित करके जन–सा... मे बाटने की योजनाओ पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सचालन मन्त्री श्री रमेश ने किया।

बहन उज्ज्वला की मारिशियस यात्रा

मोरिशियस में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु दिल्ली से श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने १७ नवम्बर को प्रस्थान किया। आप प्रवचनों एव भजनों के द्वारा मोरिशियस की विभिन्न आर्यसमाजो मे लगभग २० दिन प्रचार करेगी।

गत वर्ष बहन उज्ज्वला वर्मा के कार्यक्रमो से प्रभावित होकर श्री मोहन लाल मोहित परिवार ने इन्हे पुन विशेष आमन्त्रण भेजा था

हर्षोल्लास, चुनौती और अपील

यह प्रसन्नता का विषय है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण ने आर्यसमाज सैक्टर–८, रोहिणी दिल्ली–८५ के नाम से ४७३, ८५ वर्ग मीटर भूमि आवटित कर दी है। यह परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एव सभी भाई–बहिनो के सहयोग एव आशीर्वाद से ही सम्भव हो पाया है।

चुनौती हम सभी के कधो पर यह भार आ पडा है जिसे सभी ने मिलजुल कर पूरा करना है। २८ दिसम्बर, २००१ तक दिल्ली विकास प्राधिकरण के नाम से साढे चौदह लाख रुपये का ड्राफ्ट निश्चित रूप से देना है, तभी कब्जा लिया जा सकेगा। सत्य सनातन वैदिक धर्म की पताका फहराने हेतु हमे यह चुनौती स्वीकार करनी है और सगठित प्रयास करने है।

अपील : सभी आर्य बन्धुओ, आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ, धर्म की वृद्धि चाहने वाले दानी महानुभावो और समस्त जनता से अनुरोध है कि रोहिणी क्षेत्र मे धार्मिक, सामाजिक एव चरित्र–निर्माण की गतिविधियो को विशेष गति देने हेतु आशाओ से अधिक स्वय दान दे एव दानी महानुभावो को प्रेरित करे। विशाल लक्ष्य की ओर बढने हेतु विशाल सहयोग चाहिए, इसलिए राशि का निर्धारण स्वय करे।

सहयोगाकाक्षी – समस्त पदाधिकारी
एवं सदस्य आर्यसमाज सेक्टर-८
रोहिणी, दिल्ली-८५
फोन-७१६२६१७, ७१६६१५१

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष · ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।**

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अंक ३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २६ नवम्बर से २ दिसम्बर, २००१ तक

मूल्य एक प्रति : २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये • विदेशों में ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०९५०

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान एवं स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एव महान् देशभक्त श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी का दु खद देहावसान २७ और २८ नवम्बर के बीच रात्रि मे सुशुप्ता अवस्था मे ही हो गया। वे विगत् ४ वर्षों से अस्वस्थ थे। उनके देहावसान की सूचना प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री की अध्यक्षता मे एक शोक सभा आयोजित की गई। डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने वन्देमातरम जी के जीवन से सम्बन्धित प्रेरणादायक घटनाओ को याद करते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और इसके पश्चात् सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया। उनके देहावसान का समाचार सुनकर समूचा आर्यजगत शोकाकुल है। श्री वन्देमातरम् जी का चिन्तन एव विचारधारा उच्च दार्शनिकता से परिपूर्ण थी।

आन्ध्र प्रदेश को निजाम के शासन एव नियन्त्रण से मुक्त कराने मे श्री वन्देमातरम् जी की बडी महत्वपूर्ण एव गम्भीर भूमिका रही।

१९३८–१९३९ मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के दौरान अपनी युवावस्था में रामचन्द्र राव ने जेल यात्रा के द्वारा देश भक्त सगठन आर्यसमाज के माध्यम से अपना योगदान दिया। जेल में अग्रेज अफसरों के आदेश पर एक नितान्त क्रूर मुजरिम के द्वारा युवक रामचन्द्र को पेड से बाधकर २३ कोडे लगाने के आदेश दिए गए। इस आदेश का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया गया तो पहले कोडे ने ही जान निकालकर रख दी। लगभग १६ कोडे लगने के बाद युवक रामचन्द्र मूर्छित हो गया। अपनी उच्च आध्यात्मिक और आत्मिक शक्ति के बल पर मातृभूमि का दीवाना युवक हर कोडे पर पहले से ऊची आवाज में वन्देमातरम का उच्चारण करता था।

कष्ट, त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रचार-प्रसार सात्विक गति से होता है। परिणामत सारे देश में इस घटना की कोटि-कोटि प्रशसा होने लगी। प्रशसा की यह ध्वनि राष्ट्रनायक वीर सावरकर के कानो तक भी पहुची। उन्होने युवक रामचन्द्र को मुम्बई मे एक बहुत बडी जनसभा में आमन्त्रित किया। यह शर्मीला युवक मित्रो के आग्रह पर सभा मे तो पहुच गया परन्तु भीड का एक अग बनकर खडा हो गया। वीर सावरकर जी ने इस घटना का उल्लेख उस जनसभा मे दिए अपने उदबोधन में किया। उन्होंने कहा कि यदि रामचन्द्र मेरे आमन्त्रण को स्वीकार करके इस जनसभा मे उपस्थित हुआ हो तो मच पर आए। इस घोषणा के बाद साथियो के आग्रह पर रामचन्द्र राव जी को मच तक ले जाया गया, जहा वीर सावरकर जी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और कहा कि आज के बाद इस युवक के नाम के साथ 'वन्देमातरम' शब्द उपाधि की तरह प्रयोग किया जाए। वीर सावरकर जी की इस घोषणा को समूचे देश ने आदेश की तरह स्वीकार किया और तभी से रामचन्द्र राव वन्देमातरम

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव

श्री वन्देमातरम जी ने १९४८–१९४९ मे हैदराबाद पुलिस एक्शन के दौरान लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को हर प्रकार की गोपनीय सूचनाए उपलब्ध कराईं और कई बार मौत के मुह मे जाकर भी मातृभूमि की रक्षार्थ कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए। सरदार पटेल के अतिरिक्त कै० एम० मुन्शी के साथ भी वन्देमातरम् जी का विशेष मेल जोल बना रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वन्देमातरम् जी ने लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओ के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी कडा मोर्चा लिया।
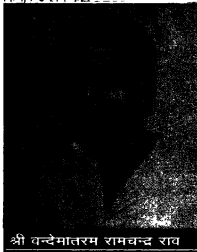
७० के दशक में श्री वन्देमातरम जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के विशेष प्रयास द्वारा इस सभा के साथ जुडे। कई वर्षों तक श्री वन्देमातरम जी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान रहे। १९९४ मे उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया।

श्री वन्देमातरम् जी के परिवार मे उनकी धर्मपारायणा पत्नी, एक विवाहित पुत्री दुर्गेश नन्दिनी तथा एक विवाहित पुत्र आदित्य प्रताप हैं। आदित्य प्रताप का विवाह स्वर्गीय श्री सूर्यदेव जी की सुपुत्री के साथ हुआ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने श्री वन्देमातरम् के निधन को राष्ट्र की एक अपूर्णीय क्षति बताया है।

सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने श्री वन्देमातरम के परिवार को भेजे शोक सन्देश मे कहा है कि मेरे जीवन मे राष्ट्रवादी और आध्यात्मिक विचारो को प्रदान करने वाले दो ही महापुरुष थे – स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वन्देमातरम् रामचन्द्र राव। वे स्वय को श्री वन्देमातरम जी का मानस पुत्र मानते है। उन्होने कहा कि श्री वन्देमातरम जी के मुख एव लेखनी से निकला एक एक शब्द आज भी जीवन्त प्रतीत होता है और भविष्य मे भी उनके विचार हमारी प्रेरणा बनते रहेगे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की सूचना पर आर्यसमाज हनुमान रोड ने स्वामी दिव्यानन्द एव श्री सोहनलाल पथिक जी के कार्यक्रम के पश्चात् श्री वन्देमातरम् जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

आर्यसमाज दीवानहाल मे भी श्री वन्देमातरम् जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए एक शोक सभा का आयोजन किया गया।

श्री वन्देमातरम् जी का आन्तिम सस्कार २८ नवम्बर को पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार हैदराबाद मे ही किया गया। उनकी स्मृति मे **शनिवार १ दिसम्बर, २००१ को मध्याह्न् ३ बजे** उनके निवास स्थान पर ही शोक सभा आयोजित की गई है।

समस्त आर्य सस्थाओ, सभाओ और समाजो से निवेदन है कि वे श्री वन्देमातरम् जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि प्रस्ताव उनके सुपुत्र **श्री आदित्य प्रताप** को **'१४-३-१७८, गोशा महल, कमला निलयम, हैदराबाद'** के पते पर भेजे।

सार्वदेशिक सभा की धर्म प्रचार समिति की बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित समितियों में सर्वप्रथम धर्म प्रचार समिति की बैठक इस समिति के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम् जी के निर्देश पर संयोजक श्री सोमदत्त महाजन द्वारा २ दिसम्बर, २००१ रविवार को दोपहर ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर, सी० ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली-५८ में आयोजित की गई है।

सद्गुणों से बढ़ती है आत्मशक्ति

– डॉ० गोपालजी मिश्र

यह हमारे ही ऊपर निर्भर करता है कि हम अपनी आत्मशक्ति का दुरुपयोग करे या सदुप्रयोग। आत्मशक्ति का विचारो से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। कुछ विचार ऐसे होते हैं, जिनसे आत्मशक्ति क्षीण होती है, जबकि कुछ विचार ऐसे होते है जो आत्मशक्ति को प्रबल बनाते हैं।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने मस्तिष्क को अशुभ विचारो से बोझिल बनाए रहते हैं, अशुभ विचारो की ही 'रील' चलाते रहते हैं और जो लोग उनके सम्पर्क मे आते हैं उनके भी मस्तिष्क मे अपने जैसे विचार ठूस देने का प्रयत्न करते हैं। अशुभ विचार आत्मशक्ति विघटित करते हैं, क्योकि उनकी दिशा ऋणात्मक होती है।

दूसरी ओर, ऐसे भी सुलझे हुए व्यक्ति होते है, जिनके मस्तिष्क मे शुभ विचारो का प्रवाह चलता रहता है, फलत उनकी आत्मशक्ति धनात्मक रूप से पोषित होती रहती है, वे उल्लासित रहते हैं, उन्हे निराशा के घोर अन्धेरे मे भी आशा की विद्युत कौंध-कौधकर अपने प्रकाश से मार्ग दिखाती रहती है। दूसरे भी जब उनसे मिलते है तो उनके साथ से उनका मुरझाया हुआ हृदय-कमल खिल उठता है एक नया उत्साह जागता है नए द्वार उन्मुक्त हो जाते है।

हमे कोई अधिकार नहीं है कि हम अवाछनीय विचारो के सम्प्रेषण से किसी की आत्मशक्ति का ह्रास करे। अपने अशुभ विचारो को दूसरों मे बाटते फिरे। मानवता तो इसमे है कि हम दूसरो को ऐसे विचार दे जो उनकी आत्मशक्ति को बलवती बनाए। जब हम सद्प्रवृत्तिया देगे तो इससे दूसरो को तो लाभ होगा ही, साथ ही हमें भी लाभ होगा।

सारा ससार गुण-दोषमय है। सभी प्राणी गुण-दोषमय हैं, सभी परिस्थितिया गुण-दोषमय हैं और सभी कार्य गुण-दोषमय हैं। आत्मशक्ति तब बढती है, जब हम गुणो की तरफ झुकते है। दोषो से हमारा मात्र इतना ही सरोकर हो कि हम उनसे बचे और दूसरों को भी यथासम्भव उनमे न फसने दे। जो व्यक्ति मनस्वी होते हैं वे दोषो, कमियो और बुराइयो का विरोध कर आत्मशक्ति को प्रबल बनाते रहते है।

उपयोग चिन्तन से मन और शरीर को लाभ पहुचता है। इससे शरीर के पोषक रस आदि का निर्माण, निस्सण एव सचरण उपयुक्त होता है। मन प्रफुल्लित रहता है। आशाए रहती है। उत्साह रहता है।

जिसकी आत्मशक्ति प्रबल है उसके आगे जमाना झुकता है, लोग उसका अनुसरण करते हैं, उसकी आज्ञा मानते हैं, अपने को उनकी प्रवृत्तियों से सस्कारित करते हैं और कालान्तर मे पाते हैं कि अपनी भी आत्मशक्ति आदर्श पुरुष की ही भाति सशक्त, जाग्रत एव क्रियाशील बन गई है।

दूसरी ओर ऐसी बुझी आत्मशक्ति वाले व्यक्ति भी होते हैं जो स्वय तो उत्साहहीन एव निराश हैं ही, दूसरो को भी अपने जैसा ही बना देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यदि एक भले-चंगे व्यक्ति को भी निरन्तर कहता रहे कि अरे तुमसे यह काम नहीं होगा, तुम इसे कर ही नहीं सकते, किसी जन्म मे भी नहीं कर सकते, तुम्हारे मे क्षमता ही नहीं है, तुम इसे अवश्य ही बिगाड दोगे, आदि-आदि तो कालान्तर मे निश्चय ही उस भले-चगे आदमी की आत्मशक्ति हीन हो जाएगी। किसी की आत्मशक्ति क्षीण कर देना मानवता के प्रति बडा अपराध है।

अपराध का दण्ड भी मिलता है। प्रकृति का नियम सबके लिए है। हम जो बोते हैं, वही काटते हैं, बबूल बोए तो काटे ही पाएगे आम नही। न्यूटन का नियम भी यही कहता है कि प्रत्येक क्रिया के प्रति समतुल्य एव उल्टी अनुक्रिया होती है।

निष्कर्ष यह है कि चाहे अपने लिए हो, या दूसरो के लिए, सदैव अच्छे विचारो का चिन्तन, शुभ विचारो की आधान, धनात्मक विचारो का पोषण, सद्प्रवृत्तियो का चिन्तन, मनन एव निदिध्यासन, सबकी भलाई की शुभकामना करते हुए हम प्रयत्नशील रहें।

हम अपने विचारो द्वारा अपनी और दूसरो की आत्मशक्ति प्रबल कर सकते हैं। मनोवैज्ञानिको का निष्कर्ष है कि हम अपने या दूसरो को जिस प्रकार के सुझाव निरन्तर देगे उसी प्रकार का व्यक्तित्व निर्मित होगा। भारतीय चिन्तन अध्यात्म-प्रधान होने से योग द्वारा आत्मशक्ति के जागरण का मार्ग दर्शाता है।

मार्ग कोई भी हो, लक्ष्य की प्राप्ति आवश्यक है। ईश्वर ने मनुष्य के अन्दर अनेक उच्च सम्भावनाए अन्तर्निहित कर रखी हैं।

हमे चाहिए कि हम लक्ष्य ऊचा रखें, दृष्टि ऊची रखे, प्राणिमात्र के सुहृद् ईश्वर पर भरोसा रखे और आत्मबल का धनी बनने का प्रयास करे।

एकता के सन्देशवाहक का अपूर्व बलिदान

गुरुकुल कागडी से विदा लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली को केन्द्र बनाकर व्यापक सार्वजनिक क्षेत्र मे प्रवेश किया तो हिन्दुओ के समान मुसलमान भी उन्हे अपना नेता मानने लगे थे और उनके हृदयों मे स्वामीजी के प्रति असाधारण सम्मान का भाव हो गया था। यही कारण है कि दिल्ली की शाही मस्जिद से उन्हे उपदेश के लिए आमन्त्रित किया गया था। ४ मार्च १९१६ को मस्जिद की मिम्बर पर **'त्व हि न पिता त्व माता शतक्रत्तो बभूविथ..'**, वेदमन्त्र से ईश्वर के माता और पिता के स्वरूप का वर्णन कर **ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति** के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

उल्लेखनीय है कि उन्हीं दिनो कराची मे एक मुस्लिम महिला अपने दो बच्चो और भतीजो के साथ दिल्ली आई और हिन्दूधर्म स्वीकार किया। तीन मास बाद उसके पति कराची से आए और उसे मजहब मे लौटने को कहा, परन्तु वह तैयार नहीं हुई।

१९२६ के दिसम्बर महीने मे स्वामीजी को ब्राको निमोनिया हो गया। डाक्टर असारी के इलाज से उनकी दशा सुधर रही थी, २३ दिसम्बर को अब्दुल रशीद नामक एक युवक आया और बोला – **"मैं आपसे इस्लाम के बारे मे बात करना चाहता हूं।"** स्वामीजी ने कहा – **"वह ठीक होकर इस बारे मे हम बातचीत कर सकेंगे।"** पर वह युवक मजहब के बारे मे बात करने नहीं आया था। उसने प्यास के बहाने पानी मागा और जब सेवक पानी लेने गया तो उसने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामीजी पर पिस्तौल दाग दी। सेवक धर्मसिह ने हत्यारे को पकड लिया।

रोगशय्या पर पडे हुए स्वामी श्रद्धानन्द तीन गोलिया अपने सीने पर लिए उसी रास्ते पर चल दिए, जिस पर पण्डित लेखराम गए थे। स्वामीजी की अन्तिम यात्रा मे नर-नारी जो गीत गा रहे थे, उसका बोल था – **"किया है कत्ल जिसने स्वामी हमारा उसे भी गले लगाना होगा।"** यह भी स्मरणीय है कि दिसम्बर १९२६ के अन्तिम सप्ताह मे गोवाहटी के काग्रेस अधिवेशन के लिए स्वामीजी ने सन्देश भेजा था – **"भारत की मुक्ति की उम्मीद हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता पर निर्भर है।"**

विडम्बना की बात है कि एकता का वह सन्देशवाहक ही मजहबी कट्टरता का शिकार हो गया।

– नरेन्द्र

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए

साप्ताहिक आर्य सन्देश

के लिए

५०० रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

सत्य का आधार : उन्नति करो : कभी दीनता नहीं

सत्येनोतभिता भूमिः। *अथर्व० १४/१/१*
सत्य से भूमि प्रतिष्ठित है।
उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। *अथर्व० ८/१/६*
उन्नत हो, उद्योगपति नहीं।
उत्तिष्ठित संनह्यध्वम्। *अथर्व० ११/६/२*
उठो, सन्नद्ध हो जाओ।
प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं पलायनम्।
जीवन मे दो प्रतिज्ञा करो, न दीनता और न पलायन।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : समाधान पूरी समझ और दृढ़ता से

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल मे अपदस्थ होने के बाद विश्व के सर्वाधिक क्रूर आतकवादी सगठक ओसामा बिन लादेन और उसके पोषक सगठन अल-कायदा पर गहरे सकट के बादल मडरा रहे हैं, उन्हे देखते हुए अब आतकवादी सगठक और उसके नेता अब जम्मू-कश्मीर समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान की बात करने लगे है। इसी के साथ पाकिस्तान समर्थक आतकवादी हिजबुल मुजाहिदीन के प्रवक्ता ने अपने गुप्त ठिकाने मे तीन बातो पर जोर दिया है – १ लश्करे तोइबा जैसे एव मुहम्मद मुजाहिदीन जैसे विदेशी सगठनो की कश्मीर समस्या सुलझाने मे कोई भूमिका नहीं हो और उन्हे स्थानीय नेतृत्व के अधीन काम करना चाहिए। दूसरे, राजनीति मे प्रवेश के बारे मे हिजबुल जल्दी ही कोई फैसला करे। तीसरे, भारत यदि कश्मीर के सम्बन्ध मे सयुक्त राष्ट्र सघ का प्रस्ताव माने अथवा किसी त्रिपक्षीय चर्चा मे जिसमे पाकिस्तान सम्मिलित हो तो हिजबुल उस पेशकश पर गम्भीरता से विचार करेगा। इसी हिजबुल के वाइस चीफ कमाण्डर ने उस आशका का खडन किया कि अफगानिस्तान मे पराजित हाने के बाद तालिबान कश्मीर की ओर रुख करेगा। उन्होने घोषित किया कि कश्मीर के सघर्ष या भविष्य मे तालिबान या ओसामा बिन लादेन का कोई लेना-देना नहीं है। यह ठीक है कि जम्मू-कश्मीर सम्बन्धी किसी भी वार्ता मे पाकिस्तान को शामिल करने के बारे मे हिजबुल मुजाहिदीन या सर्वदलीय हुर्रियत अपनी जिद पर कायम हैं, लेकिन विदेशी आतकवादी सगठनो से दूरी बनाने और राजनीति मे प्रवेश के लिए उन्होने बल दिया है। स्पष्ट है कि कश्मीर की समस्या को विश्व के सम्मुख उजागर करने मे सीमापार के या किसी भी आतकवाद की कोई भूमिका रही हो, लेकिन यह सभी स्वीकार करते हैं कि सीमापार के आतकवाद या किसी भी आतकवाद से समस्या नहीं सुलझेगी। उल्लेखनीय है कि २३ सगठनो की सर्वदलीय हुर्रियत कान्फ्रेस ने जोर देकर कहा कि पाकिस्तान आतकवादी सगठन और भारत व्यापक सघर्ष विराम घोषित करे।

राष्ट्र की स्वाधीनता के ५४वे वर्ष मे यद्यपि राष्ट्र के सम्मुख समस्याए अनेक हैं परन्तु उनका स्थायी समाधान पूरी समझ और दृढता से ही सम्भव है। अनेक वर्षों मे जम्मू-कश्मीर का क्षेत्र पश्चिमोत्तर क्षेत्र के सीमापार के आतकवाद से पीडित था, अफगानिस्तान मे तालिबान एव आतकवाद के पतन के बाद पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे शान्ति-सुरक्षा की प्रतिष्ठा की एक सुनहरी घडी आई है। अधिक अच्छा हो कि इस बारे मे सभी सम्बन्धित पक्ष आपसी बातचीत से कोई स्थाई शान्तिपूर्ण समाधान प्राप्त कर ले। हा कुछ विषयो मे भारत ने अपनी नीति स्पष्ट कर दी है, हम अपने पडोसी और कल तक के भारतीय राष्ट्र के अग रहे पाकिस्तान से पूरे सौहार्द के साथ स्थायी सम्बन्ध रखना चाहते हैं उसका रुख सदिग्ध दीखता है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दो बातो पर अपने वक्तव्य मे जोर दिया है। उन्होने घोषित किया है कि भारत के आतक विरोधी अभियान मे कोई मजहब लक्ष्य नही है। स्पष्ट है कि भारत की बहुसख्यक जनता अपने पडोसी से स्थिति सुधारने के लिए प्रस्तुत है, यदि पडोसी भी उसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाना चाहे। यह चिन्ता की बात है कि हमारी राष्ट्रीय सद्भावना के बावजूद हमारे इस पडोसी ने उसका सम्मान नहीं किया और कई बार हमसे सघर्ष कर चुका है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि १९७१ मे श्रीमती इन्दिरा गाधी के प्रधानमन्त्रित्व मे भारत ने निर्णायक विजय पाई थी, उस समय उसके एक लाख से अधिक सैनिक बन्दी हो गए थे, अधिक अच्छा होता की उस अवसर का लाभ उठाकर पश्चिमोत्तर प्रदेश मे जम्मू-कश्मीर को सदा के लिए आतकवाद से मुक्त करा लिया जाता। इसी तरह उस समय पूर्वी पाक क्षेत्र मे स्वतन्त्र बगलादेश की प्रतिष्ठा भी हुई। अधिक अच्छा होता कि बगलादेश से स्नेहपूर्ण सम्बन्धो का लाभ उठाकर सुरक्षा, आवागमन, सचार व्यवस्था मे नए राष्ट्र से स्थायी सम्बन्धो का ताना-बाना बुन दिया जाता। खेद है कि उस सुनहरी घडी मे हम चूक गए। अफगानिस्तान मे तानिबान सत्ता के पतन के बाद पश्चिमोत्तर मे स्थायी शान्ति का एक नया सुनहरा अवसर आया है। सम्भव हो तो अफगानिस्तान के बारे मे एव वहा की स्थिति सुधारने मे भारत अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करे।

अफगानिस्तान का भविष्य निर्धारण करने मे तो प्रमुख भूमिका वहा की जनता की होगी परन्तु इस सकटपूर्ण स्थिति मे वहा की स्थिति सुधारने और भविष्य के निर्धारण मे यदि वहा के जन-प्रतिनिधि भारत का सहयोग मागे तो उस सम्बन्ध मे भारत के उद्योगपतियो नीति-निर्धारको को उपयुक्त मार्गदर्शन करने और ऐक्य के सूत्रो को जोडने मे हमारे राष्ट्र का सहयोग प्रस्तुत करने मे सकोच नहीं करना चाहिए। अत्यन्त प्राचीन ऐतिहासिक युग मे एक समय यह राष्ट्र कर एक सीमावर्ती प्रहरी प्रदेश था, हमारी किस उपेक्षा के कारण यह सीमावर्ती सवेदनशील भाग हमसे पृथक् हो गया, ऐतिहासिक तथ्यो की वह खोज जरूरी है तो उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि अफगानिस्तान मे तालिबान सत्ता के पतन के बाद उस देश की स्थिति को सुदृढ कर वहा स्थायी शान्तिपूर्ण समाधान की व्यवस्था करने मे यदि वहा का नया नेतृत्व हमारे राष्ट्र का सहयोग मागे तो उसे देने मे सकोच नहीं होना चहिए। हा नए राष्ट्र को आर्थिक औद्योगिक और सैनिक सहयोग देते हुए इस तरह की निर्दोष व्यवस्था अवश्य करनी होगी कि यह हमारा पडोसी सवेदनशील राष्ट्र किसी भी स्थिति मे हमारा विरोध न करे। पडोसी राष्ट्र की सैनिक सत्ता लडखडा न जाए यह देखना यदि हमारा राष्ट्रीय दायित्व है तो वहा की शासन व्यवस्था हमारे राष्ट्र के विरुद्ध कभी प्रयुक्त न की जा सके, यह देखना भी राष्ट्र के नीति-निर्धारको का गम्भीर उत्तरदायित्व है। हा, पडोसी राष्ट्र के सैनिक शासको के पतन के बाद उस राष्ट्र की स्थिति सभालने और उसके शान्तिपूर्ण भविष्य को सवारने मे भारत राष्ट्र और उसके नीति निर्धारको को अपनी उपयुक्त भूमिका प्रस्तुत करने मे व्यर्थ का सकोच नहीं करना चाहिए। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति एव कोटि-कोटि राष्ट्रजनो तथा अभूतपूर्व भौतिक, आर्थिक औद्योगिक, ससाधनो के बल भारत पश्चिमोत्तर सीमापार के इस ऐतिहासिक भौगोलिक अचल मे अपनी निर्णायक शान्तिपूर्ण मैत्रीभरी भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। आशा है भारत राष्ट्र के सूत्र सचालक पश्चिमोत्तर की स्थिति को सवारकर उसे शान्ति का सुदृढ गढ बनाने के लिए आए सुनहरे क्षणो की उपयुक्त भूमिका प्रस्तुत करने के लिए तत्पर रहेगा।

लोकतन्त्र में समाचार-पत्र

लोकतन्त्री शासन प्रणाली मे जनता को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से शिक्षित करने मे समाचार-पत्रो की अग्रणी भूमिका हो सकती है, परन्तु दुर्भाग्य से भारत की बहुसख्यक जनता के अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित होने पर भी उसे सामाजिक दृष्टि से शिक्षित करने की क्षमता समाचार-पत्रों की है। उनके ही माध्यम से शासक और दलो की स्थिति की जानकारी पत्रो के माध्यम से मिलती है। जबतक समाचार-पत्र निर्भयता से राष्ट्रघातक नीतियो को उजागर नहीं करेगे तबतक लोकतन्त्र मे जनता की सर्वोपरि स्थिति स्पष्ट नहीं होगी। इसमे सन्देह नहीं कि समाचार-पत्रो के माध्यम से लोकतन्त्र को सफल बनाया जा सकता है।

– सरिता गुप्त, कनाट प्लेस, नई दिल्ली

आतंकवाद और अमेरिकी नीति

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश आतकवाद विरोधी दोहरी नीति अपना रहे है, वह आतकवाद की दो परिभाषाए दे रहे हैं। एक अमेरिका के लिए और दूसरे देशो के लिए दूसरी। आतकवाद तो आतकवाद है, उसकी दो परिभाषाए कैसे सम्भव हैं? प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नामोल्लेख न करते हुए ऐसी दोहरी नीति की आलोचना की है। श्री वाजपेयी ने आतकवाद के अतिरिक्त भुखमरी बेरोजगारी, आर्थिक विषमता और मजहबी कट्टरपन की ओर भी ध्यान खींचा। ईरान के राष्ट्रपति ने भी आतकवाद के साथ विश्व की दूसरी समस्याओ की ओर भी ध्यान खींचा है। यह ठीक है कि आज आतकवाद विश्व और सयुक्त राष्ट्र सघ के समक्ष एक कडी चुनौती है, पर दूसरी समस्याओ की भी अनदेखी नहीं की जा सकती।

– राजेन्द्र कुमार पण्डित, न्यू शिल्प टोला, आरा

भद्र-देवता सप्तकम् (१) उत्तरार्द्ध

देवताओं से भद्र प्राप्ति का प्रयत्न

– पं० मनोहर विद्यालकार

(५) सरकार को चाहिए कि प्रजा को विपदाओं से बचने की चेतावनी दे और रक्षा करें

अव क्रन्द दक्षिणतो गृहाणा सुमगलो भद्रवादी शकुन्ते।
मा न स्तेन ईशत माघशसो बृहद्वदेम विदथे सुवीरा.।।

ऋ० २-४२-३

गृत्समद । शकुन्त (कपिञ्जलरूपीन्द्र)। त्रिष्टुप्

अर्थ – हे (शकुन्ते) उत्साहवर्धक कपिञ्जल (काले तीतर) अथवा कपिञ्जल के समान शोर मचाकर प्रजा को जागरूक करने वाले राष्ट्रप्रमुख या सेनाध्यक्ष ! (गृहाणा दक्षिणत) सदगृहस्थो के घर की दक्षिण दिशा मे अथवा दक्षतापूर्वक (चतुराई के साथ) (सुमगल भद्रवादी अवक्रन्द) मगलकारी और सुखदायी भावना से चेतावनी देता रहे, ताकि (न स्तेन मा ईशत) हम पर कोई चोर-उचक्का या भ्रष्टाचारी शासन न कर सके, (न अघशस मा ईशत) तथा कोई देशद्रोह रूपी पाप का समर्थक या अनैतिक कर्मो के कारण सजायाफ्ता (दण्ड भोगी) व्यक्ति भी हम पर शासन न कर सके और हम (विदथे सुवीरा बृहद्व व देम) अपनी लोकसभा या विधान निर्मात्री सगोष्ठियो मे सुवीरो की तरह खूब वाद-विवाद कर सके।

निष्कर्ष – कपिञ्जल किट-किट करके खूब शोर मचाता हुआ सबको जागरूक कर देता है, इसलिए चोर चोरी नही कर पाता, लेकिन यहा (दक्षिणत) शब्द का प्रयोग प्रचुरमात्रा के अर्थ मे है (दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च) किन्तु पौराणिको ने इसका अर्थ दक्षिण दिशा करके, इससे शकुन-अपशकुन की प्रेरणा ले ली। सायण अपने भाष्य मे कहता है कि **'दक्षिणत शब्दायमान· शकुन्त. (पक्षी) मंगलसूचको भवति।'**

वास्तव में लोकसभा मे सभापति के दाईं ओर शासकवर्ग (सरकार) बैठता है, और बाईं और विरोधी पक्ष बैठता है। दाईं ओर बैठने वाले शक्ति सम्पन्न शासक वर्ग का कर्त्तव्य है कि वह कपिञ्जल की तरह से अपनी घोषणाओ द्वारा जनता को इतना जागरूक बना दे, कि वह अपना ऐसा कोई प्रतिनिधि न भेजे, जो देश का मगल न चाहता हो, अथवा सभा मे भद्रवाणी का प्रयोग करने मे असमर्थ हो। उन्हे (प्रतिनिधियो को) चोर कर चोर – भोज्य पदार्थो मे मिलावट करने वाले, हिंसक, आतकवादी व्यभिचारी या कदाचारी व्यक्तियो को मतदान से वञ्चित रखने के कठोर प्रावधान बनाकर उनका सख्ती से पालन करना चाहिए।

इन विधान सभाओ मे सदस्यो को, युक्ति प्रत्युक्ति क्रम से खूब विचार-विनिमय करना चाहिए, किन्तु हल्ला-गुल्ला या अभद्रता पर पूरी तरह से रोक होनी चाहिए।

इसी प्रकार सरकार का कर्त्तव्य है कि वह प्रजा को आने वाली विपदाओ (बाढ, सूखे, भूकम्प, तूफान, विस्फोट आदि) से बचने की चेतावनी और उनके प्रकोप से बचाने का प्रयत्न सदा करे।

(६) राष्ट्र की सर्वोपरि समिति को चाहिए कि वह चक्षु और प्राण के समान समदृष्टि रखकर सबका भला करे, और सुख दे।

भद्रमिद्भद्रा कृणवत्सरस्वत्यकवारी चेतति वाजिनीवती।
गृणानाजमदग्निवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत्।।

ऋ० ७–९६–३

मैत्रा वरुणिर्वसिष्ठ । सरस्वती। प्रस्तारपंक्ति ।

अर्थ – (वाजिनीवती) शक्तिशालिनी अतएव (अकवारी) अजातशत्रु तथा दु खनिवारिणी (सरस्वती) समस्त विधिविधानो को पुष्ट करने वाली समिति (जमदग्निवत् गृणाना) चक्षु के समान सर्वद्रष्टा बनकर सबको समान निर्देश देती हुई, (च) और (वसिष्ठवत् स्तुवाना) अत्यन्त कर्त्तव्य परायण प्राणो की तरह सबकी सेवा – परिचर्या करती हुई (भद्रासती चेतति) सबको सुखी होने के लिए चेताती रहती है और (भद्र इत् कृणवत्) सबका भला ही करती है, कभी प्रसाद देकर और कभी दण्ड देकर अथवा प्रसाद से वञ्चित करके।

अर्थ पोषण – सरस्वती=सब विधि-विधानो को सम्पुष्ट करने वाली स्वामिनी समिति, वैदिक को चन्द्रशेखेर।

अकवारी – अविद्यमान शत्रुस्वा०

दया०३–४७–५,

अकं-दुःख-निवारयतीति-दुःखनिवारिणी।
जमदग्निः-चक्षुर्वै जमदग्नि ऋषिः।

शत० ८-१-२-३

वसिष्ठ-अतिशयेन ब्रह्मचर्ये कृतवासाः।

स्वा० दया० ऋक् ७-३३-३

प्राणा वै वसिष्ठः ऋषिः।

शत ८-१-१-६

वाज बलम। *नि० २-६*

निष्कर्ष – समर्थ तथा भद्रजन सभा, सबके लिए समान कानून बनाती है, किसी के साथ पक्षपात नहीं करती।

(७) हमारे नेता, दान, हिंसारहित कर्म व प्रशस्तियां कल्याणप्रद हों।

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः।।

ऋ० ८-१९-१९

सोभरि·काण्वः। अग्निः। प्रगाथः (ककुप्)

अर्थ – हे (सुभग) सौभाग्यप्रद परमात्मन् ! आप ऐसी कृपा करो कि – (न अग्नि आहुत भद्र) हमारे नेताजन तृप्त होकर हमारा कल्याण करने वाले हो। (भद्र राति) हमे मिले दान और हमारे द्वारा दिए गए दान हमे सुखप्रद हो। (भद्र अध्वर) हिसा रहित यज्ञकर्म हमारा कल्याण करने वाले हो। (उत प्रशस्तय भद्रा) और हमारी प्रशसा भी हमारा कल्याण करने वाले हो।

निष्कर्ष – हमारे नेता स्वार्थी और भ्रष्टाचारी व राष्ट्रद्रोही न हो। हम अन्याय से कमाए हुए दान को स्वीकार न करे तथा स्वार्थी, दुष्टों और राष्ट्रद्रोहियो को दान या सहायता न दे। हामरे हिसारहित यज्ञकर्म, एकतरफा युद्ध-विराम की तरह दु खदायी न हो। हमारी प्रसिद्धि शुभकृत्यो के द्वारा हो, दुष्कृत्यो के द्वारा हम विख्यात न हो।

भद्र – भदिकल्याणे सुखे च। अध्वर – अन+ ध्वर ध्वृहूईनो।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारीबावली, दिल्ली-६**

बादल क्षणभंगुर हैं

बादल तो आएगे जाएगे, बदला तो उमडेगे, घुमडेगे
गर्जेंगे बरसेंगे, सुख के हों, हो दु·ख के,
बरसें गरल या अमृत, दें जीवन या करें मृतवत
हो जाए सदय या लाएं प्रलय
बादल क्षणभगुर हैं, सुख-दु·ख के अंकुर हैं
रे मन, बादल नहीं होते शाश्वत, सारे बादल हैं तृणवत्
बादल से क्या राग न भय हो या विराग
समझ मेरे मन ! हर बादल को जाना है,
सूरज को ही आना है
कर बादलों की उपेक्षा करनी है प्रकाश की प्रतीक्षा
प्रकाश है शाश्वत, है वही सार-तत्व
वही है अमरत्व
जो है क्षणभंगुर - उससे क्या डराता भय
हो तू निर्भय, हर शिखर चढ़ना है
आगे ही बढ़ना है,
न राग, न अनुराग, बोध ही है विराग,
असत् का कर त्याग,
रे मन तू जागा !

– नरेन्द्र मोहन

वयम् जयेम् त्वया युजा

सार्वदेशिक सभा के नवनिर्वाचित प्रधान
सम्माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य की सेवा में प्रस्तुत हृदयोद्गार

आर्यों ने आपको प्रधान का पद दे दिया,
सार्वदेशिक सभा का पूरा नियन्त्रण है दिया।
आपने स्वीकार कर सम्मान बहुमत का किया,
हे वरेण्य प्रज्ञ ! झंझटों को आपने है वर लिया।

कृत्सकल्प होकर सवारें पूर्वजो का यह चमन।
बधाई और निज प्यार देकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम ! अभिनन्दनम् !!

आशा भरी नजरों से जग का कोना-कोना है निहारे,
सो रहा है सूर्य क्यों कर ? टिमटिमाते हैं सितारे।
छद्म और पाखण्ड गुरुडम हर तरफ आचल पसारे,
फंस रहे पीड़ा में जन-जन सोचते किसको पुकारे।
दया और आनन्द का होता नहीं क्यो ? आगमन।।

कृत्संकल्प होकर सवारे पूर्वजो का यह चमन।
बधाई और निज प्यार देकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

जगमग दीपों की दिवाली आज फिर आई दुबारा,
१८८३ में ऋषि ने पूछकर जब प्राण वारा।
एक दीपक अनगिनत दीपों को देकर ज्योति सारा,
हंस रहा था - देखकर छिपते अमावस का किनारा।
कोना-कोना हर्षमय उल्लास का वातावरण।।

कृत्संकल्प होकर सवारे पूर्वजों का यह चमन।
हृदय से सत्कार कर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

हो रही थी ध्वस्त माना १२६ मंजिल इमारत,
छुप रहा पर सच यही है विश्व में लादेन आहत।
हर नए उत्साह से निर्माण हो संकल्प-राहत,
देखकर विस्मित झुके फिर विश्व का सिर दर्प उन्नत।
संस्कारित पुण्य पथ पर बढ चला आवागमन।।

कृत्संकल्प होकर संवारें पूर्व जों का यह चमन।
विवेक और सौहार्द लेकर आपका करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

देश और प्रदेश के हर शाख में विघटन का कारण,
सोचने और खोजने का कुन्द सा होता निवारण।
धर्म की व्याख्या सरलतम मंच से करते उच्चारण,
हाय ! हम खुद कर नहीं पाते उसे सार्थक व धारण।
धींगामुश्ती और कुण्ठा व्याप्त है चहुंदिशि क्षरण।।

कृत्संकल्प होकर संवारें पूर्वजों का यह चमन।
हृदय के उद्गार लेकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

मनमानी हर ग्रन्थ में, विधि में, विनियोग में पाते विविधता,
मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्न ? कैसे हो स्वस्थ सी एकरूपता।
उपदेशकों सन्यस्त जन में ललक लुप्त अर्जन की क्षमता,
मचासीन वक्ता उद्घोषक भी दिखाते है विषमता।
आमन्त्रण भी बाटकर करना पडे पुरोगम स्थगन।

कृत्सकल्प होकर सुधारे अधतन का यह चलन।
टूटे हृदय के तार लेकर कर सके तब अनुगमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

लट्ठम् लट्ठा बिन निर्वाचन वर्चस्व हित हो टन्टा-पट्टा,
बूढे अन्यमनस्क जन कहते यही कहानी खट्टा-मीट्ठा।
स्रोत धन आगम-खर्च के खोलते कहीं कच्चा चिट्ठा,
तलपट हर हालत मे मिलता शेष मे बचे केवल मट्ठा।
आख मूद अधिकारी भी करते स्वयम् आत्मा का हनन।।

कृत्सकल्प होकर उबारे उनके हृदय का आवरण।
स्वार्थ से विलगाव कलुष को छोड होवे शान्त मन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

आर्य है। आर्यत्व का अस्तित्व संजोना सब चाहे,
ऋषि के सबल उपदेश और आदेश पर सबकी निगाहे।
ढूढते विश्वास से सत्यार्थ मे सुख शान्ति राहे,
फैलता जाता है गुरुडम तिकडमों मे रख अफवाहे।
है कहीं ना विरोध का स्वर मानिए यह सच श्रीमन्।।

कृत्सकल्प होकर जगायें आत्म सम्मान कर संगठन।
युग युगो तक हो समादृत आपका सारा यत्न।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

वसुन्धरा मे राष्ट्र भारत का हृदय स्पन्दित बिहार,
कार्य मे, उपचार मे जी जान से रहता तैयार।
नेतृत्व बिन जो निर्बल-दुर्बल और अकिंचन है बेकार,
फिर भी मन के भाव लेकर भेजते बेढब उपहार।
क्षुद्र बुद्धि दीन की सौगात में स्यात् तिक्त पन।।

गरल को देखें विचारे हो सफल जिससे निराकरण।
आपके नेतृत्व में झड जाएं सब उत्पन्न कु-कारण।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

शास्त्र और शुद्धि की अब तक प्रेरणा मिलती रही है,
शस्त्र भी हमें चाहिए क्यों कर किसी ने ना कही है।
दे रहे है प्रेरणा अद्भुत अनोखापन यही है,
आतक के साए में जरूरत जिसकी अपने आप ही है।
लात के भूतो का बातो से कभी न हो सकता दमन।।

यथायोग्य व्यवहार के नियम का सच हो अब कार्यान्वयन।
सोई जाति ले अंगडाई 'मरुत' समर्थ सब विधि तत्क्षण।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम !!

- सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', आर्यसमाज नेमदार गंज नवादा (बिहार)

जुकाम-जुकाम-जुकाम

– श्रीमती स्नेहलता बंसल

जाडे के दिन शुरू हुए नहीं कि सर्दी और जुकाम की शिकायत होने लगती है। यह रोग बच्चे, बूढे युवा सभी युवा वर्ग के व्यक्तियों को जकड सकता हे। इस रोग के बारे मे यह धारणा है कि दो-चार दिन या सप्ताहा भर के बाद स्वय ठीक हो जाता है। इसलिए नाक से बार-बार छींक आने पर, पानी के बहने पर घबराना नहीं चाहिए। इन साधारण लक्षणो के अलावा कुछ और भी लक्षण होते हैं जिससे जुकाम के रोगियो की पहचान आसानी से हो सकती है। नाक से पानी आने के अतिरिक्त, नाक बद होने, सिरदर्द और ज्वर प्रकोप भी जुकाम के पूर्व सकेत है।

जुकाम का प्रमुख कारण श्वसन तन्त्र के ऊपरी भाग की श्लैष्मिक ग्रन्थियो मे सूजन का होना है। ऐसा होने पर नाक की नालिका से अनावश्यक पदार्थों एव कफ आदि का सही ढग से निकास सम्भव नहीं होता। नाक से कफ का पानी धीरे धीरे बराबर ही रिसता रहता है। फलत गले में खसखसाहट, सुरसुराहट लगातार बनी रहती है। कुछ भी खाने–पीने से गले मे हल्का दर्द और रुकावट का अहसास होता है। गले से साफ आवाज नहीं निकलती है आख से पानी बहता रहता है। कुछ लोगो को शरीर मे दर्द और ऐठन की शिकायत हो सकती है। यह रोग अत्यन्त सूक्ष्म विषाणुओ के कारण होता है।

जुकाम के विषाणु शरीर मे प्रवेश करने के ४८ घण्टे बाद अपनी उपस्थिति का प्रभाव दिखाने लगते हैं। यह कहने के लिए साधारण सा रोग है किन्तु यह सक्रामक रोगो मे गिना जाता है। सक्रमित व्यक्ति के खासने और छींकने की अवस्था मे नाक के विषाणु औरो को भी प्रभावित करते हैं। चिकित्सा वैज्ञानिको के अनुसार जुकाम के विषाणुओ पर काबू पाना सरल नहीं है। क्योकि इसके फैलव मे कोई एक किस्म का विषाणु सक्रिय नहीं रहता बल्कि इस कार्य मे करीब दो सौ विषाणु सहभागी हो सकते हैं। यही कारण है कि एक दवा लेने के बाद रोग से थोडा आराम अनुभव होता है किन्तु उससे तुरन्त मुक्ति सम्भव नहीं होती, कारण कि तब तक दूसरा विषाणु अपनी सक्रियता दिखाना आरम्भ कर देता है। अत चिकित्सक के परामर्श के अनुसार नियमित औषधियो का सेवन किया जाना चाहिए। किसी को जुकाम केवल सर्दी और बरसात के कारण नहीं होता। मौसम मे अचानक बदलाव आने, वातावरण प्रदूषित होने, भीडभाड मे सास लेने की कठिनाई होने, गन्दगी के बीच रहने से भी जुकाम हो सकता है।

इस बीमारी की शुरुआत छींक आने से होती है। यह एक निश्चित लक्षण है। जब कोई रोगी छींकता है, उसकी एक छींक के साथ असख्य विषाणु फैल जाते हैं और उस व्यक्ति के समीप रहनेवाले लोगों को प्रभाव मे ले लेते हैं। आमतौर से यह देखा जाता है कि बच्चे को जुकाम होता है तो वह कई बार रूमाल से नाक साफ न करके हाथ से ही नाक का पानी साफ करने लगता है। इसके बाद वह जाने–अनजाने किसी अन्य व्यक्ति के साथ हाथ मिला बैठता है या भोजन करने वालो मे शामिल हो जाता है। इससे दूसरो को जुकाम होते देर नहीं लगती। इसरोग को अति साधारण मानने का परिणाम यह होता है कि किसी एक दूसरे को यह कहने नहीं सुना जाता कि उसके साथ रहने, बैठने के कारण जुकाम हो गया। लोग यह मानते हैं कि चूकि मौसम ही ऐसा है किसी को जुकाम हो सकता है। वास्तव में जुकाम से प्रभावित एव अप्रभावित दोनों को इस रोग के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। तभी इससे सक्रमित होने से बचा जा सकता है।

जुकाम की अवस्था में नाक बहते रहने को 'रिनोरिया' कहा जाता है। कई बार यह दो से पाच दिनो के भीतर ठीक हो जाता है। कुछ लोगो को जुकाम और सर्दी से तुरन्त आराम मिल जाता है किन्तु खासी का शिकार हो जाते हैं। जुकाम का यह जटिल रूप कहा जा सकता है। किसी व्यक्ति को जुकाम होने या नहीं होने के पीछे उसके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता निर्भर करती है। जिन लोगो को बार–बार जुकाम होता है, उनके गले मे विषाणु स्थायी रूप से प्रभाव जमा लेते हैं। अत उन पर जुकाम केबहाने निमोनिया, गठिया, क्षय, दमा, आमवात आदि रोगो का भी हमला हो सकता है। इसलिए इस रोग के बचाव के आवश्यक उपाय किए जाने चाहिए। जुकाम एक साधारण रोग सही, किन्तु समय रहते इसके प्रति सावधानी नहीं बरतने पर कई अन्य रोगो का प्रकोप हो जाता है।

स्त्रियो को जुकाम अधिक रहता है क्योकि उनको घर के सैकडो काम करने पडते हैं। अन्दर-बाहर की सफाई और चौका बर्तन के समय भी पानी के पास अधिक समय व्यतीत करना पडता है। जिन स्त्रियो को पानी से 'एलर्जी होती है, वे जुकाम के प्रकोप का शीघ्र शिकार होती हैं। स्त्रियो के अलावा छोटी आयु के बच्चो को जुकाम अधिक होता है।

बचाव के उपाय – चिकित्सको के अनुसार इस रोग के लक्षण बहुत जल्द प्रकट होने लगते हैं। इससे बचाव के लिए कुछ विशेष सावधानिया बरतनी चाहिए, कारण कि केवल औषधियो के प्रयोग से जुकाम से छुटकारा सम्भव नहीं होता। दवाओ के उपयोग से जुकाम को खतरनाक रूप ग्रहण करने से अवश्य रोका जा सकता है। जुकाम होने पर ६० प्रतिशत उपचार ही दवाओं से हो सकता है, जबकि कुछ उपायों को अपनाकर न केवल जुकाम को फैलने से रोका जा सकता है बल्कि दूसरों का भी बचाव किया जा सकता हैं।

जुकाम के रोगियो के प्रति सबसे प्रमुख सावधानी यह बरते कि रोगी के साथ उठना-बैठना और साथ खान-पान नहीं होना चाहिए।

प्रतिदिन एक चम्मच शहद का सेवन करना चाहिए, इससे न केवल रोग मे आराम मिलता है बल्कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढती है।

कहीं आते-जाते मे अचानक प्यास लगने पर फौरन पानी नहीं पीना चाहिए। पहले थोडी देर अवश्य सुस्ताए। जब शरीर का तापमान सामान्य होने लगे, तभी पानी पीना चाहिए।

वातानुकूलित कमरे से निकलकर तत्काल धूप या बदले हुए वातावरण में नहीं जाए, इससे शरीर पर बुरा प्रभाव पडता है।

खाने-पीने मे अधिक से अधिक तरल पदार्थों का सेवन करे।

जुकाम से बचने के लिए आवश्यक है कि आप खिडकियों और रोशनीयुक्त कमरों में रहें तथा भीडभाड की जगहो से बचें।

रोगी को गले में तकलीफ होने पर गुनगुने जल में नमक मिलाकर गरारा [illegible] खराबी दर होती है।

रोगी को जुकाम होने पर हाथ से बार-बार नाक साफ करने की अपेक्षा रूमाल इस्तेमाल करना चाहिए। उसे धोते रहना चाहिए।

भोजन करने से पहले हाथ साबुन से अवश्य साफ करना चाहिए और दूसरो से दूरी बनाए रखनी चाहिए।

रोगी को आराम करने मे लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। जुकाम होने पर धूप मे रहने से आरामदायक अनुभव होता है। ठण्डी जगहो पर जाने से पूरी तौर पर परहेज करना चाहिए।

इतनी सारी सावधानिया बरतकर आप न केलव जुकाम से अपनी रक्षा कर सकते है बल्कि दूसरो को सक्रमित होने से बचा सकते हैं। चूकि यह रोगब सक्रामक रोग माना जाता है इसलिए सावधानी बरतने मे लापरवाही नहीं करनी चाहिए। सबसे बडी बात यह है कि ज्यो ही किसी को यह अहसास होने लगे कि उसे जुकाम हुआ है उसे चिकित्सक से इलाज कराने में देर नहीं करनी चाहिए और न ही मामूली रोग समझकर नीम-हकीमों से गोलिया लेकर सेवन करनी चाहिए। इससे रोग जटिल हो सकता है और समस्या गम्भीर हो सकती है।

जिन कारणो से जुकाम होता है, उन समस्त स्थितियों से हमेशा बचे। रोग के सक्रमण से बचने के लिए दवा के साथ सावधनी भी बरतनी जरूरी है। तभी, चाहे कोई भी मौसम हो, जुकाम से शरीर कीं रक्षा की जा सकती है। वैज्ञानिक ने जुकाम के विषाणुओ को पकडने की मुहिम छेड रखी है, मगर अभी तक रूप बदलने मे माहिर विषाणुओ को काबू मे नहीं किया जा सका है।

आर्य बाल सभा 'डी' ब्लाक सीतापुरी, नई दिल्ली-४५ का नवरात्रीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य बाल सभा द्वारा आयोजित नवरात्रीय गायत्री महायज्ञ का समापन समारोह नवमी २५–१०–२००१ को प० प्रणव देव जी शास्त्री द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोमदत्त जी महाजन प्रधान आर्य समाज 'सी' ब्लाक जनकपुरी द्वारा की गई मुख्य अतिथि श्री हरस्वरूप जी सिंघल ने अपने भाव प्रकट किए। श्रीमती विमला भाटिया के उत्साही भाषण एव श्रीमती शकुन्तला गुलाटी के मधुर भजनों ने बच्चों एव उपस्थित लोगों को भाव-विभोर किया। बच्चों का कार्यक्रम जिसमे मुख्यत प्रात कालीन मन्त्र ईश्वर स्तुति प्रार्थनाउपासना मन्त्र, ईशवन्दना, सगठन सूक्त, भजन, कविताए एव आर्यसमाज के नियम आदि के द्वारा उत्साहित रूप से प्रस्तुत किए गए। जिसकी सराहना सभा मे उपस्थित सभी ने की। बच्चो को पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहित किया गया। प्रीति-भोज का आयोजन श्रीमती अनु चौहान सचालिका आर्य बाल सभा एव प्रधाना आर्यसमाज सीतापुरी के परिवार की ओर से किया गया।

।। ओ३म्।।
पावका नः सरस्वती

दूरभाष - ६५२५६६३

निमन्त्रण पत्र

श्रीमद्दयानन्द–वेदार्ष–महाविद्यालय

११६ गौतम नगर, नई दिल्ली-११००४६

६६ वाँ वार्षिक समारोह एवं २२ वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं

सत्यार्थभृत् यज्ञ

२५ नवम्बर रविवार से १६ दिसम्बर, रविवार २००१ तक

विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा।

ब्रह्मा – आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् वेदवेत्ता श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। सान्निध्य – स्वामी जीवनानन्द सरस्वती।

प्रथम दिवस – अग्न्याधान एव पारायण यज्ञ व उपदेश–प्रात ८.०० बजे से १०.३० बजे तक।

ध्वजारोहण – श्री चौधरी मित्रसेन जी। मुख्यअतिथि–बृजमोहन मुञ्जाल, लाला मोहनलाल चोपडा।

स्वागताध्यक्ष – विद्यामित्र ठुकराल, समय–१०.३० से ११.०० बजे तक।

दैनिक समय – प्रात ६ बजे से १० बजे तक, साय–३ बजे से ६ बजे तक।

विशिष्ट सहयोगी कुबेरदानी होता यजमान – श्री शशिकान्त सेठ ग्रीनपार्क, माता कान्ता सिक्का, माता विद्यावती नारग, श्री ईश्वरचन्द्र सेठ, श्री सत्यप्रकाश खारीबावली, श्री जितेन्द्र मेहता, श्री योगेश मुञ्जाल, श्री जे०एन० जग्गी।

विशिष्ट-सम्मेलन

१. प० क्षितीश वेदालकार स्मृति स्मारक प्रतियोगिताए – ६, १० दिसम्बर। १०.३० से १२.३० बजे तक
२ गुरुकुल एव सस्कृत सम्मेलन तथा प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण। १० दिसम्बर बुधवार, साय ४.०० से ६.३० बजे तक।
३ **महिला सम्मेलन** – प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान मे। ११ दिसम्बर मगलवार २ बजे से ४ बजे तक।
४ **आर्य सम्मेलन** – दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के तत्त्वावधान मे। १५ दिसम्बर शनिवार साय ४.०० से ६.३० बजे तक।

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद – २५ नवम्बर रविवार से ३ दिसम्बर सोमवार साय सवन तक।
यजुर्वेद – ४ दिसम्बर प्रात से ५ दिसम्बर साय सवन तक।
सामवेद – ६ दिसम्बर प्रात से ७ दिसम्बर प्रात सवन तक।
अथर्ववेद – ७ दिसम्बर साय से १३ दिसम्बर साय सवन तक।
सत्यार्थभृत् यज्ञ – १४ दिसम्बर शुक्रवार प्रात से १६ दिसम्बर रविवार तक। इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी।

पूर्णाहुति एवं आर्य नेताओं द्वारा उद्बोधन

समय – १६ दिसम्बर रविवार प्रात ८.०० बजे से १.०० बजे तक।

आमन्त्रित विद्वान् – श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, श्री साहिब सिह जी वर्मा (सासद) डॉ० योगानन्द शास्त्री, (मन्त्री दिल्ली सरकार), श्री धर्मपाल जी शास्त्री (मेरठ), प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु, प्रो० धर्मवीर जी अजमेर (मन्त्री परोपकारिणी सभा)

भजनोपदेशक – श्री ओम्प्रकाश वर्मा, श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री सत्यपाल सरल देहरादून, श्री व्रजपाल जी कर्मठ।

आवश्यक पालनीय – यजमान दम्पती के लिए धोती एव साडी का पहनना आवश्यक होगा। ऋषिलगर, वेदविद्या तथा सस्कृत-भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए दान देकर पुण्य के भागी बने।

ऋषिलंगर – १ बजे से ३ बजे तक, रविवार १६ दिसम्बर।

निवेदक

रामनाथ सहगल
वरिष्ठ प्रबन्धक

हरिदेव आचार्य
आचार्य

R N No 32387/77 Posted at N D.P S O on 29-30/11/2001 दिनांक २६ नवम्बर से २ दिसम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2001, 29-30/11/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३६/२००१

आर्य मनीषी देवनारायण भारद्वाज को मातुश्री सम्मान

आर्यसमाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम का चार दिवसीय वेद महोत्सव स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदभिक्षु महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती के वैदिक प्रवचनों से अत्यन्त रोचक एव समृद्ध रहा।

आचार्य जीवन सिह आर्य गुरुकुल साधु आश्रम मे यज्ञाचार्य एव भजनोपदेशक के रूप मे बडी सख्या मे उपस्थित जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर आर्य मनीषी, कवि, लेखक प्रवक्ता देवनारायण भारद्वाज का सार्वजनिक अभिनन्दन मातुश्री धनदेवी केशवराम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट बरेली–दिल्ली द्वारा किया गया। मुख्य ट्रस्टी महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती ने श्री भारद्वाज को मानपत्र, आकर्षक स्मृति प्रतीक, उत्तम ऊनी दुशाला, श्रेष्ठ साहित्य और पाच हजार रुपये का चेक भेट किया। उपहार मे प्राप्त राशि श्री भारद्वाज ने तत्काल वेद मनीषा न्यास अलीगढ को दान कर दी। अनेक विभूतियो एव सम्भ्रान्त नागरिकों ने उपस्थित होकर श्री भारद्वाज को अपनी शुभकामनाए प्रदान की। प्रधान प० शिवस्वरूप शर्मा की अध्यक्षता मे सम्पन्न इस भव्य समारोह को डॉ० देव शर्मा सारस्वत, प्रो० जी०सी० उप्रेती, डॉ० जी०एन० मिश्र, राजर्षि राजेन्द्रसिह, अमुतपुरुष श्याम बाबू गुप्ता, प्रो० बी०डी० भारद्वाज, श्रीमती इन्दिरा एडवोकेट, आचार्य बुद्ध, प्राचार्य सत्यदेव शर्मा, प्रो० ज्ञानेन्द्र वशिष्ठ, डॉ० गौरी शकर मिश्र, प० रघुवीर शरण सरक्षक, जय नारायण शर्मा, कृष्ण मोहन वार्ष्णेय आदि का गरिमामय सान्निध्य विशेष उल्लेखनीय है।

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

शोक समाचार

दिल्ली के कालकाजी क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री गंगा शरण जी के सुपुत्र श्री सतीश कुमार का निधन १४ नवम्बर, २००१ को प्रात ७ बजे हृदय गति रुक जाने से हो गया। वे लगभग ४० वर्ष के थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करें तथा परिवार के सदस्यों को इस महान दुख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

आर्यसमाज पुरानी गोदाम, गया का ३८वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पुरानी गोदाम गया (बिहार) का ३८वा वार्षिकोत्सव दिनाक २८ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर, २००१ तक बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत विद्वानो सर्वश्री स्वामी अग्निव्रत, प० अभयराम दयानन्दी, आचार्य प्रीति जी, प० सत्यप्रकाश आर्य आदि ने भाग लिया तथा अपने पुरोगम से आर्यजनता को सम्बोधित किया।

आर्यसमाज मानपुर, गया का ५६वा वार्षिकोत्सव भी १ नवम्बर से ४ नवम्बर, २००१ तक मनाया गया। जिसमे सर्वश्री स्वामी अग्निव्रत, श्रीमती ६ र्मशीला, प० विधुमिश्र शास्त्री एव प० सत्यप्रकाश आर्य आदि नेताओ ने भाग लिया।

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज विनय नगर (सरोजनी नगर) नई दिल्ली

प्रधान	–	श्री देशराज बुद्धिराजा
वरिष्ठ उपप्रधान	–	श्री रोशनलाल जी गुप्त
		श्री बलबीर वर्मा
उपप्रधान	–	श्री आर०सी० गर्ग
मन्त्री	–	श्री पुरुषोत्तम लाल
वरिष्ठ उपमन्त्री	–	श्री सुखराम आर्य
उपमन्त्री	–	डॉ० वी०के० वर्मा
कोषाध्यक्ष	–	श्री डी० के० प्रस्थी
आडिटर	–	श्री राजेन्द्र चण्डोक
प्रचार मन्त्री	–	श्री वेदमित्र आर्य

गुरुकुल गौतम नगर का वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद परायण यज्ञ

गौतमनगर, नई दिल्ली–४८ मे अवस्थित गुरुकुल गौतम नगर का ६६वा वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से रविवार १६ दिसम्बर तक आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर चारो वेदो का पारायण यज्ञ स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे हो रहा है। यज्ञ की पूर्णाहुति एव आर्य नेताओ का उद्‌बोधन १६ दिसम्बर को होगा।

ललिता प्रसाद आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली-११००३२ की छात्राओं ने क्षेत्रीय प्रतियोगिताएं जीतीं

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

विद्यार्थी का नाम	वर्ग	स्थान प्राप्त
कु० कोमल अहुजा कक्षा बारहवीं ए	वरिष्ठ	द्वितीय

संस्कृत श्लोक प्रतियोगिता

विद्यार्थी का नाम	वर्ग	स्थान प्राप्त
कु० अनुराधा कक्षा ग्यारहवी ए	वरिष्ठ	प्रथम
कु० शालिनी कक्षा आठवी बी	कनिष्ठ	द्वितीय

लोक गीत प्रतियोगिता

२१ बच्चो का एक समूह		द्वितीय

गुरुकुल है जहां, स्वास्थ्य है वहां

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर: गुरुकुल कांगड़ी-249404 जिला - हरिद्वार (उ प्र.)
फोन- 0133-416073 फैक्स-0133-416366

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ; ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक ६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, १७ दिसम्बर से २३ दिसम्बर, २००१ तक

मूल्य एक प्रति : २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये - आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विशेष संगोष्ठी

मनगढ़न्त, झूठी और निराधार बातों को इतिहास से हटाया जाए

आर्यों को विदेशी और आक्रमणकारी कहने वाली बातों का बुद्धिजीवियों द्वारा कड़ा खंडन

विशेष प्रस्ताव पारित करके सरकार को भेजा गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे इतिहास की सरकारी पुस्तको में प्रकाशित कुछ मनगढन्त, झूठी, बे-बुनियाद और षडयन्त्रकारी बातों की ओर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन कास्टीट्युशन क्लब में किया गया।

सगोष्ठी का विषय था – **"आर्य विदेशी या आक्रमणकारी नहीं थे तथा वेदों में गो मांस नहीं"**।

प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि सर्वप्रथम हम किसी तथ्य को समझते हैं तथ्यों को जानने के बाद उनका मूल्याकन किया जाता है और उस मूल्याकन के बाद नीति निर्धारित की जाती है तथा उस नीति के आधार पर इतिहास लिखा जाता है। यह सारी प्रक्रिया सत्य पर आधारित होनी चाहिए परन्तु ब्रिटिश सरकार ने गलत और मनगढन्त तथ्यों की कल्पना की। परिणामत उनका मूल्याकन मे इस मनगढन्त अवधारणा को प्रस्तुत किया। उसका यह विचार अग्रेजो की नीति के अनुरूप था और उन्होने इसे प्रचारित कर दिया। जबकि कई अग्रेज विद्वान् यह भी स्वीकार करते हैं कि सस्कृत पाश्चात्य भाषाओं की भी जननी है। परन्तु इतिहास को तोड-मरोडकर उन्होंने इस देश की मूल सस्कृति और प्राचीन इतिहास को कलकित करने का प्रयास किया।

श्री मधोक ने कहा कि सरदार पटेल लिखी थी – **"आर्यों का आदि देश"**।

उन्होने कहा कि सारी दुनिया जानती है कि इस धरती पर मुगल विदेशी थे उन्होने आक्रमण किए, अग्रेज विदेशी थे उन्होने भारत का भरपूर शोषण किया। ये दोनो विदेशी नस्ले भारतीयो पर भरपूर अत्याचार करती रहीं, तो इन परिस्थितियो मे अकबर को महान बताने वाले किस दृष्टि से इतिहास की रचना करते है, यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है।

आर्य भारत के मूल नागरिक थे विदेशी और आक्रान्ता नहीं – इस विषय पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सगोष्ठी में मचस्थ विद्वतजन, प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, मच सचालन करते हुए वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट, पुरातत्वविद डॉ० बी०बी० लाल, राष्ट्रवादी चिन्तक प्रो० बलराज मधोक, वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालकार, सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल, सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

संगोष्ठी में पारित प्रस्ताव अगले अक में प्रकाशित किए जाएगे।

इस संगोष्ठी मे केन्द्र सरकार द्वारा इतिहास की पुस्तको से जैनधर्म, सिख धर्म, जाटो तथा वेदों मे गोमास जैसी निराधार बातों को हटाने का समर्थन किया गया, परन्तु साथ ही सरकार को एक प्रस्ताव के द्वारा यह भी कहा गया कि आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाली बातो को भी हटाया जाए।

इस सगोष्ठी मे वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालकार, पुरातत्ववेत्ता श्री बी०बी० लाल, राजनीतिक विचारक प्रो० बलराज मधोक, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल आदि ने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने की। सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सगोष्ठी का सचालन सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने किया।

भी गलत हुआ। इस देश के प्रति शोषण की नीति उनके प्रारम्भिक काल से ही नजर आ रही थी और इन सारी बातों को देखकर यह स्पष्ट है कि उनके द्वारा लिखा गया इतिहास किसी दृष्टिकोण से भी सच्चा नहीं हो सकता।

आर्यों का आदि देश भारत ही है जिसका प्राचीनतम नाम आर्यवर्त था। इससे पहले उसका कोई नाम नहीं था। सृष्टि उत्पत्ति के बाद इस देश का यही प्रथम नाम था और मूलरूप से मनुष्य की उत्पत्ति इसी धरती पर हुई थी। उन्हीं का नाम आर्य था। इन बातों को साबित करने के लिए हमारे धर्म और साहित्य ग्रन्थों मे पर्याप्त ज्ञान का भण्डार भरा पडा है।

श्री बलराज मधोक ने कहा कि सर विलयम जोन्स नामक एक व्यक्ति ने १७७१ के स्थान पर जवाहरलाल को प्रधानमन्त्री बनाने की वकालत करने वाले गाधी जी से जब इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हमारे बीच मे नेहरू ही एकमात्र इग्लिश मैन है, जिसको इग्लिश लोग पसन्द करते हैं। उन्होने बताया कि इन बातो के आधार पर ही एक अग्रेज लेखक ने नेहरू के बारे मे लिखा था कि वह अग्रेजो का अन्तिम वायसराय है और कहा था कि भारत का जितना अनिष्ट अग्रेज सैकडों सालो मे नहीं कर पाए वह नेहरू की अग्रेज नीति ने लगभग १७ वर्षों में ही कर दिखाया।

श्री मधोक ने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री डॉ० सम्पूर्णानन्द ने भी गहरे तथ्यो के आधार पर एक पुस्तक

श्री मधोक ने कम्युनिजम (साम्यवाद) पर प्रहार करते हुए कहा कि जो विचारधारा दुनिया के सबसे बडे देश की सत्ता मिलने के बावजूद भी लगभग ७० वर्ष मे समाप्त हो गई। वह विचारधारा करोडो-अरबो वर्ष पुरानी सस्कृति के इतिहास पर भी प्रहार का दुस्साहस कर सकती है, ये भारतीय नेताओ की कमजोर मनःस्थिति का परिचायक है।

पुरातत्व विशेषज्ञ डा० बी०बी० लाल ने बताया कि इतिहास केवल वक्तव्य पर नहीं अपितु साक्ष्य पर आधारित होता है और आर्यों के इस देश के मूल निवासी होने मे सच्चाई और आक्रमणकारी या विदेशी होने के झूठ को मैं प्रमाणो के आधार पर साबित कर सकता हू। उन्होने बताया कि खुदाई के दौरान मिले अवशेषों के आधार पर यह साबित किया जा सकता है। उसकी तस्वीरे स्लाइडों पर दिखाई जा सकती हैं।

बलिदान दिवस पर विशेष

साहस और बलिदान के जीवन्त-स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द

– आचार्य अजय आर्य

यदि कभी श्रद्धा मूर्तिमन्त हुई, तो निश्चित ही उसकी आकृति स्वामी श्रद्धानन्द सी होगी। **'श्रद्धयाग्नि समिध्यते'** के वैदिक घोष को प्रत्यक्ष कराकर उन्होने श्रद्धा की अग्नि मे जीवन के सम्पूर्ण कालुष्य को भस्मसात् कर दिया था। श्रद्धा के बल पर ही उन्होने सम्पूर्ण जगत् को अपने प्रति श्रद्धावान् किया। सच्चाई, दृढता प्रेम उत्साह और समर्पण इसी श्रद्धा भाव के अनुचर हैं। स्वामीजी का जीवन इन गुणो को पूर्णत आत्मसात् किए हुए था।

स्वामीजी का जन्म फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् १६१३ को पजाब के जालन्धर जिले के तलवन नामक कस्बे मे हुआ। उनके पिता श्री नानकचन्द थे। जिन्होने उन्हे महात्मा मुशीराम और स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में देखा है वे मुशीराम के उस जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते जहा उनका जीवन सभी दुर्गुण-दुर्व्यसनो का घर बन गया था। मुशीराम ने महर्षि दयानन्द का सत्सग किया और उनकी 'कायाकल्प' को गई।

३० मार्च १६१६ की वह घटना कभी भुलाए नहीं भूलती जब रोलेट एक्ट के विरोध मे व्यापक हडताल हुई। गोली चलने की खबर पाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी तुरन्त घटना स्थल पर पहुचे। काषाय वस्त्रधारी तेजस्वी सन्यासी के रूप मे इन्होने देशभक्तों के समूह का नेतृत्व किया। घण्टाघर की ओर बढती हुई पच्चीस हजार की भीड को गोरखा पलटन के जवानो ने रोकना चाहा। सगीने ताने जवान स्वामीजी के आगे खडे हो गए। जवानो ने घोषणा की– **'आगे बढे तो छेद देगे।'** स्वामीजी ने भीड को शान्त किया अपनी छाती आगे की और कहा – **'मैं खडा हूं- मारो गोली।'** श्रद्धा, त्याग और साहस के अनूठे सगम के सामने सगीने झुक गई। कुछ सैनिक अधिकारी और जवानो के आने से एक भयावह घटना घटने से टल गई किन्तु स्वामीजी ने नेतृत्व, साहस और देशभक्ति की जो जीवन्त परिभाषा वहा दी, वह अविस्मरणीय है।

स्वामीजी अस्पृश्यता-छूआछूत, महिलाओ की सामाजिक उपेक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों के साथ-साथ मैकाले की शिक्षानीति के प्रबल विरोधी थे। उन्होने स्पष्ट कहा था – **'परमात्मा के बनाए मनुष्यों में ऊच-नीच का भेदभाव कोरी मूर्खता है।'** स्वामीजी महिला शिक्षा के प्रबल पक्षपाती तथा उनकी सामाजिक भागीदारी के प्रबल समर्थक थे। उन्होने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को पुनरुजीवित करके ऐतिहासिक शैक्षिक

कार्य किया। वैदिक सिद्धान्तों व नैतिक मूल्यों से समाविष्ट शिक्षा पद्धति (गुरुकुल शिक्षा प्रणाली) के पुनरुजीवन का श्रेय उन्हीं को है।

सिद्धान्तो के प्रति समर्पण और मानवीय सेवा के सच्चे जिज्ञासुओ के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनगाथा अवश्य पठनीय है। सच तो यह है स्वामीजी का जीवन त्याग, श्रद्धा, समर्पण और सेवा जैसे दैवीय गुणो का जीवत प्रतीक था। उन्होंने सिद्धान्तो पर न केवल प्रवचन किए, अपितु उन्हे पूर्णत आत्मसात् भी किया। यद्यपि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क मे आने और आर्यसमाज की सदस्यता के पश्चात ही उन्होने स्वय को समाज, वेद और मानवता की सेवा के लिए अर्पित कर दिया, किन्तु सन्यासाश्रम मे प्रवेश के पश्चात् तो वे जीए ही प्राणी मात्र की सेवा के लिए। १२ अप्रैल १६१७ मुशीराम जी ने सन्यास ग्रहण किया। उन्होने सन्यासदीक्षा लेते हुए किसी सन्यासी को अपना गुरु नहीं बनाया। उनकी कायापलट करने वाले गुरु तो महर्षि दयानन्द ही थे। वे स्वय भी अपने सम्पूर्ण जीवन को श्रद्धा की दिव्य भावना से उत्प्रेरित मानते थे। उन्होने सन्यास ग्रहण करते हुए कहा था –

'श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्यादेवी है, अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही मैं सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर रहा हू। इसलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हू, जिससे मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने मे सफल हो सकू।'

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान शिक्षाशास्त्री थे। गुरुकुल कागडी की स्थापना विश्व इतिहास की महानतम घटना के रूप मे उल्लेखनीय है। उन्होने आचार्य के रूप मे गुरुकुल का सफल सचालन किया। सौ वर्ष पूर्व उन्होने गुरुकुल की स्थापना के लिए ३० सहस्र रुपये एकत्र करने की प्रतिज्ञा की और कहा कि जब तक यह कार्य पूरा नहीं हो जाता मैं अपने घर मे पाव नहीं रखूगा। उन्होने निजी पुस्तकालय और दूसरी सभी सम्पत्ति गुरुकुल को दान कर दी। १६१२ मे जालन्धर स्थित अपनी विशाल कोठी को दान कर देना चाहा, किन्तु वे इससे पूर्व अपने पुत्रो की स्वीकृति ले लेना चाहते थे। उनके सुपुत्र इन्द्र जी ने अपने लिखित सस्मरणो मे लिखा है कि वे उस दिन को नहीं भूल सकते जब उन्हे और उनके भाई हरिश्चन्द्र को आचार्य जी के कक्ष मे बुलाया गया। पिता ने उन्हें कहा कि अब उनके पास यदि कोई अचल सम्पत्ति अवशिष्ट रही है, तो वह जालन्धर उनकी भव्य कोठी है। यही वे अपने पुत्रो के लिए बचा सके हैं। उनकी इच्छा तो इस कोठी को भी गुरुकुल को दान करने की है। किन्तु जब तक वे इसके लिए अपने दोनो पुत्रो की स्वीकृति नहीं ले लेते तब तक उस भवन को दान करना उन्हे ठीक नहीं लगता। आचार्य जी के इस कथन को सुनकर इन्द्र और हरिश्चन्द्र थोडी देर के लिए भावविभोर होकर खडे रहे। तत्पश्चात उन्होने उस दान पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिए और इस प्रकार महात्मा मुशीराम ने गुरुकुल के लिए अपना सर्वस्व देकर सर्वमेध यज्ञ मे अपनी अन्तिम आहुति डाल दी।

धन्य हो – समर्पण, त्याग और श्रद्धा की वह विलक्षण प्रतिमूर्ति। त्याग, समर्पण और साहस की ऐसी दूसरी मिसाल विश्व इतिहास के पन्नो मे दुर्लभ है। अपना पुत्र, धन, वैभव, सुख सब कुछ उन्होने मानवता को अर्पित कर दिया था। श्रीमती सरोजिनी नायडू का यह कथन अक्षरश सत्य है कि – **"वे अपने जीवन की शहादत की अन्तिम घडियो तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे।"**

२३ दिसम्बर १६२६ को अब्दुल रशीद नामक मतन्ध मुसलमान ने स्वामीजी की हत्या कर दी। उनका जीवन युग युगो तक हमे प्रेरणा देता रहेगा।

प्रभु हमे स्वामीजी सी श्रद्धा और दृढता प्रदान करे जिससे हम स्वय तथा स्वय के विश्व शान्ति व्यवस्था मे अपना योगदान कर सके।

– आर्यसमाज, सफदरजंग एन्क्लेव, बी-२, नई दिल्ली-२६

बोध कथा

भारत के पुनर्जागरण में आर्यसमाज की भूमिका

उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग मे भारत राष्ट्र मे पुनर्जागरण के जो आन्दोलन किए गए, १८८३ से १६१६ तक उनका नेतृत्व मुख्य रूप से आर्यसमाज ने किया। उस काल मे समाज-सुधार, स्वदेशी और स्वकीय सस्कृति से प्रेम, विदेशी शासन के प्रति असन्तोष और विरोध, अपनी भाषा और धर्म के प्रति आस्था और अछूतो की दशा मे सुधारकर उनसे समानता का व्यवहार आदि जो भी प्रयत्न किए जा रहे थे, उनका केन्द्र आर्यसमाज ही था। उन दिनो किसी भी राजनीतिक सगठन के प्रति सामान्य जनता का आकर्षण नहीं था, उसके विपरीत आर्यसमाज और उसकी शिक्षण सस्थाओ के वार्षिकोत्सवो पर हजारो नर-नारी एकत्र होते थे और देश-धर्म और सस्कृति की रक्षा और उन्नति के लिए प्रेरणा लेते थे। उन दिनो देश मे सुधार, जागृति, उन्नति और स्वराज्य के लिए जो भी प्रयत्न किए गए, आर्यसमाज उनका केन्द्र था। इसी के फलस्वरूप १६१६ मे महात्मा गाधी के नेतृत्व मे काग्रेस ने जन-आन्दोलन का रूप ग्रहण करना शुरू किया तो राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी, दलितोद्धार आदि के वे ही कार्यक्रम अपनाए गए, जिनके लिए आर्यसमाज कई दशाब्दियो से प्रयत्नशील था।

सन् १८८३ से १६३१ तक आर्यसमाज दलितो और अछूतो को समता के वे अधिकार दिलवा रहा था, जिनसे वे सदियो से वचित थे, इसलिए पजाब और उत्तर प्रदेश आदि राज्यो के अछूत वर्ग के लोगो को यज्ञोपवीत देकर उनसे समानता का व्यवहार किया गया। उसके कारण आर्यसमाज एक लोकप्रिय जन आन्दोलन बन गया। फलत आर्यसमाज के सभासद तेजी से बनने लगे। अकेले गढवाल जिले मे १०० से अधिक आर्यसमाजो की स्थापना से उसकी लोकप्रियता प्रमाणित हुई। महात्मा गाधी ने आर्यसमाज के अछूतोद्धार कार्यक्रम अपना लिया।

२०वीं सदी के प्रथम चरण तक आर्यसमाज जहा वैदिक धर्म का मण्डन कर रहा था, वहा वह पौराणिको, मुसलमानो और ईसाइयो को बडे शहरो मे ही नहीं, देहातो मे भी शास्त्रार्थों के साथ व्यापक जन-आन्दोलन कर रहा था।

स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह के समर्थन, बाल विवाह के विरोध, पर्दा तथा दहेज सम्बन्धी सामाजिक बुराइयो, छूआछूत, सामाजिक विषमता, पाखण्डो, अन्ध-विश्वास के खण्डन आदि से आर्यसमाज एक प्रचण्ड जन-आन्दोलन बन गया।

मॉरीशस, केनिया, फीजी, सूरीनाम के भारतीय श्रमिको और नागरिको को आर्यसमाज के निरन्तर प्रयत्न से ही स्वधर्म मे स्थिर रखा जा सका।

आर्यसमाज ने स्वराज्य, स्वदेशी भाषा और सस्कृति की प्रतिष्ठिा के लिए ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की जिनका उपयोग महात्मा गाधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि ने स्वाधीनता सग्राम का सफल सचालन किया।

– नरेन्द्र

सबसे निर्भय हों : हम कल्याण-मार्ग पर चलें

अभयं मित्रात् अभयं अमित्रात्।
अथर्व १६/१५/६
हमे मित्र से भय न हो, शत्रु से भी भय न हो।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम। ऋ० ५/५१/१५
हम कल्याण-मार्ग पर चले।

अभयं नोऽस्तु। अथर्व० १६/१४/१
हमे निर्भयता प्राप्त हो।

सुवीर्यस्य पतय स्याम। *अथर्व० ७/६१/२*
हम श्रेष्ठ बल के स्वामी हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

भारतीय संसद पर आतंकवाद का आक्रमण

देश के इतिहास मे पहली बार अभेद्य सुरक्षित माने जाने वाले ससद भवन पर १३ दिसम्बर के दिन भारतीय गणतन्त्री व्यवस्था को खुल्लम-खुल्ला चुनौती देते हुए ससदीय क्षेत्र मे घुसकर अन्धाधुन्ध गोलाबारी की गई। गोलाबारी दिन मे प्रात ११४० पर शुरू हुई, उसमे छह पुलिसकर्मी और पाच आतकवादी मारे गए। कम से कम २२ घायलो का इलाज चल रहा है उनमे से कई की हालत नाजुक है। २५ से ३० वर्ष की उम्र के आक्रमणकारी कमाण्डो की पोशाक पहने सफेद रग की लालबत्ती वाली एम्बेसडर कार मे ससद भवन मे घुसे थे। सुरक्षा कर्मियो को धोखा देने के लिए कार पर गृहमन्त्रालय और ससद भवन के परिचय पत्र लगे हुए थे। ससद परिसर का दरवाजा पार करते ही आतकवादियो ने अन्धाधुन्ध गोलिया चलानी और ग्रेनेड दागने शुरू कर दिए, उससे पूरे क्षेत्र में आतक छा गया, तुरन्त सुरक्षा कर्मियों ने मोर्चा सभाल लिया। उसी समय एक आतकवादी जिसके शरीर पर विस्फोटक लगे थे, अपने को विस्फोट से उडा दिया। यह सवाद भी मिला कि एक आतकवादी ससद भवन मे कहीं छिप गया। इस आक्रमण के समय ससद भवन मे लगभग ३०० सासद उपस्थित थे। उस दिन के हादसे से यह बात तो साबित हो गई कि आतकवादियो का दुस्साहस इतना बढ गया है कि सारी सीमाए लाघते हुए उन्होने राष्ट्र की आत्मा ससद को भी अपना निशाना बना डाला। इस घटना से सारा देश स्तब्ध हो गया। उल्लेखनीय है कि आतकी ससद पर हमले की व्यापक तैयारी के साथ आए थे, परन्तु उन्हे अतिविशिष्ट लोगो के आने के समय और ससद की बदली हुई सुरक्षा व्यवस्था पर ताजी जानकारी नहीं मिल सकी और वे उस हिस्से मे फस गए, जहा सुरक्षा व्यवस्था सबसे मजबूत कर दी गई थी। आतकी जम्मू-कश्मीर विधान सभा मे किए गए विस्फोट की तर्ज पर विस्फोटको से लदी कार मे ससद भवन उडाने के इरादे से आए थे। हमले की वारदात के बाद ससद परिसर सेना को सौप दिया गया। साथ ही राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गाधी समेत प्रमुख हस्तियो के आवासो पर भी सेना तैनात कर दी गई। आतकवादियो के दुस्साहस को यद्यपि सुरक्षा बलो ने विफल कर दिया, लेकिन इस सनसनी भरी घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि सुरक्षा के अनेक कवचो की सुरक्षा के बावजूद ससद भवन पूरी तरह सुरक्षित नहीं।

अति विशिष्ट लोगो के गढ ससद भवन की सुरक्षा व्यवस्था मे भी कई छेद हैं। जिनके माध्यम से इस महत्वपूर्ण भवन की सुरक्षा लाघी जा सकती है। आतकवादियो को ससद परिसर मे सुरक्षा के बारे मे किए गए परिवर्तनो की जानकारी नहीं थी, अन्यथा विध्वस और तबाही बहुत अधिक होती। ससद भवन पर आतकवादियो ने हमला किया यह राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्र की प्रतिष्ठा की दृष्टि से गम्भीरतम घटना है। यह ठीक है कि आतकवादियो का आत्मघाती दस्ता ससद को क्षति नहीं पहुच सका, लेकिन यह तो स्पष्ट है कि ससद भवन की सुरक्षा व्यवस्था श्रेष्ठ कोटि की नहीं है।.उसे अभेद्य बनाया जाना चाहिए। यद्यपि आत्माघाती दस्तो से निपटना एक कठिन कार्य है, लेकिन इस सम्बन्ध मे कुछ ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे उनका दुस्साहस कुचला जा सके। आखिर यह कैसे हो गया, कि विस्फोटक पदार्थों, हथियारो से लैस आतकवादी ससद के मुख्य द्वार तक पहुच गए। ऐसी सूचनाए पहले भी मिली थीं, कि आतकवादी ससद पर हमला कर सकते हैं। इसमे सन्देह नहीं कि ससद की रक्षा मे सुरक्षाबलो ने बहुत बहादुरी से काम किया। सुरक्षा जवानो ने ससद की गरीमा की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, वे सभी श्रद्धा सम्मान के पात्र हैं। राष्ट्रीय गरीमा की रक्षा मे बलिदान हुए ऐसे सुरक्षाकर्मी प्रणभ्य हैं। पिछले २० वर्षों से भारत आतकवादी हमले झेल रहा है लेकिन १३ दिसम्बर, २००१ के दिन आतकवाद ने राष्ट्र की गरीमा और अस्मिता के प्रतीक ससद पर आत्मघाती हमला कर जो सकेत दिया है, वह एक ऐतिहासिक चेतावनी है। मुम्बई मे पकडे गए एक आतकवादी के इकबालिया ब्यान के अनुसार यह हमला ११ सितम्बर २००१ को ही किया जाना था। जो निश्चय ही १३ दिसम्बर २००१ के दिन ससद पर किया गया यह दुस्साहसपूर्ण हमला अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक आतकवाद की करामातो की एक कडी है। वस्तुत यह भारत के हृदय पर हमला किया गया। आतकवादियो ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अग्रिम पक्ति भेद दी।

१३ दिसम्बर, २००१ को भारतीय ससद पर आतकवाद ने सीधा आक्रमण कर भारत राष्ट्र और उसकी जनता को सीधी चुनौती दी है। इस चुनौती से भारतीय ससद, शासन और कोटि-कोटि भारतीय जनता को सावधान होना पडेगा। हमे स्मरण रखना होगा कि न्यूयार्क मे विश्व व्यापार केन्द्र और वाशिगटन मे पेटागन मे अमेरिकी सैनिक प्रधान कार्यालय पर आतकवादियो ने हमला कर विश्व की सत्ता को चुनौती दी थी और उसका अजाम अफगानिस्तान से तालिबान और अल-कायदा के सफाए के साथ हुआ। अब उन्होने भारतीय ससद को अपने नापाक इरादो का निशाना बनाया है। हमे चिन्ता होनी चाहिए कि आतकवादी भारतीय ससद तक कैसे पहुच गए? यह ठीक है कि पूर्ण सुरक्षा कहीं भी सम्भव नहीं जान देने के लिए तैयार जेहादियो का रोकना कठिन कार्य था, परन्तु आततायियो के बढते दुस्साहस को रोकना होगा। पहले उन्होने दिल्ली के लालकिले को निशाना बनाया था, कश्मीर घाटी के बाद जम्मू के हिन्दू सामूहिक नरसहार के शिकार बने। सम्भवत अफगानिस्तान की पराजय का बदला लेने के लिए दिल्ली को निशाना बनाया गया। ससद भवन भारतीय सम्प्रभुता-लोकतन्त्र का प्रतीक है, उस पर हुआ आक्रमण अमेरिकी ट्रेड सैन्टर पर हुए हमले से भीषण है। वहा तो आकाश मे विमान टकराए, और इमारतो को धराशयी कियो, लेकिन यहा ससद के मुख्य द्वार से आतकवादी घुसे। प्रश्न है कि हमारे गुप्तचर अधिकारी क्या कर रहे थे? भारत की ससद श्रीनगर, सीमान्त या इम्फाल मे नहीं है, वह भारत के हृदयस्थान मे है, उसकी सुरक्षा भारतीय राष्ट्र के शासन और जनता की प्राथमिकता होनी चाहिए। आशा है, इस बार की असावधानता से राष्ट्र सीख ग्रहण करेगा।

चिट्ठी-पत्री

आतंकवाद कुचलें

अफगानिस्तान तालिबान के क्रूर शासन से मुक्त हो गया। इस मुक्ति अभियान मे यह तथ्य उभरा है कि पाकिस्तान अन्तत तालिबानियो और अल-कायदा के आतकवादियो का समर्थन करता रहा है। पाक सेना के दो ब्रिगेडियर युद्ध का सचालन करने मे जुटे थे, तो पाकिस्तानी फौजी तालिबानो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड रहे थे। युद्ध मे कुछ पाक सैनिक कैदी हो गए तो कुछ पाकिस्तान भाग गए। दोनो ब्रिगेडियर हेलिकॉप्टरो से बचा लिए गए। यह मानना सम्भव नहीं कि अमेरिका पाक की यह करतूत न जानता हो, लेकिन अपने राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हितो के लिए अनदेखी करता रहा। स्पष्ट है कि वह विश्व को आतकवाद से मुक्ति दिलाने के लिए नहीं, प्रत्युत स्वार्थपूर्ति के लिए जूझता रहा है। इसी के साथ आतकवाद का एक बडा जनक और २० वर्षो से प्रायोजित आतकवाद से भारत को त्रस्त करने वाला पाकिस्तान कैसे आतकवाद का विरोधी हो सकता है। उसका निशाना अब भारत है। आतकवाद को खोखले नारो भावनात्मक मुद्दे उछालकर और कानून की कुछ धाराए बदलकर उसे कुचला नहीं जा सकता। आतकवाद के उन्मूलन के लिए दृढ इच्छाशक्ति से कार्यवाही करनी होगी।

– वेद प्रकाश विद्रोही, रिवाडी (हरियाणा)

आतंकवाद से निजात जरूरी

सभी जानते हैं कि आतकवादी हमले के बाद किस प्रकार अनेक देशो ने अमेरिका को अफगानिस्तान पर हमले के लिए नैतिक और सामरिक समर्थन दिया। अधिक समय नही बीता जब कारगिल युद्ध के लिए पूरे देश मे एकता और देशभक्ति की लहर उठी, फलत सुरक्षा बलो और शहीदो की स्मृति मे धन का सग्रह अपूर्व था। राष्ट्र की उन्नति के लिए भी हमे पूरी निष्ठा, ईमानदारी से योगदान करना चाहिए। कश्मीर मे हजारो लोग आतकवाद के शिकार हो चुके हैं, अनेक सिपाही मारे गए, हजारो लोग पलायन कर नारकीय जीवन जी रहे है। अच्छा हो, सभी मिलकर आतकवाद को [illegible] करे, अन्यथा उसका शिकजा कसता जाएगा।

– डॉ० विनीत गोयल, मेरठ (उ०प्र०)

भद्र-देवता सप्तकम् (३)

भद्र-देवों से भद्र की प्रार्थना

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) कल्याण-कामना और सात्विक भोजन मनुष्य को सुखी रखते हैं

भद्रं भद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो।
यदिन्द्र मृडयासि नः।। सामo १७३

श्रुतकक्षः। इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – हे (शतक्रतो) बहु प्रज्ञ (सर्वज्ञ) तथा बहुकर्मन् (सृष्टिकर्ता) परमेश्वर ! आप (यत्) यदि (न मृडयासि) हमे सुखी करना चाहते हैं, तो (भद्र इष भद्र ऊर्जम्) कल्याणप्रद इच्छाए तथा ऊर्जा से सम्पन्न प्राणशक्ति और सुखप्रद खानपान से (न आभर) हमे सदा भरा रखिए।

निष्कर्ष – मनुष्य जैसा दूसरो के साथ व्यवहार करता है, दूसरे भी वैसा ही व्यवहार करते हैं। अतएव नीतिकार ने धर्म का सार निम्न शब्दो मे कहा है (आत्मन प्रतिकूलानि परेषान समाचरेत्) दूसरो का जो व्यवहार तुम्हे पसन्द नहीं, वैसा व्यवहार दूसरो के साथ कभी न करो।

सामान्यजन भूख से व्याकुल होकर पापाचरण करने के लिए लाचार हो जाते हैं, फिर उनमे न विवेक रहता है और न दया। यह भी सर्वसम्मत तथ्य है कि जैसा खाए अन्न वैसा बने मन। इसलिए इस मन्त्र मे दो ही प्रार्थनाए की गई हैं कि हमारा मन तथा इच्छाए सबका कल्याण चाहने वाली हो तथा हम भद्र अर्थात् सुख व स्वास्थ्य को देने वाला खानपान करे। बस आप ऐसी कृपा करे कि हममे इन दोनो भावनाओ और पदार्थों की कमी न हो।

तत्सवितुर्वृणीय हे वयं देवस्य भोजनम्।
श्रेष्ठ सर्वधातमम्। ऋ० ५/८२/१

(२) हमारे दुराचरणों को दूर करो, ताकि भला हो सके

विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।। ऋ० ५/८२/५

श्यावाश्व आत्रेयः। सविता। गायत्री।

अर्थ – हे (सवित देव) सर्वोत्पादक और सन्मार्ग प्रेरक देव ! आप कृपा करके (न विश्वानि दुरितानि परासुव) हमारे सभी दुरितो, दुराचरणो, रोगो, कष्टो और दुर्भाग्यो को हमसे दूर कर दीजिए और (यत् भद्रम्) जो आचरण–स्वास्थ्य, विवेक इत्यादि कल्याण और सुख देने वाले हों (न तत् आसुव) वे हमे अपनाने की प्रेरणा दीजिए। हम निश्चय करते हैं कि आपकी सुमति को मानने का प्रयत्न करेगे।

आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम। ऋ० ६/१/६

(३) हमें सुसन्तान, प्रभूत धन, पशु तथा सुयश प्रदान करें

नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः।
पूर्वीरिषो बृहतीरारे अघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु।।
ऋ० ६/१/१२

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। अग्नि.। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (वसो) सबको बसाने की इच्छा से आगे बढाने-वाले अग्निदेव ! (सद इत्) सदा ही (अस्मे) हमे (नृवत् भूरि धेहि) पुत्र-सन्तानो और सेवको से युक्त बहुत सुवर्णादि धन दीजिए। (तोकाय तनयाय पश्व धेहि) तदन्तर पुत्र-पौत्रों के लिए दुग्धादि की व्यवस्था के निमित्त गाय इत्यादि तथा यानादि की व्यवस्था के लिए अश्वादि पशुओ को प्रदान कीजिए। इन सबके भरण-पोषण के लिए (पूर्वी बृहती इष) कामनाओ को पूर्ण करने वाली अन्न की प्रभूत मात्रा प्रदान कीजिए, किन्तु यह अन्न की सम्पूर्ण मात्रा (आरे अघा) पापकृत्यो से दूर रहकर सुपथ से प्राप्त की जाने वाली हो। इस प्रकार (अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु) हमारे सारे आचरण और अर्जन के साधन उत्तमकीर्ति प्रदान करने वाले हो।

अर्थपोषण – भूरि – भवतीति बहु सुवर्णंवा। उणादि ४/६६

निष्कर्ष – हमे सन्तान, धन, सेवक, गवादि तथा अश्वादि पशु की बहुतायत प्राप्त हो, ताकि हम दूसरो की सेवा करके सुकीर्ति प्राप्त कर सके, किन्तु यह सम्भव तभी होगा, जब हमारे आचरण तथा अर्जन साधन पाप कृत्यो से रहित होगे।

(४) हमें इतना दो कि हम सदा, अनातुर, शान्त व सुखी बने रहें

यद्देवा शर्म शरण यद्भद्र यदनातुरम्।
त्रिधातु यद्वरूथ्य तदस्मासु वि यन्तना, नेहसो व ऊतयः सु ऊतयो व ऊतय.।

ऋ० ८/४७/१०

त्रित आप्त्य। आदित्याः। महापङ्क्तिः।

अर्थ – हे (देवा) प्राकृतिक तत्वो के अभिमानी अधिपतियो ! (अस्मासु तत् भद्र शर्म नियन्तन) हमे वह कल्याणप्रद सुख-प्रदान करो, (यत्) जो (शरणम्) शरण लेने योग्य हो, (अनातुरम्) जिसमे कोई राग न आ सके (त्रिधातु वरूथ्यम्) वात-पित-कफ तीन धातुओ से बने शरीररूपी गृह के लिए अथवा शरीर मन, आत्मा, के त्रिक् से अभिव्यक्त मानव, प्राणी के लिए वरणीय हो, क्योकि (व जतय अनेहस) आपके द्वारा प्रदत्त रक्षण निर्दोष हैं, (व अतय सु अतय) आपके द्वारा प्रदत्त रक्षण, प्रगति, तृप्ति और दीप्ति देने वाले हैं, यदि हमारी ओर से किसी प्रकार की अडचन (प्रतिरोध) न पैदा कर दी जाए।

सब सुख चाहते हैं। सबके लिए सुख-प्राप्ति के साधन भी उपलब्ध हैं, किन्तु रूचिया सबकी भिन्न हैं। मनुष्य बहुत बार अपनी रूचि को बिना जाने प्रिय वस्तु को ग्रहण करके दुखी होता है। कभी रुचिकर भोज्य पदार्थ के अति सेवन से रोगी हो जाता है, कभी रूचिकर भोज्य पदार्थ खाकर रोगी हो जाता है। प्रियजन, वस्तु तथा भावना के वियुक्त होने पर दु खी होता है। अत इस मन्त्र में प्रार्थना यह है कि हम रूचि और प्रकृति को जानकर पदार्थों को ग्रहण करें और उनका मर्यादा मे उपयोग करें, ताकि सुखी रहे। अपने मन को इस तरह से साधे कि प्रिय के वियोग मे दु खी ने होकर, **"यदृच्छालाभ सन्तोष"** – वृत्ति से जीवन व्यतीत करना सीख ले। कभी आतुर न हो।

(५) शान्तिप्रिय राजा का कर्त्तव्य है कि सज्जनों को बदनाम करने वालों को कठोर दण्ड दे

ये पाकशसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः।
अहये वा तान् प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे।।

ऋ० ७/१०४/६

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। सोमः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (ये) जो दुराचारी दुष्टजन (पाकशस एवै विहरन्ते) परिपक्व एव सत्य भाषण करने वालो को, अपने स्वार्थ को पूर्ण करने वाली गतिविधियो से, खिल्ली उडाकर हतोत्साहित करते हैं (वा) अथवा (ये भद्र स्वधामि दूषयन्ति) जो दुर्जन अपने स्वार्थों के कारण सदाचारी भद्रपुरुष की बुराइया करके बदनाम करते हैं (तान्) उन लोगो को (सोम) राष्ट्र मे शान्ति चाहने वाला राष्ट्राध्यक्ष (अहये प्रददातु) सर्पसम कुटिल जनो को सौंप दे (वा) अथवा उन्हे (नि ऋते उपस्थे आदधातु) पृथ्वी की गोद मे सुला दे – प्राण दण्ड देकर जमीन मे सुला दे।

अर्थ प्रमाण – विहरन्ते – विहार– खिलवाड करते हैं। स्वधा – स्वार्थ। वैदिक कोश (चन्द्रशेखर)

निऋते – निर्ऋति पृथ्वीनाम। नि०– १/१, निऋति – कृच्छापत्ति । निरु० – २/८

निष्कर्ष – शान्ति-कामना करने वाले राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य है कि सदाचारी सत्यवादियो की खिल्ली उडाने वालो को सापो के बाडे मे डाल दे, अथवा सापो जैसे कुटिल मृत्यु कारक दश करने वालो के सुपुर्द कर दे। अथवा उन्हे अधिक से अधिक यातनाए दे और मरने पर पृथ्वी मे दबवा दे।

(६) सूर्य-सेवन द्वारा आजन्म सुखी रहें, कोई कमी न हो

त नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्र शृण्वन्तु मरुतो हव वच ।
मा शूने भूम सूर्यस्य सदृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि।। ऋ० १०/३७/६

सौर्यऽभितपा । सूर्यः। जगती।

अर्थ – काय, वाक और मन के तपो को तपकर, सूर्य का सम्यक् सेवन करने वाला साधक सम्पूर्ण मानवता के लिए भद्र जीवन की कामना से कहता है कि – (द्यावापृथिवी) हमारे पिता-माता सदृश सब वृद्धजन, (आप) सर्वव्यापक परमात्मा तथा (इन्द्र) राष्ट्राध्यक्ष (न त हवम्) हमारे अन्तर्निहित अभिप्राय को और (मरुत) मानवी प्रजाए (न तद्वच) हमारे प्रत्यक्ष निर्देश को (शृण्वन्तु) जाने, सुने और अनुकूल प्रतिक्रिया करे। परिणामत हम सब मानव (सूर्यस्य सदृशि) सूर्य के प्रत्यक्ष दर्शन तथा सम्यक् सेवन में रहते हुए (शूने मा भूम) किसी प्रकार के अभाव के कारण किसी दु ख मे ग्रस्त न हो, क्योकि हम कभी आलस्य मे ग्रस्त नहीं होते हैं। हम (भद्र जीवन्त) परस्पर कल्याण करते हुए और सुख प्रदान करते हुए (जरणा अशीमहि) जरावस्था को प्राप्त हो – भोगे।

अर्थ प्रमाण – **'द्यौर्मे पिता-माता पृथिवी महीयम्'।** ऋ० १/१६४/३३

ता आपः स प्रजापतिः। यजु० ३२/१

शूने – अभाव का दु ख। *सूर्यकान्त*

– शेष पृष्ठ ८ पर

स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि

– डॉ० महेश विद्यालंकार

हर साल स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस आर्यसमाज, सभा-सगठन, सस्थाए गुरुकुल आदि बडी धूम-धाम से मनाते हैं। स्वामीजी का योगदान तप-त्याग, तपस्या सेवा व बलिदान उल्लेखनीय एव वन्दनीय है। वे हमारे जीवन और जगत के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। यदि हम सीखना चाहे, तो स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरक व्यक्तित्व एव कृतित्व हमारे लिए आदर्श बन सकता है। शून्य से शिखर पर चढना कोई सीखे, तो स्वामी श्रद्धानन्द से सीख सकता है। स्वामीजी हमारी श्रद्धा, गौरव और सम्मान के केन्द्र हैं। उनका जीवन हमारे लिए मील का पत्थर है। उनका जीवन आज के आर्यसमाजियो, अधिकारियो, उपदेशको, नेताओ आदि के लिए खुली किताब है। पढो ! सोचो ! समझो ! कुछ करो ! अपना जीवन और जगत सुधार लो ! यदि मुशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं, तो हम क्यो नही सुधर सकते हैं? सुधरने के लिए व्रत, सकल्प और लग्न व पुरुषार्थ चाहिए। स्वामीजी का जीवन चरित्र हमे बार-बार पुकार रहा है। निराश-हताश नहीं होना। हिम्मत नहीं हारना है। मन को गिराना नहीं। सप्त, श्रद्धा, तथा सकल्प लेकर आगे बढो। जीवन चलने का नाम है। जब तक दम मे दम रहे, बे दम नहीं होना है। चलने से मजिल जरूर मिलेगी। ससार मे लाखो पतितो ने जीवन सुधारे हैं। अनेक डाकू से सन्त बन गए। ऋषि दयानन्द जैसा, अमूल्य पारसमणि तुम्हारे पास है फिर चिन्ता और निराशा कैसी ? उस पारसमणि का स्पर्श करो, तुम्हारा जीवन तथा जगत बदल जाएगा। जीवन से सारी दुर्गन्ध निकल जाएगी। जीवन सुगन्धित हो उठेगा। जितना तुम ऋषिवर के आसपास होते जाओगे। उतने ही ढोग, पाखण्ड, बुराईयो, समस्याओ तथा उलझनो से छूटते जाओगे।

मुशीराम को श्रद्धानन्द बनाने वाले ऋषि ही तो थे। एक प्रवचन ने कायाकल्प कर दिया। हमारा भी कायाकल्प तथा कल्याण हो सकता है, यदि हम ईमानदारी और सच्चाई से ऋषिवर देव दयानन्द को अपना ले, उनके बताए मार्ग पर चले पडे। यदि इस दिशा में हम अपने जीवन व जगत मे कुछ परिवर्तन, नवीनता कर सकें, तो स्वामी श्रद्धानन्द का स्मरण साथक होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द का अमर स्मारक गुरुकुल कागडी हरिद्वार है। गुरुकुल को बने सौ वर्ष हो चुके हैं। यह वर्ष गुरुकुल का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। दु:खद दुर्भाग्य है कि गुरुकुल के शताब्दी वर्ष मे सर्वस्व त्यागी, बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द के हरे-भरे गुरुकुल की १९८ बीघा जमीन चन्द पैसो मे बेच दी गई। यह कलक समूची आर्यजनता, गुरुकुल हितैषियो, सभा अधिकारियों, गुरुकुल के उच्चाधिकारियो, आदि सभी पर आ गया है। हम अपने पूर्वजो की विरासत को बचा नहीं कर सके। यदि आज स्वामी श्रद्धानन्द हमारे सामने आकर खडे हो जाए और पूछे – गुरुकुल की स्वर्णमयी भूमि को क्यो बेचा ? किसने बेचा? किसलिए बेचा? क्या कमी थी? हमने तुम्हे भूमि का रखवाला बनाया था ? तुम्हीं भक्षक बन गए ? तुमने भूमि नहीं बेची, मेरी आत्मा को बेचा और मेरी हत्या की है। हमारे पास कोई सीधा उत्तर न होगा ? शर्म से सिर छिपाने की जगह न मिलेगी ? गुरुकुल की भूमि बिकने पर पिछले दिनो बडा करूण क्रन्दन अखबारो, चर्चाओ, सभाओ, तथा मिटिगो मे हुआ। बहुत कुछ कहा-सुना गया। जो भूमि के पहरेदार थे, वे लाभ और लोभ मे फस गए। उन्हे कुलभूमि को बेचते हुए, गलत तरीके से पैसा लेते हुए, आत्मग्लानि व पापबोध नहीं हुआ ? इससे बढकर पतन क्या होगा? सच्चाई है, जिन्होने ये कार्य किया है, वे गुरुकुल और स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे कहलाएगे। वे कुलद्रोही हैं। यदि ये बिकी हुई भूमि खरीदार के पास चली गई तो निश्चय ही गुरुकुल खत्म हो जाएगा। वहा रिहायसी कालोनी बनेगी। बचा-खुचा गुरुकुलत्व, वातावरण तथा व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगी। स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरक स्मारक उजड जाएगा।

यह स्पष्ट हो गया है कि गुरुकुल की भूमि बेचने मे मोटे रुपयो का लेन-देन हुआ है। मेरा किसी व्यक्ति विशेष, पार्टी या धडे पर आरोप करने का रचमात्र भी उद्देश्य नहीं है। मेरी तो पीडा यह है कि गुरुकुल की अमूल्य भूमि बचनी चाहिए। इसके लिए हम सबको कितनी भी कठिनाईया आए, समष्टि के लिए सह लेनी चाहिए। गुरुकुल जनता की विरासत व सम्पत्ति है। उसकी रक्षा करना और ठीक-व्यवस्था करना हमारा सबका कर्त्तव्य है। जिन्होने गुरुकुल भूमि बेचने मे पैसा लिया है, उन पर आर्यजगत् नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक तथा सगठनात्मक दबाव बनाए। वे अपनी भूल को सुधार ले, रुपये वापस कर दे। इससे वे पुन आर्यसमाज मे प्रतिष्ठित हो जाएगे। गलती हो गई है, सुधार ली, बात खत्म हो गई। यदि नहीं करते हैं तो आर्यजनता उनका सामाजिक, सभा, सगठन, सस्थाओ आदि से बहिष्कार करे। उनके विरुद्ध सगठनात्मक व अनुशासनात्मक कार्यवाही करे। व्यावहारिक दबाव बनाया जाए। उन्हे उपेक्षित किया जाए। इससे भी सम्भव नहीं होता है तो आर्यजनता धनी-मानी व्यक्तियो से, सस्थाओं व सभाओ मे जमा राशि से, तथा चन्दा इकट्ठा करके रुपयो की भरपाई करके जमीन वापस कराने का सकल्प ले।

असम्भव कुछ भी नहीं है। कब्जा सच्चा होता है, क्लेम झूठा बनता है। आज भी बिकीर हुई जमीन पर गुरुकुल का कब्जा है। जनता का अधिकार है। जनता के सामने व्यक्ति कमजोर पड जाता है। सभी की सहानुभूति गुरुकुल के साथ है। खरीदार की भावना भी आपके पक्ष मे हो जाएगी। कानूनी पक्ष भी तब गुरुकुल के अनुकूल है।

यह तब सम्भव होगा, जब आर्यजनता सच्चाई और ईमानदारी से, स्वार्थ, पद, लोभ, गुट, पार्टी आदि को छोडकर एक ही नारा दे, हमने स्वामी श्रद्धानन्द के स्मारक की भूमि को बिकने नहीं देना है। हर हालत में वापस लेना है। हम सब तरह से कुर्बानिया देने को तैयार है। हमे कुछ नहीं चाहिए? हमें तो सिर्फ गुरुकुल की भूमि वापस चाहिए। सन्तोष और बल मिलता है कि इसके लिए पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प० हरबश लाल शर्मा भूमि वापसी के लिए तन-मन और धन से लगे हुए है। उनके परिवार की प्रबल इच्छा है कि यह बिकी हुई भूमि हर हालत मे गुरुकुल को वापस मिलनी चाहिए। इसके लिए जो भी धन की पूर्ति करनी पडेगी, हम करेगे। जिन्होने गुरुकुल की भूमि मे रुपया लिया है, उन्हे दण्ड मिलना चाहिए, जिससे आगे आने वाले लोग सचेत व सबक ले सके, कि यदि हमने ऐसा किया तो हमारा भी यही हश्र होगा। गुरुकुल का इतिहास बताता है कि जिन्होने गुरुकुल का पैसा खाया है, जीवन मे सुख-चैन, शान्ति व सम्मान से जी नहीं सके।

आर्यो ! मेरा निवेदने है कि गुरुकुल की भूमि को बचा लो। अभी समय है, सगठित होकर, मिलकर अभियान चलाओ। यदि गुरुकुल की भूमि बच गई तो यही स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची भेंट और श्रद्धाजलि होगी। यह ऐतिहासिक कार्य होगा।

– बी० जे० २६, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-५२

श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन में हमें जगानी है

– सुभाष चन्द्र गुप्त

देश धर्म और सस्कृति की हमे लाज बचानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।।

ढूढ रही है भारत मा – वीर, शिवा, प्रताप कहा ?
भगतसिह, बिस्मिल, सुभाष का, देश-प्रेम आलाप कहा ?
झासी की रानी की गाथा, फिर से हमे दोहरानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।।

जाग उठा भारत जब, ऋषिवर दयानन्द ने की हुकार।
देश-प्रेम जन-जन मे उमडा, श्रद्धानन्द की सुन ललकार।।
गुरुकुल-शिक्षा से चारित्रिक, सुगन्ध देश मे लानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।।

एक समय था भारत जब, सारे जग का सिरताज था।
वैदिक मान्यताओ का तब, सभी दिलो पर राज था।।
भय, आतक से त्रस्त धरा को शान्ति पुन दिलानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।।

गऊ माता, हिन्दी भाषा, दलित, अनाथ, अबलाओ से,
आर्त्त, दु:खी, भूखे, नगे, असहाय, रोती ललनाओ से।।
थी श्रद्धानन्द की असीम प्रीत, जो हर दिल मे उपजानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।।

तपोपूत उस महामानव को गाधीजी ने किया प्रणाम।
रेम्जेमेक्डानल्ड ने ईसा, सम कहकर निज किया सलाम।।
'सुभाष' गुणो की श्रद्धानन्द ने छोडी अमिट निशानी है।
श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

– १५६, ए०जी०सी०आर० एन्कलेव, दिल्ली - ९२

पृ० १ का शेष भाग

मनगढ़न्त, झूठी और निराधार बातों को इतिहास से हटाया जाए.....

प्रो० लाल ने कहा कि पाश्चात्य विद्वान् भी इस बात को मानते हैं कि सस्कृत, ग्रीक और लैटिन भाषाओ में सामजस्य है। इसके आधार पर वे कल्पना करते हैं कि इन तीनो का उद्गम कहीं न कहीं अवश्य होगा और उस उद्गम स्थान के लोगो को वे इण्डो-यूरोपीयन कहकर सम्बोधित करते हैं। वे लोग कहा रहते थे, इसका उन्हे कोई ज्ञान नहीं। परन्तु हम स्पष्टतया यह साबित कर सकते हैं कि वे लोग भारत मे रहते थे और इन सब भाषाओ की जननी सस्कृत है।

पुरातत्वविद श्री लाल ने आगे कहा कि इस देश के साहित्य को खराब करने मे सबसे बडा प्रहार मैक्समूलर ने किया।

वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि वेद का निर्देश **"तिस्रो देवी मयो भुव"** के सिद्धान्त पर देश की सम्मान योग्य तीन देविया – सस्कृति, मातृभूमि औा मातृभाषा की रक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है। जबकि अग्रेजो ने इन्हीं तीनो को नष्ट करने का पूरा प्रयास किया। हर क्षेत्र में मिलावट और गलत व्याख्याए करके उन्होने अपनी राजनीतिक नीतियो को लागू करने का प्रयास किया। शिक्षा मे मिलावट वेद की व्याख्या मे मिलावट और यहा तक की मनुस्मृति मे भी मिलावट की गई या करवाई गई।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष एव वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने कहा कि जब से धरती बनी है और जब से मनुष्यो की उत्पत्ति हुई तब से ही उसका नाम आर्य है और इस भूमि का नाम आर्यवर्त है। चाहे हम हिन्दू कहे या आर्य, हम सब मूलत वैदिक धर्मी हैं और वैदिक धर्म ही सबसे प्राचीन है।

श्री बसल ने कहा कि कभी–कभी प्रशासनिक कार्यों को करते हुए कुछ लोग सिद्धान्त से समझौता कर लेते हैं, परन्तु सभ्य, वैदिक धर्मी और राष्ट्रवादी ऐसा कभी नहीं कर सकता।

उन्होने बताया कि सोमनाथ मन्दिर के उद्धार के बाद जब उसके उद्घाटन के लिए सरदार पटेल ने प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद से निवेदन किया तो यही कहा था कि राष्ट्रपति पद का गौरव या वैदिक धर्म की स्थापना और विदेशी आक्रान्ताओं के चिन्ह की समाप्ति में से आप क्या चुनेगे, तो इस बात पर बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने उद्घाटन को स्वीकार किया।

उन्होने कहा कि पहले शोर मचाया जाता था कि इस्लाम को खतरा है जबकि आज वास्तविकता यह है कि इस्लाम खुद एक खतरा बन चुका है, केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु सारे विश्व के लिए।

उन्हेंने अविभाजित पजाब के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जी०डी० खोसला की एक पुस्तक से कुछ विशिष्ट अश पढकर सुनाए जो मुस्लिम लीग ने मुसलमानो के लिए गुप्त निर्देश जारी किए थे। ये निर्देश निम्न प्रकार थे –

Printed and cyclostyled copies of the following circular were secretly distributed among the Muslims of India

(1) All Muslims of India should die for Pakistan.

(2) With Pakistan established whole of India should be conquered

(3) All people of India should be converted to Islam

(4) All Muslim kingdoms should join hands with the Anglo-American exploitation of the whole world

(5) One Muslim should get the right of five Hindus, i e, each Muslim is equal to five Hindus

(6) Until Pakistan and Indian Empire is established, the following steps should be taken -

(a) All factories and shops owned by Hindus should be burnt, destroyed, looted and loot should be given to League Office

(b) All Muslim Leaguers should carry weapons in defiance of order

(c) All nationalist Muslims if they do not join League must be killed by secret Gestapo

(d) Hindus should be murdered gradually and their population should be reduced

(e) All temples should be destroyed

(f) Muslims League spies in every village and district of India

(g) Congress Leaders should be murdered, one in one month by secret method

(h) Congress upper offices should be destroyed by secret Muslim Gestapo, single person doing the job

(i) Karachi, Bombay, Calcutta, Madras, Goa, Vizagapatam should be paralysed by December 1946 by Muslim League volunteers

(j) Muslim should never be allowed to work under Hindus in Army, Navy, Government services or private firms

(k) Muslim should sabotage whole of India and Congress Government for the final invasion of India by Muslims

(l) Financial resources are given by Muslim League Invasion of India by Nizam communist, few Europeans, Khoja by Bhopal, few Anglo-Indians, few Parsis, few Christians, Punjab Sind and Bengal will be places of manufacture of all arms, weapons for Muslim Leaguers invasion and establishing of Muslim Empire of India.

(m) all arms, weapons should be distributed to Bombay, Calcutta, Delhi, Madras, Bangalore, Lahore, Karachi, branches of Muslim League

(n) All sections of Muslim League should carry minimum equipment of weapons, at least pocket knife at all times to destory Hindus and drive all Hindus out of India.

(o) All transport should be used for battle against Hindus

(p) Hindu women and girls should be raped, kidnapped and converted into Muslims from October 18 1946

(q) Hindu culture should be destroyed.

(r) All Leaguers should try to be cruel at all times of Hindus and boycott them socially, economically and in many other ways

(s) No Muslim should buy from Hindu dealers All Hindu produced films should be boycotted All Muslim Leaguers should obey these instructions and bring into action by September 15, 1946

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस संगोष्ठी के लिए विशेष रूप से तैयार प्रस्ताव का मूल पाठ प्रस्तुत किया, जिसे सभा मे उपस्थित सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

सगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपनी मिलिटरी सेना के कई सस्मरण सुनाते हुए कहा कि मुसलमान पाकिस्तान में बैठकर तो भारत का खुला विरोध करते ही है, भारत का विरोध उन्होंने अपनी सस्कृति बना लिया है। परन्तु भारत मे बैठकर भी ये लोग पाकिस्तान के ही समर्थन की बात सोचते हैं।

इसी मानसिकता के तहत भारत के रॉकेट का नाम जब आर्यभट्ट प्रस्तावित हुआ तो इन लोगों ने इस शब्द का भी विरोध किया।

उन्होंने कहा कि हमने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया बल्कि जितने भी आक्रमण हुए वे अन्यों द्वारा हम पर किए गए।

सृष्टि के प्रारम्भ मे एक प्रेरणास्वरूप नाम वेद द्वारा मनुष्य को दिया गया – आर्य। आर्य शब्द का अर्थ था श्रेष्ठ, जो किसी प्रकार से भी असभ्य या कष्टपूर्ण व्यवहार करता था उसे अनार्य कहा जाता था। यही शब्द बिगडकर अनाडी के रूप मे भी प्रचलित हुआ।

कै० देवरत्न ने कहा कि आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाले लोग आज तक यह नहीं बता पाए कि यदि हम यहा के मूल निवासी नहीं थे तो साक्ष्य के आधार पर बताया जाए कि हम कहा के थे ? कोई कहता है मध्य ईरान से आए, कोई कहता है जर्मन से आए और कोई रशिया से बताता है। यह सब झूठ बाते हैं। यदि हमारी आर्य सस्कृति और वैदिक धर्म नहीं था तो मे तथाकथित इतिहासविद आज तक यह क्यों नहीं बता पाए कि हमारी सस्कृति और धर्म कौन सा था और आर्य सस्कृति, वैदिक धर्म को मानने वाले कौन थे? इन कपोल कल्पनाओं को इतिहास नहीं कहा जा सकता।

सगोष्ठी अध्यक्ष के नाते सार्वदशिक सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने आर्यजनता को आह्वान किया कि इस विषय पर अधिक से अधिक जन-जागृति अभियान चलाकर समाचार पत्रो के माध्यम से देश के राजनीतिक दलो को आगाह किया जाए कि इस प्रकार की दूषित नीतिया अब बर्दास्त नहीं की जाएगी।

सगोष्ठी का सचालन करते हुए श्री विमल वधावन एडवोकेट ने कहा कि सभा प्रधान जी के इस निर्देश के अनुसार शीघ्र ही आर्यसमाज हनुमान रोड, दिल्ली मे पुरातत्वविद श्री बी०बी लाल द्वारा स्लाईड के माध्यम से पुरातत्व से सम्बन्धित साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए एक विशेष व्याख्यान का आयोजन होगा। उन्होंने दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों से आए आर्यनेताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों में भी इसी प्रकार के विषय को उजागर करें और इन विषयो के विशेषज्ञों को आमन्त्रित करें।

इस सगोष्ठी में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन, उपमन्त्री श्री रोशनलाल आर्य, चौ० लक्ष्मी चन्द, श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता, श्री अरुण वर्मा तथा कई अन्य आर्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
पढ़ें
५०० रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व को
पूर्वी अफ्रीका से हार्दिक बधाई

पं० राम कृष्ण शर्मा

३ व ४ नवम्बर को आर्यसमाज दीवान हाल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमे आगामी तीन वर्षों के लिए (२००१-२००४) अधिकारी वर्ग का चयन किया गया। इस बार सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने का सौभाग्य कैप्टन देवरत्न जी को प्राप्त हुआ, वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन को बनाया गया। मन्त्री श्री वेदव्रत जी बने तथा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश जी आर्य बने। सार्वदेशिक सभा का कार्य क्षेत्र केवल भारत ही नहीं अपितु विदेशो मे कार्य कर रही आर्य समाजे भी हैं। अभी तक का अनुभव यही बताता है कि सार्वदेशिक सभा केवल भारत मे ही सीमित होकर रह गई हैं। कभी कमार कोई समाचार मिल जाता, है कि सार्वदेशिक सभा भी है।

वर्तमान नेतृत्व के सामने काफी चुनौतिया है। प्रथम तो यह कि ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित सिद्धान्तो की रक्षा करना तथा उनका प्रचार और प्रसार करना। वर्तमान समय में अनेको पथ व सम्प्रदा अस्तित्व में आ गए है, जो जनता को मार्ग से गुमराह कर रहे हैं।

कैप्टन देवरत्न जी को सर्वप्रथम सभा के सगठन को दृढ करना होगा, तथा इसके प्रचार विभाग को भी मजबूत करना होगा। वैदिक साहित्य को अधिक से अधिक अंग्रेजी भाषा मे प्रकाशित करना होगा, जिससे कि विदेशो मे भी आर्यसमाज की छवि को चमकाया जा सके। समय-समय पर विदेशो मे योग्य साधुओं और सन्यासियो को भी भेजना होगा। **विदेशों में कार्य कर रहे विद्वानों से भी सम्पर्क रखना होगा तथा उनकी सेवाओं को भी लेना होगा। विदेश मे रहने वाले विद्वानों और प्रचारकों को सभा की गतिविधियो से परिचित करवाना होगा।**

इसके साथ ही वर्तमान युग जिसको आजकल डॉट काम कहते हैं, उसका पूरा लाभ उठाते हुए जन-जन तक आर्यसमाज के सिद्धान्तों तक पहुंचाना होगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि कैप्टन देवरत्न जी प्रत्येक व्यक्ति की आकाक्षाओ के अनुरूप खरे उतरेगे। व्यक्तिगत रूप से भी मेरा इनके प्रति सदैव आदर भाव रहा है, और मैंने एक बार अपनी मुम्बई यात्रा के दौरान कहा भी था कि आप जैसे कर्मठ व्यक्ति ही सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने योग्य हैं।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉक्टर राजेन्द्र जी सैनी तथा आर्यसमाज नैरोबी के प्रधान श्री कुलभूषण जी विद्यार्थी की ओर से तथा अपनी ओर से सार्वदेशिक सभा के नव-निर्वाचित अधिकारियो को बधाई देता हू तथा अपने पूर्ण सहयोग देने के सकल्प को दुहराता हूँ।

— आर्यसमाज नैरोबी

श्री ईश कुमार नारंग को मातृ शोक

आर्यसमाज दयानन्द विहार नई दिल्ली के मन्त्री श्री ईश कुमार नारग की माताश्री श्रीमती बिशन देवी का आकस्मिक निधन १४ नवम्बर को ५-४५ पर हो गया। वे ७८ वर्ष की थी। श्रीमती नारग वैदिक विचारो से ओत-प्रोत थी तथा समाज सेवा के कार्यो मे प्रसन्नतापूर्वक भाग लेती थी। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड कर गई है। उनके पुत्र श्री ईश कुमार नारग वैदिक सिद्धान्तो मे पूर्ण श्रद्धा रखते है तथा आर्यसमाज दयानन्द विहार के युवा मन्त्री हैं। श्रीमती नारग की तीन विवाहित पुत्रिया श्रीमती जयदेवी छाबडा, श्रीमती सन्तोष चावला, तथा श्रीमती आदर्श राजपाल है।

श्रीमती नारग का अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, दिल्ली सभा के मन्त्री तथा अन्तरग सदस्य श्री पतराम त्यागी, श्री रवि बहल, पडपड क्षेत्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली आदि सहित आर्यसमाजो के अधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्रद्धाजलि सभा मे ब्र० राजसिह, श्री ब्रह्मदेव, श्री विनय आर्य, पूर्वी दिल्ली के अनेक आर्यसमाजो, अनेकों व्यक्तियो ने उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

गुरुओं ने अनेक मत व पंथ निर्माण करके हिन्दू समाज को तार-तार किया : स्वामी संकल्पानन्द

आर्यसमाज हिरण मगरी एव सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सयुक्त तत्वावधान मे आयोजित दस दिवसीय वेद प्रचार अभियान के आठवे दिन सम्पादित अग्निहोत्र के पश्चात् उपस्थित धर्म-प्रेमियो को सम्बोधित करते हुए वैदिक विद्वान स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती ने कहा गुरुडम प्रणाली के पोषक अनेक गुरुओं ने सैकडों वर्षो से लोगो की श्रद्धा व आस्था का शोषण करके विभिन्न मत-पन्थों का निर्माण करके हिन्दू समाज को तार-तार कर दिया।

उन्होने गुरु की व्याख्या करते हुए बताया कि सद्गुरु अग्नि के समान होता है। जो शिष्य को स्वय के समकक्ष बनाता है। जबकि आज के गुरु ईश्वर से परे स्वय की पूजा करवाते हैं तथा शिष्यो में अन्ध श्रद्धा व पाखण्ड भरकर उनकी आध्यात्मिक उन्नति के बाधक बनते हैं।

स्वामीजी ने बताया कि सद्गुरु व पिता सदैव अपने शिष्य व पुत्र से स्वय की पराजय की कामना करके ही प्रसन्न होते हैं।

ईश्वर विषयक व्याख्यान करते हुए उन्होने बताया कि ईश्वर सृष्टि सृजन उसके सम्यक नियन्त्रण, प्रलय एव प्राणी मात्र को न्यायपूर्वक कर्मफल प्रदान करने के चार मुख्य कार्य करता है। जबकि मनुष्य निर्मित नाना प्रकार की प्रकृतियो के विभिन्न जड पदार्थो से विभन्न नामों के तथाकथित मन्दिरवासी ईश्वर उक्त एक भी कार्य करने मे समर्थ नहीं होते हैं।

स्वामी ने शकराचार्य द्वारा नारी जाति व शूद्र समाज की निन्दा किए जाने व इन्हें आज के बुद्धिवादी युग मे भी वेद व यज्ञ के अधिकार से वचित रखने की मानसिकता की घोर भर्त्सना की एव महर्षि देव दयानन्द प्रणीत नारी व चातुवर्ण की सम्पूर्ण वेद यज्ञ के अधिकार होने की आवधारणा का पुरजोर समर्थन किया एव कहा कि दयानन्द प्रेरित आर्यसमाज विश्व के कल्याण का एक मात्र अवलम्ब है।

क्षेत्रीय आर्यप्रतिनिधि सभा, पूर्वी दिल्ली के तत्वावधान में
आर्यसमाज, प्रीत विहार में
किशोरों/युवाओं का अद्वितीय शिविर एवं कार्यशाला

।। कार्यक्रम।।

अवधि	शुक्रवार २८-१२-२००१ से रविवार ३०-१२-२००१ तक
पजीकरण	चालू है। स्थान सीमित – पहले आओ पहले पाओ के सिद्धान्त पर।
उपस्थिति	२८-१२-२००१ प्रात १० बजे से १२ बजे तक।
कार्यशाला	४८ घण्टो मे विभाजित आठ सत्रो मे।
धर्माचार्य शिविर व कार्यशाला	२६ एव २७ दिसम्बर, २००१
कार्यशाला सचालन	आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र (बदायू) आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ० महेश विद्यालकार,
सत्र प्रथम	आर्यसमाज का परिचय
सत्र दूसरा	सध्या का व्यवहारिक ज्ञान
सत्र तीसरा	ध्यान लगाने की विधि और उसका अभ्यास
सत्र चौथा	यज्ञ विधि एव उसका महत्व
सत्र पाचवा	समय की व्यवस्था
सत्र छठा	व्यक्तित्व का विकास व व्यक्त करने की कला
सत्र सातवां	बुद्धि की प्रखरता
सत्र आठवां	स्मरण शक्ति
प्रवेश	नि शुल्क – खाने-पीने और रहने की सुचारु व्यवस्था – आर्यसमाज प्रीत विहार द्वारा
समापन	रविवार ३० दिसम्बर प्रात १० बजे से १ बजे तक
ऋषि लगर	दोपहर १ बजे

सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान **पतराम त्यागी**, मन्त्री, **रवि बहल**, कोषाध्यक्ष

स्वामी श्रद्धानन्द के ७५वें बलिदान दिवस पर
विशाल शोभा यात्रा

२५ दिसम्बर, २००१, मंगलवार को

यज्ञ के उपरान्त प्रातः ११ बजे

स्थान : स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार दिल्ली

एवं

विराट् श्रद्धांजलि सभा

स्थान : लालकिला मैदान, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

R N No 32387/77 Posted at N D PS O on 20-21/12/2001 दिनांक १७ दिसम्बर से २३ दिसम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 20-21/12/2001 पूर्व भुगतान कि भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

सूचना

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, का निर्वाचन दिनाक ६ जनवरी, २००२ (रविवार) को प्रात ११ बजे से अपरान्ह ३ बजे के मध्य आर्यसमाज, दीवानहाल दिल्ली मे होगा। मैं राजसिह भल्ला, निर्वाचन अधिकारी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली, सभा के वार्षिक निर्वाचन हेतु (पूर्व प्रथानुसार) प्रधान पद के लिए नामाकन प्रस्तुत करने के लिए यह सार्वजनिक सूचना प्रसारित कर रहा हू। प्रधान को अधिकार होगा कि वह शेष अधिकारियों व अन्तरग सदस्यो को मनोनीत कर सकेगा। चुनाव की प्रक्रिया निम्नलिखित अनुसार रहेगी –

१ इच्छुक प्रत्याशी २४ दिसम्बर, २००१ तक अपना नाम सादे कागज पर मेरे निवास के पते पर भेजें।

२ नामाकन पत्र पर एक प्रतिनिधि प्रस्तावक के अतिरिक्त न्यूनतम पाच् प्रतिनिधियो के अनुमोदक के रूप मे हस्ताक्षर आवश्यक हैं।

३ दिनाक २५/१२/२००१ से २६/१२/२००१ तक नामाकन पत्रो की जाच की जाएगी।

४ दिनाक २७/१२/२००१ को नामाकन वापसी लेने के इच्छुक प्रत्याशी नाम वापस ले सकते हैं।

५ दिनाक २८/१२/२००१ को शेष बचे प्रत्याशियों की सूची मेरे निवास के अतिरिक्त निम्न स्थानों पर प्रदर्शित की जाएगी – **आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली; आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली-६; आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली।**

६ एक से अधिक प्रत्याशियो के शेष रहने की स्थिति मे निर्वाचन की कार्यवाही गुप्त मतपत्रो के द्वारा दिनाक ०६/०१/२००२ रविवार प्रात ११ बजे से मध्यान्होत्तर ३ बजे तक आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे होगी।

कृपया समय पर कार्य निष्पादन कर एव चुनाव प्रक्रिया मे सहयोग पूर्वक भाग लेकर इस कार्य मे मेरी सहभागिता करने की कृपा करें।

– राजसिह भल्ला *(निर्वाचन अधिकारी)*
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
निवास – सावित्री सदन, ए– १/१३, शक्तिनगर विस्तार, दिल्ली–११००५२
दूरभाष – ७२३२६१८

पृष्ठ ४ का शेष

(७) भद्रजनों का संग करें और देवजनों का आजन्म हित करते रहें

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु वासस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। ऋ० १/८६/८
गोतमो राहूगणः। देवा। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (देवा) चेतना और जड देवो ! आप हमारे साथ ऐसी समस्वरता करे, कि हम (स्थिरै अगै तुष्टुवास) स्थिर और स्वस्थ अगो से आपकी स्तुति और सेवन करते हुए (कर्णेभि भद्र श्रृणुयाम) ऐसी सगत मे रहे कि सुखप्रद और कल्याणप्रद उपदेश और समाचार ही सुने। (अक्षभि भद्र पश्येम) आखो से सुखप्रद और कल्याणप्रद दृश्य ही देखे। (यजत्रा) यज्ञभावना ये कर्म करने वालो की रक्षा करने वाले देवो ! आप ऐसी व्यवस्था करे कि (देवहित यद् आयु) दिव्य विधान से विहित्त हमे जितनी आयु मिली है, उसे अपने (तनूभि व्यशेम) अपने शरीरो से विविधरूप मे भोग करने वाले बने। अथवा (यद् आयु) हमे जितनी आयु मिली है (तनूभि देवहित व्यशेम) अपने शरीर से देव पुरुषो का भला करते हैं।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

आचार्य भगवान देव चैतन्य बनारसी दास वर्मा सम्मान से सम्मानित होंगे

आर्यजगत के प्रतिष्ठित नेता एव सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता और वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवान देव 'चैतन्य' जी को उनकी साहित्यिक सेवाओ के लिए सस्कार भारती अनुष्ठान समिति द्वारा श्री बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान २००१ के लिए चुना गया है। उन्हे यह सम्मान २७ जनवरी, २००२ को हापुड (उत्तर प्रदेश) मे एक विशेष समारोह मे प्रदान किया जाएगा।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वैदिक शोध गोष्ठी एवं ३०वें वार्षिकोत्सव का आयोजन

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला-मेरठ का ३०वा वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाति आगामी १४ जनवरी, २००२ को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का भी आयोजन किया जा रहा है महायज्ञ की पूर्णाहुति १४ जनवरी को होगी। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान्, व्याख्याता एव आर्यनेता वार्षिकोत्सव पर पधारकर आर्यजनता का मार्गदर्शन करेगे।

इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएगे। वार्षिकोत्सव से एक दिन पूर्व १३ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान के तत्वावधान में वैदिक शोध सगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। शोध सगोष्ठी का विषय होगा – **"वेदार्थ प्रक्रिया एव श्रौतसूत्र"**। इस शोध सगोष्ठी मे विभिन्न विश्वविद्यालयो से लब्धप्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् अपने शोध लेख प्रस्तुत करेंगे।

आर्यजनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में पवित्र गुरुकुल भूमि में पधारकर ज्ञानगगा मे मज्जनकर धर्मलाभ उठाए।

– स्नातक परिषद्, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला-झाल, मेरठ (उ०प्र०) - २५०५०१

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।**

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक ७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २४ दिसम्बर से ३० दिसम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति · २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया

धर्मान्तरित लोगों की वैदिक धर्म में वापसी का अभियान तेज हो

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में विशाल शोभायात्रा तथा श्रद्धांजलि सभा

अमर हुतात्मा और शुद्धि आदोलन के प्रणेता तथा महान देश भक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी का ७५वा बलिदान पर्व बडे हर्षोल्लास और नए सकल्पो के साथ सारे विश्व भर की आर्य समाजो, सभाओ तथा अन्य सस्थाओ मे मनाया गया।

दिल्ली मे आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा विशाल शोभा यात्रा तथा जन सभा का आयोजन करके पूर्व की भाति यह आयोजन विशाल स्तर पर किया गया। दिल्ली मे विगत् ७५ वर्षो से निर्बाध यह आयोजन होता चला आ रहा है।

दिल्ली के इस मुख्य समारोह मे शोभा यात्रा का नेतृत्व और जन सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की। प्रात ६ बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। उसके पश्चात १० ३० बजे से कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे शोभा यात्रा आरम्भ हुई। उनके साथ चल रहे थे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, डॉ० शिवकुमार शास्त्री, चौ० लक्ष्मीचन्द, श्री रामनाथ सहगल, श्री जगदीश आर्य, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी, इन्द्रदेव जी, महाशय रामविलास खुराना जी तथा सन्यासी वर्ग मे प्रमुख थे स्वामी दिव्यानन्द जी तथा स्वामी धर्ममुनि जी आदि। यह शोभायात्रा पुरानी दिल्ली के उन क्षेत्रो से होती हुई लाल किला मैदान पहुची जिन क्षेत्रो से स्वामी जी की शहादत के बाद २५ दिसम्बर, १९२६ को उनकी अन्तिम यात्रा सस्कार के लिए निकाली गई थी। स्वामी जी के अतिम सस्कार के अवसर पर आर्य जनता ने उनकी स्मृतियो को अपना प्रबल सस्कार बना लिया और तबसे यह यात्रा दिल्ली मे प्रतिवर्ष बडे जोश व उत्साह के साथ आयोजित की जाती है। दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजे अपने अलग अलग टैम्पो व बसे लेकर इस यात्रा मे शामिल होती हैं। बैनरो और ध्वजो से सुसज्जित वाहन सगठन शक्ति का सुदृढ परिदृश्य प्रस्तुत करते है।

मार्ग मे कई आर्यसमाजे दानी महानुभाव, व्यापारी वर्ग तथा अन्य सस्थाए भी स्थान स्थान पर इस यात्रा मे भाग लेने वाले आर्य जनो का पुष्पो और प्रसाद वितरण से प्रसन्नता पूर्वक स्वागत करते हैं। इस बार भव्य शोभा यात्रा का सर्वप्रथम आर्यसमाज नया बास की तरफ से उसके बाद काजी हाउस पर आर्यसमाज सीताराम बाजार की तरफ से चावडी बाजार मे आर्य पुत्री पाठशाला के अध्यक्ष एव प्रिसिपल ने विद्यालय की अध्यापिकाओ के साथ और चादनी चौक घटाघर पर आर्यसमाज दीवानहाल की तरफ से स्वागत के विशेष प्रबन्ध किए गए थे। पूरे मार्ग मे आर्यसमाज नयाबास, सीताराम बाजार तथा दीवानहाल की तरफ से माईक एव बैनरो तथा तोरण द्वार की व्यवस्था की गई थी, जिसमे आर्यजनो का भव्य स्वागत किया जा रहा था। शोभायात्रा के मार्ग पर सन्तरे, केले, ब्रेडपकौडे मिश्री सौंफ मिठाई तथा हलवा इत्यादि श्रद्धालुओ की तरफ से वितरित किए जा रहे थे।

श्रद्धानन्द बलिदान पर्व समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य "वैदिक दर्शन एव सिद्धान्त" पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ मे हैं आचार्य प० विशुद्धानन्द जी तथा वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय।

दोपहर बाद २ बजे यह यात्रा लाल किला मैदान पहुची जहा विशाल जनसभा का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की।

कै० देवरत्न आर्य ने आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १०० वर्ष पूर्व कितनी कठिन तपस्या और व्यक्तिगत त्याग से गुरुकुल कागडी हरिद्वार की स्थापना की थी। इन कडे प्रयासो का ही यह फल था कि इस सस्था से निकले स्नातक देश देशान्तर मे वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे नक्षत्रो की तरह चमकने लगे। परन्तु आज १०० वर्ष के बाद कुछ महानुभाव स्वामी जी की उस त्याग तपस्या का सही मूल्याकन नही कर पाए और अपने निजी स्वार्थों के वशीभूत जमीने बेचने जैसी घिनौनी कार्यवाही कर बैठे। आर्यजनता ऐसे कार्यो को कदापि बर्दाश्त नही करेगी।

कै० देवरत्न जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की छवि एक महान राष्ट्रनायक के रूप मे भी स्थापित है, क्योकि वे राष्ट्र की प्रत्येक समस्या पर अपना गम्भीर चिन्तन और मार्गदर्शन प्रस्तुत करते थे।

प्रत्येक आर्य को राष्ट्रीय समस्याओ से स्वय को विमुख नहीं समझना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने कहा कि शस्त्र, शास्त्र और शुद्धि का मै विशेषरूप से आह्वान करना चाहता हू। आर्यजनता शस्त्र के रूप मे नवयुवको को हर प्रकार के प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करे। शास्त्र अर्थात स्वाध्याय प्रवचनो की पुरानी प्रवृत्ति को पुन जोश और उत्साह के साथ लागू किया जाए और शास्त्रार्थ परम्परा को भी पुनर्जीवित किया जाए। शुद्धि कार्यक्रमो को वैदिक धर्म में वापसी या गृह वापसी के रूप मे प्रचारित और क्रियान्वित किया जाए।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि जब तक हमारे शरीर मे दम है तब तक हमे बेदम नहीं होना चाहिए और हर्ष तथा उत्साह के साथ सामाजिक कार्य सम्पन्न करने चाहिए। भौतिकवादी लक्ष्य के साथ साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक लक्ष्य हासिल करने चाहिए।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

वर्तमान शिक्षा में प्राचीन नैतिक गुणों की महत्ती आवश्यकता

– ओम प्रकाश आर्य

वर्तमान शिक्षा मे मुख्य कमी है नैतिक गुणो के अभाव की। इन नैतिक गुणो के अभाव मे शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्बन्ध, शिक्षार्थी और माता-पिता का सम्बन्ध शिक्षार्थी और राष्ट्र का सम्बन्ध शिक्षार्थी और जनसामान्य के सम्बन्ध मधुर और नेक नही हो सके हैं।

आज शिक्षा मूल्य-विहीन हो गई है, भले ही उसके माध्यम से डॉक्टर इजीनियर अफसर नेता, क्लर्क तथा ऊचे पदो पर आसीन होने वाले लोग तैयार हो रहे है। फिर भी इन सबके मध्य नैतिक गुणो की कमी खटक रही है। इसकी उपेक्षा नही की जा सकती।

वर्तमान मे पुत्रो से पिता क्यो परेशान है? छात्रो से शिक्षक क्यो परेशान है? व्यक्ति राष्ट्रीय सम्पत्ति को अपनी वस्तु क्यो नही स्वीकार करता? उसके अन्दर दया, क्षमा, प्रेम करुणा, परोपकार त्याग सहयोग ईमानदारी कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे उच्च गुण क्यो नही आ पाते? इन सबका कारण है – परम्परागत नैतिक गुणो का अभाव। यदि नैतिकता ही नही है तो व्यक्ति की सारी योग्यता व्यर्थ है।

शिक्षा नैतिकता प्रधान हो

प्राचीन शिक्षा नैतिकता प्रधान थी। प्रारम्भ से ही गुरु-शिष्या को नैतिक गुण अपनाने की सीख देते थे और शिक्षा समाप्ति के समय विद्यालय से विदाई के समय नैतिकता का सन्देश देते हुए उसे आजीवन अपनाने पर बल देते हुए घर भेजते थे। तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षाध्याय–वल्ली यही बात पुष्ट करती है। आचार्य शिष्य को शिक्षा समाप्ति पर उपदेश देते थे –

सत्य वद। धर्मंचर। स्वाध्यायान्मा प्रमद ।
सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्।
कुशलान्न प्रमदितव्यम्।
भूत्यै न प्रमदितव्यम्।
स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्।

अर्थात् सत्य बोलना, धर्म का आचरण करना स्वाध्याय मे प्रमाद (आलस्य) मत करना सत्य बोलने मे प्रमाद मत करना धर्माचरण मे प्रमाद मत करना जिस बात से तुम्हारा भला हो उसमे प्रमाद मत करना। अपनी विभूति बढाने मे प्रमाद मत करना। स्वाध्याय और प्रवचन मे भी प्रमाद मत करना।

आचार्य शिष्य से आगे कहते थे –

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।
अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि,
तानि सेवितव्यानि नो इतराणि।

अर्थात् ससार मे जो श्रेष्ठ लोग है तुमसे गुणो मे श्रेष्ठ हैं और जो पितर है आयु मे बडे हैं उनके प्रति अपने कर्त्तव्यपालन मे प्रमाद मत करना। माता को देवी समझना। पिता आचार्य, अतिथि को देव मानना; जो अनिन्दित कर्म हैं उन्ही को जीवन मे अपनाओ दूसरो को नहीं।

आचार्य आगे शिष्य को उपदेश देते थे –

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। सविदा देयम्।

अर्थात् श्रद्धा से दो अश्रद्धा से दो। अपनी बढती श्री से दीजिए। श्री न बढ रही हो तो भी लोकलाज से दीजिए। भय से दे। यही आदेश है यही उपदेश है।

शाश्वत जीवन-मूल्य

वर्तमान समय मे क्या उपर्युक्त गुणो की अवहेलना की जा सकती है? बिल्कुल नहीं। ये शाश्वत मूल्य है। इन्हे किसी भी समय काल परिस्थिति और युग मे नकारा नहीं जा सकता। इन्ही मूल्यो से परिवार, समाज और राष्ट्र मे सुख शान्ति व आनन्द उपलब्ध होते हैं। इन्हीं मूल्यो मे मानवता छिपी है, जिसकी आज महत्ती आवश्यकता है। सारी वैज्ञानिक प्रगति अधूरी है यदि मानव-मानव न बने।

जीवन-मूल्य अपनाइए

जीवन-मूल्यो को अपनाकर ही मानव सच्चे अर्थो मे मानव बनता है। मानवता के नाम पर भले ही घडो आसू बहा लिए जाए धार्मिक चर्चाए कर ली जाए, बडे-बडे उपदेश दे दिए जाए किन्तु जब तक शिक्षा के अभिन्न अग के रूप मे नैतिक गुण अपनाए नहीं जाते, तब-तक हमारी शिक्षा अधूरी रहेगी। देश और समाज शिक्षित होकर भी हृदय और मन से विक्षुब्ध रहेगे।

आज शिक्षा भले ही बडी-बडी उपाधिया उपलब्ध करा रही हो, कालेजो मे शिक्षा प्राप्त करने वालो की भले ही भीड लगी हो, परन्तु सबका उद्देश्य अधिकतम अक प्राप्त करना है। तोडफोड, हडताल, मारपीट गाली-गलौच, नशावृत्ति, अभद्रता क्या ये ही उच्च शिक्षा की निशानी हैं?

शिक्षा मे परिवर्तन की बाते होती हैं, पर जब तक प्राचीन मूल्यो को शिक्षा मे स्थान नहीं दिया जाएगा तब तक शिक्षा की कमी का राग अलापने से कुछ नहीं होगा।

यह ठीक है कि समाज बदल गया है। समय और युग के साथ चलना चाहिए लेकिन हम सच्चाई और सभ्यता को अलग करके नहीं जी सकते। सभ्यता सत्य और जीवन मूल्यो के बिना अधूरी है। अतएव शिक्षा और ज़ीवन-मूल्यो को साथ-साथ रखे, इन्हे अपनाए तभी मानव का कल्याण होगा और श्रेष्ठ मानव का विकास हो सकेगा।

– आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान) - ३२३३०५

स्वयं तृप्ति है

– आचार्य भगवानदेव "चैतन्य"

प्यास नहीं हमारा स्वभाव –
हमारा निजत्व तृप्ति है।
स्वय म स्थित नहीं
इसलिए प्यासे है।।

प्यास है तो तृप्ति भी जरूर है
प्यास केवल यात्रा है
तृप्ति है – मजिल।

प्यास अस्थाई है
तृप्ति स्थाई।
तृप्ति पाए बिना प्यास समाप्त नहीं होगी।

यात्रा मे –
लगातार यात्रा मे
प्यास है
और अधिक प्यास।

हम स्वय को भूले हुए हैं,
तभी जो प्यासे हैं।
स्वय को पहचानना
तृप्त होना है।

सचमुच जो व्यक्ति यह नहीं जानता,
कि वह चाहता क्या है,
वह कभी सुखी नहीं हो सकता।

हमे चाहना क्या है
यह हम तब तक नहीं जान सकते
जब तक यह न जाने
हम हैं कौन

अपना पता लगते ही,
प्यास ही निशेष हो जाएगी ।।

– ८१/एस०-४, सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश

बोध कथा

मर्यादा का पालन

गुजरात के भरूच नगर का प्रसग है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने एक विद्यार्थी को कुए से जल लाने के लिए कहा तो विद्यार्थी बोला –**"महाराज, मै ब्राह्मण हू। मेरा काम पानी ढोना नहीं है।"** उसी दिन महाराज ने सब कर्मचारियो को एकत्र कर कहा – **"जिस गुरु के निकट कोई शिष्य रहता है और जिससे विद्या ग्रहण करता हो तो उसके वचनो का पालन करना चाहिए। गुरु की आज्ञा कभी भग नहीं करनी चाहिए।"**

एक दूसरे दिन का प्रसग है। एक दिन उनके सहायक पण्डित कृष्णराम को ज्वर आ गया। ज्वर-पीडित हो वह एक कोठरी मे जाकर लेट गए। जब स्वामी जी को पता चला, तब वह उनके पास जाकर उनका सिर दबाने लगे। पण्डित जी ने कहा – **"भगवन्, आप ऐसा न कीजिए, मै आपसे सेवा नहीं करवाना चाहता।"**

महाराज ने कहा – **"दूसरे के कष्ट में उसकी मदद करना प्रत्येक का कर्त्तव्य है। इसमें कोई दोष नहीं है। एक दूसरे की सहायता और सेवा करना तो मानव का धर्म ही है। बडे यदि छोटों की सेवा न करे तो छोटों में सेवा भाव आ ही नहीं सकता।"** – नरेन्द्र

हम सब ओर से निर्भय हों : तेजस्वी हों : यशस्वी हों

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभय करत।
इन्द्र हमे सब ओर से निर्भय करे।

कण्टकेन कण्टकमिन परेण परम् उद्धरेत्।
नीति वाक्यामृत

काटे से जैसे काटा निकाला जाता है, वैसे शत्रु द्वारा शत्रु को पराजित करे।

मयि वर्चो अथो यशः।
अथर्व० ६/६६/३

मुझमे तेज हो मैं यशस्वी बनू।

यशस स्याम।
अथर्व० ६/३६/२

हम यशस्वी हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

यथायोग्य व्यवहार की चेतावनी

भारतीय ससद मे आतकवाद की चुनौती के सम्बन्ध मे भारतीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का वक्तव्य वस्तुत भारत राष्ट्र द्वारा दी गई चेतावनी है, जिसमे प्रत्येक से यथायोग्य व्यवहार करने की बात की गई है। प्रधानमन्त्री वाजपेयी की यह उक्ति उचित है जिसम उन्होने कहा है कि हम युद्ध नहीं चाहते परन्तु शान्ति के समर्थक होने का यह तात्पर्य नहीं होना चाहिए कि हम पर युद्ध थोप दिया जाए। यद्यपि भारत युद्ध नहीं चाहता, वह शान्ति का पुजारी है, परन्तु हमारा पडोसी पाकिस्तान ऐसी परिस्थितिया पैदा कर रहा है जिससे युद्ध की आशका बढ रही है।' वैसे हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि जहा तक सम्भव हो शान्ति के विकल्प खोजे जाए, युद्ध का मार्ग एक अन्तिम माध्यम है। उस पर चलने से पहले शान्ति से जुडे सभी विकल्पो को अपनाने का प्रयत्न होना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति मे शत्रु को क्षमा करना उचित नहीं होगा। असल मे अब समय आ गया है जब भारत स्पष्ट शब्दो मे पाकिस्तान से कहे कि वह आतकवाद को सहयोग और समर्थन देना बन्द करे। उसका कल्याण इसी मे है कि वह लश्कर-ए-तोइबा और जैस ए मोहम्मद के सूत्र सचालको और दूसरे आतकवादी नेताओ को भारत को सौंप दे। ससद भवन पर किए गए प्रत्यक्ष आक्रमण मे ससद के रक्षको द्वारा की कार्यवाही मे मृत आतकवादियो का सम्बन्ध लश्कर-ए-तोइबा और जैस-ए-मोहम्मद के आतकवादी सगठनो से प्रमाणित हो चुके हैं। यद्यपि पाकिस्तान कश्मीर मे प्रचलित आतकवाद को आजादी की जग और बर्बर आतकवादियो को स्वतन्त्रता सेनानी कहने का दुस्साहस करता रहा है, परन्तु अब भारत का पडोसी पाकिस्तान और सभी प्रमुख अमेरिका ब्रिटेन, रूस, चीन और जापान आदि देशो के सामने स्पष्ट कर देना चाहिए कि पाकिस्तान द्वारा थोपा गया छद्‌म युद्ध अब अधिक सहन नहीं किया जाएगा। ससद भवन पर हुए आतकवादी हमले के बाद अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय और प्रमुख राष्ट्रो का दायित्व है कि वे पाकिस्तान को सयम रखने का सत्परामर्श दे। यदि ये प्रमुख राष्ट्र और विश्व जनमत ऐसा सत्परामर्श नही देते तो वे एक भीषण भूल करेगे, वैसी परिस्थिति मे भारत के समक्ष सकट के समय – परिस्थिति बिगडने पर समस्या और स्थिति से निपटने के लिए यथायोग्य व्यवहार करना अनिवार्य हो जाएगा। नीति की सीख है कि जैसे के साथ तैसा व्यवहार किया जाए। नीतिशास्त्र का सत्परामर्श है ***"कण्टकेन कण्टकमिव परेण परम् उद्धरेत"*** – जैसे काटे से काटा निकाला जाता है वैसे शत्रु द्वारा शत्रु को पराजित किया जाए। आततायी आतकवादी के नियन्त्रण और उन्मूलन के लिए उसके साथ यथायोग्य व्यवहार – जैसी भाषा और करनी वह कर रहा है, उसे उसी भाषा और यथायोग्य व्यवहार से समझाया जाए। भारत का इतिहास साक्षी है कि वह एक शान्तिप्रिय राष्ट्र रहा है आगे भी वह शान्ति अपनाना चाहता है। परन्तु यदि प्रतिस्पर्द्धी आतकवाद और जेहाद का सहारा ले तो भारत को सयम का व्यवहार छोडकर उसी भाषा मे जवाब देना होगा जिसका भारत को निशाना बनाया जा रहा है।

यद्यपि हमारा राष्ट्र सघर्ष नहीं चाहता, परन्तु यदि आतकवाद के सहारे उस पर सघर्ष लादा गया तो उसे सम्बन्धित पक्ष और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को स्पष्ट कर देना चाहिए कि वैसे वह युद्ध नही चाहता परन्तु यदि उस पर युद्ध लादा गया तो इस बार का सघर्ष निर्णायक होगा। १६७१ के सघर्ष मे शत्रु के एक लाख सैनिक युद्धबन्दी होने के बावजूद इन्दिरा जी ने मर्यादा की स्थिति अपनाई थी। उसने न केवल युद्धबन्दी छोडे प्रत्युत सीमावर्ती वह क्षेत्र भी ध्यान मे न रखा, जो शताब्दियो और युगो से भारत का भूभाग था। अनचाहे युद्ध की स्थिति मे भारत का प्रयत्न होना चाहिए कि इस बार वह राष्ट्र के उस भूभाग को वापस लेना चाहेगा तो, इतिहास भूगोल और सस्कृति की दृष्टि से राष्ट्र का अविच्छिन्न भूखण्ड रहा है। ससद पर किए गए आतकवाद के आक्रमण मे पडोसी देश और उसके आतकवादियो की भूमिका स्पष्ट होने पर विश्व समुदाय का दयित्व है कि वे आतकवाद को सहारा देने वाले पाकिस्तान को सयम अपनाने की सलाह दे। विश्व के प्रमुख राष्ट्रो को दायित्व है कि वे भारत को परामर्श न देकर पाकिस्तान को सयम रखने की सलाह दे। यदि वह उनकी बात नहीं मानता तो उनका दायित्व है कि सारे दुष्परिणाम के लिए उसे जिम्मेदार कहे। इसी के साथ घटनाक्रम से स्पष्ट है कि ससद पर हुए आतकवादी आक्रमण के बाद सरकार मे राजनयिक और सामरिक दोनो क्षेत्रो मे एक साथ बढने की रणनीति अपनाई है। ससद पर आक्रमण के समय गिरफ्तार अफजल की सूचना के अनुसार मृत आतकवादी दिल्ली विधानसभा राजधानी स्थित कुछ दूतावासो ओर ईसाई भक्तो की भीड पर हमला करना चाहते थे। इस बन्दी आतकवादी ने पत्रकारो को सूचना दी कि पाकिस्तान चाहता है कि भारत एक सुपर पावर न बने। इसलिए वह भारत मे आतकवादी गतिविधिया चला रहा है और इन गतिविधियो को पूर्ण करने के लिए अधिकृत कश्मीर मे कई प्रशिक्षण शिविर चला रहा है। यह चिन्ता की बात है कि ससद भवन पर हुए आतकवादियो के आक्रमण मे पाकिस्तान की स्पष्ट भूमिका उजागर होने पर भी विश्व समुदाय ने उस पर दबाव नहीं डाला है।

स्थिति का तकाजा है कि पडोसी देश द्वारा प्रेरित आतकवाद को नियन्त्रित करने के लिए भारत उचित कार्यवाही करे। नीति का सत्परामर्श है कि जब शान्तिपूर्ण उपायो और सयम से स्थिति न सुधरे तो काटे से काटे को निकाला जाए। भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का कहना ठीक है कि वह युद्ध नहीं चाहते परन्तु शान्ति का पुजारी होने का तात्पर्य यह नहीं है कि भारत पर युद्ध थोप दिया जाए। ससद पर पाकिस्तान समर्थित आतकवादियो की भूमिका स्पष्ट होने के बाद विश्व समुदाय का दायित्व है कि वह पाकिस्तान को सयम की सीख दे। अब स्थिति ऐसी आ गई है कि या तो पाकिस्तान भारत की बात मानकर आतकवाद को सहयोग और समर्थन देना बन्द करे अन्यथा उसे स्थिति का सामना करना होगा। उसकी भलाई इसी मे है कि ससद पर आक्रमण करने के लिए जिम्मेदार लश्कर-ए-तोइबा और जैश-ए-मोहम्मद के नेताओ और आतकवादियो को भारत को सौप दे अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की जिम्मेदारी है कि वह इस सम्बन्ध मे पाकिस्तान को सयम बरतने की सलाह दे अन्यथा आतकवाद का नियन्त्रण न करने के लिए भारत कोई भी कार्यवाही करने का हकदार होगा। पडोसी द्वारा थोपे गए युद्ध का निवारण करने के लिए भारत यदि वह मार्ग अपनाए या यथायोग्य व्यवहार करे तो सम्बन्धित राष्ट्र और विश्व समुदाय इस बारे मे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। जैसे को तैसा काटे को काटे से निकाले और प्रतिस्पर्द्धी आतकवादी राष्ट्र से भारत यदि यथायोग्य व्यवहार कर दृढता से सामूहिक कार्य करे तो ऐसे राष्ट्र और विश्व समुदाय को आपत्ति करने के स्थान पर उसका स्वागत करना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

लोकतन्त्र के लिए चुनौती

ससद भवन पर हुआ आतकवादी हमला लोकतन्त्र के लिए बडी चुनौती है। अमेरिका ने जिस प्रकार अफगानिस्तान पर हमला कर आतकवादी खदेडे हैं, उसी तरह केन्द्र सरकार को तुरन्त आवश्यक कार्यवाही करते हुए पाकिस्तान स्थित आतकवादी शिविरो को नष्ट करना चाहिए। आतकवाद से निपटने के लिए सभी राजनीतिक दल दलीय राजनीति से ऊपर उठकर कार्य करे। आतकवाद निरोधक (पोटो) अध्यादेश देश की सामयिक जरूरत है। वर्तमान कानूनों के बल पर आतकवादी गतिविधिया नहीं रोकी जा सकतीं। यह एक कटु तथ्य है।

– विजय भल्ला, गोविन्दनगर, कानपुर (उ०प्र०)

अस्मिता को चुनौती

आतकवादियो द्वारा ससद भवन पर किया गया आक्रमण वस्तुत भारत की अस्मिता को सीधी चुनौती है। आतकवादियो और उनके समर्थको को मुहतोड उत्तर दिया जाना चाहिए। आखिर आतकवादियो का दुस्साहस इतना अधिक कैसे बढ गया कि वे ससद तक पहुच गए? ससद भवन पर हमला सकट की घडी की ओर सकेत कर रहा है। सकट की इस घडी मे किसी को भी सकीर्ण स्वार्थो की राजनीति नही करनी चाहिए। आतकवादी निरोधक अध्यादेश पोटो का विरोध अनुचित है। आतकवादियो ने ससद पर हमला कर राष्ट्र को चुनौती दी है, उसका सामना एकजुट होकर करना चाहिए।

– डॉ० मनोज कुमार जैन, धर्मपुरा, नई दिल्ली

सुमतौ स्याम-सप्तक्रम्

हमें किस-किस देवता की कृपा दृष्टि का ध्यान करना इष्ट है

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) सर्वजन हितकर परमेश्वर जाठराग्नि और सूर्य की कृपा दृष्टि हम पर सदा बनी रहे

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभश्री ।
इतो जातो विश्वमिद विचष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण।

ऋ० १–९८–१

आंगिरस·कुत्स·। अग्निर्वैश्वानर·। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (वैश्वानर) सब मनुष्यो का हित चाहने वाला और सब का मार्ग दर्शन करने वाला परमेश्वर, (भुवनाना अभिश्री) सबको शोभा प्रदान करने वाला अत एव सबके द्वारा सेवनीय है। वह (भुवनाना राजा) सब प्राणियो और लोको का राजा-सचालक है। (इद विश्व इत जात) यह सारा विश्व उसी से उत्पन्न हुआ है और वह (हि इद विचष्टे) ही इसकी विशेष देखभाल करता है। वह वैश्वानर हि (सूर्मेण क यतते) सूर्य के सम्यक् सेवन द्वारा सबको सुख देना चाहता है। इसलिए हम चाहते हैं कि (वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम) इस सर्व जनहितकारी प्रभु और सूर्य की अनुग्रहपूर्ण कल्याणी मति मे रहे।

मनन – (१) वैश्वानर का अर्थ सूर्य और जाठराग्नि भी होते हैं। ये दोनो भी सबका हित करते है, इसलिए इनका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए उन दोनो का सम्यक् सेवन करना चाहिए और जाठराग्नि को सदा ठीक रखना चाहिए – इसे मन्द नहीं होन देना चाहिए। (२) वैश्वानर [illegible] रूप मे विश्व की सृष्टि करते है, और विष्णु रूप मे इसका ध्यान रखते और पालन करते है।

(३) सूर्य परमात्मा के समान ही सर्वहितकारी है (ब्रह्म सूर्य समज्योति) यजु०

(४) किसी की भी सुमति (कल्याणी अनुग्रहात्मिका बुद्धि या सम्मति) प्राप्त करने के लिए उसके नियमो का पालन करना होता है। अत हमे परमात्मा, सूर्य और जाठराग्नि के नियमो का पालन करना चाहिए।

(२) सर्वव्यापी परमेश्वर कृपा दृष्टि रहे, तो मन भद्र और शान्त रहता है

जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदा विश्वामित्रेमिरिध्यते अजस्र ।
तस्य वय सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम।।

ऋ० ३-१-२१

गाथिनो विश्वामित्र । अग्नि । विराट् त्रिष्टुप्।

अर्थ – (जन्मन् जन्मन् जातवेदा निहित) जन्म लेने वाले प्रत्येक प्राणी और पदार्थ मे सर्वव्यापक परमात्मा विद्यमान रहता है, और प्रत्येक पदार्थ मे उसके प्राक्कर्मों के अनुसार उसमे जीवनी शक्ति स्थापित होती है किन्तु (विश्वामित्रेभि अजसु इध्यते) प्राणीमात्र के साथ मित्र दृष्टि रखने वाले उसे निरन्तर अपने अन्दर प्रदीप्त रखते हैं, उसे कभी विस्मृत नही होने देते। (तस्य यज्ञियस्य) उस पूज्य सगमनीय और दानी परमात्मा की (वय सुमतौ अपि भद्रे सौमन से स्याम) हम सदा अनुग्रहात्मिका बुद्धि और सदय मन के भागी बने रहे।

निष्कर्ष – हम उसके किसी आदेश या व्यवस्था का उल्लघन न करे जिससे उसकी अनुग्रहात्मिका बुद्धि से वञ्चित हो जाए।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे दो बाते कहीं हैं –

भावार्थ – (१) मनुष्यै जगति सुख दु खादीनि न्यूनाधिकानि दृष्ट वा प्रागर्जित कर्मफलमनुमेयम्। यदि परमेश्वर कर्मफल प्रदाता न भवेत्तर्हि इय व्यवस्थापि न सगच्छेत्। (२) अत सर्वै श्रेष्ठा प्रतिज्ञातामुत्पाद्य द्वेषादीनि विहाय सर्वै सह भावेन वर्तितव्यम्।

(१) इस जगत् मे प्रति व्यक्ति सुखदु खादि की न्यूनाधिकता देखकर पूर्वजन्म मे अर्जित कर्मों के फल का अनुमान करना चाहिए। यदि परमेश्वर कर्मफल प्रदाता न हो तो इस विषय व्यवस्था की सगति नहीं लगाई जा सकेगी। (२) इसलिए सबको प्रतिज्ञापूर्वक द्वेषादि को छोडकर सबके साथ सत्य व्यवहार से बरतना चाहिए।

(३) अन्न भोजी और सूर्य सेवी स्तोता नीरोग एवं प्रसन्न रहते हैं

अनमीवास इलया मदन्तो मितज्ञवो एवरिमन्ना पृथिव्या·।
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयमित्रस्य सुमतौ स्याम।।

ऋ० ३–५८–३

गाथिनो विश्वामित्र । मित्र·। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (पृशिव्या वरिमन्) पृथ्वी के विस्तृत पदेश मे विचरते हु , (अनमीवास) शरीर और मन के रोगा अनाक्रान्त रहकर (इलया यदन्त) अपनी राष्ट्र भूमि की व्यवस्था और अन्न की पर्याप्तता से प्रसन्न रहते हुए (मितज्ञव) घुटने जोडकर बैठे हुए – प्रार्थना करते हुए, (आदित्यस्य व्रत उपक्षियन्त) सूर्य के कर्मो का अनुकरण और सेवन करते हुए (वय मित्रस्य सुमतौ स्याम) हम सबके मित्र परमात्मा और सूर्य की अनुग्रहात्मिका सम्मति मे बने रहे।

निष्कर्ष (१) अन्न का भोजन और सूर्य का सम्यक् सेवन करने वाला, नीरोग रहता है, प्रभुभक्त होता है और सदा प्रसन्न रहता है।

(२) परमात्मा और सूर्य दोनो के आदित्य और मित्र नाम है। परमात्मा की तरह सूर्य सबका मित्र है। सबको प्रकाश व ऊर्जा देता है।

(४) आपका प्रिय भक्त जन सेवा करके आपके समान विख्यात हो जाता है

यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरेके अद्रिवःसखा ते।
वयं त अस्यां सुमतौ चनिष्ठा.स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ।।

ऋ० ७/२०/८

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। इन्द्र·। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (अद्रिव इन्द्र) हे आदरणीय ऐश्वर्यशालिन्। (ते य जन ददाशत् प्रिय असत्) तेरा जो स्तोता, तेरी इच्छाओ को पूरा करके तुझे प्रसन्न करता है वही (निरेके वरूथे ते सखा) अनेक जनो से समाकुल सभागृह मे तेरा सखा (समानख्यान) बनता है। (वयम् अघ्नत ते अस्या नृपी तौ सुमतौ चनिष्ठा स्याम) हम हिंसा न करने वाले आप की, मनुष्यो की रक्षा करने वाली सुसम्मति (गुड बुक्स) मे रहते हुए अतिशय अन्नादि ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो।

अर्थपोषण – वरूथे – गृहनाम। नि० ३–४ च न. अन्नम्। नि० ४–३ अतिशये इष्दन।

निष्कर्ष – (१) जो मनुष्य आप के स्तोताओ की सहायता करता है वही आपका सखा=समान कार्यकर्ता बनता है।

(२) हमे भी अपनी मानवता रक्षिका सुसम्मति (कृपादृष्टि) मे रखते हुए अन्नादि ऐश्वर्यों का स्वामी बनने का अवसर प्रदान की कीजिए।

(५) सूर्य का सम्यक् सेवन करने वाले भाग्यवान् होते हैं

उतेदानीं भगवन्त. स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वय देवानां सुमतौ स्याम।।

ऋ० ७–४१–४

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ·। भग:। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (मधवन्) धनवन् भगदेव (सौभाग्य)! आप ऐसा अनुग्रह करे कि हम (इदानीम्) प्रत्येक वर्तमान काल मे अर्थात् (सूर्यस्य उदिता) सूर्योदय के समय प्रात काल (उत अह्ना मध्ये उतप्रपित्वे) मध्या ह्न काल और सायकाल मे अथवा प्रकृष्ट ऐश्वर्य की प्राप्ति होने पर (देवाना सुमतौ) प्राकृतिक देवो और विद्वानो की कृपा दृष्टि मे रहते हुए (भगवन्त स्याम) सदा ही भाग्यशाली बने रहे।

निष्कर्ष – सूर्य का सम्यक् सेवन और उसकी तरह सदा नियम मे रहने वाला न अभागा रहता है और न ही ऐश्वर्य प्राप्ति के बाद भोगी या उच्छृखल बनता है।

(६) आपके मार्गदर्शन में चलकर हम समृद्ध हुए हैं।

भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न. स्तरभिगातये।
अस्माञ्चित्राभिखतदभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय।।

ऋ० ८–३–२

काण्वोमेधातिथि·। इन्द्र । प्रगाथ· (सतो बृहती)

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशालिन्! हमने (अग्ने भद्राया सुमतौयतेभा। ऋ० ६–१–१०) हमने सर्वेषामपिगुरु परमात्मा तथा अपनो गुरु के सरक्षण मे खूब प्रयत्न किया है और समृद्धिशाली बन गए हैं। अब हम चाहते है कि (वाजिन वय ते सुमतौ भूयाम) समृद्धिशाली बने हम तेरी सम्मति=मार्गदर्शन मे रहे। अत (न अभिमातयेभा स्त) हमे अहकार और दम्भ की ओर धकेलकर हमारी हिसा मतकर। अपितु इसके विपरीत (चित्राभि अभिष्टि भि अस्मान् अवतात्) ज्ञानप्रद तथा सबको अभिमत (स्वीकार्य) नीतियो के द्वारा हमे सदा आगे बढाता रह और परिणाम स्वरूप (न सुम्नेषुयामय) हमे सदा सुखपूर्ण स्थितियो मे नियमित कर – सदा सुखी तथा शान्त रख।

अर्थ पोषण – स्त – स्तृङ् हिसायाम्।

चित्राभि – चित् ज्ञान रहित ददातीति ताभि।

अभिष्टि – अभित इष्ट=अभिमत।

अवतात् – अव-रक्षण-गति-बृद्धिषु।

निष्कर्ष – (१) यदि हम कालक्रमानुसार सबके गुरु परमात्मा और अपने गुरु अग्नि के मार्गदर्शन मे जीने का प्रयत्न करेंगे तो अवश्य (वाजिन) ज्ञान, बल, धन या अन्न किसी समृद्धि से सम्पन्न हो जाएगे।

– शेष पृष्ठ ८ पर

लक्ष्य और प्रयास में संगति हो

– श्रीराम शर्मा आचार्य

कार्य और कारण का तारतम्य बैठना चाहिए, भ्रम हो जाने से प्रयास निरर्थक चले जाते हैं और परिश्रम करने वाले को निराशा खीझ और थकान पल्ले पडती है। ऐसी स्थिति मे लक्ष्य या प्रयास की गरिमा उपयोगिता पर से विश्वास उठने लगता है।

आवश्यक है कि किसी कार्य मे हाथ डालने से पूर्व यह देख लिया जाए कि जो चाहा गया है, उसके लिए मार्ग है भी, या नहीं, यह मार्ग जहा पहुचाता है वहा हमे जाना भी है या नहीं। यदि लक्ष्य और प्रयत्न के बीच विसगति रही होगी तो सफलता की सभावना नहीं रहती। भ्रम ग्रस्त मन स्थिति मे अपनाया गया उत्साह अन्तत अनास्था मे बदलता है। इसलिए विद्वत्जन यही परामर्श देते हैं कि कार्य और कारण की लक्ष्य और प्रयास की सगति बिठाते हुए प्रयत्नरत् हो। भ्रान्तियो और भावुकता से ग्रस्त न हो। वस्तुस्थिति को समझे बिना अपनाई गई उतावली अन्तत साहस ही तोड देती है। आध्यात्म क्षेत्र मे प्रवेश करते समय इस प्रकार की भ्रान्तियो से निपटना आवश्यक है। आध्यात्म प्रयोजनो से भौतिक लाभ उपलब्ध होने की बात कही जाती रही है और इस प्रकार के माहात्मय बताए जाते रहे हैं, उनमे प्राय आदि और अन्त का वर्णन दीख पडता है। मध्यवर्ती प्रयास का विस्तृत उल्लेख कदाचित् इसलिए नही किया गया है कि जिन दिनो शास्त्र रचे गए अथवा आप्त वचन कहे गए, उन दिनो सर्वसाधारण का चिन्तन उच्चस्तरीय था। यह कहने की आवश्यकता नहीं समझी गई कि इस क्षेत्र के प्रवेशकर्ताओ को व्यक्तित्व की दृष्टि से पवित्र एव प्रखर होना आवश्यक है। इस आरम्भिक शर्त से उन दिनो सभी परिचित थे, अस्तु उसकी चर्चा विस्तारपूर्वक करने की आवश्यकता नहीं समझी गई और आदि तथा अन्त बताते हुए यह अनुमान लगा लिया गया कि मध्यवर्ती प्रक्रिया तो सर्वविदित है, उसे तो लोग सामान्य बुद्धि से ही समझ रहे होगे फिर किसी को पीसने से क्या लाभ?

ओषधि खाने और रोग अच्छा होने की ही आमतौर पर चर्चा होती रहती है, निदान, पथ्य, परिचर्या, मात्रा, अनुपात आदि का उस सम्बन्ध मे विस्तृत विवेचन नहीं किया जाता, क्योकि हर कोई जानता है कि इलाज कराना है तो यह बात तो ध्यान मे रखनी ही होती है उनको तो हर हालत मे अपनाना ही होता है।

डॉक्टर बनने के लिए मेडिकल कालेज मे प्रवेश और इजीनियर बनने के लिए इजीनियरिंग कालेज मे भर्ती के लिए दौड-धूप होती है। अभिभावक और विद्यार्थी यह जानते हैं कि डॉक्टर या इजीनियर बनने पर धन, यश, पद आदि की दृष्टि से सन्तोषजनक स्थिति प्राप्त होती है। कालेज मे दाखिला मिलने पर सदा ध्यान केन्द्रित रहता है। दौड-धूप होती है और प्रवेश मिलने पर सतोष की सास ली जाती है। उत्साह से आखे चमकने लगती है इस माहौल मे कोई यह प्रसग नही उभरता कि पाच वर्ष तक मनोयोगपूर्वक पढना पडेगा, फीस पुस्तके बोर्डिंग खर्च आदि का प्रबन्ध भी करना होगा। सभी जानते है कि यह तो अनिवार्य ही है। सभी करते है। इसके बिना तो लक्ष्य की पूर्ति का आधार खडा ही नहीं होता। सामान्य ज्ञान को भी अकारण दुहराने और समय नष्ट करने की आमतौर से आवश्यकता नहीं पडती। कोई सर्वथा अनजान हो तो बात दूसरी है।

उपयुक्त जोडी, विवाह निर्धारण और सुखी गृहस्थ जीवन की सगति बिठाते हुए प्रयोजनकर्ता प्रसन्न होते है। इसकी मध्यवर्ती एक शर्त भी है कि वर-वधु अपने-अपने कर्त्तव्यो और उत्तरदायित्वो का नियमित रूप से पालन करे। इसकी उपेक्षा की तो चयन-निर्धारण कितना ही उपयुक्त क्यो न हो विवाह सफल नहीं हो सकता और सुखी गृहस्थ की आशा नही बधती। फिर भी विवाह निर्धारण के लिए दौड-धूप करते समय उपयुक्त चयन ही पर्याप्त मान लिया जाता है। इसकी चर्चा नही होती कि वे दोनो किस प्रकार गृहस्थ की गाडी चलाएगे। सभी जानते है कि वर-वधु इतना तो स्वय समझते होगे न समझते होगे तो परिवार वाले समझा लेगे। यह सर्वविदित तथ्य है कि गृहस्थ की सफलता विवाह सस्कार पर नहीं, जोडी के कर्त्तव्य-पालन पर निर्भर है पर उस प्रसग को उस निर्धारण मे तूल नही दिया जाए।

उपरोक्त उदाहरण इसलिए दिए गए है कि आध्यात्म-क्षेत्र की साधनाओ के स्वरूप और उनका सिद्धि-प्रतिफल बताते समय भी आदि और अन्त का ही वर्णन किया जाता रहा है।

राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन गुड़गांव में सम्पन्न

गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए

राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन गुडगाव मे ७ अक्तूबर को आयोजित किया गया। इस महासम्मेलन मे कई प्रस्ताव भी पारित किए गए।

यह मेवात हरियाणा के जिला गुडगाव मे तावडू, नूह, नगीना, फीरोजपुर झिरका व पुन्हाना खण्ड, जिला फरीदाबाद मे हथीन खण्ड, राजस्थान के जिला भरतपुर मे जुरहेडा, कामा, पहाडी व नगर खण्ड तथा जिला अलवर मे रामगढ, गोबिन्दगढ, तिजारा व किशनगढ खण्ड तक फैला हुआ है। १९४७ मे इस क्षेत्र मे लगभग २० प्रतिशत हिन्दू थे, परन्तु अब जबकि आबादी लगभग दुगनी हो गई है, हिन्दू केवल ६ प्रतिशत रह गए हैं। गो हत्या कानूनन बन्द है फिर भी मेवात मे अधाधुन्ध हो रही है। इस अधिकता को देखते हुए मेवात व हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के हिन्दू अब इस अत्याचार को बर्दास्त करने मे असमर्थ हैं। पिछले दिनो जब नई ग्राम के लोगो ने लगभग ६५ गायो की हत्या कर गढी बरबारी (उ०प्र०) के ग्रामो के खेतो मे उनके अस्थि-पजर डाल दिए तो लोगों को इस सच्चाई का आभास हुआ जिस पर लोगो मे उत्तेजना आई, फिर हिन्दुओ की गौ हत्या रोकने के लिए कामर (उ०प्र०), कामा (राजस्थान), कोसी कला (उ०प्र०), तथा पलवल व सौध (हरियाणा) मे महापचायते हुई। जिसमे कुछ ठोस निर्णय हुए। सौंध I की पचायत मे तय होने के बाद आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात तथा हरियाणा राज्य गोशाला सघ के तत्वाधान मे राष्ट्रीय गोरक्षा महासम्मेलन किया गया। पलवल की महापचायत मे तो हरियाणा, राजस्थान, उ०प्र० की सभी खापो के सरदार एकत्र हुए।

श्रीराम, श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द की पवित्र भूमि हरियाणा, उत्तर प्रदेश राजस्थान मे गो हत्या जैसा घिनौना कार्य अब कतई बन्द कराना होगा।

सौंध की महा पचायत मे हिन्दू, मुसलमान दोनो ने निर्णय लिया कि यदि कोई गो की हत्या करेगा तो उस पर २१०००/– रुपये का दण्ड तथा समाज से निष्कासित किया जाएगा।

इस निर्णय को यद्यपि मेव भाइयो की कोट की पचायत ने समर्थन दिया परन्तु उसके बावजूद गौ हत्या धडल्ले से हो रही है। हरियाणा के साथ वाले राज्य राजस्थान, उ०प्र० व दिल्ली राज्य ने गो हत्या रोकने के लिए सख्त कानून बनाए हुए हैं। जिसमे १० वर्ष की सजा व सेशन ट्रायल है। वहा सरकारी गो सेवा आयोग बने हुए हैं।

इस महासम्मेलन मे निम्न प्रस्ताव पारित किए गए –

१. गो हत्या को मानव हत्या मानकर धारा ३०२ से जोडा जाए, जिसमें कम से कम १० वर्ष की सजा और २१०००/- रुपये जुर्माने का प्रावधान हो।

२ सरकारी खर्च पर गो सदन खोले जाए।

३ पंचायतों द्वारा प्रस्तावित भूमियों पर जो गोशालाए बनी हुई हैं, वे भूभाग उन गोशालाओं के नाम किए जाएं।

४ सरकार ग्रामों में चरागाहों की भूमियो को गऊशालाओं को देने का प्रावधान करे।

५ उ०प्र० की भाति हरियाणा में कृषि विपण्ण विभाग से दस प्रतिशत राशि गो रक्षा के लिए दी जाए।

६. मेवात में गो रक्षा के लिए अलग से पुलिस दस्ते बनाए जाए।

इस महासम्मेलन के माध्यम से हरियाणा सरकार से माग की गई कि–

१. गोरक्षा हेतु गो रक्षा आयोग का गठन हो।

२ गोरक्षा के लिए अलग से गोचर भूमि रखी जाए।

३. गो को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए।

४ गो रक्षा के कानून देश के सभी प्रान्तों मे लागू किए जाएं।

५. गोवश, गोमांस, गो-खाल के निर्यात पर पाबन्दी हो।

६. मानव को गो की आवश्यकता पर जनता को शिक्षित किया जाए।

आर्य महिला समाज आदर्शनगर, जयपुर में दीपावली स्नेह मिलन सम्पन्न

महिला आर्यसमाज, आदर्शनगर जयपुर के सत्सग भवन में दीपावली स्नेह मिलन "सगीत की शाम" के नाम से बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

सर्वप्रथम यज्ञ हुआ। पुरोहित सरला वर्मा ने तिलक करके सब अतिथियो को स्वागत किया।

मन्त्रिणी अरुणा सतीजा ने निम्न पक्तियो से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया –

स्नेह वह गंगा की पवित्र धारा है,
जो सब पापो को धो सकती है।।
स्नेह वह अमृत की प्याली है,
तो सब ईर्ष्या-द्वेषो को मिटा सकती है।
स्नेह वह महान शक्ति है,
जो सबको गले लगा सकती है।
स्नेह वह भक्ति है,
जो भक्त को भगवान से मिला सकती है।।

डॉ० मुरारीलाल पारीक ने "स्नेह मिलन" के वैदिक भाव अपने प्रवचनो द्वारा प्रस्तुत किए। भजनोपदेशक भूपेन्द्र सिह ने भजनो के माध्यम से महर्षि दयानन्द के जीवन की झलकिया प्रस्तुत कीं। राजापार्क की बहू-बेटियो द्वारा ढोलक की थाप पर थिरकते सगीत ने दर्शको को भी गदगद कर दिया।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋग्वेद ६.६३.५)

विश्व को आर्य बनाओ

आर्य भारत के मूल नागरिक हैं

आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है। ऋग्वेद विश्व मे सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ के रूप मे मान्य है। यह ज्ञान समाधिस्थ ऋषियो को सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भ मे परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया था। यह ज्ञान उन ऋषियो को इसी धरती पर प्राप्त हुआ जिसका वर्तमान नाम इण्डिया और प्राचीनतम् नाम आर्यवर्त, बाद मे भारत तथा हिन्दुस्तान पडा। दूसरे शब्दो मे ऋग्वेद की उत्पत्ति इस भारत भूमि पर होना और समूचे विश्व को आर्य बनाने के लिए प्रेरित करने का निर्देश यह साबित करते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति सर्वप्रथम इसी धरती पर हुई थी जिसे वेद की धरती कहा जाता है और वह आर्य नाम से इस देश का मूल निवासी था।

कई पाश्चात्य विद्वानो ने भारत के इस विचित्र ज्ञान के सच्चे और सर्वमान्य स्वरूप को सामने लाने मे विशेष कार्य किया, परन्तु कुछ अन्य व्यक्तियो ने, अज्ञानता या षड्यन्त्र के तहत, इस श्रेष्ठ धरती के प्राचीन इतिहास को मनगढन्त, निराधार एव षडयन्त्रकारी तरीको से प्रस्तुत किया।

इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि वेदो की इस धरती पर विचित्र प्रकार के इतिहास रचे गए और यह धरती हजारो साल विदेशियो के आक्रमण का शिकार होती रही।

वह आक्रमणकारी कौन थे ?

यह धरती इस्लाम के जन्म की प्रत्यक्षदर्शी है, जो अल्लाह के निर्देश पर चलने वाली एक साम्राज्यवादी कटटर विचारधारा है।

इसके बाद पश्चिमी आक्रमण और शोषण का युग आता है। श्वेत नस्ल का बोझ इस धरती ने सहन किया। श्वेत नस्ल एक मायने मे भिन्न थी। नए आक्रमण इस्लामिक हमलो से भिन्न थे। श्वेत नस्ल ने सर्वप्रथम भारत के व्यापार को काबू किया, बाद मे राजनीतिक व्यवस्था को और फिर अपने पूरे जोर के साथ यहा की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास किया जिसके पीछे एक स्थायी उद्देश्य और विचारधारा थी।

परिणाम आज हमारे सामने है। हम हर बात और घटना को कई शताब्दियो से पाश्चात्य विचारधारा द्वारा तैयार किए गए शीशे से ही देखते रहे हैं।

एक सार्वजनिक माग थी – **'ब्रिटिश भारत छोडो'।**

ब्रिटिश लोगो ने इसका जवाब एक नीति से दिया। यह प्रतिक्रिया मे व्यक्त किया गया एक विचार था – षड्यन्त्रपूर्ण परन्तु सुनियोजित, कि आर्य खानाबदोश गडरियो के जाति समूह थे, उन्होने भारत पर आक्रमण किया, वे मध्य एशिया से आए थे और यहा के मूल निवासियो को उन्होने उखाड फेका। अत जवाब मे कहा गया कि जो पहले आए थे वही पहले भारत छोडे। आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाली बातो के पीछे यही मुख्य उद्देश्य था।

इसी नीति के तहत इन्होने पवित्र वेद ज्ञान को मात्र गडरियो के गीत कहने का दुस्साहस भी कर दिखाया।

हिन्दुओ और मुस्लिमो मे भेदभाव पैदा करने के बाद इन्होने हिन्दुओ मे भी उत्तरी और दक्षिणी भारतीयो के नाम पर भेदभाव का प्रयास किया। यह भ्रान्ति फैलाई गई कि दक्षिण भारतीय और उत्तर-पूर्वी भारतीय आर्यों के आक्रमण के शिकार थे। इस नीति से ब्रिटिश राज्य को ईसाई धर्मान्तिरण की योजना को भी कार्यरूप देने मे सुविधा नजर आई। इसका परिणाम भी हमारे सामने है – दक्षिण में केरल तथा तमिलनाडू और उत्तर-पूर्व मे नागालैण्ड, मिजोरम और मेघालय आदि राज्य आज धर्मान्तरण की गतिविधियो से त्रस्त हैं। यह विष देश के अन्य भागो मे भी फैल रहा है।

इन मिश्नरी और साम्राज्यवादी हमलो के बाद मार्क्सवाद का वैचारिक हमला भी इस धरती ने देखा। मार्क्स ने भी ब्रिटिश कदमो का ही सहारा लिया। मार्क्स का कहना है –

"भारतीय समाज का कोई इतिहास नहीं है, कोई इतिहास जानकारी में नहीं है, जिसे हम इतिहास कहते हैं वह केवल हमलावरों का ही इतिहास है।"

उनका यह विश्वास उनके भारतीय अनुयायियो का भी विश्वास बन गया।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) द्वारा छठी कक्षा मे पढाई जा रही रोमीला थापर द्वारा लिखित 'प्राचीन इतिहास' की पुस्तक के अध्याय तीन का सन्दर्भ देते हैं –

(क) ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस लेखिका ने इतिहास के मूल सिद्धान्तो को तिलाजलि दे दी है कि इतिहास पर पुख्ता प्रमाण और निश्चितता की मोहर अवश्य होनी चाहिए। उसके अपने शब्दों में – हम नहीं जानते कि वे लोग कहा से आए। शायद वे उत्तर-पूर्वी ईरान से या केस्पियन सागर के समीप के क्षेत्र से या मध्य एशिया से आए। (पृष्ठ ३५ प्रथम कॉलम, लाईन १२–१५)

(ख) उनकी प्रजाति के बारे मे हम कुछ नहीं जानते। हम यह भी नही कह सकते कि पश्चिमोत्तर भारत मे पहले से आबाद लोगो की प्रजाति से वे भिन्न थे या नहीं। पहले सोचा गया था कि आर्यभाषी लोगो ने बडी तादाद मे आकर देश पर हमला किया, परन्तु यह सिद्ध करने के लिए बहुत कम सबूत हैं। (पृष्ठ ३५ प्रथम कॉलम, लाईन २० से द्वितीय कॉलम लाईन ६ तक)

(ग) भारतीय इतिहास के इस काल को वैदिक युग कहते हैं, क्योकि इस युग के इतिहास की रचना वैदिक साहित्य के स्रोतो के आधार पर की जाती है। परन्तु पिछले ४० वर्षो मे वैदिक युग के इतिहास के लिए पुरातत्व विज्ञान के भी सबूत मिले हैं। (पृष्ठ ३५ द्वितीय कॉलम, लाईन १२–१७)

जहा तक वैदिक साहित्य के स्रोत अर्थात पवित्र वेदो का प्रश्न है, रोमिला थापर या अन्य इतिहासज्ञ इतने सक्षम नहीं हो सकते कि प्राचीन ऋषियो, महर्षियो और सन्तो की भावनाओ, विचारों और उद्देश्यो को समझ सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों को उचित व सही सन्दर्भ मे समझने का आह्वान किया था। यहा तक कि उन्होने कुछ सस्कृतज्ञो द्वारा वेद के गलत भाष्यो का भी खण्डन किया।

जहा तक पुरातत्व विज्ञान के सबूतो का सम्बन्ध है, लेखिका ने केवल कुछ खास प्रकार के बर्तनो के पाए जाने के आधार पर आर्यों को आक्रमणकारी कहा है, जो आक्रमण कभी हुआ ही नहीं।

(घ) एक अन्य स्थान पर वह स्पष्ट स्वीकार करती है कि हडप्पा सस्कृति के लोगो के बारे मे अधिकतर जानकारी हमे उनके निवासस्थलो की खुदाई करने से मिली है, परन्तु आर्यो के बारे मे बात ऐसी नहीं है। (पृष्ठ ३६ द्वितीय कॉलम , लाईन १०–१३)

यह प्रथम दृष्टया स्पष्ट है कि आर्यों को आक्रमणकारी कहने वाली बाते निराधार, अविश्वसनीय, मनगढन्त झूठी तथा षड्यन्त्रकारी हैं जिनका उद्देश्य केवलमात्र इस धरती के गौरवशाली इतिहास की निन्दा करना था।

हम कडे शब्दों मे इस प्रकार की बातो को उन पुस्तको मे शामिल रखने या भारतीय छात्रों को पढाए जाने की निन्दा करते हैं।

'आर्य' शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, आदरणीय तथा उत्तम। यह कोई जातिवाचक शब्द नहीं है। 'द्रविड' शब्द का भी अर्थ है ज्ञान का भण्डार। अत आर्य और द्रविड के नाम पर भेद भाव पैदा करने का प्रयास ब्रिटिश नागरिको का एक असफल प्रयास था।

तक्षशिला की स्थापना मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भाई भरत के पुत्र तक्ष ने की थी।

रामायण और महाभारत केवल किस्से कहानिया नहीं हैं अपितु वे स्थापित इतिहास है। आज तक कोई भी इनके सही होने को चुनौती नहीं दे पाया, जिनके राजाओ के इतिहास भगवद्पुराण तथा युधिष्ठिर से यशपाल तक का इतिहास "सत्यार्थ प्रकाश" मे वर्णित है।

आर्यों को आक्रमणकारी कहने वाली बातो को वेदमन्त्रो की मनगढन्त और अज्ञानता पूर्ण व्याख्या के आधार पर प्रचारित किया जाता है। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाष्य और लेखो आदि को ही प्रमाण मानना चाहिए। उनकी व्याख्याए सत्य की खोज के मार्ग पर चलते हुए योगी आचरण का फल हैं। उन्होने वेदों का गहन स्वाध्याय किया उन्होने लगभग पूर्ण भारतीय साहित्य का अवलोकन किया। काफी हद तक उन्होंने इस्लाम और ईसाईयत की विचारधारा को भी समझने के बाद अपने विचार व्यक्त किए।

श्री अरविन्द भी महर्षि दयानन्द के उन शब्दो का समर्थन करते हैं कि आर्य लोग आर्यवर्त के मूल निवासी थे जिसे अब भारत या इण्डिया कहा जाता है।

यह हास्यास्पद है कि स्वतन्त्रता के ५४ वर्ष बाद भी हमारी सरकारे इतिहास मे शामिल इन मनगढन्त बातो को हटा नहीं पाई।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) के वर्तमान निर्देशक श्री जे०एस० राजपूत का हम धन्यवाद करते हैं कि उन्होने सिख धर्म, जैन धर्म, जाटो और पवित्र वेदो से सम्बन्धित कुछ आपत्तिजनक बातो को हटाने का आदेश दिया। हम केन्द्र सरकार के मानव ससाधन मन्त्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी का भी साधुवाद करते हैं कि उन्होने इस कार्यवाही को उत्साहवर्धक सरक्षण दिया। परन्तु यह सब बहुत कम है।

हम इस प्रस्ताव के द्वारा केन्द्र सरकार को प्रतिवेदन करते हैं कि इतिहास की पुस्तकों में से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में आर्यों को आक्रमणकारी कहने वाली निराधार बातो को पूरी तरह से हटाया जाए। जो हिन्दू (आर्य) जनता के लिए अपमानजनक हैं।

हम भारत के समस्त राजनीतिक दलों को भी स्पष्ट कहना चाहते हैं कि अब बहुत हो चुका। देश की राष्ट्रवादी हिन्दू (आर्य) जनता जो लोकतान्त्रिक व्यवस्था में आज भी एक बहुत बडा मत रखती है, इन सब बातों को आगे बढाए जाना बर्दाश्त नहीं करेगी जिनके द्वारा उनके मूल अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगता है। यह हास्यास्पद और शर्मनाक है।

आर्यसमाज समग्र जन जागरण का एक सतत अभियान

- मदन लाल खुराना

आर्यसमाज बिडला लाईन्स का ६६वें वार्षिक उत्सव का समापन समारोह रविवार २ दिसम्बर, २००१ मे मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे हुए श्रीयुत मदन लाल खुराना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा ने आर्यसमाज के मच से बोलते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द के द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' एक धार्मिक सस्था तो है ही इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय समग्र जन जागरण का एक सतत् अभियान है। इस समाज की उपलब्धि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए विगत १२५ वर्षों से निरन्तर होती आ रही है। हम सबको महर्षि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलकर देश एव समाज के लिए समर्पित भाव से अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना चाहिए।

साप्ताहिक वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति पर आचार्या डॉ० अन्नपूर्णा जी ने कहा कि वेद एव यज्ञ भारतीय सस्कृति के मूल आधार स्तम्भ है समापन समारोह मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, डॉ० वेद प्रकाश गुप्ता कुलपति द्रोण स्थली देहरादून प्रमुख उद्योगपति श्री श्याम सुन्दर गुप्त, श्री गिरधारी लाल अरोडा अध्यक्ष भाजपा, कमला नगर मण्डल दिल्ली पुरोहित सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमपाल शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य एवम् डॉ० प्रेमपाल शास्त्री आर्यसमाज यमुना विहार के पुरोहित तथा प्रधान जयकृष्ण आर्य मन्त्री योगेश कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार आर्य, श्रीमती डॉ० सरोज दीक्षा हसराज कालेज एवम् स्त्री आर्यसमाज बिडला लाइन्स की प्रधाना स्वर्ण गुप्ता एव मन्त्राणि श्रीमती सुषमा एवम् आर्यसमाज बिडला लाईन्स के सभी गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में आर्य सम्मेलन

शानिवार १५ दिसम्बर, २००१ को श्रीमद् दयानन्द वेद महाविद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली मे सायकाल ४ ०० बजे से ६ ३० बजे तक आर्य सम्मेलन समारोह पूर्वक मनाया गया। इस सम्मेलन मे दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजों ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री कृष्ण लाल जी सिक्का, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा ने की तथा इसके सयोजक श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता जी थे। इस सम्मेलन मे उच्च कोटि के विद्वान और आर्य नेता सम्मिलित हुए। प्रमुख वक्ता श्री वेदव्रत शर्मा, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल, स्वामी इन्द्रवेश जी सरस्वती, प्रोफेसर धर्मवीर जी अजमेर वाले, प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री विजय गुप्ता आदि थे और श्री सत्यपाल पथिक और श्री ओमप्रकाश वर्मा के प्रभावशाली भजन हुए और अन्त में स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती महाराज ने आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम को सफल करने मे वेद महाविद्यालय के आचार्य श्री हरिदेव जी ने पूर्ण सहयोग दिया।

पृष्ठ १ का शेष भाग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व ....

वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में जनता से अपील करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जितने विशाल कार्य सम्पन्न किए उनकी तुलना मे क्या हम अपना एक भी कार्य प्रस्तुत कर सकते है। उन्होने कहा कि ऐसे महान सन्यासी के जीवन को देखकर हमें भी कुछ सकल्प करने चाहिए। इस अवसर पर शहीद मेजर डॉ० अश्वनी कुमार कण्व की स्मृति मे श्री श्रोत्रिय जी का नारियल, शाल तथा सम्मान राशि आदि भेट करके विशेष स्वागत किया गया।

वैदिक विदुषी एव सगीताचार्या बहन उज्ज्वला वर्मा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द प्रत्येक साधारण से साधारण मनुष्य के लिए भी बहुत गम्भीर प्रेरणाए प्रस्तुत करते हैं।

इस समारोह मे आचार्य प० विशुद्धानन्द जी माता शकुन्तला आर्या आदि ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया। मच का सचालन डॉ० शिव कुमार शास्त्री ने किया। समारोह मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान, श्री विमल वधावन, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, श्री राजसिह भल्ला, श्री इन्द्रदेव, पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, चौ० लक्ष्मीचन्द श्री पी० एन० आर्य, श्री सत्यानन्द जी, श्रीमती कृष्णा चड्ढा तथा रामनाथ सहगल आदि आर्यनेता भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज सी० ब्लॉक जनकपुरी की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन कार्यों पर चार विशेष ट्रैक्ट तथा एक १०० पृष्ठीय पुस्तक की हजारो प्रतिया नि शुल्क वितरित की गई।

स्वामी स्वरूपानन्द 'सरस्वती रत्न' से सम्मानित

अखिल भारतीय स्वतन्त्र लेखक मन्च द्वारा आयोजित ११ वें राष्ट्रीय सम्मेलन मे आयुर्वेदाचार्य, वरिष्ठ साहित्यकार, धर्माचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती साहित्य के क्षेत्र में योगदान 'सरस्वती रत्न सम्मान' से सम्मानित किए गए। न्यायाधीश श्री ए०के० श्रीवास्तव ने उन्हे प्रशस्ति पत्र भेंट किया। उल्लेखनीय है कि श्री स्वामी जी के द्वारा लिखित लगभग ३१ काव्य सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय 'नवहिन्द गर्ल्स सिनियर सैकेन्ड्री स्कूल करौलबाग के सभागार मे हुआ।

सारस्वत मोहन मनीषी को मातृशोक

राष्ट्रवादी भावनाओ से ओत-प्रोत कवि के रूप मे प्रसिद्ध सारस्वत मोहन मनीषी की माताजी श्रीमती भगवती देवी का देहावसान १२ दिसम्बर को हो गया। वे ८५ वर्ष की थीं और जीवन भर लगभग पूर्ण नीरोग रहीं। मनीषी जी के पिता श्री मगतराम सारस्वत (पहलवान) थे जिनका देहावसान २० वर्ष पूर्व हो गया था। उनकी माताजी की स्मृति मे शान्तियज्ञ २५ दिसम्बर को उनके गाव मे सम्पन्न हुआ। वे अपने पीछे चार विवाहित पुत्र और चार पुत्रिया सुखी जीवन व्यतीत करते छोड गई हैं। सार्वदेशिक तथा समूचे आर्यजगत की ओर से प्रार्थना है कि ईश्वर उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात) दूरभाष (०२८२२) ८७७५६

विश्व दर्शनीय यज्ञशाला के निर्माण हेतु आर्थिक सहायता की अपील

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में निर्माणाधीन यज्ञशाला में अपना योगदान देकर पुण्य के भागी बनें

ऋषि जन्मभूमि पर निर्माण की जाने वाली इस यज्ञशाला का एक विशेष महत्व है। पूरे विश्व के ऋषि भक्तो के लिए टंकारा, गुरुधाम का स्थान रखता है और समस्त आर्य जगत् की भावुक भावनाए इस स्थान से जुडी हुई हैं इसलिए आपके द्वारा दिया गया योगदान किस महत्व का होगा इसे आप अवश्य समझे।

२४ स्तम्भो से बनी यह यज्ञशाला पूर्णरूप से कक्रीट की बनी हुई होगी। इसमे ईंट अथवा प्लास्टर नाममात्र के लिए ही होगा। भूमितल से ६ फीट ऊची इस यज्ञशाला का रेखाचित्र एव काल्पनिक चित्र कम्प्यूटर द्वारा तैयार किया गया है और कम्प्यूटर इजीनियर का ऐसा मानना है कि इस आकार की यज्ञशाला पूरे विश्व मे इससे पूर्व नहीं निर्मित हुई होगी। इसे विश्वदर्शनीय बनाने हेतु और सुन्दर रूप बनाये रखने के लिए ऐसी सम्भावना है कि इसे ग्रेनाइट पत्थर से सुसज्जित किया जाएगा और स्तम्भो को खुर्जा टाइल्स से डिजाइनदार बनाया जाएगा।

आर्य जनता से अनुरोध है कि टकारा में चल रहे यज्ञशाला के निर्माण कार्य में मुक्तहस्त से अधिकाधिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/ड्राफ्ट/क्रास चैक तथा मनीआर्डर द्वारा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के नाम दिल्ली कार्यालय, आर्य समाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टकारा, जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात) को भिजवाने की कृपा करें। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपने आर्यसमाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा सम्बन्धित सस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेज कर पुण्य के भागी बनें।

टकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

: निवेदक :

ओंकारनाथ — मैनेजिंग ट्रस्टी | विद्यादेव — आचार्य | रामनाथ सहगल — ट्रस्ट मंत्री

उप-कार्यालय आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

दूरभाष ३३६३७१८, ३३६२११०, ४६६३६०७ टेलीफैक्स ४६१५९६५

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 27-28/12/2001 दिनाक २४ दिसम्बर से ३० दिसम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल- 11024/2001, 27-28/12/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

पृष्ठ ४ का शेष

हमें किस-किस देवता की कृपा दृष्टि ....

(२) प्रत्येक समृद्धि अभिमान को उत्पन्न करती है। इसलिए सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह अपने मार्गदर्शन मे रखकर कभी अभिमान की ओर अग्रसर न होने दे, क्योकि यदि हममे अभिमान आ गया तो पतन-कष्ट-हिंसा सुनिश्चित है। (३) इसलिए प्रार्थना है कि जैसे वह ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण ऐश्वर्य का स्वामी होते हुए सदा शान्त और समरस बना रहता है वैसे ही हमे भी अपनी ज्ञानप्रद तथा शान्तिपूर्ण सर्वाभिमत नीतियो से सदा निरभिमान तथा शान्त बनाए रखे ताकि हम सदा सुख-पूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

(४) यदि हम अग्नि (मार्गदर्शक) प्रभु की कल्याणी मति के अनुसार अपने प्रयत्न करते रहेगे तो (एश्वर्यप्रदाता) इन्द्र प्रभु की अनुग्रह दृष्टि हम पर बनी रहेगी।

(७) हृदयवासी प्रभु की परिचर्या करने वाले सुख में रहते हैं

यो न इन्दु पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्यां आविवेश। तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम।।

ऋ० ८-४८-१२

घौर. काण्व· प्रगाथ.। सोम·। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (पितर) पिता की पीढी के पूजनीय वृद्धजनो! (य अमर्त्य इन्दु) जा एश्वर्यप्रद अमृतमय आनन्द स्वरूप परमेश्वर (हृत्सु पीत) हृदयो मे सुरखित हुआ (न मर्त्यान आविवेश) हम मनुष्यो में प्रविष्ट है – ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८-६१) (तस्मै सोमाय) उस शान्त और आनन्दस्वरूप सोम के लिए अर्थात् उसको ध्यान मे रखकर प्रजामात्र के लिए (हविषा विधेम) हम और आप दोनो मिलकर अन्नादि भोग्यपदार्थों का दान करें और जीवनयापन के लिए स्वय भी भोग करे। ताकि (अस्य सुमतौ मृळीके स्याम) इसकी सम्मति=मार्गदर्शन मे रहते हुए, इसकी अनुग्रह बुद्धि से प्राप्त सुखमयी स्थिति मे रहे।

अर्थ पोषण – इन्दु इदिपरमैश्वर्ये, इन्दु –चन्द्र, चदि आह्लादे आनन्द स्वरूप। सोम – शान्त, सर्वोत्पादक, आनन्द स्वरूप। (इन्दु)

पितर – पिता, पितरौ, पितर–पिता की पीढी के और उससे ऊपर की पीढी के पूजनीय वृद्धजन। हविषा – हवि – हु दानादनयो, खाने-भोगने तथा देने के योग्य अन्नादि पदार्थ। मृडीकम् – मृऽसुखने।

निष्कर्ष – परमेश्वर (इन्द्र) सबके हृदय मे सदा सुरक्षित रूप मे स्थित रहता है, आप जब चाहे, उसका मार्गदर्शन (सुमति) प्राप्त कर सकते हो।

परमेश्वर अमर्त्य है न जन्म लेता है न मरता है

किन्तु हम मर्त्य= जन्म लेते हैं और श... टन पर ... ते हैं। यदि हम परमेश्वर के मार्गदर्शन (सुमति) मे चलेगे तो सुखी रहेगे। यदि उसकी सत्ता को ही स्वीकार नहीं करते तो उसके मार्गदर्शन मे भी नहीं चल सकेगे। और परिणामत दु खी होते रहेंगे।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वरभवन, खारी बावली, दिल्ली-६**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर

प्रधान	–	श्री पन्ना लाल आर्य
मन्त्री	–	श्री इन्द्रदेव साह
कोषाध्यक्ष	–	श्री भोलाप्रसाद आर्य

महिला आर्य समाज मुजफ्फरपुर

प्रधाना	–	श्रीमती मानकी देवी
मन्त्रिणी	–	श्रीमती मायादेवी आर्या
कोषाध्यक्षा	–	श्रीमती राधादेवी

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने गुरुकुल का कीर्तिवर्द्धन किया

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला-मेरठ के ब्रह्मचारियो ने श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित वेदस्मरण कार्यक्रम मे भाग लेकर गुरुकुल की कीर्ति बढाई। ब्रह्मचारी सुखराम, ब्र० रवि प्रभात, ब्र० उत्तम ब्र० विश्वेश, ब्र० सत्यकेतु एव ब्र० रवीन्द्र ने सामवेद व यजुर्वेद सुनाकर आठ हजार रुपये का पुरस्कार प्राप्त किया।

उक्त कार्यक्रम मे गुरुकुल प्रभात आश्रम के सबसे अधिक ब्रह्मचारियो ने भाग लिया एव सभी ने सफलता प्राप्त की। यह कार्यक्रम श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर के सस्थापक स्वामी सच्चिदानन्द योगी की स्मृति मे आयोजित किया गया था। वेद विद्यालय के आचार्य श्री हरदेव जी ने गुरुकुल की प्रतिभाओ की प्रशसा की और इन प्रतिभाओ के निर्माण मे लगे गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का धन्यवाद एव कृतज्ञता-ज्ञापन किया।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने भी ब्रह्मचारियो की प्रस्तुति से प्रभावित हो व्यक्तिगतरूप से ब्रह्मचारियो को पुरस्कृतकर उनका उत्साहवर्द्धन किया।

इसी प्रसग मे यह भी ध्यातव्य है कि गुरुकुल प्रभात आश्रम के एक विशेष कार्यक्रम मे श्रीमान् राजेन्द्र कौशिक, पूर्व प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय, छपरौली ने ब्र० शिवराज का सामवेद स्मृति के आधार पर शाल व पाच सौ रुपयो के नकद पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०० विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७७ सोमवार, १२ फरवरी से १८ फरवरी, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज द्वारा भूकम्प राहत कार्यों को विश्वव्यापी मान्यता

विशाल अनाथालय तथा विधवाश्रम योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ

कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली द्वारा आर्यसमाज के कार्यों की सराहना

"आर्यसमाज एक सक्षम संस्था है तथा यह पवित्र सस्था अत्यन्त सुव्यवस्थित तरीके से परोपकारी कार्यों को सम्पन्न कर सकती है।"

यह महान् उद्गार केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली ने गान्धीधाम में काण्डला पोर्ट ट्रस्ट तथा सिन्धु पुनर्वास कारपोरेशन के उच्चाधिकारियो की एक विशेष बैठक में व्यक्त किए, जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा गुजरात मे राहत कार्यों को सम्पन्न कराने वाले आर्य नेताओ सर्व श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल श्री वाचोनिधि आर्य, आचार्य आर्य नरेश तथा के० सूद आदि को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा पर गान्धीधाम आर्यसमाज द्वारा एक विशाल अनाथालय तथा विधवा आश्रम की भव्य योजना बनाई जा रही है, जिसके लिए श्री अरुण जेटली ने जहाजरानी मन्त्री होने के नाते अपना पूर्ण सहयोग एव प्रोत्साहन देने का आश्वासन दिया है।

श्री अरुण जेटली ने इस बैठक मे कहा कि आर्यसमाज का अपना एक विशाल एव महान इतिहास है ऐसे परोपकारी कार्यों में आर्यसमाज सदैव आगे बढकर कार्य करता रहा है अत आर्यसमाज के इन कार्यों में हर सम्भव सहयोग देना हमारा कर्त्तव्य भी है।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि आर्यसमाज ने मानवीय एव परोपकारी कार्यों द्वारा सदैव राष्ट्रवादी अवधारणा को क्रियान्वित करके दिखाया है।

इस महत्त्वपूर्ण बैठक को सम्बोधित करते हुए आर्य नेता श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्यसमाज का विशाल एवं कर्त्तव्यनिष्ठ सगठन है जिसकी लगभग आठ हजार शाखाए समूचे विश्व में फैली हुई हैं इसी विशाल सगठन और इसके अनुशासन के द्वारा ही सदैव बडे से बडा कार्य भी बिना किसी बाधा एव परेशानी के सम्पन्न कर लिया जाता है। उन्होंने श्री अरुण जेटली तथा बैठक मे उपस्थित अन्य सभी सरकारी अधिकारियो के समक्ष सकल्प व्यक्त किया कि इस महान सगठन की अपनी शक्ति ही इस उपकार कार्य के लिए एक सूत्र मे बध कर कार्य करने मे सक्षम होगी।

श्री वधावन ने समूचे आर्यजगत को आह्वान किया है कि तन-मन-धन से शीघ्रातिशीघ्र इस परोपकारी कार्य को सम्पन्न करने में यथायोग्य सहयोग करें।

उन्होने कहा कि नि स्वार्थी व्यक्तियों और व्यक्तियों के समूह ईश्वरीय ताकत के निकट होते है अत उस बल के माध्यम से ही महान कार्य सम्पन्न होते है।

इससे पूर्व दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री रामफल बसल वरिष्ठ अधिवक्ता के साथ श्री अरुण जेटली से मिलकर उनके साथ पूरी योजना के क्रियान्वयन पर विचार विमर्श कर चुके थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार गान्धीधाम और भुज के निकट'क्षेत्रों मे आर्यसमाज द्वारा भूकम्प पीडितो के लिए राहत कार्य पूर्ण श्रद्धा के साथ बडे सुन्दर समन्वय का प्रदर्शन करते हुए चलाए जा रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी भी ऋषि जन्म स्थल टकारा का दौरा करके आए है। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान स्वामी सुमेधानन्द, कै० देवरत्न तथा उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य अलग-अलग दलो के साथ राहत कार्यों का निरीक्षण एव सहयोग करने के लिए दौरा कर चुके हैं। वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने भी भुज, गान्धीधाम, अजार, भचाऊ के साथ-साथ टकारा के विभिन्न स्थलों को भी देखा। उनके साथ श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल प्रधान तथा श्री वाचोनिधि आर्य मन्त्री आर्यसमाज गान्धीधाम तथ' श्री राजेन्द्र विद्यालकार मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल भी थे।

भुज आर्यसमाज के प्रधान श्री वी०एच०पटेल ने बताया कि उसी दिन से लगातार दोपहर और रात्रि का लगर भुज आर्यसमाज द्वारा चलाया जा रहा हे जिसमे हजारो की सख्या मे स्थानीय जनता भोजन ग्रहण करती है। समाज के कोषाध्यक्ष श्री मनुभाई की पत्नी रसीला बेन (३५) तथा पुत्र दीप कुमार (६) की दु खद मृत्यु भूकम्प के बाद उनका मकान टूट जाने से हुई जबकि एक अन्य पुत्री दर्शना (१३) को लगभग ८ घण्टे बाद बेहोशी की हालत मे निकाला गया था अब सकुशल है। भूकम्प वाले दिन भुज आर्यसमाज का तीन दिवसीय उत्सव प्रारम्भ हो रहा था तथा नौ बजे ध्वजारोहण का समय निर्धारित था। मनुभाई का निवास भुज आर्य समाज मन्दिर के सामने वाली बिल्डिगो मे था। मनु भाई प्रात काल से ही परिवार सहित उत्सव मे सवा कार्य सम्पन्न कर रहे थे। उनकी पत्नी कुछ समय पूर्व ही अपने बच्चो को लेकर अपने निवास पर गई थी जिससे उनके कपडे आदि बदल कर ध्वजारोहण के समय उत्सव मे शामिल हो सकें।

शेष भाग पृष्ठ ५ पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई के लिए

रेल किराये में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डाइरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र सख्या **टी सी २/२०६६/६८/६** दिनाक १४ फरवरी, २००१ द्वारा मुम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली गोरखपुर, गुवाहाटी, चेन्नई, सिकन्दराबाद, भुवनेश्वर, हाजीपुर अलाहाबाद, जयपुर, बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है कि **२३ से २६ मार्च २००१** की तिथियों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में भाग लेने वाले **यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियों में द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर** के किराये में **५० प्रतिशत छूट** के अधिकारी होंगे। यह छूट **केवल ३०० कि०मी० से अधिक** की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ **किन्ही ३० दिनों** में उठाया जा सकेगा जिसमें महासम्मेलन की तिथिया (२३ से २६ मार्च, २००१) शामिल हो।

यह छूट प्राप्त करने के लिए **आर्य यात्री तत्काल सार्वदेशिक सभा कार्यालय** (फोन न० **३२७४७७१, ३२६०६८५**), **सार्वदेशिक प्रेस** (फोन न० **३२७०५०७, ३२७४२१६**), तथा **श्री विमल वधावन (नि० ७२२४०६०)** पर अपने **नाम, आयु, स्टेशन** जहा से यात्रा आरम्भ करनी है का विवरण **अपने पते सहित** लिखवा दे।

यह **सूचना** मिलने पर तत्काल आर्य'यात्री को सभा मन्त्री **श्री वेदव्रत शर्मा** द्वारा **हस्ताक्षरित** एक **प्रमाण-पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण-पत्र प्राप्त होने** पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत **करके ५० प्रतिशत छूट** वाले **रेलवे टिकट** प्राप्त कर पाएगे।

आर्यजन महर्षि दयानन्द बोधोत्सव का महत्व समझें

– पं० नन्दलाल 'निर्भय' सिद्धान्ताचार्य

हमारे जीवन मे जो महत्व श्रावणी उपाकर्म विजयदशमी दीपावली और होली का है वही महत्त्व दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) का है किन्तु हम इस पावन पर्व का महत्त्व समझ नहीं पा रहे है। हम आर्य जन इस पर्व पर हर वर्ष उत्सव, सम्मेलनो का आयोजन करते हैं महर्षि दयानन्द की, आर्यसमाज की जय के नारे लगा-लगाकर आकाश को गुजा देते है और फिर अपने-अपने घरो को आ जाते हैं तथा इसी मे अपने कर्त्तव्य पालन की इतिश्री समझ कर चुप बैठ जाते है। आर्यो, थोडा विचार करो क्या इस तरह महर्षि का सकल विश्व को आर्य बनाने का स्वप्न साकार हो पाएगा ? क्या इस प्रकार आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य ससार मे स्थापित हो पाएगा ? मैं कहता हू, कभी नहीं।

सारा ससार अच्छी तरह जानता है कि महर्षि दयानन्द महाराज ने अकेले होते हुए भी सारे विश्व मे तहलका मचा दिया था। वे वेद प्रचार के हामी थे। राणा सज्जन सिह द्वारा सम्पत्ति का लालच, राव कर्ण सिह की तलवार और अग्रेजो का आतक उन्हे भयभीत न कर सके। स्वामीजी ने अपने देवगुरु स्वामी विरजानन्द दण्डीजी को जो वचन दिया था वे उस वचन का जीवन भर पालन करके निर्भयता पूर्वक वेद प्रचार करते रहे। नादान लोगो ने उन पर गोबर फैंका, गालिया दीं, पत्थर मारे, बार-बार विष पिलाया किन्तु वे वेदपथ से कभी विचलित नहीं हुए। स्वामीजी ने जगन्नाथ रसोइया से कहा था – "जगन्नाथ मुझे अपने मरने की कोई चिन्ता नहीं है। यह नश्वर शरीर तो एक दिन नष्ट होना ही है किन्तु इस शरीर मे बैठा हुआ जीवात्मा अमर है। मुझे दु:ख यह है कि मैंने वेद प्रचार के पावन कार्य को प्रारम्भ किया था वह पवित्र कार्य अधूरा ही रह गया।

तूने लालच मे आकर यह दूषित कार्य किया है किन्तु तुझे कुछ भी न मिलेगा। मैं तुझे पाच सौ रुपये दे रहा हू तू इन्हे लेकर नेपाल की सीमा मे चला जा। अन्यथा लोग तुझे जान से मार डालेगे और मेरे राकने से भी नहीं रुकेगे। मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण तू मारा जाए।' ऐसे महा-- थ देव दयानन्द महाराज। अब ससार मे कोई उन जेसा त्यागी, तपस्वी, धर्मात्मा, विद्वान नहीं है। आज उन जैसे महात्माओ की विश्व को जरूरत है।

आर्यो जरा ध्यान से देखो क्या ऐसी कोई सभा सस्था है जहा धन, सम्पत्ति, पदो पर कलह मुकदमे बाजी नहीं है। हम आजादी के त्रेपन वर्ष पश्चात भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाए, देव वाणी सस्कृत दम तोड रही है, ससार मासाहार की ओर तेजी से बढ रहा है। प्रतिदिन ऋषियो की भूमि भारत मे एक लाख से ज्यादा गौ आदि उपकारी पशु, पक्षियो की हत्या हो रही है और मास विदेशो को भेजा जाता है। हाय हन्त।

हम भाषण देने मे सबसे आगे हैं और काम करने में बहुत पीछे। पदो का लालच, जन्म जाति का रोग हमें घुन की तरह खा रहे हैं। महर्षि देव दयानन्द के जीवन से हम कुछ नहीं सीख रहे हैं। सम्मेलनो मे मासाहारी, शराबी राजनेताओ का स्वागत करना हमन पेशा बना लिया है। इसलिए जनता हमारी हसी उडाती है। अगर आप सकल ससार को आर्य बनाना चाहते हो तो स्वय आर्य बनो तथा निम्नलिखित दस सूत्रो को अपना लो।

१ आर्य सभाओं, समाजों के पदाधिकारी ईमानदार हों

प्राय यह देखा जाता है कि आर्य समाजो और सभाओ मे धनवानो को प्राथमिकता देकर निकम्मे लोगो को मन्त्री प्रधान आदि उच्च पदो पर बैठा दिया जाता है जो पद पाकर गलत काम करते हैं। अत विद्वान्, ईमानदार व्यक्तियो को ही उच्च पदो पर बैठाना चाहिए।

२. वेद प्रचारक विद्वान्, चरित्रवान हो -

आर्य प्रचारक विद्वान, चरित्रवान और निष्ठावान होने चाहिए जा जनता को वेदो का ज्ञान भली प्रकार दे सके। उपदेशको का व्यवहार भी अच्छा होना चाहिए। जो जनता को वेदो का ज्ञान भली प्रकार दे सके। उपदेशको का व्यवहार भी अच्छा होना चाहिए।

३ सभी आर्यजन स्वाध्यायशील बनें -

पहले आर्य समाजी परिश्रमी स्वाध्यायशील होते थे जो अडोस-पडोस मे आर्यसमाज का प्रचार भली प्रकार करते थे। किन्तु आज ऐसे व्यक्ति भी मन्त्री, प्रधान बन जाते हैं जिनको आर्य समाज के नियम भी याद नहीं होते। अत आर्यो को रोजाना स्वाध्याय करना चाहिए।

४ प्रत्येक आर्य अपनी सन्तान को गुरुकुल में पढाए

आर्य लोग बात तो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की करते हैं किन्तु अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में पढाते हैं जिससे वे आर्य समाज से दूर चले जाते हैं। अत हमे बच्चो को गुरुकुल मे पढाना चाहिए।

५. हमारी वेषभूषा भारतीय हो

आजकल आर्यजन कोट, पेन्ट, टाई का प्रयोग करते है जो गुलामी के प्रतीक हैं। हमें भारतीय वेषभूषा धोती, कुर्ता, पगडी का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए।

६. हमारा खानपान शुद्ध सात्विक हो

ईश्वर ने मानव को शाकाहारी बनाया है किन्तु बहुत से नासमझ व्यक्ति अण्डे, मास, शराब आदि अभक्ष पदार्थों का सेवन करते है जो हमारी बुद्धि का नाश करते हैं। अत हमे अन्न, फल, दूध आदि पदार्थो का ही सेवन करना चाहिए क्योकि कहा है "जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन और जैसा पीए पानी, वैसी होवे वाणी।"

७. हमारी वाणी में माधुर्य और हमारा व्यवहार उत्तम हो

हम जहा भी कहीं रहते है, हमारा व्यवहार उत्तम होना चाहिए तथा हामरी वाणी मे मधुरता होनी चाहिए जिससे पडोसियो पर अच्छा प्रभाव पडे तथा वे आर्यसमाज को अपना सके।

८ अपने नामों के साथ जन्म जाति सूचक शब्द न लगाएं

महर्षि दयानन्द महाराज ने ससार मे आर्य, अनार्य दा प्रकार के व्यक्ति माने है किन्तु हम अपने नामो के साथ जन्म जाति सूचक शब्द लगाकर वर्गवाद को बढावा देते है जो सर्वथा अनुचित है। अत हमको जन्म जाति सूचक शब्द नहीं लगाने चाहिए।

९ आर्यों को पदो का लालच नहीं करना चाहिए

आर्य समाजो मे बहुत से व्यक्ति पदो पर झगडते रहते हैं जो मानवता के विरुद्ध है। हमे शुभ कर्म करने मे विश्वास रखना चाहिए, सम्मान तो काम करने वालो को स्वयमेव मिल जाता है। हमे स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम जैसा त्यागी तपस्वी बनकर आर्यसमाज की सेवा करनी चाहिए।

१० प्रत्येक आर्य अपने घर में एक गऊ अवश्य पाले

महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम गोकरुणा निधि नामक पुस्तक लिखी थी तथा राव युधिष्ठिर से मिलकर रेवाडी (हरियाणा) मे गऊशाला खुलवाई थी, जो अभी भी चल रही है। इसलिए हमें भी गऊ भक्त बनकर गऊ माता की सेवा करनी चाहिए।

प्रिय आर्यो, अगर आपने उपरोक्त दस सूत्रों को अपना लिया तो कल्याण हो जाएगा और सकल ससार आर्य बन जाएगा। यही हमारी महर्षि दयानन्द जी महाराज को सच्ची श्रद्धाजलि मानी जाएगी। अन्त में मेरी आपसे पुन यही प्रार्थना है –

आर्य वीरो, कर्म क्षेत्र में, एक साथ मिल कदम बढाओ।
करो वेद प्रचार जगत में, ओइम् ध्वजा जग में फहराओ।।

धर्म-कर्म को, सच्चाई को, भूल चुकी है दुनियां सारी।
आपा-धापी मची हुई है, आतंकित हैं सब नर नारी।।

मानवता दम तोड़ रही है, दानवता का जोर यहां है।
पनप गई रावण की सेना, मारो-काटो शोर यहां है।।

जगत गुरु ऋषि दयानन्द के, वीर सैनिकों, धर्म निभाओ।
गांव-गांव में नगर-नगर में, पावन आर्यसमाज बनाओ।

– ग्राम व डाकघर – बहीन जिला फरीदाबाद

महर्षि का जीवन-लक्ष्य

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ग्रीष्म के प्रारम्भ मे केदारघाट से चलकर रुद्रप्रयाग आदि स्थानो मे घूमते हुए अगस्त्य मुनि की समाधि पर पहुचे, फिर लौटकर केदारनाथ वास कर गुप्तकाशी पहुचे। गुप्तकाशी से गौरी कुण्ड, भीमगुफा होते हुए फिर केदारनाथ और दूसरे आकाश स्पर्शी शैल शिखरो मे गए, परन्तु किसी महात्मा का साक्षत् न हुआ। इसके बाद स्वामीजी तुगनाथ की चोटी पर चढे परन्तु मूर्त्तिया और पुजारियो का जमघट देखकर उतर आए। तलहटी मे पहुच कर वह ओखी मठ पहुचे।

मठ मे रात व्यतीत करने के बाद मठ का निरीक्षण किया। मठ का मुख्य महन्त स्वामीजी के ज्ञान और गुण पर मोहित हो गया और उन्हे शिष्य बन जाने की प्रेरणा देता हुआ बोला– **"यदि हमारे शिष्य बन जाओ तो गद्दी के स्वामी हो जाओगे। लाखों रुपयों की सम्पत्ति तुम्हारे हाथ आ जाएगी, तुम महन्त बन जाओगे, तुम्हे मान प्रतिष्ठा सब सुख मिल सकेगा।"**

ओखीमठ के महन्त के प्रलोभन भरे प्रस्ताव को ठुकराते हुए महाराज ने कहा– **"तुम्हारा यह प्रलोभन व्यर्थ है। मेरे पिताजी की सम्पत्ति आपकी पूजा पाठ के पाखण्ड से एकत्र की पूंजी से कहीं अधिक है, जब मैं उसे काष्ठ-लोष्ठ समान त्याग आया हूं, तो आपका धन-धन्य मुझे नहीं मोह सकता। जिस उद्देश्य से प्रेरित हो मैंने संसार के सुख छोडे, धन-धन्य से भरा पिता का घर छोडा, मैं देखता हूं, उस उद्देश्य पर न तुम चलते हो और न उसका तुम लोगों को ज्ञान है, ऐसे में मैं तुम्हारा चेला क्या बनूंगा, यहां रहना भी असम्भव है।"**

लक्ष्मी के प्रलोभन को ठुकराने पर महन्त बोला– **"अच्छा बताइए आपका उद्देश्य क्या है? किस वस्तु की खोज में इतना भटे रहे हो?"** उत्तर मे स्वामीजी ने कहा– **"मैं सत्य योग विद्या और मोक्ष चाहता हूं। जबतक यह उद्देश्य सिद्ध न होगा, तबतक तप करता हुआ मानव मात्र के कर्त्तव्य स्वदेश का उपकार करता रहूंगा।"**

महन्त बोला – "यह अच्छी बात है, कुछ दिन यहीं निवास करो।" बातचीत मे कुछ सार न देखकर स्वामीजी उस समय मौन रह गए, परन्तु अगले दिन प्रात ओखी मठ छोडकर जोशी मठ चले गए। वहा संन्यास आश्रम की चौथी श्रेणी के अनेक महाराष्ट्री सन्यासी थे वहां कई योगीजन भी मिले। स्वामीजी ने उनके सत्संग से कई भेद जाने और साधु-सन्तों से परमार्थ विषयक चर्चा की।

– नरेन्द्र

सच्चे धर्म के आधारः मर्यादा की महत्ता

सत्य बृहदुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। *अथर्व १२।१*

महान् सत्य, उग्र अनुशासन, दीक्षा, तप, वेदज्ञान तथा यज्ञ ये ही पृथ्वी के आधार हैं।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। *अथर्व १२।१।१२*

भूमि मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हू

ध्रुवा भूमिं पृथिवीं धर्मेण धृताम्।।

ध्रुवा भूमि पृथ्वी को धर्म से धारण करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुशासन एवं मर्यादा अपेक्षित

नई सहस्राब्दी एव नई शती मे एक अरब की जनसख्या वाले भारत राष्ट्र मे सहस्राब्दी की पहली जनगणना प्रारम्भ हो गई है तो विधि की विडम्बना देखिए कि नए वर्ष के प्रारम्भ मे ही देश के दो भूभागो मे प्रकृति और आस्था के दो सगमों का अवतार भी आया। गणतन्त्र की परेड की शुभवेला मे गुजरात मे भीषण भूकम्प आया, जिसमें हजारो व्यक्ति मारे गए तो हजारो घायल हो गए। हजारो मकान ध्वस्त हो गए। इन्हीं दिनों प्रयागराज इलाहाबाद मे चार शाही स्नान हुए, जहा कोटि-कोटि जनो ने नदियो के सगम मे डुबकी लगाई। गुजरात मे भीषण भूकम्प आया, कीमती घण्टों और दिनो के बाद प्रशासन जागा, अन्तर्राष्ट्रीय और जनता ने खुले दिल से सहयोग का हाथ बढाया। भारत की राष्ट्रीय आय का ११ प्रतिशत एव राष्ट्रीय औद्योगिक विनियोग का पाचवा भाग देने वाले इस प्रदेश का उद्योग केवल छोटी क्षतियो के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से सुरक्षित बच गई है। यद्यपि गुजरात चैम्बर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज ने भूकम्प से हुई क्षति २०,००० से २५,००० करोड रु० आकी है और यह क्षति गुजरात शासन की कुल वार्षिक आय से अधिक है, यह भी अनुमान है कि कच्छ में भौतिक-सामाजिक पुनर्निर्माण पर ५२५० करोड रु० व्यय आएगा और कच्छ से बाहर की क्षति १५०० करोड रु० है, परन्तु वास्तविक क्षति की भी तस्वीर उतनी भयावह नहीं है, जितनी खींची गई थी, समझा गया था कि भारतीय अर्थव्यवस्था मलबे मे दफन हो जाएगी, यह ठीक नहीं है। हीरों के व्यापारी महेन्द्र महेता का आकलन है – हीरों की कटाई करने वाले उद्योग को कोई प्रत्यक्ष क्षति नहीं पहुची, इसी तरह जिले के दूसरे सबसे बडे उद्योग डीजल पम्पो का उद्योग भी क्षति से बच गया है। गुजरात भारत का दूसरा सबसे बडा औद्योगिक क्षेत्र है, माल यातायात की देरी से हुई क्षति का भी सामना किया जा सकता है। यह ठीक है कि प्रदेश के विद्युत और सचार माध्यम भग हो गए थे, परन्तु ये दोनो माध्यम सजीव हो उठे हुए हैं। ठीक है गुजरात के भग्नावशेषो मे मलबा कीचड और मानवीय मूर्खता दफन है। एक पीढी पर मार पडी है ४० हजार से अधिक ने प्राण गवाए उससे भी ज्यादा शायद दुगने घायल हो गए, परन्तु कुछ तथ्य याद रखने होगे।

तरल पृथ्वी ने तीन मिनटो मे बडी-बडी अट्टालिकाए और सपने ताश के पतो की तरह ध्वस्त कर दिए, सैकडो छात्र गणतन्त्र दिवस के वेला मे राष्ट्रगान गाते-गाते सिधार गए, लाखो लोग भिखारी और अकिचन हो गए। सौभाग्य से आशा की जोत भी जली। दुर्घटना के १०० घण्टे बाद भी बच्चे मलबे से जीवित निकाले गए। लोगो ने अपने निकटस्थो का अन्तिम सस्कार किया। सकट के क्षणों में सामान्य जनों, अकिचन नागरिकों, व्यापारियो ने सयम, धन और सामूहिक स्नेहबन्धन का सबूत दिया। सहायता सामग्री के यातायात की व्यवस्था के लिए उचित परमिट अधिकारी वर्ग ने समय पर दिए। इसी के साथ इस भूकम्प ने प्रकृति और मानव के दो स्वरूप भी उजागर कर दिए। गुजरात मे भूकम्प का त्रासदी से जान-माल की सर्वाधिक क्षति उन अट्टालिकाओं और बस्तियो मे हुई जो भवनो की मानक सहिता को ठुकरा कर गैरकानूनी ढग से बनाए गए थे, पुरानी सब इमारते और मानक सहिता मानन वाला पूरा हरिनगर पुराने मकानो और परम्परा से बनाए गए छप्पर और कुटीर अघात खडे रहे। इतना ही नहीं, पुरातत्व विभाग के कर्मचारियो के लिए बने नए शिविर ध्वस्त हो गए, परन्तु ५००० वर्ष पुरानी इमारत को खरोच भी नहीं आई। स्पष्ट है कि ईमानदारी से उचित मानदण्ड-मर्यादा पालन करने वाली इमारते और घर-बस्तिया सुरक्षित बन गईं। गुजरात मे प्रकृति द्वारा लाए भूकम्प ने एक ओर विध्वस किया तो वर्षों के बाद भूकम्प के तुरन्त बाद वहा सिन्धु नदी मे भूगत स्त्रोत पुन भूतल पर नदी रूप में प्रवाहित हो गए। यह सम्भवत महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गाधी एव हजारो स्वातन्त्र्य सेनानियो के बलिदान और उत्सर्ग का पुण्यप्रताप है कि खारे पानी की जगह स्वच्छ पेयजल ने उस पुण्यभूमि मे प्राणो का नया जीवन-सचार कर दिया है। गुजरात के साथ नदियो के पवित्र सगम पर हुए महाकुम्भ के दिनों मे अनुशासन और मर्यादा की एक झाकी दिखाई दी। प्रयागराज के महाकुम्भ से पहला पाठ मिला कि यदि हम अपने आप को नियन्त्रित रखे तो कुछ भी असम्भव नहीं। यहा उत्तर प्रदेश प्रशासन के सयोजन और सन्तुलन की व्यवस्था से सम्पूर्ण मेला क्षेत्र उपक्षेत्रों और गलियारों मे बाट दिया गया था। दोनो ही किनारो पर ऊचे तटबन्ध सारे मेला क्षेत्र का निर्धारण कर रहे थे। गलियो में धातुओ की चादरो पर अस्थायी मार्गों के निर्माण ने यात्रा सरल और सुविधाजनक कर दी थी। विद्युत की आपूर्ति ५ बजे से प्रात ७ बजे तक व्यवस्थित थी। फोन-दूरभाष ठीक भाग्य कर रहे थे। मेला क्षेत्र मे दूर सचार केन्द्र भी ठीक कार्य कर रहे थे। इसी के साथ सभी आश्रमो और अखाडो के सम्मुख नदियो के प्रवाहित जल तक श्रद्धालु जनता की पहुच सुविधाजनक थी।

नदियों के सगम पर यातायात और स्नान की समुचित व्यवस्था से दूसरा पाठ यह मिला कि भारत राष्ट्र एक स्वच्छ पवित्र राष्ट्र है, उसे पश्चिमी मापदण्ड और प्रचार से बदला नहीं जा सकता। कुम्भ के विराट क्षेत्र मे कोटि-कोटि मानवता के सामूहिक स्नान से उसे बदला नहीं गया, प्रत्युत वह पूर्ण स्वच्छ रहा। हजारो महन्तो और स्वय सेवको ने पूरा मेला क्षेत्र स्वच्छ बनाए रखा। उनकी सजगता से कहीं कोई कूडा-कचडा, प्लास्टिक थैलिया नहीं रहीं। कहीं कोई गन्दगी बदबू नहीं रही। सफाई की नई-पुरानी देखभाल से सारा मेला क्षेत्र सामूहिक आनन्द-मेल-मिलाप का केन्द्र बन गया था। महाकुम्भ की इस व्यवस्था से तीसरा पाठ यह मिला कि हम विविध मान्यताओं विचारों विविधताओ के बावजूद एक सहिष्णु राष्ट्र हैं। सभी प्रकार की सामाजिक, आर्थिक जातीय क्षेत्रीय विषमताओ के होने पर भी हम एक दूसरे के साथ शान्ति से रह सकते हैं। स्पष्टतया हमारी मूल विरासत हिसा का अन्त कर सहिष्णुता के स्रोत से आप्लावित है। यहा की स्थिति से चौथा पाठ जनता के आपसी सहयोग को उजागर कर रहा था। पुलो को, कठिन हिस्सो को पार करने मे जनता एक दूसरे की मदद कर रही थी। यह भी देखते ही बनता था कि सब प्रसाद ओर खाना मिल बाटकर खा रहे थे। मानवीय सहयोग और तादात्म्य भी झाकी कुम्भ मे देखने को मिली। महाकुम्भ का पाचवा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पाठ यह मिला कि यद्यपि हम गरीब हैं, परन्तु इस गरीबी के बावजूद हम अमानवीय नहीं बने। भौतिक दरिद्रता के बावजूद हमारी एक साझी सास्कृतिक समृद्धि और विरासत है। हम निर्धनतम होने पर भी मिल जुल कर गाते हैं, हसते हैं, मिलकर नए सपने लेते हैं और साथ मिलकर एक मुल्क और जाति को सवारना चाहते हैं। इस तरह गुजरात और प्रयागराज के महाकुम्भ से जहा महा-विनाश के साथ आपसी सहयोग और मेल की झाकी दीखी वहा कुछ तथ्य हमे चेतावनी दी रहे हैं। विद्यालयो की बसो मे तेज गति और अधैर्य से दुर्घटनाए हो रही हैं। प्रतिवर्ष ३० लाख दुर्घटनाए हमारी सडको पर होती है उसी तरह तम्बाकू से सम्बन्धित बीमारियो के इलाज के लिए २५ हजार करोड रुपए खर्च किए जाते हैं। तम्बाकू उद्योग पर प्रतिबन्ध से धूम्रपान का विज्ञापन भी रुकेगा विश्व बैंक के अर्थशास्त्रियों की सम्मति है कि तम्बाकू पर की गई बचत से दूसरे उपयोगी उद्योगी-रोजगार चला कर १८ प्रतिशत अधिक रोजगार की व्यवस्था हो सकती है। भूकम्प पीडित गुजरात और महाकुम्भ पर प्रयागराज के अनुभवों से स्पष्ट है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में पूरी अनुशासन और मर्यादा से ही प्राकृतिक बाधाए एव आपसी मतभेद दूर करके ही नई सहस्राब्दी और शती में प्रगति कर सकेंगे।

चिट्ठी-पत्री

गांवों में उद्योग लगाएं

सरकार ने ग्रामीण जनता की समस्याओं के बारे में कभी उचित ध्यान नहीं दिया। गावों में विकास कार्य ठप्प हैं। पानी-बिजली की समस्याए विकराल हो रही हैं। इससे बेरोजगारी, भुखमरी बढ़ी है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण जनता रोजगार की तलाश में शहरों की ओर भाग रही है, फलत शहरों की जनसख्या भी बढ रही है। वर्षों से यह सिलसिला चल रहा है, इसी मे शहरो के चारों ओर झुग्गियों की बस्तियां बढ रही हैं, जिससे शहरो के लिए एक बडी समस्या पैदा हो गई है। यद्यपि केन्द्र और राज्यो की सरकारें अपने बजटो में ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर ६०-७० प्रतिशत धन खर्च करने की घोषणा करती हैं, परन्तु खेद है यह राशि गावो के विकास पर खर्च न होकर भ्रष्टाचार के पेट मे समा जाती है, फलत गावो मे आशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी समस्याए पैदा हो बैचेनी पैदा कर रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधीजी ने भी गावों के विकास को पहल देने की सलाह दी थी, परन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया गया, फलत गावो का विकास पूरा नहीं हुआ, उसी से ग्रामीण जनता शहरो की ओर पलायन कर रही है। सरकार गावो मे छोटे उद्योग खोले जिससे ग्रामीण जनता वहीं रोजी-रोटी कमाए और शहरों की ओर न भागे।

– मदनलाल पंजाबी, जवाहर नगर, जयपुर

सोद्देश्य शिक्षा-नीति

आजाद भारत मे भारत के भावी भविष्य को जो कुछ शिक्षा दी जा रही है, उससे छात्र असन्तुष्ट हैं। यह औपचारिक शिक्षा हम सबके लिए केवल अन्धकार पूर्ण जीवन का ही निर्माण करती है। यह शिक्षा पाने के बाद हम केवल बेरोजगारो की लम्बी पक्ति को अनन्त बनाने मे ही योगदान करते हैं। इस शिक्षा से राष्ट्र के भविष्य और राष्ट्र प्रेम के बारे मे कुछ सोचा भी नहीं जा सकता। हम एक विकसित और सुनिश्चित शिक्षा-नीति बनानी चाहिए जिसके बल पर हम युवक देश पर एक बोझ के स्थान पर राष्ट्र की प्रगति मे अपना योगदान कर सके।

– अरुण मित्तल, चर्खी दादरी, हरियाणा

ऋग्वेद से - यत्-तत् सप्तकम् (२)

क्या करने से क्या होता है

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) हे अग्रेणी प्रभो ! हमें गुणी मनुष्यों के साथ(माध्यम से) प्राप्त हो

ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासोरिशादसः।
मरुद्भिरग्न आगहि।। ऋ० १/१९/५
मेधातिथि· काण्वः। अग्निर्मरुतश्च। गायत्री।

अर्थ – (ये) जो मनुष्य (शुभ्रा) शुद्ध आचरण वाले (घोरवर्पस) तेजस्वी तथा उदार रूप वाले (सुक्षत्रास) दूसरो की कष्टो से रक्षा करने वाले तथा (रिशादस) हिसको और रोगो को नष्ट करने वाले होते हैं (तेभि मरुद्भि) उन प्राणसाधक मनुष्यो को (हे अग्ने) मार्गदर्शक प्रभो आप प्राप्त होते हैं (आगच्छति) यह आपका स्वभाव है। इसलिए ऐसा बनने के इच्छुक मुझे, आप उपर्युक्त गुण वाले मनुष्यो के साथ अथवा उनके माध्यम से (आगहि) प्राप्त हो।

अर्थपोषण – आगहि – 'लडर्थे लोट्' का लोप करके लोट् अर्थ मे प्रयोग है।

मरुत· – प्राणा – प्राणसाधकाश्चमर्त्या। सुक्षत्रा **सः** – सुगमता से क्षतो कष्टो से रक्षा करने वाले – 'क्षतात् किलत्रायते इति क्षत्र – ते सुक्षत्रास।

निष्कर्ष – सदाचारी, रौबीले, परकष्ट निवारक, आतक विनाशक प्राणवान् मनुष्यों को परमात्मा से मिलता है। अत हम वैसा बनने का प्रयत्न करते हुए, उससे साक्षात् (अनुभव द्वारा) होने की प्रार्थना करते हैं।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ में लिखा है –

यज्ञ द्वारा शुद्ध वायु रोगो का विनाश करते हे और प्रदूषित वायु सुखो को नष्ट करते हैं। अत मनुष्य को चाहिए कि यज्ञाग्नि और प्राणसाधना द्वारा बाह्य और आन्तर वायु को शुद्ध करके सुख प्राप्त करे।

(२) मन से यज्ञ भावना व्याप्त करने वाले मनीषी तीनों सेवनों में सात रत्न प्राप्त कर लेते हैं

ये इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी।
शमीभिर्यज्ञमाशत।। ऋ० १/२०/२
ते नो रत्नानि धत्तन त्रिरा साप्तानि सुन्वते।
एकमेकं सुशस्तिभिः।। ऋ० १/२०/७
मेधातिथिः काण्वः। ऋभवः। गायत्री।

अर्थ – (ये) जो मेधावी बनने का इच्छुक निरन्तर साधना द्वारा हरी (वचोयुजा मनसा ततक्षु) अपने ज्ञानेन्द्रिय रूप और कर्मेन्द्रिय रूप अश्वों को मनन पूर्वक वेदवाणी द्वारा निर्दिष्ट कर्मों में नियुक्त करते हैं, वे (शमीभि) अपने शान्तिमय कर्मों द्वारा (यज्ञ आशत) यज्ञ भावना और यज्ञस्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

(ते) यज्ञ भवना से चलकर यज्ञ स्वरूप परमात्मा को अपने मे व्याप्त=अनुभव करने वाले मेधावी जन (सुशस्तिभि) अपनी प्रशस्त क्रियाओ द्वारा (एक एक) एक-एक करके (साप्तानि रत्नानि) आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविण और ब्रह्मवर्चस् रूपी सातों रत्नो को (सुन्वते) अभिषव क्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं। (ते) वे जीवन मे सफल रहने वाले मनीषी (न) हममे ये इन सात रत्न (त्रि धत्तन) तीनो सेवनों में अर्थात् शैशव, यौवन और वार्धक्य में क्रमश धारण करें।

निष्कर्ष – यज्ञ भवना से ओत-प्रोत साधक इन सात रत्नो को क्रमश प्राप्त करते हैं। प्रथम सवन या शैशव काल में वीर्य रक्षा तथा प्राण साधना द्वारा, दीर्घायु तथा दृढ प्राणवान् बनने को आयोजन करते हैं। द्वितीय सवन या यौवन मे उत्तम सन्तान, गाय अश्वादि पशु तथा सुयश का भोग करते हैं और तृतीय सवन या वार्धक्य मे जीवन यापन मे लिए धन की व्यवस्था करके ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति की साधना मे रत रहते हैं।

इन मेधावी साधको से ही प्रार्थना की गई हैं, वे हमे भी सातो रत्नों को प्राप्त करने वाला बनाए। त्रि – त्रिवार त्रिषुसवनेषु क्रमशो वा।

अर्थपोषण – ऋभव – ऋत मे रहने वाले मेधावी, ऋते भवन्तीति ते, ऋभु मेधा विनामसु। नि० ३–१५। मेधातिथि – मे-स्वस्य धा– धारक कृत्येषु अतति निरन्तर प्रयतते – अत सातत्यगमने। शमीकर्मनाम, नि० २–१। धत्तन।

(३) हे अश्विनौ ! हमारा जीवन सत्य और मधुर वाणी से ओतप्रोत करें।

या वां मधुकशा मधुमती - अश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। ऋ० १/२२/३
मेधातिथिः काण्वः। अश्विनौ। पिपीलिका मध्या निचृद् गायत्री।

अर्थ – हे (अश्विनौ) प्राणापान साधना मे रत गुरुओ और उपदेशको तथा उनसे सीखकर साधना मे रत मेरे प्रणापानो ! (वा या मधुमती) आपकी जो अत्यन्त मधुर और (सूनृतावती कशा) सुन्दर, कमियो- दु खो को दूर करने वाली सत्य वाणी है (तया यज्ञ मिमिक्षतम्) उस वाणी से हमारा यह जीवन यज्ञ सींच दे अर्थात् हम सदा सुन्दर मधुर सान्त्वनाप्रद और सत्य वाणी ही बोलें।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का यह भावार्थ लिखा है–

उपदेश के बिना किसी मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि नहीं हो सकती, अत मनुष्य उत्तम आचरण योग्य बातो का कथन-उपदेश तथा श्रवण निरन्तर करते रहें। लगभग यही बात १/२२/१६ के भावार्थ मे कही है– कोई मनुष्य, विद्वानों के उपदेश के बिना, सृष्टि विद्या का बोध यथावत् नहीं कर सकता।

(४) मन व हृदय और भूत व वर्तमान का ज्ञाता वरुण हमें सत्पथगामी करें

वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पततताम्।
वेद नावः समुद्रियः।। ऋ० १/२५/७
अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वां अभिपश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा।। ऋ० १/२५/११
स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्।
प्र ण आयूंषि तारिषत्।। ऋ० १/२५/१२
शुनः शेप आजीगर्तिः (देवरातः)। वरुणः। गायत्री।

अर्थ – सुख की कामना से विषयों के गर्त में पडा हुआ मानव (शुन शेप आजीगर्ति) जब इन विषयों से ऊबकर दिव्य गुणों की राह पर चलकर (देवरात) बनता है, तब वह इस मन्त्र का द्रष्टा या ऋषि बनता है।

(य) ऐसा जो मानव (अन्तरिक्षेण पततां पद वेद) अन्तरिक्ष मे उडने वाले पक्षियों की तरह अन्तरिक्ष में विचरने वाले प्राणो तथा वेद के शब्द को जानने लगता है और (समुद्रिय नाव. वेद) समुद्र में चलने वाली पनडुब्बियों की तरह मानव हृदय मे चलने वाली स्तुतियों को जान लेता है। (अत) इतना ही नहीं, इससे आगे बढकर जो (चिकित्वान्) ज्ञानी पुरुष (विश्वानि अद्भुता) विश्व की सम्पूर्ण अद्भुत रचनाओं को अर्थात् (कृतानि या चकर्त्वा) भूतकाल की और भविष्य मे होने वाली घटनाओं को (अभिपश्यति) सम्पूर्ण रूप मे देखता है, अर्थात् सर्वज्ञ-सा बन जाता है। मनोऽन्तरिक्षलोक। माश १४/४/३/६१

(स आदित्य सुक्रतु) उत्तम सकल्पों प्रज्ञानों और कर्मोंवाला परमेश्वर का सखा जीव अथवा जीव में व्याप्त परमेश्वर (विश्वाहा न सुपथा करत्) हमे सदा सन्मार्ग पर चलाए और (न आयूषि तारिषत्) हमारे जीवन दीर्घजीवी बनाए।

स्वामी दयानन्द ने ११-१२ मन्त्रो का भवार्थ निम्न टिप्पणी से प्रस्तुत किया है –

जो विद्वान् अपने से पूर्व के विद्वानो के कर्मों का अध्ययन कर, अनुष्ठान योग्य कर्म करता है, वह सर्वाभिद्रष्टा बनकर सबके लिए उपकारक उत्तम कर्म करके, सबके साथ न्याय करता है।

ऋ० १/२५/११

जो मनुष्य जितेन्द्रिय से दीर्घायु होकर धर्ममार्ग का अनुसरण करते हैं, उन्हे जगदीश्वर आनन्द युक्त करता है। ऋ० १/२५/१२

अर्थ के सम्बन्ध मे स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के 'आदित्य' शब्द का अर्थ 'विनाशरहित परमेश्वरों जीव कारण रूपेण प्राणों वा' किया है। यह सकेत है कि मनुष्य अपनी आवश्यकता और बुद्धि के अनुरूप किसी भी मन्त्र का अर्थ चाहे परमेश्वर परक करे या जीवपरक।

(५) सर्वप्रेरक व सर्वसुख प्रदाता हमारे लिए भी सुख की वर्षा करे

सं घा न सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः।
मीढ्वां अस्माकं बभूयात्।। ऋ० १/२७/२
शुनः शेप आजीगर्तिः। अग्निः। गायत्री।

अर्थ – (य अग्नि) जो मार्ग दर्शक प्रभु (सूनु) सबका प्रेरक, (शवसा पृथुप्रगामा) सामर्थ्य द्वारा विविध प्रगति देने वाला है (घा सुशेव) निश्चय से उत्तम कल्याण करने वाला है (स अस्माक मीढ्वान् बभूयात्) वह परमेश्वर हमारे सुखों की वर्षा करे।

सूनुः – सू प्रेरणे।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र मे सूनु का अर्थ क्रियाशील सन्तान किया हैं और यह भाव लिया है कि (क) जैसे धार्मिक सन्तान माता-पिता की इच्छा के अनुकूल कर्म कर उन्हें सदा सुख देते हैं, वैसे ही भौतिक अग्नि अनुकूल रीति से प्रयुक्त करने पर हमारे सब सुखों को देता है। **अथवा**

(ख) जैसे अग्नि हमें अनेक प्रकार के सुख देता है वैसे ही सदाचारी विद्वान् पुत्रों का कर्त्तव्य है कि वे अपने माता-पिता को उनकी इच्छा के अनुकूल कर्म करके नित्य सुख दें।

शेष भाग पृष्ठ [illegible] पर

पृष्ठ प्रथम का शेष भाग

विशाल अनाथालय तथा विधवाश्रम योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ

श्री विमल वधावन ने मनुभाई को सहृदय सान्त्वना व्यक्त की।

आर्यसमाज भुज के मन्त्री डॉ महेश वेलानी तथा उनके भाई डॉ० योगेश वेलानी का लाखों रुपए से निर्मित एक सुव्यवस्थित हस्पताल भी अस्त-व्यस्त हो चुका है।

आर्यसमाज भुज में लगभग दो सौ आर्यजन आज भी शरणागत नजर आए। पूर्व मेयर श्रीमती प्रभा बेन भी अन्य आर्य महिलाओ के साथ लंगर आदि कार्यों की व्यवस्था समाल रहीं है।

भुज, कच्छ का एक प्रमुख शहर है जहा पर भूकम्प के बाद स्कूल , अस्पताल, थियेटर, टेलीफोन एक्सचेन्ज, डाक खाने, बैंक तथा अन्य बिल्डिगे आदि पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। व्यापार ठप हो चुका है और जनजीवन रूका हुआ प्रतीत होता है।

भुज से आगे निकलने पर रतनाल ग्राम भी लगभग पूरा नष्ट नजर आया।

अजार मे भी विशाल भूकम्प लीला दखने को मिली जहा ४०० बच्चे तथा अध्यापक मौत का ग्रास बने। इन बच्चों की लाशें निकालने में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का योगदान और समन्वय याद करके वहा के निवासी आज भी अश्रुपूर्ण साधुवाद व्यक्त करते हैं।

समूचे देश से ही नहीं विदेश से भी भारी सहयोग आर्यसमाज के विभिन्न व्यक्तियो एव नेताओ द्वारा गुजरात पहुचाया जा रहा है। स्थानीय सुदर्शन लाला जी ने लगर आदि का बडी मात्रा मे सहयोग दिया है श्री धर्मबन्धु भी भूकम्प राहत के कार्य मे अथक प्रयास कर रहे है।

आर्यसमाज गान्धीधाम केन्द्र द्वारा कलेक्टरेट अस्पताल तथा सुरक्षा कर्मिया को भी आरम्भ के दिनो मे लगर आदि उपलब्ध कराया गया। कलेक्टर द्वारा आर्यसमाज के राहत केन्द्रो को बाकायदा एक अधिकारिक केन्द्र के रूप मे मान्यता दी गई है।

पोरबन्दर से आर्य वीर दल का एक जत्था केतन भाई आदि के साथ एक गैस कटर लेकर तत्काल राहत के लिए इन क्षेत्रो मे पहुच गया था। इस कटर की मदद से मलवे को काट-काट कर सडती हुई बदबूदार लाशों को निकालने का साहसिक कार्य भी आर्यवीर दल के इन जवानो द्वारा ही किया गया है। आर्यसमाज के कार्यकर्ता अन्तिम सस्कार का कार्य भी करते रहे हैं।

भोरूका रोड लाइन्स द्वारा राजकोट से भी राहत सामग्री भेजी गई।

मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य श्री ओमकार नाथ तथा श्री गिनौरिया जी आदि के द्वारा भी बडा महान सहयोग गुजरात में भेजा गया है। वातानुकूलित एक्सरे वैन, आवश्यकता अनुसार दवाइया, पीन के लिए मिनरल वाटर, कम्बल, टैन्ट तथा वस्त्रों आदि का विशेष सहयोग मुम्बई से पहुचा है।

गान्धीधाम में झन्डा चौक पार्क में कैम्प स्थापित किए गए है तथा प्रतिदिन यज्ञ सम्पन्न किया जाता है। प्रान्तीय स्तर पर पूर्व सांसद श्री के०डी० जैसवानी का आर्यसमाज की गतिविधियों को भरपूर सहयोग एवं समर्थन मिल रहा है।

बंगलौर, जोधपुर, झज्जर, पानीपत, अहमदाबाद, अजमेर तथा भिवानी आदि क्षेत्रो के अतिरिक्त और भी कई स्थानो से राहत सामग्री सीधा आर्यसमाज के केन्द्रो मे पहुच रही है। बयालिस सरकारी डाक्टरो की सेवाए भी आर्यसमाज के केन्द्रो द्वारा लोगो को उपलब्ध कराई जा रही हैं।

पानीपत से सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रमुख नेता श्री सुभाष बुगलानी, आचार्य सोम तथा श्री राजेन्द्र विद्यालकार भी अपनी सेवाए गान्धीधाम मे पहुचाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

गान्धीधाम पुराना शहर तथा गलपादर ग्राम को अस्थाई पुनर्वास हेतु आर्यसमाज राहत केन्द्रो को सौंपा गया है। नियमित अन्तराल पर सरकारी अधिकारी आर्य समाज के राहत केन्द्रों से सम्पर्क रखते हैं तथा इन क्षेत्रो की आवश्यकताए पूरा करने के लिए विचार कियां जाता है।

बहुत सी गैर आर्यसमाजी सस्थाए भी आर्यसमाज के प्रचार रहित, स्वार्थ रहित तथा गम्भीर कार्यों को देखते हुए अपना योगदान एव सामग्री इन्हीं केन्द्रो के द्वारा जनता तक पहुचा रही हैं। सतगुरु दर्शन धाम दिल्ली जैसलमेर रिग्स व्यापार मण्डल कस्टम विभाग महिला सघ तथा पानीपत जनसेवा दल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

जामनगर से श्री धर्मवीर खन्ना भी अपना सहयोग देने के लिए इन. केन्द्रो मे पहुचे। गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कल्याण देव जी श्री ज्ञानेश्वर (रोजड) श्री के०डी० जैसवानी, श्री मोती व्रस पोरबन्दर, आर्यसमाज के प्रधान तथा इनके मन्त्री श्री धाना जी भाई तथा दिल्ली से श्री विनय आर्य विजेन्द्र आर्य वीरेन्द्र सरदाना, रणधीर आर्य, श्री प्रवीण बतरा श्री अर्जुन देव, महावीर बतरा, श्री विजय कुमार श्री प्रेम भाटिया आदि प्रमुख रूप से इन राहत कार्यों के लिए वहा पहुचे।

रोहतक से श्री वेद प्रकाश आर्य के नेतृत्व में श्री मुलखराज दीपक, रमाकान्त, डॉ० अनिल, ओमवीर, राजेश, धर्म प्रकाश, तथा केसरदास आदि का विशेष सहयोग साधुवाद का पात्र है।

गान्धीधाम आर्यसमाज द्वारा कई वर्षों से चलाया जा रहा आक्सीजन बैंक इन राहत कार्यों में विशेष सहयोगी सिद्ध हुआ है। जिसके कारण सैकडों मूर्छित लोगों को जीवन दान मिला है। आर्यसमाज गान्धीधाम के समस्त सहयोगी पुरुषोत्तम भाई पटेल प्रधान, श्री गुरुदत्त उप प्रधान तथा श्री वाचोनिधि आर्य मन्त्री सहित विशेष साधुवाद के पात्र है जिनके सद्प्रयासों से इतना बडा विशाल कार्य पूर्ण सुव्यवस्थित तरीके से चलता देख कर मन में यह विचार उठता है कि आर्यसमाज गान्धीधाम को एक सगठन के रूप में एक अन्तर्राष्ट्रीय मन्च पर पुरस्कृत किया जाए जिसके वे सच्चे सुपात्र हैं।

राहत कार्यो के निरीक्षण की शृखला मे ही श्री विमल वधावन श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल, श्री वाचोनिधि आर्य तथा श्री राजेन्द्र विद्यालकार टकारा ग्राम भी पहुचे जहा छुटपुट दरारो, गऊशाला के चारे वाले छप्पर टूटने तथा ऐतिहासिक घण्टाघर की ऊपर वाली एक छोटी भुर्जी टूटने के अतिरिक्त अन्य कोई विशेष भूकम्प लीला नजर नहीं आई। ❑

स्वामी भूमानन्द सरस्वती नहीं रहे

करीब १० दिन पूर्व स्वामी भूमानन्द सरस्वती के अचानक अस्वस्थ हो जाने पर उन्हें क्षेत्रीय विधायक श्री अमरीश गौतम एव आर्यसमाज खिचडीपुर के पदाधिकारियो के सहयोग से गुरु तेग बहादुर अस्पताल मे भर्ती कराया गया था। दिनाक १०-२-२००१ को दोपहर १३० बजे उनका निधन हो गया।

स्वामी जी का पूर्व नाम श्री भूदेव था। आपने आर्यसमाज हरदोई मे कई वर्षों तक सेवा कार्य किया था। गहन परिश्रम तथा स्वाध्याय आदि करने के उपरान्त गुरुकुल ज्वालापुर एव गुरुकुल गदपुरी मे अध्यापन कार्य भी किया। बाद मे सन्यास दीक्षा लेकर स्वामी भूमानन्द सरस्वती का नाम पाया और आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली मे रहकर आर्यसमाज का प्रचार कार्य करते रहे। करीब ३० वर्ष पूर्व आर्यसमाज खिचडी पुर ब्लॉक चार, कल्याणपुरी दिल्ली-६१ में उन्होंने एक आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना की और जीवन के अन्तिम क्षण तक वही रहकर आर्यसमाज का प्रचार किया। स्वामीजी ने आर्यसमाज निर्माण विहार, दिल्ली-९२ के निर्माण के समय स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निर्देशानुसार भारी सहयोग दिया था।

श्री भूमानन्द जी का अन्तिम सस्कार कल्याणपुरी श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति श्री रविदत्त से शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्री चन्द्रभान सरौतिया मन्त्री आर्यसमाज ने मुखाग्नि दी। इस अवसर पर श्री अमरीश गौतम विधायक सहित सैकडों व्यक्ति उपस्थित थे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा व डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री ने स्वामीजी के निधन का समाचार मिलते ही सार्वदेशिक सभा से श्री अवनीन्द्र शर्मा, श्री जयनारायण शर्मा तथा ललन राय को स्वामीजी के अन्तिम सस्कार मे सम्मिलित होने के लिए भेजा। स्वामी जी की आत्मा की शान्ति के लिए ११ फरवरी से १८ फरवरी तक प्रात एव साय नियमित रूप से आर्यसमाज मन्दिर खिचडीपुर मे यज्ञ चल रहा है। १८ फरवरी को स्वामीजी की स्मृति मे ऋषि लगर का भी आयोजन किया जाएगा।

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा भूकम्प से अनाथ हुए बच्चों को गोद लेने का संकल्प

जैसा की सर्वविदित है कि गुजरात का आजादी के बाद के सबसे भीषण भूकम्प की त्रासदी से गुजरना पड रहा है। लाखो लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए हैं तथा लाखों बच्चे अनाथ हो गए हैं।

आर्यसमाज दीवानहाल ने यह निश्चय किया है कि भूकम्प के कारण अनाथ हुए लगभग पचास बच्चो को आर्य समाज गोद लेगा एवम् उनके भोजन, रहने व शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध आर्य समाज के गुरुकुलो एवम् शिक्षण सस्थाओ मे करेगा। आपसे नम्र निवेदन है कि ऐसे बच्चा की सूची आर्यसमाज मदिर दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली मे भिजवाकर कृतार्थ करे।

— डॉ० रविकान्त मन्त्री,
आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

वैदिक धर्म का प्रचार कर सच्ची गुरु-दक्षिणा देने वाले महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द की जीवन झांकी

- चमनलाल

दो सौ चार वर्ष पूर्व सम्वत् १८५४ विक्रमी तदनुसार सन् १७६७ मे पजाब की व्यास नदी के किनारे गगापुर ग्राम मे भारद्वाज गोत्री सारस्वत ब्राह्मण प० नारायण दत्त के घर आधुनिक जागरण के अग्रदूत आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी का जन्म हुआ था। पाच वर्ष की अल्प आयु में ही विशूचिका के प्रकोप से उनके दोनों नेत्रों की ज्योति चली गई। तो भी उनके पिता उन्हे कुछ वर्षों तक सारस्वत आदि व्याकरण पढाते रहे, परन्तु १२ वर्ष के होते होते उनके माता-पिता दोनों का देहान्त हो गया और विरजानन्द सदा के लिए चर्म चक्षुहीन अनाथ हो गए।

गृह त्याग :- वह अनाथ बालक भाई-भाभी के क्रूर व्यवहार का शिकार बना और जब दुर्व्यवहार असह्य हुआ तो विवश हो गृह त्याग कर घूमते-घूमाते ऋषिकेश पहुचे। वहा गगा में खडे होकर तीन वर्षों तक प्रतिदिन घण्टों गायत्री का जाप करते रहे। फिर अर्न्तात्मा की आवाज सुन हरिद्वार चले गए।

संन्यास ग्रहण :- हरिद्वार पहुचकर कुछ समय के पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द गौड से १८ वर्ष की आयु में सन्यास ग्रहण कर स्वामी विरजानन्द नाम रखा।

काशी प्रवास :- कुछ समय बाद स्वामी जी गगा तट पर चलते-चलते काशी पधारे, वहा एक वर्ष तक मनोरमा, शेखर, न्याय मीमासा और वेदान्त आदि ग्रन्थो का अध्ययन किया। उनकी विलक्षण विवेक बुद्धि के कारण उन्हे लोग 'प्रज्ञाचक्षु' कहते थे। वहा से २२ वर्ष की आयु मे सन् १८१६ मे वह गया कलकत्ता होते हुए गगा किनारे बसे सोरो ग्राम पहुचे।

अलवर प्रवास :- सोरो ग्राम मे एक दिन जब स्वामी जी गगा में खडे होकर मधुर स्वर से श्री शकराचार्य कृत विष्णु स्त्रोत्र पढ रहे थे उनको मधुर शुद्ध उच्चारण अलवर नरेश महाराजा विनयसिंह ने स्वामीजी से अपने साथ अलवर चलने की प्रार्थना की। परन्तु स्वामी जी इन्कार करते हुए कहा राजा और साधु-सन्यासी का क्या सम्बन्ध परन्तु महाराजा के अत्यन्त आग्रह पर इस शर्त पर अलवर जाना स्वीकार किया कि वह प्रतिदिन तीन घण्टे बिना नागा किए विद्या पढते रहेंगे और यदि किसी दिन नागा हो गई तो वह बिना सूचना दिए अलवर छोड़कर चले जाएगे। फलत अलवर में महाराजा ५ वर्ष तक निरन्तर स्वामी जी से पढते रहे, परन्तु जब किसी विवशता से एक दिन पढने नहीं आए तो स्वामी जी अपने वचन के अनुसार सहस्त्रों की पुस्तकें तथा धनराशि त्याग बिना सूचित किए ही अलवर छोड चल पडे। मार्ग में भरतपुर के राजा बलवन्त सिह और मुरसान के राजा टीकम सिह आदि का कुछ समय तक आतिथ्य स्वीकार किया। ३६ वर्ष की आयु मे १८६३ विक्रमी तदनुसार सन् १८३६ में मथुरा पहुंचे।

मथुरा निवास :- मथुरा में दण्डी जी ७१ वर्ष की लम्बी आयु के अधिकाश भाग ३२ वर्ष तक अनार्ष-आर्ष ग्रन्थो का पठन-पाठन करते रहे। इस अवधि में उनके जीवन मे कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाए घटी जिन का यहा उल्लेख ठीक होगा।

पहली घटना :- इस अवधि मे सम्वत् १६१३-१४ विक्रमी में वैष्णावो के गुरु श्री शकराचार्य मथुरा पधारे। उन्हीं दिनों उनके गुरु कृष्ण शास्त्री अपने शिष्यों सहित दक्षिण से वहा पहुचे। एक बार दण्डी जी के विद्यार्थी और शास्त्री जी के विद्यार्थियों में सस्कृत के इस पद **'अजापुत्रिका:'** में समास सम्बन्धी भेद के कारण वाद-विवाद छिड गया। शास्त्री जी के विद्यार्थी कहते थे कि इसमे सप्तमी तत्पुरुष है जबकि दण्डीजी के विद्यार्थी उसमे षष्ठी तत्पुरुष समास कह रहे थे। दोनो पक्षों के गुरुओं का यही मत था। वाद-विवाद इतना बढा कि इसे निपटाने के लिए शास्त्रार्थ की योजना बनी। जिसके अध्यक्ष वैष्णव मत के सेठ राधाकृष्ण नियत हुए और दो सौ रुपए हार जीत के रखे गए। परन्तु निश्चित दिन-समय शास्त्री जी नहीं पहुचे केवल उनके विद्यार्थी आए। दण्डीजी स्वय तथा उनके विद्यार्थी तो वहा मौजूद थे। अध्यक्ष महोदय ने दोनों ओर के विद्यार्थियों को भिडाकर अन्याय पूर्ण ढग से 'यमुना मैय्या की जय' बोलकर **"दण्डीजी हार गए"** का नारा लगाकर कोलाहल मचा दिया। उपस्थित जनता हैरान थी कि बिना शास्त्रार्थ किए दण्डी जी कैसे हारे। दण्डीजी को बडा रोष आया और उन्होंने न्यायालय और काशी के पण्डितों द्वारा न्याय चाहा, परन्तु सब ओर से निराशा हाथ लगी। दण्डी जी शान्त नहीं बैठे। अपने पक्ष की पुष्टि के लिए प्राचीन सस्कृत आर्ष ग्रन्थो की छान-बीन की।

कल्याण का सच्चा मार्ग :- उन्हीं दिनो दण्डी जी ने एक बार एक दक्षिणी ब्राह्मण को अष्टाध्यायी का पाठ करते हुए सुना।सुने हुए पाठ कर गम्भीरता पूर्वक विचार करके निश्चय किया कि विलुप्त प्राचीन सस्कृत साहित्य व ऋषि कृत ग्रन्थो की विद्या और ज्ञान पुन प्रचार-प्रसार करना ही कल्याण का मार्ग है। इस निश्चयानुसार दण्डी जी जीवन के अन्तिम ग्यारह वर्ष सन् १८५७-१८६८ तक अपने पूर्व पाठ्य ग्रन्थो सारस्वत चन्द्रिका, मनोरमा आदि अनार्ष ग्रन्थो के स्थान मे प्राचीन ऋषिकृत अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरक्त, निघण्टु आदि आर्ष ग्रन्थ अपने विद्यार्थियो को पढाते रहे।

दण्डी जी के पाडित्य और योग्यता की ख्याति सुनकर स्वामी दयानन्द ३६ वर्ष की आयु में सन् १८६० मे दण्डीजी के पास शिक्षा ग्रहण, करने मथुरा पहुचे। पहले तो दण्डी जी ने सन्यासी दयानन्द को किन्ही कुछ कारण से पढाने से इन्कार कर दिया। परन्तु साधु दयानन्द के बार-बार आग्रह करने और दण्डीजी के कतिपय नियमो के पालन करने की प्रतिज्ञा करने पर दण्डीजी ने दयानन्द को आपना विद्यार्थी बनाना स्वीकार किया।

तीन वर्ष का शिक्षण समाप्त होने पर गुरु-दक्षिणाके रूप में दयानन्द ने घर जाकर कुछ शाल-दुशाले और कुछ धनराशि भेजने का प्रस्ताव रखा। परन्तु दण्डीजी ने यह प्रस्ताव ठुकराकर कहा मुझे इन भौतिक पदार्थों की रचमात्र भी आवश्यकता नहीं और गम्भीरता पूर्वक स्वर में कहा– **"जो कुछ तुमने यहां पढ़ा उसी का प्रचार करो, अज्ञान-अन्धकार दूरकर सुप्त वैदिक धर्म का पुनः उद्धार करो एवं मत-मतान्तरों की फैली अविद्या दूर करो। यही, मेरी सच्ची गुरु-दक्षिणा होगी।"**

गुरु चरणों मे शीश नवा उनका आशीर्वाद प्राप्त कर महर्षि दयानन्द सरस्वती कार्य क्षेत्र में कूद पडे। एक सच्चे और निष्ठावान शिष्य की भांति महर्षि नें जीवन के अन्तिम बीस वर्ष (सन् १८६३-१८८३) गुरु वचनों को साकार करने में लगा दिए। इस अवधि में मौखिक और लेखनी द्वारा प्रचार कार्य करते हुए उन्हें घोर कष्ट उठाने पडे और बहुत सी सकटपूर्ण घटनाए घटी।

व्यक्तित्व तथा स्वभाव :- दण्डीजी लम्बे कद के पतले-दुबले, गौर वर्ण के व्यक्ति थे। वह विलक्षण मेधा-बुद्धि के धनी और सस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। प्राचीन साहित्य और शास्त्रों के परमज्ञाता और प्रेमी थे। उनकी पाण्डित्य की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। उनका खान-पान आहार सात्विक, सादा था। दूध-फल आदि उन्हे अधिक पसन्द थे। वह सत्यवादी और न्यायप्रिय थे। बाहरी तडक-भडक और सजावट से कोसो दूर थे। वह किसी से धनादि के लिए कभी याचना नही करते थे। अपने मन्तव्यो, सिद्धान्तो के पाबन्द थे कि उनके विपरीत होने पर राजाओ की सहस्त्रो की भेट भी ठुकरा देते थे। अपने वचनो के इतने पक्के थे कि अलवर नरेश द्वारा पाठ पढने मे एक दिन की नागा होने पर ही अलवर छोडकर चले गए थे। विद्यार्थियो के एक बार पढे हुए पाठ को दोबारा पूछने और कुटिया की कुछ वस्तुओ के अस्त-व्यस्त होने जैसी छोटी-छोटी भूलो पर क्रोधित होकर उन्हे दण्ड दिए बिना नहीं रहते थे। ऐसे दण्ड के शिकार दयानन्द भी हुए। एक बार के डण्डे की चोट का चिन्ह उनके शरीर पर आजीवन बना रहा। वैसे दण्डी जी अपने विद्यार्थियो से प्रेम भरा व्यवहार करते और उनसे सहानुभूति रखते थे। यदा–कदा उन्हे पाठ्य पुस्तके मुफ्त प्राप्त करा देते थे और अन्य आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए आर्थिक सहायता भी दिलाते थे।

मृत्यु :- दण्डी जी बचपन से सम्पूर्ण जीवन आर्ष ग्रन्थो के पठन-पाठन के पवित्र कार्य मे लगे रहे। ७१ वर्ष की लम्बी आयु मे १३० वर्ष पूर्व सम्वत् १९२५ विक्रमी तदनुसार सन् १८६८ मे एक साधारण विद्वान् व्यक्ति की तरह नश्वर शरीर त्यागकर जगत नियन्ता प्रभु की आनन्दमयी गोद मे जा विराजे। हा, मृत्यु से पूर्व उन्होने अपनी धन-सम्पत्ति और सहस्त्रों के ग्रन्थ अपने विद्यार्थी प० मुग्ल किशोर को सोप दिए थे।

उनकी मृत्यु का समाचार सुन उनके योग्य शिष्य स्वामी दयानन्द ने शोकातुर स्वर मे कहा था – **उनकी मृत्यु के साथ सस्कृत व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।**

एक महत्वपूर्ण तथ्य :- एक अनाथ चर्म चक्षुहीन बालक अपने जीवन काल में ही सस्कृत व्याकरण का प्रकाण्ड विद्वान् आर्ष ग्रन्थो का ज्ञानी बन गया, उसने जीवन के अन्तिम चरण में दयानन्द जैसे ऐसे निष्ठावान सन्यासी को अपना शिष्य बनाया जिन्होने १६वीं शताब्दी में देश के सुधारक महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर आधुनिक जागृति का अग्रदूत बनकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्री कृष्ण एव ऋषि-मुनियो की जन्मभूमि इस भारत देश की सैकडों वर्षों की दासता की जजीरो मे जकडे हुए को अपने सत्यकर्मों और प्रभा से पुन गोरवान्वित किया। ऐसे गुरु और शिष्य को शत्-शत् प्रणाम।

– एच - ६४, अशोक विहार, फेज-१, दिल्ली-५२

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए

साप्ताहिक आर्य सन्देश

के लिए

500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो
पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की [illegible] दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है :-

1 सर्वश्री, प्रधान/मन्त्री आ० स० नागल दिल्ली 3,600 00
2. प्रधान/मन्त्री आ० स० कैलाश ग्रेटर कैलाश - I, नई दिल्ली 11,000 00
3 सुरेन्द्रपाल सिह शाक्य, बदायू 100 00
4 श्रीमती शकुन्तला गुप्ता, दिल्ली 50 00
5 मन्त्री आ० स० सुन्दर विहार, दिल्ली 5,000 00
6 दयानन्द आदर्श विधालय, आ०स० तिलक नगर, नई दिल्ली 11,000 00
7 पवन एक्सपोर्ट प्रा० लि० गाजियाबाद 51,000 00
8 रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, विनय निगर, नई दिल्ली 21,000 00
9. मन्त्री आ०स० नोएडा 3,000 00
10 अनिल अनेजा, आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
11 पवन आ०स० नजफगढ, दिल्ली 100 00
12 जयप्रकाश आ०स० नजफगढ, दिल्ली 100 00
13 बाकेबिहारी आ०स० नजफगढ, दिल्ली 21 00
14 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
15 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
16 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50 00
17 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50.00
18 छावड़ा स्टोर आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50.00
19 श्याम सुन्दर सिंघल आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50.00
20 बशी स्वीट आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
21 अतर सिंह जान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 101.00
22 आजाद पान भण्डार आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50.00
23 विजय वर्मा आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51.00
24 मुकेश आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51.00
25 नरेश आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51.00
26 कै० नानक चन्द नजफगढ, दिल्ली 150.00
27 श्रीमती सरस्वती देवी नजफगढ, दिल्ली 100.00
28 बाल किशन आर्य नजफगढ, दिल्ली 100.00
29 रामकिशन आर्य नजफगढ, दिल्ली 51.00
30 चन्द्रभान आर्य नजफगढ, दिल्ली 500.00
31 सरदार सिह नजफगढ, दिल्ली 100 00
32 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 100.00
33 श्रीमती मना देवी नजफगढ, दिल्ली 101 00
34 श्रीमती महेन्द्र देवी नजफगढ, दिल्ली 101 00
35 जय किशन गहलोत नजफगढ, दिल्ली 1,000 00
36 तेजराम नजफगढ, दिल्ली 100 00
37. समुन्द्र सिंह नजफगढ, दिल्ली 100 00
38. डॉ० महेन्द्र आर्य नजफगढ, दिल्ली 100 00
39. जिले सिह द्वितीय नजफगढ, दिल्ली 50 00
40 मनमोहन आर्य नजफगढ, दिल्ली 131 00
41 रामचन्द्र आर्य नजफगढ, दिल्ली 100 00
42 ओमप्रकाश नजफगढ, दिल्ली 150 00
43. रामपत आर्य नजफगढ, दिल्ली 201 00
44 लाला पूरन लाल नजफगढ, दिल्ली 1100 00
45 प्रवेश कुमार नजफगढ, दिल्ली 50 00
46 जुनेजा सलेक्शन नजफगढ, दिल्ली 51 00
47 समुन्द्र सिंह नजफगढ, दिल्ली 50 00
48 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 200 00
49. नवीन जैन नजफगढ, दिल्ली 100 00
50 विकास जैन नजफगढ, दिल्ली 100 00
51 राजेन्द्र जैन नजफगढ, दिल्ली 100 00
52. गुप्तदान नजफगढ, दिल्ली 100 00
53 गुप्तदान नजफगढ, दिल्ली 50 00
54 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
55 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
56 दौलत राम सतीश कुमार नजफगढ, दिल्ली 51 00
57 जगदीश प्रसाद नजफगढ, दिल्ली 51 00
58 रामनारायण नजफगढ, दिल्ली 50 00
59 देशराज नजफगढ, दिल्ली 50 00
60 रामप्रकाश नजफगढ, दिल्ली 101 00
61 श्रीराम जलेबी वाले नजफगढ, दिल्ली 51 00
62 प्रताप मेडिकल स्टोर नजफगढ, दिल्ली 50 00
63 चौ० भूपसिह नजफगढ, दिल्ली 51 00
64. गोपाल दास नजफगढ, दिल्ली 51 00
65 अमित कुमार नजफगढ, दिल्ली 51 00
66 सतीश बुक डिपो नजफगढ, दिल्ली 51 00
67 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50 00
68 विकास मेडिकल स्टोर नजफगढ, दिल्ली 51 00
69 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 50 00
70 नीलू ट्रेडर्स नजफगढ, दिल्ली 51 00
71 जय प्रकाश नजफगढ, दिल्ली 50 00
72 गुप्तदान नजफगढ, दिल्ली 51 00
73 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 51 00
74 जैना ज्वेलर्स नजफगढ, दिल्ली 51 00
75 गुप्तदान नजफगढ, दिल्ली 101 00
76 सुरेन्द्र वर्मा नजफगढ, दिल्ली 500 00
77 रोहताश आर्य नजफगढ, दिल्ली 100 00
78 अजीत सिह आर्य नजफगढ, दिल्ली 50 00
79 गुप्तदान आ०स० नजफगढ, दिल्ली 2,188 00
80 श्याम सुन्दर सिघल नजफगढ, दिल्ली 31 00
81 श्रीमती सावित्री तथा कृष्ण लाल शर्मा आर्य नजफगढ, दिल्ली 251 00
82 शुभम और कुशल नजफगढ, दिल्ली 50 00
83 मन्त्री आर्यसमाज नजफगढ, दिल्ली 550 00
84 आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, उसमानपुर, दिल्ली 500 00
85 ए०पी० खुराना, दिल्ली (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 101 00
86 रणजीत सिह (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
87 राम किशन बत्रा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 101 00
88 मेजर सजय चौधरी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
89 श्रीमती ममता शर्मा (द्वारा श्री.चन्द्रभान चौधरी) 200 00
90 श्रीमती सुलोचना शर्मा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
91 भीमसेन चौधरी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 101 00
92 बाला दत्ता जी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100 00
93 श्रीमती सत्य आहलुवालिया (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 00
94 श्रीमती पवन सूद (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 00
95 श्रीमती चम्पा सूद (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 00
96 जनाब आबिद हसन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 50 00
97 आर० के० जैन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100.00
98 ओ० पी० श्रीवास्तव (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 200 00
99 मेसर्स कुमार पेण्ट और मार्बल हाउस (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 200 00
100 श्रीमती सीमा गम्भीरा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100.00
101 सत्यकाम चावला, (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 5,000 00
102 रमेश कुमार अरोडा (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 500 00
103 वेद कुमार सैनी (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 500 00
104 धर्मपाल गुप्ता (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 500 00
105 श्रीमती दुर्गा ग्रोवर (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 500 00
106 डॉ० कृष्ण लाल (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 251 00
107 श्रीमती राज भूटानी (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 1,100 00
108 किशोरी लाल वर्मा (द्वारा आ०स० मेन बाजार, रानीबाग, दिल्ली) 2100 00
109 मन्त्री आ०स० मन्दिर, मेन बाजार रानीबाग दिल्ली 15,503 00
110. ओमप्रकाश गुप्ता, (द्वारा आ०स० डी० ब्लॉक, जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
111 डी० वी० चोपडा (द्वारा आ०स० डी० ब्लॉक, जनकपुरी दिल्ली) 1,000 00
112 प्रवीण सिह (द्वारा आ०स० डी० ब्लॉक, जनकपुरी दिल्ली) 11,000 00
113 आर०एल० भवन (द्वारा आ०स० डी० ब्लॉक, जनकपुरी दिल्ली) 1,100 00
114 ओ० एल० गुप्ता (द्वारा आ०स० सी० ब्लॉक, जगतपुरी, नई दिल्ली) 1,000 00
115 जगदीश चन्द्र (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
116 आशा उक्खल (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
117 प्रवेश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली) 500 00
118 बी० बी० शर्मा (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
119 अरूणेश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
120 श्रीमती सूर्या कुमार (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 1,000 00
121 श्रीमती कृष्ण अरोडा (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
122 पी० डी० गुप्ता (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
123 आर० के० गुलाटी (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
124 एच०एल० त्रिवेदी (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
125 एम० एल० आहूजा (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 2,100 00
126 जगदीश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
127 वी० एल० गरखेल (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
128 सुदा सिह (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
129 एस० एम० कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 200 00
130 एस० वी० राठी (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 100 00
131 श्रीमती अक्ष्य नन्दा (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 100 00
132 श्रीमती लता सिघल (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 500 00
133 श्रीमती सुनीता कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 100 00
134 एस० के० जोशी (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 100 00
135 एस० के० मदान (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 1,100 00
136 गुरुदास कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर, सी० ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली) 1,100 00
137 विनोद आर्य, दिल्ली 100 00

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

- सभा प्रधान

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 15 16 /02/2001 दिनांक १२ फरवरी २००१ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2001

दिल्ली पास्टल रजि० न डी० एल– 11024/2001 15 16 /02/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

पृष्ठ 4 का शेष

क्या करने से क्या होता है

(६) आपकी रक्षा और प्रेरणा मे चलने वाला अपनी कामनाए प्राप्त करे

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु य जुना ।
स यन्ता शश्वतीरिष ।। ऋ० १/२७/७

शुन शेप आजीगर्ति । अग्नि । गायत्री।

अर्थ – हे (अग्ने) मनुष्यो को आगे बढने के लिए मार्गदर्शन करने वाले प्रभो ! (य मर्त्यम्) जिस मनुष्य को आप (पृत्सु) आन्तरिक और बाह्य देवासुर सग्रामो मे (अवा) रक्षा करते हैं और (यम वाजेषु जुना) जिसको बलादि शक्तियो तथा धनादि समृद्धियो की प्राप्ति के निमित्त प्ररित करते हैं (स) वह व्यक्ति (शश्वती इष यन्ता) निरन्तर गतिशील इच्छाओ तथा अन्नादि भोगो को अपने जीवन मे धारन (प्राप्त) करे।

अर्थ पोषण – पृत्सु वाजेषु सग्राम नाम। नि० २/१७ यन्ता– नियन्तु समर्थो भवति। सायण

इष – इषु इच्छायाम इषगतौ इषम अन्ननाम। नि०२/७ शश्वती – शशल्पुतगतौ।

निष्कर्ष – जो परमेश्वर (ब्रह्म=वेदवाणी) से प्रेरणा लेकर निरन्तर क्रियाशील रहते है उनकी वह रक्षा करता है। उनकी इच्छाए (सत्) होने के कारण पूर्ण होती है और उनके जीवन के लिए सभी आवश्यक भोग उन्हे मिलते है।

(७) असीम आह्लादकारी ई बुद्धिपूर्वक समृद्धि के लिए प्रेरित करे

स नो महाँ अनिमानो धूमकेतु पुरुश्च.
धिये वाजाय हिन्वतु।। ऋ० १/२७/११

शुन शेप आजीगर्ति । अग्नि । गायत्री।

अर्थ – (य अग्नि) जो मार्गदर्शक प्रभु (महान) सबसे महान और पूजनीय (अनिमान) हर दृष्टि से असीमित अनन्त हैं। (धूमकेतु) जिस ज्ञान का सब वासनाओ को कपाने वाला ससारिक व्याधिया दूर कर (पुरुश्चन्द्र) पालन पोषण से आह्लादित करते हैं (स) वह दिक कालाद्यनव छिन्न प्रभु (धिये) बुद्धिपूर्वक कर्म करने तथा (वाजाय) सब प्रकार की समृद्धि की प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं अत (न हिन्वतु) हमे भी सद्बुद्धि पूर्वक कर्म कर समृद्धि प्राप्ति के लिए प्रेरित करे।

वैदिक प्रार्थना और उसकी पूर्ति का स्वरूप

इस मन्त्र मे प्रार्थना है कि – वासनाओ को दूर कर हमारी आवश्यकताए और कमिया पूर्ण करने वाला अग्रेणी (आगे बढने वाला) पूजनीय परमात्मा हमे सुमतिपूर्वक कर्म कर समृद्धि प्राप्ति की प्रेरणा दे।

वेद मे की गई प्रार्थना तभी पूर्ण होती है जब प्राथी साधक मन्त्र मे दिए गए परमात्मा के विशेषणो का मनन कर वे विशेष गण अपनाए परमात्मा का सखा=समानख्यान= वे गुण अपने अन्दर धारण न

य या स के विशेषणो को अपनाने वाला साधक प्रार्थना का सच्च अधिकारी है। जैसे गुड़ गुड़ कहने से मुह मीठा नही होता गुड को मुख मे रखने से मुख मीठा होता है। वैसे ही परमात्मा की स्तुति करने से वह प्रसन्न नहीं होता स्तुतियो मे प्रयुक्त परमेश्वर के गुण आने जीवन मे धारण करने से वह परमेश्वर प्रसन्न हो प्रर्थी उपासक (भक्त या साधक) की प्राथना पूरा करने का सामथ्य उत्पन्न करता है। परमेश्वर से प्रार्थना की गई के सुने जाने और उसके पूर्ण होने की यही प्रक्रिया है।

निष्कर्ष – अत यदि समृद्धि चाहते हो तो (१) विषय वासनाए छोडिए। (धूमकेतु) (२) अपनी कमियो और आवश्यकताए पूणकर तनाव मुक्त होकर सदा प्रसन्न रहे (पुरुश्चन्द्र यदृच्छा लाभ सतुष्ट) अपने गुण बढाते बढाते उन्हे असीम बनाइए (अनिमान) इस प्रकार अपने समाज और राष्ट्र मे पूजनीय और महान बने (महान्) परिणाम स्वरूप आप भी स्वामी दयानन्द या महात्मा गाधी के समान महान बनोगे।

श्यामसुन्दर राधेश्याम ईश्वर भवन
५२२ खारी बावली दिल्ली ६

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाउस आर्य अनाथालय के पास दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ विक्रमी सम्वत् २०५७ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २६ फरवरी से ४ मार्च, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में

भाग लेने वाले आर्यजनों से निवेदन

मुम्बई मे २३ से २६ मार्च, २००१ की तिथियो मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए तैयारिया पूरे जोरो पर हैं। तैयारियो की व्यवस्था मे मुम्बई मे कै० देवरत्न आर्य, श्री ओकारनाथ आर्य, डॉ० स्वामी सत्यम आदि के नेतृत्व मे सैकडो आर्य कार्यकर्त्ता तन मन धन से जुडे हैं। दूसरी तरफ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से आर्य जनों को रेल किराए मैं छूट के फार्म भिजवाए जा रहे है।

सम्मेलन के सयोजक कै० देवरत्न आर्य ने एक विशेष परिपत्र के द्वारा इस महासम्मेलन मे भाग लेने वाले आर्य जनो से सम्मेलन की सफलता तथा अपनी सुविधा की दृष्टि से निम्न विशेष बातो की ओर ध्यान रखने को कहा है –

१ कार्यक्रम स्थल – रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा, प० मुम्बई है तथा आगन्तुक महानुभाव बान्द्रा स्टेशन पर ही उतरने का प्रयास करे वैसे महासम्मेलन समिति की ओर से यह प्रयास किया जा रहा है कि बान्द्रा, सैण्ट्रल मुम्बई तथा दादर स्टेशनो पर पूछताछ केन्द्र स्थापित किए जाए।

२. सम्मेलन में आने से पूर्व प्रत्येक आगन्तुक को यह सुनिश्चित कराना आवश्यक है कि उन्होंने ५०/– रुपये प्रति व्यक्ति भेज कर अपना नाम पजीकृत करा लिया है या नहीं। इस पजीकरण के आधार पर ही केवल पजीकृत व्यक्तियों को ही भोजन व आवास हेतु एक कूपन पुस्तिका दी जाएगी, जिससे केवल पजीकृत व्यक्ति ही इन सुविधाओ का लाभ उठा पाएगे। जिन महानुभावो ने आने से पूर्व अपना पजीकरण नही कराया उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे किसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पडे तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

३ जो महानुभाव मुम्बई के विभिन्न दर्शनीय स्थलो पर जाना चाहते हैं उन्हे भी १५०/– प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की दर से अग्रिम राशि जमा करवानी होगी, जिससे उनके लिए विशेष बस की व्यवस्था की जा सके। मुम्बई भ्रमण की यह व्यवस्था २७ अथवा २८ मार्च को होगी। जो लोग इस विशेष बस सेवा का लाभ उठाना चाहते है वे अपनी वापसी आरक्षण भी उसके अनुरूप ही करवाए।

४. सम्मेलन मे भाग लेने वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्य जनो से विशेष निवेदन है कि विभिन्न सत्रो मे प्रसारित उदबोधनो के मुख्य विचार नोट करे तथा उन विचारो के अनुरूप आर्यसमाज की गतिविधियो को भविष्य मे अपने-अपने स्थानीय क्षेत्रो के स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करें। ऐसा अभ्यास आर्यजनो को विशेष रूप से करना चाहिए क्योकि हमारे विद्वान वक्ताओ के बहुमूल्य विचारो को क्रियान्वित करने का यही एक मार्ग है कि हम उन्हे पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

सम्मेलन के दिनो में मुम्बई मे ग्रीष्म ऋतु होगी। अत हल्के सूती वस्त्र ही रखे।

जो आर्यजन दलो मे पधार रहे है, वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नाम पट्ट, बैनर्स तथा ओ३म् ध्वज आदि अवश्य लाने की कृपा करे।

सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के दौरान चल रहे विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप मे अथवा अन्य घोषणाओ के लिए कोई पर्ची आदि लिखकर सयोजन कार्य मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन के तहत हम सब को निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में प्राप्त होगा। ❑

गुजरात भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में आध्यात्मिक उत्थान की प्रबल आवश्यकता

– जयसिंगराव गायकवाड पाटील

केन्द्र सरकार के खान राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील ने आर्यसमाज द्वारा विशाल स्तर पर सम्पन्न किए जा रहे भूकम्प पीडित राहत कार्यो की सराहना करते हुए कहा है कि निकट भविष्य मे आर्यसमाज को इन क्षेत्रो मे अधिक से अधिक सख्या मे प्रचारक तथा भजनोपदेशक आदि भेजने का प्रबन्ध करना चाहिए क्योकि राहत सामग्री के दृष्टिकोण से नागरिको का उत्थान पूर्ण रूपेण तत्काल सम्भव नहीं होता। लोगो को पुन उसी शैली मे आते-आते कई वर्ष भी लग सकते हैं। राहत एव पुनर्स्थापन के कार्यो के साथ-साथ भूकम्प पीडित मनो को बाधना भी अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य आर्यसमाज के उपदेशक वर्ग द्वारा बहुत अच्छी प्रकार से सम्पन्न किया जा सकता है।

श्री जयसिगराव ने यह विचार सार्वदेशिक सभा मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा एव विमल वधावन के समक्ष एक भेट के दौरान व्यक्त किए।

आर्य नेताओ ने उन्हे सूचित किया कि उन्हे भूकम्प के बाद से हमारे कई प्रचारक वहा पहुचे हैं और गाव-गाव मे यज्ञ और उपदेश का कार्य चल रहा है। सैकडो की सख्या मे आर्यसमाज के जो भी कार्यकर्त्ता उन स्थलो पर राहत कार्यो के लिए गए थे उन्होने राहत कार्यों साथ-साथ जनता के आध्यात्मिक उत्थान का पवित्र कार्य भी बडी लगन से किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि भविष्य मे इस दृष्टिकोण को विशेष रूप से ध्यान मे रखते हुए अधिक से अधिक सख्या में प्रचारको को भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे भेजा जाएगा जो गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य से निर्देश प्राप्त करके गाव-गाव यज्ञ और उपदेश का कार्य कर्मठता पूर्वक सम्पन्न कर सके। उन्होने इस कार्य के लिए इच्छुक प्रचारकों, उपदेशको आदि से आह्वान किया है कि वे इस पवित्र कार्य के लिए अपनी सेवाए निष्काम भाव से अर्पित करे। ❑

गणतन्त्र पर कुदरत का तमाचा
आइए, सब मिलकर हालात संवारें

– सीता राम आर्य

अत्यन्त दुख का विषय है नई शती के प्रथम भारतीय गणतन्त्र दिवस पर २६ जनवरी २००१ को सुबह ८.४६ बजे गुजरात प्रदेश के कच्छ-भुज क्षेत्रो मे आए भयकर भूकम्प से हजारो लोग कुछ ही सैकेण्डो मे काल के मुह मे चले गए। हमारे देश मे भूकम्प और तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप का यह सबसे बडा हादसा हुआ। महाराष्ट्र के लातूर का भूकम्प और उडीसा का तूफान, मध्य प्रदेश मे जबलपुर का भूकम्प और अब यह हृदय विदारक अत्यन्त दुखद हादसा हुआ है। गुजरात के इस भूकम्प ने सारे राष्ट्र को हिला दिया। चिन्ता का विषय है कि हमारे देश पर अत्यन्त भयानक ये प्राकृतिक आपदाए बार-बार क्यो आई? क्या कुदरत की हमारे देश पर कुदृष्टि हो गई? लगता है जैसे ईश्वर ने हमारी ओर से आखे फेर ली हो।

बेशक कही न कहीं हमारी गलती है। हम ओरो की बात नहीं करते आजादी के पहले हमारा हिन्दू समाज ८० प्रतिशत शुद्ध शाकाहारी था। लेकिन आज ८० प्रतिशत से भी अधिक हिन्दू मासाहारी-शराबी हो गए हैं। आजादी के पहले देश मे ३०० कसाईघर (बूचडखाने) थे और अब वे ३५,००० हो गए है। सूर्य की किरण निकलते ही इन कसाई घरो मे रोज हजारो बेगुनाह निरीह पशु मारे जाते हैं। भारतीय सस्कृति मे गाय माता के समान मानी गई है लेकिन आज उसकी हत्या की जा रही है। मुस्लिम देशो को गौ–मास भेजा जा रहा है। देश के कर्णधार तन्त्र ने ऋषि मुनियो का शुद्ध शाकाहारी देश मासाहारी बना दिया। यह हादसा तब हुआ जब गणतन्त्र दिवस एक तन्त्र से दूसरा तन्त्र सलामी ले रहा था।

देश का ८० प्रतिशत गण गावो मे रहता है। किसान दिन-रात कडी मेहनत करके भी सिर्फ रूखी-सूखी रोटी खा पाता है। सरकार की गलत नितियो के कारण भारत का किसान बर्बाद है और अपनी स्थिति के लिए बेबस है। गाव का नगा-भूखा रहने के लिए मजबूर है, और वह मजदूर गरीबी रेखा के नीचे अपना नारकीय जीवन बिता रहा है। गावो मे खम्बे और तार तो बिछा दिए गए है लेकिन तारो मे करट नहीं रहता। ८० फीसदी भारत अधकार मे डूबा रहता है। गावो मे शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्था नगन्य है। गावो मे सडके नहीं हैं और कुछ थोडी हैं भी तो उनकी हालत जर्जर है।

हमारे देश का तन्त्र मन्त्री से लेकर सन्त्री तक, सब शहरो, नगरो और महानगरो मे रहता है और वहीं सारे धनाढ्य पैसे वाले रहते हैं। तस्कर, कर चोर, मिलावट करने वाले कुछ नव धनाढ्य भी पैदा हो गए हैं। उन्हीं के शहजादे ये अपराध करते है। हवस पूरी न हो तो ये मासूम छात्राओ को कार से कुचल देते हैं। यह २० प्रतिशत तबका ८० प्रतिशत पर राज्य कर रहा है। इन लोगो ने नगरों को महानगर और महानगरो को ककरीट के जगल बना दिया है। भारत का तन्त्र आलीशान भवनो-एयरकन्डीशन कोठियो मे रहता है और बेचारा गण गाव मे धूल चाटता है। कवि श्री मधुपणि ने सच ही लिखा है कि आज गण रो रहा है और तन्त्र हस रहा है।

केवल रक्षा वाहिनी सेना पर हम गर्व की सकते है, जो दिन-रात आपनी जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा कर रही है। भारत का बाकी तन्त्र-मन्त्री से सन्त्री तक इतना भ्रष्ट है जिसकी कोई सीमा नही। भारतीय तन्त्र के मुखिया स्व० राजीव ने कहा था कि हम दिल्ली से एक रुपया भजते है, गाव के गण के पास सिर्फ उसमे से १५ पैसे पहुचते हैं बाकी ८५ पैसे मे सफेद तस्कर राजनेता और नौकरशाह मिलकर बीच मे ही खा जाते है। भ्रष्टाचार अब शिष्टाचार हो गया है। देश के प्रधानमन्त्री और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जब सन्दिग्ध हा जाए तो फिर बाकी कौन बचेगा। हर जगह भ्रष्टाचार पैर जमा चुका है। देश का सारा तन्त्र मन्त्री से लेकर मन्त्री तक गले-गले तक भ्रष्टाचार मे डूबा है।

चिन्तनीय प्रश्न यह है कि आखिर यह देश चलेगा कैसे? किसी शायर ने ठीक ही कहा है–

"एक ही उल्लू काफी है, बर्बादे गुलिस्ता करने को।
हर शाख पै उल्लू बैठा है, अंजामे गुलिस्ता क्या होगा।।

अगर इत्तफाक से कोई भ्रष्टाचारी पकडा जाए तो वह भ्रष्टाचार के माध्यम से ही छूट जाता है। लोकतन्त्र के तीसरे स्तम्भ न्यायपालिका की स्थिति भी सन्दिग्ध होती जा रही है। भ्रष्टाचारी को सजा देने मे हमारा न्यायतंन्त्र भी अभी तक अक्षम रहा है, और वह राजनेताओ के इशारे पर ही चलता दीख रहा है। सारे माफिया गुण्डे और अपराधी राजतन्त्र मे मिलकर घलमेल हो गए हैं। हर कोई **'लूटो और खाओ'** की राह पर चल रहा है। सर्वत्र अराजकता का माहोल है और किसी की भी जिन्दगी सुरक्षित नही। विदेशी अपसस्कृति देश पर थोपी गई और भारत की प्राचीन सस्कृति वैदिक सस्कृति की उपेक्षा की गई। फलत देश का नैतिक पतन हो गया।

किसी भी देश के निर्माण और सचालन मे उसकी सस्कृति ही महत्वपूर्ण होती है। वहा की परम्पराए राष्ट्र के उत्थान मे सहायक सिद्ध होती है लेकिन अफसोस है हमारे देश के कर्णधारो ने लोकतन्त्र की बुनियाद मे भारतीय सस्कृति की एक ईट भी नहीं रखी। पश्चिम के भोगवादी तर्ज पर देश घसीटा गया। **'ऋण कृत्वा घृतंपिवेत'** की शैली पर देश चल पडा। परिणामत ६ लाख करोड से भी ऊपर विदेशी कर्ज हम पर लद गया।

देश के पवित्र आसन पर जब दुराचारी अपवित्र लोग बेठ जाए और अपूज्य पूजे जाए, जिनका सम्मान हो तब क्या होता है।

महाराज मनु न लिखा हे–

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्याना च व्यतिक्रम.।
त्रीणि तत्र प्रवर्धन्ते, दुर्भिक्षमरणं भयम्।।

अपूज्य दुराचारी, मासाहारी, व्याभिचारी, जिस प्रदेश मे पूजे जाए और जो पूज्य, त्यागी, तपस्वी विद्वान् हैं उन्हे कोई पूछे नहीं तब वहा प्रकृति गडबडा जाती है। चारो तरफ उत्पात और भय का वातावरण उत्पन्न होता है। शायद ऐसी ही स्थिति हमारे सामने है।

देश के हालात पर रोना आता है। यह बेढगी रफ्तार बदलनी होगी। वरना यह गन्दी राजनीति देश को ले डूबेगी। पीडा अब सहन शक्ति के बाहर है। अन्त मे कविवर दुष्यन्त कुमार के शब्दो मे–

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।
सिर्फ हगामा खडा करना कोई मकसद नहीं।
कोशिश हमारी हो कि यह सूरत बदलनी चाहिए।।

– पूर्व प्रधान, आर्यसमाज विदिशा,
दयानन्दपुर, बैरसिया रोड,विदिशा (म०प्र०)

बोध कथा

राष्ट्रभाषा के प्रथम प्रचारक

गुर्जर प्रदेश मे पैदा होकर देश-देशान्तरो मे आर्यसमाज स्थापित करने के बाद भी आर्यभाषा का प्रचार करने वाले पहले युगपुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। उन्होंने मुम्बई मे आर्यसमाज का सगठन करते हुए आर्यसमाज के प्रारम्भिक नियम बनाते हुए सस्कृत और आर्यभाषा का पुस्तकालय स्थापित करना और आर्यभाषा मे आर्य प्रकाश पत्र निकालना प्रधान-समाज के लिए आवश्यक ठहराया था। लाहौर में सगठन-सस्कार मे एक उपनियम बनाकर आर्यजनो के लिए आर्यभाषा का सीखना अत्यावश्यक किया था।

स्वामी दयानन्द गुर्जर भाषा के पूर्ण पण्डित थे। अपने मुम्बई प्रवास मे उन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे, परन्तु वे सभी आर्यभाषा मे ही लिखे, अपने जन्म प्रान्त मे भी वह अपनी मातृभाषा को छोड आर्यभाषा मे ही व्याख्या देते रहे। उनकी सारी पुस्तके आर्यभाषा मे ही प्रकाशित हुईं।

हरिद्वार में एक सत्सग मे एक सज्जन ने निवेदन किया "यदि आप अपनी पुस्तको का अनुवाद फारसी अक्षरो मे कराकर छपवा दे तो नागरी अक्षर न जानने वाले पजाब प्रान्त आदि की जनता को बडी सुविधा होगी।"

महाराज ने उत्तर दिया –" **अनुवाद तो विदेशियों के लिए होता है, नागरी के अक्षर थोडे दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा का सीखना भी कोई कठिन कार्य नहीं है। फारसी और अरबी के शब्द छोडकर ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्यभाषा है, यह अति कोमल और सुगम है। इस देश में उत्पन होकर अपनी देश की भाषा सीखने में कुछ भी परिश्रम नहीं होता, आप तो अनुवाद की बात कहते हैं। परन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर में भाषा की एकता स्थापित करने से के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में ही लिखे और प्रकाशित किए हैं।**"

– नरेन्द

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

आगे बढो : ऊंचे उठो।

उद्यांन ते पुरुष नावयानम्। *अथर्व० ८।१६*
हे पुरुष ऊचे उठो, नीच न गिरो
उत्क्रामातः पुरुष मावपथ ।। *अथर्व० ८।१४*
हे पुरुष, जीवने मे ऊचा उठा, नीचे न गिर।
राष्ट्र रोह द्रविण रोह। *अथर्व० १२।६२*
राष्ट्र को बढाओ, सम्पदा बढाइए
वय तुभ्य बलिहृता स्याम।। *अथर्व० १२।६२*
हे मातृभमि ! हम तुम्हारे लिए बलिदान करने वाले हों।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

शतियों का आह्वान: शिक्षा इतिहास की : कल्याण मार्ग से ही

भारत को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए चौवन वर्ष हो गए हैं, देश मे गणतन्त्री व्यवस्था के भी ५१ वर्ष हो रहे हैं, राष्ट्र के सास्कृतिक और सामाजिक कायाकल्प के लिए समर्पित सगठन आर्यसमाज के शुभारम्भ को सवा सौ वर्ष से अधिक समय हो गया है, यह भी गरिमा एव प्रेरणा की घडी है कि राष्ट्रभाषा के माध्यम से सर्वागीण राष्ट्रीय अभ्युदय के लिए समर्पित हरिद्वार के गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शुभारम्भ का शताब्दी कार्यक्रम भी नई दस्तक दे रहा है। जल्दी ही भारतीय विक्रमी सवत् २०५८ वर्ष का शुभारम्भ होगा। इस प्रकार सभी देशवासियो, उसके राष्ट्र नेताओ के सम्मुख आत्मचिन्तन की घडी आ गई है कि हम परीक्षा करे कि पिछले सौ-सवा वर्षो मे राष्ट्र की क्या उपलब्धिया है, क्या अवरोध है ? किन क्षेत्रो म हम आगे बढे और किन क्षेत्रो मे हमारी प्रगति नही हुई। यह ठीक है कि शिक्षा, चिकित्सा कृषि, समाज सेवा, ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योगो के अनेक क्षेत्रों मे हमने प्रगति की है उनमे न केवल हम स्वावलम्बी हुए है, प्रत्युत अनेक कीर्त्तिमान भी रखे हैं, परन्तु उसी के साथ यह चिन्ता की बात है कि अनेक क्षेत्रो मे अभी भी शीर्ष वैज्ञानिको और विशेषज्ञो का पथ-प्रदर्शन अपेक्षित है। इसी के साथ हम यह भी भूल नहीं सकते कि भारत राष्ट्र के सर्वांगीण अभ्युदय के लिए भारतीय नवजागरण के पुरोधा एव आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसस्कृति से स्वदेश और स्वराज्य का प्रशस्त मार्ग अपनी वाणी और लेखनी द्वारा प्रस्तुत किया था। विभिन्न शतियों के आहान के सन्दर्भ मे हम जब आत्म-निरीक्षण करे तो हमे यह स्मरण रखना होगा कि सभी सामूहिक प्रयत्नो क बावजूद देश से भूख गरीबी, रोग, विषमता, भेदभाव अन्याय और कुरीतिया नष्ट नहीं हुई हैं। हम यह भी भूल नहीं सकते कि कारगिल-सघर्ष मे मात खाने के बावजूद हमारा पडोसी पाकिस्तान नए प्रच्छन्न सघर्षो की तैयारी कर रहा है। विभिन्न गुप्त तार-सन्देश और जासूसी सूचनाए चेतावनी दे रही हैं कि पाक फौज विदेशी आतकवादियो को भारी क्षमता के हथियारो के प्रयोग और सम्मुख मुठभेड का प्रशिक्षण दे रहा है। पाक नौसेना के प्रवक्ता ने घोषित किया है कि पाकिस्तान अपनी पनडुब्बियो मे आणविक मिसाइले लगा रहा है। हमारे पडोसी का इतिहास हमे सावधान कर रहा है कि उसकी यह नई सज्जा हमारे ही विरुद्ध होगी। यह भी चिन्ता की बात है कि हमारे उस पडोसी ने पिछले वर्ष दर्जनो विदेशी आतकवादी प्रशिक्षित कर विभिन्न ठिकानो को भेजे थे। इन विदेशी आतकवादियो मे मसूद, मुफ्ती बशीर, अकरब आदि अनेक आतकवादी गिरोह शामिल थे।

हम यह भी भूल नही सकते कि पाकिस्तान के फौजी शासक जनरल मुशर्रफ बार-बार कह चुका है कि वह अधिकृत कश्मीर नही छोडेगा। वह आतकवादियो द्वारा विभिन्न हथियारो और अणुशस्त्र के प्रयोग की भी धमकी दे चुका है। वह सम्पूर्ण कश्मीर राज्य को विवादग्रस्त घोषित कर केवल उसी के बारे मे भारत से बातचीत करना चाहते हैं। यह भी चिन्ता की बात है कि १६८८ से ही पाक खुफिया एजेन्सी आई०एस०आई० जेहाद के लिए तैयार विदेशी आतकवादियो को स्पेशल ट्रस्टि का परिपत्र देकर भारत मे घुसपैठ के लिए भेज रही है। मुजफ्फराबाद स्थित मुजाहिदीनो के कमाण्डर अमीर बख्त जमीन ने ऐलान किया था – 'हम दुनिया के किसी भी भाग मे लडने के लिए तैयार हैं जहा भी हमे मजहबी ज्यादती के खिलाफ भेजा जाएगा' इस प्रकार स्वाधीनता के ५४वे वर्ष मे मे अपने पडोसी देश द्वारा दी चुनौतियो का जवाब देने के लिए सदा प्रस्तुत होना चाहिए, वहा हमे अपनी एक अरब तक पहुचने वाली बढती जनसख्या के लिए प्रतिवर्ष ८ लाख २७ हजार विद्यालय, ६ लाख ७३ हजार शिक्षक, २५ लाख नए घर, ४० लाख नई नौकरिया, १६ करोड मीटर कपडा, १ करोड २५ लाख क्विण्टल अधिक अन्न चाहिए। बढती जनसख्या के सन्दर्भ मे विश्व के हर छह व्यक्तियो मे एक भारतीय होगा। इतनी बडी जनसख्या अल्पपोषित निर्बल रोगी, अपग न हो, इसके लिए समय रहते जनता और राष्ट्रनताओ को राष्ट्रनिर्माण की दिशा म अधिक सावधान हाना पडेगा। एक आर हमे बढती जनसख्या के अभावा, कष्टो का स्थायी समाधान ढूढना होगा वहा सबसे बडी समस्या नैतिकता का अभाव है। समाचार है कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत एल्यूमीनियम लि० बाल्को के ५१ प्र० श० शयर औने पौने दाम मे विदेशी कम्पनी बाल्को को दिए गए है। यह उद्योग अच्छी आय करता है इसके सरकारी हिस्से नाम मात्र की कीमत पर बेचने का कार्य देश द्रोह है। घाटे मे चल रहे उद्योगो का विनिवेश ठीक समझा जा सकता था, परन्तु मुनाफा देने वाले उपक्रमो का औने पौने मे बेचना राष्ट्रद्रोह है।

शतियो की इस घडी मे हमे स्मरण रखना होगा कि भारत के स्वाधीनता सग्राम मे आर्यों का सर्वाधिक प्रतिशत था। यह भी उल्लेखनीय है कि अधिकाश आर्य स्वतन्त्रता सेनानियो ने अपने त्याग-बलिदान के लिए किसी प्रकार का आर्थिक पुरस्कार लेना स्वीकार नहीं किया था। आज भारत राष्ट्र के सम्मुख अनेक चुनौतिया है। अभी तक की ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी के अनेक क्षेत्रो मे शीर्ष वैज्ञानिको और विशेषज्ञो का पथ प्रदर्शन अपेक्षित है। देश मे अभी तक भी सभी प्रयत्नो के बावजूद भूख, गरीबी, रोग विषमता, भेदभाव, अन्याय, कुरीतिया नष्ट नहीं हुई है, अपनी इन न्यूनताओ और अभावो का उन्मूलन कठिन नहीं है, यदि स्वतन्त्रता सग्राम की तरह सभी देशवासी उन्हे नष्ट करने के लिए अपने सामूहिक त्याग और समर्पण का मार्ग अपनाए, परन्तु जैसा कि सवाद मिल रहा है नैतिकता के अपने अभाव के कारण ही हमारे लाभप्रद उद्योगो को गवाया रहा है। इतिहास साक्षी है कि जब भी देशवासी हारे तो अपने ही जयचन्दो और मीरजाफरो की राष्ट्र विरोधी गददारी से। स्वतन्त्र भारत, उसकी गणतन्त्री व्यवस्था और आर्यसमाज सरीखी राष्ट्र निर्माणकारी सस्थाओ को इतिहास की उस सीख से शिक्षा लेनी होगी। जब तक राष्ट्रवासी और उनके राष्ट्रनेता अपने जीवन मे तन-मन-धन प्रत्येक दृष्टि से कल्याण मार्ग के लिए समर्पित नहीं होगे, राष्ट्र का सर्वांगीण अभ्युदय पूर्ण व्यावहारिक होते हुए भी सदा अनेक बाधाओ और अवरोधो से असम्भव न होते हुए भी कठिन अवश्य हो जाएगा। विभिन्न शतियो का पदार्पण हमे जीवन मे कल्याण मार्ग अपनाने का सत्परामर्श दे रहा है – हमे स्मरण रखना होगा कि स्वार्थ त्याग से ही देश का कल्याण होगा – यही इतिहास की सीख है। ❑

चिट्ठी-पत्री

धूम्रपान पर प्रतिबन्ध उचित कदम

हाल ही मे भारत सरकार द्वारा तम्बाकू और धूम्रपान पर लगया गया प्रतिबन्ध उचित और प्रशसनीय कदम है। जिस तेज गति से भारत मे गुटखा सिगरेट जैसे मादक पदार्थों का सेवन बढता जा रहा था वह एक गम्भीर चिन्ता का विषय था। इन मादक पदार्थों को सेवन रोकने के लिए चलाया जा रहा समस्त जन-जागरण अभियान फीका साबित रहा है। तम्बाकू और सिगरेट के विज्ञापनो पर भी प्रतिबन्ध लगाकर सरकार ने उचित कदम उठाया है इससे अच्छे परिणाम मिलने के सकेत हैं।

– हिमाशु मिश्र, पी०रोड, कानपुर

उचित समाधान हो

सार्वजनिक स्थानो पर धूम्रपान निषेध, कम से कम बच्चो द्वारा इसकी खरीद पर रोक का अधिनियम एक 'सार्थक पहल है और प्रशसनीय है परन्तु सरकार कई बार ऐसे कानून बना चुकी है परन्तु उन पर अमल नहीं होता। दिल्ली मे इससे पहले भी ऐसा कानून बना था, लेकिन धूम्रपान निरन्तर होता रहा धूम्रपान की बुराई के विरुद्ध जन-सामान्य और समाजसेवी सस्थाओ को भी योगदान करना चाहिए। जनता और शासन सभी के सयुक्त प्रयत्नो ही धूम्रपान की न केवल सार्वजनिक स्थानो पर प्रत्युत स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे न केवल घरो से प्रत्युत सभी जगहो से प्राणिमात्र विरोधी इस बुराई को पूरे समाज से समाप्त कर इस बुराई का स्थायी उचित समाधान करना चाहिए।

– प्रेमिला कर्ण, तिगडी कैम्प, नई दिल्ली

परम शक्ति से सच्ची प्रार्थना

सभी धार्मिक मनुष्यो मे एक या अधिक महात्मा हुए हैं, वे सभी पूजनीय हैं और उनका सम्मान तथा अनुकरण श्रद्धा-भक्ति से किया जाता है। विश्व की सभी नदिया सागर मे मिलने के लिए प्रयत्नशील होती है। इसी तरह प्रत्येक धार्मिक मन्तव्य मानने वाले आकाश गगा, ग्रहो-नक्षत्रो की सृष्टि और ब्रह्माण्ड का सचालन करने वाले जग नियन्ता परमपिता प्रभु की स्तुति और साक्षात् की आशा-आकाक्षा करते है। सभी धार्मिक मन्तव्यो मे सच्चे मन से की प्रार्थना की महत्ता की गई है वैसे तो सत्कर्म करने वाले प्राणी के लिए किसी प्रार्थना की जरूरत नहीं होती तो भी भक्त की सच्ची प्रार्थना उसे जोडने मे सहायता देती है।

– भागवत सिह हैहयवशी, अतर्रा, बादा

केवल सामवेद के मन्त्रो से गायत्री छन्द सप्तकम् (१)

गायत्री छन्द का सन्देश है - स्तुति के अनुकूल आचरण से रक्षण पालन होगा

— पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) हे अग्ने! हमे कमियों को दूर करने वाला तेज प्रदान करें

अग्ने विवस्वदाभरास्मभ्यमूतये महे।
देवो ह्यसिनो दृशे।। *साम १०*
वामदेवः। अग्निः। गायत्री

अर्थ – हे (अग्ने) अग्नि देव ! आप (हि देव असि) निश्चय ही दिव्य है तथा दिव्यताओ को देने वाले है। अत (अस्मभ्य महे अतये) हमारी महत्ती रक्षा और वृद्धि के लिए तथा (न दृशे) हमारी दृष्टिशक्ति तथा दृष्टिकोण को समतुलित रखने के लिए (विवस्वत् आभर) अन्धकार तथा कमियो को दूर करने वाला तेज प्रदान करे।

मनन – अग्नि के वेद मे पृथक्-पृथक् कर्म करने के कारण परमात्मा गुरु सूर्य अग्नि, विद्युत पिता, राजा, मन्त्री आदि बहुत से रूप तथा नाम हैं। प्रसग वश, क्षेत्र के अनुसार उसका उपयुक्त अर्थवाचक नाम ग्रहण किया जाता है।

दृष्टि के स्वास्थ्य अथवा अन्धकार को दूर करने के प्रसग मे अग्नि का अर्थ सूर्य किया जाएगा। दृष्टिकोण अथवा अन्तदृष्टि को सुधारने के प्रसग मे अग्नि का अर्थ परमात्मा या गुरु किया जाएगा। रक्षा के प्रसग मे वैयक्तिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि से पिता राजा या सेना-सचालक किया जाएगा। शारीरिक स्वास्थ्य के प्रसग में जठराग्नि भोजन के प्रसग मे अग्नि-आग, मन्त्र सचालन के प्रसग मे विद्युत् आदि किए जाएगे।

निष्कर्ष वेद के सब शब्द व्युत्पत्तिपरक होने से प्रसग और क्षेत्र की विविधता के कारण अनेकार्थक हैं। क्षेत्र और प्रसग के अनुसार उन शब्दो के भिन्न-भिन्न अर्थ सार्थक और जीवन की उन्नति के लिए सहायक हैं। इसलिए मनु ने वेद को सर्वज्ञानमय तथा अपौरुषेय कहा है। वेद का जितना अधिक मनन-निदिध्यासन करके उसके निर्देशो पर आचरण किया जाएगा उतना ही मनुष्य समाज और राष्ट्र को लाभ प्राप्त होगा।

इसी कारण वेद सब धर्मो दर्शनो, और सिद्धान्तो के बीजरूप मे स्रोत माने जा सकते है। सब धर्मो, दर्शनो और सिद्धान्तो का सामान्य एव बुद्धिसमत रूप वेदो से निकला है। उनमे विरोध तथा सृष्टि नियम विरुद्ध मान्यताए, मनुष्य की अल्पज्ञता तथा अन्ध श्रद्धा का परिणाम हैं।

अर्थपोषण – विवस्वत – वि+वस्+वत्=दूर करने वाला तेज, प्रकाश, गायत्री–गा+य+त्री–गा स्तुतौ, यती प्रयत्ने त्रैड् पालने।

(२) इन्द्र का ज्ञानी एवं जितेन्द्रिय भक्त ही जनता के निवास का प्रबन्ध कर सकता है

क इमं ना हुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्।
स नो वसून्याभरात्।। *साम १६०*
वामदेवोगौत्तमः। इन्द्रः। गायत्री

अर्थ (नाहुषीषु) मानव प्रजाओ मे (क) कौन धन्य पुरुष (इम इन्द्रम्) इस ऐश्वर्यशाली-परमात्मा, राजा, आचार्य आदि को (सोमस्य) सोम अर्थात् भक्ति ज्ञान, बल, कर्म या ब्रह्मचर्य इत्यादि के रस से (तर्पयात्) तृप्त या सन्तुष्ट करेगा (स) ऐसा प्रभु भक्त व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्ति से तृप्त वह ऐश्वर्यशाली, (न वसूनि आभरात्) सभी प्रकार के ऐश्वर्यों अथवा निवास योग्य पदार्थों को हमे प्राप्त करा सकता है – कराता है।

अर्थपोषण –नाहुषीषु – यह बन्धन (नहुष मनुष्यनामसु। नि० २-३

गौतम – गा वेदवाणी ताम्यति काक्षते इतिगोतम, तस्यापत्य शिष्योवा गौतम।

निष्कर्ष – १ प्रत्येक ऐश्वर्यशाली पुरुष अपने उपासक के किसी न किसी प्रकार के रस (उत्पादित पदार्थ) को देखकर ही सन्तुष्ट हो, उसकी प्रार्थना पूर्ण करता है – ऐश्वर्य या पदार्थ देता है। केवल शब्दिक स्तुति से कोई इन्द्र सन्तुष्ट नहीं होता। (२) दिव्यगुणी (वामदेव) तथा ज्ञानी और जितेन्द्रिय (गौतम) ही ऐश्वर्यशाली इन्द्र को सोम दान से तृप्त कर सकता है।

(३) हे इन्द्र ! हमें अपने उपदेशों के श्रवण तथा आचरण में रुचि प्रदान करें

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावत ।
अर शक् परेमणि।। *साम २०६*
श्रुतकक्ष । इन्द्र। गायत्री।

अर्थ – (हे शूर इन्द्र) आन्तर-बाह्य शत्रुओ का नष्ट करने वाले परमात्मन् या राजन् ! हम (ते श्रवसे) तेरे ज्ञान के श्रवण के लिए अथवा तेरे सदृश यश प्राप्त करने के लिए (त्वावत अर गमेम) तेरे जैसे शूर और ज्ञानी के पास खूब बार-बार जाए। हे (शक्र) सर्वशक्ति सम्पन्न प्रभो ! हम (ते परेमणि) तेरे पर उत्कृष्ट मार्ग (अर ममेम) पर्याप्त मात्रा मे चले। जहा तक सम्भव हो तेरे बताए मार्ग पर तेरे उपदेशों को आचरण मे लाकर जीवन व्यतीत करे।

निष्कर्ष – केवल यशोगान या शाब्दिक स्तुति का कोई फल नहीं होता। स्तुत्य के उपदेशो का आचरण ही सफल होकर सिद्ध बनता है और अपनी तथा समाज की कामनाए सिद्ध करता है।

(४) इन्द्र परदुःखकातरों का दुःखहर्ता, आनन्द प्रदाता सखा बना रहता है

इन्द्र उक्थे भिर्मन्दिष्ठो वाजाना च वाजपतिः।
हरिवान्तुसुताना सखा।। *साम २२६*
विश्वामित्रः। इन्द्रः। गायत्री।

अर्थ – (इन्द्र) ऐश्वर्यशाली और (वाजानाच वाजपति) अन्न, बल, ज्ञान आदि समृद्धियो के स्वामी (उक्थेभि हरिवताम्) अपने प्रशस्त गुणो तथा कर्मों से प्राणियो के दु खो और कष्टो का हरण करने वाले (सुताना हरिवान्) पुत्रो का दु खहर्ता तथा (मन्दिष्ठे) उत्कृष्ट आनन्द देने वाले (सखा) मित्र बन जाते हैं।

अर्थ पोषण – उक्थेभि – उक्थ – प्रशस्यगुण तथा कर्म वैदिक कोष (चन्द्र०)

निष्कर्ष – ऐश्वर्यशाली =इन्द्र केवल अपने ऐश्वर्य और गुणो के कारण नहीं, अपितु तदनुरूप सहायता, सहानुभूति तथा दान कर्मों के कारण प्रजा का मित्र और आनन्द प्रदाता बनता है।

(५) चौराहे से निसृत मार्गों की तरह, तेरे से प्रदत्त दान हमें लक्ष्य तक पहुंचा दें

वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्रत्वद् यन्तु रातयः।।
साम १७७०
वामदेवः। इन्द्रः। द्विपदागायत्री।

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशलिन् । (यथा) जैसे (पथ) राजमार्ग से (स्रुतय) छोटे-छोटे मार्ग विविध दिशओ मे जाते हैं, वैसे ही (रातय.) विविध प्रकार के दान (त्वत्) तेरे (वियन्तु) विविध दिशाओ मे यथाकर्म विविध प्राणियो को प्राप्त हो।

निष्कर्ष – ऐश्वर्य की सफलता इसी मे है कि वह विविध प्रकार से अभावग्रस्त विविध प्राणियो के पास पहुच कर उन्हे सुखी करे।

(६) पूर्वज विद्वानों का आभार मानकर, पर-लाभ के लिए, वाणी का प्रयोग करता हूं

नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्योनमः साकं निषेभ्यः।
युञ्जे वाचं शतपदीमा।। *साम १८२८*
मृगः। अग्निः। गायत्री।

अर्थ – हे अग्रनायक प्रभो! (पूर्व स दभ्य) अपने से पूर्व हो चुके (सखिभ्य) आप के समान ख्याति प्राप्त विद्वानो के प्रति (नम) नतमस्तक हू। (साकनिषेभ्य सखिभ्य नम) अपने समकालीन आप के समान ख्याति प्राप्त विद्वानो के प्रति भी नतमस्तक हू। उनके व्यक्त विचारो से लाभ उठाकर (शतपदीं वाच युञ्जे) नाना मार्गों का प्रदर्शन कराने वाली वेदवाणी का मैं, अपने और समाज के लाभ के लिए प्रयोग करता हू।

निष्कर्ष – वैश्व देवी, शतपदी, वरदा वेदवाणी का स्वाध्याय और प्रयोग करने वाले को चाहिए कि वह अपने पूर्वज और समकालीन विद्वानो के प्रति कृतज्ञता का भाव रखे, क्योकि उनके मार्ग दर्शन के बिना वेद मे प्रवेश ही सम्भव नहीं था। तदन्तर पूर्वाग्रह रहित और जागरुक होकर वेद का मनन पूर्वक निदिध्यासन करे, क्योकि स्वय वेद मे कहा है कि शान्ति और आनन्द का परमधाम 'सोम' सखा बनकर बनकर और नि (सहस्रार) मे बैठकर मार्गदर्शन करता है (यो जागार तमय सोम आह तवा हमस्मि सख्येन्योका । साम १८२६) क्योकि वह सदा से सब का गुरु है (स सर्वेषामपि गुरु कालेनामवच्छे दात्। योगदर्शन १/२६) यह परमात्मा ही ब्रह्मारूप मे वाणी का परम व्योम है और इस अक्षर परम व्योम मे सभी देव तथा ऋचाए स्थित है। ऋ० १/१६४/३६

(७) इस जड चेतनमय जगत् में सब दिव्य शक्तियां विद्यमान हैं

गायत्र त्रैष्टुभ जगद्विश्वारूपाणि सभृता।
देवा ओकासिचक्रिरे।। साम १८३०
मृगः। अग्नि । गायत्री।

अर्थ – (जगत्) यह जगत् (गायत्रम्) पुरुषो प्राणियो से सम्बद्ध है तथा (त्रैष्टुभम्) तीन गुणो वाली जड प्रकृति से निर्मित अचेतन पदार्थों से सम्बद्ध है। इसे जगत् मे (विश्वारूपाणि सभृता) नाम रूपात्मक विश्व के सब पदार्थों का समावेश है। (देवा ओकासि चक्रिरे) सब दिव्य शक्तियो ने उसे अपना घर बनाया है।

अर्थ पोषण – गायत्रम्– गायत्रो वै पुरुष। ऐ० ४/३, त्रैष्टुभ– त्रिभु गुणै सम्बद्धम्। स्वा० दया० यजु० १२/५, अतरिक्ष त्रिष्टुप्। जे० ३/१/५/३ तत्र स्थित त्रैष्टुमं।

अवधेय – पुरुष पुरिशेते इति– प्राणी या चेतन और त्रैष्टुभम् – तीन गुणों वाली प्रकृति से निर्मित जड या अचेतन पदार्थो से युक्त यह जगत अन्तरिक्ष-आकाश मे अवस्थित है। पुरुष– स्तुत्य और स्तोता, पिता और पुत्र, गुरु और शिष्य= उपदेष्टा और आचरिता अर्थात् परमात्मा और जीवात्मा रूप मे प्रस्तुत है। जैसे मनुष्य जड शरीर और चेतन आत्मा के मिलने पर तथा मिले रहने तक कहलाता है, वैसे ही जगत् पुरुषो और जड पदार्थों के एक रहकर कार्यरत रहने तक कहलाता है। जैसे मृत्यु के बाद मनुष्य नहीं आत्मा बचता है, वैसे ही प्रलय के बाद जगत् नहीं परमात्मा बचता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली- ६

आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है

– कैप्टन देवरत्न आर्य

गुजरात मे आए भूकम्प ग्रस्त क्षेत्रो मे सहायतार्थ आर्यसमाज के कार्यों के अवलोकन हेतु विभिन्न गावो मे गया। भुज एव गान्धीधाम क्षेत्रों मे आर्यसमाज गान्धीधाम के सक्रिय कार्यकर्ता एव मन्त्री श्री वाचोनिधि एव प्रधान श्री पुरुषोत्तम जी पटेल व अन्य सदस्यो के माध्यम से जो सहायता कार्य भूकम्प प्रसित क्षेत्रो मे हुआ है वह आर्यसमाज के इतिहास की एक प्रमुख घटना है एव स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। आर्यसमाज गान्धीधाम के अधिकारियों के साथ मैने अनेक भूकम्प पीडित क्षेत्रों का दौरा किया और सहायता कार्यों का अवलोकन किया।

लगभग २५००० की आबादी वाला रतनाल गाव जो गान्धीधाम से ३५ किलोमीटर दूर है, पूर्णतया नष्ट हो गया है। वहा मलबे के ढेर के अतिरिक्त कुछ भी देखने को नहीं मिला। अनेक गैर सरकारी सस्थाए वहा राहत कार्य में लगी हुई है। इस गाव मे गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारियो ने जहा आर्यसमाज गान्धीधाम की ओर से दवाईया, अनाज, कम्बल आदि राहत सामग्री का वितरण किया वहा मलबे मे से शवों को निकालने का अद्वितीय कार्य भी किया। शवों का अग्नि सस्कार किया और उस पर कोई बोरी हवन सामग्री डाली ताकि पर्यावरण को कोई हानि न पहुचे व बदबू आदि समाप्त हो जाए।

इसी प्रकार टप्पर, दुधई वरसामेडी, पसुडा सुखपर लुडवा, भीमासर आधोई, शिकारपुर, जगी, ललियाना, बोध आदि गावो मे राहत सामग्री का वितरण किया गया।

आर्यसमाज गान्धीधाम ने अपने राहत कार्यों को चार भागो मे बाटा – मुद्रा विभाग, गान्धीधाम विभाग, अजार विभाग और भुज विभाग। सम्पूर्ण भारत वर्ष से प्राप्त सहायता सामग्री को इन विभागो मे उनकी आवश्यकतानुसार बाटा जाता रहा।

इसमे सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र भचाऊ और अजार था। हम अजार क्षेत्र में गए जहा लगभग सभी भवन मिट्टी के ढेर में परिवर्तित हो चुके थे। पूरा सरकारी तन्त्र वहा मुस्तैदी से कार्यरत् था। रियलान्स कम्पनी ने इस गाव से मलबे के ढेर हटाने का उत्तरदायित्व लिया। अनेक मशीने व ट्रक गाव से मलवा उठाने का कार्य कर रहे थे। आर्यसमाज ने अजार मे अपना केन्द्र खोला हुआ था जिसमें आर्यसमाज अजार के सदस्य भी अपना सक्रिय योगदान कर रहे थे।

दिल्ली, पानीपत, पोरबन्दर धगन्धा आदि मे आर्यवीर दल के लगभग १०० आर्य वीर इन गावो मे शव ढूढने और उनका अन्तिम सस्कार करने मे लगे हुए थे। अनेक जीवित व्यक्तियो को बचाने का श्रेय भी उन्हें मिला। इसका नेतृत्व किया – श्री वीरेन्द्र, श्री राजसिहं, श्री विनय आर्य, श्री सुखवीर सिह, श्री अजय आदि ने। आचार्य आर्य नरेश भी इनके साथ इस कार्य मे लगे रहे। अनेकों प्रकार की सहायता सामग्री विशेषकर तम्बू, कम्बल अनाज, दवाईया आदि वितरित की गई। आर्यवीर दल के नवयुवको ने जिस निर्भीकता एव उत्साह से यहा कार्य किया – आर्यसमाज के लिए यह गर्व की बात है।

हम वहा से ही अजार क्षेत्र के एक गाव सिनोग्रा मे गए। आर्यसमाज जोधपुर के आर्य जनों ने जो कार्य वहा किया उसको देखकर हम और भूकम्प पीडित नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सके।

लगभग एक एकड भूमि मे उन्होने अपना कैम्प सिनोग्रा ग्राम मे बनाया हुआ था। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री अशोक गहलोत की पूज्या माता जी के नाम से स्थापित न्यास की ओर से सहायता सामग्री आई। कैम्प के बीच मे उन्होने यज्ञशाला बनाई है जहा इस गाव के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ होता रहता था। इस दल का नेतृत्व कर रहे है – श्री राजेन्द्र सिह सोलकी एव श्री राम सिह आर्य। जोधपुर के आर्य जन इस गाव मे निम्न सामग्री लेकर आए हैं।

१ डाक्टर गनपत सिह एम०डी० व एक कम्पाउडर, २१०० टेन्ट, खूटी और रस्सी सहित, ३ १००० कम्बल, ४ १००० चादर, ५ १००० स्टील-प्लेट, ग्लास व २००० कटोरी, ६ ४ जे०वी०सी० (मलवा साफ करने के लिए), ७ ४ डम्पर, ८ १५००० मिनरल वाटर की बोतले।

इन्होंने १००० परिवारों मे १ कम्बल, १ चादर, १ थाली, १ ग्लास और दो कटोरी के सैट करके वितरित किए। जे०वी०सी० व डम्पर के माध्यम स अनेक शवो को निकाला। इस दल में १५ से अधिक व्यक्ति काम कर रहे है। जिसमे डाक्टर, एडवोकेट जैसे उच्च शिक्षित व्यक्ति शामिल है। साथ ही ३० आर्य वीर भी।

इसके पश्चात् हम भुज क्षेत्र मे गए। वहा जो भूकम्प से तबाही हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। पूरा गाव मलबे के ढेर मे परिवर्तित हो गया है। लगभग १०० आर्य वीर इस क्षेत्र में काम कर रहे थे। सैंकडो लाशो को मलबे से निकाल चुके थे व कई जीवित व्यक्ति भी। आर्यसमाज भुज के कार्यकर्ता दिन रात सहायता कार्य मे लगे हुए थे वहा वायु शुद्धि और मन शुद्धि हेतु सारे समय यज्ञ होता रहता है। लगभग ४००० व्यक्तियों की मध्याह्न एव रात्रि को भोजन व्यवस्था चल रही है, जिसमें सब धर्मों और मजहब के लोग लाभ प्राप्त कर रहे है। भुज आर्यसमाज के प्रधान डॉ० बी०एच० पटेल एव अन्य आर्यजन २४ घण्टे भुज आर्य समाज के प्रागण मे अपनी सेवाए दे रहे है। डॉ० योगेश वेलाणी ने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया। भूकम्प के पश्चात् उन्होंने अपनी दवाओ की दुकान को जन साधारण के लिए नि शुल्क खोल दिया। जिसे जो भी दवा चाहिए वहा से प्राप्त कर सकता था।

समस्त गुजरात क्षेत्र मे भारत की विभिन्न आर्यसमाजो और गैर आर्यसमाजी सस्थाओं द्वारा लगभग १०० ट्रक सामग्री प्राप्त हो चुकी है। मुम्बई से पाच टन प्लास्टर ऑफ पेरिस ४० कारटून विभिन्न दवाओ के लगभग ५००० कम्बल १५०० सामूहिक आवास के बडे टैन्ट ४०० कपडे के बॉक्स जो इग्लैण्ड से प्राप्त हुए वितरण के लिए भेजे गए। यह सामग्री आर्य विद्या मन्दिर मुम्बई के छात्रो व रामानन्द आर्य डी०ए०वी० कालेज के छात्रो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से एकत्रित की गई थी। गुजरात भर की आर्य समाजो विशेषकर राजकोट, पोरबन्दर जामनगर, साबरिला, सैजपुर, अहमदाबाद, धागन्धा, टकारा आदि स्थानों से कार्यकर्ता राहत सामग्री लेकर आए। ब्र० धर्मबन्धु के नेतृत्व मे अनाज कम्बल, टेन्ट बाटे गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा लगातार जीवत सम्पर्क रखकर टेन्ट कम्बलें खाद्य सामग्री हवन सामग्री भिजवाई गई।

प्रसन्नता की बात है कि अनेक गैर आर्यसमाजी सस्थाओ ने आर्यसमाज पर विश्वास और भरोसा कर उनके द्वारा एकत्रित राहत सामग्री को आर्यसमाजो मे ही वितरण के लिए भेजा।

आर्यसमाज पानीपत, बैंगलूर रानीबाग हैदराबाद, ब्यावर, अजमेर पोरबन्दर धागन्धा आदि स्थानो से आर्यसमाज के स्वय सेवक राहत सामग्री लेकर आर्यसमाज गान्धीधाम पहुचे।

सेना के ब्रिगेडियर श्री मलिक की धर्मपत्नी यहा एक सप्ताह रहीं और राहत कार्यों मे जुटी रहीं, इस सहायता कार्य मे देश के विभिन्न विशिष्ट नेता विद्वान व कार्यकर्त्ता यहा पहुच गए थे।

जिनमे मुख्य है स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, आचार्य आर्य नरेश, श्री जगदीश जी आर्य (दिल्ली), ब्र० राजसिह जी, ओमप्रकाश झवर, श्री कल्याणदेव आर्य, आचार्य ज्ञानेश्वर जी ब्र० धर्मबन्धु जी आदि। गुरुकुल गौतम नगर से २० ब्रह्मचारी, झज्जर के ब्रह्मचारी सार्वदेशिक आर्य वीर दल व अन्य प्रदेशो के लगभग १५० आर्य वीर पूरे भारत से पधारे।

देश-विदेश से दूरभाष पर सहायता की पूछताछ कर तुरन्त सहायता भेजी गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा श्री विमल वधावन जी एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी सतत् सम्पर्क मे रहे। प्रतिदिन गान्धीधाम कार्यकर्त्ताओ द्वारा सूचना एकत्र करके सार्वदेशिक हेतु सकलन तथा माग के अनुसार सामग्री का प्रबन्ध नियमित किया जाता रहा। दिल्ली से नि शुल्क ट्रको की व्यवस्था में भण्डारी इन्टरस्टेट केरियर को प्रेरित करने का श्रेय भी श्री विमल वधावान एव श्री वेदव्रत शर्मा जी को जाता है। मुम्बई से श्री ओकारनाथ जी आर्य व चेम्बूर आर्यसमाज के मन्त्री श्री चन्द्रभूषण गिरोत्रा भी सतत सम्पर्क कर राहत सामग्री को भेजते रहे।

दिनाक ७/२/२००१ को जन सेवा दल पानीपत ४ ट्रक राहत सामग्री लेकर आर्यसमाज गान्धीधाम पहुचा। आठ सदस्यो का यह दल श्री कैलाश ग्रोवर के नेतृत्व मे आटा दाल, गुड, भुने चने चावल कम्बल, टेन्ट नई साडिया, साबुन, टूथ पेस्ट, सब्जिया आदि वितरण के लिए लेकर आया। इन ट्रको मे लगभग ५ लाख रुपये का सामान था। इस दल को जब राहत कार्य के लिए कहा गया तो उन्होने कहा हमे तो सडी लाशो को निकाल कर दाह सस्कार का काम ही दीजिए।

आर्यसमाज गान्धीधाम को दिल्ली से लगभग १० टन हवन सामग्री प्राप्त हुई जिसे उन्होने सभी श्मशान भूमि पर भेज दिया। इस आदेश के साथ कि प्रत्येक दाह सस्कार पर डाल दिया जाए और पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जाए ताकि महामारी न फैल सके। कस्टम लेडीज एशोसिएशन की महिलाओ ने एक ट्रक सामान जिसमे प्लास्टिक की बाल्टी टेन्ट व जीवनोपयोगी समान आर्यसमाज गान्धीधाम को वितरण हेतु दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ६ विद्यार्थी आर्यसमाज भवन में ठहरे व राहत कार्यों में भाग लिया। भौरुका रोड लाईन्स के मालिक श्री नरेश अग्रवाल ने एक ट्रक सामग्री, एक लाख नकद भेजा और कहा मैं पाच लाख तक राहत सामग्री आपको भेजूगा। गान्धीधाम आर्यसमाज के पास लगभग १०० ट्रक राहत सामग्री सारे भारत वर्ष से पहुची।

इकॉनामिक ट्रान्सपोर्ट आर्गेनाईजेशन ने सम्पूर्ण भारत से बिना किराया लिए राहत सामग्री गान्धीधाम भेजी।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन की वातानुकूलित एक्स रे वाहन को पूरे कच्छ मे ५०० एक्स रे फिल्म के साथ भेजा, जिसने गावो मे जाकर उन फैक्चर पीडित व्यक्तियो के एक्स रे निकाले जो अस्पताल तक नहीं जा सकते थे।

अजमेर से श्री दत्तात्रेय वाब्ले ने एक ट्रक माल व एक लाख रुपये भेजे। वैदिक विद्वान स्व० आचार्य भद्रसेन जी की स्मृति मे चल रही एक रुग्ण वाहिका अजमेर से अजार गाव पहुची और श्री सोमरत्न आर्य के नेतृत्व में कार्य करती रही।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा किये जाने वाले राहत कार्यों से प्रभावित होकर आगरा निवासी आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री उमेशचन्द्र जी गुप्त, कोषाध्यक्ष आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा ने विभिन्न आर्यसमाजों एव सेवा भावी सज्जनो से ५० ००० रुपये एकत्र कर मुम्बई भेजे। जिसका उपयोग भी भूकम्प पीडितों के लिए किया जा रहा है।

इन हृदय विदारक दृश्यो को जहा देखकर मन मे दु ख और शोक होता रहा वहा भारतवर्ष की समस्त आर्यजनता ने जिस समर्पण एव साहस के साथ सामग्री भेजकर जो उत्साह दिखाया उससे मन बडा प्रफुल्लित हुआ। **"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है"** इसका सार्थक व व्यवहारिक रूप कच्छ मे देखकर यही विचार आया कि दयानन्द की आर्यसमाज का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है जिसके हम सब अनुयायी हैं।

आर्यसमाज के इन कार्यों को देखकर गुजरात सरकार ने एक अध्यादेश जारी कर गान्धीधाम पुराना नगर एव गलपादर गाव को दत्तक गाव के रूप मे देकर उसकी आवश्यकता और पुनर्वास का दायित्व आर्यसमाज गान्धीधाम को सौंप दिया।

आर्य जगत् के लिए प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ने इस क्षेत्र के विकास के लिए जिन गैर सरकारी सस्थाओ के माध्यम से कार्यवाही करने का निर्णय किया, उसमे आर्यसमाज गान्धीधाम का नाम सर्वोपरि था।

आर्यसमाज गान्धीधाम व भुज के अधिकारियो की जितनी प्रशसा की जाए कम है। उन्होने भारत वर्ष से आए कार्यकर्त्ताओं के साथ सैकडों शवो को मलबे से निकाला, जगह-जगह पर यज्ञ कराए। सर्दी भरी रातो मे बाहर निकल कर सडक के किनारे जो व्यक्ति बिना कम्बल के कापते हुए सो रहे थे उन पर चुपचाप कम्बल उढाए, २४ घण्टे रसोई चलाई, गैस कटर से लोहे की छडे काटकर जीवित व्यक्ति निकाले, बाहर से आने वाले ट्रको का मार्गदर्शन किया। पशुओ के लिए चारा, अन्त्येष्टी के लिए लकडी हवन सामग्री की व्यवस्था की। अस्पताल व डाक्टरो को दवाईयो और प्लास्टर ऑफ पेरिस पहुचाया एव समस्त गुजरात के भूकम्प ग्रस्त इलाको का दौरा कर उनकी आवश्यकताओ को पूरा करने का प्रयत्न किया।

अब समय आ गया है कि हम समस्त विश्व को कच्छ मे किए गए आर्यसमाज के परोपकारी कार्यो से परिचित कराकर आर्यसमाज के परोपकारी ऐतिहासिक इतिहास की रचना करे और इस कार्य हेतु हमारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जो दिनाक २३ से २६ मार्च २००१ तक होने जा रहा है उसमे इसका स्वरूप रखे ताकि आम जनता तक हमारे किए हुए कार्य पहुच सके।

– उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्राकृतिक सौन्दर्य अपनाइए

प्रतिदिन देखने मे आता है कि स्त्री हो या पुरुष वह सुन्दर बनने के लिए कितने प्रकार के कृत्रिम प्रसाधन अपनाता है, फिर भी वह आकर्षण नहीं आता जो प्राकृतिक सौन्दर्य मे होता है। सुन्दर बनने के लिए न-जाने कितने प्रकार की महगी-महगी क्रीम-पाऊडर बाजार से खरीदकर लाते हैं और चेहरे की असलीयत को छुपाने के लिए नकली और हानिकारक द्रव्यो की लीपापोती करते हैं।

यह ठीक है कि सुन्दर बनने के लिए अभिलाषा हरेक नर-नारी मे होती है। हम सुन्दर बनने का प्रयास करे, परन्तु प्राकृतिक ढग से, न कि बनावटी सजावट से। यदि आप प्राकृतिक सौन्दर्य प्राप्त करना चाहते हैं तो निम्न लिखित स्वास्थ्य के नियमो का पालन करे –

१ प्रतिदिन प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घण्टा पूर्व उठ कर मुहँ धोकर कुल्ला करके छीटे मारकर आखे साफ करे।

२ यदि मलमूत्र का वेग हो तो नित्यकर्म करे, फिर बाहर जगल मे भ्रमण करे। प्रतिदिन एक मील अवश्य घूमे। गहरे-गहरे श्वास लेकर फेफडो मे ऑक्सीजन भरे। ऑक्सीजन प्राण वायु है। इससे रक्त शुद्ध होता है।

३ प्रतिदिन दात साफ करे, स्नान करे।

४ अधिक मिठाइया, लाल मिर्च, खटाई, अमचूर आम का अचार, तली हुई चीजे, पकौडे समोसे, चाय और सभी प्रकार के मादक द्रव्य बन्द करें।

५ दूध और फलो का सेवन करे।

६ ब्रह्मचर्य का पालन करे।

७ चेहरे पर कील मुहासे से रक्त-विकार से निकलते हैं। उन्हे दूर करने के लिए रक्तशोधक दवाई का प्रयोग करे। मास-मछली, अण्डे छोडकर सात्विक भोजन करे।

८ चेहरे पर सन्तरे के छिलके निचोड कर मले या बेसन मे जरा-सी हल्दी और तेल मिलाकर मुह पर मले, और थोडी देर बाद मुह को ताजा पानी से धो ले।

ऐसा करने से एक महीने मे आपका चेहरा निखर आएगा अर्थात् सौन्दर्य आ जाएगा। किसी को कोई शका हो तो सम्पर्क करे–

देवराज आर्य मित्र (वैद्य विशारद)
आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

भारतीय चिन्तन में मौलिक संसाधनों के सदुपयोग का सन्मार्ग

नई दिल्ली। रुद्रमहायज्ञ एव सत्सग मे आचार्य धर्मेन्द्र ने परामर्श दिया– भोग मानव को पतन की ओर ले जाते हैं जबकि योग के माध्यम से मानव अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। परमात्म चिन्तक को मोह माया आकर्षित नहीं कर पाते। वह निरन्तर साधना के सोपानो से होता हुआ परम तत्व मे केन्द्रित हो जाता है। उसे अपने पराए की अनुभूति नहीं हाती और वह ऊच-नीच की भेद भी छोड देता है।

धर्मेन्द्र जी ने कहा –" प्रभु ने मानव शरीर की रचना नारायण की शक्तियो को समाहित करने का रास्ता दिखलाया है। मानव अपने शरीर मे नारायण की शक्तियो से प्रेरणा ले सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे आलौकिक कार्य कर सकता है। सच्ची साधना मे समर्पण, भक्ति मे आस्था से वह प्रभु की अनुभूति कर सकता है।" वक्ता ने – वेदो, शास्त्रो और प्राचीन सास्कृतिक ग्रन्थ, सद्जीवन की शिक्षा देते हैं। धर्म का तात्पर्य है– अभ्युदय और श्रेयस सिद्धि– अर्थात् भौतिक उत्थान के साथ सच्चा आत्म कल्याण। सच्ची धर्मसिद्धि का अर्थ है अन्तकरण की पवित्रता। वस्तुत भारतीय जीवन दर्शन मे भौतिक ससाधनों की अपेक्षा नहीं है, प्रत्युत उनके सदुपयोग का सन्मार्ग दिखलाया गया है।

पाकिस्तानी पनडुब्बियों पर परमाणु मिसाईल

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी उप नौसना प्रमुख रियर एडमिरल एम० अफजल ताहिर ने साउदी अरब और पाकिस्तान की नौसना ने सयुक्त अभ्यास के बाद सवाददाताओ से कहा – पाक नौसना अपनी पनडुब्बिया परमाणु मिसाइलो से लैस करने पर विचार कर रही है।

रियर एडमिरल ताहिर ने कहा – प्रौद्योगिकी की दृष्टि से भारत और पाकिस्तान के बीच सन्तुलन है और किसी का पलडा भारी नहीं है, लेकिन भौगोलिक दृष्टि से पाकिस्तान थोडे नुकसान मे है, पाक की नौसना यह घाटा पूरा करने और आकडो की दृष्टि से अपने से श्रेष्ठ शत्रु से बराबरी के लिए प्रयासरत है। पाकिस्ताने फ्रास से तीन अगोस्ता पनडुब्बिया ली हैं और उनके निर्माण की तकनीक भी प्राप्त की है, उन्होनें कहा – इससे निश्चित रूप से शत्रु के मुकाबले की क्षमता बढेगी।

महर्षि दयानन्द जयन्ती धूमधाम से सम्पन्न

ग्राम गढी पट्टी होडल (फरीदाबाद) मे जगत गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई जिसकी अध्यक्षता चौधरी गयालाल पूर्व विधायक होडल ने की। इस अवसर पर श्री नेतराम शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

इस समारोह मे चौधरी उदय भानु विधायक हसनपुर (हरियाणा) प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य बहीन श्री शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति पलवल व श्री रघुनाथ आर्य लालपुर (मथुरा) ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान त्याग तथा परोपकार की भारी प्रसशा की की तथा हजारो की सख्या मे उपस्थित नर-नारियो से महर्षि दयानन्द ने के बताए वेदमार्ग पर चलने की सलाह दी।

चौधरी गयालाल ने जीवन भर आर्यसमाज की सेवा करने की घोषणा की। इस समारोह मे मास्टर मनोहर लाल आर्य, श्री कुजीलाल आर्य मास्टर राजमल जी का विशेष सहयोग रहा।

आर्यसमाज कीर्ति नगर में ५१ कुण्डिय यज्ञ सम्पन्न

२५ फरवरी, २००१ को आर्यसमाज कीर्तिनगर मे आचार्य सुभाष जी के ब्रह्मत्व मे ५१ कुण्डिय यज्ञ का सफल समापन हुआ। इसमें क्षेत्र के सैंकडो आर्यो ने भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक ने इस पवित्र अनुष्ठान के आयोजन के लिए स्थानीय आर्यसमाज की भूरी-भूरी प्रशसा की। कार्यक्रम का सफल सचालन समाज के कर्मठ मन्त्री श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा ने किया।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर

प्रधान	–	श्री नरेन्द्र आर्य 'अमर भूषण'
मन्त्री	–	श्री लक्ष्मण सिह जी राठौर
कोषाध्यक्ष	–	श्री सुरेश जी सोनी

वियतनाम के विदेश मन्त्री का हिन्दी प्रेम

वियतनाम के विदेश मन्त्री यदि कहे छोडिए दुभाषिए की चिन्ता आओ हम हिन्दी में बात करे तो यह कोई फतासी नहीं बल्कि सच है। इस सच से स्वय प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी चौंक गए। जब दाइवू होटल मे विदेश मन्त्री न्यूगेन डी नाइन प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी से मुलाकात के लिए पहुंचे। मुलाकात औपचारिक थी। अत सारा ताम-झाम तो होना ही था। वियतनामी विदेशमन्त्री के सहायक अधिकारी व उनका दुभाषिया भी उनके साथ था। इधर से बातचीत मे सहायता के लिए प्रधानमन्त्री वाजपेयी के प्रमुख सचिव बृजेश मिश्र व विदेश मत्रालय के अधिकारी थे। बातचीत शुरू होती, उसके पहले ही विदेश मन्त्री नाइन ने प्रधानमन्त्री से कहा **'हमे नहीं लगता कि बातचीत के लिए हमें दुभाषिए की जरूरत है। क्यों न हम हिन्दी में ही बातचीत करें।'**

चौंकने की बारी प्रधान मन्त्री वाजपेयी और उनके अमले की थी। वियतनाम के विदेशमन्त्री की हिन्दी कोई टूटी-फूटी नहीं, बल्कि बनारसी पुट लिए थी। उच्चारण साफ व सपाट। और होता भी क्यो न। विदेश मन्त्री ने अपनी शिक्षा-दीक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे पूरी की है।

वियतनाम के विदेशमन्त्री की मुलाकात जब प्रधानमन्त्री वाजपेयी से इस किस्सागोई अदाज मे और वह भी हिन्दी मे शुरू हुई तो इसकी कुटनीतिक सार्थकता का अदाज स्वय लगाया जा सकता है। ऐसा नहीं कि दक्षिण-पूर्व एशिया मे वियतनाम भारत केवल से केवल एशियन देशो के बीच और महत्ती भूमिका चाह रहा है बल्कि पेट्रोलियम पदार्थो के क्षेत्र मे भारत भी वियतनाम के साथ सम्बन्धो की नींव पर और अधिक सीमन्ट लगाना चाहता है। यही वजह है कि प्रधानमन्त्री वाजपेयी ने अपनी इस यात्रा क दोरान वामपथी शासन वाल इस देश मे तमाम औपचारिक कार्यक्रमा मे भाग लिया। जिससे वियतनाम को यह स्पष्ट आभास दिया जा सके कि भारत उसके विकास, सुख-दु ख और गौरव सबमे खडा है।

गुजरात भूकम्प में मारे गए व्यक्तियों के लिए शान्ति यज्ञ

आर्यसमाज ए० ब्लाक जनकपुरी मे एक वृहद शान्ति यज्ञ का आयोजन आचार्य ब्र० राजसिह जी के ब्रह्मत्व मे दिनाक २५ फरवरी २००१ को किया गया जिसमे हजारो की सख्या मे आर्यजनो एव क्षेत्र के अन्य निवासियो ने भाग लिया। सभा महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक एव आचार्य आर्य नरेश जी ने शान्ति सभा मे अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज के उत्साही मन्त्री श्री वीरेन्द्र सरदाना ने किया।

सूचना

दिल्ली के सभी आर्य जनो की सूचनार्थ निवेदन है कि वैदिक रीति से नि शुल्क रिश्ते कराने की व्यवस्था आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे उपलब्ध है इस हेतु समाज प्रधान श्री राममूर्ति कैलां प्रत्येक रविवार प्रात ६ बजे से दोपहर २ बजे तक आर्यसमाज के कार्यालय मे उपलब्ध रहते हैं। इच्छुक व्यक्ति उनसे उक्त समय मे (दूरभाष का० ३३६१२८०, नि० ७२४७२५२) पर सम्पर्क कर सकते हैं।

– तेजपाल मलिक
महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है :-

गताक से आगे -

सर्वश्री

187 श्रीमती अगूरी देवी, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 501 00
188 योगेन्द्र मित्र, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 1000 00
189 सत्येन्द्र मित्र, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 1000 00
190 आ०स० मदनगीर, नई दिल्ली 1,500 00
191 आ०स० लाजपत नगर, नई दिल्ली 6,000 00
192 स्त्री आ०स० लाजपत नगर, नई दिल्ली 5,000 00
193 कृष्ण लाल सिक्का, न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी, नई दिल्ली 1100 00
194 श्रीमती सरला पाल, (द्वारा स्त्री आर्यसमाज न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी, दिल्ली) 1000 00
195 बलबीर वर्मा, सरोजनी मार्किट, दिल्ली 1,000 00
196 विपुन कुमार, गुलमोहर पार्क दिल्ली 1000 00
197 अरूणव खुराना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5000 00
198 एयर कमाण्डर जयचन्द्रा, दिल्ली 2000 00
199 ब्रिगेडियर आर०डी० धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
200 श्रीमती सुशील धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
201 उदय धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
202 जय चन्द्रा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 100 00
203 श्रीमती कमला धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2000 00
204 एच० बी० मेहता, साउथ एक्स 2 दिल्ली 2000 00
205 डॉ० पी० एल० राठी, साउथ एक्स 2 दिल्ली 1000 00
206 हरीश्चन्द्र बत्रा, दिल्ली 500 00
207 श्रीमती सुशीला कुकरेजा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
208 आर० के० भाटिया, सेवा नगर, दिल्ली 1000 00
209 राजन खन्ना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
210 श्रीमती सत्या कोहली, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
211 वेदवती सिंह, भोला नगर, दिल्ली 101 00
212 श्रीमती शीला वरमाणी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 200 00
213 श्रीमती यज्ञा तुली, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2100 00
214 श्रीमती पुष्पा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 51 00
215 श्रीमती सान्ता धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2100 00
216 श्रीमती सत्यवती गुप्ता, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
217 श्रीमती सावित्री धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
218 के० सी० चौधरी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
19 श्रीमती सावित्री पारगल, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
20 ओ० पी० नैय्यर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
221 कोल डी०आई०एम० साहनी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2200 00
222 श्रीमती प्रेमलता कपूर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 0
223 देवेद्र शर्मा, लोधी कालोनी, दिल्ली 51 00
224 विनोद धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5000 00
225 विग० कमाण्डर राजेन्द्र पाउल, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
226 एम०डी० खन्ना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
227 श्रीमती कौशल्या देवी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2500 00
228 श्रीमती सीमा चौधरी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
229 एम०एम० तनेजा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
230 कमाण्डर लाजपत राय डोंगा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
231 श्रीमती शशि प्रभा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
232 श्रीमती गीता डग, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
233 श्रीमती राज आनन्द, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
234 आ०स० कस्तूरबा नगर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5696 00
235 आ०स० श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली 12500 00
236 आ०स० साकेत, नई दिल्ली 25000 00
237 ओम प्रकाश गुप्ता, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली 1000 00
238 आ०स० मन्दिर गाधीनगर, दिल्ली 5100 00
239 सान्ता राम मलिक, दिल्ली 500 00
240 आ०स० कीर्ति नगर, दिल्ली 15000 00
241 दीप वुद्धिराजा, आ०स०, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
242 वेद प्रकाश शास्त्री, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
243 कृष्ण लाल ठक्कर, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
244 जगदीश मित्र अरोड़ा, कीर्ति नगर, दिल्ली 1100 00
245 राजपाल खरबन्दा, कीर्ति नगर, दिल्ली 1100 00
246 शिव भगवान लाहोटी, कीर्ति नगर, दिल्ली 2100 00
247 राम गोपाल कयूरिया, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
248 अजय कयूरिया, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
249 एस०के० नारग, रमेशनगर, दिल्ली 100 00
250 श्रीमती उषा चुग, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
251 महेन्द्र नाथ सहगल, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
252 श्रीमती उषा बजाज, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
253 अमर लाल बजाज, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
254 श्रीमती कृष्णा अनेजा, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
255 डॉ० दयानन्द कीर्ति नगर, दिल्ली 250.00
256 ओम प्रकाश आर्य कीर्ति नगर, दिल्ली 150 00
257 आ०स० रमेश नगर, दिल्ली 5100 00
258 महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, रमेशनगर, दिल्ली 1700 00
259 गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 500 00
260 गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 2500 00
261 गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 21 00
262 आर०के० जैन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 51 00
263 श्रीमती कर्म देवी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 150 00
264 भी०के० महाजन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 250 00
265 गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 1100 00
266 डॉ० जौन्ती चतुरी क्षाग, प्रीतमपुरा, दिल्ली 1000 00
267 औरपीड इलेक्ट्रॉनिक्स, दिल्ली 5000 00
268 एस० सी० अग्रवाल, नई दिल्ली 500 00
269 डॉ० पुनम गुप्ता, नई दिल्ली 1000 00
270 श्रीमती महेश कुमारी आहूजा, दिल्ली 1000 00
271 कृष्ण कुमार आर्य, दिल्ली 1000 00
272 श्रीमती डॉ० मधु मलिक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 1000 00
273 डॉ० श्रीमती सुशीला लाल, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 1100 00
274 जे० कोहली, जैन मंदिर रोड, दिल्ली 5000 00

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा। **- सभा प्रधान**

पूज्य स्वामी सोमानन्द जी नहीं रहे

बडे खेद के साथ सूचित करना पड रहा है कि पूज्य स्वामी सोमानन्द अध्यक्ष वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३ रामजस रोड नई दिल्ली का दिनाक १७ फरवरी प्रात ३ बजे लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। साथ ही आश्चर्य की बात है उनके स्वर्गवास के ठीक १२ घटे पूर्व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी १६ फरवरी को साय ३ बजे प्रभु को प्यारी हो गई। श्री स्वामी सोमानन्द जी का पूर्व नाम रमेशचन्द वानप्रस्थी का जन्म आगरा मे हुआ था। इनके पूज्य चाचा नारायन दास गर्ग (स्वतन्त्रता सैनानी) के साथ ही वे बचपन मे दिल्ली आ गये तथा यहा गर्ग एण्ड को के नाम से प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया था। ५० वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने के पश्चात् एक कर्मयोगी के समान उन्होने वेद प्रचारक मण्डल सस्था की स्थापना की तथा वेद प्रचारक मासिक पत्रिका का आरम्भ किया तथा आजन्म वैदिक साहित्य छापते रहे। वानप्रस्थी दीक्षा पूज्य स्वामी ब्रह्मनन्द जी अधिष्ठाता गुरुकुल एटा ७५ वर्ष की आयु मे सन्यास ग्रहण किया। सन्यास की दीक्षा स्वामी ओ३मानन्द अधिष्ठाता गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) ग्रहण की पश्चात एक कर्मयोगी के अनुसार सस्ते आर्य साहित्य के प्रकाशन मे तहलका मचा दिया। ६० पैसे मे १० प्रान्त के धर्म शिक्षा, वैदिक प्रश्नोत्तरी, वैदिक सध्या, आदि

२५ पैसे में आर्य कलैण्डर निकाला इनके मुख्य प्रकाशन थे, स्वामी जी के सहयोगी श्री वेदपाल जी शास्त्री उनके पुत्रो के सहयोग से वेद प्रचार मण्डल का काम निरन्तर करते रहेगे तथा आर्य विचारधारा का निरन्तर प्रचार प्रसार मे सलग्न रहेगे। पूज्य स्वामी सोमानन्द जी का काम पूरा करेगे। पूज्य स्वामी जी एव माता जी का सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री सतयवीर शास्त्री पुरोहित (आर्यसमाज करौल बाग तथा आचार्य हरिदेव जी प्रचाकर प्रतिनिधि सभा पूर्व मन्त्री करौलबाग आर्य समाज तथा श्री वेदपाल जीश ास्त्री द्वारा सस्कार सम्पूर्ण निगमबोध पर दिल्ली मे हुआ तथा अतिम कार्यक्रम स्वामी जी एव माता जी का एक साथ दिनाक २५ रविवार को साय ' बजे से गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी श्री सत्यवीर जी शास्त्री आचार्य हरिदेव जी प्रधान आर्यसमाज कीर्ति शर्मा तथा अन्य विद्वानो द्वारा सम्पन्न होगा।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 1 2 /03/2001 दिनांक २६ फरवरी से ४ मार्च २००१ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001 1 2/03/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० १३६/२००१

प्रतिष्ठा मे

प्रधानमन्त्री कार्यालय में हिन्दी कामकाज को बढावा देने के लिए ठोस कदम

प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी की पहल पर उनके कार्यालय ने हिन्दी मे काम काज को बढावा देने के लिए पहली बार अनेक ठोस कदम उठाए।

प्रधान्मन्त्री कार्यालय ने इस दिशा मे जो फैसले किए है उनके अनुरूप अब हिन्दी भाषी राज्यो के मुख्यमन्त्रियो के साथ पूरा पत्र व्यवहार हिन्दी मे ही किया जाएगा। अहिन्दी भाषी राज्यो तथा केन्द्रशासित प्रदेशो को हिन्दी के साथ अग्रेजी रूपान्तरण भी भेजा जाएगा।

प्रधानमन्त्री के कहने पर पहली बार ऐसा होगा कि उनके कार्यालय से विभिन्न देशो की सरकारो से मिलने वाले पत्रों का जवाब हिन्दी मे दिया जाएगा। कार्यालय के कर्मचारियो को निर्देश दिया गया है कि विदेशो से जो पत्र प्रधानमन्त्री को उनकी भाषा मे प्राप्त होते है या तो उनका उत्तर उन्हीं की भाषा म देने की व्यवस्था की जाए अथवा उनका जवाब हिन्दी मे दिया जाए लेकिन साथ मे उसका अग्रेजी रूपान्तर भी भेजे।

उन्होने एक बैठक मे टिप्पणी की लगता है अब मुझे ही कुछ करना पडेगा। इसी के बाद ही यह भी फैसला किया गया कि केन्द्र के हिन्दी जानने वाले सभी मन्त्रियो के पत्रो का जवाब हिन्दी मे ही दिया जाएगा तथा उनके साथ मूल पत्र व्यवहार भी इसी भाषा मे किया जाए।

उन्होने कहा कि कार्यालय हिन्दी का इस्तेमाल बढाने के लिए केवल आदर्शवाद पर निर्भर नहीं रहा जा सकता सभी हिन्दी जानने वाले अधिकारियो से अपेक्षा की गई है कि वे यथा सम्भव विभिन्न पत्रो तथा दस्तावेजों का प्रारूप हिन्दी मे ही तैयार करे तथा उन पर टिप्पणी भी हिन्दी मे ही करे।

यह भी बताया गया है कि विभिन्न मत्रालयो तथा विभागो की योजनाओ के बारे मे प्रधानमन्त्री की ओर से मुख्यमन्त्रियो को आगे जो भी पत्र या परिपत्र जारी किए जाएगे उनके अग्रेजी प्रारूपो के साथ हिन्दी का अनुवाद भी सम्बन्धित मन्त्रालयो तथा विभागो से मगाया जाए।

वर्ण की पहचान जन्म से नहीं, कर्म से करें

विश्व जागृति मिशन के आचार्य यशपाल सुधाशु ने गीता के १८वे अध्याय का मर्म स्पष्ट करते हुए कहा – **श्रीकृष्ण ने गीता के माध्यम से जीवन मे ऊच नीच का भेद भाव समाप्त करने की प्रेरणा दी। उनका सन्देश है कि वर्ण की पहचान जन्म से नहीं प्रत्युत कर्म से होनी चाहिए। जिसका जैसा कर्म है उसी के अनुरूप उसका वर्ण बनता है।**

उन्होने कहा– जीवन की समस्त विपत्तिया सशय से प्रारम्भ होती हैं। गीता मे श्री कृष्ण ने सशय का अन्त करने का सत्परापमर्श दिया है उन्होने कहा है जिसके मन मे सशय है उसका विनाश, सुनिश्चित है क्योकि इसी सशय सन्देह के कारण हम आत्मा की आवाज नहीं सुनना चाहते है। श्रीकृष्ण ने शिक्षा दी थी – **जो मन मे श्रद्धा और विश्वास के साथ साथ कर्म करने की दृढता पैदा करते है वे ही सशय सन्देह से मुक्त हो जाते है।** अगर मन सशय मुक्त करना है तो मन का आकर्षण केन्द्र सासारिक चकाचौध से हटा कर परमात्मा मे केन्द्रित किया जाए फलत जिन की श्रद्धा सुदृढ होती है जो नियमो मे सुदृढ है उनकी ही भक्ति सा ।

शैक्षिक व [illegible] ी मे तैयार करने [illegible] जना

इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के कार्यकारी कुलपति प्रो० वी०एस० प्रसाद ने कहा कि इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अपने सभी शैक्षिक कार्यक्रमो को हिन्दी भाषा मे तैयार करने की योजना बना रहा है। उन्होने यह जानकारी सघ की राजभाषा हिन्दी की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे प्रकाशित दीपशिखा २००० के अपने सन्देश मे दी। उन्होने कहा कि शैक्षिक चैनल ज्ञान दर्शन एव रेडियो परामर्श सत्रो मे भी इग्नू ने हिन्दी माध्यम को वरीयता दी है। साथ ही उन्होंने इस बात को भी स्पष्ट किया कि हिन्दी ने मीडिया मे भी उल्लेखनीय प्रगति की है। इस क्षेत्र मे अनेक सॉफ्टवेयर तैयार किए गए हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के अलावा निजी क्षेत्र मे भी अनेक प्रविष्टि दर्ज कराई है।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाउस आर्य अनाथालय के पास दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ११ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २ अप्रैल से ८ अप्रैल, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये. वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ,५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण

श्रद्धा और अनुशासन के साथ आर्यसमाज का नए युग में प्रवेश

सम्मेलन के प्रस्तावों, घोषणापत्र तथा विद्वान वक्ताओं ने आर्यसमाज का विशाल दर्शन तथा भविष्य के लिए 'योजनाएं प्रस्तुत की

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सहयोग से मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनाक २३ से २६ मार्च २००१ तक आयोजित किया था वह आशा से कहीं अधिक सफलता से २६ मार्च, २००१ को मध्याह्न २ बजे सम्पन्न हुआ। चारो दिन के इस सम्मेलन मे जनता की उपस्थिति बहुत अच्छी रही और अन्तिम दिन तो ५० हजार से ऊपर सख्या थी। इस सम्मेलन की सबसे बडी विशेषता यह रही कि आर्य जनता भारत के हर कोने से यहा उपस्थित थी और प्रात १० बजे से लेकर रात-को १० बजे तक विभिन्न सम्मेलनों मे जो भी भाषण इत्यादि हुए उनको बडी ही शान्ति से एकाग्र होकर सुनती रही। आर्य महासम्मेलन के प्रति जनता का अपार उत्साह देखने योग्य था। जो लोग बाहर से आये थे जिन्होंने अनेको सम्मेलनो मे भाग लिया था उनको शब्दो के अनुसार मुम्बई मे होने वाला यह प्रथम सम्मेलन भारत मे अनेको स्थलो पर हुए सम्मेलनो की अपेक्षा बहुत बडा था और इसने मुम्बई मे ही नहीं समूचे भारत मे एक नया इतिहास बना दिया। ऐसा सम्मेलन जिसमें सारी जनता प्रेम पूर्वक भाग ले रही थी, अपने ढग का बहुत ही अनोखा था। दूसरी विशेषता इस सम्मेलन की यह थी कि इन चारों दिनों मे लगभग ८० वक्ताओं ने भाग लिया, जिसमे उच्च कोटि के आर्य विद्वान मौजूद थे। इन्होंने आर्यसमाज की भावी योजनाओं पर विस्तार से विचार किया, अतीत के बलिदानियो, वीर पुरुषों और श्रद्धालु भक्तों के चरित्र जनता के सम्मुख रखकर उनको भावी उज्ज्वलमय इतिहास बनाने की प्रेरणा दी।

शुक्रवार दिनांक २३ मार्च, २००१ को सर्व प्रथम दिन आर्य महा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महा सम्मेलन के सयोजक कप्टन दवरत्न आर्य (उप प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) ने इस सम्मेलन को करने का लक्ष्य व प्रयोजन जनता के सामने प्रस्तुत किया उन्होने कहा कि 'आर्य जनता चाहती है आर्यसमाज और अधिक सक्रिय बने और उसके लिए विभिन्न उपायो और मार्गों की खोज की जाय।" उन्होने आर्यसमाज के सन्यासियो विद्वानो से अनुरोध किया कि भारत की प्राचीन सस्कृति का समन्वय आधुनिकता के साथ करते हुए नया नया दृष्टिकोण आर्य जनता के समक्ष लाय ताकि आर्यसमाज मे जागृति और चेतना आ सके।

मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य ने आर्य महासम्मेलन मे उपस्थित व्यक्तियो को प्रेम और श्रद्धा के साथ सम्मेलन के विषयो पर ध्यान देने और चर्चा करने की आवश्यकताओ पर बल दिया। उन्होने कहा कि "आर्यसमाज सदा से ही एक जीवित सस्था रही है, इससे पहले भी हिन्दू समाज को आगे लाने मे बहुत योगदान दिया है और आगे आनेवाली पीढी को भी यही मार्ग दिखाएगा।"

आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम् जी ने १५ उद्देश्य आर्य सम्मेलन मे रखे और मुख्यत इस बात पर जोर दिया कि समाज का स्तर और ऊंचा किया जाए, इसे आर्य राष्ट्र के रूप मे आगे लाने के लिए यथावश्यक कदम अभी से उठाए जाए।

सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र के सह-सम्पादक श्री विमल वधावन ने सार्वदेशिक सभा की तरफ से आर्य समाज का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। सम्मेलन के समस्त सत्रों के प्रस्तावों का भी मूल रूप मे श्री विमल वधावन ने स्वामी सत्यम् जी से विचार विमर्श उपरान्त तैयार किया। समस्त सत्रो मे व्यक्त किए गए विचारो तथा प्रस्तावो को भी यथाशीघ्र इस पत्र मे प्रकाशित किया जाएगा। सुप्रसिद्ध चित्रकार स्वामी शिवानन्द जी ने परमात्मा के निज नाम ओ३म् की प्राकृतिक पेंटिग (चित्र) बहुत ही सुन्दर रूप देकर बनाई। एक नई कल्पना का प्रस्तुतिकरण किया। इस चित्र का अनावरण सन्यासी गणो ने किया, उपस्थित जनता ने उस चित्र की प्रशसा की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द जी सरस्वती ने बड जोशीले शब्दो म कहा समय आ गया है कि समाज सगठित होकर आगे बढे और जल्दी से जल्दी अपने आपको एक आर्य राष्ट्र के रूप मे प्रस्तुत करे।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

स्मरण पत्र

अत्यावश्यक परिपत्र

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर सादर नमस्ते।

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च २००१ को समाप्त हो रहा है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियम-उपनियम के अनुसार ३१ मई, २००१ तक अवश्य आयोजित कर ले तथा आगामी वर्ष के अधिकारियो, आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन, यदि गत वर्ष न किया हो, तो कर ले। आपके आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिनकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो किसी आर्यसमाज में सदाचारपूर्वक दो वर्षो तक सभासद [illegible] रहे हो।

सदाचार की परिभाषा

"सन्ध्या आदि नित्य कर्म शुद्ध वृत्ति, वेदिक सस्कार, पत्नीव्रत वा पतिव्रत आदि सदाचार है। व्याभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यो और मासादि अभक्ष्य पदार्थ का सेवन जुआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार है।'

१५ मई, २००१ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय म भिजवाने की कृपा करें -

१ १ अप्रल २००० से ३१ मार्च, २००१ तक का वार्षिक विवरण

क) यज्ञ, सस्कार, शुद्धिया अन्तर्जातीय विवाह दिन के [illegible] बिना दहेज कराए गए विवाहो का तथा समारोहो का विवरण

ख) आर्यसमाज के अधीन चल रही सस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्यवीर दल आदि का विवरण।

ग) आर्यसमाज में सेवारत धर्माचार्य/पुरोहित का नाम योग्यता, आयु तथा अनुभव

घ) वार्षिकोत्सव किन तिथियो मे सम्पन्न हुआ ?

२ १ अप्रैल २००० से ३१ मार्च, २००१ तक का आय व्यय विवरण।

३ सदस्य-सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना ले -

क्रम सख्या, सदस्य का नाम, पिता का नाम, पता, आयु, वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क तथा दूरभाष नम्बर।

४ सदस्यता शुल्क का दशांश, वेद प्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ७५/ रुपये अथवा आजीवन शुल्क ५००/- रुपये।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्यसमाजो को सहयोग प्रदान करे।

धन्यवाद

भवदीय

तेजपाल मालिक

महामन्त्री

सामवेद के मन्त्रों से छन्द-सप्तक

– पं० मनोहर विद्यालकार

(१) अग्रेणी वीर बनने के लिए अपने में कोई अग्नि प्रज्वलित करे

यदि वीरो अनुष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः।
आजु हवद्धव्य मानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्।।

साम० ८२

वामदेव। अग्नि। अनुष्टुप्।

अर्थ – (यदि मर्त्य वीर अनुष्याद्) यदि मनुष्य वीर बनना चाहता है, अर्थात् क्रान्ति करके विख्यात होना चाहता है, तो (अग्नि इन्धीत) अपने अन्दर किसी भी प्रकार की अग्नि अर्थात् प्रमुखता का अथवा किसी भी क्षेत्र मे अपने को शिरोमणि रूप म अथवा अपने अन्दर परमात्माग्नि को प्रदिप्त करे। और फिर (आनुषक्) निरन्तर (हव्य आजुहत्) उस अग्नि मे हवि की आहुति देता रहे परिणामत (दैव्य शर्म भक्षीत) दिव्य शान्ति और सुख का उपभोग करता रहे। अग्निर्वैयज्ञ। मे० ३–६–१। वीर – 'वीर विक्रान्तौ'। अग्निर्वै देवानामुखम्। गोपथ २/१/२३

(२) सर्वाग स्वस्थ मनुष्य ही यत्न कर द्युलोकचारी प्रमुख बनता है

इत एत उदारूहन् दिव प्रष्ठान्यारुहन्।
प्रभूर्जयो यथा पथोद् द्यामगिरसो ययु ।।

साम० ६२

वामदेव। अगिरा। अनुष्टुप्।

अर्थ – (एते अगिरस) ये अग्नि के समान तेजस्वी और जीवन पर्यन्त अगो से रस युक्त बने रहने वाले साधक (इत) इस पार्थिव शरीर की आसक्ति से (उत् आरुहन्) ऊपर उठते हैं और (दिव पृष्ठानि आरुहन्) द्युलोक के मध्यवर्ती कोशो या चक्रो पर चढते हैं और (यथ धा ययु) जैसे अन्त मे सहस्रारचक्र मे स्थित दिव्य ज्योति प्राप्त करते है। उसी प्रकार साधको ! तुम भी (यथापथा) यथाक्रम उन्नत होते हुए (प्रभु) प्रकृष्ट समर्थ वाले बनो और (जय) अपने लक्ष्य दिव्य ज्योति के दर्शन करके विजयी बनो।

(३) साथियों के साथ सद्भाव, यज्ञभावना, श्रद्धा और क्रान्त दृष्टि देता है

जात परेण धर्मणा यत् सवृद्भि सहाभुव।
पिता यत्कश्यपस्याग्नि श्रद्धा माता मनु कवि।।

साम ६०

वामदेव, कश्यपोवामारी, मनुर्वा वैवस्वत। अग्नि। अनुष्टुप्।

अर्थ - (धा, स्याति वामदेव बनने की इच्छा वाले मानव ! तू (सवृद्भि सह) अपने समकालीन जनो क साथ (परेण धर्मणा जात अभुव) स्वार्थ शून्य परार्थधर्म निभाने के लिए प्रसिद्ध है। इसलिए (कश्यपस्य पिता अग्नि) परार्थ दृष्टि रखने के कारण सूक्ष्म दृष्टिधर्ता सर्वदृष्टा परमात्मा मार्ग दर्शक और पिता सदृश रक्षक बन गए हे, (श्रद्धा माता) सत्य को अपनाने व धारण करने की वृत्ति तेरी माता सदृश निर्माता बन गई है और (मनु कवि) मननशील मन ने तुझे क्रान्त द्रष्टा और दूरदर्शी बना दिया है। अग्निर्यज्ञ। माश ३/२/२/७। अग्निर्वै ब्रह्म। माश ७/५/१/१२

अर्थपोषण – कश्यप पश्य को भवति यत्सर्व पश्यतीति। तै० आ० १/८/८

परोधर्म – (१) ब्रह्मचर्य परोधर्म। व्यास ब्रह्मचर्य का अर्थ ज्ञान प्राप्ति वीर्यरक्षण और परमात्मा मे विचरण है। (२) वेद का पढना-पढाना आर्य बनने के साधको का परम धर्म है। – स्वामी दयानन्द

(३) स्वार्थ विहीन हो दूसरो का कल्याण करे यही परम धम हे। सवृत – सहवर्तते इति – समकालीन सहयोगी पडोसी आश्रित सम्बन्धी।

सहयज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति। अनेन प्रसविष्यध्वमा गीता-सवृत = यज्ञ

(४) हे मार्ग दर्शक ! हम महान् ऐश्वर्य-प्राप्ति और उसके दान के लिए आपका ध्यान करें

राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधी महि।
ईडिष्वा हि महे वृष धावा होत्राय पृथिवी।।

साम ६३

काश्यपोऽसितो देवलोवा। अग्नि। अनुष्टुप्।

अर्थ – हे (अग्ने) प्रकाशस्वरूप तथा मार्गदर्शक प्रभो ! हम (त्वा) आप का (महे राये) महान ऐश्वर्य की प्राप्ति और (दानाय) मुक्त हस्त से दान करने के लिए (समिधी महि) अपना हृदय ध्यान द्वारा प्रदिप्त करे। प्रभु कहते है कि हे (वृषन्) शक्तिशाली साधक ! (महे) किसी भी प्रकार की महत्ता प्राप्त करने के लिए (वृष ईडिष्व) सुखवर्षी परमात्मा की स्तुति करो और (होत्राय) दान की साध पूरी करने के लिए (द्यावा पृथिवी) द्युलोक से पृथ्वी लोक तरु के निवासियो की सेवा करो तथा अपना शरीर और मन स्वस्थ रखो।

विशेष – (१) कहीं 'वृष' पाठ है कहीं 'वृषन्' यहा दोनो का अर्थ किया है। ईडिष्व का अर्थ – सेवा करो की प्रेरणा 'ईडय इति यज्ञिय इत्येतत्' माश ६/२/३/६ से और यज्ञ देवपूजा सगतिकरण दानेषु से ली है।

अग्निवै पथिकृद् देवतानाम्। जै० १/३०३ अग्निवै ज्योती रक्षोहा। माश ७/४/१/३४

(५) हे वृत्रहन ! हम से दुर्भाव, दुर्वचन और दुष्कर्म दूर रखें

आ नो वयो वय शयं महान्तं गह्वेष्ठाम्।
महान्त पूर्विनेष्ठामुग्र वचो अपावधी।।

साम ३५३

वामदेव. शाक्रपूतोवा। इन्द्रः। अनुष्टुप्।

शेष पृष्ठ ८ पर

बोध कथा

मर्यादा : पुरुषोत्तम श्री राम की

२ अप्रेल के दिन राम नवमी का पर्व था उस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्म त्रेता युग मे हुआ था। बहुत से सनातनी बन्धु श्रीराम और श्री कृष्ण को भगवान का अवतार समझते हैं, दोनो ही अपने त्रेता और द्वापर युगो मे युगपुरुष और महापुरुष थे। एक बार समाजवादी नेता श्री राम मनोहर लोहिया से किसी ने जिज्ञासा की – **"आप तो आधुनिक सामाजवादी नेता हैं, इसके बावजूद आप श्रीराम ओर श्रीकृष्ण को अपने युगों का शीर्ष नेता क्यों मानते हैं?"**

समाजवादी नेता लोहिया का उत्तर था – **"श्रीराम और श्रीकृष्ण अपने युगो मे भारत राष्ट्र के शिरोमणि नेता थे, श्रीराम ने उत्तर में हिमालय से लेकर लका तक के भारतीय उपमहाद्वीप को एक राष्ट्र के रूप में बाधा था, तो श्रीकृष्ण ने अपने समय मे हिन्दकुश और सिन्धु नदी से लेकर ब्रह्मदेश तक की मातृ भूमि को एक बनाया था।"** महाभारत वस्तुत अपने युग के सघर्ष का ब्योरा ही नही है प्रत्युत वह छोटे विभक्त राज्यो के एक सयुक्त वृहत्तर महाभारत का प्रतीक है।

हम स्मरण रखना होगा कि ऐसे युगनिर्माता श्री राम के जीवन का अपूर्व त्याग बलिदान और मर्यादा का है। रामायण म अयोध्या क रघुवशियो क गुरु वशिष्ठ जी न घोषणा की थी –

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टरूस वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रम ।।

जब श्रीराम का राज्याभिषेक के लिए बुलाया गया था और पिता दशरथ द्वारा दिए गए वचन के पालन के लिए माता कैकेयी की ओर से १४ वर्ष के वनवास का आदेश दिया गया – दोनो ही अवसरो पर उनके मुखमण्डल पर कोई विकार नहीं आया। प्रसन्नता और विषाद की एक रेखा भी नहीं दिखाई दी।

ननसाल से छोटे भाई भरत के अयोध्या लौट चलने आग्रह करने पर भी बडे भाई श्री राम घर नहीं लौटे, प्रत्युत वह सुदूर दक्षिण की ओर बढ गए। उन्होने उस समय कोई सेना न होने पर भी लका के अत्याचारी शासक रावण का मुहतोड उत्तर देने के लिए दक्षिण भारत की ऋच्छ, भलूक, वानर वन्य जातियो और जनजातियों को सगठित कर स्वर्णमयी लका जीत ली। लक्ष्मण वहा की समृद्धि और स्वर्णमयी चमक दमक देख कर अभिभूत हो गए। उन्होंने श्रीराम से लंका मे रहने का प्रस्ताव किया। उस समय श्री राम ने कहा था –

अपि स्वर्णमयी लंका न मे रोचते लक्ष्मण जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीसती।

मुझे स्वर्णमयी लका अच्छी नहीं लगती, मुझे तो जननी जन्मभूमि ही स्वर्ग से अधिक गरिमा भरी लगती है।

रामामयण-रामकथा के श्रीराम जहा-जहा भारतीय सरकृति गई बृहत्तर भारत और विश्व के समस्त अचलो मे आज भी राम की कथा लोककथाओ मन्दिरा म उत्कीण लेखो चित्रो और अनक लोकभाषाओ मे निरन्तर प्रवाहित हो अमर हो उठी है।

– **नरेन्द्र**

पृष्ठ १ का शेष भाग

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डॉ० सुखदेव चन्द सोनी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका) ने समस्त प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि "मानव मात्र को सभी प्रकार की बुराइयों से मुक्त कर सच्चे अर्थों मे आर्य अर्थात् परमात्मा की सन्तान बनाने जी, "तलाश इन्सान की" लेखक डॉ० सत्यपाल सिह (डी०, आई० जी० नासिक), "स्वामी दयानन्द का मुम्बई प्रवास" डॉ० भवानी लाल भारतीय, "आर्य परिवार गाथा" प्रधान सम्पादक डॉ० स्वामी सत्यम् (अमेरिका) एवम् आर्य महा सम्मेलन की एक "विशेष स्मारिका" का विमोचन किया गया। ऋण हम सभी पर है, उसका स्मरण कर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम कैसे अधिक से अधिक संगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर सके।

मध्याह्न के वैदिक धर्म ससद में जिसके अध्यक्ष सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के स्वामी तत्वबोध सरस्वती थे "प्रकाश और ज्योति" व सत्यार्थ कुमार शास्त्री (अमेठी), डॉ० रुद्रसे नीऊर (प्रधान आर्य सभा मॉरिशस) डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू) ने अपने विचार प्रस्तुत किए और निर्ण रूप मे कहा कि "अगर हम वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते है त सबसे अच्छा उपाय यह है कि सत्यार्थ प्रकाश को घर-घर मे पहुचाए इस

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर (क) सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी तथा उनके साथ में सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकार नाथ। (ख) दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोस, अमेरिका सभा के प्रधान डॉ० सुखदेव चन्द सोनी, स्वामी सत्यम, स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य। (ग) सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी। (घ) चारो वेदो के तेलगू अनुवाद का विमोचन करते हुए सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी। (ड) सभा उपप्रधान श्री शेरसिह।

के लिए नेताओ ओर जनता को अतुल प्रयास करना चाहिए।" श्री धीरुभाई नानजी कालीदास मेहता (वाइस चेयर मेन, मेहता इटरनेशनल ग्रुप मुम्बई) इस समारोह मे उपस्थित थे। इस अवसर पर "बहे भक्ति की धारा" नामक पुस्तक जिसके लेखक आचार्य भद्रसेन तत्पश्चात् आर्य विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज मुम्बई की छात्र छात्राओ ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने अपने वक्तव्य मे कहा कि ऋषि दयानन्द का प्रकाश आदि विषयो पर अपने विचार रखे। इस सम्मेलन मे स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती (उदयपुर), श्री विजय बिहारीलाल माथुर (जयपुर), श्री सुभाषचन्द नागपाल (पूणे), श्री जयनारायण अरुण (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश), श्री ज्वलन्त पुस्तक ने अतीत मे भी बहुतो को प्रकाश दिया है और भविष्य में भी यह सबसे अच्छा काम करेगा। श्रीमती अदिति सेठ ने ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किए। इस वैदिक धर्म ससद का सचालन श्री अमृतलाल तापडिया (उदयपुर) ने किया।

जारी पृष्ठ ४ पर

(क) घोषणा पत्र प्रस्तुत करते हुए वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन। (ख) राज्य सभा सदस्य श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी। (ग) सभा कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री। (घ) वैदिक प्रवक्ता आचार्य नरेश (ड) डी० ए० वी० के अध्यक्ष श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा का स्वागत करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा।
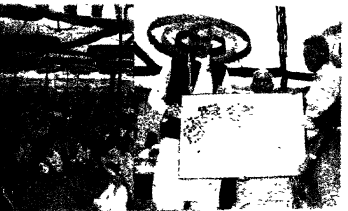
(क) महिला सम्मेलन मे बाए से श्रीमती उज्ज्वला वर्मा, केन्द्रीय ऊर्जामन्त्री श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता, श्रीमती सुनीता आर्य एव सयोजिका शशि प्रभा आर्या। (ख) महाराष्ट्र के गृहमन्त्री श्री कृपाशंकर सिंह। (ग) वैदिक विहार योजना को प्रस्तुत करते हुए भवन वास्तुविद श्री जयन्त टिपणीस, स्वामी सत्यम तथा मॉरिशस के विश्व विख्यात आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित के सुपुत्र श्री सजन मोहित।

पृष्ठ ३ से आगे

सायकालीन सम्मेलन की अध्यक्षता ०० धर्मपाल (कुलपति गुरुकुल कांगडी श्वविद्यालय हरिद्वार) ने की। मुख्य अतिथि के प मे पद्मश्री डॉ० ज्ञानप्रकाश चोपडा (चेयर मैन, ०० ए० वी० कॉलेज मैनेजिग कमेटी), श्री रामनाथ हगल (मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा), शेष अतिथि श्री शिशुपाल रामभरोस (संरक्षक ०० प्र० सभा दक्षिण अफ्रीका, डरबन)उपस्थित । डॉ० सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), श्री अजय सहगल देल्ली), डॉ० दिलीप वेदालंकार (अमेरिका), ० नचिकेता भट्टाचार्य (कोलकाता), श्री आंनन्द ड्या (उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद्) पं० कमलेश ुमार अग्निहोत्री (अहमदाबाद), आचार्य चन्द्रशेखर ास्त्री (नई दिल्ली), श्री श्यामलाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री आदि विद्वानों के भाषण हुए। श्री प्रकाश आर्य एवम् मंडली (महू) ने प्रभु भक्ति व आर्य समाज से सम्बन्धित भजन प्रस्तुत किए।

इसी तरह वैदिक धर्म संसद में तीनो दिन "प्रकाश की तलाश में", "इन्सान की तलाश में" और "स्वर्ग की तलाश में" इन मुख्य विषयो पर चर्चा हुई। इन्सान की तलाश में इस विषय पर बोलते हुए पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती (साहिबाबाद) ने बहुत सुन्दर भाषा में बताया कि "आज इन्सान खो गया है, विषय वासनाओं में, अपने स्वार्थ में, लोभ लालच में डूबा हुआ इन्सान भटक रहा है। इस खोज में है कि उसे सच्चा रास्ता कब मिलेगा, उसे सुख और शान्ति कब प्राप्त होगी।"

प्रो० रतन सिंह (गाजियाबाद) ने मानव जीवन की नींव धर्म को बताते हुए कहा कि "सम्प्रदाय मनुष्य को भटकाते हैं। वैदिक धर्म ही एक ऐसा आधार है जिस पर सारे मानव मात्र को एक किया जा सकता है।" रात्रि को वेद सम्मेलन हुआ, जिसके अध्यक्ष पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती थे; इस सम्मेलन मे प्रो० उमाकान्त उपाध्याय (कोलकाता), डॉ० प्रियव्रतदास (भुवनेश्वर), डॉ० दिलीप वेदालंकार (अमेरिका) आदि विद्वानों ने वेदों के सम्बन्ध मे सारगर्भित चर्चा की। संयोजक डॉ० महेश विद्यालंकार (दिल्ली) ने निर्णयात्मक शब्दों में कहा कि "वेद ही विश्व शान्ति के आधार स्तम्भ है, इनसे हटकर शान्ति की खोज करना व्यर्थ प्रयास है क्योंकि परमात्मा ने सृष्टि की आदि में वेदों का आविर्भाव करके मानव मात्र को सुख और शान्ति का रास्ता बताया।"

– जारी पृष्ठ ५ पर

(क) अमेरिका वासी वैदिक विद्वान डा० टी० आर० खन्ना द्वारा अंग्रेजी मे ईशोपनिषद पर लिखी गई पुस्तक का विमोचन करते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी, साथ में हालैण्ड सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप, अमेरिका के डॉ० दिलीप वेदालकार, श्री विमल वधावन तथा श्री शिशुपाल रामभरोस। (ख) 'बहे भक्ति की धारा का' विमोचन करते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी। (ग) महासम्मेलन के अवसर पर स्मारिका का विमोचन करते हुए स्वामी सत्यम तथा स्वामी इन्द्रवेश जी।

(क) वैदिक विद्वान डॉ० रघुवीर। (ख) 'वैदिक गर्जना' अक का विमोचन करते हुए स्वामी सकल्पानन्द जी तथा महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री श्रद्धानन्द जी एव अन्य। (ग) स्वामी सत्यपति जी, श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री टीकमचन्द आर्य।

जम्मू-कश्मीर सभा के प्रधान डा० योगेन्द्र शास्त्री। (ख) स्वामी तत्वबोध सरस्वती। (ग) डा० दिलीप वेदालकार। (घ) आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा वैदिक विद्वान कवि श्री सोहन लाल पथिक। (ड) आचार्य सुधाकर। (च) मॉरिशस सभा के विद्वान आर्य नेता।

पृष्ठ ४ का शेष

दिनांक २४ मार्च, २००१ वैदिक धर्म ससद में "इन्सान की तलाश में" इस विषय पर चर्चा हुई, इस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सोमपाल जी (सदस्य योजना आयोग, दिल्ली) थे। क्रमश: स्वामी सत्यपति जी सरस्वती (योगदर्शन महाविद्यालय साबरकाठा), श्री जे०एन० चौधरी (आई०एफ०एस०), श्री भूपनारायण शास्त्री (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार), श्री वेदप्रताप वैदिक (दिल्ली) एव श्री गौरीशंकर कौशल (भोपाल), स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तर काशी), प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री (पटना) ने परम पिता परमात्मा का आदेश मनुर्भव, कहा खो गया इन्सान आज ? विषयो पर अपने उत्तम विचार प्रस्तुत किए। श्री नरेन्द्र आर्य एव मण्डली दिल्ली, श्री योगेश कुमार आर्य मुम्बई ने आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित भजन गए। इस धर्म ससद् का सचालन श्री आनन्द कुमार आर्य (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बगाल) ने किया।

दिनाक २५ मार्च, २००१ वैदिक धर्म ससद मे "स्वर्ग की तलाश में" इस विषय पर चर्चा हुई, इस सम्मेलन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती थे। मुख्य अतिथि श्री देशबन्धु गुप्ता (चेयर मैन लूपिन लेबोरेट्रीज लि०), विशेष अतिथि श्री प्रताप सिह शूरजी वल्लभदास (पूर्व प्रधान सा० आ० प्र० सभा दिल्ली), बैरिस्टर दीपचन्द गार्डी (सुप्रसिद्ध समाज सेवक) उपस्थित थे। इस प्रसग मे डॉ० सत्यपाल सिह (डी० आई० जी०) ने बहुत सुन्दर रूप में जनता की भाषा में स्वर्ग की व्याख्या की और कहा "स्वर्ग इसी ससार में है, कहीं किसी और जगह नहीं है, हम अपने जीवन को सुख शान्तिमय बनाए, परोपकारी बनाए और परिवार मे सुख-शान्ति, शिक्षा इन सबके द्वारा बच्चे प्रगति के मार्ग पर चले ताकि उनका भविष्य उज्जवल हो वही स्वर्ग का वास्तविक स्वरूप है।" क्रमश स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), स्वामी इन्द्रवेश जी (कार्यकारी प्रधान आ० प्र० सभा हरियाणा), ब्रिगेडियर चितरजन सावंन्त (नोएडा), डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री (कोषाध्यक्ष सा आ० प्र० सभा दिल्ली), डॉ० रघुवीर वेदालकार ने "स्वर्ग की तलाश में" विषय पर अपने उत्तमोत्तम विचार प्रस्तुत किए। इस सम्मेलन का संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने किया।

अपराह्न के सम्मेलन मे आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षा भारत सरकार की ऊर्जा राज्य मन्त्री श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता थी। विशेष अतिथि श्रीमती शकुन्तला देवी आर्या (पूर्व महापौर दिल्ली महानगर पालिका) उपस्थित थीं। इस सम्मेलन में श्रीमती सरोजनी गोयल (मुम्बई) ने महिलाओ को श्रद्धा, लगन और समर्पण की प्रतिभा के रूप मे बहुत सुन्दर रूप से चित्रित किया।

श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (दिल्ली) ने कहा कि "सस्कृति की स्त्रोत महिला ही है"। 'कैसे हो नारी के गौरव की रक्षा' विषय में सुश्री पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) का व्याख्यान जनता पर बहुत प्रभाव कारी रहा, उन्होने ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर वीरतापूर्ण नारी की गौरव गाथा प्रस्तुत करके जनता में उत्साह की लहर फैला दी। लोगो ने उनके व्याख्यान को बहुत सराहा। डॉ० ऊषा शास्त्री ने बडे सुन्दर रूप में स्पष्ट किया कि 'महिला ही अपने घरों के आगन को आर्यो का आगन बना सकती है।'

जारी पृष्ठ ६ पर

(क) सार्वदेशिक साप्ताहिक के 'स्थापना दिवस विशेषाक' का विमोचन करते हुए डॉ० स्वामी सत्यम के साथ सम्पादक श्री वेदव्रत शर्मा तथा सह-सम्पादक श्री विमल वधावन, (ख) मुम्बई के उपमहापौर श्री अरुण देव जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ० सुखदेव चन्द सोनी, (ग) महासम्मेलन के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य के साथ पूर्व कृषिमन्त्री श्री सोमपाल, रामनाथ सहगल तथा लोकसभा सदस्य श्री रासासिह रावत।

(क) शोभा यात्रा में उत्साहपूर्वक भाग लेने की तैयारी में आर्यजनों का नेतृत्व करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन, (ख) शोभा यात्रा का नेतृत्व करते रथ पर सवार डॉ० स्वामी सत्यम, साथ मे स्वामी तत्वबोध सरस्वती, श्री वेदव्रत शर्मा तथा श्री राजेन्द्र दुर्गा, (ग) शोभा यात्रा के चलते-चलते ही आर्यवीरों के करतब।

(क) मुम्बई के आर्यवीरों की टोली बैंड के साथ, (ख) बिहार के प्रतिनिधि, (ग) घोडो पर सवार आर्य नेता।

पृष्ठ ५ से आगे

श्रीमती शिवराजवती आर्या (मुम्बई), श्रीमती आशारानी (कानपुर), सुश्री कालादेवी आचार्या आदि ने महिला सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त किए। इस महिला सम्मेलन का सयोजन श्रीमती शशि प्रभा आर्या (दिल्ली) ने किया।

सायकाल में आर्य युवा सम्मेलन हुआ, जिसके अध्यक्ष डॉ० सत्यपाल सिहं (डी आई.जी.) एवं विशेष अतिथि श्री रामरिछपाल अग्रवाल (सुप्रसिद्ध उद्योगपति मुम्बई) और सयोजक श्री वाचोनिधि आर्य (गाधीधाम) थे। युवा सम्मेलन अपने आप में बहुत ही सराहनीय रहा, सुश्री माधवी रामदीन (मॉरीशस) ने 'युवा और विवाह' के विषय को लेकर आधुनिकता और प्रचीनता का समन्वय करते हुए बहुत ही साहसिक ढग से युवा सम्प्रदाय को सम्बोधित किया। मॉरिशस से डॉ० उदयनारायण गगू (मन्त्री आर्य सभा मॉरिशस), डॉ० वागीस शर्मा (गुरुकुल एटा), श्री जितेन्द्र चिकारा (मुम्बई), आचार्य देवव्रत जी (सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली), श्री गिरीश खोसला (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), ब्र० राजसिह आर्य (दिल्ली) आदि वक्ताओ ने आर्य युवा सम्मेलन मे युवाओं के लिए प्रेरणाप्रद विचार व्यक्त किए।

सोमवार दिनाक २६ मार्च, २००१ का दिन सम्मेलन का बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर इस वर्ष 'वेदोपदेशक पुरस्कार' से श्री शिशुपाल जी रामभरोस (संरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा, द०अफ्रीका, डरबन) को १५००१/- का ड्राफ्ट, पं० रामनारायण शास्त्री (पटना बिहार) की स्मृति में स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल व मोतियों की माला से सम्मानित किया गया। अपने सम्मान के उपरान्त श्री रामभरोस जी ने वेदों के स्वाध्याय पर बल देने का अह्वान श्रोताओं से किया। उन्होंने बताया कि आज विदेशों में वैज्ञानिक वेदों पर खोज कर रहे हैं। वेदों की महत्ता सारा विश्व मान रहा है। साथ ही आज आवश्यकता है कि हमें अपनी सस्कृति को सुरक्षित रखे। इस समारोह में श्री टी.एन. चतुर्वेदी (आई.ए एस) राज्य सभा सदस्य तथा श्री रामचन्द वीरप्पा लोकसभा सदस्य विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर "वैदिक विहार" की स्थापना की योजना के सम्बन्ध में डॉ० स्वामी सत्यम जी और कै० देवरत्न आर्य ने सारी योजना का विस्तार रूप में उल्लेख किया। स्वामी सत्यम जी ने कहा कि यहां से लगभग ७० किमी० दूरी पर वाडा तहसील में आर्य महासम्मेलन के सयोजक नेता कै० देवरत्न आर्य और उनके पुत्र श्री आशीष आर्य व अश्विनी आर्य ने १४ एकड भूमि का दान इस योजना के लिए दिया है, जो वैतरणा नंदी के किनारे बनने वाला है। इस योजना में एक "अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसंधान केन्द्र" की स्थापना की जा रही है, जिसमें विभिन्न विदेशी भाषाओं के विद्वान तैयार कर उन्हें भारत के बाहर वैदिक संस्कृति के प्रचार हेतु भेजा जाता रहेगा। इस केन्द्र में वृद्धाश्रम, चिकित्सालय, आर्ष गुरुकुल, विद्यालय इत्यादि सामाजिक उन्नति के सभी अगों का समावेश होगा। कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि " इसमें आर्य विद्वान और संन्यासियों के रहने का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध होगा, जहां पर उनकी वृद्धावस्था में सेवा और देख-रेख का प्रबन्ध होगा। उन्होंने बताया कि कोशिश की जा रही है, अगले वर्ष तक अनुसंधान केन्द्र बनकर तैयार हो जाएगा और मॉरिशस के महान आर्यनेता रत्न श्री माहनलाल मोहित जी की सौवीं वर्षगाठ के अवसर पर इसका उद्घाटन होगा।" श्री जयन्त टिपणीस आर्किटेक्ट मुम्बई ने इस योजना के प्रारूप का अनावरण किया और कहा कि मैं निःस्वार्थ भाव से इस कार्य को करूगा।

समापन के रूप में सम्मेलन के अधिकारियों ने अपना सन्देश उपस्थित जनता को दिया।

इसी सिलसिले मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा कि 'हम हरियाणा मे शीघ्र ही बहुत बडा आर्य महासम्मेलन करेगे और उन्होने जनता से अपील की कि ऐसे आर्य महासम्मेलन भारत मे स्थान-स्थान पर होते रहने चाहिए, जिससे समाज में गति और स्फूर्ति बनी रहेगी।'

इस सम्मेलन मे दो बातें और महत्वपूर्ण रहीं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ प्रतिदिन प्रातः ७.३० से ६.०० तक होता था यह यज्ञ ३२ हवन कुण्डों में हुआ जिसमें १२५ यजमानो ने प्रतिदिन आहुतियां दी। इस यज्ञ में लगभग २००० व्यक्ति उपस्थित होते थे और बडे प्रेम व श्रद्धा से वेद मन्त्रों का पाठ करते थे।

इस महायज्ञ में सुप्रसिद्ध फिल्मी कलाकार श्री सुरेश ओबेराय और श्री अलोकनाथ जी ने यजमान के रूप में आकर आहुतियां दीं और सगीत निर्देशक आनन्द मिलिन्द का परिवार भी इस यज्ञ में सम्मिलित हुआ। यज्ञ में लोगों की उपस्थिति, प्रेम और श्रद्धा को देखकर लगभग सारी जनता चकित रह गई। दूसरी बात थी शोभायात्रा जिसमें हजारों की संख्या में आर्य सज्जन, देवियां, युवा और बच्चों ने भाग लिया। यह शोभा यात्रा इतनी बडी थी कि लगभग सारी जनता ही ५ किलोमीटर में फ़ैल गई, इस यात्रा में मुम्बई की पुलिस सुरक्षा का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। और जनता बडे उत्साह और उमंग के साथ भजन गाते हुए ठीक सांयकाल ६.०० बजे मुख्य पण्डाल, रिक्लेमेशन मैदान बान्द्रा मे पहुच गई। इस शोभा यात्रा का मुम्बई की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री कृपा शकर सिह जी (गृहराज्य मन्त्री महाराष्ट्र राज्य) ने अपने वक्तव्य में कहा कि ५ एकड जमीन, एक फ्लाई ओवर का नाम " दयानन्द उड्डाण पुल" व चर्नी रोड रेलवे स्टेशन का नाम "दयानन्द नगर" रखने का सरकार की ओर आश्वासन दिया।

सरकार की ओर से प्राप्त होने वाली भूमि पर आर्य समाज द्वारा मानव निर्माण एवं भारतीय संस्कृति उत्थान के लिए "अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र" की स्थापना की जाएगी। आज मानव समाज में अनेकों प्रकार के अन्धविश्वास, कुरीतियां, भेदभाव, जातिप्रथा, बलिप्रथा आदि से अविद्या अंधकार, अज्ञान, अभाव एवं सर्वत्र भय व्याप्त है, उक्त मानव निमार्ण केन्द्र से इनके उन्मूलन का प्रयास किया जाएगा। समारोह में विशेष अतिथि के रूप में श्री अरुणदेव (उप महापौर नगर पालिका मुम्बई) उपस्थित थे।

आर्य सम्मेलन में अनेकों कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए समितियां बनाई गई थीं, जिसमें सर्वश्री लद्धाभाई पटेल, महेश वेलानी, दिलीप वेलानी, प्रभूभाई वेलाणी, पुरुषोत्तम वेलाणी ने पण्डाल और भोजन, लालचन्द आर्य, विजय आर्य ने आवास व्यवस्था, आचार्य सोमदेव जी शास्त्री स्मारिका सम्पादक, श्री विश्वभूषण आर्य, श्री हरीश आर्य, श्री अरुण कुमार अब्रोल ने यज्ञ, श्री सगीत शर्मा, श्री यशप्रिय आर्य, श्री मदन रहेजा, श्री जितेन्द्र चिकार ने शोभा यात्रा, श्री ओंकारनाथ आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), श्रीमती शिवराजवती आर्या ने धन संग्रह, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने परिवहन का कार्य, श्री राजकुमार गुप्ता, डॉ० तुलसीराम बांगिया, श्री ओ३म गुलाठी, श्री जिले सिंह ने परिवहन व्यवस्था, श्री संदीप आर्य ने जल व्यवस्था, श्री ललित मोहन साहनी बिजली व माईक व्यवस्था, श्री सतीशचन्द्र गुप्ता, श्री आशीष आर्य व श्री अश्विनी आर्य ने मंच व्यवस्था, श्री राकेश नांगिया, श्री अरविन्द मल्होत्रा, श्री आर.के. सहगल ने आर्य विद्या मन्दिर में आवास व्यवस्था, आचार्य उमेश, पं० प्रभारंजन पाठक, पं० नामदेव आर्य, पं० विनोद शास्त्री, पं० नरेन्द्र शास्त्री, पं० श्याम अधिकारी, श्री बबन गडदे एवं सुश्री सविता चन्द्रमोरे ने कार्यालय व्यवस्था, को बडे की सक्रिय व सुचारु रूप से सम्भाला।

आर्य महासम्मेलन को नई दिशा प्रदान करने के लिए कार्यक्रम से तीन माह पूर्व डॉ० स्वामी सत्यम जी (अमेरिका) से मुम्बई भारत में पहुंचे और इस सम्मेलन को सफल बनाने की सारी जिम्मेवारी स्वामी जी ने अपने कन्धों पर ली। दिन-रात एक करके सम्मेलन की पूर्व तैयारी में लगे, अपने स्वयं के कम्प्यूटर से आवश्यक पत्र व्यवहार भी उन्होंने किया। आपकी ही प्रेरणा से मॉरिशस, द० अफ्रीका, अमेरिका आदि देशों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलने में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य परिवार गौरव गाथा नामक पुस्तक के प्रधान सम्पादक के पद का भी भार आपने सम्भाला, उस गौरव गाथा का विमोचन आर्य महासम्मेलन मे किया गया।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

(क) एक अन्य रथ पर शोभायात्रा को उत्साहित करते हुए आचार्य नरेश, (ख) नपाल के विराट नगर से पधारे प्रतिनिधि, (ग) आदिवासी वैचारिक क्रान्ति का प्रदर्शन करते आदिवासी आर्यजन, दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान में।

संकल्प शक्ति बढ़ाओ "तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु"

– श्री यश बाला गुप्ता

हजारों वर्षों से मनुष्य शान्ति की खोज करता आया है। असख्य सुख सुविधाओं का भोग करते हुए भी मनुष्य को सुख शांति मिल जाए यह अनिवार्य नहीं। एक वस्तु की प्राप्ति होती है तो थोडा सन्तोष होता है पर मन अधिक पाने की लालसा में पुन· चिंतित हो उठता है। और - और कुछ और पाने की इच्छा इतनी बलवती हो जाती है कि मनुष्य अपने वास्तवविक लक्ष्य को भुला देता है। जीवन का लक्ष्य सुख, सन्तोष व आनन्द को पाना है – पर होता यह है कि मानव अपने बनाए हुए जाल मे उलझता जाता है और उसे ओर छोर दिखाई नहीं देता। ऋषि, मुनि, विद्वतजन जिन्होंने जीवन के अर्थ को समझा है वे सदैव ही जन मानस को प्रेरणा देते आए हैं जिससे उसका कल्याण हो। कितनी विडम्बना है ? यह जानते हुए भी कि मन को बाधना ही श्रेय है फिर भी मानव मन को मनाने, तुष्ट करने मे लगा रहता है। अनुचित को न करने के लिए मन से आवाज आती है पर वह उसको अनसुना कर अपना ही अहित कर बठता है। उच्च रक्तचाप के मरीज को चिन्ता हानिकारक है, डायबटीज के मरीज को मिठाई – पर मन हे कि मानता ही नहीं - या तो व्यर्थ की चिताओ मे फसा रहता है या दूसरी ओर अभक्ष्य को भी बिन विचारे गले से नीचे उतार देता हे। जिसका परिणाम उल्टा ही होता है।

सचमुच मन बडा चचल है। उधेडबुन करने वाला बलवान तथा हठी है। वायु को वश मे करने के समान उसका निग्रह अत्यन्त दुष्कर है, कठिन है। चचलता का दृश्य वेद ने दिखाया है - "यज्जाग्रतो दूरमुदैति देव तदु सुपतस्य तथैवैति" जागते हुए का मन बहुत दूर चला जाता है वैसे ही सोए हुए का भी चला जाता है अर्थात न सोते चैन और न जागते चैन। यदि मनुष्य मन को स्थिर कर सके तो अकेले ही बहुतों से लड सकता है। क्योंकि मन की शक्ति अपार है। आंख देखती है किन्तु मन के सहयोग से, कान सुनते हैं मन के सहयोग से। जिस इन्द्रिय के साथ मन का सहयोग न हो वह कार्य नहीं कर सकती। अत. ऐसे मन को स्थिर करना चाहिए। "तन्मे मन· शिवसंकल्पमस्तु" द्वारा पुनः पुनः यह प्रार्थना की गई हैं कि हे ईश्वर ! मेरा मन शुभ, आनन्द व भलाई के लिए सकल्प वाला हो।

आवश्यकता है अपनी संकल्प शक्ति को प्रबल बनाने की। अथर्ववेद का मंत्र कहता है "अवधीत कामो मम ये सपत्नां" - मेरे सकल्प बल ने मेरे जो प्रतिद्वन्द्वी बाधक हैं उन्हे अवधीत अर्थात् नष्ट कर दिया है। ईश्वर ने यह सकल्पशक्ति सबको दी है पर हम उसे आराम करने देते है। यदि अपने सकल्प बल को जगा दिया जाए तो कांम, क्रोध, लोभ जेसे रिपुओ से निपटा जा सकता है। उन्हें बेजान किया जा सकता है। फिर मन में कमजोरी रह ही नहीं जाएगी।

कबीर हा यह दोहा 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' निराशा में डूबी मानवता के लिए दीप स्तम्भ है। भयंकर बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति या भयंकर दुखो में डूबा व्यक्ति भी इन पंक्तियों को विचारते ही अद्भुत शक्ति का अनुभव करने लगता है। जो मन से कमजोर हो जाता है वह तो जीवित रहते हुए भी मृतक है। इन पक्तियो में वो चुम्बक शक्ति है जिसके पास आते ही विपरीत परिस्थितियां अनुकूल हो जाती है। इन पक्तियो मे विश्वास उस कामधेनु की तरह है जिसको पाकर कुछ पाने को शेष नहीं रहता। इसकी शक्ति उस चिराग की तरह है जिसके जलने से अधकार स्वयं भाग जाएगा।

मन को दृढ बनाना होगा। कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता, कुछ कर पाने की इच्छाशक्ति को दृढ बनाकर ही मनुष्य सफलता के सोपान पर चढ सकता ह। जिसने मन को कमजोर वनाया उसकी इच्छाशक्ति भी कमजोर हो जाती है। वह लापरवाह और आलसी बन जाता है और एक बार यदि वह हिम्मत हार जाता है तो ऊपर उठने के लिए बहुत प्रयास करना पडता है। जो कठिनाइयों से भिडता है, मैदान मे डरता है, साहस का पल्ला नहीं छोडता वही जीवन मे कुछ कर सकता है।

जीवन को सुन्दर व सफल बनाने के लिए यदि मन के शब्दकोष से नकारात्मक विचार को निकाल दिया जाए तो ही सफलता मिलती है। 'ये काम मुझसे नहीं होगा' - ऐसा विचार यदि मन में आ जाए तो समझो कि सफलता पीछे रह गई है। अब प्रश्न उठता है कि क्या नकारात्मक भाव को मिटा देने से ही सफलता मिलेगी ? हा ! क्योंकि असफल होने वाला ऐसा व्यक्ति भाग्य के भरोसे नहीं बैठेगा। जिसने अपने मन को दृढ बना लिया है वह पुन· प्रयत्न करेगा और सफलता के सोपान पर चढेगा। इसलिए आवश्यकता है मन को स्थिर बनाने की जो धारण, ध्यान व अध्यवससाय द्वारा ही किया जा सकता है। इस प्रकार निरन्तर किया हुआ अभ्यास मनुष्य को संयमी व सकल्पवान बनाता है। यह सकल्प ही उसे जीवन के शीर्ष पर ले जाता है, सफलता के शिखर पर आसीन करता है, सुख के पालने में झुलाता है। इसीलिए कहा है –

"तन्मे मन. शिवसकल्पमस्तु"।

- ४६/३, लिंकिंग रोड, एक्स्टेंशन, मुम्बई-४०००५४

हृदयाघात से बचाव के लिए रोज ५ बादाम खाएं

पाच बादाम रोज खाने से हृदयाघात से बचा जा सकता है - धूम्रपान उम्र कम करने का रास्ता है, ऊचा रक्तचाप उचित खानपान और नियमित व्यायाम से ठीक किया जा सकता है "सेहत की जानकारी सम्बन्धी यह सन्देश ७ अप्रैल को २६ जनवरी की तर्ज पर निकलने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी झाकियों मे देखने को मिलेगा। अपने ढग की यह अनोखी चलती-फिरती स्वास्थ्य परेड विजय घाट से शुरू होकर लाल किले पर समाप्त होगी। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर आयोजित की जाने वाली इस परेड में लोगों को झाकियों के माध्यम से स्वस्थ रहने के तरीके बतलाए जाएगे।

पृष्ठ ६ का शेष भाग

राष्ट्रभृत महायज्ञ मे ब्रह्मत्व के पद को आपने सुशोभित किया, यज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। उपहार स्वरूप यजमानों को यजमान ट्राफी भेट की, जिसकी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशसा की। यज्ञ का अनोखा कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर रूप से सम्पन्न हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की स्मृति बनाए रखने के लिए स्मृति चिन्ह के रूप में आर्यसमाज स्थापना की १२५ वीं जयन्ती समापन समारोह के उपलक्ष्य में एक बहुत ही सुन्दर लोगो का चित्र जिसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बनवाया था, उसी लोगो को यजमानो को यजमान ट्राफी एवं बैचेस और स्टीकर बनवाए गए थे, जिसे सभी आर्य जनता ने पसन्द किया व स्मृति के रूप में अपने साथ ले गए।

स्वामी सकल्पानन्द जी सरस्वती (उदयपुर) दो माह पूर्व मुम्बई मे पधारे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उन्होने अत्याधिक परिश्रम किया। मुख्य रूप से जनमानस तक इस कार्यक्रम की रूप-रेखा पहुचाने का प्रयास किया, एक माह स्वामी जी ने महासम्मेलन के प्रचार-प्रसार व धन संग्रह करने के लिए महाराष्ट्र प्रान्त में हर एक गांव में जाकर प्रचार कार्य किया और लगभग ५ लाख रूपये दान एकत्रित किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने देश-विदेश से आए हुए सभी महानुभावो का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस सम्मेलन कों सफल बनाने में आप सभी का तन-मन धन से सहयोग प्राप्त है। विकट परिस्थिति में भी आप सभी ने अपने आर्यत्व का परिचय दिया और इस सम्मेलन को सफल बनाकर एक नई दिशा प्रदान की। सम्मेलन मे पधारे सभी सन्यासी गण, विद्वत्गण, वक्ताओ, कार्यकर्त्ताओ व उपस्थिति सभी आर्य जनता का हृदय से आभार व्यक्त किया। आर्य समाज सान्ताक्रुज के उपप्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने सगठन सूक्त, शान्ति गीत का सामूहिक गायन कर शान्ति पाठ किया। ❑

R N No 32387 77 Posted at N D P S O on 5-6/04/2001 दिनांक २ अप्रैल से ८ अप्रैल, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No: U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल- 11024/2001, 5-6 /04/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३९/२००१

पृष्ठ २ का शेष भाग

सामवेद के मन्त्रों से छन्द सप्तक

अर्थ – हे (इन्द्र) परमैश्वर्यशालिन् ! (न वय वय शयम्) हमारे जीवन के प्रत्येक प्राण मे विद्यमान (महान्त गहनरेष्ठाम्) महतो महीयान् होते हुए भी हृदय गुहा मे स्थित (महान्त पूर्विणेष्ठाम्) पूर्वजन्म कृत कर्मों के अधिष्ठाता ज्येष्ठ ब्रह्म को (आ) अनुभूति कराए और (उग्र वच) अहकार और निराश के कटुवचन (अप अवधी) हम से दूर रखे।

निष्कर्ष – परमेश्वर विश्वासी को न तो अहकार और न निराश व्यापती है।

(६) सम्पूर्ण जगत् की कल्याणकारिणी रात्रि हमें सदा भद्र रूप में ही मिले

आ प्रागाद् भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति।
अभूद्भद्रानिवेशनी विश्वस्य जागतो रात्री।।

साम० ६०८

वामदेव.। रात्रि.। अनुष्टुप्।

अर्थ – (युवति) दिन मे हुआ श्रम दूर करके आराम देती है (भद्रा) मानसिक, और शारीरिक कष्ट भुला कर कल्याण करती है (अह्न केतून दिन मे हुए राग-द्वेष के प्रभावों (समीर्त्सति) दूर करती है। इस प्रकार यह (रात्रि विश्वस्य जगत) सम्पूर्ण जगत की (निवेशनी) विश्राम दायिनी और (भद्रा) कल्याणकारिणी (अभूत्) है– सदा से है। इसी रूप मे हमे प्राप्त हो।

(७) हमारी कामना है कि स्वर्ण, गाय, सत्य और ब्रह्म के तेज हमें प्राप्त हों

य द्वर्चो हिरण्यस्य यद्वावर्चोगवामुत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि।

साम० ६२४

वामदेवः। आत्मनः आशी (कामना)। अनुष्टुप्।

अर्थ – हे प्रभो ! हमारी कामना है कि (हिरण्यस्य) सुवर्ण का (उत गवाम्) और गायो इन्द्रियो, वेदवाणियो और किरणो (वा) और (सत्यस्य ब्रह्मण) सत्य ज्ञान और ब्रह्म मे (यद्वर्च) जो तेज और आकर्षण है (तेन) उस तेज और आकर्षण से (मा ससृजामसि) हम पूर्णतया सयुक्त हो।

अर्थपोषण – गो शब्द कथितो वाणे वाचि दिव प्रयार्जल। षडेन्द्रियमयूखपु भूमा स्वर्गे च दृश्यते।

हिरणयम – हितकर रमणीय च हृदय रमण भवतीति वा। निरु०२/३/२

- श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली -६

प्रतिष्ठा में

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कस्तूरबा नगर, डिफेंस कालोनी नई दिल्ली-३

प्रधान	–	ब्रिगेडियर आर०डी० धवन
मन्त्री	–	श्री एच० वी० मेहता
कोषाध्यक्ष	–	श्री लाजपत डाग

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक १२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ९ अप्रैल २००१ से १५ अप्रैल, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र के रमेश नगर में महर्षि दयानन्द के नाम पर मार्ग का नामकरण

पश्चिमी दिल्ली में रमेश नगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर के सामने वाले मार्ग का नामकरण महर्षि दयानन्द मार्ग कर दिया गया है। इस मार्ग का उद्‌घाटन स्थानीय सांसद् तथा दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना ने किया। इस समारोह में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोस तथा हालैण्ड सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप, वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन, स्थानीय पार्षद श्रीमती ऊषा मेहता तथा श्री हीरालाल चावला आदि उपस्थित थे।

नामकरण उद्‌घाटन समारोह से पूर्व आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में विशाल यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा बाद में एक जन सभा का आयोजन हुआ। जिसका संचालन आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान तथा दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य तथा श्री भीमसेन गुलाटी ने किया।

श्री नरेन्द्र आर्य ने इस नामकरण प्रकरण के निर्धारण में श्रीमती ऊषा मेहता के विशेष सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

श्री मदन लाल खुराना ने कहा कि महापुरुषों के नाम पर विभिन्न मार्गों, भवनों तथा शहरों इत्यादि का नाम रखकर हम यह प्रयास करते हैं कि उन महापुरुषों का प्रभाव हमारे समाज में चिरकाल तक स्थापित रहे। स्थानीय पार्षद् श्रीमती ऊषा मेहता ने कहा कि आर्यसमाज की विचारधारा अलौकिक है तथा समाज को एक सुव्यवस्थित जीने का मार्ग उपलब्ध कराती है। इसलिए समाज में प्रत्येक व्यक्ति को महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का अनुकरण करना चाहिए।

इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामभरोस तथा हालैण्ड सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप जी का अभिनन्दन किया गया।

इन दोनों विशिष्ट अतिथियों का परिचय देते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि जब हमारे कार्यों का आधार धार्मिक और आध्यात्मिक होता है तो समाज में गलतियों की सम्भावना कम हो जाती है और दृष्टिकोण बडा व्यापक हो जाता है। इन दोनों आर्य महानुभावों का जीवन सच्चे अर्थों में ऋषि अनुगामी रहा है। श्री रामभरोस जी ने बाल्यकाल से आज ८४ वर्ष की अवस्था परोपकारी कार्यों में ही व्यतीत की है।

डॉ० महेन्द्र स्वरूप जी ने राजाओं-महाराजाओं को प्रेरित करने के महर्षि दयानन्द वाले दृष्टिकोण को अपना कर्त्तव्य मानते हुए समूचे विश्व के राजाओं-महाराजाओं को प्रेरित करने के कार्य सम्पन्न किए हैं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी ने इन दोनों महानुभावो को अभिनन्दन पत्र भेंट किए तथा दिल्ली के विभिन्न आर्य नेताओं ने पुष्पमालादि द्वारा दोनों आर्य नेताओं का हृदय से स्वागत किया। वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालंकार ने उपस्थित जन समुदाय को शुभ कार्यों की प्रेरणा देते हुए कहा कि आर्यसमाज के संगठन में कई दरारें नजर आ रही हैं अत आर्य नेताओं को अपना कर्त्तव्य पालन बडी पवित्र बुद्धि से करना चाहिए।

दिल्ली सभा की मन्त्रिणी श्रीमती शशि प्रभा तथा श्रीमती विभा पुरी ने इस अवसर पर मनोहर भजन प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अनुसार प्रसाद रूप मे ऋषि लगर का आयोजन किया गया, जिसमें सभी श्रद्धाभाव से सम्मिलित हुए।

(क) रमेशनगर में दयानन्द मार्ग के नामकरण समारोह के अवसर पर श्री मदन लाल खुराना, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा आर्यसमाज के अधिकारीगण। (ख) दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोस का अभिनन्दन करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, साथ में डॉ० महेन्द्र स्वरूप, श्री सोमदत्त महाजन, श्री विमल वधावन एव अन्य आर्यजन।

सच्चा वैदिक 'कुम्भ स्नान'

सच्चे ज्ञान यज्ञों के माध्यम से देश-धर्म-असहायों और प्राणियों की रक्षा का संकल्प लेना ही सच्चा कुम्भ स्नान

– आचार्य आर्य नरेश

कुम्भ-ज्ञान संगठन स्वच्छता तथा त्याग का प्रतीक है। वेदादि शास्त्रों के प्रमाण से 'ज्ञान' का वास्तविक अभिप्राय है - स्वतः प्रमाण शाश्वत् ईश्वरीय 'वैदिक ज्ञान'। जो कि त्रुटि रहित है। इसी वेदज्ञान को पाकर 'आत्मा' इस संसार रूपी पाठशाला से सेवा व साधना के दो पक्षों द्वारा उत्तीर्ण होकर 'मोक्ष' को प्राप्त करता है या फिर संसार रूपी सागर से पार उतने का यही सच्चा 'तीर्थ' अथवा कुम्भ स्नान है।

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती स्वलिखित क्रान्तिकारी वैदिक सस्कृति के विशिष्ट रक्षक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तवय प्रकाश में लिखते हैं कि "तीर्थ" उसे कहते हैं जिससे दु:खसागर से पार उतरे, जो कि सत्य भाषण, (वेद) विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ और विद्यादानादि शुभ कर्म हैं उसी को तीर्थ समझता हू, इतर जलस्थलादि को नहीं।"

एक समय था जब कि आर्यावर्त के महान् योगी और विद्वानजन सच्चे ब्राह्मण 'राष्ट्र' को दु खों से पार करने हेतु पूरे देश के लोगों को एक स्थान पर एकत्र करके वैदिक सत्सग और सत्ययोग साधना का उपदेश करते थे। ऐसे 'ज्ञान कुम्भ' मे स्नान करने हेतु देश से ही नहीं अपितु विदेशो से भी लोग सम्मिलित होते थे। ऐसे अवसरों पर बहुत बड़े-बडे यज्ञ भी होते थे। जिससे ज्ञान प्राप्ति तथा सत्कर्म तथा ज्ञान का स्नान होने से 'उत्सव' सिद्धि का आधारशिला 'वातावरण' की शुद्धि हो सके। इन शुभ अवसरों को जोड के कारण 'पर्व' कहा जाता था।

उत् अर्थात् उत्कर्ष हेतु, 'उत्कृष्ट' प्रकार का तथा 'सव' का अर्थ स्नान होता है। ज्ञान का उत्कृष्ट स्नान ही वास्तव में मानव को देव बना सकता है। ज्ञानवान व्यक्ति ही अनिष्ट कर्मों 'पापों' से बचता, वेदानुसार श्रेष्ठ कर्मों का अनुष्ठान करता, इस लोक और परलोक को सुधार सकता है। दुःखों से बचने का यही सच्चा सनातन कुम्भ स्नान है।

जो अनाड़ी (अनार्यजन) मात्र जल के स्नान द्वारा ही दुःखों की निवृत्ति और मुक्ति की सिद्धि मानते हैं वे वास्तव में सत्य सनातन वैदिक-धर्म का 'क ख ग' नहीं जानते। वैदिक संस्कृति बार-बार यह उपदेश देती है - 'ऋतेज्ञानान् न मुक्ति' अर्थात् ज्ञान के बिना कर्म करने में मुक्ति नहीं हो सकती। अन्यत्र भी कहा है - "अदर्भिगात्राणि शुद्धयति मनः सत्येन शुद्धयति" अर्थात् जल से तो केवल बाहर के शरीर के अंगों या चमडी अथवा वस्त्रों की ही शुद्धि होती है। 'मन' जो कि सब कर्मों का आधार है उसकी शुद्धि तो 'सत्य' से ही सम्भव है। विद्या तथा तप से आत्मा की शुद्धि होती है। 'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा' का यही उपदेश है। अतः सनातन-शास्त्र भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि सच्चे तीर्थ या स्नान अथवा 'महाकुम्भ' जल नहीं अपितु 'ज्ञान' ही है, क्योंकि यदि जल के स्नान से ही संसार सागर से मुक्ति और कष्टों अथवा दुःखों ये निवृत्ति होती तो मछली, कछुआ, मगरमच्छ, जल में रहने वाले सर्प तथा जल के समीप रहकर नित्य मछली पकडने हेतु जल में डुबकी मारने वाले मछुआरे कभी के मुक्त हो गए होते। यदि नदियो व कथित तीर्थों और इन नामलेवा कुम्भों में ही स्नान करने से भारतवासियों का कुछ कल्याण सम्भव होता तो अब तक सम्पूर्ण भारत स्वर्ग बन गया होता। यहां कभी भी देश में चोरी, सीनाजोरी, मिलावटखोरी, रिश्वतखोरी, शराब, मांस-अण्डे व धूम्रपान का गन्दा वातावरण दिखाई न देता। कोई भी भारत का नागरिक रोगी व भोगी बनकर अस्पतालों या न्यायालयों का चक्कर न काट रहा होता।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस तथाकथित 'महाकुम्भ' को महाकल्याणकारी समझा जा रहा था, वहां उसके स्थल पर अनेक सूचना पत्रों पर यह लिखा गया था कि इस 'संगम' का पानी न पीएं। पीने के लिए टूटी के शुद्ध जल का प्रयोग करें। पाठकवृन्द ! इस सूचना से यही सिद्ध है कि जो जल अशुद्ध होने से पीने के ही योग्य नहीं, वह भला मन को तो कैसे निर्मल कर सकता है? अतः ऐसा जल अशुद्ध होने से न तो शरीर के लिए और न ही आत्मा के लिए ही कल्याणकारी है।

उक्त चर्चा वे यही स्पष्ट होता है कि सच्चा महाकुम्भ जल के स्नान का नाम नहीं, अपितु ज्ञान के स्नान का नाम है।

शारीरिक-आरोग्य और बौद्धिक जागरुकता, ये दोनों ही संसार सागर से पार उतरने के दो प्रमुख साधन हैं। पर यह अत्यन्त दुःख है कि इस तथाकथित 'महाकुम्भ' में इन दोनों ही का प्रायः अभाव था। इलाहाबाद (प्रयाग) का वातावरण ठीक इससे विपरीत था। 'प्रयाग' जिसका भौतिक अर्थ भी प्र= प्रकर्ष, याग=महायज्ञ अर्थात् विशेष महायज्ञ है। वह इन दिनों उत्कर्षता का स्थान न बनकर अपकर्ष का स्थान बन गया था। चाहिए तो यह था कि वहां प्रत्येक स्थान पर तम्बुओं, शमियानों या झोपडियों अथवा पंडालों में बैठे लोग 'यज्ञ-हवन' करते दिखाई देते, पर देखा यह गया कि वहां स्थान-स्थान पर लोग बिना हिसाब के बीडी-सिगरेट पी रहे थे। अपितु उनकी खपत को पूर्ण करने के लिए स्थानीय 'कुम्भ' सभा या सरकारी तन्त्र ने भारत भर की बर्बादी के प्रमुख साधन और पर्यावरण के विनाश के प्रमुख भागीदार बीड़ी-सिगरेट की कम्पनियों को बडे-बडे स्टाल आबटित किए थे। क्या धूम्रपान करने वाले अशुद्ध तन और धूम्रपान के धुएं से ठसा-ठस पूर्ण अशुद्ध वातावरण कभी मुक्ति, सिद्धि या भक्ति का स्थान हो सकता है ?

यदि नहीं, तो फिर हमें यही कहना चाहिए कि वर्तमान के ये ज्ञान और शुद्ध वातावरण के बिना तथाकथित 'कुम्भ' दुःखों से मुक्ति नहीं अपितु दुःखों से बांधने के ही मुख्य स्थल हैं।

यदि किसी को सच्ची मुक्ति, शान्ति और धर्ममार्ग में प्रवृत्ति करनी है तो उन्हें चाहिए कि वे तथाकथित पाखण्डों से बचकर यज्ञमय वैदिक सत्संग में स्नान करें। कुछ त्याग करने की ही इच्छा है तो हवन में आहुति डालकर अण्डा, मांस, मछली, शराब, सिगरेट, बीडी और बुरी आदतों का त्याग करें। कुछ प्रसाद ही ग्रहण करना है तो संयम, ओम् जप, यज्ञ, वेदपाठ और परोपकार का प्रसाद ग्रहण करके जीवन को सार्थक बनाएं। यदि ऐसे अवसरों पर देशभर के विद्वान या महात्मा पुरुष स्थान-स्थान पर यज्ञ-हवन व वेदकथा करने का कार्य करें तो यह कुम्भ वास्तव में वैदिक ज्ञान कुम्भ बनकर सबको जीवन देने वाले बनेंगे तथा महा यज्ञों की पूर्ण आहुति पर यज्ञ कुण्डों पर रखे गए मटकों के औषधमय पावन जलों से स्नान करके 'महाकुम्भ' स्नान भी चरितार्थ करें।

अतः सच्चा महाकुम्भ स्नान वहीं है जहां विशाल जन-समुदाय भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखता हुआ वेद की ज्ञान धाराओं से स्नान करता, परस्पर एक दूसरे की सेवा व सत्कार करता, अपनी सम्पदा द्वारा खरीदी घृत सामग्री से हवन करता, ध्यान योग से परमात्मा के आनन्द में डुबकी लगाता हुआ, ऐसे महान 'ज्ञान यज्ञों' से देश धर्म व असहायों तथा गौआदि प्राणियों की रक्षा करने का व्रत ले। ऐसे वैदिक महाकुम्भ स्नान से सम्पूर्ण राष्ट्र शुद्ध, पवित्र तथा शान्त वातावरण को प्राप्त करेगा।

– वैदिक गवेषक,
उदगीथ साधना स्थली हिमाचल

माता की सीख

एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती रेल में यात्रा कर रहे थे। उनके पास ही एक उदास बच्ची अपनी मां के साथ बैठी थी। उस समय महर्षि सेब खा रहे थे। बच्ची को उदास देखकर उन्होंने एक उसे सेब उसे दे दिया। पहले तो उस बालिका ने वह सेब लेने से इन्कार किया, लेकिन जब मा ने कहा कि ले लो तो उसने ले लिया। लेकिन तभी बालिका की मा ने उसे एक चाटा लगा दिया। यह देखकर महर्षि स्तब्ध रह गए। उन्हें अच्छा नहीं लगा।

उन्होंने बच्ची की मां से कहा -" माता, आपने ने इस बालिका को चांटा क्यों मारा? आखिर उसने क्या गलती की थी।" मां ने जवाब दिया - "स्वामी जी, यह ठीक है, उसने मेरे कहने पर सेब लिया था, लेकिन सेब लेने के बाद उसने आपको धन्यवाद क्यो नहीं कहा।"

मां की यह सीख सुनकर महर्षि चकित रह गए और जीवन भर वह सभी उपकार करने वाले लोगो का धन्यवाद करते रहे, क्योंकि मा के चांटे के साथ माता की सीख उस बच्ची के साथ महर्षि दयानन्द ने भी ली थी।

– नरेन्द्र

प्राणिमात्र सुखी हों, सब सन्मार्ग पर चलें : भद्र भावना से भरपूर हों।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
विश्व में सब जन सुखी हों, स्वस्थ हों भरपूर हों।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
दृष्टि सुन्दर भद्र देखे, क्लेश से सब दूर हों।
असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।
प्रभो, असत् से हमें हटा सन्मार्ग पर ले जाओ, अन्धेरा दूर कर ज्योति प्रदीप्त करें
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।। ऋ० ५८/२/५
प्रेरक देव हमारे मन से पापवासना दूर करो। भद्र भावना से इस मन को तदनन्तर भरपूर करो। अपने जीवन की सरिता मनस्ताप के मिट जाने से सुखी सदा परिवार रहे। पावन जल की धार बहे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

नई शती : अतीत से सीखः नए संकल्प-नई गति

विक्रमी संवत् का शुभारम्भ हो गया है। राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए भारतीय राष्ट्र को चौवन वर्ष हो गए हैं, देश मे गणतन्त्र व्यवस्था प्रचलित हुए भी ५१ वर्ष हो गए है। यह भी गरिमा का विषय है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से सर्वांगीण राष्ट्रीय अभ्युदय के लिए समर्पित हरिद्वार के गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के शताब्दी कार्यक्रम का भी शुभारम्भ पिछले मार्च महीने में हो गया है। वस्तुतः यह भी एक ऐतिहासिक गौरव का समय है कि राष्ट्र के सर्वांगीण सांस्कृतिक, सामाजिक कायाकल्प के लिए समर्पित संगठन आर्यसमाज के यशस्वी जीवन के सवा सौ वर्ष व्यतीत हो गए हैं, उसके जीवन की इस ऐतिहासिक घडी को स्मरण करने और अतीत से सीख लेकर नए संकल्पों के साथ संस्था, राष्ट्र को नई गति देने के लिए मार्च के अन्तिम सप्ताह में महर्षि द्वारा संस्थापित संगठन आर्यसमाज के आत्मनिरीक्षण की घडी थी। उस ऐतिहासिक अवसर पर मुम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। वस्तुत. यह संस्था और राष्ट्र के आत्मचिन्तन की घडी थी कि पिछली शताब्दी और पिछले सवा सौ वर्षों में राष्ट्र और संस्था की क्या उपलब्धियां हैं हमने किन क्षेत्रों में प्रगति की और किन क्षेत्रों में हम पिछड़ गए ? इस अवसर पर यह देखने का भी अवसर था कि हमारी प्रगति में क्या अवरोध आ गए ? उल्लेखीनय है कि शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, समाज-सेवा, ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिल्प, उद्योगों में अनेक क्षेत्रों में राष्ट्र ने प्रगति की है, हम अनेक क्षेत्रों में स्वाबलम्बी हो गए हैं, प्रत्युत, किन्हीं क्षेत्रों में कीर्तिमान भी रखे हैं, परन्तु यह चिन्ता की बात है कि अनेक क्षेत्रों में अभी भी शीर्ष वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का पथ-प्रदर्शन अपेक्षित है। सम्भवतः इसी कमी के कारण भारत राष्ट्र की भू समन्वित उपग्रह की पहली विकास उडान मार्च के चौथे सप्ताह में हरिकोटा में विफल हो गई, फलत देश के अन्तरिक्ष विकास कार्यक्रम को गहरा धक्का लगा है।

राष्ट्र की राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक उन्नति का लेखा-जोखा करते हुए आत्म-निरीक्षण करने पर हम यह कटु तथ्य भी भूल नहीं सकते कि सभी समन्वित सामूहिक प्रयत्नों के बावजूद देश से अभी भूख, रोग, गरीबी, भेदभाव और विषमता का अन्त नहीं हुआ है। इसी के साथ हम यह तथ्य भी भूल नहीं सकते कि हमारा पडोसी पाकिस्तान निरन्तर भारत-विरोध के लिए प्रयत्नशील है। गुप्त तार सन्देश, जासूसी सूचनाएं चेतावनी दे रही हैं कि पाक सैनिक अधिकारी विदेशी आतकवादियों को उच्च क्षमता के घातक हथियारों के प्रयोग और सीधी मुठभेड का व्यवस्थित प्रशिक्षण दे रहे हैं। पाक सैनिक अधिकारी अपनी पनडुब्बियों को आणविक मिसाइलों से सुसज्जित कर रहे हैं। बड़ी संख्या में विदेशी आतकवादी प्रशिक्षित कर देश में तोड-फोड और सहार के लिए भेजे जा रहे हैं। पडोसी पाकिस्तान के फौजी शासक कश्मीर राज्य को छोड़ने से इन्कार कर नए हथियारों और अणु शस्त्र के प्रयोग की भी धमकी देते रहे हैं। आतंकवादी संगठनों के मुखिया अपने स्थायी भारत-विरोध की धमकी भी दे रहे हैं। इस प्रकार स्वाधीनता प्राप्ति के चौवनवें और आर्यसमाज के यशस्वी जीवन के सवा सौ वर्षों में हमें यह स्मरण रखा होगा कि इक्कीसवी शताब्दी की पहली जनगणना में भारत की जनसख्या एक अरब दो करोड सत्तर लाख १५हजार २४७ हो गई है। इस बढी हुई जनसंख्या के लिए प्रतिवर्ष ८ लाख २७ हजार विद्यालय, ८ लाख ७३००० शिक्षक, २५ लाख नए घर, ४० लाख नई नौकरियां, १६ करोड मीटर कपडा, १ करोड २५ लाख क्विटल अधिक अनाज चाहिए। बढी हुई इस जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के हर छह व्यक्तियों में एक भारतीय हो गया है। यह भी चिन्ता की बात है कि बढी हुई जनसंख्या की भूख, कष्टों, अभावों का कैसे स्थायी समाधान किया जाएगा। एक ओर हमारे अभाव, कष्ट, रोग हैं तो साथ ही हम यह भी भूल नहीं सकते कि आज देश की जनता में सामूहिक त्याग और समर्पण की वैसी भावना नहीं है जैसी स्वातन्त्र्य संघर्ष के दिनों में देशवासियों ने प्रदर्शित की थी।

यह कितनी चिन्ता की बात है कि पिछले दिनों सार्वजनिक क्षेत्र का सार्वजनिक उपक्रम भारत एल्यूमीनियम लि० बाल्को जो करोडों की आय करता रहा हैं। उसके ५१ प्रतिशत हिस्से औने-पौने दामों में एक विदेशी कम्पनी की बेच दिए गए हैं। यदि यह उद्योग घाटे में चल रहा होता तो उसे विदेशी विनिवेश के लिए बेचना ठीक हो सकता था, परन्तु मुनाफा देने वाले उपक्रम का औने-पौने मे बेचना देशद्रोह है। भारत के स्वाधीनता सग्राम मे हजारों-लाखो स्वातन्त्र्य योद्धाओं मे जिनमे हजारो-लाखों आर्यजनों ने भी भाग लिया था, अपने त्याग-बलिदान से विदेशी बन्धनों से मुक्ति ली थी। अब वह समय फिर आ गया है जब राष्ट्र और उसकी कोटि कोटि जनता के सर्वांगीण अभ्युदय के लिए त्याग-बलिदान और समर्पण की वही भावना बलवती की जाए जिससे ओत-प्रोत हो भारत की कोटि-कोटि जनता और आर्यों ने विदेशी शासन से मुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्ति की थी। नई शती का शुभागम हमें राष्ट्र के स्वतन्त्रा संग्राम से त्याग-बलिदान और समर्पण की सीख लेकर नए संकल्पों के साथ राष्ट्र में एक नई दृष्टि और एक नई शक्ति संगठित करने का आह्वान कर रही है। आइए, नई शती में हम अपने नए गम्भीर उत्तरदायित्वों को भली प्रकार समझें और उन्हें भली प्रकार निभाने का व्रत ग्रहण करें। ❑

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर पर आक्रमण

अफगानिस्तान में मुस्लिम कट्टर पंथी तालिबान द्वारा हिन्दू-बौद्ध मूर्तियों को तोडने का अभियान भारतीय सांस्कृतिक धरोहर पर आक्रमण है। काबुल, कन्धार, गजनी, बामियान और बल्ख आदि क्षेत्र उत्तरापथ कहलाते थे। आज का जलालाबाद नगरहार कहलाता था। काबुल कुभा और काबुल नदी कुमा नदी नाम से पुकारे जाते थे। वैयाकरण पाणिनी तक्षशिला क्षेत्र के थे। चीन में जिन आचार्यों ने भारतीय धर्म का प्रसार किया, उनमें सबसे अधिक काबुल से गए। इन्हीं क्षेत्रों से समस्त मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति और संस्कृत ग्रन्थों का प्रचार हुआ। इसी कारण प्राचीन तुर्की भाषा में संस्कृत शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते है। आठवी शताब्दी के उपरान्त अरब आक्रमणों के कारण मध्य एशिया के तुर्क क्षेत्र इस्लामी प्रभाव में आए गए और पुराने धर्म तथा साहित्य से विमुख हो गए। महमूद गजनवी के समय उनमें इतनी कट्टरता आ गई कि हिन्दू बौद्ध मन्दिर तोड़े गए संस्कृत के पुस्तकालय जलाए गए बडे-बड़े विहार नष्ट हुए और विद्वानों का संहार हुआ। काबुल और बामियान में जो हो रहा है वह महमूद गजनवी से लेकर औरंगजेब और उसके बाद तक सांस्कृतिक धरोहर के नाश का कार्यक्रम चला, उसी की कडी में एक घिनौना प्रयास है। भारत में आज भी लाखों ऐसे हिन्दू हैं, जिनके पुरखे काबुल, कन्धार, बल्ख आदि क्षेत्रों से अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए यहां आए। बल्ख से आए बहल कहलाए। लम्पाक से आए वे लाम्बा कहलाए, कन्धार से आए कन्धारी, ककरक से आए कक्कड इसी प्रकार सीकरी, खोखर आदि गोत्रों के हिन्दू हैं। जिन के पर्व पुरुषों ने पिछले १२०० वर्षों में अपने घर-बार चाहे छोड दिए, धर्म संस्कृति नहीं छोडी।

अफगानिस्तान में हिन्दुकुश पर्वत है, यह नाम ही वहां हिन्दुओं के नरसंहार के कारण हिन्दकुश पडा। हिन्दुकुश पर्वत से चितराल तक के क्षेत्र के हिन्दुओं ने अनेक युद्धों में लडते हुए हजार वर्षों तक अपना प्राचीन धर्म बनाए रखा। अपना धर्म बनाए रखने के कारण ही उन्हें काफिर की सज्ञा दी गई थी और उनके अधिकार वाले क्षेत्र को काफिरस्तान कहा जाता था। किन्तु सन् १८९८ के उपरान्त यह गढ भी नहीं रहा।

खेद है कि अफगानिस्तान में जो हमारी संस्कृति का विनाश किया गया उसे भारत के नेता चुपचाप देखते रहे। ❑

– डॉ० कैलाश चन्द, हिन्दू संस्कृति प्रतिष्ठान ३३१, सुनहरी बाग, अपार्टमेन्ट रोहिणी-१३

तहलका का हंगामा

तहलका डाट काम ने रक्षा मामलों में व्याप्त भ्रष्टाचार का जैसा व्यापक पर्दाफाश किया है, वह काबिले तारीफ है। बगारू लक्ष्मण ने स्वय एक लाख रुपये का चन्दा लेने की बात स्वीकार की है। भारतीय जनता ने सपना लिया था कि आजादी मिलने पर भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था और नया समाज बनेगा, पर वह सपना मिट गया। स्वाधीनता के इन ५४ वर्षों में हमने भ्रष्टाचार की सभी ऊंचाइया देख लीं। करोडों अरबों रुपयों के घोटाले के बाद रक्षा मामलों में व्याप्त भ्रष्टाचार से किसी को विस्मय नहीं हुआ। प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बोलबाला है। बिना ऊंची पहुंच या घूस दिए आज कोई कार्य नहीं होता। आखिर जब ऊपर से ही गडबड होगी तो नीचे गडबड होनी स्वभाविक है। आज के कर्णधारों को जब अपनी जेब भरने से ही फुर्सत नहीं है तो भला भ्रष्टाचार कैसे सुधारेंगे। प्रत्येक नेता स्वय अपना गिरेबान झाक कर देखे कि वह स्वय कितने पानी में है। ❑

– बबलूसिंह दीवाना, गोपलगंज, बिहार

सामवेद के स्व-मन्त्रों से

द्विपदाविराट् (पंक्तिः) छन्दः सप्तकम् (४)

– प० मनोहर विद्यालंकार

(१) हे सर्वशक्तिमन, सर्वैश्वर्यशालिन्! हमारे इष्ट हमें प्रदान कीजिए

विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर य त्वा शविष्ठमीम हे।। साम० ४३७

वामदेव.। इन्द्र.। द्विपदाविराट् (पक्तिः)।

अर्थ - हे (विश्वतोदावन्) सर्वतः कष्ट निवारक, शोधक और दानशील इन्द्र ! (विश्वतः) सब प्रकार के दानों द्वारा (न आभर) हमें भर दीजिए, क्योंकि हम (त्वा) आपसे (शविष्ठम्) सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न और ऐश्वर्यशाली होने के कारण (ईमहे) याचना कर रहे हैं।

अर्थ पोषण - विश्वतोदावन् - दाप लवने, दैप् शोधने, दाभ् दाने।

शविष्ठम् - शवति गतिकर्मा, नि०२-१४ शवः धन नाम। नि०२-१०, बलनाम।

नि० २-७ शव+इष्ठन् प्रत्यय म तुप् अर्थ में है।

(२) अवसरोचित व्यवहारकर्ता, अपने क्षेत्र में बडा बनता है

एष ब्रह्माय ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे।। साम० ४३८

वामदेव । इन्द्र । द्विपदा विराट् (पक्ति)।

अर्थ - (एष.) यह विश्वतो दावन् परमात्मा (ब्रह्मा) प्रत्येक दृष्टि से सब से बडा है और (ऋत्विय.) प्रत्येक ऋतु अर्थात् सुख-दु ख की प्रत्येक अवस्था में स्तुति और स्मरण करने योग्य है। (यः इन्द्रः नाम श्रुत.) वेद में यह इन्द्र - ऐश्वर्यशाली तथा दु:खों और दुष्टों का द्रावक (दूर करने वाला) नाम से विख्यात है। (गृणे) मैं सदा इसी की स्तुति करता हू और वैसा बनने का प्रयत्न करता हूं।) उसके गुणो का अपने अन्दर सिंचन करता हूं। गृसेचने, गृशब्दे।

निष्कर्ष - (१) ब्रह्मा, इन्द्र आदि सब नाम परमेश्वर के ही भिन्न-भिन्न गुणों को बताने वाले हैं। (२) अपने मनपसन्द (इष्ट) नाम से उसका सदा स्मरण और स्तवन करें। (३) उसके इष्ट नाम के गुण को अपने अन्दर धारण (सिंचन) करने का प्रयत्न करें।

(३) शान्ति, पद, और ऐश्वर्य-क्रियाशील, दानी और दुर्भावविनाशक को मिलते हैं

श पद मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृश द्रयिम्।। साम० ४४१

वामदेव। इन्द्र। द्विपदा विराट् (पंक्तिः)

अर्थ - (श पदं मघम्) शान्ति, पद और ऐश्वर्य (रयीषिणे) ऐश्वर्य का दान करने वाले अथवा क्रियाशील अथवा दुष्टो और दुर्भावों को समाप्त करने वाले को ही मिलते हैं। (अव्रतः) अकर्मण्य-आलसी, अथवा व्रतों कर्त्तव्यकर्मों को पालन न करने वाला (कामम्) अपनी कामना को (न हिनोति) कभी पूर्ण नहीं करता है, और (न रयि स्पृशत्) न ही किसी ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। परमऐश्वर्य वाले परमेश्वर को तो उसके लिए छू पाना भी असम्भव है।

पदम्-परमेश्वर, क्योंकि वही एकमात्र प्राप्तव्य है। अथवा 'सर्वे वेदाः यत्पद - मामनन्ति। (कठोपनिषद् १-२-१५) रयिं ईषते इति रयीषी-ईष गति हिंसा दानेषु।

(४) विश्वपोषक गाए सदा पवित्र और देव सदा निष्पाप रहते हैं

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः।। साम० ४४२

वामदेवः। विश्वेदवाः। द्विपदाविराट् (पक्तिः)

अर्थ - (विश्वधायसः) विश्व के प्राणियों का धारण-पोषण करने वाली (गावः) मातृभूमि, वेदवाणी, सूर्यकिरणें, सकृत्प्रसूतागाय, ज्ञानी स्तोता, (सदा शुचयः) सदा स्वयं पवित्र होते हैं और अपने सम्पर्क में आने वालों को पवित्र करते हैं। (विश्वधायसः) विश्व के धारण-पोषण में रत (देवाः) सत्कार, सहयोग और दान, अथवा किसी भी विशिष्टता से सम्पन्न जन, सदा निष्पाप रहते हैं, क्योंकि उन्हें पाप करने का अवसर ही नहीं मिलता। वे सदा अपने अभीष्ट मनोरथ को पूर्ण करने में मगन रहते हैं।

अर्थ पोषण - गौ -भूमि । नि०१-१, वाणी। नि० १-११, स्तोता नि० ३-१६, किरणें। नि० ४-१

देवाः - दिवु-क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युतिस्तुति मोद मद कान्ति गतिषु।

देवो दाना द्वा दीपना द्वा, द्योतंना द्वा। निरु०

(५) मधुमय क्षेत्र (सहस्रार) में पहुंच कर ही तेरा आनन्द-स्वरुप धारण कर पाते हैं

उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र।। साम० ४४४

वामदेव । इन्द्र.। द्विपदा विराट् (पक्तिः)

अर्थ - हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशालिन् ! हम (मधुमति प्रक्षे) माधुर्यमय, प्रकृष्ट क्षेत्र अर्थात् सहस्रार चक्र में (उपक्षियन्तुः) निवास करते हुए (तेरयिम्) तेरे आनन्दमय ऐश्वर्य को (धीमहे) धारण करने का प्रयत्न करें और तदनन्तर उस ऐश्वर्य को (पुष्येम) पुष्ट करें।

अर्थ पोषण - प्रक्षे = प्लक्षे - उच्च निवास में (सूर्यकान्त)। प्रक्षे - आनन्द के उत्स में (रामनाथ) । प्रक्षे - शरीर के प्रकृष्ट क्षेत्र (सहस्रार) में (हरिशरण)। प्रक्षे = प्रकृष्ट क्षेत्रे (इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। गीता १३-१)

निष्कर्ष - सहस्रार चक्र ही शरीर का प्रकृष्ट क्षेत्र अथवा उच्चनिवास स्थान है। यही 'नि' है, और प्रभु का घर है 'न्योकः - नि है ओक (गृह) जिसका। इस नि या सहस्रारचक्र या मधुमति प्रक्षे ही जीवात्मा को परमात्मा की अनुभूति होती है। यहीं पहुंचने वाले सत् चित् जीवात्मा, आनन्द स्वरुप परमात्मा के आनन्द का धारण, सेवन और पोषण करते हे। उन्हे सुख-दु.ख अपने कर्तव्य से विचलित नहीं करता।

(६) परमेश्वर-प्राणसाधक सात्विक उपासकों को सहारा-सहायता देता है

अर्चन्त्यर्क मरुत स्वर्का आस्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः।। साम० ४४५

वामदेवः। इन्द्रः। द्विपदा विराट् (पंक्तिः)

अर्थ - (स्वर्काः) सात्विक अन्न भोजी तथा मनन पूर्वक स्तुति करने वाले (मरुतः) प्राणायाम के अभ्यासी मानव उपासक (अर्कम्) उस एकमात्र उपासनीय प्रभु की (अर्चन्ति) उपासना अथवा आत्मसमर्पण करते हैं। ऐसी स्थिति में (सः श्रुतः युवा इन्द्रः) वह विश्वविख्यात दोषों को दूर करके शुभ और कल्याण दाता ऐश्वर्यशाली परमात्मा अपने उपासकों को (आस्तोभति) सहारा और सहायता देता है।

(७) प्रभु आचरण के अनुरूप स्तुति स्वीकार करते हैं

प्रव इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यंजुजोषते।। साम० ४४६

वामदेवः। इन्द्रः। द्विपदा विराट् पक्तिः।

अर्थ - हे वामदेव बनने के इच्छुक साधको ! (वृत्र हन्तमाय) सब प्रकार के अवाञ्छनीय तत्वों के विनाशक (विप्राय) सब प्रकार की कमियों को दूर करके पूर्णता को प्रदान करने वाले (इन्द्राय) परमेश्वर के (प्रगाथम्) प्रकृष्ट गुण, कर्म, स्वभाव की गाथाए (गायत) गाओ तथा उनके अनुसार आचरण करो, (यम्) जिस गान को वह (जुजोषते) प्रीति पूर्वक सेवन करता हैं।

अर्थ पोषण - गायत में 'गास्तुतौ' और 'गाङ्गतौ' दोनों धातुओं का समन्वय होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि - वही स्तुति सार्थक और पूर्ण होती है, जिस स्तुति का साधक तदनुरूप आचरण कर वैसा बनने का प्रयत्न करता है। आचरण रहित स्तुति परमेश्वर स्वीकार नहीं करता क्योंकि, सर्वज्ञ होने से वह स्तोता का अन्तस्तम भाव जानता है।

- श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली - ६

पांच छात्रों ने भारतीय परिधान में डिग्री ली

गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार द्वारा आयोजित प्रथम दीक्षांत समारोह में लगभग १५०० विद्यार्थियों मे स्नातक व स्नातकोत्तर तथा डाक्टरेट की डिग्रीयां ली। समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त रहे। पांच छात्रों ने डॉ० विजया (बीएम सी), डिम्पल) बीएमसी), (तरुणा) (एमएमसी), (मनीष) (एमएमसी), यशवीर (एमएमसी) ने भारतीय परिधान (धोती कुर्ता, साडी व पटका) पहना व काले गाऊन (ब्रिटिश परिधान) को अस्वीकार किया। भारतीय परिधान का प्रचलन यूनिवर्सिटी के प्रथम दीक्षांत समारो में ही हो जाए इसके लिए २० दिन तक संघर्ष करना पडा। मा० उपकुलपति, उपराष्ट्रपति व अखबारों को पत्र लिख गए। परिधान का प्रबन्ध स्वयं अपने बलबूते पर किया गया। धोती पहनाने का जिम्मा भी व्यक्ति विशेष ने लिया। काले गाऊन के साथ-साथ यदि भारतीय परिधान भी यूनिवर्सिटी में सी काऊटर पर किराए पर मिलता हो तो बहुत से और छात्र व छात्राए भी भारतीय परिधान का प्रबन्ध यूनिवर्सिटी परिसर में ही किया जाए व शिक्षक गण भी भारतीय परिधान पहनकर समारोह में सम्मिलित हो।

– डॉ० विजया, हिसार

६ अप्रैल बलिदान दिवस के अवसर पर

अमर शहीद महाशय राजपाल

– प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज ने अपने विद्वानों, हुतात्माओं व निर्माताओं का ठीक-ठीक मूल्यांकन नहीं किया। आज तो आर्यसमाज की वेदी से राजनैतिक लोगों पर अधिक सुनने को मिलता है। धर्म पर बलिदान देने वालों पर पत्रों में कितने लेख छपते है ? आर्य हुतात्माओं के जीवन पर उपलब्धियों पर आर्यसमाज में कितने लेखकों व गवेषकों ने साधना की है ? विद्वानों ने इस विषय पर कभी विचार ही नहीं किया। किसे चिन्ता है ?

स्मरण रखिए, महाशय राजपाल जी मात्र एक प्रकाशक ही नहीं थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक मूक समाज सेवक थे, जिन्होंने विविध क्षेत्रों में अपनी ईश्वर प्रदत्त बुद्धि, अखण्ड धर्म निष्ठा, निष्काम धर्मसेवा, जाति भक्ति व देश सेवा की अमिट छाप छोडी। इस लेख में उनकी किस किस सेवा की चर्चा करू ?

मैंने "धर्म की बलिवेदी पर" नाम से उनका एक विस्तृत जीवन चरित्र लिखा है। इसमें बहुत सी सामग्री किसी कारण से छपने से रह गई। इस पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात् भी मैंने महाशय जी के जीवन व बलिदान पर और भी नई खोज करने में सफलता प्राप्त की है। महाशय राजपाल जी के सम्बन्ध में निम्न तथ्य विशेष रूप से जानने योग्य है

लेखराम जी का प्रभाव

वे अमर धर्मवीर पं० लेखराम जी के ओजस्वी व्याख्यानो को सुनकर तथा पण्डित जी के निर्मल जीवन के प्रभाव से वैदिक धर्मी बने।

सभी आर्यनेताओं से सम्पर्क

मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी के अतिरिक्त इन्हे प्रथम व दूसरी पीढी के सभी आर्य नेताओं व विद्वानों के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता समझे या विलक्षणता। किसी भी सभा के अधिकारी न होते हुए भी आर्यसमाज के सब कर्णधारों के नयनों में समा गए। इस दृष्टि से मैं नाम गिनाने लगू, तो यह लेख बहुत लम्बा हो जाएगा।

शास्त्रार्थ किया और करवाया

महाशय राजपाल जी ने मांस भक्षण पर विधर्मियों से एक बहुत अच्छा शास्त्रार्थ किया। वह शास्त्रार्थ आर्यसमाज के इतिहास में एक चिर स्मरणीय शास्त्रार्थ रहा।

महाशय जी ने स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज व प० गुरुदत्त (पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी से भिन्न विद्वान थे) जी के शास्त्रार्थ करवाए। स्वामी दर्शनानन्द जी के इस शास्त्रार्थ ने वैदिक धर्म की धाक जमा दी।

आर्य मित्र सभा

महाशय राजपाल जी ने "आर्य मित्र सभा" नाम के संगठन द्वारा ऋषि मिशन की ऐसी सेवा की कि सारा आर्य जगत् "वाह वाह" कह उठा। "धर्म की बलिवेदी पर" पुस्तक मे इस सभा का नाम "बाल सुधार सभा" कैसे छप गया, यह मुझे पता नहीं। मैंने तो "आर्य मित्र सभा" नाम ही लिखा था। मुझसे पहले के कुछ लेखकों ने सुनी सुनाई वार्तो पर विश्वास करके "बाल सुधार सभा" नाम लिख दिया। मैंने महाशय जी के अपने लेख के आधार पर सभा का ठीक नाम दिया है। यह लेख मेरे पुस्तकालय में है।

मुस्लिम लेखको की पुस्तकों का उत्तर

सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवे समुल्लास पर मुसलमानों ने सर्वप्रथम मौलाना सनाउल्ला से एक पुस्तक लिखवाई थी। वे अमृतसर के थे और महाशय जी भी अमृतसर के थे। दोनों ही अपने नाम के साथ अमृतसरी लिखा करते थे। लाहौर आकर महाशय जी ने "अमृतसरी" लिखना छोड दिया। स्वामी योगेन्द्रपाल जी ने उन दिनो इस्लाम पर कई खोजपूर्ण पुस्तके लिखीं। आपने मौलाना की "हक प्रकाश" पुस्तक का भी बड़ा रोचक व युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर दिया। स्वामी योगेन्द्रपाल जी की ये पुस्तकें अमर धर्मवीर राजपाल जी ने अमृतसर से प्रकाशित कीं।

जीवनी लेखन

महर्षि दयानन्द जी का प्रथम विस्तृत व प्रामाणिक जीवन चरित्र प० लेखराम जी ने लिखा था वे धर्म की बलिवेदी पर शीश चढा गए। उनका जीवन चरित्र लिखा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने। वे धर्म की बलिवेदी पर जीवन भेंट कर गए और स्वामी श्रद्धानन्द जी का सबसे पहला जीवन चरित्र लिखा महाशय राजपाल जी ने। वे भी उसी डगर पर चलते हुए अपने प्रेरणा स्रोत पं० लेखराम जी से जा मिले। यह भी हमारी एक परम्परा है।

यशस्वी प्रकाशक

महाशय राजपाल एक ऐसे प्रकाशक थे, जिन्होंने सारे विश्व में वैदिक धर्म सन्देश पहुंचा दिया। इसके साथ ही वे साहित्य की नई विधाएं विकसित करके एक इतिहास बना गए। उन्होंने कई आर्य महापुरुषों की जीवनिया लिखीं। उन्होंने कई आर्य महापुरुषों व पूज्य विद्वानों के व्याख्यानों के लेखों के सकलन तैयार करे व छापे। अपनी उपलब्धियों व वीरतापूर्वक बलिदान से महाशय जी मर कर अमर हो गए।

उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण विषयो पर आर्य विद्वानो से अनुपम ग्रन्थ लिखवाए व छपवाए। वे आग्रह न करते तो "जवाहिर जावेद" सरीखे अद्भुत ग्रन्थ कभी भी न छपते। उन्होने सद्ग्रन्थो का सृजन करवा कर देश विदेश मे ऋषि मिशन की धूम मचा दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा "सस्कार विधि" के उर्दू अनुवाद का प्रकाशन भी उनका ऐतिहासिक कार्य था। यह ग्रन्थ भी मैंने खोज लिया है।

रंगीला रसूल

महाशय जी ने समस्त हिन्दू जाति के लिए जीवन वारा। मुसलमानों ने एक पुस्तक छापी, जिसका नाम था "कृष्ण तेरी गीता जलानी पडेगी", फिर "उन्नीसवीं सदी का महर्षि" छापी। प्रत्युत्तर में छापा गया "रगीला रसूल"। सरकार के गृह विभाग ने व मुसलमानों ने डेढ वर्ष तक तो आपत्ति न की। जब गांधी जी ने "रंगीला रसूल" पर अपनी विपरीत सम्मति अपने पत्र में छापी, तो मुसलमानों का जनून भडक उठा। यही लेख महाशय जी की हत्या का मूल कारण बना।

महाशय जी पर वार करने के लिए बारी-बारी तीन हत्यारे भेजे गए। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये तीनों ही अनपढ थे "रगीला रसूल" कतई नहीं पढा था। इन तीनों अनपढ हत्यारो पर मुसलमान आज तक सैकडो पृष्ठ लिख चुके हैं।

मौलाना आजाद का इस्लाम प्रेम

इल्मदीन के छुरे से वीर राजपाल ने वीरगति पाई। जब हत्यारे इल्मदीन का भाई मौलाना आजाद को मिलने गया, तो मौलाना आजाद ने मजहबी जोश से उसे छाती से लगा लिया। हत्यारे का भाई होने के कारण मौलाना ने उसका इतना सम्मान सत्कार किया। केस हार कर भी जनूनी जीत गए और महाशय जी की हत्या की गई।

स्वतन्त्रता संग्राम में

महाशय राजपाल स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनके द्वारा विद्रोह फैलाने वाला साहित्य छापने के कारण अंग्रेजी सरकार ने काशी में अभियोग चलाया। हर पेशी पर उन्हें काशी जाना पडता था। उन्हें यातना देने का यह अच्छा ढंग सरकार ने निकाला। भाई परमानन्द जी, लाला पिण्डीदास जी, पं० विष्णुदास जी व डॉ० सत्यपाल जैसे जाने-माने विद्रोही नेताओं का साहित्य छाप-छाप कर महाशय जी ने सरकार व मौत को ललकारा। पं० चमूपति जी की राष्ट्रीय कविताएं भी आपने प्रचारित कीं।

लेखक का नाम नहीं बताया

छुरा लगने पर, अभियोग चलने, दबाव पडने पर भी आपने "रंगीला रसूल" के लेखक का नाम प्रकट न किया। इसी अद्भुत वीरता शूरता के कारण महामना मालवीय जी ने कहा था - हुतात्मा राजपाल तो सच्चे महात्मा थे।" आज तो पीला कपडा पहनकर कोई भी महात्मा कहलवाने के प्रामण-पत्र पा लेता है। राजपाल जी ने प्राण निछावर करके अमर पद पाया। परहित में जीवन वारा।

तनिक सोचिए

महाशय जी की स्मृति मे आप लोगो ने क्या किया ? उनका दिवस कभी किसी ने मनाया ? मैने तो अपनी कई छोटी-बडी पुस्तको को उनके बलिदान दिवस पर ही पूर्ण करके प्रेस मे दिया। ऐसे अटल ईश्वर विश्वासी, मृत्युजय, पत्रकार, साहित्यकार, प्रकाशक, शास्त्रार्थ महारथी, देशोपकारक, निर्भीक हुतात्मा महात्मा का अभिनन्दन। शत-शत वन्दन।

– वेद सदन, अबोहर

भारत के संविधान मे विचारो की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रावधान है। विश्व स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अनेक लेखको, प्रकाशको ने अपने प्राणों की बलि दी है। ऐसे निडर, बलिदानी व्यक्तियो को सम्मानित करने के लिए, भारत के गृहमन्त्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने महाशय राजपाल जी को मरणोपरान्त "विचार स्वातन्त्रय पुरस्कार" से सम्मानित किया है।
महाशय राजपाल आर्यसमाज के दीवाने तो थे ही, साथ ही प्रकाशन की स्वतन्त्रता के लिए प्रतिबद्ध थे।

समूचा विश्वमानव आदिकालीन आर्यों की सन्तति है

– विमल विधावन एडवोकेट

आर्यों के विश्व भूमण्डल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन को लेकर दो प्रकार के मत चले।

पाश्चात्य विद्वानों ने इस बात को इतिहास रूप में लागू करने का प्रयास किया कि वर्तमान हिन्दू समाज के पूर्वज आर्य आर्कटिक क्षेत्र में पैदा हुए तथा कई शताब्दियों के बाद धीरे -धीरे मध्य एशिया, अफगानिस्तान तथा भारत में बसना शुरू हो गए। इस मत को न तो पूर्ण स्थायित्व प्राप्त हुआ न विश्व व्यापी मान्यता और न ही कोई समर्थक तथ्य, और न खोज से प्राप्त सामग्री आदि। बल्कि इस मत को सफलता पूर्वक चुनौती देती वास्तविकसच्ची मान्यताएं प्रस्तुत की गई।

उन वास्तविक तथ्यों एवं मान्यताओं के अनुसार आर्य अर्थात् श्रेष्ठ पुरूष एक गुणवाचक विशेषण है। सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य एक श्रेष्ठ प्राणी था। जैसे बच्चा जन्म के समय कितना निष्पाप, निष्कलंक, साफ मन और कोमल बुद्धि वाला होता है ठीक उसी प्रकार। सृष्टी में मानव की प्रथम उत्पत्ति वेद की इस धरती पर ही हुई। अत: वह मानव ही सच्चा मानव था, आर्य था।

अब सोचिए, मानव की अर्थात् एक आर्य पुरूष की उत्पत्ति होने के बाद प्रारम्भिक काल के चार ऋषियों को वेद ज्ञान प्राप्त हुआ। जब वेद को हम इस भूमि की देन मानते हैं। वेद की उत्पत्ति यहां मानते हैं तो आर्यों की उत्पत्ति अमेरिका या ईरान में कैसे हो सकती है।

आर्यों की आर्यावर्त भूमि पर उत्पत्ति के बाद जब जनसंख्या बढने के बाद आर्यों की सन्तानें विश्व के अन्य भागों में जा जाकर बसने लगी तो क्या इस बात में सन्देह रह जाता है कि समूचा विश्व आर्यों की सन्तान है जिसका मूल वंश कभी न कभी आर्यावर्त से सम्बन्धित रहा है।

दस-बीस या पचास शताब्दियों के बाद तो इतिहास श्री स्मरण नहीं रहता अतः विश्व के मानव समुदाय को यह स्मरण नहीं कि उसका मूल संस्कार वेद से सम्बन्धित है।

स्थानीय परिस्थितियों के कारण मनुष्य ने अलग-अलग स्थानों पर रहकर अलग-अलग परम्पराएं स्थापित कर ली। किसी ने स्थानीय गर्मी-सर्दी को देखते हुए अलग-अलग वस्त्रों का प्रचलन प्रारम्भ किया तो किसी ने अलग-अलग वनस्पतियों की न्यूनाधिक उपलब्धता को देखते हुए खान-पान में कई विचित्र चीजों को शामिल कर लिया। यही कारण है कि आज विश्व के अलग-अलग हिस्सों के लोग आचरण, व्यवहार, रहन-सहन और देखने में भी अलग-अलग लगते हैं। मनुष्य के शरीर का रंग भी इन्हीं कारणों से अलग-अलग है।

परन्तु मनुष्य एक मूल से सम्बन्धित है। इस सिद्धान्त को सूक्ष्म चिन्तन के बाद ही समझा जा सकता है।

गत् सप्ताह रोमा समुदाय के कुछ सदस्यों से भेंट का अवसर प्राप्त हुआ, जिनके पूर्वज राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रान्तों से अलग-अलग समयावधियों में अलग-अलग पश्चिमी देशों में जाकर बस गए। इनमें से कुछ वहां जाकर मुसलमान बने तो कुछ ईसाई परन्तु संस्कार, रीति-रिवाज और व्यवहार हिन्दुओं वाला ही रहा। उसका त्याग बिलकुल नहीं हुआ। उनकी रोमानी भाषा के शब्द बहुदा संस्कृत से मेल खाते हैं। उनके सम्मान में भारत सरकार और एक गैर सरकारी संस्था हिन्दू हैरिटेज प्रतिष्ठान ने एक सम्मेलन भी आयोजित किया। इस समारोह में श्री वेदव्रत शर्मा जी भी विशेष आमन्त्रित के रूप में उपस्थित हुए।

मुझे भी छोटे से उद्बोधन का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने रोमा समुदाय के इन भाईयों-बहनों से प्रमुखतः तीन निवेदन किए-

१. यदि आप भारत से सम्बन्धित महसूस करते हैं तो वेद के साथ अपने सम्बन्ध को भी आप छोड़ नहीं सकते।

२. यदि आप का मूल भारतीय संस्कृति में है तो आप यज्ञ की परम्परा और रिवाज को भी छोड़ नहीं सकते।

३. आप पर भारतीय संस्कार हैं तो आप श्रेष्ठता की ओर बढने से भी इन्कार नहीं कर सकते।

महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के विचारों को रोमा समुदाय के पढे-लिखे समझदार महानुभावों ने स्वीकार किया।

विश्व समुदाय और विशेष रूप से इतिहासविद सोचें कि रोमा समुदाय जो पूरी तरह रंग, व्यवहार, चाल आदि में पाश्चात्य है जब वे महसूस कर सकते हैं कि उनका मूल भारत में है, वैदिक सस्कृति में है तो शेष विश्व के सामने कौन से ऐसे वैज्ञानिक तथ्य हैं जो साबित कर सके कि वे उस आदि मनुष्य की सन्तानें नहीं हैं जिसकी उत्पत्ति हिमालय पर हुई।

यज्ञों द्वारा भौतिक वैचारिक प्रदूषणों का निवारण वैदिक वाङ्मय से ही भारतीय संस्कृति की रक्षा

आर्यसमाज बागर मऊ ने नव शस्येष्टि पर चौधरी श्री शान्ति सिह की दुकान के सामने भव्य यज्ञ वेदी बनाकर सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ उपरान्त उपस्थित जन समुदाय तथा मार्ग से गुजरने वाले स्त्री पुरुषों और वृद्धों बालकों पर सुगन्धित गुलाब जल एव इत्र की वर्षा की गई, हर्षोल्लास का पर्व होलीकोत्सव कैसे मनाए तथा पर्वों में विकृतिया दूर करने वाले पर्चे बांटे गए। भारतीय पर्वों के सत्य स्वरूप की जानकारी देते हुए श्री सुरेश आर्य ने कहा कि यज्ञ द्वारा समाज से वैचारिक व भौतिक प्रदूषण दूर किया जा सकता है। उन्होने शाकल्य मे जयफल प्रचूर मात्रा मे मिलाकर यज्ञ करने से सर्वाधिक प्रदूषण दूर करने की बात कही। श्री भैया लाल आर्य ने होली के इस यज्ञ को नई फसल पर किये जाने वाला तथा यज्ञ की पवित्रता बनाए रखने पर बल दिया। ब्रह्चारी श्री अरविन्द सिह ने कहा की यह पर्व वर्ष भर के मनोमालिन्य दूर करने एव सामाजिक समरसता बनाने का पर्व है। टेसू के फूलों से तैयार जल को शरीर पर छिडकने से मौसमी बुखार दूर होता है। ऋतु परिवर्तन पर बृहद यज्ञ करने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। श्री रामगोपाल गुप्त ने कहा कि भारतीय पर्व हमें सगठित होने का सन्देश देते है। जो पद्धति अपना कर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने रामराज्य की स्थपना की थी। जो प्राचीन पद्धति अपनाकर आर्यो ने सृष्टि से महाभारत पर्यन्त एक छत्र शासन किया तथा आर्यवर्त देश विश्व मुकुट रहा वह सनातन पद्धति ग्रन्थों में है। वैदिक वाङ्मय अपनाकर ही हम अपनी भारतीय सस्कृति, सभ्यता पर्वो की अस्मिता तथा वैज्ञानिकता अक्षुण्ण रख सकते है।

आर्यसमाज दीवान हाल में रामनवमी पर्व एवम् पं० रामचन्द्र देहलवी जन्म दिवस मनाया गया

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में दिनांक १ अप्रैल, २००१ को रामनवमी पर्व एवम् शास्त्रार्थ महारथी स्व० श्री रामचन्द्र देहलवी जी का जन्मदिवस उल्लास पूर्वक मनाया गया।

इसमें वैदिक विद्वान श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रिं० चन्द्रदेव जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा श्री परमानन्द जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

सतभ्रावां आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की कन्याओं ने उपरोक्त दोनों महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० धर्मपाल जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए पं० देहलवी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया तथा सतभ्रावां विद्यालय की कन्याओं को आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता श्री राजसिंह भल्ला जी ने, तथा मंच संचालन डॉ० रविकांत, मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल ने किया। समारोह के पश्चात् सभी उपस्थित व्यक्तियों ने जलपान ग्रहण किया।

साधना शिविर सम्पन्न

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित निःशुल्क दस दिवसीय (साधना-स्वाध्याय-सेवा) शिविर दिनांक २३ फरवरी से ४ मार्च तक ऋषि उद्यान अजमेर में भली प्रकार सम्पन्न हुआ। शिविर में साधना के रूप में प्रातः सायं एक-एक घंटा उपासना की गई, साथ में सम्पूर्ण दिवस साधनामय बने एतदर्थ निश्चित समय में मौन का अभ्यास भी करवाया गया और संयम, अनुशासन, अन्तर्मुखी वृत्ति, आत्मनिरीक्षण के द्वारा साधना की गई सर्वांगीण परिपुष्टि प्रयत्न हुआ। प्रातः १ घंटे उपासना का क्रियात्मक प्रशिक्षण व सायं १ घंटे उसी का व्यक्तिगत् प्रयोग करने का अवसर दिया गया। उपासना काल में निर्बाध आसन बनाए रखने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक साधना हेतु प्रातः एक घंटे सर्वांगसुंदर व्यायाम एवं आसन सिखाए गए।

स्वाध्याय की दृष्टि से पातञ्जल योग दर्शन के अनेक सूत्र पढ़ाए - समझाए गए, यज्ञोपरान्त वेद प्रवचन हुए, ज्ञान-कर्म-उपासना का सैद्धांतिक पक्ष विशद किन्तु सरल ढंग से बताया गया, वैदिक सध्या के मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण एवं उनके अर्थ बताए गए।

व्यक्तिगत शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति पर बल देने के अतिरिक्त सामाजिक उन्नति के लिए सेवा का विषय भी विभिन्न पहलुओं से व्यावहारिक दृष्टि रखते हुए बताया-समझाया गया। शिविरार्थियों द्वारा प्रतिदिन आधा घंटे सेवा कार्य भी किया गया।

शिविर की पूर्व सध्या २२ फरवरी को शिविर के नियम-अनुशासन एवं व्यवस्था सम्बन्धी सूचनाएं दी गई। शिविर समाप्ति से एक दिन पूर्व लिखित परीक्षा ली गई। अन्तिम दिन यज्ञ में शिविरार्थियों ने ईश्वर व अन्य शिविरार्थियों की साक्षी में नए गुण ग्रहण तथा दोष त्याग के व्रत लिए और आहुति दी। शिविरार्थियों ने अपने-अपने अनुभव सुनाए, भविष्य की कार्ययोजना बताई और शिविर के लिए सुझाव दिए। शिविरार्थियों ने अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव किए और शिविर को लाभप्रद-उपयोगी बताया।

शिविर में राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व चंडीगढ के लगभग चालीस साधक साधिकाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण प्रदाता थे – ब्र० श्री दर्शनाचार्य, प्रो० श्री धर्मवीर, ब्र० श्री सत्येन्द्र दर्शनाचार्य, ब्र० श्री रवीन्द्र व्याकरणाचार्य, ब्र० श्री सत्यजित् दर्शनाचार्य एवं श्री यतीन्द्र।

इसी प्रकार का अगला साधना शिविर १ से १० जून २००१ को इसी स्थान ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित होगा। शिविर की पूर्व संध्या अर्थात् ३१ मई की शाम ४ बजे तक यहा पहुंचना आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द के शिक्षण-दर्शन पर पी०एच०डी० उपाधि

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ में वैदिक अनुसंधान पीठ के पूर्वाध्यक्ष डॉ० अनिरुद्ध जोशी व श्रीमती डॉ० वसुन्धरा रिहानी के सान्निध्य में स्व० मूलशकर के पुत्र श्री रुद्रदत्त शर्मा ने 'स्वामी दयानन्द का शिक्षा-दर्शन' विषय पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया जिसे स्वीकृत कर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ ने भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त तथा विश्वविद्यालय के कुलपति ने पी०एच०डी० उपाधि प्रदान की।

इस शोध प्रबन्ध में शिक्षा का महत्व, अर्थ, परिभाषा, प्रचीन भारतीय शिक्षा दर्शन की पृष्ठभूमि, शिक्षा की अनिवार्यता, स्त्री-शिक्षा पाठ्यक्रम परीक्षा प्रणाली, माता-पिता-गुरु शिष्य और समाज आदि के आश्य प्रकट किए हैं। और समाज आदि के आश्य प्रकट किए हैं।

देश को आर्यसमाज ने ही जगाया

प्रयाग दुग्ध डेरी (मिल्क बार) के सामने आयोजित १२६वें "आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह" के मुख्य अतिथि श्री देवीदास आर्य ने कहा कि देश को जगाने का श्रेय आर्यसमाज को ही है। आर्यसमाज ने देश में धार्मिक, समाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रान्ति पैदा कर दी। आज जो कार्य सर्वसाधारण लगते है। १२६ वर्ष पहले असम्भव से लगते थे अंधविश्वास, गुरुडम, बेमेल विवाह, सती प्रथा, नशाखोरी, देश की गुलामी आदि बुराईयों का आर्यसमाज ने डटकर विरोध किया और स्वतंत्रता, शुद्धि, स्वदेशी, विधवा विवाह, हिन्दी भाषा, नारी शिक्षा, एक ही ईश्वर उपासना, वेद प्रचार आदि के लिए आन्दोलन किए। यदि हिन्दू आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन का विरोध न करते तो पाकिस्तान कभी नहीं बनता।

श्री आर्य ने कहा कि आर्यसमाज के हर अनुयायी को जलते हुए अगारे के समान ही अपनी जीवनचर्या से समाज को प्रकाशित करते रहना चाहिए। हमारा सामाजिक जीवन तटस्थ न होकर उत्साही, संघर्षमय तथा पुरुषार्थी होना चाहिए। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार से ही देश और समाज का उत्थान सभव है।

आर्यसमाज पश्चिम विहार के श्री भरत सिंह वानप्रस्थी दिवंगत

श्री भरत सिंह वानप्रस्थी जी का ८६ वर्ष की आयु में १२-०३-२००१ को घर पर देहावसान हो गया। आप आर्यसमाज पश्चिम विहार के सस्थापकों में प्रमुख थे। आपका जन्म गुडगावां के पास सोहना के पास ७-०३-१९१२ को हुआ। आपने दिल्ली में अपना जीवन अध्यापक के रूप में प्रारम्भ किया। आप अपने पीछे ३ पुत्र व ४ पुत्रियों सहित भरा पूरा परिवार छोड गए है। आप एक कर्तव्यनिष्ठ व कर्मठ आर्य मिशनरी थे व नित्य अग्निहोत्र करते थे। १९५६ में उन्होंने आर्यसमाज तिमारपुर की स्थापना में मुख्य योगदान दिया। १९७५ के बाद पश्चिम विहार में आकर बसने के बाद आप आर्यसमाज पश्चिम विहार के लिए डी०डी०ए० से प्लाट लेने में जुट गए व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज की स्थापना की। १९८५ में आप वानप्रस्थी बने आर्यसमाज सरस्वती विहार की स्थापना में भी काफी योगदान दिया।

संसार से जाते वक्त भी, विभिन्न सस्थाओं को क्या देना है, पुरोहित को क्या देना है व अन्त्येष्टि कैसे करनी है, सब डायरी में लिख कर गए।

प्रभु से हार्दिक प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें व परिवार को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

पंगड़ी रस्म १६-३-२००१ को आर्यसमाज पश्चिम विहार में हुई जिसमें विभिन्न आर्य समाजों से आए महानुभावों ने श्रद्धांजलि दी।

२८वां वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार

मंगली आर्य समाज मन्दिर हरि नगर नई दिल्ली - ६४ का २८ वां वार्षिक उत्सव दिनांक २७-४-२००१ से २९-४-२००१ तक बडी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस शुभ अवसर पर वेद कथा आचार्य छवि कृष्ण शास्त्री तथा भजन उपदेश श्री गुलाब सिंह राघव एव मुरारी लाल बेचैन द्वारा होंगे। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि आप सपरिवार तथा मित्रों सहित पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें और पढ़ाएं

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र

– पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीराम थे न्यायकारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनियां सारी।।

माता-पिता, गुरु के सच्चे सेवक थे, बलवान सुनो।
वेद, शास्त्रो के ज्ञाता थे, ईश्वर भक्त महान सुनो।।
प्रजा पालक राजा थे, था धर्म-कर्म का ज्ञान सुनो।
स्वाभिमानी थे जीवन मे, किया नहीं अभिमान सुनो।।
आदर्श गृहस्थी थे रघुनायक, तपधारी पर उपकारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनिया सारी।।

जीवन लक्ष्य एक था उनका, स्वर्ग धरा पर आ जाए।
मानव सब मानवता धारें, दुखिया नजर नहीं आए।।
भूखे, नंगे रहें न जग में, कष्ट नहीं कोई पाए।
इस दुनियां का हर नर-नारी वेदों की महिमा गाए।।
बढे प्रेम रसधार जगत में, ईश भक्त हो नर-नारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनियां सारी।।

बाली, रावण, कुम्भकरण को, श्रीराम ने संहारा।
दुष्ट सुबाहु, खर, दूषण, त्रिसरा को रघुवर ने मारा।।
भिलनी और निषादराज को, अपने गले लगाया था।
अपनाए सुग्रीव, विभीषण, वैदिक धर्म निभाया था।।
बजरंगी हनुमान बहादुर, मित्र था बाल ब्रह्मचारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनियां सारी।।

आज जगत में लाखों बाली, रावण निर्भय घूम रहे।
ऊंचे-ऊंचे भवन खलों के, आसमान को चूम रहे।।
ऋषियों के भारत में निर्धन, भूखे नित सो जाते हैं।
गऊओं की हत्या होती है, सज्जन कष्ट उठाते हैं।।
नेता अब बन गए शराबी, चरित्रहीन मांसाहारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनियां सारी।।

अगर रही यही दशा, जगत की, जगत नर्क बन जाएगा।
पनपेगी दुष्टों की सेना, सब जग दुःख उठाएगा।।
डाकू, गुण्डे, चोर बढ़ेंगे, पाप जगत में छाएगा।
धूर्त नास्तिक बढ जाएगे, धर्मी नजर न आएगा।
रावण, कुम्भकरण के वंशज, खूब करेगे मक्कारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनिया सारी।।

श्रीराम के वीर सपूतों, आगे कदम बढाओ रे।
स्वामी दयानन्द बन जाओ, वैदिक नाद बजाओ रे।।
महानाश की ज्वालाओ से, जलता विश्व बचाओ रे।
लव-कुश जैसे वीर बनों, दुष्टो का वश मिटाओ रे।।
'नन्दलाल निर्भय' जागो, लडने की कर लो तैयारी।
रघुनन्दन की गौरव-गाथा, गाती है दुनिया सारी।।

– ग्राम- बहीन, जिला – फ़रीदाबाद (हरियाणा)

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 12-13/04/2001 दिनांक ६ अप्रैल से १५ अप्रैल, २००१ Licence to No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल- 11024/2001,12-13/04/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने

प्रतिष्ठा में

गुरुकुल गदपुरी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद) का ६४वा वार्षिकोत्सव २ से ४ मार्च तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डॉ० धर्मदेव शर्मा के ब्रह्मत्व में तथा वेदपाठ श्री ओंकारदेव आर्य व वेद प्रकाश शास्त्री द्वारा किया गया।

डॉ० शर्मा ने सभी यज्ञ प्रेमियों को बताया कि यज्ञ करने वाला अच्छा राजा अर्थात् परिश्रमी व्यक्ति बनता है। सर्वश्री जनार्दन बेसैया, सत्यपाल आर्य, मानक चन्द, रामचन्द पारासर, बेधड़क, दुलीचन्द के मनोहर भजन भी हुए।

गो रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री किशोर सिंह तथा मुख्य अतिथि स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा ने गौ को उपकारी पशु बताते हुए गोमूत्र, गोघृत, गोबर से असाध्य रोगों को ठीक करने की विधिया बताई और गारन्टी दी कि कोई भी ऐसा रोगी हो जिसका ईलाज न हो रहा हो वह गुरुकुल झज्जर के चिकित्सालय में आए। गाय के मूत्र से उसका उपचार होगा। उद्घाटनकर्ता भगत मंगतू राम मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ने गौ को माता कहना सिद्ध किया तथा कहा कि गौ के हत्यारो को कड़ी सजा देने का प्रावधान होना चाहिए।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे हथीन के विधायक श्री भगवान सहाय रावत ने गुरुकुलीय शिक्षा का राष्ट्ररक्षा में महत्वपूर्ण स्थान बताया। श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने शिक्षा में गुरुकुलीय वातावरण की विशेषताएं बताई।

स्वामी दयानन्द जी की विशेष घटनाओं पर आधारित कवि सम्मेलन श्री तिलकराज 'तिलक' की अध्यक्षता में हुआ जिसमें २० कवियों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की। नशाबन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ० श्रीमती विमला मेहता, प्रधान दयानन्द शिक्षा समिति फरीदाबाद ने की।

श्री राम गोपाल शास्त्री, गदपुरी द्वारा अपने पिता की स्मृति में बनाए भवन का उद्घाटन करते हुए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने सात्विक दान की महत्ता बतलाई।। गुरुकुल के छात्रों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन हुआ। डॉ० तेजप्रकाश गुप्त, अध्यक्ष भारतीय हिन्दू सभा ने निःशुल्क चिकित्सा कैम्प का आयोजन किया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रावत भाटा (चितौडगढ) राजस्थान

प्रधान	- श्री दशन लाल धीमान
मन्त्री	- श्री देवेन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष	- श्री अशोक कुमार कश्यप

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव को मातृशोक

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी की माता श्रीमती हरदेवी जी का शरीरान्त गत सप्ताह हो गया। वे ६६ वर्ष की थी। श्रीमती हरदेवी एक पवित्र और उच्चकोटि की गृहणी थी जिन्होंने अपने तपस्वी जीवन के बल पर श्री सुखदेव जैसी महान सन्तान समाज को दी। माताजी के परिवार की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से वह हर व्यक्ति परिचित है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कभी भी इस परिवार के सम्पर्क मे आया हो। श्री सुखदेव जी के नाना श्री जुम्मा राम जी तथा उनकी धर्मपत्नी का देहावसान एक ही दिन और लगभग एक ही समय हुआ था। जब दोनों ६० वर्ष से अधिक आयु के थे। परिवार की सुदृढ़ आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के बल पर ही आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी समूचे आर्यजगत् में एक महान तपोनिष्ठ एवं मृदु भाषी विद्वान् के रूप मे जाने जाते हैं।

समूचा आर्यजगत् उनके इस मातृशोक की दुःखद घड़ी मे उनके साथ है। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि माताजी की आत्मा को सदगति प्रदान करें एव उनकी आत्मा की आगामी यात्रा सुखमय हो।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ (दूरभाष एवं फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक १३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, १६ अप्रैल से २२ अप्रैल, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये .. वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों में ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को तोड़ने के विरोध में

संसद मार्ग पर आर्य शक्ति का अभूतपूर्व प्रदर्शन

केन्द्रीय सरकार द्वारा पूर्व की स्थिति बहाल करने का आश्वासन

शिलान्यास (२२ अप्रैल, २००१, प्रातः ९ बजे) की तैयारियां जोर-शोर से

यहां मिण्टो रोड पर आर्यसमाज मन्दिर ढहाए जाने पर क्रुद्ध आर्यसमाजियों ने जहां अपनी लडाई शानदार ढंग से की है, वहा केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री जगमोहन को धर्मस्थल को ध्वस्त करने की कार्रवाई के लिए 'तौबा' करने को भी मजबूर कर दिया। जगमोहन ने पश्चाताप के तौर पर ढहाए गए आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए अपनी पुस्तक *'कश्मीर'* की रायल्टी की सारी रकम देने का वायदा किया है और साथ ही मंदिर स्थल की उसी पैमाइश और स्थान को स्वीकार कर लिया है जिसका दावा आर्यसमाज मिण्टो रोड अब तक करता रहा है।

भाजपा उपाध्यक्ष श्री मदन लाल खुराना और महासचिव श्री साहिब सिंह वर्मा के सान्निध्य में आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री लाल कृष्ण आडवानी से मिला और आर्यसमाज मंदिर गिराए जाने की लैण्ड एण्ड डिवलपमैण्ट विभाग की कार्रवाई पर सख्त रोष प्रकट किया। श्री आडवानी जी ने शिष्ट मडल को सहानुभूति से सुनने के बाद श्री जगमोहन से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें समस्या का हल ढूढने की सलाह दी।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

शिलान्यास समारोह एवं कार-सेवा 22 अप्रैल को प्रातः 9 बजे

मान्यवर श्री प्रधान जी एवं मन्त्री जी

आपको सहर्ष सूचित किया जाता है कि मिण्टो रोड स्थित जिस आर्यसमाज मन्दिर के भवन को केन्द्र सरकार के शहरी विकास मंत्रालय द्वारा गिरा दिया गया था, उसके पुनर्निर्माण की स्वीकृति के लिए सम्बन्धित विभाग को बाध्य करने में समूचे आर्यजगत की प्रचण्ड शक्ति का प्रदर्शन एक प्रमुख आधार बना। इस पवित्र कार्य में आपका का तन मन धन से जो सहयोग प्राप्त हुआ, इसके लिए आप सब आर्यजन साधुवाद के पात्र हैं।

आर्यसमाज मंदिर के पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह एवं कार-सेवा का आयोजन २२ अप्रैल, २००१ (रविवार) को प्रातः ६ बजे से यज्ञ द्वारा प्रारम्भ होगा। इस यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती तथा शिलान्यास समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती होंगें।

शिलान्यास समारोह में दिल्ली के उप-राज्यपाल श्री विजय कपूर, शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन, दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्री सर्वश्री मदनलाल खुराना तथा साहिब सिंह वर्मा विशिष्ट आमन्त्रित होंगे।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आर्यसमाज की शक्ति का पुनः प्रदर्शन करते हुए अपनी आर्यसमाजों के रविवारीय सत्संगों को संक्षिप्त करते हुए २२ अप्रैल (रविवार) को प्रातः ६ बजे आर्यसमाज मिण्टो रोड, मिण्टो ब्रिज एवं तिलक ब्रिज के मध्य में दीनदयाल उपाध्याय मार्ग के पास तथा रणजीत सिह फ्लाई ओवर के समीप नई दिल्ली में अपने सभी परिजनों, मित्रों तथा आर्यसमाज के सदस्यों को केसरिया टोपी या पगडी पहनाकर एवं बहनें केसरिया धोती एवं दुपट्टा ओढे बसों, टैम्पुओं तथा अपने निजी वाहनों पर 'ओ३म् ध्वज' तथा 'बैनरों' से सुसज्जित करके पधारने की कृपा करें।

शुभकामनाओं सहित

वेदव्रत शर्मा
सभा प्रधान

तेजपाल मलिक
सभा महामन्त्री

१. आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को ध्वस्त करने के बाद वहां खड़ा बुलडोजर।
२. गिरा हुआ मन्दिर का मुख्य द्वार तथा मलबे पर पड़ा लोहे का दरवाजा। ३. यज्ञशाला की छतरी का जाल।

आर्यसमाज की प्रचण्ड शक्ति

श्री आडवानी ने श्री जगमोहन को बताया कि यह मात्र मदिर का मामला नहीं, सरकार की प्रतिष्ठा का सवाल भी है। अत: यह शिष्टमडल जिसमें सर्वश्री प्रोफेसर शेर सिह, वेदव्रत शर्मा, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश, श्रीमती शकुन्तला आर्या, चौ० लक्ष्मी चन्द, विमल वधावन, डॉ० धर्मपाल आदि अनेक प्रमुख आर्यसमाजी शामिल थे, श्री जगमोहन और दिल्ली के उपराज्यपाल श्री विजय कपूर से मिला। श्री जगमोहन और श्री कपूर ने घटनास्थल का दौरा किया और तीसरे दौर की मीटिग मे श्री जगमोहन ने शिष्टमडल की सभी मागे स्वीकार कर लीं और पश्चाताप के तौर पर अपनी पुस्तक 'कश्मीर' की रायल्टी मदिर निर्माण और आर्यसमाज की गतिविधियों के लिए देने की घोषणा की।

उपराज्यपाल श्री विजय कपूर ने अपनी पेंशन का एक भाग इस यज्ञ में आहुति के रूप में देने का वायदा भी किया। आर्यसमाज शिष्टमंडल के सदस्यों ने यह सब जानकारी देते हुए बताया कि श्री वर्मा और श्री खुराना ने भी मदिर पुनर्निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग देने का वायदा किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने बताया कि मिण्टो रोड आर्यसमाज के पुनर्निर्माण के लिए इसकी आधारशिला २२ अप्रैल को प्रात: ६ बजे यज्ञ हवन के साथ रखी जाएगी। श्री जगमोहन, श्री विजय कपूर, श्री खुराना और श्री साहिब सिंह वर्मा नें इस अवसर पर आना मान लिया है और श्री आडवानी को भी आर्यसमाज आमन्त्रित करेगा। उन्होंने राजधानी के सभी आर्यसमाजों से आधारशिला न्यास समारोह एव कार-सेवा में उत्साहपूर्वक भाग लेने की अपील की।

प्रभावी प्रदर्शन के दौरान श्री वाजपेयी को दिए गए ज्ञापन के तुरन्त बाद श्री आडवानी हरकत में आए। श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यवीरों को उन द्वारा प्रदर्शित उत्साह और अनुशासन की प्रशंसा की और कहा कि उनके सकल्प का ही परिणाम है कि मदिर के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इससे पूर्व मिण्टो रोड आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण की मांग को लेकर संसद की ओर मार्च कर रही हजारों आर्यसमाजियों की भीड को रोकने के लिए की गई पानी की तेज बौछारों और आंसू गैस के गोलों के प्रयोग से एक दर्जन लोग घायल हो गए।
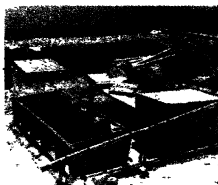
१ वैदिक साहित्य के रूप तथा चित्र आदि तथा अन्य सामान। २ मन्दिर ध्वस्त होने की सूचना मिलने के तुरन्त बाद धरने पर बैठे आर्यजन सर्वश्री प्रो० चन्द्र देव, चौ० लक्ष्मी चन्द, विमल वधावन वेदव्रत शर्मा, विनय आर्य, अरुण वर्मा तथा डॉ० कर्ण देव। ३ मन्दिर ध्वस्त होने के अगले दिन आक्रोश से भरी जनता को सम्बोधित करते हुए पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना, साथ में दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान प्रो० शेर सिह, प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री राजीव भाटिया तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।

१. प्रचण्ड प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए आर्यनेता बाएं से दाए सर्वश्री प्रो० शेर सिंह, स्वामी इन्द्रवेश, वेदव्रत शर्मा तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या।
२. सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।
३. पुलिस स्टेशन के समक्ष गिरफ्तारी के लिए लालायित आर्यजन – 'कसम वेद की खाते हैं मन्दिर वहीं बनाएंगे' नारे लगाते हुए।

१. प्रदर्शन में आर्यसमाज मोदी नगर के आर्यजन। २ संसद भवन की ओर अग्रसर होते हुए आर्यजन।
३. डी०ए०वी० प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष सर्वश्री पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा, एम०एल० खन्ना, प्रबोध महाजन, नवीन सूरी तथा रामनाथ सहगल, चौ० लक्ष्मी चन्द, तेजपाल मलिक तथा श्री प्रेम पाल शास्त्री।

के सामने सरकार झुकी

लगभग ५०० प्रदर्शनकारियों को संसद मार्ग पुलिस ने हिरासत में ले लिया। भाजपा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री मदन लाल खुराना और महासचिव श्री साहिब सिह वर्मा के पहुंचने पर सबको रिहा कर दिया, लेकिन शिष्टमण्डल में शामिल श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन, प्रो० शेरसिंह आदि ने गृहमंत्री को शिकायत की कि जगमोहन की क्रूरता से मन्दिर पर बुल्डोजर चलाते समय भी सन्यासियों, महिलाओं का अपमान हुआ तथा आज भी संन्यासियों व महिलाओं को अपमानित किया गया है।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने ज्ञापन देने के बाद बताया कि हमने भारत सरकार को स्पष्ट कर दिया है, कि यदि २१ अप्रैल तक पुनः मन्दिर निर्माण की प्रक्रिया शुरू न हुई तो २२ अप्रैल से कार-सेवा हम स्वयं शुरू कर देंगे और मांगे माने जाने तक धरने, प्रदर्शन जारी रहेगे। यद्यपि इससे पूर्व १८ अप्रैल से कार सेवा की तैयारी की जा रही थी किन्तु श्री लालकृष्ण आडवानी के उदार रूख को देखकर आर्यसमाज ने चार दिन की मोहलत और दे दी।

इस बीच संसद मार्ग पर सडक घेर कर बैठे आर्यसमाजियों के मध्य हिन्दू नेताओं ने श्री जगमोहन को एक क्रूर मत्री बताया जिसकी घटिया व घृणित शैली से वाजपेयी सरकार अपमान ढो रही है तथा रामभक्त सरकार पर मन्दिर तोडक संस्था का तमगा लग रहा है।

इधर सन्यासियों व महिलाओं पर पानी की बौछारें फैंकने व आसू गैस के गोलों का प्रयोग किए जाने से घायल होने के आरोपों का पुलिस ने यद्यपि खण्डन किया है जबकि हिन्दू नेताओं श्री एम० एल० कुमार, बाबा शंकर दास पागल, श्री सुखबीर शरण अग्रवाल, श्री अर्जुन कुमार, श्री रामकृष्ण गुप्ता, महामाई सेवा न्यास के श्री रमेश बजाज ने चेतावनी दी है कि यदि जगमोहन की यही शैली रही तो वाजपेयी सरकार की हिन्दू जनता में साख गिर जाएगी।

पानी की बौछारों से कवि सारस्वत मोहन मनीषी की आंखों की रोशनी पर गहरी चोट लगी। अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रधान श्री दिनेश चन्द त्यागी ने आर्यसमाज के प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस व पानी की बौछारें फैकने की निन्दा करते हुए आरोप लगाया कि हिन्दुओं के नाम पर वोट बटोरने वाली भाजपा सरकार के शासन में दुर्गा मन्दिर, हनुमान मन्दिर व आर्यसमाज मन्दिर को तो मिण्टो रोड पर ध्वस्त कर दिया गया जबकि सडक के किनारे बनी अनेक मजारो व अवैध मस्जिदो को छुआ तक नहीं गया। ज्ञातव्य हो कि जल प्रहार से श्री मनीषी जी की एक आख की ज्योति लुप्त हो गई है, जिनकी सघन चिकित्सा व देखरेख राममनोहर लोहिया अस्पताल में की जा रही है।

इस चार दिवसीय लघु परन्तु गम्भीर अभियान में देश विदेश से निन्दा प्रस्ताव तथा कुछ कर गुजरने के समाचार आश्वासन और प्रस्ताव आने प्रारम्भ हो गए है।

अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री गिरीश खोसला जो कि संयोग से इन दिनों दिल्ली में ही थे उन्होंने भी इस कार्य को आर्यसमाज का एक शक्ति परीक्षण बताया और कहा कि इस अभियान की सफलता आर्यसमाज के भविष्य की सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

गुजरात के आर्यजन सहयोग और हर प्रकार की आहुति के लिए तैयार हैं।

डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति तथा आर्य प्रादेशिक सभा के अधिकारियों का भी इस आन्दोलन में भरपूर एव सक्रिय सहयोग रहा। अध्यक्ष श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने अपने अन्य अधिकारियों सहित मन्दिर स्थल का दौरा किया जिनमें प्रमुख थे सर्वश्री प्रबोध महाजन, एम० एल० खन्ना, नवीन सूरी, रामनाथ सहगल आदि। प्रदर्शन में भी डी० ए० वी० के दर्जनों स्कूलों के अध्यापक, अध्यापिकाओं तथा बच्चों ने भाग लिया।

१. आर्यनगर गुरुकुल तथा पहाडगंज के आर्यजन २. आर्यसमाज सीताराम बाजार का बैनर लिए हुए आर्यजन ३. आर्यसमाज जनकपुरी सी ब्लाक एवं बी० ब्लाक के जत्थे को नेतृत्व देते हुए दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री सोमदत्त महाजन।

१. बाएं से दाएं आर्य वीर दल के उत्साही कार्यकर्ता।
२. डी०ए०वी० विद्यालयों की अध्यापिकाएं।
३. आर्यसमाज ब्रह्मपुरी शाहदरा और विनय नगर नई दिल्ली के आर्य कार्यकर्ता।

दिल्ली के अतिरिक्त हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराचल राजस्थान, पजाब और चण्डीगढ आदि राज्यो से भी समाचार-पत्रों की सूचना के आधार पर उत्साही आर्यजन इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए दिल्ली पहुचे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने भी प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को फैक्स सन्देश द्वारा इस घृणित कार्य का विरोध करते हुए चेतावनी दी है कि आर्यसमाज एक जागरुक सस्था है। हम स्वाधीनता हेतु बलिदान होना जानते हैं और निजाम जैसे व्यक्ति के घुटने टिकवा सकते है तो आर्यसमाज मन्दिर की रक्षा करना भी जानते हैं। आश्चर्य है कि एक ओर आपकी सरकार मन्दिर बनाने के लिए दृढ प्रतिज्ञ है और दूसरी ओर मन्दिर तुडवा रही है।

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने भी सभा के अधिकारियो को आश्वासन दिया कि जिस रूप में भी आवश्यकता पड़ेगी

आर्यसमाजों के अतिरिक्त, दिल्ली की दर्जनों अन्य हिन्दू सस्थाओ के साथ साथ राजनीतिक दलों के विशिष्ट व्यक्तियों ने भी मन्दिर तोडे जाने की इस घटना का घोर विरोध किया।

विश्व हिन्दू परिषद के धर्म प्रचार प्रमुख रामकृष्ण गौड ने कहा कि जल्द से जल्द अगर कोई इसका समाधान नहीं निकाला गया तो परिषद इसके खिलाफ आदोलन करेगी। वहीं परिषद के महासचिव राजेंद्र प्रसार ने कारसेवा कर मंदिर बनाने का ऐलान तक कर डाला।

– शेष पृष्ठ ४ पर

R N No 32387/77 Posted at N D P.S.O on 19-20/04/2001 दिनांक १६ अप्रैल से २२ अप्रैल, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2001,19-20/04/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

आर्यसमाज की प्रचण्ड शक्ति के सामने सरकार झुकी

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

बहरहाल इस घटना के बाद से इलाके मे तनाव बना हुआ है। क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा ने कहा कि पुलिस को चौकसी बरतने के आदेश दिए जा चुके हैं। वहीं मिण्टोरोड के विधायक ताजदार बाबर पूरे मामले पर विरोध जताते हुए कहती हैं कि सरकार को किसी भी मंदिर या मस्जिद गिराने का कोई हक नहीं है। इससे लोगों की भावनाओं को चोट पहुंचती है। हम इस तरह की किसी भी कार्रवाई की निंदा करते हैं।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के ४५ वर्ष पुराने मंदिर को ध्वस्त किए जाने के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोगों पर पुलिस कार्रवाई की तीव्र भर्त्सना की है।

सरकार की निन्दा

दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस (ई) के सचिव स्टीफन विलियम्स ने केन्द्र में भाजपा गठबंधन सरकार की निन्दा करते हुए कहा कि अयोध्या में राम मंदिर के नाम से सत्ता में आने वाली गठबंधन सरकार के केन्द्रीय शहरी विकास मत्री जगमोहन के चुनाव क्षेत्र मिंटो रोड के ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मंदिर को लैण्ड एण्ड डिवलपमेण्ट विभाग आलोचना की।

इस चार दिवस आन्दोलन में पहले ही दिन श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री विनय आर्य, आचार्य देवव्रत, श्री अरुण वर्मा सहित जब २५ आर्य महानुभाव पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए तभी आर्य जनता ने यह संकल्प कर लिया था कि यज्ञ कर रहे आर्यसमाजियों का जिस तरह अपमान किया गया है वह नन्दनीय है। स्वामी सुमेधानन्द एवं आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व में श्री विनय आर्य, श्री विजेन्द्र तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं से भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि प्रभा आर्या का अथक परिश्रम भी इस आन्दोलन की प्रमुख आहुति थी। श्रीमती शशि प्रभा आर्या तथा राजौरी गार्डन दयानन्द विद्यालय

१ प्रचण्ड प्रदर्शन पुलिस के तीन बैरीयर द्वारा मार्ग पर खडे किए गए लोहे के अवरोधको पर खडे आर्यजन। २ पुलिस के लोहे के अवरोधको से उतरते हुए आर्यवीर। ३. पानी की भयकर बौछारो और अश्रु गैस के गोले के बावजूद प्रतिशोध की अग्नि तब तक शान्त न हो सकी जब तक सायं ६ बजे सरकार ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए मन्दिर निर्माण की उसी स्थल पर स्वीकृति का आश्वासन न दिया।

प्रमुख नेता बाबा पं० नन्दलाल मिश्र मन्दिर स्थल का दौरा करने आए, उन्होंने कहा कि सूर्यदेव जी के जीवन काल से मैंने उन्हें और श्री विमल वधावन को इस मन्दिर की रक्षा के लिए संघर्ष करते देखा है। संघर्ष के दौरान बाबा जी तो ४ घंटे पुलिस की हिरासत में भी रहे।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा ने के तोडक दस्तों द्वारा ध्वस्त कर मिट्टी मे मिला दिया। इस कार्य की जनता तीव्र भर्त्सना करती है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार मंदिर का निर्माण पुन: नहीं करती तो अध्यक्ष जयवीर नागर के नेतृत्व में युवा कांग्रेस के हजारों कार्यकर्ता विशाल प्रदर्शन करेंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों ने भी इस कार्य की कडी आर्य, बृजेश आर्य, राजवीर तथा अन्य दर्जनों आर्यवीर दिन रात इस संघर्ष में जुटे रहे।

आर्यसमाज हनुमान रोड के युवा मन्त्री श्री अरुण वर्मा ने ४ दिन तक निरन्तर अपने अन्य अधिकारियों के सहयोग से सपत्नीक इस आन्दोलनात्मक यज्ञ में अपने परिश्रम की आहुति दी। दिल्ली और आस पास के गुरुकुलों की प्रधानाचार्या श्रीमती विभा पुरी, कई अन्य आर्य महिलाओं के साथ लगभग ४ घंटे पुलिस हिरासत में भी रहीं।

आर्य जगत के सुविख्यात सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी भी लगातार अपनी उपस्थिति से आन्दोलन की आत्मा बने रहे। ❑

मन्दिर तोड़ने के विरोध में

प्रधानमन्त्री को दिया गया ज्ञापन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज के समस्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की ओर से आर्यसमाज जैसे एक देशभक्त संगठन पर बिना किसी उकसावे अथवा कारण के आपकी सरकार ने जो हमला किया है उसकी कड़ी भर्त्सना करती है। ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मन्दिर भवन को, जो रणजीत सिंह पुल के एक तरफ मिण्टो रोड पर स्थित था, के मुख्य भवन, पवित्र यज्ञशाला और पवित्र धार्मिक ग्रन्थों को जिस क्रूरता से ध्वस्त-नष्ट किया गया उस शर्मनाक काण्ड की निन्दा करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। जब बुल्डोजरों से भवन को गिराया जा रहा था, उस समय डिमोलिशन-दस्ते के लोग यज्ञ कर रहे ब्रह्मचारियों के साथ पागलों जैसा व्यवहार कर रहे थे और यहा तक कि उनके कपडे भी फाड डाले। आर्यसमाज जैसे एक अनुशासित संगठन के साथ यह भेदभाव पूर्ण बर्ताव सहन शक्ति के बाहर है।

सबसे अधिक हैरानी की बात यह है कि मिण्टो रोड स्थित आर्यसमाज मन्दिर को गिराने का जो आदेश शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने दिया, वह आपकी सरकार के निर्धारित दिशा-निदेशों के भी विपरीत है। इस सम्बन्ध में न तो गृहमन्त्री, भारत सरकार और न ही उसके प्रतिनिधि दिल्ली के उपराज्यपाल को सूचना दी गई और न ही उनकी स्वीकृति ली गई। यह बात हमारी समझ से बाहर है कि जिस धींगामस्ती एवं घमण्ड के साथ केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने यह काण्ड करवाया और अब आर्यसमाज के लोगों के बीच झूठे समझौते की अफवाह फैला रहे हैं।

दलगत राजनीति से अलग जिन राजनीतिज्ञों ने विशेषकर दिल्ली के सांसदों सर्वश्री साहिब सिंह वर्मा, मदन लाल खुराना, विजय गोयल और प्रो० विजय कुमार मलहोत्रा ने जो एकता दिखाई उसकी हम प्रशंसा करते हैं। विभिन्न धार्मिक नेताओं- हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन इत्यादि ने इस काण्ड पर गहरा क्षोभ एवं गुस्सा प्रकट किया है।

४८ घण्टे तक आपके हस्तक्षेप की प्रतीक्षा करने के पश्चात् भी आपकी ओर से कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने के कारण हम अपनी निम्न मांगों की प्राप्ति के लिए शान्तिपूर्ण सत्याग्रह करने के लिए बाध्य हैं।

१ ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मन्दिर को ध्वस्त करने के लिए केन्द्रीय सरकार विशेषकर श्री जगमोहन जी बिना शर्त माफी मांगें।

२ समाज मन्दिर के ध्वस्त के नुकसान की भरपाई के लिए उसी स्थान पर एक नए सुन्दर आर्य समाज मन्दिर का निर्माण करवाया जाए। स्थान के बारे में कोई समझौता नहीं होगा।

३. दोषी अधिकारियों को उनके इस कुकृत्य के लिए दण्ड दिया जाए।

हमने यह सौगन्ध खाई है कि जब तक हमारी उपरोक्त मांगे सम्मानजनक ढंग से पूरी नहीं हो जाती, तब तक हमारा यह सत्याग्रह चलता रहेगा।

आखिर में हम माननीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी आपसे अनुरोध करते हैं कि आप बिना समय खोए इसमें हस्तक्षेप करें और अपनी इस बात का सबूत दें कि आज आपका राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन जो भी है वह आर्यसमाज की बदौलत है।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक १४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २३ अप्रैल से २९ अप्रैल, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो में ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण हेतु

शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न

आर्यजनता की ऐतिहासिक संगठनात्मक एकजुटता

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड, नई दिल्ली को तोडे जाने से आर्यसमाज और केन्द्र सरकार के शहरी विकास मत्रालय के भूमि एव विकास विभाग के बीच उत्पन्न हुआ तनावपूर्ण वातावरण तत्कालिक रूप से उसी स्थल पर आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु आयोजित शिलान्यास समारोह के साथ शान्त हो गया परन्तु आर्य जनता ने सकल्प किया है कि भविष्य मे भी यदि केन्द्र सरकार अथवा इसके किसी मन्त्री या अधिकारी ने किसी शरारत या बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया तो पहले से भी अधिक तीव्र आन्दोलन के द्वारा मोर्चा प्रारम्भ किया जाएगा।

२२ अप्रैल, रविवार को विगत् लगभग एक सप्ताह के तनावपूर्ण वातावरण के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित एक जन समारोह से पूर्व स्वामी ओमानन्द जी, दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना, श्री साहिब सिह वर्मा, श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा के कर-कमलो से मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सार्वदेशिक सभा के मन्त्री सर्वश्री वेदव्रत शर्मा, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान प्रो० शेरसिह स्वामी सुमेधानन्द विमल वधावन, प्रिं० चन्द्रदेव इन्द्रवेश, जगदीश आर्य, अग्निवेश, रामनाथ सहगल, एम०एल० खन्ना, चौ० लक्ष्मी चन्द तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक आदि आर्य नेता उपस्थित थे।

शिलान्यास से पूर्व स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे एक भव्य शिलान्यास यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ और शिलान्यास समारोह के उपरान्त स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे एक विशाल जन सभा हुई, जिसको सम्बोधित करते हुए दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि यदि मन्दिर के उसी स्थल पर पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त न होता तो हमारे माथे पर ही कलक का टीका लगता। अत इस पवित्र कार्य मे अपनी आहुति देकर हमने तो केवल

शेष पृष्ठ ४ पर

बंगला देश के विरुद्ध प्रस्ताव

बंगला देश की सेना द्वारा भारतीय सेना के १५ सैनिकों को अपनी सीमा में किसी वार्तालाप हेतु बुलाकर धोखे से क्रूरतापूर्वक कत्ल करने के अमानवीय कृत्य की हम घोर निन्दा करते हैं।

भारत सरकार से समूचा आर्य जगत अपील करता है कि इस कार्यवाही का कूटनीतिक और सैन्य जवाब अवश्य दिया जाना चाहिए तथा बंगला देश सरकार को बिना शर्त माफी मांगने के लिए कहा जाए।

सारे विश्व के आर्यजन अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से भी आग्रह करता है कि इस अमानवता के विरोध में बंगला देश सरकार और सेना को चेतावनी दें।

वेदव्रत शर्मा, सभा प्रधान *तेजपाल मलिक महा मन्त्री*

(१) शिलान्यास समारोह के अवसर पर रखी जाने वाली ईंटों को मन्त्रोच्चारण के साथ स्पर्श करते हुए। बाए से दाए श्री साहिब सिह वर्मा सासद, सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी, श्री मदनलाल खुराना सासद, एव चौ० लक्ष्मीचन्द जी। २ श्री विमल वधावन, श्री मदनलाल खुराना सासद, पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा तथा श्री स्वामी सुमेधानन्द जी।

वाजपेयीजी का शान्ति प्रयास सर्वथा निरर्थक

– स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

शान्ति मात्र दो प्रकारो से मिलती है मार कर या मरकर। अनेक अवसर आए स्वतन्त्र भारत मे शान्ति स्थापना के, किन्तु इस देश के नेताओ ने उनका लाभ नहीं उठाया।

पहला अवसर आया जब पाकिस्तान ने जन्म लेने के तुरन्त बाद कबीलो की आड मे कश्मीर पर आक्रमण किया था। उस समय भारत के प्रधानमन्त्री थे श्री जवाहरलाल नेहरू, जो विश्व मे शान्ति स्थापना का स्वप्न सजोए बैठे थे और अपने शान्ति प्रयासो के लिए बडे से बडा बलिदान देकर शान्ति अवतार बनने के लिए प्रयत्नशील थे। यही कारण है कि कश्मीर का तिहाई भाग को पाकिस्तान को भेंट कर अपनी महत्वाकाक्षीवृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए युद्ध विराम किया था। शान्ति तो हुई नहीं, उस भूल के कारण कश्मीर का एक तिहाई भाग अभी तक पाकिस्तान के अधिकार मे है।

दूसरी बार अवसर आया सन् १९६५ मे श्री लालबहादुर शास्त्री के प्रधानमन्त्रित्व काल मे। उन्होने जीता हुआ लाहौर स्वेच्छा से ही पाकिस्तान के लिए छोड दिया, अन्यथा उसी समय कश्मीर का एक तिहाई भाग पाकिस्तान से खाली कराया जा सकता था, तब लाहौर वापस किया जाता। इसके पश्चात् ताशकन्द जाकर स्वय चिरनिद्रा मे सोकर शान्त हो गए परन्तु भारत को शान्ति प्राप्त नहीं हो सकी।

तीसरा अवसर आया कारगिल युद्ध के समय। राजनीतिक सूझ-बूझ की कमी कहे या अपनी काल्पनिक शान्ति की अभिलाषा पूर्ति के लिए कहिए, श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने वह स्वर्णिम अवसर खो दिया। कारगिल के समय यदि सेनाओ को कश्मीर के पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र की ओर बढने के आदेश दे दिए जाते तो वह भाग तो कश्मीर मे सम्मिलित कर ही लिया जाता, पाकिस्तान भी सदा के लिए भारत के साथ आ जाता।

पाकिस्तान की स्थिति यह है कि उसका पश्चिमी सीमा प्रान्त तो बनता पख्तूनिस्तान। पख्तून तो अवसर की खोज मे हैं। बिलोचिस्तान या तो पख्तूनिस्तान मे सम्मिलित होकर वहीं का एक प्रदेश बनता अथवा पृथक् बिलोच राष्ट्र बन जाता और सिन्ध तो पाकिस्तान से पृथक् होने के लिए छटपटा ही रहा है, वह भी सिन्ध राष्ट्र बनकर खडा हो जाता। परन्तु नेहरू जी से चली परम्परा को वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी भी नहीं तोडना चाहते। भारत की सीमा पर जितनी समस्याए पाकिस्तान खडी करता है उतनी कोई अन्य देश नहीं करता। स्मरण रहे कि पाकिस्तान बना ही भारत विरोध पर है। पाकिस्तान के नेताओ के मन और मस्तिष्क मे तो बृहद् इस्लामी साम्राज्य की बात भरी हुई है वह उसे निकाल नहीं सकते। एतदर्थ पहले भारत का दारुलहख (काफिरस्तान) न बने रहने देकर अब दारुल इस्लाम (मुस्लिम साम्राज्य) बना देने के कटिबद्ध है। उनके सामने उनके रहनुमाओ की सीख है कि "कत्ल करो काफिरो को जहा पाओ, मारो गर्दन उनकी और काटो पोरी-पोरी और उन्हे चैन से मत बैठने दो। इतना सताओ कि वे तुमसे डरे, डरते रहेगे तो वे स्वीकार करेगे दीन तुम्हारा, नही तो उन्हे मिटा डालो।"

सवाल यह है कि वे अपने रहनुमाओ से सीख माने या तुमसे मित्रता करने का कुफ्र करे। हमारे देश के नेताओ और बुद्धिजीवियो और उसके उस्तादो को उनके मजहब की कोई जानकारी नहीं है।

बात तो यह है कि श्री वाजपेयी जी को शान्ति चाहिए। अभी तो वह कश्मीर मे शान्ति चाहते हैं, इसलिए सघर्ष विराम किया हुआ है तथा धीरे-धीरे किस्तो मे उसकी अवधि बढाते जाते हैं। अच्छा हो कि वह कश्मीर मे अनिश्चित कालीन सघर्ष विराम की घोषणा कर दे। इसके परिणाम स्वरूप वहा चिरस्थायी शान्ति हो जाएगी, क्योकि अनिश्चित कालीन सघर्ष विराम की घोषणा सुनते ही पाकिस्तानी कश्मीर घाटी ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण जम्मू-कश्मीर के काफिरो को त्वरित गति से समाप्त करने की कोशिश करेंगे।

परन्तु ध्यान रखे कि इससे पाकिस्तान शान्त होकर नहीं बैठेगा। तब वह सम्पूर्ण भारत को इस्लामिक साम्राज्य मे सम्मिलित करने के लिए इसे दारुल इस्लाम बनाने के लिए तब तक आक्रमण करता रहेगा, जब तक अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो जाता।

भारत को शान्ति तो पाकिस्तान के टूटने पर ही मिल सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग नहीं है, पाकिस्तान टूटने का अर्थ है पख्तूनिस्तान, बिलोचिस्तान तथा सिन्ध देशो का उदय होना। पाकिस्तान मे जो पजाब प्रदेश है, तब वही लगोटी सा पाकिस्तान रह जाएगा और तब वह अपनी सहायता तथा सुरक्षा के लिए भारत की ओर निहारा करेगा, अन्यथा बिलोच, पख्तून और सिन्धी उसे नोच-नोच कर खा जाएगे।

शान्ति शक्ति से ही प्राप्त होती है, ये दोनो बहने है, गिडगिडाने और मागने से शान्ति नहीं मिला करती। यह सच्चाई ध्यान रखनी चाहिए। इसी मे देश का भला है।

– अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

स्वर्ग और नर्क कहां है?

- देवराज आर्यमित्र

जब कोई मर जाता है तो कहते हैं कि उसका स्वर्गवास हो गया, चाहे वह सारी उम्र खोटे कर्म करते रहा हो फिर भी यह कोई नहीं कहता कि उसका नर्कवास हो गया। अब प्रश्न यह है कि स्वर्ग और नर्क कहा है ?

स्वर्ग और नर्क इसी पृथ्वी पर हैं। मृत्यु हो जाने पर आत्मा कर्मों के अनुसार दूसरा जन्म लेने के लिए किसी योनि मे प्रवेश कर जाती है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दुख विशेष (कष्ट) भोगने का नाम नर्क है। सुख-दुख कर्मों का फल है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है, परन्तु फल प्राप्त करने मे परतन्त्र है। अर्थात ईश्वर के आधीन है। आज कोई मनुष्य यदि बुरे काम करके भी सुखी है तो यह उसके पिछले कर्मों का फल है। जब इस जन्म के कर्मों का फल मिलेगा, तब अन्धा, लगडा विक्लाग बनेगा। जैसे कई बच्चे जन्म से ही अगहीन होते हैं, वस्तुत यह पिछले जन्म के कर्मों का ही फल है।

यह ईश्वर का अटल नियम है कि अच्छे-बुरे कर्मों का फल अवश्य भोगना पडेगा। प्रतिदिन रात को सोते समय अपने कर्मों का हिसाब करे कि आज कितने नेकी के काम किए हैं और कौन सा पाप किया? मनुष्य को हाथ, पाव आख, कान, वाणी अच्छे कर्म कमाने के लिए दिए हैं। यदि वह इनका दुरुपयोग करके खोटे कर्म करता है तो इसमे न्यायकारी ईश्वर का कोई दोष नहीं है।

– *आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली-५१*

सच्चा राज-धर्म

कर्णवास मे एक दिन बुलन्दशहर जिले के कलेक्टर महोदय पधारे। उन्हे मालूम हुआ कि प्रसिद्ध समाज-सुधारक स्वामी दयानन्द जी वही पधारे हुए है और एक कुटी मे निवास करते हैं। कलेक्टर ने एक सन्देशवाहक भेजा और दर्शनो की इच्छा प्रकट की। स्वामीजी ने उत्तर मे सूचना भिजवाई– **"मुझे इस समय अवकाश नहीं।"** कलेक्टर ने फिर पुछवाया– 'आपको किस समय अवकाश मिलेगा?' उत्तर मे स्वामीजी ने पूछा– **"कलेक्टर महोदय को किस समय अवकाश होगा?"** कलेक्टर महाश्य ने उत्तर भिजवाया– **"मुझे ४ घण्टे बाद अवकाश ही अवकाश है।"**

यह वचन सुनते ही स्वामीजी कुटी से बाहर निकल आए। शिष्टाचार के बाद वेदमन्त्रो और मनुस्मृति के श्लोको से कलेक्टर महाश्य को राजधर्म का उपदेश देते हुए बोले– **"जिसके सिर पर एक परिवार के भरण-पोषण का भार होता है, उसे बडी दौड-धूप करनी पडती है, रातों को जागना पडता है और सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं मिलता परन्तु आपके कथन से बडा आश्चर्य हुआ कि सहस्रो मनुष्यों का बोझ आपके कन्धों पर है, दीन-दुखियों का संकट-निवारण करना आप का कर्तव्य है और जिस पर आपको चार घण्टे बाद अवकाश ही अवकाश है।"**

स्वामीजी के स्पष्ट कथन को कलेक्टर महाशय ने स्वीकार किया और प्रसन्नता पूर्वक विदा हो गए।

–नरेन्द्र

हम निर्भय हों और संघटित हों

अभयं मित्रादभयमित्रात्। *अथर्व १९-१५-६*

शत्रु से हमे भय न हो, अमित्र से भय न हो

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। *अथर्व २०-२-७*

प्रभु हमें सब दिशाओ से निर्भय करे

कण्टकेन्, कण्टकमिव परेण परम् उद्धरेत्

कांटे से जैसे काटा निकाला जाता है, उसी प्रकार शत्रु को शत्रु द्वारा ही पराजित करें।

शक्तिहीनों बलवन्तमाश्रयेत्।।

जब अपनी शक्ति क्षीण हो जाए तो किसी बलवान का सहारा ले।

संघे शक्ति: कलो युगे।

कलि-काल मे सामूहिक जनशक्ति ही सच्ची शक्ति है।
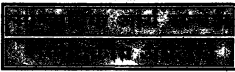
संघटित आर्यशक्ति की विजय : नए राष्ट्रीय संकटों की चुनौती

यह सन्तोष की बात है पिछले ५० वर्षो से बना मिण्टो रोड *का आर्यसमाज* मन्दिर जिसे १४ अप्रैल के दिन ध्वस्त कर दिया गया था, १७ अप्रैल के दिन आर्य जनता के सघटित प्रदर्शन के कारण अधिकारियो को उसी स्थान पर मन्दिर निर्माण को स्वीकृति देनी पडी। यह भी गरिमा की बात है कि रविवार २२ अप्रैल को प्रात आर्यसमाज मिण्टो रोड के नव निर्माण का कार्य हजारो आर्य कार्यर्त्ताओ के सामूहिक यज्ञ एव सत्सग से प्रारम्भ हो गया। वैसे तो स्वतन्त्र भारत मे इस तरह का अनैतिक कार्य होना ही नहीं चाहिए था, परन्तु सामूहिक सघटित आर्यशक्ति के जाग्रत होने से प्रसन्नता का विषय है कि विलम्ब से ही हो एक बडी आपदा टल गई, परन्तु इन्हीं दिनों राष्ट्र को पूर्वोत्तर के सीमा क्षेत्र से एक भीषण सकट की चुनौती मिली। अप्रैल के दूसरे सप्ताह में बगला देश ने भारत के सीमावर्ती गाव पीरदिया पर अधिकार कर लिया, भारतीय सीमा सुरक्षा दल के १५ सैनिको का अपहरण कर लिया। इन सैनिको को निर्दयता से सताकर हड्डिया तोडी गई, उन पर खौलता पानी डाला गया, फिर आखो मे गोलिया चलाई गई। इन सैनिको मे से तीन के हाथ कटे हुए थे, एक का पैर कटा था तो एक का गला कटा मिला। १६७१ मे भारत ने पाकिस्तान से बगलादेश को स्वाधीनता दिलाई थी, खेद है कि तीस वर्ष के बाद हमे उसका यह फल मिला शेख मुजीबुर रहमान के बाद उनकी बेटी शेख हसीना वाजेद की सरकार से इस तरह के क्रूर व्यवहार की किसे अपेक्षा थी, परन्तु राष्ट्र के पूर्वोत्तर सीमान्त पर भारतीय गाव और भारतीय सैनिकों पर किए क्रूर व्यवहार की घटना राष्ट्र के सूत्र सचालको और जनता को एक स्थायी चुनौती दे रही है। हमारी पश्चिमी और पूर्वी सीमाओ पर अवस्थित, पाकिस्तान और बगला देश कभी भारत के ही भूभाग थे, स्वाधीनता प्राप्ति के समय विदेशी सरकार यत्नपूर्वक हमारे दोनो बाजू काट गई थी। १६७१ मे भारत ने पाकिस्तानी के एक लाख सैनिको को बन्दी बनाया था और बगला देश को स्वाधीन किया था। पूर्वोत्तर के सीमावर्ती प्रदेश का घटनाचक्र भारत राष्ट्र को आत्मनिरीक्षण करने के लिए विवश कर रहा है।

विजय के उन क्षणो में यदि भारत पूर्व में नए राष्ट्र के निर्माण के समय विदेश, राष्ट्ररक्षा, परिवहन, व्यापार आदि कुछ विषयों पर नीतिनिर्धारक सूत्र अपनाता तो शेख मुजीब की सरकार को कोई आपत्ति न होती, आज भी बगला देश की सरकार ऊपर से मैत्री व्यवहार का दावा करती है, परन्तु व्यवहार मे मित्रता दिखाई नहीं देती। गगाजल, पेट्रोलियम उत्पादों, पूर्वोत्तर के उग्रवादियो के बारे मे उसका व्यवहार भारत के अनुकूल नहीं रहा उसने अपना लाभ सदा उठाया, परन्तु उसके लिए भारत के साथ उसका लाभ देने में सकोच किया। ताली एक हाथ से नहीं बजती, इसी तरह राष्ट्रो का आपसी व्यवहार भी पारस्परिक सौमनस्य से सुदृढ हो सकता है। स्वाधीनता प्राप्ति के चौवनवे वर्ष मे हमे अपने पश्चिमी और पूर्वी पडोसी राष्ट्रो से वैसा सद्व्यवहार नहीं मिलता जैसा कि भारत ने उनके साथ व्यवहार किया। सीमा सुरक्षा बल के सैनिको की हत्या और भारतीय प्रदेश पर बल अधिकार की घटना देश को सामयिक चेतावनी दे रही है। हम राष्ट्रीय जीवन में मित्र और शत्रु से उसी समय निर्भय हो सकते हैं जब भारतीय राष्ट्र जल-पृथ्वी-नभ, प्रत्येक क्षेत्र मे निर्णायक शक्ति सगठित करे। इसी के साथ हमे इन तीनो ही मोर्चों में ऐसी अभेद्य रक्षा कवच बनाना होगा कि कोई भी आक्रान्ता हमारे भूभाग पर कभी कब्जा न कर सके और न कभी वह हमारे सैनिको से जघन्य व्यवहार कर सके। भारत सीरखे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सभी प्रमुख राजनीतिक दलों, नेताओ और जनता को सयुक्त सघटित मोर्चा बनाना चाहिए। विदेशी सैनिकों द्वारा एक भारतीय गाव पर अधिकार और अनेक सैनिको का अपहरण हमारी सुरक्षा-व्यवस्था की त्रुटि की ओर इशारा कर रहा है। अधिक अच्छा हो कि प्रमुख राष्ट्रीय दल और राष्ट्रनेता सयुक्त होकर राष्ट्र रक्षा के लिए कुछ स्थायी सुरक्षा के मापदण्डों को निर्धारण करे।

पश्चिमी सीमा पर हमारा पडोसी कई बार अपने भारत विरोध को अभिव्यक्त कर चुका है, उसके सैनिक शासक अपना विरोध जब-तब प्रकट करते रहे हैं, वे अपने वाहनो मे आणविक शक्ति का प्रयोग भी उचित समझते हैं अब पूर्वोत्तर भारत को बगलादेश से भी नई चुनौती मिली है। यह चुनौती राष्ट्र के लिए सकट की घडी न लाए, उसके लिए समय रहते हमारी तीनो सेनाओं को आधुनिक विद्याओ और सज्जा से सुदृढ करना होगा। उसी के साथ स्थलीय, जलीय सीमाओ को कोई भी आततायी लाघ कर कोई कार्रवाई न कर सके इसके लिए सीमा पक्तिओं को सुदृढ कर वहा सैनिकों को और जनता को सन्नद्र होना पडेगा। पूर्वोत्तर सीमा पर पिछले दिनो की घटना कभी नहीं घटती यदि वहा सीमावर्त्ती प्रहरी और राष्ट्र के सजग जन-प्रतिनिधि सन्नद्र रहते। यद्यपि सीमावर्त्ती पूर्वोत्तर प्रदेश मे कोई बडा हादसा नहीं घटा, परन्तु एक भारतीय गाव पर कब्जे और १५ सैनिको की निर्मम हत्या देशवासियों को सामयिक चेतावनी दे रही है कि हमारी राष्ट्र रक्षा मे कुछ बुनियादी कमी है, जिसे शासन, प्रमुख दलो और जन नेताओ द्वारा समय रहते दूरकर राष्ट्रीय सकटों की भावी चुनौतियो का उन्मूलन किया जा सकता है। पूर्वोत्तर के सीमावर्ती प्रदेश पर विदेशी अतिक्रमण का स्थायी समाधान ढूढकर उसे सम्पूर्ण राष्ट्र की स्थल, जल, नभ, के क्षेत्रों मे कार्यान्वित किया जाना चाहिए। राष्ट्ररक्षा सभी का सामूहिक दायित्व है, उसे सभी पक्षो को सघटित रूप से निभाना चाहिए।

तुष्टिकरण की नीति का दुष्परिणाम

केन्द्र की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति का परिणाम है कि कश्मीर मे आतकवादियों द्वारा सीधे पुलिस थानो और सैनिक छावनियों पर आक्रमण करने के जवाब मे भरत सरकार युद्ध विराम–सघर्ष विराम जैसी घुटने टेक नीति अपनाई रही है, परिणामत अफगानिस्तान तक सारे उपमहाद्वीप मे कट्टरपथी मुस्लिम तेवर तीखे हो गए हैं। वे भारत सरकार की नीति को अपनी जीत मानते हैं। उनका हौंसला इतना बढ़ गया है कि भारत के अनेक क्षेत्रो मे उग्रवादी लश्कर बनाए जा रहे हैं। उन्हे हथियारो से लैस किया जा रहा है और वे सारे भारत को ही फतह करने का सपने देख रहे हैं। जहा अफगानिस्तान मे तालिबान हिन्दू बौद्ध मूर्तिया तोड रहे हैं, हिन्दुओ का मानमर्दन करने के लिए सौ-सौ गाए काट-काटकर प्रसाद के रूप मे लोगो में बाट रहे हैं, वही भारत के अनेक प्रदेशो मे हिन्दुओ पर आक्रमण करने के बहाने ढूढे जा रहे हैं। सीवान का सासद शहाबुद्दीन अपने को शहाबुद्दीन गौरी का अवतार मान बैठा है। सारे क्षेत्र मे उसका ऐसा आतक है कि पुलिस भी उसकी गोलियो का मुकाबला करने में कठिनाई अनुभव कर रही है और अन्तत उसे पकडने के लिए सेना भेजी गई। कानपुर मे तालिबान का भारतीय सस्करण 'सीमी' (स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमैंट ऑफ इण्डिया) ने १६ मार्च को जुम्मे की नमाज के बाद पुलिस पर आक्रमण कर दिया। पुलिस के अपर अधीक्षक श्री पाठक भून डाले गए। मन्दिर तोडे, कई दुकाने जला डालीं, घरो में घुस-घुस कर खूब लूटा, महिलाओ को खराब किया और युवतियो को उठा ले गए। मानो हम भारत मे नहीं पाकिस्तान मे जी रहे हैं। जिज्ञासा है कि पाकिस्तान में जैसा बरताव हिन्दुओ से हो रहा है, क्या वैसा ही बरताव भारत मे मुस्लिमो से नहीं होना चाहिए ? किन्तु भारत सरकार मदरसो को पैसे देती है, हज के लिए करोडो रुपये हिन्दुओ की जेबो से निकाले जा रहे हैं। अल्पसख्यक आयोग जैसे मार्गो से उनके हाथ मजबूत कर रहे हैं। परिणाम पूरे देश भुगत रहा है।

– के०चन्द्र, हिन्दू संस्कृति प्रतिष्ठान, ३३१, सुनहरी बाग अपार्टमैंट, दिल्ली-८५

कण-कण में राम

गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी ने लिब्राहन आयोग के सम्मुख ठीक ही कहा कि भारतीय सस्कृति और हिन्दुत्व एक ही बात है। हिन्दुत्व की माग है भगवान् के जन्मस्थान अयोध्या में एक विशाल आर्यमन्दिर का निर्माण होना चाहिए। राम हमारे राष्ट्र के प्रतीक हैं। समूचा भारत ही नहीं, भारत के बाहर भी जहा भारतवासी गए, वहा-वहा राम कथा भी पहुची। इण्डोनेशिया मे रामायण के नाटक सारे वर्ष होते हैं। थाईलैण्ड मे तो राजा स्वय राम की उपाधि धारण करता है। आजकल वहा नौवे राम का राज्य है। पहले छठे राम द्वारा लिखी रामायण पढी जाती है। नाटक-नृत्यो द्वारा रामकथा खेली जाती है। लाओस की जनता श्रीराम के पुत्र लव को लाओ कहते हैं। वियतनाम मे रामायण सबकी साझी धरोहर है। कोरिया की जनता की धारणा है अयोध्या की राजकुमारी कोरिया आई वे अपने को "उसी की सन्तान मानते हैं। रामायण के सहारे गुयाना, मारीशस, त्रिनिदाद सुरीनाम और फिजी मे रामकथा के सहारे उनकी अस्मिता सुरक्षित रही। यदि भारत मे श्रीराम का सम्मान होगा तो विश्व भर मे भारत का सम्मान होगा।

– डॉ० कैलाशचन्द्र, रोहिणी, दिल्ली

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के

अपने माथे पर लगने वाले कलक के टीके को मिटाने का प्रयास किया है। हमने किसी पर कोई अहसान नही किया।

अगर समाज सगठित है तो सरकारे भी ठीक मार्ग पर चलती रहेगी। समाज मे एकता है तो सरकारे भी २५-२५ दलों की नही बनेगी।

पुण्यं भारत भारतम्, शिवम् भारत भारतम्

इस सस्कृत पाठ के बाद स्वामीजी ने निम्न पक्तियों में एक भव्य कविता पाठ भी आम जनता को करवाया –

शिलान्यास यज्ञ के यजमानों को आशीर्वाद देते हुए श्री मदनलाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री मदन मोहन सलूजा, श्री बलदेव राज, श्रीमती उज्ज्वला वर्मा। यज्ञवेदी पर विराजमान यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी तथा स्वामी ओमानन्द जी। यजमान सर्वश्री रामनाथ सहगल, ज्ञान प्रकाश चोपडा, प्रिं० मोहन लाल, श्रीमती शीतल शर्मा, राजसिह भल्ला, श्रीमती प्रभात शोभा तथा प्रो० शेर सिंह।

श्री खुराना ने कहा कि प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता श्री हरदयाल देवगुण ने मुझे कुछ ही दिन पूर्व बताया है कि १९५३ मे कश्मीर आन्दोलन के दौरान महत्वपूर्ण गुप्त बैठके इसी मन्दिर मे हुआ करती थीं।

दिल्ली के ही एक अन्य पूर्व मुख्यमन्त्री श्री साहिब सिह वर्मा ने कहा कि आर्यसमाज की कुर्बानिया

उन्होने आर्य जगत से आशा व्यक्त की कि यदि आर्यजगत मजबूत है, कर्म क्षेत्र मे अग्रणी है तो देश भी ठीक रहेगा। उन्होने कहा कि आर्यसमाज मदिर पर बुल्डोजर चलने से मेरे मन को बडा भारी कष्ट हुआ था। मुझे प्रसन्नता है कि आर्य जनता की शान्ति ने राजनीतिक प्रयासो को विफल कर दिया और

मनुर्भव का संदेश जिसने दिया था।
सदा जो सुखद शात जीवन जिया था।
परम प्रेम पथ जिसने निर्मित किया था।
विमल वेद विद्या का अमृत दिया था।
जगत यज्ञ सौरव से जिसने संवारा।
वही देश भारत समुन्नत हमारा।

श्री मदनलाल खुराना की अगुआई करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य, तथा प्रि० चन्द्र देव। जनसभा को उद्‌बोधन करते हुए श्री मदनलाल खुराना तथा श्री साहिब सिह वर्मा।

को हम भूल नहीं सकते। परिवार और व्यापार से निवृत्त लोगो को आर्यसमाज के कार्यों के लिए आगे आना चाहिए। निर्धनो की सेवा और समाज के चरित्र निर्माण की कार्यवाही समाप्त नहीं होती। यहा एक मन्दिर टूटा तो कैसे सारे देश के आर्य बन्धु एक जुट होकर आवाज बुलन्द करने लगे परन्तु क्या किसी ने भारतीय सस्कृति रूपी मन्दिर के रोज-रोज टूटने और लूटने पर आवाज उठाई है। पाश्चात्य सस्कृति टेलीविजन के द्वारा रोज-रोज हमारी भारतीय सस्कृति के मदिरो को तोड रही है। इस कार्य के लिए हमे सरकारो के भरोसे नही रहना चाहिए।

मन्दिर का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर हो सके इसका मार्ग प्रशस्त किया।

शिलान्यास यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने कहा कि भारत माता की प्रशसा मे गीत गाना तथा उन भावो मे रहना चाहिए। भारत का जो आज राष्ट्रीय गीत है वह वास्तव में जार्ज पचम के भारत आगमन पर उसकी प्रशसा मे लिखा गया था। अत उस गीत को भारत की प्रशसा मे राष्ट्रीय गीत मानना एक भूल है। वास्तव में भारत माता की प्रशसा निम्न पक्तियो से की जानी चाहिए।

वर्षम् भारत भारतम्, प्रियम् भारत भारतम्

जहां राम जन्मे थे घनश्याम जन्मे।
भरत, व्यास, गौतम से गुरुग्राम जन्मे।
पतञ्जलि, कपिल, शंकर, अभिराम जन्मे।
कुमारिल, दयानन्द, सुखधाम जन्मे।
जगा जिस से जग में समुज्ज्वल उजारा।
वही देश भारत समुन्नत हमारा।।

स्वामीजी ने विजयी आर्य जनता को आध्यात्मिक मार्ग दर्शन देते हुए कहा कि विजयी व्यक्ति को बातो से विशेष सावधान रहना चाहिए प्रथम विजयी व्यक्ति मे अहकार पनपने की पूरी सम्भावना रहती है जिसमे वह अपनी विजय के प्रभाव को बनाए

पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न

रखने मे असफल हो जाता है। दूसरा जिस व्यक्ति को हराकर विजय प्राप्त की गई है वह व्यक्ति जीह्वा लटकाए कुत्ते की तरह मौके की तलाश में रहता है कि जैसे ही अवसर मिले हराने वाले पर पुन झपट पड़ू। उन्होने कहा कि आर्य जनता को एव आर्य नेताओ को हर प्रकार के अहकार से दूर रहकर मुक्के की तरह इकट्ठा रहना चाहिए। सबका लक्ष्य एक होना चाहिए। सबका सकल्प एक होना चाहिए। यहा पर भी आप सबके सकल्प से ही कामयाबी हुई है जहा सकल्प नहीं होता वहा कई प्रकार के विकल्प पैदा हो जाते हैं। विकल्पों से मतभेद पैदा होता है और मतभेद का परिणाम असफलता होती है।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प्रो० शेरसिह ने कहा कि इस विशाल एकजुटता के प्रदर्शन का श्रेय आर्य जनता को जाता है। अत आर्य जनता को नए कार्यक्रम चलाने चाहिए। उन्होने कहा कि आर्यसमाज मन्दिर के लिए एक लडाई हमने जीती है अब अन्य भवनो से सास्कृतिक क्रान्ति प्रारम्भ होनी चाहिए। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ने स्वराज के लिए लडाई लडी, परन्तु स्वतन्त्रता के बाद जिन नेताओं के हाथ मे सत्ता आई उन्होने स्वराज के शब्दो को उलट दिया अर्थात् अब उनका लक्ष्य राजस्व बन गया। अधिक से अधिक राजस्व के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अब हमारी सरकारे देश की जनता को शराब के नशे मे धकेलना एक बहुत बडा काम समझती है। उन्होने आह्वान किया कि आर्यसमाज को अब शराब के विरुद्ध आन्दोलनात्मक रवैया अपनाना चाहिए।

शिव सेना उत्तर भारत के अध्यक्ष श्री जय भगवान गोयल ने कहा कि जैसे ही आर्यसमाज मन्दिर टूटने का समाचार शिव सेना प्रमुख बाल ठाकरे जी को मिला उन्होने तुरन्त हमे निर्देश दिया कि ऐसे दौर मे आर्यसमाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग देना चाहिए। उन्होने कहा कि भविष्य मे जब कभी भी आर्यसमाज पर सकट आएगा दिल्ली के शिव सैनिक हर प्रकार से आपके साथ रहेगे।

डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री जी० पी० चोपडा, हालैण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप, हरियाणा सभा के कार्यकारी प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, राजस्थान सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी श्री रामनाथ सहगल आदि ने भी इस शिलान्यास जन सभा मे अपने विचार व्यक्त किए। अन्त मे स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने इस आन्दोलन से जुडे समस्त सहयोगियो का धन्यवाद किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्यजनो को डटकर कार्य करने की प्रेरणा दी। मच का संचालन दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया। उन्होने १७ अप्रैल के प्रदर्शन के दौरान श्री सारस्वत मोहन मनीषी की एक आख पर गम्भीर चोट लगने की सूचना देते हुए ईश्वर से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

श्री वेदव्रत शर्मा ने समूचे मीडिया का धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से पजाब केसरी के प्रधान सम्पादक श्री अश्विनी कुमार चोपडा का भी धन्यवाद किया जिन्होने लगातार इस आन्दोलन के समाचारो को प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित करके इसे एक जन आन्दोलन के रूप मे सफलता दिलाने मे प्रमुख सहयोग दिया।

सम्बोधन देते हुए स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, प्रो० शेर सिह, स्वामी इन्द्रवेश, श्री सत्यव्रत सामवेदी, हालैण्ड के डॉ० महेन्द्र स्वरूप।

उद्बोधक, सर्वश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा, रामनाथ सहगल, स्वामी अग्निवेश, स्वामी सुमेधानन्द, श्रीमती पुष्पा शास्त्री, तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

सामवेद के स्व-मन्त्रों से - त्रिष्टुप् छन्दः सप्तकम् (५)

तीन के दमन या उन्नयन की चर्चा करने वाले छन्द का सप्तक

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) आप द्वारा उत्साहित एवं रक्षित होकर हम शत्रुओं को परास्त करें

यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा।
क्षिधी युधा शवसा व तमिन्द्राभीष्याम वृषमण स्त्वोताः।।

सा०म० ३३६

वसुकृद् वासुक्र विमदो वा। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (वनुष्यन्) क्रोध करता हुआ (य मर्त) जो मनुष्य (उगणा) अपने साथियों के साथ (वा मन्यमान) अथवा अहकारवश (तुर वा) अथवा अपनी शीघ्रकारिता सामर्थ्यवश (न अभिदाति) हमारी जड काटना चाहता है, (इन्द्र) हे दुष्ट विदारक इन्द्र (युधा शवसा वा) अपने प्रत्यक्ष प्रहार अथवा परोक्ष सामर्थ्य से (तं क्षिधि) उसे नष्ट करें, और हम (त्वोता) तेरे द्वारा रक्षित तथा (वृषमण) उत्साहित मन वाले बनकर (त अभिष्याम) उस मनुष्य को परास्त करे।

निष्कर्ष – हम जब किसी दुष्ट या शत्रु के परास्त करते हैं, तब हमे अपनी शक्ति या कर्मठता का अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि वास्तव मे परमेश्वर ही उसका विनाश करता है, हम परमेश्वर द्वारा प्रदत्त रक्षा द्वारा प्राप्त उत्साह और हिम्मत द्वारा अपने को पराभवकर्ता मान लेते हैं।

अर्थ पोषण – वनुष्यति क्रुध्यतिकर्मा। नि २–१२, युधा सप्रहारे। अभि दाति – दापलवने, दाति। दान् खण्डने।

(२) धनागम, आयोजन की सफलता और संग्राम विजय के लिए इन्द्र को सब याद करते हैं

यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते।
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः।।

साम० ३३७

ऋषि – देवता – छन्दासि पूर्व मन्त्रवत्।

अर्थ – (स्पर्धमाना) परस्पर स्पर्धा करने वाले, (तुरयन्त) शीघ्रता से अपना लक्ष्य प्राप्त करने के इच्छुक तथा (विप्रास) अपना मनोरथ पूर्ण करने वाले (क्षितय) मनुष्य (वृत्रेषु) धन प्राप्ति के निमित्त, (युक्तेषु) कृषि मे हल जोतने या अन्य आयोजनों मे तथा (शूरसातौ) आध्यात्मिक अथवा पार्थिव सग्राम मे (अपा उपज्मन्) अपने-अपने कर्मों के कार्यकाल मे (यम्) जिसे (हवन्ते) स्मरण करते हैं और (यम् वाजयन्ते) जिसे धन, अन्न अथवा शक्ति की कामना से अर्चना या याचना करते हैं। (स इन्द्र) वही पर परमैश्वर्यमय, ब्रह्म या परमात्मा ही इन्द्र है।

विशेष – इस मन्त्र मे तीन प्रकार के मनुष्यो द्वारा तीन प्रयोजनो के निमित्त परमेश्वर के स्मरण, उसकी अर्चना तथा उससे याचना की चर्चा है। इन तीन प्रयोजनों मे सभी कामनाए और याचनाए अन्तर्गत हैं।

अर्थ पोषण – वृत्र धननाम। नि० २–१०, शूसातौ सग्राम नाम। नि० २–१७

वाजयति अर्चतिकर्म। नि० ३–१४ वाज अन्ननाम। नि० २–७, बलनाम। नि० २–६

अज्मन – अजगति क्षेपण वो =कार्य काल मे।

(३) अहंकार त्याग कर आत्म समर्पण करने वाला ही मुझे प्राप्त करता है।

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्व देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इदेव मावदमन्न मदन्तमदन्तमद्मि।।

साम० ५६४

आत्मा। अन्नम्। त्रिष्टुप्।

अर्थ – परमात्मा 'अहम्' द्वारा इस मन्त्र में तीन चेतावनिया दे रहा है – (अहम्) मैं (ऋतस्य) सत्यज्ञान, सत्य नियमो का (प्रथमजा अस्मि) प्रथम उत्पादक हू। (देवेभ्य पूर्वम्) प्राकृतिक देवो की उत्पत्ति से पहले से विद्यमान हू। (अमृतस्य नाम) जीवन का स्रोत तथा जीवन द्वारा पदार्थ देता हू। (य मा ददाति) जो व्यक्ति अपने (अहंकार) को मेरे प्रति समर्पित करता है, (स इद् एव मा आवत्) वह निश्चय ही और केवल वही मुझे प्राप्त करता है। (अह अन्नम्) मैं भक्तों का भोजन हू, वास्तव मे भोगने योग्य अन्न मैं ही हू, क्योंकि मैं आध्यात्मिक अन्न हू। (अन्न अदन्त अद्मि) केवल प्राकृतिक भोग भोगने वालो को मैं खा जाता हू, भावार्थ है कि वे शीघ्र नष्ट हो जाते है।

निष्कर्ष – (१) परमात्मा, सर्वप्रथम, सर्वोत्पादक सर्वज्ञान प्रदाता और कर्मफल प्रदाता है। उसे मानना आवश्यक है क्योंकि मनीषियो को अन्त मे उसे मानना ही पडता है। (२) परमात्मा केवल आध्यात्मिक व्यक्तियो को ही प्राप्त अनुभूत होता है, प्राकृतिक भोगो में रत व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त किए बिना ही मर जाते हैं। (३) प्राकृतिक देवो=तत्वो से वह पूर्व है, अर्थात् उन की उत्पत्ति वही करता है।

विशेष – भोगो मे फसने वालों का हाल भर्तृहरि के शब्दो में कहे तो **'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः।'** होता है और उस के प्रति आत्मसमर्पण करने वाले आध्यात्मिक व्यक्तियो का हाल योगदर्शन के शब्दो में **'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'** अथवा यजुर्वेद के शब्दों में **'ऋतस्य तन्तुं विततंविचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत्।'** ऋत और सत्य के ताने बाने का विस्तृत विवेचन करने के अनन्तर उसे अनुभूति द्वारा देखा या पाया जा सकता है, क्योंकि वह सदा से था, त्रिकाल सत् होने के कारण। भू– प्राप्तौ।

इस मन्त्र मे प्राय पूर्व भाष्यकारो ने अमृत का अर्थ 'मोक्ष' किया है।

(४) हे इन्द्र! हमें दृढ संकल्प, साहस, ओज तथा समृद्धि दें

सहस्तन्न इन्द्रदद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन्।
क्रतुं न नृम्ण स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सहना कृधीनः।।

साम० ६२५

वामदेव। इन्द्रः। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशालिन् ! आप (अस्यमहत ईशे) इस महान् ब्रह्माण्ड राष्ट्र या पिण्ड के अधीश्वर है, अत हे (विरप्शिन्) महामहिम ! (न तत् सह ओज दद्धि) हमें, व वरेण्य मानसिक साहस व सहनशक्ति और आत्मिक ओज प्रदान करे। (च) और (क्रतुन नृम्णम्) हमारे कर्मो के अनुरूप अन्न तथा धन तथा सकल्प के अनुरूप मानसिक बल (स्थविर च वाजम्) और क्रतु=प्रज्ञा के अनुरूप स्थायी ज्ञान तथा ऐश्वर्य दीजिए। साथ ही (वृत्रेषु) ज्ञान, ऐश्वर्य और सदाचार की आवरक परिस्थितियो अथवा काम, क्रोध और लोम के साथ चल रहे सग्रामो में (न) हम (शत्रून् सहना कृधि) इन शत्रुओं का पराभव करे।

निष्कर्ष - परमेश्वर की व्यवस्था के बिना ब्रह्माण्ड मे, राज प्रमुख की व्यवस्था के बिना राष्ट्र मे, और अन्तरात्मा की प्रेरणा के बिना शरीर (पिण्ड) मे उत्साह तथा दु ख सहन की शक्ति और शत्रुओं के पराभव का सामर्थ्य उत्पन्न नहीं होता है। अत महा महिम इन्द्र को सदा स्मरण रखे हुए, उससे अपने कल्याण के लिए सकल्प, ज्ञान, ऐश्वर्य क्रियाशक्ति तथा शत्रुपराभव करने वाले सामर्थ्य की प्रार्थना करें।

अर्थपोषण – वाज – अन्नम्। नि० २–७, बलम्। नि० २-७ ज्ञानम् – वजगतौ, गतेस्त्रयो अर्थ क्रतु – कर्म। नि० २-१, प्रज्ञा। नि० ३-६, सकल्प।

(५) गाय सदृश शुचि व कर्मठ पत्नियां सदा अभ्युदय प्राप्त करें

सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वारूपाणि बिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः।
उरु पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इहस्त।।

साम० ६२६

वामदेवः। गौः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (गाव) गायों, उषाओ और वेदवाणियो के समान सबका धारण पोषण करने वाली, मातृकामा पत्नियो ! (सहर्षभा सहवत्सा) अपने श्रेष्ठ पतियो और उत्तम सन्तानो सहित (विश्वारूपाणि बिभ्रती) गृहस्थजीवन के लिए आवश्यक सभी रूपो को धारण करती हुई (द्व्यूध्नी) आध्यात्मिक और व्यवहारिक अथवा जग की लाज और मन की मौज दोनो का निर्वाह करने वाले ज्ञान दुग्ध से पूर्ण हृदय वाली बनकर, इस गृहस्थ जीवन में सदा (उदेत) अभ्युदय को प्राप्त करें (इह स्त) इस गृहस्थ जीवन में ऐसे रहो कि (अयलोक) यह लोक-आश्रम (व) तुम्हारे लिए (उरु) सब को अपने आश्रय से आच्छादित करने वाला तथा (पृथु) तुम्हारी कीर्ति का विस्तार करने वाला (अस्तु) हो और (इमा आप) इस आश्रम में रहकर किए जाने वाले सारे कार्य (सुप्रपाणा) सुगमता से और प्रकृष्टता से पूर्ण हों। ऋषभ् का अर्थ है श्रेष्ठ – पुरुषर्षभ की तरह। गौ का कोई भी प्रसिद्ध अर्थ लेकर, उसके अनुरूप इस मन्त्र का अर्थ किया जा सकता है। गावो विश्वस्य मातर।

(६) यज्ञ भावना से ही मनुष्य, भूरिदा, विश्पति और सूर्यसम दीप्त बने

अयं सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः।।

साम० १८४५

सुपार्णः। सूर्य, यज्ञोवा। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (अय यज्ञ) यह यज्ञमय परमेश्वर अथवा यज्ञभावना से युक्त पुरुष, अथवा यज्ञ (सहस्रा युक्ता परिवसान) अपने से सम्बद्ध हजारों योजनाओ अथवा व्यक्तियो को आश्रय प्रदान करता (आच्छादित करता) (सूर्यस्य भानु दाधार) सूर्य की दीप्ति को अथवा सूर्य समान दीप्ति को धारण करें। ऐसा व्यक्ति (सहस्र दा) सबको प्रसन्नता पूर्वक देनें वाला (शतदा) सौ वर्ष तक अथवा जीवन पर्यन्त देने वाला (भूरिदावा) और भरण पोषण के निमित्त प्रचुर मात्रा में देने वाला, और साथ ही (दिव धर्ता) दिव्य ज्ञान के प्रकाश का भी दाता बने, ताकि उस से सहायता या दान प्राप्त करने वाले अपथगामी न बन जाए। इस प्रकार वह व्यक्ति (भुवनस्य विश्पति) जैसे परमेश्वर ब्रह्माण्ड का पालक और रक्षक है, वैसे ही वह अपने भूभाग का पालक व रक्षक बने।

– शेष भाग पृष्ठ [illegible] पर

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का निधन, शोक सभा 1 मई को

स्व० श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु

दिल्ली के आर्यजगत ने अपना एक सुविख्यात आर्यनेता युवावस्था मे खो दिया है जिसके कारण उनका परिवार ही नहीं अपितु दिल्ली की समस्त आर्यसमाजे और अन्य सस्थाए शोक सतप्त हैं। आर्य समाज बिरला लाइन्स के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य बन्धु को अकस्मात् विगत् लगभग ४ माह से अस्वस्थता के गम्भीर दौर से गुजरना पड़ा और कैंसर रूपी काल ने गत् २० अप्रैल को उनकी आत्मा को हमसे छीन लिया। श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का नाम समूचे देश की स्वाध्यायप्रेमी जनता के लिए सुपरिचित है क्योकि सगठनात्मक और सैद्धान्तिक पक्षो पर उनके लेख अकसर सार्वदेशिक और अन्य आर्य पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते थे।

२४ अक्तूबर १६४६ को श्री राधाकृष्ण आर्य तथा श्रीमती शान्तिदेवी के परिवार मे अलवर भूमि पर जन्मे श्री जयप्रकाश का परिवार १६५२ मे दिल्ली आया जहा उनकी शिक्षा–दीक्षा आर्यसस्कारो के बीच सम्पन्न हुई। महात्मा हसराज महाविद्यालय से उन्होंने विज्ञान मे स्नातक डिग्री प्राप्त की। उनका विवाह आर्यसस्कारो से ओतप्रोत पुष्पा देवी से हुआ और अश्विनी आर्य नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति के बाद तीन आर्य कन्याए प्राप्त हुई– अजलि, गरिमा और दिव्या। अश्विनी आर्य वर्तमान में दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल मे प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

श्री जयप्रकाश की छवि मधुर भाषी एव सरल व्यक्तित्व की थी, वे साडियो के व्यापार मे उन्नति के पथ पर अग्रसर थे। कमला नगर व्यापार मडल के उपप्रधान थे। श्री जयप्रकाश आर्यसमाज बिरला लाइन्स के तथा बिरला लाइन्स विद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आर्यवीर दल दिल्ली के कोषाध्यक्ष तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य थे। पूर्व मे वे गुरुकुल कागडी के सचालन हेतु आर्य विद्या सभा के भी सदस्य रहे। बाल्यकाल से श्री जयप्रकाश आर्यसमाज की गतिविधियो मे बढ–चढ कर भाग लेते रहे। दिल्ली की ४ प्राचीन आर्यसमाजो दीवान हाल, सीताराम बाजार, नया बास तथा सदर की गतिविधियो मे तथा हर प्रकार की प्रतियोगिताओ मे शामिल होते रहे और उन्होने कई पुरस्कारो को जीतकर अपने जीवन को सुशोभित किया।

गत् २० अप्रैल को उनके देहावसान का समाचार सुनकर समूचा आर्य जगत स्तब्ध रह गया। ५१ वर्ष की अवस्था मे एक कर्मठ आर्य नेता का चले जाना उनके परिवार के लिए तथा समूचे आर्यजगत के लिए गम्भीर दुख का विषय है।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु के पार्थिव शरीर का अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके शरीर से भी अधिक वजन की सामग्री, घी तथा चन्दन आदि के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, चौ० लक्ष्मी चन्द, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक, श्री राजसिह भल्ला, डॉ० रविकान्त, श्री राम विलास खुराना, आचार्य देवव्रत तथा कई अन्य आर्य नेता उपस्थित थे।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन **१ मई, २००१ मंगलवार को दोपहर बाद ३ से ५ बजे तक बिरला लाइन्स विद्यालय के प्रांगण में किया गया है जो कि कमला नगर स्थित आर्य समाज बिरला लाइन्स के समीप है।**

– *विमल वधावन एडवोकेट*

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के यज्ञ एवं शिलान्यास समारोह के अवसर का विहंगम दृश्य

R N No 32387/77 Posted at N D.PS O on 26-27/04/2001 दिनांक २३ अप्रैल से २९ अप्रैल, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2001, 26-27 /04/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३९/२००१

पृष्ठ ६ का शेष भाग

तीन के दमन या उन्नयन ....

विशेष – इस मन्त्र का देवता सहिताओ में 'सूर्य' है, लेकिन अर्थ की दृष्टि से 'यज्ञ' अधिक समीचीन है।

निष्कर्ष – इस मन्त्र मे यज्ञ भावना के प्रेरणा है। इसे अपनाकर ही मनुष्य सूर्यवत् दीप्ति को धारण करे और परमेश्वरवत् विश्पति बने।

(७) शत्रुसेना गिद्धादि का भोजन बने और जनता लोभ तथा काम में फंसी रहे

कंका सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना। मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र वयांस्येनाननुसंयन्तु सर्वान्।।
साम० १८६४

पायुर्भारद्वाजः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (असौ सेना गृध्राणा अन्न अस्तु) हमारे शत्रुओ की सेना गिद्धो का भोजन बने, (एषा मा मोचि) उनमे से कोई न छूटे, (च अघहार ना) और विशेषकर इन्हे गुपचुप सहायता देना वाला कोई पापी तो किसी तरह न बचे। (कका सुपर्णा) बीभत्स गिद्ध और सुपर्ण मुर्गे बगुले आदि (एनान् अनुयन्तु) इन शत्रु सैनिको के पीछे लगे, (वयासि एनान् सर्वान् अनुसयन्तु) इसके अतिरिक्त कौए इत्यादि पक्षी भी इन शत्रुओ के पीछे रहें।

निष्कर्ष – (१) सामवेद यद्यपि शान्ति प्राप्ति और तदर्थ परमेश्वर की उपासना का वेद है, फिर भी उसका अन्तिम अध्याय शत्रुसेना के समूल विनाश का प्रेरक है, क्योकि शत्रु चाहे आध्यात्मिक हो, या आधिभौतिक, उनके समूल विनाश के बिना सम्पूर्ण शान्ति सम्भव नहीं।

(२) सामवेद के शत्रु विनाश वाले अध्याय मे स्वकीय मन्त्र केवल मात्र दो है। एक यह और दूसरा १८७१। इन दोनो मन्त्रो का सार यहँ है कि शत्रुओं में से कोई भी पापी न बचे हमारा सेनापति इन्द्र, कम से कम शत्रुओ के प्रमुख व्यक्ति को चुन चुनकर अवश्य मार दे (तेषानिन्द्रो हन्तु वर वरमा १८७१)

(३) कंक – बगुला (छल) सुपर्ण-मुर्गा, मोर तथा गरुड (अभिमान) गृध्र (लोभ) और वय वाय– कौवा (सुरतबन्ध) के प्रतीक हैं। ये चारो दोष या पाप शत्रुओ के पीछे सदा पडे रहे। हमारी सेनाए उनसे मुक्त रहे।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली- ६**

निर्वाचन समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत

प्रधान	–	श्री वेदपाल आर्य
मन्त्री	–	श्री सुरेन्द्र कुमार खुराना
कोषाध्यक्ष	–	श्री अशोक कुमार

आर्य समाज जलालाबाद जिला शाहजहांपुर

प्रधान	–	श्री सुन्दरलाल विद्यार्थी
मन्त्री	–	श्री कृष्ण आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री सजय कुमार

मातृभाषा से ही बच्चों में सच्ची सृजन शक्ति का विकास : श्री जयप्रकाश भारती

"बच्चे एक छोटे ब्रह्माण्ड के स्वरूप हैं। उनमें हर प्रतिभा समाविष्ट होती है, जरूरत है कि समुचित ढग से उन्हे सवारा जाए।" विज्ञान और सस्कृति के रूसी केन्द्र मे बाल साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर बाल मासिक पत्र 'नन्दन' के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने कहा कि भारत में बच्चो को अग्रेजी भाषा के माध्यम से सच्ची शिक्षा नहीं मिल सकती, केवल मातृभाषा ही उनमे सच्ची सृजन शक्ति पैदा कर सकती है। २१वीं शताब्दी बच्चों की शताब्दी घोषित की गई है, फलत इस सम्बन्ध में अभिभावकों से अधिक उत्तरदायिता की अपेक्षा है।"

आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली) के खेल उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बाकनेर का ५१वा वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प० धर्मव्रत शास्त्री ने वेदपाठ और सत्संग की महिमा पर, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक सभा ने शारीरिक विकास के साथ साथ आत्मिक विकास पर, प० आशानन्द भजनीक ने देश भक्ति व युवक निर्माण पर, स्वामी अग्निदेव भीष्म (हिसार) ने ब्रह्म की व्याख्या व व्यायाम पर, श्री लाल बिहारी तिवारी, सासद ने आर्यसमाज के समाज सुधार और देश उत्थान कार्यक्रम पर, महाशय रामप्रसाद ने बलिदानियों की देन विषय पर, डॉ० भीमसिह डागर ने आधुनिक शिक्षा पद्धति पर, वैद्य कर्मवीर व मा० पूर्ण सिह आर्य ने दूरदर्शन के दुष्प्रभाव एव युवकों के समाज राष्ट्र निर्माण विषय पर प्रभावशाली विचार रखे।

पद्मश्री सतपाल पहलवान के सानिन्ध्य में विशाल इनामी दगल का आयोजन किया गया, जिसमें सबसे बडी कुश्ती ५१०० रु० श्रीपाल (अखाडा सजय) और चादराम (गुरु हनुमान), २१०० रु० जोगिन्द (गुरु हनुमान) बिजेन्द्र (हरियाणा पुलिस), ११०० रु० जितेन्द्र (बाकनेर) मनोज (सोनीपत), सुनील (सतपाल), प्रकाश (महेन्द्र अखाडा), सोनु (सतपाल), नरेश (बाकनेर), जोगेन्द्र (सी० आई० एस० एफ०), सदीप (नाहरी), बाल्ले (नाहरी), राकेश (सोनीपत) की कुश्तिया बराबर रही। जगमन्द्र (बाकनेर) ने एक ही लगोट में पाच कुश्तिया जीती। इस दगल मे १०० से अधिक जोडो का फैसला हुआ। कबड्डी प्रतियोगिता आर्यसमाज बाकनेर सैंटर टीम ने जीती। सदीप राठी दौड मे प्रथम रहे।

अन्त में श्री मागेराम आर्य, प्रधान, आर्यसमाज, बाकनेर ने उत्सव की महान सफलता के लिए सभी को उनके भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

गुरुकुल है जहां, स्वास्थ्य है वहां

गुरुकुल स्पेशल केसरयुक्त च्यवनप्राश
बालक, बूढे, जवान सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर पौष्टिक रसायन

बच्चों, किशोरों एवं नवयुवकों के लिए ब्रेन टानिक गुरुकुल शंखपुष्पी सीरप

गुरुकुल पायोकिल
दांतों में खून आने से रोके, मुख की दुर्गन्ध दूर करे मसूढ़ों के रोग एवं ढीले दांत ठीक करे

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर: गुरुकुल कांगड़ी-249404 जिला - हरिद्वार (उ.प्र.)
फोन- 0133-416073 फैक्स-0133-416366

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (**दूरभाष** एव **फैक्स** ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक १५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ३० अप्रैल से ६ मई, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज मिण्टो रोड की व्यवस्था हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तदर्थ समिति गठित

आर्यसमाज मिण्टो रोड के आसपास बने सरकारी आवासीय भवनों को गिराने के बाद सरकार ने जिस प्रकार गैर-कानूनी तरीके से आर्यसमाज मन्दिर के भवन को भी गिरा दिया था, उससे देश भर के आर्यजनो की आक्रोश भरी प्रतिक्रियों को देखते हुए केन्द्रीय सरकार ने इस दबाव के तहत शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन का स्पष्ट निर्देश दिया कि मन्दिर के वहीं पर निर्माण की स्वकृति दी जानी चाहिए। इस कार्य में केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी, दिल्ली के दो पूर्व मुख्य मन्त्री श्री मदन लाल खुराना एव श्री साहिब सिह वर्मा तथा लोकसभा सदस्य प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। इनके अतिरिक्त, खान राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटिल आर्य सासदो सर्वश्री रासासिह रावत, रामचन्द्र बैंदा तथा रामचन्द्र वीरप्पा का भी प्रत्यक्ष सहयोग रहा।

आर्यनेताओ सर्वश्री स्वामी सुमेधानन्द प्रो० शेर सिह, वेदव्रत शर्मा, ज्ञानप्रकाश चोपडा, रामनाथ सहगल, तेजपाल मलिक, विमल वधावन, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, श्रीमती शकुन्तला आर्य, प्रिं० चन्द्र देव, चौ० लक्ष्मी चन्द, जगदीश आर्य, अरुण वर्मा एव विनय आर्य आदि ने सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी एव श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के आशीर्वाद से सम्पूर्ण आर्यजगत् के आन्दोलनकारी सहयोग से इस सारे विवाद को सुलझाने का कार्य किया।

२१ अप्रैल को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की पूर्व निर्धारित अन्तरग बैठक मे भी केवल आर्यसमाज मिण्टो रोड के विषय पर ही विस्तृत चर्चा होती रही। अन्तरग बैठक से प्राप्त अधिकारो का प्रयोग करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यसमाज मिण्टो रोड के लिए एक तदर्थ समिति का गठन किया जो इस प्रकार है –

प्रि० चन्द्र देव	**प्रधान**
श्री जगदीश आर्य	**उप-प्रधान**
तेजपाल मलिक	**मन्त्री**
विनय आर्य	**उप-मन्त्री**
अरुण प्रकाश वर्मा	**कोषाध्यक्ष**
सत्येन्द मिश्र	**सदस्य**
विमल वधावन	**सदस्य**
हसराज चोपडा	**सदस्य**
ब्र० राजसिह आर्य	**सदस्य**
वैद्य इन्द्रदेव	**सदस्य**
सजीव कोहली	**सदस्य**

यह तदर्थ समिति आगामी आदेश तक कार्य करती रहेगी। तदर्थ समिति के सदस्यों ने २३ अप्रैल को प्रथम बैठक में यह निर्णय लिया है कि दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों की जनता को जोडे रखने के लिए **आर्यसमाज मिण्टो रोड का साप्ताहिक सत्सग प्रत्येक रविवार सायकाल पाच बजे से सात बजे तक हुआ करेगा।** विभिन्न आर्यसमाजा के आर्यजन इस आर्यसमाज के स्थल पर दौरा करते रहते हैं। इस समाज का **दैनिक सत्सग पूर्ववत् सायकाल ६ से ७ बजे तक होता है।**

आर्यसमाज बुराड़ी के लिए तदर्थ समिति का गठन

दिल्ली सभा के प्रधान को प्रदत्त अधिकार के अनुसार स्वतन्त्रता सैनानी राधेश्याम त्यागी के नाम पर चल रही आर्यसमाज (राधेश्याम भवन) बुराडी के कार्य को सुचारू रूप से सचालन के लिए आगामी आदेश तक निम्न तदर्थ समिति का गठन किया गया है –

सर्वश्री ओमदत्त त्यागी	प्रधान
महावीर त्यागी	उप-प्रधान
शर्मानन्द त्यागी	उप-प्रधान
कृष्ण गोपाल शर्मा	मन्त्री
हरिओम त्यागी	उप-मन्त्री
उमेश त्यागी	उप-मन्त्री
दुलीचन्द गुप्ता	कोषाध्यक्ष
विनय कुमार	पुस्तकाध्यक्ष
कम्मेराम शिसोदिया	सदस्य
नानकचन्द त्यागी	सदस्य
ओकार सिह	सदस्य
हरफूल सिह	सदस्य
पतराम त्यागी	सदस्य
गोपाल आर्य	सदस्य
आनन्द प्रकाश गुप्ता	सदस्य

कच्छ के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में धर्मान्तरण का प्रयास विफल

गुजरात मे भूकम्प के बाद विश्व भर से राहत सामग्री व व्यक्ति सेवा हेतु आए हैं। हिन्दू सस्थाओ ने तुरन्त व पूरी ताकत से सहायता बाँटी परन्तु विश्व स्तर की अनुभवी सँस्थाओ ने करीब एक माह बाद कार्य शुरू किया। उन्होने तुरन्त विश्वभर से धन एकत्र किया व जब हिन्दू सस्थाए राहत सामग्री बाट कर खाली हो चुकी थी व थक चुकी थी तब इन सस्थाओ ने कार्य शुरू किया। ये सस्थाए सेवा के साथ धर्म बदलने के उद्देश्य से आयी थी। आक्सफलेम, वर्ल्डविझन, एफीकोर, एकशन इन्डिया आदि आदि नामो के साथ कार्य करने के लिए हर सस्था के पास २५-३० गाडिया, १५०-२०० कार्यकर्ता आ गये इनका सचालन चर्चे करती हैं।

आर्यसमाज गाधीधाम एक मजबूत केन्द्र है। ३६५ दिन सक्रिय व २४ घटे काम करता है, कार्यकर्ता आधी रात को भी आकस्मिक कार्य करने को तैयार रहते हैं। हमने अभी तक राहत कार्य जारी रखा है व पर्याप्त राहत सामग्री हमारे पास आती रहती है – बटती है। हमारी सक्रियता चर्चो को अखरती है।

सार्वदेशिक सभा ने हमे भूकप के तीसरे दिन ही अनाथ बच्चो व विधवा बहनो के लिए आश्रय स्थल खोलने का निर्देश दिया – जिसे खोलने मे सफलता मिली। यह कार्य सामाजिक जिम्मेदारी का था। साथ ही उद्देश्य यह भी था कि यदि हम उन्हे आश्रय नहीं देगे तो ये बच्चे व विधवाए चर्चो के आश्रय स्थल चले जाएगे – उनका धर्म बिक जाएगा।

गाधीधाम के अधिकारी जब मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे गए हुए थे। २७ मार्च को प्रात लौटते ही उन्हे गाधीधाम से ७० किमी दूर आधोई मे ईसाइयो द्वारा धर्मपरिवर्तन की सूचना मिली अत दोपहर बाद स्थानीय अधिकारियो श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल, श्री वाचोनिधि आर्य आदि व आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के श्री गिरीश खोसलाजी, पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या सूर्यादेवी जी, पटना के धुरधर विद्वान स्व० रामनारायण शास्त्रीजी की धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरीदेवी जी व आर्यो को दिल खोलकर दान देने वाले श्री टीकमचन्द आर्य के साथ सब आर्यजन वहा पहुचे।

गाव मे पहुचकर स्थिति का जायजा लिया – मामला गर्म था – चर्चा कर धर्मपरिवर्तन करने वाले बुनकरो के ३८ परिवारो से मिलने की योजना बनाई गयी। स्थानीय व्यक्तियो मे श्री प्रदीप जानी व जूनागढ के पास के सत मुक्तानन्दजी का पूर्ण मार्गदर्शन रहा। हमने गाव से १० कि०मी० दूर आक्सफलेम सस्था द्वारा खरीदे गये खेत पर दूसरे दिन पुन जाने की योजना बनाई व दूसरे दिन फिर पहुचकर बुनकरो से बातचीत की अदर की बाते जानी व उन्हे मुख्य धारा मे आने को समझाया। ईसाई कार्यकर्ताओ के साथ गरमागरमी हो गई।

शेष पृष्ठ ८ पर

बूढ़ी हो चली लोक-लाज

– आचार्य डॉ० संजय देव

लोकलाज अर्थात् लोक की या जग की लाज। लोक की लज्जा से लोग डरते रह है। जग क्या कहेगा इसकी चिन्ता हर किसी को रही हे।

वनवासी समाजो मे लोकलाज की अवहेलना करने वाले दण्डित होते रहे है। वनवासी अचलो से बाहर के क्षेत्रो मे लोकलाज या जग क्या कहेगा का अनुशासन अब नही है।

यह ठीक है कि लोकलाज का भय सज्जनो को ही विशेषकर रहा है। दुर्जनो ने लोकलाज की इतनी पर्वाह नही की है, किन्तु वे भी लोकलाज के प्रति सजग तो रहे है। जहा तक सम्भव हुआ, वहा तक वे लोकलाज की नजरे बचाते रहे है। नजरे बचा नही पाए है तो उन आखो मे धूल झोकने का प्रयास करते रहे है। अभिप्राय यह है कि दुर्जन भी लोकलाज की पकड मे आने से बचने का पूरा-पूरा प्रयास करते है। इन प्रयासो से लोकलाज की शक्ति का पता लगता है। दुर्जन भी इस शक्ति के कायल रहे हैं। इसकी अवहेलना वे पूर्णतया नही कर पाए है। सज्जनो की यह मान्यता रही है कि लोकलाज की बहुआयामी एव पारदर्शक दृष्टि के सामने कुछ भी छिपाता नही हे। दुर्जना की मान्यता इससे भिन्न रही है। य लोकलाज को भी छकाने मे विश्वास करते रहे है।

यह भी सही है कि नैतिक मूल्यो के विघटन के इस दौर मे लोकलाज की स्थिति अब पहले जैसी नहीं रही। लोकलाज की स्थिति अब उन बुजुर्गो जैसी हो गई है, जिनकी अपने घरो मे नहीं चलती। जिन आखो की शर्म पाली जाती थी, उन्हे अब आखे दिखाई जाती है। जो आदर एव श्रद्धा के पात्र थे, अब दया के पात्र बन गए हैं।

बाहुबल, धनबल, पदबल आदि इन बलो ने लोकलाज की छवि धूमिल कर दी। इन बलवानो की ही तूती अब बोलती है। इन बलवानो के सामने लोकलाज अब असहाय सिद्ध हो रही है। **इन बलवानो ने लोकलाज को गूगा बहरा एव अन्धा बना दिया है। लोकलाज की सारी तेजस्विता अस्ताचलगामी सूर्य जैसी होती जा रही है। लोकलाज देखकर भी उसे अनदेखा करने पर विवश है तथा सुनकर भी अनसुना करने के लिए अभिशप्त है।**

यह भी सही है कि लोकलाज को दबाने का प्रयास हर युग एव हर दौर मे हुआ है। **बलशालियो, दुर्जनो एव गलत काम करने वालो को लोकलाज हमेशा आख की किरकिरी की तरह खटती है। ये सदा इसकी आखो पर पट्टी बाधने, कानों मे पिघला शीशा उतारने एव इसका गला दबाने की कुचेष्टा करते रहे हैं, किन्तु ये अपने इन प्रयासो मे आज के युग की तरह सफल नहीं हुए हैं।**

अनाचार की बाढ सी आ रही है, फिर भी लोकलाज न सिर्फ टुकर-टुकर देख रही है बल्कि सह भी रही है। गलत काम करने वालो को लोकलाज की अब पर्वाह ही नही रही। लोक से अब कमजोरो को ही लाज आती है। ये ही लोक से डरते है। जग क्या कहेगा इसकी पर्वाह अब शक्तिहीन ही करत हे। शक्तिवान तो लोकलाज को मुह चिढाते हुए नाच रहे है। देश मे बडी अनाखी एव विषम स्थित है। लोकलाज का अकुश की मदाध हाथी तक को वश मे करता रहा था। अपनी हजार आखो से लोकलाज समाज की सब गतिविधियो पर नजर रखती रही थी। लोकलाज हमारे समाज की सम्मिलित बहुआयामी शक्ति थी तथा हर बुरे काम का रास्ता रोकती थी। लोकलाज की चलनी मे से हर किसी को निकलना पडता था। लोकलाज का बडा व्यापक एव सुव्यवस्थित तन्त्र था। यह उपयोगी तन्त्र हमारी परम्परा ने विकसित किया था। **खेद है कि अवमूल्यन की इस आधी मे इस अत्यन्त उपयोगी तन्त्र की भी चूलें हिल गई। लोकलाज के तेजहीन होने से सज्जनो का जीना दूभर हो गया तथा दुर्जनो की बन आई।**

यह सही है कि दुर्जनो के समाने सज्जन सदा विषम स्थिति मे रहे है, किन्तु यह भी सही है कि देवत्व जैसी उनकी सम्मिलित शक्ति असुरो का पराभव करती रही है। सज्जनो की इस सम्मिलित शक्ति का ही दूसरा नाम लोकलाज है। सज्जनो का चाहिए कि वे अपनी-अपनी शक्ति लोकलाज को दे तथा उसे फिर से तेजस्वी बनाए।

– ३४५, आर्यसमाज भवन, मलहारगंज, इन्दौर (म०प्र०)- ४५२००२

नव्य भव्य दिव्य दयानन्द

– अस्तअली खा मलकाण

आडम्बर अरु ढोग घने थे चहुदिशि मे घन ज्यो छाए।
सक्रामक उस युग मे श्रीमन विश्वप्रभा बनकर तुम आए।।

सत नहीं तुम महासत थ आर्यधर्म क अतुल चितेरे।
समाज मे व्याप्त आडम्बरो पर किए कठोर प्रहार घनेरे।।

सस्कृति के महा उद्धारक आर्यधर्म के सच्चे पालक।
वेद-उपनिषद व्याख्याता कर्ता वेद विधि के सुसचालक।।

दुर्गुण जो भी समाज व्याप्त थे इहलीला कर डाली उनकी।
मगलकारी हृदय प्रबल था, भाव-वीथिका अपनी धुन की।।

आर्ष ग्रन्थो के व्याख्याता, वेदपरक विषयो के ज्ञाता।
सत शिरोमणि समाज सुधारक, वेद वाड्मय विदित विधाता।।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रति पृष्ठ मे सत्यता का घोर विवेचन।
अध्ययन उपरान्त देख लो, अह्लादित होता कैसा मन।।

महा मनीषी गैरिक अचल अभिनव था व्यक्तित्व तुम्हारा।
बल विक्रम के महा धनी तुम, हुआ प्रभावित जग यह सारा।।

वेदो का जो सत्य रूप है, उसको तुमने किया उजागर।
यथार्थ रूप परिलक्षित करता, प्राची मे ज्यो उदित विभाकर।।

शास्त्रार्थ भी किए बहुत से, लेकिन मुह की कभी न खाई।
जिसने भी ललकारा तुमको, हुआ पराजित पीठ दिखाई।।

वेदो के विद्वान् भयकर, उपनिषदो के महा अध्येता।
वैयाकरण श्रेष्ठ निज युग के, अप्रतिम शास्त्रीय वेत्ता।।

वेद जगत मे सदा रहेगा, युगो-युगो तक नाम अमद।
श्रद्धा सुमन स्वीकार करो मम्, नव्यभव्य दिव्य दयानन्द।।

– ६, गली कायम नगर, डीडवाना (नागौर)

बोध कथा — ज्ञान की ज्योति

एक बार एक आलोचक ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से कहा – **"आप जिस वैदिक ज्ञान की गरीमा का बखान कर रहे हैं यदि आपको अंग्रेजी आती तो वह ज्ञान की ज्योति आप विदेशों में भी फैला सकते थे। आप विदेशो में भी जाने जाते।"**

स्वामीजी ने हसकर उत्तर दिया – **"लेकिन एक भूल आपसे भी हुई है, जो आपने सस्कृत नहीं पढी। अगर आपने पढी होती तो हम मिल कर देश का सुधार करते, उसके बाद विदेशो की ओर मुह करते। जो ज्ञान की ज्योति अपने घर में ही प्रकाश न कर सके, वह दूसरों के घरो का अन्धकार कैसे दूर करेगी?"**

स्मरण रहे कि उन दिनो अग्रेजी राज अपने यौवन पर था और यातायात के साधन भी विकसित नही हुए थे फिर भी स्वामी दयानन्द ने पूरे भारत देश मे हिन्दी और सस्कृत के माध्यम से ज्ञान की ज्योति सारे देश मे प्रदीप्त की।

– नरेन्द्र

त्रुटि की जानकारी : आप क्या करें?

अपनी त्रुटि का पता चलने के बाद उसे मिटाने मे थोडा भी समय नहीं खोना चाहिए। इसी में हम कुछ करते हैं, यही नहीं, बल्कि सच्चा काम करते है। इसके विपरीत आचरण करके अपना धर्म भूल जाना सचमुच बुरे से बुरा काम है।

– महात्मा गांधी

प्रभु तेजस्वी हैं : हम राष्ट्रवासी भी तेजस्वी हों।

अग्ने वर्चस्विनं कुरु। *अथर्व ३/२२/३*
प्रभु आप तेजस्वी हैं, मैं भी तेजस्वी बनू।
संघे शक्ति कलो युगे।।
कलियुग मे सघटन मे ही शक्ति होती है।
नायमात्मा बलहीनेन लभ्य.।
बलहीन पुरुषो को आत्मज्ञान सुलभ नहीं।
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
ऋ० २/४१/१२
प्रभु हमे सब ओर से निर्भय करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

सभी दिशाओं में पूरी सुरक्षा अपेक्षित

भारत के पूर्वोत्तर सीमान्त पर अप्रैल मास मे बगलादेश राइफल्स ने सीमावर्ती एक गाव पर जिस प्रकार कब्जा किया और सीमा सुरक्षा बल के १६ जवानो की नृशस हत्याए कर भीषण जघन्य व्यवहार किया है, उसने विश्व मानवता को झकझोर दिया है। बगलादेश ने इन चार दिनो मे भारत की वह सदभावना गवा दी जो उसने ३० वर्षो मे अर्जित की थी। घटना चक्र हमे चेतावनी दे रहा है कि देश का नाम बदलने से उसका चरित्र और व्यवहार नहीं बदला। उसने जैसा व्यवहार किया उससे उपयुक्त है कि वह अपना नाम पूर्वी पाक या पूर्वी तालिबान रख ले। वैसे देशवासियो को बगला दश का चरित्र उसी समय समझ लेना चाहिए था जब उन्होंने अपने महान नेता मुजीब की हत्या कर दी थी। यह सारा घटनाचक्र और जघन्य हत्याकाण्ड भारत को शिक्षा दे रहा है कि भारत को सभी दिशाओ मे पूरी सुरक्षा अपेक्षित है। १६७१ में पाकिस्तान को पराजित कर उसके एक लाख से अधिक सैनिको को कैद कर भारत ने पूरी सदभावना से शेख मुजीब को वहा का शासन सौंप दिया। पिछले दिनो का घटनाक्रम हमे चेतावनी दे रहा है कि विजय और बगलादेश के निर्माण के समय भारत को अधिक जागरुक होना चाहिए था। १६७४ के इन्दिरा गाधी – मुजीब समझौते मे दोनो देशो की सीमाओ को अधिक स्पष्ट, सुरक्षित और सुदृढ कर देना चाहिए था। खेद है कि दोनो देशों की सीमाओ को व्यवस्थित सुदृढ नहीं किया गया, फलत सीमावर्ती एक गाव पर पडोसी देश ने अधिकार कर लिया और हमारे सशक्त सैनिको को बन्दी बनाकर बुरी तरह से क्षत-विक्षत कर मार डाला। इन घटनाओ के लिए पडोसी देश की कोरी क्षमा याचना पर्याप्त नहीं। उसे उनके लिए क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। भविष्य मे स्थायी सीमा सुरक्षा की गारटी की स्थायी सन्धि करनी होगी। यह भी चिन्ता की बात है कि अभी तक पश्चिम से सीधे आक्रमण और आतकवादियो का स्थायी सकट था, अब पूर्व मे भी वैसा ही स्थायी सकट पैदा हो गया। इतिहास की सीख है कि जब हमे दो सीमाओ पर सुरक्षा सुदृढ करनी होगी तो वहा देश की सीमाओ पर अवस्थित दूसरे पडोसी देशों से भी पूरी सुरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। पश्चिमोत्तर मे कश्मीर, उत्तर मे नेपाल, पूर्व मे म्यामर और दक्षिण मे श्रीलका से लगती सीमाए राष्ट्र को सुरक्षित करनी चाहिए।

हमारे अपने पडोसी देशो से अच्छे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हो सकते है, परन्तु आज की सन्दिग्ध राजनीतिक परिस्थिति मे भारत सरीखे उन्नतिशील सवेदन पूर्ण राष्ट्र की स्थायी सुरक्षा उसी समय सम्भव है जब हमारे महान राष्ट्र की सभी दिशाओ मे पूरी सुरक्षा-व्यवस्था स्थायी रूप से आधुनिक रक्षा साधनो की दृष्टि से पूर्ण व्यवस्थित की जाए। अप्रैल माह मे असम के सीमावर्ती क्षेत्र मे एक भारतीय गाव पर बगलादेश का अधिकार और १६ सशस्त्र सैनिको का अपहरण और नृशस हत्याकाड राष्ट्र के सूत्र सचालको राष्ट्र नेताओं और कोटि-कोटि भारतीय जनता को चेतावनी दे रहा है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र मे हम भारतीय भूखण्ड और सशस्त्र सैनिको के रक्षा कार्य मे कहीं चूक गए हैं। भविष्य मे हमारा कोई भी पडोसी देश ऐसा राष्ट्र विरोधी अभियान न कर सके इसके लिए शासन और जनता को न केवल जागरुक होना पडेगा, प्रत्युत प्रत्येक भीषण और प्रतिकूल अवसर मे भी हमे स्थायी राष्ट्ररक्षा का उत्तरदायित्व पूर्ण कर सके इसके लिए भारत की स्थलीय, जलीय और नभ सेनाओ को न कवल सर्तक, सन्नद्ध और व्यवस्थित करना होगा, प्रत्युत उन्हे आधुनिकतम युद्ध प्रणाली, शस्त्रो और श्रेष्ठ नेतृत्व एव वीरता के तत्वो से सुसज्जित और पूर्ण करना होगा। अप्रैल माह मे मेघालय के सीमावर्ती क्षेत्र मे एक भारतीय गाव पर पडोसी देश का अधिकार और १६ सशस्त्र सैनिको का अपहरण और नृशस हत्याकाड हमे दे रहा है कि हमारी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा असुरक्षित है और सकट के क्षणो मे हमारे सशस्त्र सैनिको को अपने दायित्व के विषय मे कोई स्थाई निर्देश नहीं है।

पिछले महीने सीमावर्ती गाव की क्षति और हमारे सशस्त्र सैनिको का अपहरण और उनकी नृशस हत्या का घटनाचक्र राष्ट्र को सामयिक चेतावनी दे रहा है यदि हम सीमावर्ती प्रदेश और वहा तैनात सशस्त्र सैनिको का ठीक उपयोग करना चाहते हैं तो भारत राष्ट्र की सभी दिशाओ मे नवीनतम मापदण्डो के अनुरूप सुरक्षा करना चाहते हे तो सभी दिशाओ की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाए पूरी तरह चिन्हित, सुदृढ और नवीनतम सैनिक मापदण्डो की दृष्टि से सुरक्षित हो, साथ ही वहा किसी भी आततायी शत्रु के राष्ट्र विरोधी कार्य एव मसूबो का तुरन्त मुहतोड उत्तर देने की क्षमता नेतृत्व और सूझबूझ वाल स्थायी सीमा सुरक्षा वाल योद्धा आर सनानी भी रात-दिन सन्नद्ध आर नियुक्त हाने चाहिए। पिछले मास पूर्वोत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र मे भारतीय गाव की क्षति और अनेक सशस्त्र सैनिको का जघन्य नृशस हत्याकाण्ड राष्ट्र को सामयिक चेतावनी दे रहा है कि यद्यपि हमारा भारत राष्ट्र महान है और उसकी राष्ट्रीय सेनाए भी सख्या शक्ति और आधुनिक ससाधनो से विश्व की अग्रणी रक्षा सेना मे परिगणित की जाती है परन्तु सकट के समय हमारी असावधानता या किसी भी भूलचूक के कारण कुछ भी अनहोनी घट सकती है। ऐसी राष्ट्रीय दुर्घटना फिर न घटे इसके लिए राष्ट्र की सभी दिशाओ मे पूरी सुरक्षा अपेक्षित है, प्रत्युत वैसा हादसा न होने देने के लिए सीमा सुरक्षा पर सतत जागरुकता और सघटन अपेक्षित है। ❑

हिन्दुत्व जागा तो देशद्रोह भागा

आजकल मुम्बई के अडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन की चर्चा समाचार पत्रो मे खूब आ रही हैं। कुख्यात तस्कर दाऊद इब्राहीम के गिरोह में ही छोटा राजन भी तस्करी और हत्याओं का धन्धा करता था, किन्तु १६६३ मे मुम्बई में हुए बम विस्फोटों के द्वारा जब दाऊद इब्राहीम पाकिस्तान के इसारे पर भारत में नर–सहार करने लगा और सैकडो हिन्दू मारे जाने लगे तो छोटा राजन का हिन्दुत्व जाग उठा। लूट-खसोट मे दाऊद के साथ काम करने वाला छोटा राजन दाऊद द्वारा हिन्दुओ का नरसहार बर्दास्त न कर सका। हिन्दुत्व की अलख जगते ही उसमे राष्ट्रीय स्वाभिमान हिलौरें लेने लगा। अपने ही पुराने साथी दाऊद इब्राहीम को देशद्रोह का दण्ड देने का उसने प्रण कर लिया। अपने प्राणो की बाजी लगाकर वह दाऊद के दुर्दान्त आतकियो से जूझने लगा और कइयो को सदा की नींद सुला दिया।

ऐसे ही पिछले वर्ष कारगिल का युद्ध जब आरम्भ हुआ, जहा युद्ध के मोर्चे पर भारतीय सेना लड रही थी तो भारत के अन्दर आईएसआई ने दूसरे जिन अलगाववादी सगठनो से साठ-गाठ कर रखी थी वे भी भारत के विरुद्ध तोडफोड के काम मे लग गए। सेना को मोर्चो की ओर ले जाने वाली रेलगाडिया उडाई जाने लगीं। पाकिस्तान को भारत की सेनाओ की गतिविधियो की सूचनाए भेजी जाने लगीं। ऐसी स्थिति मे जब असम के उल्फा उग्रवादी भी पाकिस्तान के लिए यह कार्य करने लगे तो उल्फा के बहुत से हिन्दू सदस्यो का दिल अन्दर से कचोटने लगा। उनमे हिन्दुत्व जागने लगा और वे उल्फा के देशद्रोही कार्यो के विरुद्ध खडे हो गए। इस प्रकार असम मे उल्फा टूटती चली गई और उस के सैंकडो लोग आत्म समपर्ण तक कर गए।

वास्त मे हिन्दू धर्म भारत भक्ति सिखाता है राष्ट्र प्रेम सिखाता है। वीर सावरकर ठीक ही कहते थे कि 'हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। भारत की एकता का सबसे बडा आधार हिन्दू धर्म ही हे जहा-जहा हिन्दू धर्म क्षीण हो गया वहा-वहा भारत विरोधी शक्तिया सिर उठाने लगीं। भारत के ही वे भाग पाकिस्तान बन गए जहा हिन्दू कम हो गए। कश्मीर और नागालैंड मे अलगाववादी आतकवाद का कारण भी क्या यह नहीं है कि वहा हिन्दू धर्म क्षीण हो गया ?

– सुमन कुमारी अग्रवाल
३३४, सुनहरी बाग अपार्टमैन्ट, सै० १३, रोहिणी

तहलके का रहस्योद्घाटन

लगता है कि वाजपेयी सरकार राष्ट्रहितो की उपेक्षा कर केवल तहलका द्वारा उद्घाटित रक्षा घोटालो पर पर्दा डाल रही है। तहलका डॉट कॉम ने स्पष्ट कर दिया है कि किस मन्त्री ने सेना के किस-किस अधिकारी ने तथा किस किस बिचौलिए ने रक्षा सौदो मे भारी रकमे खा कर ऐसे हथियार खरीदे जो चाहे उत्तम न हो किन्तु जिनमे मोटी रिश्वत प्राप्त हो रही है। यदि रक्षा मन्त्री तथा उनके निकटस्थ लोगो पर ही ये आरोप लगे हो और ऐसे प्रमाणो का उल्लेख भी हो जिनसे रक्षा सौदो मे हुई बेईमानी और घूसखोरी की जाच बडी आसानी से हो सकती है तो भी सरकार सारी शक्ति दोषियो को बचाने और राष्ट्ररक्षा खतरे मे डालने वाले तत्वो की हिमायत कर रही है। आरम्भ मे सघ के प्रमुख श्री सुदर्शन ने तहलका द्वारा किए गए रक्षा घोटालो के भडाफोड पर उचित वक्तव्य दिया था उसी मार्ग पर सघ चले।

– डॉ० कैलाश चन्द्र, हिन्दू सस्कृति प्रतिष्ठान,
३३१, सुनहरी बाग अपार्टमैट, रोहिणी, दिल्ली

सामवेद के स्वकीय मन्त्रों का प्रकीर्ण छन्द सप्तकम् (६)

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) शुचिता और स्नेह द्वारा सबको सुख पहुंचाएं

आविमर्या आ वाज वाजिनो अग्मन् देवस्य सवितुः सवम्। स्वर्गां अर्वन्तो जयत। साम ४३५

वामदेव । वाजिना स्तुति । पुर उष्णिक्।

अर्थ – (मर्या वाजिन) मनुष्य मात्र का हित चाहने वाले शक्तिशाली पुरुष (सवितु देवस्य सव अग्मन्) प्रेरक और सुखप्रदाता परमेश्वर की प्रेरणा या इच्छा (अवि) प्रकट रूप मे जान लेते हैं। अत (अर्वन्त) उद्यमी मनुष्यो ! (स्वर्गा जयत) सुख दिलाने वाले उपायो-मार्गो व लोको को जीतो।

विशेष – छन्द – छत्र और यान (सवारी) का काम करते हैं। छन्द (नियत शब्द समूह) के बिना विचारो की यात्रा सम्भव नहीं। साथ ही छन्द शीतातपवर्षा की तरह अति से बचाने के लिए छत्र का कार्य करते हैं। उष्णिक से शुचिता और स्नेह की प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा मानव मात्र का हित साधा जा सकता है और उन पर आने वाली विपत्तियो का निवारण किया जा सकता है।

अर्थपोषण – मर्या – मर्येभ्यो मनुष्येभ्यो हितकरा। अर्वन्त – ऋगतो उष्णिक् – उत्–स्निह् प्रीतो – ष्णा शौचे से बनता है।

(२) भगवान् भाग्य की तरह अप्रत्याशित किन्तु समीचीन फल देता है

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम्।। साम ४४६

वामदेव । अग्निः। द्विपदागायत्री।

अर्थ – (अग्नि) अग्निनाम से अभिप्रेत, परमेश्वर प्रमुख नेता गुरु पिता आग इत्यादि प्रत्येक पदार्थ (भग न) प्रात कालीन सूर्य के समान अदभुत गुर्ण-कर्म- स्वभाव वाला है। वह (महोनाम्) महत्वाकाक्षी तथा पूजनीय पुरुषो के मनो मे (रत्नम्) आकाक्षा पूरक रमणीय भाव तथा सामर्थ्य, स्थापित तथा पुष्ट करता है।

निष्कर्ष – भगवान् भग्य की तरह अतर्क्य है। हमें अपनी महत्वाकाक्षाए महनीय बनानी चाहिएं। उनका हमे क्या फल मिलेगा, इसकी कभी चिन्ता नहीं करे, क्योकि वह सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।

(३) हे विश्व के देवो ! दूसरों का सुख देने के लिए मुझे सामर्थ्यवान् बनाएं

इमं वृषणं कृणुत्तैकमिन्माम् ।। साम ५६१

वामदेव। विश्वदेवाः। एकपदाजगति।

अर्थ – हे (विश्वदेवा) जगत् को चलाने वाली चेतन और जड सभी दिव्यताओ! (इम माम्) अपने इस प्रयत्नशील सच्चे उपासक को (एक इत्) अद्वितीय (वृषणम्) प्राणी मात्र के लिए सब तरह के सुखो की वर्षा कराने वाला (कृणुत) कर दो – बना दो।

निष्कर्ष – मेरी एक ही कामना है कि मै सदा सब के लिए सुख देनेवाल ही बना रहू। मैं कभी किसी के लिए दु ख का कारण न बनू।

विशेष – एक मात्र कामना को प्रकट करने के लिए छन्द भी एक पाद मे चुना है।

(४) मैं जहां और जब बोलूं, ऐसा बोलूं कि मुझे यश प्राप्त हो

यशो मा द्यावापृथिवी यशोमेन्द्र बृहस्पति। यशो भगस्य विन्दतु, यशो मा प्रति मुच्यताम्। यशस्व्याउस्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम्।। साम ६१२

वामदेव । लिगोक्ताः (विश्वदेवा वा)। महापक्ति (जगतीमेद)।

अर्थ – वामदेव तुल्य बनने वाला उपासक प्रभु से प्रार्थना करता है कि (द्यावा पृथिवी मा यश) द्यावा पृथ्वी पर रहने वाले सभी स्त्री-पुरुष अथवा इनके प्रतिनिधि मेरा मस्तिष्क और शरीर मेरे यश का कारण बने, (इन्द्र बृहस्पती मा यश) इन्द्र बृहस्पति अथवा उनके प्रतिनिधि रूप मे मेरा बल तथा ज्ञान मुझे यश दिलाने वाले हो, मैं कभी अपनी शक्ति या मति का दुरुपयोग न करू। (मा भगस्य यश विदन्तु) ऐश्वर्य, वीर्य कीर्ति श्री, ज्ञान और वैराग्य से प्राप्त होने वाला यश मुझे प्राप्त हो मेरा अपयश कभी न हो। (अह अस्यो ससद) मैं जिस भी ससद या गोष्ठी मे भाग लू (यशस्वी प्रवदिता स्याम्) उस का यशस्वी वक्ता बनकर निकलू।

विशेष – मध्यकाल मे ऐसा प्रचलन था कि नए वक्ता अपना भाषण देने से पूर्व इस मन्त्र का जाप करते रहते थे। इससे उनमे आत्म विश्वास और उत्साह उत्पन्न होता था।

(५) प्रकृति की प्रत्येक ऋतु या वस्तु रमणीय है, यदि उसका कालोचित प्रयोग हो

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।। साम ६१६

वामदेवः। ऋतुः। पंक्तिः।

अर्थ – (वसन्त इत् नुरन्त्य) वसन्त ऋतु निश्चय ही रमणीय है। (ग्रीष्म इत् नुरन्त्य) ग्रीष्म ऋतु भी अवश्य विराम कराने के कारण आराम देने वाली है। (वर्षाणि अनु) घनघोर बरसात के बाद आने वाली (शरद हेमन्त शिशिर इत् नुरन्त्य) शरद्, हेमन्त तथा शिशिर भी निश्चय से रमणीय हैं। प्रारम्भ मे प्रत्येक ऋतु अच्छी लगती है। समाप्त होते हुए प्रखरता के कारण हम उससे घबरा जाते हैं, किन्तु यह प्रखरता ही आने वाली ऋतुओ को रमणीय बनाती है। छान्दोग्य उपनिषद् २–१६–२ मे कहा है – ' ऋतु न निन्द्यात् तद्व्रतम्।

निष्कर्ष – (१) प्रत्येक ऋतु रमणीय और उपयोगी है। ऋतु की प्रखरता के कारण उसका तिरस्कार या दोष दर्शन न करके, उसकी उपयोगिता और मनोरमता का विचार करके उसका आनन्द लेना चाहिए। (२) इससे मनुष्य मे सहन-शक्ति बढती है और दूसरो के दोषो की उपेक्षा करके, उनके गुणो को ग्रहण करने की प्रवृत्ति बढती है। (३) गीता के शब्दो में हमे 'यदृच्छालाभसतुष्ट' बनना चाहिए अर्थात् 'जाहि विध राखे राम ताहि विध रहिए' को अपने जीवन का आदर्श समझना चाहिए। (४) यह मन्त्र सकेत करता है कि वैदिक वर्ष का प्रारम्भ वसन्त ऋतु या चैत्रमास से होता है।

(६) इन्द्र की (वेद) वाणी – ज्ञान, वसु, रमण तथा प्रेरणा प्रदायिनी है

सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी।। साम १६५४

शुनः शेष आजीगर्तिः। इन्द्रः। एकपदापंक्तिः।

अर्थ – हे (इन्द्र) परमैश्वर्य शालिन् प्रभो! आपकी स्वभावजन्य वृत्ति अथवा ज्ञानमयी वेदवाणी (सुमन्मा) उत्तम ज्ञान प्रदात्री है, (वस्वी) जीवन के लिए आवश्यक वसु - पदार्थो को देने वाली है, (रन्ती) स्वय रमणीय तथा प्रत्येक क्रिया को रमणीय बनाने वाली और (सूनरी) उत्तम प्रेरणाए देने वाली है।

निष्कर्ष – परमेश्वर की वाणी द्वारा प्रदत्त निर्देशों का पालन करने से मनुष्य सदा सन्तुष्ट, तृप्त, आत्म मगन रहता है। उसे किसी की अपेक्षा नहीं रहती। कोई कामना शेष नहीं रहती। कामना का शेष न रहना ही मोक्ष है। इसलिए कहा है–

ओंकारं बिन्दु संयुक्तं कामदं मोक्षदं चैव।
सदा ध्यायन्ति योगिनः ओंकाराय नमो नमः।।

क्योकि वही कामना उत्पन्न करता है, और वही कामनाओ से मुक्त निष्काम बनता है।

(७) हमारे शत्रु भोगों द्वारा अन्धे तथा द्विविधा द्वारा छिन्न मस्तक बने रहें

अन्धा अमित्रा भवता शीर्षाणोऽहय इव।
तेषा वो अग्निनुन्नाना मिन्द्रो हन्तुवर वरम्। साम १८७१

शासो भारद्वाज । इन्द्र । अनुष्टुप्।

अर्थ – हे (अमित्रा) किसी से स्नेह करने वाले स्वार्थी और आसुर शत्रुओ! (अन्धा भवत) काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर मे किसी एक मे भी लिप्त रहने के कारण अन्धे बने रहो, तुम्हे वास्तविक स्थिति का कभी ज्ञान न होने पाए। अथवा (आशीर्षाण अहय इव) मस्तक कटे सापो की तरह छटपटाते रहो किन्तु हमारा कुछ भी न बिगाड सको। (अग्निनुन्नाना तेषाव) सकल्पाग्नि से रिक्त हुए तुम्हारे मे से (वर वरम्) चतुर, सामर्थ या प्रतिरोध करने की क्षमता रखने वाले उत्तम लोगो को चुन-चुन कर (इन्द्र हन्तु) हमारा राजा या सेनापति नष्ट कर दे।

निष्कर्ष – (१) आजन्म शत्रुओ की प्रजा सुरा, सुन्दरी तथा सम्पदा के भोग और प्रलोभन मे डालकर, कामान्ध तथा लोभान्ध बना देना चाहिए। (२) शत्रुओं की सेना में हमारे आग्नेय अस्त्रो से भगदड मच जाने पर उनके उत्तम समर्पित वीरों को चुन-चुन कर समाप्त कर देना चाहिए ताकि भविष्य मे वे हमारी ओर कुदृष्टिपात की हिम्मत न कर सकें। (३) इस तरह उनकी अवस्था सिरकटे सापो की तरह बन जाए, अर्थात् वे तडफडाहट चाहे जितनी करते रहे, किन्तु हमारा कुछ न बिगाड सके। (४) हमारे शत्रुओ का मस्तिष्क अपने नेताओ की राष्ट्रभक्ति के प्रति द्विविधाग्रस्त होने के कारण भिन्न मस्तक सा बना रहे। (५) हमारे शत्रुओ की सेना, बुगलो, मुर्गों तथा गिद्धो का भोजन बने और शत्रुओ की जनता काम क्रोध और लोभों मे फसी रहे।

कका सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्न मसापस्तु सेना। साम १८६४

– श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली-६

मूर्ति तोड़ना ही इस्लामिक शिक्षा

– पं० महेन्द्र पाल आर्य

पिछले कुछ सप्ताहों से अखबारो और दूरदर्शन मे चर्चा का विषय बना हुआ है – **"अफगानिस्तान में तालिबानों द्वारा बुद्ध प्रतिमा को तोड़ा जाना"।**

सत्य तो यह है कि, तालिबानो के हाथ मूर्ति तोडना कोई नई बात नहीं है, क्योकि विश्व के आगन मे जब इस्लाम का जन्म हुआ,' तो इस्लाम के जन्मदाता ने एक योजना बनाई। वह योजना दो, दस या दो-चार हजार वर्षों के लिए नहीं, अपितु यह योजना उस समय तक के लिए , कि जब तक इस्लाम को धरती पर रहना है। आश्चर्य की बात है कि यह योजना अल्लाह के नाम से बनाई गई।

इस्लाम के प्रवर्त्तक हजरत मुहम्मद साहब ने इस्लाम को फैलाया एक हाथ मे तलवार दूसरे हाथ मे कुरान लेकर, क्योकि इस्लाम का लक्ष्य है – दारुल हरब (रणक्षेत्र) गैर मुस्लिमो के राज्य को दारुल इस्लाम (इस्लामिक राज्य) मे बदलना। जिसका जीता जागता प्रमाण ईरान ईराक, इण्डोनेशिया आदि देश हैं।

हजरत मुहम्मद ने अपने जीवन काल मे कुरान तथा अल्लाह का हवाला देकर अनेक लडाइया लडीं यहा तक कि गैर मुस्लिमो से लडते-लडते अपने दात भी तुडवाए थे।

कुरान जो कलाकुल्लाह के नाम से मुसलमानो की मान्यता है जिसमे कुल ६६६६ आयते है और एक हजार से अधिक आयतो मे गैर मुस्लिमो को मारो-काटो, लूटो, पीटो की बाते हैं, यहा तक कि जब तक अल्लाह दीन अर्थात् इस्लाम दुनिया मे फैल न जाए, कतिलुहुम हत्ता ला तकून फितना तुई व या कू नदीन लिल्लाह, दुनिया में जहा भी इस्लाम फैला है आधार यही है।

पैगम्बरे इस्लाम से पहले भी पैगम्बर हजरत इब्राहीम ने एकेश्वरवाद का ही प्रचार किया, अपने को अल्लाह का पैगम्बर मानने को कहा तथा मूर्ति पूजने से रोका। इब्राहीम के पिता अजर मूर्ति पूजक व मूर्तिकार ही थे।

एक बार ईद के दिन अजर ने पुत्र इब्राहीम को घूमने के लिए चलने को कहा पर उसने मना किया, जब परिवार तथा गाव के सभी लोग घूमने को चले गए तो इब्राहीम ने मन्दिरों की सभी मूर्तियो को तोडकर एक बडी मूर्ति छोड दी और उसके कन्धे पर कुल्हाडी रख दी, शाम को जब सारे लोग लौट आए और मन्दिर गए तो देखा मूर्तिया टूटी पडी हैं। मात्र एक ही मूर्ति कन्धे पर कुल्हाडी लिए खडी है।

लोग समझ गए इब्राहीम मूर्ति पूजने से हमे रोकता है, अत उसी पूछना चाहिए। इब्राहीम से पूछने पर उसने कहा जो कुल्हाडी लिए खडे है उस मूर्ति से ही पूछो। उस जमाने से अब अन्तर इतना है कि तालिबानो ने मूर्ति तोडने मे कुल्हाडी को छोडकर, तोप तथा राकेट का सहारा लिया इतना अन्तर अवश्य हुआ है।

अगर देखा जाए तो इब्राहीम के काल मे राकेट तथा तोप तो थे नहीं, वरना उस समय भी ऐसा ही होता।

तालिबानो मे अपने पूर्वजो का ही अनुकरण किया है, क्योकि हर मुसलमान व ईसाई को हजरत आदम से ईसा तथा मुहम्मद को पैगम्बर व अल्लाह का रसूल मानना पडता है, विशेषकर इब्राहीम वश के ही वश मे प्रत्येक मुसलमान को मानना पडता है।

हजरत इब्राहीम की दो पत्निया थी, उनसे दो पुत्र हुए इस्माईल व इसहाक। इसहाक के याकूत इनके युसुफ व बुनियामीन और हजरत सुलैमान, मूसा आदि नबी हुए।

काबा हजरत इब्राहीम का स्थापित किया हुआ है, इब्राहीम के वश कुरैश (कस्सा) नामक व्यक्ति हुए, इसी कुल मे हजरत मुहम्मद का जन्म होने हेतु कुरेश वशीय कहलाए। हजरत कुरैश काबे के प्रथम खलीफा थे। काबे मे खलीफाओ की परम्परा निरन्तर आगे बढती रही। हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व इनके पिता अब्दुल्ला काबे के खलीफा थे। अब्दुल्ला के खलीफा होने के समय काबा पुन शिवालय तथा उसमे विभिन्न प्रतिमाओ को सख्या तीन सो साठ हो चुकी थी।

खाना काबा से उन प्रतिमाओ को नष्ट करने हेतु हजरत मुहम्मद साहब ने अपने पूर्वज हजरत इब्राहीम का ही अनुकरण किया– जो आज अफगानिस्तान मे तालिबान ने किया, मूर्ति तोडना तो इस्लाम वालो को विरासत मे ही मिला है। मात्र मर्ति तोडना ही नहीं, अपितु पाकिस्तान भी जो आतकवादी तैयार कर भारत भेज रहा है, यह शिक्षा भी इस्लाम की ही है। हजरत मुहम्मद पैगम्बरे इस्लाम ने मुसलमानो से जो कहा, बुखारी शरीफ हदीस मे किताबुल जिहाद के प्रथम मे हदीस नम्बर ४६ बाब ५१ जिसका अर्थ है अब्दुल्ला इब्ने मसयुद ने हमारे लिए उत्कृष्ट कार्य क्या है? कहा – "समय पर नमाज पढना। फिर पूछा और तो कहा माता-पिता की सेवा करना। फिर पूछा और, तो कहा अल्लाह के दीन को फैलाने हेतु अल्लाह के रास्ते मे जेहाद करना।"

आज ओसामा बिन लादेन हो या तालिबानो द्वारा किया जा रहा अत्याचार हो या पाकिस्तान द्वारा पैदा किया जा रहा आतक हो, यही इस्लामी शिक्षा है।

जहा तक भाईचारे की आत है वह तो इस्लाम मे है ही नही। इस्लाम के रसूलो ने अपने चाचा-ताऊ, भाई-भतीजो से भी लडाइया लडीं। इतिहास साक्षी है ६८० विक्रमी मे बदर मे लडाई हुई मुहम्मद साहब के चाचा अबूजहल ने अबुलहब को मारा। ६८२ विक्रमी– मुहम्मद साहब ने खाई मे निवास करने वालो को मारकर फतह की। ६८३ विक्रमी मे उहुद की लडाई मे मुहम्मद साहब ने बरछे से ओबई को मारा किन्तु इब्ने उभैया ने पत्थर मारकर मुहम्मद साहब के दात तोड दिए।

६८४ विक्रमी मे मुहम्मद साहब ने वनीमस्तल्क को लूट लिया। सन् ८ हिजरी मे मुहम्मद ने मक्का आकर सगे असबद को छोडकर सभी मर्तिया तोड डाली तथा स्वय को अल्लाह का रसूल घोषित किया।

इन्हीं शिक्षाओ को अपनाया बाबर और औरगजेब ने भी। यह कहना सरासर धोखा है कि कुरान तथा इस्लाम मे मूर्ति तोडना मना है।

– वैदिक प्रवक्ता, आर्यसमाज आर्यपुरा, पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली- ७

धूम्रपान छोड़ने के फायदे

– राजेन्द्र नाथ शर्मा

अब यह पूरी तरह सिद्ध हो चुका है कि धूम्रपान करने वाला देर-सबेर किसी न किसी रोग का शिकार हो जाता है। सिगरेट, बीडी पीने वालो का हाजमा खराब हो जाता है, उसे भूख कम लगती है। उसे शौचालय मे देर तक बैठना पडता है। कई लोगो को सास की बीमारी औरें कइयो को उच्च रक्तचाप हो जाता है। क्योंकि प्रत्येक सिगरेट के पीने से ५ से १० पाईन्ट तक रक्तचाप बढ जाता है। धूम्रपान करने से दिल की बीमारी भी हो सकती है। फेफडो का कैंसर भी हो सकता है और धूम्रपान छोड देने के बाद फायदा होना शुरू हो जाता है। विशेषज्ञो का कहना है कि धूम्रपान छोड देने से –

२० मिनट बाद रक्तचाप सामान्य हो जाता है, नब्ज भी सामान्य हो जाती है तथा हाथ-पैर का तापमान भी सामान्य होने लगता है।

८ घण्टे बाद खून मे कार्बन मोनो आक्साइड की मात्रा सामान्य हो जाती है। खून मे ऑक्सीजन (प्राणवायु) का सार भी सामान्य हो जाता है।

२४ घण्टे बाद हार्टअटैक की सम्भावना कम हो जाती है।

४८ घण्टे बाद सूघने व चखने की क्षमता बढ जाती है। चलना-फिरना पहले से आसान हो जाता है।

२ सप्ताह से ३ सप्ताह में शरीर मे खून के बहाव में सुधार हो जाता है। फेफडो के काम करने की क्षमता ३० प्रतिशत बढ जाती है।

एक साल बाद दिल की बीमारी की सम्भावना धूम्रपान करने वालो की अपेक्षा आधी रह जाती है।

यद्यपि इसकी लत के बाद सोफ, मिश्री कूटकर मिलाकर खाने की आदत मे कमी हो जाएगी। पाचन शक्ति बढ जाएगी वैसे होम्योपैथिक दवाई लेने से भी लत छूट जाती है।

– २४६/६, शास्त्री नगर, मेरठ- २५०००२ (उ०प्र०)

भूकम्प पीडित गुजरात में आर्यसमाज का सहायता कार्य
आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा राहत-बचाव के साथ दूसरे दायित्वों का निर्वाह

आर्यसमाज गाधीधाम के प्रधान पुरुषोत्तम भाई पटेल और मन्त्री वाचोनिधि आर्य ने सूचना दी है के २६ जनवरी को गुजरात और विशेषकर कच्छ जिले ो विनाशकारी भूकम्प आया जिसमे ६०-७० हजार लोग ृत्यु के ग्रास बन और लगभग इतने ही लोग अपग हो ए। अरबो रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई। सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने आर्यसमाज गाधीधाम को भूकम्प सेवा का केन्द्र नाया। मलबे से जीवित, मृतक निकाले गए। ३-४ दिन ाद से ही पूरे देश से आर्यो के दल सेवा हेतु आने लगे। ूरे कच्छ क्षेत्र मे आर्य समाज ने रहत सामग्री बटवाई। आर्यसमाज द्वारा राहत समग्री आई ही, साथ ही दुबई जापान दक्षिण अफ्रीका, मस्कत आदि से करीब ६० ट्रक राहत सामग्री आर्यसमाज गाधीधाम भेजी गई। केवल आर्यसमाज गाधीधाम ने १७५ ट्रक राहत सामग्री बाटी। सीधे कच्छ में पहुचकर आर्यदलो ने भी ४०-५० ट्रक बाटे। देश भर से आर्यजन आर्य अग्रणी स्थिति का मुआयना करने पधारे, स्थानीय कार्यकर्ताओं का मनोबल बढाया। आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने जहा राहत व बचाव कार्य के साथ दो विशेष कार्य किए – १ मलबो से करीब १००० शव निकाले व उनकी घी व सामग्री से अत्येष्टि की। इस कार्य को करने से अन्य सस्थाए कतरा रहीं थीं क्योकि पूरा दिन शवो के बीच दुर्गन्धमय वातावरण मे बीमार होने का भय था। २ आर्य विद्वानो ने पर्यावरण शुद्धि हेतु गाव-गाव नगर-नगर यज्ञ करवाए साथ ही गाव वाले को सान्त्वना भी दी।

जनता के साथ-साथ सरकारी विभागो ने भी हमारे कार्यो की प्रशसा की। कलेक्टर ने आर्यसमाज गाधीधाम को बुलाकर तीन गाव राहत कार्य करने हेतु दत्तक दिए। हमारे कार्य सामर्थ्य की चर्चा श्री अरुण जेटली जी (केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री) के सामने भी हुई – उनसे मिलाकर हमने बाल सदन व नारी निकेतन खोलने हेतु जमीन मागी। सार्वदेशिक स्तर पर प्रयास हुआ व सफलता मिली। १२ हजार वर्गमीटर जमीन असहाय बच्चो व विधवा बहनो हेतु प्रदान की जा रही है जिसमें ३ करोड रुपयो के खर्च से असहाय बच्चो व विधवा बहनो का पुनर्वास किया जाएगा। योजना का नाम 'जीवन प्रभात' रखा गया है।

वैसे जो पुनर्वास हेतु दत्तक लिए जा रहे हैं लेकिन बच्चो व विधवाओ के पुनर्वास की ओर आर्य समाज का विशेष ध्यान गया है जो गाव के पुनर्वास से भी ज्यादा जरूरी है। इन असहायो की जीवन भर सहायता/पालन आर्यसमाज करेगा।

सभी दाताओ से निवेदन है कि अपनी ओर से, आर्यसमाज की ओर से दान 'जीवन प्रभात' योजना के अन्तर्गत 'आर्य समाज गाधी धाम चेरिटेबल ट्रस्ट' के नाम ड्राफ्ट/चेक से 'आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, झण्डा चौक के पास गाधी धाम (कच्छ) – ३७०२०१ पर भेजे। ५१००० रुपये से ज्यादा के दाता का नाम सगमरमर पत्थर पर लिखा जाएगा अथवा बालक का मासिक २००० रुपये खर्च के सहयोग का सकल्प भी किया जा सकता है। दान आयकर के अन्तर्गत १०० प्रतिशत आयकर मुक्त है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी को विद्या पढ़ाई – जाहिदा बेगम

आर्यसमाज हुरहैडा, जिला भरतपुर (राजस्थान) मे ३१ मार्च से १ अप्रैल, २००१ (शनिवार, रविवार) तक वेद प्रचार एव यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर प्रभातफेरी भी निकाली गई। वेदप्रचार रामारोह की अध्यक्षता राजस्थान के कृषि मन्त्री श्री तैयब हुसैन की सुपुत्री श्रीमती जाहिदा बेगम ने की।

इस समारोह मे आर्यजगत के कवि एव वैदिक विद्वान् प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य, ग्राम बहीन (फरीदाबाद) ने भजनोपदेश मे महर्षि दयानन्द जी को मानवता का सच्चा सपूत बताया, जिन्होने सारे ससार को वेदो का प्रकाश दिखया। श्री निर्भय ने कहा कि अगर महर्षि दयानन्द ससार मे न आते तो कहीं भी राम, कृष्ण, ऋषियो-मुनियो को मानने वाले नजर न आते तथा सकल जगत मे विधर्मी ही विधर्मी नजर आते। उन्होने कहा कि अगर सुख चाहते हो तो सब वैदिक धर्मी बन जाओ, अन्यथा पछताना पडेगा।

श्रीमती जाहिदा बेगम ने महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज की भारी प्रशसा की और कहा कि यदि स्वामी दयानन्द इस युग मे न आते तो नारी जाति को विद्या पढने का अधिकार न मिलता। श्रीमती जाहिदा बेगम ने आर्यसमाज जुरहैडा को १०१ रुपये भेट किए। श्री ओमप्रकाश आर्य ने भी २५१ रुपये का सात्विक दान दिया।

श्री मगलदेव आर्य भजनोपदेशक तथा श्री जयदेव आर्य (बहीन फरीदाबाद) के सुमधुर भजनो ने श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर दिया। शान्तिपाठ तथा प्रसाद वितरण के बाद वेदप्रचार कार्यक्रम का समापन हुआ।

भेदभाव छोड़ आपसी मिलन का पर्व
वातावरण की शुद्धि के लिए यज्ञों की महत्ता

कानपुर। "होली सामाजिक समानता और खुशी का एक आदर्श राष्ट्रीय त्यौहार है। इस पर्व पर सभी लोग मित्रो से ही नहीं, बल्कि ऊच-नीच, छोटा-बडा, अमीर-गरीब का विचार छोड कर सब से गले मिले। इस पर्व पर वर्ष भर के भरण-पोषण के लिए आवश्यक अन्न की फसल के तैयार होने की खुशी भी देशवासियो के हृदय मे रहती है। फाल्गुन का यह मास हमारे देश के लिए मस्ती और उल्लास से भरा हुआ प्रतीत होता है।" उक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास ने आर्यसमाज गोविन्द नगर मे होली मिलन समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

श्री आर्य ने कहा कि होली, दिवाली, बसन्त पचमी आदि मौसमी त्यौहार हैं। वैदिक काल मे ऋतु परिवर्तन के अवसर पर वातावरण की शुद्धि के लिए सामुहिक बृहद् यज्ञो का आयोजन किया जाता था। होली उसी का बदला हुआ रूप है। आज जो लोग एक-दूसरे के ऊपर रग गुलाल आदि कीचड, गोबर, आदि डालते हैं यह हमारे देश की परम्परा नहीं।

समारोह मे स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, फ सत्यकेतु आर्य, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोगा, वीरा चोपडा सरोज अवस्थी आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

डॉ० द्विवेदी जी की पुस्तक 'वेदों में राजनीति शास्त्र' पुरस्कृत

ज्ञानपुर (भदोही) वैदिक विद्वान डॉ० कपिल देव द्विवेदी की पुस्तक "वेदो मे राजनीति शास्त्र" पर उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान द्वारा पुरस्कार की घोषणा की गई है। उन्हे आठ हजार रूपये एव प्रशस्ति पत्र से से सम्मनित किया जाएगा।

– मन्त्री, विश्वभारती अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर

भारत अन्तरिक्ष शक्ति बना

श्रीहरीकोटा। १८ अप्रैल के दिन भारत के पहले भूसमकालिक जी एस एल वी उपग्रह प्रक्षेपण यान ने सफल उडान भरी। सटीक प्रक्षेपण के बाद जी एस एल वी ने १५४० किलोग्राम भार का सचार उपग्रह जी सैट पृथ्वी की भूसमकालिक हस्तान्तरण कक्षा मे स्थापित कर दिया। उससे इसरो के ब्रुनेई स्थित भूकेन्द्र को जी सेट एक से सिगनल मिलने भी शुरु हो गए हैं।

जी एस एल वी के प्रक्षेपण और सचार उपग्रह के कक्षा मे सफल प्रक्षेपण से भारत अमेरिका रूस चीन जापान और यूरोपीय सघ के उस सफल प्रतिष्ठित समूह में सम्मिलित हो गया जिन्होंने भूकक्षा में अपने अन्तरिक्ष यान प्रतिष्ठित किए हुए हैं, इस प्रकार भारत एक अनरिक्ष शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बन गया है। इससे उसे करोडो रुपयों के विश्व-अन्तरिक्ष वाणिज्य मे भाग लेने का सुअवसर मिल गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– सुन्दरलाल प्रहलाद चोधरी

म – मनुज को सुसस्कारित करने, देवरूप था आपका अवतार।
ह – हर अधविश्वास आडम्बर मिथ्यावाद का उतारा भू से भार।।
र् – रवि सम प्रकाश पुज बन, जगति भर को दिया वैदिक ज्ञान का सार।
षि – षिष्ट दिव्य सदाचार बिना, धरा पर पशु तुल्य जीवन है बेकार।।
द – दशों दिशा मे गूज रहा, ओ३म् नाम है निज करतार।
या – याद रखो "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को, आर्य बन करो उद्धार।।
न – नव सृजन करो भावी पीढी का, हो आत्मज्ञान और भवपार।
न्द – नर-नारी बने श्रेष्ठ, मिट जाए जग से अनीति अत्याचार।।
द – दमन करो इन्द्रियो का, इच्छित वासनाओ को दो मार।
स – सयम सेवा साधना, सत्पुरुषो का सग ही है सुव्यवहार।।
र – रत्न चौदह सम, रचा सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ बेजोड अपार।
स्व – सबका हित है दस नियमो मे, आर्यजगत को दिया उपहार।।
व – वश कुटुम्ब परिवार समाज राष्ट्र के, उत्थान मे है यज्ञ से सुधार।
ती – तीन ताप मिटाता गायत्री महामन्त्र साधक को देता मुक्ति का द्वार।।
थे ऋषि दयानन्द महामानव युग दृष्टा, भारत मा के अनोखे लाल।
नमन् कोटि' आपको सुन्दर, गुरु विरजानन्द का किया ऊचा भाल।।

पोस्ट मैट्रिक, अनुसूचित जाति बालक छात्रावास, बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम में चैत्र नवरात्र एवं रामनवमी समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् (सैक्टर ६) नई दिल्ली-२२ द्वारा २६ मार्च से २ अप्रैल २००१ तक चैत्र नवरात्र एव रामनवमी के पर्व पर विभिन्न परिवारो मे सायकालीन हवन यज्ञ किया गया तथा वैदिक विद्वानो के आर्यसमाज के सिद्धान्तो, मान्यताओ और वैदिक विचारधारा पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

आर्यसमाज का स्थापना दिवस

महर्षि का उद्बोधन और हमारा कर्त्तव्य

– सोहनलाल शारदा

आगे मुम्बई मे चैत्र शुक्ला पचमी शनिवार को सध्या के साढे पाच बजे आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ। आप लोग भी वहा आरम्भ कर दीजिए। विलम्ब मत कीजिए।" (महर्षि के पत्र विज्ञापन प्रथम भाग पृष्ठ ५५–५६ मीमासक जी)

बम्बई से महर्षि ने यह सूचना एक पत्र मे श्री गोपालराव हरिदेशमुख अहमदाबाद को लिखी। इसके विपरीत हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने स्थापना दिवस चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही मान्यता दी है। हेतु यह दिनाक १७ फरवरी सन् १८७५ को एक सार्वजनिक सभा द्वारा नियुक्त एक समिति ने राज्य श्री पानाचन्द आनन्द जी पारेख को आर्यसमाज के प्रस्तावित २८ नियमों पर विचार कर उन्हे अन्तिम रूप देने का कार्य करने के लिए निश्चित किया। उन्होंने एक अनौपचारिक सभा मे चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मत निर्णय लिया। अत चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही स्थापना दिवस मान लिया गया।

उस दिन भी यह निश्चय किया गया था कि किस-किस को क्या-क्या कार्यभार दिया जाए। वहा मन्त्री प्रधान एव कोषाध्यक्ष के साथ ही अन्तरग के सदस्यो के स्थान और समय भी निश्चित कर दिए गए थे। ऐसा वर्णन श्री चिम्मन लाल वेश्य के "सरस्वतीचन्द्र जीवन चरित्र" में भी मिलता है। उस दिन आर्यसमाज के सभासदो की सख्या ६६ थी। इस सख्या की सूची में महर्षि का नाम ३६वें स्थान पर अकित है। यह निम्न प्रकार से है –

जाति – ब्राह्मण। नाम – पं० दयानन्द सरस्वती। व्यवसाय – संन्यासी। शिक्षा – संस्कृत व वैदिक संस्कृत। (आर्यसमाज का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ २७१, सत्यकेतु)

हम सदा सन्मार्ग पर प्रवृत्त हों

उस स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर महर्षि ने जो प्रवचन किया वह आज भी हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। वहा उन्होने कहा –

"यदि आप इस आर्यसमाज का सगठन समुचित रूप मे नहीं करेगे तो भविष्य मे अनेक कठिनाइयो का समूह उत्पन्न हो जाएगा। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मै आपका पथ-पदर्शन उसी प्रकार से करूगा जैसा दूसरो का करता हू।"

उस समय महर्षि ने अपने प्रवचन मे अपना उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा – "हमारा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है। मैं तो वेदो के आधीन हू। हमारे भारत मे २५ करोड आर्यजन बसते हैं। इनमे किसी-किसी बात मे कुछ मतभेद हैं, सो विचार करने से स्वय दूर ही हो जाएगे। मैं सन्यासी हू। मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आपका अन्न खाता हू, उसके बदले मे जो सत्य समझता हू, उसको निर्भयता से उपदेश करू। मुझे यश-कीर्ति की कोई भी इच्छा नहीं है। मैं अपना कर्त्तव्य समझकर ही धर्म का बोध कराता हू। चाहे कोई माने या न माने। इसमे मेरा कोई कुछ भी लाभ व हानि नहीं है।" (आर्यसमाज का इतिहास पृष्ठ २५१–२५२)

तदनुसार ही वेदो के स्वत प्रमाण जान-मान कर सर्वप्रथम निराकार परब्रह्म परमात्मा की उपासना निमित्त सन्ध्या व पुन पचमहायज्ञ विधि का निर्माण कर गगा तट क्षेत्र मे भ्रमण करते हुए हस्त लेख देते हुए अविद्या जन्य अन्धकार से ग्रस्त जनो को सत्य वेद ज्ञान देकर सच्चे शिव की आराधना की विधि सिखाई।

महर्षि ने यहा अपने निश्चित विचार इस प्रकार प्रकट किए – "मेरा मन्तव्य कोई असाधारण व अद्वितीय नहीं है और न मैं सर्वज्ञ ही हू। अत युक्तिपूर्वक विचार-विमर्श के अनन्तर भविष्य मे मेरी कोई भूल आपके सामने आए तो उसे ठीक कर लीजिए। यदि आप ऐसा नहीं करेगे तो यह आर्यसमाज भी आगे चलकर सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा। भारत मे जो बहुत से मत-मतान्तर विद्यमान हैं। उसका कारण यही है। उनमे गुरु के वचनो को सत्य की कसौटी मान लिया गया। उसके परिणाम स्वरूप लोग धर्मान्ध हो गए। उनमे कलह उत्पन्न हो गई। सत्य-ज्ञान का विनाश हो गया। वे दुराग्रह से ग्रस्त होने लगे। भारत की दुर्दशा इसी तरह हुई और इसी ढग से आर्यसमाज का रूप भी एक अन्य सम्प्रदाय का हो जाएगा। यह मेरी निश्चित सम्मति है।"

महर्षि का यहा निर्देश है कि "युक्तिपूर्वक और विचार विमर्श" के पश्चात। परन्तु उस के बजाय हमने महर्षि की मूल बात सच्चे शिव की उपासना मे अत्याधिक न्यूनाधिक करके स्वय 'कलह' उत्पन्न कर दिया और सत्य ज्ञान का लोप हो गया। आगे भी हमारी समाजो मे बढता ही जा रहा है। जैसे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे सकल्प पढने के लिए निर्देश है – "इसको सर्व आर्यजन यथावत् जान ले।"

इसी प्रकार ही सस्कार विधिस्थ जिसके लिए स्वय महर्षि ने भाद्रपद कृष्ण पचमी सवत् १६४० को दर्शाया "अबकी बार सस्कार विधि बहुत अच्छी बनी है। अमावस्या तक बन जाएगी।" इसके वेदारम्भ सस्कार मे लेख है– "आचार्य ब्रह्मचारी को प्रतिज्ञापूर्वक तीन रात्रि पर्यन्त अपने समीप रखे। गृहाश्रम प्रकरणस्थ सन्ध्योपासना सिखाए" अर्थात् सन्ध्योपासना करने की विधि की शिक्षा करे।

लेकिन हमारे ही कुछ विद्वान् प्रकाशको ने इसे बिना कुछ विचार विमर्श के ही निरस्त कर दिया और केवल पचमहायज्ञ विधि का ही समर्थन कर बैठे। लेकिन ऐसे विद्वान प्रकाशक बन्धुओ ने भी महर्षि के लेख को जो अघमर्ष मन्त्रों के पश्चात् है। अकारण ही निरस्त कर दिया। यहा वर्णन है कि – "शन्नो देवी रीति प्रनराचामेत्। ततो गायत्र्यादि मन्त्रार्थान् मनसा विचारयेत्। प्रन परमेश्वरेणैव सर्व्यादि सकल जगद्रचित मिति परमार्थ स्वरूपम् ब्रह्म चिन्तितित्या पर ब्रह्म प्रार्थयेत्।"

यहा अर्थों मे ससार का उपकार करने की भावना विद्यमान है। पुन बिना कुछ विचार-विमर्श व कोई कुछ कारण बताए बिना ही इसे निरस्त करना अपने पैरो पर आप ही कुल्हाडी मारने सदृश है।

हम विशेष रूप से अपना मुख्य 'सत्यार्थप्रकाश' मानकर उसके प्रचार-प्रसार व पठन-पाठन पर अत्याग्रह पूर्वक विचार करते रहे है लेकिन इसके तीसरे समुल्लास मे जो वर्णन है – "प्राणायाम द्वारा 'ओ३म्' इसका जाप करता जाए।" यहा इसके लाभो का भी वर्णन है कि इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है। यहा ही आगे चलकर यह भी निर्देश है – "नित्य कर्म करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थ, ज्ञान और उसके अनुसार अपना चाल-चलन करे, परन्तु यह जाप मन मे करना उत्तम है। दोनो ही प्रकरण अधिकाश सन्ध्या यज्ञ की पुस्तको मे देखने को नहीं मिलते। यह अवमानना भी हमारी अवनति का एक कारण है।

ऐसे ही हमारी उपेक्षा सप्तम समुल्लास मे वर्णित प्रार्थना की है जो वास्तव मे ध्यान पूर्वक विचार-विमर्श करने से व यहा वर्णित अर्थो से स्पष्टतया 'राष्ट्रीय प्रार्थना' का बोध होता है। यहा प्रथम बुद्धि हेतु पुन शारीरिक बल हेतु प्रार्थना पश्चात् आगे मन शिवसकल्पो वाला हो। अत इस सूक्त के ६ मन्त्रो से प्रार्थना करता हुआ आग अग्नेनय मन्त्र ये आर्यजन प्रार्थना करते है कि विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए। ऐसे अर्थ वाले मन्त्र के पश्चात् हम चाहते हे कि हे प्रभु, हमारे सभी आत्मीय जनो के शरीरो का हनन करने हेतु किसी को भी प्रेरणा नहीं करना। अन्त मे और हमे ऐसे उत्तमोत्तम मार्ग से चलाइए कि हम कभी भी आपके दण्डनीय न हो।

अन्त मे, हे प्रभो ! आप हमे असत् मार्ग से सन्मार्ग पर अविद्या रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर मृत्यादि दुखो से छुडाकर मोक्ष रूपी आनन्दमृत की ओर ले चले। यह प्रार्थना कितनी महत्वपूर्ण है हमारे लिए विचारणीय है।

अत आर्यसमाज स्थापना के शुभ अवसर पर हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम प्रत्येक आर्यजन जो समाज व राष्ट्रोन्नति चाहते हैं वे निश्चय से आज से ही न्यूनातिन्यून पाच जनो को, विद्याथियो को महर्षिकृत सर्वग्रन्थानुसार स्वय पढते हुए उन्हे महर्षिकृत सही सच्चा वैदिक धर्म ज्ञान ही देने का दृढ निश्चय कर कार्यारम्भ करे दें। मार्ग मे जो भी कठिनाई हो उसके लिए समाधान ढूढे। अब समय अकर्मण्य बैठने का नहीं है।

– शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान - ३६६४०४

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन सदस्य बनें।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 3-4/05/2001 दिनांक ३० अप्रैल से ६ मई, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 3-4/05/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

छठा वैदिक धर्म, चर्चा, सम्मेलन एवं आध्यात्मिक शिविर

आर्य समाज (वद व्यास डी० ए० वी० विद्यालय) विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान मे एव प्रधानाचार्या – चित्रा नाकरा जी के निर्देशन मे भौतिकवाद की भयकर ज्वालाओ मे जलते हुए जनमानस को आध्यात्मिक चेतना की ओर उन्मुख करने तथा मानवीय मूल्यों को पारलौकिकता से जानकारी कराने हेतु इस वर्ष भी दिनाक २८, २६ तथा ३० मार्च तक "ब्रह्म ज्ञान की आवश्यकता, आनन्द का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के उपाय मानवीय मूल्यो के सवर्द्धन मे शिक्षा और शिक्षक की भूमिका" आदि विभिन्न विषयो पर वैदिक विद्वानो का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री मदन लाल जी खन्ना, महासचिव, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, ने कहा कि "आज के युग में लोगों मे ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा कम हुई है। तेजी से नास्तिकता बढ रही है। मनुष्य के आचरण मे गिरावट आ रही है।" प्रिंसिपल चित्रा नाकरा ने पाश्चात्य भोगवादी समाज से अपनी दिव्य वैदिक सस्कृति को बचाने का आवाहन करते हुए कहा कि, 'अगर मानव सुख, शान्ति और समृद्धि चाहता हे तो उसे ऋषियो के बताये हुए मार्ग पर चलना हागा।'

तदुपरान्त प्रिसिपल श्रीमती आदर्श कोहली ने भी ब्रह्म ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी यज्ञमु[illegible] महाराज ने कहा कि "बिना ब्रह्मज्ञान के मा[illegible] सच्ची शान्ति और परमानन्द को प्राप्त नहीं कर [illegible] सकता"।

सम्मेलन के दूसरे दिन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार जी ने "आत्मा के स्वरूप और आनन्द प्राप्ति के उपायो" पर बल दिया और कहा कि जिसने आत्मा को, परमात्मा को न जाना, उसने कुछ भी न जाना"। श्रीमती उदेश आर्या ने भजन के माध्यम से ईश्वर की शक्तियो का वर्णन किया। प्रिंसिपल श्रीमती सुदर्शन महाजन ने मानव आनन्द की अनुभूति किन किन क्षेत्रो मे करता है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा की।

सम्मेलन के अन्तिम दिन हसराज कालिज के सँस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ० जयपाल विद्यालकार जी ने "आज के समय मे शिक्षा कैसी हो और शिक्षा देने मे शिक्षक की भूमिका क्या हो ? विषय पर विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र मे, समाज सेवा मे प्रशसनीय उपलब्धियो के लिए शिक्षा परामर्शदाता श्री खमचन्द जी खेर, आचार्य भगवानदेव वेदालकार एव श्री विजय आर्य को उत्कृष्ट वैदिक साहित्य प्रशस्ति पत्र, शाल, महर्षि दयानन्द का बडा चित्र, श्री फल देकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर विद्यालय के कर्मचारी श्री बाबूलाल, श्री मुकेश को भी कम्बल, महर्षि का बडा चित्र और फल देकर सम्मानित किया। श्रीमती रजनी वासुदेव, मन्त्री ने आर्य समाज (वेदव्यास डी० ए० वी० विद्यालय) के माध्यम से, समाज सेवा के क्षेत्र में उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय कैन्टीन के प्रबन्धक, श्रीमती एव श्री दत्ता जी ने सम्मेलन मे उपस्थित सभी अभ्यागतो को ऋषि लगर (प्रीति भोज) देकर आदर्श प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के सभी दिवसों में श्री हरेन्द्र शास्त्री जी ने सयोजन किया। श्री हरिदेव आर्य, श्री देवेन्द्र विद्यालकार एव आचार्य भगवानदेव वेदालकार जी ने वातावरण की शुद्धि, सुख, शान्ति के लिए पवित्र यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया। सम्मेलन के अन्त मे प्रधान श्रीमती चित्रा नाकरा जी ने विद्वान अभ्यागतो का धन्यवाद किया। इस अवसर पर मुख्य यजमान पद को श्रीमान खेम चन्द जी खेर, श्रीमती विजय खर श्रीमती सूर्या शर्मा श्रीमती [illegible] तनेजा एव श्रीमती नीरज ज्योति ने सुशोभित किया। शान्ति पाठ एव प्रसाद वितरण के बाद सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ १ का शेष

धर्मान्तरण का प्रयास विफल

आर्यसमाज की सक्रियता के कारण ईसाईयो के हौसले पस्त हो गये उन्हें यह घृणित कार्य करने से रोका गया। प्रसन्नता की बात है कि दो परिवारो को छोडकर शेष परिवार पुन हिन्दू धारा में लौट आये हैं।

हालाकि यह सफलता सतोष मानने के लिए पर्याप्त नहीं है – ईसाई सगठन बडे पैमाने पर जनबल, धनबल लेकर पूरे कच्छ में उतरे हुए हैं – लगातार इनका सामना करना पडेगा। आर्य विद्वान प्रचारार्थ यहा पधारें तो धर्मातरण रूक सकता है।

श्री वाचोनिधि आर्य ने जैसे ही यह सूचना श्री विमल वधावन को दी वे श्री टीकम चन्द आर्य के साथ गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी तथा कानून मन्त्री श्री अरूण जेटली को इन हालातों से अवगत कराने गए।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यजगत के प्रचारको, उपदेशको सन्यासियो और वानप्रस्थियों का आहवान किया है कि वे नि स्वार्थ भाव से कच्छ के क्षेत्रो में प्रचार कार्य हेतु अपनी अपनी सेवाए उपलब्ध कराए। उन्हें कच्छ क्षेत्रो मे आने जाने का मार्ग व्यय, आवास तथा भोजन आदि सार्वदेशिक सभा तथा गुजरात सभा द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। उन्हे दोनो सभाओं के निर्देशन पर ही प्रचार कार्य करना होगा।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि भूकम्प के बाद कच्छ क्षेत्र के आम नागरिको को आर्थिक कठिनाईयो के दौर से गुजरना पड रहा है। अत इन परिस्थितियो मे उन्हे आध्यात्मिक सुदृढता के सिद्धान्तो और विचारो से परिपक्व करना आर्यसमाज का दायित्व है। इस प्रचार कार्य से लोभ लालच के आधार पर धर्मान्तरण की गतिविधिया भी हतोत्साहित होगी।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक १७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, १४ मई से २० मई, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

LIBRARY Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

धर्म के कार्य हंसी-खुशी के माहौल में सम्पन्न करने चाहिएं

आर्य समाज मन्दिर जनकपुरी सी ब्लाक द्वारा गत सप्ताह ४ दिन के लिए प्रात ४४५ से ६१५ बजे तक प्रभात फेरियो का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन की प्रभात फेरी में श्री विमल वधावन एडवोकेट के साथ मै भी शामिल हुआ। सूर्योदय से पूर्व ही मुझे बडा विचित्र सा लगा। उन्होने कार्यक्रम को रहस्यमयी बनाए रखा, फिर भी मैं प्रात ४३० बजे बाहर मार्ग पर उन्हे मिला। मुझे और भी अधिक हैरानी हुई जब मैंने देखा उनकी कार मे उनके साथ उनकी पाच वर्षीय बच्ची भी थी। उन्होंने मुझे बताया कि इन प्रभात फेरियो के आयोजन से एक लक्षण सामने आया कि धर्मप्रचार के सब कार्य हसी खुशी के महौल में उछलते-कूदते और खाते-पीते सम्पन्न किए जाने चाहिए। ईश्वर से प्रार्थना है कि आर्यसमाज मन्दिर, सी ब्लाक जनकपुरी के प्रधान सोमदत्त महाजन तथा अन्य सहयोगी आर्य बन्धुओ के उत्साह को बनाए रखे तथा यह उत्साह विश्व के समस्त आर्य बन्धुओं के लिए एक सद्प्रेरणा के रूप मे कार्य करे।

– *जगदीश आर्य*

उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज मन्दिर सी ब्लॉक जनकपुरी द्वारा प्रात ब्रह्मवेला मे ४४५ पर प्रारम्भ की गई प्रभात फेरी का भव्य दृश्य। (१) सोमदत्त महाजन प्रधान स्थानीय आर्य बन्धुओं के साथ (२) श्री विमल वधावन एव जी जगदीश आर्य (३) आर्य महिलाएं पूर्ण उत्साह और उमग के साथ ईश्वर की जय जयकार और भजन में मग्न।

यह प्रभात फेरी लगभग ५-६ किलोमीटर का भ्रमण करने के लिए चल पडी। इस प्रभात फेरी मे लगभग ४०० से अधिक नर-नारियो और बच्चो ने भाग लिया। बच्चो की सख्या भी १०० के लगभग थी। इस आर्यसमाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन के साथ श्री प्रकाश गुप्त, श्री शिव कुमार मदान, मन्त्री श्री रमेश तथा मन्दिर के सभी सदस्य परिवार सहित सम्मिलित होते थे।

प्रभात फेरी का प्रतिदिन लगभग ८-१० स्थलो पर स्वागत किया जाता था। कहीं बिस्कुट, कहीं नमकीन, कहीं जूस कहीं दूध, तो कही आईस्क्रीम के कप वितरित किए जाते थे। श्री महाजन ने बताया कि वितरण करने वाले दानी महानुभावो में से किसी एक को वे जान बूझकर आईस्क्रीम वितरित करने का निवेदन करते थे, जिसके कारण बच्चे विशेष रूप से इस ओर आकर्षित हुए।

इन प्रभात फेरी से एक दिन पूर्व रात को जब श्री विमल वधावन ने मुझे कहा कि सुबह ४३० बजे आपको मेरे साथ एक कार्यक्रम मे चलना है तो हम इस प्रभात फेरी मे जा रहे हे, अभी रात्रि का अन्धकार मडरा रहा था ओर हम खुशी-खुशी धर्म प्रचार यात्रा मे शामिल होने जा रहे थे। मार्ग मे पुलिसकर्मी अभी भी रात्रि मे वाहन चैक करने का कर्त्तव्य निभा रहे थे। हमें भी रोका गया। इस प्रकार जब हम ठीक ४४५ पर जनकपुरी पहुचे तो वहा सुखद आश्चर्य हुआ कि ४०० से अधिक सख्या मे आर्य महानुभाव जुलूस की शक्ल मे चलने के लिए तैयार खडे थे। चार-पाच सवारी रिक्शाओं का भी प्रबन्ध किया गया था जिससे वृद्ध महानुभावों को असुविधा न हो, वे बारी-बारी से इस सुविधा का लाभ उठाते थे। लगभग आधे घण्टे की यात्रा के बाद दिन का उजाला दिखाई दिया लोग अपनी-अपनी खिडकियों से बाहर झाकते हैं और बडा आनन्दित महसूस करते हैं कि प्रात कालीन भ्रमण का यह कितना अच्छा वातावरण है कि सडकों पर धर्म और चरित्र की रक्षा के नारे लगाए जा रहे है, ईश्वर की प्रशसा के गीत गाए जा रहे हैं।

20 वें आदिवासी क्रान्ति शिविर का उद्घाटन

पवित्रता और आत्म-अनुशासन के बल पर ही राष्ट्र सेवा सम्भव

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान मे २०वे आदिवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का शुभारम्भ १४ मई को आर्यसमाज रानीबाग मे किया गया। १४ दिन तक चलने वाले इस शिविर का समापन समारोह २७ मई रविवार को प्रात १० बजे से होगा।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री विमल वधावन ने की तथा मच सचालन माता प्रेमलता शास्त्री ने किया। इस शिविर मे आसाम, मिजोरम, अरुणाचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उडीसा तथा उ०प्र० के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग १०० युवक-युवतिया भाग लेने के लिए दिल्ली पहुच चुके है।

श्री विमल वधावन ने अपने उद्घाटन भाषण मे शिविरार्थियो कों चारो युगो का अन्तर स्पष्ट करते हुए बताया कि कलयुग मे सगठन ही प्रमुख शक्ति है। हम समाज के धर्म के, या देश सेवा के जो भी कार्य सम्पन्न करना चाहते हैं उन्हे समान विचारधारा वाले लोगो को सगठित करके ही किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि वैदिक धर्म समूचे विश्व का मूल धर्म है और सतयुग त्रेता युग और द्वापर युग तक वैदिक धर्म की एक प्रभावशाली जीवन्त परम्परा थी। परन्तु महाभारत काल के बाद शस्त्र और शास्त्र के विशेषज्ञो की कमी हो जाने के कारण वैदिकधर्मियो की दशा उन अनाथ बच्चो की तरह हो गई जिनको हर परिचित अपने दृष्टिकोण से अलग-अलग प्रकार का मार्ग दर्शन देता है। इस तरह वैदिक धर्मियो को मार्ग दर्शन देने के लिए विगत् ५००० सालो के दौरान कई प्रकार के मत और पथ पैदा हो गए। सबने अपनी अलग-अलग पुस्तक धर्म ग्रन्थ के रूप मे लिखकर समाज मे अलगाववाद के बीज बोए जिसके कारण धर्मान्तरण जैसी बीमारिया फैलनी प्रारम्भ हो गईं।

– शेष पृष्ठ ५ पर

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का शंखनाद

महर्षि के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' उद्घोष का सुफल

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस वेद मन्त्र **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (सारे संसार को आर्य बनाओ)** का उद्घोष करके विश्व के सभी लोगो को श्रेष्ठ पुरुष बनाने का आह्वान किया था। उनके आह्वान को साकार करने के लिए आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने भारत की स्वाधीनता के पूर्व तन-मन-धन से सकल्प लिया। इसी सकल्प का परिणाम था कि समग्र राष्ट्र मे राष्ट्रीय पुनर्जागरण का शखनाद हुआ और धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रो मे वैदिक विचारधारा के आधार पर नूतन उत्क्रान्ति हुई तथा भारत की तरुनाई, अगडाई लेकर धर्म और राष्ट्र की बलिवेदी पर सर्वस्व समर्पित करने के लिए प्रतिबद्ध हुई। भारत को स्वाधीनता के सग्राम की बलिवेदी पर शीश चढाने वाले ८० प्रतिशत अमर सपूत आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द की विचारधारा तथा उत्प्रेरणा से ही प्रभावित थे। नवचेतना, नवजागृति की जो लहर महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने फैलाई, उससे सारा राष्ट्र आप्लावित हो उठा। धर्म के नाम पर फैले हुए पाखंड, अधविश्वास, जातिवाद, छुआछूत, नारी-दुर्दशा, सामाजिक असमानता, अन्याय, अभाव, अज्ञान, पराधीनता पर आर्यसमाज ने कठोर प्रहार किए और सदियो से प्रगाढ निद्रा मे सोया हुआ भारत अगडाइया लेकर जाग उठा और एक नए स्वतन्त्र, सशक्त, समृद्ध, सुसस्कृस्त भारत के निर्माण का द्वार खुल गया।

असख्य बलिदानो के उपरान्त भारत स्वतन्त्र हुआ, लेकिन स्वतन्त्रता ने हमारे राजनेताओ की अदूरदर्शिता के कारण राष्ट्र को खण्डित कर दिया। खण्डित भारत के नवनिर्माण का चक्र चला तो अवश्य, लेकिन हम भौतिकता की अधी आधी मे प्रतिकूल दिशा में बढते चले गए और आज स्वाधीनता के ५३ वर्षो के बाद हमारी सस्कृति, हमारा धर्म, हमारी सनातन परम्पराए, हमारी पवित्र विचारधाराए, हमारे सत्य सनातन सिद्धान्त तिरोहित हो गए और आज हम भारतवासी उस केन्द्रबिन्दु पर आकर खडे हैं, जहा से वह पथ निकलता है जिसे हमारे शास्त्र आसुरी पथ उद्घोषित करते हैं।

आज मानवता के अस्तित्व पर ही सकट के बादल मडरा रहे हैं और दानवता आगे बढ रही है। सर्वनाशिनी विचारधारा के दर्शन कदम-कदम पर हो रहे हैं और हम उसे देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं। क्या कर्मचारी, क्या अधिकारी, क्या व्यापारी, क्या राजनेता, क्या अभिनेता, क्या समाज सुधारक, क्या सामाजिक कार्यकर्ता, क्या तथाकथित धार्मिक नेता सभी के सभी सवधर्म विस्मृत कर केवल धन के लिए अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। क्या होगा राष्ट्र का भविष्य ? यह विचारणीय विषय है।

आर्यसमाज तन्द्रा त्यागे : आगे चलने का व्रत ले

भौतिकवादी अपसस्कृति के बढते प्रभाव के कारण स्वार्थपरता बढ रही है। मानवता का निरन्तर हास होने के कारण श्रेय मार्ग पर चलना कठिन होता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे सत्य सनातन वैदिक धर्म की मान्यताए ही मानवता की रक्षा करने तथा विश्व को विनाश से बचाने मे सक्षम है। आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य वैदिक धर्म तथा वेदों की महत्ती शिक्षाओ का ही प्रचार-प्रसार करना है। दुख का विषय है कि आर्यसमाज के परिक्षेत्र में भी शिथिलता तथा स्वार्थपरता परिलक्षित हो रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज अपनी तन्द्रा त्यागे अबौर आर्यसमाज के कार्यकर्ता कटिबद्ध होकर स्वाधीतनता सघर्ष के समय की भावना सजोकर ही कार्य करे तथा वेदो के पावन प्रचार-प्रसार द्वारा ही मानव के विनाश को रोके। इतिहास व समय की इस आवश्यकता को अनदेखा नहीं कर सकते। आइए, आर्यसमाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का हम व्रत ले।

– मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

ऐ मेरे देश के वीरों

– देवराज आर्य मित्र

ऐ मेरे देश के वीरो, तुम बन जाओ सेनानी।
पथ भूल गए क्यो अपना, होती है यह हैरानी।।
इतिहास बताता है सबकुछ, उसको पढकर देखो।
यह देश है शूरवीरों का, क्यो खून हो गया पानी।।
ऐ मेरे देश के वीरो
जरा याद करो वीरो को, कैसे थे वो बलिदानी।
स्वदेश की रक्षा हेतु, निकले बनकर तूफानी।।
ऐ मेरे देश के वीरो
अब देश धर्म की नैया तूफा मे पडी है भैया।
यदि नहीं बचाया इसको, मिट जाएगी सभी निशानी।।
ऐ मेरे देश के वीरो
लगर लगोट अब कस लो, मत देर लगाओ जवानो।
आओ तोड के बन्धन सारे, देश हित में लगा दो जवानी।।
ऐ मेरे देश के वीरो
मुश्किल से मिली आजादी, वो खतरे में पडी है साथी।
मत लडो परस्पर भाई, बन जाए न अजब कहानी।।
ऐ मेरे देश के वीरों

– आर्यसमाज कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

बोध कथा

कोई भी प्रलोभन डगमगा नहीं सकता !

मेवाड की राजधानी उदयपुर का प्रसग है। एक दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती अकेले बैठे हुए थे। उस समय मेवाड के राणाजी पधारे और गुरु महाराज से विनीत शब्दो मे प्रार्थना करने लगे "भगवन्, आप मूर्ति पूजा का खण्डन छोड दें। यह राजनीति के सर्व-सग्रह सिद्धान्त के प्रतिकूल है, यदि आप यह बात स्वीकार कर लें तो राज्य के एक लिग महादेव के महत की गद्दी आपकी है। वैसे तो यह सारा राज्य ही उसी मन्दिर को समर्पित है, परन्तु मन्दिर के नाम राज्य की जो सम्पत्ति लगी है, उसकी लाखो की आय है, यह सारा ऐश्वर्श्य आपका हो जाएगा। आप सारे राज्य के गुरु माने जाएगे।"

मेवाड के राणाजी की प्रार्थना सुनते ही स्वामी जी झुझलाकर बोले – "आप मुझे तुच्छ प्रलोभन दिखाकर परमात्मदेव से विमुख करना चाहते हैं, उसकी आज्ञा भग करना चाहते हैं। राणाजी, आपके इस छोटे से राज्य और मन्दिर से एक दौड लगा कर मैं बाहर जा सकता हू, वह मुझे अनन्त ईश्वर की आज्ञा भग करने के लिए विवश नहीं कर सकता। परमात्मदेव के परम प्रेम के सम्मुख इस राज्य की मायाविनी मरीचिका अति तुच्छ है। लाखों मनुष्यो का विश्वास मेरे भरोसे पर निर्भर है, मुझे ऐसे शब्द कहने का फिर कभी दुस्साहस नहीं कीजिए। सच्चे धर्म के प्रति मेरी ध्रुव धारणा को इस पृथ्वी तल की कोई भी वस्तु और आकर्षण डगमगा नहीं सकती।"

सूर्य के समान स्वामीजी का चमकता मुख देखकर महाराणा चौंक गए, आश्चर्य चकित हो बोले –" भगवन् मुझे क्षमा करे, मैं आपके निश्चय की दृढता परख रहा था, मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि ससार का कोई भी प्रलोभन आपकी दृढता-निश्चय को हिला नहीं सकता।"

—नरेन्द

वैदिक विद्यापीठ में प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक विद्यापीठ में प्रवेश आरम्भ हो गया है जो छात्र वैदिक विद्वान बनकर देश-विदेश में वैदिक धर्म प्रचार हेतु अपने जीवन को लगाना चाहते हैं, उन्हें यहा पर वेद, उपनिषद, गीता, रामायण आदि ग्रन्थों के अध्ययन कराने की सुव्यवस्था की गई है। छात्रों के भोजन-निवास निःशुल्क है।

इच्छुक छात्र अपने योग्यता प्रमाण-पत्रों की छाया प्रति के साथ प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजें।

– आचार्य डॉ० सत्यप्रिय शास्त्री, वेदशिरोमणि, वैदिक विद्यापीठ, श्री साधना आश्रम ब्रिजघाट, गाजियाबाद (उ०प्र०)

वर की आवश्यकता

सुशिक्षित आर्या कन्या के लिए वर की आवश्यकता है, इच्छुक युवक सम्पूर्ण विवरण सहित सम्पर्क करे। आयु-सीमा २४ से ३० वर्ष।

– मन्त्री, दयानन्द बाल सदन, चांद बावडी रोड, केसरगंज, अजमेर

प्रकाश की ओर बढ़ो : मातृभूमि समुन्नत हो।

आरोह तमसो ज्योतिः। *अथर्व ८/८/८*
अन्धकार से प्रकाश की ओर बढो।
राष्ट्र रोह द्रविणं रोह। *अथर्व १३/१/३*
राष्ट्र को बढाओ, धन को बढाओ।
सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना। *अथर्व १२/१/१३*
हमारी मातृभूमि सन्मुन्नति के शिखर पर पहुचे।
या व्यथिष्महि भूम्याम्। *अथर्व १२/१/२८*
मातृभूमि में हमे कष्ट न पहुचे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्र-रक्षा, अवरोधों का उन्मूलन : सर्वांगीण अभ्युदय

स्वाधीनता के ५४वें वर्ष में नई सहस्राब्दी और नई शती में देशवासियों का प्रवेश नई चुनौति से हुआ है। यद्यपि गाववालो ने सीमासुरक्षा बल के अधिकारियो सचेत कर दिया था कि इस सीमावर्ती क्षेत्र के गाव पर दियवा में शत्रु सेना की गतिविधिया बढ गई है, जनता की सूचना के बावजूद बगलादेश राइफल्स के हमले के बारे मे हम असावधान रहे। फलत १५ अप्रैल की रात को हजार सैनिकों ने गाव घेर लिया और अपनी भूमि की रक्षा के नाम पर सडके खोदनी शुरु की। १७ अप्रैल को राइफल्स क प्रमुख रहमान ने घोषणा की कि उनका मिशन पूरा हो गया है। १८ अप्रैल को सीमा सुरक्षा बल के प्रमुख जगत और गृह सचिव कमल पाण्डे ने सीमा पर चौकसी का ऐलान किया। उस दिन सीमावर्ती गाव पर कब्जे का अभियान व्यर्थ हो गया, क्योकि सुरक्षा बल के १६ सैनिको पर अत्याचार कर उनकी निर्मम हत्या की जा चुकी थी। इस पर विदेश सचिव ने बगलादेश के हाई कमिश्नर को चेतावनी दी, फलत बगलादेश ने पूर्व की स्थिति की स्थापना स्वीकार की। मेघालय के पूर्व खासी पर्वत जिले मे परदियवा गाव अवस्थित है, यद्यपि नक्से और दस्तावेज के अनुसार भारत उसका दावेदार है परन्तु वहा ढाका सरकार का कब्जा है। वैसे पिछले वर्षो मे भारत बगलादेश की ४०६६ किलोमीटर लम्बी सीमा निरन्तर उद्वेलित रही है। दोनो पडोसी देशो की सेनाओं के मध्य बीच-बीच में झडपे होती रहती हैं। वैसे समस्या के मूल मे दोनो देशों की सीमा है। दोनों ही देशो की सीमाए सेसिल रेडक्लिफ ने निर्धारित की थीं, उस समय से ही कुछ सीमा रेखा अनिर्धारित रह गई थी। जिन पर दोनों देशो के मध्य १६१ ऐसे इन्कलेव या अन्तक्षेत्र हैं, जिन पर दोनों पडोसी देशो के दावे हैं। उनमें से भारत ११३ इन्कलेव को अपना कहता है और वे बगलादेश की भूमि के १७००० एकड क्षेत्र में अवस्थित है, दूसरी ओर भारतीय क्षेत्र मे दस हजार एकड में से ५० इन्कलेव अन्त क्षेत्र हैं, जिन पर बगलादेश दावा करता है।

इन सीमा विवादो को सुलझाने के लिए भारत और बगलादेश ने १६७४ मे एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। दिसम्बर २००० में दोनों देशों के विदेश सचिवों ने इन्कलेव्स के आपसी विनिमय के लिए चर्चा की थी, भारत ने तो इन क्षेत्रो के बारे में अपना प्रतिवेदन भेज दिया था, परन्तु बगलादेश की ओर से गतिरोध सुलझाने के लिए कोई समाधान नहीं मिला। विधि की विडम्बना कहिए कि पूर्वोत्तर प्रदेश में एक समय सारी भूमि भारत राष्ट्र के ही भाग मे थी, परन्तु अग्रेज भारत छोडते-समय देश को साम्प्रदायिक आधार पर बाट गए। स्वाधीनता प्राप्ति के ५४ वर्ष बाद भारत पश्चिम और पूर्व मे राष्ट्ररक्षा के प्रश्न से बेचैन है। आगे या पीछे दोनो ही दिशाओ मे सच्ची राष्ट्र रक्षा तभी सम्भव है जब पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर बर्मा-म्यामर तक फैले राष्ट्र समूह मिलकर स्थायी राष्ट्ररक्षा की व्यवस्था करे। पश्चिम मे पाक शासक जैसे अकारण भारत विरोध की रीति-नीति चलाते हैं, उनके साथ बगलादेश का नेतृत्व आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक लक्ष्यो के लिए भारत के साथ मिलकर जब सामूहिक राष्ट्र-नीति का अवलम्बन करे तो दक्षिण एशिया मे एक नवीन शक्ति का अभ्युदय हो सकेगा। आज ऐसी सम्भावना है असम्भव दीखती है, परन्तु जब कल तक बटें यूरोपीय देश एक हो सकते हैं तो सामूहिक प्रयत्न करने पर द० एशिया में भी एक सयुक्त भारतीय राष्ट्र सघ की भूमिका तैयार हो सकती है।

१६७१ मे अपनी निर्णायक विजय के समय यदि इन्दिरा जी और मुजीब इस सम्बन्ध मे कोई निर्णायक व्यवस्था कर जाते तो सर्वोत्तम था, परन्तु अप्रैल में भारत और बगलादेश के मध्य एक गाव के काण्ड और कुछ सैनिको की नृशस हत्या के बाद भारतीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी जी और बगलादेश की सूत्रधार शेख हसीना कोई ऐसा समाधान निकाल सकते हैं। जिससे दोनो के मध्य हजारो मील लम्बी सरहद का समुचित निर्धारण कर दोनो राष्ट्रो के मध्य विवादग्रस्त भूक्षेत्रों का स्थायी विनियोग किया जा सके। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक, पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर पूर्व में बर्मा तक फैले विस्तीर्ण प्रदेश की जनता में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध हजारो वर्षों से एक और सयुक्त रहे हैं। यदि सकुचित स्वार्थों को भुलाकर ऊचे आर्थिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक सम्बन्धों का ध्यान रखा जाए तो भारतीय प्रधानमन्त्री और बगला देश की सूत्रधार इस सम्बन्ध मे एक व्यावहारिक कार्ययोजना बना सकते हैं। प्रयत्न किया जाए तो भारत सुरक्षा दल और बगला राइफल्स के छोटे विवादों के साथ स्थायी भाईचारे और कार्ययोजना का सूत्रपात हो सकता है। पिछले दिनों आए अवरोधो और बाधाओं का उन्मूलन कर स्थायी राष्ट्ररक्षा का सिद्धान्त निर्धारित कर भारतीय भूमि राष्ट्रों के मध्य स्थायी सर्वांगीण अभ्युदय के सिद्धान्त निर्धारित किए जा सकते हैं। एक समय यूरोप और अमेरिका के राष्ट्रों की एकता असम्भव-सी जान पडती थी, परन्तु परिस्थितियों ने उन्हे एक और सयुक्त किया तो भारतभूमि के राष्ट्रो की एकता आज असम्भव-सी जान पडती है, परन्तु आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक आधार पर उनकी प्रारम्भिक एकता स्थापित कर इस दिशा में बढा जा सकता है। जो बात इन्दिराजी और मुजीब कर सकते थे, उसे आज प्रयत्न किया जाए तो उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी भी कर सकते हैं। अटल जी और शेख हसीना चाहे तो इस दिशा मे एक कठिन समस्या को एक स्थायी समाधान की दिशा मे कार्यान्वित किया जा सकता है। वस्तुत जीवन मे असम्भव किसी भी समस्या का समाधान नहीं है, हा, उसके लिए पूरी दृढता और इरादे से कार्य करने का मन बनाना होगा। भारतीय उपमहाद्वीप के नेता आपसी सघर्ष के स्थान पर स्थायी सहमति का मार्ग अपनाए तो बहुत कुछ सम्भव है। ❑

बंगलादेश और देश की सुरक्षा की सुध

बंगलादेशियो द्वारा भारतीय सुरक्षा बलो के १६ जवान उठाकर ले जाना, उन्हे घोर यात्नाए देना, लाठियों से मारना, उनके शरीर पर उबलता पानी डालना, उनकी आंखे तक निकाल देना, इस प्रकार तड़पा-तडपा कर उनकी हत्या करके पशुओ की भाति उनके शव बास के डडो पर लटकाते हुए अपमान जनक ढग से उन्हें भारतीयों को सौंपना, ये सब उनकी जेहादी मानसिकता का ही परिचायक है। स्मरण रहे कि कारगिल युद्ध के समय भी पाकिस्तान ने ऐसा ही किया था, जबकि भारत ने उनके जवानो के शव सैनिक सम्मान के साथ लौटाए थे।

बगलादेश ससार का दूसरा बडा इस्लामी देश है। इस्लाम के आधार पर ही पूर्वी बगाल का यह क्षेत्र भारत से अलग हुआ। १६४६ में मोहम्मद अली जिन्ना ने जब डायरेक्ट ऐक्शन के लिए मुसलमानो को आदेश दिया था तो कलकत्ता और नोआखली में बगला मुस्लिम समुदायो ने हिन्दुओं का नरसहार किया था अत्याचारो की उन घटनाओ से सारा देश हिल गया था। उनकी प्रतिक्रिया न हो, इस कारण गाधीजी स्वय वहा गए थे।

विभाजन के पश्चात् भी बगलादेश के क्षेत्रो में हिन्दुओ पर लगातार भीषण अत्याचार होते रहे, किन्तु फिर भी भारत ने उनके प्रति मैत्री ही रखी। हम भूल गए कि बगलादेश ने भारत पर डैमोग्रेफिक एग्रैशन अर्थात् जनसख्या का आक्रमण कर रखा है। दो करोड से अधिक बगलादेशी भारत के विभिन्न भागों मे हमारी राजनीति का प्रभावित कर रहे हैं। असम बगाल, पूर्वी बिहार मे को कई जिलो मे वे मतदाता बनकर हमारे भाग्य-विधाता ही बन रहे हैं। सीमाओं पर उनकी बहुसख्या के कारण भारत की सुरक्षा खतरे में पड गई है। वे कई प्रकार से पाकिस्तानी आई एस आई का काम कर रहे हैं। हथियारो की तस्करी में लिप्त हैं, पाकिस्तान से प्रशिक्षण लेकर कश्मीर मे घुसपैठ करके आई एस आई के निर्देशो के अनुसार उग्रवादी कार्य करते हैं। अब तो श्री वाजपेयी की घुटने टेक-नीति के रहते उनके पौंबारा ही हो रहे हैं। पता नहीं, हम कब सम्भलेगे और अपने इस महान देश की सुरक्षा की सुध लेगे।

— डॉ० कैलाश चन्द्र,
हिन्दू संस्कृति प्रतिष्ठान, ३३१, सुनहरी बाग अपार्टमैंट, रोहिणी-१३, दिल्ली-८५

जनता की प्राण रक्षा की जाए

बिहार से आए दिन दिल हिला देने वाले समाचार आ रहे हैं। समाचार पत्रो में 'भाषा' द्वारा दिया गया समाचार है कि कुछ जैन व्यापारी एम्बेसेडर कार मे नवादा जिले के प्रतिष्ठित जैन मन्दिर के दर्शनार्थ तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे कि उग्रवादियों ने बारूदी सुरग से उनका वाहन उडा दिया। तीन तीर्थयात्री मारे गए और तीन बुरी तरह घायल हो गए।

पिछले वर्ष समाचार पढा था कि सीवान का एक उद्योगपति सुप्रीम कोर्ट मे जाकर याचना करने लगा कि उसे सीवान के सासद शहाबुद्दीन से बचाया जाए। जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पटना हाई कोर्ट मे आवेदन करो तो वह उद्योगपति फूट-फूटकर रोने लगा कि पटना पहुचने से पहले ही वह मुझे मरवा डालेगा।

इसी प्रकार पिछले महीने सीवान के इसी सासद शहाबुद्दीन के बारे में छपा था कि जब पुलिस उसके घर पहुची, तो पुलिस पर गोलियों और बमो से आक्रमण कर दिया गया। इस मुठभेड मे कई मारे गए। इसी प्रकार पहले किशनगज के तसलीमुद्दीन की चर्चा भी सुर्खियो मे रही कि वह और उसका पुत्र सारे क्षेत्र में आतक बने हैं और बगलादेश से आए घुसपैठियो के बल पर कहर बरपा रहे हैं।

एक और समाचार पिछले वर्ष आया था कि पूर्णिया जिले के एक सथाल हिन्दुओं के ग्राम पर जिसके आस-पास के १५ मुस्लिम ग्रामो के लोगो ने आक्रमण कर दिया, जिसमे कई सन्थाल हिन्दु आदिवासी मारे गए।

केन्द्र सरकार और बिहार सरकार को चाहिए कि वोट की राजनीति छोडे और लोगो के जान-माल की रक्षा करे।

— चेतराम जैन, सी-३५, माडल टाउन, दिल्ली-७

ऋग्वेद से – यत् तत् सप्तकम् (१)

कर्मफल या कार्य कारण श्रृंखला के उदाहरण

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) आदित्यों के गुणों का अनुगामी सदा विजयी-सफल होता है

देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते।
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धन यस्ते ददाश मर्त्य।।

ऋ० १–३६–४

सुग पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतंयते।
नात्रावखादो अस्ति व ।। ऋ० १–४१–४

कण्वो घौर.। अग्नि, आदित्याः। पंक्ति, गायत्री।

अर्थ – (देवास) दिव्यवृत्ति के लोग अर्थात् (वरुण) द्वेष का निवारण करने वाले (मित्र) सब से स्नेह करने वाले (अर्यमा) दानवृत्ति वाल अथवा न्याय प्रियजन (प्रत्नम्) सनातन तथा (दूतम्) दुष्टो तथा दुर्विचारो को सतप्त करने वाले (त्वा समिन्धते) आप को अपने हृदय मे सदीप्त करते हैं और (अग्ने) हे अग्रेणी प्रभु, इनमे से किसी एक भी वृत्ति को अपनाकर (य मर्त्य) जो मरण धर्मा साधक (तेददाश) आपके आदेशो के प्रति अपने को अर्पित कर देता है (स) वह (विश्वधनम्) सब प्रकार की धन्य बनाने वाली वस्तुओ और वृत्तियो को (जयति) जीत लेता है – प्राप्त कर लेता है। (त्वया) आप के सारथि बनने से वह उत्साह प्राप्त करके धनञ्जय बन जाता है। (ऋतयते) सत्य नियमों पर चलने वाले के लिए (पन्था सुग अनृक्षर) प्रत्येक मार्ग सुगम तथा निष्कण्टक हो जाता है। हे (आदित्या स) प्राकृतिक वरुण मित्र और अर्यमा देव। तथा राष्ट्र की तीनो पालिकाओं (विधान-कार्य न्याय) के अधिष्ठाताओं। (अत्र) इन सदाचारियो के मार्ग मे (व) आपका (अवखाद न अस्ति) किसी प्रकार का **विखाद=हस्तक्षेप का भय नहीं होता।** अवखाद = विखाद भयम। स्वामी दयानन्द

निष्कर्ष – जो दैवीय और राष्ट्रीय नियमो का, समर्पित रूप से पालन करते हैं, वे सदा सफल और विजयी होते हैं।

(२) ब्रह्म का दान करने वाला अक्षय श्रवस् (यश व भोग) प्राप्त करता है

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रव।
तस्मा इलां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम् ।।

ऋ० १–४०–४

कण्वो घौर.। बृहस्पति। सत पक्ति।

अर्थ – (य) जो व्यक्ति (वाघते) वेदवाणी के विद्वान् आचार्य (बृहस्पति) को (सूनर वसु ददाति) शिष्यो को उत्तम मनुष्य मे परिवर्तित करने वाली वस्तुए प्राप्त करने योग्य धन प्रदान करता है (स अक्षिति श्रव धाते) वह कभी क्षीण न होने वाले अन्न, धन और यश को सदा धारण किए रहता है। उसके पास इन तीनों की कभी-कमी नहीं होती। (तस्मै) ऐसे व्यक्ति के लिए हम प्रजा जन (सुवीरां इलाम्) उत्तम वीरों से सम्पन्न राष्ट्र भूमि और (अनेहसम् सुप्रतूर्तिम्) प्रत्याख्यान् (विरोध) किए जा सकने के अयोग्य, निर्दोष तथा दुष्टों का दमन करने मे समर्थ (इला आ यजामहे) मनुष्यों का शासन करने में समर्थ विज्ञप्ति वाणी को प्राप्त कराते हैं। इस वाणी को मन्त्र १–३१–११ में 'इलामकृण्वन् मनुष्य शासनीम्' कहा है।

इस मन्त्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं –

यो मनुष्य शरीरवाङमनोभिर्विदुष सेवते स एवाक्षया विद्या प्राप्य पृथिवीराज्य भुक्त्वा मुक्तिमाप्नोति। जो मनुष्य शरीर, वाणी, मन, और धन से विद्वानो की सेवा करता है, वही उत्तम विद्या को प्राप्त होकर और पृथिवी के राज्य को भोगकर मुक्ति को प्राप्त होता है।

अर्थपोषण – श्रव – धननाम, नि० २–१०। अन्नम् नि० २०–३, यश नि० ११–६ वाघत मेधाविनाम, नि० ३–१५ इला – पृथिवीनाम, नि० १–१, वाङ्नामु नि १–११

निष्कर्ष – जो विद्वान गुरुओ की और आदिगुरु परमात्मा की सर्वथा सेवा करता है, उसे अन्न और धन की कमी नहीं होती, और वह चिरकाल तक रहने वाली अक्षय कीर्ति प्राप्त करता है और (दु खो से सर्वथा) मुक्त हो जाता है।

(३) आदित्य जिसकी रक्षा करते हैं वह अजेय हो सब कुछ प्राप्त करता है

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा।
नू चित्स दभ्यते जनः।। ऋ० १–४१–१
य। यज्ञं नयथा नर अदित्या ऋजुना पथा।
प्र व स धीतयेनशत्।। ऋ० १–४१–५
स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना। अच्छा गच्छत्यस्तृतः।। ऋ० १–४१–६

कण्वो घौर। आदित्य (वरुणामित्रार्यम्णः) गायत्री।

अर्थ – (यम्) जिस मानव अथवा राजा की (प्रचेतस) प्रकृष्ट रूप से चैतन्यपूर्ण (वरुण मित्र अर्यमा) दोष निवारण, सर्वमैत्री और न्याय कारिता अथवा राष्ट्र के दुष्ट दमन, (आरक्षि) सर्वसौहार्द (विधान) और न्याय विभाग के अधिकारी (रक्षन्ति) रक्षा करते हैं (स जन) वह मनुष्य या राजा (नू चित्) शीघ्र ही (दभ्यते) अपने शत्रुओं की हिंसा नाश कर देता है।

(आदित्य) उपरि कथित मित्र, वरुण, अर्यमा (य यज्ञम्) जिस लोकहितकारी आयोजन अथवा यज्ञशील पुरुष का (ऋजुना पथा) सरल मार्ग से (नयथा) नेतृत्व करते हैं (स धीतये प्रणशत्) वह आयोजन अथवा यज्ञशील पुरुष अपने लक्ष्य को प्रकृष्ट रूप से आधृत कर लेता है, अर्थात उस का आधार व्याप्त और दृढ हो जाता है। धीङ् आधारे। नशत व्याप्तिकर्मा नि० २–१८

(स मर्त्य) उपर्युक्त अदित्यों से रक्षित तथा यज्ञशील मानव (अस्तृत) किसी प्रकार की हिंसा (बाधा) स अस्पृष्ट रहता हुआ (विश्वरत्न वसु) निवास के लिए आवश्यक सब रमणीय वस्तुए (प्राप्त करने योग्य धन) (उतत्मना तोकम्) अपने सदृश सन्तान (अच्छा गच्छति) आसानी से प्राप्त कर लेता है।

निष्कर्ष – दोष निवारण सर्वमैत्री और न्याय कारिता तथा यज्ञशीलता की वृत्ति मनुष्य को सारी आवश्यक वस्तुए प्राप्त करा देती हैं, और उसके शत्रु उस का कुछ बिगाड नहीं कर पाते, स्वय दब जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं।

वरुण, मित्र अर्यमा के विभागो को सुरक्षित रखकर विश्वस्त बनाने वाला राजा अपनी प्रजा के निवास के लिए आवश्यक सभी वस्तुए उपलब्ध कराने, और प्रजा के अन्दर विद्यमान और बाह्य शत्रुओ का दमन करने मे समर्थ होता हैं।

(४) उषा काल में, मन को, दान कर्म में प्रयुक्त करने वाला सर्वाधिक मेधावी होता है

उषो ये ते प्रयामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः।
अत्राह तत्कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम्।।

ऋ० १–४८–४

प्रस्कण्व। उषा। विराट्सतः पंक्तिः।

अर्थ – हे (उष) प्रभातवेला की अधिष्ठात्री देवी। (यें ते प्रयामेषु) जो लोग तेरे प्रकृष्ट प्रहरो = ब्रह्ममुहूर्त में (प्रात ३ से ६) (मन दानाय युञ्जते) अपने मन को वासनाओं के विनाश, चित्तवृत्ति निरोध=योग, या किसी भी प्रकार के शोधन मे प्रयुक्त करते हैं (ते सूरय) वे सभी समझदार विद्वान् हैं। (अत्र एषा नृणा य कण्व) इस जीवन में, इन समझदार मनुष्यों मे जो मनीषी (तत नाम गृणाति) परमेश्वर के किसी प्रिय नाम का अथवा तत् नाम = ओ३म् का मननपूर्वक उच्चारण जप करता है (स हकण्वतम) वही निश्चय से सर्वोत्तम या सर्वाधिक विद्वान् और मनीषी है।

अर्थ पोषण – दानाय – दान खण्ड ने दैप शोधने, योगश्चित्त वृत्ति निरोध (योग दर्शन) तत् नाम – ओ३म् तत् सत् – इति निर्देशो ब्रह्मणत्रिविध स्मृत। गीता १७–२३ युञ्जते–युज सयम ने युजिर् योगे, युज समाधौ। कण्व मेधाविनाम।। नि ३–१५

महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे वेद भाष्य करते हुए लिखा है –

ये जना एकान्ते पवित्रे देशे उपासनांगानामभ्यासं कुर्वन्ति ते निर्मलात्मान सन्तः प्राज्ञा आप्ताः सिद्धा जायन्ते। ये चैतेषा सगसैवे विदधति तेऽपि शुद्धान्तःकरणा भूत्वा त्मयोगजिज्ञासवो भवन्ति।' जो मनुष्य एकान्त पवित्र देश में उपासना के अगो का अभ्यास करते हैं, वे निर्मल आत्मा होकर ज्ञानी, आप्त (परम प्रमाण) और सिद्ध हो जाते हैं और जो उनका सग और सेवा करते है वे भी शुद्धान्तकरण होकर आत्मयोग के जिज्ञासु बन जाते हैं।

निष्कर्ष – ब्रह्म मुहूर्त मे जागकर, साधना करने वाले समझदार माने जाते हैं और अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं। उनमें जो अपनी सफलता के साथ परमेश्वर का नाम लेना नहीं भूलते, वे ही श्रेष्ठ ज्ञानी तथा आप्त पुरुष जिसने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है कहलाते हैं।

(५) प्रजा की भोजन व्यवस्था और अपनी शासन व्यवस्था का नियन्ता ही सत्पति कहलाता है

स घा राजा सत्पति शूशुवज्जनो रातहव्य प्रति य शासमिन्वति।
उक्था वा यो अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिव ।। ऋ० १–५४–७

सत्य आंगिरसः। इन्द्रः। जगती।

अर्थ – (य राजा) जो राजा (शू शुवज्जन) अपनी प्रजा को क्रियशील रखन के लिए (रातहव्य) उनका भोजन का प्रबन्ध करता है और (प्रतिशास इन्वति) शासन के प्रत्येक विभाग में व्याप्त रहता है – उसकी जानकारी रखता है और अपने प्रत्येक आदेश का पालन कराता है। इसके साथ (य उक्था राधसा अभिगृणति) जो प्रशसनीय कर्म करने वाले, शासन और प्रजा दोनो के व्यक्तियो का धन तथा अलकरण प्रदान द्वारा समादर करता है (स घा सत्पति) वही वास्तव मे प्रजा का सच्चा रक्षक कहलाने योग्य है। (अस्मै) इसके राज्य मे (दानु) कर्मानुसार सबको सबकुछ देने वाला परमात्मा (दिव) अन्तरिक्ष से (राधसा) समृद्धि के निमित्त समीचीन रूप मे (उपरा पिन्वते) मेघो से पृथ्वी को सिंचित करता है। ऐसे सत्पति राजा के शासन काल मे न सूखा पडता है, न बाढ आती है। प्रजा सदा सुखी रहती है।

इससे अगले मन्त्र भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं –

राजपुरुषों को प्रजा से और प्रजा को राजपुरुषों से, कभी विरोध या टकराव न करके, परस्पर प्रीति और उपकार बुद्धि से सम्पूर्ण राज्य मे सुख की वृद्धि करनी चाहिए। इसके बिना राज्य पालन व्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती।

अर्थ पोषण – शू शुवत् – टुओश्वि गतिवृद्धयो। इन्वति-इविव्या प्तौ।

सत्पति – यज्ञेतपसिदाने च स्थिति सदित्युच्यते।
कर्म चैव तदर्थीय सदित्येवमिधीयते।। गीता १७–२७

यज्ञ और दान करने वाला तथा तपस्वी राजा ही सत्पति कहलाता है।

निष्कर्ष – सत्पति राजा के राज्य मे वर्षा उचित रूप में होकर समृद्धि करती है। सूखा नहीं पडता, बाढ नहीं आती।

सत्पति राजा अपने शासन के प्रत्येक अधिकारी पर दृष्टि रखकर उसे समाहृत या दण्डित करता है। अपने राज्य मे किसी का भूख या अन्ना भाव से नहीं मरने देता। वह परमेश्वर का सदा स्तवन बन्दन करता है और उन गुणो को अपनाने का प्रयत्न करता है।

– क्रमश

गर्मी से निजात पाइए – गिलोय लगाइए

– देवेन्द्र कुमार बक्षी

आप पहली, दूसरी, तीसरी या इससे भी उपरी मजिल पर रहते हैं, आप के पास कोई गमला या खाली टब नहीं है और न ही इनके रखन की कोई जगह है मिट्टी ढो कर लाना आप को मजूर नहीं गमले मे मिट्टी भरना, प्रतिदिन उसमे पानी डालना, उसकी देखभाल करना आप को राज नहीं आता। तो क्या छोड दें हम अपने दरामदे में लहराते, हरे-भरे तरोताजा प्राकृतिक पर्दे की चाह को?

नहीं, नही ! बिल्कुल नहीं !! गिलोय के लिए इन सब की छूट है। वह आपसे ऐसा कुछ नहीं करवाएगी। यह अमृत बेल केवल देना जानती है लेना नहीं। दो इच जमीन का टुकडा यदि कहीं आप की बालकनी के नीचे मिल जाए, तो उसे और कुछ नहीं चाहिए।

चार फुट या उससे लम्बी हरी गिलोय की बेल का मोटा टुकडा ले आइए और उसे अपनी बालकनी के बाहर लटका दीजिए। बस, आपको और कुछ नहीं करना है। अब आप देखते जाइए इस नन्हीं-सी बेल का जादू। सारी व्यवस्था यह बिन जड की गिलोय की बेल का नन्हा सा टुकडा स्वत करेगा। दस-पन्द्रह दिनों में ही उसमे से अकुर की तरह जड फूट आएगी जो सीधी नीचे जमीन की ओर बढती चली जाएगी। जमीन में जड के जमते ही उसमे से निकलती नयनाभिराम, सुन्दर हरी-हरी पत्तियो से आप का घर आच्छादित होने लगेगा। प्रदूषण कम करने तथा गर्मी से कुछ राहत दिलाने के साथ ही यह आपके स्वास्थ्य का ध्यान रखेगी। आइए, इस विचित्र बेल के बारे मे कुछ और जानकारी ले।

इसके नाम – सस्कृत म इसे गूडूची मधुपर्णी, अमृता, हिन्दी मे – गिलाय गुडुची, बगला में – गुमच मराठी मे – गुलबेल, गुजराती में – गलो फारसी मे – गलोय अग्रेजी मे गुडुची तथा लैटिन मे – लिनोस्पोरा कोर्डीफोलिया कहते हैं। यह बहुत प्रसिद्ध बूटी है इसकी बेल बहुत लम्बी होती है तथा बहुत ऊचाई तक चली जाती है। इसे टुकडे-टुकडे कर देने पर भी यह बहुत अर्से तक जीवित रहती हे तथा बहुत मुश्किल से सूखती है। इसके फूल मार्च मे निकलने शुरू हो जाते हैं। ये बहुत छोटे तथा हरियालीदार पीले होते हैं। अग्रेजी दवाइयो मे इसका टिक्चर, जौहर सत या खार भी बनाया जाता हे। इसका जौहर पुराने दस्त पेचिश मे लाभदायक है। इसके पत्तो का रस मूत्रल है तथा सुजाक के रोग मे लाभदायक है। इसे दूध या पानी के साथ लिया जा सकता है। गिलोय हर प्रकार के ज्वर के लिए लाभदायक है। यह खून साफ करती है। खुजली, दाद, फोडे-फुन्सी तथा पेट के कीडो को मारने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। इसके कुछ औषधीय प्रयोग इस प्रकार हैं –

ज्वर – घर-घर के लिए उपयोगी यह बेल बुखार के लिए रामबाण का काम करती है। इसके लिए हरी गिलोय १० ग्राम को थोड़ा कूटकर रात को पानी मे भिगो दें। प्रात खाली पेट इसे कूट-छान कर शक्कर मिलाकर या ऐसे ही पी जाए। कुछ ही दिनो मे पुराने से पुराना बुखार भी दूर हो जाएगा। यदि इसके साथ अजवाइन भी मिला ली जाए तो लाभ जल्दी होगा। इसके लिए ५ ग्राम अजवाइन अलग पानी मे भिगो दे। प्रात दोनो को कूट-छानकर थोडा सेंधा नमक मिलाकर ले।

पेट के कीडे – गिलाय के पत्तो का रस निकालकर एक छोटी चम्मच की मात्रा मे पिलाने स पट क कीडे मर जाते हैं।

रक्त विकार – गिलोय का काढा पिलाने से फोड़े, फुन्सी रक्त विकार एव अनेक प्रकार के चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

बल, तेज – १० ग्राम हरी गिलोय रात को पानी मे भिगो दें। प्रात कूट-छानकर शहद मिलाकर पीए। छह माह पीने से बल तेज की अतीव वृद्धि होती है।

मार्च-अप्रैल से लेकर वर्षा ऋतु तक इसे लगाया जा सकता है। जड के जमीन में पहुचने तक यह वायुमडल से नमी ग्रहण करके बढती है। यदि हवा मे नमी न हो और मौसम अधिक गर्म हो तो बेल के दोनो सिरो पर मोटे कपडे की दो-तीन तह बाध कर उसे प्रतिदिन गीला करते रहे। जमीन मे लगाने के लिए इसका एक फुट का टुकडा ही काफी रहता है। बेल चाहे ऊपर से लगाई जाए या जमीन से, एक ही बेल कई घरो को आच्छादित करने मे समर्थ है। करके तो देखिए !

– आर्यसमाज नोएडा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन और सिद्धान्तों पर बनने वाला धारावाहिक 'प्रकाश' अन्तिम चरण में

हाल ही मे मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य. महासम्मेलन के अवसर पर महर्षि दयानन्द के जीवन और सिद्धान्तो पर एक विस्तृत दूरदर्शन धारावाहिक 'प्रकाश के निर्माण की घोषणा सत्या इन्टरप्राइजेज के निर्देशक श्री रजन ठाकुर ने आर्य जनता को दी। इस धारावाहिक की कथा, पटकथा तथा सवाद आदि पर धर्मार्य सभा ने कुछ विसगतियों की ओर सकेत किया था। जिनके निराकरण करने के बाद तीन प्रमुख वैदिक विद्वानो सर्व श्री डॉ० स्वामी सत्यम, डॉ० सोमदेव शास्त्री, तथा आचार्य वागीश शर्मा ने भी विसगतिया दूर करवाकर इस धारावाहिक को अनुमति प्रदान करने की स्वीकृति दे दी थी। तदोपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अनापत्ति प्रदान की।

सत्या इन्टरप्राईजेज के निदेशक श्री ठाकुर तथा सह निर्माता श्री इन्द्रकुमार मेहता ने बताया कि इस धारावाहिक को बडे पवित्र और परोपकारी लक्ष्यों से युक्त भावनाओं के साथ तैयार किया जा रहा है। इस धारावाहिक के लिए विश्व प्रसिद्ध सगीतकार श्री रविन्द्र जैन को अनुबन्धित कर दिया गया है, फोटोग्राफी आदि के लिए प्रसिद्ध कैमरामैन श्री अशोक चक्रवर्ती भी अनुबन्धित हैं।

उन्होने बताया कि इस धारावाहिक का प्रारम्भ सृष्टि उत्पत्ति के पूर्ण वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण से किया जाएगा और प्रारम्भिक बहुत सी कडियो मे पिछले तीनो युगो को सक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत करते हुए महाभारत काल के बाद समाज में उत्पन्न कुरीतियो का मूल जैसे नारी पतन की दास्ता, मुगलो तथा फ़िर ईसाई शासको के आने के उपरान्त इस देश की सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार और इन सब कारणो से भारत माता की गुलामी एव बुराइयो के इस दुष्चक्र के मध्य एक महान योगी महर्षि दयानन्द जी का उदय तथा उसके साथ सनातन वैदिक सभ्यता और सस्कृति की झलक प्रस्तुत करने की योजनाओ के साथ इस धारावाहिक की कथा, पटकथा आदि तैयार की गई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य भी इस धारावाहिक के निर्माण मे अथक प्रयास कर रहे हैं तथा सत्या इन्टरप्राईजेज को आर्यसमाज की ओर र[illegible]र प्रकार का सहयोग एव मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है। उन्होने बताया कि इस धारावाहिक का प्रसारण सम्भवत इसी वर्ष प्रराम्भ होने की पूरी सम्भावना है।

पृष्ठ 1 का शेष भाग

पवित्रता और आत्म-अनुशासन के बल पर ही राष्ट्र सेवा सम्भव

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन्हीं अलगाव रूपी बीमारियों का आभास करते हुए मूल की ओर जाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से उन्हीं मूल वैदिक मान्यताओं को आर्यो के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने गायत्री मन्त्र का वदा का मूल मन्त्र बताया क्योकि इसमें **'धियो यो न प्रचोदयात्'** नामक एक सगठनात्मक एव सामूहिक प्रेरणा थी।

इस प्रार्थना मन्त्र में हम केवल अपनी बुद्धि को ही सन्मार्ग पर ले जाने की प्रेरणा नहीं करते अपितु सब की बुद्धियो के लिए सन्मार्ग की प्रार्थना करते है।

उन्होने कहा कि पवित्रता और आत्म अनुशासन के बल पर ही राष्ट्र रक्षा की जा सकती है। इन लक्षणो के बिना जो सामाजिक कार्य होते हैं उन्हे राजनीतिक कहना ही उचित है।

उडीसा से पधारे स्वामी व्रतानन्द जी ने शिविरार्थियो को ब्रह्मचर्य की महिमा बताते हुए पवित्र जीवन जीने का उपदेश दिया। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द जी बहुत उच्च कोटि के ब्रह्मचारी थे जिनके चरित्र पर कभी किसी प्रकार की उगली नहीं उठी। उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी व्यक्ति शरीर से पुष्ट होता है और हृष्ट पुष्ट व्यक्ति समाज सेवा में भी सदैव अग्रणी रहता है।

हालैण्ड से पधारे स्वामी देवानन्द ने बच्चों को मासाहार की प्रवृत्ति से दूर रहने का निवेदन किया। उन्होने बताया कि बहुत सी विदेशी खाने-पीने वाली वस्तुओं में हड्डियो और चर्बी का चूरा मिलाया जाता है अत शाकाहारी रहने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि हम विदेशी वस्तुओ का प्रयोग न करें।

श्री धर्मपाल गुप्त ने शिविरार्थियो को शिविर के नियम पालन में चुस्त और सचेत रहने का आग्रह किया।

माता प्रेमलता शास्त्री ने शिविर के कार्यक्रम के साथ-साथ दयानन्द सेवाश्रम सघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि विगत् २० वर्षो से वे इन शिविरो का आयोजन कर रही है। पूरा वर्ष इन प्रान्तों मे घूम-घूम कर वे इन आदिवासी बन्धुओं को प्रेरित करती है कि वे लोग विधिवत प्रशिक्षण लेकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार कार्यो मे सहयोगी बने। इन कार्यो ने श्री वेदव्रत मेहता तथा श्रीमती ईश्वरानी मेहता का विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

समारोह के अन्त में आर्यसमाज रानी बाग के प्रधान श्री चमन लाल महेन्दु ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राष्ट्र नायकों से – शठे शाठ्यं समाचरेत

हम अपना ५२वा गणतन्त्र दिवस मना चुके हैं। सारे राष्ट्र मे जहा भय का वातावरण है, वहीं कश्मीर मे, पूर्वांचल मे आर्तनिनादों का क्रन्दन भी गूज रहा है। पडोसी देश की सह पर भाडे के आतकवादी लाखों लोगो का जीना दूभर किए हुए हैं। गणतन्त्र दिवस की पूर्व सध्या पर भारत सरकार ने सघर्ष विराम की अवधि बढा दी और आतकवादियों का दल कश्मीरियो पर कहर ढा रहा है। आखिर शान्ति और युद्ध का यह खतरनाक खेल कब तक चलता रहेगा? कब तक हम मरते रहेगे और दुश्मन हमे मारता रहेगा? आतकवादियो के प्रत्येक हमले की जिम्मेदारी हमारे राष्ट्रनायक पाकिस्तान पर डाल देते हैं। आखिर अपनो को बचा न पाने की जिम्मेदारी हम कब तक अपने ऊपर लेने को तैयार होगे? विदेशी वाह-वाही के लिए हम कब तक पिटते रहेगे? यह ठीक है कि सबल राष्ट्र होने के नाते हमारी जिम्मेदारिया अधिक हैं, परन्तु उस सबलता का क्या लाभ? जब हम अपनी रक्षा व सुरक्षा करने मे असमर्थ हो जाए। हमारी बहादुर सेनाए कब तक हाथ पर हाथ धरे बैठी रहेगी? शत्रु को सबक सिखाने का अवसर उन्हे कब दिया जाएगा? क्या उस समय जब बाजी हमारे हाथ से निकल चुकी होगी? क्या जब शत्रु देश की आकाक्षाए पूर्ण हो चुकी होंगी?

आज हमारे राष्ट्रनायको को शान्तिदूत बनने की अपेक्षा राष्ट्र तथा जनगण को, पूर्ण आत्मबल के साथ रक्षा करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को हम कब अनुभव करेगे। 'शठे शाठय समाचरेत' की उक्ति हम कब चरितार्थ करेगे? राम-कृष्ण, अर्जुन-भीम, सुभाष-अशफाक-हमीद जैसे शक्तिशाली योद्धाओ का राष्ट्र तब आतकवाद उग्रवाद, अन्याय, अनाचार के विरुद्ध हुकार करेगा?

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

साहित्यकार राधेश्याम 'आर्य' सम्मानित किए गए

सुरिमरथी के सम्पादक श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति दयानन्द विद्यालय मुसाफिरखाना के सभागार मे एक विशेष सम्मान समारोह आयोजित करके 'मातुश्री धन देवी केशव राम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट बरेली उ०प्र० द्वारा २५ फरवरी,२००१ को उनकी साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य मे सम्मानित किए गए। वैदिक ट्रस्ट के मैनेजिग ट्रस्टी प० गोपाल शरण विद्यार्थी ने ट्रस्ट की ओर से श्री आर्य जी को प्रशस्तिपत्र, स्मृति चिन्ह, वैदिक पुस्तकें, शाल तथा पांच हजार रुपये का चेक समर्पित किया।

ज्ञातव्य है कि श्री आर्य की दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा लगभग ३४ अन्य पुस्तकों का उन्होंने सम्पादन किया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा "राधेश्याम आर्य व्यक्तित्व एव कृतित्व" विषय पर एम०फिल० की उपाधि (२०००) प्रदान की जा चुकी है। साहित्यिक सेवाओ से प्रभावित होकर अनेक सस्थाओ ने श्री आर्य जी को सम्मानित किया है।

– सर्वेश्वर प्रसाद द्विवेदी

आर्यसमाज आदर्श नगर, नजीबाबाद के वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्यसमाज आदर्श नगर, नजीबाबाद (उ०प्र०) का त्रिदिवसीय वार्षिक समारोह दिनाक २५, २६ व २७ मई,२००१ को समायोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य रामकिशोर शर्मा (सोरो), डॉ० वेदपाल (बडौत), स्वामी वेदमुनि परिव्राजक आचार्य विष्णुमित्र आर्य (नजीबाबाद) व श्री वेगराज आर्य भजनोपदेशक (गा०बाद) के प्रवचन होंगे आयोजन में श्रद्धालु जनता सादर आमन्त्रित है। बाहर से आने पहुचने वाले सज्जनों के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था है।

– सन्तोष बाला आर्य
प्रधान, आर्यसमाज आदर्श नगर, नजीबाबाद

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन, दिल्ली-९५

प्रधान	–	श्री विनोद वालिया
मन्त्री	–	माता कृष्णा शर्मा
कोषाध्यक्ष	–	श्री बलबीर दुआ

आर्यसमाज बैंक एन्कलेव, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-९२

प्रधान	–	श्री जेसराम टुटेजा
मन्त्री	–	श्री जागदीश पाहुजा
कोषाध्यक्ष	–	श्री कृष्णलाल अरोडा

आर्यसमाज वोट क्लब, नई दिल्ली

प्रधान	–	श्री बलेशकुमार आर्य
मन्त्री	–	श्री सतीश आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री सुरेन्द्र कुमार

आर्यसमाज (वेदव्यास डी.ए.वी.) विकासपुरी, नई दिल्ली-१८

प्रधान	–	प्राचार्या चित्र नाकरा
मन्त्री	–	श्रीमती रजनी वसुदेव
कोषाध्यक्ष	–	विजय आर्य सुरजीत आर्य

आर्यसमाज तिमार पुर दिल्ली

प्रधान	–	श्री विमल कान्त शर्मा
मन्त्री	–	श्रीमती निर्मला मलिक
कोषाध्यक्ष	–	श्री आन्नद प्रकाश गुप्ता

समाज सुधार के लिए शिक्षा नीति ठीक करें

आर्यसमाज नरेला के वार्षिकोत्सव पर अनेक कार्यक्रम

विगत १३, १४ एव १५ अप्रैल को आर्यसमाज नरेला के वार्षिकोत्सव पर नवनिर्मित यज्ञशाला मे आर्यवीर दल के सेनानी स्वामी देवव्रत जी के ब्रह्मत्व मे महायज्ञ हुआ। वकील अनन्तराम जी के सुपुत्र श्री विनोद बागेश्वर ने ऋषि लगर की व्यवस्था की, जिसमे बडी संख्या में आर्यजनों ने प्रसाद ग्रहण किया।

१४ अप्रैल को नारी रक्षा समिति दिल्ली की अध्यक्षा वन्दना जी की अध्यक्षता मे महिला मान सम्मेलन हुआ। मुख्य वक्ता स्वामी ओमानन्द थे।

महिला मानरक्षा सम्मेलन में माग की गई कि महिलाओं को पिता या पति की चल-अचल सम्पत्ति मे समान भागीदारी दी जाए। महिलाओ पर बढते अत्याचार सख्ती से रोके जाए। सभी चुनावो मे महिलाओ को ५० प्रतिशत पद दिए जाए। १५ अप्रैल को स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे समाज सुधार सम्मेलन हुआ। समाज के सुधार के लिए देश की शिक्षा नीति मे पूर्ण परिवर्तन की गई।

श्री जगदीश आर्य एवं श्रीमती शशि प्रभा आर्या के गृहस्थाश्रम की ३६वीं वर्षगांठ

आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य की गृहस्थाश्रम के ३६ वीं वर्षगाठ आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन में साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त मनाई गई। जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन, श्रीमती उज्ज्वला वर्मा, तथा रमेश वर्मा उपस्थित थे।

कै० देवरत्न आर्य ने मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे श्री जगदीश आर्य के सहयोग का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि आप दोनो पति-पत्नी वास्तव में अपने महान माता-पिता के नाम को रोशन कर रहे हैं। श्री जगदीश आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती शशिप्रभा आर्या ने आर्य महासम्मेलन मे महिला सम्मेलन का सयोजन किया था। कै० देवरत्न आर्य ने श्री जगदीश आर्य को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का प्रतीक स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

भ्रष्टाचार-उन्मूलन में आर्यसमाज की सक्रिय भूमिका

भारत राष्ट्र के स्वाधीनता सग्राम और देश के सामाजिक, शैक्षिणिक और चारित्रिक उन्नयन मे आर्यजनो और आर्यसमाज की यशस्विनी भूमिका रही है परन्तु खेद है कि आज देश मे भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है, इस सम्बन्ध मे देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार के उन्मूलन मे आर्यसमाज की सक्रिय भूमिका के विषय मे आर्यसमाज मन्दिर सी ब्लाक प्रीत बिहार मे २६ अप्रैल को दोपहर २ बजे से शामतक एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली और मन्त्री श्री पतराम त्यागी के प्रयत्नो से एक विचार गोष्ठी आयोजित कर आर्यजनो की भागीदारी और सहयोग का आह्वान किया गया

सादा रहन-सहन और ऊंचा चरित्र बनाओ

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज न्यू मोती नगर द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के १५ अप्रैल, २००१ को हुए वार्षिकोत्सव पर पार्षद श्री वेदप्रकाश गुप्त ने विजयी बच्चों को पुरस्कार देते हुए प्रेरणा दी कि वे सदा रहन-सहन और ऊचा चरित्र-निर्माण करें, जिससे वे भारतभूमि के देशभक्त नागरिक बनें।

प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री रूपनारायण ने विद्यालय के ६५ प्रतिशत सफल परिणाम पर सन्तोष प्रकट किया और विद्यालय की उन्नति का श्रेय अधिकारियो और अध्यापिकाओ को दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती गुप्ता ने बच्चों द्वारा शैक्षिक और शिक्षोतर क्रिया-कलापो मे प्रदर्शित ऊचे मापदण्ड के लिए अभिभावकों के सक्रिय सहयोग की सराहना की।

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है :-

187 सर्वश्री योगेन्द्र मित्र, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 1000 00
188 श्रीमती अगूरी देवी, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 501 00
189 सत्येन्द्र मित्र, आ० स० गोविन्द पुरी, नई दिल्ली 1000 00
190. आ०स० मदनगीर, नई दिल्ली 1,500 00
191 आ०स० लाजपत नगर, नई दिल्ली 6,000 00
192 स्त्री आ०स० लाजपत नगर, नई दिल्ली 5,000 00
193 कृष्ण लाल सिक्का, न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी, नई दिल्ली 1100 00
194 श्रीमती सरला पाल, (द्वारा स्त्री आर्यसमाज न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी, दिल्ली) 1000 00
195 बलवीर वर्मा, सरोजनी मार्किट, दिल्ली 1,000 00
196 विपुन कुमार, गुलमोहर पार्क दिल्ली 1000 00
197 अरूणव खुराना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5000 00
198 एयर कमाण्डार जयचन्द्रा, दिल्ली 2000 00
199 ब्रिगेडियर आर०डी० धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
200 श्रीमती सुशील धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
201 उदय धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
202 यतिन गुलाटी, कोटा 101 00
203 जय चन्द्रा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 100 00
204 श्रीमती कमला धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2000 00
205 एच० बी० मेहता, साउथ एक्स 2 दिल्ली 2000 00
206 डॉ० पी० एल० राठी, सा० एक्स 2 दिल्ली 1000 00
207 हरीशचन्द्र बत्रा, दिल्ली 500 00
208 श्रीमती सुशीला कुकरेजा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
209 आर० के० भाटिया, सेवा नगर, दिल्ली 1000 00
210 राजन खन्ना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
211 श्रीमती सत्या कोहली, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
212 वेदवती सिंह, भोला नगर, दिल्ली 101 00
213 श्रीमती शीला वरमाणी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 200 00
214 श्रीमती यशा तुली, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2100 00
215 श्रीमती पुष्पा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 51 00
216 श्रीमती सान्ता धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2100 00
217 श्रीमती सत्यवती गुप्ता, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
218 श्रीमती सावित्री धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
219 के० सी० चौधरी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
220 श्रीमती सावित्री पारगल, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
221 ओ० पी० नैय्यर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
222 कोल डी०आई०एम० साहनी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2200 00
223 श्रीमती प्रेमलता कपूर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
224 देवेन्द्र शर्मा, लोधी कालोनी, दिल्ली 51 00
225 विनोद धवन, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5000 00
226 विग० कमाण्डर राजेन्द्र पाउल, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000.00
227 एम०डी० खन्ना, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
228 श्रीमती कौशल्या देवी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 2500.00
229 श्रीमती सीमा चौधरी, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1100 00
230 एम०एम० तनेजा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
231 कमाण्डर लाजपत राय ढींगा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000.00
232 श्रीमती शशि प्रभा, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
233. श्रीमती गीता हग, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 1000 00
234 श्रीमती राज आनन्द, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 500 00
235 आ०स० कस्तूरबा नगर, डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 5696 00
236 आ०स० श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली 12500 00
237 आ०स० साकेत, नई दिल्ली 25000 00
238 ओम प्रकाश गुप्ता, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली 1000 00
239 आ०स० मन्दिर गांधीनगर, दिल्ली 5100 00
240 सान्ता राम मलिक, दिल्ली 500 00
241 आ०स० कीर्ति नगर, दिल्ली 15000 00
242 दीप बुद्धिराजा, आ०स०, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
243 वेद प्रकाश शास्त्री, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
244 कृष्ण लाल ठक्कर, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
245 जगदीश मित्र अरोड़ा, कीर्ति नगर, दिल्ली 1100 00
246 राजपाल खरबन्दा, कीर्ति नगर, दिल्ली 1100 00
247 शिव भगवान लाहोटी, कीर्ति नगर, दिल्ली 2100 00
248 राम गोपाल कथूरिया, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
249 अजय कथूरिया, कीर्ति नगर, दिल्ली 1000 00
250. एस०के० नारग, रमेशनगर, दिल्ली 100 00
251 श्रीमती उषा धुग, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
252 महेन्द्र नाथ सहगल, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
253 श्रीमती उषा बजाज, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
254 अमर लाल बजाज, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
255 श्रीमती कृष्णा अनेजा, कीर्ति नगर, दिल्ली 500 00
256 डॉ० दयानन्द कीर्ति नगर, दिल्ली 250 00
257 ओम प्रकाश आर्य कीर्ति नगर, दिल्ली 150 00
258 आ०स० रमेश नगर, दिल्ली 5100 00
259 महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, रमेशनगर, दिल्ली 1700 00
260 गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 500 00
261 गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 2500 00
262. गुप्तदान, (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 21 00
263 आर०के० जैन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 51 00
264 श्रीमती कर्म देवी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 150 00
265 भी०के० महाजन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 250 00
266 गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी, दिल्ली) 1100 00
267 गीता राम मिश्रा, हमीरपुर, दिल्ली 250 06
268 डॉ० जौन्ती चतुरी क्षाग, प्रीतमपुरा, दिल्ली 1000 00
269 औरचीड इलेक्ट्रॉनिक्स, दिल्ली 5000 00
270 एस० सी० अग्रवाल, नई दिल्ली 500 00
271 डॉ० पुनम गुप्ता, नई दिल्ली 1000 00
272 श्रीमती महेश कुमारी आहुजा, दिल्ली 1000 00
273 कृष्ण कुमार आर्य, दिल्ली 1000 00
274 श्रीमती डॉ० मधु मलिक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 1000 00
275 डॉ० श्रीमती सुशीला लाल, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 1100 00
276 जे० कोहली, जैन मंदिर रोड, दिल्ली 5000 00
277 जितेन्द्र कोहली, जैन मन्दिर रोड, दिल्ली 1000/-
278 धर्मपाल गुप्ता, प्रितमपुरा, दिल्ली 500/-
279 आर्य स० सरोजनी नगर, नई दिल्ली 5000/-
280 देशराज बुद्धिराजा, नई दिल्ली 500/-
281 पुरुषोत्तम लाल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली 500/-
282 राजेन्द्र नाथ चण्डोक सरोजनी नगर, नई दिल्ली 500/-
283 डॉ० आनन्द शर्मा, रेलवे कालोनी चाणक्यपुरी, दिल्ली 500/-
284 रोशन लाल गुप्ता निर्माण विहार, दिल्ली 250/-
285 सुनील महाजन सरोजनी नगर, दिल्ली 200/-
286 एस० सी० सुद, लक्ष्मीबाई नगर, दिल्ली 200/-
287 श्रीमती रमा देवी, लक्ष्मीबाई नगर, दिल्ली 50/-
288 हरीश मित्रा अग्रवाल, लक्ष्मीबाईनगर, दिल्ली 50/-
289 पंडित रामानन्द आचार्य, लक्ष्मीबाईनगर, दिल्ली 50/-
290 मन्त्री आ० स० फूलसा, नयापुरा, जोधपुर 500/-
291 डी० डी० शर्मा, अमृतसर 2000/-
292 डॉ वी० शर्मा, बोकारो स्टील सिटी बिहार 500/-
293 अग्निव्रत नौविक, जालोर बराज०न्न 1500/-
294 भूपाल सिंह आर्य 201/-
295 श्रीमती तास खुराना, हरिनगर, दिल्ली 5000/-
296 अमृतपाल शास्त्री, नोएडा 125/-
297 कुमारी सुकन्द नोएडा 251/-
298 शान्तनु प्रथम कक्षा, नोएडा 115/-
299 वी० एन० कठपालिया, रामकृष्णपुरम, दिल्ली 200/-
300 आर्यसमाज सेक्टर 1 रामकृष्णपुरम, दिल्ली 200/-
301 वी०डी० भण्डारी, नई दिल्ली 101/-
302 आ०स० लल्ला पुरा वाराणसी 1100/-
303 मन्त्री, आ० स० अमरोहा, ज्योतिबा फूले नगर उ०प्र० 10257/-
304 आ० स० सण्डीला हरदोई 1001/-
305 देविन्द्र कक्कड, नवाशहर दोआबा पजाब 2000/-
306 आ० स० मन्दिर जीरा पजाब 1100/-
307 श्रीमती सचदेव द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 50/-
308 पूरणलाल द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 100/-
309 सुभाष गोयल द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5000/-
310 मैसर्स शिवम कोरूफैन प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5000/-
311 सुरेन्द्र गोयल द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5000/-
312 प्रभात ट्रेडर्स द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5000/-
313 परफैक्ट बैंक लि० राजा गार्डन द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 11000/-
314 क्लासिक कोरपर प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 11000/-
315 विशाल पैकर द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5100/-
316 रवि नरुला द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5001/-
317 नार्थन इण्डिया कोरुगलेट द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 21000/-
318 सुपर पैक द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 5100/-
319 लोकेश सूद द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 3000/-
320 मैसर्स डोलसन कन्टेनर्स प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 2100/-
321 आर० एन० पेपियर द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 1100/-
322 राघव ओवरसीज द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 3100/-
323 विकास कैमिकल्स द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 500/-
324 ईस 3 एम इन्डस्ट्रीज द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 1100/-
325 नन्द लाल ढींगरा द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 501/-
326 राजेश बक्सी द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 250/-
327 दलीप सिंह सैनी द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 150/-
328 नरेन्द्र कुमार सभ्रवाल द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 50/-
329 डॉ० हरद्वारीलाल रस्तोगी द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 51/-
330 मुलख राज भाटिया द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 100/-
331 अरुण बतरा द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 200/-
332 हरबस गुलाटी द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 500/-
333 राजकुमार द्वारा आ०स० बाली नगर, दिल्ली 250/-

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

- सभा प्रधान

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 17-18/05/2001 दिनांक १४ मई से २० मई, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 17-18/05/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

सभी देशवासियों से हार्दिक प्रार्थना है –

प्रिय भाई !

भारत मे बना ऐसा कोई पदार्थ न खरी : जिन पर – जिसके आवरण पर केवल अंग्रेजी मे ‹ स्तु का नाम और ब्योरा लिखा हो। आपसे अनुरोध है कि विदेशी भाषा अंग्रेजी में ब्योरे वाला समान न खरीदे

अगर अंग्रेजी में ब्योरे वाला सामान खरीदना पडे तो दुकानदार को प्रेरणा करे कि उस समान पर अंग्रेजी के साथ किसी भारतीय भाषा में भी उसका ब्योरा अवश्य हो, कम से कम ब्योरे की लिपि देवनागरी ही हो।

विदेशी भाषा मे ब्योरा होने के कारण आप जो सामान नहीं खरीद रहे हैं, उसका कारण भी दुकानदार को स्पष्ट करे दे।

विनीत

वेदव्रत शर्मा, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सीमा पार के आतंक के लिए पाकिस्तान की आलो

आतंकवाद पर अमेरिका की वार्षिक रि

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मन्त्री पावेल ने अन्तराष्ट्रीय आतकवाद अमेरिकी विदेश विभाग के वार्षिक विवरण मे भारत द्वारा दिए जा रहे सहयोग की प्रशसा की है तो साथ ही कश्मीर में आतकवाद को बढावा देने के लिए पाकिस्तान की कडी आलोचना की है।

भारत की इच्छा के बावजूद लश्करे तोयबा को विदेशी आतकी सगठनों की सूची में सम्मिलित नहीं किया है तथापि रिपोर्ट मे विभिन्न आतकी संगठनों की पृष्ठभूमि एव सूचना उपलब्ध कराने वाले अध्याय मे हरकत उल मुजाहिदीन, जैश ए मोहम्मद के साथ पहली बार लश्कर ए तोयबा को सम्मिलित किया गया है।

रिपोर्ट मे सूचना दी गई है कि भारत-अमेरिका के आतकवाद विरोधी सयुक्त कार्यदल की पिछले वर्ष दो बैठकें हुई।

प्रतिष्ठा में

आर्यसमाज मन्दिर ध्वस्त करने का विरोधः पुनर्निर्माण हो

आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार को पजाब केसरी पत्र दिनाक १५ अप्रैल, २००१ मे (रविवार) को चित्रो सहित प्रकाशित समाचार से यह जानकर शोक एव आक्रोश हुआ कि आर्यसमाज मिण्टो रोड, दिल्ली के ४५ वर्ष से स्थापित आर्य समाज मन्दिर ध्वस्त कर दिया गया। आर्यसमाज की दृष्टि मे दिल्ली के डी.डी.ए का यह कार्य अत्यन्त निन्दनीय है तथा सम्बन्धित अधिकारियो को दिल्ली राज्य एव केन्द्रीय सरकार दण्डित करे तथा तोडे गए आर्यसमाज मन्दिर भवन को सरकारी व्यय से पुन निर्माण कराए।

ओमप्रकाश वर्मा — मन्त्री
विजय बिहारी लाल माथुर — प्रधान

आर्यसमाज मन्दिर तोड जाने का उग्र विरोध

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य, मन्त्री श्री श्याम प्रकाश शास्त्री एव सत्यकेतु आर्य तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर के प्रधान श्री आनन्द स्वरूप आर्य, मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य एव श्री हनुमानप्रसाद आर्य ने एक सयुक्त वक्तव्य मे दिल्ली मिण्टो रोड स्थित ४५ वर्ष पुराने आर्य समाज मन्दिर के तोडे जाने पर रोष व्यक्त करते हुए कहा कि दिल्ली मे अतिक्रमण विरोध दस्ते द्वारा की गई गलत कार्यवाही से आर्यसमाज के लोगो का गहरा आघात लगा है। इस प्रकार की कायवाही को आर्यसमाज कभी सहन नहीं कर सकता। सरकार को चाहिए कि वह तुरन्त मन्दिर बनवाए या इसका उचित मुआवजा दे। अन्यथा सरकार को गम्भीर परिणाम भुगतने होगे।

– बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़े।

ओ३म्

मूल्य 375 रुपये सैंकड़ा

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का सुन्दर चित्र, सफेद कागज, सुन्दर छपाई, शुद्ध संस्करण, प्रचारार्थ घर-घर पहुंचाएं।

१ आर्य समाजो स्त्री आर्यसमाजो के अधिकारियो से अनुरोध है कि वैदिक सध्या तथा यज्ञ की भावना को घर–घर तक पहुचाने के लिए आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव तथा अन्य पर्वो पर इस पुस्तक को अधिक से अधिक क्रय करके अपने–अपने क्षेत्र के प्रत्येक घर मे अवश्य वितरित करे।

२ आर्य शिक्षण सस्थाओ के प्रबन्धको तथा प्रधानाचार्यो से आग्रह है कि वे अपने विद्यालयं मे पढने वाले प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक उपलब्ध कराए ताकि उसे वैदिक सध्या तथा यज्ञ के मन्त्र कठस्थ हो।

३ पुस्तक की एक प्रति का मूल्य ५ रुपये है। प्रचारार्थ ५० पुस्तको से अधिक क्रय करने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

पुस्तकों की अग्रीम राशि भेजने वाले से डाक–व्यय पृथक् नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ–साफ लिखे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली- १, ☎ : ३३६०१५०

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक ३० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ४ जून से १० जून, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

श्रावणी (वेदप्रचार समारोह) कैसे मनाएं ?

वैदिक धर्म मे स्वाध्याय का प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम और ब्राह्मण वर्ग की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुडी है अर्थात् विद्यार्थियो का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी हितकर नही हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात देश की रक्षा करने वाले पुलिस और सैन्य बल तथा शासन चलाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहे तो देश की आन्तरिक ओर बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने मे अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ग यदि स्वाध्यायशील रहता है तो देश की व्यापारिक गतिविधियो का सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय कर [illegible] अपना ही नही [illegible] आस-पास के समाज का भी सद्व्यवहार [illegible] द्वारा सुगन्धित कर सकता है।

इस वर्ष **रक्षाबन्धन ४ अगस्त, २००१ (शनिवार)** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी १२ अगस्त, २००१ (रविवार)** का है। दोनो पर्वो के बीच का सप्ताह [illegible] प्रचार समारोह के रूप मे मनाया जाता है।

वेदप्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप मे औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नही होता। यदि वेदप्रचार समारोह का उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगो को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गंगा घर-घर मे पहुचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन बनना चाहिए।

वेदप्रचार समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायो मे से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते हैं –

वृहद यज्ञो का आयोजन (यदि सम्भव हो तो

पार्को अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यो आदि के अतिरिक्त, जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए, सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगो में करें।

२. यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

३ अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं महिलाओं, वृद्धो, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठिया या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशाला आयोजित करे। "सुखी परिवार कैसे रहे?" विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथाओ का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों का लाभ लोगों के धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सके।

५ क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारो से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें।

६ आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके "आत्मावलोकन" अवश्य करें कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक हैं ? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नही तो उसके कारण ओर समाधाना पर चर्चा करें।

७ उपरोक्त के अतिरिक्त, कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजें। जिससे विश्व के अन्य आर्यो को भी उससे अवगत कराया जा सके।

८ आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद जयन्ती समारोह की तिथिया निश्चित कर ले और आर्यसन्यासियो, वैदिक विद्वानो, सगीतकारो, भजनोपदेशको से सम्पर्क करके स्वीकृति ले ले। वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करे।

९ आर्यसमाज के अधिकारियो से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी ४ अगस्त, शनिवार अथवा ५ अगस्त रविवार को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस के रूप में धूमधाम से मनाए।

अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ अवश्य भेजे।

– **वेदव्रत शर्मा**, सभा प्रधान

भक्तिमय वातावरण के लिए भजन सन्ध्या

पश्चिमी दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के तत्वावधान मे आर्यसमाज कीर्ति नगर मे एक मनोहारी भजन सध्या का आयोजन किया गया, जिसमे प्रमुखत श्री देवदत्त आर्य ने अपनी भजन मण्डली के साथ मधुर भजन प्रस्तुत किए। इनके अतिरिक्त, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की मन्त्रिणी श्रीमती शशि प्रभा आर्या तथा सभा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने भी एक-एक भजन प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम को आर्यजनता ने मत्र-मुग्ध होकर सुना। आर्यसमाजों मे भक्तिमय वातावरण पैदा करने का यह एक अच्छा उपाय था। इस कार्यक्रम का सचालन डॉ० वीरपाल विद्यालकार ने किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, दिल्ली सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य, श्री विमल वधावन, श्री हरीश बत्रा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल सिह मलिक [illegible] उपस्थित थे। ❑

दिल्ली में आर्य वीरांगना शिविर

दिल्ली प्रदेश आर्य वीरागना दल के तत्वावधान मे सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा के नेतृत्व मे एक आर्य वीरागना शिविर का आयोजन **१० जून से १७ जून** तक आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार बी० ब्लॉक मे किया जा रहा है। दिल्ली मे यह शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमे १२ वर्ष से अधिक आयु की बच्चियो को वैदिक सिद्धान्तो और परिवार से सम्बन्धित रीति नीति की जानकारी दी जाती है।

आर्य वीरागना शिविर का समापन समारोह **१७ जून को प्रात १० बजे** होगा। जिसमे केन्द्रीय खान राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील मुख्य अतिथि होंगे। ❑

विशेष सम्पादकीय

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड (२)
क्या हुआ और क्या होगा ?

— वेदव्रत शर्मा

22 अप्रैल के शिलान्यास समारोह की तैयारियो मे हम सब लोग उत्साह-पूर्वक जुट गए हालाकि श्री जगमोहन का नकारात्मक रवैया वहीं का वहीं बरकरार था। शिलान्यास समारोह से एक दिन पूर्व २१ अप्रेल को प्रात काल सभा सार्वदेशिक कार्यालय मे दिल्ली पुलिस का एक अधिकारी आकर डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री को अग्रेजी भाषा मे लिखा गया एक पत्र सौप गया। हालैण्ड के डॉ० महेन्द्र स्वरूप भी उस समय सभा कार्यालय मे थे। उन्होने टेलीफोन से इसकी सूचना तथा विवरण श्री विमल वधावन को सुनाया। कुछ समय मे मैं भी वहा पहुच गया। उस पत्र मे दिल्ली पुलिस के सहायक आयुक्त की तरफ से शिलान्यास समारोह को प्रश्नगत् करते हुए हमसे कहा गया कि इसके आवटन से सम्बन्धित अधिकृत दस्तावेज आदि प्रस्तुत करे। इस पत्र के बाद हम सब अधिकारियो का चिन्तित होना स्वाभाविक था। अत तत्काल प्रो० शेरसिह, श्री लक्ष्मीचन्द स्वामी सुमेधानन्द तथा मै दोपहर को उपराज्यपाल श्री विजय कपूर से मिले। उन्होने हमे स्पष्ट कहा कि आप निर्माण कार्य अभी प्रारम्भ न करे और शिलान्यास भी न करें। आप केवल यज्ञ ही करे। इतनी देर मे वे स्वय उठकर गए और एक फार्म लाकर प्रो० शेरसिह जी को सौप दिया और कहा कि इस फार्म को आप भर दे मै जमीन आबटित करा दूगा। मैंने उस समय भी कहा कि यह फार्म भरना निरर्थक है क्योकि यह शैक्षणिक सस्थाओ को नई भूमि के आबटन का फार्म है। परन्तु मेरी बात को अनसुना कर दिया गया।

प्रो० शेरसिह जी के कहने पर उप राज्यपाल ने यज्ञ की अनुमति देते हुए एक पत्र देना भी स्वीकार कर लिया। उस पत्र मे भी इस बात को गोल-मोल रखा गया कि भूमि का आबटन उसी स्थान पर होगा या नही।

फार्म दिए जाने पर चौ० लक्ष्मी चन्द जी ने भी कहा कि इस फार्म का औचित्य निरर्थक सा लगता है।

सायकाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे भी आर्यसमाज मिन्टो रोड पर ही चर्चा होती रही। आर्यजनो को शिलान्यास समारोह और विगत चार दिन के आन्दोलन पर सन्तोष तो था परन्तु कुल मिलाकर स्थिति अब भी सन्देह के घेरे में थी। परिणामत दिल्ली सभा की ओर से आर्य समाज मिण्टो रोड के सचालन के लिए एक तदर्थ समिति भी गठित की गई।

अगले दिन २२ अप्रैल को जोर-शोर से कई हजार आर्य नर-नारियो की उपस्थिति मे शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिलान्यास यज्ञ के ब्रह्मा विशेष रूप से पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी को बनाया गया। उनका इस आन्दोलन मे विशेष सहयोग रहा है। वे प्रतिदिन इस आन्दोलन के दौरान वहा आते रहे। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने की।

२२ अप्रैल के इस समारोह के बाद ही गुप्त स्रोतो से हमे पता लगा कि आर्यसमाज मन्दिर मिन्टो रोड के नाम पर एक नकली कार्यकारिणी गठित करके दिल्ली उच्च न्यायालय मे शहरी विकास मत्रालय के विरुद्ध एक मुकदमा तैयार किया जा रहा है जिसमे सम्भवत सार्वदेशिक सभा को भी प्रतिवादी बनाया जाएगा। २३ अप्रैल को ही मैं श्री विमल वधावन के साथ उच्च न्यायालय गया और वहा केवियट दाखिल की, जिससे मुकदमें की सुनवाई से पूर्व सूचना हमे प्राप्त हो सके। परन्तु बाद मे पता लगा कि रिट याचिकाओ मे केवियट प्रभावी नहीं होती।

इस बीच फार्म आदि तैयार करने के लिए तथा उसके साथ दर्जनो दस्तावेज सलग्न करने हेतु मैंने कार्यालय को निर्देश दे दिया। २६ अप्रैल को वह फार्म स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो० शेरसिह जी को भी दिखा दिया गया। उसके उपरान्त श्री मदनलाल खुराना को ७ मई को दिखाया जा सका क्योकि उससे पूर्व वे दिल्ली से बाहर थे। ६ मई को यह फार्म दाखिल कर दिया गया।

इस बीच दो विचित्र तथ्य और सामने आए। अचानक हमे पता लगा कि २ मई को उच्च न्यायालय की नियमित प्रथम सूची के बाद अतिरिक्त सूची मे यह मुकदमा लगा और आर्यसमाज मिन्टो रोड की नकली कार्यकारिणी ने अदालत के समक्ष कहा कि इस स्थान पर पार्क बनाया जाना है और प्रतिवादी न० १ (शहरी विकास मत्रालय) इस भूमि को प्रतिवादी न० २ (सार्वदेशिक सभा) के नाम आवटित करना चाहता है अत उन्हे रोका जाए। यह भाषा स्पष्टत सरकार द्वारा प्रायोजित भाषा लग रही थी। यह एक प्रकार का मिलीभगत वाला मुकदमा था। अदालत ने आबटन का स्थगन आदेश जारी कर दिया। परन्तु आज तक अदालत से न तो हमे इस आदेश की प्रति और न ही याचिका की कोई सूचना मिली है। यह सारी सूचना गुप्त स्रोतो के आधार पर थी।

इस बीच मिन्टो रोड मन्दिर स्थल पर हमारे बहादुर और कर्मठ सहयोगी आचार्य भद्रकाम जी तथा उनके साथ तदर्थ समिति के सदस्य तथा अन्य लोग दैनिक यज्ञ का कार्यक्रम नियमित रूप से चला रहे हैं। सर्वश्री अरूण वर्मा, सजीव कोहली, रामनिवास कश्यप, सुशील महाजन, शिवशकर जी, रवि बहल आदि का श्री चन्द्रदेव जी के नेतृत्व मे पुनीत सहयोग उल्लेखनीय है।

१२ मई को सार्वदेशिक की अन्तरग बैठक मे भी आर्यसमाज मिन्टो रोड का विषय छाया रहा और अन्तत स्वामी ओमानन्द जी ने घोषणा की कि इस भूमि को प्राप्त करनै के लिए यदि दोबारा सघर्ष करना पडता है तो हम पीछे नहीं रहेगे। उन्होने कहा कि इन राजनेताओ के बाजू मेरे आजमाए हुए है, ये धोखेबाज हैं अत जब तक कोई वास्तविक चीज विधिवत एव अधिकृत रूप से हमारे हाथ न आ जाए तब तक उसे प्राप्त हुआ नहीं मानना चाहिए।

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड की अग्नि अभी शान्त नहीं हुई है, यदि हमे शीघ्र सरकार ने आबटन नही दिया तो सम्भव है कि फिर से हमे टकराव की मुद्रा मे आना पडे।

आर्यसमाज मिण्टो रोड के बारे मे अब तक दी गई जानकारी से माननीय पाठकगण एव आर्य जनता के सामने स्थिति लगभग स्पष्ट हो चुकी है कि १७ अप्रैल को हमे आश्वासन देने के बाद अगले दिन से ही श्री जगमोहन ने हमे यह आभास कराना प्रारम्भ कर दिया था कि उनकी नीयत इसी स्थल के आबटन की नहीं है।

विगत सप्ताह जब पुन हम लोग प्रो० शेरसिह, श्री लक्ष्मी चन्द श्री जगदीश आर्य, स्वामी अग्निवेश तथा मैं जब श्री जगमोहन से मिले तो उन्होने साफ इन्कार कर दिया कि मैंने कभी भी उसी भूमि के आबटन की बात नहीं की। वे बार-बार इसी बात पर अडे रहे कि आप भूमि किसी और स्थल पर ले लो। इस बात को कहते हुए श्री जगमोहन ने बार-बार मेरी ओर इशारा करते हुए कहा कि ये ही अडे हुए हैं अन्य लोग तो मान गए थे कि भूमि कहीं और दे दी जाए।

श्री जगमोहन से इस मुलाकात के बाद हमारे साथियो को यह आभास हो गया कि वास्तव मे मन्त्री महोदय इस भूमि का उसी स्थल पर आबटन सरलता मे करने वाले नहीं। हमे इसके लिए सघर्ष करना ही होगा यह आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का सवाल है इसमे कोई अविश्वास का आभास नही होना चाहिए। भूमि और सम्पत्तियो के लिए हम ललायित नहीं हैं परन्तु जिस गैर कानूनी तरीके और धोखे से यह मन्दिर गिराया गया है, पवित्र वेदो और अन्य धार्मिक ग्रन्थो को जिस प्रकार अपवित्र किया गया है और १७ अप्रैल के प्रदर्शन से आर्यजनता की भावनाओ और शक्ति के सामने एक बार झुककर जिस प्रकार यह सफेद झूठ बोला जा रहा है कि सरकार ने उसी स्थल पर भूमि आबटन की बात को कभी स्वीकार ही नही किया था। इन प्रवृत्तियो ने समूची आर्य जनता को झूठ के चक्रव्यूह मे फसाकर धोखा देने का प्रयास किया है।

दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्रियो एव सासदो की उपस्थिति और उनके सामने हुए इस आश्वासन को झुठलाकर श्री जगमोहन देश का क्या भला करना चाहते हैं, यह हमारी समझ से बाहर है।

हमारी सामान्य बुद्धि से केवल एक ही निष्कर्ष निकला है कि श्री जगमोहन ने आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को ध्वस्त कराने को अपनी भूल अब तक नहीं माना और वे एक साधारण से पार्क के निर्माण को लेकर अजीबो-गरीब अडियल प्रवृत्ति पर उतर आए हैं।

भाजपा के नेतृत्व वाली केन्द्रीय सरकार के एक मन्त्री होने के नाते श्री जगमोहन अभी तक भी यह महसूस नहीं कर पाए कि उनके इस अडियल रवैये से भाजपा की छवि एक राजनीतिक दल के रूप मे आर्यजनता की नजरो मे क्या रहेगी ?

मेरे विचार मे समूचे आर्यजगत को एकजुट होकर सर्वप्रथम आर्यसमाज मंन्दिर मिण्टो रोड के पुनरुद्धार हेतु अपनी शक्ति लगाने के लिए तैयार रहना चाहिए। ❑

हमारी एकता सुदृढ हो !

समानो मन्त्रः ऋ० १०/१५१/३
तुम्हारे विचार एक हो।
समानी व आकूतिः। ऋ० १०/१५१/४
तुम्हारे सकल्प एक हो।
मा वियौष्ट। अथर्व० ३/३०/५
अलग मत हो मिल कर रहा।
उत्क्राम महते सौभगाय।
अपने महान् सौभाग्य के लिए आगे बढो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

भारत राष्ट्र की वैज्ञानिक सीमा : लक्ष्य से कहीं दूर

इतिहासकार विन्सेन्ट ए० स्मिथ ने मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य विस्तार का वर्णन करते हुए लिखा था-- "दो हजार साल से भी अधिक हुए भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ मे आहे भरते रहे और सौलहवीं तथा सत्रहवी सदी के मुगल सम्राटो ने भी कभी उसे पूर्णता के साथ प्राप्त नहीं किया। तीसरी सहस्राब्दी मे भारत की स्वाधीनता के चौवनवे वर्ष मे भी यह कितनी चिन्ता और वदना की बात है कि भारत छोडत समय अग्रेज राष्ट्र के जैसे दो बाजू काट गए थे उनके एकीकरण का लक्ष्य कही दूर है। कुछ वर्ष पूर्व भारत के प्रधानमन्त्री ने लाहौर की यात्राकर एकीकरण की दिशा मे कदम बढाया था, परन्तु वह सफल नहीं हुआ। पिछले दिनो भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के फौजी शासक परवेज मुशर्रफ को भारत-पाक सम्बन्धो के सुधार के लिए आपसी बातचीत का निमन्त्रण दिया था, यह सन्तोष की बात है कि उन्होने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है और जल्दी ही दोनों देशो के नेता आपसी सम्बन्धो को सुधारने के बारे में वार्ता करेगे। यद्यपि परवेज मुशर्रफ कहते हैं कि वह खुले दिमाग और लचीले रुख के साथ बातचीत करने के इच्छुक हैं, साथ ही वह यह भी कह रहे हैं कि बातचीत का मुख्य मुद्दा कश्मीर है और वह कश्मीरी जनता की आकाक्षाओ के अनुरूप हल चाहते है। उन्होने वैसी ही भाषा का प्रयोग किया है जैसा कि आतकवादी हुर्रियत कान्फ्रेस वाले प्रयुक्त करते है। विश्व राष्ट्र सघ के महासचिव कॉफी अन्नान स्पष्ट रूप से कह चुके है कि कश्मीर के बारे मे राष्ट्र सघ का प्रस्ताव निरर्थक हो चुका है। असल मे भारत और पाकिस्तान की कोई वार्ता उसी समय सुलझ सकती है जब समस्या के समाधान के लिए कोई भी शर्त न रखे। वस्तुत इस भारतीय उपमहाद्वीप मे स्थायी शान्ति और सुरक्षा इसी समय स्थापित हो सकेगी जब उसके राष्ट्रनेता कोई भी शर्त रखने से पूर्व देखे कि इस भारतीय उपमहाद्वीप मे किस प्रकार स्थायी शान्ति की प्रतिष्ठा सम्भव है। वैसे भारतीय उपमहाद्वीप के सभी प्रवक्ता यह स्वीकार करेगे कि इस महान भारतीय राष्ट्र की स्थाई शान्ति और सुरक्षा उसी समय सम्भव है जब हिमालय से लेकर समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से सिन्धु सागर तक के विस्तीर्ण भूभाग को एक स्थाई शान्ति-सहयोग की व्यवस्था से एक सूत्र मे आबद्ध किया जाए।

यद्यपि यह लक्ष्य पाना कठिन जान पडता है, परन्तु कुछ परिवर्तन स्थिति सुधार सकते है। पाकिस्तान न तो स्वय आतकवादियो को भेजे और न उनका समर्थन करे, दोनो के मध्य तनाव समाप्त करने के लिए दोनो देशो के मध्य व्यापारिक सम्बन्धो की शुरूआत सम्भव है। इसी के साथ खेल-कूद, शिक्षा परिवहन आदि क्षेत्रो मे आदान-प्रदान सम्भव है। सीधे व्यापार दोनो देशो को ही लाभ होगा। इस समय पाकिस्तान केन्या, श्रीलका और दूसरे देशो से महगी चाय मगवा रहा है, सीधे व्यापारिक सम्बन्ध से उसे सस्ती चाय यातायात के न्यून खर्चे पर मिल सकती है। साइकिल, सूती-ऊनी कपडे और दूसरी उपभोक्ता वस्तुए उसे कम मूल्य पर अधिक सुविधा से मिल सकेगी। भौगोलिक, आर्थिक, सास्कृतिक दृष्टि से हिमालय से लेकर समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धु सागर तक का विस्तीर्ण भूभाग एक और सयुक्त है। शताब्दियो और सहस्राब्दियो तक यह महान राष्ट्र के रूप मे इतिहास मे अपना स्थायी मूल्याकन कराता रहा है। विदेशी शासक भारत छोडते समय इस देश को बाट गए थे, पिछले ५४ वर्षो का घटनाचक्र साक्षी है कि इस भौगोलिक ईकाई को पुन प्रतिष्ठित किया जाए। भारत के प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी जी और पाक सैनिक प्रशासक परवेज मुशर्रफ इस भौगोलिक इकाई को पुन राजनीतिक, आर्थिक, सास्कृतिक दृष्टि से एक और सयुक्त करने की दिशा मे कुछ कारगर कदम उठाए तो जल्दी या देर मे इन देशो की राजनीतिक समस्याए सुलझ सकेगी, प्रत्युत उससे विश्वशान्ति की प्रतिष्ठा मे भी प्रगति सम्भव है।

इस समय भारत जनसख्या एक अरब से ऊपर है, भौगोलिक, आर्थिक ससाधनो की दृष्टि से भी विश्व प्रगति मे भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता हैं। छोटे-छोटे तीन देशो मे बटा भारत न तो अपनी ही प्रगति कर सकता है और न ही उससे विश्व राजनीति मे अपनी उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। वाजपेयी जी और जनरल मुशर्रफ दोनो ने ही इस ऐतिहासिक राष्ट्र मडल के सदस्य है। यदि दोनो नेता सकुचित दृष्टि छोडकर एशिया मे महान भारतीय राष्ट्रो का हित साधे तो राजनीतिक आर्थिक, सास्कृतिक दृष्टि से इस महान भारत की वैज्ञानिक सीमाओ की प्रतिष्ठा के साथ जन-जन के कल्याण-अभ्युदय के विभिन्न कार्यक्रमो को कार्यान्वित किया जा सकता है। इन दोनो ही जन नेताओ ने विस्तीर्ण भारतीय भूखड मे जन्म लिया था यदि वे अपनी जन्मभूमि की समुन्नति चाहत है तो उन्हे आपसी मतभेदो को तिलाजलि देकर सौहार्द, भाईचारे और राष्ट्रीय समुन्नति के तत्वो को सुदृढ कर एशिया मे ही नहीं, विश्व मे एक भाई चारे की सृष्टि हो सकती है। दोनो जननेता अपने क्षेत्रो के सकुचित स्वार्थो को छोडकर पुराने वैज्ञानिक भारतराष्ट्र की प्रतिष्ठा के लिए सच्ची प्रामाणिक भूमिका प्रस्तुत करे तो नए युग मे एक नए उदीयमान अग्रणी भारत राष्ट्र की प्रतिष्ठा सम्भव है। दोनो जननेताओ को इस महान् राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के शुभारम्भ के लिए अपनी ऐतिहासिक भूमिका पूरी प्रमाणिकता से प्रस्तुत करनी चाहिए। उनके इस दिशा मे किए अपूर्व कार्य से ही भारत राष्ट्र की पुन प्रतिष्ठा और इन दोनों जन-नेताओं की भूमिका सार्थक हो सकेगी। ❑

चिट्ठी-पत्री

सुरक्षा की आवश्यकता

भरतपुर और पठानकोट के बाद अब सेना के सूरतगढ स्थित आयुध डिपो मे भयकर आग और विस्फोट से करोडो रुपयो का गोला-बारूद और शस्त्रो को विनाश हमारे रक्षा मन्त्रालय और शासन के लिए सोचनीय स्थिति है। एक के बाद एक दुर्घटना सुरक्षा के सभी दावे खोखले सिद्ध कर रही है। राष्ट्र और जनता का मनोबल बनाए रखने के लिए सभी आयुध भण्डारो को पूर्ण सुरक्षा चाहिए।

– पवन सुरेका राजस्थानी, त्रि नगर दिल्ली-३५

संचार माध्यम और काला बन्दर

यह चिन्ता की बात है कि प्रबुद्ध जनो की दिल्ली नगरी भी रहस्य भरे काले बन्दर से आतकित हो गई। समाचार-पत्रो के मुख पृष्ठो पर काले बन्दर के कारनामे बढा-चढा कर प्रस्तुत किए जाने लगे। किसी ने यह भी नहीं देखा कि घायल लोगो तथा मृतको के शरीर पर किसी धातु द्वारा चोट पहुचाने के निशान थे। अफवाहो के बीच मनचले भी काला साया बनकर उन ताकतो को सहारा देने लगे। काले साए को जितना प्रचार मिला, उतना ही उसके किस्से-कहानियों ने डरपोक जनता को भयभीत किया। ऐसी घटनाए अधिक प्रचारित न हो तो काले साए या काले बन्दर के नाम से सक्रिय षडयन्त्रकारियो की घिनौनी हरकतो का पर्दाफाश शीघ्र हो सकता है।

– सुधाकर आशावादी, शास्त्री भवन, ब्रह्मपुरी, मेरठ

शाकाहार और मानवता

यह धरती सिर्फ हमारी ही नही उन सब प्राणियो की माता है जो बोल नही सकते। विश्व एक परिवार है और उसमे अरबो खरबो जीवधारी सास लेते हैं। प्रकृति ने सबको जीवित रहने को अधिकार दिया है किन्तु मानवीय भूलो और अज्ञानता के चलते लाखो प्रजातियो लुप्त हो गई हैं। पशु-पक्षी सभी प्राणी एक बडे परिवार के अग है। प्रत्येक प्राणी अपने गुणो से दूसरे के लिए उपयोगी है। पशु-पक्षी मूक रह कर हमे जीवन देते हैं, हमे भी उन्हे पुष्ट करना चाहिए। वे हमारी सस्कृति के अग हैं। ये अग खण्डित न हो इसलिए हमारे पूर्वज प्राणियो और वनस्पतियो की रक्षा करते थे। हम यह परम्परा स्वीकार करें तभी हमारे जीवन की सार्थकता है।

– नितिन गांधी हिरावन्त, बासवाडा, राजस्थान

ऋग्वेद से यत्-तत् सप्तकम् (३)

कर्मफल या कार्यकरण शृंखला के संकेत

– प० मनोहर विद्यालंकार

(१) प्राणदानी सैनिकों के भरण-पोषण का ध्यानकर्ता ही सेना प्रमुख बनने योग्य है।

ए एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अग। ऋ० १/८४/७
गोतमो राहूगण । इन्द । उष्णिक्।

अर्थ – (य गोतम राहुगण) जो अत्यन्त ज्ञानी और क्रियाशील व्यक्तियो मे अग्रण्य होते हुए (दाशुषे मर्ताय) राष्ट्र के लिए प्राणो का उत्सर्ग करने वाले सैनिको के लिए (एक इत्) सहयोगियो के न होने पर अकेला ही (वसु विदयते) जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओ का प्रबन्ध करता है (अग) हे प्रिय वह (अप्रतिष्कुत) अन्य सदस्यो से – ऐसा क्यो कैसे ? आदि प्रश्नो से सम्बोधित न किया जाता हुआ अजातशत्रु (ईशान इन्द्र) सब सभासदो और सैनिको पर शासन करने में समर्थ अतएव रक्षा मन्त्री अथवा प्रमुख सेनापति बनने योग्य है।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखा है –
हे मनुष्यो ! (निर्वाचक मण्डल के सदस्यो !) जो अन्य सहयोगियो के बिना ही निर्भय होकर शत्रु को बिना पीठ दिखाए वीरतापूर्वक लडने वाला है– ऐसे व्यक्ति को ही सेनाध्यक्ष बनाओ।

निष्कर्ष – जो व्यक्ति देश के लिए प्राणो का बलिदान देने को उद्यत हो ऐसे व्यक्ति को सेना की कमान सौपनी चाहिए क्योकि वह अच्छी तरह नियन्त्रण करने मे सक्षम होगा। उसके सम्मुख क्या? क्या? कैसे? **जैसे प्रश्न करने की किसी को हिम्मत नहीं होगी।**

(२) मध्यमार्ग पर चलकर ही जितेन्द्रिय और दीर्घजीवी बना जा सकता है

को अद्य धुरि गा ऋतस्य युंक्ते शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषा भृत्यामृणधत्स जीवात्।। ऋ० १/८४/१६
गोतमो राहूगण । इन्द्र । त्रिष्टुप्।

अर्थ – (अद्य क इन्द्र) आज के युग मे ऐसा जितेन्द्रिय कोन हे जो (शिमीवत भामिन दुर्हृणायून गा) अत्यन्त क्रियाशील तथा प्रबल और जिन्हें अपने वश मे लाना बडा दुष्कर है ऐसी इन्द्रियो को (ऋतस्य धुरि युङ्क्ते) यज्ञ भावना अथवा अनुशासन के जुए मे जोड सकता है ? उत्तर – (य एषा भृत्या ऋणधत्) जो व्यक्ति इन इन्द्रियाश्वो का भरण पोषण समन्वय पूर्वक करता है अर्थात् न तो उन्हे पूर्णत दमन करके भूखा मार देता है और न हीं भोग की पूरी छूट देकर इन्हे उच्छृखल बनाता है अपितु इन्हे (आसन्निषून्) मुखमे= प्रारम्भ से ही बाण सदृश तीव्रगति व चचल इन्द्रियो को, (हृत्सु अस) हृदय से सत कान्ति युक्त और (मयोभून् ऋणधत्) कल्याण कर सुख को प्राप्त करने वाली बना लेता है (स जीवात्) वही इन्द्रियवशी स्वस्थ रहता हुआ दीर्घायु हो।

निष्कर्ष – जो व्यक्ति चचल, प्रमाथि और दृढ इन्द्रियो को भूखा न मारकर सदाचार की मर्यादा मे भोग भोगने देता है, वह उन्हे सहृदयता से सुखप्रद और कल्याणकर बनाकर स्वस्थ और दीर्घायु होता है।

अर्थपोषण – मयोभून् – मय सुख भावयति प्राप्यति तान्। गा इन्द्रियाणि, इन्द्रिया हया । ऋ० ६/१०७/२५
हृत्सु - अस अस् गति दीप्ति - आदानेषु।

(३) मातृभूमि के लिए बलिदान करने वाले यशस्वी होकर द्युलोक में स्थान बनाते हैं

त उक्षितासो महिमानमाशत दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सद ।
अर्चन्तो अर्क जनयन्त इन्द्रियमधि श्रियो दधिरे पृश्निमातर ।। ऋ० १/८५/२
गोतमो राहूगण.। मरुत । जगति।

अर्थ– जो (पृश्निमातर) जन्मभूमि को माता मानने वाले राष्ट्रभक्त (उक्षितास) जनता के प्रेम से सिचित (सराबोर) हुए-हुए (रुद्रास.) राष्ट्ररक्षा के लिए रुद्ररूप धारण करने वाले (मरुत) सैनिक (अर्क अर्चन्त) अपने बडे अधिकारियो की आज्ञा का पालन करते हुए (पूजनीयो की पूजा करते हुए) (इन्द्रि जनयन्त) अपने मन मे उत्साह और मानसिक बल भरकर (दिवि अधि सद चक्रिरे) द्युलोक (आकाश) मे युद्ध करने के लिए अपना स्थान अधिकृत करते हैं अर्थात् बलिदान के लिए उद्यत होत हैं। (ते महिमान आशत) वे महत्वपूर्ण हो जाते है, और (श्रिय दधिरे) समाज मे धन, यश और शोभा (श्री) प्रद पदो को प्राप्त करते हैं और अथवा अमर हो जाते हैं। इन्द्रियम् धननामसु। नि० २/१० इन्द्र (जीवात्मा) से सम्बद्ध इन्द्रियो का धन। ज्ञानेन्द्रियो द्वारा प्राप्त धन ज्ञान है। कर्मेन्द्रियो द्वारा प्राप्त धन, बल है। अन्त करणेन्द्रिय (मन) द्वारा प्राप्त धन, यश शोभा (रौब) और कल्याणहै। इसलिए वेद मे प्रार्थना की गई है **'तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु।** यजु० ३४-६

(४) प्राण साधक मनुष्य सौभाग्यशाली बनता है क्योंकि उसके प्रयत्न सफल होते हैं

सुभग स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्य ।
यस्य प्रयासि पर्षथ।। ऋ० १/८६/७
गोतमो राहूगण । मरुत । पिपीलिका मध्या गायत्री।

अर्थ – (प्रयज्यव मरुत) प्रकृष्ट रूप से श्रेष्ठकर्म करने वाले प्राणसाधक मनुष्य देवो ! (यस्य प्रयासि पर्षथ) जिस मनुष्य से प्रदत्त अन्नो को आप स्वीकार करते हो, या जिस के प्रयत्नो को सफल करते हो (स मर्त्य सुभग) वह मनुष्य सौभाग्यशाली होता है।

निष्कर्ष – प्राण साधना से मनुष्य स्वस्थ और सबल बना रहता है क्योकि उसका खाया अन्न ठीक तरह से पचता है, वह रोगी नहीं होता उसमे उत्साह बना रहता है। उसके सब सत्कर्म पूर्ण व सफल होते हैं। यही सौभाग्य का लक्षण है। प्रयासि – प्रय अन्ननाम नि०२/६ प्र+यसु प्रयत्ने।

(५) मृत्यु भय से मुक्त दिव्यजन शासक बनकर प्रजा को सुख देते हैं

ते अस्मभ्यं शर्म यसन्नमृता मर्त्येभ्य । बाधमाना अप द्विष।। ऋ० १/९०/१
गोतमो राहूगणः। विश्वेदेवाः। पिपीलिका मध्या गायत्री।

अर्थ – (ये विश्वेदेवा अमृता) वे सभी जीवन्मुक्त अथवा अनासक्त देव जो सासारिक विषयो के पीछे न मरने वाले तथा (द्विष अप बाधमाना) काम, क्रोध लोभादि अन्त शत्रुओ तथा बाह्य विरोधियो को परे खदेडने वाले हैं (ते) वे (अस्मभ्य मर्त्येभ्य) वासनाओ से आक्रान्त हम मनुष्यों को (शर्म यसन्) सुख-शान्ति प्रदान करके हमारा कल्याण करे।

निष्कर्ष – हम यदि इन अमृत देवो का अनुकरण करके आन्तर और बाह्य शत्रुओ को परे खदेडकर अमृत=अनासक्त बन जाएगे तो हमारा भी कल्याण होगा हम सुख और शान्ति प्राप्त होगी।

(६) सात्विक तथा पौष्टिक भोजी सशक्त रहता हुआ, पूर्ण आयु भोगता है

अग्निषोमा य आहुति यो वां दाशद्धविष्कृतिम्।
स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत्।। ऋ० १/९३/३
गोतमो राहूगण पुत्र । अग्निषोमौ। विराडनुष्टुप्।

अर्थ – हे (अग्निषोमा) अग्नि=जाठराग्नि और सोम= प्राण व ओषधियो ! (य वा आहुति) जो व्यक्ति आपके अनुकूल चरू अन्न की आहुति देता है और (य) जो व्यक्ति (हविष्कृतिम् दाशद्) घृतदि बल वर्धक द्रव्यों की आहुति देता है, (स) वह व्यक्ति (प्रजाय सुवीर्यं) सन्तान के साथ उत्तम सामर्थ्य को तथा (विश्व आयु वि अश्नवत्) सम्पूर्ण जीवन को विविध क्षेत्रो मे व्याप्त होता करता है।

निष्कर्ष – जो जठराग्नि को समुचित खान-पान द्वारा ठीक रखता है और प्राण-साधना तथा ओषधि सेवन द्वारा अपने प्राणो को सबल बनाए रखता है। उसकी स्वस्थ सन्तान होती है और विविध क्षेत्रो म सोत्साह काम करके यश और श्री प्राप्त करता है।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखा है –
जो विद्वान् जलवायु की शुद्धि के लिए सोमलतादि की अग्नि मे आहुति देकर सब प्राणियो को सुख देते हैं वे स्वय भी सुख पूर्ण दीर्घायु प्राप्त करते हे।

अर्थपोषण – साम - ओषधयो वै सोम । मै० ३/७/४ सर्वदेवत्यो वै सोम । काठ० २७/१
सत्य श्री ज्योति सोम । माश ५/१/२/१० प्राण सोम । शत ७/३/१/२

(७) यज्ञ-भावना सम्पन्न व्यक्ति निष्कलंक रहता हुआ, बढता चला जाता है

यस्मै त्वमायजसे स साधत्यनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम्।
स तूताव नैनमश्नोत्यहतिरग्ने सख्ये मारिषामावय तव।। ऋ० १/९४/२
कुत्स आगिरस । अग्नि । त्रिष्टुप्।

अर्थ – (अग्ने) आगे ले चलन वाले ! (यस्मै त्व आयज से) जिसके लिए तू उत्तम साधन प्राप्त करता है गत मन्त्र के अनुसार कल्याणी मति प्रदान करता है अर्थात् जिसमे तू वृद्धो के प्रति आदर बराबर वालो के प्रति सहयोग और छोटो के प्रति प्रदान की भावना का यजन (सगति) कर देता है (स) वह (अनर्वा) काम क्रोधादि अथवा विरोधियो से हिंसित (दबे) हुए बिना (क्षेति) जीवन जीते हुए प्रगति करता है, (सुवीर्य धत्ते) शक्ति को धारण करता है। दबग होकर विचरता है और (साधति) अपने सब कार्यों को सिद्ध करता है। (स तूताव) वह आगे ही आगे बढता जाता है (एन अहति अश्नोति) इसे पाप या दारिद्रय की पीडा कभी प्राप्त नहीं होती। हे (अग्ने) आध्यात्म मे परमात्मन्! अधिदेव मे महाभूत अग्नि ! और अधिभूत मे –राजन या नेता! (तव सख्ये) तेरी मित्रता में (मारिषाम) हम कभी दु खी, हतोत्साह व निराशा (हिंसित) न हो।

निष्कर्ष – जो तीनो अग्नियो का समीचीन सेवन करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं, कभी निराश नहीं होते।

– श्याम सुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६

स्वाध्याय से लक्ष्य सिद्धि

– प्रकाश गुन्देचा

अन्धकार से प्रकाश और अज्ञान से ज्ञान की ओर जाना ही आध्यात्मिक साधना का मुख्य लक्ष्य होता है। ज्ञानी व्यक्ति ही सत्य को पहचान कर उस मार्ग पर बढ सकता है। अधकार मे भ्रम होना स्वाभाविक ही है। जिस प्रकार अधेरे मे वस्तुस्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं हो पाता उसी प्रकार सम्यक् ज्ञान के अभाव मे विषयवस्तु की सही जानकारी नहीं होती। वस्तुस्थिति का ठीक ज्ञान न होने से कुछ का कुछ सूझता है।

इसी कारण साधना पथ के साधको ने अधकार से ज्योतिपथ पर चलने का सन्देश दिया है। जिस प्रकार नेत्रहीन व्यक्ति बाह्य जगत को नहीं देख पाता उसी प्रकार ज्ञान के अभाव मे आत्मिक लक्ष्य को नहीं जाना जा सकता।

ज्ञान प्राप्ति का अमोघ साधन है – स्वाध्याय। जब व्यक्ति निरन्तर स्वाध्याय करता है, तब वह अपनी साधना से महापुरुषो-विद्वानो के चिन्तन से प्रभावित होता है। चूकि शास्त्रो मे लिखे विचार अविचल एव स्थिर होते है उनके प्रभावित होने अथवा बदलने का प्रश्न ही नहीं होता अत स्वाभाविक है कि अध्ययनकर्त्ता के ही विचार प्रभाव ग्रहण करे। इस तरह स्वाध्याय से व्यक्ति के जीवन मे महापुरुषो द्वारा प्रतिपादित शाश्वत सत्य सिद्धान्तो का सहज समावेश हो जाता है। फलत उसका व्यक्तित्व निखर उठता है।

आइए, हम निम्न बिन्दुओ से [illegible] को समझे –

स्वाध्याय से ज्ञान

दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन मे वर्णन है कि पहले ज्ञान फिर दया का स्थान है वैस कहा जाता हे – दया धर्म का मूल है।' परन्तु दया का आधार ज्ञान है कारण ज्ञान के अभाव मे दया क्या है, इसका क्या स्वरूप है, किस पर दया की जाए सजीव-निर्जीव का भेद क्या है पुण्य-पाप क्या है सवर-निर्जरा आश्रय-बन्ध मोक्ष इत्यादि कैसे समझे। इस सबकी जानकारी मात्र स्वाध्याय से ही की जा सकेगी। जानकार व्यक्ति ही सही मार्ग पर कदम बढा सकेगा। कौन सा कार्य उचित है व कौन सा अनुचित है। कौन सा मार्ग उन्नति का है व कौन सा मार्ग पतन का है। स्वाध्याय से ही यह मार्गदर्शन होगा। स्वाध्याय द्वारा सम्यक् ज्ञान प्राप्त व्यक्ति श्रेय-प्रेय, हितकर-अहितकर तत्व छाट लेगा, चरित्र के साथ घुल जाने वाली विकृतिया दूर करेगा और वास्तविक रूप से सम्यक् चरित्र का पालन कर सकेगा। दूध मे यदि शक्कर की जगह नमक डाल दिया जाए तो दूध बिगड जाएगा परन्तु ऐसा वही करेगा, जिसे शक्कर व नमक का भेद मालूम नहीं। ज्ञानी व्यक्ति का हर कार्यकलाप सत्य को रखकर ही होगा।

अज्ञान से दुःखों की प्राप्ति

एक व्यक्ति जिसे मार्ग का ही ज्ञान नही है परन्तु वह चलता ही जा रहा है, चूकि उसने ज्ञान के अभाव मे गलत मार्ग पकड लिया है। अत वह अपनी मजिल पर कभी नहीं पहुचेगा। उल्टे वह मजिल से दूर होता जाएगा। यद्यपि अज्ञान के कारण वह व्यक्ति मन ही मन प्रसन्न होगा कि मैं इतना लम्बा चल चुका हू परन्तु ज्ञानियो की दृष्टि मे उसकी स्थिति दयनीय ही होगी। इसी तरह कोई बीमार व्यक्ति बिना जानकारी के किसी भी दवाई का सेवन करेगा तो वही उसके गम्भीर परिणाम भी भुगतेगा। अज्ञानी व्यक्ति की स्थिति अधे के समान है जो कही भी भटक सकता है। जिस तरह बिना धागे की सूई खो जाने पर मुश्किल होती है उसी प्रकार अज्ञानी व्यक्ति का सही स्थिति जानना अत्यन्त कठिन है। अज्ञानी व्यक्ति जिसे जीव-निर्जीव का बोध नही है, उसे यह भान नहीं होता है कि अहिसा क्या है हिसा क्या है। अत जिसे जीव-निर्जीव का ज्ञान नही वह अहिसावादी नही हो सकता। अहिसा का समग्र विचारक हुए बिना अहिसा का पूर्ण पालन नहीं हो सकता। जिस अज्ञानी को साध्य, उपाय और फल का परिज्ञान नहीं है, वह कैसे श्रेय दिशा मे प्रवृत होगा। वह सर्वत्र अन्धे के समान है। ऐसे व्यक्ति के कदम-कदम पर दुख के सिवा कुछ भी प्राप्त नही होगा अत दुखो से छुटकारे के लिए स्वाध्याय के सहारे से ज्ञान की प्राप्ति आवश्यक है।

स्वाध्याय आन्तरिक तप है

शास्त्रकार स्वाध्याय को आन्तरिक तप कहते हैं। स्वाध्याय वह तप है जो व्यक्ति को विषय-विकारो तथा क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी कषायो व असक्ति के बन्धन से छुटकारा दिलाता है। सामान्यतया कई व्यक्ति लम्बे-लम्बे उपवास करते हैं परन्तु उनकी सार्थकता भी तभी होती है, जब व्यक्ति दीर्घकालीन तपस्या के साथ-साथ अतरग तप भी करे। स्वाध्याय व सयम की प्रवृत्ति से बाह्य तप सार्थक होता है। लम्बी-लम्बी तपस्या करके भी क्रोध से तिमिलाने वाला व्यक्ति तप को बेकार कर देता है। स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति ऐसी स्थिति मे सावधान और सजग रहता है। स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति बाह्य जगत से हटकर अन्तर्जगत मे प्रवेश करता है। जब व्यक्ति अन्तर्जगत की ओर बढता है तब उसे आत्माबोध होता है। **मैं कौन हू, मुझे क्या करना है, वर्तमान में मेरे जीवन की स्थिति क्या है, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, किस तरह मैं आत्मा से परमात्मा का अंश बन सकता हूं ?** इत्यादि प्रश्नो का समाधान व्यक्ति चिन्तन से ही प्राप्त करता है। समाधान प्राप्त व्यक्ति ही सही दिशा मे कदम बढाएगा और जीवन को उन्नत बनाएगा। इस तरह वह दिन दूर नहीं होगा जब स्वाध्याय की सहायता से व्यक्ति आत्मा से महात्मा व महात्मा से परमतत्व का अश बनेगा।

स्वाध्याय से तात्कालिक लाभ – तनाव की समाप्ति

ज्ञान व्यक्ति का तीसरा नेत्र कहा जाता है। ज्ञान की प्राप्ति स्वाध्याय से होती है। अत स्वाध्याय जीवन का अमृत है। जैसे-जैसे स्वाध्याय होता है वैसे-वैसे विविध प्रकार की जानकारी होती है। व्यक्ति मे स्वय का भला-बुरा सोचने की क्षमता आती है। सद्शास्त्रो के स्वाध्याय से व्यक्ति का आत्मबल बढता है, जिससे व्यक्ति को तुरन्त ही शान्ति का आभास होने लगता है। जैसे कोई व्यक्ति व्यापार करे उसमे लाभ हो या न भी हो परन्तु स्वाध्याय से आत्मशान्ति मिलती है। इस तनाव वाले युग मे यह बहुत बड़ा लाभ है। कितना भी तनावग्रस्त व्यक्ति हो, निरन्तर स्वाध्याय से तनावमुक्त हो सकता है। उसकी चिन्तनधारा बदल जाती है, कई बीमारियो से बच जाता है। महापुरुषो के जीवन का स्वाध्याय करके स्वय महापुरुष बन सकता है।

क्या स्वाध्याय करें

प्रश्न होता है, स्वाध्याय क्या करे? आज तरह-तरह का साहित्य मिलता है। बाजारू साहित्य के अध्ययन से जीवन का नैतिक स्तर गिरता है। सार्थक साहित्य वही हे जो मानव का नैतिक स्तर उठाने मे सहायक बने, आत्म स्वरूप का बोध कराए राग-द्वेष कषाय मोह इत्यादि भावनाओ से बचाए। आज हमारा पुण्य है कि हमे वे सद्शास्त्र उपलब्ध हैं जिनमे सर्वज्ञ सर्वदर्शी केवल ज्ञानियो की वाणी है, उसका अध्ययन, चिन्तन-मनन करे। केवल ज्ञानियो की वाणी त्रिकाल सत्य है, उसका अध्ययन कर गुरुदेव से उनका गूढ रहस्य समझे व उसके अनुरूप जीवन ढाले। इनके अलावा महापुरुषो की जीवनियो का स्वध्याय भी करे। हम जो भी स्वाध्याय करे उस पर चिन्तन-मनन करे, केवल चिन्तन-मनन से ही वे बाते हमारे जीवन मे आती है व जीवन को सही दिशा मिलती है। चिन्तन-मनन से हम अध्ययन के पीछे छिपे गूढ रहस्य प्राप्त करे।

इस तरह स्वाध्याय से जीवन मे शान्ति व अद्भुत आनन्द की प्राप्ति होती है और जीवन तनावमुक्त बन जाता है। इस तरह स्वाध्याय के बिना ज्ञान नहीं व ज्ञान के बिना विचार शुद्धि नहीं व विचार शुद्धि के बिना जीवन निर्माण नहीं। अत विचार एव सस्कार परिष्कार के लिए स्वाध्याय नामक तप जीवन मे अपनाए। यह तप अपनाकर हम सहज ही कर्मों को काटकर जीवन को शीघ्र ही उच्चतम स्थान पर पहुचा सकते हैं।

– श्याम भवन, जोलारी गेट के अन्दर,
जोधपुर (राजस्थान)

स्वाबलम्बन

घटना उन दिनो कि है जब श्री लाल बहादुर शास्त्री सत्याग्रह के सिलसिले मे जेल मे थे। वहा प्रमुख राजबन्दियो के लिए कपडे-वर्तन आदि धोने के लिए नौकरो की सुविधा थी, लेकिन शास्त्रीजी इस तरह के सारे कार्य स्वय करते थे।

एक दिन उनके एक साथी ने प्रश्न किया – "शास्त्रीजी, जब हम लोगो के लिए नौकरो की व्यवस्था है, फिर आप ये सब काम स्वत क्यो करते हैं?"

अत्यन्त सरलता से शास्त्रीजी ने उत्तर दिया – "मैं घर पर भी ये सब काम स्वत करता हू। कारावास से छूटने के बाद घर जाने पर ये कार्य स्वत करने होगे, इसलिए कुछ दिनो के लिए अपना स्वाबलम्बन का नियम क्यों छोडू? वैसे अपने ये काम स्वत करने मे काई बुराई नहीं है, इससे मेरी कसरत हो जाती है।"

– नरेन्द्र

बच्चों को बचाइए

(देवराज आर्यमित्र)

चाहे लडका हो या लडकी सभी बच्चे देश की भावी सम्पत्ति है। बच्चो के जीवन का निमार्ण करना प्रत्येक माता-पिता का कर्त्तव्य है। माता को चाहिए कि अपने बच्चो की निगरानी करे। उन पर नजर रखे कि कही बच्चा नगे पाव गन्दी जगह पर गन्दे बच्चो के साथ तो नही घूम रहा। प्राय देखने मे आता है कि बाप कमाई के चक्कर मे लगा रहता है। मा घर के काम मे लगी रहती है। बच्चो की कोई पर्वाह नहीं होती। बच्चे गलियो मे नगे पाव गन्दी जगह खेलते है और एक दूसरे को मा–बहन की गालिया देते हैं।

माता-पिता को चाहिए कि अपने बच्चो को सुधारे। उनमे अच्छी आदते डाले। यदि आपने बच्चो को अभी से नहीं सुधारा तो बडे होकर ये आपके नाम पर कलक होगे।

बच्चो को पढने के लिए स्कूल भेजे। उन्हे अपने से बडो को नमस्ते करने की शिक्षा दे। रामायण मे आपने देखा होगा, श्रीराम अपने माता-पिता और गुरुजनो को नमस्ते कह आशीर्वाद प्राप्त करते थे।

बच्चो के सामने ऐसा कोई कार्य न करे जिससे बच्चो पर बुरा प्रभाव पडे। उन्हे स्वस्थ रखने के लिए सफाई की ओर ध्यान दे।

बच्चो को भारत का आदर्श नागरिक बनाने के लिए उन्हे सबसे पहले अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी का पूरा ज्ञान कराए। जब वह हिन्दी भाषा व्याकरण सहित लिखना-पढना सीख जाएगा तो अग्रेजी भाषा को फटाफट सीखेगा। यदि पैदा होते ही बच्चे पर अग्रेजी का भूत सवार कर दिया तो बच्चा न अग्रजी सीख सकेगा न हिन्दी और पढाई मे कमजोर रहेगा। अत बच्चो को पहले हिन्दी पढाओ। यदि आपका बच्चा हिन्दी भाषा भली-भाति जानता है तो वह छह महीने मे अग्रेजी सीख सकता है।

आज नन्हे-मुन्ने बच्चो पर अग्रेजी का ऐसा भूत सवार है कि वे ए-बी-सी-डी और वन-टू-थ्री का भोज लेकर सोते हैं। हिन्दी की न गिनती आती है न वर्णमाला का ज्ञान है। ऐसी हालत मे **'कौआ चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया'**, वाली कहावत सिद्ध हो रही है। अग्रेज भारत छोड कर चले गए परन्तु हमारा देश अब भी अग्रजी भाषा का गुलाम है।

छोटे-छोटे बच्चो के गलो मे टाई बाध कर फासी का फन्दा लगा दिया जाता है। ऐसा लगता है जैसे बिना टाई के स्कूल मे शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। बच्चो को श्रीराम और श्रीकृष्ण की शिक्षा तो नहीं दी जाती, टाई लगाकर ईसाई बनाने की शिक्षा अवश्य दी जाती है। टाई क्या है ? ईसा मसीह के फासी दी गई थी। ईसाई लोग उसकी याद मे गले मे फासी का निशान लगाते है। कृपया कुछ भारतीय सस्कृति की रक्षा का भी ध्यान करे और बच्चो को इस फासी के फन्दे से मुक्त करे।

– आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली-५१

आर्य लेखक उपदेशक गोपालशरण 'विद्यार्थी' संन्यस्थ जीवन में गोपाल स्वामी सरस्वती बनें

आर्यलेखक उपदेशक श्री गोपाल शरण विद्यार्थी १३ मई, २००१ के दिन उदयपुर के नवलखा महल मे स्वामी तत्वबोध सरस्वती द्वारा सन्यास आश्रम मे दीक्षित होकर स्वामी गोपाल सरस्वती हो गए है। अब उनका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश के जनपद गौतमबुद्ध नगर स्थित ३३ सैक्टर मे अवस्थित बी–६६-मे आर्यसमाज नोएडा हो गया है। आशा है आर्यजनता उनकी सेवाओ का लाभ उनके नए कार्यक्षेत्र से ही प्राप्त करेगी। ☐

भूकम्पग्रस्त कच्छ के इन्द्रप्रस्थ (दूधई) ग्राम में आर्यसमाज स्थापित

भूकम्प के तीसर दिन ही विशेष विमान ये आर्य परिवार के लोग 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' सस्था के अन्तगर्त ४२ डाक्टरो का दल लेकर कच्छ पहुचे। उनके साथ सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी आचार्य आर्य नरेश, ब्र० राजसिह एव विनय आर्य भी थे। राष्ट्रीय स्वाभिमान ने तुरन्त निर्णय किया कि वे केवल एक गाम को दत्तक लेकर उसका पुन निर्माण करेगे।

राष्ट्रीय स्वाभिमान के मुख्य सरक्षक श्री साहिब सिह वर्मा हैं, सस्था के महामन्त्री प्रसिद्ध आर्यवीर व दाता चौधरी मित्रसेन जी के सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी हैं।

कच्छ का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित व पूर्ण पुनर्वास वाला यह ग्राम जहा ८०० भूकम्प प्रूफ मकान बन रहे है। इसका उदघाटन ३ जून को प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया। इस गाव मे प्रतिदिन यज्ञ आर्यसमाज गाधीधाम के पुरोहित प० भरत आर्य करते हैं। आर्यवीर दल दिल्ली के लोग भी रसोई सभाल रहे हैं।

१६ करोड के खर्च मे बने इस गाव मे इतनी सारी आधुनिक सुविधाए जुटाई गई हैं कि भविष्य मे ये तालुका बनेगा।

आर्य परिवार के लोग 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' के नाम से कार्य कर रहे हैं, अत शुरू से ही परस्पर सहयोग रहा है। १५ मई, २००१ को श्री साहिब सिह वर्मा जी दूधई मे नई आर्यसमाज की स्थापना करते हुए ५०० वर्ग मीटर स्थान गाव म घुसते ही दिया है जिस पर यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है, और गाव का उदघाटन यज्ञ की इसी यज्ञशाला मे होगा। गाधीधाम आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल ने श्री साहिब सिह वर्मा जी का मुख्य मार्ग पर ही स्थान देने के लिए आभार व्यक्त किया। ☐

२००० किमी० तक लक्ष्य भेदने वाली अग्नि मिसाइल सेना को इसी वर्ष

नई दिल्ली। अप्रैल १९९९ और १७ जनवरी, २००१ के दिन परीक्षण कर चीन ने अपनी मिसाइल का सीमित उत्पादन शुरु किया था चीनी चुनौती के जवाब मे भारत ने २००० किलोमीटर दूर मार करने वाली अग्नि-२ मिसाइल प्रणाली के व्यावहारिक उपयोग की क्षमता पैदा कर ली है। यह अग्नि-२ मिसाइल इसी वर्ष सेना को सौपने का निर्णय किया गया है। ☐

वेद कथा एवं स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर रेलवे रोड शकूर बस्ती दिल्ली–३४ मे १८ मई से २० मई,२००१ तक वेद कथा का कार्यक्रम आचार्य मैतेय जी के पावन सानिध्य मे सम्पन्न हुआ।

२७ मई, २००१ रविवार को प्रात १० बजे से दोपहर एक बजे तक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसकी विशेषता आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तीनो प्रकार की चिकित्सा थी जिसमे गरीब,लाचार व बूढे व्यक्तियो को निशुल्क ऐनक प्रदान की गई। ☐

लद्दाख होकर मानसरोवर यात्रा पर चीन से वार्ता

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने १ जून के दिन कहा कि केन्द्र सरकार कैलाश मानसरोवर यात्रा को पिथौरागढ के स्थान पर लद्दाख होकर शुरू करने के लिए चीन सरकार से आग्रह करेगी, जिससे लद्दाख को भारत के मानचित्र पर स्थान मिल सके और कैलाश मानसरोवर यात्रा अधिक सुगम हो जाए।

सम्मेलन का उदघाटन करते हुए उन्होंने कहा कि सिन्धु भारतीय सभ्यता की जन्मदात्री और देश की सास्कृतिक विविधता को एकता मे बाधने वाली नदी हैं श्री आडवाणी ने कहा कि १९९७ मे सयोगवश ही उन्हे पता चला कि सिन्धु लेह से होकर जाती है। हमने पिछले वर्ष के समारोह मे कल्पना की थी कि यह सिन्धु नदी भारत और पाकिस्तान के बीच टूटे धागो को फिर जोडगी। ☐

कश्मीर घाटी में युद्ध विराम खत्म

आतंकवादियों का सफाया शुरू : १७ मार गिराए

जम्मू-कश्मीर मे युद्ध विराम की अवधि समाप्त हो जाने के बाद ३१ मई की रात से सुरक्षा बलो ने आतकवादियो के सफाए का अभियान जोर-शोर से शुरू कर दिया है।

सुरक्षाबलों ने १ जून के दिन पुछ मे घुसपैठ की कोशिश कर रहे अलबदर के सात अफगानी आतकवादियों को मार गिराया। उनके अतिरिक्त अन्य घटनाओं में १० आतकवादी मारे गए। आतकवादियो के विरुद्ध कार्यवाही में सुरक्षा बलों के ४ जवान शहीद हो गए। सेना का एक मेजर घायल हो गया जबकि सुरक्षा बलों ने १३ किलोग्राम आर डी एक्स और भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया।

सरकारी सूत्रों ने सूचना दी है कि पुछ जिले के लोरान मण्डी क्षेत्र मे सैना और पुलिस के सयुक्त अभियान मे अलबदर सगठन के ७ विदेशी आतकवादी मारे गए। घटनाचक्र से ५ एके ४७ राइफलें, ४ राकेट एक ग्रेनेड लाचर, चार विदेशी विस्फोटक रिमोट, १८ हथगोले, ३ रेडियो सैट तीन दूरबीन और १०० ग्राम चरस मिली। ☐

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली-५३

प्रधान	–	श्री वीर बहादुर ढींगरा
मन्त्री	–	श्री बलेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री सत्य प्रकाश गोयल

आर्यसमाज मन्दिर संगरूर

प्रधान	–	श्री वेदपाल टुटेजा
मन्त्री	–	श्री रामशरण आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री शिवराम महाजन

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची गतांक से आगे प्रकाशित की जा रही है :-

५४७ सर्वश्री राम कपूर द्वारा आ०स० बी ब्लाक, जनक पुरी, नई दिल्ली ५१/-
५४८ रेवती साहिब द्वारा आ०स० बी ब्लाक, जनक पुरी नई दिल्ली २१/-
५४९ एम० के० ट्रेडर्स द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५५० चमन लाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १००/-
५५१ गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १००/-
५५२ श्रीमती दयाल कौर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/-
५५३ श्रीमती निहाली जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ४०/-
५५४ साध इन्टरप्राइजेज द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १००/-
५५५ गोपाल दान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १००/-
५५६ कमल स्टोर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५०/-
५५७ गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली २१/-
५५८ अनु द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २०/-
५५९ रवीलोचन अरोड़ा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/-
५६० रामचन्द्रन द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५६१ पी० आर० कृष्णन द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५६२ सत्य प्रकाश द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५०/-
५६३ कुलदीप सिंह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५६४ राकेश दुआ द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०१/-
५६५ वीरेन्द्र द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/-
५६६ दर्शन लाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१
५६७ श्याम राज द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५६८ आर० सी० मल्ला द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५६९ चान्द द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५७० श्रीमती रूचिका द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ३१/-
५७१ गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५०/-
५७२ गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली २१/-
५७३ श्वेता द्वारा आ०स० बी ब्लाक, जनक पुरी, नई दिल्ली ५०/-
५७४ पुष्पा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५७५ डी० डी० नागपाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५७६ यशपाल सचदेवा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५७७ महेन्द्र कुमार कालरा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५१/-
५७८ कु० सविता द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०/-
५७९ ओम प्रकाश मनोचा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५१/-
५८० रणजीत सिंह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५१/-
५८१ एच० के० परमार, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ११/-
५८२ एस० पी० मेहतानी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५१/-
५८३ मीनू जी आ०स० बी ब्लाक, जनक पुरी, नई दिल्ली १००/-
५८४ वदना जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली ५१/-
५८५ ओ० वा० महतो जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १०१/-
५८६ श्रीमती मनिन्द्र कौर आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली [illegible]
५८७ किशोरी लाल आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५८८ हरीश कुमार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २०/-
५८९ गुरुदेव सिंह आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०/-
५९० शिवदयाल आहूजा, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १५१/-
५९१ अमरजीत सिंह आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५९२ मीनू जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/-
५९३ रोशन लाल आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २०/-
५९४ टी० एम० मल्ला आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १०१/-
५९५ चन्द्र विजय, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
५९६ दीपू आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ३०/-
५९७ गुप्त दान आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली १०१/-
५९८ साहूजी, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ३१/-
५९९ कृष्णदेव, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/-
६०० लाजपतराय, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी, नई दिल्ली २५०/-
६०१ सीताश कुमार सेठी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/-
६०२ श्रीमती पुष्पा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/-
६०३ श्रीमती सुशीला रानी, आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २०१/-
६०४ आर्यसमाज मन्दिर बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २५६६/-

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी [illegible] जाएगा। **- सभा प्रधान**

तीन मानवीय प्रवृत्तियां

- विशम्भर नाथ अरोडा

जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, मानव सोचने समझने और महसूस करने लगा, वैसे-वैसे उसकी कुछ 'और नया' जानने की आकांक्षा भी बलवती होती गई। इन जिज्ञासाओ ने ही इन खोजों, नए आविष्कारो, नई सुविधा और, नए विध्वसक शस्त्रों को जन्म दिया। एक प्रबल मानव जिज्ञासा जिसका आज तक मानव हल नहीं निकाल सका, रही है अपने भविष्य और अपने भूत को जानने की इच्छा। ज्योतिष विद्या भी सहायक सिद्ध नहीं हुई, क्योकि वेदों के अनुसार ज्योतिष का कोई अस्तित्व ही नहीं है। गणित विद्या है इसलिए चतुर-जनों ने वहमी और कमजोर लोगों की आशु विश्वासी प्रवृत्ति से अनुचित लाभ उठाते हुए ज्योतिष को एक विद्या का रूप दिया और आज तक इसके बलबूते पर हल्वा-माडा खरा करते रहे है।

आर्यजन ज्योतिष को नहीं मानते, परन्तु उनके मन में भी अपने भूत व भविष्य को जानने की तीव्र इच्छा अन्य लोगो की भाति बराबर बनी रही। इसके बारे मे पूरा-पूरा जानना तो सम्भव नहीं परन्तु, तीन मानवीय प्रवृत्तियों के आधार पर मोटा-मोटा अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक मनुष्य कैसा रहा होगा, अब कैसा चल रहा है और आगे इसका कैसा बनने की सम्भावना है। इन प्रवृत्तियों का वर्णन वेदों, मनुस्मृति, गीता तथा सत्यार्थ प्रकाश में है। इन प्रवृत्तियों में वर्णित लक्षणों और कार्यकलापों के आधार पर अपना, अपने किसी प्रियजन का, मित्र का, पुत्र आदि का कुछ अन्दाजा लगा सकते हैं कि वह किस वर्ग का है और आगे उसकी गति क्या होगी।

हमारा यह जीवन हमारे पिछले जन्मो के कर्मों के आधार पर मिला और आगे के जीवन, इस जीवन व पिछले जीवनो के कर्मो के आधार पर मिलेगे, अत देखे कि मानवीय प्रवृत्तियो द्वारा हम किसी के शुभ-अशुभ कर्मों का अनुमान कैसे लगा सकते हैं ?

सात्विक जन अपना कर्त्तव्य समझकर ईश्वर भक्ति व उपासना मे लीन रहते हैं। वे इसी भावना से यज्ञ करते हैं, दान देते हैं, दया करते हैं। वे प्रभु से कुछ नहीं मागते, कुछ इच्छा नहीं रखते। जैसे प्रभु रखे, दु ख मे या सुख मे, अमीरी मे या गरीबी मे यश में या अपयश में, सदा प्रभु का धन्यवाद करते हैं, हर हाल मे उसका उपकार मानते हैं।

राजी हैं हम तो उसमें, जिसमें तेरी रजा है।
यहां तो यू भी वाह-वाह है, और त्यों भी वाह-वाह है।।

सात्विक पुरुष ऐसी वस्तुए खाते हैं जो आयु, बुद्धि बल, आरोग्य, सुख और प्रीति बढाती हैं, जो सयुक्त हैं, शरीर में अधिक समय तक रहने वाली हैं। सात्विक प्रवृत्ति वाले जो आप को दिखाई दें तो समझ लीजिए कि ऐसे लोगों का भविष्य उज्ज्वल है। वे देव योनि को प्राप्त होंगे। ऐसे पुरुष भूतकाल में श्रेष्ठ योनि में रहे होगे।

राजसी प्रवृत्ति वाले भक्ति करते हैं, दान भी करते हैं, दया की दिखाते हैं परन्तु, सब फलेच्छा से, स्वर्ग प्राप्ति की कामना से, स्वार्थ सिद्धि हेतु, वाह-वाही लूटने हेतु, अपनी प्रशसा सुनने के लिए, जग दिखावे और लोगो पर रौब जमाने के लिए। हर काम से पहले वे सोचते हे कि इससे हमे मिलेगा क्या, क्या लाभ होगा? ऐसे व्यक्ति कडवे, खट्टे, लवणयुक्त, बडे गर्म, तीखे, रूखे और दाहकारक (दु ख, शोक, रोगोत्पादक) आहार पसन्द करते हैं। ऐसे सज्जन प्रभु पर भरोसा नहीं रखते स्वय पर मित्र पर और सगे-सम्बन्धियो पर अधिक विश्वास रखते है। प्रभु भक्ति मे उनका मन नहीं लगता। इस ससार की वस्तुओ मे यहा के आकर्षणो मे यहा की सुविधाओं मे ही वे रमते हैं। ऐसे लोगो का कोई भरोसा नहीं कि किस समय और नीचे गिर जाए। यदि आप अपने किसी पुत्र-पुत्री मित्र, बन्धु, सम्बन्धी सहकर्मी अथवा पडोसी मे ऐसे लक्षण देखे तो उसे सावधान अवश्य कर दे ताकि वह पतन की ओर कम से कम न बढे।

तामसी वृत्ति वाले बिना श्रद्धा, बिना मन्त्र, बिना दान-दक्षिणा, बिना प्रसाद यज्ञ का आयोजन करते हैं। वे अपने धन, शक्ति, वर आदि का प्रयोग दमन, शोषण निर्बलो व निर्धनो की सताने हेतु करते हैं। भक्ति, ज्ञान, धर्म कर्त्तव्य, परोपकार, दया दान-दक्षिणा, आदि की बात सुनाने वाले को अपशब्द कहते हैं, ऐसे व्यक्ति दूसरे के दु ख मे हसते हैं, मजाक उडाते हैं।

इन्हें सोना, आलस्य, शराब, जुआ, आदि घृणित कर्म अच्छे लगते हैं। ये कार्य कर वे लज्जित नहीं होते बल्कि खुश होते हैं। ऐसे लोग भूतकाल मे छोटी-मोटी योनिया भोगते मनुष्य योनि मे पहुचते हैं और उनका भविष्य भी अधकारमय होगा। ये पशु, पक्षी, कीट-पतग तथा स्थावर योनियो मे जाएगे। तामसी वृत्ति व्यक्ति अधपके, रसहीन, बदबूदार, बासी, जूठे भोजन/ वस्तुओ के दाता होते हैं। यदि आप अपने किसी प्रियजन मे ये लक्षण देखे तो जान ले कि इसका भविष्य सकट मे है। उसे बचाने का प्रयास करे।

इस सम्बन्ध मे गीता के श्लोक १७/३ तथा १७/८ से १३ और सत्यार्थ प्रकाश के नौवे समुल्लास का भी अध्ययन करे।

- प्रधान, आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली ५१

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 7-8 /6/2001 दिनांक ४ जून से १० जून, २००१ Licence ...००१

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001 7-8 /6/2001 पूर्व भुगतान किए

श्री बटेश्वर दयाल जी का देहावसान

आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री बटेश्वर दयाल शर्मा का निधन ? जून की प्रात वेला मे अ ने चादनी चौक स्थित निवास पर हो गया। वे ८३ वर्ष के थ। उनका अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री राजसिह भल्ला, श्री विमल वधावन, चौ० लक्ष्मी चन्द, डॉ० रविकान्त श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री सहित कई अन्य आर्य महानुभाव एव प्रतिष्ठित सदस्य उपस्थित थे।

श्री बटेश्वर दयाल जी की स्मृति में एक श्रद्धाजलि सभा १० जून को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल में होगी।

पूजनीय स्व० बटेश्वर दयाल सुपुत्र स्व० श्री महादेव प्रसाद दीक्षित का जन्म दिनाक १५ अक्तूबर १६१६ को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के अन्तर्गत ग्राम भरईपुर के एक किसान परिवार मे हुआ। अपने बचपन ही से वे आजादी के सग्राम से बहुत प्रभावित थ। अपने गाव म मिडिल की परीक्षा पास करने के बाद ही वे देश के स्वतत्रता सग्राम मे कूद पडे। शीघ्र ही उनका सग अनन्त देश प्रेमी व कट्टर आर्य समाजी प० रामचन्द्र देहलवी प० व्यास देव शर्मा व लाला रामगोपाल शालवाले से हो ... अपने बचपन म ... व अग्रणी कायकता रह। सन् १६३८ म आये समाज के हैदराबाद सत्याग्रह म उन्हे आर्य युवक सघ न जत्थदार वनाकर एक जत्थे का नेतृत्व सौपा जिसको उन्होने वखूबी निभाया। सी० आई० डी० और हैदराबाद पुलिस से बचते हुए उन्होने निजाम के विरुद्ध आदोलन को द्रुत गति से कायम रखा और अन्तत २ जून १६३६ को ओरगाबाद जिले मे जत्थेदार के रूप मे गिरफ्तार हुए तथा उन्हे २ साल और ६ महीने के कठोर कारावास की सजा हुई। वे अपने जीवन मे कई बार स्वतत्रता आदालन मे कारावास गए।

सादा जीवन उच्च विचार की सूक्ति को शब्दत अपने जीवन मे चरितार्थ कर दिखाया। समाज सेवा व सत्यता उनमे कूट-कूट कर भरी थी। आजादी के बाद पजाब विश्वविद्यालय लाहौर से हिन्दी के विशारद की डिग्री प्राप्त की। अपने जीवन काल मे ये पडित जी व गुरुजी के नाम से विख्यात रहे। पडित जी ने अपने जीवन काल मे अनेक समाज सेवी सस्थाओ का प्रतिनिधित्व व मार्गदर्शन किया। उन्होने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के नियमो का न सिर्फ सख्ती से पालन किया वरन आर्यसमाज के प्रसार प्रचार मे अहम भूमिका भी निभाई। आर्यसमाज दीवान हाल से उन्हे विशेष लगाव था और अपने अतिम क्षण तक वे आर्यसमाज दीवान हाल की गतिविधियो से जुडे रहे और प्रधान के रूप मे मार्गदर्शन किया। अपने प्रधानत्व के काल मे पडित जी ने आनन्दबोध सरस्वती ट्रस्ट की स्थापना कर भरपूर राशि का समायोजन किया। अपना सपूर्ण जीवन पडित जी ने समाज सेवा को अर्पित किया। अपने जीवन काल मे वह अनेक समाज सेवी सस्थाओ के सचालक व सरक्षक रहे। हिन्दू महासभा के भी पडित जी अग्रणी नेता रहे और अनेको समारोहो व जलसो का सफलतापूर्वक सचालन किया। पडित जी ने भदावर प्रदेश समाज का गठन किया और जीवन पर्यन्त उसका सचालन व मार्गदर्शन किया।

प० बटेश्वरदयाल जी स्वभाव से गम्भीर उदार व विराट दानी प्रवृति के व्यक्ति थे। वे सीधे साधे व्यक्ति, परोपकारमय जीवन जीने मे सदा विश्वास रखते थे। समय आने पर पडितजी ने दिल खोलकर दान दिया। न केवल वे दानी प्रवृति के थे वरन अपने सम्पर्क मे आने वाले सभी लोगो मे दान देने की प्रवृति को बढावा देने को प्रेरित करते रहे। समाज के गरीबों की उन्होने दिल खोलकर सहायता की। आर्यसमाज दीवान हाल व सार्वदेशिक सभा को भी समय समय पर उन्होने सहर्ष विभिन्न स्वरूपो मे दान दिया।

स्व० प० बटेश्वर दयाल जी न अपने जीवन की गाढी कमाई को वैदिक धर्म.प्रचारार्थ प्रदान किया। दान भी कहा दिया – **देशे काले च पात्रे च तद्दान सात्विक विदु।।**

दश काल योग्यता का देखकर जो दान दिया जाये वही पवित्र कमाई सात्विक कही जाती है।

स्व० पडित जी ने १०० ००० (एक लाख) रुपया आयसमाज दावान हाल को ... के रूप म दिया है। इस राशि का ब्याज यज्ञ तथा गरीबजनो की सेवा म व्यय किया जाता है।

५० ००० /– (पचास हजार) रुपया सार्वदेशिक सभा को देकर एक स्थिर निधि स्थापित की है।

आप सात्विक ब्राह्मण थे सादा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्ति थे। आप आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे। अपने प्रधानत्व मे ५१,००० (इक्यावन हजार) रुपये आर्यसमाज दीवान हाल से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली हेतु भी दिलवाये थे।

३१,००० /– (इक्तीस हजार) रुपये महर्षि दयानन्द गो सम्बर्धन केन्द्र गाजीपुर के लिए भी प्रदान किए हैं।

देश काल और पात्र को देना इसलिए आवश्यक है क्योकि बन्जर (ऊसर) भूमि मे डाला गया बीज बेकार ही जाएगा। अत उपजाऊ भूमि पर पडा बीज अच्छी फसल पैदा करेगा।

हम सब उनसे प्रेरणा प्राप्त करे तथा उनके गुणो को जीवन मे धारण कर समाज सेवा मे रत रहे यही उनको सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

स्व० श्री बटेश्वर दयाल जी को

शत् शत् नमन

श्री कृष्ण गोपाल दीवान, आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान नियुक्त

आर्यसमाज दीवान हाल की एक अत्यावश्यक बैठक ३ जून, २००१ (रविवार) को बुलाई गई, जिसमे सर्वसम्मति से श्री कृष्ण गोपाल दीवान को आर्यसमाज दीवानहाल का प्रधान नियुक्त किया गया।

स्व० बटेश्वर दयाल जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

रविवार, दिनाक १० जून, २००१, **समय :** प्रात १० बजे

स्थान : आर्यसमाज दीवान हाल, चादनी चौक दिल्ली - ११०००६

गुरुकुल है जहां, स्वास्थ्य है वहां

गुरुकुल स्पेशल केसरयुक्त च्यवनप्राश
बालक, बूढ़े, जवान सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर पौष्टिक रसायन

बच्चो, किशोरों एवं नवयुवकों के लिए ब्रेन टानिक गुरुकुल शंखपुष्पी सीरप

गुरुकुल पायोकिल
दांतों में खून आने से रोके, मुह की दुर्गन्ध दूर करे मसूढ़ों के रोग एवं ढीले दांत ठीक करें

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
मादकता रहित उत्तम पेय, खांसी, जुकाम, प्रतिशाय (इन्फ्लुएजा) तथा थकान आदि मे अत्यन्त उपयोगी

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एव प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर: गुरुकुल कांगड़ी-249404 जिला - हरिद्वार (उ प्र)
फोन- 0133-416073 फैक्स-0133-416366

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस,** १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक २७   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२   विक्रमी सम्वत् २०५८   दयानन्दाब्द १७८   सोमवार, १७ जून से २४ जून, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये   वार्षिक ७५ रुपये   आजीवन ५०० रुपये   विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर   टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड़ का संघर्ष

आन्दोलन की सफलता पर ही आर्यसमाज का भविष्य निर्भर

आर्यजनों में उत्साहपूर्वक बलिदान की भावनाएं जगीं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वतीजी के आदेशानुसार आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर करने के लिए आर्यजनो को एक विशाल सघर्ष की प्रेरणा देने के लिए दिल्ली के कई स्थानो पर बैठके आयोजित करने का एक व्यापक अभियान प्रारम्भ हो गया है।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी पहले ही देश भर के आर्य प्रतिनिधियो की एक बैठक मे यह घोषणा कर चुके हैं कि सघर्ष के बिना कोई उद्देश्य सफल होने वाला नही और यह सघर्ष लम्बा चलने की सम्भावना है इसलिए आर्यजनो को पहले से तैयार होना पडेगा। स्वामी जी ने आर्यजनो को प्रेरित करते हुए कहा कि वे स्वय पहले जत्थे के साथ इस सघर्षपूर्ण आन्दोलन मे भाग लेगे। वे इसके लिए हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार रहे।

सारे देश से आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड पुनर्निर्माण आन्दोलन को हर प्रकार के सहयोग और समर्थन के आश्वासन प्राप्त हुए हैं। दिल्ली मे पहले दौर की बैठको का सिलसिला पश्चिमी, उत्तरी-पश्चिमी तथा पूर्वी दिल्ली क्षेत्रों में बैठके आयोजित करके आरम्भ हो चुका है।

पश्चिमी दिल्ली मे यह बैठक आर्यसमाज तिलक नगर मे १६ जून को आयोजित की गई जिसके सयोजक श्री बलदेव राज आर्य ने बताया कि यदि आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण के लिए सघर्ष न किया गया तो सारे देश मे सरकार के सामने आर्यसमाज को दबकर रहना पडेगा। आर्यसमाज की गौरवशाली और सघर्षशील छवि को भी नुकसान होगा। इस बैठक की अध्यक्षता पश्चिमी दिल्ली वेद-प्रचार मडल के अध्यक्ष श्री मदन मोहन सलूजा ने की।

इस बैठक मे विभिन्न आर्यनेताओ ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए सघर्ष की अनिवार्यता पर बल दिया ... स्वर से दि... आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा को अधिकृत किया कि वे शीघ्रातिशीघ्र शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम जनता को दे।

उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली मे आर्य वीरागना दल के शिविर के समापन समारोह मे बहुत सी आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो के समक्ष भी वक्ताओ ने आर्यसमाज मिण्टो रोड हेतु शीघ्रातिशीघ्र सघर्ष के ऐलान की माग की। यह समारोह मात... शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसकी सयोजिका दिल्ली प्रदेश आर्य वीरागना दल की मुखिया श्रीमती उज्ज्वला वर्मा थीं।

पूर्वी दिल्ली मे भी सघर्ष की तैयारी को लेकर एक व्यापक जन सभा हुई जिसकी अध्यक्षता सुरेन्द्र कुमार रैली ने की। सभा के सयोजक श्री रोशन लाल गुप्त थे। यह बैठक आर्यजनो के उत्साह का एक अनोखा ... थी। पूर्वी दिल्ली के आर्यजन तत्काल सघर्ष के बिगुल पर बल दे रहे थे। श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने कहा कि हम आर्यसमाज की छवि और गौरव को बुल्डोजरो के नीचे कुचलने नहीं देगे। श्री जगमोहन के आदेश पर जिस बदनीयती से आर्यसमाज के ईट-पत्थरो पर बुल्डोजर चलाए गए है यदि हमने समय रहते इसका जवाब न दिया तो आने वाले भविष्य म हम लोगो की आत्माओ पर ऋषि-ऋण न चुकाने का घोर पाप चढा रहेगा। क्योंकि हमारी दृष्टि मे कर्त्तव्य का पालन न करना ही घोर पाप है।

इस बैठक के बाद कई क्रान्तिकारी नारो का भी उद्घोष किया गया, यथा –

- **जगमोहन होश मे आओ - होश मे आओ, मन्दिर वहीं बनाओ।**
- **जगमोहन पगलाया है, मन्दिर को तुडवाया है। होश ठिकाने लगाएंगे, मन्दिर वहीं बनाएगे।**
- **वाजपेयी से गुहार, मन्दिर तोडने वाले जगमोहन को बर्खास्त करो, बर्खास्त करो**
- **आर्यसमाज ने अंग्रेजों को भगाया था, अब जगमोहन को भगाएगे, मन्दिर वहीं बनाएंगे।**

–शेष भाग पृष्ठ ६ पर

आज अगर खामोश रहे, तो कल सब कुछ लुट जाएगा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समूचे विश्व के आर्य जनो का आह्वान् किया है कि वे हजारो लाखो की सख्या मे तार अथवा विशेष-पत्रो के माध्यम से आर्यसमाज मिण्टो रोड के मामले पर भारत सरकार के निम्न नेताओ को विरोध-पत्र अथवा तार अवश्य भेजे।

१) **श्री अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमन्त्री,**
७ रेसकोर्स मार्ग नई दिल्ली
फैक्स ३०१९३३४, ३०१९५४५

२) **श्री लालकृष्ण आडवाणी, गृहमन्त्री**
सी – १/६, पडारा पार्क, नई दिल्ली–३
फैक्स ३७८२३६७, ३०१७७६३

३) **श्री जगमोहन, शहरी विकास मन्त्री**
६१, लोदी ऐस्टेट, नई दिल्ली–३
फैक्स ४६४८६९५, ३०१९०८९

श्री वेदव्रत शर्मा ने देश के समस्त आर्यजनो को सघर्ष मे भाग लेने का आह्वान करते हुए कहा है कि यह आन्दोलन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नेतृत्व में एक विशाल आन्दोलन होगा जो लोगो के मनों मे १९३८-३९ के हैदराबाद सत्याग्रह की याद ताजा करेगा।

श्री वेदव्रत शर्मा ने सारे देश के आर्य नेताओं से निवेदन किया है कि वे तत्काल पत्रो अथवा दूरभाष द्वारा सभा को सूचित करे कि वे कितनी निश्चित सख्या मे कितने समय तक के लिए सत्याग्रह हेतु तैयार हैं और किस सीमा तक बलिदान के लिए तैयार हैं।

आर्यसमाज – दशा और दिशा

– सोहनलाल शारदा

जो उन्नति चाहते हो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार ही आचरण स्वीकार करे अन्यथा कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसलिए हम सभी को उचित है कि जिस देश के पदार्थो से यह शरीर बना है और पालन हो रहा है व आगे भी होता रहेगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सभी आर्यजन मिलकर प्रीतिपूर्वक करे। इसलिए भी कि जैसा आर्यसमाज इस आर्यावर्त्त राष्ट्र की उन्नति का अभिलाषी हैं वैसा अन्य कोई भी हो ही नहीं सकता।"

(सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास)

इसी उद्देश्य के पूर्त्यार्थ ही अकथनीय कष्ट का स्वामी जी स्वय वर्णन करैते हैं कि –

"मैं बर्फ मे गला हू। तप्त रेणु मे तया हू। कई बार निराहार सोया हू। वर्षा की बोछारे इसी दिगम्बर शरीर पर सही हैं। यह सब मैंने सहर्ष सहते हुए समाधिपद के ब्रह्मानन्द को छोडकर लोकोपकार हेतु इस कार्य मे सलग्न हू।"

इसी निमित्त ही पूर्णतया ज्ञानी बनने हेतु सम्पूर्ण आर्यावर्त्त राष्ट्र मे पैदल भ्रमण कर अनेक ग्रन्थो व वेदों का भाष्य करने के साथ ही प्रवचन व शास्त्रार्थ से भी सत्यासत्य निर्णय हेतु ही आर्यसमाज की स्थापना की।

इस आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों को जो भी जन करता उस पर महर्षि बहुत प्रसन्न होते थे जिसका उदाहरण है पजाब के जेहलम स्टेशन की घटना। जेहलम स्टेशन पर विदा करने हेतु सभी भक्तजन उपस्थित थे, तभी श्री गगाराम धमके एक सभासद का फार्म भरकर श्री मन्त्री जी को दिया। तभी गाडी के भीतर बैठे ही महर्षि पूछ बैठे कि यह कैसा पत्रा है। प्रत्युत्तर मे मन्त्री जी ने कहा कि – **"यह एक सभासद बनाकर लाए हैं, उनका यह पत्र है।"** यह सुनते ही महर्षि ने हर्षातिरेक से गाडी से उतरकर श्री गगाराम को गले लगा लिया। ऐसी थी महर्षि की आर्यसमाज के लिए कार्य करने वालो का उत्साह वर्धन हेतु प्रेममयी उच्चतम भावना। (देवेन्द्र बाबूकृत महर्षि का जीवन)

कथनी-करनी का भेद मिटाओ

अत वर्तमान मे आर्यसमाज की दशा मे स्वच्छ प्रगति लाने हेतु हमें कथनी-करनी का भेद मिटाकर निश्चयपूर्वक महर्षिकृत सभी ग्रन्थो से जिनमे प्रत्येक पहलू पर विचार एवं दिशा-निर्देश दिए हैं। अब समय है उसे कार्यरूप म परिणित करे। यह ही समाज, राष्ट्र तथा व्यक्तिगत जीवन का महत्व पूर्ण कार्यक्रम है।

महर्षि ने कथनी ओर करनी का भेद मिटाते हुए गगा तट पर भ्रमण करते हुए जो वेदोक्त धर्म-प्रचार किया, जिसका सौरो निवासी नारायण ने उस समय का वर्णन करते हुए लिखा कि –

" स्वामी दयानन्द बाबा आए ऐसे शास्त्री।
बहुतेरे लडके कुपढ डोले पढ़ाई उनको गायत्री।।

(लेखरामकृत महर्षि जीवनी आर्यभाषानवादु, पृष्ठ ११७)

महर्षि राष्ट्र की सर्वागीण प्रगति चाहते थे। अतः नई पीढी को तैयारी हेतु भी कुछ पाठाशालाए खोली थीं।

कस्बा कासगज जिला एटा की पाठशाला का यह नियम था कि विद्यार्थी प्रथम मे **'संध्या'** पढकर ही पाठशाला मे भरती हो। इससे उनके बुद्धि ग्रहणशक्ति की परीक्षा हो जाती थी।

आर्यसमाज की दशा सुधारने हेतु मात्र पुस्तक भेट से काम नहीं चलेगा। हमे सागो पूग सध्या जिसमे प्राणायाम से **'ओ३म्'** का मन्त्र सहित जाप करना होगा। गायत्री जाप विधि की शिक्षा करनी है। इसलिए भी कि बिना सिखाए-पढाए कोई भी तयार नहीं हो सकता।

इसके लिए ही महर्षिकृत ग्रन्थ ही सर्वमान्य प्रभावोत्पादक हैं।

म्लेच्छ कौन है ?

महर्षि से जब प्रश्न किया गया कि 'म्लेच्छ' शब्द का अर्थ क्या है? तो महर्षि ने उत्तर मे कहा कि – **"जिसका उच्चारण शुद्ध नहीं वह म्लेच्छ है।"** (लेखरामकृत महर्षि जीवनी आर्यभाषानुवाद पृष्ठ २५६)

गुरुवर विरजानन्द जी के जीवन चरित्र मे वर्णन है कि जब एक अग्रेजी उच्च शासनाधिकारी महर्षि से मिलने आए तब उसने वेद के मन्त्र का अत्यन्त अशुद्ध उच्चारण किया, तभी गुरुवर ने निर्भयता पूर्वक कहा – **"विदित नहीं ऐसा अशुद्ध उच्चारण पढ़ने वाले को वेद पढने का अधिकार किसने दे दिया।"**

ऐसा वीर पुरुष पहले नहीं देखा

इस प्रकार दण्डीजी के निर्भय वचन सुनकर यह उच्च शासनाधिकारी अप्रसन्न नहीं हुआ। प्रत्युत उसने उनकी वीरता की प्रशंसा की और यह कहा कि हमने ऐसा बीर पुरुष पहले नहीं देखा।"

अत, नई पीढी को आर्य बनाने के लिए हमें सांगोपांग, संध्या व यज्ञीय मन्त्रक शुद्ध उच्चारण प्रारम्भ से नियमो के साथ महर्षिकृत सर्वग्रन्थो का समन्वय करते हुए। सिखाना है। इनमे कुछ भी विरोधाभाष नहीं है।

महर्षि ग्रन्थों का प्रमाण

यह इसलिए भी है कि एक समय श्री प० छोटेलाल सारस्वत मिर्जाई गज पटना के निवासी नपे प्रश्न किया कि –**"पूज्यपाद स्वामी जी महाराज कृपया यह बताने की कृपा करें कि हम श्रीमानों के वचनों, लेखों, उपदेशों तथा पुस्तकों आदि को कबतक प्रमाण मानते रहें ?** तभी प्रत्युत्तर मे पूज्य स्वामीजी महाराज ने कहा– **"जब तक हमारी बुद्धि में सन्निपात आदि रोग-दोष नहीं हो जाए तब तक हमारे कथनों लेखों को प्रमाण मानते रहना।"**

महर्षि के इन वचनो के अनुसार ही हमें महर्षिकृत सर्वग्रन्थो से ही नई पीढी को पढाकर आर्य बनाना है। यही **'सत्यम'** है ग्रहण करके **'शिवम्'** को प्राप्त करना है। उन्हीं के माध्यम से ही आर्यसमाज की दशा सुधारनी है।

यह निश्चय कर लेना है कि हम जीवन मे ५ जन, को अवश्य ही शिक्षित-दीक्षित करें, तन्मयता से ईश्वर से प्रार्थना करने से वह अवश्य सुनेंगे। सफलता अवश्य मिलेगी।

महर्षि के वचन हैं कि सध्या यज्ञ से प्रभु भक्ति यथाविधि उचित समय पर एकाग्र मन से करेगे तो उसके महाकठिन काम भी सुगमता से सिद्ध हो सकेगे। (सस्कार विधि)

अत महर्षि प्रदत्त सर्वग्रन्थो मे जिस विधि का वर्णन है वह हमारी प्रगति का मुख्य स्रोत है। इसने ही मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण और विधि सिखायी है। महर्षि कहते हैं – **"जो विधि नहीं जानते वे उससे होने वाले लाभों से वंचित रहते ही हैं, अतः विधि ठीक-ठीक लिखनी, पढनी-पढ़ानी तथा बोलनी चाहिए।"**

(लेखरामकृत महर्षि जीवन आर्यभाषानुवाद, पृष्ठ ४७६)

इस निश्चयता से नई पीढी को आर्य बनाने का निश्चय **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'** से करना है। सफलता अवश्य मिलेगी। **नर हो न निराश करो मनको** दृढ सफलता मिलेगी।

– शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)

बोध कथा

शारीरिक अक्षमता के बावजूद जीवन में सफलता सम्भव

मंजुला का जन्म कर्नाटक की स्वर्ण खदान के क्षेत्र के साथ दूरस्थ गाव में हुआ था, उसका पालन एक खेतिहर दलित मजदूर के छह बच्चो मे सबसे छोटे बच्चे के रूप में हुआ था। उसकी माता ने उसे प्रेरणा दी कि यद्यपि तुम्हारे हाथ बचपन से ही नहीं हैं, तो भी तुम्हें अपनी मेहनत से अपना रास्ता बनाना है। फलत उसे अपनी मेहनत से आगे बढना है। मजुला ने अपने दोनो पैरो की अगुलियो से हाईस्कूल की परीक्षा दी और कामयाबी हासिल की। मजुला अपनी मेहनत से प्रथम श्रेणी लेना चाहती थी और इसके लिए वह आधा घण्टा अधिक समय लेना चाहती थी, परन्तु वह समय उसे नहीं मिला।

अब वह कम्प्यूटर की परीक्षा देना चाहती है, उसे पूरा भरोसा है कि उसकी मेहनत और हित चिन्तको की सहानुभूति और सहायता से वह अपना यह लक्ष्य भी पा लेगी। मजुला कहती है कि मा ने मुझे सीख दी है कि **'अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद इन्सान चाहे तो जिन्दगी के हर क्षेत्र में कामयाबी पा सकता है। उसे सरकार से उचित छात्रवृत्ति मिल गई है।'**

– नरेन्द्र

राष्ट्रीय, सामाजिक तथा क्रान्तिकारी विचारों के लिए
साप्ताहिक आर्य सन्देश
के लिए
500 रुपये में आजीवन
सदस्य बनें।

मातृभूमि के लिए सच्चा समर्पण : जाग्रत रहो

वयं तुभ्य बलिहृतः स्याम। *अथर्व १२।१६२*

हम तेरे उत्सर्ग के लिए प्रस्तुत रहे।

सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना। *अथर्व १२।१।१३*

हमारी मातृभूमि उन्नति के शिखर पर हो हम भी उन्नति करे

भूत्यै जागरणम्। *यजु० ३०।१७*

जागना कल्याण के लिए है,

क्षत्रं दृह।। *यजु० ५।२७*

अपना क्षात्रबल सुदृढ बनाओ।

आयु. यज्ञेन कल्पताम्। *यजु० १८ २८*

जीवन को यज्ञ द्वारा सफल बनाओ।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

एकता की नई पहल : सहमति के सूत्रों को सुदृढ़ करें

जुलाई मास मे दिल्ली या आगरा मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी पाकिस्तान के सैनिक शासक परवेज मुशर्रफ से मिलने वाले है। पाक विदेश मन्त्री अब्दुल सत्तार ने कहा है – जब यूरोप के देश राष्ट्रीय सीमाए भुलाकर आपसी मेल-मिलाप कर सकते हैं ता भारतीय उपमहाद्वीप के देशो से भी अतीत की कटुता भुलाकर एकता का वातावरण तैयार करना चाहिए। भारत-पाकिस्तान के आपसी सम्बन्धो को मधुर बनाने में ईरान से भारत आने वाली गैस लाइन पाकिस्तान मे सुरक्षित रहे, ईरान ने पाक अधिकारियो से आश्वासन पर भारत का निर्बाध तेल की आपूर्ति का आश्वासन दे दिया है। प्रस्तावित गैस पाइप लाइन ईरान से तेल लाकर भारत को आपूर्ति करेगी। ईरान ने पाक फौजी शासक से बातचीत कर भारत को बिना बाधा के तेल आपूर्ति का आश्वासन दे दिया है। यह सुविधा देने के कारण पाकिस्तान को ६० करोड डालर की बडी धनराशि मिल सकेगी। कुछ वर्ष पूर्व भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने शिमला मे पाकिस्तानी शासक जुल्फिकार अली भुट्टो से मिलकर सहमति का मार्ग अपनाया था, अगले महीने भारत-पाक नेताओ की आपसी बातचीत से आपसी मैत्री सम्बन्ध सुदृढ करने चाहिए। पाक शासक ने अविश्वास और शत्रुता की विरासत से छुटकारा पाने के लिए पूरे प्रयास पर बल दिया है, यद्यपि वह मानते हैं कि दोनो देशो के मध्य कश्मीर विवाद तनाव का मुख्य मुद्दा है, परन्तु वह दूसरे मुद्दो पर भी बातचीत के लिए तैयार हैं वस्तुत विश्व राजनीति मे भारतीय उपमहाद्वीप के राष्ट्रो का उसी समय कोई सम्मान हो सकता है जब वे आपस मे मिलकर कार्य करे। पाक विदेश मन्त्री अब्दुल सत्तार ने स्वीकार किया है कि भारत से शत्रुता के कारण उसे अनेक क्षेत्रो मे भारी क्षति हुई है। यूरोप और एशिया के विभिन्न क्षेत्रो मे सकट और व्यावसायिक आवश्यकताओ की पूर्ति क लिए एकता सुदृढ की जाती है, अब पाक अधिकारियो की सूचना के अनुसार उन्हे भी भारतीय उपमहाद्वीप की एकता की महत्ता की अनुभूति हो गई है। वैसे, यह ऐतिहासिक भौगोलिक, सास्कृतिक और आर्थिक हितो का तकाजा है कि उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धु सागर तक के विस्तीर्ण भूभाग के निवासियो और वहा के शासको का यह एक नैतिक दायित्व है कि वे सम्पूर्ण क्षेत्र मे एकता की नई पहल करे और सहमति के आर्थिक, सास्कृतिक, राजनीतिक सूत्रो को सुदृढ करे।

नए आणविक वैज्ञानिक युग मे देशो की छोटी राजनीतिक सीमाए गौण हो गई है यूरोप अमेरिका और अफ्रीका के बिखरे राष्ट्र अपने भौगोलिक आर्थिक एव सास्कृति हितो क कारण एक और सयुक्त हो सकते हैं तो इतिहास और लम्बी सास्कृतिक आर्थिक राजनीतिक परम्परा को सुरक्षित रखने के लिए भारतीय उप महाद्वीप मे तो एकता और भाईचारा यहा निवासियो की ऐतिहासिक, सास्कृतिक एव आर्थिक परम्पराओ को सुरक्षित रखने के लिए अनिवार्यत मान्य होना चाहिए। सहस्राब्दियो, शताब्दियो से यह विस्तीर्ण भौगोलिक क्षेत्र सास्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से एक और सयुक्त रहा है, विदेशी शासको के शासन मे भी यह एकता बनी रही, परन्तु जब राजनीतिक कारणो से उन्हे देश छोडने के लिए बाध्य होना पडा तो वे देश छोडते समय उसके दोनो बाजुओ और साथ के भूभाग को पृथक कर गए। हमारी स्वाधीनता का यह चौवनवा वर्ष चल रहा है। विश्व के बदली हुई परिस्थिति एव यूरोप तथा एशिया के विस्तीर्ण भूभागो की स्थिति का तकाजा है कि यदि नए विश्व और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारतीय भूखण्ड के देशो को सम्मान और गरिमा के साथ अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी है तो भारतीय उपमहाद्वीप के देशो के मध्य स्थायी एकता और भाईचारा प्रतिष्ठत होना चाहिए। पाक विदेश मन्त्री ने स्वीकार किया है कि पृथकता से उन्हे निरन्तर क्षति ही मिली है, हा एकता से विश्व और एशियाई राजनीति मे भारतीय उपमहाद्वीप के राष्ट्रो की प्रतिष्ठा और गरिमा के एक नए अध्याय का सूत्रपात सम्भव है। यूरोप अफ्रीका और एशिया के दूसरे भागो मे आर्थिक राजनीतिक हितो क लिए इस प्रकार का गठबन्धन हो सकता हो तो भारतीय उपमहाद्वीप के वर्तमान और भविष्य का ताकजा है कि एकता की नई पहल की जाए।

विश्व का इतिहास सीख दे रहा है कि सगठन और एकता से एक नए राजनीतिक, सास्कृतिक और आर्थिक इकाई का स्थायी निर्माण सम्भव है। यूरोप, अफ्रीका और एशिया मे जब अस्थायी सगठनो की भूमिका रखी जा सकती है, तो भारतीय उपमहाद्वीप के राष्ट्रो और उनकी जनता के स्थायी सास्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक हितो को सुदृढ और सशक्त करने के लिए यहा राष्ट्रो की स्थायी एकता प्रतिष्ठित की जानी चाहिए। सहस्राब्दियो, शताब्दियो से उस भारतीय भूखण्ड के राष्ट्र सास्कृतिक, आर्थिक राजनीतिक दृष्टि से एक और सयुक्त रहे हैं। यह सम्भव है कि एक राजनीतिक दृष्टि से उस भूभाग के राष्ट्र बटे हो, परन्तु उनके सास्कृतिक, आर्थिक और नैतिक हितो का तकाजा है कि उनमे पहले जैसी एकता पुन प्रतिष्ठित की जाए। प्रधानमन्त्री वाजपेयी जी और जन० परवेज मुशर्रफ की वार्ता से इस दिशा मे एक अच्छी शुरुआत की जा सकती है। जैसा कि पाक विदेशमन्त्री ने स्वीकार किया है – भारत से पृथक् होकर उन्हे भीषण क्षति पहुची है। जब विभक्त यूरोप, अफ्रीका और एशिया के देश एक और सयुक्त होने की सोच सकते हैं तो अतीत मे एक और सयुक्त भारत के अलग हुए भूभागो के राजनीतिज्ञो को विश्व राजनीति की इस नई धारा को पहचान कर भारत मे सास्कृतिक, आर्थिक एकता, के पुरानी परम्परा को राजनीतिक एकता का नया स्वरूप देने मे सकोच न करना चाहिए। राष्ट्रीय एकता की नई पहल करने के लिए उन देशो के शासको को सहमति के विभिन्न आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक सूत्रो की पहचान कर उन्हे व्यवस्थित कर यत्नपूर्वक सुदृढ करना होगा। आज यह काम असम्भव सा प्रतीत होता है, परन्तु यदि राष्ट्रो के सूत्रधार उस सम्बन्ध मे व्यवस्थित राष्ट्रनीति बनाकर उसे व्यावहारिक स्वरूप दे तो कुछ ही वर्षो मे एक नए भारत राष्ट्र की प्रतिष्ठता सम्भव है। ❑

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

भारत सदियो से पूरे विश्व मे शिक्षा का गुरु रहा है। हमारे तक्षशिला, नालन्दा, वाराणसी और उज्जयिनी आदि उच्च शिक्षा के केन्द्र थे। उनमे न केवल भारत राष्ट्र के कोने-कोने से प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। चीनी बौद्ध यात्रियो फाह्यान और हेनसाग के यात्रा-विवरण उच्च अध्ययन के इन केन्द्रो का वर्णन करते हैं। यातायात और सचार सम्बन्धी सुविधाओ के अभाव मे हजारो विद्यार्थियों का नालन्दा और तक्षशिला के विश्वविद्यालयों में एकत्र होना आज भी शोध का विषय बना हुआ है। आज की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा केन्द्र पहले जैसे आकर्षण के केन्द्र नहीं रह गए हैं, सम्भवत आज की शिक्षा प्रणाली सच्चे मानवधर्म और सस्कृति से पृथक् हो गई है, जबकि हमारे प्राचीन शिक्षा केन्द्र सामाजिक, सास्कृतिक मूल्यों पर आधारित सच्ची मानव सस्कृति की शिक्षा देते थे, जिनमे चारित्रिक मूल्यो से सामाजिक, सास्कृतिक उन्नति होती थी।

– अदित तिलक, राजगुप्त, साहरा यमुनानगर, हरियाणा

भूकम्परोधी भवन

पिछले दिनो गुजरात मे विनाशकारी भूकम्प ने सीख दी है कि उसे रोका तो नहीं जा सकता परन्तु उससे बचाव किया जा सकता है। यदि भूकम्परोधी इमारते बनाई जाए तो प्रकृति का प्रकोप नियन्त्रित हो सकता है। शासन और जनता को चाहिए ऐसे भवन और मकान बनाए जाए जो पूर्णतया भूकम्प रोधी हो। प्राचीन एक मजिली इमारते आज भी अपनी विशेषता के कारण बची हैं तो भूकम्प रोधी नई इमारते ही बची हैं।

– विनोद कुमार, रेलवे कालोनी तुकलगबाद, नई दिल्ली

ऋग्वेद से यत्-तत् सप्तकम् (५) उत्तरार्द्ध

कर्मफल या कारण कार्य शृंखला के संकेत

– पं० मनोहर विद्यालंकार

गताक से आगे –

(५) प्रतद्वोचेम भव्यायेन्दवे हव्यो न य इषवान्मन्म रेजति रक्षोहा मन्मरेजति। स्वयं सो अस्मदानिदो वधैरजेत दुर्मतिर्म अवस्रवेदघशंसोऽवतरमव क्षुद्रमिवस्रवेत्।। ऋ० १/१२६/६

परुच्छेपः। इन्द्रः। भुरिगाष्टिः।

अर्थ – (इषवान् य इन्द्र हव्य) अन्नो का स्वामी ऐश्वर्यशाली जो राजा आपत्ति के समय सबसे पुकारा जाता है और (रक्षोहा) राक्षसी वृत्ति वालो के (मन्म रेजति) दीप्त आयुधो को वैसे ही नष्ट कर देता है जैसे (इषवान्) प्रेरक गुरु (मन्म रेजति) शिष्यो के दुष्ट विचारो को नष्ट कर देता है, ऐसे (भव्याय इन्दवे तत्मन्म वोचेयम्) भव्य ऐश्वर्यशाली के लिए प्रशसात्मक स्तुतिगान करता हू, जिससे (स स्वय अस्मत् निद दुर्मति वधै अजेत्) वह बिना याचना किए स्वय हमारे निन्दक शत्रुओ को तथा उनकी दुर्भावना को हनन साधनो द्वारा सर्वथा दूर कर दे। इस हमारे समाज मे (अधशस) पाप का शासन (बढावा देने वाला) (अवतर स्रवेत) प्रजा की दृष्टि मे पतितो से भी पतीत हो जाए, (इव) जैसे (क्षुद्र अवस्रवेत्) क्षुद्रवस्तु पाव तले रौंदी जाकर गायब (नष्ट) हो जाती है।

अर्थपोषण – रेजतिर्गत्यर्थ। नि० २/१४ गच्छति चालयाते नाशयतीति सायण।

मन्म – दीप्तमायुधम। सायण। ऋ० १०/१८२/१ मन स्तम्भे, मन्तु अपराधे।

निष्कर्ष – राष्ट्र मे शान्ति स्थापना के लिए अन्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर होना बहुत आवश्यक है। तदनन्तर सज्जनो को मण्डित और दुर्जनो को दण्डित किए बिना शान्ति स्थाई नहीं रह सकती।

(६) उत्पादन कर्ता, ऐश्वर्य प्राप्त करता है। वह जितना देता है, उससे अधिक इन्द्र उसे देता है

वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणस. सून्वानो हिष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः।
सुन्वान इत्सिषाति सहस्रा वाज्यवृतः।
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुव रयि ददात्याभुवम्।
ऋ० १/१३३/७

परुच्छेप.। इन्द्र.। विराऽष्टि.।

अर्थ – (सुन्वन्) उत्पादन करने वाला (हि) निश्चय से (क्षय वनोति) उत्तम निवास को प्राप्त करता है और (सुन्वान परीणस दिष अवयजति) उत्पादनकर्ता – अतएव ऐश्वर्यशाली हो, चारों ओर से घेरने वाले शत्रुओ को दूर कर सकता है, इतना ही नहीं (देवान दिष अवयजति स्म) वह विद्वानो और सज्जनो से द्वेष करने वालो को भी सर्वथा खदेड सकता है। (सुन्वान इत्) उत्पादनकर्ता ही (वाजी अवृत) शक्तिशाली बनता है और किसी के चक्कर मे नहीं फसता, अपितु (सहस्रा सिषासति) प्रजा मे बहुत प्रकार के पदार्थो का वितरण करता है। (सुन्वानाय) इस प्रकार उत्पादन करके पदार्थ वितरण करने वाले को (इन्द्र आभुव रयि ददाति) ऐश्वर्यशाली लोग तथा राजा उसे सर्वतो व्याप्त (सब प्रकार का) धन देता और केवल धन ही नहीं (इन्द्र आभुव ददाति) धैर्य क्षमा, निर्भयता आदि अनेक शक्तिया परमेश्वर उसे प्रदान करता है।

निष्कर्ष – (१) आध्यात्म दृष्टि से शरीर मे वीर्य का उत्पादन तथा रक्षण करने वाला हृष्ट-पुष्ट और सुखी रहता है तथा काम क्रोधादि को अपने से दूर रखता है। सासारिक दृष्टि से उत्पादन करने वाला धन कमाकार ऐश्वर्यशाली बनता है और अपने विरोधियो या शत्रुओं से कभी मात नहीं खाता।

(२) जो व्यक्ति समाज के लिए हजारो लाखो रुपये परार्थ भाव से खर्चता है, परमेश्वर उसे दिन-दूनी रात-चौगुनी समृद्धि प्रदान करता है।

अर्थ पोषण – सुन्वन् सुन्वान् – सुन् अभिषवे, सु प्रसवैश्वर्ययो। स्म– स्वर्था (सूर्यकान्त)

सिषासति – आङ् + सिषक्तु सेवार्थ। नि० ३/३६

(७) तीनों पालिकाओं की मर्यादा का पालने करने वाले की न्याय पालिका रक्षा करती है

यो मित्राय वरुणायाविधज्जनोऽनर्वाण त परिपातो अहसो दाश्वासमर्तमंहसः।
तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनुव्रतम्।
उक्थैर्य एनो. परिभूषति व्रतं स्तोमैरा भूषति व्रतम। ऋ० १/१३६/५

परुच्छेपः। मित्रावरुणौ। स्वराऽत्याष्टिः।

अर्थ – (य जन) जो स्वस्थ और शान्त रहने का इच्छुक (मित्राय) प्राण के समान जीवन दायिनी विधान पालिका तथा (वरुणाय) अपान के समान दुष्टो का दमन-नियन्त्रण करने वाली कार्यपालिका के विधान का (अविधत्) विधिवत् पालन करता है (अनर्वाणम्) द्वेषादि, दोष रहित (त दाश्वास मर्तम्) उस सविधान को समर्पित मनुष्य को (अहस अहस परिपातम्) ये दोनो विभाग पापपूर्ण भावनाओ तथा क्रियाओ से सरक्षण प्रदान करते हैं। (य) जो मनुष्य (एनो) इन दोनो विभागो को (व्रत उक्थै स्तौमै च) क्रियाकलाप को अपनी कथनी-करनी से (परिभूषित) अलकृत करता है, उसका अक्षरश पालन करता है, (अनु व्रत ऋजूयन्त तम्) ऐसे सामाजिक (कर्त्तव्य) नियमो के आदेशानुसार, जीवन सादगी और सरलता से व्यतीत करने वाले (अनर्वा = अजातशत्रु) मनुष्य की (अर्यमा) न्यायपालिका का प्रत्येक कर्मचारी (अभिरक्षति) सब तरह से रक्षा करता है। व्रतकर्म।

अर्थपोषण – प्राणो वै मित्राऽपानो वरुण। शत० ८/२/५/६

अर्यमा – अर्यान् – आर्यान् (स्वामिन) मानयतीति, अर्यमा = न्यायाधीश।

वरुण – दुष्टान् वारयति दोषान् निवारयतीति वरुण – सेनाध्यक्ष।

मित्र – सर्वेभ्य समान रूपेण सविधान प्रमिनोति स्थापयति – विधान सभाध्यक्ष।

उक्थै – स्तोतुमर्हं वचोभि, स्तोमै, स्तोतुमर्हं कर्मभि।

निष्कर्ष – जैसे प्राण अपान की साधना करने वाला स्वस्थ और शान्त रहते हुए यदृच्छा प्राप्त मे सन्तुष्ट और आत्मविभार रहता है, तथा इन्द्रिया उसके वश में रहने के कारण, स्वभावत पालन-पोषण रक्षण करती हैं, वैसे ही समाज मे जो लोग सविधान और रक्षण विभाग के नियमो का पालन करते हैं। किसी से द्वेष न करके सबके साथ भलाई करते हैं, न्याय विभाग उन के पालन-पोषण रक्षण की व्यवस्था की देखभाल करता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली- ६

जन्म जाति का रोग मिटाओ

– पं० नन्दलाल निर्भय

आर्यावर्त्त मे बढ गया, जन्म-जाति का राग।
नर-नारी इस रोग के भोग रहे है भोग।।
भोग रहे है भोग गया है बढ आडम्बर।
घूम रहे है धूर्त कुचाली लोग धरा पर।।
पौगा-पथी छुआ छूत को बढा रहे हैं।
उल्टी पट्टी आज, विश्व को पढा रहे हैं।।
हम स्वार्थ मे लिप्त, धर्म को है बिसराया।
भ्रष्टाचारी बढे, पाप को यहां बढाया।।
जन्म-जाति रोग रोज बढ रहा सवाया।
प्रेमभाव मिट गया ईर्ष्या-द्वेष बढाया।।
कहते चारों वेद, कर्म प्रधान जगत मे।
शुभकर्मों से मिले, सभी को मान जगत मे।।
ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र है वरण साथियो।
चुनना वरण का अर्थ करो सब मनन साथियो।।
कर्मों के अनुसार, वरण माने जाते है।
शुभ कर्मों से बडे, सभी जाने जाते हैं।।
गाय, भैंस, बकरी, चिडिया, तोता अरु घोड़ा।
सभी जातिया अलग, ज्ञान कर लो तुम थोड़ा।।
मानव योनि है कर्मयोनि, शुभ कर्म कमाओ।
भोग योनिया शेष, स्वय समझ सुख पाओ।।
करने अच्छे काम, हमे भेजा ईश्वर ने।
भूल प्रभु को गए, लगे मनमानी करने।।
दुखिया, दीन, अनाथो को, निश दिन ठुकराते।
चोरी करते रोज, नहाने नंगा जाते।।
न्यायकारी भगवान, दयालु, सुख का दाता।
देख रहा है, सर्व विश्व को, जग निर्माता।।
ईश्वर है सर्वज्ञ, अजर सर्वान्तर्यामी।
फल देता है यथायोग्य, न्यायकारी नामी।।
ध्यान लगा कर सुनो, भलाई इसमें जानो।
वैदिक पक पर चलो, धर्म अपना पहचानो।।
मानव तन अनमोल, सार्थक इसे बनाओ।
'नन्दलाल' शुभ कर्म करो कर्त्तव्य निभाओ।।

– ग्राम बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

महाराष्ट्र तथा केन्द्रीय सरकार ध्यान दें

क्या यह छत्रपति शिवाजी के साथ अन्याय नहीं ? क्योंकि गढ़ गया और सिंह भी गया

सिंहगढ़ किले की समुचित व्यवस्था तथा जानकारी दी जाए

– आचार्य आर्य नरेश

भारतीय सस्कृति के गौरव, वीरो के हृदय सम्राट, आर्यभूमि 'भारत' की शान, देश भक्तो के 'प्राण' छत्रपति शिवाजी महाराज जिन्होने मुग्लों की गुलामी से देश को बचाने हेतु प्रत्येक भारतीय के मन मे क्रान्ति की अग्नि भर दी। उन्हे भला कौन नहीं जानता? जिनका सम्पूर्ण समय ही नहीं, अपितु तन का प्रत्येक कण तक जीवन के अन्तिम क्षण तक आर्य हिन्दू सस्कृति की रक्षा हेतु उत्सर्ग करता रहा। प्रत्येक भारतीय 'आर्यपुत्र' यह ध्यान मे रखे कि आज जितना भी सुख हम इस धरा पर भोग रहें हैं, वह सब ऐसे ही वीरों की धरोहर है। राष्ट्रवासी यह बात कदापि न भूले कि स्वतन्त्रता के प्रेरणा स्रोत 'छत्रपति शिवाजी महाराज' की मुगलकाल की अपेक्षा आज कहीं अधिक आवश्यकता है।

स्वराज्य के सच्चे प्रथम मन्त्रदाता महर्षि देव दयानन्द ने अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे छत्रपति शिवाजी महाराज की कुर्बानी हेतु अत्यन्त प्रशसा की है। आज भारत राष्ट्र जिस डावा-डोल स्थिति से गुजर रहा है, ऐसे अवसर पर हमें छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन सस्मरण तथा उनके ऐतिहासिक स्थल विशेष प्रेरणा एव प्राण शक्ति की प्रेरणा दे सकते हैं। परन्तु हार्दिक खेद है कि जिन छत्रपति शिवाजी का नाम लेकर महाराष्ट्र की सरकारें जनता के मत बटोरती रही हैं, लगता है कि उन्हे उसके सिवाय छत्रपति शिवाजी से सम्भवत: कोई विशेष स्नेह नहीं है।

पिछले दिनो मुझे वेद-प्रचार के सदर्भ मे पुणे जाने को अवसर मिला, भूकम्पग्रस्त क्षेत्र गुजरात की और लौटने से पूर्व विचार आया कि छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रसिद्ध किला ही देखते चले। हम एक लम्बा पहाडी मार्ग पार करके उत्साहपूर्वक पहाड के शिखर पर किले के समीप पहुचे। सिहगढ के नाम से प्रसिद्ध इस पहाड के शिखर पर हमारी आखे उस महान योद्धा छत्रपति शिवाजी के समय के कुछ ऐतिहासिक अवशेष देखने के लिए लालायित थीं। आगे बढते हुए हम यह सोच रहे थे कि यदि प्रारम्भ मे नहीं तो कुछ और आगे चलकर कोई न कोई प्राचीन ऐतिहासिक स्मारक अवश्य मिलेगा। अत्यन्त दु:ख का विषय है कि हमने इस स्थल का चप्पा-चप्पा छान मारा, पर हमे कहीं भी वीर तानाजी के समाधि ा छोड़कर किसी ऐतिहासिक शौर्य का स्मृति चिन्ह देखने को न मिला।

इतना ही नहीं अपितु भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग के द्वारा भी कहीं इस प्राचीन सिंहगढ किले के विषय मे कोई नामपट्ट (बोर्ड) दिखाई न दिया। कहने का अभिप्राय है कि **'केन्द सरकार अथवा प्रान्तीय सरकार'** द्वारा आने वाले यात्रियों को मार्ग दिखाने वाला अथवा किले के इतिहास को बताने वाली कोई सूचना या कथापट्ट न लगा था। किसी प्राचीन स्थान को किले की पहचान देने वाली बुर्जीनुमा दीवारे भी दिखाई न देती थी। इस ऐतिहासिक स्थल पर अण्डे, मांस, मछली, बीडी-सिगरेट, चाकलेट और पैप्सी तथा कोकाकोला को छोडकर कुछ भी दिखाई नही दिया। पर्यटन विभाग का भी यहा कोई नामो-निशान न था। आने वाले इतिहास प्रेमी यात्री अधिकतर निराश होकर ही हमारी तरह लौटते हैं। यदि किसी छत्रपति शिवाजी के प्रेमी सरकारी अधिकारी या नेता ने इस किले के बचे-खुचे स्मारको, दीवारो अथवा पत्थरो को सुरक्षित रखने को प्रयास किया होता हो निश्चय ही आज इसकी ऐसी दुदर्शा न होती।

इस उपेक्षित मैदान के स्थल पर प्राचीन ढग की वैसी किले सी दीवार ही बनवा दी जाती तो भी इसे देखने पर यह किले जैसा ही दिखाई देता। यदि प्राचीन खण्डरो को कुछ व्यवस्थित कर वहा प्राचीन इतिहास एव किले के प्राचीन कार्यस्थलो को बताने वाले कुछ बोर्ड और पुतले (बुत) भी लगा दिए जाते तो भी हमरी ऐसी प्रसिद्ध धरोहर ही उपेक्षित न होती। किले के प्राचीन प्रकोष्ठो का अनुमानित चित्रण करके यदि इस उजडे स्थल पर फूलों का बागीचा और बीच में यात्रियों के लिए आने-जाने हेतु पगडण्डिया ही बना दी जाए तो हमारी कुछ लाज बच जाए। तथा छत्रपति श्री शिवाजी के साथ उचित न्याय तथा किले की रक्षा से एक सरकार सच्ची सरकार कहलाती।

अन्त मे हम इतना ही कहना चाहेगे कि श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम के साथ जुडे इस ऐतिहासिक 'सिहगढ' किले के पर्वतीय शिखर को देखकर हार्दिक दु:ख हुआ। भारत की केन्द सरकार तथा महाराष्ट्र की सरकार से हमारा विशेष अनुरोध हे कि इस किले को उपेक्षित न करके व्यवस्थित करने का प्रयास करे और शीघ्र ही इसकी सीमा बोधक दीवारे लगाए। जिससे कि आने वाली जनता यहा से कुछ प्रेरणा प्राप्त करके जाए। इसके साथ-साथ सरकार से हमारा यह भी अनुरोध है कि वह किले पर उस समय के प्रसिद्ध योद्धाओ की उपयुक्त प्रतिमाए भी लगाए। इस किले को सुन्दर, प्रभावशाली तथा प्रेरणा का स्रोत बनाने हेतु यह भी जरूरी है कि किले के शिखरस्थल पर स्थान-स्थान बिखरी हुई विभिन्न दुकाने किले के बाहर अथवा एक ओर इसी सीमा पर व्यवस्थित स्थापित करे, जिससे कि यह कोई आम 'ग्राम' जैसा न लगकर एक 'गरिमायुक्त' प्राचीन किले जैसा लगे। पर्यटन विभाग अथवा किसी स्थानीय नागरिक के माध्यम से किले का इतिहास छपवाकर उचित दामो मे यात्रियो तक पहुचाने की व्यवस्था करे। किले के प्राचीन स्थलो को दर्शाने वाले खण्डहरों को ठीक दर्शाने हेतु इसके पुराने नक्शो का सहयोग लिया जा सकता है। इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि वहा एक सग्रहालय (म्यूजियम) की स्थापना कि जाए, जिससे कि मराठा महान योद्धाओ का इतिहास सुरक्षित रखा जा सके। तभी हमारा यह कहना सार्थक होगा– **"गढ़ आया, पर सिंह गया"**।

सरकार से हमारा हार्दिक अनुरोध है कि वह छत्रपति शिवाजी महाराज की महिमा सुरक्षित रखने हेतु एव महाराष्ट्र प्रान्त की गरीमा सुरक्षित रखने के लिए शीघ्र ही किले का कायाकल्प करे।

– वैदिक गवेषक, उदगीथ साधना स्थली,
हिमाचल आर्य शिखर, वेदसदन ओमवन,
महर्षि दयानन्द मार्ग, राजगढ़,
सिरमौर- १७३१०१

दो सुखने

– डॉ० हेमवती शर्मा

शत्रु से हारा क्यों ? ठड ने मारा क्यो ?
'कम्बल' न था।
गिरा मकान क्यो ? विधवा परेशान क्यो ?
'सम्बल' न था।
मनुष्य अनमना क्यो ? गला सूना क्यो ?
'चैन' न था।
तलवार न गडी क्यो ? नदी सडी क्यो ?
'धार' न थी।
झगडा दूना क्यों ? ड्राइग रूम सूना क्यो ?
'दीवान' न था।
प्रजा सुखी क्यो ? किसान दु खी क्यों ?
'कर' न था।
अन्धेरा बढा क्यो ? साहुकार लडा क्यो ?
'दिया' न था।
छत से गिरा क्यो ? हताश मरा क्यो ?
'जीना' न था।
सैनिक हारा क्यो ? हुआ बीमार क्यो ?
'गोली' न थी।
युवक बेकार क्यो ? वसन्त की हार क्यो ?
'काम' न था।
पेड मुरझाया क्यो ? समाचार न आया क्यों ?
'पत्ता' (पत्ता) न था।
कस डरा क्यो ? गीत बेसुरा क्यो ?
'सुर' न था।

– 'अभिवादन', १२८ ए, श्यामपार्क मेन, साहिबाबाद (उ०प्र०)

'आस्था चैनल' पर संध्यायज्ञ के कार्यक्रम

विगत अकों में "आस्था चैनल पर सध्या यज्ञ कार्यक्रम" का प्रकाशन किया गया है। मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य ने टेलीफोन द्वारा फिर से समय में परिवर्तन की सूचना दी है नया परिवर्तित कार्यक्रम इस प्रकार है –

सन्ध्या (६ जून से प्रारम्भ हो चुका है)	*प्रत्येक शनिवार*	*साय ५ ५०*
यज्ञ (२४ जून से प्रारम्भ होगा)	*प्रत्येक रविवार*	*प्रात. ८.००*
प्रवचन (स्वामी दीक्षानन्द जी - १० दिन तक)	*प्रतिदिन (रविवार छोडकर)*	*प्रात: ८.०० बजे*
प्रवचन (डॉ० स्वामी सत्यम अगले १० दिन तक)	*प्रतिदिन (रविवार छोड़कर)*	*प्रात: ८.०० बजे*
प्रवचन (स्वामी दीक्षानन्द जी अगले १० दिन तक)	*प्रतिदिन (रविवार छोडकर)*	*प्रात: ८.०० बजे*

आर्य वीरांगनाएं - देश का भविष्य

भारतीय सस्कृति की रक्षा व समाज कल्याण के लिए आर्य वीरागनाए आगे आए। देश मे आज जो

विदेशी सस्कृति का बोलबाला हो रहा है, उससे अपनी सस्कृति को पुन स्थापित करना ही "इस आर्य वीरागना दल" का मुख्य उद्देश्य है।" ये विचार आर्य विदुषी श्रीमती प्रेमलता शास्त्री ने आर्य वीरांगना दल के "चरित्र निर्माण शिविर" सरस्वती विहार मे व्यक्त किए।

शिविराध्यक्षा ब्रह्मचारिणी सुमेधा आर्या व शिविर सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा द्वारा साप्ताहिक शिविर मे कन्याओ को योगासन, लाठी, तलवार, स्तूप, आत्म रक्षा, बौद्धिक शिक्षण, देशधर्म की सेवा, सादा जीवन उच्च विचार के पवित्र सकल्प कराए गए।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री मुशीराम सेठी, श्री धर्मपाल आर्य, महाशय राम विलास खुराना ने प्रतिभाशाली वीरागनाओ को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर जय भारत मारूति लिमिटेड के प्रबन्ध निर्देशक श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य ने पुरुस्कारो की व्यवस्था करवाई। महासचिव विभा आर्या के कुशल नेतृत्व मे समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ❑

श्री विनोद कुमार शर्मा, टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी मनोनीत

श्री विनोद कुमार शर्मा सुपुत्र श्री आचार्य सत्यदेव विद्यालकार जी पूर्व आचार्य महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टकारा को दिनाक २५-३-२००१ को टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियो की बैठक मे सर्वसम्मति से टकारा ट्रस्ट का ट्रस्टी मनोनीत किया गया। श्री शर्मा यू एस ए मे अपना व्यवसाय चलाते है और प्रतिवर्ष टकारा ट्रस्ट को रुपये ५१,०००/- की राशि दान स्वरूप भिजवाते हैं। इसके अतिरिक्त टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे कार्यों मे तन, मन, धन से सहयोग देते हैं। महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे आज जो निर्माण कार्य जोर-शोर से चल रहा हैं, उसका श्रेय भी श्री शर्मा जी को जाता है क्योकि सर्वप्रथम श्री शर्मा जी ने अपनी पुण्य कमाई से एक अच्छी राशि भिजवा कर अपनी पूज्य माता जी की स्मृति मे निर्माण कार्य आरम्भ कराया था और तभी से यह निर्माण कार्य निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है।

टकारा ट्रस्ट की वैबसाइट बनाने का श्रेय भी उन्हे ही जाता है। ❑

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

के तत्वावधान में

नौजवान पीढी को संस्कारयुक्त, देशभक्त व चरित्रवान बनाने हेतु

प्रान्तीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर २००१

स्थान : रैमल पब्लिक स्कूल, सैक्टर-३, रोहिणी, दिल्ली-८५

दिनांक २३ जून से १ जुलाई २००१

उद्घाटन समारोह : २३ जून, सायं ५.०० बजे

समापन एवं दीक्षान्त समारोह : १ जुलाई, रविवार प्रातः १०.०० बजे

विशेष : समापन समारोह मे गुजरात के कार्यो की विशेष प्रदर्शनी तथा रोमाचकारी व्यायाम प्रदर्शन होगा। अपने परिवार, इष्ट मित्रों तथा आर्यसमाज के सदस्यो के साथ अवश्य ही समापन समारोह मे पहुचकर आशीर्वाद दे।

निवेदक

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बजाज	प्रियतम दास रसवन्त	राजेन्द्र आनन्द	विनय आर्य
स्वागताध्यक्ष,	अधिष्ठाता आर्य वीर दल,	शिविर सरक्षक	सचालक

विशेष नोट :

(१.) सम्पूर्ण गणवेश, आवश्यक समान, १०० रु० शिविर शुल्क, यज्ञ की पुस्तक, तथा कापी पैन साथ लाए। (२) शनिवार, दिनांक २३ जून दोपहर ११ बजे तक अवश्य पहुचे। (३) मार्ग निर्देश : आउटर रिंग रोड पर जयपुर गोल्डन हस्पताल के स्टैंड पर उतरें वहा से विद्यालय पहुंचें।

देशवासियों की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा है

दिल्ली मे कीर्तिनगर क्षेत्र निवासी श्रीमती सुनील बजाज तथा उनके तीन बच्चों तरूण, अमन तथा भानु को लगातार विगत ३ वर्षो से उनके मामा श्री योगेश भटीजा से मिल रही धमकियो के विरुद्ध अचानक पुलिस आयुक्त श्री अजय राज शर्मा के आदेश पर दिल्ली पुलिस ने इस परिवार की मदद के लिए हर सम्भव सहायता और सरक्षण जुटाने की कमर कस ली तो समस्त राष्ट्रीय समाचार-पत्रों में सम्पूर्ण घटनाचक्र प्रकाशित हुआ जिसमें बताया गया कि १९९१ में श्रीमती सुनील बजाज के पति श्री हरीश चन्द बजाज की सन्देह जनक परिस्थितियों मे मृत्यु हुई। उसके बाद श्रीमती सुनील बजाज के भाई योगेश भटीजा जिन्हें श्री हरीश ने काम में सहायता हेतु अपने साथ लगाया था, ने अपनी बहन और उसके बच्चों को उनके करोडों रुपये के व्यापार से वंचित रखने के षडयन्त्र प्रारम्भ कर दिए। पहले ४-५ साल तो श्रीमती सुनील बजाज यह आर्थिक तगिया झेलती रहीं, परन्तु जब बच्चे बडे हुए तो १९९५ मैं वह व्यापार का नियन्त्रण बच्चो के हाथ देखने के लिए प्रयासरत हुई तो यह देखकर दग रह गई कि उसके भाई योगेश भटीजा ने कई प्रकार की जालसाजिया करके श्रीमती सुनील बजाज तथा उनके दिवगत पति के जाली हस्ताक्षर करके करोडो रुपये की हेराफेरी की हैं।

गतमाह अचानक यह समाचार राष्ट्रीय समाचार पत्रों में आने पर श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा कीर्तिनगर आर्यसमाज के प्रमुख अधिकारी श्री शिव भगवान लाहोटी एव मन्त्री श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा इस परिवार से मिलने उनके कीर्तिनगर निवास पर पहुचे। बुधवार, १३ जून को प्रात ८ बजे इस परिवार में एक अभय यज्ञ कराया गया। जिसमे आर्यसमाज के लगभग ५० - ६० महानुभाव शामिल हुए। कीर्तिनगर आर्यसमाज ने इस परिवार के सामाजिक और आध्यात्मिक सरक्षण की जिम्मेवारी ली है। इस प्रकार आर्यसमाज के सरक्षण को राष्ट्रीय समाचार पत्रों तथा टी० वी० चैनलों ने भी महत्वपूर्ण रूप से प्रसारित किया।

कीर्तिनगर पुलिस द्वारा योगेश भटीजा के विरुद्ध डराने धमकाने, का एक गम्भीर मामला दर्ज किया गया। योगेश भटीजा ने अग्रिम जमानत याचिका दिल्ली की एक अदालत में प्रस्तुत की, जिसका विरोध करने के लिए बजाज परिवार की ओर से श्री विमल वधावन एडवोकेट अदालत मे उपस्थित हुए।

श्री विमल वधावन ने बताया कि उन्होंने १९९६ में भी इस परिवार की तरफ से योगेश भटीजा को एक कानूनी नोटिस दिया था, जिसके उत्तर में योगेश भटीजा ने दिल्ली आकर अपनी सब भूलें स्वीकार करते हुए सारा व्यापार इन बच्चो के सुपुर्द करना लिखित रूप से स्वीकार किया था। श्रीमती सुनील बजाज ने आर्यसमाज के इस सरक्षण तथा श्री विमल वधावन की निशुल्क कानूनी सहायता हेतु समूचे आर्यजगत का आभार व्यक्त किया है। तब से श्रीमती सुनील बजाज ने नियमित रूप से आर्यसमाज मन्दिर कीर्तिनगर के दैनिक यज्ञ में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है। उनका कहना है कि आर्यसमाज ने घोर दुख की घडी में मेरे साथ खडे होकर मुझे दैविक शक्ति प्रदान की है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी आर्यजनों के साथ सहृदयता व्यक्त करने इस परिवार में गए। उन्होंने समूचे विश्व के आर्यजनों को आह्वान किया है कि स्थानीय निवासियों के हर दुख और विपत्ति में उन्हें चुस्ती से उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करना चाहिए। इसे प्रत्येक व्यक्ति अपना राष्ट्रीय और सामाजिक सेवा समझे क्योंकि देश वासियों की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा है। ❑

पृष्ठ एक का शेष भाग

श्री वेदव्रत शर्मा ने इन सब बैठको को सम्बोधित करते हुए अपना एक ही मत व्यक्त किया कि मेरा निजी और सगठनात्मक विचार एक ही है कि जिस स्थल पर हमारी शिरोमणि सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी ने शिलान्यास किया है, उसी स्थल पर आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का पूर्ववत् पुनर्निर्माण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के गौरव को श्री जगमोहन के झूठ बोलने से ठेस लगी है समूचा आर्यजगत उनकी इस कार्यवाही से ठगा हुआ सा महसूस कर रहा है। अत आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का सघर्ष आर्यसमाज के लिए एक ऐतिहासिक मोड है। यदि हम इस सघर्ष में सफल रहे, तो आने वाली सदियों तक आर्यसमाज मन्दिर की ओर कोई आख उठाकर भी नहीं देख सकेगा। इसके विपरीत, इसके दूसरे पक्ष पर भी चिन्तन हमें आज ही कर लेना चाहिए कि यदि इस आन्दोलन में हम सफल रहे तो भविष्य में कोई आर्यसमाजी सिर उठाकर नहीं चल सकेगा। इसलिए बडे से बडा बलिदान देकर भी हमें इस आन्दोलन को युद्धकाल मानकर सफलता प्राप्ति के लिए सघर्षरत होना पडेगा। ❑

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404

प्रवेश सूचना- 2001-2002

निम्नलिखित पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित किए जाते हैं:-

मुख्य परिसर

वेद एवं कला महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार-249404 (केवल छात्रों के लिए)

1 **वेदालंकार, विद्यालंकार** (समकक्ष बी०ए०- त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - इण्टरमीडिएट (10+2) या समकक्ष, विद्या विनोद (गु का वि), विशारद (पजाब, रोहतक) उत्तर मध्यमा (सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय)

आयु सीमा - वेदालकार/विद्यालकार में प्रवेश उन अविवाहित अभ्यर्थियों को दिया जाएगा जिनकी आयु 30 सितम्बर 2001 को अधिकतम 25 वर्ष होगी।

2 **एम ए** – वेद, सस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व योग, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान

न्यूनतम प्रवेश योग्यता – स्नातक अथवा समकक्ष परीक्षा (10+2+3) (योग विषय के लिए योग विषय सहित, स्नातक तथा योग डिप्लोमा/प्रमाण पत्रों को वरीयता)

3 **एम.ए.** (दो वर्षीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम) धर्मशास्त्र वैदिक कर्मकाण्ड एव ज्योतिष

सीटों की संख्या - 20 (बीस)

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से सस्कृत विषय सहित स्नातक परीक्षा (अलकार, शास्त्री, आचार्य, बी०ए०) उत्तीर्ण। हाईस्कूल/इण्टमीडिएट परीक्षा अग्रेजी विषय सहित उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों को प्रवेश में वीरयता दी जाएगी।

आयु सीमा - 30 09 2001 को अधिकतम 25 वर्ष।

शुल्क - यह पाठ्यक्रम पूर्णतया शुल्क मुक्त है। केवल 100 रुपये प्रवेश शुल्क तथा 50 रुपये नामाकन शुल्क देय होगा।

नोट 1 - 30 09 2001 को 25 से 35 वर्ष आयु तक के अभ्यर्थियों को विशेष परिस्थिति में किसी गुरुकुल के आचार्य की सस्तुति पर प्रवेश दिया जा सकेगा। उन्हें 100 रुपये प्रवेश शुल्क, 50 रुपये नामाकन शुल्क तथा 480 रुपये वार्षिक शिक्षा शुल्क देय होगा।

नोट 2 - इस पाठ्यक्रम की कक्षाए केवल शुक्रवार व शनिवार को कार्य समय प्रात 10 00 बजे से साय 5 00 बजे के मध्य होंगी।

4 **स्नातकोत्तर डिप्लोमा** - एकवर्षीय - योग, हिन्दी पत्रकारिता

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - 1 हिन्दी पत्रकारिता के लिए बी ए /बी एस-सी /बी काम /अलकार (10+2+3) अथवा समकक्ष परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण। 2 पी जी डिप्लोमा योग शिक्षा के लिए स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण

विज्ञान महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार-249 404 (केवल छात्रों के लिए)

बी एस-सी - वर्ग- 1 गणित (उपवर्ग- क भौतिकी, गणित, कम्प्यूटर, ख भौतिक, रसायन विज्ञान, गणित)

2 जीवविज्ञान (उपवर्ग- क रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान और वनस्पति विज्ञान

ख रसायन विज्ञान जन्तुविज्ञान/वनस्पति विज्ञान, सूक्ष्म जीवविज्ञान)

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - 1 इण्टरमीडिएट (10+2) द्वितीय श्रेणी विज्ञान विषयों सहित या उसके समकक्ष परीक्षा।

2 भौतिकी, रसायन व गणित/जीव विज्ञान में न्यूनतम 50 प्रतिशत अक

प्रबन्धन महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार - 249404 (केवल छात्रों के लिए)

1. **मास्टर आफ बिजनेस इकोनोमिक्स** (एम बी ई) - दो वर्षीय पाठ्यक्रम
2. **मास्टर आफ बिजनेस फाईनेन्स** (एम बी एफ) दो वर्षीय पाठ्यक्रम

सीटों की सख्या (प्रत्येक के लिए) - 20 (+10 प्रायोजित/अ प्र भारतीयों द्वारा प्रायोजित)

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - स्नातक (10+2+3) अथव समकक्ष परीक्षा 50 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ (अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के लिए 45 प्रतिशत प्राप्तांक)

आयु सीमा - 30 सितम्बर, 2001 को न्यूनतम 20 वर्ष व अधिकतम 23 वर्ष तथा प्रायोजित/अप्रवासी भारतीयों द्वारा प्रायोजित अभ्यर्थियों के लिए 30 सितम्बर 2001 को न्यूनतम 20 वर्ष व अधिकतम 28 वर्ष

द्वितीय परिसर-1

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, 47, सेवक आश्रम रोड, देहरादून-248001 (केवल छात्राओं के लिए)

1. **विद्यालकार** - (समकक्ष बी ए -त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)
2. **एम.ए.** - सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी
3. (क) - **मास्टर आफ बिजनेस इकोनोमिक्स** (एम बी ई) - दो वर्षीय पाठ्यक्रम
   (ख) - **मास्टर आफ बिजनेस फाईनेन्स** (एम बी एफ) - दो वर्षीय पाठ्यक्रम

नोट - सीटों की सख्या व न्यूनतम प्रवेश योग्यता मुख्य परिसर के अनुसार

द्वितीय अतिरिक्त परिसर - 2

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, रुड़की बाई पास रोड, ज्वालापुर, हरिद्वार-249407 (केवल छात्राओं के लिए)

पाठ्यक्रम - एम०ए० - वेद सस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व, हिन्दी अग्रेजी एव मनोविज्ञान

शोध कार्यक्रम

पी-एच.डी - वेद, सस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व, योग, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान, गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान एव प्रबन्धन।

नोट - पी एच डी के लिए सभी विषयों में वर्ष में दो बार शोध समितियों की बैठकें सामान्यतया सितम्बर व फरवरी माह में आयोजित की जाती हैं, इनके लिए आवेदन पत्र क्रमश 31 अगस्त व 31 जनवरी तक जमा किए जाते हैं। छात्राओं के आवेदन पत्र प्राचार्या कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून/हरिद्वार के कार्यालय में जमा किए जाएगे।

न्यूनतम प्रवेश योग्यता - सम्बन्धित विषय में 55 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ स्नातकोत्तर उपाधि।

सामान्य सूचना

प्रवेश आवेदन पत्र पाठ्यक्रमानुसार रु० 100/- नकद भुगतान द्वारा 30 जून 2001 तक प्रात 10 00 बजे से दोपहर 1 00 बजे के मध्य सम्बन्धित महाविद्यालयों के प्राचार्य कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते है। प्रवेश आवेदन पत्र डाक द्वारा रु० 140/- का पजाब नेशनल बैंक द्वारा जारी बैक ड्राफ्ट जोकि "कुलसचिव गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय" के पक्ष मे हरिद्वार में देय हो, भेज कर 20 जून 2001 तक प्राप्त किए जा सकते हैं। एम बी ई /एस बी एफ में प्रवेश के इच्छुक प्रायोजित /अ.प्र भारतीयों द्वारा प्रायोजित अभ्यर्थियों को भरे हुए आवेदन पत्र के साथ रु० 150/- का पजाब नेशनल बैंक द्वारा जारी बैंक ड्राफ्ट जोकि ' कुलसचिव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय" के पक्ष में हरिद्वार में देय हो जमा करना होगा। आवेदक को बैक ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम तथा पाठ्यक्रम (जिसमें प्रवेश वांछित है) लिखना होगा। अर्हता परीक्षा के अन्तिम वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित होने वाली अभ्यर्थी भी आवेदन कर सकते है। ऐसे आवेदकों को अर्हता परीक्षा में वांछित अक प्राप्त करने आवश्यक है। भरे हुए आवेदन पत्र सम्बन्धित महाविद्यालयों के प्राचार्य कार्यालय में जमा किए जाएगे।

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि - 30 जून, 2001

विलम्ब शुल्क रु० 200/- सहित (विद्यालंकार/वेदालकार तथा एम०ए० पाठ्यक्रमों के लिए) - 14 जुलाई, 2001

पी-एच डी. के लिए अन्तिम तिथि - 31 अगस्त 2001 तथा जनवरी 2002

नोट - 1 सभी विवादों के लिए न्यायालय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा। 2 प्रवेश के सम्बन्ध में सम्बन्धित महाविद्यालय के प्राचार्य से सम्पर्क करें। 3 प्रवेश, बिना कारण बताए, निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है। 4 अभ्यर्थी जिस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहता है उस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभाग का आवेदन पत्र में स्पष्ट उल्लेख करें। 5 प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए पृथक-पृथक आवेदन पत्र भरने होंगे। 6 बी एस सी में एक वर्ग का प्रवेश आवेदन पत्र दूसरे वर्ग में स्थानान्तरित नहीं किया जाएगा।

डॉ० महावीर अग्रवाल

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

साप्ताहिक आर्य सन्देश

R N No 32387/77 Posted at N D.P.S O on 21-22 /6/2001 दिनांक १७ जून से २४ जून, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 21-22 /6/2001 पूर्व भुगतान बिना ... यू० (सी०) १३६/२००१

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का संघर्ष

प्रधानमन्त्री को पूर्ण तथ्यों सहित श्री जगमोहन के झूठ से अवगत कराया

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को एक विस्तृत पत्र के द्वारा तथ्यों से अवगत कराते हुए, श्री जगमोहन द्वारा पहले आश्वासन दिए जाने और बाद में उसे झुठलाने की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के उसी स्थल पर पुनरुद्धार की मांग की है। यह पत्र अविकल रूप में यहां प्रकाशित किया जा रहा है -

सेवा मे,
माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

आशा है आप स्वस्थ तथा आनन्दपूर्वक रहकर प्रधानमन्त्री कार्यालय के दायित्वो का निर्वहन भली प्रकार करते हुए भारत माता की सेवा मे दीर्घकाल तक जुटे रहेंगे।

मैं इस पत्र के द्वारा आपका ध्यान १४ अप्रैल, २००१ को गैर-कानूनी तरीके से ध्वस्त किए गए **आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के प्रकरण** की ओर आकृष्ट करना चाहता हू। आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड अपने स्थान पर लगभग १६५० से स्थापित था। इस मन्दिर को ध्वस्त किए जाने के विरोध मे आर्य जनता ने १७ अप्रैल २००१ को ससद मार्ग पर विरोध प्रदर्शन करते हुए यह सकल्प किया था **"कसम वेद की खाते हैं हम मन्दिर वहीं बनाएगे।"**

इसी विरोध प्रदर्शन वाले दिन प्रात काल भाजपा की ससदीय दल की बैठक में भी आपके बहुत से सासदों ने इस पर रोष व्यक्त किया था जिनमे सर्वश्री रामचन्द्र वीरप्पा रासा सिह रावत तथा रामचन्द्र बैंदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी बैठक मे आपने तथा श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने श्री जगमोहन को स्पष्ट रूप से कहा था कि **मन्दिर तोडने से जनता में अच्छे सकेत नहीं जाएगे। अतः इस विवाद को जल्दी से निपटाया जाए।**

ससद मार्ग पर प्रदर्शन के दौरान ही आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ श्री मदल लाल खुराना एव डॉ० साहिब सिह वर्मा श्री लालकृष्ण आडवाणी जी से ससद भवन मे भी मिले थे और उन्हे एक ज्ञापन-पत्र भी प्रस्तुत किया जो आपके नाम ही सम्बोधित किया गया था।

इस बैठक मे हमारी उपस्थिति में ही श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने श्री जगमोहन को दूरभाष पर बडे स्पष्ट शब्दों में कहा था कि **मन्दिर वहीं बनना है, इसके लिए यदि चार कदम पीछे भी जाना पड़ता है तो इसमें किसी प्रकार का कोई संकोच न करें।**

इसके तुरन्त बाद श्री आडवाणी जी के निर्देशानुसार इस प्रतिनिधि मण्डल ने श्री जगमोहन जी से उनके कार्यालय मे भेट की जहा उपराज्यपाल श्री विजय कपूर भी उपस्थित थे। इस बैठक में विचार-विमर्श के दौरान सायं ५ बजे दूसरे दौर की बैठक हुई। इस बैठक में भी **सर्वश्री विजय कपूर, मदन लाल खुराना एव डॉ० साहिब सिह वर्मा की उपस्थिति में स्वयं श्री जगमोहन ने आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल के सामने स्वीकार किया कि मन्दिर वहीं बन जाएगा।** इस आश्वासन पर आर्य जनता को ससद मार्ग पर जाकर जब शुभ सूचना दी गई तो आपकी तथा श्री आडवाणी जी की प्रशसा के स्वर गूजने लगे।

परन्तु २८ मई को एक बैठक के दौरान श्री जगमोहन जी ने उपरोक्त आश्वासन को ही झुठला दिया। एक तरफ तो यह केवल हमारा ही नहीं अपितु आप सबका अपमान है, और दूसरी तरफ उनके ऐसा करने से आर्यजनता में पुन विरोध की लहर व्यापक होती जा रही है।

इतना ही नहीं श्री जगमोहन जी ने कुछ स्थानीय लोगों को दिग्भ्रमित करते हुए उनके द्वारा गठित एक नकली कार्यकारिणी को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया है। इस कार्यकारिणी की ओर से उच्च न्यायालय मे एक दिखावटी याचिका दिखाकर स्थगन आदेश भी प्राप्त कर लिया है। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार यह याचिका और आदेश सरकार पर बाध्य नहीं हो सकते यदि सरकार अपना यह दृष्टिकोण अदालत को स्पष्ट कर दे कि यहां ५० वर्ष से मन्दिर था जिसे ध्वस्त बेशक कर दिया गया, परन्तु सरकार ने अब उसी स्थान पर मन्दिर निर्माण की स्वीकृति देना स्वीकार कर लिया है। मास्टर प्लान स्वय सरकार द्वारा ही बनाए जाते हैं यदि गलती से कोई मास्टर प्लान बन भी जाता है तो उसमें सशोधन करना सरकार का अधिकार है।

इन परिस्थितियों से आपको अवगत कराना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं तथा आपको यह भी सूचित करना चाहता हूं कि आर्यजनता पुन-आन्दोलित होने के लिए तत्पर हो रही है।

आशा है आप यथाशीघ्र अपने सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श करके श्री जगमोहन को स्पष्ट और लिखित निर्देश देंगे कि मन्दिर का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर कराने के अपने प्रथम आश्वासन के अनुरूप भूमि का आवटन आर्यसमाज की सर्वोच्च सस्था **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम विधिवत् करें।**

आर्यजन कभी भी सम्पत्तियों के लिए लालायित नहीं रहे, परन्तु आत्म-सम्मान को किसी भी परिस्थिति में गौण नहीं समझते।

समूचा आर्य जगत इस कार्य के लिए आपका आभारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित
देश सेवा में रत

(वेदव्रत शर्मा)
सभा मन्त्री

आर्यसमाज मिण्टो रोड के लिए अत्यावश्यक बैठकें

स्थान आर्यसमाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली
समय साय ४:३० बजे, २४ जून (रविवार)

आर्यसमाज मिण्टो रोड के सम्बन्ध मे दक्षिणी दिल्ली की सभी आर्यसमाजो के प्रधान, मन्त्री तथा सक्रिय कार्यकर्ताओ की एक अत्यावश्यक बैठक **आर्यसमाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश- १, नई दिल्ली मे साय ४ ३० बजे, २४ जून (रविवार)** को होनी निश्चित हुई है।

कृपया समय पर पहुचकर अपने अमूल्य एव अनुभवी विचारो से अवगत कराने की कृपा करें।

कृष्णलाल सिक्का, प्रधान — **महेन्द्र प्रताप**, प्रधान
रोशनलाल गुप्त, महामन्त्री — **प्राणनाथ घई**, मन्त्री
दक्षिणी दिल्ली वेद-प्रचार सभा — **आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१**

स्थान : आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-१, दिल्ली
समय · प्रात १० बजे, २४ जून (रविवार)

आर्यसमाज मिण्टो रोड के सम्बन्ध मे उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल दिल्ली की सभी आर्यसमाजो के प्रधान, मन्त्री तथा सक्रिय कार्यकर्ताओ की एक अत्यावश्यक बैठक **आर्यसमाज मन्दिर, अशोक विहार, फेज-१, दिल्ली में प्रात· १० बजे, २४ जून, (रविवार)** को होनी निश्चित हुई है। कृपया समय पर पहुचकर अपने अमूल्य एव अनुभवी विचारो से अवगत कराने की कृपा करे।

महाशय रामविलास खुराना, प्रधान — **महावीर बत्रा**, वरिष्ठ उप-प्रधान — **गोपाल आर्य**, सयोजक
उत्तरी दिल्ली वेदप्रचार मंडल
अविनाश चन्द कपूर, प्रधान — **शान्तिलाल आर्य**, मन्त्री
आर्यसमाज अशोक विहार-१ दिल्ली

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स. ३२७०५०७) म मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक २८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ३० जुलाई से ५ अगस्त, २००१ तक
मूल्य एक प्रति . २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन : ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

कैप्टन देवरत्न आर्य तथा श्री ओंकारनाथ आर्य का नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

नई दिल्ली २६ जुलाई। २३ से २६ मार्च २००१ को मुम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सफल एवं निर्विघ्न सचालन के साथ-साथ उस सम्मेलन में पारित सकल्पों को २-३ महीनों की अल्पावधि में क्रियान्वित करने के प्रतिफल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ आर्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन मे पश्चिमी दिल्ली की एक अग्रणी आर्यसमाज जनकपुरी सी० ब्लाक, पखा रोड द्वारा एक भव्य समारोह मे सम्मानित किया गया।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

कैप्टन देवरत्न आर्य, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री ओंकारनाथ प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा का नई दिल्ली में सिक्कों से तोल कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित आर्य नेता श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन, श्री रामनाथ सहगल, श्री सोमदत्त महाजन, श्रीमती शिवराजवती आदि।

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण हेतु

आर्यजनों का सामूहिक संकल्प समारोह 5 अगस्त सायं 4 बजे

आर्य समाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण को लेकर चल रहे प्रयासो में केन्द्रीय मन्त्री श्री जगमोहन पुन हर प्रकार की बाधाए और असहयोग खडा कर रहे हैं। कूटनीतिक या राजनैतिक या कहा जा सकता है कि बातचीत के मार्ग में उन्होंने स्वय अपनी पार्टी के नेताओं को भी शून्य साबित कर दिया है। श्री लालकृष्ण आडवाणी के स्पष्ट निर्देश के बावजूद श्री जगमोहन मन्दिर निर्माण में कभी मुकदमें की दुहाई देते हैं तो कभी पार्क बनाने को प्राथमिकता देने की बात करते हैं।

सत्याग्रह, आन्दोलन या टकराव के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है जिससे आर्यसमाज के सम्मान की रक्षा सम्भव हो और इस ध्वस्त मन्दिर का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर हो सके।

धरना निरन्तर चल रहा है। उत्साही आर्यजन प्रतिदिन वहा उपस्थित होते हैं। हम लोग पूरे प्रयासों में जुटे है। हमें आर्य जनता के हर सहयोग और आशीर्वाद का भरोसा है। आर्यसमाज की पवित्र विचारधारा और निस्स्वार्थ कर्म की शक्ति हमारी प्रेरणा है।

इन प्रेरणाओ को उजागर करने, स्वय अपनी आत्माओ को ललकारने के लिए ५ अगस्त, रविवार को साय ४ बजे ध्वस्त मन्दिर स्थल पर ही एक **"सकल्प समारोह"** आहूत किया गया है। आपसे निवेदन है कि अधिक-से-अधिक सख्या में समारोह मे उपस्थित होकर अपना सकल्प व्यक्त करें।

विगत दो सप्ताह से इसी स्थल पर यज्ञ, प्रवचन आदि का पखवाडा बडे भव्य तरीके से मनाया गया जिसमे आर्यजगत के विद्वानों डॉ० कर्णदेव शास्त्री, डॉ० नरेन्द्र वेदालकार तथा आचार्य भद्रकाम वर्णी, आदि ने वैदिक उपदेश प्रस्तुत किए। श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्री गुलाब सिह राघव तथा श्री नरेश सोलकी आदि ने मधुर भजनों के द्वारा आर्य जनता को प्रेरित किया।

"तैयार रहो" (पृष्ठ दो पर प्रकाशित लेख) की भावनाओं को अपने दिल और दिमाग के रोम-रोम में उतारते हुए इस सकल्प समारोह में अधिक-से-अधिक सख्या में भाग लें। - ५ अगस्त, रविवार साय ४ बजे।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

तैयार रहो !

– स्वामी आनन्द भिक्षु

आर्यसमाज निर्बल हो गया, निर्जीव हो गया – एकदम निर्जीव हो गया।' यह चिन्ता एक-दो को नहीं, दस-बीस को नहीं, प्राय सभी विचारशील आर्य महानुभावो को, केवल आर्य महानुभावो को ही नही – सभी देशभक्तो, आर्यसमाज और आर्यजाति के हितचिन्तको को सता रही है, बुरी तरह सता रही है। जहा जाइए, जिससे बात कीजिए, उसे यही चिन्ता है। हा ! क्या होगा ? कैसे करेगा ? कौन करेगा ? आर्यसमाज देश मे एक जिन्दा-जागता समाज था। उससे बडी-बडी आशाए थीं। बडी-बडी अभिलाषाए थीं। कुछ ही दिनो मे – ऐसी शिथिलता ! ऐसी अकर्मण्यता ! ऐसी निर्बलता!! ऐसी निर्जीवता !!!

दयानन्द निस्सन्देह योगी थे, तपस्वी थे, देशोद्धारक थे आर्यजाति और आर्यसस्कृति के परम रक्षक थे। आह ! सच पूछिए तो न जाने वह क्या थे क्या न थे ? उन्होने जिस आदर्श को आर्यजाति के सामने रखा था, जिस मार्ग पर आर्यसमाज को डाला था वह एकदम निराशा से आशा की ओर, मृत्यु से अमृत्व की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, और पराधीनता से परम स्वाधीनता की ओर था ! परन्तु उनके अनुयायी, उनके नाम और उनके काम पर मिट जाने वाले वीर सैनिक कुछ दूर, बहुत थोडी दूर चलकर ठिठुक गए, बहक गए, पथभ्रष्ट हो गए। और ? और फिर क्या ? जो होना था, वह हुआ, हो के रहा ! अपमान ! निरादर ! अन्याय ! अत्याचार ! हकतलफी !! कहा-कहा ? एक जगह नहीं, जगह-जगह!! थोडी नहीं, बहुत-बहुत !! हाय ! कुछ न पूछो ! जिनकी आखे हैं, उन्होने देखा और देखते हैं। जिनके पहलू मे दिल है, दिल मे महसूस करने की शक्ति है वह इस अवस्था को, इस दुख को महसूस करते हैं और कर सकते हैं !! तब आलस्य, शिथिलता और स्वार्थपरता मे और होना ही क्या था ? अकर्मण्यता मृत्यु है, निर्जीवता है। और निर्जीव समाज का इस भूतल पर अधिकार ही क्या है ? और वह कर ही क्या सकता है ?

पर आर्यसमाज क्या सचमुच निर्जीव है, निर्बल है ? वह एकदम सत्ताहीन हो गया है ? नहीं ! आर्यसमाज निर्बल नहीं है निर्जीव नहीं है। वह किसी भी जीवित समाज की भाति जीवित है, सतर्क है, सजग है। पर हा, वह मदान्ध नहीं है, उन्मत्त नहीं है। उसमे बर्बरता और बहशीपना नहीं है। वह हृदय और मस्तिष्क दोनो रखता है और दोनो को ठीक-ठीक प्रयोग मे लाना जानता है। आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की दिव्य विभूति है। जब तक आर्यसमाज मे दयानन्द के नाम का – दयानन्द के काम का आदर है, जब तक आर्यसमाज मे सत्य की प्रतिष्ठा और सत्य की जिज्ञासा का चाव है, और हा, जब तक आर्यसमाज में वेदो का मान और वेद रक्षा का भाव मौजूद है, तब तक, निस्सन्देह तब तक आर्यसमाज को निर्जीव समझना भूल है – भयकर भूल है। भूल ही नहीं, आर्यसमाज के प्रति, आर्यजाति के प्रति घोर अन्याय करना है। हम ऐसे विचारो का कभी भी – त्रिकाल मे भी – स्वागत नहीं कर सकते हैं। आर्यसमाज को जब अवसर मिला और जब भी अवसर मिलेगा, वह अपने जीवन का प्रमाण, अपनी जिन्दगी का सबूत सदा की भाति देगा – बराबर देगा, – हजारो मे देगा।

निस्सन्देह आर्यसमाज न्याय का प्रेमी और शान्ति का उपासक है। इसकी इस न्यायप्रियता और शान्ति उपासना को कोई कुछ भी समझे, कुछ भी कहे सुने, पर वह तो वही है, जो उसे होना चाहिए। आर्यसमाज अपने अधिकार और कर्तव्य को भली भाति जानता और समझता है और समय पडने पर – आवश्यकता होने पर – वह उनकी रक्षा करता है – करेगा और प्राणपन्न से करेगा, परन्तु मर्यादा के भीतर, धर्म और न्याय की सीमा के अन्दर रहकर। आर्यसमाज मे जहा चाव है, जीवन है, शक्ति है, तप है, त्याग है, बलिदान के लिए उमग है, वहा उस मे धैर्य, सहिष्णुता, गम्भीरता, विचारशीलता, शान्ति और क्षमाशीलता का भी अभाव नहीं है। और कहा ? कब ? किस प्रकार ? क्या करना चाहिए ? यह भी वह अच्छी तरह जानता और तदनुसार व्यवहार करता है, और किसी व्यर्थ जोश आवेश तथा मदान्धता में इधर उधर नहीं हो जाता, अन्धाधुन्ध नहीं करता, लक्ष्य भ्रष्ट नहीं होता।

आर्यसमाज एक धार्मिक समाज है। उसे प्रपच नहीं भाते, प्रपन्चो मे पडना नहीं भाता, वह खामखाह आग में कूदना पसन्द नहीं करता। वह तो शान्ति से, खामोशी से, अपना काम – शुद्ध धर्म का काम, धर्म विचार का काम – करना जानता है। परन्तु जब धर्म पर आघात होता है, धर्म पर सकट पडता है तब ? तब विवश होकर, लाचार होकर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, न्याय के नाम पर अपील करते हुए अपने कर्तव्यपालन पर दत्तचित्त हो जाता है !! आर्यसमाज सब कुछ बर्दाश्त कर सकता है। हिन्दू जाति सब कुछ सहन कर सकती है। परन्तु एक बात नहीं, एक चीज नहीं – कभी नही, कदापि भी नहीं, तीन काल मे भी नहीं। वह बात क्या है ? वह बात है धर्म का अपमान ! धर्म का निरादर ! धर्म कार्य मे बाधा !! सरकार सुन ले ! मुसलमान सुन ले, ईसाई सुन ले, और भी यदि कोई विपक्षी हो तो भी सुन ले। हम अपना व्यक्तिगत अपमान सह सकते हैं। हम अपने सांसारिक अधिकारो का मोह भी त्याग सकते हैं। परन्तु अपने धर्म को, अपने धर्म के अपमान को कभी भी, किसी भी अवस्था में भी, किसी चीज के बदले में भी – नहीं भुला सकते, नहीं छोड सकते, नहीं छोड सकते !! वह तो प्राणों से भी प्यारी और मोक्ष से भी अधिक वाछनीय वस्तु है। धर्म की रक्षा करना, धर्म प्रचार मे खडी हुई विघ्न-बाधाओं का मुकाबला करना, उन्हे दूर हटाना, आर्यसमाज का नैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक कर्तव्य है। वह उसकी अवहेलना कब तक और किस प्रकार कर सकता है ?

समाज कानून के लिए नहीं, बल्कि कानून समाज के लिए होता है। जो कानून समाज के उचित अधिकारो का अपहरण करता है, उसके सुधार के लिए कटिबद्ध होना समाज का कर्तव्य ही है। आर्यसमाज ने अब विवश होकर, लाचार होकर, बिल्कुल निराश होकर, काफी धैर्य के बाद, काफी न्याय याचना के बाद, काफी प्रतीक्षा के बाद, सत्याग्रह की योजना की, तो कौन उसे दोषी और उसकी इस योजना को असगत, कुसमय और अदूरदर्शिता पूर्ण कह सकता है ? यह तो एकदम न्यायोचित व्यवहार है। धर्मप्रणीत कर्तव्य है। और यही कारण है कि आज आर्यसमाज के साथ समूचा देश है, समस्त हिन्दू जाति है और ? और प्रत्येक निष्पक्ष न्यायप्रिय तथा विचारशील सरकार की इस नीति, इस हठवादिता की निन्दा करता है। अपने अधिकार की रक्षा करना, अपने अधिकार की रक्षा के लिए जूझ मरना प्रत्येक सभा का, प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति का, प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है – स्वाभाविक कर्तव्य है। और उसके लाभालाभ का दायित्व उस पर है जो उसे इस कठोर और दुखपूर्ण कर्तव्यपालन के लिए आह्वान करता है, निमन्त्रित करता है, विवश करता है।

'विधि का लिखा को मेटन हारा' आर्य वीरो को तैयार रहना चाहिए। परीक्षा का समय, धर्म और देश पर निछावर हो जाने का अवसर, जीवन में बार-बार नहीं, कभी-कभी, और वह भी बडे पुण्य और भाग्योदय होने पर ही आता है।

'हतोवा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वाबामोक्ष्य- सेमहीम्'

रण बाकुरे ऐसे अवसरो पर अपने कर्तव्य से नहीं चूकते। पर हा स्मरण रहे, इस समय हमें हारजीत के विचार से नहीं कर्तव्य शुद्ध कर्तव्य के विचार से, इस धर्म युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। इस धर्म क्षेत्र मे पदार्पण करना चाहिए। ईश्वर हमारी सहायता करेंगे और धर्म – वह धर्म जिसके लिए हम अपने सकल सासारिक पदार्थों के सुख-भोग का मोह-त्याग कर अपने प्राणो को निछावर करने के लिए तैयार हुए हैं – हमारी रक्षा करेगा। धर्म की शक्ति ही सब शक्तियो से प्रबल शक्ति है। और उस शक्ति से सम्पन्न होकर ही मनुष्य मृत्यु तक पर विजय प्राप्त करता है।

धर्मपुत्र युधिष्ठिर का कहना था –

"मैं मानता हू मेरे पास ऐसे योद्धा नहीं हैं जैसे धृतराष्ट्र के पुत्र के पास हैं। मैं यह भी मानता हू कि द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के सामने खडा होना सरल कार्य नहीं है। पर मेरा सहायक, मेरा रक्षक, मेरा धर्म है और वह अकेला ही शत्रुओं को पछाडने के लिए काफी है।"

यह विश्वास था, जिससे धर्मराज युधिष्ठिर को विजय प्राप्त हुई और यही विश्वास है जिससे इस धर्मयुद्ध मे हमारी [illegible] होगी।

बोलो वै[illegible] [illegible]र्म की जय !!

बोध कथा

मां की महत्ता क्यों ?

एक बार एक जिज्ञासु ने भारत के सन्त स्वामी विवेकानन्द से जिज्ञासा की – "श्रीमन् ! ससार भर मे मा की महत्ता क्यो गाई जाती है?" इस पर स्वामीजी ने मुस्कराते हुए उस जिज्ञासु से कहा – **"पाच सेर भार का एक पत्थर ले आओ।" जब वह जिज्ञासु पत्थर ले आया तो स्वामीजी ने कहा – यह पत्थर एक कपडे में लपेटकर पेट पर बांध लो और चौबीस घण्टे बाद फिर मेरे पास आना।"**

उस जिज्ञासु ने ऐसा ही किया, लेकिन कुछ ही घण्टो मे वह व्यक्ति परेशान हो गया, तब वह बहुत परेशान पस्त होकर स्वामीजी के पास पहुचा और बोला– "स्वामी जी, अब मैं यह बोझ और नहीं उठा सकता। आपने एक जिज्ञासा और सवाल पूछने पर इतनी बडी सजा क्यो दी?"

स्वामीजी ने उस जिज्ञासु का समाधान करते हुए कहा – "इस पत्थर का बोझ तुमसे कुछ घण्टे भी उठाना कठिन हो गया, परन्तु तुम उन माताओ-माओ के कष्ट को भूल गए जो पूरे नौ महीने अपने शिशु का बोझ उठाती हैं। यह भी ख्याल रखो कि अपने शिशु के बोझ के साथ वे घर-बाहर के सारे काम निपटाती हैं और कभी विचलित नहीं होतीं। तो बताओ, मा से ज्यादा सहनशील कौन है ! इसलिए मा की महिमा सारे विश्व मे सर्वाधिक है।"

– नरेन्द्र

आगे बढ़ो : ऊंचे उठो

प्रेता जयता नरः। *अथर्व० ३/१६/७*
हे वीरो! आगे बढो, विजय प्राप्त करो।
उतमात पुरुष नावपथः। *अथर्व० ८/१/४*
हे पुरुष! जीवन मे ऊचा उठ, नीचे न गिर।
आरोह तमसो ज्योतिः। *अथर्व० ८/१/८*
अन्धकार से प्रकाश की ओर बढो।
समाना हृदयगति व। ऋ० १०/१५१/४
तुम्हारे हृदय एक हो।
न संकटेऽपि त्यजेद् धैर्यम्।
सकट मे धैर्य कभी न छोडे।
अदीना स्याम शरदः शतम्। *यजु० ३६/२४*
हम सौ वर्ष तक स्वाबलम्बी रहे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

नई चुनौतियां : अधिक दृढ़ता-विवेक से समाधान

भारत की राजधानी दिल्ली मे सुरक्षा का कितना छलावा है, इसका २५ जुलाई के दिन नमूना मिला, जब तीन हथियारबन्द लोगो ने ससद के समीप ही ससद की एक सदस्या की हत्या कर दी। तथ्य है कि यह सारा काण्ड दोपहर के समय हुआ और राजधानी के सर्वाधिक सवेदनशील सुरक्षित क्षेत्र मे हुआ। इससे पूर्व भारत के प्रधान मन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी और पाकिस्तान के सैनिक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के मध्य हुई आगरा वार्ता विफल हो चुकी थी। पाक राष्ट्रपति का कथन है कि वह स्वतन्त्रता के लिए लडने वाले जिहादियो को नही रोकेगा। ये जिहादी कोई और नहीं, सीमा पार के आतकवादी हैं। शिखर वार्ता मे पाकिस्तान ने बार-बार कश्मीर का प्रश्न उठाया। वस्तुस्थिति यह है कि जम्मू-कश्मीर मे १९५३ से पूर्व की स्थिति मे लौटना कठिन ही नहीं असम्भव है। अब वह स्थिति नहीं आ सकती कि केन्द्र सरकार सुरक्षा, सचार और विदेश नीति के विषय अपने पास रखकर शेष अधिकार राज्य सरकार को सौंप दे। १९५३ के बाद जम्मू-कश्मीर को विशेष स्थिति देने के लिए अनेक बार कानून सशोधित किए गए। वस्तुत जम्मू-कश्मीर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि अपने बलबूते पर सीमा पार के आतकवाद का सामना कर सके। समस्या जम्मू, लद्दाख और कश्मीर घाटी के तीनो क्षेत्रो की भौगोलिक सामाजिक दृष्टि से विकास की है। वस्तुत कश्मीर समस्या स्वायत्तता की नहीं, प्रत्युत उसके व्यवस्थित विकास की है। स्वायत्तता देने के स्थान पर उसके सभी क्षेत्रो की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक आधार पर समुन्नति होनी चाहिए। इसी के साथ राज्य के बेरोजगार युवको को आतकवादी धारा मे जाने से रोकने के लिए कश्मीर और दूसरे राज्यो मे रोजगार दिलाने की व्यवस्था होनी चाहिए। आज भोले-भाले युवक आतकवादियों द्वारा पथभ्रष्ट किए जा रहे है। यदि उनका व्यवस्थित आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास किया जाए तो राज्य मे शान्ति सुरक्षा की स्थिति सम्भल सकेगी, साथ ही सीमा पार के आतकवाद का सामना किया जा सकेगा। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि १९७१ मे एक लाख युद्ध बन्दी सैनिको को लौटाने की जगह भारत कश्मीर की समस्या सौहार्दपूर्ण ढग से सुलझाने की माग करता तो कश्मीर की समस्या तभी दृढता और विवेक से सुलझ जाती।

जल्दी या देर मे भारत और पाकिस्तान को मिल बैठकर इस महाद्वीप की स्थायी समस्याए अधिक विवेक, सामजस्य और दृढता से सुलझानी होगी। भारत-पाकिस्तान के मध्य आपसी चर्चाओ द्वारा गरीबी अशिक्षा, भेदभाव तथा दूसरी समस्याए सुलझ सकती हैं। यहा के राष्ट्रनायको ने जब इसी देश मे जन्म लिया है, जब उनके तीर्थ स्थान और आर्थिक-सामाजिक गतिविधियो का भविष्य इसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास पर निर्भर है तो थोडी समझदारी से सभी मनोवैज्ञानिक मतभेद खत्म कर विवेक का प्रयोग कर अधिक दृढता से देश के वर्तमान और भविष्य को सवारा जा सकता है। जब दोनो राष्ट्र के समीक्षक स्वीकार करते है दोनो शीर्ष नेताओ की बात अपूर्ण रही, परन्तु विफल नहीं हुई। नई शताब्दी और सहस्राब्दी मे विश्व और मानवता के सर्वांगीण अभ्युदय मे भारतीय उपमहाद्वीप की जनता की यशस्विनी भूमिका सम्भव है। यदि उसके सूत्रधार अपनी निजी सकीर्ण भावनाओ के स्थान पर इस उपमहाद्वीप के सर्वांगीण विकास के साथ जन-जन की समुन्नति और कल्याण को प्राथमिकता दे। पिछली शिखर वार्ता के दौरान जब राजनीति को छोड आपसी आदान-प्रदान के सम्बन्ध मे अधिक सौहार्दपूर्ण चर्चा कर सकते हैं और जब दोनो शिखर व्यक्तित्व आपसी सम्बन्ध सुधारने के लिए भविष्य मे पाकिस्तान मे शिखर वार्ता का कार्यक्रम स्वीकार कर रहे हैं तो विवेक का तकाजा है कि सभी चुनौतिया समझदारी और दृढता से सुलझा दी जाए।

यह स्पष्ट है कि किसी भी शिखर या सामान्य चर्चा मे छोटी-बडी सभी चुनौतियो से जूझा जा सकता है। यदि दोनो ही पक्ष थोडी लचक दिखाए। वैसे कश्मीर सम्बन्धी जटिल समस्या के सुलझाने के लिए शिखर वार्ता के लिए सहमति होना ही एक बडी उपलब्धि है। इसी के साथ दोनो ही देशो के शिखर नेताओ को अगीकार करना होगा कि आज उपमहाद्वीप की सामान्य जनता का एक सामान्य शत्रु गरीबी, अशिक्षा, पिछडापन और दूसरी विशेषताए हैं। यदि उपमहाद्वीप के नेता स्वीकार करे कि जन-जन के अभावो, कष्टो, अपूर्णताओ को दूर करने मे सभी नेताओ और जनता की एक सामान्य जिम्मेदारी है तो छोटे-बडे मतभेद को भुलाकर जन-जन के कल्याण और समग्र उप-महाद्वीप के कल्याण और सामूहिक प्रगति के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। इन नेताओ और जनता को ध्यान रखना होगा कि आपसी मतभेदो को दूर कर एक सामान्य सहमति के लिए शिमला और लाहौर समझौते आदि आपसी समझौतो की तरह भविष्य मे भी आपसी भाई-चारे का रास्ता अपनाया जाना चाहिए। यह ठीक है कि उपमहाद्वीप की समस्याए सुलझाकर उसका सर्वांगीण अभ्युदय एक बडी समस्या है। परन्तु जैसाकि नेपोलियन ने कहा था कि मानव के सम्मुख असम्भव कोई भी समस्या और प्रश्न नहीं है यदि उसे सुलझाने के लिए सभी साधनो शक्ति और बुद्धि का व्यवस्थित प्रयोग करे। इसी प्रकार नई शती मे भारतीय उपमहाद्वीप के देशो की एकता और जन-जन का कल्याण आज एक कठिन लक्ष्य हो सकता है, परन्तु यदि शीर्ष नेता और सूत्र सचालक पक्का इरादा करले और उसकी पूर्ति के लिए अपने विवेक, सगठन, शक्ति और क्षमता का पूरा और व्यवस्थित सदुपयोग करे। एक समय देश से विदेशी शासन का अन्त एक कठिन समस्या थी, परन्तु शीर्ष नेताओ के विवेक और जन-जन की आहुति से जिस प्रकार वह असम्भव सा लक्ष्य पा लिया गया, उसी प्रकार यदि नेता और जनता चाहे तो देश और उसकी जनता का भविष्य भी व्यवस्थित और समुन्नत किया जा सकता है। ❑
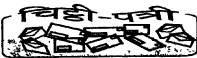
इतिहास से शिक्षा

दिल्ली पर शासन करने वाले भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने जयचन्द को कभी अपने लिए खतरे के रूप मे नहीं लिया, लेकिन पृथ्वीराज के कट्टर विरोधी जयचन्द ने अपने दुश्मन मोहम्मद गौरी को जोकि पृथ्वीराज चौहान से लगातार विश्वासघात कर रहा था, को अपना दोस्त बनाकर चौहान के सर्वनाश कर दिया। ठीक वैसी ही परिस्थिति भारत क साथ बनती दिखाई दे रही है। जयचन्द रूपी पाकिस्तान मुहम्मद गौरी भारत के दुश्मन चीन को अपना दोस्त बनाए हुए है और उसने चीन को अरब सागर मे खादर किनारे पर एक नौसैनिक अड्डा बनाने की मजूरी दे दी है। पिछले दिनो एक चीनी अधिकारी ने बयान दिया था कि हिन्द महासागर का मतलब यह नहीं है कि वह भारत का महासागर है, इसलिए भारत को इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिए और भविष्य मे पाकिस्तान और चीन की सयुक्त कार्यवाही को ध्यान मे रखकर अपनी नौसैनिक क्षमता तेजी से बढानी चाहिए।

– अक्षित तिलक राज गुप्त, साढौरा यमुनानगर,

सिफर-वार्ता

जिस शिखर-वार्ता की खातिर सारे देश को झौंक कर सरकार के सारे विभाग लगभग एक महीने से पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ की अगवानी मे जी-जान से जुटे थे, वह आगरा शिखर वार्ता की जगह सिफर वार्ता बन गई। आगरा शिखर-वार्ता से किसी भी प्रकार की उम्मीद और आशा आम नागरिको को नहीं थी। दोनो प्रमुख वार्ताकारो को भी किसी चमत्कारी नतीजे की उम्मीद नहीं थी। वैसे अतीत मे पाकिस्तान के साथ शिमला और लाहौर समझौते हो चुके हैं और उनका परिणाम भी कुछ नहीं निकला। हा, इस बातचीत मे पाक फौजी शासक को राष्ट्रपति रूप मे मान्यता दे दी। खेद यही है कि आज के राष्ट्रनेता महानायक बनने के फेर मे पडोसी देश की कडवी यादो और कार्यो को भूल रहे हैं जो उसने हमे दिए हैं।

–किरण दुष्का, ३५, बिहारी नगर, गाजियाबाद

ऋग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१०)

कर्मफल अथवा कार्य कारण व्यवस्था

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) अपनी स्थिति से सन्तुष्ट समाजसेवी नेता सार्थक ख्यातिनाम पाते हैं

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम्। नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ।।

ऋ० ६-१-४

भरद्वाजो बार्हस्पत्य। अग्नि। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (देवस्य) दिव्य दाता प्रभु के (अमृक्तपदम्) अक्षत व पवित्र नाम से प्रापणीय पद (नमसा व्यन्त) विनम्रतापूर्वक जिस कामना से परमात्मा की शरण मे जाते है उस कामना को (आयन्) प्राप्त कर लेते हैं। उदाहरणार्थ (श्रवस्यव) श्रवर ज्ञान–कीर्ति व धन अन्न की कामना वाले, जिस की कामना करते है, उसी श्रव को (आपन) प्राप्त कर लेते हैं। सदनन्तर (भद्राया सद्दृष्टौ रणयन्त) जो साधक (जाहिविध राखे राम ताहि विध रहिए) का पालन करते हुए उस दाता प्रभु के कल्याणकर सप्रदान मे सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं (ते) वे साधक (यक्षियानि चिद् नामानि दधिरे) अपने यज्ञीय=परोपकारार्थ शुभ कर्मो के अनुरूप ख्याति वाले नाम धारण करते हैं। जनता उन्हें लोकमान्य, महात्मा देशरत्न, लौहपुरुष आदि विरुदावलि प्रदान करती है।

अर्थ-पोषण – अमृत्तम अनुप भुक्त पवित्र, वैदिक कोश चन्द्रशेखर व्यन्त – वी गति कान्ति (कामना) खादनेषु। श्रव अन्ननाम, नि० २–७६ धन नाम, नि० २–१०। श्रव– श्रु श्रवणे – श्रूयते इति ज्ञान कीर्तिश्च।

निष्कर्ष – १ परमेश्वर से प्राप्त परिस्थिति मे सन्तुष्ट रहते हुए जो परार्थ कार्यों मे व्यस्त रहते हैं, वे खूब प्रसिद्ध होते हैं और जनता उन्हे कर्मा और सेवा के अनुरूप नाम प्रदान करती है।

२ अपनी सन्तान का नाम यज्ञिय हम उन्हे जैसा बनाना चाहते है, उस गुण को स्मरण कराने वाला रखना चाहिए।

३ जो जिस वस्तु को अन्त करण से चाहता है, वह उसे अवश्य मिलती है (यो यदिच्छति तस्य तत्)

(२) यज्ञशील मनुष्य कोई रोग दोष या व्यसन नहीं पालता

ईजे यज्ञेभि. शशमे शमीभिर्ऋधद्वारायाग्नये ददाश। एवा चन त यशसामजुष्टिर्नांहो मर्तनशते न प्रदृप्ति.।।

ऋ० ६-३-२

भरद्वाज। अग्नि.। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (यज्ञेभि ईजे) जो व्यक्ति वाज (ज्ञान, बल, धन व अन्न) मे से किसी को) प्राप्त करने की इच्छा से देवपूजा सगतिकरण दान के कर्मों द्वारा यज्ञ करता है, अथवा (ऋधद्वाराय अग्नये शमीभि ददाश) प्रज्ञा सम्वर्धक तथा वरणीय सत्य व्यवहार वाले अग्निसम प्रमुख के लिए शुभ कर्मों द्वारा दान करता है और (शशमे) स्वय सन्तुष्ट और शान्त रहता है, (एवा चन तयर्तम्) ऐसा आचरण करने वाले मनुष्य को निश्चय ही (यशेसा अजुष्टि) धन, अन्न और यश की कमी, और (न अह) न किसी तरह का रोग रूपी पाप तथा (न प्रदृप्ति) न ही अहकार–अभिमान (नशते) प्राप्त होता है।

अर्थ पोषण – वाज अन्ननाम, नि० २–७, बलनाम, नि० २–७। बाज– समृद्धि, श्री अरविन्द वाज–सानम्, वजगतौ, गतेस्त्रयोऽर्था –ज्ञान गति प्राप्तिश्चेति। यश – अन्ननाम नि० २–७, धननाम, नि० २–१०, यश उदकनाम, नि० १–१२

निष्कर्ष – (१) प्रत्येक व्यक्ति को अपने इष्ट किसी वाज (ज्ञान, बल, धन अन्न) को भरने=स्वामी बनने=भरद्वाज बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

(२) शुभ कार्यों द्वारा किसी भी वाज को प्राप्त करने वाले की, सब आवश्यकताए पूरी होती हैं, उसे कोई शारीरिक रोग अथवा मानसिक पाप (पाप मूल अभिमान) नहीं व्यापता और न उसका अपयश होता है।

(३) उज्ज्वल भोगों का भोक्ता, पुत्र पौत्रादि के साथ १०० वर्ष तक पुष्ट रहता है

समिधा यस्त आहुतिं निशितिं मर्त्यो नशत्। वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम्।।

ऋ० ६-२-५

भरद्वाजो बार्हस्पत्य.। अग्निः। अनुष्टुप्।

अर्थ – (य) भरद्वाज बनने का इच्छुक जो साधक, (अग्ने ते) हे अग्ने ! तेरे लिए (समिधा) जीवन को उज्ज्वल बनाने वाले समिधा सदृश साधनो के साथ (निशिति आहुति नशत्) पोषक और प्रेरक भौज्य सामग्री को व्याप्त (प्राप्त) करता है, (स मर्त्य) वह मनुष्य (वयावन्त क्षयम्) पुत्र पौत्रादि सम्पन्न घर को और (शतायुष क्षयम्) शत वर्ष व्यापी शरीर को (पुष्यति) पुष्ट रखता है।

निशितिम – प्रेरक, पोषक उत्तेजक, शो तनूकरणे। आहुतिम – हु दानादनयौ– भोज्यसामग्री को। नशत्–नशतिर्व्याप्तिकर्मा। नि० २–१८ क्षयम् – गृह शरीर वा, क्षिनिवासगत्यो क्षियतिनिवसतियस्मिन् तत्। वयावन्तम् – वया शाखा पुत्र पौत्राय दिलक्षणा तद्युत्तम्। सायण

निष्कर्ष – जो तेरी प्रजा के कल्याण के लिए सात्विक और पोषक भोगसामग्री का प्रयोग करता है, उसके घर अनुव्रती पुत्र– पौत्रो से खिलखिलाते हैं और स्वय १०० वर्ष तक जीता है।

(४) यज्ञशील समाज सेवक-सदा अन्न धन, यश से शोभित (सम्पन) रहता है

यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैर के भि· सूनो सहसो ददाशत्। समर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति।।

ऋ० ६-५-५

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः। त्रिष्टुप

अर्थ – हे (सहस सूनो) साहस और सहनशीलता के प्रेरक अथवा मूर्तिमान, पुञ्ज (ते) तेरे निमित्त (य) जो भरद्वाज बनने का इच्छुक साधक (यज्ञेन) देवपूजा सगतिकरण या दान कार्य द्वारा (समिधा) सत्य प्रकाशक साधक द्वारा अथवा (अर्के भि उक्थै) अर्चनीय स्तोत्रो या उद्बोधक वचनो द्वारा (ददाशत्) प्रजा को देता है या सहायता करता है, (स) वह साधक (अमृत) हे अविनाशि प्रभो ! तेरी कृपा से (मर्त्येषु प्रचेता) मनुष्यो मे प्रकृष्ट ज्ञानी माना जाता है और (धुम्नेन राया अवसा विभाति) यश, धन और अन्न तीनो से सम्पन्न होकर शोभित होता है।

निष्कर्ष – जो प्रभुभक्त, परमात्मा की स्तुति के साथ उसकी प्रजा की सेवा करता है, उसे किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। उस का यश चिरकाल तक कायम रहता है। सूनु – षू प्रेरणे।

(५) यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।

स इत्तन्तुं स विजानात्योतुं स वक्त्वा न्यृतुथा वदाति। य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्।।

ऋ० ६-९-३

बार्ह स्पत्यो भरद्वाज.। वैश्वानरोऽग्निः।

अर्थ – (य अमृतस्य गोपा) जो अविनाशी आत्मा या मन का रक्षक (वशी कर्ता या साक्षी) मनुष्य (अव० चरन्) अपने निचले अन्नमय शरीर मे विचरता हुआ (अन्येन पर पश्यन्) किसी अन्य गुरु की सहायता से, उपरले शरीरो को देखता हुआ (ईम्चिकेतद्) इनमे व्याप्त परमेश्वर को जान लेता है (स इत्) वही साधक (तन्तु ओतु विज्ञाना ति) पद के ताने–बाने की तरह व्याप्त कार्य–करण व्यवस्था को जान पाता है (स वत्कानि ऋतुथा वदाति) वही समयानुकूल वक्तव्य (समाधान) दे या कर सकता है।

निष्कर्ष – मनुष्य कितना ज्ञानी या वैज्ञानिक बन जाए, जगत् की व्यवस्था रहस्मय ही बनी रहती है। परमात्मा को ज्ञान चक्षुओ से जाने बिना किसी समस्या का समाधान नहीं होता और उसे जान लेने के बाद मन मे कोई समस्या शेष नहीं रहती।

(६) इन्द्र वरुणौ का सेव कर्ता धनी, दानी और अज्ञातशत्रु हो जाता है

स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन्। इषा स द्विषस्तरेद्दास्वान्वंसद्रयिं रयिवतश्च जनान्।।

ऋ० ६-६८-५

भरद्वाज। इन्द्रावरुणौ। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (इन्द्रा वरुणौ) प्राण और अपान अथवा सूर्यवाय (.. भरद्वाज बनने की इच्छा से जो साधक (वा त्मन् दाशति) अपने आप को, आप दोनो के प्रति सम्पर्पित कर देता है (स इत् स्ववान् सुदानु ऋतावा) वही वास्तव मे धनवान्, शुभदानी, और ऋत तथा सत्य का सेवन करने वाला सेवक बनता है। (स इषा द्विष तरेत्) वह अन्न दान द्वारा सब शत्रु जीत लेता है और (दास्वान्) दाता बनकर ही (रयिम्) धन को (च) और (रयिवत जनान् वसद्) धनार्जन समर्थ पुत्रो तथा भागीदारो को प्राप्त करता है।

निष्कर्ष – जो व्यक्ति सूर्योदय से पूर्व जागकर सूर्य का सेवन और प्राण वायु की साधना करता है, वह स्वस्थ, धनी और ज्ञानी (हैल्दी,वैल्दी, एण्ड वाइज) बनता है। अपने शत्रुओ को परास्त करता है, उसके पुत्र सुपूत और मित्र तथा परिजन धनवान होते हैं।

(७) मानवमात्र का सेवक द्यु और पृथ्वी दोनों लोकों को अपना बनाता है

यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति। प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता।।

ऋ० ६-७०-३

बार्हस्पत्यो भरद्वाज.। द्यावा पृथिव्यौ। जगती।

अर्थ – हे (धिषणे रोदसी) सब को धारण करने वाले द्यावा पृथिवी अथवा स्त्री पुरुषो (य मर्त) भरद्वाज बनने का इच्छुक जो मनुष्य (वा ऋजवे क्रमणाय) आप के सरलता पूर्ण आवागमन और निर्वाह के लिए (ददाश) सहयोग प्रदान करता है – (स) वह (युवो) आपके द्वारा (सिक्ता) सिचित या उत्पन्न (विषु रूपाणि सव्रता) नानारूप धारी किन्तु सामान्य रूप से प्रभावकारी पदार्थों को (साधति) सिद्धकर लेता है – उनके गुणधर्मों को जानकर उनका प्रयोग सीख लेता है तथा (धर्मण परि) अपने धर्म कर्म के अनुरूप (प्रजाभि) पुत्र पौत्रादि प्रकृष्ट सन्तानो व अधीनस्थ प्रजाजनों के सहयोग से (प्रजायते) फूलता-फलता रहता है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

शक्ति का स्रोत हमारे ही अन्दर

– श्रीराम शर्मा आचार्य

आज जैसी भी हमारी स्थिति है, वह सब हमारी मानसिक स्थित का परिणाम है। मन कर्ता है। ससार की सम्पूर्ण बाह्य रचना की शक्ति और आधार मन है। हमारा आहार, रहन–सहन, चाल–चलन, व्यवहार–विहार, शिक्षा समुन्नति व सारी बाते हमारी मानसिक दशा के अनुरूप होती हैं। जैसा कुछ चिन्तन करते हैं, विचार करते हैं, वैसे ही क्रिया–कलाप भी होते हैं और तदनुसार वैसे ही अच्छे–बुरे कर्म भी बनते हैं। सुख–दु ख, बन्धन और मुक्ति चूकि इन्हीं कर्मों का परिणाम है, इसलिए हमारे उद्धार और पतन का कारण भी हमारा मन ही है।

असफलता का दुर्भाग्य केवल मनोबल की कमी का ही परिणाम है। यत्न करते हुए थोडी–सी परेशानी ही प्रयत्न से विचलित कर देने के लिए काफी होती है। थोडा–सा शारीरिक दबाव, धन–हानि व्यापार में घाटा, शिक्षा मे अनुत्तीर्णता जैसी निराशाजनक घटनाए आईं कि प्रयत्न छोड बैठे। यह घटिया मनोबल का लक्षण है कि मनुष्य अल्प श्रम से अधिक परिणाम प्राप्त करना चाहे। इच्छाओ का आकार-प्रकार जितना बडा है, उतने ही बडे प्रयत्नो की अपेक्षा की जाती है, यदि उतने प्रयत्न न किए जा सके, तो सफलता सदिग्ध ही बनी रहेगी।

परिस्थितिया यदि प्रतिकूल है, तो भी साधनो का उपयोग करते रहना चाहिए। थोडी-सी पूजी से बढकर उच्च स्तर के व्यापार तक पहुचा सकता है, किन्तु मानसिक शक्ति अपने साथ बनी रहनी चाहिए। कार्य करते समय ऊबे नहीं और उत्तेजित भी न हो। यह समझ ले कि हमें तो लक्ष्य तक पहुचना है। जितनी बार गिरो, उतनी बार उठो। एक बार गिरने से उसका कारण मालूम पड जाएगा, तो दुबारा उधर से सावधान हो जाओगे। यह स्थिति निरन्तर चलती रहे, तो अनेक बाधाओं के रहते हुए भी अपने लिए उन्नति का मार्ग निकाला जा सकता है, मन के हारने से हार होती है। मन यदि बलवान होता है, तो इच्छापूर्ति को भी अधिक सुनिश्चित ही क्यो न समझना चाहिए।

अकर्मण्यता और आलस्य का, अधीरता और प्रयत्नहीनता का साथ छोडकर 'यत्नदेवा भव' की उपासना प्रारम्भ कर दे, तो पुरुषार्थ का देवता ही अपने लिए अनुकूल परिस्थितिया उत्पन्न कर देगा। काम करने मे शिथिलता न व्यक्त करे, ढिलाई न करे। चिंतित न हो, आत्मविश्वास न खोए। धैर्य के साथ यत्न देव का आश्रय पकडे रहे, तो निश्चय है कि आज की यह दीन-हीन अवस्था कल की सम्पन्नता मे बदलकर रहेगी।

आत्म सचय करें, इससे बिखरा हुआ मानसिक सस्थान जागेगा। निश्चेष्ट मनुष्य इसलिए होता है कि उसकी शक्तिया इधर-उधर बिखरी हुई होती हैं।

आत्म-सयम से बिखरी हुई शक्तिया एक स्थान पर एकत्र होकर अभीष्ट परिणाम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती हैं। मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियो का जागरण आत्म-सयम के द्वारा ही होता है। किसी समय भारत वर्ष ने मन की शक्तियो का सम्पादन करके अनेक आश्चर्यजनक शक्तिया और सिद्धिया प्राप्त की थीं। एकाग्रता के अभ्यास के द्वारा ये सम्भावनाए अब भी जाग्रत की जा सकती हैं। जी-तोड परिश्रम करने की आवश्यकता है। प्रयत्न पर प्रयत्न करने की जरूरत है। हमारे भीतर जो सिद्धिया बिखरी हुई हैं बस हमारे ये विषम परिस्थितिया अधिक दिनो तक ठहरने वाली नहीं हैं।

हमे अपनी स्थिति स्वय सुधारनी होगी। स्वय कठिनाइयो से लडकर नया निर्माण करना पडेगा। विश्रृखलित शक्तियो को जुटाकर आगे बढने का कार्यक्रम बनाना पडेगा। यह बात यदि समझ मे आ जाए तो सफलता की आधी मजिल तय कर ली ऐसा समझना चाहिए। शेष आधे के लिए मनोबल जुटाकर यत्नपूर्वक आगे बढिए। आपका सौभाग्य आपके मगल मिलन के लिए प्रतीक्षा कर रहा है, स्वागत के लिए आगे खडा है।

मामूली-सी शक्ति से कोई भी काम नहीं बनता। बिखरी हुई सूर्य की किरणे सारे शरीर पर असख्य मात्रा मे गिरती है, तो भी उनसे कुछ विशेष हलचल उत्पन्न नही होती, पर यदि एक-डेढ इच जगह की किरणो को आतिशी शीशे से एक जगह पर एकत्र कर दिया जाए तो इससे दावानल का रूप धारण कर एकता की क्षमता से सम्पन्न आग पैदा हो जाएगी। हम अपनी शक्तियों का इध र-उधर के, बेकार के कार्यो मे खर्च करत रहते है, जिससे जीवन मे कोई विशेषता नहीं बन पाती।

कमर कसो संगठित आर्यो!

– सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरूत'

पचास वर्षों का मन्दिर अपना ध्वस्त कर दिया मिण्टो रोड,
बुलडोजर चलवा-जगमोहन पार्क बनाने चले समोद।
मलवा रोता जार-जार क्या कर सकते ना तुम श्रृंगार?
कमर कसो संगठित आर्यो ' पुरखों सा ले दृढ हुंकार''

गिरे हुओं को सदा उठाना तेरी सीधी रीत रही
संकल्प बद्ध होते ही तेरे सम्मुख शाश्वत जीत रही।
तेरी कीर्त्ति धवल पताका आसमान छूने वाला,
आबाल वृद्ध के रोम रोम में ओज तेज भरने वाला।
कर्त्तव्य मार्ग का स्रोत रहा है सदा विपक्षी की ललकार।
कमर कसो संगठित आर्यो ' पुरखों सा ले दृढ हुंकार।।

डायनासोर मत बनो जिसे ना अंग प्रत्यंग का हो संवेदन।
मिट जाती वह जाति समूची जन मानस जिसका ना चेतन।
स्वार्थ सिद्धि की बात नहीं कुछ सामाजिक है शुद्ध जगें,
सभ्यता संस्कृति के लिए सन्नद्ध हो सभवामि युगे युगे।
अनार्य जुष्टम शीघ्रातिशीघ्रम करो चुनौती को स्वीकार।।
कमर कसो संगठित आर्यो' पुरखों सा ले दृढ हुंकार।।

शासन और कुर्सी सुनती है सदा सगठन की भाषा,
अन्य मनस्क होकर सम्भव ना करेगा कोई पूरी आशा।
जिद की जीवट ही डटकर कर सकता है प्रतिकार सफल,
तेज भाष्वर किरणों से सूरज पाता है बदली से निकल।
'काश्मीर की रायल्टी' क्या सचमुच पाओगे उपहार ??
कमर कसो संगठित आर्यो ' पुरखों सा ले दृढ हुंकार।।

शिलान्यास स्थल पर ही होगा - समझौता और कोई निर्णय,
सौतेली माता नहीं चाहिए, हम कपूत ना होंगे - तय '
ढुलमुल रणनीति अपना क्यों मूर्ख बनाता है प्रशासन
मस्जिद की ओर कभी इसी दृष्टि से मत देखना, मुस्लिम के नेता कथन '
फूल रहे क्यों हाथ पांव - श्री जगमोहन क्यों हैं लाचार ??
कमर कसो संगठित आर्यो ' पुरखों सा ले दृढ हुंकार।।

यह दोरंगी चाल अटल-कहलाते जो उनकी है हार,
आर्यसमाज को मां कहकर भी बंटाधार करते धिक्कार '
दांव पेंच तिकड़म को छोड़ो सच्चाई को नहीं झिंझोड़ो,
अपने भारत की गरिमा का सुदृढ सनातन लीक ना तोड़ो।
मन्दिर वहां ही बनने दो अब मरूत है आर्योचित व्यवहार।।
कमर कसो संगठित आर्यों की समुचित बात को कर स्वीकार।।

प्रेम नगर, नेमदारगंज (नवादा - बिहार) - 805121

श्री बलवन्त सिंह आर्य का निधन

आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली के माननीय सदस्य श्री बलवन्त सिह आर्य का आकस्मिक निधन हृदय गति रुकने के कारण शान्ति मुकन्द अस्पताल विकास मार्ग विस्तार दिल्ली मे २५ जुलाई, २००१ को हो गया। उन्हे २२ जुलाई रविवार को मलेरिया होने के कारण अस्पताल मे भर्ती कराया गया था। उनकी आयु ८० वर्ष की थी तथा उनकी धर्मपत्नी का लगभग १४ वर्ष पूर्व ही देहान्त हो गया था। उनके परिवार मे दो सुपुत्र – श्री वीरेन्द्र सिह एव श्री नरेन्द्र सिह हुड्डा – हैं और दोनो ही विवाहित हैं।

श्री बलवन्त जी धर्मप्रेमी थे और यज्ञ मे उनकी अपार श्रद्धा थी। वे नियमपूर्वक जब दिल्ली मे रहते थे, आर्यसमाज के दैनिक सत्सग में जाया करते थे। वे गवर्नमेण्ट सीनियर सैकण्डरी स्कूल गगाना (सोनीपत) के प्रिंसिपल के पद से सेवामुक्त हुए थे।

सूचना मिलते ही बुधवार साय छ बजे सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती के साथ उनके सुपुत्र एव सगे सम्बन्धियों को सान्त्वना देने के लिए उनके सुपुत्र के निवास पन्त मार्ग पर पहुचे।

उनकी अन्त्येष्ठि २६ जुलाई को प्रात ८ बजे पचकुइया रोड श्मशान घाट पर वैदिक विद्वान् डॉ० कर्ण देव शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से कराई। उस समय श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, आर्यसमाज हनुमान रोड के अधिकारी सर्वश्री हसराज चोपडा, अरुण प्रकाश वर्मा, राजीव भाटिया, विजय मनोचा, सुशील महाजन सत्यनारायण एव महिला आर्यसमाज की सदस्याए भी उपस्थित थीं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति एव सगे-सम्बन्धियो को धैर्य तथा सान्त्वना प्रदान करे।

जल – रोग निवारक और पुष्टिवर्धक है

– टुकीराम भारद्वाज

संसार मे पाच भौतिक तत्व हैं यथा – आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन्हीं के आपस के विभिन्न योगों से सृष्टि की रचना और पालना होती है, परन्तु हम इनकी उपयोगिता नहीं जानते।

सामान्यत कहा जाता है कि मनुष्य अन्न और जल का कीडा है। [illegible] लोगो के अनुसार जल ही जीवन है। ये दोनों ही कथन सत्य है परन्तु वेद के निम्न मन्त्र के अनुसार जल स्वय रोग निवारक और पुष्टिवर्धक है।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनी.।।

अथर्व० १/४/४

मन्त्र का देवता **'आप'** है जिसका अर्थ परमेश्वर, विद्वान् और जल है। अत देवता अर्थ को ध्यान में रखते हुए मन्त्र के तीन अर्थ हैं। वर्तमान में जल का ध्यान रखते हुए, इस मन्त्र का अर्थ निम्न है –

"**(अप्सु अन्त अमृतम्)** जल में रोग निवारक रस है और **(अप्सुभेषजम्)** जल में भय जीतने वाली औषधि है।**(उत अपाम् प्रशस्तिभि)** और जल के उत्तम गुणों से **(अश्वा वाजिन भवथ)** घोडे वेग वाले होते है, **(गाव: वाजिनी भवथ)** गाए वेग वाली होती हैं। उक्त मन्त्र में दो शिक्षाए हैं कि मनुष्य के लिए जल मे रोग निवारक तत्व तथा भय दूर करने की शक्ति है। दूसरे अश्व और गाय आदि पशुओं को यदि जल से उत्पन्न घास, चारा दिया जाए तो वे ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगे।

बुखार में जल का प्रयोग

यदि आपको मौसम की गर्मी से बुखार आ गया है तो आप ताजा-ताजा जल घूट-घूट करके पीए। आध घण्टे बाद यही प्रक्रिया जारी रखे। रोगी को हल्की हवा करें तथा रोगी छाया मे रहे। बुखार करीब एक घण्टे में जरूर उतर जाएगा।

दस्तों के बाद शरीर का टूटना, चटकना और अधिक प्यास

जब मनुष्य को दस्त लगते है तो लोग दस्त जाते रहते है तथा खाना खाते रहते हैं पर पानी नहीं पीते। फलत शरीर बहुत कमजोर हो जाता है। शरीर टूटता है, घुटने चट-चट करते हैं तथा प्यास बहुत लगती है। कभी-कभी रोगी का प्राणान्त भी हो जाता है। डॉक्टर ग्लूकोज की बोतल चढाता है। अत दस्त के रोगी को परामर्श है कि खाना खाना तुरन्त बन्द करदे। जितनी बार दस्त जाए उतनी बार ज्यादा से ज्यादा पानी पीए। यदि ऐसा नहीं किया और शरीर टूट रहा है और प्यास बढ रही है तो कृपया ठडा जल घूट-घूट करके पीए। हर आध घण्टे बाद ऐसा करे छाया में रहें तथा आराम करें। करीब दो घटे में ठीक हो जाएगे।

खुजली में जल का प्रयोग

शरीर के जिस अग में खुजली हो रही है, उस अग को ठण्डे पानी मे डुबो दे। ऐसा करीब आधा घण्टा करें। फिर दूसरे दिन ऐसा करें। नमक-मिर्च कम खाए। [illegible] हो सके तो एक दिन खाना न खाए। खुजली वाले अग [illegible] [illegible]नी में न डुबो सकें तो उस अग पर सूती कपडा बाध दे तथा ठण्डा पानी डालते रहें। खुजली दो दिन में खत्म हो जाएगी।

फोडे-फुन्सी में जल प्रयोग

फोडे और फुन्सी के स्थान पर पुराना सूती कपडा बाधे तथा उसे करीब दो-तीन दिन जल से लगातार तर रखें। सूखने मत दें। फोडा और फुन्सी वहीं बैठ जाएगे।

छाती में कफ हो जाने पर जल का प्रयोग

प्राय जुकाम होने पर रोगी डॉक्टर से एलोपैथी की दवाई लेते हैं तथा शीघ्रातिशीघ्र उसे अशुद्धि से बचाता है। शरीर शीघ्र स्वस्थ होने के लिए डॉक्टर से निवेदन करते है। फलस्वरूप डॉक्टर अधिक तेज दवा देता है जिससे छाती में कफ जमा हो जाता है। जोर से सास लेने पर पेट की नसें तनती हैं तथा रोगी मरणासन्न हो जाता है। कृपया ऐसे रोगी को साधारण गर्म जल घूट-घूट कर पिलाए। १०-१५ मिनट में ठीक हो जाएगा।

(च) हृदय रोग में जल का प्रयोग

जिन्हें हृदय रोग होता है, उनका प्राय खून गाढा हो जाता है और यह गाढा खून हृदय पर जोर डालता है। ऐसे रोगियों को प्यास कम लगती है। अत खून के प्रवाह को सुचारू रखने और खून को प्राकृतिक रूप से पतला करने के लिए खूब पानी पीना चाहिए तथा चायपान बन्द कर दे क्योंकि चाय भूख और प्यास को कम करती है।

(छ) पित्त प्रधान रोगी जल पीएं

कुछ व्यक्ति सदैव गर्म चीजों का प्रयोग करते है जिससे पित्त के रोगी बन जाते हैं। ऐसे रोगियों को चाहिए कि वे पानी ज्यादा से ज्यादा पीए।

(ज) उच्च रक्तचाप में जल का प्रयोग

उच्च रक्तचाप के रोग में ठण्डा जल घूट-घूट कर पीए। कम से कम दो गिलास पीए। रक्त चाप यथाशीघ्र सामान्य हो जाएगा। भोजन में नमक, मिर्च, मसाले कम खाए

(झ) निम्न रक्तचाप में जल का प्रयोग

निम्न रक्तचाप के रोगी को तथा उसकी अशुद्धि बचाता है। गर्म जल घूट–घूट कर पीना चाहिए। पानी की मात्रा रोग की स्थिति व व्यक्ति की शारीरिक अवस्था पर भी निर्भर करती है। भोजन में नमक मिर्च कम खाए परन्तु गर्म मसालों का प्रयोग करें।

(ञ) गैस रोग में जल का प्रयोग

गैस से पीडित रोगी, जल में नीबू, नमक और हींग मिलाकर घूट–घूट कर पीए। इस प्रक्रिया को आधा अथवा एक घटा बाद पुन दोहराए। जल पीकर बाईं करवट से लेट जाए अथवा धीरे–धीरे टहलें। ऐसा करने पर शीघ्र लाभ मिलेगा।

(ट) नाक के छिद्र बन्द होने पर जल का प्रयोग

कुछ स्त्री पुरुषों व बच्चों की नाक के दोनों छिद्र बन्द हो जाते हैं तथा किसी–किसी का एक छिद्र बन्द हो जाता है। परिणामस्वरूप नाक के आस–पास के क्षेत्र में भयकर पीडा होती है तथा रात को रोगी सोने में बेचैनी महसूस करता है। ऐसे रोगी रात को सोते समय नाक के दोनों छिद्रों में देशी घी या सरसों का तेल लगाए। प्रात काल नहाते समय हल्का गर्म पानी लें तथा नाक से पानी पीए। मुह पर ओक बना कर हाथ रखें। नाक से बहुत धीरे–धीरे सास लें तथा गर्दन को, सांस लेते समय, आसमान की तरफ तान कर रखें। पानी की मात्रा कम से कम एक गिलास हो। इस प्रक्रिया को कम से कम तीन दिन लगातार करते रहें। ऐसा करने पर नाक खुल जाएगी।

(ठ) बिच्छू के काटने पर जल प्रयोग

बिच्छू के काटने के तत्काल पश्चात् रोगी को पानी से स्नान कराए तो दर्द ऊपर नहीं चढेगा तथा काटे स्थान को पानी में डुबोकर रखें।

(ड) लू से बचने के लिए जल प्रयोग

गर्मी मे घर से प्रस्थान करते समय पानी पीए। मार्ग में भी थोडा–थोडा पानी पीए। ऐसा करने से लू नहीं लगेगी।

(ढ) एड़ियों की कठोरता दूर करने के लिए जल का प्रयोग

जिन स्त्री पुरुषों के पैरों में कठोरता तथा बिबाई हों कम से कम मिर्च खाए। रात्रि को सोते समय गर्म जल से पैर धोकर और पोछ कर सरसों का तेल लगाए। ऐसा लगातार करते रहें जब तक पैर ठीक न हो जाए।

(ण) दमे के रोग में जल का प्रयोग

दमे के रोग में कफ छती में जमा रहता है। इससे सास लेने में बहुत परेशानी होती है। ऐसे रोगी रात्रि को सोते समय गर्म पानी पीकर सोए तथा दौरा पडने पर गर्म पानी पीए। यदि हो सके तो दौरा पडने पर रोगी के हाथ और पैरों को गर्म पानी में कुछ समय तक डुबाकर रखे। यदि हो सके तो अधिक गर्म पानी पिलाकर रोगी को उल्टी करवा दें। ऐसे रोगी को गर्म जल के साथ कुञ्जर योग करना चाहिए।

(त) पेशाब की जलन में जल का प्रयोग

ज्यादा धूप में घूमने अथवा कार्य करने पर अथवा गर्म प्रकृति की चीजें खाने से पेशाब में जलन पैदा हो जाती है। अत रोगी अधिक मिर्च–मसाले व तेल-घी वाले पदार्थों का सेवन तुरन्त बन्द कर दें। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें तथा अधिक से अधिक ठण्डा ताजा जल पीना शुरू करें।

(थ) पावों में थकान होने पर जल का प्रयोग

कभी-कभी ज्यादा चलने पर या ऊचाई पर चढने से पैरों में थकान महसूस होती है। पैरों की थकान दूर करने के लिए गर्म पानी ले कर, उसमें कुछ नमक डालकर पैरों को कुछ समय डुबाए। शीघ्र राहत मिलेगी।

(द) मोटापा दूर करने के लिए जल का प्रयोग

जिन्हें मोटापा है तथा वे इसे दूर करता चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि भोजन से पहले एक अथवा दो गिलास गुनगुना पानी पीए। दिन में भी गुनगुना पानी पीते रहें। लगभग दो महीने में रोग ठीक हो जाएगा, यदि वे अधिक चिकनाई वाले पदार्थ मास व अण्डा न खाए। कुछ शारीरिक श्रम भी नियमपूर्वक करते रहें तथा भोजन के बाद न सोए। ठण्डा पानी बिल्कुल न पीए तथा कम से कम पानी पीए तथा नमक कम खाए। जहा तक हो सके खाली पेट पानी खूब पीए।

(ध) मोच गुम चोट में जल का प्रयोग

मोच अथवा गुम चोट लगने पर, यदि चोट हाथ या पैर में है, तो प्रथम आवश्यकतानुसार बहुत–सा जल गर्म करवा लें। जल न ज्यादा गर्म हो जिसे शरीर सहन न कर सके और जल न ज्यादा ठण्डा हो। गर्म पानी को बडी पैंदे वाली बाल्टी अथवा दूध की बाल्टी, या भगौना में ले। जल में चम्मच से नमक डालें (अर्थात् ज्यादा नमक)। चोटिल अग को जल में पूर्णतया डुबों दे। अग को डुबाए रखना–करीब आधे घटे से लेकर एक घटे तक करें। फिर जल को साफ और सूखे तौलिए से शीघ्रता से पौंछें। अग को गर्मी या सर्दी दोनों से बचाए। फिर अग पर सरसों का गर्म तेल शीघ्रता से मलें। इसके बाद अग पर पुराना सू[illegible] वस्त्र विशेषतया पुरानी साफ धोती कस कर लपेट दें। ये सब क्रियाए प्रात स्नान के पश्चात् करें। खाने में दही, चावल, छा[illegible] वर्फ का अथवा कूलर का पानी, लस्सी का परहेज रखें। [illegible] क्रियाए लगातार प्रात सायम् दोनों समय नियमपूर्वक करे। दो या तीन दिन में ठीक हो जाएगे। पखे की अथवा कूलर की हवा से दूर रहें। यदि अग की पानी में डुबने की स्थिति नहीं है तो चोटिल अग पर सूती धोती बाधकर गर्म पानी के ताडे देवें।

पानी पीने में सावधानी

जहा जल का उचित और समय पर प्रयोग अमृत है, वहीं जल का कुसमय पर प्रयोग हानिकारक है तथा रोग उत्पन्न करता है। अत जल पीने में निम्न सावधानिया बरतें –

१ अमूर खाने के बाद पानी न पीए। २ भोजन के अन्त में जल विष समान है। करीब एक घण्टा बाद जल पीए।

३ शौच जाने के बाद जल न पीए। ४ धूप में चल कर आने के बाद जल न पीए।

५ शारीरिक श्रम करने पर पसीना आता है। अत पसीना आने पर पानी न पीए। ६ व्यायाम करने के बाद पानी न पीए।

७ केला खाकर पानी न पीए। ८ गर्म दूध व चाय पीने के तुरन्त पश्चात् न नहाए। ९ भोजन के तुरन्त पश्चात् न नहाए।

१० मूली खाने के बाद पानी न पीए। ११ पतले आदमी खाली पेट पानी न पीए। १२ खीरा, खरबूज और ककडी खाकर पानी न पीए। १३ सम्भोग के तुरन्त पश्चात् पानी न पीए। १४ नजला–जुकाम के रोगी गर्म जल का उचित मात्रा में प्रयोग करें अन्यथा आतों में मल फस कर भयकर रोग उत्पन्न करेगा।

निम्न अवस्थाओं में जल खूब पीए

(क) भोजन करने के एक घण्टे बाद। (ख)जिन्हें खुश्की रहती है वे अपनी प्रकृति के अनुकूल ठण्डा अथवा गर्म जल पीए तथा नमक मिर्च मसाले व चाय–काफी कम प्रयोग करें। (ग) जिन्हें गर्म में गर्मी लगती है और सर्दी में सर्दी लगती है, ठण्डा अथवा गर्म जल अपनी प्रकृति के अनुकूल पीए। (घ) जो व्यक्ति चाय पीकर शौच जाते हैं, वे कृपया चाय का पान शौच से पूर्व बन्द करें अन्यथा भयकर रोग उन्हें लग जाएगा। शौच से पूर्व ऐसे व्यक्ति गर्म जल, नमक, नीबू व हींग की शिकजी घूट–घूट कर पीए। शिकजी पीकर चहलकदमी करें। (ड) प्रात उठकर कम से कम एक गिलास और अधिक से अधिक दो गिलास पानी पीए।

अन्त मे यह जिज्ञासा होती है कि कि हम सारे दिन में (प्रात उठने के सयम से रात्रि के सोने के समय तक) कितनी मात्रा में पानी पीए। शरीर के किन अगों को पानी की आवश्यकता होती है? पानी का शरीर में क्या कार्य है? इन प्रश्नों का सक्षिप्त उत्तर यह है कि समस्त शरीर को पानी की आवश्यकता है क्योंकि यह शरीर के तापक्रम को नियन्त्रित करता है तथा उसे अशुद्धि से बचाता है। शरीर में खून के प्रवाह को जारी रखता है। कम से कम एक दिन में प्रत्येक मनुष्य ढाई लीटर से ले कर तीन लीटर पानी पीए। एक अनुमान के अनुसार गुर्दो से १५०० ग्राम, त्वचा से ६५० ग्राम, फेफडों से ३२० ग्राम और गुदा मार्ग से १३० ग्राम पानी शरीर से प्रतिदिन निकल जाता है। अत उसकी सतत् पूर्ति के लिए २६०० ग्राम पानी अनिवार्य है। जल की कुछ पूर्ति, भोजन के साथ लेने वाले पेय पदार्थों – दूध, दही, मट्ठा और सब्जियों में होने वाले जल से होती है तथा कुछ सीधा जल हम पीते हैं।

सक्षेप में जल के अनेक गुण है तथा 'जल ही जीवन है' की यह उक्ति प्रमाणित करती है। आशा है पाठकों, लेख में दी गई जानकारियों का लाभ उठा कर अन्यों को भी इस का लाभ देंगे।

– मन्त्री आर्यसमाज [illegible]

पृष्ठ १ का शेष

कैप्टन देवरत्न आर्य तथा श्री ओंकारनाथ आर्य का नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

जब दोनो आर्य नेताओ को सिक्कों से सभागार मे ही तोला गया तो सारा जनसमुदाय वैदिक धर्म की जय के नारो से गुन्जायमान हो उठा।

उल्लेखनीय है कि विगत् अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में हर व्यक्ति के मुख पर उस सकल्प की सराहना थी जिसके तहत महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित धारावाहिक **'प्रकाश'** के प्रारम्भ होने की घोषणा की गई थी और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए **एक नया टी०वी० चैनल** प्रारम्भ कराने की माग भी शामिल थी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न होने के बाद समूची आर्य जनता तो अपने-अपने क्षेत्रों मे एक नए उत्साह के साथ पूर्ववत प्रचार में जुट गई तो दूसरी तरफ मुम्बई और सार्वदेशिक के आर्यनेता इस टी०वी० चैनल योजना के क्रियान्वयन मे जुट गए। परिणामत जून के अन्तिम सप्ताह से **आस्था टेलिविजन चैनल** पर **प्रातःकाल ८ बजे से दैनिक प्रवचन** का कार्यक्रम प्रारम्भ करवाया गया। इस सारे कार्यक्रम का मुख्य श्रेय कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री ओकारनाथ आर्य तथा मुम्बई के अन्य आर्य नेताओ को जाता है।

दोनो आर्यनेता मुम्बई से सपरिवार पधारे थे। श्री ओंकारनाथ जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती तथा कैप्टन देवरत्न आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा इनके सुपुत्र तथा सुपुत्री भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। सिक्कों से तोलने के अतिरिक्त, दोनो आर्यनेताओ को **एक भव्य स्मृति चिन्ह** तथा **अभिनन्दन-पत्र** भी भेट किया गया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने विगत समारोहो को एक और ऐतिहासिक समारोह बताया। उन्होने कहा कि यह सम्मान प्रतीक रूप मे बेशक इन दो आर्य नेताओ को प्रदान किया जा रहा है परन्तु वास्तव मे यह समूचे आर्यजगत का सम्मान है जिनके अथक प्रयास, परिश्रम और कष्ट से जिनकी विशाल उपस्थिति से, जिनके अनुशासन से वह विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समारोह को सम्बोधित करते हुए कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि इस समारोह को देखकर तथा आर्य जनता के आशीर्वाद को पाकर मेरे अन्दर एक नई स्फूर्ति और उत्साह उत्पन्न हुआ है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि मुझे इसी प्रकार आपकी सहानुभूति एव उत्साह प्राप्त होता रहे और मैं अधिक प्यार से से अधिक आर्यसमाज की सेवा कर सकू।

उन्होने सम्मेलन के आयोजन तथा आस्था चैनल के कार्यक्रम के सचालन मे समूचे आर्यजगत का धन्यवाद करते हुए कहा कि विश्व के कोने-कोने से यह सन्देश प्राप्त हो रहे हैं कि आस्था चैनल के कार्यक्रम बन्द नहीं होमे चाहिए। परन्तु मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि इनकी निरन्तरता आपके हर सम्भव सहयोग पर ही आधारित है।

शेष पृष्ठ ८ पर

कैप्टन देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या एवं श्री ओंकारनाथ आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए आर्य नेता।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री रमेश चन्द अन्य महानुभावों के साथ। श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी अन्य आर्य सन्यासियों के साथ।

R N No 32387/77 Posted at N D.PS O on 2-3/08/2001 दिनांक ३० जुलाई से ५ अगस्त, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 2-3/08/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३६/२००१

पृष्ठ ७ का शेष

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

उन्होने कहा कि इस कार्यक्रम का प्रतिदिन का खर्च १० हजार रुपये है जिसे कोई भी छोटी-से-छोटी आर्यसमाज वर्ष मे कम-से-कम एक बार सहयोग रूप में वहन कर ही सकती है। बडी आर्यसमाजें और प्रान्तीय सभाए तीन लाख रुपये के सहयोग से एक महीने के कार्यक्रम को आयोजित कर सकती हैं। प्रायोजक व्यक्तियों या संस्थाओं का नाम कार्यक्रम के पश्चात् टी०वी० पर ही प्रदर्शित किया जाता है।

श्री ओकारनाथ आर्य ने कहा कि जब हम कोई भी काम करते हैं तो यह नहीं सोचते कि प्रतिफल में हमे यह सम्मान मिलेगा। इस सम्मान समारोह को देखकर मन प्रसन्न तो अवश्य होता है परन्तु इसका वास्तविक लाभ तभी होता है जब आर्यजनता में ऐसे समारोह को देखकर नई चेतना और उत्साह का सचार हो।

श्री ओंकारनाथ आर्य ने आर्यसमाज से जुडे विगत पचास-साठ वर्षों के अपने सस्मरण सुनाते हुए कहा कि किस प्रकार उन्होने महात्मा हसराज जी के साथ प्रेरणा प्राप्त की, श्री मेहर चन्द महाजन जी के निर्देश पर टकारा ट्रस्ट का कार्यभार सम्भालना स्वीकार किया। उन्होंने महात्मा गाधी और श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ हुई भेट वार्ताओ का भी उल्लेख किया।

इस समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी०ए०वी० के प्रधान पद्मश्री श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने की। अध्यक्षीय भाषण में आर्यसमाज के सेवा और परोपकारी कार्यो का विस्तृत व्यौरा प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब कभी भी देशवासियो पर विपत्ति की घडी आती है तो आर्यसमाज अग्रणी रहकर अपने दायित्व को निभाता है। यह अपने आप म मानव धर्म के कर्त्तव्यो की श्रेष्ठ अनुपालना है। उन्होने **आस्था चैनल** कार्यक्रम के निमित्त **एक लाख रुपये का चैक** भी कै० देवरत्न आर्य तथा श्री ओकारनाथ आर्य को प्रदान किया।

इस समारोह मे जनकपुरी आर्यसमाज की ओर से श्री धर्मबन्धु जी के भूकम्प पीडित क्षेत्रों मे भवन निर्माण कार्यों के लिए **एक लाख बीस हजार रुपये** का चैक श्री ओकारनाथ आर्य को प्रदान किया गया।

दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री पृथ्वी राज साहनी ने कहा कि आर्यसमाज को मैं हमेशा समाज की सेवा में जुटे हुए ही देखता हू। आज के युग में जबकि माता पिता और शिक्षण सस्थाए भी चरित्र निर्माण के कार्य मे असफल हो रही है, आर्यसमाज अपने इस दायित्व को भली भाति निभाता रहा है।

इस समारोह को सर्वश्री विश्वनाथ, रामनाथ सहगल, डॉ० शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तेजपाल मलिक, अजय सहगल तथा श्रीमती शशि प्रभा आदि आर्य नेताओं ने भी सम्बोधित किया।

वैदिक लाईट के सम्पादक एव सभामन्त्री श्री विमल वधावन एडवोकेट ने समस्त उपस्थित जनसमुदाय तथा आर्यनेताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि जिन प्रतिकूल परिस्थितियों में इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफल सचालन सम्भव हो पाया यह इस बात का प्रतीक है कि यदि नेतृत्व और प्रबन्धन समुचित हो तो सफलता अवश्य ही मिलती है। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन आगामी कई वर्षो तक प्रेरणा बना रहेगा।

इस समारोह का सचालन तथा पूर्व उत्साह के साथ आर्यसमाज मन्दिर सी० ब्लाक पखा रोड जनकपुरी के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन ने किया। श्री महाजन ने कहा कि यह कार्यक्रम विशुद्ध रूप से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के सम्मान और प्रोत्साहन के लिए है उसे किसी अन्य भावना से न जोडा जाए। मैं भावनाशील समर्पित सेवाभावी कार्यकर्ता हू, मैंने उत्साह और भावुकता में ही इस कार्यक्रम का विचार रखा और मेरी आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने पूरे सहयोग के साथ इसका निर्वहन किया। उनके सहयोग का ही यह परिणाम आपके सामने है। जो सभाए और सस्थाए अपने कार्यकर्ताओ को सम्मान और उत्साह देती हैं, वे ही आगे बढ सकती हैं।

कैप्टन देवरत्न जी ने आर्य महासम्मेलन को सफल, सार्थक व महत्वपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस सम्मेलन के परिणामस्वरूप कैप्टन देवरत्न जी केवल एक महान कार्यकर्त्ता के रूप में ही नहीं बल्कि एक सस्था के रूप में उभर कर सामने आए हैं। आर्य जनता में महासम्मेलन से नई चेतना, उत्साह और सगठन की भावना जगी है। इसीलिए लोगों ने तन-मन-धन देने में कोई कमी नहीं छोडी है। यदि त्रुटियों को न देखें और सोचें तो जनता ने नेतृत्व को पुकारा और ललकारा है – हमें कार्यक्रम दो, ऋषि के मिशन के लिए योजना बनाओ। सगठन को मजबूत करो तो हम सब हर तरह से आपके साथ है।

कार्यकर्ता तो भूखे प्यासे खुले आसमान के नीचे जमीन पर सोकर भी गुजारा कर सकते हैं। सच्चाई और ईमानदारी से आवाज तो दो, कुछ करो तो सही।

इसी सम्मेलन मे श्री शिव भगवान लाहोटी, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्रीमती ऊषा अरोडा आदि को भी महासम्मेलन मे विशेष सहयोग के लिए सम्मानित किया गया।

पृष्ठ ० का शेष

निष्कर्ष – (१) नाना रूपधारी प्राणियो और पदार्थों के धर्म को जानकर उनका उपयोग करने वाला मनुष्य, आत्मीयजनों के सहयोग से, आगे ही आगे बढता है।

(२) स्त्री पुरुषो के सरल आवागमन और निर्वाह के लिए जो अन्नादि का दान और सहयोग प्रदान करता है, वह अन्न और बल से सम्पन्न रहता है, और अपने धर्मकृत्यों की बदौलत, पुत्र पौत्रादिसन्तति और सहयोग कर्त्री प्रजा के सहयोग से फूलता जाता है।

अर्थ पोषण –

मन्त्र ७– धावा पृथिव्यौ – द्युलोक और पृथ्वीलोक, पुरुष और स्त्री, मस्तिष्क और शरीर। मस्तिष्को धौ पृथिवी शरीरम्/ अथर्व पुरन्धी, धिषणै, रोदसी, रजसी, सदसी, चम्बौ, पार्श्वौ, अदिती, दूरे अन्ते, अपारे, इतयादय धावा पृथिवी नामानि। नि० ३–३० मन्त्र ६ इन्द्र वरुणौ – मित्रावरुणौ प्राणा पानौ। जै० १–१०८ प्राणो वै मित्रोऽपानो वरुण। का ६२१ – १ प्राण एवेन्द्र। शत १२–८१–१४ य सइन्द्रोऽसौस आदित्य। शत ८–५–३–२

– श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-४

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष . ३३६ ०१५०** के लिए प्रकाशित।

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक २९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ६ अगस्त से १२ अगस्त, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण के लिए संकल्प दिवस समारोह सम्पन्न

संकल्प पत्र हस्ताक्षर अभियान आन्दोलन प्रारम्भ करने का संकेत

श्री जगमोहन को मन्त्रिमण्डल से हटाने की मांग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान् पर एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण को लेकर सकल्प दिवस का आयोजन, ध्वस्त मन्दिर स्थल पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता कहा कि शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन का अडियल रुख इस सारे मामले मे बाधक बन रहा है। इसके बावजूद भी हम हर सम्भव प्रयास के द्वारा समाधान की तलाश कर रहे है।

श्री वेदव्रत शर्मा ने श्री वेदप्रताप वैदिक का विशेष उल्लेख करते हुए निर्णय न लिया तो बाध्य होकर हमे श्री जगमोहन के साथ साथ केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन छेडना पडेगा। इस स्वाभाविक तौर पर भाजपा को एक राजनैतिक दल के रूप मे अपूर्णीय क्षति होगी।

सुविख्यात वैदिक विद्वान आर्य हर बीमारी को पहले दवाइयो से ठीक करने का प्रयास किया जाता है और दवाइयो से भी यदि बीमारी नहीं दूर होती तभी शल्य चिकित्सा की जाती है। इसी प्रकार इस विवाद को हल करवाने के लिए भी हमे कूटनीति के अन्तिम प्रयास तक लगे रहना चाहिए,

सुप्रसिद्ध पत्रकार डॉ० वेदप्रताप वैदिक आर्यसमाज मिण्टो रोड पर सकल्पकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए। मचस्थ बाए से दाए - सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, प्रि० चन्द्रदेव जी, सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प्रो० शेरसिह एव आचार्य भद्रकाम वर्णी। आर्यसमाज मिण्टो रोड मे सकल्प दिवस के अवसर पर विशेष यज्ञ का एक दृश्य।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप- प्रधान प्रो० शेर सिह ने की और सचालन सभा मन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने किया।

श्री वेदव्रत शर्मा ने उपस्थित आर्यजनो को सभा अधिकारियो एव अन्य आर्यनेताओ द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासो की जानकारी देते हुए कहा कि वे लगातार श्री जगमोहन के ही नही अपितु प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एव गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी से सम्पर्क बनाए हुए हैं और उनके प्रयासो मे आशा की किरण नजर आ रही है।

सभा मन्त्री ने कहा कि अब आर्यजनो के धैर्य का बाध भी टूट रहा है, यदि सरकार ने यथाशीघ्र कोई समुचित तपस्वी सुखदेव ने अपने सम्बोधन मे कहा कि समूचा आर्यजगत परमात्मा की आज्ञाओ का पालन करने मे लगा हुआ है। अत कोई कारण नहीं कि परमपिता परमात्मा हमारी प्रार्थनाओ को स्वीकार न करे और हमारे लक्ष्यो की प्राप्ति मे सहयोग न करे।

दिल्ली सभा के उप प्रधान प्रि० चन्द्रदेव जी ने कहा कि जिस प्रकार यदि किसी ओर से भी सफल होने का मार्ग नजर न आए तो आन्दोलन करने से भी हम पीछे नहीं हटेगे।

स्वामी अग्निवेश ने कहा कि यह हमारे सामने एक परीक्षा की घडी है। इसमे यदि आन्दोलन से हम सफल होते हैं तो इसका अर्थ होगा कि एक तरफ इसी स्थल पर मन्दिर बनेगा तो दूसरी तरफ भाजपा की कब्र भी यहा खोदी जाएगी। – शेष पृष्ठ ६ पर

सत्य हमारे आचरण में आए

– श्रीराम शर्मा आचार्य

जिन्होने सत्य को जीवन में उतारा है, आचरण मे ढाला है, उन्हीं के कार्य सफल हुए हैं। जिन्होने जीवन भर अहिंसा व्रत का आचरण किया है, ऐसे लोगो के प्रति लोग बैर-भाव छोड देते हैं। जिन्होने जीवन मे अस्तेय का व्रत लिया है, उन्हे धनाभाव कभी नहीं रहा। सत्याचरण अपनाने वाले को ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी होना स्वाभाविक है।

सत्य बोलना, सत्य आचरण करना और प्रत्येक कार्य को सत्य की कसौटी पर कसकर करना, ये तीनो बाते भिन्न हैं। सत्य बोलना आसान है और कितने ही लोग प्रतिदिन सत्य बोलते हैं, किन्तु आचरण सत्य से भिन्न होने के कारण उनके जीवन में न कोई फल निकलता है, न उनके सत्य का चमत्कार उनके जीवन में उन्हें दिखाई देता है, क्योकि मन, वचन और स्वभाव मे भिन्नता बनी रहने से योग नहीं बनता और कोई फल नहीं निकलता। गाधी जी ने जिस सत्य को अनुभूत किया और आचरण मे उतारा, उसके बल-बूते वह ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला सके, अन्यथा गाधी जी से पहले भी कितने ही लोग सत्य बोलते थे और महात्मा भी थे। सत्य दैवी सम्पदा और ईश्वर के समतुल्य है जिन्हे यह विश्वास होता है, अटूट श्रद्धा होती है, ऐसा सत्य जीवन मे फलदायी होता है।

व्यक्तित्व विकास के लिए मन, वाणी और कर्म की एकता सधनी चाहिए, किन्तु मन, वाणी और कर्म मे एषणा, अहन्ता और लोभ आदि अनेक ऐसे विग्रह उत्पन्न करते हैं जो व्यक्तित्व का विकास नहीं होने देते। सत्य वाणी का तप है। जिनके मन, वाणी और कर्म की एकता सध चुकी होती है, उन्हे सत्य का साक्षात्कार होता है।

सत्य का मूलाधार मनुष्य का निज स्वभाव है। चित्त में मानव की अभिरूचि, शक्ति, आवेश आदि प्रवृत्तियों का समावेश होता है। स्वभाव आनुवाशिक सस्कार, सामाजिक सयोग, शिक्षा और सयम से बनता है। इसलिए गीता मे कहा गया है कि जैसा स्वभाव वैसा मनुष्य। स्वभाव जितना सरल, कुठामुक्त, पूर्वाग्रहरहित, शान्त तथा सत्याचरण से युक्त होगा, मनुष्य उतना ही देवत्व मे अभिपूरित होगा। सत्य सामुदायिक नहीं, व्यक्तिगत विषय है। सत्य सीखने का नहीं, बोलचाल, दिखावे और प्रदर्शन का नहीं अनुशीलन और आचरण का विषय है। सत्यान्वेषी को सदैव मन की चालाकी और चतुराई पर ध्यान रखना चाहिए। जब भी चूक होगी, तब मन की ओर से सत्याचरण मे ऊपरी दिखावा अथवा किसी प्रकार की चालाकी हस्तक्षेप कर देगी। यदि चालाकी चली जा रही होगी, तो निश्चय ही व्यक्तित्व विकास अथवा किसी प्रकार की प्रगति की आशा नहीं की जानी चाहिए। व्यक्ति को निरन्तर आत्म-पर्यवेक्षण करना और अपने पर सयम बरतना चाहिए। सत्य को धर्म का प्रबल लक्षण माना गया है पर उसका अर्थ मात्र सच बोलने तक ही सीमित नही है। मोटे तौर पर सच बोलने के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। जो बात जैसी सुनी या समझी है, उसे उसी रूप मे कहना, सच बोलना माना जाता है। सामान्य प्रसगो मे यह ठीक भी है। इस नीति को अपनाने वाले भरोसेमन्द माने जाते हैं। उनका कथन सुनने के उपरान्त असमजस, अविश्वास नहीं रहता है। किन्तु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि 'सत्य बोलना' धर्म का एक छोटा-सा अग है। वास्तविक सत्य वाणी तक सीमित न रहकर, जीवन के समस्त विधि-व्यवस्थाओ मे समाहित है। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार उससे पूरी तरह प्रभावित हो रहा हो, तो समझना चाहिए कि सत्य को पहचाना एव अपनाया गया है। वास्तविकता तो यह है कि हमारा समूचा आचरण, समूचा जीवन सत्यमय होना चाहिए।

दिव्य ज्योति के दर्शन

कार्तिक अमावस्या ३० अक्तूबर, १८८३ के दिन महर्षि दयानन्द को दिए गए भयकर विष के कारण चिकित्सको ने महाराज के जीवन की सभी आशाए छोड दीं। अजमेर के अग्रेज सिविल सर्जन न्यूमैन महाराज की दशा देखकर आश्चर्य मे पड गए। विष का प्रभाव सारे शरीर पर छाया हुआ था। रोम-रोम मे अन्तर्दाह था। उस कष्टदायी गम्भीर अवस्था मे साधु शान्त थे। साहस और सहनशीलता की पराकाष्ठा थी। भक्तजनो ने महाराज से पूछा – **"आप कैसा अनुभव कर रहे हैं?"** शान्त भाव से महाराज ने उत्तर दिया –**"एक मास के बाद अच्छा अनुभव कर रहा हू।"** एक भक्त जीवन दास ने कहा – **" आप कहा हैं?"** महाराज का उत्तर था – **"ईश्वरेच्छा में।"** स्वामीजी ने कहा– **''आत्मानन्द तुम क्या चाहते हो?"** शिष्य ने उत्तर दिया –**"ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप अच्छे हो जाए।"** महाराज ने सात्वना देते हुए कहा – **"यह देह पंचभौतिक है, इसका अच्छा क्या होगा?"** महाराज ने पूछा – ''आज कौन सा मास पक्ष और दिन है?" भक्त ने सूचना दी– **"महाराज, आज कार्तिक मास की अमावस्या है, दिन मंगलवार है।"**

सुनकर महाराज ने ईश्वरस्तुति प्रारम्भ की, गायत्री मन्त्र का उच्चारण कर कहा– **"हे दयामय, सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अद्भुत तेरी लीला है।"** एक बार श्वास रोक कर सदा के लिए निकाल दिया। दीपमालिका की सन्ध्या को महर्षि दयानन्द सरस्वती इहलीला समाप्त कर ज्योतिर्मय प्रभु की शरण में चले गए।

भक्तजन निहारते रह गए। पाश्चात्य विज्ञान के अध्येता प० गुरुदत्त विद्यार्थी प्रथम बार स्वामीजी के दर्शन करने आए थे। उनका ईश्वर पर विश्वास कम था। भक्तजनो के साथ योगी की लीला देख रहे थे। सबको देखकर यह आश्चर्य हुआ कि असह्य वेदना और अन्तर्दाह में भी योगी आनन्दमग्न है जैसे कोई दिव्य शक्ति आह्वान कर रही हो। योगी की वेदनामयी विदाई से प० गुरुदत्त जी तथा दूसरे भक्तो को दिव्य शक्ति के दर्शन हो गए। अन्धकार नष्ट हो गया। उस दिन पाश्चात्य विज्ञान के अध्येता प० गुरुदत्त दिव्य ज्योति के दर्शन से पूर्ण आस्तिक और ईश्वर विश्वासी बन गए।

– नरेन्द्र

वेद- बांसुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

श्रीकृष्ण की याद दिलाने फिर आई जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

शिशुपाल, कस, जरासघ व दुर्योधन का हुआ सहार।
श्री कृष्ण ने मिटा दिया जग से असुरों का अत्याचार।।

सब दुनिया को प्यार सिखाने फिर आई जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

दीन-हीन-सी दशा सुधारी सुदामा प्यारे मित्र की।
बन समुद्र करुणा उमडी थी उनके चित्त पवित्र की।।

'मित्र बने कैसे?' यह सिखाने आई फिर जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

वीर बली अर्जुन जैसा भी कैसे हिम्मत देता हार।
जीवन के इस महासमर में जब ममता की पडती मार।।

सावधान विषयो से करने फिर आई जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

सुख-दुख मे सम रहना सीखो, प्रसन्न वदन जीना सीखो।
कर्मों के फल की न सोचो, कर्त्तव्य कर्म करना सीखो।।

'जीवन श्रेष्ठ' की कला सिखाने फिर आई जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

आर्यों, सब गुण गाए मिलकर योगीराज महान के।
गीता-ज्ञान से कर्म हो जाए सुन्दर हर इन्सान के।।

'सुभाष' जगाने आई फिर से हम सबको जन्माष्टमी।
वेद-बासुरी सबको सुनाने फिर आई जन्माष्टमी।।

– १५६, ए०जी०सी०आर० एन्कलेव, दिल्ली- ९२

हमारी स्वाधीनता योग-क्षेमकारी हो : सभी सुखी हों

योगक्षेमो न कल्पताम्।। यजु० २२/२२
हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया.।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।
विश्व मे सब प्राणी सुखी हो, स्वस्थ हो, भरपूर हों। दृष्टि सुन्दर भद्र देखे, क्लेश से सब दूर हो।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतं स्मर।।
यजु० ४०/१५
हे कर्मवीर, ईश्वर को स्मरण कर, अपने कर्मों को याद कर।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

अधिक दृढ़ता अपेक्षित : इतिहास की सीख

ब्रिटिश इतिहासकार विन्सेण्ट ए स्मिथ ने अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया – भारत के प्राग इतिहास मे लिखा है – दो हजार साल से भी अधिक हुए भारत के प्रथम सम्राट ने वह वैज्ञानिक सीमा प्राप्त कर ली थी जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ मे आहे भरते रहे और १६-१७वीं सदी के मुगल सम्राट भी कभी पूर्णता के साथ प्राप्त नहीं कर सके। यह वैज्ञानिक सीमा सम्राट चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस के साथ एक सन्धि करके प्राप्त की, जिसकी मुख्य शर्त इस प्रकार थी– सम्राट चन्द्रगुप्त सेल्यूकस को ५०० हाथी देगा और बदले मे सेल्यूकस चन्द्रगुप्त को परोपनिसकी वर्तमान अफगानिस्तान, हिन्दकुश पर्वतमाला, आकोशिया, कधार आटिया–हेरात, जड्रोसिया वर्तमान बिलोचिस्तान के चार प्रान्त देगा। इन चार प्रदेशो के सम्मिलित होने से ब्रिटिश इतिहासकार के अनुसार भारत के प्रथम सम्राट ने भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे उस वैज्ञानिक-भौगोलिक सीमा को प्राप्त कर लिया, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी आहे भरते रहे और जिसे मुगल शासक भी कभी पूर्णता के साथ प्राप्त नहीं कर सके थे। १९४७ मे भारतीय जनता के स्वातन्त्र्य सघर्ष से विवश होकर ब्रिटिश शासक भारत छोड गए थे, परन्तु भारत छोडते समय वे भारत के दोनो बाजू काफी बडे भूभाग के साथ पृथक् कर गए थे। दोनो बाजुओ के प्रदेशो मे पाकिस्तान बना, परन्तु उसने यत्नपूर्वक अपना भारत विरोध स्थिर रखा। अप्रैल, १९५३ मे प० नेहरू ने ठीक ही कहा था कि कश्मीर मुद्दे पर अधिकृत स्तर पर बहस से कुछ निकलने वाला नहीं है। हा, उन्होने इस तथा दूसरी समस्याओ के समाधान के लिए शिखर-वार्ता की महत्ता पर बल दिया था। २१ फरवरी, १९९९ को श्री वाजपेयी ने नवाज शरीफ के साथ लाहौर घोषणा पत्र के सभी मुद्दो और जम्मू-कश्मीर का मुद्दा सुलझाने का विचार प्रकट किया था। १९६७ मे भारत के विदेश मन्त्री श्री एम०सी० छागला ने पाक उच्चायुक्त अर्शद हुसैन को एक प्रारुप दिया था, जिसमे ताशकन्द घोषणा की दृष्टि से दोनो देशो की सभी समस्याओ को सलझाने की व्यवस्था थी। १९७१ मे युद्ध के बाद भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी और पाक नेता जुल्फिकार अली के मध्य शिमला समझौता हुआ था। फिर १९९९ मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और पाक शीर्ष नेता नवाज शरीफ ने शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

जुलाई, २००१ के मध्य भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह परवेज मुशर्रफ के मध्य आगरा मे शिखरा-वार्ता हुई। खेद की बात है कि यहा पर पाक तानाशाह सघर्ष का मुख्य मुद्दा कश्मीर की समस्या कहते रहे, जबकि भारतीय प्रधानमन्त्री का कथन था कि सीमा पार से पाकिस्तान जिस आतकवाद को बढावा दे रहा है, उसके कारण समस्या सुलझ नहीं रही है, प्रत्युत अधिक अलझ गई है। वैसे, १९७१ के युद्ध मे निर्णायक विजय के बाद ऐसा अवसर अवश्य आया था जब समस्या के स्थायी समाधान की व्यवस्था हो सकती थी। उस समय पाकिस्तान के एक लाख युद्ध बन्दी भारत मे कैद थे और उसका बडा भूभाग भी भारत के नियन्त्रण मे था, कहीं अच्छा होता कि इन युद्धबन्दियो को मुक्त करते समय कश्मीर के पाक अधिकृत क्षेत्र की मुक्ति करा ली जाती, इसी के साथ जुल्फिकार अली के साथ समझौते और बगलादेश के नेताओ की सहमति से नए बगलादेश का निर्माण करने की जगह भारत-बगलादेश सघीय शासन अथवा व्यापार, आवागमन, शिक्षा एव रक्षा आदि के क्षेत्रो मे स्थाई सम्बन्धो का शुभारम्भ किया जा सकता था। युद्ध मे निर्णायक विजय के बाद इस प्रकार के स्थाई स्नेह सम्बन्धों को जोडा जा सकता था। खेद है कि उस निर्णायक क्षण मे हमारे नीति निर्धारक इस बारे मे चूक गए। प्रेक्षको का कथन है कि विजय की उस घडी मे भारतीय यदि पूर्ण समानता और सद्भाव के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के देशो की स्थाई एकता की कोई कडी जोडते तो सम्भवत किसी को भी कोई आपत्ति नहीं होती। इतिहास के प्रारम्भ से ही समुद्र के उत्तर मे अवस्थित और हिमालय के दक्षिण मे विद्यमान भौगोलिक इकाई भारत कहलाती रही हे और यहा की जनता भारतीय कही गई है। भारत के पुराने इतिहास मे मुगलो और ब्रिटिश शासन मे भी उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र और सिन्धु नदी से सिन्धु सागर तक का राष्ट्र एक ओर सयुक्त रहा है।

अग्रेज भारत छोडते समय भारत को निर्बल करने के लिए समीपस्थ प्रदेशो के साथ उसके दोनो बाजू काट गए थे। लाहौर और शिमला घोषणा-पत्रो से उपमहाद्वीप के देशो के आपसी सम्बन्ध सुधारने का अवसर आया था। जुलाई के मध्य मे भारतीय प्रधनमन्त्री श्री वाजपेयी और पाक तानाशाह परवेज मुशर्रफ की बातचीत से इस सम्बन्ध मे आशा बधी थी। यद्यपि दोनो नेताओ की शिखर-वार्ता सफल नहीं हुई, परन्तु दोनो के मध्य सद्भावना एव पारस्परिक सौहार्द की भावना बढी। यह भी अच्छा चिन्ह हे कि दोनो देशो के शीर्ष नेता जल्दी ही पाकिस्तान मे बातचीत कर आपसी मैत्री और अच्छे पडोसी के सम्बन्धो को सुदृढ करने के लिए प्रस्तुत हैं। एक समय समाजवादी नेता डॉ० राम मनोहर लोहिया ने प्रस्ताव रखा था कि भारत-पाक महासघ बनना चाहिए। इसमे कोई सन्देह नहीं कि भारतीय उपमहाद्वीप के भविष्य का निर्धारण इस उपमहाद्वीप के राष्ट्रनेताओ ने लाहौर, शिमला समझौते से इस दिशा मे उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत की थी। भारत-पाक के नेता अगली बातचीत मे बडी सरलता से विवाद की समस्याए सुलझाकर इस भूभाग के देशो का एक महासघ बनाकर एशिया और विश्व के इतिहास के निर्माण मे अपनी यशस्विनी भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो नई सहस्राब्दी एव शताब्दी मे विश्व और एशिया के इतिहास मे भारत की स्थिति फिर से उज्ज्वल हो सकती है यदि इस भूभाग के राष्ट्र नेता अधिक सयम, दृढता और विवेक से कार्य करे, कम से कम इतिहास की यही सीख है।

चिट्ठी-पत्री

गरीबों की रोटी

६० के दशक मे जब भारत अमेरिकी गेहू के लिए उनका मुह ताकता था तो न केवल वह अपना अपमान लगता था, अपितु उससे लज्जा भी आती थी। फिर हरित-क्रान्ति आई। फलत देश मे अनाजो के गोदाम पूरी तरह भर दिए गए और अनाज के क्षेत्र मे हम आत्मनिर्भर हो गए। आज गोदामो मे अनाज रखने की जगह नहीं है, इस जबरदस्त उत्पादन के बावजूद देश की भुखमरी चिन्ताजनक है। लोग एक समय खाकर दूसरे समय तक जीने का मजबूर हैं, आखिर क्यो? देश के सर्वोच्च न्यायालय ने ठीक ही कहा है कि जब अन्न के भण्डार देश में हैं तो सरकार लगर क्यो नहीं लगाती जिससे भूखो को दो वक्त की रोटी तो मिल जाए। भूखी जनता के लिए रोटी की व्यवस्था करना शासन का दायित्व है, जो काम न्यायालय कर रहा है। यह ठीक है कि यह कोई स्थाई समाधान नहीं, पर न होने से कुछ होना तो ठीक है। वर्षा में भीगने या मौसम की दूसरी मार झेलने से जो अनाज खराब होने को है, कम से कम उसे किसी गरीब की प्राणरक्षा में लगाना बेहतर है। हरित-क्रान्ति में अनाज के भण्डारण की समस्या देखते हुए गरीबों की रोटी को भूलना ठीक नहीं।

– इन्द सिह धिगान, २१ गांधी आश्रम, किग्जवे कैम्प, दिल्ली-६

इतिहास न भूलें

बीते कालखण्ड मे भारत-पाकिस्तान ने ताशकन्द शिमला और लाहौर घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत ने सयम रखकर इन समझौतो का पालन किया है, परन्तु पाकिस्तान ने खुलकर उनकी उपेक्षा की है। शिमला समझौता एक तरह से युद्धभूमि मे हुआ समझौता था, लेकिन पाकिस्तान इससे अपने एक लाख युद्धबन्दी छुडा ले गया और यह मौका भी भारत कश्मीर समस्या के समाधान मे प्रयुक्त नहीं कर पाया। लाहौर बस यात्रा की परिणति भी कारगिल युद्ध मे हुई। दोनो देश आपसी बातचीत का कोई कार्यक्रम निर्धारित नहीं कर सके। लेकिन इस वार्ता मे निम्न मुद्दो पर चर्चा होनी चाहिए। सम्पूर्ण कश्मीर भारत मे विलय किया जाए। कश्मीर मे निरन्तर चुनाव होते रहे हैं, कश्मीर भारत का आन्तरिक मामला है।

इसी प्रकार कश्मीर मे जेहाद के नाम पर आतकवादियो को हथियार देना बन्द हो। अच्छा हो कि भारत-पाकिस्तान नियन्त्रण रेखा को आवश्यक परिवर्तनो के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा स्वीकार कर ले और उसे विश्व समुदाय भी समर्थन दे सकता है।

– दुर्गाशंकर शर्मा, तलुजा भवानी, किला चितौडगढ, राजस्थान

ऋग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (११)

कर्मफल अथवा कार्य कारण श्रृंखला

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) दुःख-दरिद्रय का उद्धाकर और सच्चा दाता ही नेता बनने योग्य है

से दग्निर्यो वनुष्यतो नियाति समेद्धारमंहस उरुष्यात्। सुजाता स परिचरनि वीरा।।

ऋ० ७-१-१५

वसिष्ठः। अग्नि :। विराड् गायत्री।

अर्थ – यद्यपि (सुजाता स) उत्तम कुलोत्पन्न अथवा उत्कृष्ट विद्या सम्पन्न (वीरा परिचरन्ति) पराक्रमी वीर पुरुष तो सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु (स इत् अग्नि) नेता बनने योग्य केवल वही है (य वनुष्यत निपाति) जो याचको की कामना-पूर्ति करके उनकी (निपाति) निरन्तर रक्षा करता है और (समेद्धारम्) प्रजा का उद्धार करने वाले अपने सहयोगी को (अहस उरुष्यात्) दु खदारिद्रय दिलाने वाले पाप से बचाता है।

अर्थ पोषण – वनुष्यत – वनु याचने।

उरुष्यात् – रक्षेत्। कौत्स नि०

निष्कर्ष – केवल उत्साही या विद्वान् होने से ही कोई नेता नहीं बन सकता। उसी को नेता बनाना चाहिए, जो अपने अनुयाइयो की मागो और जरूरतों को पूरा करे, और किसी विपत्ति मे पडने पर उनका उद्धार करे।

(२) यांचक बने विद्वान् को इष्ट वस्तु देने वाला देवता है, मनुष्य नहीं

स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजु होति हव्यम्। स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति।।

ऋ० ७-१-२३

वसिष्ठः। अग्निः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (स्वनीक अग्ने) तेजस्वरूप अग्ने । (य) जो जितेन्द्रिय व्यक्ति (अमर्त्ये) कभी न बुझने वाली जाठराग्नि मे (हव्यम्) भक्षण योग्य सात्विक भोजन खाता है अथवा अमृतमय परमात्मा मे दान योग्य मन का दान करता है (स मर्त रेवान्) वह बहुविध धनो (बुद्धि, बल, अन्न, गृह, स्वर्ण, गौ आदि) का स्वामी बनता है। इस प्रकार धनी बने (यम्) जिस मनुष्य को (पृच्छमान) ढूढता हुआ (सूरि अर्थी एति) विद्वान याचक बनकर आता है और ऐसे याचक विद्वान को जो धनी (वसुवनि दधाति) इष्ट वस्तु का दान करता है (स देवता) वह देवता=इष्ट प्रदाता कहलाता है।

अर्थ पोषण – हव्यम् – जुहोति – दानादनया, दान देने योग्य का दान करता है, तथा भक्षण योग्य का भक्षण करता है।

निष्कर्ष – वास्तव मे धनी वह है जो भोगने योग्य सुख-सुविधाआ का सात्विक दृष्टिकोण से भोग करता है, वह धनी नहीं, जिसके पास धन है, लेकिन न उसका उचित भोग करता है और न पात्र को दान देता है। जिस धनी के पास विद्वान् याचक बन कर आता है और इष्ट वस्तु प्राप्त कर लेता है – वही देवता कहलाने योग्य है।

(३) दास प्रज्ञा से कर संग्रह समर्थ व कुल स्त्रियों का सतीत्व रक्षक ही कार्यकाल वृद्धि का अधिकारी होता है

यो देह्यो अनमयद् वधस्नैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार। स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः।।

ऋ० ७-६-५

वसिष्ठः वैश्वानरः। त्रिष्टुप्

अर्थ – (य यह अग्नि) जो महान् नेता (नहुष विश प्रजा) अपने बन्धक (आधीन) राजा की प्रजाओ को (सहोभि बलिहृतश्चकार) अपने बलो के द्वारा कर प्रदाता बना लेता है, (देह्य वधस्नै अनमयत) शत्रु की प्रबृद्ध सेनाओ को, अपने आयुधो और वाधादि दण्ड कृत्यो से झुका लेता है – परास्त करता है तथा (य अर्य पत्नी उषस चकार) उच्च वर्ण की पत्नियो को उषाकाल के समान शान्त, उत्साहप्रद और पवित्र बनाए रखता है – वही (देह्य) कार्यकाल मे वृद्धि के योग्य होता है।

अर्थ पोषण – देह्य – दिह् उपचये – प्रवृद्ध सेनाओ को, वृद्धि के योग्य नहुष – णह् बन्धने – बन्धक आधीन हुए राजा की

निष्कर्ष – जो व्यक्ति (राजा प्रमुख या सेनापति) शत्रु की बडी सेना को झुकाने मे समर्थ हो और उसकी प्रजा से कर वसूल कर सकता हो, तथा अपने उच्च वर्ग की स्त्रियो को उषा के समान पवित्र बनाए रखे, उसी को दोबारा राज प्रमुख या सेनापति बनाना चाहिए।

(४) जिस के जीवन में तू दिव्यताओं को भर देता है, उसका प्रत्येक दिन शुभ है

त्वामीलते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः। यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति।।

ऋ० ७-११-२

वसिष्ठ। अग्नि.। त्रिष्टुप।

अर्थ – (हविष्मन्त मानुषा आ... ...न और भोग करने वाले मनुष्य (सद इत् दूत्या... अजिर ... ईलते) सदा ही प्रगतिशील तुझे अपना ... र्य सा दूत बनाने के लिए तेरी स्तुति करत है। (अग्ने अग्रेणी परिमात्मन् (यस्य बर्हि) ...सके ... न यह मे (देवै आसद) तू अपने दिव्य गुणों के साथ अधि ष्ठित हो जाता है। तदनन्तर (अस्मै अहानि सुदिना भवन्ति) उसके सब दिन शुभ दिन हो जाते है

निष्कर्ष – जिसके जीवन म परमेश्वर का अधि ष्ठान है, उसका प्रत्येक दिन शुभ है। उसे बडी से बडी विपत्ति भी शुभकर दीखती है।

अर्थ पोषण – बर्हि – यज्ञे नानार्थानु० ३६१ दूत – बहुकार्यसाधको राजा भृत्योवा। अजिर – अज गतिक्षेपणयो।

(५) तेजस्वी और बली राज प्रमुख शासित राष्ट्र की समृद्धि अक्षुण्ण रहती है

से दुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्य पृषदश्वा अवाथ। उतेमग्नि सरस्वती जुनन्ति न तस्य राय पर्येताऽस्ति।।

ऋ० ७-४०-३

वसिष्ठः। विश्वेदेवा। भुरिक् पंक्तिः।

अर्थ – विश्वेदेवा – विश्व के रहस्यो को जानने के इच्छुक सभी विद्वान् इस तथ्य को भली-भाति हृदयगम कर ले कि –

१ (य मर्त्यम्) मरण धर्मा शरीर को धारण करने वाले जिस मनुष्य की (पृषदश्वा मरुत) पृषती को अपनी सवारी बनाने वाले मरुद्गण (अवाथ) रक्षा करते हुए बढाना चाहते हैं (सदूत् उग्र) वही तेजस्वी (उ स शुष्मी) और वही बहुबली हो होता है।

२ (उतईम्) और जिसे (अग्नि) सब पुमान् देव (सरस्वती) सब स्त्री देवता तथा (मरुत) सभी सम्बद्ध गण देव (जुनन्ति) अपना ज्ञान देकर उस ज्ञान को कार्य रूप मे प्रवर्तित करने की प्रेरणा देते हैं, (तस्य राय) उस मनुष्य की समृद्धि को (पर्येता न अस्ति) रोकने या नष्ट करने वाला कोई नहीं है।

अर्थ पोषण – अग्नि, सरस्वती और मरुत कहने से सब देवो का ग्रहण होता है, इसलिए इस मन्त्र का देवता विश्वे देवा माना गया है।

मध्यमा वाक स्त्रियः सर्वाः पुमान् सर्वश्च मध्यमः। गणाश्च सर्वे मरुतों गणभेदा पृथक् कृतेः।। यान्येतानि देव जातानि गुणश गाख्यायन्ते। वसवो रुद्रा आदित्या विश्वेदेवा मरुत इति।।

अग्नि पुराण (वैदिक कोष चन्द्रशेखर)

पृषदश्वा मरुत = आध्यात्मिक दृष्टि से – पृषती=देह मे चलना और आनन्द का सेचन करने वाली नाडी प्राण को व्यापक बनाकर जो उसकी सवारी करते है (उस पर शासन करते हैं, वश मे रखते है) अधिदैविक दृष्टि से – पृषती=जल बिन्दु युक्त पक्ति वाली मेघ माला, को व्यापक बनाकर – और उसके वशी बनकर अपनी योजना के अनुसार जहा चाहे, झझावात के साथ तडतडाती मूसलधार वर्षा करात है। आधिभौतिक दृष्टि से – पृषती=नाना रग वाली घोडी, को व्यापकरूप देकर घुड सवार (यानासीन) सैनिक।

निष्कर्ष – जिस राष्ट्र मे – ब्राह्मण लोक चेतना और आनन्द का सेचन करने वाली प्राण साधना मे र... रहता है। क्षत्रलोक–त्रिलोक मे विचरण करने वाले यानो पर सवार होकर शत्रुओं से पूरी तरह रक्षा ...ता है और वैश्यलोक अपने वैज्ञानिको की सहायता, अपनी आव...पकतानुसार मूसलधार वर्षा कर यथेच्छ अन्न उत्पन्न करते हैं, वह राष्ट्र तेजस्वी और बहुबली बनता है। उस राष्ट्र के सब विशेषज्ञ (देव) राष्ट्र की ... ...धृत रहते हैं। अत उसकी समृद्धि को न ...ई नष्ट कर सकता है न रोक पाता है।

(६) सैनिकों का ध्यान रखने वाला राजा, शत्रुओ को तर जाता है

युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिये ईजान स्तरति द्विष । प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति।।

ऋ० ७-५९-...

वसिष्ठःमरुतः। पंक्ति।

अर्थ – (य) जो वशिष्ठ=... ... प्रिये) शुभ शातिमय दिनो मे, हे (मान ... सैनिको । (ईजान) वृद्ध सत्कार, ... कार्य के साथ अभाव ग्रस्तो को दान देता हुआ वराय दाशति) आप के दु ख निवारण तथा भले के लिए पदार्थों का प्रबन्ध करता है, (स) वह (युष्माक अवसा) आपकी प्रीत, प्रेरणा रक्षणादि क्रियाओ द्वारा (क्षय) इस जगत् मे अपने निवास को (मही) अपनी वाणियों और (इष) यथेच्छ अन्नादि भोगो को (प्रतिरते) बढाता है, और परिणामस्वरूप (द्विष तरति) अपने शत्रुओं तथा मन ... न द्वेषो को तर जाता है – पार

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

मनुष्य पाप क्यों करता है ?

– पं० देवेन्द्र विद्यालंकार

वर्तमान युग समृद्धि का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में विपुल समृद्धि दृष्टिगोचर होती है। विज्ञान, दर्शन, कृषि, चिकित्सा एव शिल्पकला की समृद्धि तो छोडिए भ्रष्टाचार, अनैतिकता मूल्यों का अघ पतन एव दुराचार अपने अपने चरमोत्कर्ष पर पहुच रहे हैं। जैसे-जैसे मानव-जाति उन्नति के पथ पर अग्रसर है, वैसे ही पापाचार में भी कोई अवरोध नहीं।

ऐसा भी नहीं है कि वर्तमान युग मे ही पापाचरण बढा है। यदि हम मानव जाति के इतिहास के पृष्ठों को पलटें तो पाएगे कि प्रत्येक युग में पापवृत्तिया प्रबल रही हैं।

ऐसी अवस्था मे यह प्रश्न स्वाभाविक है कि पापवृत्ति का उदगम स्थल क्या है? सबके विरोध करने के बावजूद भी यह पापवृत्ति समाज में क्यों विद्यमान है? वह कौन सा देव है, जिसने दुर्योधन को यह कहने को विवश किया –

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः,
जानाम्य धर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनाऽपि देवेन हृदि स्थितेन,
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

अर्थात् म धर्म जानता हू, लेकिन उसमे मेरी प्रवृत्ति नहीं तथा मै अधर्म भी ज नता हू, किन्तु उससे मेरी निवृत्ति नहीं है। हृदय मे स्थित किसी अदृश्य शक्ति से सकेत पाकर की मै ऐसा करता हू।

कौन-सी है वह शक्ति, जिसके प्रति दुर्योधन सकेत कर रहा है? उचित एव अनुचित का भेदज्ञान होने पर भी क्यो दुर्योधन न अनुचित मार्ग का ही सहारा लिया? न केवल एक दुर्योधन अपितु असंख्य दुर्योधन इस वृत्ति से बधे हैं।

क्यो मनुष्य बार-बार सत्योपदेश सुनने के बावजूद अनैतिकता की ओर कदम बढाता है? क्यो सभी धर्म एव मत-मतान्तरो की सत्योपदेशनाओ के बावजूद मनुष्य पाप की दल-दल मे घिसटता जाता है।

हजारो वर्षो से धर्म का प्रयास मनुष्य को पाप से रोक रहा है। मनुष्य को सुपथ पर लाने हेतु ही नरक एव स्वर्ग की कल्पना की गई। उसे अनेक प्रकार के भय दिखाए गए, ताकि वह अशुभ के प्रति कदम न उठाए। फिर भी मानव मन पापाचरण से पृथक् होने मे असमर्थ है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से यही इच्छा प्रकट की थी–

अथकेन प्रयुक्तोऽय पापं चरति पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।
गीता ३/३६

अर्थात् हे वृष्णिवशी ! मनुष्य न चाहते हुए भी पाप कर्मों क लिए प्रेरित क्यों होता है? ऐसा लगता है कि उसे बलपूर्वक उधर लगया जा रहा हो।

श्री कृष्ण ने इस बात का उत्तर भी बडे वैज्ञानिक ढग से प्रस्तुत किया। उन्होने मनुष्य की पापमूलक वृत्ति का मूल कारण बताते हुए कहा –

काम एष क्रोध एष राजोगुण समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्।।
गीता ३/३७

अर्थात् हे अर्जुन, इसका कारण रजोगुण से उत्पन्न काम है, जो बाद मे क्रोध का रूप धारण करता है और जो इस ससार का सर्वभक्षी पापी शत्रु है।

यहा पाप का मूल कारण रजोगुण कहा गया है। इस रजोगुण से ही काम उत्पन्न होता है, काम से क्रोध एव क्रोध से फिर पापमयी वृत्तिया मन के अन्दर उत्पन्न होती हैं। गीता मे गुणत्रय (सत्व, रजस्, तमस्) की विस्तृत चर्चा की गई है। वहा पर इन तीन गुणो के स्वरूप की चर्चा की गई है। ये तीनो गुण प्रकृति के प्रत्येक अणु मे विद्यमान हैं, चूकि हमारा शरीर भी प्रकृति के कोष्ठो से निर्मित है। अत हमारे अन्दर भी तीनों विद्यमान हैं।

सत्व गुण का लक्षण है– हल्कापन, प्रकाश, सौम्यता। रजोगुण का लक्षण है– चचलता, गति। तमस् का लक्षण है– भारीपन, आलस्य, अधकार।

जो भी गुण हमारे शरीर मे इतर गुणो की अपेक्षा अधिक मात्रा मे होता है, उस गुण का प्रभाव हमारे शरीर पर उतना ही ज्यादा होगा। इसलिए प्राय हम देखते हैं कि एक दिन मे ही कभी-कभी हमारे अन्दर अनेक वृत्तिया जन्म लेती हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि यदि हमारे अन्दर सत्वगुण का बाहुल्य हो तो हम अनायास ही अपने को हल्का अनुभव करते हैं। शरीर मन एव बुद्धि में लघुता आ जाती है, लेकिन इसके विपरीत यदि रजोगुण शरीर मे प्रबल हो तो हम आपने आप को चचल एव अधिक गति युक्त पाते हैं। कभी-कभी हमारे अन्दर जो भारीपन एव आलस्य का बाहुल्य होता है, उसका कारण तामसिक वृति का प्राबल्य है।

यद्यपि इन तीनो गुणो की हमे अत्यन्त आवश्यता है, क्योकि किसी एक गुण के भी नितान्त अभाव के कारण हमारा सांसारिक जीवन सम्भव नहीं हो सकता, फिर भी हमार अपना निश्चय होता है कि हम अपने जीवन को दिव्यता, मानवता एव ज्योति से पूर्ण करना चाहते हैं या दुराचार, पाप एव निम्न वृत्तियो से? उसी दृष्टि से हम अपने अन्दर उस-उस गुण की वृद्धि करे।

अर्जुन द्वारा की गई जिज्ञासा का उत्तर श्री कृष्ण ने बडे ही सहज एव वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया था। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कोरा उपदेश नहीं दिया कि पाप छोड दो, धर्म का पालन करो, सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो आदि आदि। अपितु उन्होने उसके मूल कारण में झाकने का प्रयास किया एव यह निष्कर्ष निकाला कि जब-जब हमारे अन्दर रजोगुण का उद्वेग उत्पन्न होगा तब-तब हमारे शरीर, मन एव बुद्धि मे चचलता आएगी, जो काम को उत्पन्न करेगी। जैसा कि श्रीकृष्ण ने अन्य स्थान पर कहा है –

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते काम: कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधात् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रम।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।
गीता २/६२–६२

यहा पर यद्यपि काम की उत्पत्ति का कारण विषय के प्रति आसक्ति कही गई है, तथापि आसक्ति का मुख्य कारण भी मन की चचलता ही है जो कि रजोगुण के अतिरेक का परिणाम है।

श्रीकृष्ण ने जब यह स्पष्ट कर दिया कि मन की विभिन्न वृत्तियाँ, विभिन्न गुणो के कारण होती हैं तो क्यो न हम अपने अन्दर सत्वगुण की अभीवृद्धि करे। जिससे हम भी दिव्य, श्रेष्ठ एव उत्तम आर्य बने। अपने को स्तवगुणी बनाने के लिए हम निम्न बाते ध्यान में रखे –

१ उचित आहार – एक बहुत ही प्रसिद्ध लोकोक्ति है – जैसा खाए अन्न वेसा होए मन। अर्थात् मनुष्य जैसा अन्न खाएगा, वैसा ही उसका मन होगा। यदि भोजन राजसिक या तामसिक है तो मन भी वैसी ही वृत्ति ग्रहण करेगा। यदि हम सात्विक भोजन करते हैं। तो मन भी वैसा ही हो जाएगा। इसीलिए प्राचीनकाल से ही खान-पान के प्रकार का ध्यान रखा गया। घृत, दुग्ध, दही, कन्द-मूल एव फल के सेवन पर बल तथा मद्य-मासादि को वर्जित किया गया था। प्राचीन ऋषि सात्विक आहार-विहार के करण ऋतम्भरा प्रज्ञा एव समाधि तक पहुचे थे एव अनेक गुप्त रहस्यो को प्रकट किया था। सात्विक वृत्ति के कारण ही वे मन के गुलाम न होकर मन के मालिक बने थे।

लेकिन इसके विपरीत आज हम समाज मे चारो तरफ लूट-खसोट, चोरी, बलात्कार, असन्तोष एव दूसरे पाप देख रहे हैं तो इसका कारण यही है कि यहा सर्वत्र दूध की नदियो के स्थान पर शराब, सुरा,व्हिस्की एव शैम्पेन का अधिक प्रयोग हो रहा है तथा घी-दूध के स्थान पर चिकन, मटन, चिकन तन्दूरी, फिश, सीफूड एव फिश काटा के भण्डार नजर आते हैं। एक ओर हम विकास का नारा देते हैं तो दूसरी ओर मनुष्य ने वही आदमपूर्व का भोजन अपनाया है। रही-सही कसर तथाकथित विकसित आयातित सस्कृति पूरह कर रही है। आज प्रतिदिन प्रयोग मे आने वाली वस्तुए (ब्रेड, कोल्ड ड्रिक्स) भी किसी न किसी रूप मे अभक्ष्य पदार्थो से मिश्रित हैं। ऐसे मे यदि हम वास्तव मे अपना मन अधोमार्ग से हटाना चाहते हैं तो हम सर्वप्रथम शास्त्रविहित भक्ष्य पदार्थों का ही सेवन करे।

२ उचित विहार – उचित आहार के साथ उचित विहार भी हमारे मन पर उचित प्रभाव डालेगा। हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों से जो कुछ भी ग्रहण करते हैं, वह हमारा भोजन है। अत न केवल हम उचित आहार करें, अपितु उचित विहार भी करे। पाच ज्ञानेन्द्रियों से हम जो कुछ ग्रहण करें, वह सब उचित हों। कानो के द्वारा आप उचित भोजन ग्रहण करे। आप डिस्को एव पॉप म्यूजिक सुनकर अपने आप मे उत्तेजना से भर सकते हैं एव पवित्र अनहतनाद और वेदवाणी सुनकर उसे मौन मे भी ले जा सकते हैं। देखने को आप कामासक्त खजुराहो की मूर्तिया भी देख सकते हैं और चाहे तो ध्यानस्थ महात्मा बुद्ध एव शिव की मूर्तिया देखकर अपने आप को उत्कर्ष की ओर ले जा सकते हैं। इसी प्रकार आप बाजारु सुगन्धित पदार्थ सूघिए और देखिए मन पर क्या प्रभाव पडता है तथा यज्ञ से उठता हुआ धूआ सूघिए तथा देखिए उसका मन पर क्या प्रभाव पडता है।

रगों का भी हमारे जीवन में बहुत महत्व है, इसीलिए सन्यासी के गेरुए वस्त्र को इतनी महत्ता प्रदान की गई। वह मन को निरासक्त बनाने में सहायता करता है। हल्का पीला रग मन को शान्ति देता है। इसके विपरीत गहरा रग मन को अशान्त बनाता है।

३. प्राणायाम – उक्त उपायो के अतिरिक्त मन [illegible] समुन्नति का एक प्रबल उपाय महर्षि पतजलि ने योग[illegible] में बताया है – प्राणायाम।

महर्षि पतजलि ने प्राणायाम की विधि [illegible] बताई है –

प्रच्छर्दननिधारणाभ्यां वा प्राणस्य।
– योगदर्शन –

अर्थात् श्वास वायु को बाहर निकालकर [illegible] रोकने से मन को शुद्धि एव निर्मलता प्राप्त होती है। पुन-पुन प्राणो को बाहर निकालकर यथाशक्ति बाहर ही रोकने का प्रयत्न करो तथा इस अभ्यास को [illegible] से अधिक बढाते जाए तो कुछ ही समय मे मन की चचलता न्यून होने लगती है एव मन के अन्दर एक असीम शान्ती आएगी। इस प्रयोग से आप स्वत सात्विक बने और समाज और प्रत्येक को सात्विक बनाए।

– श्रीसत्य सनातन वेदमन्दिर,
डी०-१२, सैक्टर ८, रोहिणी दिल्ली-५

पृष्ठ १ का शेष

संकल्प-पत्र हस्ताक्षर अभियान, आन्दोलन प्रारम्भ करने का संकेत

डॉ० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि सभी आर्यजन यदि एक जुट होकर तन मन धन से सहयोग देते हुए इस आन्दोलन मे भाग लेगे तो हम अवश्य ही सफल होंगे।

आचार्य भद्रकाम वर्णी ने कहा कि चाहे बातचीत हो और चाहे आन्दोलन, हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

स्वामी गोरक्षानन्द जी ने कहा कि मैं कई वर्ष पूर्व बडी विकट परिस्थितियो में इस मन्दिर मे रहा हू। जब मैं यहा रहता थ तो हम पर दो दो सौ व्यक्ति हमला करेंगे।

इस सकल्प दिवस पर उपस्थित आर्यजनता से सकल्प-पत्र भी भरवाए गए। इस सकल्प-पत्र का नमूना इसी पृष्ठ के नीचे प्रकाशित किया जा रहा है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्य जनता से आह्वान किया है कि जिन आर्य महानुभावों और आर्यसमाजों ने सकल्प पत्र न भरे हो वे उन्हे यथा शीघ्र भरकर सार्वदेशिक सभा कार्यालय भिजवाए। ✿✿✿

आर्यसमाज मिण्टो रोड पर विशाल जनसमूह संकल्प लेते हुए

जिस सस्था ने उस अग्रेज सरकार के घुटने टिकवा दिए जिसका कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, तो उसके मुकाबले यह मन्त्री क्या बला हैं। एक बार यदि आर्य जन सकल्प ले ले तो सफलता आपके चरण चूमेगी।

सुविख्यात राष्ट्रवादी पत्रकार एव आर्यनेता डॉ० वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि मुझे सरकार के व्यक्तियो से यह सुनकर बहुत हैरानी हुई कि आर्यसमाज के नेता झूठ बोल रहे हैं। मैंने उन्हे विनयपूर्वक समझाया कि आर्यसमाज सत्य का रूप है इसके नेता झूठ नहीं बोल सकते। आर्यसमाज एक धर्म है जबकि सरकार का काम राजनीति है। राजनीति हमेशा धर्म से छोटी ही होती है। मैंने सरकार के प्रतिनिधियो को यहा तक भी कह दिया है कि आपने एक मन्दिर गिराया है कहीं ऐसा न हो कि यह मामला आपकी सरकार गिरा दे।

डॉ० वेद प्रताप वैदिक ने अपने सस्मरण सुनाते हुए कहा कि मैं १२ वर्ष का था तो पहली बार मध्यप्रदेश से चलकर पजाब के पटियाला जिले मे गिरफ्तारी देने पहुचा था और जेल मे रहा। आर्यसमाज के कारण ही एक विचित्र आध्यात्मिक, सामाजिक और राष्ट्रवादी शक्ति मेरे मन मे पैदा हुई। आर्यसमाज का सम्पर्क एक विशाल ताकत देता है हम अब भी सरकार से बातचीत कर रहे है परन्तु इतना विश्वास अवश्य है कि करते थे। उन दो सौ व्यक्तियों से निपटना मुश्किल था परन्तु इस सरकार से निपटना मुश्किल नहीं। उन्होने कहा कि आन्दोलन शुरू होते ही हर व्यक्ति बलिदान के लिए अवश्य आगे आएगा और सफलता के बारे में सोच विचार की आवश्यकता नहीं।

आर्यसमाज दीवान हाल के मन्त्री डॉ० रविकान्त ने कहा कि जगमोहन का सारा जीवन आर्यसमाज से टकराव और फिर माफी मागने से भरा हुआ है। आर्यसमाज ने सदैव इनकी भूलो को माफ किया है। इनके कुछ अच्छे कार्यों को देखकर ही आर्यनेताओ ने हर विकट समय मे इनका साथ दिया।

प० चिन्तामणि ने कहा कि हमें जड को सींचने की ओर ध्यान देना चाहिए केवल फूल पत्तों पर पानी डालने से काम नहीं चलेगा। जगमोहन को तो हमें धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने हमे आन्दोलन का मुद्दा देकर अपने सगठन में एक बार फिर जागृति लाने का अवसर दिया है।

अध्यक्षीय भाषण मे प्रो० शेरसिह ने कहा कि निजाम हैदराबाद ने आर्यसमाज की गतिविधियो पर विचित्र प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए परन्तु मन्दिर तोडने का दुस्साहस वो भी नहीं कर पाया। उन्होने कहा कि जगमोहन का नाम बदल कर जगझूठा रख देना चाहिए और झूठे व्यक्ति को मन्त्रिमण्डल मे रहने का कोई अधिकार नहीं। अत हम जगमोहन को मन्त्रिमण्डल से भी हटाए जाने की माग

ओ३म्
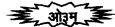
आर्यसमाज मन्दिर, मिण्टो रोड, नई दिल्ली के पुनर्निर्माण हेतु

संकल्प-पत्र

मैं ______________________ आयु

सुपुत्र/सुपुत्री/धर्मपत्नी/शिष्य/शिष्या ______________

निवासी ______________________

____

दूरभाष ______________________

एतद् द्वारा **पूर्ण निष्ठा के आधार पर अपने रक्त एवं ईश्वर की साक्षी के साथ** यह **पवित्र संकल्प** व्यक्त करता/करती हूं कि केन्द्रीय सरकार के शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन के आदेशानुसार १४ अप्रैल, २००१ को गैरकानूनी तरीके से ध्वस्त किए गए आर्यसमाज मन्दिर, मिण्टो रोड, नई दिल्ली के भवन के उसी स्थल पर पुनर्निर्माण हेतु

तन से (आवश्यकता पडने पर शरीर बलिदान),
मन से (पवित्र एव सुदृढ भावनाओ के साथ) एव
धन से (अधिकाधिक साधन सहयोग के साथ)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के आह्वान् पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे किसी भी **कार-सेवा, सत्याग्रह, जेल भरो आन्दोलन** इत्यादि के लिए कर्त्तव्यबद्ध होकर हर संघर्ष मे शामिल रहूगा/रहूगी।

सकल्पकर्ता

हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों का आर्यसमाज दीवान हाल में सम्मान

५ अगस्त, दिल्ली। आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली में रविवार को श्रावणी उपाकर्म एवं हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस प्रात ८ बजे से आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ० योगानन्द शास्त्री खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री दिल्ली, ने कहा कि आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के साथ देश और समाज के वातावरण और कुरीतियो को दूर करने मे भरसक प्रयत्न किया है। आज के वातावरण को सुधारने के लिए आर्यसमाज को आगे आना चाहिए। आर्यसमाज के सामने आज कई चुनौतियां हैं, आर्यसमाज अगर खड़ा हो जाए तो आज भी समाज की विसगति दूर हो सकती हैं।

इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री डॉ० रविकान्त ने उपस्थित जन समूह के साथ हैदराबाद सत्याग्रह १९३८–३९ में शहीद हुए आर्यजनों को दो मिनट मौन रखकर श्रद्धाजलि दी।

इसके पश्चात् हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों एव उनके परिवारजनों का डॉ० योगानन्द शास्त्री जी के द्वारा शाल ओढाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर लगभग ३६ स्वतन्त्रता सेनानियों एव उनके परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया गया।

सत्याग्रह के विषय में सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा कि हैदराबाद में कोई भी हिन्दू अपने मन्दिरो में घण्टें नहीं बजा सकता था, न यज्ञ ही किया जा सकता था। १९३८ से लेकर १९३९ तक यह सत्याग्रह चला जिसमे लगभग तीस हजार लोगो ने भाग लिया। इस दौरान २८ आर्य सत्याग्रही शहीद हुए, अन्त में हैदराबाद के निजाम को झुकना पडा।

इस समारोह मे दिल्ली की आर्य समाजो के अधिकारी एव शिक्षण सस्थाओ के पदाधिकारी शामिल थे जिनमे मुख्य रूप से डॉ० धर्मपाल कुलपति, गुरुकुल कागडी हरिद्वार, प्रिसिपल चन्द्रदेव, महामन्त्री दिल्ली सभा श्री तेजपाल मलिक, श्री राज सिह भल्ला, चौ० लक्ष्मीचन्द, श्रीमती ईश्वरी देवी धवन, श्री जगदीश आर्य तथा स्कूलों के बच्चे शामिल थे। आर्यजनों तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ के बच्चो से सभागार भरा हुआ था।

दिल्ली सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री श्री योगानन्द शास्त्री, हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सैनानी प्रो० उत्तम चन्द "शरर" को सम्मानित करते हुए। साथ में खडे हैं आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री कृष्ण गोपाल दीवान। हैदराबाद सत्याग्रह विजय दिवस पर आर्यसमाज दीवान हाल में आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए डॉ० योगानन्द शास्त्री। सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती।

गायत्री मन्त्र विषयक स्वामी परमानन्द मत समीक्षा

– सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

स्वामी परमानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, पाखण्ड-खण्डन मच, आर्य शिशु मन्दिर, काशीनगर, कोरबा (छत्तीसगढ) द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति चौ० मित्रसैन सिन्धु रोहतक द्वारा प्राप्त हुई। जिसका शीर्षक है – **गायत्री अन्दर बुद्धि बाहर।** यहां इस विज्ञप्ति की प्रश्नोत्तर शैली मे समीक्षा की जाती है।

प्रश्न - गायत्री अन्दर बुद्धि बाहर।

उत्तर – १ स्वामीजी का यह लेख हास्यास्पद ही कहा जा सकता है। कितने ही लोग गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं और उनकी बुद्धि का बहिष्कार दिखाई नहीं देता है। अत स्वामीजी का कथन प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध है।

२ स्वामीजी **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** की व्याख्या मे लिखते हैं – हे प्रजापति ! आप हम लोगो की बुद्धियो को धर्म-मार्ग पर प्रेरित करते रहे। स्वामी जी का मत है कि गायत्री अन्दर और बुद्धि बाहर, और स्वय गायत्री मन्त्र के द्वारा बुद्धि को धर्म मार्ग पर चलने की बात भी लिख रहे है। अत स्वामी जी का उक्त कथन परस्पर विरुद्ध होने से अमान्य है।

प्रश्न - इस मन्त्र को गायत्री कहना झूठ है। गायत्री मन्त्र कहना अति झूठ है। गायत्री महामन्त्र कहना महाझूठ है। वेद की माता कहना पागलपन है। सावित्री कहना शेखचिल्लीपन है।

उत्तर – १ आर्षी गायत्री छन्द मे २४ अक्षर होते हैं। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र मे २३ अक्षर हैं। छन्दशास्त्र के इयादिपूरण (अं० ३ सू० २) के प्रमाणानुसार जिस छन्द के किसी पाद मे एक अक्षर की न्यूनता हो उसे इ आदि वर्णों की योजना से यहा पूर्ण किया जाता है। अत यहा वरेण्यम् मे इ वर्ण की योजना से वरेणियम् मानकर २४ अक्षर पूरे हो जाते हैं। अत यह गायत्री छन्द है।

२ यह मन्त्र वेदो मे समान रूप से पाया जाता है अत यह महामन्त्र कहलाता है। **'भूर्भुव स्व'** इन तीन महा व्याहृतियो के योग से इसे वेदमाता भी कहा जाता है क्योकि भू ऋग्वेद से, भुव यजुर्वेद से और स्व सामवेद से व्याहृत किया गया है। इस मन्त्र का देवता सविता है, अत इसे सावित्री मन्त्र कहते हैं। स्वामीजी ने अपने कथन के समर्थन मे कोई और हेतु नहीं दिया, अत उनका कथन अप्रमाणिक है।

प्रश्न - यह मन्त्र दैवी बृहती छन्द और मध्यम स्वर है, और निचृद् गायत्री छन्द और षड्ज स्वर में है। दो छन्दो और दो स्वरों से संयुक्त मन्त्र की संज्ञा केवल वेदमन्त्र में ही होगी, किसी छन्द की नहीं।

उत्तर – गायत्री मन्त्र मे भूर्भुव स्व ये तीन महाव्याहृतिया हैं। इन महाव्याहृतियो का विशेष मन्त्र के साथ प्रयोग किया जाता है। ये महाव्याहृतिया मूलमन्त्र से बहिर्भूत होती है। जैसे कि मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म् का उच्चारण किया जाता है, वह मन्त्र से बहिर्भूत होता है, उसकी गणना मन्त्र मे नहीं की जाती है। वैसे ओ३म् का छन्द दैवी गायत्री छन्द है। ऐसे ही भूर्भुव मे ४ अक्षर हैं अत इसका दैवी बृहती छन्द है और षड्ज स्वर है। तत्सवितुर्वरेण्य इस गायत्री छन्द मे २३ अक्षर हैं, जिसे पूर्वोक्त सूत्र प्रमाण से इ वर्ण की योजना करके यह २४ अक्षरो वाला गायत्री छन्द बनता है। इसका षड्ज स्वर है। इ वर्ण की योजना से २४ अक्षरो की सम्पूर्ति होने से यह निचृत् गायत्री छन्द नहीं है अपितु २४ अक्षरो की सम्पूर्ति होने से यह निचृत् गायत्री छन्द नहीं हैं अपितु २४ अक्षरो वाला आर्षी गायत्री छन्द है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 9-10/08/2001 दिनांक ६ अगस्त से १२ अगस्त, २००१ Licence to Post without prepayment, Licence No U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 9-10/08/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेज   लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

पृष्ठ ७ का शेष भाग

गायत्री मन्त्र विषयक स्वामी परमानन्द मत समीक्षा

प्रश्न - इस मन्त्र से यज्ञों में आहुति भी नहीं दी जा सकती है और इस मन्त्र का जप भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि यज्ञों में उन मन्त्रों का विनियोग होता है जो प्रार्थना, स्तुति, उपासना परक होते हैं।

उत्तर – स्वामीजी ने इस मन्त्र ८. यजुर्वेद (३६ ३) का पता देकर उद्धृत किया है। यजुर्वेद यज्ञ का वेद है – यजुर्भिर्यजन्ति। अत इस मन्त्र से यज्ञो मे आहुति दी जा सकती है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं जो अधिक आहुति देना चाहे तो गायत्री मन्त्र से आहुति दे।

जो मन्त्र जिह्वा से उच्चारण किया जाता है उसे मन्त्र पाठ कहते हैं और जो मन्त्र मन मे पढा जाता उसे मन्त्र जप कहते हैं गायत्री मन्त्र का जप करने मे कोई बाधा नहीं है।

वेद के किन्हीं मन्त्रो मे स्तुति, किन्हीं मे प्रार्थना और किन्हीं मे उपासना मिलती है। गायत्री मन्त्र मे वरेण्यम्, भर्ग आदि कहकर ईश्वर की स्तुति धीमहि कहकर उपासना और प्रचोदयात् कहकर बुद्धि की प्रार्थना की गई है। गायत्री मन्त्र मे ईश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना तीनो का वर्णन होने से यह मन्त्र अति उत्तम माना जाता है। स्वामीजी ने यज्ञो मे मन्त्र विनियोग की जो परिभाषा की है, उसके अनुसार यह मन्त्र यज्ञो मे आहुति के सर्वथा अनुकूल है।

प्रश्न - उपदेशात्मक मन्त्रों का केवल अनुकरण ही किया जाता है। जो केवल उपदेशों का अनुकरण न करके जप करते हैं, वह अपनी बुद्धि का विनाश करते हैं।

उत्तर – वेद मे जिन मन्त्रो के द्वारा मानव को उपदेश किया गया है उस उपदेश का अनुकरण अर्थात् आचरण करना चाहिए, यह बात तो ठीक है किन्तु उन मन्त्रो के जप से मानसिक चिन्तन से बुद्धि का विनाश होता है, यह कथन सर्वश्री मिथ्या है। तज्जपस्तदर्थभावनम् (योग० १२८) के अनुसार चित्तवृत्ति के निरोध के लिए ओ३म् का जप करना उपासक का प्रथम चरण है जप के पश्चात् ओ३म् के अर्थ की चित्त मे भावना देना उपासक का द्वितीय चरण है, अत जप को निरर्थक कैसे कहा जा सकता है।

गायत्री मन्त्र का अर्थ – स्वामीजी ने गायत्री मन्त्र का अर्थ राजापरक लिखा है। वेदमन्त्रो के पारमार्थिक और व्यावहारिक भेद से दो प्रकार के अर्थ होते हैं। गायत्री मन्त्र का विनियोग उपासना प्रकरण मे किया गया है अत इसका अर्थ पारमार्थिक है – ईश्वरपरक नहीं।

स्वामीजी ने महाव्याहृतियो का अर्थ उलट पुलट किया है। भू का अर्थ कर्मकाण्ड किया है जबकि इसका अर्थ ज्ञानकाण्ड है – ऋग्वेद है। भुव का अर्थ ज्ञानकाण्ड किया है जबकि इसका अर्थ कर्मकाण्ड है – यजुर्वेद है।

आशा है स्वामी परमानन्द सरस्वती अपने मन्तव्य पर पुनर्विचार करेगे, वेदविरुद्ध बातो का प्रचार नहीं करेगे, वेदानुकूल प्रचार के लिए अपने स्वाध्याय को बढायेगे।

– *साभार सर्वहितकारी*

पृष्ठ ४ का शेष भाग

निष्कर्ष – राष्ट्र के लिए प्राणो का त्याग करने को उद्यत दिव्य सैनिको का जो राजा आदर व परिचर्या करता है, सस्थाओ का सगठन पुष्ट करता है और अभावग्रस्तो की सहायता करता है, उसके निवास, भूमि, वाणी अन्न और भोगो मे वृद्धि होती है और उसके द्वेष करने वाले स्वय परास्त हो जाते हैं।

अर्थ पोषण – नही पृथिवी, नि० १–१, वाणी, नि०१–११। इषम् अन्नम्। नि० २–७ इष् इचछायाम्।

(७) इन्द्रावरुण युग्म जिसका उत्कर्ष वाहते हैं - उसे कोई परेशानी नहीं होती

न तमंहो न दुरित्तनि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वर न त मर्तस्य नशते परिह्वति ।।

ऋ० ७–८२–७

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ। इन्द्रावरुणौ। जगती।

अर्थ – (इन्द्रा वरुणौ देवौ) इन्द्र वरुण स अभिहित (सूर्यचन्द्र वायुजल, प्राणायान, राजामन्त्री आदि) देवो के सभी युग्म (यस्य) जिस चशिष्ठ सम जितेन्द्रिय पुरुष के (अध्वरम्) जीवन यज्ञ मे (गच्छथ वीथ) प्राप्त होते है, और उसके उत्कर्ष की कामना करते हैं, (तम्) उस व्यक्ति को (न अह) न रोग रूपी पाप (न दुरितानि) न किसी प्रकार का दुराचरण (न तप) और न ही रोग या दुराचरण के परिणाम स्वरूप मिलने वाला सताप तथा (मर्तस्य परिह्वति) किसी प्राणी द्वारा विहित कुटिल चाल (कुतश्चन न नशते) किसी निमित से और कही से भी प्राप्त नहीं होती।

निष्कर्ष – यदि मनुष्य सबके साथ मैत्रीभाव रखकर, सब प्रकार के दोषो का निराकरण करने वाले माता-पिता के कुल मे उत्पनन होकर जितेन्द्रिय बना रहे और इन्द्रावरुण नाम से वर्णित युग्म देवो की कृपा प्राप्त कर ले, तो उसे न कोई रोग होता है न वह किसी दुराचरण मे लिप्त होता है, न उसे कभी किसी तरह का पश्चाताप होता है, न किसी प्राणी द्वारा की जाने वाली किसी प्रकार की कुटिलता या परोक्ष प्रहार उसका कुछ बिगाड पाता है।

अर्थ पोषण – परिह्वति – ह्व कौटिल्ये। वीथ वी गतिव्याप्ति कान्ति खादनेषु। नशते – नशत् व्याप्ति कर्मा। नि० २–१८ नसते – गतिकर्मा। नि० २–१४

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६**

गुरुकुल है जहां, स्वास्थ्य है वहां

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर: गुरुकुल कांगड़ी-249404 जिला - हरिद्वार (उ प्र)
फोन- 0133-416073 फैक्स-0133-416366

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय क पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ दूरभाष फैक्स ३२७८०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष - ३३६ ०१५०** के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अंक ३१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २० अगस्त से २६ अगस्त, २००१ तक

मूल्य एक प्रति . २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन . ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन नवम्बर २००१ में सम्पन्न कराने के लिए

श्री रामफल बन्सल एवं श्री आर० एन० मित्तल चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त

अदालत में चल रहा विवाद समाप्त

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के १९९४ मे देहावसान के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १९९५ तथा १९९८ मे दो चुनाव सम्पन्न हुए। १९९५ मे श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव को प्रधान चुना गया। इस चुनाव को स्वामी सुमेधानन्द आदि ने अदालत मे चुनौती दे दी। इसके बाद १९९८ के चुनाव मे स्वामी ओमानन्द जी प्रधान और श्री सूर्यदेव जी मन्त्री चुने गए तो श्री सोमनाथ मरवाह के माध्यम से इस चुनाव को भी चुनौती दी गई। श्री मरवाह जी का देहावसान १५ और १६ अगस्त की मध्य रात्रि को हो गया परन्तु इससे पूर्व **६ अगस्त को अदालत अपना फैसला दे चुकी थी।**

दिल्ली की एक दीवानी अदालत मे न्यायाधीश श्रीमती सुखविन्द्र कौर के समक्ष वादी की ओर से एक प्रार्थना पत्र दाखिल किया गया कि नवम्बर २००१ में सार्वदेशिक सभा का चुनाव होना है अत पजाब, हरियाणा उच्च न्यायालय के **सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री आर० एन० मित्तल** को चुनाव **अधिकारी** एव **प्रशासक** नियुक्त किया जाए। प्रतिवादियो की ओर से उत्तर में कहा गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का १९९८ मे चुनाव सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश धवन की देख-रेख मे सम्पन्न हुआ था, अत. इस बार भी चुनाव **वर्तमान न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी** की अध्यक्षता मे ही होना चाहिए, अकेले श्री आर० एन० मित्तल को चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नहीं बनाया जा सकता।

अदालत में बहस के दौरान माननीय न्यायाधीश ने इस मुद्दे को परस्पर सहमति माना कि **नवम्बर २००१** में चुनाव होना दोनो पक्षो को स्वीकार्य है। **वादी ने श्री आर० एन० मित्तल** को, तो **प्रतिवादी ने श्री रामफल बन्सल** को **चुनाव अधिकारी** एव **प्रशासक** नियुक्त करने की माग की। इस पर

श्री रामफल बन्सल — श्री आर० एन० मित्तल

दोनों पक्षो के अधिवक्ताओ मे **दोनों महानुभावों को संयुक्त रूप से चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त करने पर सहमति बन गई।**

परिणामत अदालत ने वादी की याचिका पर **६ अगस्त** को आदेश करते हुए **सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बन्सल** एव **श्री आर० एन० मित्तल** को **आगामी चुनाव नवम्बर, २००१** मे सम्पन्न कराने के लिए **चुनाव अधिकारी** एव **प्रशासक नियुक्त** करते हुए **निम्न मुख्य विशेषाधिकारों से युक्त किया है –**

१. मतदाताओं के नाम पतों सहित, नई मतदाता सूचियां बनाना जो आगामी चुनाव अधिवेशन में भाग ले सकें।

२. सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओं आदि को प्रतिनिधियों के नाम तथा पंचमांश-दशांश आदि भेजने के लिए निर्देश जारी करना।

३. मतदाता सूची तैयार होने के बाद एक माह का स्पष्ट नोटिस चुनाव के लिए जारी करना।

४. चुनाव अधिकारियों द्वारा इस सम्बन्ध में अन्य समुचित कार्यवाहियां करना, चुनाव परिणाम को सोसाइटी रजिस्ट्रार कार्यालय में तथा अन्य कार्यालयों में भेजना।

५. चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न होने तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त कार्यों का प्रबन्ध, प्रशासन तथा पूर्ण नियन्त्रण। इन कार्यों के लिए किसी भी सक्षम महानुभाव की सहायता लेना।

६. पुलिस तथा अन्य विभागों से आवश्यकतानुसार समन्वय स्थापित करना जिससे चुनाव प्रक्रिया सभा के संविधान के नियम एवं प्रक्रियाओ के अनुसार सम्पन्न हो सके।

७. उन समस्त अधिकारो को रखना जिससे सभा के लिए किसी भी बैंक या अन्य संस्थाओ के साथ वित्त प्राप्त करने तथा व्यय करने के कार्य सम्पन्न हो सके।

८. अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में सार्वदेशिक सभा के प्रशासन, देख-रेख से सम्बन्धित उन सभी कार्यों को करना जो इसके लिए आवश्यक हों तथा इसके लिए एक या अधिक व्यक्तियो की आवश्यकता पडने पर सहायता लेना।

इन अधिकारो के अतिरिक्त, इन चुनाव अधिकारियों एव प्रशासको को सभा की कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सभा के सभी अधिकार प्राप्त होगे।

अदालत के आदेश मे यह भी कहा गया है कि इन चुनाव अधिकारियों के किसी अधिका, या निर्णय को कोई भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी। कोई भी व्यक्ति इनके द्वारा निर्धारित चुनाव प्रक्रिया के विरुद्ध भी किसी प्रकार की आपत्ति नहीं कर सकेगा।

इन दोनों अधिकारियों में से एक अधिकारी की अनुपस्थिति या अनुपलब्धता होने पर दूसरा अधिकारी कार्यो को जारी रखेगा।

इस आदेश के साथ ही वादी के कहने पर वादी की याचिका खारिज कर दी गई।

इस आदेश से आर्यजनो मे विवाद समाप्ति और निष्पक्ष चुनाव की पूर्ण सम्भावना के कारण हर्ष की लहर है। ✡✡✡

आर्यसमाज के सजग प्रहरी - स्व० श्री सोमनाथ मरवाह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकर्त्ता प्रधान स्व० श्री सोमनाथ मरवाहा के पार्थिव शरीर का सस्कार पूर्ण वैदिक विधि एव सामग्री के साथ दिल्ली के निगम बोध घाट पर बने विशेष सस्कार स्थल पर किया गया। सस्कार के लिए उनकी अन्तिम शव यात्रा प्रात ६ बजे उनके निवास ग्रीन पार्क से रवाना हुई। आर्यसमाज अनारकली में उनके शरीर को लगभग एक घण्टा आर्य जनता के दर्शनार्थ रखा गया जहा भारी सख्या मे लोगो ने उन्हे श्रद्धाजली दी। उसके बाद शव यात्रा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भवन के समक्ष पहुची जहा सभा के गण्यमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इनमे प्रमुख आर्य नेता थे श्री वेदव्रत शर्मा, श्री ज्ञान प्रकाश चौपडा, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री विमल वधावन, श्री जगदीश आर्य, श्री लक्ष्मीचन्द, श्री जयनारायण अरूण, श्री चन्द्र किरण शर्मा, श्री अरविन्द आदि।

निगमबोध घाट पर हजारो की सख्या मे आर्यजन, उनके रिश्तेदार, दिल्ली के वकील, न्यायाधीश तथा अन्य सस्थाओ और राजनीतिक दलो के नेता भी उपस्थित थे।

शनिवार, १८ अगस्त को परिवार की ओर से आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग में शाति यज्ञ एव पगडी रस्म का आयोजन किया गया।

रविवार, १९ अगस्त को आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक में भी एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक न्यास सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बन्सल जी ने की। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना भी इस सभा में उपस्थित थे।

शोक सभा मे विभिन्न आर्य नेताओं ने श्री सोमनाथ मरवाहा को एक कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार आर्य नेता बताया। वे अर्थ शुचिता के सर्वोत्तम उदाहरण थे। उन्होने आर्यसमाज के अन्दर से बुराईयों को हटाने का अभियान जीवन पर्यन्त चलाए रखा।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि श्री मरवाह जी आर्यसमाज के लिए एक सजग प्रहरी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा डी० ए० वी० में मैनेजिग कमेटी पर जब काले बादल मडरा रहे थे तो उन्होने बडी तत्परता से इन सस्थाओ को सकट से उबारा। आर्यसमाज के पिछले पचास वर्षो मे जितने भी आन्दोलन अथवा महासम्मेलन किए गए, उसमें श्री मरवाह जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्री विमल वधावन ने कहा कि वे लोहे की छड के समान थे। आर्यसमाज का अहित करने वालों के लिए वह रूद्र देवता का कार्य करते थे। उन्होंने अस्पताल में लेटे लेटे भी दिल्ली के एक वकील श्री एस० एन० गुप्ता के समक्ष उस समय पूरी शारीरिक अक्षमता के बावजूद एक कागज पर कापते हुए हाथो से आर्यसमाज लिख कर अपने दर्द का परिचय दिया, जब उनके शरीर को रैस्पीरेटर पर लगाया हुआ था और मुह ऑक्सीजन के मास्क से बद था।

श्री मदन लाल खुराना ने कहा कि श्री मरवाहा जी का जीवन आर्य समाज और हिन्दुओ की रक्षा के लिए नि स्वार्थ भाव से समर्पित था। ऐसे व्यक्तियो के जाने के बाद उनकी शोक सभा पर हर व्यक्ति उनकी स्मृतियो से प्रेरणा प्राप्त करता है। उनके परिजनो के दुख को बाट कर उसे कम करता है। जिस तरह सुख बाटने से बढता है उसके विपरीत दु ख बाटने से घटता है।

अध्यक्षीय भाषण मे वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल जी ने कहा कि मेरा और मरवाहा जी का साथ लगभग ५० वर्ष का था। दिल्ली में हम दो वकील प्रसिद्ध थे – चोटी रखने वाले वकील, हम दोनो की मान्यताए और सोच-विचार का तरीका एक था।

इस सभा मे डॉ० महेश विद्यालकार, डॉ० योगेन्द्र कुमार (जम्मू), श्री चन्द्रदेव, श्री ज्ञानप्रकाश चौपडा, श्री बनारसी सिह, श्री बनारसी सिह श्री मदन लाल खन्ना, डॉ० शिव कुमार शास्त्री, श्री अनिल आर्य, श्री धर्मपाल, श्री अश्वनी कुमार शर्मा (पजाब), श्री राजसिह भल्ला, श्री कृष्ण गोपाल, श्री रोशनलाल आर्य (हरियाणा) आदि ने श्री सोमनाथ मरवाहा को श्रद्धाजली दी। इस सभा का सचालन श्री रविकान्त ने किया। इस श्रद्धाजली सभा मे स्व० श्री सोमनाथ मरवाहा का सारा परिवार, यथा – उनकी धर्मपत्नी, सुपुत्र श्री अशोक मरवाहा तथा श्री अश्विनी कुमार आदि उपस्थित थे। ✡✡✡

न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल तथा दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना स्व० श्री सोमनाथ मरवाह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तथा शोक संतप्त आर्यजन

स्वाध्याय कहां और कैसे करें

वातावरण – वातावरण का बहुत महत्त्व है क्योंकि वह व्यक्ति के आन्तरिक जगत् मन, बुद्धि को प्रभावित करताहै। स्थान पवित्रता और एकान्तता मन को भी शुद्ध और शान्त बनाने में सहायक होती है। प्राकृतिक वातावरण, नदियों का सगम, समुद्र का तट, तालाब या झील का किनारा, देव स्थान अथवा ग्राम नगर से दूर उपवन, वृक्षावली आदि स्वभावत ही मन की वृत्तियों को एकाग्र करने में उपयुक्त रहते हैं जहा पर यह सुविधा उपलब्ध न हो वहा सुविधानुसार किसी भी शान्त स्थान में बैठकर-दत्तचित्त होकर स्वाध्याय करना चाहिए।

समय – स्वाध्याय से अभिप्राय जप, वेदाध्ययन, आत्मचिन्तन तीनों से है। इन सबके लिए प्रात काल ब्रह्ममुहुर्त का समय ठीक रहता है। उस समय सासारिक जनों की चहल-पहल कम रहती है। वातावरण में सर्वत्र नीरवता, स्वच्छता और पवित्रता रहती है। प्रात काल व्यक्ति स्फूर्तिमान्, तनावों से मुक्त और शान्त प्रकृति वाला रहता है। स्वाध्याय का क्रम इस प्रकार रहे कि शौचादि से निवृत्त होकर पहले प्राणायाम, जप, सध्या, ध्यानादि का अभ्यास किया जाए पश्चात् आत्मचिन्तन और सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, चिन्तन और मनन करना चाहिए। पश्चात् आसन, व्यायाम करके स्नान, वस्त्राच्छादन, यज्ञ, अल्पाहार के अनन्तर अपने दैनिक कार्यों को किया जाए। आत्मचिन्तन सायकाल सोते समय भी किया जा सकता है।

नियमबद्धता – स्वाध्याय नियत स्थान और नियत समय पर करना उचित है। इससे मन को एकाग्र होने में सहायता मिलेगी। उस स्थान पर जाने से मन स्वत ही एकाग्र होने लगता है। यही अवस्था समय की है। निर्धारित समय पर स्वाध्याय किया जाए तो आलस्य प्रमाद आदि भी दूर रहते हैं। अन्य जन भी स्वाध्याय का समय जान कम से कम बाधक बनते हैं।

स्वाध्याय करने की विधि – शुद्ध स्थान पर बैठकर प्रथम वेद पाठ करना चाहिए क्योंकि स्वाध्याय का मुख्य अर्थ वेद का अध्ययन ही है। इसके पश्चात् वेद के मन्त्रों में आए शब्दों का अर्थ, अन्वय, भावार्थ आदि पढकर उस पर चिन्तन करके हृदय में बैठा लिया जाए। दिन में भी समय मिले तो अर्थ विचार उचित रहेगा। यदि सचिका मे कुछ महत्वपूर्ण बातों को प्रकरणानुसार नोट कर लिया जाए तो आपके पास विभिन्न विषयों परस्पर चिन्तन, मनन और प्रवचन करने के लिए पर्याप्त सामग्री एकत्र हो जाएगी। वेद से इतर विषयों का स्वाध्याय करते समय महत्त्वपूर्ण स्थानों को रेखांकित किया जा सकता है अथवा उद्धरणों को सचिका में नोट भी कर सकते हैं। उपयोगी प्रकरणों को दूसरी बार पढा भी जा सकता है। पढे हुए का चिन्तन मनन तथा उसे तर्क-वितर्क की कसौटी पर परखने के पश्चात् उसे साक्षात् करके देखना चाहिए कि जैसा शास्त्रों में कहा है वैसा व्यवहार खरा उतरता है कि नहीं। जब परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरे तब उसका प्रवचन करना चाहिए जिससे कि अन्य जन भी लाभान्वित हो सकें। किसी भी विषय को आदि से अन्त तक एक बार में पढ लेना या बिना विचार चिन्तन किए केवल पढने मात्र में ही कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेना कदापि उचित नहीं है। जिस ग्रन्थ को पढना प्रारम्भ करें उसका अन्त तक पारायण कर लेने के पश्चात् ही दूसरे को पढना चाहिए अथवा कई विषयों को एक साथ अध्ययन हो रहा हो तो उन्हें भी धीरे-धीरे समझ कर पढना चाहिए। अच्छा तो यह है कि एक ही विषय पर ध्यान केन्द्रित किया जाए। उस विषय में सहयोगी ग्रन्थों को साथ देख सकते हैं।

मातृभूमि के आधार : वह हमें चिरायु करे : हम बलिदान के लिए प्रस्तुत हों

सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। *अथर्व० १२/१/१*

महान् सत्य, उग्र अनुशासन, दीक्षा, तप, वेदज्ञान तथा यज्ञ – ये छह पृथ्वी के आधार हैं।

जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु। *अथर्व० १२/१/५८*

मातृभूमि मुझे दीर्घजीवी करे।

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। *अथर्व० १२/१/६८*

हे मातृभूमि हम तुम्हारे लिए बलि देने वाले हों।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

अतीत का लेखा-जोखा : सीख

स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व सध्या पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री के० आर० नारायणन ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए एक बार फिर सामाजिक न्याय और स्वतन्त्रता के मध्य सन्तुलन बनाए रखने का आह्वान किया। १५ अगस्त को राष्ट्र के ५५वें स्वतन्त्रता दिवस पर राजधानी के ऐतिहासिक लालकिले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पडोसी पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि वह आतकवाद के माध्यम से जम्मू-कश्मीर पर कब्जा करने का लक्ष्य भूल जाए तो अच्छा होगा। उन्होने पाक समर्थित जेहादी सगठनो की गतिविधियो को नापाक घोषित किया और चेतावनी दी कि भारत सीमापार से भडकाए जा रहे उग्रवाद को कुचलने में कोई कसर बाकी नहीं छोडेगा। १६ अगस्त के दिन राज्य सभा मे प्रधानमन्त्री वाजपेयी ने घोषित किया कि धर्म के नाम पर देश को दुबारा बटने नहीं देंगे। उन्होने इस बात पर भी बल दिया कि इस शिखर-वार्ता के बाद अन्तर्राष्ट्रीय जगत् मे वह कटघरे मे खडा हुआ क्योकि उस वार्ता मे वह सीमापार के आतकवाद के बारे मे कुछ भी जवाब नहीं दे सका। सहस्राब्दियो और शताब्दियों से उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धु सागर तक का राष्ट्र सास्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक और अखण्ड रहा है। लम्बे मुस्लिम और अग्रेजी शासन के दिनो मे भी इसकी राष्ट्रीय अखण्डता पर आच नहीं आई थी। हां, यह तथ्य अवश्य है कि लम्बे स्वातन्त्र्य संग्राम के बाद जब अग्रेज भारत छोडने को विवश हुए तो उन्होंने जाते-जाते यत्न पूर्वक भारत राष्ट्र के दोनो बाजू समीपस्थ प्रदेशो के साथ काटकर अलग कर दिए थे। २१ फरवरी, १९९७ को वाजपेयी और नवाज शरीफ ने लाहौर घोषणा पत्र द्वारा जम्मू-कश्मीर की समस्या को सम्मिलित कर सभी मुद्दो को सुलझाने का विचार प्रकट किया था। १९६७ मे भी भारत के विदेश मन्त्री श्री छागला ने पाक उच्चायुक्त अर्सद हुसैन के साथ ताशकन्द घोषणा पत्र की दृष्टि से दोनो देशों की सभी समस्याए सुलझाने का प्रस्ताव रखा था। वैसे, भारतीय भूप्रदेश की प्राचीन एकता और इन्सानी भाईचारे की पृष्ठभूमि पर ध्यान दे तो दोनो देशों की सभी समस्याए सरलता से सुलझ सकती हैं। १६ अगस्त के दिन राज्यसभा मे प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी ने यह तथ्य उजागर किया कि अनेक विषयो पर पाक राष्ट्रपति मुशर्रफ उनके साथ सहमत हो गए थे, जैसे किसी भी विदेश वार्ता के समय इस प्रश्न को न उठाने के बारे मे सहमत हो गए थे। उन्होंने दूसरे कई प्रश्नो पर भी मतैक्य होने की सूचना दी।

वैसे, ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसे आपसी भाईचारे और विवेक से सुलझाया न जा सके और जब दोनो पक्षों के नेता यह स्वीकार करते हो कि दोनों के ही पूर्वज इसी भारत मे पैदा हुए थे, वहीं उनका बचपन बीता। सास्कृतिक विद्याओ, कला और मनोरंजन के क्षेत्र मे दोनों देशो की राजनीतिक सीमाए कभी बाधक नहीं बनीं। पाकिस्तान मे यदि भारतीय फिल्मे लोकप्रिय हैं तो पाक गजल गायक इस देश मे भी लोकप्रिय हैं। यदि दोनो देशो की सरकारे एक दूसरे देश के साहित्यकारो, विद्वानो, वैज्ञानिको, कलाकारो का राजकीय दृष्टि से सम्मान करे तो दोनो की जनता के हृदय भी पारस्परिक स्नेह सम्बन्धो को अधिक घनिष्ठ करेगे। यह ठीक है कि दोनो देशो की सरकारो ने छोटे-मोटे मामलो मे फसे कैदी जेलो से मुक्त किए हैं। ये छोट-बडी व्यवस्थाए ठीक हैं, इनसे दोनो देशो के मध्य सम्बन्ध सुधर सकेगे, परन्तु दोनों पक्षों के शीर्ष नेताओं को भारत भूखण्ड के वर्तमान और भविष्य को सवारने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धान्तो और नियमों का निर्धारण और व्यवहार स्वीकार करना होगा। जब अमेरिका, यूरोप और विश्व के दूसरे भूखण्डो के नेता अपने क्षेत्रो मे आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक और राजनीतिक एकता और गठबन्धन को आवश्यक मानते हैं तो भारतीय भूखण्ड के नेताओ ने भी इस प्रकार के सहचर्य की महत्ता स्वीकार करनी होगी। इतिहास की सीख है कि हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धुसागर तक के इस विशाल भूखण्ड के देशो और जनता को जहा अपने आर्थिक सास्कृतिक, सामाजिक सम्बन्धो को जोडने चाहिए वहा उन्हें सबसे महत्वपूर्ण इन्सानी भाईचारे और एकता को भी सुदृढ करना चाहिए। इस भूखण्ड के शिखर नेता जिस क्षण यह तथ्य हृदयगम कर लेंगे तब उनकी सभी समस्याए सुलझ जाएगी और सच्चे भाईचारे की भूमिका प्रस्तुत की जा सकेगी।

इतिहास के एक शीर्ष व्यक्तित्व नेपोलियन ने ठीक ही कहा था कि मानव के शब्दकोश मे असम्भव सरीखा कोई शब्द नहीं। जब मनुष्य चाहे और उसके लिए व्यवस्थित उद्योग करे तो उसके सभी लक्ष्य पूर्ण हो सकते हैं। भारत और पाकिस्तान की एकता आज असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य जान पडती है, परन्तु यदि व्यवस्थित सगठित प्रयत्न किया जाए तो यह कठिन समस्या भी सरलता से सुलझ सकती है। हा, उसके समाधान के लिए दोनो पक्षो के शिखर नेताओ और विचारको को यत्नपूर्वक आपसी बातचीत से कोई रास्ता निकालना होगा। १६ अगस्त को वाजपेयी ने राज्यसभा मे सूचना दी है कि दोनो देशो के शीर्ष नेता कई जटिल समस्याओ को सुलझाने और भावी शिखर वार्ता के लिए सहमत हो गए हैं। इतिहास की शताब्दियों और सहस्राब्दियों मे भारत राष्ट्र और उसके अग्रणी चिन्तको, ऋषियो और युगपुरुषो ने मानवता और विश्व के इतिहास मे अपनी स्मरणीय भूमिका प्रस्तुत की है। भारतीय विचारक, चितक और राजनीतिज्ञ यदि मानव कल्याण और उसके सर्वांगीण अभ्युदय के क्षेत्र मे भारतीय भूमिका और योगदान के बारे मे जागरुक हो और उस दिशा मे अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करे तो हो सकता है कुछ समय अधिक लगे। परन्तु मानवीय अभ्युदय चिन्तन और उपलब्धियो के विभिन्न क्षेत्रो मे भारतीय राष्ट्र और उसके निष्ठावान तेजस्वी और तन-मन-धन सर्वस्व की भूमिका प्रस्तुत करने वाले भारतपुत्र अपना और मातृभूमि के वर्तमान, भविष्य को सवार कर विश्व के इतिहास मे अतीत की तरह अपनी प्रामाणिक, त्याग, उत्सर्ग से परिपूर्ण अद्वितीय ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करने मे सफल हो सकेगे, इसमे सन्देह नहीं। आइए, मातृभूमि के अतीत के लेखे-जोखे से सीख लेकर भारतभूमि का वर्तमान और भविष्य सवारने के लिए अपना योगदान करने के लिए सकल्प लेकर उसे क्रियान्वित करे।

सनातन संस्कृति का सार

सर्वोदय भारत की सनातन सस्कृति का सार है। उस जीवन दर्शन को अपनाकर हम उसी के अनुरूप संयम, सदाचार एव सादगी वाली जीवन पद्धति अपनाते हैं तथा हमारी राजनीति, सामाजिक और शैक्षिणिक प्रणालिया भी उन्हीं मानवीय मूल्यो को अपनाने की दिशा में विकसित होती हैं। आजादी के पूर्व गाधीजी ने अपने अनुयायियो तथा देश की जनता को जो दिशा दी थी। उसे न अपनाकर हम दूसरी दिशा में चल पडे। यदि हमने उस समय बापू की बताई दिशा पकड ली होती तो इस विश्व को कुशासन, शोषण युद्ध और प्रदूषण से मुक्त करने मे महत्वपूर्ण योगदान कर सकते थे। मानवता की इस नवीन सस्कृति का आधार होता आत्मज्ञान तथा विज्ञान के समन्वय पर आधारित होता सर्वोदय का समग्र जीवन दर्शन। अभी भी समय है भारत आत्मविनाश का पथ छोडकर आत्मविकास की राह पर चले।

– राधेश्याम मौर्य, सिविल लाइन्स, फतहपुर

विवादास्पद जीवन

फूलन का जीवन जितना विवादास्पद रहा, उसका मरना भी उतना ही विवादास्पद रहा।।

– डॉ० सुधाकर आशावादी, मेरठ (उ०प्र०)

भारत को बचाओ

भारत को भगवान नाथ एकता का वर दीजे।
भेदभाव को हर लीजे, जिससे मोहत मिस्ना छीजे।

देशद्रोह का जाल नष्ट हो, नहीं कोई पथभ्रष्ट हो।
शीघ्र नष्ट आतकवाद हो, प्रोन्नत प्यारा राष्ट्रवाद हो।

देशभक्ति का पाठ पढा दो, शीघ्र सभी मे प्रेम बढा दो।
कर्मवीर हो देश निवासी, धर्म और ईश्वर विश्वासी।

सब शुभकर्मों के अभ्यासी, हो जग मे सम्मान।।

– आचार्य रामकिशोर शर्मा, सोरों एटा (उ०प्र०)

ऋग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१३)

कर्मफल अथवा कार्य कारण व्यवस्था

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) धर्मशील मनुष्य श्रेष्ठ कार्य में धन प्रदाता बन अक्षत रहकर फलता है,

प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति।
प्र प्रजाभिर्जाय धर्मणस्पयरि अरिष्टः सर्व एधते।।

ऋ० ८–२७–१६

मनुर्वैवस्वतः। विश्वेदेवाः। पङ्क्तिः।

अर्थ – (य) जो मानव (व वराय मही इष दाशति) विश्वभर के दिव्यजनो के कल्याण के लिए उत्तम अन्नो को प्रभूत मात्रा मे देता है (स क्षय प्रतिरते) अपनो घर खूब बढा लेता है सारे विश्व को अपना परिवार बना लेता है। (धर्मण परि) धर्म का परिशीलन करने वाला (सर्व) प्रत्येक मानव (अरिष्ट) किसी प्रकार की विपत्ति मे फसे बिना (एधते) धन-यश आदि से बढता जाता है, और (प्रजामि प्रजायते) अपने पुत्र-पौत्रादि सन्तानो द्वारा प्रकृष्ट रुप से यशस्वी होता है।

निष्कर्ष – विश्व के दिव्यजनो के कल्याण के लिए अपना, समय धन, व अन्न का दान करने वाला प्रत्येक मनुष्य यशस्वी है और उसकी सन्तान भी विपत्ति मे पडे बिना फलती-फूलती रहती है।

(२) बिना संघर्ष सफल होने के लिए, शासन का त्रिविध संरक्षण आवश्यक

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः।
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः।।

ऋ० ८–२७–१७

मनुर्वैवस्वतः। विश्वेदेवाः। विराट् पङ्क्तिः।

अर्थ – (यम्) जिस राष्ट्र की अथवा राष्ट्र के जिस मानव की (अर्यमा मित्र वरुण सजोष स सरातय त्रायन्ते) न्याय पालिका का अध्यक्ष, विधान पालिका का अध्यक्ष और दुष्ट निवारक सेना का अथवा तीनो मिलकर अपने कर्त्तव्यो का निर्वाह करते हुए रक्षा करते हैं (स) वह राष्ट्र या उस राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति (सुगेभि अध्वन याति) सुगमता से अपने चुने हुए वर्ण के कर्त्तव्य लक्ष्य पर चलता है और (ऋते युध) किसी प्रकार के सग्राम या अडचन के बिना (विन्दते) अपना लक्ष्य प्राप्त-कर लेता है।

अर्थपोषण – अर्यमा – आर्यान् मानयति – न्याय विभाग का अध्यक्ष

मित्र। सर्वेषा मित्रवत् स्नेहकर्मा – विधिविधान निर्माता विभाग का अध्यक्ष। वरुण – निवारम्ययति दुष्टान्–दुष्ट दस्युओ के निवारण कर्ता – सैन्य तथा आरक्षि (पुलिस) विभाग का अध्यक्ष।

(३) जाठराग्नि सेवन और परमात्माग्नि सेवा से मनुष्य को स्वर्ग सुख

यो अग्निं तन्वो दमे देवं मर्तः सपर्यति।
तस्मा इदीदयद्वसु।। ऋ०८–४४–१५
ई शिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः।
स्तोता स्यां तव शर्मणि।।
आंगिरसो विरुपः। अग्निः। गायत्री।

अर्थ – (य आगिरस विरूप मर्त) जो मनुष्य अग-अग मे रस भर कर विविध कार्य कुशल बनने की इच्छा से (तन्व दमे) अपने शरीर मे (अग्नि सपर्यति) जाठराग्नि और सर्वाग्रगण्य परमात्मा का सेवन और परिचर्या करता है। (तस्मै इत्) उस के लिए ही प्रभु (वसु दी दयत्) जीवन के निवास के लिए आवश्यक वस्तुए देते है।

हे (अग्ने) अग्रपगण्य प्रमो ! आप की कृपा से वह मनुष्य (स्वर्पति) स्वर्ग-सुख का स्वामी बनकर (दात्रस्यवार्यस्य ईशिशे) दान देने योग्य वरणीय वस्तुओ (गुणो तथा पदार्थों) का स्वामी बनता है। मैं भी (शर्मणि) सुख-प्राप्ति के निमित्त (तव स्तोता स्याम्) तेरा स्तोता बन रहा हू।

निष्कर्ष – जाठराग्नि स्वस्थ रखकर, परमात्मा की व्यवस्था मे विश्वास रखने वाले के लिए अनिवार्य वस्तुओ की कमी नहीं रहती। वह विविध क्षेत्रो मे कर्म करने मे यशस्वी होता है।

(४) जिनके हृदय में लोकहित की आग होती है, परमेश्वर उनका सदा सखा

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रो युवा सखा।। ऋ० ८–४५–१
त्रिशोकः काण्वः। अग्नीन्द्रौ। गायत्री।

अर्थ – (ये) जो मन-वचन-कर्म से पवित्र तथा दीप्त रहते हुए (आनुषक्) निरन्तर (अग्नि बहि इन्धते) अपने हृदय मे समाज हित की किसी आग को प्रज्वलित रखते हैं, और उस हित को साधने के लिए अपने हृदयासन पर अग्रगण्य परमात्मा को प्रतिष्ठित रखते हैं, (येषा युवा इन्द्र सखा) उनके विघ्नो को दूर करके सफलता से सयुक्त करने वाला ऐश्वर्यशाली परमेश्वर उनके लक्ष्य सखा सदृश पूर्ण करता है। अथवा जो साधक युवा इन्द्र को सखा बनाते हैं (ये) हृदयासन पर सदा परमात्मा को बैठाए रखते हैं, और उनके हृदय मे लोकहित की आग सदा प्रज्वलित रहती है।

त्रिशोक – त्रिधा शुचि। बर्हि कुशासन – दोषवर्जित हृदयासन शुचिर – पूती भावे

निष्कर्ष – जो परमेश्वर को सदा हृदय मे रखते हैं, उनमे लोककल्याण की भावना निरन्तर बनी रहती है। अथवा जिन के हृदय में लोकहित की भावना सदा जाग्रत रहती है, परमेश्वर उनका सखा बन उन की मनोकामना पूर्ण करता है।

(५) अगम्य परिस्थिति में सहायक राजा ही पिता (पालनकर्ता) कहलाता है

यो नो दाता स नः पिता महां उग्र ईशानकृत्।
अयामन्नुग्रो मघवा पुरुवसुर्गोरश्वस्य प्र दातु नः।।

ऋ० ८–५२–५

आयुः काण्वः। इन्द्रः। प्रगाथः (बृहती)

अर्थ – (अयामन्) जिस से बहार निकलने का कोई उपाय न हो, ऐसे प्राकृतिक प्रकोप के समय (य) जो मानव या ऐश्वर्यशाली शासक (ईशान कृत् उग्र महान्) दीन दयालु उत्कृष्ट और महान् बनकर (न दाता) हमे आवश्यक वस्तुए प्राप्त कराता है (स न पिता) वह हमारा पिता सदृश पालनकर्ता है। ऐसा ही शासनतन्त्र (उग्र) दुष्ट शत्रुओ के लिए भयकर और प्रजा के लिए उदार (पुरुवसु मघवा) प्रभूत और पवित्र धनो का स्वामी (अयामन्) अगम्य अभियान काल (हिमाच्छादित पर्वत पर या गहन समुद्र) मे हमे (गो अश्वस्य न प्रदातु) गौर और अश्व से प्राप्त होने वाली सुविधाए हमे प्रदान करे।

निष्कर्ष – (१) शासन पिता के सदृश उदारमना और महान् बनकर अपनी प्रजा की आपात्कालीन आवश्यकता को प्राप्त कराए। 'स पिता पितरस्तेषां केवल जन्महे तव।' कहकर कालिदास ने यही भावना प्रकट की है। जन्मदाता और पालनकर्ता की पिता द्वयर्थकता से यहा चमत्कार हुआ है।

(२) सायण ने इस मन्त्र में 'गो· अश्वस्य' को द्वितीया के अर्थ में' षष्ठी माना है। किन्तु 'अयामन्' शब्द का साहचर्य इस बात का विरोधी है। वैसे भी ऋषि को यदि द्वितीया का अर्थ अभीष्ट था तो वह 'ग्राम् अश्वम्' का प्रयोग कर सकता था।

अगम्य–अभियान काल मे कहने से 'गो' का अर्थ होगा – गौ से प्राप्त होने वाले दूध के सदृश चवर (गाय बकरी भेड या मशीन कृत दुग्ध, और 'अश्वस्य' का अर्थ होगा – अश्व से प्राप्त होने सवारी सदृश खच्चर, झब्बू, एन्टीलोप या हैलीकाप्टर और पनडुब्बी रूपी सवारी प्राप्त कराए।

अर्थ पोषण – आयव – मनुष्यनामसु। नि० २–३। उग्र उदात्त, उत्कृष्ट, दुष्ट दमन, भयकर। ईशानकृत्–दीनमीशान करोतीति दीनदयालु। सायण अयामन् – यान्ति अनेनेति यान मार्ग, अगम्योमार्ग =अयामस्तस्मिन्

अयामनि, सप्रम्या लुक्। ऐसी प्राकृतिक विपदा जिससे बाहर जाने का मार्ग न हो।

(६) कभी क्रुद्ध हुए बिना सदा कर्मठ मनुष्य ही दुष्टों का सहार कर सकते हैं

स सुक्रतु रणिता यः सुतेष्वनुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान्।
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रह प्रतीदमन्यमाहुः।।

ऋ० ८–९६–१९

तिरश्चीरांगिरसो धुतानो वामारुतः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (य सुतेषु रणिता) जो मनुष्य अपने पुत्रों मे रमण करता है, उनसे सन्तुष्ट है, (अनुत्तमन्यु) जिसे दूसरे न क्रोध दिला सकते हैं न खिजा सकते हैं और (य अह इव रोवान्) प्रात कालीन सविता के समान वीर्यवान् और उल्लास देते है (स सुक्रतु) वही उत्तम प्रज्ञ, सुकर्मा अथवा यज्ञकर्ता हैं। (य एक इत्) जो अकेला ही (नरि) अपने नेता के प्रति वफादार रहते हुए (अन्य प्रति) शत्रु के प्रतिरोध रूपी (अपासिकर्ता) महत्वपूर्ण कार्य करता है (स इदे वृत्रहा इति आहु) यही वह शत्रु संहर्ता है – सम्पूर्ण प्रजाजन ऐसा कहते हैं।

अर्थपोषण – अह सविता (प्रातःकालीन सूर्य) अहरेव सविता। गो० १–१–३३। रेवान्=रयिवान्= वीर्य वैरयि। माश। १३–४–२–१३। इदम् = अयम् 'सुपा सुलुक्' से सुलोप।

निष्कर्ष – उसी का जीवन यज्ञरूप है – जो अपने कार्यों और पुत्रो से सन्तुष्ट होकर उनमे सन्तुष्ट है। बार-बार खिजाने पर अथवा झूठे आरोप लगाने पर भी क्रुद्ध होकर अपना आपा नहीं खोता। जो सूर्य के समान तेजस्वी और निराश व्यक्तियो को भी उल्लसित करना हैं। जो शत्रुओ के मध्य कार्यरत रहते हुए भी अपने नेता के प्रति वफादर रहते हुए शत्रु को अन्दर से खोखला करता है – उस व्यक्ति को सम्पूर्ण प्रजा जन 'वृत्र हा'= रिपुदमन–शत्रु भञ्जक उपाधि देते हैं।

– शेष पृष्ठ ७ पर

भारत के सच्चे राष्ट्रभक्त एवं प्रभु-भक्त महापुरुष

– ब्रह्मानन्द जिज्ञासु 'आर्यकवि'

सर्वप्रथम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को हम नमन् करते हैं, जिन्होंने भारत में असुरों के उत्पात से भारत के जनमानस की रक्षा की और असुरों का नाशकर वैदिक सस्कृति की स्थापना की।

श्री राम के पश्चात् योगेश्वर श्री कृष्ण को नमन् है, जिन्होंने भारत मे असुरों के उत्पात से जनमानस की रक्षा की। कौरवो की सभा में बडे-बडे महारथी थे। भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि महारथियो के सामने द्रौपदी को दुष्ट दुःशासन और दुर्योधन नगा कर रहे थे, किन्तु किसी ने विरोध नहीं किया और द्रौपदी की लाज उन महारथियो ने नहीं बचाई। परन्तु श्रीकृष्ण ने दुष्टो से द्रौपदी की लाज बचाई।

श्री कृष्ण के पश्चात् इस देश मे राष्ट्रभक्त चाणक्य हुए, जिन्होने दुष्ट महानन्द को मृत्युदण्ड देकर चन्द्रगुप्त मौय को भारत का सम्राट बनाया। उस समय भारत मे छोटे-छोटे राजा आपस मे लडते-झगडते रहते थे, जिससे लाभ उठाकर विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर ने भारत पर हमला बोल दिया और सिध के राजा पुरु (पौरष) को हराकर अपने आधीन कर लिया। बाद में सेल्यूकस ने पुनः भारत पर चढाई कर दी, किन्तु चाणक्य के चातुर्य तथा चन्द्रगुप्त की वीरता के सामने उसे झुकना पडा। इसका श्रेय चाणक्य को है, जिन्होने उसकी पुत्री का सम्बन्ध सम्राट चन्द्रगुप्त से कराकर यूनान से मैत्री स्थापित की। चाणक्य ने सभी छोटे-छोटे राजाओं को चन्द्रगुप्त के अधीन कर चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की स्थापना की। बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के प्रादुर्भाव से वैदिक धर्म का ह्रास हुआ तो जगत्गुरु स्वामी शकराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने पुन वैदिक धर्म की स्थापना की।

चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त के पश्चात् सही मायनोंमे देशभक्त एव प्रभु-भक्त सम्राट विक्रमादित्य हुए जिन्होने विदेशी आक्रमणकारियों के छक्के छुडाए और भारत मे आर्य साम्राज्य और वैदिक सस्कृति की स्थापना की। सम्राट विक्रमादित्य के अधीन अरब देश भी था, जहा उन्होने प्रसिद्ध मकेश्वरनाथ मन्दिर का निर्माण कराया। जहा आज भी यवन लोग माथा टेकते हैं। अपने विजयोत्सव के उपलक्ष्य में सम्राट विक्रमादित्य ने ईसा से ५७ वर्ष पूर्व विक्रम सम्वत चलाया जो आज भारत में घर-घर में प्रचलित है। इतिहासकार विक्रमादित्य के शासन की स्वर्णयुग से तुलना करते हैं। उनके दरबार में नवरत्न थे। बडे-बडे विद्वान्, कवि, ज्योतिषी एव साहित्यकार उनके दरबार की शोभा थे। कवि कालिदास इन्हीं के दरबार में राजकवि थे।

सम्राट विक्रमादित्य के पश्चात् भारत में कोई सही मायनो में राष्ट्रभक्त, देशभक्त एव प्रभु-भक्त सम्राट नहीं हुआ। फलस्वरूप देश में यवनों का शासन हो गया। सम्राट विक्रमादित्य के पश्चात् भारत मे वीर योद्धा तो हुए, किन्तु दूरदर्शी नहीं हुए जिससे भारत मे यवनो का शासन सुदृढ हो गया। राणा-सागा तथा महाराणा प्रताप वीर योद्धा थे, किन्तु दूरदर्शी नहीं थे, उस समय जो भी छोटे-छोटे राजा थे, आपस में लडते रहे और यवनो का आधिपत्य स्वीकार करते गए। प्रभु-भक्त तो कुछ हुए जैस गुरुनानक, कबीर, मीरा, तुलसी, एव सूरदास, लोगों मे चेतना जगाई। गुरु गोविन्द सिह सही मायने मे राष्ट्रभक्त एव प्रभु-भक्त थे।

सम्राट विक्रमादित्य के पश्चात् छत्रपति शिवाजी सही मायने में राष्ट्रभक्त एव प्रभु-भक्त थे। शिवाजी दूरदर्शी वीर योद्धा थे। अपने चातुर्य एव बाहबल से यवनो से युद्धकर भारत को यवन शासन से मुक्त किया तथा मराठा साम्राज्य स्थापित कर भारत के सम्राट बने। परन्तु भारत का दुर्भाग्य उनके देहान्त के पश्चात् कोई दूरदर्शी शासक नहीं हुआ और अन्त में भारत अग्रेजों के अधीन हो गया।

आगल साम्राज्य ने देश की सस्कृति मिटाने का लक्ष्य रखा। मैकाले ने यहा की शिक्षा को दूषित किया, जिससे यहा के लोग ईसाई धर्म अपनाने लगे। सस्कृत की पढाई की अवहेलना होने लगी, सभी अग्रेजी से प्रेम करने लगे। ईसाई धर्म एव ईसा का गुणगान होने लगा। इसी विषम परिस्थिति मे भारत मे एक वैदिक सूर्य का प्रादुर्भाव हुआ जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। महर्षि दयानन्द सरस्वती निःसन्देह भारत के भाग्य विधाता थे। वैदिक सस्कृति के उद्धारक, सच्चे देश भक्त तथा सही मायने मे प्रभु-भक्त एव वेदभक्त थे। आसुरी-सस्कृति से कोई समझौता नहीं कर वैदिक धर्म की स्थापना आर्यसमाज के रूप मे की। उन्होंने सत्यधर्म को प्रकाशित करने हेतु "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना की। जो आर्य संस्कृति का अमूल्य ग्रन्थ है, इसमें सभी धर्म-सम्प्रदायों की सही विवेचना की गई है। यह पुस्तक आर्यों तथा धर्म प्रेमियों का सही मार्ग दर्शक है। इसके द्वारा ही हम सत्यधर्म का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसी पुस्तक के छठे समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने घोषणा की – ***"विदेशी राजा कितना भी सुख दे, तुच्छ होता है, अपने देश में अपना राज्य ही सर्वोपरि है।"*** आर्यसमाज के द्वारा इसी शिक्षा के फलस्वरूप देश में स्वतन्त्रता की लहर उठी और स्वराज्य हेतु तीव्र आन्दोलन हुए। लोकमान्य तिलक, दादाभाई नैरोजी, लाला लाजपत राय, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, अरविन्द घोष, स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए पूरी शक्ति लगा दी। लोकमान्य तिलक ने नारा लगाया– ***"स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।"*** उस समय आर्यसमाज के सभी कर्मठ कार्यकर्त्ता एव नेतागण आजादी के दीवाने हो गए। वीर सावरकर, सरदार भगतसिह, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, चन्द्रशेखर आजाद, प० राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला, आदि ने अग्रेजों की नींद हराम कर दी।

अग्रेज पूर्ण स्वराज्य ही देकर जाते, किन्तु दुःख है कि अग्रेजों की चाल मे हमारे नेता फस गए और उनकी अदूरदर्शिता तथा हठधर्मी से देश का विभाजन हो गया – हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के रूप मे। दोनों देशो (हिन्दुस्तान-पाकिस्तान) मे तीन बार कश्मीर समस्या पर भयकर युद्ध हुए जिसमे दोनो देशो के लाखों जवान शहीद हो गए। कश्मीर समस्या भी नेहरू की देन है। जब राजा हरिसिह ने भारत मे कश्मीर के विलय की इच्छा प्रकट की तो नेहरू ने फटकार कर भगा दिया। सरदार पटेल के समझाने पर भी नेहरू नहीं माने, अत मे पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढाई कर दी तो शेख अब्दुल्ला के कहने पर नेहरू जी ने जवाबी कार्यवाही करने का निर्देश दिया, तब तक एक तिहाई कश्मीर पाकिस्तान ने हडप लिया। आज तक कश्मीर की समस्या ज्यो की त्यो है और प्रतिदिन उग्रवादी वहा के लोगो को मौत के घाट उतार रहे हैं। काश! उस समय नेहरू जी तथा जिन्ना जी अग्रेजो की चाल मे नहीं फसते तो बटवारा नहीं होता।

प्रभु से प्रार्थना है कि भारत मे पुन राम, कृष्ण, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी व महर्षि दयानन्द सदृश देशभक्त, राष्ट्रभक्त एव प्रभु-भक्त अवतीर्ण हों, जो देश की विषम परिस्थिति का सुधारकर देश से ऊच-नीच, जातिवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, आडम्बर एव पाखण्ड को दूरकर देश को धन-धान्य से युक्तकर देश को शक्तिशाली, समृद्ध बनाकर देश का गौरव बढाए। जिससे देश मे एकता, अमन, अमन चमन हो और लोग आपस मे प्रेम और सद्व्यवहार कर देश की उन्नति मे भागीदार बने।

– ३८६, एल्डिको उद्यान – २,रायबरेली रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

सावधान ! जागते रहो

– देवराज आर्यमित्र

यदि किसी वैदिक प्रवक्ता/उपदेशक/पुरोहित या आर्यसामज के प्रधान/मन्त्री व अन्य अधिकारी की पत्नी और बच्चे उसके अनुकूल नहीं हैं, उसके विरुद्ध चलते हैं, उसका कहना नहीं मानते, मास-मछली, अण्डे खाते है। जुआरी स्मगलर के कुकर्म करते हैं तो ऐसे व्यक्ति आर्यसमाज को चूना लगा रहे हैं। अर्थात् अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। उन्हे पहले अपना घर-परिवार सुधारना चाहिए फिर दूसरो के सम्मुख बोल सकते हैं। स्वय तो सुधरते नहीं दूसरो को सुधरने के लिए प्रदर्शन करते हैं। हमें बडा अफसोस होता है जब हम किसी वक्ता या प्रधान/मन्त्री के बीबी-बच्चों को वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध कुमार्ग पर चलते हुए देखते हैं। ऐसे महानुभाव आर्यसमाज को धोखा दे रहे हैं। उनकी बात सुनने से पहले उनसे कहो कि कृपया अपना चेहरा साफ करो। यदि तुम्हारे बीबी-बच्चे तुम्हारा कहना नहीं मानते, तुम्हारे काबू से बाहर हैं तो उनसे क्यों चिपटे हुए हो? तुम्हारे अपने आचरण में कमी है। तुम्हारी त्रुटि और कमजोरी का वे अनुचित लाभ उठा रहे हैं। आप उनके लिए धन सग्रह करने में लगे हुए हैं।

एक कहावत है **पूत सपूत तो क्यों धन संचय, और पूत कपूत है तो क्यों धन संचय।** आप तो जानबूझकर अपनी सन्तान को बिगाड रहे हो। उन्हे आलसी निकम्मा बना रहे हो। बचपन से बच्चों को सुधारने की चेष्टा नहीं करते फिर बडे होने पर तो वे दुःखी करेंगे ही। काम की बात सुनो! नालायक सन्तान से तो बिना औलाद रहना अच्छा है। जैसा कि कवि ने निम्न शब्दों में कहा है –

बेटा भला है एक ही गरचे सपूत हो।
सो पूत भी किस काम के गरचे कपूत हों।

इसलिए बच्चों का निर्माण करने के लिए उनके सामने अपने जीवन का आदर्श प्रस्तुत करो अश्लील हरकतें मत करो।

– आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली- ५१

वैदिक ग्रन्थों एवं परम्पराओं से आर्य श्रेष्ठ

उन्हें 'भारत एक खोज' के आधार पर दिखाना सर्वथा अनुचित

– आचार्य आर्य नरेश

यह अत्यन्त खेद का विषय है कि राष्ट्र का घोर पतन होने पर भी हम उन सच्चे व सीधे देशभक्त नागरिको को प्रेरणा प्राप्त कराने हेतु दूरदर्शन पर न दिखाकर मात्र धन व पद के लोभी नेताओ और अभिनेताओ की ही उठक- ठक को दिखाते हैं। पिछले दिनो मे डी०डी०-१ पर नेहरू जी कृत 'भारत एक खोज' के कुछ अश देखने को मिले। नेहरू जी कोई खोजी इतिहासज्ञ नहीं थे। उन्हें जो कुछ भी अग्रेजो द्वारा अग्रेजी में लिखा हुआ मिला लगभग उसी को आधार मानकर वह आर्यों के प्राचीन इतिहास मे दूर हटकर लिखते चले। प्राय सभी विद्वान भारतीय जानते हैं कि आर्यों का प्राचीन सच्चा इतिहास मनुस्मृति ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों और मिलावट रहित रामायण तथा महाभारत से पता चलता है। इस पर अनेको आर्य विद्वानो ने कलम उठाई और सभी भ्रान्तिया दूरकर इतिहास भी प्रकाशित किया।

खेद का विषय है कि यदि नेहरू जी को सस्कृत और अच्छी हिन्दी का अभ्यास होता तो वह कदापि आर्यों को बाहर से आया हुआ न लिखते। नेहरू जी इतने पर ही चुप न हुए, अपितु उन्होंने आर्यावर्त के मूल निवास व ससार के सबसे श्रेष्ठ व सज्जनों को दूसरे लोगो की चोरी करने वाले अर्थात् गौ आदि पशुओ चुराने वाले, ताश (जूआ) खेलने वाले, अजनबी व छोटे लोगो का राशन लूटने वाले तथा अन्य जाति वालो का पानी रोककर उनकी खेती-बाडी को उजाडने वाला भी बताया। आचार की सभी सीमाए तोडकर इस सीरियल में यहां तक बताया गया है कि आर्य लोग बहुत बडे झगडालू व घमण्डी थे। इस सीरियल मे निकृष्टता की पराकाष्ठा तो वहा होती है जहा आर्यों को दूसरे कुनबे वालों की बेटियों को भी भगाते हुए दिखाया गया। अपनी स्थापना के १२५ वर्ष मनाने वाला आर्यजगत् क्या चेतेगा और उस प्रकार के सीरियल तथा इसके मूलाधार ग्रन्थ को प्रतिबन्धित या झूठा सिद्ध करवाने का प्रयास करेगा।

प्रसार भारती से हमारा यह सशक्त अनुरोध है कि भारत को स्वतन्त्र करवाने वाले, छुआछूत को हटाने वाले, नारी का सम्मान दिलाने वाले तथा अनाथो को जीवन दान देने वाले श्रेष्ठजनो आर्यों को ठेस पहुचाने वाला यह सीरियल अविलम्ब रोक दें। जिन अज्ञानी लोगों की आर्यों के प्रति विपरीत मन्यताए हैं उन्हें हम शास्त्रार्थ हेतु खुली चुनौती देते हैं कि वे भारत के किसी भी नगर या उपयुक्त स्थान पर प्राचीन ग्रन्थो के प्रमाणों से इस विषय पर चर्चा करके निर्णय करें। मध्यस्थता हेतु भारत की प्राचीन वैदिक सस्कृति व ग्रन्थों से परिचित किन्हीं तीन सेवा युक्त या सेवामुक्त जज नियुक्त किए जा सकते हैं।

१ विश्व भर के अब तक मान्यता प्राप्त वैदिक विद्वानों तथा स्वदेशी अथवा विदेशी पूर्वाह रहित इतिहासज्ञों का यही मत है कि आर्यों के बाहर से आने का कोई प्रमाण नहीं मिलता, वस्तुतः सत्य यही है कि आर्यों ने ही यह आर्यावर्त को बसाया था।

२ आर्य लोग शाकाहारी, शान्त सेवाभावी, व परोपकारी थे। उनका धर्म ईश्वरीय वाणी वेद है।

३. आर्य लोग वेदो के अनुसार एक सर्वव्यापक, निराकार, चेतन, सर्वज्ञ व शक्तिरूप ईश्वर की उपासना करते थे और करते हैं।

४ आर्य लोग एक पत्नीव्रती, सयमी अग्निहोत्री तथा जन्म से जाति या वर्णव्यवस्था को न मानकर, गुण, कर्म व स्वभाव से ही मानते थे।

५ आर्य लोग वेदस्थ विभिन्न विद्याओ व कलाओं के ज्ञाता, पुरुषार्थी होते है अत वे मास खाना, चोरी, हिंसा, डाके या लूटने की महापाप समझते है।

६. आर्य लोग अतिथि सेवा व गरीब अनाथ तथा असहाय का सेवा करना महायज्ञ समझते थे। उपर्युक्त सब बाते आज भी वेदों, उपनिषदों व मनुस्मृति में लिखी हैं। अत आर्यों के विषय में अंग्रेजों द्वारा/फैलाई गई भ्रान्तियों से युक्त झूठे ग्रन्थों तथा व्यक्तियो से सावधान रहें।

– ओमवन महर्षि दयानन्द मार्ग कोहर (राजगढ) सिरमौर-१७३१०१ हि० प्र०

श्रीकृष्ण ने जीवन पर्यन्त अन्याय, अत्याचार कुरीतियों से संघर्ष किया

मुम्बई में वेद-प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा १ अगस्त से ५ अगस्त २००१ तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन यजुर्वेदीय यज्ञ तथा भजन प्रवचन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० महावीर सिह जी आर्य (मेरठ) थे।

रविवार दिनाक ५ अगस्त को ७ ३० से ६ ३० तक युजर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इसके बाद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम श्री ओंकारनाथ आर्य (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) की अध्यक्षता में हुआ। श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्रीमती सरोजिनी गोयल के भजन हुए। 'श्रीकृष्ण जी के गुण गाती दुनिया' शीर्षक सुमधुर गीत गाया। पं० नरेन्द्र शास्त्री ने धनुष बाण द्वारा अचूक निशाने बाजी का प्रदर्शन किया। श्री मामचन्द आर्य पथिक ने ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हुए 'मैं पहचान न पाया तुमको' तथा 'अखिल विश्व में व्यापक सत्ता।' पता दे रहा भजन व्याख्या सहित गाए। उन्होंने अपनी सुन्दर साहित्यिक रचना सुमधुर आवाज में प्रस्तुत की। तदनन्तर आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री यशप्रिय आर्य ने महाभारत व श्रीकृष्ण से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा। जिससे सस्था सभागार मे उपस्थित समस्त जनसमूह में उत्सुकता एव जिज्ञासा का भाव प्रकट हुआ। इसी क्रम मे श्री विश्वभूषण आर्य ने 'पत्ता पत्ता पता दे रहा है' नाम कविता का पाठ किया। इसी शृखला मे डॉ० सोमदेव शास्त्री (प्रधान, आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने अपने वक्तव्य मे कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण आप्त पुरुष थे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री मिठाईलाल सिह ने कहा श्रीकृष्ण ऐसे महापुरुष, जिन्हें वैदिक धर्म सस्कृति के रक्षार्थ सदैव स्मरण किया जाएगा। श्री ओंकारनाथ आर्य ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आर्यसमाज का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। आर्य शिक्षण संस्थाए निरन्तर बढ रही हैं। गत् दिनों आर्यसमाज ने भूकम्पीय क्षेत्रों में आठ-दस विद्यालय खोले। आर्यसमाज की प्रगति के लिए आप सबका सहयोग चाहिए ताकि वेद प्रचार का क्रम जारी रहे।

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पर यज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के तत्वावधान में इस वर्ष भी महर्षि जन्म स्थान टकारा में ११, १२, एव १३ मार्च, २००२ को ऋषिबोधोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। ऋषिबोधोत्सव से एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य विद्यादेव जी के ब्रह्मत्व में होगा। आर्यजनों से प्रार्थना है कि उक्त तिथियों को सभी अकित कर लें और समय पर कार्यक्रम में भाग लें।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा में सभी आर्यजनों के आवास एवं भोजन आदि का प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट की ओर से होगा।

संस्कृत की अनन्त शब्दावली

मन की भावनाए प्रकट करने की जितनी क्षमता सस्कृत-भाषा में है, उतनी संसार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। प्रत्येक भाव को अपेक्षित रूप से स्पष्ट करने के लिए सस्कृत में अनगिनत शब्द बना सकते हैं।

सस्कृत में २००० से अधिक पाणिनीय धातु/क्रियापद और २१ उपसर्ग है। उपसर्गों के जुडने से धातु/क्रिया का अर्थ और अधिक स्पष्ट हो जाता है, अथवा धातु का अर्थ बदल कर नया अर्थ बन जाता है। प्रत्येक क्रियापद से एक अथवा दो उपसर्ग जोड़ने से क्रियापदों की सख्या ६,८०,००० हो जाती है। उस एक-एक क्रियापद से काल, वचन पुरुष के अनुसार न्यूनतम ६० रूप बनते हैं। इन ६० रूपों में प्रत्येक रूप के सन्नन्त, णिजन्त, यङन्त यङ्लुगन्त आदि प्रक्रियाओं में रूप बनते है। इस प्रकार लगभग ६७,५०,९६,४६० रूप बनते हैं।

उनके अतिरिक्त प्राथमिक प्रत्ययरूप मिलकर ७७,४६,६५,६८,१२८ प्रधान/मुख्य शब्द बनते हैं। इसी प्रकार १५,१०,६५,४३,२०० अप्रधान प्रत्ययों के शब्दरूप बनते हैं। कुल नाम वाचक शब्द ४,२८,८४,५८,३३० है। ये सारे मिलकर सस्कृत में लगभग १०,२७,८५० लाख (१,०२,७८,५०,००,०००)[२] शब्द बनते हैं।

इनमें समास एव अव्ययों की गिनती नहीं है। इन शब्दों में बनने वाले समास भी गिना जाए, तो सस्कृत में भाव प्रकट करने के लिए प्राप्त शब्दों की सख्या अनन्त है।

'आंग्ल-भाषा (अंग्रेजी) का इतिहास' नामक ग्रन्थ में आंग्ल भाषा, यूरोपीय भाषाओं में समृद्ध भाषा के रूप में बताई गई है। उसमें कम्पेण्डियस-ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी के आधार पर जर्मन भाषा में १,८५,०००, फ्रेंच भाषा में १,००,००० और आंग्ल–भाषा में ५,००,००० + ५,००,००० (सांकेतिक, वैज्ञानिक) =१०,००,००० शब्द बताए गए है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में अंग्रेजी शब्दों की संख्या ६,५०,००० बताई गई है।

इससे आप संस्कृत भाषा की महत्ता एवं उसके भाव प्रकट करने के सामर्थ्य का अनुमान कर सकते है।

१ इसमें वैदिक (लेट लकार) के रूप सम्मिलित नहीं हैं, जो लाखों बनते हैं। २ पाणिनीय धातु पाठ के २००० धातुओं के अतिरिक्त काशकृत्स्न धातुपाठ में लगभग ८०० धातु और जिनेन्द्रादि व्याकरणों के एव सौत्र धातु लगभग २०० हैं। इन १००० (८००+२००) अतिरिक्त धातुओं से ५० प्रतिशत शब्द और भी बन सकते है।

– प्रो० मन्दिश, प्रवक्ता, कम्प्यूटर विज्ञान, लटन वि०वि० इंगलैण्ड

न्यायालय के आदेश दिनांक ६-८-२००१ की मूल प्रति
श्री रामफल बन्सल तथा श्री. आर० एन० मित्तल चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त

09-08-2001

Present : Counsels for the parties.

Arguments heard on the application u/s 151 CPC dated 1/6/2001 moved by the plaintiff. During the course of arguments, Ld. counsels for both the parties have agreed for holding the election of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, a registered body having its office at Maharishi Dayanand Bhawan, Ramlila Maidan, 3/5, Asaf Ali Road, New Delhi in November, 2001 under the supervision and control of Shri R.P. Bansal, Senior Advocate who is presently Chairman of the Sarvadeshik Nyaya Sabha and Mr. Justice R.N Mittal (Retired) Judge of the Punjab & Haryana High Court, who is an eminent Arya Samajist. Both the counsels have also assured that whatever may be outcome of the election, parties shall not make any personal allegations against Mr. R.P. Bansal and Mr. R.N. Mittal.

(2) In view of the consensus between the parties, I appoint Shri R.P. Bansal, the Chairman of the Sarvadeshik Nyaya Sabha and Hon'ble Mr. Justice R.N. Mittal (Retd.) Judge of the Punjab & Haryana High Court as the Election Officers-cum-Administrators who will supervise and control the election of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha scheduled to be held in the month of November, 2001 Both the Election Officers-cum-Administrators shall be vested with the following powers -

1. To prepare a fresh Electoral Roll/list of Voters/ Sabhasada containing the names & addresses of the delegates eligible to participate in the ensuing elections.

2. To issue directions to the concerned provincial bodies/constituents to send the names of their delegates together with Punchmansh/Dashans.

3. To circulate an agenda with one month's clear notice for election on compilation of Voters list/list of Sabhasads.

4. To take all such steps as may be considered necessary by the Election-Officer in matter of preparation of rolls, holding of elections from the beginning till the declaration of results and submission of the result in the office of the Registrar, Societies, Delhi and any other concerned office or authority.

5. To manage, administer and fully control the affairs of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha till the completion of the election process & declaration of election results. And for the purpose necessary to seek the help of competent person/persons whenever & wherever necessary.

6. To deal with the police authorities and other concerned departments and to seek co-operation and help for conducting & concluding the election process in a free & fair manner in terms of the Constitution, rules & regulations of the Sabha.

7. To hold all such powers as may be necessary to be exercised for the purpose of receiving and desbursing finances available in the name of SAPS in any bank, institution or anywhere else.

8. To hold, control and exercise supervision over the administration of the SAPS which they may consider and to do all such acts which they may consider necessary in the discharge of their duties and to take the help of one or more persons as they may consider necessary in the discharge of their duties, as assigned.

Besides the aforesaid mentioned expressed powers they shall exercise all the powers vested in the Executive Committee and/ or Antrang Sabha of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha.

(3) It is further clarified that nobody including the parties in the suit shall be entitled to challenge the decision and or authority of the appointed persons nor anybody would be entitled to raise any objection to the mode and manner of holding elections. The fees of the Election Officers-cum-Administrators shall be fixed by themselves and will be paid out of the funds of Sabha.

(4) In the absence of non-availability of any one of the Election-Officers the other will continue to carry on the election process and acts as stated above.

(5) In view of the aforesaid observation, application u/s 151 CPC is disposed of. Ld. counsel for the plaintiff has further submitted that as the fresh election of the Sabha are scheduled to be held in November, 2001 i.e. after about a period of the three months, he intends to withdraw the present suit. Accordingly, the suit of the plaintiff is hereby dismissed as withdrawn. File be consigned to Record Room.

Announced in open Court.
on 09.08.2001,

(Sukhvinder Kaur)
CIVIL JUDGE/DELHI

पृष्ठ ४ का शेष भाग

(७) प्राण साधना से यज्ञ और यज्ञ से शान्ति की प्राप्ति

ऋधंगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये।
यो नूनं मित्रावरुणौ वभिष्टये आचक्रे हव्यदातये।। ऋ० ८-१०१-१
साकं सूर्यस्यरश्मिभिः।। ऋ० ८-१०१-२

जमदग्निर्भार्गवः। मित्रावरुणौ। प्रगाथः (बृहती, सतोबृहती)

अर्थ – (य मर्त्य) जो मरणधर्मा मानव (अभिष्टये) अभीष्ट सिद्धि के लिए अर्थात् (हव्यदातये) भोगों को भोगने के लिए तथा अवशिष्ट दातव्य पदार्थों को जनहित में देने के लिए (सूर्यस्यरश्मिमि साकम्) सूर्योदय की किरणों के साथ (मित्रावरुणौ) प्राणापान की साधना को (आचक्रे नूनम्) निश्चित रूप से करता है (स) वह (ऋधक्र) अवश्य ही (इत्था) इस प्रकार (शशमे) शान्त हो जाता है कि (देवतातये) दिव्य गुणों के विस्तार के लिए (आचक्रे) निरन्तर क्रियाशील रहता है।

अर्थ पोषण – हव्य दातये – हुदाना दनयो, दा दान।

हव्यम् – भोगने योग्य वस्तु को भोगना, तथा दान देने योग्य वस्तु को दान देना, तथा भोग योग्य वस्तुओं का त्याग भाव से भोगना अर्थात् यदृच्छालाभ से सन्तुष्ट रहना (तेन त्यक्तेन (प्रदतेन) भुञ्जीथा)। मित्रा वरुणौ – प्राणापानौ वै मित्रा वरुणौ। ताण्डय ब्रा०। ६–१०–५ प्रहो रात्रौ वै मित्रावरुणौ – ता० २५–१०–१० रात दिन=निरन्तर।

ऋधक – सत्य पृथग्बृद्धिषु। निरुक्त ६–३३ देवतातये–यज्ञाय=परार्थकर्मणे।

निष्कर्ष – (१) जीवन भर स्वस्थ रहकर भोग भोगने के लिए सूर्योदय से पूर्व उठकर प्राणापान की साधना (प्राणायाम) करना आवश्यक है।

(२) सात्विक भोगों के भोग बिना, सत्पात्र की पहचान और उन्हें देय वस्तुओ के दान का सामर्थ्य उत्पन्न नहीं होता।

(३) देवतति=यज्ञ=पदार्थ कर्म। नि० ३–१७

यज्ञ–देवपूजा, सगतिकरण दानेषु। परार्थ कर्म किए बिना मनुष्य को सच्ची शान्ति नहीं मिलती।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

R N No 32387/77 Posted at N D PS.O on 23-24/08/2001 दिनांक २० अगस्त से २६ अगस्त, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 23-24/08/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का ला... ...०) १३६/२००१

प्रतिष्ठा

विदेश समाचार

नीदरलैण्ड सरकार द्वारा आर्य संस्था को ऐतिहासिक सहायता

नीदरलैण्ड (हालैण्ड) सरकार की ओर से श्री देवा रसियावन को ७००० गिल्डर्स (लगभग एक लाख पचास हजार रुपये) की अनुदान राशि आर्य अनाथालय, दरियागज पटौदी हाउस के लिए जारी की गई जिसे लेकर उनकी माता एव बहन दिल्ली आई और इस राशि की सहायता सामग्री अनाथालय को समर्पित की गई।

यह एक एतिहासिक दान है क्योकि विदेशो से व्यक्तिगत रूप मे तो बहुत से आर्यजन दान देने मे सदैव अग्रणी रहते हैं परन्तु यह पहला अवसर है जब विदेश की किसी सरकार ने विशेष रूप से यूरोप के देश हालैण्ड की सरकार ने यह राशि भारत की किसी आर्य सस्था के लिए जारी की हो। इस कार्य के प्रेरणा स्रोत वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट रहे, जिनके मार्गदर्शन पर रसियावन परिवार ने यह प्रोजेक्ट हालैण्ड सरकार के समक्ष रखा और इस प्रथम प्रोजेक्ट की राशि जारी की गई। श्री विमल वधावन ने रसियावन परिवार को भविष्य मे भी ऐसी नई योजनाओ से अवगत कराया जिनसे भारत भारत के जरूरतमन्द क्षेत्रो मे सहायता पहुचाई जा सके।

आर्य अनाथालय को दी गई सहायता सामग्री मे लगभग ५०० रजिस्टर, ५००० हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, ५०० अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष, गुरुकुल चाय के १०० डिब्बे, पायोकिल दत मजन, विद्यार्थी जीवन रहस्य की १००० पुस्तके, २०० सध्या यज्ञ परिचय, ६०० बच्चियो के लिए विद्यालय की वर्दी जिसमे कमीज तथा स्कर्ट शामिल हैं। कपडो की खरीदारी आर्य अनाथालय के अधिकारियो द्वारा स्वय ही की गई।

यह सहायता सामग्री सार्वदेशिक सभा के एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा अनाथालय के प्रेरक विद्वान श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री की उपस्थिति मे प्रबन्धक श्री एच० एस० रघुवशी को सौपी गई।

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार

लेखकों व प्रकाशकों को सूचित किया जाता हैं कि इस वर्ष ५०००/- रुपये का गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार वैदिक सिद्धान्तों, आर्यसमाज अथवा महर्षि दयानन्द के जीवन के दर्शन पर प्रकाशित ग्रन्थ पर दिया जाएगा।

अत विद्वत्जनों से निवेदन है कि निर्णय में भाग लेने हेतु अपने ग्रन्थों की चार प्रतियां राधेमोहन, मन्त्री गगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, ६८, बहादुरगज, इलाहाबाद को भेजे।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली

प्रधान	–	श्री भजनप्रकाश आर्य
उप-प्रधान	–	श्री विशनदास गम्भीर, श्री धर्मदेव सक्सेना
मन्त्री	–	श्री कृष्ण देव
उप-मन्त्री	–	श्री नन्दकिशोर गुप्ता, श्री यशपाल दुआ
प्रचार मन्त्री	–	श्री नितिन दुआ
कोषाध्यक्ष	–	श्री विनय भूषण गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष	–	श्री गोपीचन्द गौहर
अधिष्ठाता आर्यवीर दल	–	श्री जगन्नाथ डींगरा

सामाजिक न्याय और स्वतन्त्रता के मध्य सन्तुलन रखें – राष्ट्रपति

स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व सध्या मे राष्ट्रपति के० आर० नारायणन ने एक बार फिर सामाजिक न्याय और स्वतन्त्रता के बीच सन्तुलन बनाए रखने का आह्वान किया है। उन्होने घोषित किया कि सभी जटिलताओ और विविधताओ के बीच एकता और लोकतन्त्र की मजबूती आजादी मे बाद की सबस बडी उपलब्धी है।

उन्होंने घोषित किया कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के ५४ वर्षो की अवधि मे भारत के इतिहास मे अपेक्षाकृत अधिक शान्ति विकास और एकता का वातावरण जनता मे अधिक आशाए पैदा करने वाला रहा है।

सुख-समृद्धि के लिए मानवोचित धर्म पालन करें

आर्य समाज सोहनगज सब्जी मडी दिल्ली के ६३ वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाक १६ जुलाई से २२ जुलाई, २००१ तक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात यज्ञ और रात्रि मे भजनो का सरस कार्यक्रम हुआ। आचार्य योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने वेदो शास्त्रों, रामायण महाभारत व गीता के उद्धरणों से मानव उत्थान के लिए आवश्यक कर्तव्य-कर्मो का निरुपण किया। वक्ता ने कहा कि हमे बुजुर्गों का सदैव सम्मान करना चाहिए तथा परिवार मे सुख समृद्धि के लिए वेदो और गीता मे बताए गए मानवोचित धर्म का परस्पर व्यवहार करना चाहिए। जनता सदैव मधुर वाणी बोले जिससे परस्पर वैमनस्य व कटुता समाप्त हो, महिला-सत्सग में सभा मे अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा रहेजा ने महिलाओ को अपने परिवारो, विशेषकर बच्चों को सुसस्कारवान बनाने का उत्तरदायित्व लेने का कहा। उन्होंने कहा कि भारत मे सदैव विदुषी महिलाओं ने समाज का मार्गदर्शन किया है।

पाकिस्तान कश्मीर का सपना न देखे

भारत सीमापार के आतकवाद को कुचलने में कसर नही छोडेगा

प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के ५४वें स्वतन्त्रता दिवस पर ऐतिहासिक लालकिले की प्राचीर से कडे शब्दों में पाकिस्तान का चेतावनी दी है कि वह आतकवाद के जरिए जम्मू-कश्मीर पर कब्जा करने की बात भूल जाए तो अच्छा होगा। उन्होंने पाक समर्थित जेहादी सगठनों की गतिविधियो को नापाक घोषित किया और चेतावनी दी कि भारत सीमापार से भडकाए जा रहे उग्रवाद को कुचलने में कोई कसर बाकी नहीं छोडेगा।

प्रधानमन्त्री ने कश्मीर की जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार द्वारा वहा विधानसभा के स्वतन्त्र एव निष्पक्ष चुनाव करवाए जाएगे। उन्होने कहा– हम आपका दु ख-दर्द समझते हैं और उसे दूर करने की कोशिश करेगे। उन्होने कहा कि अमरनाथ, किस्तवाड, डोडा, जम्मू और अब गाजियाबाद में निर्दोष लोगो की हत्याए की गई हैं। प्रधानमन्त्री ने पूछा कि यह कैसा जेहाद है और किसकी आजादी के लिए है ?

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष . ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ३२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द - १७८ सोमवार, २७ अगस्त से २ सितम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति . २ रुपये वार्षिक . ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष ने प्रशासक पद सम्भाला

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव ३ तथा ४ नवम्बर, २००१ को
चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रान्तीय सभाओं को १५ सितम्बर, २००१ तक प्रतिनिधि भेजने के लिए परिपत्र जारी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अगामी त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन **३ तथा ४ नवम्बर, २००१ (शनिवार-रविवार)** को **आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल चान्दनी चौक, दिल्ली** मे प्रात ११ बजे से होना निश्चित हुआ है। सारी चुनाव प्रक्रिया सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष **श्री रामफल बंसल जी** की देख-रेख और नियन्त्रण में सम्पन्न होगी।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली की एक दीवानी अदालत की न्यायधीश श्रीमती सुखविन्दर कौर ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बनाम स्वामी ओमानन्द व अन्य नामक मुकदमे मे **श्री रामफल बंसल** के साथ पजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त **न्यायाधीश श्री आर०एन० मित्तल** को भी चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया था श्री आर०एन० मित्तल ने अपनी व्यस्तताओ के कारण इस दायित्व के निर्वहन करने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। परिणामत: **श्री रामफल बंसल** अकेले ही इस गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन करेगे।

विगत सप्ताह श्री रामफल बसल ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रशासक का दायित्व सम्भाल लिया है। सभा कार्यालय में अपनी प्रथम बैठक के दौरान उन्होने स्वामी सुमेधानन्द, श्री वेदव्रत शर्मा, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री विमल वधावन, चौ० लक्ष्मीचन्द तथा श्री मुकेश सैनी आदि से गहन विचार विमर्श किया है। इसके अतिरिक्त, उन्होने स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिह, श्री चन्द्रदेव, श्री इन्द्र देव , डॉ० महेश विद्यालकार तथा श्री जगदीश आर्य आदि से भी विचार विमर्श किया। चुनाव प्रक्रिया को प्रारम्भ करते हुए सभी सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओ को १५ सितम्बर, २००१ से पूर्व अपने **प्रतिनिधि भेजने के लिए परिपत्र** जारी कर दिया गया है। उपरोक्त कार्यवाही की जानकारी समस्त अन्तरग सदस्यो को भी भेज दी गई है। **अन्तरंग** तथा **कार्यकारिणी के अधिकार** अब **चुनाव अधिकारी में ही निहित हैं। श्री रामफल बंसल** ने **श्री वेदव्रत शर्मा** को **सहायक प्रशासक** के रूप मे कार्य करने का निर्देश दिया है।

श्री रामफल बसल ने आर्यजनो से मार्मिक अपील करते हुए कहा है कि मैं सत्य और न्याय की स्थापना और आर्यसमाज की सुदृढता के लक्ष्य को सामने रखकर ही कार्य करूगा। उन्होने कहा है कि आज आर्यसमाज को देश और समूचे विश्व की वर्तमान परिस्थितियो के दृष्टिगत एक मजबूत और चुस्त सगठन के रूप मे खडे होने की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माण के कई कार्यक्रम आर्यसमाज के उचित नेतृत्व की प्रतीक्षा मे हैं और साथ ही आर्यसमाज को एकजुट होकर कई आन्तरिक अव्यवस्थाओ मे भी सुधार करना है।

उन्होने आर्यजनो को विशेष रूप से प्रान्तीय सभाओ के प्रतिनिधियो का आह्वान किया है कि वे पूरी श्रद्धा और आर्यसमाज के प्रति पूर्ण त्याग और समर्पण की भावनाओ से इस चुनाव प्रक्रिया मे भाग ले।

मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य ने तथा कई अन्य प्रान्तो के आर्यनेताओ ने श्री रामफल बसल से फोन पर सम्पर्क करके इस कार्यवाही का स्वागत किया है तथा हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया है। ✡✡✡

गांधीधाम में अनाथालय और विधवाश्रम का शिलान्यास शनिवार १५ सितम्बर २००१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गुजरात के भूकम्प पीडित अनाथ बच्चो और निराश्रित महिलाओ के लिए केन्द्र सरकार के जहाजरानी मन्त्रालय ने आर्यसमाज गाधीधाम को **२ एकड भूमि कांडला पोर्ट ट्रस्ट के** तहत देना स्वीकार कर लिया है। विगत् माह सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मण्डल के साथ **केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री अरुण जेटली** के कार्यालय मे हुई बैठक मे यह अन्तिम निर्णय लिया गया। प्रतिनिधि मण्डल मे **श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन, आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल** तथा **गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य** शामिल थे।

श्री अरुण जेटली के आदेश के बाद समस्त कानूनी औपचारिकताए पूरी करते हुए इस भूमि का स्थानान्तरण आर्यसमाज गाधीधाम को कर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष २६ जनवरी को आए विनाशकारी भूकम्प के तुरन्त बाद सार्वदेशिक सभा की ओर से स्थानीय आर्य नेताओ को इस योजना पर कार्य करने के लिए निर्देश दिया गया था। फरवरी माह मे श्री विमल वधावन एडवोकेट ने श्री अरुण जेटली के साथ आर्यसमाज गाधीधाम के प्रतिनिधि मण्डल के साथ स्थानीय कारपोरेशन की बैठक मे इस योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की थी।

१५ सितम्बर, २००१ शनिवार को स्वय श्री अरुण जेटली गाधीधाम मे इस भूमि का शिलान्यास सम्पन्न करेंगे।

आर्यसमाज गाधीधाम के मन्त्री **श्री वाचोनिधि आर्य** ने सभी आर्यजनो तथा दानी महानुभावो से इस कल्याणकारी योजना को अपने सात्विक दान से सफल बनाने की अपील की है। ✡✡✡

"सर्वं वै पूर्णं स्वाहा"

– सोहनलाल शारदा

वाद-विवाद करते-करते मेरे मन में आया कि ऐसा प्रतीत होने लगा है कि साधारण जनों की विचारधारा के विरुद्ध होकर भी गृहस्थियों के तरह ही अनेक पुस्तकों आदि की खटपट की क्या आवश्यकता है। इसलिए ही मैंने "सर्व वै पूर्णं स्वाहा" कहकर सब कुछ छोडते हुए मात्र कौपीन धारण कर मौन व्रत धारण करने का निश्चय कर लिया।

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

महर्षि से जब सौरो निवासी स्वामी कैलाश पर्वत ने जिनस से कि हरिद्वार में ही पूर्ण परिचय हो चुका था प्रश्न किया कि हे स्वामिन् ! ऐसा क्यो कर रहे हैं?

इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए अपने विचार धैर्य निष्ठा पूर्वक उपर्युक्त वाक्य कहते हुए यह भी कहा हैं –

"हे स्वामीजी ! हम सब कुछ स्पष्ट करना चाहते हैं और यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि हम अपनी आवश्यकताएं न्यून कर दें। अतः मैंने निश्चय किया है कि मात्र कौपीन धारण कर सर्व संग्रहीत वस्तुए पुस्तकें, वस्त्र, धन-पैसा सभी कुछ है, सभी यथायोग्य जनों में वितरण कर दू और इष्ट सिद्धि हेतु गगातट पर विचरण करता हुआ वेदवाणी संस्कृत में ही अपना विचार देता रहू। कुछ समय मौन भी रहू।"

महर्षि को यह दृढ निश्चय सन् १८६७ के महाकुम्भ हरिद्वार के पश्चात् का है उन्होने यहा मेले में जो कुछ देखा उससे ज्ञात हो गया कि इस आर्यावर्त देशीय आर्यजन घोर अविद्या रूपी अधकार से ग्रस्त हैं। सस्कृत निष्ठ विद्वजन् स्वार्थान्ध होकर अपना ही पेट पेटी भरने मे सलग्न हैं, अत महर्षि ने पूर्णतया निश्चय कर कहा –

"जो ज्ञान मुझे पूज्यपाद गुरुवर प्रज्ञाचक्षु जी से प्राप्त हुआ है, उनकी ही महत्ती कृपा से वेदादि सत् शास्त्रों का अवगाहन और अनुशीलन से प्राप्त हुआ है। उसका निर्भयता पूर्वक प्रचार करू।"

अत महर्षि के जो कुछ था, उसको मार्ग में बाधा जान यथायोग्य जनो मे वितरण कर दिया। उसी मे से श्रद्धेय गुरुवर की सेवा मे भी प० दयाराम जी के साथ महाभाष्य की पुस्तक तथा एक पूरा मलमल का थान एव ३५ रुपये भी भेटस्वरूप भेजे थे। महर्षि ने इस प्रकार से किया **"सर्वं वै पूर्णं स्वाहा"**।

इसी समय श्री ठाकुर रणजीत सिह, अचरोल (जयपुर) ने अपने यहा पदार्पण करने के लिए निमन्त्रण पत्र द्वारा श्री रूपराम जी जोशी को अपने कारफून को साथ मे लिवा जाने के लिए भेजा और भेट स्वरूप दो अशर्फी स्वर्ण मुद्राए भिजवाईं।

श्री जोशी हरिद्वार पहुचने पर देखते हैं कि स्वामी जी तो सभी सग्रहित वस्तुए जनता मे वितरण कर रहे हैं। अत भेट स्वीकार नहीं करके जोशी रूपराम को भी एक माला तथा दुर्गापाठ की पुस्तक एव दस रुपये भी देने चाहे। जोशी जी ने रुपये तो नहीं लिए लेकिन पुस्तक व माला प्राप्त कर ली।

अब आगे सर्वस्व त्यागी वीतराग परमहस बन महर्षि गगा तट पर भ्रमण एव उपदेश करते वेद ज्ञान को घर-घर पहुचाने लगे। फलस्वरूप कई जन भक्त बनकर अपनी कृत्रिम अवैदिक देव मूर्तिया गगा माता को अर्पण करने लगे और सध्या-यज्ञ से निराकार परब्रह्म परमात्मा की उपासना करने लगे। यहा महर्षि इच्छुक जनो को सन्ध्या यज्ञ-विधि अपने हाथो से लिखकर व पढाकर प्रचार कार्य करते थे।

इतिहास बताता है कि इस प्रकार प्रचार-प्रसार से ही महर्षि के अन्तिम समय तक महर्षि भक्तो की सख्या करीब तीन लाख तक पहुच गई थी।

प्रवचन स्थल भागलपुर का वर्णन करते हुए लिखा है – "स्वामीजी के यहा प्रवचन स्थल पर मेला लग जाता था। यहा सुनने वालों की इतनी सख्या हो जाती थी कि यहा हलुवा, पूरी, नमकीन, तम्बाकू की दुकाने लग जातीं। उपस्थित समुदाय हजार तक पहुच जाते थे इक्के, बग्घी गाडिया आदि बहु सख्या मे प्रतिदिन आ जाते थे। सभा स्थल एक मेले का रूप ले लेता था।" (प० लेखराम कृत उर्दूरचित आर्याभाषानुवाद प्रथम सस्करण, आर्यसमाज नया बास दिल्ली)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का सर्वस्वत्याग का कार्यक्रम

पूरी अर्द्धशताब्दी पश्चात् सन् १९१७ मे महात्मा मुशीराम जी ने भी इस प्रकार का कार्यक्रम किया था, ऐसा ही **"सर्वं वै पूर्णं स्वाहा"** का कार्यक्रम।

इस विषय पर लिखते हुए प० इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं कि जब गुरुकुल कागडी का उत्सव हो रहा था तभी एक समय बडे सवेरे ४ बजे पूज्य पिताजी ने अपने सेवक से कहलवाया कि दोनो भाइयो को हमारे पास बुलाओ। उसके सूचना देने पर हम दोनों जने श्री पिताजी के तत्कालीन वासस्थान पर आ गए। तभी पूज्य पिताजी ने धैर्यपूर्वक कहा कि मेज पर जो पत्र पडा है उसे पढकर सोच-समझकर हस्ताक्षर कर दो।

तब हम दोनों भाइयों ने उसे पढा, तब पिताजी ने कहा यह बात मजूर हो तो हस्ताक्षर कर दो। हम दोनों ने सिर हिलाते हुए हस्ताक्षर कर दिए। इस पत्र मे सार-सक्षेप मे जो था, – उसका वर्णन करते हुए लिखते हैं –

"मैंने यद्यपि अपने जीवन में पूरी शक्ति के अनुसार धर्मप्रचार नि स्वार्थ भाव से आर्यसमाज व गुरुकुल की सेवा की है। महर्षि की आज्ञानुसार उसे शिरोधार्य कर वैदिक धर्म पुनरुद्धार व आर्यों के उत्थान हेतु गुरुकुल का सचालन करता रहा है। मैंने इसके लिए सर्वशक्ति लगाई है, लेकिन मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि मेरा अभी तक का प्रयास अधूरा ही है, जब तक कि मैं गुरुकुल के लिए "सर्वं वै पूर्णं स्वाहा" नहीं कर दूं। जालन्धर में मेरी कोठी जिसे मैंने निजी आय से निरन्तर बीस वर्षों से शैन शैन बनाया है, इसका मूल्य भी वर्तमान मे बीस सहस्र रुपये है। इसमें मेरी ममता विद्यमान है। इसे दूर करने हेतु मैं यह दान पत्र द्वारा शेष रही इस कोठी को भी गुरुकुल कागडी हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को समर्पित करता हू।"

पूज्य पिताजी को इस दान पत्र की आवश्यकता इसलिए थी कि इससे पूर्व वह एक वसीयत नामा लिख चुके थे कि इस कोठी को बेचकर जो मूल्य मिले, उसे आधा श्री हरिशचन्द्र को प्रेस आदि चलाने हेतु तथा आधा यानी दस हजार के लगभग मुझे विलायत जाकर बैरिस्ट्री उत्तीर्ण होने हेतु दे। ऐसा इस वसीयतनामें में वर्णन है। इस दान पत्र से यह वसीयतनामा निरस्त हो गया। हम दोनों भाइयों ने इस दान पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

यह सब इसलिए हुआ कि एक बार एक धनपति के यहा दिल्ली मे चन्दा लेने हेतु गए थे। तब वह सेठ शौच के बहाने अन्दर गया। पुन लौट के ही नहीं आया, तो विचार आया कि ऐसा क्यों हुआ। अपनी कजोरी है। इसे पहले निकाल दो। अत यह दान पत्र लिखा गया।

तत्पश्चात् पिताजी ने उत्सव के मध्य अपने भाषण मे इस त्यागपूर्ण महत्ता लिए हुए दान पत्र की घोषणा कर दी। तभी कई सदस्य जनों ने करुणा दृष्टि डालते हुए हमें कहा कि – "तुम लोग उजदारी करो तो यह दान पत्र निरस्त हो सकता है।"

लेकिन हमने ऐसा कुछ भी इसलिए नहीं किया कि हम तो पहले ये ही इसे जानते थे। इस प्रकार इस महर्षि भक्त ने किया **"सर्वं वै पूर्णं स्वाहा"** और बने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज।

– शाहपुरा भीलवाडा (राजस्थान)

विजय : सत्परामर्श से

महाभारत का सन्दर्भ है जब कौरवों और पाडवो के मध्य युद्ध करना अनिवार्य हो गया तो दोनो ही पक्ष आसन्न युद्ध मे सहयोग देने के लिए देश के विभिन्न राजाओ को निममन्त्रण दे रहे थे। श्रीकृष्ण द्वारिका पहुच गए है, यह सूचना मिलने पर दुर्योधन द्वारिका की ओर प्रस्थान कर गया और पाण्डवो की ओर से सहायता मागने अर्जुन पहुचे। दोनों लगभग एक ही समय वहा पहुचे।

उस समय श्रीकृष्ण राजमहल में शयन कर रहे थे। दुर्योधन वहा पहले पहुचा और वह शयनगृह मे रख एक भव्य सिहासन पर जो श्रीकृष्ण के सिरहाने की ओर था, बैठ गया। थोडी देर मे अर्जुन भी पहुचा और बडी विनम्रता से श्रीकृष्ण के चरणो की ओर हाथ जोडकर खडा हो गया। नींद खुलने पर श्री कृष्ण ने पहले अर्जुन को देखा फिर दुर्योधन को। उन्होने दोनो की आवभगत की। उस समय दुर्योधन बोला– **"मधुसूदन, मैं पहले आया हू, अत युद्ध में आप मेरी सहायता करें।"** इस पर श्रीकृष्ण बोले – **"हे दुर्योधन, मैंने पहले अर्जुन को देखा है, हो सकता है तुम यहा पहले आए हो, इसलिए मैं दोनों की सहायता करूगा। शास्त्र कहता है कि पहले बालकों को उनकी अभीष्ट वस्तु दो, अत आयु में छोटे पहले कुंतीपुत्र अर्जुन अपनी अभीष्ट वस्तु लेंगे, मेरे पास हृष्ट-पुष्ट योद्धाओं की बडी सेना है, एक ओर ये सैनिक युद्ध में भाग लेंगे, दूसरी ओर मैं शस्त्रहीन भाग लूंगा। अर्जुन इन दोनों में से तुम मनचाही वस्तु मांग लो। शास्त्रानुसार तुम्हें मनचाही वस्तु मांगने का पहला अधिकार है।"** अर्जुन ने शस्त्रहीन श्रीकृष्ण को चुना और नारायणी सेना नहीं मागी।

दुर्योधन के चले जाने के पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से पूछा – **"पार्थ, मैं तो युद्ध करूगा नहीं, फिर तुमने क्या सोचकर मुझे चुना ?"**

अर्जुन ने उत्तर दिया– **"आप शत्रुनाशक हैं और मैं शत्रुओं का नाश करना चाहता हूं, आप यशस्वी हैं, मैं भी यश की कमाना चाहता हूं, इसलिए आप को चुना है। युद्ध के समय आप मेरे सारथी बनें तो मेरा विश्वास है कि आप के सहचर्य से विजय हमारे पक्ष को मिलेगी, क्योंकि आप सदा सत्परामर्श देंगे।"**

– नरेन्द्र

राष्ट्र-रक्षा : मातृभूमि कल्याण करे : शत्रु कण्टक के समान : वैसा ही व्यवहार

राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।

राष्ट्र को दृढता से धारण करो, राष्ट्रभक्त बनो।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु। *अथर्व० १२/१/११*

हे मातृभूमि ! तुम्हारी पर्वत श्रखलाए, तुम्हारे हिमधवल पर्वत, तुम्हारे वन-उपवन सुखद हो।

कण्टकेन कण्टकमिव परेण परं उद्धरेत्।

जैसे काटे से काटा निकालते हैं, वैसे ही शत्रु को शत्रु से हराए।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

खोजी पत्रकारिता के लिए भी मर्यादा

पिछले दिनों तहलका डाट काम ने राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार का रहस्योद्घाटन खोजी पत्रकारिता के माध्यम से किया। खोजी पत्रकारिता की महत्ता अवश्य है जिसमें चित्रो के माध्यम से भ्रष्टाचार को उजागर किया गया था। तहलका डाट काम के प्रबन्ध निदेशक तरुण तेजपाल का कहना है कि उनका लक्ष्य राजनीति मे व्याप्त भ्रष्टाचार का रहस्योद्घाटन करना था। लक्ष्य ऊचा और ठीक हो सकता है, परन्तु उस भ्रष्टाचार का भण्डाफोड करने के लिए जिस प्रकार सैक्स का सहारा लिया गया, उसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि क्या खोजी पत्रकारिकता के लिए क्या कोई मर्यादा होनी चाहिए ? इस चर्चा से साध्य और साधन की पवित्रता का विवाद भी उभरा है। गाधीजी कहा करते थे कि पवित्र लक्ष्य तक पहुंचने के लिए साधनो की पवित्रता आवश्यक है। गाधी जी साध्य-साधन-शुचिता के आदर्श सिद्धान्त को मान्य करते थे। गाधीजी का सिद्धान्त आदर्श कहा जा सकता है, परन्तु व्यवहार मे अच्छे साध्य तक पहुचने के लिए अच्छे साधनो का प्रयोग कम ही होता है। पिछले दिनों तहलका के रहस्योद्घाटन से खोजी पत्रकारिता द्वारा सेना मे व्याप्त भ्रष्टाचार का रहस्योद्घाटन करने के लिए सुरा-सुन्दरी का जिस प्रकार प्रयोग किया गया उस पर मयोदा हनन का आरोप लगाया गया है। तहलका के खोजी पत्रकार तरुण तेजपाल कहते हैं कि उनकी कहानी भ्रष्टाचार पर केन्द्रित है न कि सैक्स घोटाले पर। उनका दावा है कि सेना मे व्याप्त भ्रष्टाचार का भण्डाफोड करने के लिए ही सेना के अफसरो की ही माग पर सैक्स का सहारा लिया गया था, उसने सस्था की छवि और नैतिकता की दृष्टि से तहलका टेप का वह हिस्सा सार्वजनिक नहीं किया गया, परन्तु पूरा टेप सेना की जाच अदालत और न्यायमूर्ति वैंकटस्वामी आयोग को सौंप दिया गया था। इस कार्यवाही से वैसे खोजी पत्रकारिता की लक्ष्यपूर्ति के साथ सारे मामले मे मर्यादा और शुचिता का ध्यान भी रखा गया था, परन्तु सारे मामले में जिस प्रकार सुरा-सुन्दरी का प्रयोग किया गया, उससे गाधी जी के देश मे नैतिकता की ऊची मर्यादा को क्षति अवश्य पहुची है।

स्वभावत देश में विशेषत सेना मे व्याप्त भ्रष्टाचार या बुराइयो की जाच सेना की ऊची परम्परा, अनुशासन और कानून द्वारा हो सकती थी, परन्तु जब वह नहीं हुई तो धुन के पक्के पत्रकारो को स्थिति की सच्चाई के अनुसार करने के लिए जीवन मे उपलब्ध मान्य तथा दूसरे व्यवहारिक साधनों का सहारा लेना पडा। सकट की घडियो मे मर्यादा का सम्मान करते समय किस प्रकार ऊचे व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। यह आज भी जनता महात्मा मुशीराम जी एव स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग-बलिदान से ओत-प्रोत जीवन से सीख सकती है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने लिखा था— **"स्वामी श्रद्धानन्द जी याद आते ही सन् १९१९ का दृश्य मेरी आंखों के सामने खडा हो जाता है। अग्रेजी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं, स्वामीजी छाती खोलकर सामने आते हैं, और कहते हैं- 'लो, चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूं कि उसी वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर वीरता और वीरता के भावों को भरता रहे।"** उल्लेखनीय है कि ऐसे वीर सन्यासी ने अपनी आत्मकथा **'कल्याण मार्ग का पथिक'** शीर्षक से लिखी थी। ऋषि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर वह अपने और ससार के कल्याण के लिए निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जहा एक निष्ठावान् सस्कृति के भक्त थे, समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री तथा स्वाधीनता सग्राम के साहसी योद्धा थे, वहा वह सरस्वती के वरदपुत्र भी थे। यह प्रेरणा की स्थिति है कि उन्होने अपनी आत्मकथा एक कल्याण मार्ग के पथिक के रूप मे लिखी। इन दिनो खोजी पत्रकारिता के सिलसिले मे जहा तहलका के माध्यम से सुरा-सुन्दरी का ताना-बाना बुना गया, ऐसे मे राष्ट्र की प्रबुद्ध जनता राष्ट्रीय जीवन मे मर्यादा और त्याग की ऊची झाकी लेने के लिए 'कल्याण मार्ग का पथिक' महात्मा मुशीराम और स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मकथा कल्याण मार्ग के पथिक और उनके द्वारा धर्म, समाज, राष्ट्र और शिक्षा के क्षेत्रो मे चौमुखी क्रान्ति का सूत्रपात करने वाले यशस्वी जीवन से ऊची मर्यादा का अनुसरण कर सकती है।

अभी पिछले दिनों राष्ट्र की स्वाधीनता की ५५वीं जयन्ती देश ने उत्साह से मनाई है। यह भी गौरवगाथा की एक अमिट स्मारिका है कि सवा सौ वर्ष पूर्व मुम्बई मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज ने राष्ट्र के स्वाधीनता सग्राम के अग्रणी योद्धाओ के रूप मे बलिदानी और योद्धा दिए हैं तो राष्ट्र के सामाजिक, सास्कृतिक और शैक्षणिक नव-निर्माण मे उसने एक अग्रणी ध्वजवाहक की भूमिका प्रस्तुत की है। राष्ट्र की ५५वीं स्वाधीनता जयन्ती और उसके अपने यशस्वी क्रान्तिकारी इतिहास के १२५ वे वर्ष मे अब वह समय आ गया है कि जब राष्ट्र के भावी लक्ष्यो का निर्धारण कर नई सहस्राब्दी में आर्यसमाज और राष्ट्र के भावी लक्ष्यो का निर्धारण कर, नई सहस्राब्दी मे आर्यसमाज और राष्ट्र के भावी कार्यक्रम पर चिन्तन करे। इतिहास के प्रारम्भिक युग से उत्तर मे हिमालय से लकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर सिन्धु सागर तक का राष्ट्र सास्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक और अखण्ड रहा है। दीर्घकालीन मुस्लिम और अग्रेजी शासन के दिनों मे भी हमारी राष्ट्रीय अखण्डता पर आच नहीं आई थी। देश इस कटु सच्चाई को भूल नहीं सकता कि लम्बे स्वातन्त्र्य सघर्ष के बाद जब अग्रेज भारत छोडने के लिए विवश हुए तो वे विदाई के समय भारत राष्ट्र के दोनो बाजू समीपस्थ प्रदेशो के साथ काटकर अलग कर दिए थे। देश की स्वाधीनता की ५५वीं जयन्ती पर इस विशाल भूखण्ड के देशों की जनता को अपने आर्थिक, सास्कृतिक सम्बन्धों को जोडने का सकल्प प्रौद्योगिकी, ज्ञान-विज्ञान नवीनतम तकनीकी विद्याओ मे एक अग्रणी हो साथ ही यहा की कोटि-कोटि जनता सभी प्रकार के प्रभावो, कष्टो, विषमताओं से पूर्णतया मुक्त होकर प्रत्येक दृष्टि से स्वाधीन अग्रणी आदर्श राष्ट्र की स्थिति प्राप्त करे। लक्ष्य कठिन होने पर भी असम्भव नहीं, यदि ऐसा लक्ष्य हम पा सके तो नई सहस्राब्दी मे भारत का अभ्युदय सम्भव है।

ढाक के तीन पात

हमारे नेता और मन्त्री सब प्रतिदिन आतकवाद का मुहतोड जबाव देने तथा उसे सिखाने वाले मुल्क को मुहतोड जवाब देने की बात करते हैं, परन्तु हालत वही ढाक के तीन पात बन कर रह गई है। अच्छा हो कि झूठे आश्वासन देने के स्थान पर क्यों नहीं सेना को एक बार आतकवादियों और उसे शरण दे रहे मुल्क को सीधा सबक सिखाने की अनुमति दे दी जाए।

— **भगत थापा बन्धु, खिचड़ीपुर, दिल्ली**

होश में आएं

आगरा मे भारत-पाक वार्ता विफल होने पर पाक आतकवादी घाटी के निर्दोष लोगो की हत्याए कर रहे हैं। पिछले दिनो सेना के साथ सघर्ष मे खूखार आतकवादियों के मारे जाने के बाद से ये आतकवादी अब निहत्थों को अपनी गोलियों का निशाना बना रहे हैं और परवेज मुशर्रफ इन निर्मम हत्याओ को स्वतन्त्रता सग्राम कह रहे हैं। भारत द्वारा जम्मू क्षेत्र को अशान्त घोषित करना एक स्वागत योग्य कदम है, इससे हमारी सेना को अधिक अधिकार मिलेंगे। वहा पर नियुक्त सैनिकों को कायदे से आतकवादियो को गिरफ्तार करने की जगह देखते ही गोली मार देनी चाहिए।

— **कु० सरोज वर्मा, अम्बेडकर नगर, राय बरेली**

भारत नष्ट नहीं हुआ, आलसी हो गया

भारत पर आधुनिक सभ्यता राज कर रही है यहा रेलो, तारों, फोनों का जाल बिछ गया पर इस आधुनिक सभ्यता से भारत नष्ट नहीं हुआ, परन्तु आलसी हो गया। यातायात के नवीन साधनों ने हमारे तीर्थों, पवित्र स्थानो को अपवित्र बना दिया है। उस उन्मत्त आधुनिक सभ्यता ने हमारी जडे उखाड दी हैं। भारत की प्रतिष्ठा तभी होगी जब वह आलस्य छोडकर पुन उद्यमी बनें। — **महात्मा गाधी, ('पूर्व और पश्चिम' भाषण का सार)**

ग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१४) पूर्वार्द्ध

कार्य-कारण श्रृंखला

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) शान्तिदाता प्रभु के धर्मों में रमने वाला सदा कर्मठ और इन्द्र ा रहता है

स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति।
रणायो अस्य धर्मभिः।। *ऋ० ६/७/७*
काश्यपोऽसितो देवलोवा। पवमानः सोमः। गायत्री।

अर्थ – (य) दिव्यगुणों की कामना वाला जो केत (अस्य) इस पवमान=क्रियाशील और पवित्र ाने वाले सोम=शान्त बनाने वाले प्रभु या वीर्य के मि=सहज गुणकर्म के साथ (रणा) आनन्दित रहता (वायु इन्द्र गच्छति) कर्मठता और ऐश्वर्य को प्राप्त ता है (स) वह (मदेन साकं अश्विनौ गच्छति) न्द के साथ अनायास ही, चाहे रात हो या दिन, ी लोक और द्युलोक मे, यहा तक कि चन्द्रलोक र सूर्य लोक मे भी यथेच्छ विचरता है।

अर्थपोषण – वायु – गति का देवता – ातिगन्धनयो, अत कर्मठता।

इन्द्र – ऐश्वर्य का देवता – इदिपरमैश्वर्ये, अत वर्य। अश्विनौ = द्यावा पृथिव्यौ, अहोरात्रौ, ।चन्द्रमसौ। *निरु० १२/१/१*

निष्कर्ष – (१) परमात्मा की व्यवस्था का पालन र वीर्य की रक्षा करने वाला साधक सदा क्रियाशील ना है, और ऐश्वर्यशाली बनता है।

(२) अश्विनौ =प्राणापानौ की साधना द्वारा वह ज मे ही सर्वदा और सर्वत्र विचरण करता है।

(२) शान्त प्रभु को चन्द्र सम शान्त ार आह्लादी ही प्राप्त करता है

यः सोमः कलष्वा अन्तः पवित्र आहितः।
तमिन्दुः परि षस्वजे।। *ऋ० ६/१२/५*
काश्यपोऽसितो देवलोवा। पवमानः सोमः। गायत्री।

अर्थ – (य सोम) जो सर्वोत्पादक परमेश्वर लषेषु) जड पदार्थों के शरीर में और चेतन प्राणियो पच कोशो में (आहित) सर्वव्यापक होने से स्थित । (तम्) उस परमेश्वर को (पवित्र इन्द्र परिषस्वजे) ीवात्मा और तेजस्वी आचरण वाला बनकर ही ालिगन करता है – अतरेग बनकर साक्षात् अनुभव रता है।

निष्कर्ष– यद्यपि सर्वोत्पादक सोम जड़चेतन मे र्वत्र व्याप्त है, किन्तु उसे चेतन व्यक्ति ही साक्षात् नुभव करता है, वह कभी भी सभी जब आचरण से वेत्र और कर्मो से तेजस्वी हो अथवा इन्दु (चन्द्र) के मान शान्त और सदा आह्लादित (यदृच्छलाभ सन्तुष्ट) इने वाला हो।

वमानी ऋचाओं के अध्ययन का लाभ

(३) पवित्रता और कर्मठता के आदेशों ा अमलकर्त्ता कभी निराश (असन्तुष्ट) हीं होता

यः पावमानीरध्येति-ऋषिभिः संभृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरश्विना।। *ऋ० ६/६७/३१*

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।। *ऋ० ६/६७/३२*

पवित्र आगिरसो वा वसिष्ठो वा उभौवा।
पावमान्यध्येता। अनुष्टुप्।

अर्थ – (य) जो मनुश्य (आगिरस) अग-अग से रसीले कुल मे उत्पन्न होकर पवित्र और प्रगतिशील तथा (वशिष्ठ) जगत में निवास के लिए आवश्यक वस्तुओ का स्वामी होने की इच्छा से (पावमानी अध्येति) पवित्रता और प्रगति की प्रेरणा देने वाली वेद की ऋचाओ को पढता है और तदनुसार आचरण करता है, (स) वह व्यक्ति (मातरिश्वना) हृदयान्तरिक्ष में की जाने वाली प्राण साधना के द्वारा (सर्वं पूत स्वदित अश्नाति) कर्मफल मे प्राप्त अपने सभी भोगो को, पवित्र और स्वादु बनकर तथा मानकर भोगता है। अर्थात् यदृच्छा प्राप्ति मे सन्तुष्ट रहता है, अपनी अवस्था को कभी कोसता नहीं, क्योकि इन वैदिक ऋचाओं मे (ऋषिभि) परमात्मा के प्रतिनिधि रूप मे अग्नि, वायु, इत्यादि ऋषियों ने इनमें प्रगति और पवित्रता की प्रेरणा देने वाला (रस सभृतम्) रस भर रखा है। (तस्मै) इस आगिरस पवित्र और वशिष्ठ=योगभ्रष्ट व्यक्ति के लिए (सरस्वती) वरदा वेदमाता अदिति रूप में (क्षीरम्) दुग्ध=प्राकृतिक पदार्थ और (सर्पि) दुग्ध बनने वाले घृत के समान, प्राकृत पदार्थों से विकृत होकर बनने वाले भोजन, वस्त्रादि भोग्य पदार्थ (दुहे) प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त (मधु) नानाविध मधु सदृश माधुर्य प्रदाता अभय, सत्वसशुद्धि, ज्ञानयोग व्यवस्थिति इत्यादि भाव प्रदान करती है और साथ ही (उदकम्) शुद्ध प्राकृतिक जल अथवा स्त्री-पुरुष के उदर से निकलने वाले रजवीर्य के सयोग से उत्पन्न शान्तिप्रद सन्तान देती है।

अर्थपोषण – पावमानी – पूञ् पवने, पवते गतिकर्मा। *नि० २/१४* वेद की ऋचाएं गतिशीलता और पवित्रता की प्रेरणा देने से पावमानी कहलाती है।

अध्येति – इङ् अध्ययने, इण्गतौ। अध्ययन तभी पूर्ण माना जाता है, जब पढा हुआ पाठ अपने आचरण में उतार लिया जाए। महाभारत का प्रसंग है कि गुरु द्रोण ने कौरवो तथा पाण्डवों को "मा क्रुध" पाठ पढाया। अगले दिन गुरु द्रोणाचार्य ने सबसे पूछा – "तुमने पाठ याद कर लिया। सबने हा में उत्तर दिया, किन्तु युधिष्ठिर ने उत्तर दिया 'नहीं गुरुदेव! अभी पाठ याद नहीं हुआ।" वह कई दिन यही उत्तर देता रहा। कई दिनों बाद युधिष्ठिर ने कहा 'हा, गुरुदेव अब पाठ याद हो गया।' गुरु के पुन पूछने पर कि इतने दिन क्यों लगे ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि अब लगता है कि क्रोध की परिस्थिति आने पर भी मुझे क्रोध नहीं आएगा।

ऋषिभि सभृत रसम् – क्योंकि क्रान्तदर्शी अग्नि आदि ऋषियो ने वेद की ऋचाओं में क्रियाशीलता और पवित्रता की प्रेरणा का रस भर दिया है, इसीलिए ये ऋचाए पावमानी कहलाती है।

मानरिश्वना – स्वदित पूतम् – मातरिश्वा – प्राणवायु की साधना से शरीर के सारे मल (रोग) दूर होकर शरीर आग में तपे सोने की तरह शुद्ध हो जाता है। उस स्थिति मे प्रत्येक भोग पवित्र और स्वादु लगता है, अथवा उस स्थिति मे अपवित्र भोग भोगा नहीं जा सकता है। गीता में इसे निम्न प्रकार से कहा है –

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।। *गीता १५/१४*

प्राणापान की साधना से सम्पन्न जाठराग्नि ही वैश्वानर अग्नि है, जो मनुष्य के सब भोगों का पाक करती है।

ऋषिभि सभृतरसम् – मधुच्छन्दा आदि द्रष्टा ऋषियो ने वेद की ऋचाओ में भरे रस का आभरण=आहरण=आस्वादन किया है, हमें भी ऋचाओ को अध्ययन करते हुए रस का उनकी तरह ही आस्वादन और आचरण करना चाहिए।

सरस्वती – वाग्वै सरस्वती पावीरवी। ऐ० ३/३६ वरदा वेदवाणी। सरस्वती हि गौ। शत० १४/२/१, वेद धेनु भी गाय की तरह अपने अध्येताओं के लिए दुग्धघृत का दोहन करती है।

उदकम् – उदक कम् जलनामसु। शुद्ध नैसर्गिक जल, उन्दीक्लेदने। क्लिदू आर्द्रीभावे – रज और वीर्य भी क्लेदन करने वाले हैं।

पवित्र आगिरसो वा वसिष्ठो व उभौवा – इस मन्त्र के ऋषि नाम के अर्थ संकेत करते हैं– इस मन्त्र का कर्ता ऋषि अग-अग में रस से पूर्ण अगिराकुलोत्पन्न या अगिरा शिष्य होने से शरीर के पांचों कोशों से पूर्ण स्वस्थ, पवित्र– सब दृष्टियों से शुचि और वशिष्ठ निवास योग्य सब वस्तुओं के स्वामियों में श्रेष्ठ=पूर्णयोगी है और इस मन्त्र का दृष्टा भी वही है, जो कई जन्मो से योगी बनने का प्रयत्न कर रहा है अर्थात् योगभ्रष्ट है, किन्तु इस मन्त्र के सफल दर्शन (अध्ययन) अर्थात् श्रवण-मनन के बाद निदिध्यास्व से अपना तदनुकूल आचरण बनाकर योगी बन सकता है।

इस ऋषि नाम के अर्थ को समझाते हुए भगवद्गीता कहती है–

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचिनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते।।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।
अनेक जन्मसंसिद्धिस्ततो याति परां गतिम्।।
गीता ६/४१, ४२, ४५

शुचि और श्रीमान् के घर उत्पन्न होने वाल योगभ्रष्ट अथवा पुण्यात्मा और श्रीमान के घर उत्पन्न होने वाला योगी, दोनों ही भाग्यशाली होते हैं। यदि चाहें तो अनेक जन्मो के प्रयत्न से अपने दोषों क संशोधन और अपनी त्रुटियों को दूर क परागति-मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

निष्कर्ष – पवित्रता और क्रियाशीलता की प्रेरणा देने वाली प्रत्येक ऋचा = वाणी (नि० २/१७) पावमानी है। इस पावमानी ऋचा का अध्येता अर्थात् पढे हुए को स्मरण रखकर, जीवन में तदनुरूप आचरण करने वाले व्यक्ति के भोग सदा पवित्र होते हैं। और वह कटु से कटु अनुभव को भी स्वाद लेकर भोगता है, उसके जीवन मे अनिवार्य वस्तुओं की कमी कभी अनुभव नहीं होती, क्योंकि गीता के अनुसार उनके योगक्षेम की चिन्ता परमात्मा स्वय करता है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
गीता ६/२२

(अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली-६

शराब का कतरा - जान को खतरा

– सुभाष चन्द्र गुप्त

फ्रांसिस बेकन के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के अपराध मिलकर भी मानव जाति को उतनी हानि नहीं पहुंचाते, जितना अकेला मद्यपान।

शराब से होने वाले भयकर दुष्परिणामों की गणना एक मद्य-विक्रेता ने कवि कालीदास द्वारा पूछे प्रश्न के उत्तर में बडे सारगर्भित ढग से प्रस्तुत की। उस मद्य-विक्रेता से जब प्रसिद्ध कवि कालिदास ने शराब के मटकों की ओर इशारा करते हुए पूछा कि उनमें क्या है, तब उसने कहा –

"मदः प्रमाद, कलहश्च, निद्रा बुद्धिक्षयो धर्म विपर्ययश्च। सुखम कंथा, नरकस्य पंथा, अष्टावनर्था घटके वसन्ति।"

अर्थात् – इस मटके में आठ दोष या अवगुण भरे हैं – **मादकता, सुस्ती, कलह, निद्रा, बुद्धि का नाश, धर्म का पतन, सुख का नाश तथा विपत्तियों का रास्ता।**

यह उत्तर जहा शराब न पीने वालों को सचेत कर रहा है, वहां शराब के मतवालों से पूछ रहा है कि वे समाज को सर्वनाश के कगार पर पहुंचाने का जघन्य अपराध करने पर क्यों तुले हुए हैं ?

शराब से होने वाले भावी विनाश को ध्यान में रखते हुए ही तो सन् १६३० में महात्मा गाधी ने कहा था –**"मुझे सम्पूर्ण भारत का यदि एक घंटे के लिए तानाशाह नियुक्त किया जाए, तो मैं बिना किसी छूट के पहला कार्य शराब की सभी दुकानों को बन्द कराने का करूंगा।"**

शराब से होने वाले रोग

दृष्टि-दोष, वाणी का लडखडाना, शरीर और मन की शक्तियों में क्षति, टांगे लडखडाना, हृदय रोग, टी०बी०, पीलिया, श्वास रोग, लिवर की सूजन (हैपेटाइसिस), लकवा (सिरहोसिस), तिल्ली का बढना, पेट में सूजन, पेट में फोडा व जख्म हो जाने से कभी-कभी खून की उल्टी होकर मौत तक सम्भव, कैन्सर, पागलपन, विभिन्न गुप्त रोग, क्रूर स्वभाव (पर्शिया के बादशाह ने शराब के नशे में हजारो बेकसूर असहाय लोगों को मौत के घाट उतार दिया था।) आदि अनेक रोग मघपान से होते हैं।

थोड़ी मात्रा में भी शराब हानिकारक

पी०जी०आई० चण्डीगढ के प्रोफेसर डॉ० पी०एल० वाही के कथनानुसार **"मात्रा थोड़ी-सी भी क्यों न हो, शराब पीना प्रत्येक अवस्था में हानिकारक है।** यह एक भ्रांति है और सर्वथा झूठ है कि शराब का एक या दो पैग प्रतिदिन लेने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।"

शराब से विभिन्न देशों की दुदर्शा

अमेरिका :–

* शराब के कारण ६५ प्रतिशत हत्याए एव २४ प्रतिशत आत्महत्याए,
  शराब के अत्याधिक सेवन से परिवारों का विघटन,
  प्रतिवर्ष साढे चार लाख लोग मद्यपान के कारण रोगी, जिनमें प्रतिवर्ष ३ लाख की मृत्यु,
  ६५ प्रतिशत सड़क दर्घटनाए शराब के कारण,
  आयु का ह्रास – औसत आयु = ७० वर्ष, जबकि शराबी की आयु ५१ वर्ष।

फ्रांस :–

* हिंसा व दुर्घटनाओं में ६८ मे से ६३ का कारण शराब।
* ३६ हत्याओं में से २६ हत्या शराबखोरी से।
* २७० मौतो मे से १०८ शराब के कारण।

स्विटजरलैंड : –

* प्रतिवर्ष करोडों की शराब पी जाती है। एक वर्ष में ५८ प्रतिशत चालकों के लाइसेंस रद्द, क्योंकि वे शराब के नशे मे थे।

पूर्व सोवियत संघ : –

* हत्याओं, बलात्कारों और दुर्घटनाओं में ६० प्रतिशत के लिए शराब जिम्मेदार
* शराब के कारण २० प्रतिशत लोग दफतरो, कारखानों एव अपनी ड्यूटी से गायब।

इटली :–

* १६४१ से १६६१ के दौरान शराब की खपत दुगनी होने के कारण रोगों से पीडित होने वालों की संख्या १६४७ की अपेक्षा सन् १६६६ में तीन गुनी।

जर्मनी : –

* शराब मौत का सबसे बडा कारण।

यूगोस्लाविया –

* मानसिक चिकित्सालयों मे भर्ती ५० प्रतिशत पुरुषों मे मानसिक बीमारियों का सीधा सम्बन्ध शराब से।

चिली : –

* स्वास्थ्य एव मानसिक उपचार के चिकित्सा बजट का ३० प्रतिशत शराबियो के उपचार पर व्यय।

आस्ट्रेलिया : –

* अधिक मात्रा मे बीयर पीने से लोगो मे कैंसर और हृदय रोग।

भारत . –

* प्रतिदिन शराब की खपत ८० लाख गैलन, जिस पर व्यय ८० अरब रुपये (एक रिपोर्ट, १६७६),
* प्रतिवर्ष हजारो मौते – जहरीली/कच्ची शराब से तथा शराब जनित रोगो के कारण।
* पारिवारिक कलह, महिलाओ का प्रताडन, अपराधों मे वृद्धि, दुर्घटनाए, बलात्कार अन्य अपराधो में वृद्धि का कारण शराब।

शराब का सर्वत्र निषेध

सभी धर्म-ग्रन्थ शराब का विरोध करते हैं प्राय समझा जाता है कि ईसाई मत में शराब का खण्डन नहीं करता, किन्तु बाइबिल पढकर देखें तो आखें खुल जाती हैं। देखिए –

" ......शराब पीने वाले को परमात्मा के राज्य में भाग नहीं मिलेगा।" *(न्यू टेस्टामेण्ट ६/१०)*

"यह शराब सांप के समान डसती है, बुद्धिहीन बनाती है, बकना-झगड़ना सिखाती है।"

प्रोवर्बस २०,२६,३२

हमारा कर्त्तव्य

हमारा कर्तव्य है कि हम स्वय को, अपने परिवार को और सम्पूर्ण समाज को शराब के अभिशाप से मुक्त कराएं, ताकि देश के अरबो रुपये जो शराब की नदिया बहाकर नष्ट किए जा रहे हैं, उसके सदुपयोग द्वारा देश को सुदृढ, समृद्ध, सब प्रकार से सम्पन्न और सुखी बन जाए।

– १५६, ए०जी०सी०आर० एन्कलेव, दिल्ली-११००६२

सज्जनों की समुन्नति करें : दुष्टों को ताड़ना : सब से यथायोग्य व्यवहार करें

यजुर्वेद के तीसवें अध्याय के तीन मन्त्रों का सत्परामर्श

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रंतमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयायाऽअयोगूं कामाय पुंश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्।

यजु० ३०/५

हे राजन जैसे जगदीश्वर जगत् में परोपकार के लिए पदार्थों को उत्पन्न करता है और दोषों का निवरण करता है, वैसे ही आप राज्य के सज्जनो को उन्नत कीजिए, दुष्टो को निकालिए। उन्हे दण्ड और ताडना भी दें, जिससे शुभ गुणो की प्रवृत्ति और दुष्ट व्यसनो की निवृत्ति हो।

अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधि कल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽउपतिष्ठिति दुष्कृताय चरकाचार्य पाप्मने सैलगम्।

यजु० ३०/१८

जो मनुष्य ज्योतिषी आदि सत्याचारियो का सत्कार करते और दुष्टाचारी गो हत्यारो की ताडना करते हैं, वे राज्य करने में समर्थ हैं।

अथ तानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्लं चातिकृष्णं चातिकुल्वं चाति लोमशंच।

अशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुंश्चली: कितवः क्लीबोऽशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः।।

यजु० ३०/२२

हे मनुष्यो ! जैसे विद्वान् लोग छोटे-बडे पदार्थ जानकर यथायोग्य व्यवहार करते हैं वैस दूसरे लोग भी करे। सब लागो को चाहिए कि प्रजा के रक्षक ईश्वर और राजा की आज्ञा का पालन तथा उपासना नित्य किया करे। ✡✡✡

गुरुकुल गौतम नगर के वार्षिकोत्सव का आयोजन

श्रीमददयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन सोमवार २६ नवम्बर से रविवार १६ दिसम्बर,२००१ तक किया जाएगा। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया जाएगा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होंगे।

वेद अपनाइए-मानवता बचाइए

– डॉ० कृष्णवल्लभ पालीवाल

यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्य अनेक राष्ट्र निर्माणकारी और धर्म रक्षा कार्य न भी करते और केवल इन्हीं शब्दो की पुष्टि मे जीवन लगा देते कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है" तो भी वह विश्व मानव कल्याण के उच्च शिखर पर विराजमान होते। मानवता की रक्षा और मानव धर्म मे सत्य की स्थापना मे उनका स्थान सर्वोच्च होता, क्योकि यदि हम महर्षि के कार्यकलापों और उनके ग्रन्थों को गम्भीरता से देखे, तो वह कदम-कदम पर सत्य धर्म की स्थापना एव उसमे मानवीय मूल्यो की रक्षा करते दिखाई देते हैं। जैसा कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है कि "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य के सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है क्योकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।" मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है।" अत स्वामी जी सत्य धर्म की स्थापना और मनुष्य जाति की उन्नति को अपना जीवन लक्ष्य मानते हैं।

स्वामी जी की पीडा थी कि अज्ञान, सम्प्रदायवाद व धार्मिक अन्धविश्वासो मे फसी मानव जाति को सत्य धर्म का दिग्दर्शन कैसे कराया जाए ? उसके लिए उन्होने विश्व धर्मों के प्रमुख ग्रन्थो को पढा, उनके उद्देश्य व कार्यविधि पर गम्भीरता से मनन किया, और सैकडो धर्मशास्त्रो के पढने के बाद वह इस निर्णय पर पहुचे कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, यह मानव मात्र का पुस्तक है। इसमें मनुष्यो को मोमिनो और काफिरों तथा विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच नहीं बाटा गया है। इनकी शिक्षाओं में पक्षपात, द्वेष व अपना-परायापन नहीं है। वेदों की शिक्षाए तो सार्वकालिक, सार्वदेशिक व समस्त मानव मात्र के लिए हैं। इनमें अन्तर्विरोध व अवैज्ञानिक बाते नहीं हैं। ये ही मानव मात्र के धर्मग्रन्थ हो सकते हैं, क्योकि इनमे मानव मात्र की साम्प्रदायिक घृणा, द्वेष व वर्गवाद नहीं है, जैसा कि हम कुरान व बाइबिल मे देखते हैं।

इसीलिए सभी प्राचीन आर्ष ग्रन्थो ने वेदो को प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ माना है। ब्राह्मण ग्रन्थो, उपनिषदो, स्मृतियो, पुराणों व अन्य अर्वाचीन ग्रन्थो मे वेदो को प्रामाणिक धर्मग्रन्थ माना है।" धर्म के जिज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण हैं " (मनु० २,३)। "लोग वेदो के अनुसार अपने अपने धर्म का पालन करे" (मनु० २८)। 'वेद से बढकर कोई धर्मशास्त्र नहीं है' (अत्रिस्मृति)। इसीलिए महर्षि ने वेदो की सत्यता, निष्पक्षता, उदात्तता व मानवता के कारण मानवमात्र को उन्हे पढने-पढाने को परमधर्म निर्धारित किया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की पीडा थी कि अज्ञान, सम्प्रदायवाद व धार्मिक अन्धविश्वासों में फंसी मानव जाति को सत्य धर्म का दिग्दर्शन कैसे कराया जाए ? उसके लिए उन्होंने विश्व धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों को पढा; उनके उद्देश्य व कार्यविधि पर गम्भीरता से मनन किया, और सैकडों धर्मशास्त्रों के पढने के बाद वह इस निर्णय पर पहुंचे कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, यह मानव मात्र का पुस्तक है। इसमें मनुष्यों को मोमिनों और काफिरों तथा विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच नहीं बांटा गया है। इनकी शिक्षाओं में पक्षपात, द्वेष व अपना-परायापन नहीं है। वेदों की शिक्षाएं तो सार्वकालिक, सार्वदेशिक व समस्त मानव मात्र के लिए हैं। इनमें अन्तर्विरोध व अवैज्ञानिक बातें नहीं हैं। ये ही मानव मात्र के धर्मग्रन्थ हो सकते हैं, क्योंकि इनमें मानव मात्र की साम्प्रदायिक घृणा, द्वेष व वर्गवाद नहीं है, जैसा कि हम कुरान व बाइबिल में देखते हैं।

वेदभाष्य

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए देववाणी मे विद्यमान वेदो का उन्होने भाष्य किया तथा वेदो के रहस्यो को समझने के लिए वेद भाष्य परम्परा के सूत्र ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्थापित किए। यह मानव जाति का दुर्भाग्य है कि वह चारो वेदो का भाष्य सम्पूर्ण न कर सके, मगर उनके अनुयायियों ने वह कार्य अपनी-अपनी योग्यता, क्षमता, दृष्टि व शिक्षा-दीक्षा के अनुसार पूरा किया। परिणामस्वरूप आज चारों वेदों के भाष्य हिन्दी व अग्रेजी व कुछ अन्य प्रान्तीय भाषाओ मे मिलते हैं।

वास्तविक स्थिति क्या है ?

महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य ने धार्मिक जगत् में एक क्रान्ति ला दी, मानवता को नया स्वरूप प्रदान किया। शक्ति, निर्माण, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ की नवीन लहर सचारित की। उन्होंने मानव मात्र को भाग्यवादी व पोपवादी व कठमुल्ला अरबी संस्कृति से मुक्ति दिलाने के लिए एक अद्वितीय प्रेरणा स्रोत वेद विश्व मानव मात्र के सामने रखा, जिसका निष्पक्ष विचारकों, दार्शनिकों ने देश-विदेश की सीमाओं को लाघकर स्वागत किया। मगर इतना होते हुए भी मानव मात्र मे तो क्या आज स्वय आर्यसमाज में भी वेद प्रचार की लहर अपेक्षाकृत कम है। सार्वदेशिक, प्रान्तीय एव पाच हजार के करीब आर्यसमाजों के होते हुए भी आम जनता में वेद प्रचार की पहुच कम है।

इस शिथिलता के कई व्यावहारिक कारण हैं। पहला,आर्यसमाज के अनुयायियों की सख्या कम है। दूसरा अन्य सभी हिन्दू धर्माचार्य वेदों को हिन्दू धर्म का आदि स्रोत मानते हुए भी गीता, पुराण, भागवत व उपनिषदो की मिलीजुली बात करते हैं, वेदो की नहीं, क्योंकि वेदो तक उनकी पहुच भी नहीं है। तीसरा, वेदो की शिक्षाए अथवा उनका स्वरूप कथानक व रामायण महाभारत की तरह ऐतिहासिक कथा न होने के कारण नीरस, शुष्क व गम्भीर हैं। चौथे, चारो वेदों का कोई एक सर्वमान्य, यहा तक कि आर्यसमाज के क्षेत्र मे भी कोई एक प्रामाणिक भाष्य नहीं है और जो भी हैं, वे १०-१५ जिल्दो में होने के कारण बडे महगे हैं। पाचवे, चारो वेदो का हिन्दी/अग्रेजी व प्रान्तीय भाषाओं में भाष्य एक जिल्द में न होना भी वेद प्रचार की प्रगति में बाधक है। छठे, विभिन्न आय वर्ग के लोगों के लिए सरल, क्षेत्रीय भाषा में व्यावहारिक मन्त्रों की छोटी-छोटी पुस्तकें नहीं हैं। सातवें, वेदों के सूक्त किसी विशेष क्रम में नहीं होने के कारण वेदों की शिक्षाए विषयानुसार नहीं हैं, जिससे पाठक भटक जाता है।

फिर क्या करें ?

सबसे पहली आवश्यकता है कि सार्वदेशिक सभा अथवा वेद विद्वान चारों वेदों के एक प्रामाणिक भाष्य का सम्पादन करें। वेद प्रचार को विश्वव्यापी बनाने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय, वेद अनुसधान सस्थान स्थापित करें, जिसमें विभिन्न विभाग हों, जो कि सरकारी नियन्त्रण से मुक्त हो। फिर उसमे उपरोक्त समस्याओं के निराकरण के लिए कार्य किया जाए।

एक प्रामाणिक भाष्य बनने पर उसके अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओ मे अनुवाद किए जाए और उसे एक जिल्द में प्रकाशित किया जाए, जो कि आज के पतले कागज की उपलब्धि व कम्प्यूटर तकनीक के होते हुए सभी बीस हजार मन्त्रों को एक जिल्द मे सामान्य मूल्य पर दिया जा सकता है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं है कि हमारा धर्मग्रन्थ एक जिल्द में हमारे ही घर में नहीं है, जबकि बाइबिल व कुरान की करोडो प्रतिया विभिन्न आकार-प्रकारो मे मिलती हैं। मेरे विचार से न विद्वानो की कमी है और न साधनों की। यदि कोई कारण है तो सस्थाओ के कर्ताधर्ताओ की उपेक्षा। यदि सभाए नहीं करना चाहती, तो वेद प्रेमी व धनाढ्य बन्धु अपना सगठन बनाकर इस मानव हितकारी कार्य को अपने हाथ में ले और अपने प्राणप्रिय धर्म की पोथी कम से कम मूल्य पर मानव मात्र के हाथ में पहुचाए। यह न केवल धर्म प्रचार बल्कि मानवता की रक्षा का कार्य है, क्योकि पिछले दो हजार वर्षों के ईसाइयत के खून-खराबे से सारा यूरोप तबाह हो गया। उन्होने पोप को त्याग दिया, जो कि अब भारत के ईसाईकरण में लगा है। उसी की पूर्ति के लिए ओपस जी नामक सस्था विभिन्न रूपो में कार्य कर रही हैं

इस्लाम का तालिबानी आतकवाद विश्वविख्यात है। भारत सहित अनेक देशो मे इस्लामी आतकवाद एक समस्या है। आज भारत के हिन्दू ही नहीं, विश्व के निष्पक्ष मानवतावादी विद्वान् इस धार्मिक कट्टरता से परेशान हैं। वे तो वेदो के सार्वदेशिक सार्वकालिक मानव कल्याण सन्देश व व्यवहार की प्रतीक्षा कर रहे है।

ज्ञान के आदान-प्रदान की सीमाए समाप्त हो गई हैं। वेदों का ज्ञान सर्वत्र सुलभ है, जिसने सिद्ध कर दिया है कि वेदों की शिक्षाए सकुचित, विघटनकारी, विभेदकारी, आतंकवादी और अशातिकारक न होकर प्रगतिशील, रचनात्मक, मानवतावादी एव मानव मात्र को जोडने वाली हैं, तोडने वाली नहीं है। इनमें धर्म के नाम पर जिहाद या क्रूसेड का आह्वान नहीं है। मानवता की मगलकामना ही वेदों का एकमात्र लक्ष्य है। पिछले हजारों वर्षों के इतिहास से स्पष्ट है कि वेदानुयायियों ने किसी देश पर अपना धर्म मनवाने के लिए चढाई व हत्याए नहीं की हैं, जैसा कि हम इस्लाम व ईसाइयत के इतिहास में देखते हैं। मगर इस मंगलकारी मानवता रक्षा अभियान का सूत्रपात तो आर्यसमाज को ही तेजी से करना होगा। ✡✡✡

विभिन्न आर्यसमाजों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज सिहोर गंज

५ अगस्त से वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसके अन्तर्गत प० गोविन्द आर्य, भोपाल, ब्र० विजय आर्य, विदिशा, नरेश आर्य तथा डॉ० ज्ञान आर्य के आचार्यत्व में नगर के विभिन्न क्षेत्रो मे यज्ञ कराए गए। यज्ञोपरान्त विद्वानो ने वैदिक धर्म, याज्ञिक प्रक्रिया आदि विषयो पर प्रेरक प्रवचन हुए तथा आर्यसमाज के नियमो का चॉर्ट तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की विशेषताए सम्बन्धी पुस्तकें प्रचारार्थ वितरित की गई। रात्रि कालीन कार्यक्रम आर्यसमाज मे ८ बजे से भजन व गीत गायन के साथ प्रारम्भ हुए, तत्पश्चात् वैदिक विद्वानो के वेद विषयक प्रवचन हुए। वक्ताओ प्रमुख प० गोविन्द आर्य, डॉ० गोपी वल्लभ नेमा, प्रो० राजेन्द्र वीर आर्य तथा कमलेश याज्ञिक थे।

वेद प्रचार के अन्तिम दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष यज्ञ किया गया तथा प्रो० राजेन्द्रवीर आर्य, कमलेश याज्ञिक आदि ने श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, हमारे देश मे श्रीकृष्ण जी के गोकुल से मथुरा आगमन से पूर्व के जीवन पर अधिक प्रकाश डाला और प्रचार किया गया कि जबकि मथुरा से आगे के जीवन का प्रचार बहुत कम हुआ। अत अब श्रीकृष्ण के मथुरा के बाद के जीवन जिसमें उनका योगेश्वर स्वरूप तथा महाभारत युद्ध में अपनाई गई भूमिका का प्रचार होना आवश्यक है, जिसमे आम लोगों को पता चले कि श्रीकृष्ण जी कैसे योगी, गुणी तथा ज्ञानी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मे जो वक्तव्य लिखा गया है उसका वर्णन विशेष रूप से किया गया। कार्यक्रमों में आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य श्री अमरचन्द आर्य एवं राणा उदयसिंह आर्य, अध्यक्ष, सीहोर जिला स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी संघ एवं पूर्व अध्यक्ष जिला पचायत सीहोर की रात्रि कालीन कार्यक्रम मे नियमित उपस्थिति प्रेरणादायी तथा सराहनीय थी।

आर्यसमाज पिम्परी

आर्यसमाज पिम्परी मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर भजन एव विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। पं० विश्वनाथ जी के पौरोहित्य मे १२ अगस्त को प्रात यज्ञ, वेदपाठ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। कुमार सजीव, पुनीत ग्रोवर एव प० ऋषिपाल आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के ज्येष्ठ प्रचारक प० धर्मवीर आर्य ने **"राष्ट्रपुरुष योगेश्वर श्री कृष्ण"** विषय पर ओजस्वी व्याख्यान दिया। उन्होने अपने व्याख्यान मे कहा कि सबके सामने श्रीकृष्ण का केवल भक्ति रूप ही है परन्तु वे राष्ट्रनायक रहे हैं। उन्होने कुरुक्षेत्र युद्ध मे सच्चाई के पक्ष मे रहकर अनीति दुराचार का अत किया।

आर्यसमाज पिम्परी के प्रधान कृष्णचन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में सर्वश्री मदनलाल सूरी, हरगुणलाल गणेशवाणी, हरीकृष्ण चाप्ता, जगदीश वासवाणी, एकनाथ नाणेकर, उत्तम दडिमे, दत्ता सूर्यवशी आदि पदाधिकारी एवं सदस्यो ने कार्यक्रम सम्पन्न करने मे विशेष सहयोग दिया। मन्त्री मुरलीधर सुदराणी ने कार्यक्रम का सूत्रसचालन किया। पिम्परी-चिंचवड परिसर के सैकडो भाई-बहनो ने कार्यक्रम मे उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज छतरपुर नई दिल्ली

प्रधान	– श्री भाग सिंह आर्य
उप-प्रधान	– श्री सीताराम
मन्त्री	– श्री नरेन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष	– श्री सुरेन्द्र कुमार

रामगली आर्यसमाज मन्दिर, हरी नगर घंटाघर, नई दिल्ली-६४

प्रधान	– श्री के० के० कुमरा
मन्त्री	– श्री आनन्द प्रकाश वर्मा
उप-मन्त्री	– श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष	– श्री ओमदत्त गौतम

आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली- ६५

प्रधान	– श्री जगदीश चन्द्र शर्मा
उप-प्रधान	– डॉ० कृष्ण गोपाल सैनी
मन्त्री	– श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना
भवन मन्त्री	– श्री सत्यपाल मल्होत्रा
उप-मन्त्री प्रचार	– श्री भगवानदास अरोडा
कोषाध्यक्ष	– श्री यशपाल
पुस्तकालयाध्यक्ष	– श्रीमती स्वदेश घई

आर्यसमाज बिरला लाइन्स, सब्जी मण्डी दिल्ली-७

प्रधान	– श्री जयकृष्ण आर्य
उप-प्रधान	– श्री ओम प्रकाश डग, श्रीमती स्वर्ण गुप्ता
मन्त्री	– श्री योगेश कुमार आर्य
उप-मन्त्री	– श्री बनवारी लाल आर्य
प्रचार मन्त्री	– श्री सत्यपाल शास्त्री
कोषाध्यक्ष	– श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष	– श्री कन्हैया लाल
अधिष्ठाता आर्यवीर दल	– श्री अश्विनी कुमार

वेदों में ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है
नोएडा गुरुकुल में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आचार्य जयेन्द्र के ब्रह्मत्व मे १२ अगस्त को यजुर्वेद प्रायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। मन्त्रोच्चारण की गूंज के साथ ही विशुद्ध जडी-बूटियों की आहुति से वातावरण निर्मल, पवित्र एव सुगधित हो उठा। भक्तजनों की श्रद्धा देखते ही बनती थी। पवित्रता, भक्ति, उत्साह एव उमग का यह निराला सगम था।

मुख्य वक्ता डॉ० नरेन्द्र वेदालकार ने जनता को श्रीकृष्ण का सही रूप उजागर करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि लोग श्रीकृष्ण पर आक्षेप करते हैं कि उनकी सोलह हजार रानिया थीं, वे माखन चोर थे, परन्तु यह सत्य नहीं। वह तो योगिराज थे। उनकी एक पत्नी थी रुक्मिनी। यथार्थ मे उनका जीवन पूर्णत वैदिक था तथा उनका अनुसरण करके हम अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करें। आचार्य जयेन्द्र ने बताया कि संसार को बदल देने का सामर्थ्य रखने वाली गीता यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्रों की व्याख्या पर आधारित है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वेदों में कितना ज्ञान भरा है। इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसा कौन सा विषय है, जो वेदों में नहीं है। यदि आप ह्रदय रोग के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं या कृषि के ज्ञान मे वृद्धि करना चाहते हैं या आप मैनेजमेंट पर रिसर्च करना चाहते हैं तो वेदों का अध्ययन करें। वेदों में सारा ज्ञान-विज्ञान भरा पडा है। महात्मा गोपाल स्वामी जी ने याद दिलाया कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश के उद्धार के लिए वेदों का प्रचार शुरू किया था। तब वेद लुप्तप्राय हो चुके थे, ईश्वर के अस्तित्व, उसकी पूजा तथा मनुष्य के आचार विचार के विषय मे भ्रांतिया फैली थीं। स्त्रियों की दशा दयनीय थी, उनके लिए वेदो का पढ़ना तो दूर उनके लिए वेद मन्त्रों का सुनना भी निषेध था। उन्होंने चिता जताई कि वेद हमारी एक अमूल्य निधि है, जिसमे हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू पर परिपूर्ण ज्ञान उपलब्ध है, उससे हमने लाभ नहीं उठाया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह दुनिया समय रहते वेदों की तरफ लौट आएगी और एक बार फिर धरती पर स्वर्ग उतरेगा।

शोक समाचार

रामगली आर्यसमाज मन्दिर, सी-१३, हरीनगर घटाघर, नई दिल्ली के सदस्य श्री ओमप्रकाश चौधरी की माताजी श्रीमती पूरन देवी का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे ६५ वर्ष की थी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति तथा उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य एव इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति का साधन क्रन्ति थी

आर्यसमाज मोतीबाग (साउथ) नई दिल्ली मे, स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था – **"स्वतन्त्रता प्राप्ति का साधन क्रान्ति थी शान्ति नहीं"।**

समारोह में दिल्ली के विभिन्न विद्यालयो के छात्र/छात्राओ ने भाग लेकर ओजस्वी वाणी मे अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

तुलसी मंगल व कल्याण के प्रतीक हैं

हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा तानसेन मार्ग स्थित त्रिवेणी समागार मे तुलसी जयन्ती के अवसर पर एक सगोष्ठी आयोजित की गई। सगोष्ठी के अध्यक्ष वरिष्ठ कवि, कथाकार एवं नाटककार डॉ० सुधाकर पाण्डेय थे। यह कार्यक्रम हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री जनार्दन द्विवेदी के सानिन्ध्य में हुआ। बहुभाषा विद, रामकाव्य के मर्मज्ञ डॉ० रमानाथ त्रिपाठी, डॉ० शैलकुमारी तथा डॉ० लालसिह चौधरी प्रमुख वक्ता थे।

हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री जनार्दन द्विवेदी ने कहा कि तुलसी जैसे लोकप्रिय कवि के साथ अन्याय हुआ है। इधर के कुछ वर्षों मे नई पीढी के पास तुलसी को पहुचने नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त कि कि कबीर और तुलसी को एक-दूसरे के विरुद्ध खडा किया जा रहा है। तुलसी के पौरुष के कारण घर-घर में पूजे गए। उन्होने कहा कि मगल और कल्याण का समजस्य तुलसीदास में है। श्री द्विवेदी ने कहा कि तुलसी सृजनधर्मियो के लिए आदर्श हैं और उनकी प्रासगिकता सदैव बनी रहेगी।।

आर्यसमाज विवेक विहार में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली मे आगामी ८ अक्तूबर से १४ अक्तूबर, २००१ तक वेद प्रचार सप्ताह आयोजित किया जा रहा है, जिसमे हरिद्वार से प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी पधार रहे हैं। प्रतिदिन रात्रि मे ८ बजे से १० बजे प्रवचन एव श्री गुलाब सिह राघव के सुमधुर भजन कार्यक्रम होंगे। १४ अक्तूबर को पूर्णाहुति पर अनेक विद्वानो के प्रवचन होगे। मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा होगे।

R N No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O on 30-31/08/2001 दिनांक २७ अगस्त से २ सितम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 138/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2001, 30-31/08/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

'सरल गीता ज्ञान' का भव्य लोकार्पण

आर्यसमाज सी ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली ने श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य पर स्वाध्याय प्रेमिओ के लिए डॉ० महेश विद्यालकार द्वारा लिखी सरल गीता ज्ञान पुस्तक का समारोह पूर्वक विमोचन कराया। पुस्तक का विमोचन, स्वामी राघवानन्द जी और स्वामी सत्यपति जी महाराज ने किया। इस पुस्तक को गीता पर इससे पहले इतनी सरल कोई पुस्तक नहीं देखी है। इसमें किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं उठाया गया है। जो जीवन और जगत के लिए महत्वपूर्ण, दैनिक उपयोगी, बातें हैं उन्हीं को रखा है। मैं इस पुस्तक के लेखक डॉ० महेश विद्यालंकार को बधाई और शुभाशीर्वाद देता हू। ऐसे धार्मिक साहित्य की मानव

'सरल गीता ज्ञान' का विमोचन करते हुए स्वामी सत्यपति जी।

प्रकाशित व वितरित करने के लए आर्यसमाज, सनातन धर्म मन्दिरों तथा गीता प्रेमियों ने दिल खोलकर सहयोग किया है। उसी का परिणाम है कि २५ हजार कापिया छपवाकर आर्यसमाज सी ब्लॉक जनकपुरी ने नि शुल्क बाटने का सकल्प किया है। इससे पहले भी आर्यसमाज सी ब्लॉक जनकपुरी महत्वपूर्ण छोटी छोटी पुस्तके प्रचारार्थ छपवाता और बांटता रहा है। इस शुभ कार्य के लिए मैं प्राय डॉ० महेश विद्यालकार को कष्ट देता रहा हू और उन्होंने इस कार्य के लिए सहर्ष सहयोग दिया है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। सत्साहित्य प्रचार का महत्वपूर्ण आधार होता है। 'सरल गीता ज्ञान' में वैदिक चिन्तन का ही प्रतिपादन किया गया है। हमें आशा और विश्वास है कि इस पुस्तक से पाठकों को परमात्मा, आत्मा, प्रकृति, जीवन-मृत्यु, मन, बुद्धि, इन्द्रिय सुख शान्ति आदि का सच्चा बोध होगा।

इस अवसर पर सनातन धर्म सभा के प्रधान स्वामी राघवानन्द जी महाराज ने 'सरल गीता ज्ञान' पुस्तक की सरल शैली, विचार प्रस्तुति, ज्ञान चिन्तन आदि की प्रशसा की। गीता के गूढ ज्ञान को सीधे सादे सरल शब्दों में प्रस्तुत करना, इस पुस्तक की महत्वपूर्ण विशेषता है। मैंने समाज को बडी आवश्यकता है जो भूले भटके मानव को सन्मार्ग दिखा सके। उन्होंने कहा मुझे विश्वास है, इस पुस्तक से आम आदमी को जीवन दृष्टि मिलेगी। जीवन व विचारों में परिवर्तन आयेगा। इसे पढकर मनुष्य आत्मा परमात्मा से जुडेगा। सनातन धर्म सभा के महामन्त्री और दिल्ली सरकार में विधायक डॉ० रमाकान्त गोस्वामी जी ने भी पुस्तक व आर्यसमाज की प्रशंसा की। आर्य समाज मे सनातन धर्म सुरक्षित है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की विचारधारा ही ससार को सुख शान्ति का मार्ग दिखा सकती है। श्रीमद्भागवद्गीता हिन्दु धर्म की धरोहर है। आज सनातन धर्म और आर्यसमाज के लोगों को मिल बैठने की जरूरत है। यह 'सरल गीता ज्ञान' दोनों को मिलाने की कडी है। मैं श्री महेश विद्यालकार को पुन बधाई व शुभकामनाए देता हूं। उन्होंने जो गीता ज्ञान का सारतत्व इस सरल पुस्तक में सकलित कर दिया है। विद्यालंकार जी के लिए मेरे मन में प्यार और आदर है। इसी भावना के कारण सारे कार्यक्रम छोडकर आया हू। मैं समझता हू जो भी इस पुस्तक को एक बार पढ़ना, आरम्भ करेगा, वह निश्चय ही अन्त तक पढेगा, यही इसकी सबसे बडी विशेषता है। श्री पृथ्वीराज साहनी, अध्यक्ष स्थाई समिति – नगर निगम, कर्नल दलबीर सिंह जी जोकि सभा के अध्यक्ष थे और जिन्होंने इस पुस्तक के प्रसार के लिए ११०००/– रुपये दान दिया, आदि ने भी अपने विचार रखे।

श्री महेश विद्यालंकार ने सक्षिप्त शब्दों में गीता ज्ञान की व्यवहारिकता उपयोगिता और सार्थकता पर विचार रखे। उन्होने सभी के प्रति कृतज्ञता आभार तथा धन्यवाद प्रकट किया। उन्होने कहा आप सभी का स्नेह अपनत्व और मान ही मेरे लिए बहुत बडा सम्मान है। मैं तो ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का भक्त हू। इन्हीं से मुझे बल, शक्ति व प्रेरणा मिलती है। जो मैं सामान्य बुद्धि सेसमझा, पुन पढा और अनुभव किया, वही इस पुस्तक में लिखने का प्रयास किया है। आर्यसमाज ने विद्यालंकार जी को ५१००/– (इक्यावन सौ रुपयों) से सम्मानित किया। उन्होंने कृतज्ञभाव से लौटते हुए कहा – यह राशि साहित्य प्रचार में लगाओ। मुझ पर प्रभु की बड़ी कृपा है। मैं तो स्वामी दयानन्द की कृपा से खूब मालामाल हूं। आपका प्यार मेरा बहुत बडा सम्मान है।

आर्यसमाज के सभी सदस्यों, अधिकारियो व अन्य संगठन के लोगों ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। सभी की राय थी ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। सभी ने मिलकर प्रेम से प्रसाद ग्रहण किया। मन्त्री श्री रमेशचन्द जी एव सयोजक ब्रह्मदेव उज्ज्वल ने अध्यक्ष, मुख्य अतिथि और उपस्थित सज्जनो का धन्यवाद किया। ✿✿✿

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ३३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ३ सितम्बर से ९ सितम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति . २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आत्मा स्वरूप से देवता है

जम्मू कश्मीर के वैदिक विद्वान् डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री की प्रवचन श्रृंखला दिल्ली में सम्पन्न

जम्मू कश्मीर प्रान्त के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने विगत् माह लगभग एक सप्ताह तक दिल्ली की आर्यजनता को आध्यात्मिक प्रवचनो से मन्त्र मुग्ध किया। उन्हे शालीमारबाग आर्यसमाज की तरफ से एक सप्ताह के लिए आमन्त्रित किया गया था।

डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने नैतिक, चारित्रिक और आध यात्मिक उत्थान से सम्बन्धित वैदिक विचार लोकप्रिय शैली मे प्रस्तुत करते हुए आर्य जनता को मूलत इस भावना से ओत-प्रोत कर दिया कि **'आत्मा स्वरूप से देवता है।'**

श्री योगेन्द्र कुमार ने कहा कि आत्मा का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से होता है और परमात्मा सृष्टि को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। यदि मनुष्य अपनी आत्मा को पहचान ले तो उसे परमात्मा को पहचानने मे भी देर नही लगेगी। और जब परमात्मा से इस प्रकार से सम्बन्ध स्थापित हो जाएगा तो सारी दुनिया और सृष्टि की पहचान, अच्छे-बुरें की पहचान, लाभ-हानि की पहचान, उत्थान-पतन की भी पहचान हो जाती है ?

आत्मा के देवता होने के सिद्धान्त को दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि आत्मा स्वरूप से राक्षस कदापि नही है।

ईश्वर की रचना मे दिव्यता है। ईश्वर ने जिस सृष्टि का निर्माण किया है वह भी देवता स्वरूप है। इस सृष्टि के कुछ पहलुओ का बारीकी से अध्ययन करे तो पता लगता है कि ये ईश्वर द्वारा निर्मित पदार्थ हमे सदैव कुछ न कुछ दे ही रहे हैं और प्रतिफल मे हमसे टैक्स . फीस, दान, अनुदान आदि के नाम पर कुछ भी नहीं ले रहे। जो अपनी शक्ति, अपने गुण और अपनी योग्यता या अपनी विशेषताओ से दूसरो को लाभ पहुचाता है और स्वय इन विशेषताओ के कारण चमकता है उसी की लोग आराधना करते है। और वही देवता कहलाता है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पृथ्वी, वायु जल, तथा अन्य बहुत से सृष्टि के पहलू हमें अपनी शक्ति और गुण देते हुए कभी थकते नहीं और उनके भण्डार कभी खाली नहीं होते। ये सब देवता है, यदि मनुष्य इनसे प्रेरणा ले तो उसे अपना मूल स्वरूप स्वाभाविक रूप से समझ आ जाएगा कि वह ईश्वर की रचना है। ईश्वर की रचना सदैव दिव्य ही होती है। ईश्वर देवो का देव है। अत उसे महादेव कहा जाता है।

यदि मनुष्य देवता है तो फिर वह राक्षस क्यो बन जाता है । इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करते हुए डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि एक शब्द है – सरस, यदि इसके अक्षरो को उल्टा जाए तो भी सरस ही रहता है। इसके विपरीत एक शब्द है – साक्षर, जिसका अर्थ होता है अक्षरो की जानकारी रखने वाला, अर्थात् पढा-लिखा जानकार व्यक्ति। यदि इस शब्द के अक्षरो को उलटाया जाए तो बनता है राक्षस, अर्थात् जब पढ-लिख कर, वस्तुस्थिति की जानकारी के बावजूद व्यक्ति समाज विरोधी कार्य करने लगता है जिससे दूसरो को दु ख और पीडा पहुचती है तो वह स्वत ही राक्षसो की श्रेणी मे आ जाता है। जिस प्रकार विचारो की उन्नति से समाज ने व्यक्ति को देवता माना उसके विपरीत विचारो के पतन से व्यक्ति को उसका समाज राक्षस मान लेता है। जिस प्रकार अच्छे व्यक्तियो के सग से दिव्य विचारो मे वृद्धि होती है इसके विपरीत बुरे सग से राक्षसी विचार बढते है।

वेद मार्ग पर चलना देवता होने की निशानी है। वेदमार्ग के विरुद्ध आचरण राक्षस होने की पहचान है। ईश्वर ने हमे वेद ज्ञान के माध्यम से बडे स्पष्ट शब्दो मे हर अवसर , हर परिस्थिति आचरण और व्यवहार के लिए क्या करे, क्या न करे उपदेश दिए है।

डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री के इन प्रवचनो की सर्वत्र सराहना हुई। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालकार जो आर्यसमाज शालीमार बाग की ही सदस्य है, इन सब प्रवचनो मे उपस्थित रहे। वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने भी इन प्रवचनो से कुछ भाग का लाभ उठाया।

मॉरीशस में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

आर्यसभा मॉरीशस के तत्वावधान मे २२ से २५ नवम्बर, २००१ की तिथियो मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सभा के मन्त्री श्री गगु ने सूचित किया है कि इस सम्मेलन में मातृ शक्ति के इतिहास और भविष्य के उत्थान को दृष्टि मे रखकर वक्ताओ को आमन्त्रित किया गया है। सम्मेलन का मुख्य विषय – **''नारी-सृजन की आधारशिला''** रखा गया है। यह सम्मेलन इन्दिरा गांधी भारतीय सस्कृति केन्द्र फैनिक्स में आयोजित होगा। इसके अतिरिक्त आर्य परिवार सम्मेलन बेल मार्ग समुद्र तट पर आयोजित होगा।

कै० देवरत्न आर्य समर्पण शोध संस्थान के अध्यक्ष (प्रशासन) तथा स्वामी सत्यम् जी अध्यक्ष (शिक्षण) नियुक्त

समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि १ सितम्बर २००१ से समर्पण शोध सस्थान श्री मोहनलाल जी मोहित मारीशस निवासी द्वारा स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र करजत (महाराष्ट्र) को समर्पित करता हू। यह सस्थान इस अनुसधान केन्द्र की शाखा के रूप मे कार्य करेगा जिसके अध्यक्ष (प्रशासन) देवरत्न आर्य एव अध्यक्ष (शिक्षण) स्वामी सत्यम् जी हैं। समर्पण शोध सस्थान का सम्पूर्ण स्वामित्व मै अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र को सौपता हू।

– स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

वेद और मानव स्वास्थ्य

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

वेदो को मनुष्य के लिए हितकारी विद्याओ तथा विज्ञानो का भण्डार कहा गया है। आचार्य मनु के अनुसार वेद पितर देव तथा मनुष्यो के मार्गदर्शन के लिए सनातन चक्षुओ के तुल्य हैं जिनके द्वारा वह अपने हित और अहित को पहचान कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्धारण करता है। वेदो मे जहा भौतिक तथा लौकिक विषयो की विवेचना मिलती है वहा दार्शनिक तथा आध्यात्मिक प्रश्नो का समाधान भी इन्हीं ग्रन्थो मे पाया जाता है। मानव जीवन के लिए उपयोगी शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा का विशद निरूपण भी इस वाङ्मय मे उपलब्ध है। वेदो की दृष्टि मे शरीर न तो हेय है और न तिरस्कार के योग्य। भारत के इतिहास मे एक बार पारलौकिक चिन्तन का एक ऐसा विषय प्रवाह उपस्थित हुआ था जिसके कारण हमारे चिन्तको, दार्शनिको तथा अध्यात्मविद्या विशारदो ने मनुष्य के स्थूल शरीर की सर्वथा अवहेलना और उपेक्षा ही नहीं की उसे पाप का आधार स्तम्भ तथा व्याधियो का मदिर बताया। इसके विपरीत अथर्ववेद ने शरीर को अयोध्यापुरी कहा जिस पर विजय पाना शत्रुओ के लिए अशक्य है। इसी देवपुरी मे आत्मा और परमात्मा जैसी दिव्य सत्ताओ का निवास है। ऐसी स्थिति मे शरीर की उपेक्षा तथा तिरस्कार सर्वथा अनुचित है।

महाकवि कालिदास ने अपने कुमारसम्भव नामक काव्य मे शरीर को धर्म प्रमुख साधन बताया है –

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

जब पार्वती ने शिव को पति रूप मे प्राप्त करने के लिए प्रबल तपस्या और शरीर को कष्ट देना आरम्भ किया तो भौतिक शरीर को सुखाना ही तपस्या नहीं है, इस तथ्य को उजागर करने के लिए भगवान् शकर ने उक्त वाक्य कहा। यह तो सत्य है कि पञ्चभौतिक होने के कारण शरीर अन्तत नष्ट होता है किन्तु वह ऐसी क्षुद्र तथा हेय वस्तु भी नहीं है जैसा मध्यकाल के साधु सन्तो ने उसे बताया। जीवन की नश्वरता को देखते हुए कबीर ने 'पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात' आदि उक्तिया तो कहीं किन्तु इसी घट के भीतर बसे परमात्मा को पहचानने के लिए भी लोगो को प्रेरित किया।

वेदो मे मनुष्य के लिए दीर्घ आयु की कामना की गई है। 'आयुर्यज्ञेन कल्पताम्' तथा 'आयु प्राणप्रजा पशुम् कीर्तिं द्रविण ब्रह्मवर्चसम्' जैसे प्राप्तव्य पदार्थों मे आयु को पहला स्थान देकर वेद ने मानव शरीर के महत्त्व को स्वीकार किया है। शरीर के विभिन्न घटको मे इन्द्रिया सर्वप्रमुख हैं। वेदो मे ज्ञानेद्रियो और कर्मेन्द्रियो को बलिष्ठ, स्वस्थ तथा यशस्वी बनाने की बात कही गई है। सध्या के अगस्पर्श तथा मार्जन मत्रो का भाव इन्द्रियो को पवित्र, बलवान तथा यशस्वी बनाने का ही है। उपस्थान मत्रो में नेत्रो द्वारा सौ वर्ष देखने, सौ वर्ष तक सुनने, सौ वर्ष तक बोलने, स्वस्थ रहकर जीने तथा शतायु से भी अधिक काल तक स्वस्थ, नीरोग एव अदीन, निर्भय तथा स्वावलम्बी जीवन जीने की बात कही गई है। शरीर को सुदृढ बनाने के लिए वेद का आदेश है, अश्मामवतु मे तनू हे मनुष्य तेरा शरीर पत्थर के तुल्य बलशाली तथा मजबूत बने।

ऊषाकाल मे सूर्योदय से पूर्व शैय्या त्याग स्वास्थ्य के लिए अतीव उपयोगी बताया गया है। जब प्रात सध्या करते समय हम उपस्थान मत्रो का उच्चारण करते हैं तब तक पूर्व दिशा मे भगवान् भास्कर उदय होते दिखाई पडते हैं। इस पवित्र तथा स्फूर्तिदायिनी वेला मे सध्या करने वाला उपासक आकाश मे उदय होते हुए सूर्य को देखता है तो अपने हृदयाकाश मे दिव्य प्रकाशयुक्त परमात्मा के दिव्यालोक को अनुभव कर कह उठता है –

उद्वय समसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

अधकार का निवारण करने वाला यह ज्योतिपुञ्ज सूर्य जहा प्राची दिशा मे उदय हुआ है वहा देवो का देव परमात्मा रूपी सूर्य मेरे मानस क्षितिज पर उदय हुआ है और उससे निसृत ज्ञान रश्मियो की ऊष्मा को मैं अन्त करण में अनुभव कर रहा हू। वेदो के अनेक रूपो मे ऊषा की महिमा वर्णित हुई है। यो जागार तमृच कमयन्ते' जैसे मत्रो में स्पष्ट कहा गया है कि जो जागता है, जल्दी उठता है, ऋचाये उसकी कामना करती हैं। सामादि अन्य वेदो का ज्ञान भी ऊषा काल मे उठकर स्वाध्याय मे प्रवृत्त होने वाले व्यक्ति के लिए ही सुलभ है। आलसी, प्रमादी, दीर्घसूत्री तथा देर तक चारपाई पर मुह ढक कर सोनेवाला सुख, सौभाग्य और आरोग्य से वचित रहता है। जल्दी उठकर वायुसेवनार्थ भ्रमण करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे वेद का कहना है कि पर्वतो की उपत्यकाओ तथा नदियो के सगम स्थल पर प्राकृतिक दृश्यो की छटा अवर्णनीय होती है। यंहा विचरण करने से विचारशील लोग अपनी बुद्धियो का विकास करते हैं – धिया विप्रो अजायत।

शरीर को स्वस्थ और रोगरहित रखने के लिए शुद्ध, पुष्टिदायक, रोगनाशक अन्न तथा स्वच्छ जल का सेवन आवश्यक है। भोजन मे गाय के दूध का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। वेदो मे गोमहिमा के अनेक मत्र आये हैं। गाय की महत्ता का वर्णन करते हुए वेद ने उसे रुद्रसज्ञक ब्रह्मचारियो की माता, वसु सज्ञको की पुत्री तथा आदित्यो की माता कहा है। यह अमृत का कुण्ड है तथा इस निष्पाप एव अदति तुल्य गो की हिसा को महान् पाप कहा गया है। एक अन्य मत्र मे गाय को सम्बोधन कर कहा गया है कि आप कृश और दुर्बल व्यक्ति को पुष्ट तथा श्री सम्पन्न बनाती हो। यजुर्वेद के रुद्राध्यायो मे मनुष्य के भोजन के लिए उपयोगी अन्नो तथा अन्य दालो आदि खाद्य पदार्थों की लम्बी लम्बी तालिकाए प्रस्तुत की गई है।

अन्न और भोजन के बारे मे वेदो मे अनेक जरूरी निर्देश मिलते हैं। 'अन्नपते अन्नस्य नो धेहि' इस मत्र मे अन्न प्रदाता परमात्मा से प्रार्थना की है कि आप हमें ऐसा अन्न प्रदान करे जो रोगरहित तथा बलबर्द्धक हो। यह अन्न आप हम द्विपादो तथा चतुष्पादो (मनुष्यो और चौपायो) सभी के लिए प्राप्त कराये। भोजन के बारे मे एक अन्य मत्र कहता है – 'केवलाघो भवति केवलादी' अकेला खानेवाला, अन्यों को भोजन से वचित रखनेवाला तो पाप का ही भक्षण करता है। वेद के इस कथन की पुष्टि गीता मे श्रीकृष्ण ने की है तथा कहा है – जो अपने लिए खाता है वह पाप का ही भक्षण करता है। वैदिक सस्कृति में बलि वैश्वदेव तथा अतिथि यज्ञ का विधान है। हम कुत्ते, कौवे, गौ आदि प्राणियो को खिलाना अपना धर्म समझते हैं तथा आहार और अन्न की शुद्धता के अनेक निर्देश वेदोत्तर ग्रन्थो में भी पाये जाते हैं। उपनिषदो मे 'आहारशुद्धौ सत्व शुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति ।' आदि वाक्य आते हैं जिनमे सात्विक आहार से मन की शुद्धि, फलत स्मृति की ध्रुवता बताई गई है। अन्न की निदा करना अनिष्टदायक कहा गया है। अन्न की तरह जल का रोगनाशक तथा कल्याणकारी रूप वेदो में वर्णित हुआ है – 'आपो हिष्ठा मयोभुव स्तान ऊर्जेदधातन'। 'वात आ वातु भेषज' तथा 'मधुवाता ऋतायते' आदि

शेष पृष्ठ ४ पर

वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग

चैत्र सम्वत् १९२४ के प्रारम्भ मे स्वामी दयानन्द महाराज हरिद्वार पधारे। भीमगोडे के ऊपर सप्तसरोवर पर एक बाढ बनवाकर उन्होंने कुछ पर्णकुटिया बनवा कर **'पाखण्ड खण्डिनी पताका'** फहरा दी। एक निर्भय आत्मत्यागी महात्मा द्वारा सत्य के प्रसार के लिए सत्य का उद्घोष किया, वह दिन धर्म के इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

उस महामेले में स्वामीजी ने अनेक व्याख्यान दिए। अनेक शास्त्रार्थ किए बीसियों वादियों को जीता, सैकडो जिज्ञासुओ की शकाओं का समाधान किया। अन्त मे उनके निर्मल चित्त मे उदासीनता की रेखा उभरी। स्वामी दयानन्द ने अकाल पीडित प्राणियों का करुण क्रन्दन स्वय सुना था। विन्ध्याचल आदि वन्य क्षेत्रो मे कोल, भील, सन्थाल आदि भारतपुत्रो की अमानुष अवस्था स्वय देखी थी। उन्होंने तेजहीन क्षत्रिय देखे थे, वैश्यों की अवस्था भी उन्होंने देखी। ईसाई धर्म की बढती बाढ ग्रामीण जनता को प्रभावित कर रही थी। उन्होंने देखा कि पश्चिमी विचार प्राचीन आर्यसभ्यता को घुन के सदृश खोखला कर रहे थे।

कनखल होते हुए वह तीन दिन लण्ढोरा मे विराजे।। वह तीन दिन तक निराहार रहे। सारी शक्ति लगाने पर भी महामेले मे सत्य का सहायक साधु-सन्यासी नहीं मिला। अन्त में उन्हें अनुभूति हुई कि परोपकार के महायज्ञ मे उन्हें स्वय पूर्णाहुति में सर्वस्व स्वाहा करना होगा। स्वामीजी ने सारे उपकरण वहीं त्याग दिए। महाभाष्य की एक पुस्तक, एक स्वर्ण मुद्रा और एक रेशमी उत्तरीय गुरुदेव की सेवा में मथुरा भिजवा दिए।

एक जिज्ञासा के उत्तर में स्वामी जी ने कहा – **"परोपकार के महायज्ञ में सफलता के लिए उन्हें अपनी सभी आवश्यकताएं त्याग करनी होंगी।"**

महर्षि का जीवन साक्षी है कि उन्होने वैदिक आर्य सस्कृति की प्रतिष्ठा के लिए अपने तन-मन सर्वस्व की आहुति दे दरी थी।

– नरेन्द्र

सब से निर्भय हों। समान विचार, हृदय एवं संकल्प हों।

अभयं मित्रात् अभयंममित्रात्।

हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भी भय न हो।

यतो यतः समीहसे ततो न अभयं कुरु।

यजु० ३६/२२

हे देव ! हम जहा-जहा से चाहे, हमें वहा से निर्भय करो।

समानो मन्त्रः समाना हृदयानि वः समानी वः आकूति। *ऋ० १०/१५१/४*

तुम्हारे विचार एक हो, तुम्हारे हृदय एक हों, तुम्हारे सकल्प एक हों।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : समाधान विवेक और दृढ़ता से

भारतीय गणतन्त्र ने नई सहस्राब्दी एव शताब्दी मे अपने ५५वे स्वाधीनता दिवस से प्रवेश किया है। आज देश के सम्मुख आत्म-निरीक्षण की घडी है। देश की जनता यह भूल नहीं सकती जब विदेशी शासक भारत छोडने के लिए विवश हुए तो जाते समय वे समीपस्थ प्रदेशो के साथ दो बाजू पृथक् कर गए थे। इसी के साथ एकता के प्रयत्नो के बावजूद अभी तक भी उसका भारत विरोध चरम सीमा पर है। आपसी विवादो का अन्त करने के लिए कई वार्ताए हुई हैं, उनसे कभी स्थिति सुधरी दीखी लेकिन अधिकतर स्थिति बिगडी ही है। जल्दी ही भारत और पाकिस्तान के शीर्ष नेता विदेश मे मिलने वाले हैं, यदि उसमे ये नेता ऊचे लक्ष्यो की पूर्ति के लिए थोडा भी प्रयत्न करे तो सफलता मिल सकती है, परन्तु ऐसी सद्बुद्धि कब आएगी कहना कठिन है। १९७१ के युद्ध मे भारत की निर्णायक सफलता मिली थी, पकिस्तान के एक लाख सैनिक भारत मे कैद थे, उसका बडा भूभाग भी भारत के नियन्त्रण मे था। उस समय अवसर था यदि इन युद्धबन्दियो और जीते हुए प्रदेश के बदले मे कश्मीर का पाक अधिकृत क्षेत्र मुक्त करा लिया जाता, साथ ही रहमान के साथ समझौता कर बगलादेश निर्माण की जगह भारत-बगला सघीय शासन अथवा व्यापार, शिक्षा, रक्षा, आवागमन आदि महत्वपूर्ण विषयो मे स्थाई विषयो मे स्थाई आपसी सम्बन्धों की शुरूआत की जा सकती थी। उस निर्णायक विजय के बाद इन निर्णायक स्थाई सम्बन्धो के शुभारम्भ से भारतीय उपमहाद्वीप मे एक नए इतिहास का श्रीगणेश सम्भव था, परन्तु वह क्षण नहीं आया। लाहौर और शिमला घोषणा-पत्रों से उपमहाद्वीप के देशो मे आपसी स्नेह सम्बन्ध जोडने के क्षणो का भी सदुपयोग सम्भव नहीं हुआ। अब यह एक बडा प्रश्न चिन्ह उपस्थित हो गया है कि भारतीय उपमहाद्वीप के देशो के सम्बन्ध सुधार कर उनकी स्थाई मैत्री या एकता की घडी क्या जल्दी नही आ सकेगी ? इसी के साथ स्वाधीन भारत के सम्मुख अनेक समस्याए हैं, परन्तु एक ऐसी है जिसे थोडी सी भी सद्भावना और विवेक से सुलझाया जा सकता है।

पिछले दिनो राष्ट्र के शासको की ओर से कई बार दावा किया गया कि अन्न के मामले मे हम स्वाबलम्बी हैं और हमारे गोदाम अन्न से भरे पडे हैं। खेद है कि अन्न कि दृष्टि से ऐसी स्थिति होने के बावजूद देश मे ऐसे अनेक लोग हैं जो आम की गुठलिया चबाकर जीवन-यापन कर रहे हैं, जो पेट भरने के लिए अपनी औलाद बेच रहे हैं और कितने दुख और लज्जा की बात है कि कई क्षेत्रो मे नागरिक भूख से मर रहे हैं। उडीसा के रायगढ जिले मे भूख से मरे २० लोगो का मामला अधिकृत तौर पर स्वीकार किया गया। यहा के एक जिला अधिकारी ने स्वीकार किया कि जनता के पास ५ रुपये किलो की दर से खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। यह ठीक है कि भूख से हुई मौतो ने सर्वोच्च न्यायालय को भी तत्काल कार्यवाही करने के लिए सचेत किया है। उसने पाच राज्य सरकारो को आदेश दिया है कि वे सुनिश्चित करे कि एक भी व्यक्ति की भूख से मृत्यु न होने पाए। अनाज के गोदाम लबालब भरने के बावजूद देश के अनेक भागों मे भूख से हुई मौते पूरी शासन व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगा रही हैं। स्पष्ट है कि ऐसी मौतो के लिए अन्नाभाव नहीं अपितु कुप्रबन्ध जिम्मेदार है। एक ओर अनाज के गोदाम पडे हो, वहा अनाज चूहो या ठीक देख-रेख न होने से खराब हो जाए, इस तरह की घटनाओ के बावजूद अन्न न मिलने से जनता भूखी मरे या अन्न के लिए तरसे यह स्वाधीन भारत के सीमा प्रदेशो की सुरक्षा के साथ कई दूसरे सवेदनशील प्रश्न हैं जो जनता और देश को व्यथित कर रहे हैं। यह सूचना भी दी गई है कि पहली अक्तूबर से रेल यात्रा महगी हो जाएगी। सुरक्षा के नाम पर विभिन्न श्रेणी के यात्रियो से १ रु० से लेकर १०० रुपये तक वसूल किए जाएगे। जिसमें रेलो की खराब पटरियो को बदलने, बेकार रेल सिगनलो को, पुराने पुलो, डिब्बो और खस्ता हाल जर्जर सामान को बढे हुए रेल भाडे से सुधारा जाएगा।

स्वाधीन भारत मे भूख से जनता मरे या पुराने घटिया रेल डिब्बो, पटरियो से हमारी रेल यात्रा सकट मे पडे, इसके लिए सुधार होना चाहिए। परन्तु घर-घर मे जिस प्रकार पुराने बेकार सामान को हटाकर नया सामान बदला जाता है, वैसा वर्षों से रेलो मे क्यो नहीं सम्भव हुआ, यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। आज पडोसी देश के आक्रमण से खतरे के अतिरिक्त भूख से जनता की सुरक्षा के साथ सुरक्षित रेल यात्रा तक की अनेक समस्याए हैं जो स्वाधीन भारत के ५५वे स्वाधीनता दिवस पर भी उभर आई हैं। आज स्वाधीन भारत को नई सहस्राब्दी और शताब्दी मे यदि स्वाभिमान और पूरे अधिकारो के साथ अपना वर्तमान और भविष्य सुरक्षित रखना होगा तो कुछ सिद्धान्तो और समस्याओ पर हमे पूरे विवेक और दृढता से कार्य करना होगा। जिस प्रकार हमने स्वाबलम्बन से स्वाधीनता सग्राम जीता, ठीक उसी प्रकार पूरे स्वाबलम्बन विवेक और दृढता से हमे अपनी समस्याए सुलझानी होगी। कोटि-कोटि प्रजाजन जीवन की प्रत्येक विद्या मे स्वाबलम्बी, सुखी, सुशिक्षित और प्रगतिशील हो, इसके लिए भी देशवासियो को अपनी मौजूदा समस्याए सुलझाकर जीवन की प्रत्येक विधि, क्षेत्र और दिशा मे भारत राष्ट्र और उसकी जनता को स्वाबलम्बी, प्रगतिशील, समुन्नत और अग्रणी बनना होगा। देश के सभी दलो और मनस्वी बुद्धिजीवियो को राष्ट्र की इन छोटी-बडी ज्ञात और सम्भाव्य पूरी दृढता और विवेक से अपना उत्तरदायित्व निभाने की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना चाहिए।

सही परम्परा

लोकसभा अध्यक्ष द्वारा प्राय सभी दलों की सहमति से सासदो की अनुशासन हीनता पर अकुश लगाने के लिए जो नियम बनाए है वे ससद को उसकी वास्तविक और सही परम्परा की ओर ले जाने वाले नियम हैं। गत् कई वर्षो से ससद की कार्यवाही धरनो, पदर्शनो, बहिर्गमन और शोर शराबे के कारण स्थागित होने से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं को न सुलझा पाने से विकास के क्षेत्र मे भारत अन्य राष्ट्रो से पिछडता रहा, इसलिए सभी दलो के सासदो की सदन कार्यवाही मे पूरा समय देकर अपने नैतिक दायित्वों का निर्वाह कर जन आकाक्षाओ पर खरा उतरना चाहिए, जिससे राष्ट्र की सास्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक उन्नति तीव्र गति से हो सके।

— हरीश भाटिया,
दादरी, गौतम बुद्ध नगर (उ०प्र०)

उद्देश्य से भटकती सरकार

क्या सविधान निर्माताओ ने ससदीय प्रणाली इस कारण अपनाई थी कि सासद निरन्तर अपनी सुविधाए बढाते जाएगे। असल मे ससदीय लोकतन्त्र मे तीनों अग जनता के शोषण के उपकरण बन गए हैं। कर्मचारियो के वेतन की समीक्षा तो दस वर्षो मे भी की जाती है परन्तु सासद जब चाहे अपनी सुविधाओं का विस्तार करवा लेते हैं। निरन्तर बढते सरकारी खर्च ने भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव हिला दी है। बजट का ७५ प्रतिशत भाग अनुत्पादक पदो पर खर्च हो जाता है। लोकतन्त्र का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा होना चाहिए न कि उसके प्रतिनिधियो की।

— विनोद नाथ, चन्दौसी (उ०प्र०)

इच्छा शक्ति का अभाव

भारत की जनसख्या अब एक अरब पहुच गई है तथापि ओलम्पिक मे हम एक स्वर्ण पदक के लिए तरस जाते हैं। जिसका एक कारण भारत की गरीबी कहा जाता है। जहा खिलाडी न तो अच्छी खुराक ले सकता है न यहा अभ्यास की सुविधाए हैं, पर भारत से भी गरीब देशो के खिलाडी स्वर्ण प्राप्त करते हैं। असल मे इच्छा-शक्ति के अभाव के कारण भारतीय खिलाडी बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते।

— नरेन्द्र वार्ष्णेय, ऊजाविले अपार्टमैंट, नोएडा

ऋग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१४) उत्तरार्द्ध

कार्य-कारण शृंखला

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(४) जो प्रजा को सुखी रखता है, वह सब संग्रामों (संघर्षों) को दबा देता है

यो अस्य विशे महि शर्म यच्छति सो अस्य धाम प्रथम व्यानशे।
पद यदस्य परमे व्योमन् यतो विश्वा अभि सयाति सयतः।।

ऋ० ६–८६–१५

सिकता निवरी। पवमानः सोमः। जगती।

अर्थ – (य) जो मनुष्य सिकता निवावरी बनने की इच्छा से (अस्य विशे महि शर्म यच्छति) इस सुख-शन्ति प्रदाता सोम की प्रजा को सुख शान्ति प्रदान करता है (स अस्य प्रथमधाम व्यानशे) वह व्यक्ति इस सोम के प्रमुख तेज को प्रथम स्थान (पद) को व्याप्त – प्राप्त कर लेता है (यत् अस्य पद परमे व्योमन्) क्योकि इसकी अनुभूति का प्रथम स्थान परम व्योम (विशिष्ट अन्तरिक्ष=सहस्रार चक्र) मे है। (सयत) सयमी साधक (यत) जिस सोम की कृपा से (विश्वा सयत स अभियाति) अन्दर और बाहर चलने वाले अपने सब सग्रामो को एक साथ जीत लेता है – परास्त कर देता है।

अर्थ पोषण – सिकता=रेत। शत ७–१–१–११ नि=सहस्रारचक्र। बावरी – वृह वरणे भरणे च – पुन पुन भृशवा वृणीते इति – सिकता निवावरी = वीर्य को सहस्रार मे पहुचाकर ऊर्ध्वरेता बना साधक सोम परमात्मा का वरण करता है – करने की इच्छा करता है। सयत १ सयमी २ सयत् सग्रामनाम। नि० २–१७ सयत–सग्रामान्।

धाम–तेज (दयानन्द) धाम – स्थान (पद) नि० ६–२८।

निष्कर्ष – (१) जो ऊर्ध्वरेता साधक सोम की प्रजा–प्राणी मात्र को सुख पहुचाता है, वह सोम के अनुभूति स्थान (सहस्रारचक्र) मे सबसे पहले पहुच कर उसके तेज को धारण करता है। अथवा जो साधक सोम के तेज को धारण कर लेता है, वह प्राणी मात्र को सुख पहुचाने का प्रयत्न करता है। वह व्यक्ति सोम द्वारा प्राप्त तेज के कारण, बाह्य जगत् और मानसिक जगत् के सब सग्रामो को एक साथ जीत लेता है।

(५) नेता बनने और बने रहने के लिए आवश्यक गुण

ऋषिर्विप्र॰ पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन।
स चिद्विवेद निहित यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गरेनाम्।।

ऋ० ६–८७–३

उशना काव्य.। पवमानः सोम॰। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (उशना) जनहित की कामना वाला जो मनुष्य (काव्येन) श्रुत काव्यो के आधार पर आपने दृश्य काव्य (आचरण) द्वारा (ऋषि) क्रान्तदर्शी (विप्र) अपनी कमियो को पूरा करने वाला (ऋभु) खून चमकने वाला = जनता को अपनी ओर आकर्षित करने वाला तथा (धीर) सब की शिकायतो और उलाहनो को धीरता पूर्वक सुनता है, (स चित्) वह ही (आसा गोनाम्) इन पावमानी वाणियो के अन्दर (निहित अपीच्यम् गुह्य नाम) अन्तर्निहित (गुप्त) रहस्यमय स्तुत सकेत को (विवेद) ज्ञान पाता है और परिणामत (जनाना पुरएता विवेद) जनता का नेता बनने का लाभ प्राप्त करता है।

अर्थ पोषण – विवेद – विद् ज्ञाने, विद्लृलाभे। नाम–स्तुति, सकेत, अर्थ।

निष्कर्ष – नेता बनने वाले और बने रहने के लिए – दूरदर्शी, अपनी कमियो को सुधारने वाला, दूसरो द्वारा लगाए आरोपो को धीरतापूवक सुनने वाला, सबको अपने आचरण से अपनी ओर आकर्षित करने वाला तथा अपने पूर्वज ऋषियो महापुरुषो और नेताओ की पावमानी (पवित्र तथा प्रगतिशील) वाणियो से लाभ उठाने वाला बनना आवश्यक है। जब तक किसी व्यक्ति मे ये गुण रहते हैं, तभी तक वह नेता बना रहता है।

(६) सब समस्याओं को दक्षता से कौन सुलझा सकता है ?

स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी।
हरि पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ।।

ऋ० ६–१०१–१५

वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापति॰। पवमानः सोम। अनुष्टुप्।

अर्थ – सबका मित्र और सम्पूर्ण प्रजा का रक्षक बनने की इच्छा वाला (य) जो मनुष्य (रोदसी वित स्तम्भ) पृथ्वी लोकरूपी शरीर को विशेष रूप से स्वस्थ रखता है और घुलोक रूपी मस्तिष्क को ज्ञान दीप्त रखता है, (वेधा न योनि आसदम्) मेधावी मनुष्य की तरह सदा स्वगृह मे (मर्यादा) मे रहते है, विषयो की खोज मे नहीं भटकता फिरता, अपितु (हरि) दूसरो के दु खो का हरण करने के लिए (पवित्रे अव्यत) पवित्र परमात्मा के आश्रय मे रहता है – उसके आदेशों और निर्देशो का पालन करता है (स वीर दक्ष साधन) वही वास्तव मे वीर और सब समस्याओं को शीघ्र और चतुरता से सुलझाने में समर्थ होता है।

अर्थ पोषण – वीर – शूरवीर–वीर विक्रान्तौ। शूरो यो गोषु गच्छति। महानाम्नी साम ६४६ वीर वही है, जो इन्द्रियो को आक्रान्त करके अपने वश मे रखता है। दक्ष साधन– दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च, साधन साधयतीति।से दसी=धावा पृथिव्यौ। नि० ५–२१, पृथिवी शरीरम् – अथर्व ५–७–७

द्यौ – मूर्धा, दिवयश्चक्रे मूर्धानम्। अथर्व १०/१२/३२ योनि=गृहनाम। नि० ३–४ बेधा-मेधा वि नाम। नि० ३–६–१५

निष्कर्ष – जो मनुष्य शरीर से स्वस्थ, मस्तिष्क से दीप्त, अपनी मर्यादाओ मे बधा रहता है, वही वीर है। पहलवान, और सैनिक तो परिस्थिति वश वीर कहलाते हैं।

(७) ऋण से दबा राजा भी अन्न का प्रबन्ध तथा वीरता से पुनः पूज्य हो जाता है

स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम्। ऋ० ६–१०८–१३
ऋणंचयो राजर्षि:। पवमानः सोमः।
यव मध्या गायत्री।

अर्थ – (१) (य सोम) सर्वोत्पादक जो सुख प्रदाता परमेश्वर (वसूनाम्) सासारिक वस्तुओ का, (य रायाम्) आध्यात्मिक सम्पत्तियो का (य इडनाम्) भूमियों, वाणियो और अन्नों का तथा (य सुक्षितीनाम्) श्रेष्ठ मनुष्यो का (आनेता) प्राप्त कराने वाला है (स सुन्वे) वह सोम परमेश्वर ध्यान द्वारा हृदय मे अभिषुत – अनुभूत या साक्षात् किया जाता है।

(२) (य ऋणचय राजा) ऋण के सचय से दबा हुआ जो राजा (वसूना राया इडाना सुक्षितीनाम् आने ता) अपने राष्ट्र में दैनिक व्यवहार की वस्तुऔं, आध्यात्मिक, गरिमाशाली भावनाओ, वीरतापूर्ण वाणियो, कृषियोग्य भूमियो ? और क्षुधा निवृक्ति योग्य अन्नो को प्राप्त करा लेता है (स सुन्वे) वह ऐश्वर्य शाली बनकर पुन राजर्षि बन जाता है।

अर्थ पोषण – सुन्वे – सुञ् अभिषवे, सु प्रसवैश्वर्य यो। क्षितय – मनुष्या। नि० २–३ इडा – पृथिवी, नि० १–१, वाणी, नि० १–११, अन्नम्, नि० २–७, गौ, नि० २–११।

निष्कर्ष – (१) जो सर्वोत्पादक परमात्मा प्राणीमात्र को सब आवश्यक वस्तुए प्राप्त कराता है – उसकी सब स्तुति करे।

(२) ऋण से दबा राजा भी राष्ट्र मे अन्नादि **आवश्यक वस्तुओ** को प्राप्त कराकर तथा वीरता और आत्मगरिमा की भावना को जगाकर पुन राजर्षि बन सकता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

पृष्ठ २ का शेष भाग

मन्त्रो मे वायु की शुद्धता तथा उसकी रोगनाशाक शक्ति की ओर सकेत किया गया है। वेद मे आया रात्रि सूक्त मनुष्य की दीर्घ निद्रा लेने तथा शान्त अवस्था मे शयन करने की सीख देता है। उपनिषद् मे जहां पचकोशों का उल्लेख हुआ है वहा सर्वप्रथम अन्नमय कोश की चर्चा आई जो मुख्यत शरीर से सम्बन्ध रखता है। स्वस्थ श्वासक्रिया की विवेचना प्राण तत्त्व विवेचन तथा प्राणायाम प्रक्रिया में आती है। वेदो ने तो प्राण को परमात्मा का वाचक माना है – अतएव प्राण (वेदान्त सूत्र) तथा प्राणाय नमो (अथर्ववेद) आदि।

अथर्ववेद में रोगों, रोगो के कारणों, उनके निवारण के उपायो, रोगनाशक औषधियों, नाना वनस्पतियों तथा रोग दूर करनेवाले वैद्यों (भिषक) आदि की विस्तृत चर्चा मिलती है। ये सभी प्रकरण मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य से ही जुडे हैं। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के सकेत भी वेदो मे पाये जाते हैं। 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव' आदि यजुर्मन्त्र मन की शक्तियों का वर्णन करते हैं। स्पर्शपूर्वक रोग निवारण के सकेत भी अथर्ववेद के 'अय में भगवान् हस्त अय में भगवत्तर' आदि मे देखे जा सकते हैं।

– नन्दन वन, जोधपुर

हिन्दी दिवस पर विशेष

राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का श्राद्ध पर्व – १४ सितम्बर

– प्रो० यशपाल शास्त्री

हमारे सविधान के निर्माता सचमुच ही लोकोत्तर प्रतिभा सम्पन्न थे जो कि उन्होंने राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी के तथा राष्ट्र लिपि के रूप में देवनागरी के अभिषेक दिवस को श्राद्धपक्ष मे स्थान दिया। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से इस अभिषेक की सम्भावित परिणति को पहले ही देख लिया था। इसीलिए उन्होने प० बालकृष्ण शर्मा नवीन तथा सेठ गोविन्द दास के माध्यम से हिन्दी के प्रबल समर्थक राजर्षि पुरुषोत्तम टडन के चरण पकड कर उनसे अग्रेजी के लिए कभी पूर्ण न होने वाली पन्द्रह वर्षों की अवधि का अभयदान माग लिया था। उनके उत्तराधिकारी इस शासन तन्त्र के सचालक अब तक जो भी होते रहे हैं, उन्होंने हिन्दी और देवनागरी के इस श्राद्ध की महिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हिन्दी की नामलेवा तथा कथित स्वय सेवी सस्थाओं को खुले हाथ खैरात बाटने का अपना पावन कर्त्तव्य निवाहने में कभी कोई कोताही नहीं बरती। वे न केवल हिन्दी दिवस बनाते है अपितु 'हिन्दी सप्ताह' और 'हिन्दी पखवाडा' आदि का आयोजन बडी भव्यता से और बडी श्रद्धा भक्ति के साथ कराते हैं। दूरदर्शन पर ... को राष्ट्रीय एकता का वाहक बताया जाता है। गाधी, सुभाष और तिलक को उदधृत करते हुए हिन्दी की महिमा का प्रसारण किया जाता है। यह बात दूसरी है कि जहा तक स्वय आचरण का सवाल है दिल्ली दूरदर्शन एव सरकार का आशीर्वाद प्राप्त दूरर्शन के अन्य चैनल हिन्दी धारावाहिको, प्रदर्शित किए जाने वाले एव प्रदर्शित किए जा रहे चलचित्रों, गीतो, गायको आदि के नाम भी देवनागरी में न देकर रोमन में देते हैं। उन्हें भय बना रहता है कि देवनागरी में नाम देने से कहीं देवनागरी की लोक प्रियता बढकर से सर्वग्राह्य न बना दे। विदेशी उत्कोच के सामने उन्हें राष्ट्रीय एकता का प्रश्न नगण्य दिखाई देता है। अग्रेजों के ये मानसपुत्र हिन्छी समाचारों में भी आधी से अधिक बाते अग्रेजी में सुनाते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि हिन्दी समाचारों में अग्रेजी वक्तव्यों का उल्टा हिन्दी में सुनाया जाय और अग्रेजी समाचारो मे हिन्दी वक्तयो का अग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया जाया करे।

राष्ट्र के सम्मान, सस्कृत एव सम्पदा के विस्तार मे अपने राष्ट्र की भाषा का महत्व ये राजनेता जानते न हों, ऐसी बात नहीं है। इनके पसन्दीदा देश इग्लैंड के नागरिकों को जर्मन और ग्रीक की जगह अपनी भाषा (अग्रेजी) को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने के लिए कितना सघर्ष करना पडा, यह सब ये लोग जाते हैं। फिर भी यहा भारत मे हिन्दी एव अन्य लोकभाषाओं की प्रतिष्ठा के लिए चलाये गये '**अग्रेजी हटाओ आन्दोलन**' को इन्होंने नकारात्मक और ध्वसात्मक घोषित करके अग्रेजी के साथ जुडे निजी स्वार्थ के लिए उसे असफलता दिलाने के लिए एडी से चोटी तक का जोर लगा डाला है।

ऋग्वेद में वाक्सूक्त (वाग्देवी के सुन्दर वचन) का तीसरा मन्त्र इस प्रकार है –

अहं राष्ट्रीय संगमनी वसूनां चिकितुर्षपथमा यजियानाम्।
ता मा देवा ऋदधु गुरुत्रा भूरिस्थात्रा भूर्यावेशयन्तीम्।।

इस मन्त्र में वाणी के मानवीकरण द्वारा मनुष्य समाज को राष्ट्र की समृद्धि रहस्य बताया गया है।

वाग्देवी की यह स्पष्ट घोषण है कि "यदि मैं राष्ट्र की हू तो उस राष्ट्र में सभी प्रकार के ऐश्वर्यों का सगम कराती हू। यज्ञीय भावना वालों में ज्ञान की इच्छा को पहले पहल में ही उत्पन्न करती हू। अत वे बडो का सत्कार (देव पूजा), समानों से सहयोग (सगतिकरण) और छोटों की सहायता (दान) में मेरे अर्थात् राष्ट्रभाषा के प्रयोग को ही प्राथमिकता प्रदान करते हैं। शरीर, नगर और राष्ट्र की रक्षा चाहने वाले देवगण (विद्वान लोग विद्वातो हि देवा) पढ चाहे जितनी भाषाए लें किन्तु विशेष रूप से धारण मुझे (राष्ट्रभाषा को) ही करते हैं। क्योंकि मैं उस राष्ट्र के विपुल ऐश्वर्य की स्थिति विधात्री हू, उसे नष्ट नहीं होने देती तथा मैं ही उस राष्ट्र को अप्राप्त ऐश्वर्य की विपुलता से प्राप्ति कराने वाली हू।

विश्व के प्राचीनतम साहित्य का यह वचन आज भी कितना सार्थक है, इसका प्रमाण अपनी अपनी भाषाओं के ही माध्यम से अपूर्व समृद्धि पाने वाले राष्ट्र ब्रिटेन, रूस, चीन, इजराइल, जापान, फ्रास, जर्मन, अरब आदि के रूप में सबके सामने है।

भारत में भी राष्ट्रभाषा को उचित स्थान दिलाने का प्रयत्न हो रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी साहित्य सगम, हिन्दी रक्षा समिति, हिन्दी प्रचारिणी सभा, भारतीय हिन्दी परिषद्, नागरी प्रचारिणी सभा, मातृभाषा विकास परिषद्, राष्ट्रभाषा सघर्ष समिति, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, हिन्दी प्रचार सभा आदि अगणित सस्थाए बडे मनोयोग से अपना काम कर रही हैं। फिर भी हिन्दी का, राष्ट्रभाषा का आसन डोलता ही दीख रहा है। बात कुछ बन नहीं पा रही। यत्न करने पर भी यदि कार्य सिद्ध न होता हो तो देखना चाहिए कि कौन सा दोष रह गया है ? किन्तु इन सस्थाओं के सक्रिय सदस्य अपने प्रयत्न सम्बन्धी उस दोष को देखना ही नहीं चाहते जिनके कारण उन्हें अब तक आसफलता ही मिली है। ये तो राष्ट्रभाषा के मार्ग में आने वाली रुकावटो से जूझने वालों को, सरकार की दुर्नीति का विरोध करने वालों को समझाते हुए कहते है कि – "विरोध की बात मत करो। रचनात्मक काम करो। विध्वस बुरी बात है। नकारातमकता अभिशाप है। सकारात्मक मार्ग अपनाओ। पाजिटिव बनो। कीाी न कभी सफलता अवश्य मिलेगी। सहज पके सो मीठा ओय।" इस प्रकार के मोहक वाक्य इनके पथ के पाथेय बने हुए हैं।

बार बोर ऐसी नपुसक शब्दावली सुनकर डॉ० राम मनोहर लोहिया ने खेदपूर्वक कहा था "कभी कभी रचनातमक शब्द से घृणा होने लगती है, जब यह विध्वसात्मक का विकल्प बन जाता है, विध्वस और रचना पूरक काम हो तो मजा आता है। एक के बिना दूसरा हर हालत में अधूरा है। लेकिन जहा रचना के बिना विध्वस में लाम हानि दोनों की सम्भावनाए हैं, वहा विश्वस के बिना रचना में तो मुझे धोखा ही धोखा दीख पडता है।"

डॉ० लोहिया के चिन्तन का समर्थन यजुर्वेद के इस मन्त्र से होता है –

अन्धन्तम. प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो ये सम्भूत्या रता ।।

इस मन्त्र के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति के दो मार्ग हैं एक तो असम्भूति और दूसरा सम्भूति। एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। एक ध्वसात्मक, दूसरा सृजनात्मक। इन दोनो मार्गों में जो व्यक्ति असम्भूति का अर्थात् ध्वस का नकारात्मक मार्ग अपनाते हैं वे घटाटोप अधेरे में प्रवेश करते हैं। जो सम्भूति का यानी सृजन का सकारात्मक या रचनातमक मार्ग अपनाते हैं वे और भी अधिक अधेरे मे प्रवेश करते हैं। इस अधिक अधेरे को ही डॉ० लोहिया की उपर्युक्त पक्तियों का 'धोखा ही धोखा' कहा जा सकता है।

दुर्भाग्य से राष्ट्रभाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए सघर्ष करने वाली उपर्युक्त सभी सस्थाए सृजन को ही आधार बनाये हुए हैं और शायद इसी लिए अधिक से अधिक अधेरे में भटके जा रही हैं। सफलता या उद्‌देश्य सिद्धि उन्हें नहीं मिल पा रही। वेद कहता है –

सम्भूतिं च विनाश च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते।।

अर्थात् जो व्यक्ति सृजन और विनाश इन दोनों मार्गों के महत्त्व और प्रयोग को जानता है वह विनाश यानी ध्वस के मार्ग से मृत्यु को पार करके सम्भूति के अर्थात् सृजन के द्वारा अमृतत्व को प्राप्त किया करता है।

स्पष्ट है कि विनाश की अपेक्षा पहले है और सृजना की बाद में लुधियाना के फव्वारा चौक में मैंने स्टेट बैंक भवन की नींव को खुदते हुए महीनों तक देखा है। यह काम बडी मेहनत का था जो लम्बे समय से चलता रहा। उसके ऊपर विशाल भवन ो बनना था। यदि नींव खोदी जाती या कम खोदी जाती तो वहा निर्मित हुई विशाल इमारत की मृत्यु को पार न कर सकती थी। पूरी बनने से पूर्व ही धराशायी हो जाती। अच्छे से अच्छा मसाला भी उसे अमरत्व न दे पाता। ऊपर डॉ० लोहिया ने भी रचना और ध्वस को एक दूसरे का पूरक कहा है।

'अग्रेजी हटाओ आन्दोलन' ध्वस का वह अपेक्षित मार्ग है जिसे अपनाए बिना उपर्युक्त सस्थाओं का कोई भी प्रयत्न सिरे नहीं चढ सकता। इसे नकारात्मक कहकर वे सकारात्मक सस्थाओं वाले तथा उनके समर्थक अपनी असफलता की खोज को मली बुरी गलियों मे व्यक्त कर सकते हैं। आखिर खुदाई करने वाले मजदूरों को भी गालिया और अपमान ही मिलता है न ? अपने ऊपर सारे शरीर का भार सम्भाल समालने वाले पैर, शूद्र ही कहलाते हैं न ? पर इनके नि अपना काम चलाने का मजा लेकर देखिए तो ?

राजमिस्त्रयों को बडा वेतन चाहिए। अच्छी खातिरदारी चाहिए। उनका मुह फिर भी सीधा नहीं होता। खुदाई के मजदूर पर उन्हें यह भी कौन देता है ? मिलती है केवल गालिया। उन्हें काम का आदेश भी अपमान जनक शब्दों में ही दिया जाता है। वे ध्वसात्मक मार्ग के पथिक जो ठहरे।'

यदि धन कुबेरों को देखें तो वे भी सकारात्मक सस्थाओं के लिए ही अपनी थैलियो का मुह खोलते है। यदि कोई 'अग्रेजी हटाओ वाला' अपनी थोड़ी सी भी माग इनके सामने प्रस्तुत करने लगे तो उनके तेवर चढ जाते हैं। उसका दिमाग खराब बताते है।

मजदूर गाली खाकर भी काम किए जाता है। पागल कहलाकर भी 'अग्रेजी हटाओ वाले' अपने काम मे जुटे हैं। यद्यपि साधनों के अभाव में इनका काम फावडे के बिना नाखूनों से मिट्टी खोदने सरीखा है फिर भी हिम्मत बाधे हुए है। किन्तु इनकी हिम्मत का पुरस्कार यह कि इनका नाम सरकार की काली सूची में लिखा जाता है और जनता भी इन्हे खिजाती ही है। सब प्रकार का विष पी रहे हैं।

पर यह विष शिव को भी पीना पडा था। शिव ध्वस के देवता जो ठहरे। पर वे आशुतोष है। बडे चढावों की उन्हें भूख नही। धतूरे का फूल ही काफी है। शायद ये 'अग्रेजी हटाओ वाले' भी उसी पथ के पार्थक है। थोडा पाकर भी प्रसन्न हो जाते है। दाता का नाम जगभर में उछालते हैं। श्रेय उसे देते हैं, अपश्रेय स्वय झेलते हैं।

अपने मूल्याकन के प्रति यद्यपि इन्हे कोई रूचि नहीं पर इतिहास को कभी इनका मूल्याकन करना पडेगा अवश्य। समय साक्षी है कि सृजन के देवता ब्रह्म को कोई नह पूजता। शिव सबके आराध्य है। ध्वस ही शिव है। वहीं महादेव है। अग्रेजी हटाओ वाले' उस शकर के (या खडन प्रधान मूलशकर के) ही सैनिक है। इनका किया हुआ ध्वस ही सृजन का आधार बनेगा। 'अग्रेजी हटाओ' की नींव पर ही हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के विकास का महल खडा होगा।

जहा तक राष्ट्रीय लिपि का प्रश्न है, हमारे सविधान में यह पद देवनागरी को प्रदान किया गया है। दुर्भाग्यवश सविधान का यह निर्देश हमारे तथाकथित राजनेताओं तथा नौकर शाहो को कभी रास नहीं आया। यह सिलसिला शुरू से चल रहा है। प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी बोले थे कि सभी जवानो की लिखावट नागरी होनी चाहिए और उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन कहते थे कि सभी जवानों की एक लिखावट हो चाहे वह लिखावट जो भी हो। आज उसी तर्ज पर नौकरशाही और सरकारी तन्त्र की मिली भगत देवनागरी का उन्मूलन करने के लिए जी जान से जुटी हुई है। राष्ट्र लिपि के रूप मे अपनाए जाने की बात देवनागरी के लिए निकट भविष्य में कभी न पूरा हो सकने वाला सपना बनकर रह गई है।

यूरोप की भाषाओ में आपसी दूरी बहुत है किन्तु लिपि की एकता के कारण वे सभी एक सी प्रतीत होती है जबकि भारतीय भाषाए अस्सी से नब्बे प्रतिशत साम्य रखती हुई भी लिपियों की भिन्नता के कारण परस्पर आनजानी सी लगती है। वर्तमान में दुर्नेताओं की दुरामसन्धि ने इस सम्बन्ध में वातावरण इतना विषाक्त बना दिया है कि एक लिपि की बात करना देश को तोडने की साजिश का पर्याय बन गया है।

अत इस स्थिति मे मेरा सुझाव है कि भारतीय सविधान में स्वीकृति सभी क्षेत्रीय भाषाओं की दो, दो तथा हिन्दी की सभी भारतीय लिपियों (प्रत्येक क्षेत्र में दो, दो) घोषित की जाये। यथा पजाब में हिन्दी और पंजाबी की दो दो लिपिया रहें – गुरुमुखी और देवनागरी। यहा का प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार दोनों भाषाओं के लिए किसी एक लिपि का प्रयोग कर सके। परीक्षाओं में भी दोनों लिपियों का प्रयोग वैध हो किन्तु पाठ्य पुस्तके पजाबी के केवल गुरुमुखी में तथा हिन्दी की केवल देवनागरी में रहें जिससे दोनों लिपियों को भली भाति पढ लेने का अभ्यास बना रहे। उन्हें पढ़ा और समझा जा सके। यही स्थिति बगाल में रहे। वहा बगला भाषा दो लिपियों में लिखी जा सके और हिन्दी को बंगला लिपि में लिखने की छूट हो। हाई स्कूल तक के अध्यापकों को दोनों लिपियों में समान रूप से लिख पाने का अभ्यास अपेक्षित किया जा सकता है। तमिल तुलुगू कन्नड मलयालम, उडिया, आसमी आदि सभी भाषाओं को इस नियम की परिधि में रखना चाहिए।

धूर्त राजनेताओं और स्वार्थी नौकरशाहों की मिली भगत आज भारतीय लिपियों का स्थान रोमन लिपि को दिलाने के लिए जी जान से जुटी हुई है। दूरदर्शन का सबल माध्यम उनके कब्जे में है। इसके द्वारा धारावाहिकों के नाम से लेकर 'वन्दे मातरम्' तक को रोमन लिपि में इसी दुरभिसधि के अधीन दिखाया जा रहा है। इस स्थिति में केवल देसी भाषाओं के अखबार ही सही दिशा खिाते हुए देश को पतन के गर्त में गिरने से बचा सकते हैं। भारतीय भाषाओं की रक्षा कर सकते हैं।

भारत की स्वाधीनता सेनानियों तथा क्रान्तिकारियो ने हिन्दी और देवनागरी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सबल बनाने का जो सुनहरा सपना देखा था उसके सन्दर्भ में तो अब महादेवी वर्मा की ये पक्तियो ही कही जा सकती हैं –

उस सोने के सपने को देखे कितने युग बीते।
आखों के कोष हुए हैं मोती बरसा कर रीते।।

– बी ५८, बुध बाजार,
विकास नगर, नई दिल्ली - ५६

शिक्षक दिवस पर विशेष

आवश्यकता है शिक्षण के प्रति समर्पित शिक्षकों की ?

– प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है। नर्सरी अथवा पहली कक्षा से लेकर वह बी०ए०/एम०ए० तक देश के लाखो, करोडो विद्यार्थियो को शिक्षा देता है। स्कूलो कालेजो तथा विश्वविद्यालयो की शोभा उसी के कारण है। विज्ञान, वाणिज्य, कला, प्रबन्धन चिकित्सा, इजीनियरी आदि कोई ऐसा विषय नहीं जो वह नहीं पढाता हो ? प्रेस और कम्प्यूटर के युग मे लाखो की सख्या मे पुस्तके प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है। किसी भी विषय पर पुस्तके बाजार मे प्राप्त की जा सकती हैं। यहा तक कि बडे–बडे नगरो मे फुटपाथो पर भी विज्ञान, वाणिज्य आदि सम्बन्धी अच्छी–अच्छी पुस्तके मिल जाएगी किन्तु फिर भी शिक्षक का महत्त्व बना हुआ है। बिना शिक्षक के स्कूल/विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय सब सूने हैं, अर्थविहीन हैं।

किन्तु आज, शिक्षक अथवा शिक्षण के व्यवसाय के प्रति लोगो की रुचि कम होती जा रही है। पहली प्राथमिकता आई०ए०एस० आदि केन्द्रीय सिविल सेवाओ की होती है। दूसरी प्राथमिकता व्यवसाय–प्रबन्धन, चिकित्सा विज्ञान/मेडिकल व्यवसाय को दी जाती है। एमबी०ए०/एम०सी०ए० इसी कोटि में आते हैं। उसके बाद अगली प्राथमिकता इजीनयिरिंग तथा तकनीकी व्यवसाय को दी जाती है किन्तु शिक्षक बनना कोई पसन्द नहीं करता। इस तरह शिक्षक के व्यवसाय को आखिर मे स्थान दिया जाता है। यद्यपि पिछले दो तीन वर्षों मे स्कूलो तथा कालेजो के शिक्षको को अच्छे वेतनमान मिलने लगे हैं। कालेजो तथा विश्वविद्यालयो के शिक्षको को तो केन्द्रीय सेवाओं श्रेणी-१ के बराबर वेतनमान मिलने लगे है फिर भी योग्य व्यक्ति, अपने विषय के विशेषज्ञ व्यक्ति इस ओर कम आ रहे है। ऐसा क्यो हुआ ? शिक्षक के पद की गरिमा मे यह कमी क्यो आई ? इसके लिए जहा समाज, शासन तथा सरकारे जिम्मेवार हैं, वहा शिक्षक भी जिम्मेवार है।

एक रिपोर्ट के अनुसार आज देश मे ६.२७ लाख प्राथमिक विद्यालय हैं, १६० लाख माध्यमिक विद्यालय है, ११२ लाख इन्टरमीडियेट कालेज है। फिर भी शिक्षा की स्थिति क्या है ? सरकारी सगठनो के अनुसार ६–१४ वर्ष के आयु वर्ग मे लगभग दस करोड बच्चे शिक्षा से वचित हैं क्योकि उनके पास पढने के साधन नहीं हैं वे अपना पेट भरने के लिए मजदूरी करते हैं। यही नहीं यद्यपि देश की लगभग ६५प्रतिशत आबादी के पास एक किलोमीटर के क्षेत्र मे प्राथमिक स्कूल हैं किन्तु फिर भी देश मे ३८प्रतिशत से ४० प्रतिशत लोग निरक्षर है। इसका कारण जहा एक ओर गरीबी और निर्धनता है, वहा दूसरी ओर पब्लिक स्कूलो की महगी शिक्षा है। पब्लिक स्कूलों द्वारा शिक्षा का निजीकरण/ व्यापारीकरण किया जा रहा है। जिनके पास पैसा है वही इन स्कूलों मे प्रवेश पा सकते हैं। फिर इन पब्लिक स्कूलो के अध्यापक दिन रात ट्यूश्नो मे लगे रहते हैं। पहली कक्षा से लेकर १२ वीं कक्षा तक ट्यूशने चलती है। स्कूल या कक्षा में पढाने की इन्हे आवश्यकता या फुर्सत हीं नहीं ? सरकार इनका कुछ नहीं कर सकती क्योकि ये निजी स्कूल हैं ?

सरकारी स्कूलो में पढाई की स्थिति अच्छी नहीं। यदि वहा, पढाई अच्छी होती तो लोग पब्लिक स्कूलो की ओर क्यो दौडते ? वहा के परीक्षा परिणाम भी कुछ अच्छे नहीं होते। फिर सरकारी स्कूलो मे अध्यापक बहुत सी जगह अनुपस्थित भी रहते हैं या फिर स्कूलो मे होते हुए भी पढाने में रुचि नहीं लेते। प्रत्येक प्रान्त और जिले मे ऐसे अध्यापक मिल जाएगे। राजधानी दिल्ली की ही घटना है १३–८–२००१ के अखबारो में समाचार छपा कि दिल्ली राज्य के शिक्षामन्त्री श्री नरेन्द्र नाथ ने ६–८–२००१ और १२–८–२००१ के बीच पूर्वी दिल्ली के तीन स्कूलो का दौरा किया। एक स्कूल मे तो ४४ शिक्षको मे से एक भी उपस्थित नहीं था, यहा तक कि प्रधानाचार्य भी नहीं थे। नजफगढ में स्कूल का समय प्रात सात बजे से १२ बजे तक का है किन्तु शिक्षक नौ बजे और प्रधानाचार्य ११ बजे आते है। यही हाल दिल्ली छावनी के स्कूल का है। कालकाजी के स्कूल का भी यही हाल है। यमुना विहार के इलाके मे भी यही स्थिति है। भलस्वा के स्कूल मे तो चपरासी द्वारा पढाई कराई जाती है। कई शिक्षक ट्यूशन मे व्यस्त होने के कारण कक्षाये नहीं लेते जबकि कुछ शिक्षक साइड बिजनेस में जुटे रहते हैं। कुछ अन्य शिक्षक बडी कक्षाओ के बच्चे को छोटी कक्षाओ को पढाने की जिम्मेदारी सौंप देते हैं। यह रिपोर्ट शिक्षा और शिक्षको के मुह पर करारा तमाचा है। और वह भी राजधानी दिल्ली मे । ऐसे शिक्षको ने देश के समूचे शिक्षा व्यवसाय को एव शिक्षकों को कलकित करने का काम किया है। रिपोर्ट तो यहा तक कहती है कि यह हाल केवल पूर्वी दिल्ली का नहीं अपितु पूरी दिल्ली के स्कूलो का है।

उच्च शिक्षा की ओर ध्यान दे तो कालेजो और विश्वविद्यालयो की सख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। आज विश्वविद्यालयों की सख्या २५० है कालेजो की सख्या ६५७८ है, छात्रों की सख्या ५८६५४०० के आस पास है। देश में कालेज तथा विश्वविद्यालयों के शिक्षको की सख्या ३५००००/तीन लाख पचास हजार है। इनमे ८० प्रतिशत कालेज शिक्षक है तथा २०प्रतिशत विश्वविद्यालय शिक्षक है। अब इनमे शिक्षण या पढाई को देखें तो पता चलेगा कि विश्वविद्यालयो में तो अध्यापन का कार्य बहुत कम समय चलता है, कई बार तो दिन मे एक घण्टे का भी समय नहीं होता क्योंकि वहा शोध विस्तार आदि कार्यक्रम भी चलते रहते है। जहा तक कालेजों मे शिक्षण का सम्बन्ध है वहा वर्ष में छ मास तो अवकाश रहता है। इसमें व्यवस्था का दोष है शिक्षकों का दोष नहीं किन्तु बाकी छ महीनों में शिक्षक कितना पढा पाते है, यह देखने की बात है। यू०जी०सी० तथा राज्य सरकारों द्वारा नए वेतनमान दिए जानें पर भी, केन्द्रीय सेवाओं के समकक्ष अच्छे वेतन दिए जाने पर भी कालेज शिक्षकों द्वारा ट्यूशन जारी है। बडे-बडे कोचिग केन्द्र और एकेडिमिया उन्हीं के सहारे चलती है। विज्ञान, वाणिज्य, गणित, कम्प्यूटर आदि विषयों में तो ट्यूशनों की सारा साल भरमार रहती है। ऐसे मे कक्षाओ में पढाने वाले शिक्षक बहुत कम रह गए है। एक उदाहरण हरियाणा का है। हरियाणा सरकार ने कालेजो मे टयूशनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया है हरियाणा सरकार ने टयूशनो तथा कालेजो मे पढाई को लेकर एक अभियान छेड रखा है। दोषी अध्यापको के विरुद्ध शिक्षक बहुत कम रह गए है। एक उदाहरण हरियाणा का है। हरियाणा सरकार ने कालेजों मे ट्यूशनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है हरियाणा सरकार ने ट्यूशनो तथा कालेजों में पढाई को लेकर एक अभियान छेड रखा है। दोषी अध्यापकों के विरुद्ध सरकार सख्त कार्यवाही कर रही है। इसके लिए शिक्षक स्वय दोषी है अन्य प्रदेशों/प्रान्तों के शिक्षकों को इससे सबक लेना चाहिए।

दूसरी ओर सरकार तथा सरकारों को शिक्षकों की समस्याओं और कठिनाइयों को दूर करने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। बिहार जैसे कई प्रान्तों मे तो शिक्षकों को समय पर वेतन ही नहीं मिलता। फिर कई बार केन्द्र सरकार भी शिक्षकों से किए गए वायदों को लागू नहीं करती जैसे १९९८ मे केन्द्र सरकार द्वारा की गई घोषणाओं को लागू करवाने के लिए ए०आई० फुक्टो को दिल्ली में पिछले दिनों धरना रखना पडा। उधर सरकार उच्च शिक्षा को निजी हाथो में सौपने की तैयारी कर रही है। केन्द्र सरकार के निर्देश पर व्यापार तथा उद्योग पर गठित आर्थिक सलाहकार परिषद् ने उच्च शिक्षा को निजी सैक्टर मे सौंपने की सिफारिश की है। इसमे उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्येक छात्र को स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष एक या डेढ लाख रुपये देने होगे। चिकित्सा विज्ञान, इजीनियरिंग, प्रबन्धन आदि की उच्च शिक्षा का तो पहले ही निजीकरण हो चुका है। एक-एक सीट के लिए कई लाख रुपये लिए जाते है जो आम आदमी की पहुच से बाहर है। यदि इधर भी सामान्य उच्च शिक्षा मे यह प्रक्रिया जारी हो गई तो गरीबों, दलितों तथा समाज के पिछडे वर्ग के बच्चों का क्या होगा ? शिक्षकों तथा शिक्षक सगठनों को इसका विरोध करना होगा।

अत शिक्षको को जागरूक होना होगा। उसे समाज तथा राष्ट्र की ओर ध्यान देना होगा। शिक्षक चाहे स्कूल का हो, अथवा कालेज का अथवा विश्वविद्यालय का उसे अपने अध्यापन एव शिक्षण के प्रति ईमानदार होना होगा। आज देश भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख है। राजनीति मे अपराधी लोगो का बोलबाला है। ऐसे में शिक्षक ही देश को राह दिखा सकते हैं। आज देश को ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो शिक्षा तथा शिक्षण के प्रति समर्पित हो। सरकार, राज्य सरकारो तथा केन्द्र सरकार को भी शिक्षकों के प्रति किए गए वायदो/ अनुबन्धों/घोषणाओं आदि को पूरा करना होगा ताकि शिक्षको को अनावश्यक हडताल न करनी पडे। समाज का भी कर्त्तव्य है कि वह शिक्षक को उचित सम्मान दे।

– अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
दयाल सिंह कालेज करनाल

आर्यसमाज न्यू मोती बाग में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

सोमवार ६ अगस्त से ११ अगस्त तक यज्ञ तथा प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री तीर्थराम आर्य तथा यज्ञ सहयोगी श्री प० आदेश कुमार आर्य थे। पुन रात्रिकाल में ८ बजे से साढे आठ बजे तक श्री आदेश कुमार आर्य के भजन तथा साढे आठ से नो बजे तक वैदिक विद्वान श्री विश्वामित्र जी के द्वारा वैदिक रामायण की कथा प्रस्तुत की गई।

१२ अगस्त को ग्यारह कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ मे उपस्थित जन समुदाय एक मेले को दृश्य पेश कर रहा था। इस कार्यक्रम मे कई युवकों ने बढ-चढ कर योगदान दिया।

जन्माष्टमी के अवसर पर महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के प्रधान श्री रूपनारायण ओझा ने श्रीकृष्ण के जीवन का बडा मार्मिक वर्णन किया। कार्यक्रम के अन्त में नवम्बर, २००१ मे आर्यसमाज के उत्सव पर १०१ यज्ञ कुण्डो के माध्यम से यज्ञ की घोषणा की गई।

आर्यसमाज हांसी हरियाणा द्वारा वेदप्रचार

आर्यसमाज हासी हरियाणा एव लाला रामशरण दास वेद प्रचार मण्डल द्वारा हिसार, भिवानी, फतेहाबाद एव सिरसा चार जिलो में वेद प्रचार प० जबर सिह खारी की भजन मडली द्वारा कराया जाता है। भजन मण्डली गाव-गाव जाकर वेद प्रचार, यज्ञ करना, लोगो को जनेऊ देना तथा बन्द आर्यसमाज को पुन जाग्रत करना मुख्य कार्य करती है। इस वर्ष मे आर्यसमाज सिवानी, जि० भिवानी, खरखडी माखवा, जि० भिवानी एवं नारनोद जि० हिसार, मिर्जापुर, जि० हिसार की बन्द पडी आर्य सस्थाओ को पुन तीन-तीन दिन वेद प्रचार करके चालू कराया। इसके अलावा संस्था मे दैनिक भण्डारा चलता है जिसमे कम से कम ५० आदमी रोज भोजन करते हैं। आर्यसमाज मानवती मे आर्य कन्या विद्यालय चलता है जिसका वार्षिकोत्सव २८ से ३० सितम्बर होगा, जिसमे बहुत से वैदिक विद्वान, भजनोपदेशक भाग लेंगे।

सांसदों ने गरीब जनता के खून... कमाई से अपने भत्ते तीन गुने...

जिस देश में लोग भूख के मारे आम की गुठली खा-खाकर मर रहे हों, दिल्ली की खुली सडकों पर कडकडाती सर्दी में नगे सोते हो, चिलचिलाती धूप व बरसात में जिन्हे सिर छिपाने के लिए जगह ना हो, जिस देश में कपडों के अभाव में लोग नगे बदन फिरते हों। जूतों के अभाव मे काटो पर पैर छलनी होते हो जिस देश के एक करोड लोगो का हाथो मे भीख मागने के कटोरे हों।

यह महात्मा गाधी की समाधि पर फूल चढाने वाले, गाधीजी के नाम का ढिढोरा पीटने वाले, घोषणा करते हैं हम गाधीजी के अनुयायी हैं। गाधीजी ने कहा था मेरे देश का एक-एक नागरिक जब तक तृतीय श्रेणी में सफर करता है, मैं प्रथम श्रेणी में कैसे बैठ सकता हू। उन्होने अपने आप ही (अपने द्वारा बनाए गए) इस गरीब देश की जनता के गाढे खून-पसीने की कमाई पर गुलछर्रे उडाने के लिए अपना भत्ता व वेतन तीन गुणा कर लिया। आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस ससद मे महिला आरक्षण बिल कई बार पेश होने के बाद भी स्वीकृत नहीं हुआ यह लूट-खसौट वाला बिल आनन-फानन में स्वीकृत हो रहा है।

उधर देखिए दुनिया के सबसे अमीर देश अमेरिका को वहा ससद यदि अपना वेतन या भत्ता बढाती है तो उस समय के बढाने वाले सासद नहीं ले सकते। केवल नई आने वाली ससद पर ही वह लागू होगा, स्वीकृत करने वालों पर नहीं। भला फिर वह सासद बढाने की बदनामी अपने ऊपर क्यो लेना चाहेगे।

धार्मिक क्रान्ति से समग्र क्रान्ति करें मुजफ्फर पुर में नौ दिवसीय कार्यक्रम

मुजफ्फर आर्यसमाज का नौ दिवसीय वेद महोत्सव धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। पूरे शहर के जनमानस को वेदमय, धर्ममय योगमय करता हुआ यह कार्यक्रम हुआ। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ मे धर्मानुरागी भक्तो की अपार भीड ने अपने कर कमलो से आहुति डालते हुए अपने जीवन को शुद्ध करने का सकल्प लिया। इसी प्रकार भजनों एव प्रवचनो के माध्यम से जनता ने अपने भीतर हृदय परिवर्तन का एहसास किया। आर्यसमाज मुजफ्फरपुर के प्रधान पन्ना लाल आर्य ने कहा कि आज का मानव धर्म की साधना, एव सच्चाई से जाएगा तो वह स्वस्थ शान्त हो सकता है। उन्होंने धार्मिक क्रान्ति द्वारा समग्र क्रान्ति को साकार करने पर बल दिया।

इस अवसर पर गुजरात के स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती, समस्तीपुर के पडित् नवल किशोर शास्त्री, धर्मोपदेशक कमलेश दिव्यदर्शी, डॉ० सुरेन्द्र नाथ दीक्षित आदि के प्रवचन हुए।

आर्यसमाज जहीराबाद (आन्ध्र प्रदेश) में वेद प्रचार सप्ताह

- आर्यसमाज जहीराबाद, जिला मेदक (आन्ध्र प्रदेश) में वेद प्रचार सप्ताह ३० जुलाई, २००१ से ४ अगस्त, २००१ तक हुआ। इस अवसर पर आचार्य डॉ० संजय देव (इन्दौर) के वेदोपदेश तथा प० बशीलाल (हैदराबाद) के भजनोपदेश हुए।

श्रीकृष्ण जी का जीवन संघर्षपूर्ण था उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया :

भगवान कृष्ण का जीवन सघर्षपूर्ण था। उन्होंने जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवन भर धर्म, न्याय और सच्चाई के लिए आततायियो और अधर्मियो से सघर्ष किया। योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवन हमे प्रेरणा देता है कि महान बनने के लिए सघर्ष भरा जीवन अपनाना पडता है। सन् १९४७ मे पाकिस्तान से आए शरणार्थी सघर्ष करके अब पुरुषार्थी बन गए और सब कुछ पुन प्राप्त कर लिया।

उक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवी दास आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे आयोजित 'श्रीकृष्णजन्माष्टमी' पर व्यक्त किए।

श्री आर्य ने आगे कहा कि आज आज कुछ लोग जातिवाद और मजहब की आड मे देश के विरुद्ध भी कार्य करने को तैयार है। ऐसी परिस्थिति में आज देश को श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनायक की आवश्यकता है, जो इन स्वार्थी नेताओं की नाक में नकेल डाल सके।

समारोह का प्रारम्भ एक यज्ञ से किया गया। समारोह में सर्वश्री देवीदास आर्य, शन्ति स्वरूप आर्य, रामकृष्ण आर्य, सत्यकेतु शास्त्री, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोंगा, सरोज अवस्थी, मनोरमा देवी आदि ने विचार व्यक्त किए।

छापरा में वेदप्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज, छपरा के तत्वावधान मे रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तदनुसार दिनाक ४ अगस्त से १२ अगस्त तक सौत्साह मनाया गया जिसमे प्रतिदिन प्रात यजुर्वेद के मन्त्रों के साथ विशिष्ट यज्ञ सम्पन्न हुआ, साथ ही, भजन एव उपदेश के कार्यक्रम हुए। हजारो नर नारियो ने कार्यक्रम मे भाग लिया। यज्ञ का आचार्यत्व डॉ० दीनानाथ आचार्य ने किया। अपराह्नकालीन कार्यक्रम विभिन्न आर्य विद्यालयो मे सम्पन्न हुआ और सायकालीन कार्यक्रम नगर के मुख्य स्थलो – मौना साढा रोड (डॉ० मुखर्जी का प्रागण) दालदली बाजार, नारायण जी की देवी, पकज सिनेमा रोड, सत गिरिनारी कन्या उच्च विद्यालय, आर्य नगर (करीम चक) आर्यसमाज एव विद्यालय, रौजा, देवाजी का मन्दिर, शिव बाजार एव विश्वकर्मा मन्दिर, दौलतगज मे भजन एव वेदोपदेश के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सस्कृत-दिवस, मातृ गोष्ठी, शका समाधान एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम विशेष प्रभावकारी रहे। मातृगोष्ठी के कार्य मे महिला आर्यसमाज की तदर्थ समिति का गठन भी हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमती छवि गुप्ता, मैत्रिणी श्रीमती पूर्णिमा देवी एव कोषाध्यक्ष श्रीमती सविता देवी बनाई गई।

इस कार्यक्रम में डॉ० दीनानाथ आचार्य, प० अनन्त प्रसाद आर्य, प० शिवमुनि वानप्रस्थ के प्रवचन हुए एव भजनोपदेशक श्री इन्द्र स्वामी इन्द्र कवि एव प० दयानन्द सत्यार्थी के सुमधुर भजनोपदेश हुए।

मुम्बई में जनता द्वारा यज्ञोपवीत व्रत का संकल्प दीर्घ सभा के लिए आर्यसमाज के मन्त्री राजेन्द्र प्रसाद सम्मनित

आर्यसमाज मुम्बई मे श्रावणी रक्षा बन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह हुआ। श्रावण पूर्णिमा के दिन आर्यसमाज मुम्बई एव शाखा मुलुण्डा में स्थित आर्यसमाज भवन में उपाकर्म विधि हुई, जिसमें सैकडों स्त्री-पुरुषों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा यज्ञोपवीत से सम्बन्धित व्रत को निभान का सकल्प लिया।

वेद सप्ताह के इस कार्यक्रम में प्रतिदिन यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एव सायकाल भजन एव प्रेरक प्रवचन होते रहे, जिसमें श्रद्धालु एव प्रबुद्धजन पर्याप्त सख्या में नियमित रूप से उपस्थित रहे। आर्ष गुरुकुल एटा के प्राचार्य डॉ० वागीश शर्मा एव श्री जिज्ञासुस्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय–वाराणसी से पधारी हुई आचार्या नन्दिता शास्त्री ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रेरक प्रवचन दिए। पाणिनि कन्या महाविद्यालय की छात्राओ के गीत एवं वेदमन्त्रों द्वारा सराहे गए। वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के उज्ज्वल जीवन का चित्रण करते हुए जनसमूह को भाव–विभोर किया। यौवन काल से अब तक निरन्तर जनसेवा के लिए मुम्बई आर्यसमाज के मन्त्री राजेन्द्र प्रसाद नकद धनराशि रजतकलश एव उतरीय से सम्मनित किए गएं।

साप्ताहिक आर्य सन्देश ◀ ६ सितम्बर, २००१

No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 6-7/09/2001 दिनांक ३ सितम्बर से ६ सितम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2001, 6-7/09/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३६/२००१

मुम्बई आर्यसमाज के निकट स्वामी दयानन्द सरस्वती मार्ग का नामकरण

आर्यसमाज के प्रागण में समाज के निकट स्थानीय झूलेलाल मन्दिर एव, शिव विष्णु मन्दिर के बीच के रास्ते का उद्घाटन स्वामी दयानन्द सरस्वती मार्ग के नाम से ३० जून, को नई मुम्बई महानगर पालिका के महापौर द्वारा हुआ।

इस अवसर पर वाशी एव अन्य आर्यसमाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, नई मुम्बई महानगर पालिका के उपमहापौर श्री अनिल कौशिक मुख्य अतिथि के रूप में तथा, कैप्टन देवरत्न आर्य (उपप्रधान, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री मिठाई लाल सिह जी (मन्त्री, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री अनिल अग्रवाल (दृष्टि), श्री विजयकुमार लाडकानी (निर्भय पथिक) श्री सरोज शर्मा, अध्यक्ष नवी मुम्बई पंजाबी एसोशियेशन, श्री ऋतेन्द्र माथुर (नवभारत), श्री नगर सेवक एव पदाधिकारी नई मुम्बई महानगर पालिका के सर्वश्री, श्याम महाडिक, श्री तिडके, श्री दशरथ भगत, श्री विक्रम शिदे, श्री भरत नखाते, श्री विठ्ठल मोरे, सौ० सध्या कौशडीकर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

श्री लाड ने स्वामी दयानन्द के कार्य कलापों एव सेवाओ को देखते हुए इस मार्ग का नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती मार्ग रखने के लिए नई मुम्बई महानगर पालिका का धन्यवाद किया।

महापौर श्री सजीव नाईक ने स्वामी दयानन्द के सामाजिक एव धार्मिक कार्यों की सराहना की। उपमहापौर श्री अनिल कौशिक ने कहा कि ऋषि दयानन्द के कार्यों को देखते हुए इस मार्ग के अतिरिक्त किसी बडे स्थान या मार्ग का नाम देना चाहिए था।

एक शाम ... म

श्री देवीदास आर्य स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का अभिनन्दन

जी टी०वी० एवम् सिटी केबल की ओर से लाजपत भवन में स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व सन्ध्या पर 'एक शाम आजाद भारत के नाम' रगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। देश के महान सपूतो को देश भक्ति के गीतों में डूबी श्रद्धाजलि दी गई।

समारोह की अध्यक्षता कानपुर के मण्डलायुक्त श्री राजेन्द्र भौनवाल ने की और मुख्य अतिथि जिलाधिकारी मुकुल सिघल थे। इस मौके पर स्वतन्त्रता सग्राम के साक्षी रहे नगर के आठ सेनानी सम्मानित किए गए। समारोह का आयोजन प्रोजेक्टर पर पेश किया गया कानपुर का इतिहास और नगर के शहीदो का जीवन परिचय दिया गया। बिना सहारे के चलने फिरने में असमर्थ ८० वर्षीय स्वतन्त्रता सेनानी एव आर्य नेता श्री देवी दास आर्य का सम्मान उनकी व्हील चेयर पर ही किया गया, इससे पहले समारोह में श्री आर्य की समाज तथा देश सेवा की प्रशसा की गई यह बताया गया केवल १७ वर्ष की आयु मे सत्याग्रह में जेल चले गए थे परन्तु उन्होंने कभी भी स्वतन्त्रता सेनानी की पेंशन को स्वीकार नहीं की। उन्होंने ४००० अपहृत कन्याओं एवम् महिलाओं को गुण्डो, बदमाशो एवम् वेश्यालयों से मुक्त कराया, ६०० कन्याओ का स्वयं पिता बनकर कन्यादान किया।

समारोह मे मुख्य रूप से अन्ताक्षरी फेम राजेन्द्र सिंह और अनु कपूर रहे, जिन्होंने देश भक्ति के गीतों से रात्रि १२ बजे तक जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

आर्यवन में योग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन मे १६ अक्तूबर से २८ अक्तूबर, २००१ तक १० दिन का योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होगा। उसमे माताए भी भाग ले सकेंगी। शिविरार्थी १८ अक्तूबर को सायकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुच जाए।

शिविर मे योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध ममत्व को हटाने जैसे अनेक आध्यात्मिक विषयो का विवेचन होगा।

शिविर शुल्क रु० ३००/– निर्धारित किया गया है। शिविर शुल्क राशि मनीआर्डर द्वारा व्यवस्थापक योग शिविर, आर्यवन विकास क्षेत्र रोजड डॉ० खा०, सागपुर, जिला साबरकाण्ठा गुजरात ३८३३०६ को भेजे।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती आर्यसमाज नैरोबी (कीनिया) में

आर्यजगत् के सभी साधक एव साधिकाओं को सहर्ष सूचित किया जाता है कि पातजल योगधाम आर्यनगर, हरिद्वार एव महर्षि दयानन्द योगधाम फरीदाबाद के अध्यक्ष और वैदिक साधना आश्रम, तपोवन देहरादून के सरक्षक पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती आर्यसमाज नैरोबी के निमन्त्रण पर वेदयोग प्रचार हेतु नेरोबी मे पहुच चुके है। प्रचार २० अगस्त से १३ अक्तूबर तक होगा।

आर्यसमाज नैरोबी के अधिकारियों ने कीनिया, तथा पूर्वी अफ्रीका के सभी देशों में स्वामी जी द्वारा प्रचार योजना बनाई है।

नाग का सफल परीक्षण

स्वदेश में विकसित अत्याधुनिक टैंकरोधी निर्देशित प्रक्षेपास्त्र 'नाग' का २ सितम्बर के दिन बालेश्वर से १५ किलोमीटर दूर चादीपुर स्थित अन्तरिम परीक्षण शृखला से सफल परीक्षण किया गया।

नाग प्रक्षेपास्त्र चार से छह किलोमीटर दूरी के लक्ष्य पर सभी आयुधो को भेदने में सक्षम है।

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक . नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
वर्ष २४, अक ३४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, १७ सितम्बर से २३ सितम्बर, २००१ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्यजनों का आतंकवाद के विरोध में अमरीकी दूतावास पर प्रदर्शन

विगत् ११ सितम्बर, २००१ को अमेरिका की दो बडी-बडी इमारतों विश्व व्यापार केन्द्र और पैंटागन पर आतकवादी हवाई हमलो ने विश्व के समीकरण बदल दिए हैं। जिस आतकवाद से भारत विगत लगभग २० वर्षो से जूझ रहा है, आज पहली बार अमेरिका को उसका अहसास हुआ है। इस मुद्दे पर भारत और अमेरिका अब पूरी तरह एकमत हो चुके हैं। अत आतकवाद के विरुद्ध लडाई में भारत हर सम्भव सहयोग देने के लिए तैयार दिखाई देता है। भारतीय जनता को अपनी शान्ति-प्रियता के सिद्धान्त के लिए आतकवाद को कुचलने वाले हर प्रयास को समर्थन देना चाहिए।

उक्त सिद्धान्त के तहत **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के तत्वावधान मे नई दिल्ली के तीनमूर्ति चौक पर सैकडो की सख्या मे आर्य नर-नारी, बाल-वृद्ध एकत्रित हुए, सार्वजनिक रूप मे आतकवाद मुक्ति-यज्ञ किया गया और एक शान्ति-मार्च निकाला गया। इस मार्च का नेतृत्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने किया, जिसमे सर्वश्री स्वामी गोरक्षानन्द, प्रिं० चन्द्रदेव, सोमदत्त महाजन, श्रीमती ईश्वरी देवी धवन, जगदीश आर्य, चौ० लक्ष्मीचन्द, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, डॉ० वेदप्रताप वैदिक, महाशय रामविलास खुराना, गोपाल आर्य, पतराम त्यागी, रवि बहल, कृष्ण लाल सिक्का, पुरुषोत्तम लाल गुप्त, रोशन लाल गुप्त, प्राणनाथ घई, डॉ० रविकान्त, अरुण वर्मा, सुरेन्द्र कुमार रैली, विनय आर्य, हसराज चोपडा, सत्येन्द्र मिश्रा, रामदुलारे मिश्र, केवलकृष्ण कपानिया, जगदीश वर्मा, रमेशचन्द मदनमोहन सलूजा, आदित्य कुमार, ओमप्रकाश गुप्ता, मुकेश सैनी, राजीव भाटिया, नारद पण्डित (कलकत्ता), दयानन्द मदान, शिवकुमार मदान, प्रियतमदास रसवत श्रीमती मनोरमा चौधरी श्रीमती कपिला, श्रीमती सोनल मेहरा तथा बलदेव राज आदि आर्य नेताओ ने भाग लिया। इस सारे कार्यक्रम का सचालन **वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट** ने किया।

शान्ति-मार्च के बाद एक ज्ञापन-पत्र अमेरिकन दूतावास के राजदूत के नाम लेकर कुछ आर्यजन दूतावास गए जहा दूतावास की सुरक्षा सेवा के प्रमुख श्री डॉन मैक कार्टली ने राजूदत की ओर से यह ज्ञापन-पत्र स्वीकार किया।

इस ज्ञापन-पत्र मे कहा गया है कि इस पत्र को ११ सितम्बर, २००१ के दुर्भाग्यपूर्ण दिन दुनिया के सबसे क्रूरतम एव अपूर्व आतकवादी हमले मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पीडित आत्माओ के प्रति सात्वना के रूप मे समझा जाए। यह हमला न तो प्रत्याशित था और न ही आधुनिक इतिहास मे कभी देखा गया जिसमे हजारो भोले-भाले नागरिको की जान चली गई।

मानसिक रूप मे हम विश्व के उन सब लाखो-करोडो व्यक्तियो के साथ सम्बद्ध हैं जो इस काले मगलवार को न्यूयार्क मे हुए आतकवादी हमलो मे शारीरिक या आध्यात्मिक रूप मे पीडित हैं।

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर

(१) आर्य शिष्ट मण्डल अमरीकी दूतावास पर अमरीकी प्रतिनिधि के साथ। (२) आतकवाद के विरुद्ध प्रदर्शन का एक दृश्य।

सूचना

बिजली की कटौती तथा अन्य अपरिहार्य कारणों से आर्य सन्देश का पिछला अंक नहीं निकल पाया, जिसका हमें खेद है।

– व्यवस्थापक

महर्षि का राजधर्म विषयक चिन्तन

– सोहनलाल शारदा

एक अन्त मन्त्री शाहपुरा राज्य के लिए चाहिए। एक ओर सीयर भी चाहिए। यह देशहित का काम है। जिनके भाग्य होंगे वे आएंगे।।

(पत्र विज्ञापन भाग २ पृष्ठ ६५१)

महर्षि का उक्त विज्ञापन फरवरी, सन् १८८३ मे उदयपुर से लाहौर आर्यसमाज के मन्त्री श्री जवाहर सिंह को प्रेषित किया गया था। श्री जवाहर सिंह ने इस पत्र के प्रत्युत्तर मे १८ अप्रैल सन् १८८३ को लिखा था –

'श्रीमान के कृपापत्र में जो लिखा है, उसमें ऐसी बात है कि जो मेरा आकर्षण कर रही है। वह है 'देशसेवा के हित का कार्य। भाग्य होगा वह पाएगा' *(पत्र विज्ञापन भाग ३ पृष्ठ ३२७)*

शाहपुरा जैसी अति लघु रियासत के अन्त मन्त्री पद पर कार्य करना इसलिए महत्वपूर्ण कहा गया है कि जो पहले छोटे से राज्य का शासन प्रबन्ध सभालेगा आगे चलकर बृहद राज्य का शासन सूत्र भी भली प्रकार से रक्षक बनकर चला सकेगा। नि स्वार्थ भावना पूर्वक शासन सूत्र चलाना ही राष्ट्र सेवा कही गई है। यह इसलिए भी कि महर्षि के वचन है –

"कोई भी सुधार स्थायी नहीं रह सकता कि जब तक उसका आधार वेद प्रतिपादित नहीं हो।"

वेदानुकूल समर्थित मनुस्मृति के अनुसार ही श्री महाराजाधिराज सर नाहर सिंह वर्मा ने के०सी० आई०ई० को पत्र द्वारा निर्देश किया है कि

"राजा के मुख्य दो अग हैं। वह है अच्छा कार्य करने वालों को पारितोषिक और बुरा काम करने वालों को दण्ड देना।"

यह निर्देश तब लिखा गया था, जब महर्षि शाहपुरा से विदाई लेकर अजमेर को प्रस्थान कर चुके थे। तभी मार्ग मे जो व्यवस्था शाहपुरेश ने की उसमे सेवकों द्वारा जो उपेक्षा और उनका पूर्णतया पालन न किया गया, उसी के निमित्त यह निर्देश दिया गया था। इस पर प्रकाश डालते हुए निम्न विवरण लिखा गया –

"जो दूसरी चौकी ग्राम थट्ठा से घोड़ों के साथ सवार भेजा था, वह घोडों को छोड अपने घर का रास्ता लेकर चला गया। और एक मसाजची (नाई) भी जिसे सवारी गाडी के साथ भेजा गया था। वह भी शाहपुरा में ही न जाने कहां छिपा रहा। उसका मुख भी नहीं देखा। यदि दोनों बग्घी के साथ होते तो इतना कष्ट नहीं उठाना पडता।।"

घटना इस प्रकार हुई कि रेलवे स्टेशन बर्ल तक पहुचाने की व्यवस्था श्री शाहपुरेश द्वारा की गई थी। उसमे सेवको ने अनुपालन करने में उपेक्षा की जो मार्ग मे कष्ट हुआ उसका वर्णन इसी पत्र में निम्न है –

"विशेष विदित किया जाता है कि शाहपुरा से चलकर जहां घोडा बदलता है, उससे आगे दो कोस ग्रामों को छोडकर जो रूपाहेली का भोजरास गांव है, वह एक कोस रह गया था। तभी आंधी और वर्षा साथ-साथ इतने वेग से आए कि हम पूरे एक घंटा तक भीगते ही रहे। जब आंधी-वर्षा का रुख बन्द हुआ, तब हम भोजरास जो रूपाहेली का ग्राम था, में पहुंचे। यहा प्रथम ही मुझे लेने के लिए रूपाहेली के ठाकुर उस ग्राम में आकर ठहरे थे। उनके रात्रि में यहां रहने से मेरे ठहरने और घोडे आदि के रहने के लिए सभी यथोचित व्यवस्था हो गई।

दूसरे दिन मध्याह्न में भोजन कर मध्याह्न में ही गाडी के छूटने के समय ही रूपाहेली स्टेशन पर पहुंच गए। हम सभी आगे बर्ल स्टेशन पर पहुंचे। देखाकि वहां न तो कोई सिपाही ही था, और न गाडीवान ही। कुछ भी उपस्थित नहीं होने से तार देकर रेल यात्रा से ही सीधा अजमेर पहुंचा।"

अच्छा कार्य सम्पन्न करने वालों के लिए यहा वर्णन करते हैं –

"शीघ्रता के कारण मेरे जो साथ में चार सिपाही थे, उन्हें में चार ग्यारसंदीया रुपये उपहार में तथा और दो रुपये दो सिपाही जो वहां थे देना चाहता था नहीं दे सका।"

(पृष्ठ ७११ पुस्तक वही)

इसके प्रत्युत्तर मे श्री महाराजाधिराज लिखते हैं –

"ब मुजब तहरीर आपके नाई (मसाजची) और सवार जिसकी तहरीर फरमाई थी,उन्हें सजा जुर्माना और जिन्हें इनाम देने की थी, दे दिए गए हैं।"

(पत्र विज्ञापन भाग ३ पृष्ठ ३५८)

इस प्रकार का था महर्षि का राजधर्म विषयक चिन्तन।

इस लघु रियासत के लिए जो निर्देश कृषि वाणिज्य तथा गौरक्षा हेतु किए वे सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। एक कृषि विषयक पत्र मे निर्देश करते हैं –

"वहां जो नहर बनाई जा रही है, वह तीन फुट गहरी तीन फुट चौडी और तीन फिट उंची खुदाई जा रही ही है। यह नहर मेरी समझ से चार फुट गहरी, नीचे दो फुट चोडी, ऊपर तीन फुट चोडी होनी चाहिए। इनके विशेष गुण-लाभ शाम को समझाए जाएंगें ।"

(पुस्तक पत्र विज्ञापन भाग २ पृष्ठ ६८६)

इस प्रकार महर्षि का राजधर्म के अन्तर्गत कृषि उन्नति विषयक चिन्तन था। इसकी अनुपालना करके इस नरेश ने कई कार्य सम्पन्न कराए। इससे जो लाभ प्राप्त हुए उससे ही प्रभावित होकर ही और दो बडे बाध बनाए। जिनका नाम है नाहर सागर और उम्मेद सागर।

इन बाधो से सिचाई द्वारा अन्नोत्पादन अत्याधिक मात्रा मे होने से शाहपुरा से अन्य व्यापारिक केन्द्रो पर माल आने-जाने लगा। इससे राज्य शेष मे वृद्धि के साथ ही, प्रजा मे इससे होने वाली कठिनाइयो को दूर करने का भरसक प्रयास किया। जिससे अर्थ लाभ श्रेष्ठतम रहा। अत जिससे अपूर्व कार्य भी हुए जैसे विद्यालय का भव्य भवन, आर्यसमाज का भवन, श्रीमद्दयानन्द आश्रम, बख्त बिलास, जीवन बिलास, पचायतभवन, नाहर निवास, उम्मेद निवास मुख्य हैं।

शाहपुरा मे जो अखिल भारतवर्षीय रामस्नेही सम्प्रदाय का मुख्यालय यहां ही है। इस सम्प्रदाय का प्रतिवर्ष होलिका पश्चात्, वार्षिकोत्सव मेले के रूप मे होता है। उसमें बाहर से श्रद्धालुजन अत्याधिक मात्रा मे आते हैं। महर्षि प्रवास के समय भी ऐसा ही उत्सव था।

नरेश ने इस पूरे माह की चुगी निरस्त कर दी। फलस्वरूप इस माह माल अत्यधिक मगाकर अपेक्षाकृत सस्ता बिका। अत आस-पास के विस्तृत भू भाग में बसे सभी नागरो से यहा का व्यापार श्रेष्ठ रहा। इससे व्यापारियों के साथ-साथ राज्य कोष मे भी निरन्तर वृद्धि हौती रही।

गोरक्षा निमित्त ही पशुपतिनाथ गौशला को २१० बीघा जमीन गायों के चरने के लिए प्रदानकर कृषि, वाणिज्य, गौरक्षा पर विशेष बल महर्षि की विचारधारानुसार ही हुआ। ऐसी थी महर्षि की राजनैतिक सर्वांगीण वेदानुकूल समग्र लाभप्रद योजना। यह अभी भी आत्यावश्यक है ।

- शाहपुरा, भीलवाडा, (राजस्थान)

बोध कथा

वीरता और बलिदान की पराकाष्ठा

३० मार्च, १९१९ के दिन श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने निवास पर पहुचे ही थे कि उन्हें रेलवे स्टेशन पर गोली चलने की खबर मिली। वह तुरन्त घटनास्थल पर पहुचे। उस समय बडी सख्या में जनता स्वामीजी का अनुसरण कर रही थी। जनता की गिनती पच्चीस हजार तक पहुच गई। उस समय स्वामीजी स्टेशन के सामने कम्पनी बाग में जनता को सम्बोधित कर रहे थे। अचानक घण्टाघर की ओर से गोली चलने की आवाज आई और पता चला कि कुछ लोगों को चोटे आई हैं।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने उत्तेजित जनता को शान्त किया और दिल्ली के मुख्य आयुक्त से कहा कि यदि हकूमत की ओर से जनता को उत्तेजित नहीं किया गया हो तो शान्ति रक्षा की जिम्मेदारी मैं लेता हू। उस समय हजारों की जनता का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी स्टेशन से घण्टाघर की ओर लौटे। यहा गोरखा पल्टन के जवान सगीने तानकर खडे हो गए और गर्मी से बोले – **'यदि आगे बढे तो छेद देंगे।'** गुस्ताख एव सैनिको के कथन से वीतराग सन्यासी निडर खडे हो गए। स्वामीजी ने एक हाथ उठाकर जनता को शान्त किया और दूसरे से अपनी छाती की ओर इशारा करते हुए बोले – **"मैं खडा हूं गोली मारो।"** कुछ और सैनिक भी आ गए और सैनिकों की सगीने स्वामीजी के वक्षस्थल तक पहुच गई, किन्तु उस समय एक अग्रेज फौजी अफसर ने हस्तक्षेप कर उन्हे रोक दिया।

सरदार वल्लभाई पटेल ने लिखा था – **"स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आंखों के सामने आ जाता है। सरकारी सिपाही गोली चलाने के लिए तैयार थे। स्वामीजी छाती खोल कर सामने आ जाते हैं और कहते हैं – "लो, चलाओ गोलियां।" उनकी इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूं कि उन वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भाव भरता रहे।।"** **– नरेन्द्र**

मानवता के लिए संकट : आतंकवाद का उन्मूलन

आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्।

मनु, ३५०.१

न भयं चास्ति जाग्रतः।
जागने वाले को कोई डर नहीं।
न हि दुष्करमस्तीह किंचिदध्यवसायिनाम्।
अध्यवासी के लिए जगत् मे कोई कार्य दुष्कर नहीं।
जिते चित्त जितं जगत्।
मन चगा तो कठौती मे गगा।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

मानवता का उज्ज्वल भविष्य : आतंकवाद के उन्मूलन से

मंगलवार ११ सितम्बर, २००१ के दिन आतकवादियो ने न्यूयार्क और वाशिगटन पर जिस तरह के दुस्साहसी हमले किए, उनसे उनका मानवता विरोधी भयावह स्वरूप उजागर हो गया है। अमेरिका मे हुए हमलो के पीछे इस्लामी आतकवादियो के हाथ होने के सबूत भी सामने आए हैं। यह बात भी स्पष्ट हो गई है कि इस्लामी आतकवादी विश्व-शान्ति के नहीं, मानवता के भी शत्रु है। गम्भीर चिन्ता की बात है कि इस्लामी आतकवाद के सबसे बडे सरगना ओसामा बिन लादेन ने कुछ दिन पहले अमेरिका को सबक सिखाने की जो धमकी दी थी, उसे पूरा कर दिखाया। यह चिन्ता की बात है कि अमेरिका ने इस्लामी आतकवादियो के इरादो को भापने मे देरी कर दी। अमेरिका यद्यपि इस्लामी आतंकवादियो की भर्त्सना करता रहा था, परन्तु उसे इन आतकवादियो के विरुद्ध जैसा कठोर व्यवहार करना चाहिए था, वैसा उसने नही किया। परिणाम यह हुआ कि इन आतकवादियो का दुस्साहस बढता चला गया। इस्लामी आतकवादी तथाकथित जेहाद की आड मे समस्त मानव जाति को इस्लाम का अनुयायी बनाने का जो सपना देख रहे है, उसे निर्मूल करने के लिए अब समय आ गया है कि सारा विश्व एकजुट होकर उसका मुकाबला करे। भारत को पिछले अनेक वर्षों से कश्मीर और सीमावर्त्ती क्षेत्र मे कथित जेहाद के नाम पर आतकवादियो के हमलो पर शिकार होना पडा है। अब समय आ गया है कि कथित जेहाद के नाम पर आतकवादियो के सभी षडयन्त्रो, कार्यक्रमो और हलचलों का डटकर सामना किया जाए और सीमावर्त्ती इस आतकवाद का उन्मूलन कर दिया जाए। पिछले दिनो महाशक्ति अमेरिका पर हुए आतकवाद के भीषण आक्रमण से सीख लेकर इस आसन्न सकट का सामना करने के लिए उसका उन्मूलन करना ही होगा।

इस सकट से जूझने के लिए जहा पुलिस और सेना का उत्तरदायित्व है, वहा उससे जूझने मे सामान्य जनता को भी अपना दायित्व निबाहना चाहिए। यदि सीमावर्त्ती प्रदेश की जनता की बच्चा-बच्चा खासतौर से वहा का प्रत्येक नागरिक आतकवाद के इस खतरे के बारे मे जागरुक हो किसी भी आततायी गतिविधि के बारे मे जनता और अधिकारियो को सामयिक सूचना दे तो मिल-जुलकर ऐसे खतरे को समाप्त करने के लिए सभी सम्भव उपाय किए जा सकेगे। वर्षों से सीमावर्त्ती क्षेत्र मे आतकवादी सक्रिय रहे है, अब समय आ गया है कि सारे देशवासी और सैनिक-पुलिस अधिकारी इस प्रकार की व्यवस्था करे कि आतकवाद का खतरा देश के वर्त्तमान और भविष्य को किसी प्रकार की चुनौति दे सके। अमेरिका पर हुए आतकवादी हमले ने भारतीय जनता और राष्ट्र को सामयिक चुनौती दी है कि अब समय आ गया है जब देश को सीमा पार के आतकवाद से बचाने के लिए रात-दिन जागरुक और सगठित होना पडेगा। अपनी शिथिलता और असावधानता से ससार के सर्वाधिक धनी एव शक्ति सम्पन्न अमेरिका को गहरी क्षति उठानी पडी है। अब समय आ गया है जो जनता और राष्ट्र को चुनौती दे र है कि सीमापार के आतकवाद के किसी खतरे का सामना करने के लिए जन-जन अं समस्त राष्ट्र को अपनी जिम्मेदारी निभानी होर्ग सीमावर्त्ती आतकवाद से जूझकर उसके समू उन्मूलन से ही देश और मानवता का उज्ज्व भविष्य बन-सवर सकता है। अपनी असाव ानता और अत्यधिक आत्मवश्विास से अमेरिव सरीखा शक्तिशाली राष्ट्र क्षतिग्रस्त हो गय आतकवाद से जूझते हुए हमे ऐसी आपदा व सामना न करने पडे इसके लिए प्रत्येक देशवार और शासन को सचेत और सगठित होना पडेगा

वर्षों से जम्मू-कश्मीर की जनता और शास को सीमापार के जेहादी आतकवाद से जूझन पड रहा है, अमेरिका मे आतकवाद द्वारा कि भीषण विनाश और क्षति से जनता और राष् को समय पर सचेत और सन्नद्ध होना पडेगा उल्लेखनीय है कि गिनती के कुछ आतकवादिय ने विमानो का अपहरण कर अमेरिका मे सार्वधिक भव्य-सुरक्षित स्थानो को निशाना बन कर सफलता पाई। पडोसी राष्ट्र के जेहादी आतकवाद से हमारा राष्ट्र सुरक्षित रहे, इस सम्बन्ध मे सीमावर्त्ती जनता और राष्ट्र के सुरक्षा अधिकारियो का विशेष दायित्व है। अमेरिका मे आतकवाद द्वारा किए भीषण सहार से भारत की जनता, सुरक्षा अधिकारियो और शासन सभी को सामयिक सीख लेकर आवश्यक देख रेख, सुरक्षा व्यवस्था और समुचित जन-सगठन को पहल से ही जागरुक और व्यवस्थित करना होगा। राष्ट्रीय सुरक्षा के विषय मे थोडी सी भी शिथिलता और उपेक्षा राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध न हो इसके लिए महाशक्ति और मानवता पर हुए आक्रमण से भारतीय जनता और राष्ट्र का तुरन्त कुछ स्थायी व्यवस्था करनी ही होगी। मानवता और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य उसी स्थिति मे सुरक्षित रह सकेगा, जब-जन-जन और सारा राष्ट्र आतकवाद के उन्मूलन के लिए दृढ प्रतिज्ञ हो और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी प्रकार के त्याग-बलिदान के लिए प्रस्तुत हो जाए।

चीनी विस्तारवाद का खतरा

नेपाल मे माओवादियो द्वारा ४१ पुलिस कर्मियो को भूनने, ३ थानो को नष्ट करने तथा हथियारो को लूटने के समाचार चिन्ता पैदा करते हैं। माओवादियो की इस प्रकार की कार्रवाइयो से १९९६ से अब तक दो हजार से अधिक व्यक्ति मारे जा चुके हैं। उन्हे काबू करने में नेपाल सरकार विफल रही। वहा के राजा सेना तथा निर्वाचित सरकार के मध्य माओवादियो के विरुद्ध कार्रवाई करने के बारे में मतभेद के फलस्वरूप यह स्थिति पैदा हुई। आवश्यकता है कि देश की शक्ति के ये तीनो केन्द्र आपसी तालमेल बैठाकर उनके विरुद्ध कडी सैनिक कार्यवाही करे। यदि जरूरत हो तो वे भारत से भी मदद ले अन्यथा चीनी विस्तारखाद से नेपाल की सुरक्षा कठिन हो जाएगी।

– दिनेश कुमार, नबी करीम, दिल्ली

जनता का अन्धविश्वास

हमारे देशवासी भी गजब के अन्धविश्वासी हैं। हरियाणा के किसी गाव मे एक व्यक्ति के घर मादा सूअर ने एक बच्चे को जन्म दिया। जन्म के समय बच्चे के माथे पर सूड जैसा कुछ बना हुआ था, बस फिर क्या था। अफवाह फैल गई कि गणेश अवतार हुआ है। लोगों की लाइने लग गईं और चढावा चढना शुरू हो गया। आखिर क्या है यह सब ? गर्भ मे किसी प्रकार की विकृति भी तो इसका कारण हो सकती है। हर बात मे अवतार देखना कौन-सी बुद्धिमता है ?

– इन्द्रसिंह धिगान, २१ गांधी आश्रम, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-११०००८

पीत पत्रकारिता

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी कहते थे कि हमारे उद्देश्य की पवित्रता के साथ इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधन भी पवित्र होने चाहिए अर्थात् साध्य और साधन दोनो ही पवित्र होने चाहिए। तहलका प्रकरण मे उच्च स्थानो मे व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने के उचित साध्य मे अनैतिक साधनो का प्रयोग आपत्तिजनक था, इससे पीत पत्रकारिता को ही प्रोत्साहन मिला।

– डॉ० एम०एस० सिद्दकी, बद्री विशाल कालेज, फर्रुखाबाद

ऐतिहासिक उपलब्धि

भारत द्वारा टैंको को भेदने मे समर्थ प्रक्षेपास्त्र 'नाग' का सफल परीक्षण एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक सामग्री के उत्पादन क्षेत्र मे बढता हुआ एक ऐतिहासिक कदम है। इस उपलब्धि के लिए भारतीय वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं। उन्हे इस प्रकार की नई सैन्य सामग्री का आविष्कार कर भारत की सुरक्षा पूर्ण कर उसे महान् शक्तिसम्पन्न राष्ट्र बनाने मे अपना दायित्व निभाते रहना चाहिए।

– नितिनकुमार, कोडली, नई दिल्ली

ऋग्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१५) पूर्वार्द्ध

कार्य-कारण सम्बन्ध

– पं० मनोहर विद्यालंकार

(१) विभाग प्रमुख की सहमति होते ही सब सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं

यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत्स. हस सूनो अति स प्रशृण्वे। इष दधानो वहमानो अश्वैरा सं धुमां अमवान्भूवति धून्।।

ऋक् १०–११–७

आगिर्हविर्धानः। अग्नि : । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (सहस सूनो अग्ने) साहस और सहनशीलता के प्रेरक अग्नि देव ! (य मर्त ते सुमति अक्षत्) जो मनुष्य तेरी अनुग्रहात्मिका बुद्धि अथवा कृपादृष्टि को याचना द्वारा प्राप्त कर लेता है (स अति प्र शृण्वे) वह अत्यन्त विख्यात होता है। (इषं दधाना) सब प्रकार के अन्नो (भोगो) को प्राप्त करता हुआ और (अश्वै वहमान) शीघ्रगामी अश्वादियानो से यात्रा करता हुआ (स) वह व्यक्ति आगि हविधनि) प्रशस्त अगो से युक्त और यज्ञशील बनकर (अमवान् द्युमान्) शक्ति और दीप्ति से युक्त होकर (धून् भूषति) अपने अन्तिम दिनो को उत्साहयुक्त बनाए रखता है और समाज को सुविधाजनक आविष्कारो से अलकृत करता है।

निष्कर्ष – अध्यात्म अर्थ में – अग्नि का अर्थ परमात्मा करने पर साधक आध्यात्मिक उन्नति द्वारा विख्यात होकर अपनी आत्मा को अलकृत करता है।

आधिभौतिक दृष्टि से – अग्नि का अर्थ जाठराग्नि करने पर, व्यक्ति शारीरिक उन्नति करके विख्यात होता है और स्वस्थ तथा अदीन रहता हुआ, अपने अन्तिम दिनो को आनन्द और उत्साह से अलकृत करता है।

आधिदैविक दृष्टि से – अग्नि का अर्थ यज्ञाग्नि अथवा विज्ञानाग्नि करने पर, व्यक्ति वैज्ञानिक उन्नति कर के या परोपकार के कार्य करके विख्यात होता है और अन्तिम दिनो मे समाज को अपने ज्ञान-विज्ञान के आविष्कारो द्वारा, स्वयमेव तथा समाज को अलकृत करता है।

अग्नि की सुमति (कृपादृष्टि) प्राप्त करने का उपाय ऋषि नाम में निर्दिष्ट है। अर्थात् मनुष्य को आगि = प्रशस्त अगो वाला (अगिगतौ, गतेश्चत्रयो अर्था – ज्ञान, गमन प्राप्तिश्च) बनकर, हविर्धान=हवि का आधान करने वाला यज्ञकर्ता या समाज सेवक बनकर, स्वय प्रसन्न रहकर अपने जीवन को और समाज को सुख-सुविधा देकर दोनो की शोभा और ख्याति मे वृद्धि करनी चाहिए।

अथपोषण – अक्षत् – अक्षते याञ्चायाम्। आख्यातानु क्रमणी।

अग्नि = अग्रेणी – सगठन – प्रमुख।
सुमति – सहमति – कृपादृष्टि

(२) निष्काम भाव से मानव हित करने वाला ही ऋषि है

प्रत्यर्धिर्यज्ञाना मश्वहयों रथानाम् म्।
ऋषि. स यो मनुर्हितो विप्रस्या यावयत्सखः।

ऋ० १०–२६–५

ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्योवा। पूषा। अनुष्टुप्।

अर्थ – (य ऐन्द्र विमद) जो व्यक्ति ऐश्वर्य सम्पन्न घर मे उत्पन्न होकर भी निरभिमानी रहते हुए (मनुर्हित) मानव मात्र का हित चाहता है और (विप्रस्य या वयत्सख) मेधावी जनो के शत्रुओ और दोषो का पृथक् करने वाला मित्र तथा (यज्ञाना प्रत्यर्धि) दिव्यजनो के सत्कार और सगतिकरण और दानकार्यों मे सहायता के लिए सदा तत्पर रहता है और (रथाना) शरीर रथो के (अश्वहय) इन्द्रियाश्वो को सदा सन्मार्ग की प्रेरणा देता है – (स ऋषि) वही क्रान्तदर्शी या ऋषि कहलाने योग्य है और वही समाज का पोषण करने मे समर्थ, बनकर इस मन्त्र का देवता पूषा – पोषणकर्ता कहलाता है।

अर्थ पोषण – प्रत्यर्धि = प्रत्येक कार्य में वृद्धि करने के लिए सहायक रूप मे उपस्थित (सूर्यकान्त कोष)।

अश्व हय – अशूव्याप्तौ, हय गतौ, इन्द्रिया श्वो को गति प्रेरणा देने वाला। या वयत्सख – शत्रूणा पृथककर्ता सखा – यु मिश्रणामिश्रणयो सायण।

निष्कर्ष – (१) ऋषि – क्रान्तदर्शी बनने के लिए निम्न योग्यताओ को धारण करना आवश्यक है –

(१) ऐश्वर्य सम्पन्न होते हुए भी विनीत (निरा निभानी) होना।

(२) यज्ञ कार्यो की वृद्धि मे सहायक बनने के लिए सदा उपस्थित रहना।

(३) शरीर को स्वस्थ और दीर्घायु बनाने के लिए, इन्द्रियाश्वो को विषय वासना रूपी घास से बचाकर सन्मार्ग पर प्रेरित करना।

(४) समाज की कमियो को पूरा करने वाले विप्रजनो के शत्रुओ को तथा उनकी कमियो को दूर करके मनुष्यमात्र का हित करना।

इन चार गुणो को धारण करने वाला ही, समाज का क्रान्तदर्शी पोषक बनता है। मनुर्हित ऋषि पूषा (देवता) बन जाता है।

निष्कर्ष – (२) ऐश्वर्य सम्पन्न होते हुए जिसे अभिमान नहीं होता, वह ऋषि है और जो समाज का पोषण भी करता है, वह पूषा देवता बन जाता है। इस दृष्टि से ऋषि की अपेक्षा देवता की पदवी जरा ऊची है।

(३) कन्या की स्वीकृति के लिए बिना विवाह करना उचित नहीं

कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण।
भद्रा वधूर्भवति यत्सुपेशा. स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्।।

ऋ० १०–२७–१२

ऐन्द्रोः वसुक्रः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

अर्थ – (वधूयो मर्यत) वधू की कामनर्यया विवाह करने वाले मनुष्यो की (कियती योषा) कितनी पत्निया (पन्यसा वार्येण) पारस्परिक व्यवहार तथा धन के माध्यम से (परिप्रीता) अनुरक्त व वशवर्तिनी बनती है ? भावार्थ यह कि बहुत कम पत्निया पूर्ण रूप से सन्तुष्ट व वशवर्तिनी होती हैं।

(चित्) कदाचित् (यत् सुपेशा, जने स्वय मित्र वनुते) जो रूपवती स्त्री स्वयवर विधि से, जन समुदाय में से अपना पति चुनती है, (सा भद्रा वधू) वह वधू पति के लिए कल्याणकारिणी होती है।

निष्कर्ष – सामान्यतया पत्निया, पतियो के व्यवहार तथा धन से सन्तुष्ट नहीं हो पातीं। कदाचित् स्वय पति को चुनने वाली पत्नी भद्रा तथा वशवदा हो सकती है ? इसलिए विवाह मे पत्नी की स्वीकृति या पसन्द अधिक महत्व रखती है।

अर्थपोषण – पन्यसा – पण व्यवहारे स्तुतौच। वार्यम्-वरणीसधनम्। नि० ४–२

(४) कन्या को जुआरी या सट्टे बाज से विवाह करने से बचना चाहिए

अन्ये जायां परिमृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम्।।

ऋ० १०–३४–४

कवष ऐलूष.। अक्षकितवनिन्द । त्रिष्टुप्।

अर्थ – (यस्य वेदने) जिसके धन अथवा सम्पत्ति (वाजी अक्ष) धूत के शक्तिशाली पासे (अगृधत्) अपनी लालच भरी आखे गढा देते है, उसका पतन प्रारम्भ हो जाता है (अन्ये अस्य जाया परिमृशन्ति) अनजान जन उसकी पत्नी को घेर लेते हैं, उससे चिपटने लगते हैं। (पिता माता भ्रातर आहु) माता पिता और भाई भी मुसीबत के समय कहते हैं (एन न जानीम) हम इसे नहीं जानते हैं, हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। अगर इसने कोई अपराध या पाप कर्म किया है तो (एत बद्ध नयत) आप इसे बाध लो और चाहे जहा ले जाओ।

निष्कर्ष – जुए की लत को छोडना अत्यन्त कठिन है। यह मनुष्य को भिखारी और दुराचारी बना देती है, यदि परमेश्वर की कृपा हो जाए और जुआरी परमेश्वर की स्तुति को अपनी ढाल बना ले, तो कदाचित् वह इस लत से छूट सकता है। यह सकेत मिलता है ऋषि नाम के शब्दार्थ से। कवष – ढाल। ऐलूष – इल (वेदवाणी) अपूर्ण।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली, दिल्ली - ६

गुरुकुल गौतम नगर के वार्षिकोत्सव का आयोजन

श्रीमददयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन सोमवार २६ नवम्बर से रविवार १६ दिसम्बर, २००१ तक किया जाएगा। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया जाएगा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होगे।

पर्यावरण का समाज पर प्रभाव

– डॉ० आर्येन्दु द्विवेदी

पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण मे अनेक प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुए – जल, वायु, आकाश, पृथ्वी तथा अनेक सामाजिक नियम आते हैं, जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। मानव अपनी विभिन्न क्रियाओ द्वारा अपनी सुख-सुविधाओ के लिए आधुनिक औद्योगिक वातावरण का सृजन करके अपने विकास का मापदण्ड प्रस्तुत कर रहा है। विश्व मे पर्यावरण-क्रान्ति सयुक्त राष्ट्रसघ द्वारा स्टाकहोम मे सन् १६७२ में आयोजित **'मानव पर्यावरण'** विषय पर किए गए सम्मेलन की सस्तुति से सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा शुरू की गई।

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गाधी ने सन् १६७२ मे राष्ट्रीय पर्यावरण समन्वय समिति का गठन तथा १ नवम्बर, १६८० में पर्यावरण विभाग की आधारशिला रखी। सन् १६८१ के मध्य मे विश्व पर्यावरण नीति शुरू की गई। पर्यावरण सुरक्षा की तरफ जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए सारे विश्व मे ५ जून का दिन **'पर्यावरण दिवस'** के रूप मे मनाया जाता है।

तेजी से बढती हुई आबादी एव उपभोग प्रधान सस्कृति की भूख ने प्राकृतिक सम्पदा का अधाधुन्ध दोहन किया है जो अभी भी जारी है। अब प्रकृति ने भी इसकी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी है। हमने उसे मात्र दोहक समझा, उस पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहा जिससे आज पर्यावरण की गम्भीर समस्याए उत्पन्न हो रही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी जी का यह कथन **"प्रकृति हम सबकी आवश्यकता पूर्ण कर सकती है, किन्तु किसी के लालच को नहीं"** चेतावनी की ओर इगित करता है। हमारे मानव-जीवन को प्रभावित करने वाले चारो ओर उपस्थित सम्पूर्ण जड और चेतन पदार्थों का सामूहिक नाम ही **"पर्यावरण"** है। जिस हवा मे हम सास लेते हैं, जिस जल का हम सेवन करते हैं, जिस भूमि पर हमारा आवास है, वे सभी पर्यावरण के अभिन्न अग है। वस्तुत स्वस्थ्य पर्यावरण प्राणीमात्र को स्वस्थ व सुखी रखने मे सहायक है। जब हम प्राकृतिक नियमो का उल्लघन तात्कालिक लाभ जैसे – औद्योगिकरण, परमाणु ऊर्जा के विकास आदि द्वारा प्रस्तुत करते हैं, तब इन लाभों के साथ ही पर्यावरण सन्तुलन नष्ट करते हैं। जिस पर हमारा जीवन और सृष्टि निर्भर है। सभी राष्ट्र अपव्यय, प्रदूषण और धरती के ससाधनों का लगातार दोहन कर रहे हैं।

पृथ्वी के ताप तथा वायुमण्डलीय गैसीय तत्वो को प्रकृति स्वय सन्तुलित करती है। इस सन्तुलन सीमा के उल्लघन से मानव-जीवन दूषित होने लगता है, पर सबसे दुखद बात यह है कि मानव जाति ने स्वयं प्राकृतिक विकृतियां आमन्त्रित की हैं। प्राकृतिक विभीषिका का अनुमान भोपाल गैस काण्ड, रूस मे चर्नाबिल काड व इथोपिया मे भीषण अकाल आदि से लगाया जा सकता है। प्रकृति के प्रमुख घटकों मानव, वनस्पति एवं मानवोत्तर प्राणियो मे सन्तुलन रहना ही पर्यावरण संरक्षण है।

वायु, जल, मृदा, ध्वनी व रेडियोधर्मी प्रदूषणो द्वारा गम्भीर पर्यावरणीय समस्याए जन्म ले रही हैं। स्वस्थ मानव जीवन के लिए आवश्यक स्वच्छ वायु को वायुमण्डल मे अवाच्छित तत्वो व विषाक्त गैसो का प्रवेश उसे बुरी तरह दूषित कर रहा है। लगभग ६० प्रतिशत वायु प्रदूषण केवल स्वचालित वाहनो के धुए व १० से १५ प्रतिशत ईंधन के धुए के कारण होता है। वन विनाश, शहरीकरण व उद्योगीकरण प्रकृति की यह समस्या दिनोदिन बढ रही है। वैज्ञानिको का अनुमान है कि बढती कार्बनडाई आक्साइड की मात्रा इसी दर से बढती रही तो अगले ३०-४० वर्षों मे धरती के ताप मे ३से ५ डिग्री तक की वृद्धि से शीतोष्ण क्षेत्र रेगिस्तान और ध्रुवो की बर्फ पिघलने से जलप्लावन की भीषण समस्या हो सकती है। विभिन्न उद्योगो से मुक्त विषैले रसायनो द्वारा आगामी ४० वर्षों मे कम से कम २५ से ३० प्रतिशत ओजोन पट्टी की क्षति सम्भव है, जिससे त्वचा कैंसर जैसे भयानक रोग हो सकते हैं। साथ ही मौसम भी बुरी तरह से दूषित हो सकता है।

आज आवश्यकता है ऐसे तकनीकी विकास की जो स्वस्थ पर्यावरण बनाने मे सहायक हो। वैज्ञानिको के मतानुसार यदि भूभाग पर ३३ प्रतिशत वन हो तो वायु प्रदूषण दुष्प्रभावी नहीं होता। वृक्षारोपण से न केवल पर्यावरण सन्तुलन वरन् भूस्खलन, बाढ जैसी जानलेवा विभिषिकाए नियन्त्रित हो सकती है।

हमारे देश मे अकेले जल-प्रदूषण से पाच वर्ष से कम आयु के लगभग १७ लाख बच्चे प्रतिवर्ष मरते हैं। प्रदूषण से बच्चो के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड रहा है। बाल मृत्यु दर पर काबू पाने मे चिकित्सीय प्रयास बौने सिद्ध हो रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय शोध सस्थान की रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण से उत्पन्न श्वास सम्बन्धी बीमारियो विश्व मे ४० लाख बच्चे प्रतिवर्ष मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। वायु प्रदूषण की भयावह स्थिति से भविष्य मे पाच वर्ष पूरा करते-करते पाच बच्चो मे से एक की मृत्यु हो जाएगी। बच्चों के रक्त मे वायु प्रदूषण से सीसे की मात्रा बढ रही है जिससे दिमाग को हानि, लकवा व मिर्गी तथा मृत्यु हो सकती है। पैट्रोल व डीजल से चलने वाली गाडियो की सख्या मे निरन्तर वृद्धि से वायु व ध्वनी प्रदूषण मे बहुत ज्यादा बढोतरी हुई है।

वायु प्रदूषण के अतिरिक्त दूषित जल भी स्वास्थ के लिए हानिकारक है। विश्व स्वास्थ्य सगठन (W.H.O.) की रिपोर्ट के अनुसार भारत मे ८० प्रतिशत बीमारिया दूषित जल मे टाइफाइड, हैजे व पेचिश आदि के कीटाणु के कारण होती है। भारत मे जल प्रदूषण से ५० से ६० प्रतिशत लोग प्रभावित है, जिनमे ३० से ५० प्रतिशत लोग मर जाते हैं। प्रतिदिन ४२ अरब गैलन मलवा व डेढ लाख टन से अधिक डिटरजेंट समुद्र मे मिलकर जल प्रदूषित कर रहा है। एक सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि जल व वायु प्रदूषण से करीब २५ प्रतिशत स्कूली बच्चे श्वास सम्बन्धी अनेक रोगो के शिकार रहे हैं। १६ जून, १६८६ को तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने **केन्दीय गंगा प्राधिकरण** की स्थापना व गगा सफाई अभियान कार्यक्रम शुरू कर दूरदर्शिता का परिचय दिया था। इस अभियान को जन-आन्दोलन का रूप देना चाहिए।

८५ डेसीबल से अधिक ध्वनी होने पर रक्तचाप (ब्लैड प्रेशर) का बढना, थकान, बहरापन, हृदय रोग, नींद न आना व पागलपन तक के लक्षण पैदा कर सकती है। दो-तीन दशको के बाद बच्चे अत्यन्त कम सुनने की क्षमता या बहरे पैदा हो सकते हैं। इस भयावह स्थिति से पहले ही सरकार को कडे कानूनी उपायो व भारी जुर्माने करने चाहिए।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार २० लाख लोग भू-सुधार व कृषि-उत्पादन बढाने हेतु प्रयुक्त रसायनो से बुरी तरह प्रभावित हैं। इसमे ४ लाख लोग प्रतिवर्ष मर जाते है।

नाभिकीय सस्थानो के निर्माण अणु, परमाणुं, हाइड्रोजन बम परीक्षणो से निकलने वाले रेडियोधर्मी विकिरण मानव को कैंसर, त्वचा रोग, बाझपन जैसे भयानक रोगो से जकड रहे हैं। नाभिकीय विस्फोटो पर अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाकर रोग लगानी चाहिए।

अत पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है। आवश्यकता वैज्ञानिक व औद्योगिक विकास रोकने की नहीं, अपितु निकलने वाले दूषित पदार्थों करे ठिकाने लगाने की है। हर माध्यम से जनसख्या दर में कमी व पर्यावरण के प्रति जन-चेतना जगानी होगी। इसके लिए स्वय सेवी सगठनो, सामाजिक कार्यकर्ताओ, सरकारी अधिकारियो आदि की **'पर्यावरण प्रदूषण निरोधक समितिया'** गावो से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक गठित की जानी चाहिए। यदि पर्यावरण सुधार की ओर समुचित ध्यान न दिया गया तो कोई भी शक्ति सृष्टि को विनाश से नहीं बचा सकेगी।

- प्रवक्ता, समाज शास्त्र, राजकीय स्ना० महाविद्यालय, जालौन

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्व भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्।।

सुखी बस ससार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय।।

विद्या-बुद्धि-तेज-बल सबके भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से वचित रहे न कोय।।

आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसो भागे दूर।।

मिले भरोसा नाम का हमे सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मन ईश।।

पाप से हमे बचाइए, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाकर, सबको करो निहाल।।

दिल मे दया उदारता, मन मे प्रेम अपार।
हृदय मे धैर्य-वीरता, सबको दो करतार।।

नारायण तुम आप हो, पाप के मोचनहारी।
क्षमा करो अपराध सब कर दो भव से पार।।

हाथ जोड विनती करे, सुनिए कृपा निधान।
साधु–सगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।

दक्षिणा की कमाई

– देवराज आर्यमित्र

दक्षिणा का सम्बन्ध श्रद्धा से है जो कुछ दान के रूप मे मिलती है। दक्षिणा कोई दिहाडी या शुल्क नहीं है। मुह से मागकर लेने का नाम दक्षिणा नहीं है। यह तो दक्षता से प्राप्त होती है। दक्षिणा को अर्थोपार्जन का लक्ष्य मत बनाओ। यह तो आपके सम्मान के लिए भेट स्वरूप है। यदि आप दक्षिणा के लोभी-लालची बन गए तो जीवन का आनन्द समाप्त हो जाएगा।

मैं पूछता हू, आप किसी दृष्टिहीन को मार्ग बताते हो, उसे यातायात से बचाकर सडक पार करा देते हो तो उससे कुछ प्राप्त करने की इच्छा या आशा करते हो ? वह तो आपका धन्यवाद कर दे तो काफी है। किसी भूले-भटके को सही रास्ता बताकर आपने मानवता के नाते अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। आपके इस कार्य से खुश होकर प्रभु आप पर कृपा वृष्टि करेगे। भगवान का भक्त स्वय आपके पास आएगा और आपकी दक्षता पर मोहित होकर आपको बडे सम्मान के साथ वस्त्राभूषण आदि सब प्रकार की दक्षिणा भेट करेगा। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

कुछ परोपकार की भावना से आगे बढो। यह मत सोचो कि मुझे क्या मिलेगा ? मैंने अनेक दक्षिणा कमाने वाले उपदेशको को देखा है, सुना है जिनके परिवार मे बच्चे बिगड रहे हैं, काबू से बाहर हैं और कुकर्मों का कलक लगा रहे हैं। घर मे आचरण की कमी या शिथिलता इसका कारण है। अत विश्व को आर्य बनाने से पहले स्वय को आर्य बनाओ, अपने बच्चो को बनाओ।

दक्षिणा की कमाई ऐसी चाट है, जिसका स्वाद बहुत अच्छा है, परन्तु इसकी अति करने से प्रतिक्रिया होती है। अर्थात् पीडा उत्पन्न होती है। वैदिक धर्म का प्रचार की रूची है तो करो, परन्तु दक्षिणा कमाने की दृष्टि से नहीं। अन्यथा मेरे सामने अनेक महानुभावो के जीवित उदाहरण हैं जिन्होने दक्षिणा के द्वारा खूब धन सग्रह किया अब शारीरिक कष्ट भोग रहे हैं। वेद प्रचार को व्यवसाय मत बनाओ। क्षमा चाहता हू बात कटु है, परन्तु हितकर है।

– आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन का आयोजन

जैसा कि विदित है पूरे मेवात मे गौ हत्या बडे पैमाने पर हो रही है। हजारो की सख्या मे सवेरा होने से पहले गाये काट दी जाती हैं। इन सब पर पूर्ण अकुश लग सके इस विचार को लेकर राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन का आयोजन आर्यवेद प्रचार मण्डल मेवात एव हरियाणा राज्य गौशाला सघ के द्वारा नई अनाज मण्डी पुन्हाना मे ७ अक्तूबर, २००१ को किया जा रहा है। गौ भक्तों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सखया में उपस्थित हों। इस सम्मेलन में धार्मिक व राजनीतिक नेताओं के विचार सुनने को मिलेंगे।

हिसार कृषि विश्वविद्यालय में हिन्दी में काम होगा - कुलसचिव

चौधरी चरणसिह हरियाणा के कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलसचिव महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कामकाज मे राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के हरसम्भव उपाय किए जाएगे। उन्होंने यह बात हरियाणा राजभाषा समिति के एक शिष्टमडल के साथ भेंट के दौरान कही। समिति के शिष्टमडल ने कुलसचिव तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियो को स्पष्ट किया कि हरियाणा की राजभाषा २६ जनवरी, १९६६ से हिन्दी है तथा मुख्यमन्त्री और मुख्यसचिव के भी हिन्दी मे काम करने के आदेश है। अत विश्वविद्यालय मे हिन्दी मे काम न होना अवैधानिक तथा अनुचित है। समिति ने यह भी स्पष्ट किया कि कृषि विज्ञान, पशु चिकित्सा –विज्ञाम, गृह विज्ञान तथा बागवानी जैसे पाठ्यक्रमो की शिक्षा मे हिन्दी का विकल्प होना आवश्यक है। बातचीत के अनन्तर कुलसचिव महोदय ने निम्नलिखित बिन्दुओ पर तत्काल कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

१ विश्वविद्यालय के समस्त बोर्ड तथा अधिकारियो के नाम पट्ट द्विभाषी अर्थात् हिन्दी-अग्रेजी दोनो मे लगवाए जाएगे। हिन्दी को ऊपर बडे अक्षरों में लिखा जाएगा।

२ अग्रेजी के टाइपराइटर भविष्य मे नहीं खरीदे जाएगे।

३ अग्रेजी के वर्तमान टाइपिस्टो तथा आशुलिपिको को हिन्दी में काम करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रतियोगी परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म करें

देश के ६० प्रतिशत छात्र स्नातक तक की शिक्षा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के माध्यम से ग्रहण कर रहे हैं, परन्तु एन०डी०ए० तथा सी०डी०एस० समेत अनेक भर्ती परीक्षाओ में अग्रेजी माध्यम के कारण इन छात्रो का भविष्य अन्धकारमय बन गया है। ससद में दो बार भारतीय भाषाओ मे भर्ती परीक्षाए लेने का सकल्प पारित हो चुका है। ससदीय राजभाषा समिति द्वारा इस सदर्भ मे की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति के आदेशो को राजपत्रित किया जा चुका है। सघ लोक सेवा आयोग द्वारा नियुक्त सतीश चन्द समिति ने भी अनुकूल सिफारिशे की हैं। सुरेश पचौरी की अध्यक्षता मे राज्य सभा की आश्वासन समिति (जिसमें डी एम के समेत सभी दलो के सदस्य हैं) ने भी कहा है कि सरकार ढुलमुल रवैया छोडकर भारतीय भाषाओ को तुरन्त माध्यम बनाए। ससद मे भी प्रश्न उठाए गए हैं। अनेक सासदो और सगठनो ने कि लिखा भी है। प्रधानमन्त्री बनने से पहले आप स्वय यह माग ससद और उसके बाहर उठा चुके हैं। किसी भी मुद्दे पर इससे अधिक सहमति सम्भवत नहीं बनी होगी, परन्तु आपका कार्मिक मन्त्रालय मौन है, कोई निर्णय नही कर रहा। छात्रो मे आक्रोश है, तिलमिलाहट है। वे इस अन्याय के विरुद्ध सगठित हो रहे हैं। इस आक्रोश के शमन के लिए, एन डी ए, सी.डी. एस तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं से अग्रेजी का विषय तथा माध्यम की अनिवार्यता समाप्त करना आवश्यक है। कृपया तुरन्त कार्यवाही करे, यह अन्याय और भेदभाव दूर करे तथा अग्रेजी को हिन्दी माध्यम वाले छात्रो पर थोपने पर विराम लगाए।

– श्यामलाल, महासचिव, राजभाषा संघर्ष समिति रोहिणी

सफाई कर्मचारियों के लिए हवन-यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज पिम्परी की ओर से पिम्परी चिचवड मनपा मे कार्यरत सफाई कर्मचारियो के लिए यज्ञ-हवन एव स्नेह मेळावा का आयोजन दिनाक १७ अगस्त, २००१ को आर्यसमाज भवन मे किया गया।

श्री ओमप्रकाश जी चाडक के पौरोहित्य मे यज्ञ के पश्चात् हिन्दू स्वाभिमान प्रतिष्ठान के प्रमुख प० धर्मवीर जी आर्य ने उपस्थित लोगो को उपदेश दिए। उन्होने कहा कि " जन्माधिष्ठित जातिव्यवस्था नष्ट करने की आवश्यकता है। सभी स्त्री पुरुषो को, दलितो को भी वेदाध्ययन एव यज्ञ करने का अधिकार है, उन्हे इस अधिकार से कोई नहीं रोक सकता।"

आर्यसमाज के दलितोद्धार कार्य को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से महानगर पालिका के कर्मचारियो को यजमान बनाकर यज्ञ-हवन का प्रयोजन किया था। आर्यसमाज पिम्परी के प्रधान श्री कृष्णचन्द्र आर्य के मार्गदर्शन मे हरगुणलाल गणेशवाणी, मुरलीधर सुदराणी, प्रो० एकनाथ नाणेकर, जगदीश वासवाणी, हरिकृष्ण वाप्ता, कुमार पारोल, हरेश तिलोकचदाणी, राजू वरियाणी, उत्तम दडिमे, साईनाथ पुन्ने, दत्ता सूर्यवशी आदि कार्यकर्त्ताओ ने कार्यक्रम सफल करने मे सहयोग दिया।

गणेशोत्सव दरम्यान गौ रक्षा अभियान के अन्तर्गत पिम्परी चिचवड-पूणे परिसर मे **"गाय करें हमारा पालन, बांधो उसको घर-आंगन", "गाय हमारा जीवन आधार, मत चलाओ छुरे की धार", "गोहत्या बन्द करो, गाय का पालन करो"**, आदि उद्घोष लिखे कपडे के बैनर आर्यसमाज पिम्परी की ओर से लगवाए गए।

वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड शहर का वार्षिकोत्सव एव अथर्ववेद पारायण यज्ञ दिनाक १५ अगस्त से २१ अगस्त, २००१ तक श्री भरतलाल जी शास्त्री, हासी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प० भूपेन्द्र सिह जी, भजनोपदेशक एव श्री लेखरज जी ने मधुर भजनो से लोगों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

१८ अगस्त को वार्षिक उत्सव का ध्वजारोहण गुरूकुल महाविद्यालय झज्जर के प्राचार्य श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा किया गया। इस अवसर पर जोधपुर, पाली, सुमेरपुर, शिवगज, मेडता, बालोतरा, बूदी, कोसाना, भावी एव बिलाडा आदि से आर्यजन पधारे थे।

२२ अगस्त को सभी विद्वानो का कोसाना आर्य समाज के प्रधान श्री बशीलाल आर्य के छोटे भाई श्री किसन आर्य के पौत्रो के नामकण, मुण्डन एव यज्ञोपवीत सस्कार को सम्पन्न कराते हुए ग्राम में वेद प्रचार का कार्य बडे उत्साह से कराया गया। २३ अगस्त को पीपाड आर्यासमाज के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री जगदीश सैन के यहा पारिवारिक यज्ञ एव सत्संग के बाद सभी विद्वानो को भावपूर्ण विदाई दी गई।

पृष्ठ एक का शेष भाग

आर्यजनों का आतंकवाद के विरोध में अमरीकी दूतावास पर प्रदर्शन

विश्व के समस्त ८००० आर्यसमाज मन्दिरो में १६ सितम्बर रविवार को दिवंगत आत्माओ की सदगति के लिए प्रार्थना सभाए एवं यज्ञ आयोजित किए गए। इन सभाओं में परमपिता परमात्मा से उन महानुभावों के लिए भी आशीर्वाद की प्रार्थना की गई है जो आतकवाद से निपटने के लिए सकल्पशील हैं।

ज्ञापन-पत्र में कहा गया है कि भारत इस विपदा से काफी अरसे से निपट रहा है। हम उन अपराधी तत्वों से भी निपटने का प्रयास करते रहे हैं जो श्रृखलाबद्ध बम हमलों तथा भोले-भाले लोगों की हत्या के लिए जिम्मेवार हैं तथा जिन्हें पाकिस्तान की सैन्य और गुप्तचर संस्थाओं की सहायता मिलती रही है।

इस बार आपके देश को भी वैसी ही परिस्थितियो का सामना करना पड रहा है जिनके पीछे अफगानिस्तानी तालिबानों का सरक्षण है। कृपया इस हास्यास्पद स्थिति को समझने का प्रयास करें। आपके देश के प्रशासन के लिए इस अचानक हमले का दुस्साहस पूरी तरह अप्रत्याशित था।

यह उचित समय है कि सारे ससार को इकट्ठे बैठकर इस विकराल विपदा वाले आतकवाद का सज्ञान लेना चाहिए। जिसने विश्व के समस्त हिस्सो में भारी सख्या में जानें ली हैं। इस विपदा को उत्पन्न करने वालों को अलग-थलग किया जाना अत्यन्त आवश्यक है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में इसके पोषक हैं। हालाकि इस विशाल कार्य में कई प्रकार की समस्याए शामिल होंगी, परन्तु फिर भी इससे निपटने के लिए महान् सकल्प और भारी उत्साह की आवश्यकता है।

हमे आतकवाद को बढावा देने वाले एव इसके पोषकों और सरक्षको को किसी कीमत पर भी माफ नहीं करना चाहिए।

ज्ञापन-पत्र मे अमेरिका को आश्वस्त किया गया है कि हम भारत सरकार से भी प्रार्थना कर रहे हैं कि भारत को इस सहयोग मे आने वाली हर प्रकार की असुविधा से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

आतक के खिलाफ युद्ध तब तक सफल नहीं हो सकता जबतक उन देशो के विरुद्ध कार्यवाही न की जाए जो आतकवादी गुटो को सहायता पहुचाते हैं।

यह एक अवसर है विश्व की उन सब ताकतो के लिए जो किसी न किसी रूप मे आतकवादी नामक अमानवीय एवं अलोकतान्त्रिक शब्द से परेशान रहे हैं।

यह अब अमेरिका सरकार पर है कि वह समान विचारधारा एव समान उद्देश्यों वाले लोगों को आतकवाद के विरुद्ध सघर्ष में सहयोगी समझे।

हम इस विपदा और सघर्ष के समय मे बुश प्रशासन को हर प्रकार का समर्थन एव सात्वना देना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। ***

दाएं से बाएं श्री अरुण वर्मा, प्रि० चन्द्रदेव तथा श्री विमल वधावन तीन मूर्ति चौक पर आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए।

सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के नेतृत्व में अमरीकी दूतावास पर आतंकवाद के विरुद्ध आर्यजन प्रदर्शन करते हुए।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतापुर के वार्षिकोत्सव का आयोजन

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतारपुर का वार्षिकोत्सव का आयोजन सोमवार ८ अक्तूबर से रविवार १४ अक्तूबर,२००१ तक किया जाएगा। उसमें अथर्ववेद पारायण यज्ञ प्रात. ६.३० बजे से ९.३० बजे तक और साय ४ से ६ बजे तक यज्ञ प्रवचन व मधुर सगीत के कार्यक्रम होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा सर्वश्री पं० सत्यानन्द, नोएडा, स्वामी आत्मबोध सरस्वती, हरिद्वार, डॉ० रविप्रकाश आर्य, दिल्ली, डॉ० राम प्रकाश, चण्डीगढ, महावीर मुमुक्षु, मुरादाबाद, बहन योगमाधुरी, अमृतसर, श्रीमती चन्द्र प्रभा आचार्या, लुधियाना तथा सगीताचार्य विजय आनन्द, फिरोजपुर होंगे।

पूरे सप्ताह भर गुरुधाम दादा गुरु विरजानन्द की जन्मस्थली गुरुकुल करतारपुर रहकर आए हुए उच्चकोटि के विद्वानो, महात्माओ के प्रवचन एव सगीतकारो के सगीत का धर्म लाभ उठाए। उत्सव में रहने व भोजन आदि का प्रबन्ध गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर की ओर से होगा। ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लाए।

धर्म-शिक्षक चाहिए

हमारे गुरुकुल में धर्म शिक्षक का पद रिक्त है। जिसके लिए उम्मीदवार की योग्यता निम्न प्रकार हो – **१. आर्ष पद्धति से शास्त्री या आचार्य, २. आर्ष ग्रन्थों का विद्वान्, ३. उपदेशक एवं अच्छा वक्ता हो।**

वेतन योग्यतानुसार। आवास एव भोजन निशुल्क। आवेदन करने की अन्तिम तिथि २० सितम्बर, २००१ तथा साक्षात्कार की तिथि २५ सितम्बर, २००१ है। इच्छुक उम्मीदवार सम्पर्क करें–

– कुलपति, गुरुकुल उच्च विद्यालय
धीरणवास पो० रावलवास खुर्द,
जिला हिसार (हरियाणा)
दूरभाष - ०१६६२-६४०५८

R N No 32387/77 Posted at N.D.P.S O on 20-21/09/2001 दिनांक १७ सितम्बर से २३सितम्बर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2001
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 20-21/09/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३६/२००१

आर्यवीर दल द्वारा धार जिले में प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

आर्यसमाज धार द्वारा जिले के आसपास ग्रामीण अचलो मे आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। आर्यसमाज के मन्त्री श्री चन्द शरण जी भार्गव ने बताया कि आर्यवीर दल मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ एव मध्य भारत के प्रान्तीय व्यायाम शिक्षक श्री ब्र० विजय आर्य (राठौर) के सानिध्य मे प्रशिक्षण शिविर दिनाक ८ अगस्त से १८ अगस्त तक ग्राम सनकोटा एव डापला मे दयानन्द विद्या पीठ मे, दिनाक १६ अगस्त से २२ अगस्त तक ग्राम बखतगढ मे स्वामी निखलेश्वर विद्यालय मे एव २४ अगस्त से २८ अगस्त तक दिलावर, सलकन पुर मे आयोजित किया। इसमे बडी सख्या मे नवयुवको ने भाग लिया। प्रशिक्षण में जूडो-कराटे, नाइनचाकू, लाठी, आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, सूर्य नमस्कार, पिरामिड सहित विभिन्न कलाओं का प्रशिक्षण दिया गया। साथ में बौद्धिक, गीत, भजन, सध्या, यज्ञ का कार्यक्रम विशेष रहा। जिससे देश की भावी पीढी चरित्रवान बनें।

प्रशिक्षण शिविरो मे गुरुकुल होशगाबाद के ब्र० कपिल देव शास्त्री, गुरुकुल आमसेना के श्री ब्र० ओमप्रकाश शास्त्री एव श्री विश्वकान्त शुक्ला ने शिविर मे मार्ग दर्शन किया।

प्रतिष्ठा

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं दें

महर्षि दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के पठन-पाठन से जहा धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत-मतान्तरो की वेद विरुद्ध मान्यताओं का पता लगता है, वहा अन्धविश्वासों से छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है। इसलिए आर्य युवक परिषद्, दिल्ली ने गत् ३६ वर्षों की भाति इस वर्ष भी अखिल भारतीय स्तर पर सितम्बर माह के अन्तिम रविवार को सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी चार परीक्षाओ का आयोजन किया है।

इनमें अधिक से अधिक सख्या में परीक्षार्थियो को बैठाने की प्रेरणा देकर नई पीढी को राष्ट्र प्रेमी, धर्मावलम्बी और देश के सुयोग्य नागरिक बनाने का अवसर प्रदान करे। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे –

– ओम प्रकाश, एम०एस०सी०, परीक्षा मन्त्री, एच-६४, अशोक विहार दिल्ली - ५२

मानवता पर एक बर्बर हमला

आतंकवादियो ने न्यूयार्क और वाशिगटन पर जिस तरह दुस्साहसी हमले किए, उससे उनका मानवता विरोधी भयावह अपराधी स्वरूप उजागर हो गया है। अमेरिका में हुए हमलों के पीछे इस्लामी आतकवादियो का हाथ होने के सबूत भी सामने आए हैं। यह बात भी स्पष्ट हो गई है कि इस्लामी आतकवादी विश्वशान्ति के ही नहीं, मानवता के भी बडे शत्रु हैं।

गम्भीर चिन्ता की बात है कि इस्लामी आतकवाद के सबसे बडे सरगना ओसामा बिन लादेन ने कुछ दिन पूर्व अमेरिका को सबक सिखाने की जो धमकी दी थी, उसे पूरा कर दिखाया। यह चिन्ता की बात है कि अमेरिका ने इस्लामी आतकवादियो के इरादो को भापने मे देरी कर दी। यद्यपि अमेरिका इस्लामी आतकवादियो की भर्त्सना करता रहा था, परन्तु उसे इन आतवादियो के विरुद्ध जैसा कठोर व्यवहार करना चाहिए वैसा उसने नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि इन आतकवादियो का दुस्साहस बढता चला गया। इस्लामी आतकवादी तथाकथित जेहाद की आड मे समस्त मानव जाति को इस्लाम के अनुयायी बनाने का जो सपना देख रहे हैं, उसे ध्वस्त करने के लिए अब समय आ गया है सारा विश्व एकजुट होकर उसका मुकाबला करे। इस्लामी आतकवाद के प्रति बरती गई थोडी सी भी ढिलाई मानवता के लिए खतरा बन सकती है।

स्वामी सर्वानन्द संस्कृत महाविद्यालय दयानन्दमठ श्रद्धानन्द नगर पश्चिमी चम्पारण (बिहार)

वर्तमान समय मे पश्चिमी सभ्यता की आधी मे राष्ट्र क अभावग्रस्त, शिक्षाहीन एव बेरोजगार बच्चो को ईसाइयत एव इस्लाम की लहर मे रंगकर ईसाई-मुसलमान बनाया जा रहा है। देश की सस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीयता को बदलकर विदेशी मुखौटा पहनकर राष्ट्र मे ताण्डव नृत्य कर रहीं हैं। ऐसी विषम परिस्थितियो मे गरीबी, अभाव एव शिक्षाहीन प्रदेश पश्चिमी चम्पारण (बिहार) मे प्रकाश की नई ज्योति, **दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)** द्वारा सचालित स्वामी सर्वानन्द सस्कृत महाविद्यालय दयानन्दमठ श्रद्धानन्द नगर पश्चिमी चम्पारण (बिहार) के रूप मे पिछले २ वर्ष से प्रयासरत है। जिसम अनेक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** का सप-साकार कर रहे हैं।

स्थानाभाव, भवनाभाव एव अर्थाभाव के कारण यथोचित काम नहीं हो पा रहा है। अत गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के लिए अध्ययन कक्ष, निवास कक्ष, शौचालय, एव स्नानागार, विशाल यज्ञशाला सत्सग भवन एव अतिथिशाला की नितान्त आवश्यकता है।

उपर्युक्त सभी आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए सहायतार्थ तन, मन एव धन का सहयोग देकर पुण्य के भागी बने।

सहयोग राशि बैंक ड्रॉफ्ट/चैक एव मनीआर्डर द्वारा भेजे।

अपीलकर्ता

सर्वानन्द सरस्वती
प्रधान, वैदिक यति मण्डल
दयानन्दमठ दीनानगर
पजाब,

सहयोग राशि भेजने का पता,
दयानन्दमठ श्रद्धानन्द नगर, (भतुहवा)
पो० डमरापुर, वाया डी० के० शिकारपुर,
जिला, पश्चिमी चम्पारण (बिहार)
पिन – ८४५४५१

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाउस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २४, अक ३७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ८ अक्तूबर से १४ अक्तूबर, २००१ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल कांगड़ी की भूमि बिकने पर कड़ी प्रतिक्रियाएं

त्याग और निःस्वार्थ देश सेवा के सिद्धान्तों को ठेस नहीं लगने देंगे

गुरुकुल कागडी की स्थापना बडे पवित्र और महान उद्देश्य को लेकर की गई थी। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक गुरुकुल स्थापित करने के सकल्प को व्यक्त किया और एक प्रतिज्ञा लेकर उस सकल्प को क्रियान्वित करने निकल पडे तो लोगो के मन मे एक स्वाभाविक सा मनोवैज्ञानिक लक्ष्य बन गया था कि यह सकल्प यदि सफलता पूर्वक क्रियान्वित होता है तो अवश्य ही भारतीय सस्कृति और राष्ट्रवादी भावना भावी पीढी के कर्णधारो मे भरने के लिए एक सुगम और सुलभ मार्ग तैयार हो जाएगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी धर्मप्रेमी जनता की इन इच्छाओ को पूरा करने मे सफल रहे। गुरुकुल कागडी की स्थापना और उसके सफल सचालन से स्वामी जी ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि शिक्षक और आचार्य शुभ सकल्पो से विद्या प्रदान करने का दायित्व निभाये तो सस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रवाद की सुरक्षा असम्भव कार्य नहीं है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आर्यसमाज की कई महान विभूतियो ने इस गुरुकुल की पूण्य भूमि को अपने त्याग तपस्या और सर्वस्व होम के द्वारा भरपूर सीचने का प्रयास किया। इस परम्परा मे आचार्य रामदेव, प० चमूपति, प० बुद्धदेव विद्यालकार, प० यशपाल सिद्धान्तालकार, प० प्रियव्रत वेदवाचस्पति, प० क्षितीश वेदालकार, प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार, प० भीमसेन विद्यालकार, प० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प० गुरुदत्त सिद्धान्तालकार, प० सत्यकेतु जी, प० सत्यदेव भारद्वाज, प० सत्यकाम जी आदि तथा दूसरी तरफ आर्य नेताओ की श्रृखला को बाधते हुए महाशय कृष्ण, लाला रामगोपाल शालवाले, श्री चरणदास पुरी, एडवोकेट राय बहादुर दीवान बद्रीदास, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री वीरेन्द्र जी, प० हरिप्रकाश जी श्री मनोहर विद्यालकार श्री सत्यदेव विद्यालकार, श्री धर्मपाल विद्यालकार आदि ने अपने कुशल नेतृत्व द्वारा इस विशाल वटवृक्ष को एक आत्मीयता भरी बाड के रूप मे सुरक्षा प्रदान की।

परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण कलियुग जिसने आज तक आर्यसमाज को छूने की हिम्मत नही जुटाई थी आज वही कलियुगी प्रवृत्तिया आर्यसमाज मे प्रवेश कर गई, इतना ही नही यह प्रवृत्तिया अब स्वय बाड बनकर खेत को ही खाने लगी। चारे के रूप मे सर्वप्रथम इन्हे गुरुकुल कागडी की १४४ बीघा जमीन नजर आयी, जिसे बेचने का कठोर और बज्रपाती निर्णय करते हुए इन्होने आर्यसमाज के प्रति विगत १२५ वर्षो से उत्पन्न मान्यताओ को हिला कर रख दिया। परन्तु आर्यसमाज के पवित्र नेताओ ने इस सकल्प के साथ अगडाई ली है कि एक एक इच जमीन को गुरुकुल की धरोहर के रूप मे ही वापिस लिया जाएगा।

वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने इस मुद्दे पर बडा कडा रूख अपनाते हुए आर्य नेताओ को प्रेरणा दी है कि इस घोर पाप को सफल न होने दिया जाए।

सार्वदेशिक सभा के डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री भी इस भूमि विक्रय पर कडा रूख अपनाने की माग कर रहे है।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हरवश लाल शर्मा जी भी इस घटना से बहुत विचलित है। और उन्होने सभा के अधिकारियो को अतिम लक्ष्य तक इस सघर्ष को निभाने का आह्वान किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा है कि गुरुकुल कागडी की महान विरासत मे दिल्ली, पजाब और हरियाणा तीनो बराबर के उत्तरदायी है। हालाकि इस भूमि विक्रय मे पजाब और दिल्ली से कोई विचार विमर्श तक नही किया गया। यह कुछ लोगो का मनमानीपूर्ण और गैरकानूनी निर्णय है इसे हम किसी रूप मे भी लागू नही होने देगे और न ही इसमे लिप्त तथाकथित आर्य नेताओ को बख्शा जाएगा।

दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने भी इस घटना को घृणित और महापाप बताते हुए कहा है कि ऐसे कार्यो को कोई भी सभ्य समाज स्वीकार नही कर सकता। श्री रामफल बसल इस मामले मे अपने कई साथियो से विचार विमर्श कर रहे है कि कानूनी प्रक्रिया का क्या रूप होना चाहिए। श्री बसल आजकल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रशासक भी है।

उधर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे एक सघर्ष समिति का गठन समस्त कर्मचारियो, ब्रह्मचारियो तथा शिक्षको के द्वारा किया गया है। लगातार सभाए और प्रदर्शनो के द्वारा इस कार्य की भर्त्सना की जा रही है। इस सघर्ष समिति के जन सम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप जोशी ने एक प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा बताया है कि इस भूमि को बचाने के लिए सभी सम्बन्धित व्यक्ति एक विशाल जन आन्दोलन खडा करने के पक्ष मे है।

शिव सेना के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भी उत्तराचल के मुख्यमन्त्री से इस घटना की जाच कराने की माग की है।

सार्वदेशिक सभा का चुनाव अधिवेशन ३ तथा ४ नवम्बर, २००१ को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव अधिवेशन ३ और ४ नवम्बर, २००१ (शनिवार, रविवार) को प्रातः ११ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल में होगा। स्वीकृत प्रतिनिधियो को बैठक का विवरण और आमन्त्रण पत्र भिजवा दिया गया है। जिन सभाओ की पचमाश राशि अभी तक जमा नहीं हुई है वे नकद, चैक या ड्राफ्ट द्वारा चुनाव तिथि तक सभा मे जमा करवा दे।

— रामफल बसल, चुनाव अधिकारी एव प्रशासक

समाज और राष्ट्रोत्थान के लिए

– सोहनलाल शारदा

सभी आर्यसमाजी जन मेरे शिष्य हैं और उन्हीं पर ही मुझे पूरा भरोसा है।

महर्षि ने यह विचार जोधपुर प्रवास के समय राव राजा जवानसिह जी द्वारा दिए एक सुझाव और विचार के प्रत्युत्तर मे कहे थे। इन राव राजा का सुझाव था कि –

हे भगवान् ! आप कोई सुयोग्य शिष्य बना लीजिए जिससे की श्रीमान का यह वेद एव सुधार का कार्य मध्य मे ही नहीं अटक जाए। वहा महर्षि ने यह भी कहा कि –

"नहीं तो कोई ऐसा सुयोग्य पुरुष ही है कि जिसे मैं शिष्य बनाऊं और न हीं मुझे किसी शिष्य से कोई आशा है।"

(देवेन्द्र बाबू कृत जीवनी पृष्ठ ६०५)

श्री आर्य मुसाफिर प० लेखराम जी कहते हैं कि हम इन्हीं विचारो को हृदयगम रखकर आगे बढे। यह तो ध्रुव सत्य ही है कि जैसे राजाओ के वचनो को समझने के लिए राजाओ जैसा ही मस्तिष्क चाहिए। वैसे ही ऋषियो-महर्षियो के वचनो-विचारो को समझने के लिए भी ऋषियो जैसा ही मस्तिष्क होना चाहिए। इसलिए भी कि राजा और ऋषिवर अयुक्त और अनुमान के विरुद्ध वचन नहीं कहते।

अत पूज्य स्वामी जी महाराज की रचना को पढकर मनन करके जीवन मे कार्यरूप मे परिणित करने से दुष्टात्माओ की दुष्टता इस प्रकार से नष्ट भ्रष्ट हो जाती है जैसे वायु के प्रचण्ड वेग से मेघ। वह जन अभाग ही है जो स्वामीजी महाराज के लिखे, कहे वचनो को जीवन मे धारण नही करता।

यह इसलिए भी कि महर्षि का सर्वसुलभ सर्व साहित्य सर्व वेद वेदाग मय महाभारत पूर्व के सभी ग्रन्थो का सार सक्षेप ही है। अत हम इसे स्वत प्रमाण मानकर कर्त्तव्य कर्म करते ही रहे।

(प० लेखराम बाद कृत उर्दू चरित का आर्यभाषानुवाद नया बास दिल्ली, पृ० ८२१)

महर्षि ने अपने योग बल से वर्तमान की विषम परिस्थिति से भली-भाति परिचित होकर छठे समुल्लास के अन्त मे अपने विचारो को मनुस्मृति के सन्दर्भ में वर्णन किया –

"प्रत्यहम् लौक दृष्टैश्च शास्त्र दृष्टैश्च हेतुभिः।।

(मनुस्मृति अध्याय ८ का ३ श्लोकार्थ)

अर्थात् – जो नियम राजा और प्रजा के लिए सुखकारी और धर्म युक्त समझे उन-उन विषयो को पूर्ण विद्वानो की राजसभा बनाए। परन्तु इस पर भी नित्य अवश्य ध्यान रखे कि जहा तक बन सके वहा तक बाल विवाह न होने दे। जिससे कि शरीर व आत्मा मे पूर्ण बल सदा बना रहे।

शरीर और आत्मा के ये दोनो बल इसलिए भी अत्यावश्यक हैं कि जो केवल आत्मा का बल तो ज्ञान युक्त कर्म करता हुआ बढाता जाए और शारीरिक बल नहीं बढाए तो यह निश्चय ही है कि आत्मा के बल से एक ही बलवान पुरुष एक सौ विद्वान्, ज्ञानियो, पण्डितो को जीत सकता है।

और जो कोई केवल शरीर को ही बढाता जाए और आत्मा का बल नहीं बढाए तो वह भी राज्य पालन की उत्तमोत्तम व्यवस्था नहीं कर सकता। यह व्यवस्था विद्या पढे बिना नहीं आ सकती। विशेष रूप से क्षत्रिय जनो को जो रक्षक समुदाय है, दृढता बल, पराक्रम, अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित ही रहना है। कहा गया है कि –

"यथा राजा तथा प्रजा।"

जैसा राजा शासनाधिकारी होता है उसकी प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। ऐसे ही हम वर्तमान मे समाज व राष्ट्र मे प्रत्यक्ष ही देख रहे है। अत वेदानुकूल ही उन्होने छठे समुल्लास मे उद्बोधन स्वरूप निर्देशन किया कि –

"राजा और राज पुरुषों के लिए यह उचित है कि कभी भी दुष्ट आचरण नहीं करें। और सदा सब दिन धर्म-न्याय से व्यवहार करते हुए सबके सुधार में निरन्तर प्रयास करते रहें।"

अत आगे शासनकर्त्ता की योग्यता बढाने हेतु राज पुरुषो के कर्त्तव्य हेतु निर्देशन करते हैं कि –

"विशेष वेद मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम नवअध्याय और शुक्रनीति, विदुर प्रजागर व महाभारत के शान्ति पर्व में वर्णित राजधर्म व आपद्धर्म आदि पुस्तकों को पढ़कर पूर्ण राजनीति धारणकर माण्डलिक अथवा सर्वभौम चक्रवर्ती राज्य करें।"

इस प्रकार के कार्यक्रम को कार्यरूप मे परिणित करके ही हमे राष्ट्ररक्षा राष्ट्रोन्नति मे समर्थ होना है। यह कार्यक्रम केवल आर्यसमाज ही करने मे समर्थ है। उसके पास ही ऐसा अति महत्वपूर्ण महर्षि का आदेश है जो अन्य किसी भी समुदाय व समूह के पास नहीं है। महर्षि दृढतापूर्वक घोषणा करते हैं कि – **"कोई भी सुधार स्थिर नहीं रह सकता कि जब तक उसका आधार वेदोक्त नहीं हो।"**

कथनी-करनी के भेद को निर्मूल करते हुए उन्होने मे वाडाधिपति महाराणा श्री को व मसूदा तथा शाहपुरे को पढाकर राजनीति मे पारगत किया। इस पर श्री समर्थदान जी जो तत्कालीन वैदिक यन्त्रालय काशी के व्यवस्थापक के लिखते हैं कि –

"यहां मनुस्मृति के सप्तम-अष्टम व नवमाध्याय जो कि राजधर्म विषयक है पढाने पश्चात् योगशास्त्र वैशेषिक तथा न्याय शास्त्र के मुख्य विषय पढा चुके हैं।"

(पत्र विज्ञापन मीमासक जी दूसरा भाग पृष्ठ ७१३)

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने गुरुवर महर्षि विश्वामित्र व योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज ने गुरुवर सदीपन ऐसे ही महर्षि ने श्री विरजानन्द जी महाराज से पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर गगा तट पर दिगम्बर अवस्था से भ्रमण कर अनेकानेक भक्तजनो को शिक्षा दे, शुद्ध सनातन वैदिक धर्म मे दीक्षित किया था। वैसे ही अपने जीवन सन्ध्या मे भी शाहपुरे आदि नरेशो को पढाया कि शासन कैसे करे। यही शिक्षा की थी। हमे भी ऐसी शिक्षा राष्ट्रोत्थान हेतु देश काल अनुसार करनी है।

हमारा उत्तरदायित्व

इसी हेतु हमारा यही कर्त्तव्य है कि हम नई पीढी को आर्य बनाने के लिए प्रथम मे महर्षिकृत सर्व ग्रन्थो से जो सर्व वेदानुकूल ही है, पढाए, सन्ध्या-यज्ञ विधिया। साथ मे जीवन के मुख्याश भी कहते ही रहें। इसी हेतु ही ? वें समुल्लास मे वर्णन किया कि –

"जैसे जगंली मनुष्य भील आदि सृष्टि को देखकर भी विद्वान नहीं हो सकते और जब उन्हें कोई उत्तम शिक्षक मिल जाएं तो वे भी विद्वान् हो जाते हैं। अब भी व आगे भी किसी के पढाए बिना कोई भी कभी भी विद्वान् वैदिक धर्मी नहीं हो सकता।" उन्होने इसी विषय को और आगे बढाते हुए इसी के समर्थन मे निर्देश के साथ कर्त्तव्य कर्म कराने-करने का आह्वान किया कि –

"सृष्टि के आदि में यदि परमात्मा उन प्रथम चार महर्षियों को वेद विद्या नहीं पढाते और वे भी आगे सुयोग्य जनों को नहीं पढ़ाते तो सभी जन अविद्वान ही रह जाते।

– शेष पृष्ठ ४ प

शान्त, निर्भय एवं क्षमाशील संन्यासी !

सोरो का प्रसग है। एक दिन स्वामीजी उपदेश दे रहे थे। बडी सख्या मे जनता दत्तचित्त होकर सुन रही थी कि एकाएक एक हट्टा-कट्टा डण्डपेल पहलवान सा जाट आया। एक मोटा सोटा कन्धे पर रख सभा की भीड चीरता हुआ सीधा स्वामी जी के पास पहुचा। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था। उसकी आखे लाल थी भौए तनी हुई थीं, माथे पर त्योरी पडी थी। होठ चबाता और तनी भौंओ से वह बोला, – **"अरे साधु, तू ठाकुर पूजा का खण्डन करता है और गंगा मैया की निन्दा करता है, देवताओं के विरुद्ध बोलता है। झटपट बता, तेरे किस अंग पर यह सोटा मारकर तेरी समाप्ति करूं ?"**

उसके क्रोधभरे वचन सुनकर सारी सभा विचलित हो गई, परन्तु स्वामीजी की मुख मे तनिक भी परिवर्तन नहीं आया। उन्होने प्रशान्त भाव से मुस्कराते हुए कहा – **"भद्र, यदि तेरे विचार में मेरा धर्म प्रचार कोई अपराध है तो इस अपराध की जड मेरा मस्तिष्क है, यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है। सो, यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है तो मेरे सिर पर सोटा मार, इसी को दण्डित कर।"**

इन वाक्यो के साथ स्वामीजी ने अपने नेत्रो की ज्योति उसकी आखो मे डाली। जैसे बिजल चमक कर शान्त हो जाते है, जैसे धधकता हुआ अगारा जल-धारा के प्रपात से शान्त हो जाता है, वैसे ही तत्काल वह पहलवान ठण्डा हो गया। स्वामीजी के श्रीचरणो मे गिर पडा। आसुओ की धारा बहाने लगा।

स्वामीजी बोले – **"तुमने कोई अपराध नहीं किया, मुझे मारते तो कोई बात थी, अब क्यों रो रहे हो ? जाओ, भगवान तुम्हें सद्बुद्धि दें।"**

सारा दृश्य देखकर जनता के बुजुर्ग बोल उठे – **"सोरों में बहुतेरे साधु-सन्त आए, परन्तु ऐसा शान्त, निर्भय और क्षमाशील साधु कभी कोई नहीं आया होगा।"**

– नरेन्द्र

सब सुखी हों : जाग्रत हों : सन्मार्ग पर चलें।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।
सभी सुखी हों, नीरोग हो, कोई दुःखी न हो, सब कल्याण प्राप्त करे।
अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्।
यजु० ४० १६
प्रभु आप अग्रणी हैं, सन्मार्ग पर प्रवृत्त करे।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
हमे अन्धकार से प्रकाश की ओर प्रवृत्त करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

नई सहस्राब्दी में नई चुनौतियां : समाधान विवेक दृढ़ता से

देश को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए चौवन वर्ष व्यतीत हो गए है, राष्ट्र की प्रमुख सास्कृतिक और धार्मिक संस्था आर्यसमाज की प्रतिष्ठा को भी सेवा सौ वर्ष व्यतीत हो गए हैं, ऐसी स्थिति मे प्रत्येक राष्ट्रवासी को यह आत्म चिन्तन करना चाहिए कि स्वाधीनता के इन वर्षों मे राष्ट्र की क्या उपलब्धिया हैं, ? किन क्षेत्रो मे हमारी प्रगति नहीं हो सकी? हमे यह मूल्याकन भी करना चाहिए कि हमारी प्रगति और समुन्नति मे क्या बाधाए और अवरोध हैं ? साथ ही हमे इन बाधाओ और अवरोधो का उन्मूलन करने के लिए किस तरह के राष्ट्रीय अभियान समय रहते सगठित कर उन्हे मूर्तरूप देना होगा ? यह ठीक है कि कृषि, ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योगो के विभिन्न क्षेत्रो मे हम स्वाबलम्बी हो गए है, कई क्षेत्रो मे देशवासियो ने कीर्तिमान भी रखे हैं। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय राष्ट्र के सर्वांगीण अभ्युदय के लिए स्वधर्म, स्वभाषा और स्वसस्कृति के आधार पर स्वराज्य को सुपुष्ट करते हुए स्वदेश को सगठित और व्यवस्थित करने मे पाचसूत्री कार्यक्रम अपनाने का सत्परामर्श दिया था। जब हम महर्षि द्वारा निर्दिष्ट पाच सूत्रो के क्रियान्वयन की समीक्षा करते है तो उस शताब्दी मे राष्ट्र की स्थिति गम्भीर लगती है। हम भूल नहीं सकते कि जब लम्बे स्वातन्त्र्य सघर्ष के बाद विदेशी शासक भारत छोडने के लिए बाध्य हुए थे, तब वे देश छोडते समय उसे तीन भागो मे बाट कर गए थे। यह उल्लेखनीय है कि वाल्मीकि रामायण के समय भारतवशियो और भारतपुत्रो ने सम्पूर्ण वसुन्धरा-पृथवी पर भारतीय सस्कृति एव श्रीराम की सस्कृति का विस्तार कर लिया था। इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि विस्त्रीर्ण एशियाई, द० पू० एशिया प्रशान्त क्षेत्र ही नहीं सुदूर मे मैक्सिको – अमेरिका भू – अचलो मे भारतीय चिन्तन, सस्कृति तथा श्रीराम, महात्मा बुद्ध आदि भारतीय मनीषियो का जीवन-सन्देश – वहा अपने स्थायी अमर चिन्ह छोड गया था। इसी के साथ यह कटु तथ्य भी स्मरण रखना होगा कि स्वाधीनता के इन वर्षों मे स्वभाषा, स्वधर्म स्वस्कृति के प्रति उतनी प्रतिबद्धता नही रही, जितनी कि होनी चाहिए। फलत हमारा भारत राष्ट्र पूर्ण स्वावलम्बी, सशक्त और अग्रणी नही हो सका है।

आत्म चिन्तन के इन क्षणो मे हम यह सच्चाई भी भूल नही सकते कि सभी प्रयत्नो के बावजूद देश से गरीबी, भूख, रोग, अशिक्षा, भेदभाव, अन्याय और कुरीतियो का उन्मूलन नहीं हुआ है। राष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति के लिए देश से सभी प्रकार के अभाव, कष्ट, विषमता और अन्याय का उन्मूलन होना ही चाहिए। राष्ट्र की व्यवस्थित सर्वांगीण समन्वित प्रगति के लिए देश मे प्रचलित सभी भेदभाव अभाव, कष्ट, अन्याय समाप्त होने ही चाहिए, परन्तु इसी के साथ सर्वाधिक चिन्ता और कष्ट की बात यह है कि कारगिल और दूसरे मोर्चों पर मात खाने के बावजूद हमारा पडोसी पाकिस्तान निरन्तर नए प्रच्छन्न युद्धो की चुनौती देता दीखता है, कभी जम्मू-कश्मीर सीमा-पार से आतकवाद को भडका रहा है। गुप्त तार सन्देश और जासूसी सूत्र सूचना दे रहे है पाक फौज विदेशी आतकवादियो को भारी क्षमता के शास्त्रास्त्रो के प्रयोग और सम्मुख मुठभेड का प्रशिक्षण देती रही है। इस बात के पुष्ट समाचार मिले है कि आतकवादियो की अनियमित फौज, कारगिल, बटालिक, द्रास मुशकोह क्षेत्रो को पारकर कुछ अरक्षित चोटियो पर कब्जा करने का दुस्साहस कर सकती है, जैसा कि पूर्व वर्षों मे अनियमित फौज ने किया था। उस समय पाक फौज और आतकवादियो ने भारतीय सीमा के अन्तर्गत कई किलोमीटर क्षेत्र मुक्त कराने के लिए लगभग ५० दिन का समय और ५०० सैनिको तथा अफसरो की आहुतिया देनी पडी थी। ये सवाद भी मिले थे कि जेहलम से १५ मील पश्चिम मे तिल्ला के मैदान मे वरिष्ठ सैनिक अफसर तोपो की गोलाबारी तथा दूसरे सैनिक दावपेचो का सैनिक प्रशिक्षण इन विदेशी भाडे के आतकवादियो को दे रहे थे। यह भी चिन्ता की बात है कि इन आतकवादी शिविरो मे आतकवादी जमीनी सुरगो ए० के० ४७ राइफिलो तथा छोटे हथियारो का ही पहले प्रशिक्षण दिया जाता था, परन्तु आप इन विदेशी आतकवादियो को तोपो की गोलाबारी से जूझने का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

हमे याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान के फौजी शासक जनरल मुशर्रफ ने साफ कह दिया कि वह अधिकृत कश्मीर नही छोडेगा। उन्होने उसमे आतकवादियो के खुले और अणु अस्त्र के प्रयोग की भी धमकी दी थी। उन्होने यह भी घोषित किया था कि वह कश्मीर के पाक अधिकृत क्षेत्र से ही नहीं, सारे जम्मू-कश्मीर राज्य को विवादग्रस्त मानकर सारे राज्य के वर्तमान और भविष्य के बारे मे भारत से चर्चा करना चाहता है। यह भी चिन्ता की बात है कि १६८८ से पाक खुफिया एजेन्सी आई०एस०आई० जेहाद के लिए प्रतिबद्ध आतकवादियो को स्पेशल ट्ररिस्ट का परिपत्र देकर भारत मे घुसपैठ के लिए भेज रही है। अफगानिस्तान के तालिबानो द्वारा पाक आतकवादियो के मुजाहिदीन शिविर भारत विरोधी आतकवादी शिविर बन गए है। अल बकर मुजाहिदीन के मुजफराबाद स्थित कमाण्डर अमीर बख्त जमीन ने घोषित किया था कि हम दुनिया के किसी भी भाग मे लडने के लिए तैयार हैं जहा भी हमे इस्लामी जेहाद के लिए भेजा जाएगा। उल्लेखनीय है कि इस्लामी जेहाद के सरगना बिल लादेन ने १६६८ से ही कश्मीर मे पाक समर्थित इस्लामी सगठन को खुला समर्थन दिया। नई सहस्राब्दी के ऐतिहासिक वर्ष मे पडोसी पाकिस्तान कारगिल सरीखा मोर्चा फिर से खोले तो इसमे अचम्भा नही होगा। यह भी चिन्ता की बात है कि भारत की आबादी १ अरब से अधिक हो गई है, फलत विश्व के हर छह व्यक्तियो मे १ भरतीय है। इतनी बडी जनसख्या अल्पपोषित भूख, रोग, अभावो से त्रस्त है। नई सहस्राब्दी के साथ भारत के अस्तित्व और भविष्य के लिए अनेक खतरे मण्डरा रहे हैं, उन्हे कोटि-कोटि देशासी स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसकृति और स्वदेश के लिए अपनी पूरी निष्ठा, आस्था और समर्पण से ही जूझकर उनका निवारण कर सकते है।

सही समय पर सही कदम

भारत के गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने पाकिस्तान से मसूद अजहर जैसे दुष्टात्मा आतकवादी को मागकर सही समय पर सही कदम उठाया है। अमेरिका के लिए जो जरूरत लादेन और उसके उग्रवादी सगठन अल कैदा को सजा देने की है, भारत की यही जरूरत मसूद जैसे उग्रवादी नेताओं और लश्कर-ए-तोइबा और जैश ए मोहम्मद जैसे संगठनो को समाप्त करने की है। पाकिस्तान से सचालित, उग्रवादी सगठन बीस सालो से निर्दोष जनता की खून बहा रहे हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि इस विषय मे अभी तक भारत का नेतृत्व जिस तथाकथित धैर्य और सयम का प्रदर्शन करता रहा है, उसे भारत की कमजोरी और लाचारी माना जाने लगा है। पाकिस्तान वह श्वान है, जिसकी पूछ वर्षों वर्षो तक दबी रहने के बावजूद टेढी की टेढी ही है। दरिन्द्रे बन्दूक की भाषा समझते हैं और वहा नेहरू और गाधी की नीतियां नहीं चल पार्ती। अब जबकि अमेरिका अफगानिस्तान के तालिबानो से निपटना चाहता है तब भारत को भी सीमा पार के जेहादी कारखानो को खत्म करने मे अपनी जिम्मेदारी निभाहनी चाहिए।

– दुर्गेश वाजपेयी, नवाबगज, कानपुर

कैसे रुके आतंकवाद ?

अमेरिका पर हुए इस्लामी आतकवादी हमले के बाद उग्रवादियो का हौसला बढ गया है। पाकिस्तान मे इस्लामी कट्टरपन्थी जलूस निकाल रहे हैं। अफगानी जेहाद भी कसमे खा रहे है। जम्मू लद्दाख के प्रान्त अलग होना चाहते हैं जिससे जम्मू के डोगरे और लद्दाखी बौद्ध अपने को विनाश से बचा सके और उग्रवाद की रोकथाम कर सके। भारत सरकार उन प्रदेशो को पृथक् राज्य का दर्जा देकर विनाश से बचा सकती है। जम्मू लद्दाख की जनता भारत मे पूरी तरह मिलकर उग्रवाद का मुकाबला करना चाहती है।

– डॉ० कैलाशचन्द, रोहिणी, दिल्ली

यजुर्वेद से - यत् तत् सप्तकम् (१७) पूर्वार्द्ध

कर्मफल व कार्य-कारण शृंखला

– प० मनोहर विद्यालंकार

(१) शासन-प्रमुख में क्या-क्या गुण आवश्यक है ?

यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः।
स न सिषक्तु यस्तुरः।। यजु ३–२९

मेधातिथि। बृहस्पतिः। गायत्री।

अर्थ – (य) जो बृहस्पति परमात्मा या उसके सदृश, बडी भारी प्रजा के पालन रक्षण मे समर्थ है (रेवान्) धन-धान्य सम्पन्न है, (य) और जो (अमीवहा) रोगो को नष्ट करने का सामर्थ्य रखता है (वसुवित्) निवास योग्य सुविधाओ को देने मे समर्थ है (पुष्टिवर्धन) शरीर मन को पुष्ट करके बढाने मे समर्थ है और (तुर) प्रत्येक समस्या का शीघ्र समाधान करने मे समर्थ है (स) वही व्यक्ति (न) हमे (सिषक्तु) पालन-पूरण तथा सेवा करने के लिए आये आए।

भावार्थ – जो परमात्मा के सदृश, ऐश्वर्यवान् सब के रोगो को नष्ट करने वाला, निवास की सुविधाओ, शरीर मन का पोषण करने मे समर्थ तथा प्रत्येक समस्या का शीघ्र समाधान करने मे समर्थ हो, वही हमारा सिचन या प्रबन्ध करे।

निष्कर्ष – हमे अपना शासक या राजा ऐसे व्यक्तियो को बनाना चाहिए, जो परमात्मा के समान उपर्युक्त गुणो से सम्पन्न हो। अन्यथा राष्ट्र मे सन्तोष और शान्ति तथा उन्नति सम्भव नहीं।

अर्थपोषण – सिषक्ति भजने – भज सेवायाम – आ० १३६। तुर – तुर त्वरणे।

(२) परमेश्वर कृपा और शासन संरक्षण से प्रजापालन सुगम होता है

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः।
स यन्ता शश्वतीरिषः स्वाहा।। यजु ६२८

मधुच्छन्दा। अग्निः। गायत्री।

अर्थ – हे (अग्ने) परमेश्वर सदृश राज प्रमुख। आप (य मर्त्यम्) जिस मनुष्य की (पृत्सु अवा) सग्रामो या सघर्षो मे रक्षा करते हो और (वाजेषु जुना) अन्नादि की प्राप्ति के निमित्त जिसे प्रेरित करते हो (स शश्वती इष यन्ता) वह गृहस्थ अपनी क्रियाशील प्रजा (सन्तति तथा अनुगामियो) को (स्वाहा) शुभ प्रेरणाओ और अपने त्यागपूर्ण व्यवहार द्वारा (नियन्ता) अपने तथा राष्ट्र के नियमो मे नियन्त्रित रखता है।

अर्थपोषण – इष – प्रजा वा इष। शत० १–७३–१४, पृत्सु सग्राम नाम। नि० २–१७

जुना जुगतौ सौत्रो धातु। स्वाहा–सु–आह आ=शुभ प्रेरणा, स्व – हा (त्यागे)–आ शश्वती शश पलुतगतौ। पृत्सु सग्रामनाम, नि० २–१७

निष्कर्ष – जिस व्यक्ति को राज्य का सरक्षण, और ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए प्रोत्साहन मिलता है, वही अपनी सन्तति और अनुगामियो को अपनी प्रेरणा और प्रयत्न से नैतिक तथा राष्ट्र का नियन्त्रित नागरिक बना सकता है।

(३) जो हमारी जासूसी को या जो हमला करे उसे मार डालो या काल कोठरी में डालो

युव तमिन्द्रार्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप सं तमिद्धत वजेण त तमिद्धतम्।
दूरे चत्ताय छन्त्सद्गहन यदिनक्षत्।
अस्माक शत्रून्परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः
भूर्भुव स्व सुप्रजाः प्रजाभि स्याम सुवीरा वीरै सुपोषा पोषै।।

यजु ८–५३

देवा। गृहपतयः। आर्ष अनुष्टुप्, आसुरी उष्णिक्, प्राजपत्याबृहती, प्राजापत्यापंक्तिः।

अर्थ – हे (पुरा युधा इन्द्रापर्वता) आगे बढकर प्रहार करने वाले ऐश्वर्य-वान् राजन् तथा प्रगतिशील सेमापति। (य न पृतन्याद्) हम पर जो सेना द्वारा आक्रमण करे (त इत् वजेण हतम्) उसे अपने शस्त्रास्त्र बल से मार भगाओ, और (यद् गहन इनक्षत्) जो हमारी प्रजा मे घुल-मिलकर हानि पहुचाना चाहे (त चत्ताय दूरे छन्त्सत्) उस शत्रु को आनन्द की कामना करते हुए, (तू दूरे गहन हतम्) बहुत दूर घने निर्जन मे धकेल दो काल कोठरी मे डाल दो।

हे (दर्मा शूर) विदीर्ण करने वाले शूर सेनापति (अस्माक शत्रून् विश्वत परिदर्षीष्ट) हमारे शत्रुओ को विश्व से परे विदीर्ण कर दीजिए-समाप्त कर दीजिए।

हे (भूर्भुव स्व) पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ लोको के स्वामिन। आप ऐसी कृपा करो कि हम (प्रजाभि सु प्रजा वीरै सुवीरा पौषै सुपोषा स्याम) हमारी प्रजाए, हमारे वीर और हमारे पोषण उत्तम उद्भट और उत्कृष्ट हो, जिससे इन दृष्टियो से सर्वत्र हमारी उत्तम ख्याति हो।

अर्थपोषण – इन्द्रापर्वतौ–इन्द्र-इदिपरमैश्वर्ये ऐश्वर्यशाली राजा। पर्वत पर्वगतौ, प्रगतिशील सेमापति। चत्ताय – चदी आह्लादे, छन्त्सत् – छदि कामनार्थ। दर्मा – दर्षीष्ट–ह विदारणे, दृहिसायाम्। इन क्षत् – न क्षतिर्व्याप्ति कर्मा।

निष्कर्ष – ऐश्वर्य सम्पन्न व्यक्ति को राजप्रमुख और प्रगतिशील व्यक्ति को सेनाध्यक्ष बनाकर ही प्रजा सुरक्षित और पुष्ट होकर आपने नागरिको को वीर और सभ्य नागरिक बना सकती है।

(४) शत्रु, द्वेषी, निन्दक और कपटी को समाप्त करना ही नीति है

योऽस्मभ्यमरातीयाद् यश्च नो द्वेषते जनः।
निन्दाद् यो अस्मान् धिप्साच्च सर्वं तं भस्मसा कुरु।।

यजु० ११–८०

ऋषि .– ना भानेदिष्ठः। अध्यापकोपदेशकौ (राजप्रमुखसेनाध्यक्षौ। अनुष्टुप्।

अर्थ – हे राजन् और सेनाध्यक्ष। (य अस्मभ्य अरातीयाद्) जो व्यक्ति हमसे शत्रुता करता है (य चणन न द्वेषते) और जो व्यक्ति हमसे द्वेष करता है (य अस्मान् निन्दाद् धिप्सात् च) और जो हमारी निन्दा करता है, या छल कपट करता है, (त स र्वं भस्मसा कुरु) इन सब को भस्म कर दे।

निष्कर्ष – राजा का कर्त्तव्य है कि प्रजा को किसी भी तरह दुख देने वाले को नष्ट कर दे और प्रजा का कर्त्तव्य है कि वह सब प्रकार के शत्रुओ और दुखो से रक्षा करने वालो को ही अपना प्रमुख शासक तथा सेनापति बनाए।

(४) समाज द्वेषी को स्वय दण्ड न देकर शासन के सपुर्द करना उचित है

य द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषा जम्भे दध्म। यजु १५-१५ से १८

ऋषिः– परमेष्ठी। देवता - वसन्तोग्रीष्मोवर्षा शरद् हेमन्त श्च ऋतुः। निचृद् कृति।

अर्थ – १५ से १८ तक के ५ मन्त्रो का ऋषि परमेष्ठी या परमात्मा है। देवता क्रमश वसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतुए है। प्रत्येक ऋतु या अवस्था के साथ अनुकूलता करने (एडजस्टमेन्ट) की वृत्ति ही कृति – कर्तृत्त्व रूप मे छन्द=साधन बताया गया है।

अर्थ – (य द्विष्म) जिनसे हम सब (सारा समाज) द्वेष करता है (य च न द्वेष्टि) और जो व्यक्ति हमसे (सारे समाज) से द्वेष करता है (त एषा जम्भे दध्म) उस व्यक्ति इन ऋतुओ के मुख मे डालते है।

निष्कर्ष – हम ऋतुओ से अनुकूलता बनाकर कुछ अपने सयम और तप के द्वारा और कुछ उन ऋतुओ की दुखदायी अतियो के प्रतिरोधक साधनो की सहायता से अपनी रक्षा कर ले। किन्तु मे समाज द्वेषी आपने असयम और अपने अनुघमी तथा अकर्मण्य स्वभाव के कारण प्रतिरोधक साधनो को न जुटा पाने के कारण दुखी और पीडित होकर नष्ट हो जाए।

वेद की दृष्टि मे समाज विरोधी तत्वो या आतकवादियो को 'मानव अधिकार' के नाम पर न कोई रियायत मिलनी चाहिए और न कोई सहायता।

(अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२, कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

पृष्ठ २ का शेष भाग

समाज और राष्ट्रोत्थान के लिए

जब तक इस आर्य राष्ट्र में विद्या-शिक्षा बाहर नहीं गई तब तक मिश्र, यूनान, यूरोप आदि देशस्थ जनो को कुछ भी विद्या नहीं हुई थी। तब तक वहां के जन विद्याहीन ही थे। पुनः सुशिक्षा पाने से विद्वान् हो गए।"

महर्षि ने इसी सुशिक्षा वेदज्ञान ने पठन-पाठन हेतु ही स्थान-स्थान पर आर्यसमाज की स्थापना कर वहा दिन मे व रात्रि मे सुविधानुसार प्रथम मे महर्षिकृत ग्रन्थानुसार ही सन्ध्या यज्ञ की शिक्षा करते हुए वेदाग प्रकाश के पठन–पाठन की व्यवस्था निश्चय से करे, तभी इस प्रकार से कर्त्तव्य कर्म करने से ही हम समाज व राष्ट्रोन्नति मे सहायक हो सकेगे।

आद्य जगद्गुरु श्री शकराचार्य जी ने चारो दिशाओ मे चार मठ स्थापित कर अवैदिक मतावलम्बियों से लोहा लेने हेतु पठन पाठन के लिए शिक्षा केन्द्रो की स्थापना कर अवैदिक मतो से शास्त्रार्थकर कर शुद्ध सनातन वैदिक विचारो के प्रचार की व्यवस्था की थी। हमे भी न्यूनातिन्यून पाच जनो को अवश्य ही शिक्षा देकर आर्य बनाना। इसी दृढ निश्चय के साथ।

– शाहपुरा भीलवाडा, राजस्थान

आओ, मिल कर दीया जलाएं : आने वाला कल न भुलाएं

नई शताब्दी की चुनौतियां एवं शिक्षा

अमृताकिरण निकोर

हम नई शताब्दी मे कदम रख चुके है, नई उमगों, नई अपेक्षाओ, नए सपनो के साथ, अटूट विश्वास, अद्भुत उत्साह एव नए सकल्पो के साथ, पिछली सदी की चुनौती थी **'स्वराज'**, जिसे हमने **'करो या मरो'**, **'भारत छोडो'** आन्दोलन से पाया। वह क्रान्ति का समय था, स्वतन्त्रता के पश्चात हमने प्रण किया एक ऐसे राष्ट्र का, जो समर्थ हो, सशक्त हो, जो सद्भावना एव सामाजिक न्याय पर आधारित हो। हमने सकल्प लिया था शिक्षा को घर-घर पहुचाने का, मूल्यो से जोडने का, गरीबी के उन्मूलन का, टक्नौलोजी से जनता को लाभान्वित करने का, नारी को विकास प्रक्रिया मे भागीदारी देने का, आज समय है मूल्याकन का, हमने क्या खोया, क्या पाया, अभी क्या करना है और कैसे, ताकि हम उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर सके।

हमने बहुत कुछ पाया है, हम आजाद हैं, देश की सुरक्षा को चुनौती देने वालो को हमने मुह तोड जवाब दिया है आज हम विश्व मे एक बडी शक्ति के रूप में उभरे हैं,

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
कदम मिलाकर चलना सीखा।

किन्तु हमारे समक्ष अभी भी अनेक चुनौतिया हैं जिनमे से कुछ पर विशेष बल देना जरूरी है – जैसे सामाजिक विषमताए, समाज मे पनप रही हिसा विशेष रूप से नारी पर उग्रवाद की समस्या, तेजी से बढती जनसख्या, बालश्रम, भौतिकवादी प्रवृत्तिया इत्यादि इन सभी समस्याओ का समाधान करना चाहते हुए भी हम सफल नहीं हुए हैं, क्यों ? यह प्रश्न बार-बार हमे परेशान करता है – इस का उत्तर हम ढूढते रहे है, ढूढते रहेगे, देश, काल, और परिस्थितियो के अनुरूप आज की परिस्थिति मे मुझे लगता है कि जब तक हम शिक्षा-अभियान को क्रान्तिकारी आन्दोलन नहीं बना पाते, तब तक हम अपने लक्ष्य नहीं पा सकेगे। हमे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे रणनीति का सहारा लेना जरूरी है –

१. शिक्षा को व्यापक करना,
२. तकनीकी परिवलकों से शिक्षा का सहचार्य,
३. कम्प्यूटर शिक्षा द्वारा विद्यालयों में सूचना सग्रह,
४. सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रसार माध्यमों का प्रयोग।

आज का युग कम्प्यूटर का युग है, इन्टरनेट का युग है टेली-लरनिग का युग है, टेली-कान्फ्रेसस का युग है, यदि हम प्रगति करना चाहते हैं, यदि हम विकास की प्रक्रिया तीव्र करना चाहते है तो हमे हर क्षेत्र मे कम्प्यूटर अपनाना ही है, केवल बडे-बडे शहरो मे नहीं, दूर-दराज के क्षेत्रो मे भी बडे पैमाने पर इसका उपयोग जरूरी है। जैसे कृषि सम्बन्धी जानकारी के लिए लघु उद्योगो सम्बन्धी मार्केटिग, कामर्स, मैडिसन (चिकित्सा), टैकनिकल (प्रौद्योगिकी) सभी विषयो पर कोई भी व्यक्ति इन्टरनेट पर वेबसाइट पर वाछित जानकारी ले सकता है, अत हमारा लक्ष्य गाव-गाव मे कम्प्यूटर की शिक्षा होनी चाहिए। हम इस दिशा मे बढने का प्रयास तो कर रहे है, आज राजस्थान की अशिक्षित महिलाए भी प्रशिक्षण से कम्प्यूटर पर अपनी दुग्ध सहकारिता का हिसाब-किताब कर लेती हैं ऐसा एक उदाहरण है 'नयाला' की महिलाओ का, अमेरिका के राष्ट्रपति जब 'नयाला' गए तो महिलाओ की दक्षता देखकर चकित हो गए – कम्प्यूटर शिक्षा जन साधारण के जीवन को नया रूप दे सकती है, उन्हे नई शक्ति प्रदान कर सकती है, नए विचार दे सकती है, नई राह दिखा सकती है। सामजिक विषमताओ के कम कर सकती है, यदि इस शिक्षा का उचित उपयोग किया जाए।

किन्तु यदि हम देश मे बढती हुई हिंसा को रोकना चाहते हैं, तो शिक्षा को मूल्यो के साथ जोडना जरूरी है, हमारी युवा पीढी तेजी से आगे बढना चाहती है, यदि अभिभावक एव शिक्षक उन्हे अच्छे सस्कार देने से हिचकिचाएगे तो उसका परिणाम दु खद होगा। व्यक्तित्व के निर्माण मे भी से भी बढकर आचार्य की भूमिका है, अत उन्हे इस दिशा मे प्रभावी कदम उठाने होगे।

तीव्रता से बढ रही हमारी जनसख्या एक भयानक चुनौती है, सरकार इस चुनौती से अवगत है चिन्तित भी है, प्रसार मध्यम कई प्रकार के कार्यक्रमो द्वारा जनता को शिक्षित करने का भरसक प्रयास भी कर रही है, इस समस्या का समाधान करने के लिए मीडिया और शिक्षाविदो को मिलकर अति प्रभावी ढग से जन साधारण को समय-समय पर सन्देश देना, नुक्कड सभाए आयोजित करना, लोक गीतो द्वारा, महिला मण्डलो मे गोष्ठियो द्वारा, बातचीत द्वारा, फिल्मो द्वारा जानकारी देने को प्राथमिकता देनी होगी।

महात्मा गाधी ने कहा था – **एक मानव को शिक्षा दो तो एक इकाई की शिक्षा होती है परन्तु एक महिला को शिक्षा दो तो सारा परिवार शिक्षित होता है।** नारी-शिक्षा की उपेक्षा करना तो हमारी बहुत बडी भूल होगी। आज के युग, देश की पचास प्रतिशत जनसख्या प्राय महिलाओ की है, अत उनका शिक्षित होना अत्यावश्यक है, अन्त मे मैं अटल जी की पक्तियो के साथ, पुन ज्ञान का दीप जलाने की उसकी रोशनी को जन साधारण तक पहुचाने की जरूरत का आह्वान करती हू –

आयो मिलकर दीया जलाएं
हम पडाव को समझें मंजिल,
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल
वर्तमान के मोह जाल में,
आने वाला कल न भुलाएं।

संकट में भी अपनी राष्ट्रविरोधी तस्वीर पेश करते कुछ नेता

– भूषण द्विवेदी

मगलवार ११ सितम्बर, २००१ को न्यूयार्क 'वर्ल्ड ट्रेडिग सेन्टर' की दो गगनचुम्बी इमारतो के साथ ही वाशिगटन के अति सुरक्षित पेटागन पर हुए हवाई हमलो से अमेरिका मे रहने वाले अनेक देशो और अनेक धर्मो के हजारो निर्दोष लोगो की निर्मम हत्याओ से विश्व का मानव समाज क्षुब्ध एव आतकित हो गया। एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतकवादियो की यह एक खुली चुनौती थी। विश्व-मानवता पर हुए इस बर्बर हमले के खिलाफ यदि सभ्य समाज ने एकजुट होकर सामयिक तथा सख्त कार्रवाई नहीं की तो फिर दुनिया मे कोई भी सुरक्षित नहीं रहेगा ?

हमारे प्रधानमन्त्री ने इस अन्तराष्ट्रीय आतकवाद के खिलाफ अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश को हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन देकर सभ्य समाज और मानवता की सुरक्षा की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों को मजबूती प्रदान की। जो भारत जैसे आतकवाद से जूझ रहे एक शान्ति प्रिय देश की सुरक्षा के लिए अनिवार्य कदम है।

शत्रु द्वारा थोपे गए कारगिल युद्ध मे भारतीय सेना के हजारो रणबाकुरो का बलिदान हुआ, सैकडो बहू-बेटियों की माग का सिन्दूर छिन गया और न जाने कितन इकलौते देश के नाम पर शहीद हो गए।

जेहाद के नाम पर आज भी सीमापार से आतकवादी घुसपैठकर सेना और पुलिस के जवानो पर आत्मघाती हमले कर रहे हैं। उन्होंने अमरनाथ की यात्रा पर जा रहे तीर्थयात्रियो पर गोलिया बरसाने मे जरा भी सकोच नहीं किया, उन्होने जम्मू रेलवे स्टेशन पर आचानक अन्धाधुन्ध गोलिया बरसाकर निर्दोष यात्रियो, स्त्री बच्चो तथा कुलियों की हत्याए की, उन्होने बसो तथा रेलगाडियो मे बम विस्फोट कर सैकडो निर्दोष लोगो की निर्मम हत्याए की, जगलो मे भेड-बकरिया चराने वाले चरवाहो को भी उन्होने नहीं छोडा और गोलियो से भून डाला, उन्होने विदेशी पर्यटको को बधक बनाकर उन्हे भी मौत के घाट उतार दिया। इतना ही नहीं उन्होंने हिन्दुओं के मन्दिरों के साथ-साथ मुसलमानो की मस्जिदो तथा पवित्र मजारो पर भी हमले कर दहशत फैलाने की कोशिश की।

इन्सानियत और आपसी भाई-चारे को दहशतगर्दी के नापाक इरादों से रौंदने वाले क्रूर हत्यारो तथा भेडियो की तरह खून के प्यासे दरिन्दों के खिलाफ अमेरिका के साथ न केवल फ्रास और ब्रिटेन कमर कसकर खडे हो रहे हैं, बल्कि जापान, भारत तथा अनेक मुस्लिम देशो के साथ-साथ खुद पाकिस्तान भी अब आतकवादियो के खिलाफ आवाज बुलन्द कर रहा है।

आगरा शिखर वार्ता के समय पाक राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ ने जम्मू तथा कश्मीर मे दहशत फैलाने वाले आतकवादिया को 'फ्रीडम फाईटर स्वातन्त्र्य योद्धा कहा था, किन्तु अब वह स्वय इन आतकवादियो के खिलाफ अमेरिकी कार्यवाही का खुला समर्थन कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में दशको से आतकवाद की आग मे झुलस रहे भारत की जनता को आपसी भेद भुलाकर एकजुट होने की महती आवश्यकता है, किन्तु निहित स्वार्थो से जुडे कुछ नेता भारत सरकार के आतकवाद विरोधी फैसले का विरोध करते हुए अपनी राष्ट्र विरोधी तस्वीर पेश करने से भी बाज नहीं आ रहे हैं।

– साऊथ मोती बाग, नई दिल्ली

वर्तमान परिवेश में एक आर्य-चिन्तन

वयस्वी-वेदना

– देवनारायण भारद्वाज

वयस्वी शब्द अब अपरिचित नहीं रहा है। साहित्य जगत मे 'वयस्विता' आदि रूपो मे प्रयोग होता हुआ देखा जाने लगा है। अब से तीन वर्ष पूर्व यह शब्द प्रो० राजकुमार वार्ष्णेय जी ने जब इसे गढा था, तब यह शब्द नया लगता था। वास्तव मे 'वयस्वी' सज्ञा है – उनके लिए जो पुराने हो चुके हैं। 'वृद्ध-वयोवृद्ध शब्दो मे जीवन से चुक जाने की कसक आने लगी है। किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता या वरिष्ठता के बिना 'वरिष्ठ-नागरिक' का सम्बोधन समान रूप से सभी आयुष्मानो के लिए व्यग्य-बोध प्रदर्शित करता प्रतीत होता है। वयस्वी (वयस्+वी) आयु का धनी कौन होना नहीं चाहता ? वह भले ही तेजस्वी हो, वर्चस्वी हो, मनस्वी हो या यशस्वी हो – या इनमे से कुछ भी नहीं – फिर भी वह 'वयस्वी' तो हर दशा मे हो ही सकता है। जब कोई 'वयस्वी' हो जाता है, तो वह अपने से छोटो की दीन-हीन दशा देखकर वेदना अनुभव करते हुए द्रवित होने लगता है। उसका ह्रदय नवनीत से भी कोमल हो जाता है। नवनीत उष्मा पाकर पिघलता है, किन्तु वयस्वी का ह्रदय भावातिरेक मात्र से ही पिघलकर दृगो के मार्ग मे आश्रुओ के रूप मे बहने लगता है।

वेदना या चेतना

एक परिवार के चार भाई सभी एक दूसरे का मान सम्मान व प्यार करने वाले थे। बडे भाई घर पर ही रह गए और छोटो को उन्होने इतना पढाया कि वे सभी वैज्ञानिक बनकर विदेश चले गए – कोई अमेरिका, कोई इग्लैण्ड और कोई आस्ट्रेलिया। किसी बडे पारिवारिक महोत्सव पर वे भारत आए। उनमे से एक अस्थि विशेषज्ञ, दूसरा दैहिक रसानयज्ञ और तीसरा प्राण विद्या का प्राणाचार्य बन चुका था। वे सभी बडे भ्राता के साथ जगल मे घूमने निकले। तीनो छोटे भाई अपनी-अपनी योग्यता पर गर्व करते हुए परस्पर विवाद मे उलझ गए और स्वय को एक-दूसरे से अधिक दक्ष बताने लगे। जगल मे पडे अस्थि पजर को देखकर अस्थि विशेषज्ञ ने कहा – देखो मैं इन अस्थियो को यथाविधि जोडकर, ये जिस पशु की है वही बना देता हू। बडे भाई के मना करने पर भी वह नहीं माना और उसने पशु का ढाचा तैयार कर दिया। रसानयज्ञ ने कहा कि मैं रसायनो का लेप बनाकर इस पर मास चढाए देता हू। बडे भाई ने बहुत मना किया किन्तु वह नहीं माना और अस्थियो पर मास चढाकर उसने पशु का सही रूप बना दिया। छोटे भाई प्राणाचार्य बोले – मैं भी आप लोगों से कम नहीं हू। मैं अभी इस पशु मे प्राण-प्रतिष्ठा कर देता हू। बडे भाई ने चेतावनी दी – ऐसा मत करो। वह एक वृक्ष पर चढ गया और छोटे भाई को पशु मे प्राण डालने से मना करता रहा, पर वह भला क्यो मानने लगा। पशु मे प्राण पडे। भूखा शेर उठ कर खडा हो गया उन तीनो छोटे भाइयो का उसने कलेवा कर डाला। बडा भाई आसू बहाता रह गया।

विज्ञान का व्यामोह

इस विज्ञान के चमत्कारपूर्ण आविष्कार उसी भूखे शेर की भाति मानव को ऊपर से बहुत सुख-सुविधाए देवे प्रतीत होते हैं, किन्तु मानवता को डकारते चले जा रहे हैं। आदिकाल मे जब ऋषि ने अग्नि की खोज की थी, तो उससे ऊर्जा लेने के लिए न कि हाथ जलाने के लिए। 'वि' उपसर्ग बडा सटीक है जब वह ज्ञान से पहले जुड जाता है तो उसमे विशेषता उत्पन्न कर देता है। ज्ञान-कर्म एव समन्वय की उज्जवलता प्रदर्शित करने लगता है और जब समन्वय या सामजस्य नहीं रहता है, तो यही 'वि विपरीत व विद्रूपता बोधक हो जाता है तथा मनुष्य को विमोहित-भ्रमित एव तिमिरग्रस्त कर देता है। हम वयस्वी यह देखते हुए आसू बहाने के अतिरिक्त कुछ कर नहीं पा रहे हैं।

अमृतकुम्भ या विषकुम्भ

इस तीसरी सहस्त्राब्दी के आरम्भ मे प्रयाग में महाकुम्भ लगा। वह जो समुद्र मथन से सृष्टि के आदि में एक अमृतकुम्भ निकला था – उसकी कुछ बूदे पृथ्वी के चार स्थानों पर टपक गई थीं – वहीं पर यह महाकुम्भ जुडता है न। प्रतिदिन पर्व पर करोडों लोगों ने अपनी मुक्ति के लिए तीर्थ-स्नान किया। कुछ आधुनिक श्रवण कुमार भी अपने वयोवृद्ध माता-पिता को कुम्भ स्नान के लिए लाए और उन्हे यही छोडकर चले गए। वे सभी 'वयस्वी' आसू बहाते रह गए। स्वादिष्ट-सुगन्धित मधुर पेय से भरे कलश को विषैला बनाने के लिए क्या हलाहल की कुछ बूदे पर्याप्त नहीं होतीं ? यही हाल इस महाकुम्भ का हुआ। प्रयाग ही क्या सर्वत्र कुम्भ त्रिवेणी के सगम पर ही लगता है। विज्ञान के अन्तर्निहित ज्ञान, कर्म, समन्वय यहा साकार हो जाते हैं। ज्ञान रूपी गगा, कर्म, सयम रूपी यमुना, समन्वय रूपी सरस्वती (वाणी) का जहा उपदेश मिले वहीं तो त्रिवेणी है। जब समन्वय रूपी सरस्वती विलुप्त हो जाए तो ज्ञान व कर्म परस्पर स्वच्छन्द होकर भयकर उत्पाती हो जाते हैं। यह देखकर हम वयस्वी वेदना से भर जाते हैं।

लोकतन्त्र-भूलोक कम्प

सम्पूर्ण भारत एव विश्व के सभी भारतीय २६ जनवरी, २००१ को अपना गणतन्त्र पर्व हर्षोल्लास से मना रहे थे। उसी दिन गुजरात में भीषण भूकम्प आया तो आता ही चला गया। लाखों लोग और अरबो की सम्पदा इससे विनष्ट हुई। पूरा भारत व विश्व सहायता के लिए उमड पडा। यह तो ठीक है, पर हम वयस्वी उस दिन बहुत रोए जब पता चला कि मरे – अधमरे मानव-शरीरो से कुछ लोग आभूषणो को उसी प्रकार से नोच रहे हैं, जिस प्रकार गिद्ध मास को नोचते हैं। वेद ने ठीक ही कहा है **'स्तोता में गोसखा स्यात्** '(ऋग्वेद) – **प्रभु कहते हैं कि मेरी स्तुति करने वाला वहीं हो सकता है जो पहले गो-सखा बने।** गो अनेक हैं – गाय भी और भूमि भी दोनो बहने हैं, एक बहन को हम मारेगे तो दूसरी हमे छोडेगी नहीं। विज्ञान के ज्ञान, कर्म, समन्वय-लोकराज मे विधायिका कार्यपालिका एव न्यायपालिका मे ढल जाते हैं। इस त्रिवेणी की नौका मे कहीं कोई छिद्र हो जाता है तो भ्रष्टाचार की बाढ सभी को ले डूबती है। सर्वत्र हत्या व हाहाकार छा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिको के ही परीक्षणो से पता चलता है कि सगीत की स्वर लहरिया प्रकृति-प्राणी सभी के लिए जीवनदायिनी होती है। उसके उलट मानव-पशु प्राणियो की हत्या के कारण उत्पन्न मौन-मुखर चीखो से प्रकट पीडा जनक तरगो (इ०पी०डब्लू) से पृथ्वी काप उठती है, और भूचाल आ जाता है।

स्मरण पर आक्रमण

विज्ञान के ज्ञान, कर्म-समन्वय भगवान बुद्ध के उपदेशों में क्रमश **'बुद्धं शरण,'** **'धम्म शरणं' एवं 'संघ शरणं'** के रूप मे प्रकट हुए थे। ज्ञानमयी मेधा, धर्ममयी कर्मणा, परस्पर सघ-समन्वय रूपी वाचना को अगीकार करने वालों में से निकलकर कुछ लोग विधर्मी बन गए थे। उन्होंने बुद्ध की दर्शनीय मूर्तियों पर चढाई कर दी। सारा ससार हतप्रभ होकर देखता रह गया और अफगानिस्तान मे धर्मान्धता की मदहोश आधी ने इतिहास की अमूल्य धरोहरो को टुकडे-टुकडे कर दिया। **हिन्दूकुश** की पर्व श्रृखला मे पिछले दो हजार वर्ष से अपलक निहारकर विश्व को शान्ति व सहिष्णुता का सन्देश देने वाले भगवान बुद्ध की अति विशालकाय मूर्तिया राकेट लान्चरों व तोप आदि अस्त्रों से आक्रमण करके धराशायी कर दी गईं। केवल इसलिए न कि वे वयस्वी थीं – परमवयस्वी थीं। उनके नीचे तुम बौने थे भुनगे थे, तुम्हें किसी का वयस्वी होना सहन नहीं। वास्तव में वे पत्थर नहीं टूटे। आक्रमणकारियों ! तुम्हें पता होगा तुम्हारे इस कुकृत्य से न जाने कितने करोडो मानवों के ह्रदय टूट गए होगे। तुमने हम वयस्वी जनों के दिलो को दहला दिया, पिघला दिया और आसूओ मे बहा दिया।

तहलका की प्रहलिका

थी तो वह पहेली ही, किन्तु दर्पण बन गई, देश में लम्बे समय से न्यून-उच्च स्तरों पर व्याप्त भ्रष्टाचार की **'तने त्यक्तेन भुञ्जीथा'** (यजुर्वेद) त्यागपूर्वक भोग की भावना का जब तक प्रचार एव परिपालन नहीं होगा, तब तक इस महामारी का उपचार सम्भव नही।' जहा उपयोग-सदुपयोग के स्थान पर भोग-उपभोग और सम्भोग का ही प्रचार होता हो – वहा पर कोई अनाचार व अत्याचार असम्भव नहीं। यहा तो बडे-बूढों को भी काम वासना व्यूह मे इसलिए फसाया जा रहा है कि जब वे स्वय इसमे लिप्त रहेगे तो भला कौन औरो को टोकेगा ? रोकेगा कौन ? अमेरिका मे वियाग्रा भारत मे इसकी अनुकृति 'महाताकत' के विक्रय से यही सब कुछ तो किया जा रहा है। यह सभी कुछ देखकर 'वयस्वी' वेदना से व्यथित हो उठते हैं। यहा भी विज्ञान के ज्ञान, कर्म, समन्वय के असन्तुलन एव सामजस्यहीन विद्रूपता के दृश्य उपस्थित होते हैं। कहीं कोई बिच्छुओ की लम्बी पक्ति जा रही थी। किसी ने एक बिच्छू से पूछा – **"तुम्हारा नेता कौन है ?"** बिच्छू बोला – **"आप किसी भी बिच्छू की दूम पर अगुली रखकर देख लो, उसी का डक बता देगा कि नेता कौन है।"** अर्थात् यहा पर सभी एक से बढकर एक नेता है।

इसी प्रकार हम किसी भी दिशा, दशा या क्षेत्र मे चले जाए तो हर हल्का तहलके से भरा मिलेगा। हम वयस्वी देखते हैं, सोचते हैं, सो रो उठते हैं। सन्त कबीर भी हमारे साथ अपना स्वर मिला देते हैं –**"सुखिया सब संसार खावे औ सोवे। दुखिया दास कबीर जागे औ रोवे। "एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाए"** के अनुसार चलो। वेद हमे ढाढस बधाते हुए कहा है **'में मन. शिवसंकल्पमस्तु'** (यजुर्वेद) – अर्थात् हर मनुष्य का मन कल्याणकारी विचारों वाला बन जाए। हमारा रुदन रुककर मुस्कान में बदल जाएगा और ससार **सत्यम् शिवम्**, **सुन्दरम** रम्य हो जाएगा – क्योंकि किसी ने ठीक ही कहा है –

"वाहन से गिरता तो थामती धरा।
विचारों से गिरता तो मानव गिरा।"

– **'वरेण्यम्' एम०आई०जी०-४५ पी अवन्तिका कालोनी, (ए०डी०ए०), रामघाट रोड, अलीगढ़-२०२००१**

आर्यसमाज पश्चिम पुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, पश्चिमपुरी मे सप्ताह भर से चलाए जा रहे वार्षिक वेद प्रचार उत्सव के समापन दिवस पर श्रोताओं ने वैदिक विद्वानो के उत्तम विचारों के साथ गुरुकुल बहादुरगढ से आचार्य राजजी सहित ब्रह्मचारिणियो के सुमधुर भजनों एव सस्कृत की गीतिकाओ का आनन्द लिया। उक्त कार्यक्रम बुधवार प्रात ५ बजे, १६ सितम्बर, २००१ प्रभातफेरी के साथ प्रारम्भ हुआ। लोगों मे असीम उत्साह था। दिनाक २० से २२ तक प्रतिदिन प्रात व साय श्रीमती सुदेश आर्य के मनोहर भजन व श्री गणेष वेदालकार के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद शतक यज्ञ व वेद कथा का लाभ जनता ने उठाया।

रविवार को वार्षिक वेद प्रचार उत्सव का समापन धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

प्रसाद व ऋषि लगर की व्यवस्था सर्वश्री ओमप्रकाश भाटिया, उपप्रधान, विश्वनाथ, भगवान दास गोरी व श्री ईश्वरचन्द गुप्ता जी ने बडे सुचारु रूप से किया।

मादीपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री भोलाराम गगवाल ने नेताओ पर कडा प्रहार करते हुए कहा कि वर्तमान चाटुकार नेताओं ने राष्ट्रहित की चिन्ता करनी छोड दी है। जबकि सन्यासी होते हुए भी भारत के स्वाधीनता सग्राम मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वाधीन भारत का प्रथम उद्घोष करते हुए अनेक लोगो को क्राति की प्रेरणा दी। इस मौके पर विख्यात वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि धर्मस्थल हमे आस्तिक बनने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय चितन में आर्यसमाज द्वारा प्राणीमात्र के उपकार करने की भावना को सर्वोपरि बताया गया है। इस मौके पर धर्ममुनि दुग्धारी, वैदिक विद्वान गणेश विद्याशकर, स्वामी शिवमुनि, वेदप्रचार मडल पश्चिम दिल्ली के महामन्त्री आजाद सिंह आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अन्त मे हमारे युवा मन्त्री श्री राजीव भटनागर द्वारा दानदाताओ व वक्ताओं के धन्यवाद व प्रधान श्री लाजपत राय आर्य द्वारा सभी अधिकारियो व अतरग सदस्यो के धन्यवाद, शान्तिपाठ व ऋषि लगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्यसमाज में नये ढंग से श्राद्ध समारोह

पितृ का अर्थ होता है, हमारी रक्षा करने वाले। हमारी रक्षा तो जीवित माता-पिता तथा अन्य वृद्ध जन ही कर सकते हैं। परन्तु जो दिवगत हो गए, वे भला हमारी रक्षा कैसे कर सकते हैं। अत उन्हे पितृ नहीं कहा जा सकता। श्राद्ध केवल जीवित माता-पिता या अन्य वृद्ध लोगो का करना चाहिए। वास्तव मे जीवित माता-पिता की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है।

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर, गोविन्द नगर के सभागार में पितृपक्ष पर आयोजित "श्राद्ध समारोह" की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। उन्होने आर्यसमाज मे ऐसे वृद्ध एव वृद्धाओ को आमन्त्रित करके अन्न, वस्त्र तथा नकद देकर सम्मानित किया जो अपनी सन्तानो द्वारा उपेक्षित तथा बेसहारा थे। इस प्रकार श्री आर्य ने नए तथा सही तरीके से श्राद्ध मनाने की परम्परा प्रारम्भ की।

श्री आर्य ने आगे कहा कि यह कितने खेद की बात है कि एक मा अकेले चार बच्चो को परिश्रम एव कष्ट उठाकर पाल लेती है, परन्तु चार बच्चो बडे होकर मिलकर भी अपने मा-बाप की ठीक से देखरेख नहीं करते। हेल्प-ऐज इण्डिया, वानप्रस्थ आश्रम, वृद्ध आश्रम आदि वृद्धो की उपेक्षा की ही कहानी कह रहे हैं। जीवित अवस्था मे मां-बाप को बेसहारा छोड देना और मरने के बाद धूमधाम से श्राद्ध करना भला कौन अच्छा कार्य कहेगा।

समारोह की अध्यक्षता प्रधान श्री देवीदास आर्य ने तथा सचालन श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्वश्री देवीदास आर्य, विनोद चन्द्र श्रीवास्तव, पडित सत्यकेतु शास्त्री, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोगा आदि ने विचार व्यक्त किए।

अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमला पाक वायु क्षेत्र का प्रयोग : काबुल, कन्धार और जलालाबाद पर क्रूज मिसाईलों से हमला

न्यूयार्क और वाशिगटन पर ११ सितम्बर को हुए आतकी हमलों के चार सप्ताह के बाद अमेरिका और ब्रिटेन ने ७ अक्तूबर की रात को अफगानिस्तान में तालिबान के सैन्य प्रतिष्ठानो और ओसामा बिन लादेन के आतकी प्रशिक्षण शिविरो पर हमला कर दिया। हमले के लिए पाक वायुक्षेत्र का भी प्रयोग किया गया।

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने घोषित किया कि वह आतकवाद के खिलाफ लडाई धीरज से लडेगे।

घर-घर में यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज की विचार धाराओ से प्रभावित नवयुवको ने उत्तर प्रदेश के एटा जिले के हिम्मतपुर काकामई गाव मे दो वर्ष पूर्व एक सस्था "आर्य युवा जागृति परिषद्' का गठन कर युवाओ मे बढती बुराइयों को दूर करने का बीडा उठाया है। इस के नवयुवक बीडी-सिगरेट, शराब, गुटखा, मास व जुआ द्वारा होने वाली हानियो की ओर लोगों ध्यान आकृष्ट करते हैं तथा प्रत्येक अमावस्या व पूर्णिमा को गाव के किसी एक परिवार मे सामूहिक यज्ञ करते हैं जिससे लोगो मे आर्यसमाज क प्रति श्रद्धा पैदा हो रही है तथा नई पीढी को एक सही दिशा प्राप्त हो रही है। इस पुनीत कार्य को आगे बढाने मे श्री प्रदीप एडवोकेट, श्री मनोज आर्य, श्री जगवीर सिह प्रधानाचार्य, श्री राम गोपाल, श्री माया प्रकाश व श्री जय प्रकाश शास्त्री का भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

पाकिस्तान आतंकी नेता मसूद को सौंपे

केन्द्रीय गृहमन्त्री लालकृष्ण आडवाणी ने ४ अगस्त के दिन पाकिस्तान से आतकी गुट जैश ऐ मोहम्मद के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर को भारत को सौंपने के लिए कहा जिससे उसके विरुद्ध कार्रवाई को जा सके। जम्मू कश्मीर के विधान भवन पर हुए आतकी हमलो के लिए जैश ए मोहम्मद को जिम्मेदार कहा जा रहा है और इस सगठन के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर हैं।

आर्यसमाज गन्नौर शहर का ४४वां यज्ञ महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) का ४४ वा यज्ञ महोत्सव ५ से ७ अक्तूबर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सच्चिदानन्द, डॉ० राजकुमार वैज्ञानिक, पेहवा के सोम वेदालकार ने वेदोपदेश दिए। इस अवसर पर दिल्ली के शामवीर राघव, चण्डीगढ के श्री उपेन्द्र, मा० खेमचन्द कमल, श्रीमती सन्तोष सैनी, राजपुरा की श्रीमती सुमन चावला और यमुनानगर की श्रीमती कुसुम अग्रवाल के भजनोपदेश आयोजित किए गए थे।

सत्संग, स्वाध्याय, सदकार्यो से ही - आत्मोन्नति

भौतिक वस्तुओ के प्रति आकर्षण व अज्ञानता के वशीभूत ही मानव भटक रहा है। सासारिक पदार्थों के प्रति आसक्ति ही जीवात्मा को जन्म मरण के बन्धन मे डालता है। ये अध्यात्मिक विचार आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज ने उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की गीता कथा की प्रवचन श्रृखला समापन पर डेरावाल नगर के सत्सग समारोह मे कहे।

आचार्य श्री ने आगे कहा – सासारिक कार्यों के साथ परोपकार, सत्सग, श्रवण, योग साधना व सभी महापुरुषो के श्रेष्ठ विचारो को जीवन मे अपनाकर ही मानव जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

मण्डल के अध्यक्ष महाशय राम विलास खुराना ने "गीता प्रवचन" की साप्ताहिक श्रृखला की सफलता के लिए क्षेत्र की सस्थाओं व सहयोगियो का आभार व्यक्त किया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मुम्बई

प्रधान – श्री झाऊलाल शर्मा
मन्त्री – श्री राजेन्द्र नाथ पाण्डेय
कोषाध्यक्ष – श्री विजयकुमार गौतम

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर (राज०)

प्रधान – श्री जितेन्द्र पाल शर्मा
मन्त्री – डॅा अमृतलाल तापड़िया
कोषाध्यक्ष – श्री पन्नालाल अरोड़ा

उपदेशक प्रशिक्षण प्राप्त करें

मॉरिशस के आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित के द्वारा शीघ्र उद्घाटित होने वाला अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसन्धान केन्द्र, कर्जत (महाराष्ट्र) की शाखा समर्पण शोध सस्थान, साहिबाबाद की ओर से सस्थान मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय प्रारम्भ किया जा रहा है।

इसमे भारत एव विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए गुरुकुलो एवम् अन्य आर्य सस्थाओ से शास्त्री और आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण स्नातक से आवेदन पत्र भेज सकते है। इच्छुक प्रार्थी आवेदन पत्र के साथ अपने प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजे –

समर्पण शोध संस्थान
४/४२ सेक्टर ५, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, (उ०प्र०)

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

८ ▶ साप्ताहिक आर्य सन्देश ◀ १४ अक्तूबर, २०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 11-12/10/2001 दिनांक ८ अक्तूबर से १४ अक्तूबर, २००१ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/20
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2001, 11-12/10/2001 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००१

प्रतिष्ठा में

जनहित कार्यों से सगंठन शक्ति बढ़ती है

रविवार ३० सितम्बर, २००१ को आर्यसमाज, सी ब्लॉक जनक पुरी, मे मुफ्त जाच शिविर ओर दिल के दौरे विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। रक्त चाप, रक्त शुगर एव ई०सी०जी० की नि शुल्क जाच की गई और इस मे २३० नर नारियो ने लाभ उठाया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमान रजन ढींगरा, एक प्रमुख रोटेरियन और जो इन्जीनियरिंग के व्यवसाय मे सलग्न है के कर कमलो द्वारा किया गया। श्री ढीगरा ने इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशसा की और अपने विचार प्रगट करते हुए रोटेरी आन्दोलन का उल्लेख किया जिस का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र की सेवा और समाज मे ऊचे मूल्यो का अनुसरण एव स्थापना करना है। श्री महाजन जी की जनकपुरी के लिए एम्बूलैस की आवश्यकता के सन्दर्भ मे श्री ढीगरा ने आश्वासन दिया कि वह इस दिशा मे रोटेरियनज की ओर से भरपूर प्रयास करेगे।

विचार गोष्ठी का सचालन डॉ कमल परवाल, एम०एस० द्वारा किया गया और इस मे डॉ० अनिल लाल डॉ० शैलेन्द्र गौड एव आहार विशेषज्ञ श्रीमति रशिम आहुजा ने भाग लिया। डॉ० उपासना भ विशेष योगदान दिया। गोष्ठी मे हृदय विका. बारे मे अनेक प्रश्न किए गए और मान्य डाक्टरो ने सब का समाधान किया। अन्तिम निष्कर्ष यह निकला कि एक नियन्त्रित दिनचर्या, शारीरिक व्यायाम एव यौगिक क्रियाओ द्वारा इस जटिल समस्या से बचा जा सकता है। यहा पर यह उल्लेख करना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह आयोजन डॉ० चन्द्र मोहन जी भगत के प्रयास से सम्भव हुआ।

इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन ने अपनी समाज की गतिविधियो का उल्लेख किया, उन्होने उडीसा तूफान के मध्य वहा ज ा क ... सहा प्रदान की और गुजरात के भूकम्प मे यहा से एकत्रित करके दो लाख रुपये की राशि प्रेषित जिससे वहा छ मकान भी निरमित किए जा रहे

श्री महाजन जी के विशेष आमन्त्रण पर कै देवरत्न, उप प्रधान सार्वदेशिक सभा मुम्बई पधारे और उन्होने अपने उदबोधन मे आर्यसमाज छटे नियम का उल्लेख किया, आर्यसमाज का उद्देश्य ससार का उप करना है और इस प्रकार का आयो जन साधारण के हित के लिए एक कार्य है और इस शिविर मे भाग लेने की सख्या देखते हुए इस की प्रशसा

अन्तत मुस्कान–भगत हॉस्पीटल डी० जनकपुरी और सभी डाक्टरो एव टैक्नीशि का स्वागत और धन्यवाद द्वारा इस आ का समापन हुआ।

इस समारोह के आयोजन मे रामजीदास छोकरा, ब्रह्मदत्त एव रमेश का विशेष सहयोग रहा।

(१) चिकित्सा शिविर के उद्घाटन समारोह में कैप्टन देवरत्न का स्वागत करते हुए श्री सोमदत्त महाजन।
(२) आर्यसमाज सी-३ ब्लाक जनकपुरी मे चिकित्सा शिविर का उद्घाटन समारोह।

मानव कल्याण केन्द्र में प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

मानव कल्याण केन्द्र वैदिक आश्रम द्रोणस्थल आर्ष कन्या गुरुकु ३५ ए किशनपुर कैनाल पथ राजपुर रोड, देहरादून द्वारा २ अक्तूबर से ११ नवम्बर, २००१ तक नि शुल्क स्वास्थ्य परीक्षा की व्यवस्था होगी। यहा योग, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, होमियोपैथी एव चुम्बकीय पद्धति से स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी एव रोगो का समुचित उपचार की व्यवस्था होगी।

सीमा पर आतंकवादियों की बर्बरता

पिछले दिनो मध्ययुग की धार्मिक बर्बरता देखने को मिली, जब जम्मू मे आतकवादियो ने २ हिन्दू पुरोहितो के सिर काट दिए। पूछ के सीमावर्ती कस्बे मे इन दोनों पण्डितों को मन्दिर से घसीटा गया और उनके सिर काट कर उन्हे सडक पर फेंक दिया गया। यह जेहाद का तालिबान सस्करण था जो पूरी तरह जघन्य, कपा देने वाला उत्तेजनात्मक नमूना था। मन्दिर और मृत व्यक्तियो की स्पष्ट पहचान के बाद जिहादियो द्वारा की हत्याओ से उनका लक्ष्य उजागार हो रहा था।

गुरुकुल है जहां, स्वास्थ्य है वहां

गुरुकुल केसरयुक्त च्यवनप्राश
बालक, बूढ़े, जवान सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर पौष्टिक रसायन

बच्चों, किशोरों एवं नवयुवकों के लिए
ब्रेन टानिक गुरुकुल शंखपुष्पी सीरप

गुरुकुल पायोकिल
दांतों में खून आने से रोके, मुह की दुर्गन्ध दूर करे मसूढ़ों के रोग एवं ढीले दांत ठीक करे

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
मादकता रहित उत्तम पेय, खांसी, जुकाम, प्रतिशाय (इन्फ्लुएंजा) तथा थकाने आदि में अत्यन्त उपयोगी

मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभ प्र

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर: गुरुकुल कांगड़ी-249404 जिला - हरिद्वार (उ प्र
फोन- 0133-416073 फैक्स-0133-416366

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक, विमल वधावन एडवोकेट,

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस, आर्य अनाथालय के पास, दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रका

of countries the United States imports normally more than she exports to them, so that they have dollar surpluses; in addition to British Malaya these countries in 1936–8 included the Dutch East Indies, China, Brazil and Cuba. As will appear later, the different trading relations of all these countries to one another and to the United States are of great importance in considering measures to deal with depressions; here they are given simply as illustrations of the nature of multilateral trade

313 It is obvious that a multilateral system has great advantages. Bilateralism is akin to barter, with some of the limitations of that primitive system; it is workable but clumsy. Multilateral trade is trade with convertible money, a common medium of exchange All currencies are freely exchangeable into all others, which means in effect, that there is a common denominator for all currencies, whether that denominator receives a special name or not Gold used to play the part of international currency in the past, and it was the common purpose of the "Proposals for an International Clearing Union," published as a Treasury Memorandum by the British Government in April, 1943 (Cmd 6437), and of the "United States Proposal for a United and Associated Nations Stabilization Fund," published by the United States Government at about the same time, to recreate an international trade and exchange system with an international currency, called in one case "bancor" and in the other case "unitas " A third plan was shortly afterwards put forward by the Canadian Government. These separate memoranda have now been followed (in April, 1944) by a proposal representing "the consensus of opinions of the experts of the United and Associated Nations," entitled "Joint Statement by Experts on the Establishment of an International Monetary Fund."[1] All these proposals aim at providing the machinery for multilateral trade without discrimination,[2] that is to say without one country treating the export offers of any other country differently from those of the rest of the world.

314 It is unnecessary here to make a detailed or technical examination of these proposals. Their basic design is this: every country is to be given a certain quota of international purchasing power which it can use, in addition to the gold already in its possession, to make payments abroad whenever its total income from abroad (from visible and invisible exports and from borrowing) fails to cover its total expenditure abroad (on imports, visible or invisible, or—with certain safeguards—on loans given to foreigners) There is no doubt that, by furnishing all countries with a reserve of inter-

[1] Cmd 6519

[2] See Explanation of Terms in Appendix D

national purchasing power, it would be possible to start international trade after the war on a free multilateral basis; the larger the reserves, the greater is the freedom of action of each nation and the initial impetus given to world trade The question to ask about all of these proposals is whether the initial impetus given by them to multilateral trade would renew itself, so that the system lasted Would the engine keep running after it had been started? The answer to the question is that the continuance of multilateral trade depends, not on the scale or form of the initial reserves or on the technical details of international clearing and currency, but on suitable economic policies being adopted by all the countries taking part in multilateral trade What constitutes a suitable economic policy?

315 A suitable economic policy obviously cannot mean that all nations must have the same domestic economic structure. Trade must be made possible between countries, some of which are socialist while others are capitalist; some of which are democratic while others are authoritarian; some of which favour free trade or low tariffs while others are highly protectionist. A suitable economic policy can only mean a policy which is free from sudden and unpredictable changes; a policy which does not put undue strains and stresses upon the rest of the world; in short, an economic good neighbour policy General multilateral trading, as practised under the Gold Standard and as envisaged in the expert proposals for establishment of what is for practical purposes an international currency, is possible only if three conditions, or assumptions, are fulfilled first, each of the participating nations must aim at full employment within its borders and must do so without relying on export surpluses as the principal means to full employment. Second, each of the participating nations must be prepared to balance its accounts with the rest of the world; for that purpose any nation which, for any reason, systematically sells abroad in goods or services more than it buys from abroad, and so has an export surplus, must be prepared to grant long-term loans sufficient to enable the rest of the world to pay for those exports, without losing gold or other reserves essential for international liquidity.[1] Third, each of the participating nations must aim at a certain stability of economic behaviour—continuity in tariff, subsidy, foreign exchange and other economic policies—and must refrain from introducing important changes in these policies without prior consultation with the other participants These are the three conditions of multilateral trade; they will be considered in turn

[1] See Explanation of Terms in Appendix D.

THE FIRST CONDITION: FULL EMPLOYMENT AT HOME

316. The first condition, that all participating countries pursue a full employment policy at home, is suggested by the general consideration set out in paragraph 301, namely that international trade has a different significance for a country with full employment, and for a country suffering from unemployment through a deficiency of demand at home. Only when nations can look upon international trade as a means of mutual advantage, and not as a means of exporting unemployment, is their co-operation likely to be fruitful and stable, and free from fear. But the need for this first condition does not rest on general considerations. It rests upon analysis of how a system of uncontrolled multilateral trade reacts to acute depression in one of the participating countries. This analysis can be presented most simply, not in general terms, but by reference to recent history, that is to say to the events of the decade before the war and what happened to multilateral trade in the Great Depression which began in 1929. These events are recorded from the standpoint of the United States of America in a remarkable State paper recently published by the Government of the United States [1]

317. The depression which began in the United States with the Stock Market collapse of September, 1929, in three years reduced American industrial production at home to little more than half of its 1929 level In relation to the rest of the world its effect was to cause American imports to contract sharply and American lending abroad to cease. While the combined effect of America's buying of goods from abroad and of American investors lending abroad in 1929 had been that the rest of the world received 7,400 million dollars wherewith to make payments for American exports and on their debts to the United States, the combined effect of depression on these activities was that the supply of dollars to the rest of the world shrank to 2,400 millions In 1932, as in 1929, $900 millions were required to meet fixed debt-service payments to the United States, so that the supply of dollars available for purchasing American exports in fact declined from $6,500 millions to $1,500 millions, i.e. by 77 per cent The authors of the United States Department of Commerce study, from which these figures are taken, make the following comment

[1] *The United States in the World Economy*, published by the Department of Commerce in 1943, with a Foreword by Wayne C Taylor (Under Secretary of the Department) This paper has been reprinted in Britain by H M Stationery Office

"Curtailment in the supply of dollars resulting from our reduced imports and cessation of investment activity presented a readjustment problem of unparalleled dimensions . .

"The abrupt fall in the dollar supply by some $5,000,000,000 . . . over the short space of three years necessitated vast changes in the foreign use of dollars and in the economic systems from which the demand arose . .

"Although several of the primary producing countries including Australia and Argentina, quickly abandoned the [gold] standard, it was given up only reluctantly and under the inexorable pressure of events by most nations The initial endeavour to defend their exchange parities and reserve positions let the task of re-adjustment in their external demand fall full force on their internal economic life, thus strengthening the forces of depression and deflation throughout the world generally

"One can only speculate as to how much deflation other countries would have had to enforce and endure—if the adjustment had been carried all the way through in this manner The degree of deflation that would have been required was possibly even greater than that experienced by the United States and certainly far more severe than that which actually occurred abroad .

"Other countries could halt the drop in their economic activity and institute measures for domestic expansion only by freeing themselves from external deflationary pressure "[1]

318 This argument does not mean that the rest of the world would have had no depression, if there had been no United States. Cyclical fluctuation is older than the emergence of the United States to economic importance What would have happened without the United States is free for guessing. What actually happened is clear The immensely powerful economic system of the United States generated its own unparalleled depression; the supply of dollars to the world economy came almost to an end; world-wide devastation followed, in the words of the United States Department of Commerce, vast changes in the economic systems of nearly all countries in the world were necessitated by what had happened in North America. Whether or not the other countries would have had a depression on their account, they could not escape plunging into depression with the United States It is important to realize just why, under the multilateral system of that day, the other countries had to follow this lead.

319 A sum of $5,000 millions, though large in itself, is small in

[1] *Op cit*, pp 5 and 6

comparison to the total outlay and income of the world in 1929. United States imports in that year were only 12 per cent of world imports and world imports account only for a few per cent in the total income of the world. Why should such great results be attributed to the cutting out of $5,000 millions from the world economy? The answer to this question is of great significance for the future, because only by understanding the process by which depression travels from one country to all the others, is it possible to learn what must be done to prevent such a spreading of destruction.

320. It is obvious that a reduction in the supply of dollars by 77 per cent was bound to cause a reduction in foreign purchases of American goods Actually, the reduction in the value of American exports between 1929 and 1932 amounted to a little less—70 per cent as against 77 per cent—which is largely explained by the fact that many of America's debtors defaulted on their interest and dividend obligations and used the available dollars partly for buying American goods instead Thus American exports fell by 70 per cent—by almost exactly the same percentage as American imports. The rest of the world did not curtail its purchases from the United States of its own free choice; it curtailed them because there were no dollars to pay for them. But why did the whole of world trade slump by a similar percentage? It is clear that a reduction in the supply of dollars abroad must entail a reduction in American exports; but why should a reduction in the supply of dollars entail a slump in the trade which the countries of the rest of the world carry on with one another? Why was it that 70 per cent reduction in the value of American trade brought with it a 64 per cent[1] reduction in the value of all international trade—seeing that American trade accounts for less than one-eighth of all such trade? The answer is found by studying the mechanism of any multilateral trading system. If all currencies are freely exchangeable into all other currencies, a shortage of dollars does not immediately become visible as a shortage of dollars. It becomes visible as a general shortage of foreign exchange, or under the Gold Standard, as a loss of gold reserves. Thus, under a non-discriminatory system, the other countries do not react to a shortage of dollars by curtailing their purchases from the United States; they react by curtailing their purchases generally, from all countries alike. The reduction of purchases from the United States is achieved only incidentally by the general reduction of all purchases The effect

[1] This is the figure for 1934. There was a certain time lag between the reduction in the supply of dollars and the shrinkage of world trade The figure for 1932 is 60 9 per cent.

of a shortage of United States dollars upon the Argentine may be that the Argentine cuts its imports by 10 per cent all round, but nine-tenths of the goods thus excluded from the Argentine market may come from other countries whose currency is not in short supply These other countries, in consequence, suffer an unnecessary and purposeless reduction in their exports and are forced into a similar general curtailment of their purchases from abroad. Never has a system been devised by which a small cause can have such disproportionately large effects.

321. That is how a free multilateral trading system without discrimination may work when one of the principal partners in the system falls into a major depression It sets up a vicious spiral of contraction. Can nothing be done to stop this process? Two possible remedies call for examination

322. The first of these possible remedies is discrimination by selective control of imports If when one major country, in this case the United States, falls into a depression, all the other countries in the world, in place of continuing to treat trade with that country on exactly the same lines as trade with other countries, discriminate and cut down purchases from the depressed country in accord with the supply of that country's currency, while continuing to trade with one another as before, it is in theory possible to isolate the depression. In defence of such a policy of discrimination, it can be urged that though it may appear an unfriendly act to the country in depression, it cannot, in reality, make the final condition of that country worse. In the depression of the thirties purchases by the rest of the world from the United States were bound ultimately to be reduced to the level allowed by the number of dollars supplied The question was merely whether this reduction of purchases should be brought about directly and consciously by discrimination, so that it remained confined to the world's trade with the United States or whether it should be brought about indirectly and incidentally by a general reduction of trade between all countries. When a major country falls into depression, if all the other countries act together at once to cut down their purchases from it, they can isolate the depression and make their own position better, without making the ultimate position of the depressed country worse; partial abandonment of multilateral trade may enable multilateral trade among all the other countries to continue.

323 But the limitations on this method of dealing with major depressions are such as to make recourse to it a theoretical rather than a practical possibility. First, it deals only with the spread of

the depression and not with its immediate effects Countries which normally export largely to the United States and normally have a dollar surplus are hit at once by a depression there British Malaya and the Dutch East Indies lose their main markets for rubber and cannot be saved from that by any discrimination against American exports Second, drastic instantaneous curtailment of imports from the United States is not a practical policy for a type of country such as Britain, which normally obtains from the United States not luxuries but essentials Most of Britain's imports from the United States, as elsewhere, are things essential for her industry; no doubt, given time, many or most of them could be obtained from other sources, but an instantaneous change over to other sources on the scale involved is not a practical possibility Third, the practicability of discrimination against a depressed country as a means of isolating the depression depends on common action being taken by the rest of the world as a whole If, as appears to be contemplated in the joint proposals for an International Monetary Fund, the rationing of a currency which becomes scarce, say dollars, affects solely the countries which have to apply to the Fund for dollars because they use more dollars than they earn directly, the whole of the scarcity is concentrated on them and in a severe scarcity any rationing becomes a mockery. It is like rationing meat to the townsman while leaving the countryman to eat as much as he likes, even though there is much less meat than before in total. In view of the number of different countries and the variety of their trading relations, it is unimaginable that they would in fact act together with the requisite speed and unison when depression hits one of the major countries. Discrimination, that is to say, selective control of imports, may be useful and necessary for adjusting minor discrepancies in the balance of payments between particular countries As a means of isolating major depressions it is a theoretical possibility, rather than a measure on which practical reliance can be placed

324 The second measure that may be suggested for mitigating the international consequences of depression is international lending. When, through a depression and contraction of imports, a country ceases to supply its currency to other countries for purchases from it, it can still maintain the supply of its currency by increasing its lending abroad This gets over the difficulty of other countries not being able to buy from the depressed country things which they must have; they buy on credit, since their exports are no longer wanted by the depressed country. But lending does not get over the difficulty of diminished demand from the depressed country, causing

unemployment among those who have lived by making exports to meet the demand that has vanished Increased lending of dollars by the United States, when in depression, obviously would do nothing directly for British Malaya which always has more dollars than are necessary for her It would do something for countries like Britain, but would meet only part of the trouble. Borrowing of dollars which she could no longer earn by exports would enable Britain to get her essential imports of raw materials. It would not make good her loss of export markets It is true theoretically that, by suitable financial measures, a country which loses employment in working for overseas demand can expand home demand in compensation. But this will not prevent unemployment, unless the new demand is such that the men displaced from exports can turn over to it. No country can change the whole direction of its industry over night. International lending, as will appear in a moment, has its place—a very important place—in a system of multilateral trade. But international lending is relevant to the second rather than to the first condition of multilateral trade. No country can hope to escape unemployment, if another country with which it has developed a large trade falls into major depression.

325. The problem is essentially a quantitative one In a minor depression or a depression affecting a small country, discrimination supported by international lending may solve the problem of international trade, may localize the depression, and enable a multilateral trading system to continue working with reasonable smoothness, while compensatory expansion of home demand, as suggested in paragraphs 344–6, substantially maintains employment in other countries. For a major depression in a major country there is no remedy under a multilateral trading system. From 1929 to 1930 imports into the United States fell from $4,399 millions to $3,061 millions or 30 per cent; $1,338 millions of effective demand was withdrawn from the rest of the world between one year and the next. From 1937 to 1938 there was a similar though even greater proportionate fall, from $3,084 millions to $1,960 millions or 36 per cent; $1,123 millions of effective demand was withdrawn from the diminished international market This withdrawal of demand in 1938 was spread throughout the world; it meant that from one year to the next $200 millions fewer were being spent in Canada, $160 millions fewer in South America, $250 millions fewer in north-western and central Europe, $400 millions fewer in Asia. No economic system can be expected to stand such shocks. On the first occasion, after 1929, the shortage of purchasing power was spread and multiplied throughout

the world in the manner described above and issued in the Great Depression. On the second occasion, in 1938, the certain coming of another world depression was stopped by a World War.

326 To ensure the continuance of multilateral trading it is necessary that all the major participating countries should not merely aim at full employment, but should in practice secure it or secure something like it. This illustration of the first condition of multilateral trade has been couched in terms of the United States and of dollars, because of the historical importance of the United States in the depression of the thirties. But the moral is of general application. The nations taking part in multilateral trading are partners, each affected by the economic health or sickness of the rest, depression is an infectious disease. All who propose to take part in such a system may rightly be asked to inoculate themselves against depression by adopting a policy of full employment at home The general reason given in paragraph 301 for a full employment policy in each participating country as the first condition of multilateral trade, is strengthened by further examination: only if all the participating countries provide one another mutually with reasonably stable markets, can trade between them proceed smoothly and freely to common advantage. The practical conclusion is that a country which aims at full employment, in making plans for international trade, must have regard not merely to the external economic policies but to the internal economic policies of those with whom it plans to trade: must consider whether these internal policies are or are not likely to lead to stable full employment. International trade can be arranged in one way if all important industrial countries have policies of full employment; it must be arranged in another way if any important industrial country does not have such a policy.

THE SECOND CONDITION: BALANCE IN INTERNATIONAL ACCOUNTS

327. The second condition of multilateral trade is that every country taking part should undertake to balance its accounts with the rest of the world. This condition applies even if all the countries have full employment. It applies particularly to countries which tend to have an export surplus, by selling more than they wish to buy. Even with general full employment some nations may wish to export more than they import and others may wish to import more than they export, if the former are highly developed industrial countries with an ample supply of savings, and if the latter are countries in the course of industrial development, continuing export

surpluses from the former to the latter are wholly desirable and conduce to a raising of living standards in both types of country. But the countries with the export surpluses must be prepared, in one way or another, to engage in long-term lending abroad sufficient to offset their surpluses. Otherwise, sooner or later, the bulk of the international currency of the world, on which it relies for liquidity, will find its way to the countries with an export surplus and will stay there, out of action That happened between the wars with gold It would have happened with the "bancor" or the "unitas" of the original British and American proposals, if the export surplus countries maintained their pre-war economic policies. It would happen in the same circumstances under the new joint proposals: the currencies of the export surplus countries would become scarce to the deficit countries; unable to rely on buying from the surplus countries, they would be forced to seek safety in bilateral arrangements International lending is only indirectly relevant to the first condition of multilateral trade. It is essential in order to secure the second condition.

328. To ensure that the necessary amount of long-term lending from the surplus countries is actually taking place, there must be some international authority with the requisite powers One of the most important lessons to be learned from the international experiences of the inter-war period is that long-term foreign lending cannot be safely left entirely to private initiative. Nothing has so much aggravated the international currency crisis of the early thirties as the refusal of American investors to continue to lend at a time when American traders continued to try to export on a scale that always tended to exceed imports. If export surpluses are not matched by long-term lending, the countries receiving the exports are forced into illiquidity, and no escape is open to them but the restrictionist policy of cutting down imports. If the future is to see, in the words of the original British Treasury memorandum, the "substitution of an expansionist, in place of a contractionist, pressure on world trade,"[1] it is not enough merely to create an international currency; it is necessary to create a mechanism by which long-term lending can be relied on to maintain permanent equilibrium.

329. What do we mean by having an expansionist policy rather than a contractionist policy? We mean that, so long as any human need remains unsatisfied, difficulties of finding a market are attacked not by restricting supply but by expanding demand, by clothing needs with purchasing power so as to make them into effective

[1] Cmd. 6437, para 10.

demand This is the basis of a full employment policy, nationally and internationally In each field it involves positive rather than negative action, enabling consumers to buy more cloth, in place of ploughing in cotton crops Positive action in the national field must be taken by national authority; particular industries can only try to save themselves by restriction. Positive action in the international field requires an international authority. One country, made illiquid by the export surpluses of another country, can only take negative action to save itself—can cut its imports, thus cutting the exports of others Positive remedial action must be international The various proposals for the creation of an international currency system are expansionist at the outset in virtue of the positive international action of creating and distributing international purchasing power. But this is a strictly temporary service. The normal activities of the International Monetary Fund are little more than book-keeping. There is no machinery in any of these proposals to secure expansionist rather than contractionist policy in dealing with difficulties which arise later

330. From this there follows the practical inference that, for continuing equilibrium on an expansionist rather than on a restrictionist basis, an international currency system should be accompanied by a plan for international lending. On this point the interesting proposal is made in the Oxford University Institute of Statistics pamphlet on *New Plans for International Trade*[1] that the Clearing Union, as envisaged under the original British proposals, should have the power of creating additional international currency for long-term lending to countries needing loans, and the power, if necessary, to direct purchases made with those loans to particular deficit countries The principle of the proposal, as it is put by one of its authors, is that "if we can make foreign long-term lending independent of the initiative and sanction of the surplus countries our problem is very nearly solved."[2] The principle is, in effect, that for continued expansionism in international trade we need an international and not a purely national authority. Whether in this way or in some other way, it seems clear that we must proceed beyond the creation of an international currency or a Monetary Fund to the creation of a mechanism for international lending if we are to return to the multilateral trade of the period before the World Wars.

[1] Bulletin, Vol. 5, Supplement No. 5 of the Institute of Statistics, Oxford (August 1943).

[2] *Export Policy and Full Employment*, by E. F. Schumacher, p 19

THE THIRD CONDITION. CONTINUITY OF ECONOMIC POLICY ABROAD

331. The third condition of multilateral trade is that the countries participating should have a reasonable stability and continuity of foreign economic policy This is necessary because international trade is not simply a matter of spending, receiving, or creating purchasing power: it is a matter of production, consumption and investment, which involves the lives and happiness of large numbers of human beings. No fruitful economic existence is possible in the face of sudden, violent, and unpredictable changes. No country that has developed a certain line of production in response to a demand coming from abroad should find itself suddenly confronted with new tariff walls which at a day's notice render this line of production redundant. General multilateral trading, to be of benefit to all participants, pre-supposes that no substantial changes of tariff policy are made by any member without previously consulting the exporting countries affected and without giving due notice of the intention. The same applies to alterations in exchange rates, to subsidies, and to other governmental measures affecting the flow of trade.

332. This third condition does not mean that, in order to participate in international trade, the different nations have to surrender freedom to frame their own economic policies They may be high tariff or low tariff countries. They may have tariffs directed to favour production of one sort rather than another—to prevent Australia from becoming a sheep-run or to prevent Britain from becoming a country of factory and office workers without agriculture. It may be hoped that some of the reasons which have inspired tariff policies in the past—the desire to prepare for war or to be safer in war—will have less force in the future. It may be hoped also, with growing security both against war and against unemployment, that the way will be open to a steady progressive lowering of all artificial obstacles to trade But this is not essential. The one essential is a reasonable continuity of policy An unpredictable neighbour cannot be a good neighbour or one with whom it is prudent to have many dealings.

ECONOMIC POLICIES AND MONETARY PLANS

333 The analysis made here of the conditions of uncontrolled multilateral trading between nations took as its starting-point the disaster of the early thirties which brought such trading so largely

to an end The analysis was illustrated by facts from the survey of world economy made by the United States Department of Commerce. It cannot be completed better than by a citation from the foreword to that survey by Mr Wayne C Taylor.

"Although numerous salutary lessons are to be drawn from the experience of the past, the conclusion that emerges most emphatically from the survey is the fundamental importance of maintaining conditions conducive to a more stable and ample flow of dollars in our transactions with other countries. The most essential of these conditions lies not in the field of foreign economic policy as such but in the attainment of a more fully and more smoothly operating domestic economy—the major determinant of the volume and course of our purchases of foreign goods and services In addition, a more adequate supply of dollars should entail both a freer flow of imports and a renewed and sounder participation of American capital in international investment

"Of even greater importance than the general level of the flow of dollar payments to foreigners is the need for continuity and regularity in the foreign economic policy of the United States and in the actual behaviour of our international transactions It would be tragic indeed if the United States, after a period of renewed full participation in the world economy, were to permit another abrupt fall in the supply of dollars to disturb the recreated international commercial and financial mechanism, whether through increased trade restrictions, through the misbehaviour of foreign investment, or through the improper functioning of the domestic economy. Commercial and investment policies, however, are susceptible of intelligent determination and should no longer constitute such disturbing elements as in the past The functioning of the American economy as a whole presents some of the most baffling problems On the solution of these problems, through maintenance of a high and reasonably stable level of economic activity in the United States, the interests of this country and of other countries are most clearly and indisputably united.

"A world economic structure organized on the basis of equal treatment and with large scope for free enterprise cannot be maintained in the face of such reductions in the supply of dollars as have occurred in our international transactions in the past. Unless the supply of dollars is more adequate to meet foreign requirements, other countries will assuredly insist on

their rights to exercise a close selective control over the use of the amounts available and to promote more intensive relations with third countries under preferential trading arrangements Unless dollars are made available with greater regularity than in the past, it would be both unjust and unwise to demand the removal of restraints and controls largely designed to protect the internal economies of other countries against external shock and pressure."[1]

334 These are remarkable words from a remarkable State paper. Authoritatively and dispassionately they set out the indispensable conditions of multilateral trade. All the three conditions of the preceding analysis are there. "A more fully and smoothly operating domestic economy" is the first condition: full employment at home. A "supply of dollars more adequate to meet foreign requirements" is the second condition: balancing accounts abroad. "Continuity and regularity in foreign economic policy" is the third condition, almost in the words in which it has been set out above If the teaching of this paper can be translated into the practical policy of the United States, the prospects of general multilateral trading are bright.

335. It is acceptance of these economic policies that is needed, rather than further elaboration of monetary plans. Multilateral trade involves an international currency or, what comes to the same thing, the interchangeability of the currencies of all the countries participating in such trade. It is necessary, therefore, for nations which desire a restoration of multilateral trade after the war to frame monetary plans. Invaluable service has been done by the experts who have produced the alternative plans already noted, and finally have agreed upon a single plan But the best laid monetary plans are of no avail, unless the economic policies of the principal participating countries are suitable. Monetary plans can provide an initial impetus, as a self-starter does; they can provide lubricant for the machinery of multilateral trade. But the machinery cannot be kept running on the self-starter or the lubricant. It cannot be kept running except on the basis of substantial acceptance by all the important nations taking part of the three conditions of multilateral trade that have been named above Each of these conditions is so much in the interest of each particular nation, so long as its aim is peace, that, once these conditions are understood, they should be accepted. But understanding must come first.

[1] U S. Department of Commerce, *The United States in the World Economy* Re-printed by H M Stationery Office, London, 1944, pp v, vi

SECTION 4 THE NEED FOR COMMON ACTION

336 The economic clauses of the Atlantic Charter represent not vague idealism but plain business sense. No nation can enjoy high and rising standards of life without some trade with other nations No two nations can trade with one another without becoming linked in a partnership for prosperity or adversity. All nations which wish to trade together for economic advancement with security must pursue full employment together. The united military war of the freedom-loving nations against tyranny and barbarism needs to be followed by common action, embracing more and more nations, against the economic instability which has spelt insecurity to so many millions in the past. What form should this common action take? In considering this problem, it is convenient to consider, first, instability in the production and marketing of primary commodities, that is to say food and raw materials of industry, and, later, instability in manufacture and trade

337. Since the primary commodities satisfy, in the main, basic human needs which do not change rapidly, they might have been expected to show exceptional stability of production and price. They show in fact astonishing instability, particularly of price. Striking figures were given by J. M. Keynes for ten recent years before the war, in an article on "The Policy of Government Storage of Foodstuffs and Raw Materials."

> "Thus for these four commodities—rubber, cotton, wheat and lead—which are, I think, fairly representative of raw materials marketed in competitive conditions, the average annual price range over the last ten years has been 67 per cent An orderly programme of output, either of the raw materials themselves or of their manufactured products, is scarcely possible in such conditions "[1]

Another illustration is given in a pamphlet issued by the World Trade Alliance In twelve months of 1937–38 wheat fell in price from 7s 5d to 3s. 4d. per bushel; copper fell from £75 to £35 per ton, cotton fell from 8d to 4½d per pound; wool fell from 170d. to 48d per pound. It is idle to expect that the demand for British exports can become stable if the prices of British imports and by consequence the purchasing power of Britain's supplier customers continue to vary as violently as in the past

[1] *Economic Journal*, September, 1938, p. 451.

338 Full diagnosis of the causes of instability in primary products and prescription of detailed remedies would unduly extend this Report. But it is hard to dissent from the general conclusion in a recent study of some typical commodities by Mr Lamartine Yates that the root of the trouble lies in "what economists call the inelasticity of supply, i.e supply's irresponsiveness to changes in price." In many cases, indeed, to describe the trouble as irresponsiveness is understatement; the real trouble is the wrong response, multiplying the original maladjustment instead of correcting it.

> "In the first place, a large number of primary products are produced mainly by peasants or natives whose object is to maintain their cash incomes at a stable level and who, therefore, when prices fall, *try not merely to maintain* but actually to increase their production. Because they have not the capital resources of an industrialist, they cannot afford to close down their plant (i e their farms) and wait for better times; they must keep on producing or else starve Nor can they easily move into other occupations In most raw material producing countries the agricultural alternatives are few and poorly paid, and manufacturing industries are comparatively undeveloped "[1]

To this first cause of continuing maladjustment, Mr Lamartine Yates adds many others and concludes: "When one contemplates the cumulative effect of all these resistances—the peasant's attempt to maintain his income, the time-lag in production and the protective assistance afforded by governments—it is small wonder that price has proved a singularly ineffective weapon for achieving reduction in output, and it is not surprising, therefore, that even small diminutions in price or in demand have produced gluts of quite astonishing proportions."[2]

339 Measures to introduce more stability into the production and marketing of the primary products which Britain uses, should be an integral part of any full employment policy for Britain. But such measures fall only to a limited extent within the power of Britain. It is true that Britain can propose long-term contracts stabilizing her price for particular articles from particular countries But Britain is only one—although a very important one—amongst a number of purchasers If the raw material and food imports of other countries continue to show large fluctuations in volume, even a complete steadiness of British purchases and a complete stability

[1] P. Lamartine Yates, *Commodity Control*, p 214 (Jonathan Cape, 1943).
[2] *Op cit*, p. 216

of British prices will not assure steadiness of purchasing power to the primary producers. The problem of extreme and irrational instability in primary products can only be solved completely by international action, embracing both the primary producers and their principal industrial customers. No attempt can be made here to define the practical form which such action should take in regard to particular commodities Full discussion of the various alternative policies—of long-period global contracts covering the whole supply of each country, of "buffer stocks" and of quota systems, would occupy another volume or several volumes Different policies would no doubt be required for different commodities [1] The central problem in all cases is that of ensuring reasonable stability in production as well as in price, without stopping change and technical progress

340. In helping to stabilize the production and marketing of primary commodities, the advanced industrial countries will be helping themselves no less than the primary producers. The new facts as to the international trade cycle which are set out in Appendix A point clearly to the significance for cyclical fluctuation in industrial countries of instability in primary production. But this is one element only in cyclical fluctuation of industry. The main attack on such fluctuation must come within the industrial countries, by the adoption of a policy of internal full employment, setting up an expanding demand for consumption and steadying the process of investment The argument returns to its central proposition.

341. The first and necessary contribution to world prosperity that every large industrial country should make is to adopt for itself a policy of full employment and stable activity. Depression is contagious in proportion to the size and strength of the national economic system from which it comes To-day the strongest and most productive national economy in the world—that of the United States—is also the least stable.[2] The adoption of a policy of full

[1] The principal alternative policies are discussed by Mr. Lamartine Yates, with reference to the eight leading commodities of wheat, sugar, coffee, cotton, rubber, tin, copper, and mineral oil, in the book already cited

[2] According to the Department of Commerce Memorandum already quoted, in the depression of the early 30's, "as compared with 1929 levels the fall in economic activity in the United States was greater than that in other countries and was somewhat more prolonged." As is shown by the figures in para. 325, the percentage contraction of imports in the United States was actually greater from 1937 to 1938 than it had been from 1929 to 1930. In each of the two downward movements, the initial contraction of the British imports was markedly less than contraction of United States imports in 1929 to 1930 from £1,221 millions

employment by the United States would be the most important economic advance that could happen in the whole world and to the benefit of the whole world. In solving, as they only and only in their own way can solve, the "baffling problems" of their home economy, more than by the most generous outpouring of gifts or loans, the American people can confer immeasurable benefits on all mankind Full employment in the United States can be combined with preservation in full of all the citizen liberties which all English-speaking peoples hold to be essential Full employment, on the view taken here, can be attained while leaving the actual conduct of industry in private hands, if that course commends itself Full employment, finally, is attainable by several different routes The route suggested for Britain in this Report is not likely to be that which would best suit the United States, with her sparser population, her higher standard of capital equipment and her different structure of Government. Each country must work out its own full employment policy, but no great country should be without one No great country should submit to defeat by unemployment

SECTION 5. THE CHOICE FOR BRITAIN

342. All nations which propose to have trade with one another should pursue full employment and economic stability This does not mean that no nation can do anything in this matter except in agreement with all the other nations. Still less does it mean that Britain must wait and do nothing till she knows the minds of all mankind There are some respects in which Britain can frame her economic policy only in alternatives, to suit the alternative policies of other nations. But she should frame these alternatives as soon as possible and explore the views of other nations on them; the main alternatives for international trade, as they arise out of the preceding discussion will be reviewed briefly in concluding this Part. There are some things which are Britain's sole responsibility and on which she can and should take decisions now. The chief of these is the decision in any case to pursue a policy of full employment at home, by ensuring at all times outlay adequate to require use of all her productive resources. This decision is irrespective of the form which international trade may take. Full employment comes first There arise from this decision three or

to £1,044 millions, or 14 per cent, in 1937 to 1938 from £1,028 millions to £919 millions or 11 per cent

four practical issues relating to overseas trade which may be noticed briefly

343. In the first place, since a considerable overseas trade is indispensable for Britain, the maintenance of this trade should be regarded as a vital objective of national policy. This is partly a general question of industrial efficiency, of regaining for Britain by technical research some of the leadership in invention and ways of material progress which came to her historically at the beginning of the Industrial Revolution. It is partly a question of how the actual business of importing and exporting can best be undertaken. In the circumstances in which this Report had to be prepared, it did not seem worth while to attempt any detailed study of this problem, involving examination of each separate industry and discussion of its possibilities with the leaders of that industry But as a guide to the practical problems and their scale, it may be convenient to set out the values of the principal classes of British exports in each of the last three years before the present war.

Table 21

EXPORTS OF BRITISH PRODUCE OR MANUFACTURE

(*£ million*)

	1936	1937	1938
Food, Drink and Tobacco	35 6	38·8	35 9
Coal	29 3	37 6	37 4
Iron and Steel and Manufactures thereof	36 0	48·4	41 6
Non-Ferrous Metals and Manufactures thereof	12 1	15·7	12 3
Machinery	41 2	49 7	57 9
Vehicles (including Locomotives, Ships and Aircraft)	32 2	39 9	44·6
Electrical Goods and Apparatus	10·0	12 5	13 4
Cotton Yarns and Manufactures	61 5	68 5	49 7
Woollen and Worsted Yarns and Manufactures	32·2	35·5	26 8
Other Textiles	18 6	21 8	16 2
Chemicals, Drugs, Dyes and Colours	21·1	24 7	22 1
Other articles wholly or mainly manufactured	75 9	88 0	80 7
Other raw materials and mainly unmanufactured	22 0	27 0	19 5
Parcel Post and Animals	12 9	13 3	12 7
Total Exports	440·6	521 4	470·8

It is assumed, for reasons indicated above, that an increasing proportion of British imports, mainly food and raw materials, will come under collective management. What will or should be the position in regard to exports? The answer will differ from one

industry to another, and will be affected by decisions as to the organization of the industry. If, for instance, the coal or the iron and steel industries were brought under unified control by a public corporation, the business of exporting would presumably be undertaken as a whole. If, without unifying production of coal, demand for coal were made collective in the first instance through a marketing corporation, as suggested in Part IV, paragraph 216, the corporation would be responsible for finding a market abroad as well as at home. But apart from these special cases it may be convenient in other industries for export organizations to replace, to co-ordinate, or to assist the individualism of the past

344. In the second place, since some international trade is indispensable to Britain, some of the demand on which productive employment in Britain depends will come from overseas. Whatever be done in other countries or by co-operation between Britain and other countries to reduce fluctuations of overseas demand for British goods and services, some risk of fluctuation will remain A full employment policy for Britain must include plans for expanding and contracting home demand to meet fluctuations of overseas demand The power of the State, controlling the money machine, to maintain the total demand for labour in Britain at any desired point, is not affected by the fact that some of the labour is normally employed in meeting an overseas demand In purely quantitative terms any fluctuation of overseas demand, however great, can be offset by an expansion of home demand The problem is practical rather than financial. Its solution depends on detailed study of British exporting industries and of the extent to which and the methods by which men engaged on making exports for a particular country, can, if the demand from that country fails, find alternative productive employment in working for a new demand either at home or in some other country.

345 Even if adequate alternative demand is established, industrial friction is likely to make it impossible to avoid some increase of unemployment. An allowance for this has been made in assessing in paragraph 169 the irreducible margin of unemployment. That is part of the price of international trade and the raising of the standard of living by international exchange How completely industrial friction can be overcome in expanding home demand to compensate for declining overseas demand, it is impossible to say in advance What is certain is that the unemployment due to this cause will be smaller, if careful plans are made ahead, than if no plans are made But the necessity of being able, at need, to compensate

at home for fluctuations of demand overseas is an additional reason for not placing upon the State the further responsibility of adjusting public outlay to fluctuations of home investment. Business at home must learn to put its own house in order and not trust to compensatory fluctuation of outlay by the State.

346 Expansion of home demand to meet the falling off of overseas demand, even if it maintains employment, does not solve the problem of the balance of payments If outlay in dollars is replaced by outlay in pounds the exchange between dollars and pounds is affected Here the two measures discussed above, of discrimination and of international lending, enter. Disturbance of the balance of payments by industrial fluctuation in different countries can always be fully compensated by suitable international lending But such lending must be of strictly temporary character to tide over short-term fluctuations. It should not enable any country to incur trade deficits over a long period The other measure available for adjusting the balance of payments in face of minor fluctuations of overseas demand is discrimination.

347 In the third place, whatever the machinery for adjusting the balance of payments between different countries and for international clearing in multilateral trade, there is one cause of breakdown against which this machinery must be protected. There is general agreement that the uncontrolled movements of capital from one country to another, or in more popular terms the panic flights of "hot money," which reached such a disastrous violence between the two wars, represent a danger against which safeguards must be provided This is fully recognized in the Joint Proposals for an International Monetary Fund and is cogently argued in the British Treasury Memorandum of April, 1943.

> "There is no country which can, in future, safely allow the flight of funds for political reasons or to evade domestic taxation or in anticipation of the owner turning refugee Equally, there is no country that can safely receive fugitive funds, which constitute an unwanted import of capital, yet cannot safely be used for fixed investment For these reasons it is widely held that control of capital movements, both inward and outward, should be a permanent feature of the post-war system "[1]

It is difficult to see how, in practice, this control of capital movements can be secured without a general system of control over all

[1] Cmd 6437, paras. 32–3.

exchange transactions, though this need not involve a postal censorship.

348. In the fourth place, a problem arises from the fact that the course of international trade in a number of articles is now determined or influenced by international cartel agreements. Such cartels may serve a good purpose in stabilizing trade and production. The whole trend of the argument of this Part of the Report is towards a management of international trade, in place of leaving it to unregulated competition. That is to say, it is towards that for which the cartels stand. To attempt to destroy or stop cartellization would, therefore, be a contradiction of policy. But it is equally essential that, whatever policy in regard to international trade is adopted by the Government of Britain, that policy should not be liable to defeat or deflexion by the extra-governmental decisions of cartels. The latter should act in accord with national policy and as agents of that policy, not in disregard of that policy. The first step to securing this is full information as to the operation of cartels. They should work always under the scrutiny of the Government. But this is a first step only. It will not be sufficient for the formal arrangements of cartels to be recorded and supervised while substantive policy is determined by "gentlemen's agreements" which do not get recorded. It will not be sufficient to have scrutiny on behalf of the Government exercised by Civil Servants of no technical knowledge. What is wanted is that those who have the responsibility of conducting great and highly organized industries should come to regard themselves as the agents of a wider policy than that of their business. Just under what forms and by what institutions this can best be accomplished can probably be learned only by experience.

POLICY IN ALTERNATIVES.

349. These particular problems for Britain arising in the working out of a full employment policy in the international field have been mentioned because they must not be forgotten. But they are all secondary. The central problem is that of securing, by co-operation with other nations, the maximum of economic stability abroad as well as at home, and the greatest and freest development of international trade that is consistent with stability. A full employment policy for Britain must, on its international side, be framed in alternatives, to suit the most probable different lines of economic policy that may be adopted by the United States, by Soviet Russia and by other countries. The three main alternatives for Britain's

foreign trade, in the order of desirability, are general multilateral trading, regional multilateral trading and bilateralism

350. The most desirable alternative for Britain and the whole world is restoration of general multilateral trade But such a system is based on the assumption of reasonably full employment in all important industrial countries. Multilateral trading spreads adversity as certainly and as widely as it spreads prosperity. As the experience of the nineteen-thirties has shown, depression at home is practically certain to lead to beggar-my-neighbour policies abroad, to export drives and import restrictions The direct consequences of a depression in any one country become multiplied by the unco-ordinated attempts of each of the other countries to save itself, whatever happens to its neighbours

351. On the assumption of the Atlantic Charter, that all the larger countries will announce and adopt a policy for maintaining employment at home, international trade can be based on the most desirable of the three alternatives That is to say, the first aim should be a world-wide trading and clearing system, with international arrangements providing adequate lasting liquidity for multilateral trading, without requiring individual countries to subordinate domestic economic policy to international exigencies Subject to the adoption by all countries of suitable economic policies, such a system could have been developed out of the first British proposals for international clearing by adding thereto machinery for directed international investment It could be developed out of the recent joint proposals for an International Monetary Fund But, even under such a system, Britain, with other countries, must retain and exercise powers not used before the first World War, including

(*a*) Control of capital movements This appears to involve control of all exchanges

(*b*) Making of long-term contracts for the purchase of essential raw materials and food

(*c*) Making of long-term contracts for the planned supply of exports to develop backward areas

352 The second of the three alternatives for international trade is regionalism This means multilateral trading not throughout the world but between a group of countries, sufficiently complementary to one another, and sufficiently alike in their economic policies, including the pursuit of full employment, to make it easy for them to work together. All that is said in the last paragraph would apply

not to all countries but to the region Britain might become the financial centre, of a sterling full employment area, as before the first World War she was the financial centre of the world This would not, of course, prevent trade between countries in different regions, but such trade would take place subject to special controls

353 A policy of regionalism applied in Europe or in the British Commonwealth or both together should not be regarded as in any way unfriendly to the United States or to Soviet Russia Room must be kept in the world for a variety of economic policies in different countries. Soviet Russia will certainly continue to have a completely managed economy; the United States is likely to return, at any rate for some time to come, to a large measure of freedom from Government action. It should be open to Britain, and countries which like her desire to follow the middle course of full employment in a free society, to do so, without being charged with pursuing selfish or national aims

354. It is difficult to believe—in truth it is incredible—that, if a general multilateral system could not be established throughout the world, Britain would fail to find other countries, sufficient with her to make up a region of stable prosperity, ensuring to her the essential imports in return for her exports, ensuring to them markets and capital But if for any reason this could not or could not immediately be secured, there remains the last certain recourse of bilateralism. This for Britain would mean the making of specific bargains with individual countries to ensure the supply of imports of food and of raw materials indispensable for British industry, including in such bargains provisions as to means of payment and the exchange between their respective currencies

355. The first of the three alternatives is, as has been emphasized before, the most desirable in itself and most in accord with Britain's role and traditions in the past. To realize it Britain should do everything possible, except surrender the right to fall back on the other alternatives, if the first one could not be attained in full and satisfactory measure. It is better to secure multilateral trading in a limited region where it has good prospects of success and can be made the basis of wider trading later, than to aim at multilateral trading in the world at large, without effective agreement on its fundamental conditions.

356. That it would be possible either under the second or under the third alternative to ensure the imports required for our prosperity, if we are prepared to take the necessary steps, is not open to reasonable doubt. Nor is it doubtful that strong central planning of Britain's

internal affairs will make her more, not less, useful as a partner in world affairs International trade, both for imports and for exports, will on the whole have to come under public management, in place of being left to market forces either competitive or monopolistic. The organs which serve for planning at home will serve also for planning in a wider sphere.

357. The need to face and solve problems of international trade after the war is inherent in Britain's position. It is not due to the adoption of any particular economic policy, whether of full employment or not It should not be made the excuse for postponing adoption of such a policy The greatest contribution that Britain by herself can make to confidence in the possibility of world prosperity is to show confidence in herself and in her power of managing her own economic affairs better. The still greater contribution she should seek to make, with others, is to work for a full international system, covering both current transactions and investment, and ensuring both short and long-term equilibrium. Before the first World War, the gold standard, as administered from London, kept sufficient though imperfect economic order, as the British Navy kept peace Now for both purposes international authority is needed To make internationalism adequate in a limited field of arms and of money is the way to preserve the maximum of self-government and individuality for nations in their national fields To this task of making the new world order, in economics as in politics, we must come with clean hands and single hearts, seeking no advantage for ourselves, save the advantage of order which we share with all others. But while hoping for the best, that is success in our efforts for world-wide economic order, we must be prepared for failure and must retain for that event all necessary powers to ensure the second or third best

358. In terms of convenience for traffic, world-wide multilateral trade may be likened to an elevator, speedy but capable of going out of action. Regional multilateral trade may be likened to a staircase, less speedy but consistent with reasonable comfort Bilateralism is the fire-escape, clumsy but certain. We may hope that the world after this war will be equipped with all modern conveniences for bringing men together for their common advantage We should do our full share to bring such a world into being. But, in constructing the new edifice, we cannot prudently leave out the fire-escape and the staircase, until we are sure that there will be no fire and that the elevator will always be in action.

Part VII

FULL EMPLOYMENT AND SOCIAL CONSCIENCE

Memoirs of the Unemployed (paras 359–61) Judgment on Youth (para 362) Lesser and Greater Ills of Unemployment (paras 363–4) Need and Possibility of Remedy (paras 365–6). Some Objections Answered (paras 367–76) The Meaning of Social Conscience (paras 377–8) The Giant Evils (paras 379–82). A Policy of Spending and Doing by Common Action (paras. 383–4)

UNEMPLOYMENT AND THE INDIVIDUAL

359. Statistics of unemployment are not just statistics. Economic arguments about unemployment are not arguments in the air In my first study of unemployment thirty-five years ago, I illustrated the statistical record and the economic argument by an extract from the life story of one of the early labour leaders and Members of Parliament, Mr. Will Crooks [1] The story is so little out of date while fear of unemployment remains, that it may fitly be repeated here. It tells how, after tramping in search of work from London to Liverpool and back again, Crooks decided to try to find work outside his own trade of cooper. He went down to the docks, where by the aid of a friendly foreman he got occasional jobs as a casual labourer

> "One typical day of tramping for work in London he described to me thus:
>
> 'I first went down to the riverside at Shadwell No work to be had there. Then I called at another home and got two slices of bread in paper and walked eight miles to a cooper's yard in Tottenham. All in vain. I dragged myself back to Clerkenwell. Still no luck Then I turned homewards in despair By the time I reached Stepney I was dead beat
>
> 'That year I know I walked in London till my limbs ached again. I remember returning home once by way of Tidal Basin, and turning into Victoria Docks so utterly exhausted that I sank down on a coil of rope and slept for hours'"

. . . .

[1] *From Workhouse to Westminster: The Life Story of Will Crooks, M P*, by George Haw (Cassell & Co, Ltd, 1907).

"Work came at last in an unexpected way. He was returning home after another empty day when he hailed a carman and asked for a lift.

" 'All right, mate, jump up,' was the response.

"As they sat chatting side by side, the carman learned that his companion was seeking work.

" 'What's yer trade?' he enquired.

" 'A cooper '

" 'Why, the governor wants a cooper.'

"So instead of dropping off at Poplar, Crooks accompanied the carman to the works. . . . That work was a stepping-stone to another and better job at Wandsworth. . . Crooks was never out of work again in his life."

. . . . .

"Nothing wearies one more than walking about hunting for employment which is not to be had It is far harder than real work. The uncertainty, the despair, when you reach a place only to discover that your journey is fruitless are frightful. I've known a man say: 'Which way shall I go to-day?' Having no earthly idea which way to take, he tosses up a button If the button comes down on one side he tracks east; if on the other, he tracks west "

In repeating this story, in 1909, I added the comment, "Nothing can better illustrate the waste of time, energy and shoe leather involved in the personal search for employment. This is the lottery which industrial disorganization makes of the workman's life. This is the process as to which comfortable ignorance has so often assured us 'The men know where to look for work all right, they know. Lord bless you! *they* know!' "[1]

360. To-day the same or worse statistics could be illustrated by countless human tales, from many sources

"The depression and apathy which finally settles down in many of the homes of these long-unemployed men lies at the root of most of the problems which are connected with unemployment. It is one of the reasons why they fail to get back to work It is one of the reasons why the majority of them 'have not the heart' for clubs or activities of other kinds, and it is one of the reasons why their homes seem so poverty stricken 'I don't know how it is,' said a young married woman in Blackburn,

[1] *Unemployment* (1909), pp 265–6.

'but these last few years since I've been out of the mills I don't seem able to take trouble, somehow, I've got no spirit for anything. But I didn't use to be like that' One of us who saw her had little doubt 'how it was' The woman looked thin and ill, and it was clear that what food there was was going to the children "[1]

. . . . .

"My chief trouble is the monotony of a long spell of unemployment . monotonous and insufficient food and having nothing to do all day after the garden is done, kill all a man's interest in life. . . . Perhaps I miss cigarettes most, and I hate being chained to the home most. There is no substitute for work . . . There is nothing I can do to keep myself efficient; odd repairs in a house are no substitute for constructional work on a steam engine."

(A skilled millwright aged 49.)[2]

. . . .

"The wife works while I look after the home . . . I earned good wages (£4 a week) for years and we had saved fifty pounds when I lost my job. We have none of that fifty pounds to-day. Any long spell of unemployment leaves you with little to be proud of and much to be ashamed of. Our child is still too young to realize that it is her mother who works. We carefully keep her from knowing it"

(A skilled wire-drawer aged 32.)

. . . . .

"My husband is a good man and he does a lot for me in the house . But he is a changed man these last two years. He never complains, but I wish he would. It makes me unhappy to find him becoming quieter and quieter, when I know what he must be feeling. If I had someone to talk to about my troubles I should feel much better. But having to keep them to myself, as my husband does, makes everything so much worse. We quarrel far more now than we have ever done in our lives before We would both rather be dead than go on like this. . . . He has been out of work so long now that I do not think that

[1] *Men Without Work*, a Report made to the Pilgrim Trust, pp. 148–9 (Cambridge University Press, 1938).

[2] This, and the two passages following, are from *Memoirs of the Unemployed*. Introduced and edited by H. L. Beales and R S. Lambert (Gollancz, 1934)

he will get his Old Age Pension when he is sixty-five for he will not have enough stamps on his Health Insurance Cards. That will be our greatest disappointment "

(A Derbyshire miner's wife aged 66, he being 62)

361 The passages just quoted describe people past their first youth or with domestic ties that might limit their availability for work But the statistics of unemployment are not confined to such people They cover many tens of thousands in the first flush of manhood and womanhood. From a survey of *Disinherited Youth*, made under the auspices of the Carnegie United Kingdom Trustees during the years 1936–9, the following passages are taken.

"From the very start of their industrial life, at fourteen, they had experienced unemployment, so that even the youngest of them at age eighteen, were personalities that had matured, during those very important and impressionable four years against a background of unemployment, in some cases slight, in other cases entirely devoid of any pattern of work as a part of life " (Page 65)

"One young man described his feeling while unemployed as 'living death.' Many more may have felt this, but could not express it Unemployment due to conditions of world trade, or technological changes in industrial organization, meant nothing to them Such explanations left them cold What mattered to most of them was that they were fit and able for work and wanted it badly, not so much as an end in itself as a means to an end They needed the money, their homes needed the money, and it would be money earned by their own effort. One young wife put it thus 'Somehow when it's money that your man has worked for, it goes further.'

"Unemployment was a new and strange feature in the lives of a few They were anxious and alert They expressed their youthful impatience with the slow moving queues and hurriedly left the Employment Exchange after 'signing on' Others, however, had acquired the art of patience. They had longer and more frequently recurring experiences of unemployment With drooping shoulders and slouching feet they moved as a defeated and dispirited army. They gave their names, signed the necessary forms and shuffled out of the Exchange This, twice a week, was the only disciplined routine with which they had to comply " (Pages 5–6)

. . . .

"I am still unemployed and have no prospects. I have come to the stage when I think I will never find employment I am glad you still take an interest in me as it is good to know someone is interested in the welfare of the unemployed" (Page 6, W. B., aged 22)

. . . . .

"I was an apprentice engineer and during the depression (1931) I was paid off. I got the offer of my job back but I was working then as a labourer and getting 30s a week. I just couldn't go back to my apprentice's wage of 15s. I'm sorry now that I didn't." (Page 13.)

. . . .

"To tell you the truth I don't look for work now You've got about as much chance of picking up a job nowadays as of winning the Irish Sweep." (Page 14)

. . . .

"A number of the men married during the period of the Enquiry. One talked with them first as single men and then, later, as married men, and the urge to make fresh attempts 'for the wife's sake' was noticeable But one or two short spells of temporary or casual employment soon brought about a change of attitude The young wife soon found that this fluctuation between a few days' wages and a few days' unemployment allowance instead of a regular, if minimum, weekly sum for total unemployment, upset any plan of expenditure she might make. One young mother told how, when her husband got the offer of a job, she had immediately to go and get him a pair of heavy working boots and pay them up by instalments. He thought the job would last at least a fortnight and with two weeks' pay she could manage to pay them up in full The job lasted four days. It took her many weeks to return to her planned budget Such a simple happening as this throws light on part of the reason for the married man's unemployment." (Page 27.)

. . . . .

"The central problem of the lives of most of these young men is one of maintenance of self-respect Rightly, they feel a need to take their places in society, achieving in their own right the means of living Much of their conduct, irrational and unreasonable to outward seeming, becomes understandable if

regarded in its perspective, as part of a struggle for the retention of self-respect The attitude of many men who refuse training—a problem discussed in a later chapter—has its origin here; similarly, their resentment at being 'messed about' can be understood for what it really is—an essay in self-respect. They have no function in society They are the unwanted hangers-on of a community in the life of which they are unable to play their full part" (Page 80)

362. The facts that in certain parts of Britain even young adaptable people could find no employment and the disastrous effects upon them of prolonged idleness have been described already as among the worst blots on our record between the two wars [1] In the United States the position was no better. "The difficulty of youth in finding jobs has emerged as one of the most serious problems of depression It is estimated that youth constituted a third of all the unemployed during the thirties and that at least one-third of all the employable youth were unable to find jobs [2] This estimate of wasted youth in the United States is no hasty judgment, it is confirmed by numerous local surveys The record of where youth stands in free democracies in times of peace is in poignant contrast to what is required of youth in war, and to the call to youth made by the German dictator in preparing war By this judgment of uselessness that it passed so widely on adaptable youth, the unplanned market economy of the past in Britain and in America must itself be judged and stands condemned.

363 Statistics of unemployment mean rows of men and women, not of figures only. The three million or so[3] unemployed of 1932 means three million lives being wasted in idleness, growing despair and numbing indifference. Behind these three million individuals seeking an outlet for their energies and not finding it, are their wives and families making hopeless shift with want, losing their birth-right of healthy development, wondering whether they should have been born. Beyond the men and women actually unemployed at any moment, are the millions more in work at that moment but never knowing how long that work or any work for them

[1] Para 89.

[2] *Report of the Technical Committee of the National Resources Planning Board on Security, Work and Relief Policies*, p. 21

[3] The highest number registered as unemployed was 2,979,425 in January, 1933, but 1932 in general and particularly in its second half had higher figures than 1933 No doubt even in 1932 there was some unemployment which escaped registration.

may last. Unemployment in the ten years before this war meant unused resources in Britain to the extent of at least £500,000,000 per year. That was the additional wealth we might have had if we had used instead of wasting our powers. But the loss of material wealth is the least of the evils of unemployment, insignificant by comparison to the other evils. Even with that loss, Britain was still one of the richest countries of the world. If that unemployment could have been divided evenly over the whole people as leisure, we should have been as rich and altogether happier; we should have had a standard of living with which few countries could compare. The greatest evil of unemployment is not the loss of additional material wealth which we might have with full employment. There are two greater evils: first, that unemployment makes men seem useless, not wanted, without a country, second, that unemployment makes men live in fear and that from fear springs hate.

364 So long as chronic mass unemployment seems possible, each man appears as the enemy of his fellows in a scramble for jobs So long as there is a scramble for jobs it is idle to deplore the inevitable growth of jealous restrictions, of demarcations, of organized or voluntary limitations of output, of resistance to technical advance. By this scramble are fostered many still uglier growths—hatred of foreigners, hatred of Jews, enmity between the sexes Failure to use our productive powers is the source of an interminable succession of evils When that failure has been overcome, the way will be open to progress in unity without fear

365. The necessity of preventing the return of mass unemployment is a recurrent theme in nearly all that has been written on reconstruction problems in Britain after the war, from whatever angle it is written. "Unemployment such as darkened the world between the two wars, must not recur."[1] "There must be no return to the disastrous waste of man-power which characterized the period between the wars."[2] "This is the issue which in the years after the war, more than any other, will make or break the reputation of any minister of any government Yet, as Sir John Anderson remarked exactly a year ago when discussing Assumption C of the Beveridge Report, "There is no question whether we can achieve full employment, we must achieve it. It is the central factor which will determine the pattern of national life after the war, including, perhaps, the fate

[1] *Work. The Future of British Industry* (being a Report by the Conservative Sub-Committee on Industry), para 3

[2] *Nuffield College Memorandum on Employment Policy and Organization of Industry after the War*, para. 4

of democratic institutions "[1] The same thoughts find utterance in America: "Never again will doles and subsistence levels be tolerated."[2] "The liberty of a democracy is not safe if its business system does not provide employment and produce and distribute goods in such a way as to sustain an acceptable standard of living "[3]

366 The necessity of preventing after this war a return to the mass unemployment between the two wars is formally admitted by all. The possibility of doing so, if we are prepared to will the means as well as the end, is not open to reasonable doubt. Depressions of trade are not like earthquakes or cyclones; they are man-made. In the course of relieving unemployment, all industrial countries, but particularly Britain, have acquired much knowledge as to its causes. Though there remain some unsolved problems, the conditions without which mass unemployment cannot be prevented are known and the main lines for remedial action are clear. Finally, the experience of the two wars has shown that it is possible to have a human society in which every man's effort is wanted and none need stand idle and unpaid.

SOME OBJECTIONS ANSWERED

367. The doubt is not as to the possibility of achieving full employment but as to the possibility of achieving it without the surrender of other things that are even more precious. Some things which are more precious than full employment, that is to say, some of the essential British liberties, are surrendered in war But it can be shown that this surrender is required by the special nature of the war objective, and not by the full employment which is incidental to war This surrender of essential liberties would not be required for full employment in peace and should be refused The Policy for Full Employment set out in this Report preserves all the essential British liberties; it rejects rationing, which forbids the free spending of personal income, it rejects direction of men and women to compulsory tasks; it rejects prohibition of strikes and lock-outs. The policy preserves also other liberties which, if less essential, are deeply rooted in Britain, including collective bargaining to determine wages, and private enterprise in a large sector of

[1] *The Times* (Editorial), 16th February, 1944.

[2] From a leaflet by the Committee for Economic Development—an organization financed by business firms to assist and encourage industry and commerce in the United States to plan for maximum employment after the war

[3] President Roosevelt in Message to Congress, 29th April, 1938.

industry; it preserves these lesser liberties, subject to the degree of responsibility with which they are exercised. The policy preserves possibility of change, the springs of progress and the way to rising standards of life It is not open to the criticism that it would destroy essential liberties or lead to stagnation Is it open to any other serious objection? It will be convenient to name some of the possible objections and give brief answers.

368. There are some who will say that full employment, combined with unemployment insurance, will remove the incentive of effort which depends on fear of starvation The answer is that for civilized human beings ambition and desire for service are adequate incentives It may be that cattle must be driven by fear Men can and should be led by hope The policy set out in this Report is not one of stagnation or forced equality. It does not give security for life in a particular job, it gives only the opportunity of exercising one's gifts and energies in generous rather than in ungenerous rivalry with one's fellows.

369 There are some who will say that the great development of State activity involved in the policy proposed here will destroy the "little man," that is to say the small, independent business. The answer is that the policy does nothing of the sort, unless risk of bankruptcy in trade depressions is essential to the existence and happiness of the "little man" The policy is simply one of setting up sufficient demand It involves, as an implication, control of monopolies to prevent exploitation of the demand and supervision of large concerns in order to plan investment It does not touch the "little man" at all, he can work to meet the demand like any other He will find more scope than before, once strong demand has eliminated the slumps in which so many small businesses in the past have come to grief.

370 There are some who will object to the proposals of this Report on the ground that they involve an extension of the activities of Government and a consequent increase in the number of civil servants That the proposals do involve action by Government in fields which in the past have been left wholly to private enterprise is true, the justification for this lies in the failures of the past. In certain industries men may find themselves working directly for the community in place of being the employees of a monster business corporation In all industries, the managers of large undertakings may find themselves both regulated and assisted in keeping what they do—in investment, in the location of industry, in price policy—in accord with national interest. But there is nothing in all the pro-

posals of this Report to involve greater interference in the private lives of the mass of the people. On the contrary, not only will all the war-time restrictions on consumption and choice of work vanish with war, but many of the previous interferences with private lives will be ended There will be no unemployment assistance subject to a means test; the 8,000 officials of the Unemployment Assistance Board in 1938 will become unnecessary for that work. So, too, a substantial proportion of the 28,000 peace-time officials of the Ministry of Labour, that is to say, those engaged in paying or calculating unemployment benefit, will find that occupation gone, though it may be hoped that most of these will render still better service in preventing unemployment by organizing the labour market A full employment policy involves more public control over a limited class of business undertakers, and less control over the private lives of the mass of the people It may in the end mean fewer bureaucrats, not more.

371. There may be some who will say that in the emphasis laid in this Report on the need for organizing the labour market the Report treats labour as a commodity, in conflict with the opening declaration of the Charter adopted by the International Labour Conference in Philadelphia in May, 1944 There is no conflict The Philadelphia declaration that labour is not a commodity cannot mean that men should not be free to sell their labour as men sell commodities In a free community the right to sell or to refrain from selling one's labour by hand or brain and to bargain as to the terms on which it should be used is essential. This makes important the question of how those who desire to sell their labour and those who, whether for private profit or as representatives of a public authority, desire to buy the labour, shall be brought together In concerning itself with these matters, the Report does not treat men themselves as a commodity; it treats them, as the Philadelphia declaration demands, as an end and not as a means, it proposes a fundamental difference to be established between the position of those who desire to sell their labour and the position of all other sellers Only for labour should the market always be a seller's market. It should not be that always for any particular commodity.

372. There are some who will say that the policy of this Report subordinates the individual to the State The answer is that this criticism directly reverses the truth If the State is regarded as more important than the individual, it may be reasonable to sacrifice the individual in mass unemployment to the progress and prosperity of his more fortunate fellows, as he is sacrificed in war by the dictators

for their power and dominion or that of the race If, on the other hand, the State is regarded as existing for the individual, a State which fails, in respect of many millions of individuals, to ensure them any opportunity of service and earning according to their powers or the possibility of a life free from the indignities and inquisitions of relief, is a State which has failed in a primary duty. Acceptance by the State of responsibility for full employment is the final necessary demonstration that the State exists for the citizens—for all the citizens—and not for itself or for a privileged class

373 There are some who will say that the policy of this Report is a mere palliative which will block the way to further reforms like socialism or communism The answer is that the policy does not block the way to these or other reforms, if they are good in themselves It, is a policy directed against one particular evil and includes steps which must be taken under any economic system which preserves essential liberties, in order to deal with that evil. The case for socialization of the means of production must be argued in the main on other grounds, of efficiency of production or of social justice The Policy for Full Employment is in essence that the State takes responsibility for seeing that while any human needs are unsatisfied, they are converted into effective demand This leaves open to argument on its merits the question whether production to meet that effective demand should be undertaken under conditions of private enterprise guided by profit, or of social enterprise working directly for use, or of a combination of these methods.

374. There are some who will say that the introduction of this or any other policy for Britain must wait for international agreement. Undoubtedly any economic policy for Britain must take account of the world of which Britain is part It should be inspired by recognition of community of economic interest between different nations It must be framed in alternatives to suit the alternative policies that may be adopted by other nations, it must include means of off-setting, so far as possible, fluctuations of overseas demand But Britain must have her own policy, will do better for the world and herself by leading, rather than by waiting and following The subordination of British policy to supposed international exigencies has been one of the major mistakes of the period between the wars, the period of disastrous appeasement, political and economic Britain is in the world and cannot escape from the world or her responsibilities for world order and world prosperity, but she cannot meet those responsibilities unless she puts her own house in order

375 There may be some, finally, who feel that what is left out of this Report—the problem of demobilization and of transition from war to peace—is the most urgent practical task of all. That problem undoubtedly is both practical and urgent It is not covered in this Report, because it cannot be covered effectively by any unofficial enquiry. To deal with the problem of demobilization would have required help and information from Government sources which were not available to me. In any case it is a different problem from that which forms the subject of this Report After the end of hostilities in the first World War employment in Britain remained at boom levels for nearly two years [1] This war has already lasted longer and has been more total, the gaps in material equipment and resources needed for peace that will be left by the war in nearly all countries of the world are likely to be greater, not less, than last time It does not follow from this with certainty that last time's experience of automatically sustained demand for one or two years after the end of total war will be repeated this time The conditions when total war ends this time will be different in many ways from those of the last war. It would be foolish in the extreme to make no plans for action to ensure adequate demand, even in the demobilization period. But there is at least a possibility that no special action will be needed; there is the possibility of something like a post-war boom and automatic excess of demand in the transition from war to peace From this two practical morals emerge First, we must not be deceived by a passing flush of demand, if it should come, when total war ends Knowing that it may come and will pass, we must make plans beforehand to deal both with the flush and with what will follow after the transition from war to peace has been completed Second, unless plans are made now and are known to be made for maintenance of employment after the transition from war to peace there can be no hope of a smooth transition.

376. While it is impossible to forecast with certainty the conditions of demobilization in the present war, the probabilities are that the process must be more gradual than in the last war and may be divided into stages, as the ending of the war is divided into stages That is to say, it will be necessary to require some of the men and women of the country to continue in military service while others are being set free. Selection will raise difficult questions of equity

[1] The general unemployment rate in British trade unions, as given on page 69 of the *21st Abstract of Labour Statistics*, averaged 2 0 from November, 1918, to September, 1920.

and the principles on which this selection is made will need to be most carefully defined However well defined and just in themselves, they will not be accepted, if those who are retained in service feel that they are thereby losing, not merely another year or so of civilian life, but their place in a coming scramble for jobs. Those who, in the common interest, are required to continue in national service after their fellows are set free, must have the assurance that when they in turn become free they will still be wanted Adoption by the Government of a full employment policy to follow demobilization, and confidence that the Government will pursue that policy to the end, are essential for success in demobilization The problems of demobilization and of full employment thereafter are different but they are connected.

SOCIAL CONSCIENCE AS DRIVING FORCE

377 Twice in this century the onset of cyclical depression has been arrested by the outbreak of war, just after the culmination of an upward movement of the trade cycle. After the boom of 1913 employment had already begun to fall in 1914. After the half-hearted boom of 1937 employment fell in 1938. In each case an incipient depression was stopped or reversed, but it needed a war to bring this about. The test of statesmanship in the near future lies in finding a way to avoid depressions without plunging into war

378 That is the aim and hope of this Report We cure unemployment for the sake of waging war We ought to decide to cure unemployment without war. We cure unemployment in war, because war gives us a common objective that is recognized by all, an objective so vital that it must be attained without regard to cost, in life, leisure, privileges or material resources. The cure of unemployment in peace depends on finding a common objective for peace that will be equally compelling on our efforts. The suggestion of this Report is that we should find that common objective in determination to make a Britain free of the giant evils of Want, Disease, Ignorance and Squalor We cure unemployment through hate of Hitler; we ought to cure it through hate of these giant evils We should make these in peace our common enemy, changing the direction and the speed rather than the concentration and strength of our effort. Whether we can do this, depends upon the degree to which social conscience becomes the driving force in our national life. We should regard Want, Disease, Ignorance and Squalor as common enemies of all of us, not as enemies with whom each

individual may seek a separate peace, escaping himself to personal prosperity while leaving his fellows in their clutches. That is the meaning of social conscience; that one should refuse to make a separate peace with social evil Social conscience, when the barbarous tyranny abroad has ended, should drive us to take up different arms in a new war against Want, Disease, Ignorance, and Squalor at home.

379 Want, arising mainly through unemployment and other interruptions of earnings, to a less extent through large families, is the subject of my earlier Report on Social Insurance It could, without question, be abolished by the whole-hearted acceptance of the main principles of that Report. The worst feature of Want in Britain shortly before this war was its concentration upon children Wages were not and probably could not be adjusted in any way to family responsibilities; the various social insurance schemes for providing income when wages failed either ignored family responsibilities entirely—as in health insurance or workmen's compensation —or made inadequate provision for them—as in unemployment insurance By consequence there followed a sinister concentration of Want on those who would suffer from it most helplessly and most harmfully Nearly half of all the persons discovered in Want by the social surveys of British cities between the wars were children under fifteen Nearly half of all the working-class children in the country were born into Want. It is certain on general principles and can be shown by experiment that the bodies and minds of children respond directly and automatically to better environment, that the citizens of the future will grow up taller, stronger, abler, if in childhood all of them have had good feeding, clothing, housing and physical training Want and its concentration on children between the wars represented a destruction of human capital none the less real because it did not enter into any economic calculus [1] The decision to destroy Want should be taken at once, for its own sake, to free Britain from a needless scandal and a wasting sore That decision would deliver at the same time the first blow in the war against Idleness The redistribution of income that is involved

[1] 52 5 per cent of all children under one year of age in York were found by Mr Rowntreee in 1936 to be in families with incomes below his standard of human needs (*Poverty and Progress*, p 156). York was certainly not less prosperous than Britain as a whole, with less than the average of unemployment The effects of environment on the height and weight of school children have been demonstrated repeatedly by the statistics published by the Corporation of Glasgow. Uniformly, for both sexes and at all ages, the children from larger homes are heavier and taller than those from one and two-room homes, and keep their advantage, while children of all classes improve with rising standards of life

in abolishing Want by Social Insurance and children's allowances will of itself be a potent force in helping to maintain demand for the products of industry, and so in preventing unemployment.

380. Disease is in part a subject of my earlier Report on Social Insurance and Allied Services But on this side the Report is limited to proposing that medical treatment of all kinds should be secured to all persons, free of all charge on treatment, and to discussing some of the general issues involved in the proposal. The acceptance of this proposal, announced by the Government in the Parliamentary Debate on that Report in February, 1943, forms the starting-point of the White Paper on the National Health Service which was published in March, 1944. This White Paper, outlining for discussion with the medical profession, the hospitals and the local authorities concerned, a scheme for the organization of a comprehensive health service free for all, opens the way to a revolution in the health of the people. Removal of any economic barrier between patient and treatment is an essential negative step for bringing avoidable disease to an end. But while essential, it is only a small part of all that is required There is needed an immense positive extension both of preventive treatment and of curative treatment, through more and more hospitals, more and more doctors, dentists and other practitioners. There is needed, as an essential part of the attack on disease, a good policy of nutrition carried through by the wisdom of the State in using science Here is a large field for communal outlay, using resources for purposes of high priority, in preserving the health and vigour of all

381 Ignorance is an evil weed, which dictators may cultivate among their dupes, but which no democracy can afford among its citizens. Attack on it involves an immense programme of building schools, training and employing teachers, providing scholarships to fit opportunity to young ability wherever it is found The first essential steps for that have been taken in the framing and introduction of the new Education Bill; there remains the task of pressing the attack on Ignorance with vigour and speed on all fronts. Learning should not end with school Learning and life must be kept together throughout life; democracies will not be well governed till that is done Later study should be open to all, and money, teaching and opportunities must be found for that as well. In the development of education lies the most important, if not the most urgent, of all the tasks of reconstruction The needs of civilized men are illimitable, because they include the wise, happy enjoyment of leisure.

382 Squalor means the bad conditions of life for a large part of our people which have followed through the unplanned disorderly growth of cities, through our spoiling more and more country by building towns without building good towns, through our continuing to build inadequate, ill-equipped homes that multiply needlessly the housewife's toil The greatest opportunity open in this country for raising the general standard of living lies in better housing, for it is in their homes and in the surroundings of their homes that the greatest disparities between different sections of the community persist to-day Better housing means not merely better houses but houses in the right environment, in the right relation to places of work and recreation and communal activity. Town and country planning must come before housing, and such planning, as one enquiry after another has shown, is impossible, until we resolve justly but firmly the problem of land values. Here is the greatest urgency of all The attack on Squalor cannot wait, but it must be a planned attack. The war will leave a yawning gap, which must be filled without delay by building more homes We must have housing at once but we must have town and country planning before housing

383 The Policy for Full Employment outlined in this Report is a policy of spending and doing It is a policy of common action If we attack with determination, unity and clear aim the four giant evils of Want, Disease, Ignorance and Squalor, we shall destroy in the process their confederate—the fifth giant of Idleness enforced by mass unemployment The carrying out of the policy depends on the positive acceptance of a new responsibility by the State, that of ensuring adequate demand for the products of industry, however industry itself may be organized. The policy preserves all the essential British liberties; it uses Britain's political advantages to carry through a task which can be carried through only by the power of the State These political advantages are great and should be used. The constitution of Britain concentrates in the Government of the day the great power without which the problems of a great society cannot be solved It makes the use of that power subject to continual scrutiny by the citizens and their representatives, and the power itself subject to re-call; the essence of democracy is effective means of changing the Government without shooting. Finally, Britain has a public service, central and local, second to none in the world for efficiency, integrity and devotion to duty. Through these advantages, Britain has a chance of showing, sooner and more easily than any other large nation, that democracy can

order peace as well as war better than the dictators do The British people can win full employment while remaining free

384. But they have to win it, not wait for it Full employment like social security, must be won by a democracy; it cannot be forced on a democracy or given to a democracy It is not a thing to be promised or not promised by a Government, to be given or withheld as from Olympian heights It is something that the British democracy should direct its Government to secure, at all costs save the surrender of the essential liberties Who can doubt that full employment is worth winning, at any cost less than surrender of those liberties? If full employment is not won and kept, no liberties are secure, for to many they will not seem worth while

POSTSCRIPT:

THE GOVERNMENT'S EMPLOYMENT POLICY

On the 26th of May, 1944, a few days after I had sent this Report for printing on the 18th of May, 1944, a White Paper on Employment Policy was published by the Government [1] It has seemed best to let what I had written stand as it had been written, without significant change. The White Paper and this Report are independent contributions to the same problem, representing Coalition Government enterprise and private enterprise respectively. The slower processes of private publication in war make it possible for me to add this Postscript,[2] recording briefly the salient points in the White Paper and comparing its approach to the problem with my own approach

As an official document and declaration of policy the White Paper is epoch-marking in several ways.

First, the Paper, with its comprehensive though brief survey of employment problems in the transition from war to peace and thereafter, is the practical proof that the central machinery of Government in Britain at last includes an organ capable of expert study of general economic problems, as the basis of orderly foreseeing treatment of them That is to say, the machinery of Government includes what a Committee of Economists appointed to consider reconstruction problems in 1917 propounded as their first and most emphatic recommendation—an Economic General Staff The same recommendation has been urged on many occasions since then by many people, including myself in 1924 in a spirit of unwarranted

[1] The White Paper is Cmd 6527. One part of what is printed in this volume—Appendix C and the paragraphs directly arising out of it in Part IV (paras. 201–11)—was not completed at this date, as it involved the use of official statistics which became available to my colleagues and myself only when published on the introduction of the 1944 Budget, this material needed elaborate statistical handling But this part of the Report was not and could not be influenced by anything in the White Paper, which attempts no similar calculations

[2] The Postscript represents the substance of an address given to the Royal Economic Society on 22nd June, 1944, and is printed with minor changes in the *Economic Journal* for September, 1944

hopefulness about the first Labour Government. Now after a quarter of a century and the outbreak of a second World War it has been accepted. Whatever be thought of the name "Economic General Staff," the thing is there, has produced an admirable first product, and is to continue. "The Government intend to establish on a permanent basis a small central staff qualified to measure and analyse economic trends and submit appreciations of them to the Ministers concerned."

Second, the Paper disposes finally and officially of the economic fallacy whose pious acceptance by the British Treasury in the past has stood firmly in the way of action by the State to maintain employment. As Mr Winston Churchill, in his capacity of Chancellor of the Exchequer, told the House of Commons in his Budget speech of 1929, "it is the orthodox Treasury dogma steadfastly held that, whatever might be the political and social advantages, very little additional employment and no permanent additional employment can, in fact, and as a general rule, be created by State borrowing and State expenditure." This dogma was attacked at the time by a formidable variety of economic authorities, including J. M. Keynes, Mr. H. D (now Professor Sir Hubert) Henderson, Professor Pigou and Professor Clay.[1] By the renewed experience of full employment it has been consumed completely in the fires of war, and the White Paper may be regarded as a ceremonial scattering of its ashes

Third, the Paper announces that the Government accept "as one of their primary aims and responsibilities the maintenance of a high and stable level of employment after the war." This means having "a policy for maintaining total expenditure" This is the critical decision which must be taken to prevent mass unemployment.

The White Paper on Employment Policy is a milestone in economic and political history. It remains to examine the practical measures proposed for fulfilling the responsibility for total expenditure and to consider whether they are likely to be adequate.

[1] The issue is discussed briefly by myself at pp 413–16 of *Unemployment* (1930) The case against the dogma was stated in popular unanswerable language by J. M Keynes and H. D Henderson in a pamphlet *Can Lloyd George Do It?* and the gist of this is printed in *Essays in Persuasion* by J M Keynes (Macmillan, 1933) Professor Clay's views were given in his volume on *The Post-War Unemployment Problem,* pp 132–3 (Macmillan, 1930), and Professor Pigou's in an article on "The Monetary Theory of the Trade Cycle" in the *Economic Journal* of June, 1929. The only economist of comparable standing supporting the dogma was Mr R. G Hawtrey in *Trade and Credit*, Ch VI (Longmans, 1928)

PRIVATE INVESTMENT AND PUBLIC WORKS

The principal measure is that of expanding and contracting public investment, on plans prepared beforehand, to offset contraction and expansion of private investment. The White Paper assumes the continuance of fluctuations of economic activity, and by consequence of periods "of depression," (§ 60) or "of sub-normal trade" (§ 74) or of "trade recession," which, it argues, "provide an opportunity to improve the permanent equipment of society by the provision of better housing, public buildings, means of communication, power and water supplies" (§ 66) This attitude follows on the recognition of what is described in § 47 as one of two "highly inconvenient facts," which form "the most serious obstacles to the maintenance of total expenditure," namely that "those elements in total expenditure which are likely to fluctuate most—private investment and the foreign balance—happen also to be the elements which are most difficult to control."

The first comment to make on this is that the two elements, of the foreign balance and private investment, are not on the same footing. The foreign balance or rather one factor in the foreign balance, namely the demand from other countries for British goods and services, is beyond the control of the British Government, though by no means beyond its influence, as will be suggested below. But investment at home is beyond the control of the British Government only so long as the British Government chooses not to control it Treating the foreign balance and private investment on the same footing is equivalent to treating British industry as if it were a sovereign independent State, to be persuaded, influenced, appealed to and bargained with by the British State.

That in fact is how industry is treated in the White Paper The Government in § 82 "appeal with confidence to industry" to provide the statistical information essential to an employment policy: obviously the Government, in place of appealing, can and should require this information The section on stabilization of private investment contains nothing effective. "The possibility of influencing capital expenditure by the variation of interest rates will be kept in view" (§ 59). This is the possibility explored with negative results throughout the nineteenth century; how it is to be reconciled with the altogether more desirable policy of cheap money is not explained. It is recognized, however, in the next paragraph that "monetary policy alone will not be sufficient to defeat the inherent instability of capital expenditure" (§ 60); and accordingly "the Government

propose to supplement monetary policy by encouraging privately-owned enterprises to plan their own capital expenditure in conformity with a general stabilization policy" (§ 61). The only form of encouragement to which the White Paper is rash enough to commit itself is the giving of good advice. It points out that "to a strong and well-established business, confident of its long-run earning powers, there are obvious attractions in executing plans for expansion or for the replacement of obsolete plant at times when costs are low" This is open to two criticisms: first, experience of a hundred years of the trade cycle shows that lowness of costs in a depression does not encourage investment, so long as expectation of profits is as low or lower; second, the assumption that costs, which must mean wages and prices, will fluctuate, conflicts with the emphasis laid elsewhere (§§ 49–54) on stability of wages and prices. Apart from giving good but far from new advice and re-exploring an avenue which has already been found to be a *cul-de-sac*, the White Paper, in regard to private investment, does nothing but hold out hope of still more explorations. "A further inducement (to stabilize private investment) would be provided if it were found to be practicable to adopt a device similar to that of the deferred tax credits mentioned in paragraph 72 below and calculated to stimulate capital expenditure at the onset of a depression. This and other possible methods of influencing the volume of private investment will continue to be studied as knowledge and experience of the new technique for maintaining total expenditure are accumulated" (§ 61).

The White Paper, when critically examined, is seen to propose no serious attack on the instability of private investment. It pins its faith to the expansion and contraction of public investment to compensate for contraction and expansion of private investment. It does so without enlarging the scope of public investment and without daring to propose increased powers for the central Government in relation to investment by local authorities The policy of the White Paper is a public works policy, not a policy of full employment It amounts to little more than always having ready a five-year plan of public works of the established kind to be put in hand by the existing authorities, not when those works are most needed, but when private enterprise is slack. The White Paper does not go so far even as the Lever pamphlet, which in addition to public works contains definite budgetary proposals for influencing private investment as well as proposals to increase the scope of public investment. The criticism in paragraphs 248–56 above, of the Lever Pamphlet and stabilization of total investment as an inadequate approach to full employment, applies even more to the White Paper.

The practical difficulties of a public works policy are not unknown to the authors of some parts of the White Paper In § 47 they name as the second of the highly inconvenient facts to be faced in seeking to maintain total expenditure the fact that "an increase in one part of total expenditure can only within limits offset a decrease in another. For if, through a decline in private investment, the construction of new factories is discontinued and building labourers are thrown out of work, it may be useful to stimulate the purchase of clothing but it would be idle to expect the building labourers to turn up next day ready to handle sewing machines in the clothing factories." In § 62 they recognize that the capital expenditure of public authorities meets urgent needs and cannot readily be postponed or accelerated to fit the vagaries of private investment. But four paragraphs later in the White Paper, in § 66, composed perhaps by another hand, a different, less critical note is sounded. In § 66 "the Government believe that in the past the power of public expenditure, skilfully applied, to check the onset of a depression has been under-estimated." If this means that this power was under-estimated by the Treasury in the days of the orthodox dogma, it is undeniable. If it means that public works are an effective policy for full employment, it represents no more than wishful thinking [1]

VARIATION OF SOCIAL INSURANCE CONTRIBUTIONS

Apart from public works the only practical measure proposed, though even this is offered with some reservations, is that social insurance contributions should be varied, being raised in periods of good trade and lowered in times of bad trade, with a view to making consumption more stable. This interesting and novel proposal was brought to my notice during the preparation of my Report on Social Insurance and Allied Services and is mentioned there. It does not appear in my present Report, which proceeds on the basis of planning for continuous steady expansion rather than on the basis of mitigating fluctuations The practical and psychological difficulties of the proposal are considerable. So far as I can judge, it would involve changing the price of insurance stamps upwards or downwards without notice, in the same way as that adopted for

[1] In the House of Commons Debate (*Hansard*, 22nd June, 1944, cols 412–13) Sir John Anderson, in a curious passage, recognised the objections to de-stabilising public work to fit vagaries of private work "What I feel is that we have to develop a technique which, in regard to industry, whether privately owned or publicly owned, will enable influence to be exercised and directions to be given, within limits, which will conduce to the maintenance of a high level of employment. That is by the way . " It certainly is not in the White Paper

changes of the bank rate; employers would learn on a Saturday that the stamps which they had been buying for 7s 6d would, as from next Monday, cost them (say) 9s. or 6s.; workpeople would need to be persuaded that it was reasonable to make them pay more for unemployment when there was less unemployment, and pay less when there was more unemployment The advantages are not very great: this device would, at highest, mitigate the secondary rather than the primary effects of fluctuation. The addition to personal consumption that might, after an interval, result from it, in face of an increase of 4 per cent in unemployment above the assumed average of 8 per cent, is put in the White Paper at £70–£80 millions. This is named as a minimum but appears in fact to be an optimistic maximum; it would be attained only when unemployment was as high as 12 per cent, representing unused resources, at 1938 prices, of £500 millions a year. If further serious consideration is given to the proposal by the Government, two suggestions may be made First, if it is good for social insurance contributions it is even better for general taxation, and under the pay-as-you-earn system could presumably be applied to income tax, the social insurance fund is simply one of the Government banking accounts Second, the case for varying the employer's contribution is by no means the same as that for varying the contribution of the employee Variation might with advantage be confined to the employee's contribution. If in a slump the employer finds the cost of his insurance reduced he may not spend more, but may add to his reserves [1]

FINANCIAL INHIBITIONS

The White Paper is still far too inhibited in regard to central finance, too fearful of increasing the national debt.[2] The section on this subject starts off with a sentence to reassure the old school:

[1] It is theoretically possible of course that employers, when their contributions were reduced, might lower prices, or might distribute higher dividends in which case in due course consumption would be stimulated But the chance of any employer being induced to do either of these things by a lowering of contributions which was strictly temporary and would be reversed as soon as employment improved is so small as to be negligible. In any case neither of these actions has the possibility of results so immediate as to make them of any significance for anti-cycle policy.

[2] Sir John Anderson in the House of Commons (*Hansard*, 22nd June, 1944, col 415) said that §§74–9 dealing with central finance "owe their origin entirely to the Treasury" This was obvious from their character The penetrating and brilliant analysis of those paragraphs, made in the *Economist* of 17th June, under the title "Balanced Budgets?", leaves little to be said in the way of exposing their ambiguities and their inconsistency with an effective employment policy

"None of the main proposals contained in this Paper involves deliberate planning for a deficit in the National Budget in years of sub-normal trade activity." "The authors of the White Paper," as Professor Hicks has pointed out, "are evidently well aware that unemployment cannot be tackled without public borrowing, but they are prepared to resort to any subterfuge in order to ensure that the debt does not fall directly on the shoulders of the Central Government."[1] Thus they are prepared to contemplate lowering social insurance contributions and increasing the debt of the social insurance fund in time of depression · but they do not favour the lowering of ordinary taxes. They are prepared to encourage additional borrowing by the local authorities but not by the State. This is the old Treasury attitude, with self-deception added. There are reasons for meeting outlay of all kinds so far as possible from current revenue rather than by borrowing; the policy of doing so is named by me as the third rule of national finance. But the main reason for this policy—objection to creating and enriching rentiers—applies to borrowing of every kind, by the social insurance fund, by local authorities and by private business as much as to borrowing by the Central Government And the rule itself is of minor importance, not able to stand for a moment against major rules The whole section on central finance is based on a wrong sense of values which comes to the surface in paragraph 79. "Both at home and abroad the handling of our *monetary* problems is regarded as a test of the general firmness of the policy of the Government" Again, "in controlling the situation . . the Government will have *equally* in mind the need to maintain the national income and the need for a policy of budgetary equilibrium such as will maintain the confidence in the future which is necessary for a healthy and enterprising industry." I have italicised the words to which objection must be taken. The policy of the Government in future will be judged by its handling of economic, i e real, problems, not "monetary" problems Maintenance of the national income and maintenance of budgetary equilibrium are not "equally" important. The former of them is fundamental—the first rule of national finance. The latter is subordinate, a local bye-law as compared with an Act of Parliament.

LOCATION OF INDUSTRY

The location of industry is dealt with in Chapter III of the White Paper under the heading of The Balanced Distribution of Industry

[1] *Manchester Guardian*, 5th June, 1944

and Labour Power will be taken to prohibit the establishment of a new factory in a district where serious disadvantage would arise from further industrial development. The Government will use financial and other inducements "to steer new factory development into areas which call most urgently for further industrial diversification." All this is to the good, but the Government's policy, as interpreted in the Parliamentary Debate of 7th June, 1944, appears to fall far short of the national planning of the location of industry and consequent distribution of population that is envisaged in the Barlow Report and is among the assumptions of the Uthwatt Report The Barlow Commission's recommendation for checking any further development in the London area has been rejected There is no mention of the Uthwatt Report or of any alternative method for the solution of the problem of shifting land values, which the Barlow Commission rightly regarded as the essential preliminary to effective town and country planning.[1] In dealing with the possibility of structural unemployment there is a welcome statement of principle that "where a large industrial population is involved, the Government are not prepared either to compel its transfer to another area or to leave it to prolonged unemployment and demoralization" But it is not clear what action the Government could or would take to give effect to these brave words, if need arose They will not themselves, under the White Paper policy, control directly anything except public works, and an industrial population cannot be employed indefinitely in these They contemplate disposing of all war factories to private enterprise Will they be prepared to prohibit the establishment of new factories in one area, not on the ground of any disadvantage to that area but because there is some other area where additional employment is needed?

In this matter everything depends on the general policy and outlook of the Government In the Debate of 7th June on the location of industry, this was expressed by the Parliamentary Secretary to the Board of Trade in winding up the Debate in the following terms. "Our policy is not a coercive policy . . . we are confident that the business men of the country are best able to judge the

[1] Since this was written, the Government have published a White Paper on the Control of Land Use, which after rejecting the Uthwatt Committee proposals, after a somewhat cursory statement of reasons, sets out an alternative scheme of compensation-betterment The point of most general interest in this latest White Paper is the express rejection, in the concluding paragraph, of national planning of the use of land

business needs of the country, and we feel it to be our bounden duty to render all the help we can to them." In one who had presumably read the Report of the Barlow Commission and its account of how between 1932 and 1936 the business men of the country judged the needs of the country in locating five-sixths of the new factories in the area of greatest congestion and strategic danger, these are truly remarkable words.

THE INTERNATIONAL ASPECT

On the international side the White Paper is indefinite. As regards other nations it has not been found possible to say more than that the Government are "seeking to create, through collaboration between the nations, conditions of international trade which will make it possible for all countries to pursue policies of full employment to their mutual advantage." As regards our export trades, the necessity of expanding these is stressed, but "while the Government will spare no effort to create, in collaboration with other Governments, conditions favourable to the expansion of our export trade, it is with industry that the responsibility and initiative must rest for making the most of their opportunities to recover their export markets and to find fresh outlets for their products"; the only definite action promised by the Government is that of giving high priority to the export trades in allocation of materials, labour and factory space in the period immediately following the end of the war. It is clearly not easy for the British Government, at this stage of international discussion, to make any definite pronouncements as to international trade Here private citizens have an advantage, they can write more freely and can seek to form public opinion in all countries. The White Paper's treatment of the international problem suggests the following comments:—

First, the White Paper concentrates too much on increasing exports and not sufficiently on stabilizing them. "To avoid an unfavourable foreign balance, we must export much more than we did before the war." Is this certain? There is the alternative of cutting down imports and becoming more independent, the figures given recently by the Minister of Production show how great are the possibilities of self-dependence, even for Britain [1]

[1] "The imports of raw materials, that is the raw materials for industry in 1943, were down to about 40 per cent of the average pre-war year, say 1938, and yet the total industrial production of the United Kingdom was about 40 per

This is said not to suggest that self-dependence is to be preferred to expansion of international trade But the stability of international trade is as important as its scale. Indeed instability of international trade is one of the principal factors in reducing its scale, as has been shown by bitter experience between the wars.

Second, while stability of international trade depends on other nations as well as Britain, this does not mean that there is nothing which Britain can do about it. Steady employment in British export industries depends on steady demand from overseas. By a policy of long-term contracts for primary products from overseas Britain can guarantee a market for these products and promote stability of demand for her exports

Third, it is not clear that adequate development of exports must or can be left to the chance that business men will develop them. Exports up to a certain minimum are a vital national interest and it is the duty of the State to ensure, by direct action, if needed, that this interest is not neglected

COMPARISON OF DIAGNOSES

What are the main differences—in diagnosis and in prescription—between the White Paper and what is written in this volume?

The main diagnosis in each is on the same lines, representing the general agreement of economists that employment depends on expenditure, so that the fundamental condition for avoidance of mass unemployment is maintenance of total expenditure. This is common ground, as it is common sense. But the diagnosis in my Report, as it is much fuller, brings out several important points which appear in much weaker form or not at all in the White Paper.

First, the analysis in Part II of my Report, showing the marked differences of unemployment rates between industries and localities, emphasizes the heterogeneity both of demand for and supply of labour, and the degree of friction in the labour market. Second, the analysis of cyclical fluctuation in Appendix A emphasizes a factor in fluctuation which has been unnoticed hitherto, that is to say the important part played by demand from primary producers of food and raw materials in initiating fluctuations of manufacturing in-

cent higher than it was in 1938 I think this is the most striking testimonial to the intensive work, the conservation of raw material and the use of our home-grown products It is a striking achievement " Mr Oliver Lyttelton, addressing the Cambridge University Conservative Association, 19th May, 1944

dustry Third, apart from the transitional problems dealt with in its Chapter III, the White Paper diagnosis treats fluctuation of demand as the main or sole problem. It is concerned almost wholly with the timing of demand, and proposes nothing for its expansion. The analysis of facts and theories of unemployment in Part II of my Report shows, as the central weakness of the unplanned market economy, chronic deficiency or weakness of demand, with full employment as rare as total wars.

The first of these three differences is in the main a difference of emphasis. The economist authors of most of the White Paper realize the existence of industrial friction, if not its strength. My fuller diagnosis reinforces the doubts expressed by them as to the practicability of offsetting decline of demand for one sort of labour by increasing the demand for another sort It emphasizes the need for stabilizing the demand for labour, not merely in total, but in each of its main categories Stability does not mean stagnation, that is to say absence of change and progress. It is right that men should move from declining to progressive industries to meet a permanent change in demand and should be helped by training to do so. It is not reasonable or practicable to expect men in great masses to move into and out of public works according as their own industry is slack or busy. Stability means absence of meaningless unprogressive fluctuation.

The second of these three differences arises through discovery of new facts These facts make not merely desirable but essential the taking of steps to stabilize markets and prices of primary products. Full stabilization involves international action. But Britain in any case must be prepared by long-term collective contracts to ensure for primary producers the prosperity on which her own prosperity depends

The third of the three differences of diagnosis is the most important, as it is also that which may raise the greatest economic and political controversy The White Paper does not face up at all to the problem of chronic deficiency of demand, or draw the moral clearly pointed by its own study of the transition period, in which there will be no unemployment because "it will be a period of shortages." So long as any human needs are unsatisfied there are shortages. The problem is that of clothing these needs with purchasing power, either by redistribution of income or by social demand for things needed in the common interest.[1]

[1] There is yet another respect in which what is said in the White Paper about the transition period should be applied generally In § 17 the Government

DIFFERENCE OF PRESCRIPTIONS

The differences of diagnosis are substantial They lead up to prescriptions for treatment whose difference is fundamental. The substantive policy of the White Paper is one of public works, to be expanded or contracted to compensate for contraction or expansion in private investment. Apart from the half-hearted influencing of location of industry and the plan for varying social insurance contributions which the Government favour for adoption at some future time, there is nothing more than this, except several promises of further exploration. There is nothing to stabilize private investment, there is no increase of the sphere of public outlay; there is nothing to cause the steady expansion of demand on which full employment depends

In relation to the strictly limited problem with which it is concerned—namely cyclical fluctuation of demand—the White Paper, read in conjunction with my Report, raises two critical questions: (1) Can business investment be stabilized sufficiently, so long as the whole or the greater part of industry is in private hands; (2) If this cannot be done, can a high and steady level of employment be maintained by using public investment to offset fluctuations of private investment?

The White Paper in effect answers the first question negatively. In laying down in § 48 as the second of the guiding principles of the Government's policy in maintaining total expenditure, that "everything possible must be done to limit dangerous swings in expenditure on private investment"—it adds the warning that, "success in this field may be particularly difficult to achieve." Practically, as has been shown, the White Paper contains nothing effective for stabilizing private investment and really gives up the hope of doing so It pins its faith to giving an affirmative answer to the second question

My Report answers this second question in the negative and proceeds to consider the conditions on which the first question can be answered affirmatively It accepts the view expressed by J. M.

announce their determination that in the transition period "the most urgent needs shall be met first"; in § 18 they recognize the possibility that "production of unessential goods may interfere with the production of essentials" and the consequent need to establish broad priorities for the guidance of production. This is justly and cogently said, but why is it limited to the transition period? Should not essentials always have priority over unessentials? Should the securing of better housing, or better power and water supplies depend on the "opportunity" named in § 66 of a slump in private investment directed without regard to priorities?

Keynes in 1936 "that the duty of ordering the current volume of investment cannot safely be left in private hands "[1]

It may be objected that my Report, in so far as it contemplates the continuance of private enterprise, leaves open the possibility that private investment will fluctuate. This is true, but does not mean that my Report accepts this fluctuation as inevitable or proposes no definite measures to prevent it. The measures directly relevant include the following —

1 A long-term programme of expanding consumption demand, social and private, which should lead to maintaining investment.
2 Stabilization of marketing and production of primary commodities, by international agreement so far as possible and by British action in any case
3. Stabilization of private investment through a National Investment Board, which would plan investment as a whole, using powers of control and loan and taxation policy.
4. Expansion of the public sector of business, so as to enlarge the area within which investment can be stabilized directly.

Finally, in so far as these measures do not bring about sufficient stability of investment of all kinds, it is recognized that the case for further measures will be established My Report, in place of accepting the inevitability of fluctuation and aiming merely at offsetting it, accepts the necessity of stability not merely in total expenditure but in each main section.

How far the measures named above will succeed in stabilizing the process of investment is open to argument. Some economists appear to hold that steady expansion of consumers' demand in Britain will, by itself, abolish cyclical fluctuation of investment, even if investment remains largely in private hands; in effect they hold that the first of the four measures named above will do the trick. This appears to me unduly optimistic, and to ignore the significance of overseas demand and its fluctuations, as shown in my Appendix on the International Trade Cycle, and the tendency to competitive over-investment, that will persist so long as any important industry is not under unified control. In my view, the second, third and fourth measures named above are needed in addition to the first

The first of the four measures, whether or not it is sufficient, is indispensable But it does not fall within the purview of the White Paper and its omission is the most serious weakness of the Paper

[1] *General Theory*, p 320.

This weakness reflects in part the incomplete diagnosis of the problem as wholly or mainly one of fluctuation. It is even more a result of financial inhibitions. The importance attached to balancing the Budget, in the long run though not in a particular year, excludes continuous deficit spending by public authorities. Yet, either this or a drastic redistribution of income to increase the propensity to consume is in the last resort essential to a permanent policy of full employment.[1]

THE POLICIES COMPARED

The Government's Employment Policy is a policy of public works planned five years at a time and kept on tap to mitigate fluctuations. It is an anti-cycle policy, not a policy of full employment, the term "full employment" does not occur in the White Paper, except, somewhat oddly, in two passages in each of which the Government are thinking rather of what others ought to do than of what the Government ought to do. in the passage already quoted from the Foreword as to the pursuit of full employment by "all countries," and in § 54 when emphasis is being laid on the duty of workers to examine their trade practices and customs

The Policy of my Report is a Policy for Full Employment, defined as meaning always more vacant jobs than idle men. The Policy consists of setting up and carrying out a long-term programme of planned outlay, directed in the first instance against the giant social evils of Want, Disease, Squalor, and Ignorance and towards the raising of productivity by improvements of our capital equipment. The immediate programme includes —

Abolition of Want by Social Security and Children's Allowances increasing and stabilizing consumption.

Collective Outlay to secure good houses, good food, fuel and other necessaries at stable prices for all, and a National Health Service without a charge on treatment.

Encouragement and Regulation of Private Investment by a National Investment Board, to rejuvenate and expand the mechanical equipment of the country while stabilizing the process of doing so.

Extension of the Public Sector of Industry so as to increase the scope of direct stabilization of investment and to bring monopolies under public control

[1] See the article on the White Paper contributed by Mr. Kalecki to the *Bulletin of the Institute of Statistics*, Oxford

A National Budget based on the datum of man-power and designed to ensure year by year total outlay sufficient to set up demand for the whole productive resources of the country.

Control of the Location of Industry with full powers, including transport, on a national plan.

Organized Mobility of Labour to prevent aimless movement, the hawking of labour and mis-direction of juveniles, while facilitating movement when it is desirable.

Controlled Marketing of Primary Products, so as to stabilize overseas demand to the utmost.

International Trading Arrangements based on acceptance of the three fundamental conditions of multilateral trade: full employment, balancing of international accounts, and stability of economic policy

When the goals set in this immediate programme have been reached or are in sight, new goals will come into sight. The planning of adequate outlay will continue, but outlay may be directed to new aims of steadily rising consumption and of growing leisure, more fairly distributed and used for the free development of all men's faculties.

ECONOMICS AND POLITICS

In the last resort the differences between the two documents compared in this Postscript represent differences of social philosophy. The economics of the White Paper are better than its politics. The Government in the White Paper treat private ownership of the means of production as fundamental; my Report treats it as a device to be judged by its results The Government in the White Paper are conscious of the need for giving confidence to business men by monetary stability and budgetary equilibrium. They appear to be unconscious of the still greater need of giving confidence to the men and women of the country that there will be continuing demand for their services, so as to secure their co-operation, individually and collectively, in reasonable bargaining about wages, in working for the maximum of production without fear of unemployment, in relaxing restrictions, formal and informal, on the full use of resources. This confidence will not be given by a promise to undertake public works whenever unemployment threatens to become serious It will be given only when the steady expansion of demand, for investment, as for consumption, has been ensured and when it is proved by experience that though technical progress may some-

times involve a change of jobs, there are always more vacant jobs than idle men, in the planned economic war against social evils and for rising standards at home, as there are more vacant jobs than idle men in the military war against barbarism and tyranny abroad

This is the root of the matter. The Government in the White Paper are fighting unemployment. They ought to be planning for productive employment. But one cannot do that unless there is something that one desires passionately to see accomplished. Employment is wanted not for its own sake but as a means to an objective. Experience in peace has shown that the desire of men who are already above want to increase their profits by investment is not a strong enough motive or sufficiently persistent in its action to produce a demand for labour which is strong enough and steady enough Experience of war has shown that it is possible to have a human society in which every man has value and the opportunity for service, when the motive power and direction of economic activity are given not by private interest but by collective determined pursuit of a common good.

The Government have not faced the implications of this experience either of peace or of war. Within the limits set by its social philosophy, the White Paper is a sincere attempt to deal with the disease of unemployment. But its brief diagnosis, admirable up to a point, understates the seriousness of the disease, that is to say the extent of the past failure of the unplanned market economy And its practical proposals are inadequate, not only through deficient diagnosis, but even more because action is inhibited by a sense of values that is wrong in two respects: of treating private enterprise as sacrosanct—a sovereign power independent of the State, and of treating maintenance of budgetary equilibrium as of equal importance with full employment. It is necessary to declare war on unemployment, as it was necessary to declare war on Germany in September, 1939, and to give, in April, 1939, the guarantee to Poland which showed where Britain stood and made war certain. But, as experience has shown, it is possible to make such declarations without being prepared for war and for all the changes of economic and social habits that are necessary for success in war. The time calls for total war against unemployment and other social evils, not for a war with inhibitions.

Appendix A

THE INTERNATIONAL TRADE CYCLE AND OTHER FLUCTUATIONS

1 The economic activity of nearly all industrial countries is subject to fluctuations of several different types, varying in generality, length, violence, and other respects One type of fluctuation is of outstanding importance and forms the principal subject of this Appendix; use of the term "international trade cycle," to describe this fluctuation implies two definite views as to its character which will be explained in due course There are other types of fluctuation which call for briefer notice

2 The phenomenon described here as the international trade cycle can be identified most simply by saying that it is the fluctuation of economic activity which, in relation to Britain, is reflected in the new index of industrial activity from 1785 to 1938, given in

figures in Table 22 on pages 310–13 and set out pictorially in Charts IV and VI The construction of this index must first be described briefly [1]

A NEW INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN

3 The index numbers in Table 22 are based on series of annual figures recording for various industries, in terms of number, weight or volume, their output, their consumption or import of raw materials, or, in one or two cases, the shipment of their produce; transport industries themselves, such as shipping or railways, are represented by statistics of clearance or traffic. Nearly all the series used have a marked upward trend, reflecting the growth of the population and the development of industry. To allow for this, a curve representing the trend[2] has been fitted to the data, and the actual figure for each year has been expressed as a percentage of the trend ordinate; the curves fitted are in most cases curves of the second degree, but in some cases a curve of the third degree or a straight line has been used and in one or two cases it has been necessary to fit separate curves to different sets of years. The percentage shows how the actual activity of the industry in each year compares with what would have been its activity if it had developed steadily from beginning to end of the period covered, that is to say, they are indices of fluctuation Combination of these indices gives a general index of fluctuation for all industries. In this combination weights have been assigned to the separate industries roughly in accord with the assumed number of persons employed in them, or represented by them. In addition to the general index, indices have been calculated for each of three main groups of industries, described as construction and instruments, textiles, and other industries.

4. The index records deviations in particular years of the degree of industrial activity from the general level of the period. When the index is above 100, that means that the activity of trade and industry was above the average and that employment was more than usually easy to obtain When the index is below 100, it means the contrary of these things The index contains no element of money or of

[1] The material and sources used for the period 1785–1859 are described in an article on "The Trade Cycle in Britain before 1850," published by me in *Oxford Economic Papers*, No 3 (February, 1940), and in a postscript in *O E P.*, No. 4 (June, 1940). These articles explain the weighting of the different series and correlate the movements of the new index with other financial and social series. The material for the periods from 1860 to 1913, and from 1921 to 1938, comes from well-known published sources, mainly official.

[2] See Explanation of Terms in Appendix D

prices It is based on data of physical quantities, weights or numbers The index, of course, is representative only It cannot include all
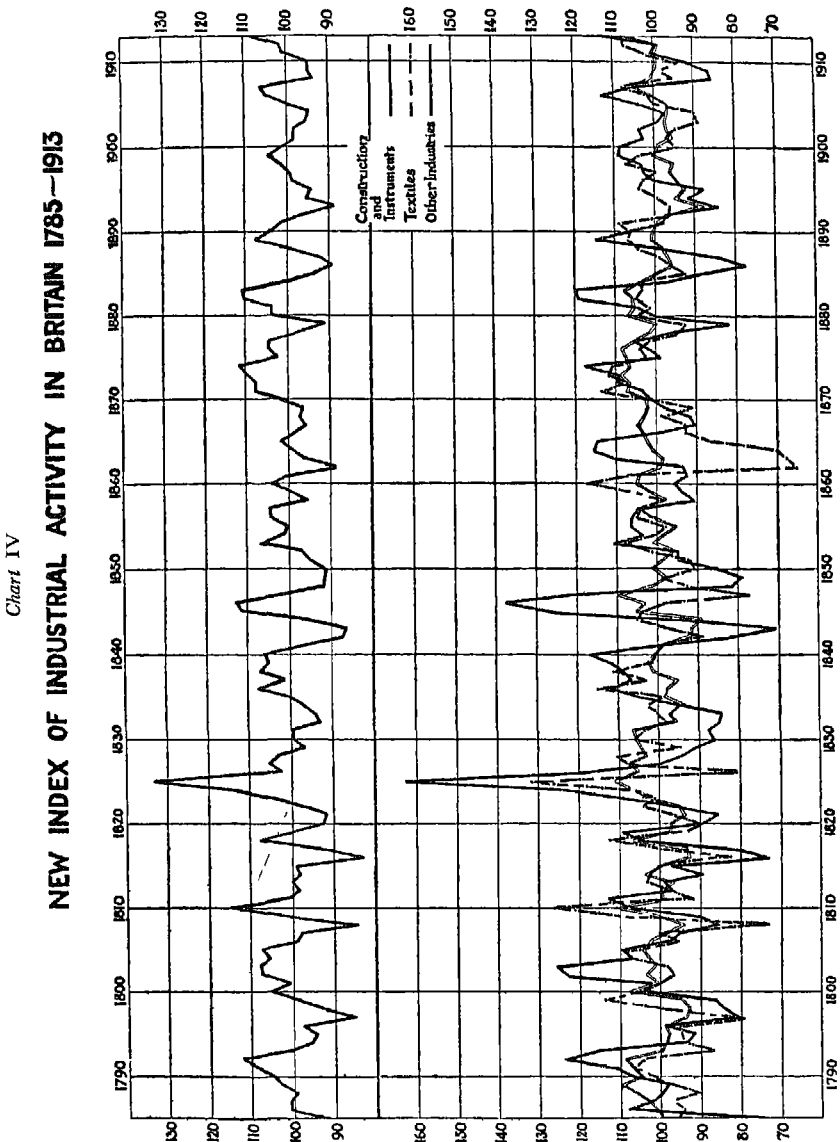
industries, for data are available only for some industries, and the material available differs in detail from one end of the one hundred and fifty years covered to the other The industries included, the

nature of the data and the weights assigned to each are set out in Table 23 on page 314 The material used is substantially unchanged from 1785 to 1849 and again from 1860 to 1913, the decade 1850–9 forms a period of transition in the records, dealt with specially in the postscript in *O.E.P*, No 4, June, 1940. The main difference between 1785–1849 and 1860–1913 lies in the absence from the latter period of any series corresponding to those for bricks and tiles in the earlier period; building is represented only by timber imports and the weight assigned to this series is increased accordingly. A number of minor industries also drop out at or just before 1850; on the other hand, coal, iron and steel become more effectively represented soon after that date The weight assigned to cotton is increased and the weights assigned to wool and leather are decreased steadily between 1785 and 1814, to allow for changes in the relative importance of the industries. All weights are unchanged from 1815 to 1849 except in adding the two points for tiles to bricks (as representative of building) after 1822. The weighting, with some adjustments described in *O E.P.*, June, 1940, is based on the census of 1841 In the period 1860–1913 the weights are unchanged throughout, except in treating the data for iron as representative of steel also from 1860 to 1874 and assigning 12 points accordingly to iron in those years. In weighting during the later period regard was had, in the first instance, to the numbers occupied in each trade in the United Kingdom in 1891. The weights used in the transitional decade 1850–9 are those of the later period, though the series are for the most part continuations from the earlier period. This weighting, as is explained in *O.E P.*, June, 1940, is both more reasonable in itself and gives better agreement with other indices in this decade. The transitional period is marked in the table of figures by the plan which I have adopted elsewhere in presenting statistics of prices and wages, of a line drawn half-way across the column. This is equivalent to the familiar notice on the roads: "Reconstruction in Progress. Proceed with Caution." It is a warning not to press the figures too hard at the particular point, but at the same time, it is definitely permission to proceed. There is no serious risk of error in regarding the figures given by me as a substantially continuous record of the relative activity or slackness of British trade and industry from 1785 to 1913 The index is presented as a substantive record of fluctuation only for that period.

5 In fact it is possible to continue the index by the same methods over the interval between the two World Wars, from 1920 to 1938 This has been done in order to test the value of this index by com-

paring its course with those of the more elaborate indices available since 1920 For the period 1920–38 the series used and the weights are the same as from 1860 to 1913, with two small exceptions, that silk imports by quantity are not available and have been omitted, and that passenger traffic figures are not available before 1928 on a basis comparable to the figures thereafter and have therefore been omitted for the years 1920–7 Substantially the index covers the same ground before and after the first World War The new index numbers in this period are based on the average of 1920–38 = 100.

6 The index of industrial activity in Britain presented here is a new addition to historical statistics. For the latter part of its course it can be compared with other indices of equally general character From 1860 to 1913 this other index for comparison is provided by the general employment rate among trade unionists, that is to say, the percentage of trade unionists desiring employment who were successful in obtaining employment. This rate has hitherto been treated as probably the best single index of cyclical fluctuation available for Britain. This general employment rate and the new index of industrial activity are set out together in Chart V [1] The shape of the two curves is different, in so far as the employment curve, particularly in its upper portions, tends to be more rounded. The agreement of the two curves in timing is remarkable, the correlation coefficient[2] between them is 0 86 The data represented by the two curves are independent and entirely different in character The agreement of results is evidence of the soundness both of the original data and of the methods of construction

7 In its experimental continuation from 1920 to 1938 the new index can be compared with the index of industrial production prepared by the London and Cambridge Economic Service. The trend of the two indices is different That of the London and Cambridge Economic Service, covering a wide range of industries,

[1] In Chart V the trade union employment rates are shown as relatives, that is to say, as percentages of the mean rate for the whole period from 1860 to 1913 The actual rates from 1856 to 1926 are shown in Chart I in para 55, and are given in the last column of Table 22 The employment rate is the corrected rate, described in para 54 The curve in the lower half of Chart V, described as "U.S A. Business Index," represents an index number, constructed by Miss Dorothy S Thomas and published in the *Journal of the American Statistical Association* for September, 1922 Its composition is described briefly in para A46 below, where it is used to illustrate the minor business cycles characteristic of the United States

[2] See Explanation of Terms in Appendix D

Chart V

BRITISH INDUSTRY AND EMPLOYMENT 1860-1913 AND U S A BUSINESS
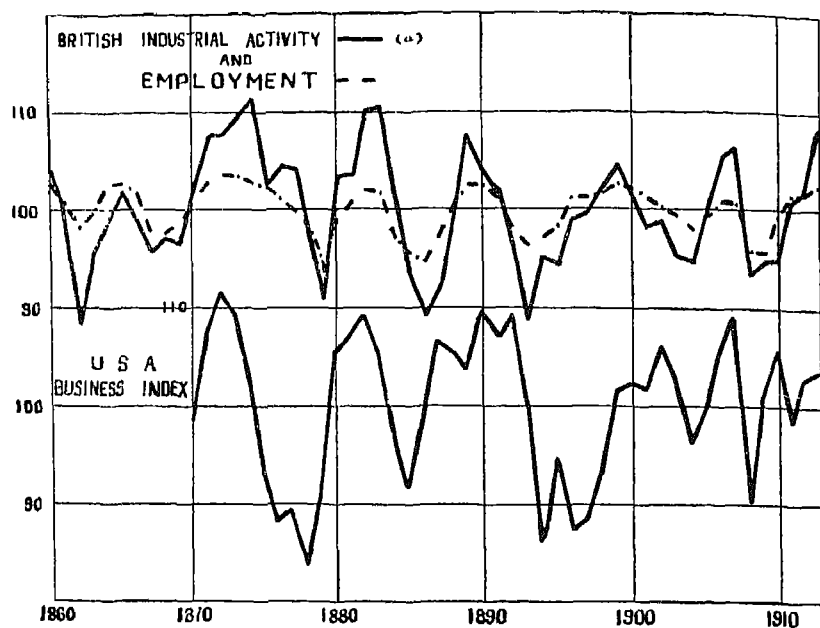
Chart VI

INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN 1920–38
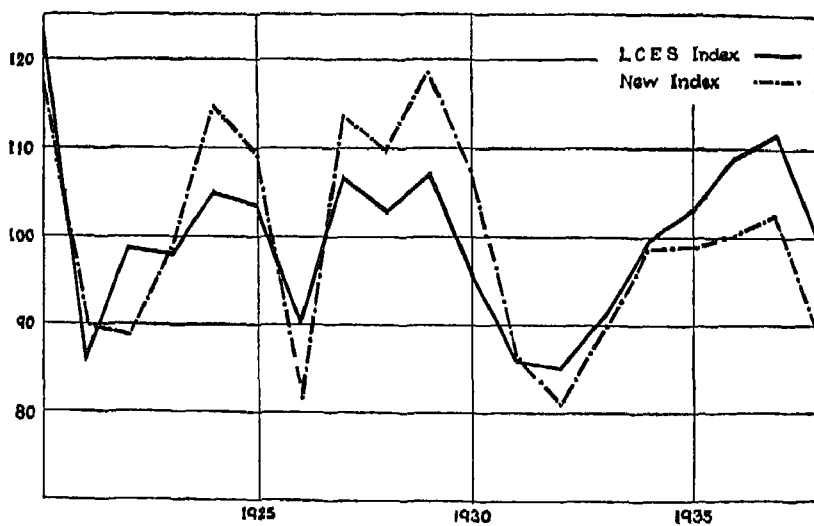
shows an upward trend. The new index with its narrower basis gives a much larger relative representation to textiles and to other trades dependent on export; it shows no definite trend from beginning to end of the interval between the wars As records of fluctuation from year to year the two indices show remarkable agreement. If the London and Cambridge Economic Service index numbers are expressed as deviations from a straight line representing their trend,[1] the two indices show practically the same movement, as appears from Chart VI The coefficient of correlation between them is 0 87

CYCLICAL FLUCTUATION IN BRITAIN

8. The new index, as pictured in Chart IV, shows a succession of waves, of crests alternating with troughs Some of the crests or troughs are more clearly marked than others, but there is no serious difficulty in singling out years of boom and years of depression as set out below. The earliest of these crests is at 1792, the last before the first World War, is at 1913 That stretch of one hundred and twenty-one years covers fifteen fluctuations, giving an average length of just over eight years.

CYCLICAL FLUCTUATION IN BRITAIN

Crests	*Troughs*
1792	1797
1803	1808
1810	1816
1818	1821
1825	1832
1836	1842–3
1845–6	1849–50
1853	1858
1860	1862
1865	1867
1874	1879
1882–3	1886
1889	1893
1899	1903–4
1906–7	1908–9
1913	—

9. What is implied in giving to the succession of waves that appear in the record of British industrial activity the name of "the international trade cycle"? This title, as is said above, implies two definite views as to the nature of the phenomenon described One

[1] The L.C.E.S. figures represented in Chart VI are given in the last column of Table 22 from 1920 to 1938.

is that it is international, common to a number of different countries The other is that the fluctuation represents more than a succession of disconnected accidents—that its successive waves have more in common than the mere fact of being waves, and are marked by uniformities sufficiently important to justify a unifying title.

THE TRADE CYCLE IS INTERNATIONAL

10 The international character of trade fluctuation hardly calls for much emphasis in a generation which has experienced the events of 1929 to 1937, and the world depression included between those years No summary, however brief, of all the data upon this subject can be attempted here. The community of suffering of nearly all nations, whether industrial or agricultural, in that period is a commonplace As will be shown later, this fluctuation from 1929 to 1937, while more violent than anything experienced in the past, has all the essential features identifying the trade cycle before the first World War It is a lineal descendant of past fluctuations, and it is manifestly international. To illustrate the international character of the earlier fluctuation it is sufficient to place upon the same Chart VII the index of British industrial activity and three curves for other countries, based on readily available material drawn from the recent work of an American statistician, Dr Simon Kuznets [1] One of these curves represents cyclical fluctuation in the

[1] In his study of *Secular Movements in Production and Prices* (Houghton Mifflin Company, 1930), Dr Kuznets gives for each element two series of index numbers of fluctuation, in columns III and V respectively, of his statistical tables Column III shows the deviation of the datum for each year from the primary trend lines for the whole period covered, usually a logistic curve. that is to say, the datum for each year as a percentage of the corresponding trend ordinate Column V shows the deviation of these percentages from their running average of seven, nine or thirteen years that is to say, the percentage in each year as a percentage of the running average Column III shows the total fluctuation, including both what Dr. Kuznets describes as secondary secular movements and the cyclical fluctuation Column V is cyclical fluctuation after elimination both of primary trend and secondary secular movements In preparing the new index of industrial activity for Britain from 1785 to 1913, I followed Dr. Kuznets in calculating two series, one (*a*) showing the datum for each year as a percentage of the corresponding trend ordinate and corresponding to Dr Kuznets' column III the other (*b*) showing this percentage for each year as a percentage of a running average, usually of nine years and corresponding to his column V In view of the significance attached by Dr Kuznets to his column V, I have used that column in presenting the American curves in Chart VII and have used my series (*b*) for the British curve which accordingly differs from the figures in Table 22. But I am doubtful as to the general utility of this attempt to eliminate secondary secular movements and for all other purposes have used the figures of Table 22.
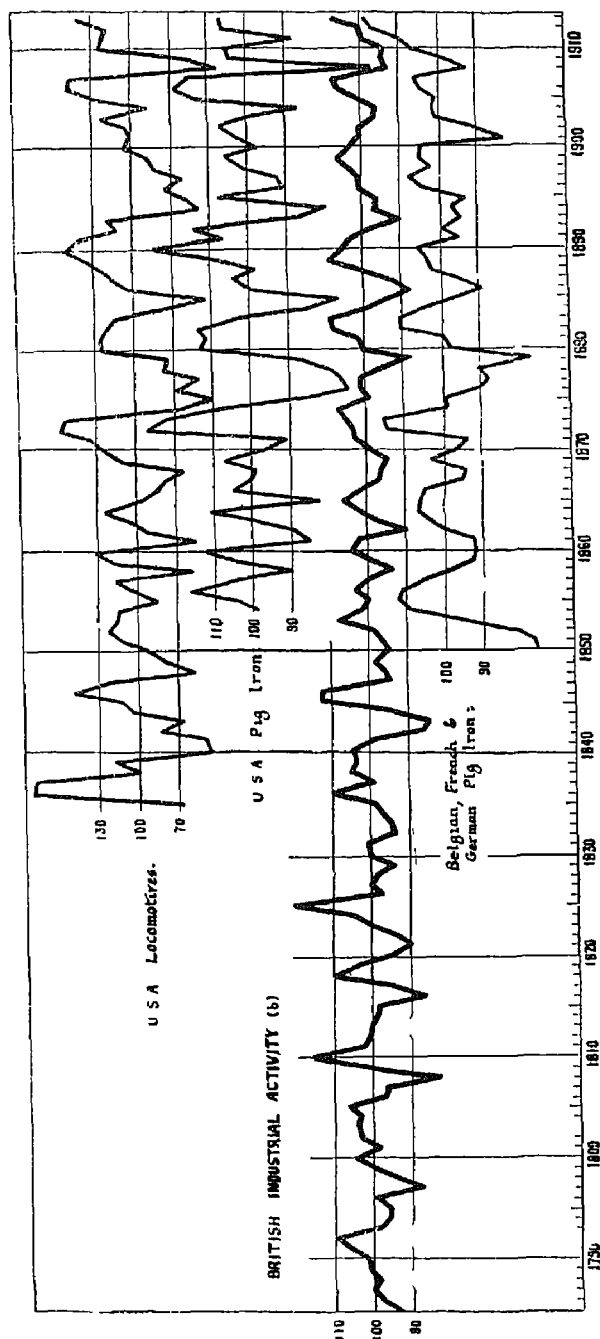
production of American pig iron; another represents the mean of corresponding data for three countries of Continental Europe—Belgium, France and Germany; another represents the activity of the Baldwin Engineering Works in Philadelphia from 1835 to 1913. It is obvious that, though each of these curves at times shows individual movements, varying from the others and from the British fluctuation, there is a large measure of agreement between them. The agreement of the curves, as measured statistically by the correlation coefficient, is enough in each case to establish beyond reasonable doubt a real connection, that is to say, to demonstrate a common factor underlying the phenomena that they record.[1]

11. This is the more interesting because of the character of the series compared—that is to say, their freedom from money or prices. Professor Pigou, in his work on *Industrial Fluctuations*, illustrated the international character of these movements by the close parallelism in the course of prices in the chief European countries and in the United States. I myself, in my first discussion of cyclical fluctuation, used statistics of export values to establish the same point It is not surprising, however, that prices, i.e. the wholesale prices of the principal commodities, should move together in different countries; the commodities covered by these statistics are for the most part commodities with a world market. It is even less surprising that the values of goods exported from different countries should move together, they are knit together not only by prices but by being exchanged for one another. The curves presented here are of a different character—free from the price element and representing industrial activity as a whole, not for export only. There is no direct link between the pig iron production of different countries, making it natural that when production rises (or falls) in one country it should rise (or fall) in another; on some views it might have been expected that increase in one country would have meant a decline, under competition, elsewhere. The curves presented in Chart VII establish the international character of the trade cycle empirically and beyond question.[2]

[1] British industrial activity from 1860 to 1913, as shown on Chart VII, has correlation coefficients of 0·65 with U.K pig iron production, of 0 53 with the pig iron production of Belgium, France and Germany taken together, and of 0·45 with U S A pig iron production Figures for French pig iron production are available from 1824, and from 1824 to 1859, and have a correlation coefficient of 0 42 with British industrial activity.

[2] The *U S A Business Index*, constructed by another authority (Miss Dorothy S. Thomas), and represented in Chart V and described in para A46 below, shows the same general agreement with the course of cyclical fluctuation in Britain.

12. Perhaps the most interesting of the three curves, because of its length, is that which deals with the production of locomotives in the works of the Baldwin Company at Philadelphia, covering nearly eighty years from 1835 to 1913. Except in the ten years 1894-1903, the agreement between the waves of this curve and the British curve is remarkable; the correlation coefficient over the whole period is 0·44. The range of fluctuation of the Baldwin curve is much greater than that of the British curve, engineering is one of the more fluctuating industries and the activity of a single firm may well be more fluctuating than that of many firms [1] But these details are secondary The main point standing out from the juxtaposition of these two curves—prepared in independence of one another from totally different materials—is the community of economic experience which has linked the United States of America and Britain, certainly for a hundred years, probably throughout the time of their political separation They have swung from prosperity to adversity and back again together; they have a common interest in discovering the causes of cyclical fluctuation and then inventing a cure.

FOUR UNIFORMITIES IN THE TRADE CYCLE

13 The term "cycle," as used here, does not imply the recurrence of similar events at equal intervals of time. The intervals from one industrial boom to another, or one industrial depression to another, are not equal, as are the intervals from one summer solstice to another summer solstice; the crests of the curve in Chart IV are separated by periods ranging from five to eleven years. Some dictionaries and some writers limit the use of the term "cycle" to recurrence in equal periods But etymologically the term "cycle" does not include that connotation; it means return—that the wheel comes round; it does not require or suggest that each revolution of the wheel takes the same time. For recurrence at uniform intervals of time the word "periodicity" is available. It is a waste of words to keep two words for one and the same thing, particularly when a word is urgently needed to describe recurrence without implying equality in the length of each revolution. The term "cycle" is used here for this purpose. Use of this term is meant to imply a

[1] There is also some tendency for the Baldwin Company figures to move in advance of the British figures, as is shown by the fact that the correlation coefficient is actually a little higher—at 0 46—if the Baldwin figures are taken a year in advance.

great deal more than that business fluctuates, that one wave succeeds another It implies similarities between the different waves; in each some common features; in each a recurrence in the same order of the same phases. "Cycle" is used here as it is used when we speak of the "life cycle" of a species—the succession of phases of birth, growth, adolescence, maturity, and decay through which every individual passes, though the timing of these phases is not always the same. The use of a single unifying title—such as "trade cycle," in place of such a title as "industrial fluctuations" in the plural as used by Professor Pigou, has to be justified—it can be justified—by showing in all the waves uniformities so important as to make a similar pattern for each of them and point to a persistent underlying cause.

14. No attempt can be made in the limits of this Appendix to give all the evidence justifying this position, that is to say, to describe all the regular features of the trade cycle. It will be sufficient to deal with four of them: the parallel movement of prices and production; the greater range of fluctuation in certain industries either as making durable goods or producers goods; the greater range of fluctuation in British export industries; and the earlier incidence of fluctuation in British export industries These do not by any means exhaust the list of uniformities, but they are sufficient to establish the case.

(i) *The Parallel Movement of Prices and Production*

15. The first regular feature of the trade cycle, in the words of Professor Haberler, is, "that the cyclical ups and downs of production and employment are accompanied by a parallel movement of the money value of production and transactions "[1] As stated by Professor Haberler, this feature implies not necessarily a rise of prices in the upward phase of the fluctuation, but only that prices should be maintained or should not fall so far as to compensate for the increase in production or transactions. the statement is made in this form to cover the case of the American expansion before 1929 "The case of constant or even falling prices (in the upswing of the cycle) has occurred, so far as I know, only once; that is to say, during the last boom in America and elsewhere Even in this case it was only true of commodity prices: factor prices and stock-exchange prices rose "[2] An actual rise of prices accompanying the rise of production is the normal feature of the upswing, occurring always unless prevented by exceptional causes

[1] *Prosperity and Depression*, p. 180.

[2] *Op cit*, p 180 note.

16. Rise of the general level of prices with the upward swing of production, followed by a fall of prices with the downward swing, implying a fluctuation of money in quantity or velocity greater in range than the fluctuation of production, is one of the most familiar features of cyclical fluctuation. It is the basis of Mr. R. G. Hawtrey's doctrine that the trade cycle is "a purely monetary phenomenon" arising from the inherent instability of credit. It is used by Mr R F Harrod as an empirical fact about the trade cycle, not discoverable by introspection or deduction from first principles. The evidence for the existence of this feature in Britain and elsewhere since the middle of the nineteenth century is abundant and need not be repeated here. With the new index of industrial activity it is possible to carry enquiry as to this feature in Britain back to earlier periods, and to get an interesting result. From 1815 to 1849 the new index and commodity prices show parallel movement; from 1785 to 1814 they do not [1] This negative result for the earliest period is not surprising That was a period of nearly continuous war, with prices distorted by inflation and other political expedients It is the kind of exception which proves the rule.

(ii) Greater Range of Fluctuation in Producers' or in Durable Goods Industries

17. The second of the regular features of cyclical fluctuation named by Professor Haberler is that such fluctuations "are more marked in connection with the production of producers' goods than in connection with the production of consumers' goods."[2] Evidence is given by him covering the United Kingdom, United States of America, Germany, Sweden, and Australia. To the statement of the feature he adds an explanation "When we speak of consumers' goods we mean perishable consumers' goods (such as food) and semi-durable goods (such as clothing, shoes and furniture). Durable consumers' goods (such as apartment houses) show very wide fluctuations, and belong rather to the category of capital goods, for reasons which will be discussed later." Professor Haberler elsewhere (in the index to his book) treats "producers' goods" and "capital goods" as synonymous, and as covering two distinct conceptions of durability of the product and of place in the productive process. In this, he follows a common, but unfortunate, practice.[3]

[1] *Oxford Economic Papers*, February, 1940, pp. 86–7.

[2] *Prosperity and Depression*, p 180

[3] Mr R. F. Harrod treats "capital goods" and "durable goods" as synonymous and formally includes residential houses among capital goods Professor Pigou treats "producers' goods," "production goods" and "instrumental goods" as synonymous.

"Producers' goods," i.e. goods used by producers in the process of production, are by no means all durable; it is necessary only to mention explosives, chemicals, fuel and lubricants, which are perishable, and rubber, paper, leather, which are at best semi-durable "Consumers' goods," equally with "producers' goods," exhibit every variety of durability from houses to tobacco and services. Durability, and the feature of making goods not for consumers directly but to be used in production, are different characteristics, with no necessary connection between them To identify them verbally, is bound to lead to confusion. To ignore the possibility that they are not only different characteristics in themselves but may each have an independent influence in cyclical fluctuation is to risk missing a clue to the secret of the trade cycle.

18. There is no doubt of the special violence of fluctuation in recent times in industries making instruments of production, such as engineering, ship-building and vehicles, with constructional industries like building also showing marked, though usually smaller, fluctuation. The evidence on this point is abundant and there is no need to add to it here. The difficulty is that instrumental goods are both producers' goods and very durable, while the products of constructional industry are also largely producers' goods and even more durable. To which of these features—of durability or of place in the productive process—the greater liability to fluctuation should be attributed cannot be determined from these industries alone.

19 The material collected here makes it possible to add to knowledge in two ways. First, as is shown in paragraph A27 below, by use of the new index of industrial activity, this feature of greater violence of fluctuation in instrumental and constructional industries can now be carried back into the eighteenth century. Second, by use of unemployment insurance records it is possible to throw light on the question whether durability of the product as such or place of the industry in the productive process is the principal factor making for greater violence of fluctuation

20. The effect of durability of the product can be tested by comparing, so far as possible, industries occupying the same place in the productive process but supplying products of different degrees of durability. Looking first at consumers' goods, there is no doubt as to the greater violence of fluctuation in industries making for consumers durable goods like houses or motor cars. But apart from these, and leaving out the textile industries because of their exceptional dependence on export, there appears to be clear evi-

dence of a connection between the life of the product and the range of cyclical fluctuation in consumer industries generally. This is shown by Table 24 for the depression beginning after 1929 The table classifies the consumer industries, other than those making durable goods like houses, or textiles, according to the durability of their product and shows the percentage decline of males in employment in each industry from the boom of 1929 to the ensuing depression It will be seen that there is a steady decline in the severity of the depression from the semi-durable to the perishable goods and an actual increase of employment in the industries supplying consumer services

Table 24

CONSUMER INDUSTRIES CONTRACTION FROM 1929*

Semi durable goods		Semi perishable goods		Perishable Goods		Services	
Musical Instruments	37	Hats and Caps	18	Cocoa	11	Gas, Water Electricity	+ 1
Leather	35	Tailoring	14	Grain Milling	10	Hotels	+ 2
Oilcloth	22	Dress	13	Oil-Glue Soap	7	Distributive	+ 9
Pottery	19	Boots, Shoes	12	Drink	7	Professional	+ 9
Watches, Clocks	16	Hosiery	7	Other Food	3	Laundries	+ 10
Scientific instruments	12	Glass bottles	7	Bread	1	Trams and 'Buses	+ 13
Furniture	8	Shirts	7	Tobacco	1	Entertainment	+ 18
		Stationery requisites	7	Printing	+ 3		
		Toys, Games	7				
		Brushes	5				
Means							
Unweighted	21 3		9 7		4 4		+ 7 3
Weighted by insured males in 1929	16 0		10 2		2 4		+ 8 3

* The numbers represent the percentage fall or rise of the number of males in employment from July, 1929 to 1932 or other year of maximum depression Numbers without a sign indicate a fall, + indicates a rise Textiles are excluded

21 It is not easy to make a similar comparison between producers' goods industries, uncomplicated by other factors, but so far as such a comparison can be made, it points in the same direction The industries making producers' goods other than instrumental, extractive, constructive and metal manufacturing show a materially smaller fall of employment from 1929 to the depression than do the instrumental industries—engineering, shipbuilding and vehicles; the essential difference between these groups of industries lies in the

durability of their products Again, within the "other producers' goods" group, the industries making semi-perishable goods like glass, rubber, leather, paper, appear to experience a milder fluctuation than those making semi-durable goods, such as wood boxes, brass-ware, stoves, grates and pipes, and hand tools.

22. The comparisons in the last paragraphs relate only to the latest cyclical depression between 1929 and 1937 There is no material for an equally detailed comparison in earlier periods. But from the trade union returns it is possible to compare the range of fluctuation as between woodworking and furnishing, on the one hand, and printing and bookbinding, on the other hand, from 1860 to 1913 These two groups of industries are mainly engaged in supplying consumers In practically every cyclical depression throughout that period, the first group, making semi-durable goods, shows a greater rise of unemployment than the second group, whose products are largely perishable

23. While the connection between durability and fluctuation seems to be established, the evidence for believing that to occupy an early place in the productive process, apart from durability, increases the range of fluctuation, is weaker and less abundant than might be supposed from the emphasis that has been laid on this factor in most studies of cyclical fluctuation It is for Britain at least a question of probabilities rather than of rigorous proof But it is highly probable. Thus, building has a large element of work for consumers, in spite of the durability of its product, it shows normally a much smaller contraction in the course of a cyclical fluctuation than does the instrumental group. So, too, the motor vehicle, cycle and aircraft industry, working largely both for producers and for consumers, has a smaller contraction than engineering. The transport industries, other than trams and omnibuses, in the main render producer services, they show greater fluctuation than the consumer services

24 It should be added that for building from 1923 to 1938, it is possible to distinguish between dwelling-houses and other types of building in the returns of plans approved by one hundred and forty-six local authorities in Great Britain. The estimated cost of buildings of various types whose plans were approved each year is shown in Table 25 on the following page

All the different types of building show a marked upward trend and the building of dwelling-houses is clearly affected by changes of public policy Taking only the years 1927–38 and eliminating the trend, the range of fluctuation in plans for dwelling-houses, as

Table 25

BUILDING PLANS APPROVED, 1923–38—BY TYPES OF BUILDINGS

ESTIMATED COST OF BUILDINGS £000

Year	Dwelling Houses	Factories and Workshops	Shops, Offices and other Business Premises	Churches, Schools, and Public Buildings	Other Buildings and Additions and Alterations to existing Buildings	Total
1923	31,778	3,632	4,218	2,992	8,081	50,701
1924	37,667	3,785	4,865	3,307	8,558	58,182
1925	45,358	4,354	4,411	3,920	8,404	66,447
1926	46,209	3,752	5,075	4,691	7,903	67,630
1927	39,889	4,978	5,667	5,014	8,734	64,282
1928	40,124	5,427	6,633	6,113	9,138	67,435
1929	44,260	6,243	5,878	7,657	9,056	73,094
1930	46,764	4,581	5,475	8,402	9,383	74,605
1931	40,492	2,734	5,214	7,198	7,372	63,010
1932	46,888	3,072	4,748	4,668	6,878	66,254
1933	62,308	3,697	4,376	5,969	7,332	83,682
1934	69,586	6,073	5,021	5,872	9,011	95,563
1935	78,429	7,670	7,911	9,028	11,270	114,308
1936	75,062	10,061	8,753	10,809	12,347	117,032
1937	67,638	9,276	10,324	10,900	12,783	110,921
1938	60,004	7,469	9,495	9,498	11,134	97,600

measured by standard deviation[1] from trend, is only half the range for factories and other business premises taken together, and is materially less than that for churches, schools and other public buildings The depression between 1929 and 1937 is far more marked in relation to factories and workshops than it is in relation to dwelling-houses. So far as this goes, it is direct evidence of greater range of fluctuation in making for producers rather than for consumers but it relates to an exceptional time.

25. The greater violence of cyclical fluctuation in instrumental industries must be attributed primarily to the greater durability of their products, and secondarily to their place in the productive process Whatever the cause, the fact of greater fluctuation is certain and has long been recognized It remains to consider two features of cyclical fluctuation which are in fact as regular as the parallel movement of prices and production and the greater range of fluctuation of instrumental industries, but which have not been recognized hitherto These are, on the one hand, the greater range of fluctuation, and, on the other hand, the earlier incidence of fluctuation in British export industries

[1] See Explanation of Terms in Appendix D

(iii) *Greater Range of Fluctuation in British Export Industries*

26 Dependence on overseas trade as a factor increasing violence of fluctuation in the period 1929–37 appears most clearly from Table 26, setting out figures for textiles in the same way as those for consumer industries in Table 24. The products of textile industries are for the most part consumers' goods of no great durability, yet six of the industries—jute, cotton, linen, silk, textile bleaching, and wool—show severe contraction of employment from 1929 to 1932—more than twice the mean for all industries taken together; all but one of the six (silk) are largely dependent on exports By way of contrast, hosiery, which of all British textile industries is least dependent on exports, has the smallest contraction of employment. The textile industries as a whole show a contraction of employment nearly twice as severe (28·6 per cent) as that of the consumer industries making semi-durable goods (16 0 per cent). Dependence on exports is probably a factor also in the relatively high degree of contraction shown by all the metal manufactures, and by some of the "other producers' goods" and "other consumers' goods" industries, such as hand tools, chemicals, explosives and musical instruments In any case, the significance of overseas trade as affecting the range of cyclical fluctuation in the period 1929–37 is established by the textile industries It appears also in both the earlier fluctuations, 1907–13 and 1900–6, for which trade union returns of unemployment in textiles are available

Table 26

TEXTILE INDUSTRIES CONTRACTION FROM 1929*

	To Year	*Percentage fall from* 1929
Jute .	1932	69
Cotton .	1931	34
Linen	1932	32
Silk	1931	31
Textile Bleaching	1931	27
Wool .	1931	22
Hemp, Rope, etc	1932	19
Carpets	1931	17
Lace .	1931	16
Textiles unspecified	1932	12
Hosiery ..	1931	7
Mean Unweighted		26 0
Weighted by insured males in 1929		28 6

* The numbers represent the percentage fall in the number of males in employment from July, 1929, to the year of maximum depression

27. It is not necessary, however, for the period before the first World War to rely on the trade union returns for evidence of marked fluctuation in the activity of the textile industries That is provided by the new index of industrial activity, in which separate figures are given for each of three main groups—construction and instruments, textiles, and other industries. These separate figures are plotted in Chart IV, while in Table 27 below standard deviations for each group and for all industries together are given for each of four sub-periods from 1785 to 1913 and for 1920–38.

Table 27

RANGE OF CYCLICAL FLUCTUATION IN VARIOUS PERIODS*

	Construction and Instruments	Textiles	Other Industries	All Industries
1785–1814	12 4	9 8	4 9	6 7
1815–1849	19 0	10 0	5 7	9 2
1860–1886	10 8	6 6†	4 8	6 4
1887–1913	8 5	5 5	4 2	4 9
1920–1938	22 0	10 2	12·0	11·3

* The figures in this table are the standard deviations of the series shown in Table 22
† Omitting 1860–5

The construction and instruments group of the index covers, so far as the data are available, both industries making instrumental goods or the materials largely used therein (shipbuilding, engineering, iron) and building (represented by bricks, tiles, and timber), which is an industry engaged largely in making durable goods for consumers In each of the four sub-periods before 1914 the range of fluctuation is greatest for the construction and instruments group and least for the other industries, with textiles intermediate In the period 1920–38 the construction index fluctuates much more violently than either of the other groups, between these two there is no substantial difference This approximation between textiles and other industries appears in Table 27 as the end of a continuous process by which fluctuation in textiles, from being at the outset nearly as violent as that in construction and twice as violent as that other industries, has fallen steadily in relation to the former and has come nearer to the latter Whether this represents a real change or is due to change in the basis of the index cannot be decided without further enquiry But the greater range of fluctuation in textiles up to the first World War can hardly be due to anything but their dependence on overseas demand. Their products in general are less

durable than those of the other industries and are to a larger extent consumer's goods. Since, in spite of this, textiles fluctuate more than other industries. Table 27 gives clear evidence of the influence throughout the period covered by it of dependence on overseas demand as a factor increasing the range of cyclical fluctuation. This—the third of the facts named in paragraph A14—is added to the uniformities of the trade cyelc.

28. Table 27 yields another result of great interest. The violence of fluctuation, as measured by standard deviation, increases from the first to the second sub-period and decreases thereafter to the first World War. Since this applies to each group separately as well as to all industries in combination, it represents presumably a real change in the trade cycle itself This is a fact which may be important in throwing light on the cause of the trade cycle The last line of the table shows in the period between the wars return to a much greater violence of fluctuation. The new index in this period is less fully representative than in earlier periods, but the very comprehensive index prepared by the London and Cambridge Economic Service has from 1920 to 1938 a standard deviation from trend of 9·4 per cent, a little less than the 11·3 shown by the index in this period and practically the same as the 9 2 per cent given by the new index for 1815–49 The broad result is that industrial fluctuation between the two World Wars was much more violent than it had been since the middle of the nineteenth century, but was comparable to the fluctuation experienced from 1815 to 1849

(iv) *Leadership in Time of British Exports*

29 The fourth persistent feature of cyclical fluctuation is the leadership in time, into and out of depression, of those industries in Britain which are dependent largely upon exports. This is not, like the first two features named above, a long established and familiar fact. It is a recent discovery; I do not know how far it has been accepted as established by other students of the trade cycle But there is, I believe, no doubt about it It came to my notice first in an analysis of unemployment statistics from 1927 to 1938, showing textiles and metal manufactures leading the way into and out of the depression of 1931–2 and in the downward movement of 1938 which has now ended in war in place of depression Analysis of trade union unemployment statistics gave similar results, so far as data were available, for earlier fluctuations between 1872 and 1913. I gave my results first in a paper read to Section F of the British Association at Cambridge in August, 1938, and briefly in

an article in the *Economic Journal* of March, 1939. Mr D. G Champernowne, who was working at employment and unemployment at that time, partly with me and partly independently, came independently on the same feature—of the early incidence of fluctuation in textiles—and was due to read a paper at the same British Association meeting, which would have made the same point He was prevented on that occasion by illness, but gave his results, emphasizing the significance of exports, in an article in the *Review of Economic Studies* for 1938–9 Further investigations, some by myself and some by my colleague, Mr J H. Wilson, not yet published, and so far as he is concerned now interrupted by Government service, have gone far enough to establish beyond reasonable doubt the connection of this leadership in time of certain industries in recent cyclical fluctuation with their dependence on demand for British exports. With the new index of industrial activity it is possible to carry the enquiry to an earlier period, with the same results.

30. The timing of cyclical fluctuation by industries in the most recent period is shown compendiously in Table 28 below, which for each of 12 groups of industries sets out unemployment rates from 1927 to 1938 as index numbers, that is to say, as percentages of the mean rate over the ten years, 1927–36. Chart III, printed in paragraph 100, shows the index numbers for some of the groups. For reasons already explained, the figures relate to insured males only, since in some of the critical years from 1930 to 1933, unemployment insurance statistics for women and girls are affected by administrative changes. The industries included in each group are identified in Table 33, in Appendix B, where all the industries are set out separately, though in a different order Here it will be sufficient to say that the instrumental group includes engineering in its various forms, shipbuilding and construction of vehicles The constructional group, in addition to building, includes the making of building materials and one or two industries ancillary to building. In the "other producers' goods" group, the principal industries are chemicals, stove grate and pipe-making, electrical cable and apparatus, tanning, coke ovens, paper, rubber and unspecified metal trades In the "other consumers' goods" group, the most important industries are printing, furniture, oil soap ink etc , pottery, and musical instruments. For each group the figure for the year of maximum depression—1931 or 1932—is shown in heavy type The "miscellaneous" group is included for completeness, but in each of these industries, for one reason or another, the insurance statistics give an incomplete picture.

Table 28

UNEMPLOYMENT INDEX NUMBERS BY GROUPS OF INDUSTRIES, 1927–38

(Male Unemployment Rates weighted by Insured Persons in 1929 1927–36 = 100)

Numbers and Groups of Industries	Insured Persons July 1929 1,000's	Unemployment Index Numbers											
		1927	1928	1929	1930	1931	1932	1933	1934	1935	1936	1937	1938
8 Instrumental	1,280	59	61	58	103	165	**176**	148	98	80	53	37	49
7 Constructional	1,029	58	70	70	97	130	**166**	136	105	92	78	80	83
6 Metal Manufacturing	324	64	67	64	123	**167**	164	126	90	79	57	39	81
11 Textiles	1,317	46	59	63	150	**160**	136	111	107	95	74	64	110
6 Food	467	62	67	71	94	125	**135**	127	116	109	93	80	82
5 Clothing	580	55	66	68	99	129	**137**	128	116	108	96	89	99
7 Consumers' Service	2,661	55	61	65	92	119	**133**	130	121	119	106	91	97
15 Other Consumers' Goods	816	59	56	58	93	142	**155**	137	112	102	86	75	84
17 Other Producers' Goods	847	63	64	60	107	159	**161**	132	98	88	66	53	78
5 Transport	651	65	75	75	100	121	**136**	131	106	103	89	75	85
1 Coal Mining	1,075	73	85	63	82	120	**138**	130	113	104	91	60	63
6 Other Extractive	108	43	51	54	90	137	**172**	153	115	104	79	67	71
6 Miscellaneous*	939	56	60	68	88	112	**129**	126	126	124	111	113	101
100 All Industries	12,094	58	65	65	101	135	**146**	131	111	103	86	73	86

* Fishing, Public Works, Commerce, National Government, Local Government and "Other Industries"

31. The table illustrates two of the other features of cyclical fluctuation already noted, namely, the greater range of fluctuation in instrumental and constructional industries, as compared with other industries, and the greater range of fluctuation in textiles, as compared with other consumer industries The special significance of Table 28 is in relation to the timing of cyclical fluctuation Whereas all other groups of industries reach their maximum of depression in 1932, two groups, namely metal manufacturing and textiles, reach their maximum a year before in 1931 and textiles in particular show a marked recovery in 1932; in other words, these two groups lead out of the depression. In this respect the group averages shown in Table 28 represent fairly the experience of each of the individual industries in the group The two groups which lead out of depression are also those which move into depression most rapidly The proportionate increase of unemployment rates from 1929 to 1930 is greater for textiles and for metal manufactures than for any other group. That is to say, these two groups lead into depression as well as out of it As is noted later (paragraphs A43–4), this leadership into depression by these groups is repeated in 1938.

32 It may be suggested that the early recovery of the British export industries from the Great Depression was due to special circumstances, namely, the departure of Britain from the Gold Standard in September, 1931 This, however, is not the case Detailed examination of the course of cyclical fluctuation quarter by quarter in these industries shows that recovery had begun before Britain left the Gold Standard Cotton, linen, tin-plate and steel-melting all reached their maxima of unemployment in the last quarter of 1930, jute, chemicals, explosives and dock and harbour service—all industries with large dependence on export—reached their maxima before the middle of 1931. The leadership in time of this particular group of industries out of the Great Depression was due to permanent and not to exceptional causes

33. Discovery of these facts as to the timing of cyclical depression between the two wars, led to an enquiry whether the same thing happened before the first World War By use of the trade union returns, it has proved possible to construct unemployment index numbers by groups of industries for each of five earlier fluctuations, namely, 1907–13, 1900–6, 1890–9, 1883–9, 1872–82 Tables 29 and 30 for two of these periods—1907–13 and 1890–9—are given below and are illustrated by Charts VIII and IX, in the earlier of these periods, the figure for textiles is based not on trade union returns, but on raw cotton consumption. It will be seen that in both these

Table 29

UNEMPLOYMENT INDEX NUMBERS, 1907–14

(Mean of 1907–13 = 100)

Industrial Group	1907	1908	1909	1910	1911	1912	1913	1914*
Instrumental	73	191	**201**	105	53	41	34	43
Constructional	98	155	**157**	115	68	55	51	60
Metal Manufacturing	58	**187**	147	102	78	68	52	73
Textiles	68	**169**	110	110	101	77	72	76
Other Producers' Goods	107	148	**163**	109	72	55	61	55
Other Consumers' Goods	92	**127**	125	105	91	89	70	61
Coal Mining†	72	119	**135**	116	116	83	62	77

* January–June only

† The figures given here for coal-mining take account both of the average number of days worked per week and of the unemployment of individual men as recorded by the trade unions

Chart VIII

UNEMPLOYMENT INDEX NUMBERS 1907–14
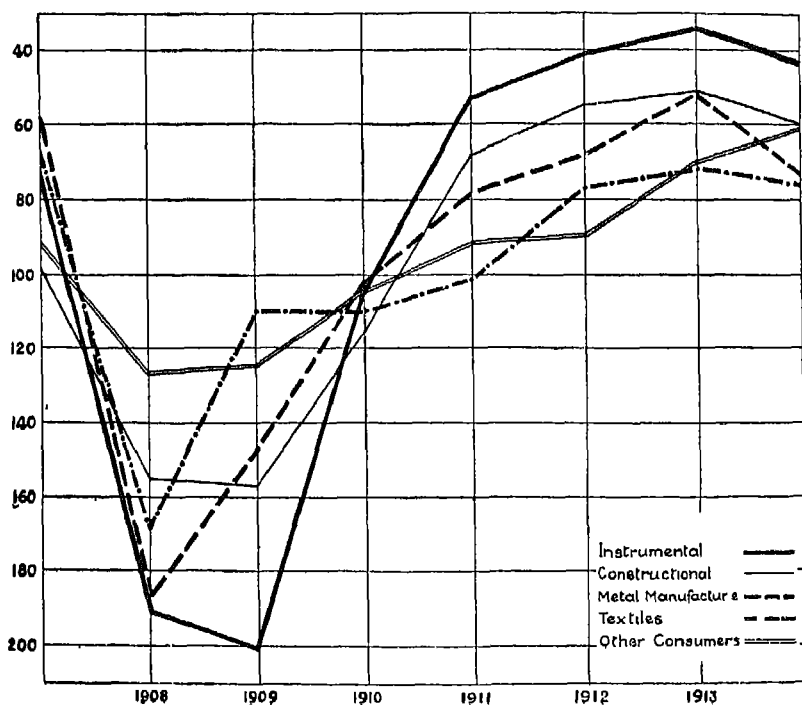
Table 30

UNEMPLOYMENT INDEX NUMBERS, 1890–9

(Mean of 1890–9 = 100)

Industrial Group	1890	1891	1892	1893	1894	1895	1896	1897	1898	1899
Instrumental	41	71	134	177	**182**	134	62	79	72	47
Constructional	84	95	115	146	**159**	148	72	64	55	63
Metal Manufacturing	24	124	122	**206**	89	106	94	95	113	22
Textiles (Cotton)[1]	(73)	(74)	(120)	**(137)**	(102)	(100)	(109)	(114)	(85)	(85)
Other Consumers' Goods	51	94	110	124	**146**	122	89	87	86	92

[1] Based on raw cotton consumption

Chart IX

UNEMPLOYMENT INDEX NUMBERS 1890–1899
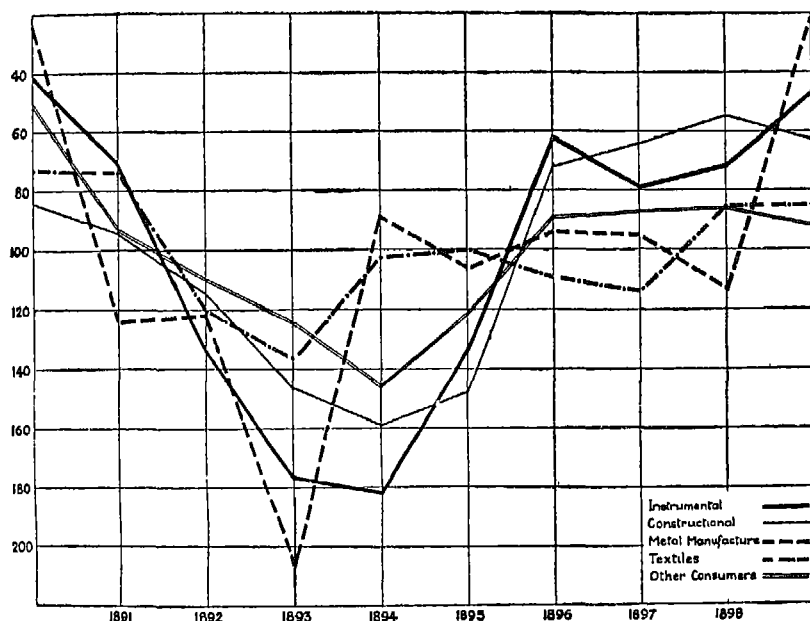
periods the same two groups of metal manufacturing and textiles take the lead, having their maximum depression a year before the other groups The tables for the other fluctuations between 1872 and the first World War all give, with minor variations, the same result. The leadership in time in cyclical depression of the metal

manufacturing and textile groups of industries in Britain is established from 1870 onwards The metal manufacturing group is engaged almost wholly in making producer goods of a high degree of durability The textile group is engaged mainly in making consumer goods of low durability. The only thing common to the two groups is the large measure of their dependence on overseas demand. That this is a factor explaining their common leadership in depression, is made clear by detailed examination of the groups In each group, so far as information is available, the industries which are most dependent on overseas demand, such as tin-plates, cotton and linen, show a tendency to move into depression even earlier than the other industries of the group.

34 With the new index of industrial activity, the enquiry can be carried back to an earlier period, taking the form of a comparison of the new index with the course of British exports as valued officially. These official values—the only ones available before 1801 and continued to 1857, though "declared" or true values were also being calculated—were changed only at rare intervals, if at all Their movements accordingly reflect fluctuation in the quantity rather than in the value of exports; for the purpose of comparing one year with a neighbouring year they can safely be taken as a guide to quantities.[1] They show an invariable tendency for exports to fall violently immediately after a crest of industrial activity and to rise markedly, if less violently, immediately after a trough. This tendency appears clearly in Table 31, where the deviation from trend of the industrial activity index in each crest year and each trough year is set beside the deviation of official export values in the same year and in the year following It will be seen that the export index, which has usually been a large positive in the crest year, is a large negative in the next year; conversely from being negative in the trough year the export index rises sharply, in all cases but one to a positive, in the next year. It is not surprising that when tested statistically, the index of industrial activity from 1785 to 1849 shows a positive correlation with official export values of

[1] The official rates of valuation for exports and imports are commonly stated to have been fixed in 1694 or 1696 and not to have been changed since that time (Porter, *Progress of the Nation*, 1847, p 358) It seems clear that changes were sometimes made in the valuations and in any case the great changes in the relative importance of different exports (e g. of cotton and wool manufactures) would make the use of official export values unmeaning or dangerous as a guide to export volumes, in comparing distant dates, say fifty years apart But this does not affect the significance of these figures for indicating changes of quantity from year to year, in a period of ten or twenty years

the same year and a negative correlation with official export values of the following year. The negative correlation coefficient is high enough to be proof of a real connection, that is to say, of a tendency of export quantities to be low in the year following a boom and to be high in the year following a depression.[1] The unemployment statistics of 1870–1938 and the official export statistics of 1785–1849 tell one and the same story about cyclical fluctuation in Britain, that exports lead into depression and out of it.

Table 31

INDUSTRIAL ACTIVITY AND OFFICIAL EXPORT VALUES

Crest Year	Deviations from Trend			Trough Year	Deviations from Trend		
	Industrial Activity	Official Export Values			Industrial Activity	Official Export Values	
		Same Year	Following Year			Same Year	Following Year
1792	+ 12·0	+ 13 0	− 17 9	1797	− 14 9	− 15·1	− 4 7
1802	+ 7 4	+ 13·9	− 8 9	1808	− 15 4	− 5 9	+ 20 2
1803	+ 7 8	− 8 9	− 5 4				
1810	+ 14 8	+ 16 5	− 21 7	1816	− 16 6	− 7 4	+ 3 7
1818	+ 7 6	+ 9 5	− 15 2	1821	− 8 1	− 1 0	+ 4 4
1825	+ 33 4	+ 0 3	− 16 4	1832	− 7 0	− 0 6	+ 1·7
1836	+ 8 1	+ 5 9	− 14 5	1842	− 12 4	− 8 4	+ 2 6
				1843	− 13 4	+ 2 6	+ 9·1
1845	+ 11 4	+ 0 4	− 0 3				
1846	+ 12 6	− 0 3	− 4 3				

35 Table 31 deals with official export values, which represent quantities rather than true values and are available only until the middle of the nineteenth century. The new index and declared export values can be compared throughout that century and to the outbreak of the first World War This comparison, made in a table in my postscript of June, 1940,[2] reveals an interesting difference in the relation of the new index and declared export values as between the early part of the nineteenth century and later. In the period 1867–1913 there is high positive correlation coefficient (+ 0·74) between the new index and exports taken simultaneously, and the

[1] The co-efficients are given in *Oxford Economic Papers*, No 3, p. 88 as — 0 33 for 1785–1814, and — 0 59 for 1815–49.

[2] *Oxford Economic Papers*, No 4, p 72.

correlation coefficient remains substantial and positive (+ 0 50) even when exports are taken a year behind On the other hand, in the period 1815–59, though there is a significant positive correlation coefficient (+ 0 50) between the new index and declared export values taken simultaneously, the coefficient becomes negative when export values are lagged a year and in respect of one group of exports, namely textiles, is high enough to be almost certainly significant (− 0 35) This contrast between the earlier and the later period is well worth further examination, with a view to determining whether it arises through a change in the character of British exports, from being predominantly textiles to including large proportions of other articles, or to a change in the character of the countries to which exports were sent, from being almost wholly agricultural to being largely industrialized with a cyclical rhythm parallel to that of Britain. It should be added that the table referred to in my Postscript gives separate correlations for the main groups of exports and shows that throughout the period covered by it from 1815 onwards, textiles move relatively early in the trade cycle, while iron and steel, coal and machinery move late This is in accord with recent experience and underlines the substantial identity of cyclical fluctuation throughout the time for which it is known to have existed

THE NEW FACTS AND THEIR MORAL

36 The fact that in Britain industries dependent on export move early in cyclical fluctuation must be taken as established and as yet another uniformity justifying the title of this Appendix The explanation of this fact still lies in the region of hypothesis Yet there is little doubt as to the direction in which the explanation will most probably be found The overseas trade of Britain consists substantially of the exchange of manufactured goods for primary products—agricultural and mineral This exchange, which in other countries, notably the United States, takes place mainly within the national boundary, for Britain takes place across national boundaries. The leading part played by British export industries in the trade cycle suggests that one of the important elements in the cycle is the relation between primary producers, and industrial communities using their products, whether food or raw materials This suggestion is supported by further facts as to cyclical fluctuation in Britain which, if not yet as well established as those given above, are highly probable.

37. The first of these probabilities is that the turning-points of

the fluctuation in Britain, both upwards and downwards, as recorded in the monthly unemployment rates, have a tendency to occur at particular seasons of the year. This apparent seasonality was named by me as a second new fact about cyclical fluctuation at the Cambridge meeting of the British Association in 1938. In the *Economic Journal* of March, 1939, the crests and troughs of cyclical fluctuation —as deduced from monthly unemployment rates after elimination of seasonal fluctuation—were set out in the following table:—

Table 32

CRESTS AND TROUGHS OF CYCLICAL FLUCTUATION IN BRITISH UNEMPLOYMENT RATES, 1890–1932

Crests		Troughs	
Single Month	Three Months Running Average	Single Month	Three Months Running Average
January, 1890	January, 1890	December, 1892	December, 1892
December, 1899	November, 1899	December, 1904	December, 1904
September, 1906	August, 1906	October, 1908	October, 1908
December, 1912	December, 1912		
July, 1929	July, 1929	August, 1932	August, 1932
August, 1937	August, 1937		

Whether judged by single months or by running averages of three months (taken to avoid chance disturbances) all the turning points but one fall into two groups from July to September or from November to January The exception falls in October 1908 between the two groups None of the ten turning points occurs in any of the months from February to June. It is difficult to believe that this concentration of the turning points of the trade cycle in Britain on certain months of the year and their avoidance of other months can have come about by chance; according to a calculation made for me by Mr. D. G. Champernowne the odds against getting by chance the result shown in Table 32 are about 22 to 1. But if the result is not due to chance, the trade cycle itself must contain a seasonal element, and seasonality in this connection can hardly mean anything but the influence of agricultural production The two seasons selected for turning points—July to September and November to January—point suggestively to the harvest seasons of the Northern and Southern hemispheres respectively. It must be taken as highly probable, though not finally established, that the trade cycle has an agricultural root.

38 The second of these probable facts is the tendency of the purchasing power of overseas buyers of British exports, as measured by the relation between import values and export prices, to turn both upwards and downwards, ahead of export quantities, and to turn at particular seasons of the year This is one of the first results of an investigation on which my colleague, Mr J H. Wilson, was engaged with me when his work was interrupted by war

39 Another result of Mr. Wilson's may be given here in further support of the hypothesis that the undoubted special significance of British export industries in cyclical fluctuation is due not to their exporting, i e. meeting demand across an international boundary, but to their supplying manufactures in exchange for primary products, largely agricultural. In cyclical fluctuation, while the total values (quantity multiplied by price) of British imports and of British exports both vary largely, the variations are different in character; imports change more in price than in quantity, while exports change more in quantity than in price The same difference appears in the experience of agriculture and of industry in the United States. From 1929 to 1932 farm prices there fell much more than industrial prices; the quantity of agricultural marketings fell much less than the quantity of industrial production.

40. Yet another suggestion from Mr Wilson's work, which it seems worth while to mention now as a clue to further enquiry, relates to the exceptional position of textiles as being normally ahead even of other British export industries in cyclical fluctuation Mr. Wilson suggests that this is probably due to the principal textile industries, notably cotton, using imported raw materials. A downward turn in the price of these materials leads to an immediate decline of buying of raw cotton and curtailing of production of cotton goods in anticipation of a further fall of material prices, even before the diminished purchasing power of the overseas consumer begins to affect export industries generally An interesting sidelight on this is afforded by the fact that the hosiery industry, which exports relatively little but depends ultimately on imported raw materials, appears to agree with the other textile industries in moving early in the fluctuation, though it does not have anything like the same violence of fluctuation

41 The new facts, established and probable, as to the international trade cycle, that are set out above, have important bearings both on theory and on practice They make it necessary to enlarge previous theories of cyclical fluctuation, in order to accommodate these facts. They point to a new direction in which preventives of

fluctuation must be sought by practical men and they emphasize the need of joint action by many nations in this field. It is difficult to avoid the conclusion that an important and hitherto almost wholly neglected element in the causation of the trade cycle is the relation between primary producers and the industrial users of their products; that a fundamental cause of the trouble has been the conditions under which primary production has been carried on, making its volume singularly irresponsive to changes in price, and therefore unmanageable in an unplanned market economy

42 If there is any substance in the suggestions made here—and the main facts cannot be denied—one of the inner secrets of the trade cycle is to be found, not in bankers' parlours or the board rooms of industry, but on the prairies and plantations, in the mines and oil-wells The new sign-post points clearly to the need for joint action by many nations to bring order into the production and marketing of primary commodities. This is one of the practical problems discussed among the international implications of full employment in Part VI (paragraphs 337–9).

HISTORY REPEATS ITSELF FROM 1793 TO 1938

43 The leadership in time of the British export trades in cyclical fluctuation since 1785, however it be explained and whatever its counterpart in other countries, is a fact of great importance For though it is a fact of British experience it relates to an international experience. With the other and more familiar, though not more certain, uniformities set out above, it shows the world depression of 1931–3 not as an inexplicable disaster whose repetition is unlikely, but as the lineal, if larger, descendant of all the earlier fluctuations which have brought insecurity to the industrial world through all its growing wealth for more than one hundred and fifty years It shows that the same forces were at work and that history was repeating itself up to the outbreak of the second World War

44 Table 28 and Chart III presenting its most important series are carried on to 1938 They show that while unemployment increased from 1937 to 1938 in every industrial group, the increase was startingly greater in textiles and in metal manufactures than in any other group In other words, metal manufacturing and textiles are seen leading into the new depression that would have come upon Britain and the world but for the second World War The similarity of the movement from 1937 to 1938 and the movement from 1929 to 1930 is shown not only in this broad comparison of

groups of industries, but also if each of the hundred industries is examined separately; if the percentage contractions of employment in each of the 100 industries from 1929 to 1930 and from 1937 to 1938 respectively are correlated, there is a significant correlation coefficient of +0 58 between the two sets of percentages. What happened between 1937 and 1938 is essentially the same as what had happened from 1929 to 1930 in the beginning of a new cyclical fluctuation. It is the same as what had happened for a hundred and fifty years. 1937 was the top of a cyclical fluctuation true to type; 1938 repeats 1793 and each year of incipient depression between those dates. After the culmination of each cyclical fluctuation, as industrial activity turned downwards, the turn came first in the industries of Britain dependent on overseas demand.

OTHER TYPES OF FLUCTUATION

45. The term international trade cycle is used here to identify one particular type of fluctuation of industrial activity It is not the only type of fluctuation to which different industries in different countries are subject At least three other types of fluctuation are recognized by American authorities

46. First, superposed on the larger movement identified here as the international trade cycle, there are found in the United States shorter and generally less violent fluctuations This is well illustrated by the composite index of business conditions in the United States which is one of the curves on Chart V This index, constructed by Miss Dorothy S Thomas, represents, with equal weights, wholesale prices, commercial failures, bituminous coal production, pig iron production, railroad freight ton mileage, bank clearings outside New York, employment in Massachusetts, railroad mileage constructed, and imports The principal fluctuations of this index are clearly the same as those of the British index In addition to the crests and troughs corresponding to those of the British index, the American index has a number of intermediate fluctuations, with crests at 1887, 1892, 1895, 1902, 1910, and troughs at 1887, 1891, 1896–7, 1901, 1911 But with one exception, the crest at 1910, all these are markedly less important than the crests and troughs agreeing with the British fluctuation. Some American authorities taking all those fluctuations together, speak of the business cycle in the United States as having an average duration of about three and a half years, less than half that assigned in this chapter to the British and international cycle But it seems better, as Professor

Alvin Hansen suggests, to distinguish between major and minor cycles.

> "The American experience indicates that the major business cycle has had an average duration of a little over eight years Thus from 1795 to 1937 there were seventeen cycles of an average duration of 8 35 years. In the eighty-year period from 1857 to 1937 there were ten major cycles of an average duration of 8 0 years
>
> "Since one or two minor peaks occur regularly between the major peaks, it is clear that the minor cycle is something less than half the duration of the major cycle In the eighty-year period from 1857 to 1937 there were twenty-three minor cycles with an average duration of 3 48 years "[1]

The "major cycles" of Professor Hansen are the movement described here as the international trade cycle, with an average duration of eight years The minor cycles are peculiar to the United States, or at least are far more marked there than elsewhere They are not traceable in Britain

47. Second, the building industry in the United States, as in Britain, is subject to a special fluctuation of its own, of a length materially greater than the eight years of the international trade cycle This phenomenon, for Britain, was described by me in a paper read to the Manchester Statistical Society in 1921, and is discussed in the 1930 edition of *Unemployment*[2] as the "hyper-cyclical fluctuation of the building trade " A chart at page 336 of that work shows that in building, underlying the five to nine-year waves of the trade cycle is a ground-swell, with a length in the period covered by the chart of about eleven years from crest to trough, that is to say, about twice that length or twenty-two years altogether from crest to crest In the United States, there appears to be an equally well-marked special fluctuation of building construction in an average period somewhat shorter than that suggested by me for Britain, namely seventeen to eighteen years, or about twice the length of the major business cycle[3] Professor Hansen discusses this phenomenon as one of great importance, though "one that, strangely enough, has been greatly neglected in the analysis of business cycles " He points out how large a part it played in deepening and

[1] *Fiscal Policy and Business Cycles*, pp 18–19 (1941, New York).

[2] Pages 335–9 Reference is made there to the attention called by Mr N B Dearle in 1908 to the special experience of the London Building Trade

[3] See Hansen, *op cit*, pp 19–27, citing various authorities from 1923 to 1930

lengthening in the United States the cyclical depression of the nineteen-thirties

48. This hyper-cyclical fluctuation of the building trade in both countries deserves far more attention than it has received hitherto. It has the effect, noted in my paper to the Manchester Statistical Society, of placing the building industry rather than the instrumental industries in the first rank of fluctuation. "for ten years together its unemployment is first far less and then far more than that of engineering"[1] It has an interesting reflection in the record of houses inhabited, uninhabited, and building at successive censuses. The process by which, in respect of houses, supply has been adjusted to demand hitherto, is very slow and imperfect in action Under a market economy, the supply of houses does not follow the demand closely, and is alternatively excessive or deficient over considerable periods In my study of 1930, after pointing out that many other industries might on enquiry show characteristic movements independent of the trade cycle, I emphasized the significance of this building trade fluctuation in the following terms: "The building trade is only one illustration of such movements independent of the trade cycle, though for several reasons specially worth choosing for illustration here Its hyper-cyclical fluctuation is markedly violent and regular, is exceptionally productive of unemployment, and represents a factor of instability in modern life to which perhaps sufficient attention has not been paid—the instability due to many-headed control of industry Other industries, like engineering and cotton, are disturbed by varying demand for their products. Building contrives to fluctuate exceptionally and violently though engaged largely in meeting demands which do not fluctuate" Both as a guide to policy, and for practical purposes, this special feature of hyper-cyclical fluctuation is of first importance. It cannot be dealt with by measures directed to evening out the general trade cycle.

49. Third, there is some evidence of alternation of good and bad times generally in the United States over still longer periods—thirty years or so—and some writers have developed this into a theory of "long waves," with varying explanations, running respectively in terms of technological improvement, of wars, and of gold and price movements The facts and theories are discussed briefly by Professor Hansen[2] and are set out at length in the various works to which he refers There is, as might be expected, considerable divergence between the experience of different countries.

[1] *Unemployment* (1930), p 339.

[2] *Op. cit*, pp. 27–41.

CONCLUSION

50. In my first study of unemployment thirty-five years ago, I described cyclical fluctuation mainly by the use of the trade union statistics from the middle of the nineteenth century Fourteen years ago, in a second study of unemployment, I explored the possibility of finding cyclical fluctuation in the early part of the nineteenth century and came, on the whole, to a negative conclusion, that it was not possible before 1858 "to find the cyclical fluctuation of trade in the sense in which such fluctuation is found later as an influence dominant alike over finance and trade in the narrow sense and over industry and the whole economic life of the nation."[1] Under the influence of those who described the trade cycle as a monetary phenomenon I was then inclined to date its development from the Bank Charter Act of 1844 and the banking policies developed thereafter That negative conclusion of 1930 was based mainly on consideration of four indices; prices, bank rate, export values and marriages In the light of the fuller information now available it calls for revision to-day The conclusions suggested by a new study of additional facts may be summarized as follows:

1 Fluctuation of industrial activity in Britain in periods of an average length not very different from those of the modern trade cycle can be traced over the whole time for which data of construction industries are available, i e from 1785

2 The two regular features of the trade cycle named by Professor Haberler, namely the parallel movement of prices and the greater violence of fluctuation in instrumental industries are certainly present throughout, except in respect of prices during the war period before 1815

3 Two other regular features—the greater violence of fluctuation in British industries dependent on overseas demand, and the leadership in time of such industries—are also certainly present throughout

With these four regular features and with other minor similarities, the substantial identity of the trade cycle in Britain is established over the whole one hundred and fifty years from 1785 to the outbreak of the second World War. This identity has persisted through all changes of banking and monetary policies and through a revolutionary change in the relative position of Britain economically in the world

[1] *Unemployment* (1930), p 342

51 The identity of the trade cycle over all the whole period of one hundred and fifty years is established partly by a special study of British exports. But quite apart from the fact that the experience of the British exports is itself international, the trade cycle by other facts is shown to be not a British but an international phenomenon It is the common scourge of all advanced industrial countries with an unplanned economy, and of the regions from which they draw the materials for their industry. It cannot be explained away by external accidents of war or domestic politics It begins at least as soon as industry begins to take predominantly its modern form of work with machines in factories and must be regarded as deeply rooted in the economic structure. It is the common interest of all countries which desire to preserve free institutions to find a means, and they must largely find the means in common, for preventing the fluctuations which have brought recurrent insecurity to the world ever since industry began to take its modern and more productive form.

Table 22

NEW INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN, 1785–1938

	Construction and Instruments	Textiles	Other Industries	All Industries	Official Export Values as % of trend
1785	75 0	95 7	99 1	92 1	98·8
1786	108 3	94 1	101 3	100 8	99 7
1787	102 0	96 9	103 5	100 9	96 4
1788	99 2	90 4	106 0	99 2	95·7
1789	98 0	98 2	109 6	102 8	98 5
1790	106 2	101 9	104 7	104 3	101·2
1791	111·1	106 4	106 8	108 1	108 7
1792	124 0	103 2	108 7	112 0	113 0
1793	115·3	86 9	99 6	100 5	82 1
1794	93·0	94 3	98 5	95 6	94 5
1795	91 3	94 6	97 9	94 8	88 5
1796	99 0	95 2	98 8	97 7	99 6
1797	80 5	79 8	93 4	85 1	84 9
1798	84 5	99 7	92 6	92 3	95 3
1799	86 5	113 9	94 4	98 3	112·5
1800	103 0	104 9	107 5	105 3	109 5
1801	102 5	99 9	100 8	101 0	112 0
1802	123 1	96 8	103 5	107 4	113 9
1803	125 7	98 1	101 3	107 8	91 1
1804	107 0	107 9	102 6	106 7	94 6
1805	109 5	108 3	104 3	107 2	96 0
1806	98 0	95 2	102 2	98 7	102 2
1807	95 1	100 1	98 2	97 8	91 3
1808	85 6	73 1	93 9	84 6	94·1

Table 22—Continued

NEW INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN, 1785–1938

	Construction and Instruments	Textiles	Other Industries	All Industries	Official Export Values as % of trend
1809	90 6	109 0	100 8	100 4	120 2
1810	106 9	126 5	111 1	114 8	116 5
1811	112 9	91·7	99 1	101 1	78 3
1812	97 1	98 2	99 7	98 5	
1813	99 2	103 6	96 7	100 2	100 0
1814	89 3	102·9	103 8	98 1	108 8
1815	97 3	100 3	99 2	99 0	111·0
1816	73 2	82 3	92 3	83 4	92 6
1817	81 1	99 6	93 1	91 6	103 7
1818	104 2	112·5	106 5	107 6	109·5
1819	109 4	93 8	97 7	100 0	84·8
1820	89 6	89 5	97 2	92 5	95 4
1821	85 6	96 2	93 3	91 9	99 0
1822	97 3	104 1	95 2	96 8	104 4
1823	108 3	101 1	102 9	103 9	100 2
1824	123 8	107 7	107 6	112 5	107 5
1825	162 8	132 0	111 1	133 4	100 3
1826	121 1	80 6	105 7	102 3	83·6
1827	100 0	107 4	108 0	105 4	101·8
1828	94 6	110 5	103 8	103 2	98 4
1829	91 1	94 3	104 4	96 8	99 9
1830	86 2	105 9	105 7	99 5	103 5
1831	87 8	103·7	106 4	99 6	97 7
1832	84 9	98 1	95 5	93 0	99 4
1833	84 5	100 3	97 3	94 1	101 7
1834	93 3	103 2	94·4	97 0	101·8
1835	105 4	98 3	98 2	100 6	102 7
1836	111 8	115 1	97 9	108 1	105 9
1837	106 9	102 0	95 6	101 4	85 5
1838	108 4	111 4	101 5	107 2	103 7
1839	111 8	101 4	102 7	105 2	103 7
1840	117·0	100 8	100 9	106 1	103 9
1841	101 0	98 2	98 5	99 2	98·3
1842	82 3	88 9	91 4	87 6	91 6
1843	70 4	97 1	91 6	86 6	102 6
1844	92 5	105 0	89 0	95 5	109 1
1845	125 2	103 9	105 1	111 4	106 4
1846	137 4	97 6	103 2	112 6	99 7
1847	121 1	77 1	109 8	102 3	90 7
1848	81 5	92 5	101 4	91 7	91 0
1849	78 6	98 8	97 7	91 6	107 9
1850	85 0	90 6	101 1	91 4	
1851	94 5	92 2	98 6	95 0	
1852	94 7	101 4	95 6	96 9	
1853	110 6	108·0	101 4	106 6	
1854	103 4	100 0	98 9	101 0	
1855	106 3	97 7	95 2	100·3	

Table 22—Continued

NEW INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN, 1785–1938

	Construction and Instruments	Textiles	Other Industries	All Industries	Employment Rate (T U)
1856	106 1	105 0	101·8	104·4	96 75
1857	105 0	104·2	104·7	104 6	95 80
1858	90 4	98 8	97 8	95 2	92 65
1859	93 3	105·4	101 1	99 4	97·35
1860	95 5	117 0	105 0	104 2	98·15
1861	92 2	107 0	104 2	100 2	96·30
1862	93·4	65 1	98 9	88 6	93 95
1863	110 1	67 5	98 3	95 5	95·30
1864	115·6	70 0	100 6	99 1	98·05
1865	114·7	86 2	102 2	101 9	98 20
1866	100·2	92 7	103 1	98 9	97 35
1867	90 5	93 0	104 2	95 9	93·70
1868	91·7	98 8	102 9	97 2	93 25
1869	97 4	90 9	102 0	96 7	94 05
1870	101·6	101 8	102 3	101 9	96 25
1871	103 7	113 4	106 9	107 7	98 35
1872	109·7	107 1	106 6	107 8	99 05
1873	109 1	111 7	108 6	109 7	98 85
1874	117·4	110·7	106 0	111 5	98 40
1875	98 6	102 1	107 0	102 5	97 80
1876	101 7	104·0	108 3	104 6	96·60
1877	105 0	101 8	105 4	104 2	95 60
1878	95 4	94 8	101·4	97 3	93 75
1879	81 6	92 5	99 5	91 0	89 30
1880	100·0	104 8	106·3	103 6	94 75
1881	104 6	101 2	105 0	103 7	96·45
1882	119 1	104 9	105 5	110 2	97 65
1883	119 8	103 1	107 5	110 6	97 40
1884	96 3	103 6	103 1	100 8	92 85
1885	89 0	92 2	99 2	93 4	91 45
1886	77 4	96·2	95 4	89 2	90 45
1887	83 9	98 7	96 0	92 4	92·85
1888	98 8	104 1	97·8	100 0	95 85
1889	114 9	106 6	100 6	107 5	97 95
1890	105 8	105 8	100 4	104 0	97 90
1891	97 8	109 0	99 2	101 6	96·60
1892	97 4	96 3	95 6	96 5	93 80
1893	84·2	96 0	87 7	88 9	92 30
1894	91 8	99 1	95 0	95 1	92 80
1895	87 8	104 0	93 0	94 4	94 00
1896	100 2	102 6	94 8	99 0	96 65
1897	102 8	99 5	96 4	99 7	96 55
1898	103 4	106 7	95 2	101 6	97·05
1899	108 8	103·8	100 2	104 4	97 95
1900	108 3	94 2	99 4	101 1	97·55
1901	102 8	96 6	95 1	98 3	96 65
1902	103 7	94 6	96 7	98 6	95 80

Table 22—Continued

NEW INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY IN BRITAIN, 1785–1938

	Construction and Instruments	Textiles	Other Industries	All Industries	Employment Rate (T U)
1903	98 8	89 0	97 0	95 2	95 00
1904	97·4	89 9	96 2	94 7	93 60
1905	103 3	99 9	96 2	99 9	94 75
1906	112 6	101 2	100 1	104 9	96 30
1907	105·9	107·7	105 0	106 1	96 05
1908	85 6	94 9	100 6	93 5	91 35
1909	86 7	98 6	99 7	94·7	91 30
1910	91 9	93 4	99·1	94 8	94 90
1911	100 5	102·5	100 1	101 0	96 95
1912	99 5	107 2	98 9	101·6	96 85
1913	111 2	107 5	106 4	108 5	97 90
					L C E S Index as % of trend
1920	141 9	117 5	85 9	117 9	122 7
1921	84 3	117 2	70 4	90 0	85 8
1922	92 8	102 3	101 2	88 6	98 8
1923	97 2	82 4	113 6	98 8	98 0
1924	126 6	97 9	113 1	114 7	104·8
1925	110 1	109 9	105 2	109·1	103 5
1926	76 1	99 5	72 5	82 4	90 0
1927	124 2	106·3	105 3	113 6	106 8
1928	120 4	99 2	105 5	109 9	102 9
1929	133 9	102 9	113 3	118 7	107·1
1930	119 8	87 0	109 3	107·4	96 2
1931	74 9	86 6	99 1	86 8	86 0
1932	61 1	91 5	95 0	81 1	85·2
1933	75 9	99 2	95 4	89 3	90 9
1934	100 2	93 0	100 3	98 6	99·4
1935	99 0	93 9	101 5	98 8	102·8
1936	86 8	111 5	104 6	100 1	108 8
1937	92 6	112 7	110 2	104 5	111 2
1938	81 9	89 2	98 3	89 7	100·0

Note The Employment Rate in Trade Unions given above from 1856 to 1913 continues up to 1926 as follows·

1914	96 75	1919	97 50	1923	87 50
1915	99 00	1920	97 45	1924	90 90
1916	99 55	1921	84 45	1925	88 95
1917	99 40	1922	82 80	1926	87 30
1918	99 30				

These figures are represented in Chart I.

Table 23

DATA IN INDEX OF INDUSTRIAL ACTIVITY, 1785–1913

Industry	Nature of data and period covered	Weight Assigned 1785–1849	1850–1859	1860–1913
Construction and Instruments				
Bricks	Production (E W), 1785–1849	14 } 16	—	—
Tiles	Production (E W), 1785–1822	2	—	—
Timber	Imports (U.K), 1785–1913	4	14	14
Iron	Net Imports (Bar, G.B), 1790–1829, 1845–9	4	12	6*
	Consumption (Bar, G B), 1830–44			
	Canal Shipments (South Wales), 1804–40			
	Production (Pig, U K), 1852–1913			
Steel	Production (U K), 1875–1913	—	—	6
Railway Construction	Miles Authorized, 1829–49	1	—	—
Ships	Production (Empire), 1789–1811	6	10	10
	Production (U K), 1815–59			
	Production (U K), 1860–1913			
Engineering	Production (Engines, James Watt), 1785–1849	1	—	—
Textiles				
Cotton	Consumption (Raw, U K), 1785–1913	3–16	16	16
Wool	Production (Cloth, Yorkshire), 1785–1819	16–8	8	8
	Imports (Raw, U K), 1815–59			
	Consumption (Raw, U K), 1865–1913			
Silk	Imports (Raw and Thrown, U K), 1785–1913	4	2	2
Linen	Production (Cloth, Scotland), 1785–1802	4	2	2
	Imports (Flax, U K), 1788–1913			
Hemp	Imports (Raw, U K), 1788–1913	1	1	1
Jute	Imports (Raw, U K), 1860–1913	—	—	1
Other Industries				
Coal	Receipts (London), 1785–90	12	15	15
	Shipments (Tyne and Wear), 1791–1849			
	Shipments (All districts), 1850–9			
	Production (U K), 1860–1913			
Tin	Production (Cornwall), 1785–1834	1	—	—
Copper	Production (Cornwall), 1785–6, 1796–1848	2	—	—
Salt	Shipments (Weaver), 1803–44	1	—	1
	Production (U K), 1860–1913			
Clay	Production (U K), 1860–1913	—	—	1
Leather	Production (E W), 1782–1828	9–4	—	—
Glass	Consumption (Crown, G B), 1789–1844	1	—	—
	Consumption (Common, G B), 1789–1844	1	—	—
Shipping	Clearance Out (U.K), 1785–1859	15	10	10
	Clearance (U K), 1860–1913			
Railways	Goods Traffic (U.K), 1860–1913	—	—	5
	Passengers (U K), 1860–1913	—	—	2

* From 1860 to 1874 when no figures for steel are available a weight of 12 is assigned to iron

The sources used from 1785 to 1859 are described in *Oxford Economic Papers*, No 3 (February, 1940) and No 4 (June, 1940).

Appendix B

STATISTICAL AND TECHNICAL NOTES

1 EMPLOYMENT AND UNEMPLOYMENT BY INDUSTRIES 1924-37 (Tables 33, 34 and 35).

2 UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS (Table 36)

3 UNEMPLOYMENT RATES BEFORE AND AFTER THE FIRST WORLD WAR (Tables 37a-8).

4 A POLICY OF CHEAP MONEY

5 THE INEVITABILITY OF CYCLICAL FLUCTUATION.

1 EMPLOYMENT AND UNEMPLOYMENT BY INDUSTRIES, 1924-37

1. This section contains three tables, 33, 34 and 35, illustrating the different experience of unemployment in different industries, which is discussed in paragraphs 63-74 of the Report

2. In Table 33 the manufacturing industries are arranged in groups with reference to the change of employment from June, 1924, to June, 1937 The change of employment is shown by the figures in column 4, giving the numbers of insured persons in employment in June, 1937, as a percentage of the corresponding number in June, 1924. The service industries, supplying consumers' services, the transport industries and the extractive industries other than coal-mining, are also grouped, building and coal-mining are given separately. The table covers all the industries in the Labour Gazette classification except national government, local government, railway service, commerce and finance, public works contracting, musical instruments, fishing and "other industries." In the first four of these substantial proportions of those employed are excluded from general insurance The table excludes also agriculture, insured under a separate scheme since 1936 All the figures relate to Great Britain and Northern Ireland.

Table 33

INSURED PERSONS EMPLOYMENT AND UNEMPLOYMENT BY INDUSTRIES, 1924–37

Industry	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
	Class of Industry	Insured Persons (000)		Employment June, 1937, as per cent of June, 1924	Unemployment Rate				
		July, 1924 (16 upwards)	July, 1937 (16–64)		1924	1929	1932	1937	Males only 1927–3
1 Employment Growing more than Twice Average (Manufacturing)									
Heating and Ventilating Apparatus	C	5 8	18 7	343 3	5 3	4 8	20 1	5 3	10·8
Electrical Wiring and Contracting	C	12 9	41 2	327 4	9 3	6 8	18 3	9·8	12 7
Artificial Stone and Concrete	C	11 8	28 6	260 9	16 5	14 3	28 0	11 3	20 1
Electrical Cable Apparatus, Lamps, etc.	OP	74 9	177 7	247 3	7 4	4 8	12 7	5 2	9 5
Stationery and Typewriting requisites	OC	4 5	9 0	204 6	5 8	4·1	10 4	4 1	7 8
Scientific and Photographic Instruments and Apparatus	OC	19 7	37 1	196 9	4 7	3 0	11·2	2 8	6 4
Silk and Artificial Silk	T	41 7	80 7	194 5	6 3	10 5	18 9	8 3	15 2
Motor Vehicles, Cycles and Aircraft	I	203 3	351 6	179 5	8 5	7 1	20 0	4 8	12·0
Constructional Engineering	I	24 0	40 1	177 8	12 9	11·1	36 2	9 7	20 3
Toys, Games and Sports Requisites	OC	11 0	17 8	172 3	10 9	5·6	14 4	7 2	11 5
Electrical Engineering	I	71 5	114 6	167 2	5·5	4 4	16 3	3·1	9 4
Metal Industries, not separately specified	OP	175 6	266 0	162 7	11 4	8 0	19 3	6 0	13 6
Brick, Tile, Pipe, etc., Making	C	70 5	106 5	156 8	7 4	10 7	22 8	8 3	13 4
Furniture Making, Upholstering, etc.	OC	96 8	149 9	155 9	7 2	5 9	19 7	9 0	12·3
Paint, Varnish, Red and White Leads	OP	16 4	24 2	151 8	5·1	4 4	10 3	4 8	7 3
Stove, Grate, Pipe, etc, and General Iron-founding	OP	81 9	104 6	143 9	12 1	9 4	27 8	7 1	16 2
Brass, Copper, Zinc, Tin, Lead, etc	M	40 0	50 2	140 8	11 7	8 9	25 9	5 6	15 7
Total with Weighted Means		**962 3**	**1,618 5**	**178·5**	**8 9**			**6 2**	
Unweighted Means				**199 0**	**8 7**			**6 6**	

2 EMPLOYMENT GROWING MORE THAN AVERAGE (MANUFACTURING)										
Textiles, not separately specified	T	43 9	58 0	139 1	11 8	8 7	16 1	9 1	11 7
Shirts, Collars, Underclothing, etc	D	72 1	102 9	138·7	7 4	5 3	13 4	9 4	8 1
Cardboard Boxes, Paper Bags and Stationery	OC	54 9	72 2	135 6	6 9	4 1	8 9	4 3	6 6
Wall-paper Making	OP	5 5	7 5	134 2	4 6	4 2	12 2	6·7	7 2
Explosives	OP	19 3	22 3	129 3	9 4	4 6	11 4	3 5	7 8
Paper and Paper Board	OP	54 6	65 4	128 5	8 4	4 3	11 4	4 2	7 8
Hosiery .	T	93 4	119 9	127 4	6 9	5 9	12 5	8 2	10 0
Iron and Steel Tubes	M	27 2	32 7	127 0	15 5	9 9	42·5	10 5	23 5
Food Industries, not separately specified	F	108·5	134 5	126 4	12 2	9 0	16 6	12 4	12 1
Bread, Biscuits, Cakes, etc . .	F	144 5	176·5	125 5	9 4	7 1	11 8	8 6	11 2
Glass (excluding Bottles and Scientific Glass)	OP	27 0	31·3	123 7	12 6	9 1	19 9	8 7	15 2
Carpets ..	T	27 0	31 5	120 2	6 3	5 8	9 5	6 9	8·7
Total with Weighted Means . .		**677 9**	**854 7**	**128 5**	**9·4**			**8 4**	
Unweighted Means				**129·6**	**9 3**			**7 7**	
3 EMPLOYMENT GROWING LESS THAN AVERAGE (MANUFACTURING)									
Printing, Publishing and Book-binding .	OC	240·1	284 6	119 9	5·4	4 3	10 3	6 3	7 7
Brass and Allied Metal Wares .	OP	29 8	30·3	119 0	16 2	8 3	19·9	4·5	13 6
Chemicals . .	OP	97 6	109 5	119·0	9 0	6 3	16·5	6·5	13 0
Hand Tools, Cutlery, Saws, Files	OP	31·7	34·1	118 9	14 9	14 6	34·3	8 6	22 8
Rubber	OP	58 2	64·8	117 7	11 0	8 0	19 2	7 8	13 7
Glass Bottles .	OC	18 0	19 9	116·3	20 3	16 0	25 9	14 8	21·8
Brushes and Brooms	OC	9 8	11 3	115 8	10 9	11 3	20 1	10 1	18 5
Tanning, Currying and Dressing	OP	42·6	48 4	115 7	10 2	10 6	16 6	9 3	12 7
Saw-milling and Machined Woodwork	C	57·7	63 2	114 5	10 0	9 5	20·8	10 4	14 5
Wire, Wire-netting, Wire-ropes	M	24 5	25 7	114 5	11 0	10 7	26 2	8 2	19 6
General Engineering .. .	I	627 4	613 9	114 1	15 2	9 6	29 1	5 4	17 3
Bolts, Nuts, Screws, Rivets, Nails, etc .	OP	27·5	28 2	112 9	13 7	9 6	25 9	5 9	17 4
Cement, Lime-kilns and Whiting . .	C	16 0	16 8	112 5	8 1	8 0	25 9	5 6	13 5

Table 33—Continued

INSURED PERSONS EMPLOYMENT AND UNEMPLOYMENT BY INDUSTRIES, 1924–37

Industry	(1) Class of Industry	(2) Insured Persons (000) July, 1924 (16 upwards)	(3) Insured Persons (000) July, 1937 (16–64)	(4) Employment June, 1937 as per cent of June, 1924	(5) Unemployment Rate 1924	(6) Unemployment Rate 1929	(7) Unemployment Rate 1932	(8) Unemployment Rate 1937	(9) Unemployment Rate Males only 1927–36
3 EMPLOYMENT GROWING LESS THAN AVERAGE (MANUFACTURING)—*continued*									
Grain Milling	F	31.5	33.5	111.8	5.5	7.1	10.2	6.7	9.0
Tailoring	D	189.5	215.1	109.7	9.5	7.8	15.6	10.8	14.7
Coke Ovens and By-product Works	OP	13.5	14.7	108.3	8.2	11.4	33.3	11.5	20.4
Drink Industries	F	108.9	114.0	107.1	7.6	6.6	14.1	7.5	9.2
Dress Industries, not separately specified	D	29.7	29.4	105.8	10.4	5.0	10.1	5.3	11.0
Cocoa, Chocolate and Sugar Confectionery	F	72.2	77.7	104.9	10.0	9.4	14.3	9.2	12.4
Saddlery, Harness and other Leather Goods	OC	27.8	26.9	104.2	10.2	7.4	16.0	5.7	13.2
Railway Carriages, Waggons and Tram Cars	I	52.2	50.6	102.3	6.1	9.7	27.4	3.6	13.8
Pottery, Earthenware, etc	OC	73.3	74.9	102.2	12.7	14.3	32.2	14.6	21.8
Steel Melting and Iron Puddling, Iron and Steel Rolling and Forging	M	207.3	181.9	101.7	21.1	19.5	46.8	10.1	29.0
Tobacco, Cigars, Cigarettes and Snuff	OC	43.9	42.4	101.6	8.1	4.2	8.7	4.6	5.8
Hemp, Rope, Cord, Twine, etc.	T	20.6	19.8	101.0	15.2	11.1	23.1	13.2	16.6
Total with Weighted Means		**2,151.8**	**2,231.6**	**111.6**	**12.1**			**7.6**	
Unweighted Means				**110.9**	**11.2**			**8.2**	
4 EMPLOYMENT DECLINING (MANUFACTURING)									
Oil, Glue, Soap, Ink, Matches, etc	OC	73.7	75.7	98.2	7.5	6.7	12.4	7.2	10.7
Wood Boxes and Packing Cases	OP	12.5	11.8	97.7	14.2	10.8	26.5	13.8	20.0
Dress-making and Millinery	D	106.4	102.5	96.7	7.7	4.6	8.9	5.7	8.8

Oilcloth, Linoleum, etc	OC	14·2	13·1	96·0	6·2	5·0	19·7	7·7	12·1
Boots, Shoes, Slippers and Clogs	D	142·4	135·1	94·4	9·2	12·7	20·9	11·0	18·2
Watches, Clocks, Plate, Jewellery, etc	OC	47·4	39·0	92·0	12·1	6·8	18·1	4·9	12·4
Wood-working, not separately specified	OP	26·5	23·8	91·7	11·2	9·4	21·3	11·2	15·2
Tin Plates	M	29·3	28·1	91·6	8·5	25·4	38·8	13·2	31·3
Marine Engineering, etc	I	66·1	53·8	89·9	16·9	10·0	54·7	9·1	27·9
Hats and Caps (including Straw Plait)	D	33·6	32·5	89·3	9·9	7·5	15·0	14·2	11·8
Lace	T	20·3	15·0	87·7	18·0	9·1	14·7	8·9	14·6
Linen	T	83·1	76·3	87·6	10·6	13·8	25·4	18·5	22·9
Woollen and Worsted	T	260·9	223·3	86·2	7·0	13·7	20·7	10·2	16·9
Textile, Bleaching, Printing and Dyeing, etc	T	117·5	102·5	85·9	12·7	17·0	27·4	17·0	23·4
Shipbuilding and Ship-repairing	I	255·1	172·8	76·7	29·3	23·8	62·2	23·8	40·8
Cotton	T	562·4	408·6	76·6	13·7	13·1	28·5	11·5	22·1
Jute	T	41·2	30·0	65·9	9·9	12·9	42·2	26·8	26·8
Pig-iron (Blast Furnaces)	M	30·2	17·3	64·4	14·3	11·3	43·5	9·8	24·9
Carriages, Carts, etc	I	24·6	13·1	56·1	11·5	8·7	21·1	9·7	14·6
Total with Weighted Means		**1,947·4**	**1,574·3**	**83·3**	**13·5**			**12·8**	
Unweighted Means				**85·5**	**12·1**			**12·3**	
5 CONSUMERS' SERVICE									
Entertainments and Sports	S	66·0	139·6	204·8	13·5	11·2	20·5	17·5	19·1
Tramway and Omnibus Service	S	119·3	203·8	176·7	3·2	3·1	6·2	3·4	4·4
Hotel, Public House, Restaurant, Boarding House, Club, etc, Service	S	289·9	444·1	157·5	12·3	8·9	17·3	14·6	15·8
Laundries, Dyeing and Dry Cleaning	S	112·9	173·9	156·7	6·2	4·3	9·2	6·1	8·6
Professional Services	S	110·7	165·8	153·3	4·0	3·1	6·3	4·3	5·9
Distributive Trades	S	1,352·1	2,061·4	151·3	6·6	6·1	12·2	8·8	11·1
Gas, Water and Electricity Supply	S	171·6	218·5	131·7	6·1	5·9	11·0	8·1	8·6
Total with Weighted Means		**2,222·5**	**3,407·1**	**153·7**	**7·2**			**9·2**	
Unweighted Means				**161·7**	**7·4**			**9·0**	

Table 33—Continued

INSURED PERSONS EMPLOYMENT AND UNEMPLOYMENT BY INDUSTRIES, 1924–37

Industry	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
	Class of Industry	Insured Persons (000)		Employment June, 1937, as per cent of June, 1924	Unemployment Rate				
		July, 1924 (16 upwards)	July, 1937 (16–64)		1924	1929	1932	1937	Males only 1927–36
6 TRANSPORT									
Road Transport, not separately specified	Tr	150 4	207 2	144 0	15 4	12 0	22 3	12·6	16 8
Shipping Service	Tr	119 1	134 1	100 3	19 5	17 8	33 9	21 9	26 5
Dock, Harbour, River and Canal Service	Tr	195 5	166 0	88 5	25 6	30 4	34 8	25 8	32 1
Transport, Communication and Storage, not separately specified	Tr	23 3	22 6	106 9	16 8	11 9	17 5	13 4	16 5
Total with Weighted Means		**488 3**	**529 9**	**108 3**	**16 5**			**19 1**	
7 OTHER EXTRACTIVE									
Clay, Sand, Gravel and Chalk Pits	E	13 5	18 9	142 7	5 0	6 3	27 7	7 5	13 9
Stone Quarrying and Mining	E	36 1	49 0	133 5	5 3	10 2	27 9	13 5	17 6
Lead, Tin and Copper Mining	E	5 0	4 5	95 5	16 5	19 0	63 7	15 3	33 5
Slate Quarrying and Mining	E	10 1	9 7	94 7	1 6	10 2	22 6	6 3	12 3
Iron Ore and Iron-stone Mining	E	17 1	11 3	84 5	21 5	7 1	46 7	8 6	24 5
Other Mining and Quarrying	E	22 2	11 0	48 7	6 1	9 9	24 8	12 8	17·6
Total with Weighted Means		**104 0**	**102 9**	**115 7**	**8 3**			**11 2**	
BUILDING	C	721 6	1,035 3	146 0	10 6	12 2	29 0	13 8	17 5
COALMINING	E	1,260 4	868·4	60 0	5 7	15 5	33·9	14·7	24 6

3 Column 1 shows the classification of the industries according to type of product, as follows:—

C	Construction
E	Extractive
I	Instrumental
M	Metal Manufacture
T	Textiles
F	Food and Drink
D	Dress
OP	Other Producer Goods
OC	Other Consumer Goods
S	Service to Consumers
Tr	Transport

4 In Column 2 the numbers represent insured persons in employment aged 16 and over, those in column 3 relate to persons aged 16 to 64 inclusive, as persons of 65 and over ceased to be insured after 1927 The percentages in column 4 allow for this change. They are obtained by dividing the adjusted percentage change from 1923 to 1927, as given in the *Labour Gazette* for December, 1937 (p 489), by the change from 1923 to 1924, as given in the 21*st Annual Abstract of Labour Statistics* (p 43)

5 The unemployment rates in column 5 for 1924 and column 8 for 1937 represent the mean for twelve months—January to December—in each year Those in columns 6, 7 and 9 represent the mean for four months—March, June, September and December—in each year. The figures in columns 5, 6, 7 and 8 relate to all insured persons The figures in column 9 covering the years 1927–36 relate to males only As is noted in paragraph B14 (*c*) below, the recorded rates of unemployment among females were violently affected in the years 1930 and 1931 by administrative changes. The weighted means for groups in columns 4 and 5 are weighted by the numbers in column 2; those in column 8 are weighted by the numbers in column 3.

6. In Table 34 the figures referred to in paragraph 65 of the Report are set out in detail, showing the different ways in which particular industries react to decline in the demand for their products. The table covers the twelve manufacturing industries having the greatest contraction of numbers in employment between 1924 and 1937 In the first six industries of this table, taken together, employment (that is to say the effective demand for labour) declined by 14 7 per cent from 1924 to 1937, but the numbers (in thousands) of

insured persons declined only from 549·2 to 492·7, or 10·3 per cent, and the unemployment rate rose from 9·2 to 14·3; each of the separate industries had a higher unemployment rate in 1937 than in 1924. In the other six industries taken together, employment declined 23·2 per cent, but the numbers (in thousands) of insured persons declined even more from 946·9 to 680·6, or by 28·1 per cent, and the unemployment rate fell from 18·0 to 14·3, each of the separate industries had a lower unemployment rate in 1937 than in 1924.

Table 34

UNEMPLOYMENT IN DECLINING INDUSTRIES, 1924–37

	Employment June, 1937, as per cent of June, 1924	Insured Persons 16–64 (thousands)			Unemployment Rate	
		1924 (est.)*	1937	1937 as percentage of 1924	1924	1937
Tin Plates	91·6	27·9	28·1	100·7	8·5	13·2
Hats and Caps	89·3	33·7	32·5	96·4	9·9	14·2
Linen	87·6	80·9	76·3	94·3	10·6	18·5
Woollen and Worsted	86·2	251·8	223·3	92·6	7·0	10·2
Textile Bleaching	85·9	115·2	102·5	89·0	12·7	17·0
Jute	65·9	39·7	30·0	75·6	9·9	26·8
Six industries with unemployment rate rising	85·3	549·2	492·7	89·7	9·2	14·3
Marine Engineering	89·9	64·6	53·8	83·3	16·9	9·1
Lace	87·7	19·4	15·0	77·3	18·0	8·9
Shipbuilding	76·7	245·5	172·8	70·4	29·3	23·8
Cotton	76·6	564·8	408·6	72·3	13·7	11·5
Pig Iron	64·4	28·3	17·3	61·1	14·3	9·8
Carriages, Carts, etc.	56·1	24·3	13·1	53·9	11·5	9·7
Six industries with unemployment rate falling	76·8	946·9	680·6	71·9	18·0	14·3

* The numbers of insured persons 16–64 in 1924 as given in this table are estimated from the numbers in 1937, by using the percentages given in the *Labour Gazette*, November, 1937, pp. 444–5, for the relation between 1937 and 1923, and those given in the *21st Abstract of Labour Statistics*, pp. 36–8 for the relation between 1924 and 1923. They are directly comparable to the numbers recorded in 1937, as given in the next column, and they differ from the numbers in column 2 of Table 33, which relate to insured persons of all ages from 16 upwards.

7. Table 35 gives information supplementary to paragraphs 72–3, showing in broad outline the movement in the numbers of insured males from 1929 to 1932 and from 1932 to 1937. The figures repre-

sent thousands, and relate to Great Britain and Northern Ireland. The rapidly expanding industries are those shown in Table 4 The declining industries are coal-mining, cotton, wool, linen, jute and textile bleaching, shipbuilding and shipping. It will be seen that the insured males as a whole increased more slowly from 1932 to 1937 than from 1929 to 1932, presumably owing to the declining numbers of young men in the population The difference of 53,000 a year between 182,000 and 129,000 was the same as the difference between 106,000 and 53,000 in the entry to the rapidly expanding industries.

Table 35

INSURED MALES IN GROUPS OF INDUSTRIES, 1929, 1932, 1937

(*thousands*)

	Insured Males			Change from—		Change per year	
	1929	1932	1937	1929 to 1932	1932 to 1937	1929 to 1932	1932 to 1937
Rapidly expanding Industries	1,858	2,176	2,440	+ 318	+ 264	+ 106	+ 53
Declining Industries	1,823	1,773	1,505	− 50	− 268	− 17	− 54
Other Industries	5,074	5,353	6,002	+ 279	+ 649	+ 93	+ 130
All Industries	8,755	9,302	9,947	+ 547	+ 645	+ 182	+ 129

2. UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS

8 Table 36 shows separately all counties in England, and shows also the areas of lowest and highest average unemployment over the four years taken together, in each county with more than five employment exchange areas, and in a few others; for counties with more than twenty areas, the two areas of lowest unemployment and the two of highest unemployment are shown In Scotland and Wales figures are given only for counties with five or more exchange areas The figures for 1937 and those for 1934, 1935 and 1936 are not strictly comparable The figures for 1934, 1935, 1936 have been obtained by relating all persons insured and uninsured, aged 14 and over, registered as unemployed, to the estimated number of persons aged 16–64 insured under the general scheme. The figures for 1937 have been obtained by relating the numbers of insured persons aged 16–64 recorded as unemployed to the estimated numbers of persons of these ages; persons insured under the agri-

Table 36

UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS, 1934, 1935, 1936 AND 1937

ENGLAND	1934	1935	1936	1937
Bedfordshire	**4·6**	**4·7**	**5·0**	**4·8**
Berkshire	**10·0**	**8·7**	**7·8**	**6·6**
Didcot	4·5	5·1	4·3	2·8
Wokingham	14·0	13·3	10·0	10·2
Buckinghamshire	**6·2**	**5·9**	**5·6**	**5·8**
Bletchley	3·1	1·9	2·3	2·1
Slough	8·5	10·1	9·3	8·5
Cambridgeshire	**8·1**	**8·6**	**7·5**	**6·5**
Cottenham	2·3	2·1	1·5	1·7
Wisbech	10·1	12·8	12·1	9·0
Cheshire	**19·8**	**18·4**	**15·4**	**13·6**
Frodsham	12·1	10·1	8·5	3·7
Wilmslow	11·1	10·5	9·8	6·1
Birkenhead	29·4	29·4	23·9	22·9
Wallasey	28·9	27·4	25·0	24·1
Cornwall	**19·4**	**17·8**	**16·2**	**12·9**
Newquay	7·4	7·6	6·5	5·4
Redruth	37·0	38·7	31·0	29·0
Cumberland	**28·7**	**28·5**	**28·5**	**21·7**
Penrith	16·4	14·8	12·4	7·6
Maryport	57·5	57·6	51·7	42·7
Derbyshire	**14·8**	**11·9**	**10·7**	**8·8**
Derby	6·9	5·2	4·6	3·9
Buxton	7·3	6·7	5·6	4·2
Glossop	26·7	22·6	21·2	15·7
Hadfield	45·4	48·4	43·3	34·7
Devon	**13·8**	**12·9**	**11·6**	**9·3**
Tiverton	8·9	9·4	6·7	4·9
Bideford	16·6	17·3	17·2	15·3
Dorset	**12·9**	**12·3**	**9·8**	**6·7**
Wareham	9·2	6·7	5·8	3·0
Poole	14·4	12·8	11·0	9·5
Durham	**34·2**	**33·9**	**27·6**	**19·5**
Consett	9·6	8·7	7·6	5·4
Horden	10·5	23·0	8·1	4·5
Shildon	49·4	46·5	42·6	34·8
Bishop Auckland	53·5	52·0	48·1	35·5
Essex	**11·4**	**10·3**	**8·5**	**7·3**
Chelmsford	4·3	2·9	1·6	1·6
Leyton	7·2	5·9	5·2	4·7
Rayleigh	21·4	24·0	20·7	20·5
Pitsea	32·9	32·4	32·3	36·4
Gloucestershire	**17·6**	**15·2**	**12·2**	**8·7**
Dursley	4·5	3·9	2·5	2·5
Cinderford	43·3	43·2	36·6	20·2

Table 36—*Continued*

UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS, 1934, 1935, 1936 AND 1937

ENGLAND—*continued*	1934	1935	1936	1937
Hampshire .	**13 3**	**12 0**	**9 3**	**7 4**
Eastleigh	7 0	5 3	3 8	2 6
Ryde ..	15 8	16 0	12 0	10 1
Herefordshire	**16 6**	**16 4**	**14 3**	**10·2**
Hertfordshire	**6 1**	**5 8**	**5 6**	**4 9**
Hemel Hempstead	2 5	2 4	2 7	2 5
Letchworth ..	7 8	8 3	9 4	7 9
Huntingdonshire	**11 8**	**9 5**	**6 5**	**4 6**
Kent ..	**9 9**	**9 3**	**7 9**	**6 3**
Beckenham	2 8	2 4	2 0	1·7
Cranbrook .	3 5	2 7	3 2	1 4
Faversham .	15 2	18 0	16 1	11 3
Ramsgate.	16 2	16 9	17 6	14 5
Lancashire . ..	**21 1**	**20 5**	**17 8**	**14 3**
Leyland . .	4 6	5 1	4 1	2 9
Irlam .	6 3	7 1	6 0	4 6
Westhoughton .	31 2	33 9	32 5	27 4
Hindley ..	42 1	40 8	37 5	37 2
Leicestershire	**11 2**	**9 7**	**7 6**	**6·9**
Market Harborough	5 6	4 8	4 0	2 8
Ratby . . .	33 5	28 4	20 5	20 7
Lincolnshire	**16 2**	**15 3**	**13 4**	**9 7**
Scunthorpe	7 9	7 7	5 4	3·2
Gainsborough . .	25 9	27·6	18 3	12 7
Grimsby ..	16 6	17 2	18 0	15·1
London	**9 6**	**9 0**	**7 7**	**7·1**
Greenwich	7 6	6 0	4 6	3 8
Woolwich ..	8 4	6 8	4 5	3 7
Southwark	13 0	12 6	11 1	10 2
Poplar .. .	15 7	15 3	12 4	11 2
Middlesex	**6 1**	**5 9**	**5 0**	**4 8**
Wembley	3 8	3 7	3 8	2 9
Finchley .	3 8	3 4	3 4	3 2
Staines	7 1	9 9	10 2	7 9
Hayes and Harlington	7 4	11·5	8 1	8 6
Norfolk	**14 5**	**14 8**	**13 7**	**11 5**
Cromer	11 0	11 2	16 2	9 1
Great Yarmouth	22 6	22 5	20 8	18 5
Northamptonshire	**12·1**	**8 5**	**7 2**	**6 2**
Peterborough	7 9	6 8	5 2	3 9
Daventry	23 3	21 1	16 0	9 3
Northumberland	**25 2**	**24 3**	**20 4**	**15 5**
Bedlington Station	8 1	8 9	8 0	6 9
Willington Quay .	51·4	52 4	45 1	32 5

Table 36—Continued

UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS, 1934, 1935, 1936 AND 1937

ENGLAND—*continued*	1934	1935	1936	1937
Nottinghamshire	**15·5**	**14·6**	**12·6**	**10·0**
Newark	11·2	8·6	6·3	3·7
Arnold	24·7	26·7	23·5	18·8
Oxfordshire	**8·2**	**8·4**	**6·9**	**6·8**
Rutlandshire	**17·0**	**15·4**	**12·6**	**6·9**
Shropshire	**17·3**	**15·9**	**13·3**	**8·8**
Shrewsbury	12·5	12·2	10·8	7·7
Chobury Mortimer	17·5	19·0	16·3	14·7
Somersetshire	**12·8**	**11·4**	**8·8**	**7·0**
Keynsham	3·5	3·6	2·4	2·1
Bridgwater	19·2	17·7	14·1	13·0
Staffordshire	**16·8**	**15·2**	**12·2**	**9·7**
Stafford	8·0	5·9	4·2	3·4
Smethwick	9·5	7·6	5·0	3·7
Audley	32·8	33·1	27·8	24·8
Kidsgrove	53·1	56·2	50·1	44·5
Suffolk	**14·6**	**12·4**	**10·2**	**7·6**
Sudbury	9·5	9·3	6·4	3·8
Lowestoft	20·8	18·6	17·3	12·5
Surrey	**6·7**	**6·3**	**5·7**	**5·3**
Redhill	2·0	2·0	2·1	3·1
Sutton	8·9	8·5	8·8	7·9
Sussex	**6·8**	**6·6**	**6·3**	**6·3**
Hayward's Heath	2·2	2·2	2·6	2·2
Shoreham	10·3	10·9	10·4	10·2
Warwickshire	**8·0**	**6·9**	**5·3**	**4·4**
Rugby	6·6	3·7	2·3	1·6
Bedworth	13·4	11·7	9·3	9·3
Westmorland	**6·6**	**6·7**	**7·1**	**5·6**
Wiltshire	**9·6**	**7·2**	**5·6**	**3·8**
Chippenham	6·4	4·1	3·6	1·7
Salisbury	11·7	8·8	7·1	6·7
Worcestershire	**12·7**	**11·5**	**8·9**	**7·4**
Halesowen	7·5	5·9	5·1	4·2
Dudley	21·2	18·2	13·8	10·1
Yorkshire	**19·5**	**17·9**	**14·7**	**11·4**
Tadcaster	6·0	5·2	4·4	2·9
Elland	8·2	7·0	4·7	4·3
Guisborough	44·7	49·9	31·3	20·9
Hoyland	47·2	52·5	42·9	32·9
SCOTLAND				
Aberdeenshire	**19·8**	**18·4**	**16·8**	**14·6**
Inverness	7·4	8·1	8·0	4·2
Peterhead	39·7	35·8	37·3	34·5

Table 36—*Continued*

UNEMPLOYMENT RATES IN COUNTIES AND CERTAIN DISTRICTS, 1934, 1935, 1936 AND 1937

SCOTLAND—*continued*	1934	1935	1936	1937
Angus	**27·5**	**24·4**	**22·6**	**20·0**
Forfar	10·1	10·2	18·4	11·5
Montrose	27·9	32·0	29·4	16·6
Ayr	**22·6**	**21·1**	**17·9**	**13·8**
Dalmellington	9·2	7·1	4·7	4·1
Kilwinnig	54·3	50·8	38·5	22·8
Fife	**18·3**	**17·4**	**15·6**	**11·2**
Leslie	7·0	6·9	5·2	4·2
Cowdenbeath	23·7	24·4	22·2	15·8
Lanark	**29·4**	**27·4**	**24·2**	**18·2**
Lanark	15·2	13·2	12·3	9·5
Airdrie	42·0	41·4	36·8	30·1
Midlothian	**15·9**	**16·0**	**15·1**	**11·9**
Dalkeith	9·6	10·2	9·4	7·6
Leith	24·2	23·8	21·7	17·3
Renfrew ..	**27·2**	**25·5**	**20·5**	**15·5**
Renfrew	14·9	10·0	6·3	4·1
Port Glasgow	46·0	42·3	31·2	23·1
Stirlingshire	**17·9**	**18·0**	**14·8**	**11·5**
Bonnybridge	18·1	11·9	9·8	7·3
Kilsyth	17·1	19·8	18·9	14·8
WALES				
Caernarvonshire	**18·3**	**19·4**	**17·6**	**15·2**
Llanberis	6·2	5·2	5·4	5·6
Caernarvon	30·8	33·3	27·0	35·1
Carmarthenshire .	**21·2**	**24·4**	**22·8**	**21·3**
Carmarthen	18·7	19·7	17·9	11·1
Garnant ..	18·6	26·4	29·8	36·2
Denbighshire	**26·5**	**28·3**	**23·9**	**19·0**
Colwyn Bay	14·9	16·7	15·0	16·3
Brymbo	44·4	43·9	36·0	30·0
Flintshire	**19·8**	**19·3**	**15·8**	**14·5**
Shotton	13·1	11·6	9·3	8·6
Mold	37·3	36·4	28·9	25·2
Glamorgan	**36·9**	**36·4**	**34·9**	**23·7**
Resolven	18·8	10·7	10·0	4·5
Clydach	21·7	24·5	16·4	10·3
Pontlottyn	64·9	55·3	56·8	39·8
Ferndale	62·2	67·6	67·1	48·1
Monmouthshire	**36·0**	**33·5**	**32·7**	**21·1**
Newbridge	28·9	20·2	27·4	12·0
Blaina	75·5	60·0	60·8	40·0

cultural scheme have been excluded The figures for the earlier years are thus a little higher than if they had been prepared on the 1937 basis, comparison of figures compiled on both bases for January, 1936, shows a difference of 0 6 in England (between 15 2 in the old and 14·6 in the new basis), of 1 9 in Scotland (between 24·6 and 22·7), of 2·3 in Wales (between 33 7 and 31 4), and of 1 1 in Britain as a whole (between 17 1 and 16·0).

3. UNEMPLOYMENT RATES BEFORE AND AFTER THE FIRST WORLD WAR

9. One of the main technical problems in the evaluation of statistics of unemployment in Britain is as to how far the unemployment rate derived from trade union returns before 1914 can be taken as a guide, not merely to the direction in which unemployment was moving at any moment, that is to say its rise or fall, but also to the general level of unemployment over a period of years The mean unemployment rate recorded by the trade unions from 1856 to 1913 was 4·4, the mean rate from 1883 to 1913 was 4 8. The mean rate recorded under unemployment insurance from 1921 to 1938 was 14 2. What would have been the rate recorded under unemployment insurance if it had been in force from 1883 to 1913? This question must be approached by examining the differences in the basis of the trade union rate and the unemployment insurance rate

10. First, the trade union returns cover only trade unionists, that is to say, they exclude the unorganized workpeople in the trades to which they relate. The only direct evidence on the question whether trade unionists as such were liable to more or to less unemployment than non-unionists, is that derived from the working of the first unemployment insurance scheme in 1913–14. Under this scheme members of associations providing out of work pay of their own could under arrangements made by the association obtain their State benefit through the association, in place of direct from an employment exchange The following table, derived from the unpublished Board of Trade Report on Labour Exchanges and Unemployment Insurance to July, 1914, shows for each of the insured industries the benefit paid direct and through associations (in practice these were always trade unions), and shows also, in the last column, the association membership in each industry as a proportion of the unemployment books current

Table 37

UNEMPLOYMENT BENEFIT PAID THROUGH ASSOCIATIONS AND DIRECT, 1913-14

	Benefit paid 1913–14 (£000)			Association Benefit % of total	Association Members % of all unemployment books current
	Direct (1)	Association (2)	Total (3)	(4)	(5)
Building	242 7	78 9	321·6	24 0	20 1
Construction of Works	10 7	1 1	11 8		
Shipbuilding .	22 3	23 6	45 9	51 4	36 6
Engineering and Ironfounding	69 5	50 3	119 8	42 0	32 1
Construction of Vehicles	20 0	6 9	26 9	25 6	14 4
Sawmilling	0 5	0 4	0 9	33 3	29 1
Other Insured Workmen	4 1	1·9	6 0		
	369 9	163 1	533 0	30 6	29 5

In this table it is necessary to look at each industry separately. The closeness of the two percentages in columns 4 and 5 for all industries taken together is misleading, being due to the fact that building and construction of works combine a much higher rate of unemployment with a lower proportion of association members, thus lowering fallaciously the average for all industries in column 4 Shipbuilding, engineering and construction of vehicles all show association members drawing markedly more benefit than in proportion to their numbers, the difference is greatest in construction of vehicles, probably due to the inclusion here of the railway workshops which would combine exceptional stability of employment with relatively weak trade unionism The difference is much smaller in building and works of construction, but this is clearly due to the fact that the association members here would be mainly skilled men with a low rate of unemployment [1] If it were possible to show the skilled men and the labourers in building separately, it is clear

[1] In devising the financial basis of the first unemployment insurance scheme of 1911 it was assumed on the basis of some highly speculative statistics that the unemployment rate in building as a whole (including the building labourers) would be about twice that of the skilled crafts of carpenters and plumbers to which the trade union returns were confined The statistics now available under unemployment insurance show just this relation in 1936, 1937 and 1938 The rates for building as a whole in these three years are 13 8, 15 1 and 14 9 respectively, those for carpenters and plumbers weighted by the numbers in each craft are 7 0, 7 8 and 7 1.

that the trade unionists among the skilled men would be found drawing much more than in proportion to their numbers, probably at least as much more as in the other industries in the table. It should be noted, on the other hand, that the figures in column 5 probably under-estimate the effective proportion of association members which is put in sections 378–9 of the Board of Trade Report, not at 29 5 per cent, but at somewhere between 29 5 per cent and 34·0 per cent. It is clear that raising the figures in column 5 to allow for this would still leave the association benefit, industry by industry, well above the proportion of association members; that is to say, the trade union rate should be reduced materially, to cover unorganized as well as organized workers in the period before 1914. How great the reduction should be is hard to say exactly. But on the figures a reduction by one-sixth, say from 4·8 to 4 0, is reasonable.

11. Second, the unemployment insurance records after the war covered a greater variety of industries and occupations than those covered by the trade union returns, but this does not mean that they would necessarily or naturally show a higher percentage of unemployment The trade union returns, it is true, omitted occupations so badly paid or so disorganized that they could not attempt to pay out of work benefit, such as dock and wharf labour, building labour and semi-skilled and unskilled occupations generally But the returns left out, on the other hand, occupations so regular that they had not felt the need to provide for unemployment; these included the service industries and others meeting the needs of consumers directly. A test calculation covering the years 1927–36 suggests that, even if the building labourers are treated as a separate industry of high unemployment not covered by the trade union returns, the industries substantially covered by the trade union returns had more rather than less unemployment than the average of all industries This is not surprising, in view of the fact that they were in the main men's industries and that the rate of unemployment among insured men is normally higher than that among insured women. But the difference shown by this calculation is not clear or decisive It is safest to regard the occupations covered by the trade union returns, as having had on an average much the same general level of unemployment as all occupations taken together, though less in good times and more in bad times That is to say, no correction either way should be made on account of the narrower occupational basis of the trade union unemployment rate

12 Third, the unemployment insurance recording was more complete within the trades covered. The trade union returns in some important industries, such as coal-mining and to a lesser extent textiles, included only those who were wholly unemployed and not those who were working short time, losing a few days each week. In the eight years 1906–13, in which the corrected general rate for all unions averaged 4 8, the percentages of unemployment recorded in coal-mining was 0 7 and that in textiles was 2·4; as these two industries provided about a third of the total membership represented in the returns, these low percentages lowered the general rate substantially For coal-mining it is possible to make some estimate of the extent to which loss of work through short time escaped being recorded as unemployment; in this industry during the nineteen years 1895–1913 the average rate of unemployment returned by the trade unions was under 1 per cent. But the average number of days per week on which the mines were working was only 5 22, representing a loss of 0·78 of a day, or 13 per cent, on the theoretical maximum of six days a week and 0 36 of a day, or more than 6 per cent on the 5 58 days per week actually worked in the busiest year For textiles no statistical estimate of short-time before the war can be made, but it must represent a substantial unrecorded loss of employment. In most industries it is probable that a good many short spells of unemployment went unrecorded, most unions had a waiting period for which benefit was not paid and most gave benefit only for a limited period, so that men just out of work who hoped shortly to return to work had more than one reason for omitting to record their unemployment Finally, as a good deal of short period unemployment escaped record, so did some chronic unemployment. Some unions, indeed, provided out-of-work pay practically without limit of time; striking instances were given in my first study, of chronic unemployment recorded in the printing trade [1] But trade union benefit generally did not last indefinitely; men who remained unemployed for long might lose their union membership and fail to be recorded. In contrast to these omissions of unemployment from the trade union record, both at the beginning of any period of unemployment and at the end of a long period, the recording of unemployment by the Ministry of Labour between the wars was singularly complete In one way or another—to get benefit, to get unemployment assistance or public assistance, to get exemption from payment of health insurance contributions, to get the chance of work—it was made

[1] *Unemployment* (1909), pp. 140–1

worth while for every person capable of work to get on to the register of the unemployed as soon as he could, and to stay there whenever he was not working. Employers in the short-time industries, like textiles, soon learned to adjust their days of working so as to enable their operatives to qualify for benefit. Undoubtedly, under this fourth head, the trade union record substantially under-stated the true volume of unemployment Some measure of the under-statement, through omission of short intervals of unemployment, is probably afforded by the proportion which persons "temporarily stopped" bear to the numbers "wholly unemployed" in the insurance statistics. Table 11 shows that the former are about one-quarter of the latter, so that on the assumption that, as a rule, the former would not and the latter would have been recorded as unemployed by the trade unions, the trade union rate should be raised by a quarter on this account It is suggested below that another quarter should be added for the greater completeness of the insurance record in respect of prolonged unemployment and in other ways.

13 Fourth, the unemployment insurance record of unemployment was swollen at times by people who were not really in the labour market There were some who were incapable of ordinary work, but, as has been shown subsequently in the second World War, the number of such people was very small, not more than about 25,000 of the unemployed have been judged to be unsuitable for ordinary industrial work when there was need for them More important was the occasional swelling of the register of the unemployed by people who were not fully in the labour market for employment because their main occupation was some independent work of their own, or was unpaid domestic work as married women or otherwise. Since 1932 the largest classes of such people have been removed from the register of unemployment by the Anomalies Act of 1931, which in the case of persons following seasonal occupations and married women imposed special conditions for the receipt of benefit No doubt a certain number of people, particularly in country districts, whose substantial occupation is that of the small, independent worker on the land or in fishing, still contrive to come within unemployment insurance by collecting insurance stamps in one way or another[1] But the addition to the record of genuine unemployment in these ways is trifling in comparison to the whole On the other hand, the record of unemployment in Britain, more

[1] See *Report of Unemployment Insurance Statutory Committee on Share Fishermen* (1936), particularly paras 19, 20, 30

complete as it almost certainly is than the corresponding record in other countries, still omits a certain amount of concealed unemployment in lost time and lost work

14 Fifth, the bases of the trade union and of the unemployment insurance were not only different from one another but each of them changed from time to time In the case of the trade unions the change consisted in the gradual spread of the practice of giving out-of-work benefit and so widening the trade basis of the figures Use of the corrected percentages, giving equal weight throughout to the instrumental industries (engineering, shipbuilding and metals), avoids some but not all the results of this change of basis The corrected percentages yield a substantially lower average rate of unemployment (3 9) from 1856 to 1882, than from 1883 to 1913 (4 8), but from other evidence it is doubtful if unemployment was really more severe in the later period The higher rate was probably due to the more representative character of the returns In the present comparison, accordingly, pre-war unemployment as recorded by the trade unions is taken as 4 8 per cent, the mean for the last thirty-one years, in place of 4·4 per cent, the mean for 1856–1913 In the case of unemployment insurance the recording of unemployment between 1921 and 1938 was affected repeatedly by administrative changes, of which the following are the most important:—

(*a*) Exclusion from unemployment insurance after 1927, of persons aged 65 and upwards The numbers insured till 1926 relate to persons aged 16 and upwards, those from 1928 relate to persons aged 16 to 64 As figures of both kinds are available for 1927, the Ministry of Labour is able to construct a continuous table of index numbers from 1923, showing the numbers insured and the insured persons in employment in July of each year, as percentages of the corresponding adjusted numbers in 1923. For July, 1927, the number of insured persons of all ages over 16 is given as 12,131,000 and that of insured persons from 16 to 64 is given as 11,784,000; that is to say, the number of insured persons of 65 and upwards was 347,000 The number removed from the unemployment register by the change is given in the *Labour Gazette* for February, 1930, as 25,000; that is to say, little more than 7 per cent of the numbers of insured persons of 65 and upwards This is lower than the average unemployment rate, so that the change presumably had the effect of raising slightly the recorded rate of unemployment Presumably persons of 65 and upwards only continued

to take out unemployment books if they had a relatively good prospect of work

(*b*) Several minor administrative changes between 1924 and 1929, described in a note in the *Labour Gazette* for February, 1929, generally increased but sometimes decreased the numbers recorded as unemployed. Two of the most important of these changes were estimated to have added 65,000 persons to the register between April and October, 1928.

(*c*) The dropping of the "genuinely seeking work condition" in 1930, followed by the Anomalies Act of 1931, made a major disturbance in the record of unemployment, particularly among women, and makes it desirable for any detailed study of unemployment in particular industries covering those years to use figures for males only The first of these changes was estimated to have added 60,000 to the unemployed register between March and May, 1930, and many more later (*Labour Gazette*, November, 1930, and February, 1932). The latter was estimated to have removed between 180,000 and 190,000 persons from the register between October, 1931, and May, 1932 (*Labour Gazette*, April, May and June, 1932) These changes and some of their effects are discussed in the first part of my "Analysis of Unemployment" (published in *Economica*, November, 1936)

(*d*) A change in the conditions for unemployment assistance in April, 1937, increased the numbers recorded as unemployed by about 20,000 and affected the comparability of statistics of duration of unemployment, before and after the change (see paragraph 80) The change is described in the *Labour Gazette* for April, 1937

(*e*) A change in the method of counting the unemployed, made in September, 1937, and described in the *Labour Gazette* of the following month, lowered the general unemployment rate by 0 3 on an average The extent of the change differed in different industries as appears from a table at page 442 of the *Labour Gazette* for November, 1937

It has seemed worth while to set out these changes, knowledge of which may be useful for those who make detailed study of the British unemployment figures But none of them are of first-rate importance Their general tendency is to make the official figures an increasingly accurate and complete record of unemployment.

15 It should be added that the table at pp 68–9 of the 21st *Annual Abstract of Labour Statistics*, giving trade union unemployment percentages from 1881 to 1926, contains at the head the statement that "persons on strike or locked out, sick or superannuated are excluded " If this meant that such persons were excluded from the denominator as well as from the numerator represented by the percentages, this would make a further significant difference between the trade union rates and the unemployment insurance rates; the latter are based on all the unemployment books issued, i e include in the denominator persons sick or on strike or locked out This would make a difference of about 3½ per cent in the rates, i e the trade union rates would have to be reduced or the insurance rates increased by about 3½ per cent to allow for this and be made strictly comparable But from a note in the Second Series of Board of Trade Memoranda (Cmd 2337, p 97), it is clear that sick persons, though not counted as unemployed, were included in the membership on which the percentage was based, i e in the denominator of the fraction, they were included on the ground that they "were only temporarily disabled." The note at the head of the *Abstract of Labour Statistics* table presumably means only that they were excluded from the numerator

16. Of the various heads of difference named above, the first suggests that, for comparison with the unemployment insurance record between the wars, the unemployment rate recorded by the trade unions before 1914 should be reduced materially; the second head suggests no change either way; the other heads (particularly the third) suggest that the trade union rate should be raised materially If the rate of 4 8 recorded by the trade unions from 1883 to 1913 is first reduced under the first head to 4 0, then increased by a quarter to allow for the recording of "temporary stoppages" and by as much again to allow for the greater completeness of the insurance record in other ways, it yields an unemployment rate of 6 0. This, it is suggested, is the most probable rate of pre-war unemployment to use for comparison with the unemployment rate between the wars It makes the latter at 14 2 per cent, nearly 2½ times the true rate of unemployment before the first war.

17. From the working of the first unemployment insurance scheme in 1912–14 it is possible to make another direct comparison between trade union and insurance records, and between insurance records before and after the first World War. This is done in Table 38 below for 1913 and 1937. The main results are summarized at the end of the note to the table

Table 38

TRADE UNION AND UNEMPLOYMENT INSURANCE RATES OF UNEMPLOYMENT IN 1913 AND 1937

	Building	Ship-building	Engineering and Iron-founding	Construction of Vehicles	Saw Milling	All above Insured Industrie
1 Trade Union Rate, 1913	3 8	3 1	1·9	2 1	2 9	2 7
2. Unemployment Insurance Rate, 1913	5 1	3 4	2·4	2 5	2 5	3·6
3. Unemployment Insurance Rate, 1937	13·8	23 8	5·5	5·0	10 4	10 4
4 Numbers covered by Trade Union Returns, 1908 (*thousands*)	60	57	164	9	5	305
5 Insured Persons, 1913–14 (*thousands*)	813	264	818	210	12	2,117
6. Insured Persons, 1937 (*thousands*)	1,035	173	822	402	63	2,495
7 Row 2 as per cent of 1.	134	109	126	119	86	125
8. Row 3 as per cent of 2 .	271	700	229	200	416	279

The trade union rates and numbers covered in the returns in building relate only to carpenters and joiners and plumbers. The figures for construction of vehicles relate only to coach-builders, no doubt some of those who in the insurance statistics are assigned to construction of vehicles appear in the trade union returns under engineering. The numbers covered by the trade union returns are given as at 1908; the figures in 1913 would be higher but it is unlikely that the proportions would be materially different

The unemployment insurance rate of 5 1 in the column "Building" covers both building and construction of works, as the two are not separated for this purpose in the Board of Trade Report The other figures in this column relate to building, i.e exclude "public works contracting "

In row 5 the numbers of insured persons, 1913–14, represent the numbers of unemployment books current in July, 1914 It seems better to take these later figures in preference to the lower figures given in Table LXI of the unpublished Board of Trade Report of unemployment books of 1912–13 currency exchanged during the period July, 1913–July, 1914. These figures no doubt omit a number of men who should have been insured but did not at once take out unemployment books

In row 7 the figure of 125 for all insured industries is got by weighting the figures for separate industries by the numbers in row 5 In row 8 the figure of 279 for all industries is got by weighting the figures for separate industries by the numbers in row 6

In rows 1, 2 and 3 the rates for all the industries taken together are got by weighting the rates in the separate industries by the numbers in rows 4, 5 and 6, respectively The rate of 3 6 given in the Board of Trade Report for all insured industries, covers 144,000 persons in construction of works (at a rate of 5 1) and 65,000 in other insured industries (at a rate of 1·2), and works out at the same as that reached above

The main results of the comparison made in Table 38 are

(1) The unemployment insurance rate in 1913 taking all the insured industries together is 25 per cent above the recorded trade union rate. This accords with the suggestion made above of treating the 4 8 of recorded trade union unemployment from 1883 to 1913 as equivalent to 6 0 on an insurance basis

(2) The unemployment insurance rate in 1937 is 279 per cent of that recorded in

Table 38—*Continued*

1913 If ship-building is omitted as being abnormally depressed, the percentage for the other industries becomes 248, i e corresponds almost exactly to the conclusion reached above treating unemployment between the wars as two and a half times as high as unemployment before the first World War

18. These figures relate only to a single year in each case at the top of a cyclical fluctuation, but so far as they go they show good agreement with the inferences made on other grounds They support the suggestion that the most probable figure to take for the mean rate of unemployment in Britain before the first World War for comparison with the rate recorded between the wars is about 6 0, but this is subject to large margins of error either way. The true rate may easily have been as low as 5 0 or as the recorded trade union rate of 4 8, or as high as, say, 7 0. At a rate of 14·2 between the wars unemployment was between two and three times as severe as before the first World War, most probably about 2½ times

4 A POLICY OF CHEAP MONEY

19 An integral part of a policy of full employment is a "cheap money" policy The Government already possesses full *de facto* powers to control the long-term and short-term rate of interest. No new powers are required; but it is essential that the powers already in the hands of the Government by virtue of its control of the Bank of England should be consciously used and systematically applied

20. The rate of interest used to be looked upon as a price which adjusted the demand for savings to the supply It was thought that whenever business men desired to increase their outlay on new investment, the rate of interest would rise, and that such a rise would have the double effect, first, of inducing people to save more and, second, of discouraging the business man who was at the margin of doubt whether he should invest or not In this way, the rate of interest was thought to adjust the supply of savings to the demand for savings But this view has been exploded by modern economic research. The rate of interest cannot fulfil this function, because capital expenditure itself brings into existence the very savings necessary to finance it There is no question of "equilibrating" the one to the other because they are kept in equality by changes in the level of income Savings are the *result* of any expenditure (for whatever purpose) which is defrayed out of loans or reserves The amount which any community is able to save is determined by the amount which the community spends out of loans or reserves

A low rate of interest encourages such expenditure; it does not discourage savings, because savings are the inevitable concomitant of such expenditure

21. It is extremely desirable that there should be a high level of investment—private or public—in post-war Britain It is therefore desirable that the rate of interest should be as low as possible, so as to encourage every kind of outlay on capital goods. A housing programme, in particular, depends on finance being obtainable at a low rate of interest.

22 It is possible, and indeed likely, that the people of Britain after the war should desire and attempt to use for their current consumption a larger proportion of available manpower than would be in the public interest Such an attempt would not exclude a parallel attempt by business men and the State to marshal manpower for purposes of investment The result would not be that consumers' expenditure made it impossible to find money for capital expenditure or for budget deficits; the result would be that consumers' expenditure and capital expenditure (or budget deficits) together would add up to a total which exceeded the value of current output at the prices which it was desired to maintain Inflation, in other words, would be the result. It might be theoretically possible to combat such an inflationary tendency by an enormous increase in the rate of interest, so that would-be borrowers would find it unattractive to raise funds for capital expenditure To do so, however, would be a fatal mistake, since the re-equipment of British industry, a large expansion of investment in houses, and a considerable expansion of communal investment are surely the most immediately desirable objectives for post-war Britain It follows that the rate of interest must be kept low—as low as possible It follows, further, that a rise in the rate of interest must be ruled out as a weapon in the fight against inflationary tendencies. Recourse must be had to more direct methods. As long as inflationary tendencies exist as the aftermath of war, war-time controls must be maintained.

23 In war-time there is an unprecedented demand for loans—albeit a demand emanating almost exclusively from the State But whether such demand is public or private, war-time experience shows that it can be satisfied at interest rates which are as low as ever before in peace-time. This alone is sufficient proof of the statement that the Government possesses full control over the rate of interest How is this control exercised?

24 The volume of savings a community can make is determined, as stated above, by the volume of money it expends out of loans

or reserves The rate of interest is controlled by controlling the form in which savings can be held. Savings may be held in the form of cash, or bank deposits, or bills, or long-term loans The amount of savings held in the form of cash or bank deposits, once the rate of interest is kept stable, is determined by business turnover, that is to say, by the level of production and the level of prices The amount of savings held in the form of short-term bills is determined partly by business turnover, but partly also by certain established ratios which financial and other institutions desire to preserve between their short-term and long-term assets. The amount of savings, finally, held in the form of long-term bonds is a residual item—all funds not held in another form. This applies when the rate of interest is kept stable But how can it be kept stable? The answer is a simple one The Government has to decide upon the rate it wishes to maintain and then to allow the savers to hold their savings in the form in which, with that rate of interest, they want to hold them That is to say, the Government must offer long-term bonds and short-term paper "on tap" so that savings can flow into them according to the wishes of the savers

25. It may be asked, what happens if the Government wishes to borrow and spend £100 millions and the public is not prepared to subscribe more than (say) £60 millions to the long-term or short-term issues "on tap"? The answer, again, is simple. A deficit expenditure of £100 millions having been decided upon in the light of the general economic situation, the Government raises the balance of £40 millions through "Ways and Means Advances" from the Bank of England As it proceeds to spend the £100 millions, it increases the stock of the community's savings by £100 millions These new savings will again have to be held in some form—in cash, deposits, bills, or bonds. Having spent £40 millions out of "Ways and Means Advances" from the Bank of England, the cash basis of the banking system has been increased by that amount The banks will not want to hold more than their customary ratio of cash against deposits. Thus they will, during the next period, again subscribe to the "tap" issues. The public will not wish to hold all their new savings in the form of cash or bank deposits (these being determined by business turnover) and will also subscribe to "tap" issues. The banks can subscribe to these issues only to the extent that the public are prepared to hold more bank deposits. If the public refuse to hold any of their current new savings in additional bank deposits, because their demand for cash is satiated, all the subscription to the "tap" issues will come from the public and

none from the banks Bank deposits and bank assets will cease to expand

26 The essence of what has been said above is this maintaining a stable rate of interest means, first, deciding what the rate of interest should be and, second, offering the citizens exactly what, in view of the thus determined rate, they are anxious to have In practical terms, this means keeping long-term bonds and short-term paper on "tap," and "creating" additional cash or Central Bank money by borrowing from the Bank of England whenever "tap" subscriptions are insufficient to cover the budget deficit. This does not mean inflation, because the very size of the deficit is decided upon as an antidote to the "deflationary gap" which would exist in the absence of a deficit. If, as may well happen, "tap" subscriptions exceed the amount required by the government, this shows that the rate of interest offered is higher than is necessary, and should lead the government to lower the rate

27. It might well be asked why the Government should not decide right away that the best rate of interest is a zero rate and proceed to finance all its deficits by the "creation" of new cash or bank money through "Ways and Means Advances" This question is a pertinent one It does not raise, as many of the so-called monetary reformers seem to think it raises, an issue of principle The difference between printing paper which is a claim to cash in ten years and carries an appreciable rate of interest and printing paper which is a claim to cash on demand and carries an insignificant rate of interest is merely a difference of degree, not one of substance Equally, there is no difference of substance between "creating" cash and printing, say, short-term bills carrying 1 per cent interest If it is demanded, therefore, that the Government should cease to borrow at interest and simply cover its deficit by creating cash, this, in effect, amounts to demanding that governmental monetary policy should reduce the basic rate of interest, that is, the rate on paper, which carries no private risk, not gradually, but suddenly and to zero. It would have to be shown that a sudden reduction is preferable to a gradual one Can this be shown?

28 There are at least two objections against it. First, a sudden reduction in the rate of interest produces a sudden appreciation in the capital value of all outstanding long-term money claims and all durable capital assets, such as land, houses, industrial property and so forth An appreciation of these values—particularly a sudden one—which means windfall profits to their owners, may induce them to increase their luxury expenditure on an appreciable scale While

this, of course, would create additional employment, it would do so for purposes of small social value and might create social tensions that are wholly undesirable. Second, there are innumerable financial and other institutions, whose activities depend upon their being able to convert cash into interest-bearing paper that carries no appreciable private risk If there is no further supply of gilt-edged Government paper, an important foundation of their activity crumbles away, and special arrangements are necessary to maintain them in being This applies not only to insurance companies and banks, but also to pension funds, charitable organizations, research endowments, and so forth These two objections lose their force when applied to a gradual and long-term policy of reducing the rate of interest; but they would appear to have considerable weight against a policy of sudden changes.

29 A policy of gradual reduction gives time for adjustment. The speed with which it proceeds can be adjusted to circumstances If the long-term rate of interest is reduced by one-tenth of 1 per cent every two years, a total reduction from the present level of 3 per cent to a new level of 2 per cent is effected in twenty years This rate of reduction may be considered too slow; it can hardly be considered too fast If, through conversions of the existing national debt, it could be spread over the total of that debt, it would allow the annual amount of interest payable on the national debt to remain stationary in spite of an annual budget deficit of £400 millions This calculation alone should dispose of the arguments of those who claim that annual budget deficits would impose an unmanageable "transfer burden" upon society.

30. The method that might be applied for the gradual reduction in the rate of interest on long-term bonds is the following: The length of the bonds offered "on tap" is increased every month, at a stable rate of interest After a while, the length of the bond is reduced, and the rate of interest offered on the shorter bond is also reduced. This can be repeated over and over again, giving a perfectly smooth transition. As long as the method of issuing bills and bonds "on tap" is maintained, the rate of interest is controllable without any difficulty whatever

5. THE THEORETICAL INEVITABILITY OF CYCLICAL FLUCTUATION

31 The inevitability of trade cycle fluctuations, in an unplanned market economy, can be deduced by two lines of argument: by showing the way in which a developing boom affects incomes and

savings, and by an analysis of the structure of industry, particularly the division of industry between trades producing primarily goods for current consumption and trades producing primarily goods for expanding the capital equipment of the country Both roads lead to the same result, since the flow of money incomes and savings is merely the reflected image of what happens in the various departments of production. A full explanation of the trade cycle would require a book by itself. For the present purposes, it is sufficient to stress the following: the pattern of income distribution in our society is such that, whenever the national income expands, intended savings expand at a faster rate than the national income. Intended savings, however, become real savings only when they are offset by loan expenditure As savings rise at an ever-accelerating rate, so somebody's loan expenditure must rise at an accelerating rate. This produces increasing internal tension, if only because of the growing volume of private indebtedness. A small curtailment of bank credit may stop this process and usher in depression Even if no conscious policy of credit restriction is introduced, a small abatement in the optimism (i.e. profit expectations) of business men may do the same. But even without any special assumptions as to credit policy and business confidence it is at least plausible that a process cannot continue indefinitely when it depends upon some factor—current investment—growing at a steadily accelerating rate. Nor is this all. Current investment activity means making current additions to the existing stock of capital The new capital, forthcoming in ever growing volume, competes with the old and reduces the profits obtainable on the old. Since new investment—in an unplanned market economy—depends upon favourable profit expectations on the part of entrepreneurs, it is not likely to grow at a rapid rate when the profits obtainable on older equipment show a continuously falling trend.

32. Additional equipment, moreover, in the majority of cases requires additional labour to work it A boom derived from a rapid growth in the production of new industrial capacity finds its natural termination in an absolute shortage of labour. This inevitable end is foreshadowed by sectional shortages and rising labour costs, reducing the entrepreneur's eagerness to invest often long before all available labour has been absorbed In short, it is inherent in the design of an unplanned market economy that every approach to full employment produces increasing inner tension, until this tension is relieved by the brutal cure of depression Since consumption and private investment can only grow and fall together,

every movement of expansion or of contraction once inaugurated becomes cumulative. The instability of the unplanned market economy is not accidental, it is inherent. Modern analysis makes it possible to state categorically that, in the absence of planning there will be fluctuations How severe they would be, in future, theory alone cannot tell us

Appendix C

THE QUANTITATIVE ASPECTS OF THE FULL EMPLOYMENT PROBLEM IN BRITAIN

By NICHOLAS KALDOR

SECTION I: ALTERNATIVE METHODS OF SECURING FULL EMPLOYMENT BY FISCAL POLICIES

SECTION II: THE FULL EMPLOYMENT PROBLEM IN 1938

SECTION III: THE FULL EMPLOYMENT PROBLEM AFTER THE WAR

SECTION IV: THE LONG RUN CONSEQUENCES OF CONTINUOUS PUBLIC BORROWING

1. The purpose of this memorandum is to examine what a full employment policy would involve, in terms of the revenue and expenditure of public authorities, assuming that the principle is

accepted that the fiscal policies of the State are so regulated as to secure adequate total outlay for the community as a whole. Any such analysis of the quantitative aspects of the full employment problem requires a large number of hypotheses and assumptions resting on more or less firm statistical foundations. We shall set out these hypotheses and assumptions as fully as possible so as to enable the reader who has reason to differ from them to revise the estimate accordingly.[1]

2 We shall begin by giving a brief account of the nature of the alternative policies by which full employment may be secured, and showing their general implications. After this introduction, the actual statistical analysis will be tackled in two stages first by examining the implications of the full employment policies in the circumstances of pre-war Britain; second, the nature of the problem in the conditions that will probably arise after the war.

I. ALTERNATIVE METHODS OF SECURING FULL EMPLOYMENT BY FISCAL POLICIES

3 There are many ways in which a Government desirous to ensure full employment can so regulate the fiscal policies of the State as to ensure adequate total outlay for the community as a whole; but they can all be reduced to four distinct types[2] The first is by increased public expenditure covered by loans; the second is by increased public expenditure covered by taxation; the third is by increased private spending brought about through remission of taxation, and the fourth is by increased private spending brought about through changing the incidence of taxation or imposing a combined system of taxes and subsidies. The first two methods imply that idle resources are primarily absorbed for purposes that are determined by, or are under the control of, the State, the last two that they are absorbed in uses determined by private citizens. The first and the third (though not the second or the fourth) imply "deficit spending"—i e. a state of affairs where aggregate State expenditure, for all purposes, exceeds total State revenue from

[1] The author is indebted to Dr. T Barna both for working out the statistical correlations involved, and for allowing the use of yet unpublished estimates regarding the incidence of taxation

[2] [The first three of these types are represented by Routes I, II and III, shown in Table 18 of the Report and discussed in relation to that table The fourth type, though included in this memorandum for the sake of logical completeness, presents such extreme practical difficulties that it did not appear advantageous to discuss it in the Report itself —W H. B.]

taxation and public property, and where in consequence there is continuous public borrowing. We shall examine the implications of each of these policies.

4. An increase in the scale of public expenditure with given *rates* of taxation, will increase the total outlay of the community on home-produced goods and services by a greater amount than the rise in the public expenditure itself, since—on account of the increase in incomes and the increase in productive activity to which it gives rise—it will lead to increased private expenditures. The size of this secondary expansion will depend on three factors; first, on the way private citizens allocate the increase in their incomes (their "marginal" incomes) between taxation, savings, and consumption; second, on the extent to which increased spending by the Government, and increased spending by private citizens, leads to an increase in capital expenditures by industry (the increase in "private investment"); and third, on the proportion of the increased demand for goods and services of all kinds which goes to home-produced and to imported goods and services respectively. If by means of a policy of increasing public outlay, while keeping the existing rates of taxation constant, an expansion of demand is generated that is sufficient to absorb unemployed resources (i) the total increase in the demand for goods and services will be *greater* than the value of the potential output of unemployed resources, since part of the increase in demand will be directed abroad; (ii) the increase in public expenditure will be *less* than the total increase in demand, since there will be a consequential increase in private consumption and private investment, (iii) the increase in public borrowing (the size of the deficit) will be *less* than the increase in public expenditure, since the higher expenditure will increase the yield of existing taxation.

5 Full employment could be secured, however, by means of increased public outlay, even if the State expenditure is fully covered by taxation—dor the reason that an increase in taxation is not likely to reduce private outlay by the full amount of the taxes paid. It may be assumed that all taxes have some influence on the savings of the individuals on whom they fall, taxes which fall on the poor have a relatively large effect on consumption and a relatively small effect on savings, with taxes paid by the rich it is probably the other way round. Hence an increase in public expenditure will cause a net addition to the total outlay of the community, even if it is covered by taxation; and this net addition is likely to be all the greater, the more progressive is the incidence of the extra taxation

raised to cover it. But since the addition to total outlay brought about by a given expansion of public expenditure would in this case be necessarily much smaller than in the case where the rates of taxation are kept constant and there is an expansion in the rate of borrowing, the total expansion of public expenditure would have to be much greater.

6. The alternative approach to securing adequate total outlay, and hence an adequate total demand for labour, is to increase not the State expenditure, but the expenditure of private citizens. Here also there are two different methods of procedure, according as the policy chosen involves "unbalanced budgets" or not. The creation of a budgetary deficit by the simple device of reducing taxation relatively to a given rate of expenditure will increase employment, since it converts the ordinary expenditure of the Government into "loan expenditure" which is an offset to savings Since some part of the additional incomes made available through tax remissions would be bound to be saved by the recipients, the necessary deficit would always have to be larger, in this case, than in the case of increased public outlay, there are, on the other hand, no technical obstacles to making the deficit sufficiently large

7. The financially orthodox method of raising private outlay relies on the stimulus given by changing the incidence of taxation reducing the taxes falling on the relatively poor (who can be expected to spend most of the additional incomes made available to them) and increasing the taxes falling on the relatively rich, and thereby reducing total savings at any given level of income. This can be done either by raising the degree of progressiveness of income tax and surtax at any given standard rate (increasing exemptions in the lower income brackets and graduation in the upper brackets) or by reducing indirect taxes and raising the standard rate of income tax. In order to secure an adequate expansion of outlay in this way, however, the required changes in relative taxation would have to be very large, while the scope for such changes—under the British system of taxation, which is fairly progressive in any case—is limited To secure an adequate expansion under this method the State may have to supplement the reduction or abolition of particular taxes by the granting of subsidies (which are negative indirect taxes) either in the form of subsidies on the prices of necessities (such as are given in war-time) or subsidies on wages paid to employees.[1]

[1] A subsidy on wages paid to employers would—insofar as the benefit of lower wage costs is passed on to the consumers in the form of lower prices—have much the same kind of effect as subsidies on commodities or subsidies on earnings

In general, if considerable changes in the structure of income distribution were desired, it is better to tackle the problem directly—by forcing producers to sell at lower prices relatively to costs—than indirectly through changes in taxation or some combined scheme of taxation and subsidies. The main reason for this is that it is extremely difficult to devise a scheme where the consequential higher taxation on profits would not in itself have adverse effects on incentives and hence on employment.

8. It will be shown in Section II of this memorandum that in the kind of circumstances which existed in Great Britain in 1938, of the above policies those which did not involve loan expenditure would have been ineffective or impracticable Full employment could have been secured (in principle) without deficit finance, either by enlarging sufficiently the range of public expenditure, or by changing (through taxation and subsidies) the distribution of available incomes, but in either case, the policy would have involved such major changes in the social framework as to have made it—from a political and administrative point of view—very difficult to carry out. The practical alternatives therefore were either the creation of budgetary deficits through higher public outlay, or the creation of deficits through tax remissions

9. It will be argued in Section III of this memorandum that in the circumstances of the early post-war years this will probably not be so; the needs of private industry after the war, together with the higher ratio of exports to imports, are likely to set up, for a number of years, a demand for labour that will be much more closely related to the available supply than was the case before the war. This might enable a full employment policy, for a time, to be consistent with budgetary surpluses, rather than public borrowing. But taking a longer view, there appears to be no reason why the employment problem should not again present itself in much the same aspects as in the 1930's; and once this stage is reached, the practical methods of maintaining full employment will again be the creation of loan expenditure, either by increasing public outlay, or by lowering taxation.

10. In Section III, dealing with the post-war situation, it will be assumed that (1) a rigid separation will be made in the public

paid to employees But insofar as owing to rigidity of prices in some sections of the economic system the cost-reduction cannot be relied on to result in corresponding price reductions in every case, a subsidy on wages paid to employers would be less effective as a means of raising employment than either subsidies on commodities or subsidies on wages paid to employees.

accounts between the ordinary running expenditures of the State and investment expenditures, (ii) that the Government will plan the rate of national investment as a whole, both privately and publicly financed, (iii) that the rates of taxation will be so adjusted as to secure continuous full employment with the planned rate of investment expenditure. It will thus be shown: first, what is the level of national investment consistent with full employment, assuming that the level of taxation is just sufficient to cover the ordinary expenditure of public authorities; and second, what are the adjustments in taxation necessary in order to secure higher levels of investments that may be more in accord with the objects of national policy. In Section IV, a brief examination will be made of the long run aspects of the problem, with particular reference to the long run effects of a rising National Debt.

II THE FULL EMPLOYMENT PROBLEM IN 1938

11. In order to examine the implications of full employment policies, in the circumstances of 1938, in quantitative terms, it is necessary to make three kinds of estimate:—(i) how the value of the national output would have been changed as a result of the change in employment; (ii) how the various types of income would have been changed, as a result of the changes in the value of the national output; (iii) how the various elements of the national expenditure—consumption, taxation, the level of imports and the Balance of Payments,[1] private savings and private investment outlay—would have been changed as a result of the changes both in the national output and in private incomes

12. The estimates are based partly on the official estimate of the national income in 1938, as given in the White Paper on the National Income,[2] partly on a regression analysis of the relation between variations in the national income and its various components in the inter-war period, based on Professor Bowley's estimates of the National Income,[3] partly on other estimates relating to savings and the relation of undistributed profits to total profits.

[1] By the term Balance of Payments, here and throughout this paper, we mean the balance of payments on income account—i e. the net sum of the balance of merchandise trade, the balance of invisible exports and imports (shipping, insurance, etc.), and the net income from foreign investments It excludes gold and capital movements.

[2] Cmd 6520, 1944

[3] *Studies in the National Income*, 1924–38, Cambridge University Press, 1942. Professor Bowley's series have been adjusted for a number of factors, in particular for over-assessments and business losses in the figures for profits.

13. The calculations throughout are in real terms, i.e. they assume constant rates of wages and prices. In case a full employment policy had been associated with a rise in wages and prices, the resulting money totals (of the national income, consumption, Government expenditure, etc.) would have been higher but without necessarily changing, to any significant extent, the relative magnitudes of the various items

The National Output in 1938

14. The estimate of the "net national income and expenditure at factor cost"—which is a measure of the value of the current national output of goods and services, plus the net income obtained on

Table 39

NET NATIONAL INCOME AND EXPENDITURE IN 1938

	£ millions		£ millions
Rents	380	Personal expenditure on consumption.	3,510
Profits and Interest	1,385	Private net investment at home	420
Salaries	1,100	Balance of foreign payments	− 55
Wages	1,730	Expenditure of public authorities on goods and services out of revenue	725
Pay of H M Forces	80	Government expenditure on goods and services out of loans	75
Net National Income	4,675	Net National Expenditure	4,675

Note—The estimates are from Cmd 6520, Table I, except that the figures for profits, private net investment at home and the net national income (and expenditure) have each been raised by £70 millions, to adjust them for the amount of "inventory losses" in profits, as this adjustment gives a more correct picture of the value of the national output at constant prices The figures on the expenditure side are measured at factor cost of production, i e all indirect taxes are deducted from, and subsidies added to, the relevant categories. The estimates in the latest White Paper show separately the expenditures incurred in the transfer of property and the investment of savings, which are here included in the item "private net investment at home" This item is therefore composed of the following: net investment in fixed capital, £335 millions, net increase in working capital and stocks, £25 millions, cost of transferring property, etc, £60 millions The figures in this table are rounded off to the nearest £5 millions

foreign investments—is given in Table 39 The national income, on this definition, is smaller than the sum of the separate incomes of all individuals and corporations, since it does not include "transfer incomes" (i.e. National Debt interest, pensions, payments in respect of unemployment relief, etc) which, though regarded as income by the individuals concerned, are not earned in connection with the

production of goods and services These "transfer incomes" amounted to £478 millions in 1938. Similarly, the expenditure of public authorities shown on the right hand side of Table 39 is not the total expenditure of public authorities in that year, but falls short of this amount by the £478 millions transfer expenditures. The total amount of taxation paid by private individuals and corporations in 1938 was £1,176 millions, as shown in Table 42, p 355, of which (after the deduction of £478 millions, which went to provide for transfer expenditures and £15 millions for subsidies) £683 millions was available to meet the expenditures on goods and services. This latter sum, together with £44 millions state revenue from public property, makes up the £727 millions "public expenditure on goods and services out of revenue." Since the total expenditure of public authorities on goods and services was £802 millions, there was a net deficit of £75 millions, covered by borrowing (This was by no means typical of the pre-war period, since in most years there was a net surplus on the consolidated public accounts.[1] The deficit in 1938 was solely due to the fact that 1938 was a re-armament year.)

The National Output under Full Employment

14 In 1938 there were, roughly, 14 5 million wage-earners aged 16–64, of whom about 1·7 millions were unemployed[2] On the assumption that under "full employment" 97 per cent of wage-earners are employed, the additional number of wage-earners to be brought into employment was 1·25 millions. On the assumption of constant returns (which seems well supported by the pre-war relation between variations of employment and output) the value of the additional net output of 1·25 million wage-earners in primary and secondary industries might be put at £375 millions.[3] We must also take into account, however, the consequential increase in the value of the output of "tertiary industry," i.e. in the distributive

[1] Cf Clark, *National Income and Outlay*, Macmillan, 1937, p. 59

[2] This figure was reached as follows Of 13 7 million persons insured for unemployment under the general scheme, 1 8 millions were unemployed in 1938 Of the insured, about 2½ million persons were in non-manual occupations, and it was assumed that the general rate of unemployment was applicable to them On the other hand, 3 million persons in manual occupations (1½ million men and 1½ million women) were in occupations outside the insurance scheme, such as agriculture, domestic service, etc It was estimated that of these 3 millions, 200,000 were unemployed.

[3] On the basis of the 1935 Census of Production, but correcting for changes in wage rates, etc , net output per operative in 1938 can be put at £300

trades and in services The value added by distribution can be taken (on the average) as 50 per cent of the factory value, and since the increase in personal expenditure on consumption would have been about half the increase in output (see below) the incomes earned in the distributive trades could be assumed to have increased by some £95 millions, while a further £30 millions can be added on account of the consequential increase in the income from professional services,[1] etc. The net result is that full employment would have increased the national output by £500 millions, or 11 per cent, over the £4,675 millions actually reached, thus making it £5,175 millions.

The same result can also be reached by the following considerations As will be shown below, under pre-war circumstances, and in terms of constant wage-rates, 36 per cent of any increase in the national output went into wages, which means that the increase in the national output was 2·78 times the increase in the wages bill associated with a given rise in employment Since the additional employment of 1·25 million wage-earners would have added some £180 millions to the total wage payments,[2] it would have increased total income by £500 millions.

Incomes under Full Employment

15. We must next consider how the increase in the national output would have affected the different types of income This is shown in Table 40. The average percentages of the different types of income relate to the actual income in 1938 and are taken from Table 39 The "marginal" percentages which show what would have been the share of each type of income in the increase in the national income, were estimated on the basis of the pre-war relation between the variations in the national income, wages, salaries and rent, and of the pre-war proportion of marginal profits put to reserve This estimate shows that while the share going into wages out of an increase in incomes is only slightly less than the share of wages in the whole income, the share going into salaries is little more than half the average, while the share going into rent is nil On the other hand, the share of profits and interest takes up 51

[1] Equivalent to a 5 per cent increase in services other than distributive services, and excluding the net output of dwellings and of services provided by the Government

[2] Of the 1 25 millions, 1 million were adult men and 250,000 women or young men. The average weekly earnings of each category in 1938 have been obtained from the earnings inquiry of the Ministry of Labour. To obtain the annual wage bill, the weekly figures were multiplied by 48

per cent of any increase in income (as compared with 29½ per cent in average income) and since 45 per cent of this increase is put to reserve the share of undistributed profits in marginal income becomes 23 per cent as against 7 per cent in average income. These differences between the average and marginal profits (and, in particular, the high proportion of marginal profit going into undistributed profits) are chiefly responsible, as will be seen below, for the increase in savings, following on an increase in incomes, being so much larger than the proportion of savings in total income.

Table 40

SHARE OF DIFFERENT FACTORS IN THE NATIONAL INCOME

(*In Percentages of Total Income*)

	Average	Marginal
Rent .	8	—
Distributed profits and interest .	22½	28
Undistributed profits	7	23
Salaries . .	23½	13
Wages .	39	36
Total	100	100

Note—*Average* percentages based on Table 39 *Marginal* percentages were obtained as follows Wages and home-produced national income, both deflated by an index of wage rates, were correlated for the period 1924–38, on the basis of Bowley's estimates of the National Income, corrected for various factors Salaries, deflated by an index of salary rates, were correlated with wages, deflated by an index of wage rates Rents did not fluctuate with employment The share of undistributed profits in marginal profits is based on Radice, *Savings in Great Britain*, page 71 There was no trend in the share of wages during the period, but there was an upward trend in the share of rents and salaries

The Level of Taxation

16 We must now consider the allocation of expenditures out of the different types of income between taxation, savings and consumption. We shall first estimate the amounts taken in taxation from the different incomes and then the allocation of income available after taxation between savings and consumption.

The proportions of average and marginal incomes paid in direct and indirect taxation in 1938 are shown in Table 41.

Applying these estimates to the distribution of incomes under full employment (which is shown in Table 44, p. 359), it is possible to estimate what the yield and the incidence of taxation would have

Table 41

TAXATION OF AVERAGE AND MARGINAL INCOMES IN 1938

(*In Percentages of Incomes*)

	Average Incomes		Total	Marginal Incomes		Total
	Direct Taxes	Indirect Taxes		Direct Taxes	Indirect Taxes	
Rent, interest and distributed profits	23	8	31	35	4	39
Undistributed profits	25	3	28	33	2	35
Salaries	4½	14½	19	10	10	20
Wages	—	18	18	2	14½	17
Average	11	12½	23½	19	8	27

Note —The percentages are largely based on the estimates of the incidence of taxation in an unpublished thesis by T Barna Social insurance contributions have been included in indirect, and not direct, taxation, divided between salaries and wages Taxes on undistributed profits include income tax at the standard rate, a proportionate share of stamp duties, N D C and of indirect taxes on production in general (allocated to this item because they fall on investment goods bought out of undistributed profits) Taxes falling on the pay of H M Forces and on social incomes are not included in the figures. For the yield of different kinds of taxes, in the actual situation and under full employment, see Table 42 below

been under full employment (assuming the 1938 rates of taxation in force) and how it would have compared with the yield and incidence of taxation in the actual situation This is shown in Table 42

Consumption and Savings

17. As regards the distribution of the expenditure between consumption and savings from *available* incomes (incomes remaining after taxation), the estimates shown in Table 43 were based on the following considerations Total net savings (at factor cost) amounted to £440 millions in 1938 [1] This, however, excludes that part of the savings (amounting to £90 millions) which is offset by death duty, etc., payments From the point of view of estimating the saving propensities of different classes, these have also to be taken into account and therefore the average percentages in Table 43 refer to the £530 millions *gross* savings, which were allocated between

[1] This is equal to the sum of the items private net investment at home, the balance of foreign payments, and Government expenditure out of loans, in Table 39, p. 350

Table 42

ACTUAL AND FULL EMPLOYMENT TAXATION IN 1938

(At the rates of taxation in force in 1938)

	Actual Taxation						Taxation under full Employment					
	Direct Taxes		Indirect Taxes		Total		Direct Taxes		Indirect Taxes		Total	
	£Mn	%	£Mn	%	£Mn	%	£Mn	%	£Mn	%	£Mn	%
Rent, Distributed Profits and Interest	373	*72*	125	*19½*	498	*43*	418½	*68*	130½	*19*	549	*42*
Undistributed Profits	89	*17*	9	*1½*	98	*8½*	127	*21½*	11	*1½*	138	*11*
Salaries	50	*10*	160	*25*	210	*18*	56½	*9*	166½	*24½*	223	*17*
Wages	5	*1*	310	*48*	315	*27*	10	*1½*	336	*50*	346	*27*
Pay of H M Forces and Social Income	—	—	40	*6*	40	*3½*	—	—	40	*5*	40	*3*
Total	517	*100*	644	*100*	1,161	*100*	612	*100*	684	*100*	1,296	*100*

Note —Social Insurance contributions included among indirect taxes.

Table 43

PROPORTION OF AVAILABLE INCOMES SAVED

(*In Percentages*)

	Average	Marginal
Rents, distributed profits and interest	11	25
Undistributed profits .	100	100
Salaries . .	9	15
Wages . .	6	10
Total Income . . .	14	33

Note.—Average percentages were obtained by relating amounts saved to incomes received less taxation, but not deducting death duty payments, as the savings are gross of death duties The large difference in the estimate of savings out of average and marginal total income is primarily due to the higher proportion of undistributed profits in marginal income, as shown in Table 40

the different types of income as follows:—Savings out of undistributed profits (i e. undistributed profits, less taxes)[1] amounted to £230 millions, leaving £300 millions savings out of personal incomes. The total savings of persons with incomes below £250 a year can be estimated at about £120–£140 millions,[2] thus leaving £160-£180 millions as the total savings of those with incomes over £250 a year. It was assumed that the savings of persons with incomes below £250 were divided between wage-earners, salary earners and the recipients of other incomes in proportion to the amount of wages and salaries and other incomes earned; while the savings of persons above £250 were divided between salary-earners and other incomes (i.e. the recipients of rents, distributed profits and interest) in proportion to the amount of salary income and other incomes in the latter category [3] On these assumptions £300 millions personal gross savings were allocated as follows:—

[1] Undistributed profits were adjusted for stock valuation

[2] Based on the method employed by Radice, *op. cit* ch vi, making certain adjustments

[3] Total personal incomes below £250 a year amounted to £2,600 millions, of which £1,810 millions were wages, £520 millions salaries and £270 millions other incomes Personal incomes above £250 a year amounted to £1,900 millions of which £580 millions were salaries and £1,320 other income (These figures include interest on the National Debt, but not other transfers, i e unemployment benefits, etc , which are excluded on the supposition that no savings were made out of the latter)

	£ millions
Rents, interest and distributed profits .	130
Salaries . . .	80
Wages	90
Total personal savings .	300

These amounts were then applied to the incomes remaining after taxation in the respective categories and the results are as shown in Table 43 The estimate of the percentages of *marginal* income saved shown in the same table are based on the following considerations. The estimate of 33 per cent for savings out of total available income (which is the equivalent of 24 per cent of marginal income before deducting taxation) is based on the estimates of the "multiplier" before the war[1] which suggest that expenditure on consumption took up about one-half of an increase in income, while savings and taxation took up the other half Since undistributed profits take up 23 per cent of marginal income, and therefore 63 per cent of marginal savings, only 37 per cent of marginal savings are made out of personal incomes. These were allocated among the three categories of wages, salaries and distributed profits as shown in Table 43. The percentage of savings out of marginal wages and salaries is supported by estimates based on the movements of working and middle-class savings.[2] The assumption that 25 per cent of the marginal income out of distributed profits is saved, is supported by the facts (i) that the typical profit income is larger than either the typical wage or salary income and it is reasonable to suppose that a higher proportion of any increase of income is saved, the higher the income; (ii) that individual incomes from profits are more unstable than individual wage or salary incomes and therefore a higher proportion of any increase of income tends to be saved.[3] While pre-war statistics tend to suggest that the total savings of the capitalists out of *personal* incomes are not much more than the payments of death duties, this is quite consistent with the marginal savings out of profits being relatively high

[1] Clark, "The Determination of the Multiplier," *Economic Journal*, 1938, p 435 *et seq* , R and W M Stone, "The Marginal Propensity to Consumer and the Multiplier," *Review of Economic Studies*, Vol. VI, p 1

[2] Radice, *op. cit.* p. 66.

[3] It should also be borne in mind that while the increase in the wage and salary bill is largely due to the increase in the number of persons earning wages and salaries, the increase in profit incomes implies an increase in income per income recipient

Full Employment Income and Outlay

18. The assumption made in paragraphs 15–17 above makes it possible to estimate the distribution of private incomes and outlay under full employment and the effects of changes in the rates of taxation. It follows from these assumptions and from Tables 40–43 (*a*) that an increase (or decrease) in the national income by £100 millions, the rates of taxation remaining unchanged, will increase (or decrease) consumption by £49 millions, savings by £24 millions and tax payments by £27 millions; (*b*) that at full employment level of income, a proportionate change in all tax rates, increasing (or decreasing) revenue by £100 millions would decrease (or increase) consumption by £73 millions, and savings by £27 millions; (*c*) that a similar change in the rates of *direct* taxation (excluding social insurance contributions) would decrease (or increase) consumption by £60 millions, and savings by £40 millions, (*d*) that a similar change in the rates of *indirect* taxation and social insurance contributions would decrease (or increase) consumption by £84·5 millions, and savings by £15·5 millions.

The distribution of private income and outlay under full employment, under the assumption that the actual tax rates of 1938 are maintained unchanged, is shown in Table 44 [1] The distribution of the national expenditure under policies that would involve changes in the 1938 tax rates is shown in Table 46, p. 363.

Imports under Full Employment

19. A correlation analysis of the movements of imports and the national income in real terms shows that under the conditions of the 1930's the marginal propensity to import was 15 per cent—*i.e* a £100 increase (or decrease) in the national income caused a £15 increase (or decrease) of imports In 1938 visible and invisible imports exceeded visible and invisible exports plus the net income derived from foreign investments by £55 millions This means that if the foreign demand for British exports is taken as given (irrespective of changes in the level of employment in Britain) the Balance of Payments under full employment would in the circumstances of 1938 have amounted to – £130 millions, since imports would have increased by £75 millions.

In the calculations in paragraphs 22–24 below, it is assumed that

[1] It will be noted that the figures in Table 44 refer to the national income looked at as the sum of private incomes, i e., it is equal to the net national income shown in Table 39, plus £478 millions transfer incomes, less £44 millions government income from property

Table 44

PRIVATE INCOMES AND OUTLAY IN 1938

(£ millions)

	Actual Incomes (a)	Hypothetical Incomes under Full Employment		Actual Outlay	Hypothetical Outlay under Full Employment
Rent, distributed profits and interest	1,595	1,735	Personal expenditure on consumption (d)	3,510	3,755
Undistributed profits (b)	330	445	Savings (d)	440	560
Salaries	1,100	1,165	Taxation (e)	1,160	1,295
Wages and social income (c)	2,085	2,265			
Total Income	5,110	5,610	Total Outlay	5,110	5,610

Notes—(a) Based on Cmd 6520, with an addition of £70 millions to undistributed profits and total income, on account of adjustment for inventory losses

(b) Includes, in accordance with the White Paper definition, "the savings held in the business accounts of traders, farmers and other individuals," in addition to the undistributed profits of companies.

(c) Includes £278 millions cash payments on account of social insurance and allied services It was assumed that this item is identical under full employment, which means (since payments on account of unemployment benefit, at the ruling scales, would have been £70 millions less) that the scales of social benefit cash payments were raised by 33 per cent.

(d) At factor cost—i e., after deduction of all indirect taxes.

(e) This is the total taxation falling on private incomes and differs from total tax receipts by the amount of taxation falling on public authorities

British exports under a full employment policy would have been the same as in the actual case, while imports would have been allowed to increase freely with the increase in incomes In paragraph 26, however, an estimate is made of the requirements of a full employment policy under the assumption that the adverse foreign balance is eliminated.

Private Investment Outlay

20. In 1938, net private investment at home[1] amounted to £420 millions which, together with £340 millions estimated depre-

[1] In accordance with the definition adopted in the White Paper, this item includes all investment which is financed privately or which forms part of the capital expenditure of the Post Office and the housing and trading services of local authorities

ciation, made up the gross private investment of £760 millions. Gross and net private investment was made up of the various items as shown in Table 45.

Table 45

GROSS AND NET PRIVATE INVESTMENT IN 1938

	Gross Investment	Net Investment
	£ millions	*£ millions*
A Outlay on fixed capital:		
Public Utilities	140	60
Buildings	350	245
Plant and Machinery	120	20
Other fixed capital	65	10
B Net Increase in Working Capital and Stocks	25	25
C Costs incurred in the transfer of property and the investment of savings	60	60
Private investment at home	760	420

Note—The estimates are those of Cmd 6520, Table D, except that they are in terms of factor cost and not market prices (i e deducting the proportion of general indirect taxes falling on them), the investment in working capital, etc, is the value of the change in stocks, and not the change in the value of stocks, and the item C has here been included under private investment *Public utilities* investment includes capital expenditures of the railways and the L P T B, dock and harbour, canal, water supply, electricity and gas undertakings, and the Post Office *Buildings* includes all house building as well as other building, with the exception of those included in public expenditure or public utility investment. *Other fixed capital* includes merchant shipping and fishing vessels, roads, goods vehicles and public service vehicles and passenger cars bought for business purposes The definition of "gross investment" here adopted differs from earlier estimates in that it excludes expenditure on repairs other than repairs to buildings (This change of definition leaves, of course, the figure for net investment unaffected.)

In attempting to answer the question, "What would have been private investment under full employment?" we are confronted with the primary difficulty that the rate of investment varies not only with the level of output but to a large extent also with the changes in the level of output. Thus an *increase* in employment normally involves a considerable increase both in investment in fixed capital and investment in working capital. But the extra stimulus afforded to both these types of investment is to a great extent temporary; as time goes on, and employment is kept at a constant level, private investment would gradually fall again to a level determined by the rate of technical innovation and other long-run trends. It is impossible therefore to make any particular estimate for private investment under full employment without specifying how long the full employment policy was supposed to have been in operation.

In the subsequent calculations, the pre-war private investment outlay on fixed capital and working capital under full employment was taken as £400 millions instead of the actual £360 millions in 1938 (which means a total net investment—including the costs incurred in the acquisition and transfer of property—of £460 millions). This is not meant as an estimate of what private investment would have been in 1938 if output had suddenly been raised to the full employment level, but rather as an indication—not unreasonable in view of the general pre-war experience—of what the normal annual private investment outlay could have been expected to be, under a continuous full employment policy [1]

Alternative Policies of Full Employment

21. We have now made all the assumptions necessary for exploring the quantitative implications of full employment policies.

As was shown in paragraphs 3–7, full employment could have been secured in four different ways; these are specified by the following "routes":—

Route I: Assuming that the *rates of taxation* are maintained at the actual (1938) level and total Government expenditure is raised to the extent necessary to secure adequate total outlay;

Route II Assuming that *revenue is kept equal to expenditure* (i.e. that there is no borrowing) while both are increased to whatever level is necessary to secure adequate total outlay;

Route III· Assuming that *total Government expenditure* is kept at the actual (1938) level and the total yield of taxation is reduced to the extent necessary to secure an adequate expansion of private outlay;

Route IV: Assuming that the total Government expenditure on goods and services is kept at the actual (1938) level, and revenue is kept equal to expenditure, but that the *structure of the tax system* (i e. the rates of the individual taxes and subsidies[2]) is so altered as to secure an adequate expansion of total outlay.

22. In the case of Route I and Route II, it will be assumed that the increased Government expenditure is similar in character to

[1] We shall also assume that the total outlay on private investment under full employment will be the same, irrespective of whether full employment was secured (primarily) by an increase in public outlay or an increase in private consumption outlay It may be that the actual rate of capital expenditure by private industry would have been different in the two cases; but it is quite impossible to say—without making detailed assumptions about the objects of Government outlay—whether it would have been greater in the one case or in the other.

[2] Government expenditure on subsidies (either on wages or commodities) is regarded as negative indirect taxes

investment expenditure, and hence does not react unfavourably on the proportion of income consumed by private individuals.[1] Routes II and III admit several solutions, according to the nature of the taxes which are raised or lowered in the two cases respectively. The necessary expansion of taxation in the case of Route II will be all the less, the more the additional taxation is concentrated on those who save a high proportion of their marginal incomes; while the necessary deficit in the case of Route III will be all the smaller the more the reduction of taxes benefits those who consume a high proportion of their marginal incomes. This means that—since the bulk of the incidence of direct taxation is on the higher income groups, while the bulk of indirect taxes falls on the lower income classes—Route II would involve a smaller expansion of expenditure and Route III a smaller deficit, if in the former case only direct taxes were raised, and in the latter case only indirect taxes were lowered, than if all taxes were proportionately raised or lowered, in each case. Accordingly two solutions are given for these two latter cases. "Route II" assumes a proportionate increase in all tax rates; "Route II*a*" assumes that the increase is confined to direct taxation; "Route III" assumes that all taxes are reduced in the same proportion; "Route III*a*" that the tax reductions are confined to indirect taxation.

Similarly, in the case of Route IV, the actual solution depends on the precise nature of the changes of taxation We shall assume that all direct taxes are proportionately raised and all indirect taxes are proportionately lowered, which makes Route IV a virtual combination of Routes II*a* and III*a*.

23. It follows from the assumptions made above, particularly the estimates given in paragraph 18, that Route II would have implied an all-round increase in tax rates by 66 per cent, Route II*a* an increase in the rates of direct taxation by 94 per cent, Route III an all-round reduction in the rates of taxation by 31 per cent, Route III*a* a reduction in the rates of indirect taxation by 50 per cent.

The full results for Routes I–III are set out in Table 46. It must be borne in mind, in interpreting the estimates given in this Table, that all the calculations assume that the marginal propensities shown

[1] This means that the objects of the increased Government expenditure are assumed to be either capital goods or goods and services for communal use, and not consumption goods destined for the individual use of private citizens Subsidies on private consumption are treated as "transfer expenditures" and are covered by Route IV.

Table 46

ACTUAL AND FULL EMPLOYMENT OUTLAY IN 1938

(£ millions)

	Actual Outlay 1938	Hypothetical Full Employment Outlay, 1938				
		Route I	Route II	Route II*a*	Route III	Route III*a*
Private Consumption Outlay	3,510	3,755	3,135	3,410	4,045	4,045
Private Home Investment Outlay	420	460	460	460	460	460
Balance of Payments Abroad	− 55	− 130	− 130	− 130	− 130	− 130
Public Outlay out of Revenue	725	860	1,710	1,435	460	515
Public Outlay out of Loans	75	230	—	—	340	285
Total Outlay	4,675	5,175	5,175	5,175	5,175	5,175
Total Public Outlay	800	1,090	1,710	1,435	800	800
Increase in total public outlay as compared with actual amount	—	290	910	635	—	—

in Tables 40-43 above are constant over the relevant range; and that this assumption is all the more hazardous the more the hypothetical full employment situation diverges from the actual situation. There is greater uncertainty therefore concerning the estimates in Routes II and III—which involve more far-reaching changes in the amount of incomes available to the different classes—than is involved in the estimate for Route I. If, in particular, the marginal propensity to consume were found to be a diminishing function of available incomes and not a linear function, the estimates under Route II and II*a* overstate the extent of the required increase in Government expenditure, while Routes III and III*a* understate the amount of deficits required

24. In the case of Route IV, which is not included on Table 46, since its salient features could not be shown in terms of the categories there given,[1] full employment could not have been secured by redistributing the burden of taxation between direct and indirect taxes alone, since the total abolition of indirect taxes, and their replacement by additional direct taxes, would only have reduced full employment savings by £160 millions, and increased the total outlay on home-produced goods and services by £350 millions instead of the required

[1] In the case of Route IV, the various items shown on Table 46 are identical with those given for Route III, with the exception of the items of public outlay, which are identical with Route II

£500 millions. Hence to have secured an adequate expansion of outlay, the policy implied in Route IV would have required in addition the granting of subsidies on consumption goods, to an aggregate amount of some £250 millions. It would therefore have required an increase in the rates of direct taxation by 150 per cent, the total revenue from direct taxation (cf. Table 42), being raised from £612 millions to £1,562 millions. In interpreting this result, the limitation referred to in the previous paragraph should, of course, be borne in mind; in case the proportions of marginal incomes saved are not constant, but diminishing, the scope of the necessary changes in taxation would be smaller.

Full Employment and the Balance of Payments

25. The various solutions of the full employment policies given above were all worked out on the assumption that the Government adopted a purely passive attitude as regards the reaction of the higher outlay on the Balance of Payments. Hence, with the volume of exports actually obtained in 1938, the full employment *adverse* balance would have amounted to £130 millions instead of the actual figure of £55 millions.[1] As a long run policy, however, it would have been neither desirable nor even possible to maintain an adverse balance of that magnitude. To eliminate it, measures would have had to be taken either to increase exports, or if that proved impossible, to cut imports by restricting purchases from abroad to those commodities which are essential and for which it is not easy to find substitutes in home production. In the circumstances of 1938 (on the assumption of constant terms of trade, i.e., a constant ratio of export prices to import prices) and under full employment, this would have meant either increasing exports by £120 millions, i.e., by 25 per cent, or cutting imports by £140 millions or 15 per cent[2] below their hypothetical full employment level or adopting some combination of both methods. Either of these two methods of adjustment would have absorbed labour in Britain—though we cannot, of course, be certain that they would have done so to the same extent—and would thereby have made the required expansion

[1] It should, however, be borne in mind that the assumptions in para 13 above tend to make the situation appear too unfavourable for (*a*) they make no allowance for the fact that 1938 was an exceptionally bad year for British exports, (*b*) they do not allow for the effect of additional British imports on incomes abroad and hence on British exports

[2] These estimates allow for the movements of the invisible exports (shipping and insurance) consequent upon a change in the volume of visible exports and imports.

in Government expenditure (or alternatively, the required reduction in the rates of taxation) very much less.

Table 47

ALTERNATIVE ROUTES TO FULL EMPLOYMENT IN 1938 WITH AN EVEN BALANCE OF PAYMENTS

(£ *millions*)

	Route I*b*	Route II*b*	Route III*b*
Private Consumption Outlay	3,755	3,485	3,915
Private Home Investment Outlay	460	460	460
Balance of Payments Abroad	—	—	—
Public Outlay out of Revenue	860	1,230	640
Public Outlay out of Loans	100	—	160
Total Outlay	5,175	5,175	5,175
Total Public Outlay	960	1,230	800
Increase in total public outlay as compared with actual amount	160	430	—

26. In Table 47 the three hypothetical solutions of the full employment problem, given as Routes I, II and III, are worked out under the amended assumption that the adverse balance of payments is eliminated by an expansion of £120 millions in the volume of exports. This gives three variations of the original routes which are described here as Routes I*b*, II*b*, and III*b* respectively.

It is seen that in Route I*b*—full employment secured by increased public spending, without changing the rates of taxation—the necessary expansion in public outlay is not £290 millions, but only £160 millions, and the resulting deficit is only £100 millions, that is, only slightly more than the actual deficit in 1938 with a *lower* level of public expenditure; while in II*b*—where full employment is secured without any deficit at all—the necessary expansion in public spending would amount to £430 millions, instead of £910 millions. What these figures show is that if Britain had secured 25 per cent more exports in 1938—which was the expansion necessary for securing the level of imports appropriate to full employment without an adverse balance—she would, in doing so, have absorbed about one-half of her unused resources, and would thus have left less scope for other methods of utilising them.

27. Expanding exports would, of course, have been the more favourable method of eliminating the adverse balance; if Britain had to be content with securing an even balance via a restriction

of imports, she could not have expected to enjoy the same real income from the use of her resources; nor would it have been certain that the expansion of home production consequent upon the restriction of imports would have given rise to the same increase in employment as an expansion of exports would have To the extent that the commodities no longer imported would have been replaced by home produced substitutes, the expansion in employment would have been greater; to the extent that the use of certain kinds of goods might have had to be foregone altogether, it might have been less. But in any case, the scope of the necessary Governmental measures under any of the alternative policies would have been much smaller than if the adverse balance of payments had not been eliminated.

III THE FULL EMPLOYMENT PROBLEM AFTER THE WAR

28. The foregoing analysis referred to the full employment problem as it existed in Britain before the war. Its purpose, however, was not merely an historical one, but to provide the background for an analysis of the conditions of full employment in the post-war situation. It is, of course, quite impossible to make forecasts about the future except on the hypothetical postulate that in all matters where the nature of changes cannot be definitely foreseen and taken into account, the future is assumed to be a continuance of the past The subsequent calculations should be interpreted in this light; they are not put forward as prophecies of future events, but only as the joint outcome of the most reasonable hypotheses that can be made about post-war conditions in the light of present knowledge

29. After the conclusion of hostilities there will be a period of transition and immediate reconstruction which, from the economic point of view, will have more affinities with the present war economy than with a peace economy. In order to examine the background of a post-war full employment policy it is best to ignore this transition period altogether, and to make forecasts of the relevant economic factors for a succeeding period, when the transition from a war-time to a peace-time economic structure will already have been largely accomplished—when the ordinary peace-time industries will have re-absorbed their labour, restored their pre-war output capacity and replenished their stocks. This does not mean, of course, that the period of reconstruction, as distinct from the period of transition, is assumed to have been completed. "Post-war reconstruction" is generally interpreted to mean the accomplishment of a large number

of things which go far beyond the restoration of the pre-war economic structure. If the present plans as regards post-war housing policy, agriculture, transport, etc., are even partially adopted, the reconstruction period will extend over a large number of years; and during this period the requirements of the reconstruction programme and the requirements of a stable full employment policy will have to be fitted in with each other.

30. It is impossible to foretell with any exactness how long the immediate transition period will last [1] In the following calculations it is assumed that the war will come to an end somewhere in the middle of 1945, and that this transition period takes 2½ years. The hypotheses therefore refer to "1948"—this being taken as the first normal post-war year. We shall attempt to make estimates—in an analogous manner to those given above for 1938—of the national income and its distribution under full employment conditions in 1948; of the level of Government expenditure, and of taxation, consumption and savings, under alternative hypotheses.

31. It will be assumed, for the purposes of this analysis, that the pre-war economic structure will, in broad outline, have been restored and that the pre-war economic relations will continue to operate, except in those particular cases where there are definite reasons for assuming a change. This means that as far as the distribution of income between profits, wages, etc., and the division of the outlay of the various income groups between consumption and savings are concerned, the estimates will be based on an extrapolation of pre-war trends, without taking into account the war-time shifts in those factors [2] In the case of the ordinary expenditures of the Government, allowance will be made for the effects of the war and for other changes unconnected with the war (such as the expenditure on education) to which the Government is already committed. It will

[1] After the last war, 1924 was generally looked upon as the first "normal" peace year, i e , five years after the conclusion of hostilities. But this was partly because the big post-war slump of 1921–22 was erroneously regarded as a phase of the transition period, and the position was further complicated by the period of large-scale currency disorders in Europe and the British policy of gradually returning to the gold standard at pre-war parities

[2] The most important of these war-time shifts is, of course, in the proportions of income saved. The present enormous increase in the savings propensities of the public is due—apart from the patriotic appeal—to sheer inability to spend money owing to rationing and the complete disappearance of many objects of peace-time consumption. It is possible that the savings habits generated during the war will, to some extent, be retained afterwards (though this is not borne out by the experience of the last war). But it would be quite impossible to make an allowance for this factor.

be assumed that the Social Security Plan put forward in the Beveridge Report will have been adopted in full In the case of foreign trade, it will be assumed that the terms of trade (the ratio of the prices of export goods to the prices of imported goods) will be the same as in 1938; but in the case of the income from foreign investment, allowance will be made for the war-time liquidation of assets owned abroad.

32. In one important respect the new setting of the problem calls for a change in procedure. Whatever justification there may have been for making a guess at the full employment level of private investment under the circumstances of 1938, it would clearly be idle to speculate on the corresponding magnitude of this item in the circumstances of 1948. For a considerable period after the war the demand for capital investment is likely to be considerably larger than that experienced in the 1930's. There will be the needs of the housing programme; the demand for new capital investment in industry, transport, agriculture, fed by a decade's accumulated backlog of technical invention and innovation; there will also be the need for capital expenditures arising out of Britain's participation in the reconstruction of Europe. In an unregulated economy—where the Government did not take positive steps to ensure that the total outlay of the community was adjusted to available man-power—the danger, for a number of years, might be more that of "inflationary gaps," with the consequent upward pressures on prices, than of "deflationary gaps," with large-scale unemployment.[1] If that proved to be the case, the Government might decide to limit private spending through the creation of budgetary surpluses (or the maintenance of rationing) and/or to limit the rate of private capital expenditures in accordance with a scale of national priorities. In a situation of this sort, the needs of public investment (whether that of the Central Government, of the local authorities or of public utilities) could not be treated as a "left-over," to be drawn on after the needs of private investment had been satisfied, but the Government would have to plan the allocation of the aggregate of resources available for investment purposes among investment of all kinds.

Hence in analysing the requirements of a full employment policy in 1948, we shall treat public and private investment together, and

[1] It may be objected that the big slump of 1921–22 points to a different conclusion But after the last war, long-term capital investment (in housing and industry) did not get going until much later, the boom of 1919–20 was essentially a re-stocking boom, and the slump of 1921–22 signified that both the period of war expenditures and the period of post-war restocking had come to an end.

estimate the amount available for purposes of home investment of all kinds, assuming either (*a*) that there is an even balance of payments (i.e. the amount of exports is sufficient to pay for all imports) and that the level of taxation is just sufficient to cover the ordinary expenditures of public authorities (i.e. that there is no surplus or deficit on the current accounts of public authorities); or (*b*) that the resources available for investment purposes are augmented by heavier taxation (or other methods of restricting consumption), or by an adverse balance of payments.

The National Income in 1948

33. We shall estimate the full employment level of the national output in 1948 by assuming (*a*) that the working population will be the same as in 1938; (*b*) that the average hours of work per week will be the same as in 1938; (*c*) that the average unemployment rate will be 3 per cent; (*d*) that the average real productivity per man-hour will have risen, over the period 1938–48, by 13 per cent; (*e*) that the Armed Forces of the Crown will be maintained at double the strength of that of 1938, i.e. between 750,000–1,000,000 men; (*f*) that the real terms of international trade (the ratio of export prices to import prices) will be the same as in 1938, (*g*) that the income from foreign investment will have fallen to 40 per cent of its 1938 amount; (*h*) that the average level of prices will be stabilized at 33⅓ per cent above the 1938 level.

The basic considerations behind the more critical of these assumptions are as follows.—

(*a*) The net change in working population will be the resultant of the following factors: (i) the normal increase in the working population, due to the change in numbers and age composition which, in the absence of war, would have amounted to some 550,000,[1] (ii) the war casualties (killed and permanently disabled) which are put at 500,000,[2] (iii) the withdrawal of boys and girls from the labour market, due to the raising of the school-leaving age to 16, which implies a reduction of 850,000 juveniles (aged 14–15) at work, (iv) the addition to the working population due to the increase of the number of women in the labour market as a by-product of the war. To obtain the net change in the working population, each of these classes has to be weighed by its output per head, which

[1] Obtained by interpolation from the Registrar-General's forecast of population (Actual increase 1928–38 was 1,700,000)

[2] War casualties (including civilians) killed and permanently disabled were about 250,000 in the first four years of war.

may be assumed to be proportionate to the relative wages in 1938 Since the weekly wages of classes (i)–(iv) on the basis of Bowley's[1] and the Ministry of Labour's estimates were 50, 65, 13, and 32·5 shillings respectively, it would require an addition of 500,000 women under head (iv) to keep the aggregate working population unchanged This last assumption is not unreasonable, in view of the fact that about 2½ million women were stated to have been drawn into industry and the Forces in the course of the present war; while after the last war, the number of women remaining in industry (up to the time of the slump of 1921, at any rate) was stated to have been about 30–40 per cent of those additionally employed in the course of that war.

(*d*) As regards the average productivity per man-hour, the estimate of a 13 per cent increase was arrived at as a result of averaging between (i) the actual rate of increase in productivity per man-hour over the period 1914–24; (ii) the rate of increase of productivity between 1924–38. The increase in hourly productivity, for the national output as a whole (including distribution and services) in the ten-year period covering the last war seems to have been around 10 per cent,[2] while in the inter-war period it was at the rate of 1·5 per cent per annum (which implies a rise of 16 per cent over a ten-year interval). It appears fairly certain (from various statements made by responsible authorities) that the increase in productive techniques in the course of the present war is much more substantial than that of the last war, and it is by no means improbable that when peace returns the rise in productivity will be found to be even greater than what would have resulted from the mere continuation of pre-war trends.[3] The estimate of a 13 per cent increase over the period should therefore be regarded as the minimum probable, rather than the most likely, figure of the rise in productivity

(*e*) Our assumption is that by 1948 at any rate the war will have been concluded with Japan as well as Germany. At the same time it would be idle to expect that the immediate post-war situation would enable the strength of the Armed Forces to be reduced to

[1] *Studies in the National Income*, p 67

[2] Though the statistical estimates covering this period are not so extensive as for later dates, the estimate of a 10 per cent increase in hourly productivity is supported both by Rowe's production index, divided by an index of employment and of hours, and of Bowley and Stamp's estimate (*The National Income*, 1924, p 58) that home produced real income per head in 1924 was about the same as in 1914, while the length of working hours was about 10 per cent less Cf also Clark, *National Income and Outlay*, p 267.

[3] On the increase in productivity see also para 56 below

the pre-war level; the needs of military occupations, etc., will probably require the maintenance of a much larger number of effectives. In 1938, the complements of the Army, Navy and Air Force amounted to 400–450,000 men. For 1948, it will therefore be assumed to amount to (roughly) double that number, say between 750,000–1,000,000 men This means, that (since the definition of the aggregate working population, which was assumed to be unchanged, included the Armed Forces) the number available in industry, etc., will be about 400,000–500,000 less. It means also that the real increase in home-produced output over the 1938 full employment level will amount to, not 13, but only 11 per cent (since the value of the output per head in the Armed Forces—represented by their pay and maintenance—is less than the output per head in industry).

(*f*) The assumption of an unchanged price of imports in terms of exports implies (roughly) that the world price level of foodstuffs and raw materials in terms of manufactured goods will be the same in 1948 as it was in the late 1930's The experience of the aftermath of the last war was that of a considerable improvement in the terms of trade, so that Britain obtained the same amount of imports with about 20 per cent fewer exports than before There is no reason to suppose that this favourable experience will be repeated, but neither is there any definite reason for assuming the contrary. The policies of control adopted in the course of the present war have prevented the spectacular rise in the prices of primary products which was such a prominent feature of the last World War, and it may be assumed that the same policies will continue in force during the period of immediate post-war scarcities. There is no sign at present of the world entering a more prolonged period of scarcities in foodstuffs and raw materials, the forces of technical improvement which made for the surpluses of the last two (pre-war) decades do not appear to be in any way exhausted.

It is possible, of course, that in the effort to obtain sufficient exports to pay for imports, Britain may deliberately set out to lower the prices of her exports of manufactures, not only in terms of the foodstuffs and raw materials which she imports, but also relatively to the prices of manufactured goods of other countries. It is not possible to take account of this contingency in calculating the national income, but the nature of the balance of payments problem will be examined in paragraph 43 below.

(*g*) In the five years 1939–43 the total amount of disinvestment abroad (through the loss of gold and foreign exchange, the sale of

foreign assets and the accumulation of debt) amounted to £3,073 millions [1] Since in the years 1942 and 1943 disinvestment proceeded at an approximately constant rate of £650 millions per annum, the aggregate of disinvestment, up to the middle of 1945, may be put at £4,100 millions, the loss of income from which may be estimated as follows —[2]

	£ millions	
	Amount	Loss of Annual Income
Loss of gold and foreign exchange	700	—
Sale of securities	900	36 0
Sterling balances of foreign countries held in London and other loans	2,500	62 5
Total . .	4,100	98·5

On the other side, allowance must be made for the fact that the devaluation of sterling and the higher earnings of companies operating abroad (due to higher prices, etc) would have raised the income from foreign investment, on the pre-war investments, considerably above the £200 millions obtained in 1938. If we allow for an increase of only some £10 millions on account of the last factor, the post-war income from foreign investments may be put at £110 millions at post-war prices or £80 millions at pre-war prices.

(*h*) The assumption made in the Beveridge Report on Social Services was that the average level of prices after the war will be 25 per cent above pre-war. The latest official estimates suggest, however,[3] that unless there is a reduction in the general level of money wages (which is not likely) the allowance of 25 per cent is likely to prove insufficient, and it is safer to reckon on post-war prices being 33⅓ per cent above 1938. This assumption was therefore preferred and in the subsequent calculations the estimates for

[1] Cf Cmd. 6520 Table I, item 13

[2] For sources of estimate cf *Economic Journal*, June-September, 1943, pp 261–62 It was assumed that since the securities sold consisted to a large extent of Indian, Canadian, and other Government bonds of a low yield, the average loss of income on securities can be put at 4 per cent The loss of income due to the accumulation of sterling balances assumes that these balances are converted into long-term obligations with a yield of 2 5 per cent

[3] Cf. Cmd 6520, pp. 7 8

Government expenditure, and in particular the scales of benefit of the Social Security Plan, were adjusted accordingly

The net result of these assumptions is that the net national output (including foreign income) in 1948 is estimated to be £7,450 millions, in terms of post-war prices, or £5,600 millions in terms of 1938 prices. This allows for a substantial reduction in the national money income below its current war-time level (the official estimate for 1943 being £8,172 millions) a difference to be explained by a number of factors, among which the larger occupied population and the longer hours worked in war-time are the most important. The comparison between the pre-war and the post-war national income is shown in Table 48.

Table 48

CONSTITUENTS OF THE NATIONAL OUTPUT IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

	1938 (Actual)	1938 (Full Employment)	1948 (Full Employment)	
			at 1938 Prices	at 1948 Prices
Home-produced output excluding the Forces	4,395	4,895	5,360	7,110
Pay and allowances of H M. Forces	80	80	160	230
Net Income from Foreign Investments	200	200	80	110
Net National Income	4,675	5,175	5,600	7,450

Note.—The average prices of home-produced output are assumed to be 33 per cent higher in 1948 In calculating the pay and allowances of H M Forces at 1948 prices, cash pay was assumed to rise at the same rate as the average level of wages (see below) and payments in kind in proportion to output prices.

34. The division of the net national income between the different types of incomes, shown in Table 49 (p 374), is based on the following additional considerations. It was assumed that the share of wages in wage-containing output will be the same in 1948 as it would have been under full employment in 1938. In other words, allowance was made for the change in the share of wages consequent upon full employment, but it was assumed—in accordance with the pre-war experience[1]—that the change in productivity leaves this factor unaffected. This implied that, taking into account the rise in output prices and the increase in productivity, the average level of wage

[1] Cf note to Table 40 above.

rates was 54 per cent above that of 1938.[1] In calculating the total wage bill, allowance was made for the transfer of men (as compared with 1938) to the Forces. In the case of salaries, it was assumed that the average level of salaries increases by 33 per cent, i.e. in the same ratio as prices, while the number of salary earners will be the same as under full employment in 1938 In the case of rents, the assumption was that there will be one million additional houses by

Table 49

NET NATIONAL INCOME IN 1938 AND 1948

(*£ millions, at current prices*)

	1938 (Actual)	1938 (Full Employment)	1948 (Full Employment)
Rents	380	380	450
Profits and Interest .	1,385	1,640	2,400
Salaries	1,100	1,165	1,550
Wages .	1,730	1,910	2,820
Pay of H M Forces .	80	80	230
Net National Income	4,675	5,175	7,450

1948 and that the average level of rents will be 10 per cent above 1938, on the presumption that the Rent Restriction Acts continue in force, while agricultural and other rents not subject to restriction rise with the increase in the price level. The amount of profits and interest was then obtained as a residue, it implies an increase (in money terms) of 57 per cent in home-produced profits and interest as compared with the 1938 full employment estimate.

Private Incomes in 1948

35 To obtain the amount and the distribution of private incomes (as shown for 1938 in Table 44, p 359) the figures in Table 49 must be adjusted for "transfer incomes" (consisting of National Debt interest, social security cash payments and war pensions) and for Government income from property, and an estimate must be made of the amount of undistributed profits

We shall assume Government income from property to be

[1] The average increase in wage rates, up to the end of 1943, was 39 per cent Our assumption of a 54 per cent increase up to 1948 implies that the average level of wage rates rises at about 2 per cent per annum over the next five years.

£70 millions instead of the pre-war £44 millions.[1] For National Debt interest paid to private individuals and corporations (including accrued interest on National Savings Certificates, but excluding that part of the nominal interest burden which represents payments to public funds[2]) we allow £500 millions. This item was £200 millions in 1938 and £340 millions in 1943, having risen at a rate of about £50 millions per annum during 1942 and 1943. The assumption of £500 millions allows therefore for the continuation of borrowing on the present scale up to the end of 1945; it also allows for the conversion of £2,500 millions floating debt into long-term debt bearing 2·5 per cent interest after the war[3] Social security cash payments—assuming that the Beveridge Plan is adopted in full, allowing for an upward adjustment of benefit rates owing to the assumption of a 33⅓ rise in the price level, and making a number of other adjustments, set out in note to Table 53, p. 378—will amount to £470 millions, while war pensions are put at £100 millions, which allows for some £70 millions for the pensions arising out of the casualties of the present war. The resulting comparison of transfer incomes in 1938 and 1948 is shown in Table 50.

Table 50

TRANSFER INCOMES IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

	1938	1948
National Debt Interest	200	500
Social Income —		
Social Security cash payments	238	470
War Pensions	40	100
Transfer Incomes	478	1,070

[1] For 1943, this item was officially estimated at £97 millions, but some of the revenues under this head (such as the receipts under the Railway Agreement) are temporary in character

[2] But without deducting National Debt interest paid to foreigners, because this has already been deducted in calculating the net national income.

[3] Account must also be taken of the repayments on account of post-war credits on income tax (say £600 millions), the repayment of 20 per cent of E.P.T. less income tax (say £250 millions) and the post-war payments under the War Damage Acts. There are, on the other hand, the accumulated tax accruals (which will amount to at least £1,500 millions by the end of the war) to cover these items

36. In making the estimate for undistributed profits it was assumed—in an analogous manner to the assumptions about consumption and savings out of personal incomes, explained in paragraph 41 below—that over longer periods the share of undistributed profits in total profits varies not so much with the amount of profits, but with the level of unemployment. The high proportion of any increase in profits which is normally put to reserves is largely due to the policies of dividend stabilization followed by businesses, as time goes on, and profits increase, the standard around which businesses stabilize their dividends is also raised. Hence it seemed more reasonable to assume that the proportion of undistributed profits in home produced profits and interest will be no higher in 1948 than it would have been at the full employment income of 1938.

Table 51

PRIVATE INCOMES UNDER FULL EMPLOYMENT, 1938 AND 1948

(*£ millions*)

	1938	(1938)	1948
Rent, distributed profits and interest	1,735	(2,315)	2,640
Undistributed profits	445	(595)	640
Salaries	1,165	(1,550)	1,550
Wages and pay, etc , of H M. Forces	1,990	(2,650)	3,050
Social Income	275	(365)	570
Total Private Income	5,610	(7,475)	8,450

Note —For the sake of comparison, the middle column was inserted to show what the 1938 incomes would have been at the 1948 level of money values Thus the difference between the third and the first columns shows the change in money income, and that between the third and the second columns the change in real income, between the hypothetical full employment earnings at the two dates.

Public Expenditure and Taxation

37 In estimating the post-war budgets of public authorities we shall assume the following principles (i) that all ordinary expenditures will be financed out of taxation, but not capital expenditures which will be excluded from the ordinary budgets (It is estimated that in 1938 capital expenditures included in the ordinary budgets of the Central Government and local authorities amounted to £40 millions, of which £20 millions were spent on new road construction); (ii) that all services provided by public authorities before the war will be maintained (and in the case of defence expanded)

and, in addition, the services proposed in the Report on Social Insurance and Allied Services[1] and the Education Bill[2] will be provided in full, and a further allowance will be made for other similar contingencies; (iii) that all social security services will be consolidated in a Social Security Budget, which will be financed by insured persons, employers and public funds in the proportions recommended by the Social Insurance Report, but that the whole burden falling on public funds will be borne by the Central Government, thus relieving the local authorities from the finance of social security services altogether; (iv) that the poundage of local rates will be maintained at the 1938 level, and that the Central Government contribution will be the amount necessary to balance the local authorities' budgets, on this principle, (v) that the taxation

Table 52

CONSOLIDATED BUDGETS OF LOCAL AUTHORITIES IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

1938				1948			
Revenue		Expenditure		Revenue		Expenditure	
Rates	211	Social Security Services	68	Rates	250	Ordinary Expenditure	415
Income from property	26	Other ordinary expenditures	311	Income from property	40		
Contribution of Central Government	169	Capital Expenditure	20	Contribution of Central Government	125		
		Total Expenditure	399				
		Surplus	7				
Total Revenue	406	Total Expenditure and Surplus	406	Total Revenue	415	Total Expenditure	415

Note —For 1938, the figures are those of Cmd 6520 (Table iv, items 83, 87, 115, 95) except for the division of local authorities' expenditure among the three categories of social security services (which consist of services included in the Social Security Budgets, i.e. health services and public assistance cash payments), other ordinary expenditures and capital expenditure which is derived from other sources. For 1948, it is assumed that only the second category (ordinary expenditures other than health and public assistance) is financed locally out of revenue, and that the cost of these is increased by 33 per cent as compared with 1938 The revenue from the 1938 poundage of rates in 1948 is based on the estimates of rent given in Table 49

[1] Cmd. 6404, 1942.

[2] Cmd. 6458, 1943

of the Central Government will be such as to balance the Central Government budget[1] The estimated budgets for 1948 (together with the actual budgets of 1938) are shown in Tables 52–54 and the basis of the estimates of individual items is explained in the notes attached to the tables. Table 55 brings the accounts of all public authorities together and shows the amount of Central Government tax revenue that will be necessary to balance the accounts of public authorities.

Table 53

SOCIAL SECURITY BUDGET IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

1938				1948			
Revenue		Expenditure		Revenue		Expenditure	
Contributions — Insured Persons (*a*)	55	Civil Pensions (*e*)	91	Contributions — Insured Persons (*l*)	176	Social Insurance	315
Employers (*b*)	67	Unemployment Payments (*f*)	90	Employers (*l*)	124	National Assistance	47
Local Authorities (*c*)	68	Public Assistance (*g*)	23	Central Government (*m*)	355	Children's Allowances	107
Central Government (*d*)	152	Health Payments (*h*)	34			Cost of Administration of above	26
		Workmen's Compensation	13			Health Services	160
		Cost of Administration (*i*)	20				
		Health Services (*j*)	49				
		Total Expenditure	320				
		Surplus (*k*)	22				
Total Revenue	342	Total Expenditure and Surplus	342	Total Revenue	655	Total Expenditure	655

Note—The Budget for 1948 is on the basis of the estimated budget for 1945, given in Cmd 6404, p. 209, adjusted for the following factors (i) the cost of social insurance was raised by £20 millions, owing to the higher cost of old age pensions in 1948 (as compared with 1945) in accordance with the scheme, (ii) the estimates for the cost of the health services revised in accordance with the estimate given in Cmd. 6502; (iii) owing to the assumption of 3 per cent unemployment, the cost of social insurance was reduced by £73 millions (i e two-thirds of the cost of unemployment benefits), and the cost of children's allowances (on first children) by £10 millions, (iv) all items were increased

[1] On the question of sinking funds, see para. 48 below.

Table 53 (*continued*)

by 6⅝ per cent owing to the assumption of a 33 per cent (instead of 25 per cent) rise in the price level The contributions proposed in Cmd 6404 were reduced to balance the budget, allocating to the Exchequer one-third of the saving in the cost of unemployment and the whole saving on children's allowances The corresponding Budget for 1938 was brought together for purposes of comparison from published sources, itemized below.

(*a*) Cmd 6520, Table IV, item 78.

(*b*) Ibid, item 82, plus £13 millions estimated expenditure on workmen's compensation

(*c*) Includes payments of local authorities on public assistance cash payments and part of health services. See also note (*i*) below Identical with similar item in Table 52

(*d*) Residue. Includes £63 millions Exchequer contribution to social insurance (Identical with item (*c*) in Table 54)

(*e*) Pensions to widows and orphans, contributory and non-contributory old age pensions Cmd 6520, Table II, item 22, *less* war pensions

(*f*) Unemployment insurance benefits and allowances Cmd 6520, Table II, item 23 *less* public assistance

(*g*) Cmd 6520, Table IV, item 107

(*h*) Ibid, Table II, item 24

(*i*) Cmd 6404, p 204

(*j*) Cmd 6502, Appendix E Of this £4 millions was expenditure by the Central Government, and £45 millions by local authorities

(*k*) The surplus of unemployment, health and pensions insurance funds Cmd 6520, Table IV, item 90

(*l*) The contributions were reduced, as compared with the proposals in Cmd 6404, in order to balance the budget under the assumptions stated above After estimating the Exchequer contribution as stated in note (*m*) below, this implied a reduction in the *total* revenue from contributions of 10 per cent and a reduction in the *per capita* rates of contributions by 16 per cent (owing to the increase in the numbers of insured, as a result of full employment) Hence, in spite of the higher rates of cash benefits assumed, the required rates of contributions per adult man are 3s. 7d for insured persons and 2s 9d for employers (as compared with 4s 3d and 3s 3d respectively, proposed in Cmd 6404).

(*m*) The Exchequer contribution under the Beveridge Plan (including interest on insurance funds) was estimated at £366 millions in 1945 (Cmd 6404, p 209) Since, of the adjustments stated above, (i) and (ii) offset each other, (iii) implies a reduction of £34 millions, and (iv) an addition of £23 millions, the net result is £355 millions

38. Tables 52–55 show that after making full allowance for the additional commitments of the Government and for the higher expenditure due to the rise in prices, and making an allowance for unforeseen contingencies, the Central Government will have to raise £1,655 millions in taxation to balance the budgets of public authorities as a whole. To find out the rates of taxation that will be necessary to obtain this revenue we shall first of all estimate what the yield of the 1938 rates of taxation would be at the full employment national income of 1948. We shall assume the same taxes in force as in 1938[1] and the same *ad valorem* tax rates—which means

[1] I e, war-time taxes other than N D C—which was already in force in 1938—are not taken into account.

Table 54

CENTRAL GOVERNMENT EXPENDITURE IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

	1938		1948	
Interest on the National Debt (*a*)		200		500
Other Consolidated Fund expenditure		16		20
Defence Services (*b*)		379		480
Civil Votes:—				
Social Security (*c*)	152		355	
War Pensions (*d*)	40		100	
Grants to local authorities (*e*)	169		125	
Other Civil Votes (*f*)	23		50	
Other post-war contingencies (*g*)	—		40	
	——	384	——	670
Cost of tax collection		14		15
Capital expenditures, included in Civil Votes in 1938 (*h*)		20		—
Total Expenditure		1,013		1,685

Notes—(*a*) For bases of estimate, see paragraph 33 (*g*) above Interest paid to public funds is excluded from this item, but included in social security payments

(*b*) For 1938, this item includes issues under the Defence Loans on rearmament as well as expenditures on the preparation for war (such as A.R P) usually included under the Civil Votes The 1938 figure is not representative of the pre-war rate of expenditure on defence, which amounted to only £100–£120 millions before rearmament began

For 1948, the defence expenditure was based on the assumptions stated in paragraph 33 (*c*) above The estimate of £480 millions was reached as follows Pay and maintenance of the Forces, £230 millions (see Table 49) Expenditure on armaments and auxiliary materials, £250 millions The latter item is more than twice the corresponding normal pre-war rate of expenditure, after allowing for a 33 per cent rise in prices

(*c*) See notes (*d*) and (*m*) to Table 53

(*d*) See paragraph 35 above.

(*e*) See corresponding items in Table 52

(*f*) Includes cost of civil administration, justice, etc For 1948, it includes an additional £20 millions on account of the new Education Bill, in addition to the rise in the cost of education due to the 33 per cent rise in prices See Cmd 6458, Appendix

(*g*) This item represents an allowance for unforeseen commitments, other than expenditure on capital account

(*h*) See paragraph 37 above.

that *specific* tax rates are deemed to have been adjusted for the rise in the general price level, and all allowances in direct taxation (i.e. the various income tax allowances, the surtax limits, etc.) to have been raised in the same proportion, so that the proportion paid in taxation out of any given real income is the same.

Table 55

THE CONSOLIDATED ACCOUNT OF PUBLIC AUTHORITIES IN 1938 AND 1948

(*£ millions*)

Revenue	1938	1948	Expenditure	1938	1948
Taxation.—					
Central Government	888	(1,655)	Central Government	1,013	1,685
Social Security	122	300	Social Security	320	655
Local Authorities	211	250	Local Authorities	399	415
Total Taxation	1,221	2,205	*Gross Total Expenditure*	1,732	2,755
Income from property	44	70	*Less* Transfers from—		
Total Revenue	1,265	2,275	Central Government to Social Security	− 152	− 355
Deficit	78	—	Central Government to Local Authorities	− 169	− 125
			Local Authorities to Social Security	− 68	—
			Total Transfers	− 389	− 480
Total Revenue and Deficit	**1,343**	**2,275**	**Net Total Expenditure**	**1,343**	**2,275**

Note—For the individual items except Central Government taxation see Tables 52–54 For Central Government taxation in 1938, see Cmd 6520, items 33, 40, 77, 81 Central Government taxation in 1948 is derived as a residue being the amount necessary to balance the total budget of public authorities The difference between the £78 millions deficit in 1938 shown in this table and the £75 millions shown in Table 39 is due to the fact that in Table 39 items are shown at factor cost, while in the present table they are at market prices The difference between the total taxation of £1,161 millions in 1938 shown in Table 42 and the £1,221 millions shown in the present table is due to (i) general indirect taxes falling on the Government, £32 millions, (ii) subsidies, £15 millions, (iii) workmen's compensation—which was added to public expenditure in Table 53 for purposes of comparability of social security expenditure—£13 millions.

Table 56

YIELD OF CENTRAL GOVERNMENT TAXATION, 1938 AND 1948

(*At the Rates of Taxation in Force in* 1938)

(*£ millions*)

	1938 (Actual)	1938 (Full Employment)	1938 (Full Employment, 1948 prices)	1948
	(1)	(2)	(3)	(4)
Income Tax	333	398	529	620
Surtax ..	69	83	110	140
N D C	25	36	48	50
Death duties, and stamp duties on the transfer of property	90	95	126	140
Total Direct Taxes .	517	612	813	950
Taxes on alcohol, tobacco, matches and entertainment	204	219	291	340
Other specific indirect taxes .	94	100	133	150
General indirect taxes	73	81	108	120
Total Indirect Taxes .	371	400	532	610
Total Taxation	888	1,012	1,345	1,560
Central Government Income from property .	18	18	24	30
Total Revenue	906	1,030	1,369	1,590
Total Expenditure (see Table 54)	1,013	—	—	1,685
Deficit .	107	—	—	95
Deficit as percentage of expenditure	**10**	—	—	**6**

Note—The figures in column (1) based on Cmd 6520 and other official sources As regards column (2) the general principle was explained above, the most important individual estimates were that the marginal rate of income tax on *distributed* profits was 20 per cent and of surtax 10 per cent, and that the average rate of N D C was 4½ per cent of assessed profits It was assumed further, that there is no increase (consequent on full employment) in death duty receipts, but stamp duty receipts increase owing to the higher turnover of shares and other capital assets, the yield of specific indirect taxes was related to the estimated change in their consumption, the yield of general indirect taxes to the change in consumption and investment As regards the adjustment from column (3) to column (4), the increase in incomes shown in Table 51, between the second and the third columns of that Table, was assumed to bear income and surtax at the marginal rates given above Death duties, etc, allow for the expansion of the National Debt The volume of alcohol and tobacco consumption and entertainments were assumed to be 25 per cent above the *actual* 1938 level For other indirect taxes, the assumptions were the same as those stated for column (2) above.

This estimate is given in Table 56. The first column in Table 56 shows the actual yield of the different taxes in 1938. The second column shows what the same taxes would have yielded under full employment in 1938; this estimate is based on the same assumptions as were employed in making the estimate in Table 42, p. 355. The change in the yield of taxes due to the difference in incomes between the full employment income of 1938 and that of 1948 is shown in the third and fourth columns. The third column shows the change in tax yields due to the change in money values; in accordance with our assumption, this implied an increase of 33 per cent in the yield of each kind of tax The fourth column adjusts these figures for that part of the change in tax yields which is due to the change in the real income of each income category, between 1938 and 1948; here the additional taxes payable by each income group were calculated separately, on the assumption that the proportion of marginal income paid in taxation is the same as that assumed for the purposes of the second column, but making certain allowances for the trend in consumption habits

39. The result of this analysis is that the combined effect of the change in money values, of higher productivity and of full employment is that the tax system of 1938 would yield £1,560 millions in 1948 (instead of the actual £888 millions in 1938) and thus would fall short of the required amount by only £95 millions or 6 per cent Thus, in spite of the considerably higher post-war expenditure, the 1938 tax system would be consistent with a *smaller* deficit in 1948 than it was in the actual situation in 1938. In order to eliminate the deficit, the average rates of taxes would have to be raised by 6 per cent—which means an income tax of 5s. 10d. (instead of 5s. 6d) in the £, if all taxes were raised proportionately.[1]

40. We are now in a position to estimate the total tax burden falling on private incomes by adding together the taxes raised by all public authorities and by deducting subsidies and the general indirect taxes falling on goods and services purchased by public authorities. This is given in Table 57 and shows that the proportion of private incomes paid in taxation (including the higher social insurance contributions under the Social Security Plan) will be 25 per cent, instead of the pre-war 23 per cent. The distribution of this tax burden between the different categories of

[1] It should be borne in mind that in this estimate of a standard rate of 5s. 10d. income tax, it was also assumed that the pre-war income tax allowances were fully restored not merely in money but in real terms, i e., the tax exemption limit was raised to £165, the allowance for married persons to £240, etc

Table 57

TAXATION OF PRIVATE INCOMES, 1938 AND 1948

(*£ millions*)

	1938 (Actual)	1938 (Full Employment)	1948
I Direct Taxes —			
Central Government	517	612	950
Social Security Funds	55	60	176
Total	572	672	1,126
II Indirect Taxes:—			
A. Specific Indirect Taxes —			
Central Government	298	319	490
Local Authorities	141	141	170
Less Subsidies ..	− 15	− 15	− 20
Net Total	424	445	640
B General Indirect Taxes —			
Central Government	73	81	120
Local Authorities	70	70	80
Social Security Funds	54	60	124
Less Taxes falling on Public Authorities	− 32	− 32	− 50
Net Total	165	179	274
III Increase in Central Government Taxation to cover prospective deficit			95
Total Taxes on Private Incomes ..	1,161	1,296	2,135
Private Incomes	5,110	5,610	8,450
Taxes as percentage of private incomes	**23**	**23**	**25**

Note.—The derivation of individual items is explained in previous tables, except the yield of social security taxes between the first and the second columns which is in proportion to the rise in employment, the revenue from local rates in the first and the second column is assumed to be the same, in accordance with the assumed behaviour of rents given in Table 40 (while their expansion between the second and the third column is as explained in Table 52) Taxes falling on public authorities for 1938 is derived from Cmd. 6520 (being the difference between item 16 in Table II and item (4) in Table F) For 1948 this item was adjusted to the rise in prices and the expansion of public outlay on goods and services.

income is shown in Table 58 on the assumption that *all* Central Government tax rates were raised by 6 per cent (as compared with 1938)

Table 58

INCIDENCE OF THE BURDEN OF TAXATION, 1948

	Direct Taxes		Indirect Taxes		All Taxes	
	£Mn	%	£Mn	%	£Mn	%
Rent, distributed profits and interest	700	*69*	200	*18*	900	*42*
Undistributed profits	195	*19½*	15	*1*	210	*10*
Salaries	85	*8½*	250	*22*	335	*16*
Wages and Social Income	30	*3*	660	*59*	690	*32*
Total	1,010	*100*	1,125	*100*	2,135	*100*

Note—For the corresponding estimate for 1938, and 1938 full employment, see Table 42, and for the methods used see notes to Tables 41, 42, 56 and 57 Social insurance contributions are here included in indirect taxation, as in Table 42 It is assumed that the 1938 level of Central Government taxes would be raised by 6 per cent, local rates remain at their 1938 level and social insurance contributions will be as given in note (*l*) to Table 53.

Consumption and Savings

41 We next have to estimate the distribution of available incomes between consumption and savings. The available evidence points to the conclusion that with the long run rise in incomes, consumption rises more or less proportionately;[1] the disproportionate rise in savings following upon an increase in incomes—which was shown in Table 43, p. 356—is a typically short-run phenomenon In estimating post-war savings it would be erroneous therefore to apply the same assumptions for the change in incomes over the ten-year interval 1938–48, as were applied for the change from the actual to full employment income in 1938

The most reasonable hypothesis for estimating savings out of available incomes in 1948 appeared to be to assume that for that part of the rise in real income which is due to long-run factors (i e. the rise in productivity) savings rise in the same proportion as real income (i e in the proportions shown in the "average" column in Table 43); while for that part which is due to the elimination of unemployment, savings increase in a higher proportion (i.e. in the proportions shown in the "marginal" column in Table 43). This assumption implies that in the long run the proportion of

[1] Cf Clark, *National Income and Outlay*, ch viii

income saved varies, not with the amount of real income, but with the level of employment [1]

42. On this assumption, and by taking the distribution of private incomes and taxation as shown in Table 51 and Table 58 above, gross savings come to £905 millions, and net savings (i.e. after deducting death duty, etc., payments) to £765 millions, both calculated at post-war factor cost of production From the same assumption it follows that consumption in 1948 would amount to £5,550 millions at post-war factor cost, or £4,170 millions at pre-war factor cost, which implies an increase in real consumption of 19 per cent over the actual 1938 level or 11 per cent over the hypothetical full employment level in 1938. An increase in real consumption of this order (which implies moreover a rise of 46½ per cent over the current war-time level) presupposes, of course, that there are no restraints on consumption *other than taxation*; that war-time rationing and scarcities have disappeared and that the consumer has much the same range of choice in spending money as he had before the war. To the extent that these suppositions will not be completely fulfilled by 1948, private savings will be larger and the expenditure on consumption less, than in this estimate

The Post-War Balance of Payments

43. In order to estimate the requirements of a post-war full employment policy, we must finally make an assumption about the post-war balance of payments. Our provisional assumption will be that exports (visible and invisible) and foreign income will balance imports, i e. a zero balance of payments on current account. It may be worth while to set out, however, what this implies

On the assumption that the importance of imported goods in the British national economy will be the same as before the war—i.e. that there are no measures taken to reduce the proportion either of imports of raw materials, etc , in total production or of imported consumers' goods in total consumption—the total volume of imports can be assumed to expand by 15 per cent of the increase in real income, that is, by £140 millions (at 1938 prices) or 16 per cent as compared with the actual level of imports at 1938. At the same time the income from foreign investments, at pre-war prices, will be some £120 millions less.[2] In addition, as we have seen, there was already an adverse balance of £55 millions in 1938. Finally, there is the

[1] A similar assumption was made in calculating undistributed profits in para 36 above

[2] Cf para 33 (*g*) above

income from "invisible exports" (mainly shipping and insurance) the amount of which cannot be assumed as given—independently of the policies followed about exports and imports—since it varies more or less in proportion with the volume of international trade. Before the war, our invisible exports represented about 10 per cent of the value of our trade (the sum of exports and imports). After the war, owing to the fall in the proportion of British shipping in world tonnage they might be less.

44. We shall estimate the requirements of an even balance of payments after the war on two suppositions:—

(i) On the assumption that the terms of trade will be the same as before the war, but that invisible exports will amount to only 7 per cent (and not 10 per cent) of the value of trade, it would require an increase in exports by £325 millions (at pre-war prices), or by 68 per cent over the 1938 volume, to compensate fully for the various factors specified above. Alternatively, a zero balance of payments might be achieved by a cut of £375 millions[1] or 37 per cent in imports below the level it would have reached without restriction [2] Finally, if imports are to be restricted, but only to the 1938 volume, the increase in exports required would be £205 millions, or 43 per cent over 1938

(ii) On the more favourable supposition that the terms of trade remain the same and that shipping and insurance will regain their pre-war position (i e that they will represent 10 per cent of the value of trade) the required expansion in exports is 57 per cent, alternatively, with the volume of exports at the pre-war level, the required restriction of imports (below the hypothetical post-war volume) 34 per cent,[3] while the maintenance of the 1938 level of imports would in this case require an expansion of exports by 33 per cent

44 It may be that none of these policies will be practicable in the early post-war years and that the position of equilibrium in the balance of payments will only be achieved gradually. Though the traditional position of Britain was that of a lending country with a favourable balance of payments, there need be no great harm in allowing an adverse balance of say, £200–£300 millions per annum for a number of years—either by borrowing from abroad, or by liquidating foreign investments still further—provided that the addi-

[1] The difference between this sum and the required increase in exports (£325 millions) is due to the change in the amount of invisible exports in the two cases.

[2] This implies a cut in imports by 27 per cent below its actual 1938 amount.

[3] I e 23 per cent below its actual volume in 1938

tional resources made available in this way are used to improve the balance of payments position in the future—i e. either in developing new industries suitable for exports, or industries (such as agriculture) whose product is a substitute for imports. In other words, provided that the Government adopts a long-term plan for the development of industries, the maintenance of an adverse balance over the reconstruction period might be a means of improving (instead of aggravating) the position of the balance of payments in the long run

Full Employment Policies in 1948

45. We are now in a position to answer the question posed in paragraph 32, what is the rate of investment outlay (public and private) which would assure full employment in 1948? Our hypothesis is that the Government, through a National Investment Board, will so regulate the rate of capital expenditure (by fitting together the investments undertaken by public authorities and by private industry into a common national plan) as to ensure stability and adequacy in the national outlay as a whole The question which then arises is whether the "required" rate of investment expenditure which emerges from our assumptions is an adequate one, from the general social point of view, and what Governmental policies should be followed if it is not.

46 On the assumptions that Government taxation is just sufficient to cover ordinary expenditure, that the level of exports is sufficient to pay for imports, and that the division of private incomes between consumption and savings is as explained in paragraph 41 above, the rate of net investment consistent with full employment in 1948, as shown in Table 59, is £765 millions—the equivalent of £575 millions in terms of 1938 prices This is just 25 per cent greater (in volume) than the actual rate of investment in 1938, which was £460 millions,[1] but it is 13 per cent lower than the implied rate of investment expenditure under full employment, and a zero balance of payments, in 1938 which would have been £660 millions [2]

[1] £420 millions net private investment (see Table 45) plus £40 millions public capital expenditure, financed in 1938 out of Central and local Government revenue, but excluded from the post-war budgets

[2] See Table 47, Route I*b*. Out of the total public expenditure of £960 millions, £200 millions should be regarded as investment expenditure, i e the additional public outlay of £160 millions, plus the £40 millions referred to in the previous footnote This, together with the "private investment outlay" of £460 millions, amounts to £660 millions The reasons why despite the higher national income, the corresponding item for 1948 is smaller are (1) the higher level of public consumption outlay in 1948 (£855 millions at 1938 prices, instead of £760

Table 59

FULL EMPLOYMENT INCOME AND OUTLAY IN 1948

(£ millions)

	1948 Prices	1938 Prices		1948 Prices	1938 Prices
Private Consumption	5,550	4,170	Private Consumption Outlay	5,550	4,170
Private Saving ..	765	575	Public Consumption Outlay	1,135	855
Taxation of Private Incomes .	2,135	1,605	Balance of Payments	—	—
Private Incomes .	8,450	6,350	Net Investment Outlay (Public and Private)	765	575
Government Income	70	55			
Less Transfer Incomes ..	−1,070	− 805			
Net National Income	7,450	5,600	Net National Outlay	7,450	5,600

Note—The derivation of all the items in this Table was explained above, with the exception of "public consumption outlay" (i e the expenditure of public authorities on goods and services on current account) which was derived as follows:—

	£ millions
Total Expenditure of Public Authorities (see Table 55)	2,275
Less Transfer Expenditure (see Table 51) .	− 1,070
Subsidies (Table 57) .	− 20
Total Expenditure on goods and services at market prices	1,185
Less General indirect taxes falling on public authorities (Table 57) .	− 50
Total Expenditure on goods and services at factor cost	1,135

47 An examination of the requirements of post-war reconstruction in the field of capital expenditure is now being undertaken by various Government Departments, and until their results are published the material for a more detailed analysis will not be available But without any such examination, it is fairly certain from the considerations mentioned earlier, that if Britain after the war goes in for a vigorous policy of renewing her capital stock—of scrapping

millions), (ii) in the calculation of "Route I*b*" in Table 47 there is implied a budgetary surplus over public consumption outlay of £100 millions, which augmented the resources available for investment purposes (as compared with the situation postulated for 1948, where the surplus is zero) by £73 millions. (The reason for the difference is that in the calculation of Route I*b* for 1938, the existing rates of taxation were assumed to be given, in the calculations for the full employment outlay for 1948 in Table 59 the taxes were determined by the condition that the ordinary budgets should balance.)

obsolete houses and obsolete industrial equipment, and providing for the development of new industries—she would have to spend on capital projects at a far higher rate than in 1938

In Table 60 an attempt is made to relate the available information about pre-war capital expenditure (given in Table 45) to the requirements of post-war investment under three alternative hypotheses: (i) that the rate of net investment will be as given in Table 59 above (Plan I); (ii) that net investment will be planned at the rate of £750 millions (Plan II); (iii) that net investment will be planned at the rate of £1,000 millions (Plan III), all at 1938 prices The allocation of the totals among the various categories shown in this Table is largely in the nature of guesswork based on the broad facts about post-war needs, not on the result of a separate examination of the individual categories.

Plan I—apart from allowing for the minimum increase in stocks that can be expected in a normal year—only permits a modest increase in the rate of capital expenditure in industry and in housing. Plan II allows for a rate of expenditure on buildings that would probably be sufficient for the building of 500,000 dwelling houses annually;[1] it also allows a much higher rate of new investment in industrial plant and machinery, public utilities and other fixed capital Plan III would allow doubling the pre-war volume of *gross* investment in plant and machinery, it also includes an allowance for the British contribution towards the reconstruction of Europe.

48. It is not possible to decide at this stage which of these possibilities comes nearest to fulfilling the requirements of an adequate post-war reconstruction programme; we may, however, discuss their implications for a full employment policy. Plans II and III require that the Government restrict real consumption below the level it would reach with a balanced budget and thereby release resources for investment purposes. This could be done in various ways; the simplest, perhaps, is by creating a surplus in the ordinary budget in the form of a sinking fund, to be covered out of taxation. In making the estimate for post-war Government expenditure in Table 54, we have made no provision for a sinking fund—for the simple reason that the desirable sum to be set aside for this purpose could only be determined after all the relevant factors in the total economic situation were known

49. It follows from the estimates of taxation, consumption and savings, in paragraphs 40–42 above, that at the full employment

[1] This is regarded as the necessary rate of building if an adequate number of houses are to be provided, and all slums abolished, in a period of 15 years.

Table 60

ALTERNATIVE FRAMEWORKS FOR THE NATIONAL INVESTMENT PLAN

(*£ millions, at* 1938 *Prices*)

	Actual Net Investment, 1938	Hypothetical Net Investment, 1948		
		Plan I	Plan II	Plan III
Public works (new roads, etc)	40	40	40	60
Public utilities	60	60	90	100
Buildings	245	300	400	400
Plant and Machinery	20	45	80	140
Other fixed capital	10	30	40	50
Net increase in stocks and goods in process	25	40	40	40
Costs incurred in the transfer of property and investment of savings	60	60	60	60
Contribution to the reconstruction of Europe	—	—	—	150
Total Net Investment ..	460	575	750	1,000

Note—For the definitions of the various categories in this Table, see note to Table 45, p 360 (In case Recommendation 23 of the Beveridge Report were adopted—i e industrial assurance made a public service—the item "costs incurred in the transfer of property" should be reduced by £15 millions)

level of income in 1948 (i) a proportionate increase in *direct* taxes, increasing revenue by £100 millions, would reduce consumption by £62 millions, and savings by £38 millions; (ii) a proportionate increase in the rates of *indirect* taxes, augmenting revenue by £100 millions would reduce consumption by £85 millions, and savings by £15 millions; (iii) a similar proportionate increase in *all* Central Government tax rates would reduce consumption by £71 millions, and savings by £29 millions

This means that if, in connection with the policy of restricting consumption (in order to maintain a higher rate of investment), all Central Government taxes were increased proportionately, Plan II would involve a sinking fund of £331 millions, and Plan III a sinking fund of £800 millions. As is shown in Table 61, each of these plans is consistent with a higher level of private real consumption than obtained in 1938, and would thus leave the community better off, in terms of current standard of living, than they were before the war. But in the case of Plan III at any rate, the required increase in taxation is so stiff—it implies an income tax of 8s. 8d., instead of 5s. 10d. in the £, if all Central Government taxes were

raised proportionately—that it might be preferable, in this case, to secure the required reduction in consumption (at least in part) by other means of control, such as rationing.

50. Table 61 also shows the implications of these plans in case the level of exports is not sufficient to secure an even balance of payments, and an adverse balance of £200 millions is maintained. These are given as Plans I*b*, II*b* and III*b* The second plan in this case is consistent with a practically unchanged level of taxation, while the first plan would require a *negative* sinking fund of £282 millions—i.e. a 17 per cent deficit in the current Central Government budget.

Table 61

ALTERNATIVE PLANS FOR FULL EMPLOYMENT OUTLAY IN 1948

(£ *millions at* 1948 *prices*)

	Plan I	Plan II	Plan III	Plan I*b*	Plan II*b*	Plan III*b*
Private Consumption Outlay	5,550	5,315	4,982	5,750	5,515	5,182
Public Consumption Outlay	1,135	1,135	1,135	1,135	1,135	1,135
Balance of Payments	—	—	—	− 200	− 200	− 200
Net investment outlay (public and private)	765	1,000	1,333	765	1,000	1,333
Total Outlay	7,450	7,450	7,450	7,450	7,450	7,450
Sinking Fund	—	331	800	− 282	49	518
Percentage increase in rates of taxation as compared with Plan I	—	**20**	**49**	**− 17**	**3**	**31**
Percentage increase in private real consumption as compared with 1938	**19**	**14**	**7**	**23**	**18**	**11**

Note—It is assumed that the tax revenue for the payment of sinking funds is obtained by a proportionate increase in all taxes raised by the Central Government, and the percentage changes in tax rates relate not to all taxation, but only to taxation raised by the Central Government

IV THE LONG RUN CONSEQUENCES OF CONTINUOUS PUBLIC BORROWING

51. The above calculations were worked out for a particular post-war year, 1948 A plan for a continuous full employment policy would also have to take into account that under conditions of capital accumulation and technical progress, the national income would not remain stationary, but would be steadily rising, with the conse-

quence that the necessary Governmental policies to ensure full employment would also have to be steadily adjusted Since any addition to incomes could be expected to be only partly devoted to increased consumption and partly to increased savings, a *given* rate of investment outlay would not be adequate to maintain full employment in successive years unless measures were taken to enable the rising production to be fully absorbed in rising consumption. This means that the Government, in order to maintain full employment in conditions of rising productivity, would either have to plan for an expanding rate of investment expenditure over time, or for a gradually diminishing rate of the "sinking fund"—i e for a gradual reduction in tax revenue, relatively to any given level of public expenditures [1] Ultimately, the Government may have to raise the propensity to consume by more radical methods of income redistribution—when it will no longer be possible to afford the degree of inequality of incomes that can be sustained during the period of relatively high investment.

52 It would be beyond the scope of this memorandum to examine the implications of this problem on a full employment policy over a longer period in any detail The remainder of the paper will be restricted to an examination of one particular aspect of the long run problem. the effects of a policy of continuous public borrowing under peace-time conditions.

53 If a plan providing for a high rate of investment expenditure were adopted over the reconstruction period, and if the analysis of the various elements of the post-war situation given in the previous section is correct, the Government during the early post-war years would have to provide for surpluses rather than deficits in its "ordinary" budget, i.e. taxation would have to be higher than the level of running expenditures. On the other hand, the Government would have to undertake loan expenditures as part of the national investment budget, the latter might well exceed the "sinking fund" in the ordinary budget so that the net national indebtedness might

[1] This is, of course, merely a different way of stating the proposition that if as a result of the accumulation of capital there is a steady increase in productive capacity, steps must be taken to ensure that the increase in potential output is matched by a corresponding increase in "purchasing power"—otherwise the increased output will not materialize and unemployment will result The maintenance of full employment would automatically ensure, of course, that adequate purchasing power is created to absorb the potential output (indeed, the latter is merely a different aspect of the former), but in order to maintain full employment in these circumstances it is not enough to maintain the level of expenditures—these must be steadily increased

be growing rather than diminishing, right from the start. Moreover, as time went on and the national real income increased, either the rate of loan expenditure on capital account would have to be raised, or taxation would have to be lowered, relatively to expenditure; in both cases the annual net increase in the public debt would tend to get larger Further, in the more distant future, when the reconstruction programme will be nearing completion and it will be desirable to reduce the proportion of output devoted to investment, and to raise the proportion of output consumed, remission of taxation might prove the most convenient method of maintaining full employment. Hence, as part of the full employment policy we may have to reckon with a steadily rising public debt in peace time.

54. Ever since the inception of the British National Debt in 1688, money was borrowed in time of war and gradually repaid during periods of peace; the war borrowings always exceeding the peace repayments (see Table 62) As a result, a strong prejudice grew up against a policy of borrowing in peace time. But there is, in fact, *less* justification for incurring debt in war than there is in peace time. Borrowing in time of war does not increase the productive powers of the community and does not sustain employment; also, a great deal of borrowing is concentrated over a relatively brief span of time, so that war-borrowing increases rentier incomes not only absolutely, but as a proportion of the national income.

55 What is the "real burden" of a growing National Debt? Against the popular notions which regard borrowing as a means of "throwing the burden on future generations" and the Debt as a net loss of real wealth, economists rightly emphasized that internally held debt does not diminish the total real income of the community, all that the service of the Debt implies is a transfer of income between different members of society; and even this "transfer-burden" can be minimized by an appropriately chosen tax system

This interpersonal transfer is not, however, the sole relevant aspect of the problem; the existence of the debt would have some economic consequences even if the interpersonal transfer were nil Let us suppose, e g that everyone saves during war time (when the borrowing takes place) a constant proportion of his income; so that, when the period of borrowing is over, everyone's interest-income on past savings bears a constant proportion to his other sources of income If we then assumed that the annual interest charge is paid out of the proceeds of an income tax which is proportionate to income, there is no transfer at all in consequence of the Debt. Yet economic incentives have altered; for in the new situation, everyone

receives a higher proportion of the same *net* income in the form of a rent (which is independent of current effort) and a lesser proportion as a reward for current effort. Hence the incentive to current effort is diminished

55. It is difficult to say how much importance should be attached to this factor, but whatever its importance is, it clearly depends not on the size of the Debt or the annual interest charge, but on the proportion of the latter to the national income; and it could only become significant when this proportion is large In Britain, the annual debt burden as a proportion of the national income reached a maximum on two occasions, 1815 and 1924, and in each case amounted to some 7 per cent of the national income. After the present war, on the assumptions stated above, it will be just under 6 per cent, i e £500 millions on £8,450 millions private income [1]

56. In estimating the effects of a rising National Debt in peace time, we must first of all consider the probable growth of the national income This will be the resultant of the following four factors: (i) the change in productivity per man hour, (ii) the change in the working population; (iii) the change in the length of the working week; (iv) the change in the price level.[2] Let us examine them in turn.

(i) Since the beginning of this century at any rate (and probably over a much longer period, though this cannot, in this country, be established statistically) output per man hour in primary and secondary industry has increased (as the result of technical progress and the accumulation of capital) at the compound rate of 3 per cent per annum. The national real income per man hour (i.e including the output of distribution and services) has increased at the rate of 1 5 per cent per annum.[3] There is every reason to expect that this movement will continue in the post-war era, under a full employ-

[1] Between 1924 and 1948 the National Debt on our assumptions will have increased by 300 per cent, the annual interest charge by only 66 per cent, while the national (private) income in money terms by 108 per cent Thus, despite a second world war, which—in terms of borrowing—was twice as costly as the first, the burden of the Debt is likely to be smaller after the present war than it was after the last war—a striking consequence of the cheap money policy inaugurated by the Treasury in the 1930's.

[2] A fifth factor, namely the level of employment relatively to the working population, is here ignored, on the supposition of a full employment policy

[3] The difference is due to the fact that the other sections of the economy have not participated in the increase in industrial productivity, and tended to absorb a rising proportion of the total labour force Output per man hour in distribution has tended to diminish in the sense that the number of people engaged in distributive services has increased faster than the volume of goods to be distributed

Table 62

HISTORY OF THE BRITISH NATIONAL DEBT, 1688 TO 1944

(£ *millions*)

		Borrowed	Repaid	Debt (at end of period)
War	1688–97	21	—	21
Peace	1697–1701	—	5	16
War	1702–14	39	—	55
Peace	1714–39	—	8	47
War	1739–48	31	—	78
Peace	1748–55	—	3	75
War	1755–63	72	—	147
Peace	1763–75	—	11	136
War	1775–86	121	—	257
Peace	1786–93	—	13	244
War	1793–1815	604	—	848
Peace	1815–53	—	79	769
War	1853–55	39	—	807
Peace	1855–99	—	172	635
War	1899–1902	159	—	794
Peace	1902–14	—	144	650
War	1914–18	7,180	—	7,830
Peace	1919–39	—	33*	7,797*
War	1939–	11,796†	—	19,593†

* Excluding the National Defence Loans, 1937–39, which should more properly be allocated to war borrowing There was a substantial amount of net debt repayment over the period which is concealed in the above figures, since they include the borrowing of the Exchange Equalization Fund (offset by holdings of gold and foreign exchange) and do not deduct the public debt held by public departments

† Up to 31st March, 1944

ment policy, it is bound to be even greatly accelerated for three reasons (i) owing to the higher rate of capital accumulation under full employment; (ii) owing to the extra stimulus given to the introduction of more labour-saving methods of production under a system where the scarcity of labour (and not the scarcity of markets) is the factor limiting the scale of production, and under conditions of approximate stability of population where a much higher proportion of investment expenditure than in the past will be available for purposes of "deepening," i.e. of increasing capital per head, (iii) owing to the fact that with a high demand for labour in industry, the past tendency towards an exorbitant number of people entering the field of distribution might be arrested, in which case the annual

increase in productivity, for the system as a whole, would automatically be greater It seems, therefore, that at a minimum, the rate of increase in productivity under full employment conditions in peace time could be put at 2 per cent per annum.

(ii) The future movement of the working population is partly the result of the changes in the age composition of the existing population (due to the past fluctuations in the annual number of births), partly of the movements of fertility and mortality rates in the future. We shall estimate the change in the working population in the period 1945–70 on two assumptions. (*a*) a minimum estimate, on the assumption that fertility rates will resume their declining trend after the war, (*b*) a maximum estimate, on the assumption that fertility rates will rise sufficiently to maintain the actual number of births at the average level of the years 1936–40.[1] The first assumption implies a gradual decline in the gross reproduction rate, over the period 1945–70, from 0·8 to under 0·6, the second a gradual rise in the rate from 0·8 to about 1·0 [2]

On the first assumption the population of the United Kingdom aged 15–64 will decline by 2·2 millions, or 6·6 per cent, between 1945 and 1970, on the second assumption, by only 700,000, or 2 per cent. These figures conceal, however, the unfavourable change in the age composition within the group, the numbers in the most productive age group, 20–49, will decline, over the same period, by 14 per cent in the case of assumption (*a*) and 10 per cent in the case of assumption (*b*). Hence the fall in the *effective* working population (i.e in terms of units of constant labour power) during the quarter of the century following the war, and assuming that the balance of migration will be zero, might be put at a minimum of 6 per cent and a maximum of 10 per cent For the purposes of estimating the movement of the national income up to 1970, we shall assume the maximum figure and put the fall in the *effective* working population at 10 per cent

Beyond 1970, the different assumptions about fertility will yield, of course, much more divergent results On the assumption that the

[1] The estimates were largely derived from the recent League of Nations Report on "The Future Population of Europe and the Soviet Union," by Frank W Notestein and others of the Office of Population Research of Princeton University The hypotheses about the trend of mortality rates and of fertility rates in case of assumption (*a*), are those given in pages 22–36 of the Report

[2] The base of a 0 8 gross reproduction rate for 1945 is founded on the fertility rates of the last three pre-war years, ignoring the war-time jump in fertility (The *net* reproduction rate was estimated by the Registrar General at 0 9 for 1943)

gross reproduction rate will fall, in the manner specified above, up to 1970, and thereafter be maintained at that very low level, the working population will fall by about a third every twenty-five years On the assumption on the other hand that over the next twenty-five years there will be a sufficient increase in fertility to push the *net* reproduction rate to around unity by 1970—a very modest aim to set to social policy, it implies only a 10–15 per cent rise in fertility over the current war-time level—the population will be eventually stabilized at a level only slightly below that of 1970, with an effective working population of some 12·5 per cent below that of 1945

(iii) In the above estimates for the year 1948 it was assumed that working hours in 1948 will be the same as in 1938 It is reasonable to suppose, however, that the trend towards shorter hours will be resumed, in the post-war period, though at a slower rate; and we shall assume that the average hours of work will fall by 10 per cent every twenty-five years [1]

(iv) It will be assumed that post-war Governments will pursue a monetary and wage policy which maintains the prices of final commodities constant. This implies that given the share of wages in the total value of output (which in the past showed remarkably little change over long periods), the average rate of money wages will rise in the same proportion as productivity per man hour. A policy of a falling price level, implying constant money wages, quite apart from its other disadvantage of enhancing rentier incomes, would make the task of monetary stabilization under full employment needlessly difficult; while a policy of a rising price level might be incompatible with the maintenance of stability in the long run

There is one particular case in which a policy of rising prices would be preferable to that of constant prices If the supply of goods and services freely provided by the State were to form an increasing proportion of the national real income (i e. the supply of things, which just because they are not provided through the market, do not enter into the calculation of the price level) the maintenance of a stable relation between the movements of money income and that of real income—which is necessary in order to keep money wages constant in terms of productivity—would require that the price level of marketable goods and services should be allowed to rise.

57 The net result of these assumptions is that, setting off the effects of rising productivity against the fall in the working popu-

[1] This would bring average hours of work to 42 per week by about 1970 (In the period 1914–24 average working hours fell by about 10 per cent, but there was little change in the period 1924–38).

lation, and the reduction of hours, and assuming a monetary policy which maintains a stable relation between money income and real income, the national money income rises over the period 1948–1970 at the rate of 1 per cent per annum, i.e., that it rises on the average by some £90 millions per annum, over the period. This implies that the Government could go on borrowing an amount which adds some £5 millions to the interest charge annually without thereby increasing the interest burden as a proportion of the national income. Assuming that the Government borrows on the average at 2 per cent, it could borrow an average annual amount of £250 millions without increasing the ratio of the annual interest burden to the national income above the level it will have reached at the end of the war. After 1970, assuming that the fertility will have risen sufficiently in the meantime for an approach to a stable population, it could, of course, borrow at a higher rate still—at the rate of some £325 millions per annum. It could moreover borrow at an increasing rate through time, since with an even rate of increase in the national income, the annual increment in income will get steadily larger.[1]

58. The above calculation shows the amounts that could be borrowed annually while maintaining the ratio of the interest on the National Debt to the national income constant. They are not, of course, the true limits of the amounts that could be borrowed while maintaining budgetary equilibrium at a constant level of taxation. With the tax structure postulated in paragraph 40 above, and with the rates of taxation at the level necessary to balance the post-war Central Government budget, 25 per cent of any increase in the national income could be expected to be paid in Central Government taxation.[2] This means that with an average annual increment of £90 millions in the national income, Central Government tax revenue would expand annually by £22·5 millions, while the annual increase in Central Government expenditure could only be put at £7 millions.[3] Hence after meeting other commitments,

[1] Over the period 1948–70, the national income could not be expected to increase at an even rate through time, because the fall in the effective working population will not proceed at an even rate. Up to about 1960, the working population is likely to remain fairly stable, most of the reduction occurring in the decade 1960–70.

[2] See Tables 51 and 54 above, tax rates were raised by 6 per cent, in accordance with paragraph 40. In case post-war taxation is higher than that (i.e., it allows for the payment of a "sinking fund") the marginal yield of taxation will be more than 25 per cent.

[3] The total annual increase in expenditure over the period 1948–70 being put at £152 millions. This is the net result of the increased cost of retirement pensions under the Beveridge Plan, £196 millions (Cmd. 6404, p. 199, allowing for a

a sum of £15 5 millions will be available each year to cover additional interest on the National Debt This means that—assuming the average rate of interest to be 2 per cent—the National Debt could be allowed to expand at the average rate of no less than £775 millions per annum over the period 1948–70, without having to raise any new taxes for the maintenance of "budgetary equilibrium."

Thus the contention that a policy of increasing the National Debt in peace time involves a steadily increasing potential burden on the taxpayer is very far from the truth This could only be the case with a rate of borrowing that is far in excess of anything that might be necessary under peace time conditions in order to sustain a full employment policy

59 These estimates are based on the annual growth of the national income that can be expected under any full employment policy. They do not take into account the direct effect which the Government loan expenditure—if wisely invested—would have on the increase in the national income in the future, they hold even if the loan money is spent on objects of current consumption, or on completely useless purposes, such as digging holes and filling them up again. Insofar as the loan is spent in ways which directly raise the productive efficiency of the community, we must also allow for the further increase in income and tax revenue resulting from it On the above assumption of 25 per cent of any increase in income being paid automatically in taxation, any public investment which increases the future national income by more than 6 per cent of the loan expenditure will actually make the prospective tax burden relatively *smaller* than it would have been without the loan expenditure, since it will augment the yield of taxation in the future by more than it increases the interest charge

60. It follows therefore that even if the State policy were guided by purely fiscal considerations—that of reducing the rates of taxation to a minimum—the best course to pursue would still not be to refrain from borrowing, but to undertake public investments which lighten the future tax burden through increasing the national income and

10 per cent increase in the number of old age pensioners between 1965 and 1970), the net saving in war pensions, £70 millions, the further increase in the cost of education, £60 millions, an allowance for the automatic rise in the yield of death duties, due to the change in age composition (not included in the above estimate of the marginal yield of taxes), £34 millions This makes no allowance for any saving on other items, such as defence, which in the case of a prolonged period of peace, might be considerable.

thus the yield of given rates of taxation. In the past State investments were only regarded as "self-liquidating" when the prospective money return of the asset created by the investment was by itself sufficient to cover the interest charge It is now fairly generally recognized however that the price mechanism, even under the most favourable conditions, can register only some of the gains and losses which result from any particular piece of economic activity; there is a cluster of effects (what the economists call the external economies and diseconomies) which escape the net of price-cost measurement. Thus an investment may be highly remunerative from the social point of view even if its direct return is nil; if, in consequence of the investment, the real income of the community is increased To the extent to which the State, through the tax system, automatically participates in any increase in the incomes of its citizens, such investments may be "remunerative" from the point of view of the State, even though they would not be remunerative when undertaken by private enterprise

Hence the test of profitability which is decisive in the case of private investments, is not adequate when applied to public investment. This would be true even if the policy of the State were guided by purely fiscal considerations—that is to say, by the object of reducing the burden of taxation to a minimum It is totally inadequate when the economic policy is governed, as of course it should be, by social considerations—not merely of minimizing the tax burden, but of maximizing the national income as a whole

Appendix D

EXPLANATION OF TERMS

1. ECONOMIC TERMS

Balance of Payments
Bilateral Trade
Business Investment
Cyclical Fluctuation
Discrimination
Downward Phase
Effective Demand
Exports Visible and Invisible
Frictional Unemployment
Instrumental Industries
Investment
Liquidity
Marginal Efficiency of Capital
Multilateral Trade
Multiplier
Outlay
Propensity to Consume
Real Wages
Saving
Seasonal Unemployment
Structural Unemployment
Transfer Payments
Unemployment, Frictional, Seasonal, Structural
Upward Phase

2. STATISTICAL TERMS

Correlation Coefficient
Employment Rate
Employment Volume
Index Numbers
Means Weighted and Unweighted
Relative and Index Number
Standard Deviation
Trend and Deviation from Trend
Unemployment Rate

The terms explained in this Appendix are divided into two sections, economic and statistical The accounts given of them are not so much definitions as explanations of the way in which the terms are used in this Report. Some of them, e g investment, are used in popular language in a different sense from that adopted here, and others are used differently by other writers

On the first use in the text of any of the terms appearing to need explanation, a footnote is added, calling attention to Appendix D This footnote is not repeated on subsequent uses of the term The bracketed paragraph reference after each term dealt with in the Appendix gives the paragraph in which the term first appears in the text. Paragraph numbers without letters refer to the Report Paragraphs in the Appendices referred to have the letters A, B, C prefixed to their numbers in references.

I ECONOMIC TERMS

Balance of Payments (paragraph 183)

The term "Balance of Payments" is used in this Report for "International Balance of Payments" indicating the relation between two nations or countries which use different currencies The citizens of each country use their own cur-

rencies in dealing with one another In dealing with citizens of another country, they make and receive payments across a currency frontier Incomings and outgoings, including both immediate payments and promises to pay later, must always balance, as the two sides of a balance sheet or an income and expenditure account always balance The important question is how this balance is brought about

If the goods and services supplied by the people of one country to the rest of the world are less in value than the goods and services received by that nation from the rest of the world, then either (*a*) some of the goods and services received must have been supplied on credit or in cancellation of an old debt previously owed to that country from abroad, or (*b*) the country must have parted with some of its stock of gold or other international currency to pay for them In the first case (*a*), there is a movement of capital, in its financial sense, which balances the deficit on goods and services In the second case (*b*), the account is balanced by a movement of gold or other international currency The second of these ways of balancing the international account of a country which buys more than it sells obviously depends on its having a stock of gold or international currency and depletes that stock It cannot go on indefinitely, and ends by making the country illiquid (See "Liquidity" below) The assumption of all proposals for the establishment of an international currency or freely inter-changeable national currencies is that such movements of currency can be made purely temporary

The International Balance of Payments of a country is normally presented in two sections, the "current account" and the "capital account." The current account shows all payments made or received in respect of goods and services including payments of interest on past lendings or borrowings, that is to say in respect of exports and imports, visible and invisible (See "Exports Visible and Invisible" below) The capital account shows all payments made or received by way of settling old debts or creating new debts The current account and the capital account may each of them be unbalanced and normally are so, but, in the absence of any movement of international currency, the current and capital accounts taken together must balance The positive unbalance of one is offset by negative unbalance of the other and vice versa

A country which has an excess of imports over exports, visible and invisible, is said to have an "unfavourable balance of trade" or a "deficit in the balance of trade," while a country which has an excess of exports over imports, visible and invisible, is said to have a "favourable balance of trade" or a "surplus in the balance of trade " "Deficit" and "surplus" in this connection always refer to the current account, payments can be balanced by movements in the capital account, i e by lending to adjust a surplus, or borrowing or dis-investing to adjust a deficit in the balance of trade If the payments are not balanced in this way there is a "deficit (or a surplus) in the balance of *payments*," and this involves either a loss of liquid resources (such as an outflow of gold), or an acquisition of liquid resources (such as an inflow of gold)

The "Balance of Payments" of any country may refer either to its relations to a single other country or to its relation to all other countries taken together

Bilateral Trade (paragraph 40)

This term is described and illustrated, together with "Multilateral Trade," in paragraphs 311–13

Business Investment (paragraph 33)

See "Investment."

Cyclical Fluctuation (paragraph 21).

The economic activity of nearly all industrial countries shows alternations of prosperity and depression, in periods of length normally ranging between five and eleven years and averaging (in Britain) about eight years This phenomenon is illustrated in Chart I (in paragraph 55), showing the course of the employment rate (see below) in British trade unions from 1856 to 1926, and is described at length under the name of the International Trade Cycle in Appendix A. The term "cyclical fluctuation" is used both to describe the movement generally and, as in paragraph 21, to denote as "a cyclical fluctuation" one wave of the movement, from one crest (or boom) of activity and prosperity to the next, or from one trough (or depression) to the next The "upward phase" of a cyclical fluctuation is the movement from trough to crest, and the "downward phase" is the movement from crest to trough.

Discrimination (paragraph 313).

This term refers to international trade practices A country is said to "discriminate" if it allows considerations other than those of price to determine its international buying and selling "Non-discrimination" implies that goods are always bought in the cheapest and sold in the dearest market Relative cheapness or dearness is measured exclusively in terms of market prices That is to say, an article offered at (say) 5 pesos is to be considered cheaper in sterling than an identical article offered somewhere else at 5 escudos, if at the current rate of exchange with sterling pesos are cheaper than escudos "Discrimination" is said to take place if other considerations but those of the market price are allowed to enter if, for instance, the article offered at 5 escudos is given preference, because the Central Bank of the purchaser happens to possess an ampler supply of escudos than of pesos

It is obvious that the motive of discrimination may be a different one in different circumstances It may arise out of social, political, or economic considerations, preferences, such as those granted by various parts of the British Commonwealth to one another under the Ottawa Agreement, are a leading instance of such discrimination It may arise out of relative scarcity or abundance in the supply of different currencies. "Non-discrimination" implies that the distribution of trade between a number of potential suppliers is decided solely by the price calculations of private traders

Downward Phase (paragraph 72).

See "Cyclical Fluctuation "

Effective Demand (paragraph 20)

Effective demand means desire for goods or services backed by willingness to pay the price of those goods and services Mere need not clothed with purchasing power is not effective demand. Need backed by willingness and ability to pay less than the producer of the goods and services is prepared to accept is not effective demand, though it is sometimes described as demand, without the adjective "effective." The adjective is also commonly omitted in writing when there is no need to emphasize the "effectiveness" of demand, as in paragraphs 21 and 22.

Exports Visible and Invisible (paragraphs 307)

All exports which are tangible and visible, that is to say, all exports of goods are called visible exports They alone enter into the statistics of trade But they do not represent the only things which the people of one country can sell to the people of another country and so become entitled to payments abroad In addition to visible exports there are invisible exports of various kinds, of which, for Britain, the most important are

(*a*) *Services Abroad.* A British ship carrying goods for a foreign merchant earns income in his currency So may an insurance company or a bank or a commercial house render services to be paid for in a foreign currency, as much as if they were goods shipped from Britain

(*b*) *Sales and Services to Foreign Travellers in Britain* Foreigners travelling in Britain consume goods and services produced here, and in order to pay for them have to exchange their currency into British currency

(*c*) *Payments by Foreigners on former Borrowings from Britain* When money is lent from country A to country B, B is able to buy goods from A without sending goods in return Subsequent payment by B of interest and dividends is called an "invisible export" from A to B, because it enables A to obtain imports in virtue of having had an export surplus in the past Invisible exports of this nature bulk largely in Britain's account with other nations

It should be added that gold, though tangible and visible, is not usually included among the visible exports of the country which sends it abroad It is treated as international currency

Frictional Unemployment (paragraph 3)

See "Unemployment Frictional, Seasonal, Structural"

Instrumental Industries (paragraph 98)

The industries described in this Report as "instrumental" are those engaged in making or repairing instruments of production, in particular machinery of all kinds, ships and vehicles. The actual industries of the Ministry of Labour list treated here as instrumental are identified by the letter I in Table 33, they include engineering in all its forms, shipbuilding, the making of motor vehicles, cycles and aircraft, and railway carriages. They do not include building, which is grouped with a number of ancillary industries as constructional, or metal manufactures

Investment (paragraph 15)

Investment in this Report means a form of outlay directed not to goods or services desired for their own sake (for immediate enjoyment), but to goods and services desired as the means to producing other goods and services It means spending on means of production such as factories, machinery, ships, railways, or on materials to be used in producing other things.

The term "business investment" (paragraph 33) is used for spending directed to the production of goods or services which are marketable, i e will be sold at a price to the person who proposes to use them As is explained in paragraph 178, "business investment" may be either private, such as that of a private business or limited liability company, or public, such as investment in a municipal tramway or a State railway Spending money on the means of producing goods

and services which are not marketable, i e. which will be provided without charge to those who use them, is "communal investment" Typical subjects of communal investment are battleships, roads and elementary schools

In common speech "investment" is often used also in a sense quite different to the foregoing People speak of "investing" their money when they use their cash resources to buy stocks or shares or War Loan, or lend their money on mortgage or in some other way, or buy an existing house; they describe their holdings of stocks or shares or War Loan or their houses as "investments" This popular use of the term "investment," though quite correct in itself, is avoided in the present Report.

Liquidity (paragraph 327)

Liquidity means ability to meet current financial obligations in cash or its immediate equivalent, such as a bank deposit on which one can draw It relates to the form in which wealth is held, not to its amount It does not mean wealth, just as being illiquid does not mean that one is poor A poor man who owes much more than he possesses is liquid, if his debts are not due for immediate settlement and he has cash in hand or a deposit in the bank on which he can draw for daily needs A rich man whose wealth consists wholly or mainly of land and houses may be illiquid if he has to meet a sudden demand, say for death duties, and cannot sell any of his property or can sell it only at what seems to him an inadequate price

Internal liquidity, that is to say the liquidity of individuals within a country and the varying importance which they attach to liquidity at various times, enter largely into the *General Theory of Employment* set forth by J M Keynes. In this Report, liquidity is considered only in its international aspects, as the liquidity or the reverse of one country in its dealings with other countries. International liquidity means ability to meet current financial obligations in another country. Since those obligations have ultimately to be discharged in the currency of that other country, liquidity means having supplies of that currency or of something that will be accepted as its equivalent So long as all countries are willing to accept gold in settlement of obligations from other countries, any country with a stock of gold is liquid So long as, and to the extent that, countries are willing to place supplies of their currency at the disposal of other countries for settling obligations to them, all countries are liquid The object of the joint proposals by experts for an International Monetary Fund[1] is to ensure initial international liquidity in this way But if the stock of gold held by a country or its right to supplies of other currencies is limited, as it normally is, a country which continually incurs deficits in its current account of international trade and cannot secure long term loans is bound in time to become illiquid

Marginal Efficiency of Capital (paragraph 129)

This term refers to the ability of capital equipment to earn an income for its owner. It is an economic not a technical concept, and in popular language is fairly well represented by "earning power" Even a technically inefficient piece of capital equipment may possess a high economic efficiency when it is in scarce supply and may enable its owner to make large profits The word "marginal" means that it is not the earning power of all capital that is under consideration,

---

[1] Cmd 6519

but only the earning power of additional capital, that is to say, the expected return on money laid out on new capital

J M. Keynes, from whose work the passage in paragraph 129 referring to marginal efficiency of capital is taken, defines the term as follows "More precisely, I define the marginal efficiency of capital as being equal to that rate of discount which would make the present value of the series of annuities given by the returns expected from the capital-asset during its life just equal to its supply price" (*General Theory*, p 135) When, in the passage quoted in paragraph 129, J M Keynes speaks of aiming at "a progressive decline in the marginal efficiency of capital," he presumably has in mind the possibility of reducing its rate of earning by making it abundant

At the same time it should be noted that, in a passage quoted in paragraph 135, J. M Keynes attributed the acuteness of the contemporary problem in 1936 in part to the fact that the marginal efficiency of capital is already much lower than it was in the nineteenth century

Multilateral Trade (paragraph 40).

This term is described and illustrated, together with "Bilateral Trade," in paragraphs 311–13

Multiplier (paragraph 187)

Every act has an infinite chain of consequences Therefore, the act of employing an unemployed man and paying him wages does not stop there The man who is taken on and gets wages which are more than he was getting as unemployment benefit or assistance, will spend most or all his additional income on goods and services supplied by others, and bring others into employment. They in turn will have more income, will spend some of it giving fresh employment and so on. So long as there are any unemployed men in a community, employing one of the unemployed for wages will increase the number employed by more than one and will add to the national output more than what he himself produces. The primary effect will be multiplied owing to secondary and tertiary effects How much it will be multiplied depends on the circumstances of the time and country, and different values are assigned to the multiplier by different authorities. As a first approximation, the multiplier in Britain in 1938 can be taken as two, that is to say, it can be assumed that setting to work one of those who were then unemployed would have led on an average to employment and wages for another man

The multiplier applies to contraction of employment as much as to expansion. Putting one man out of employment and wage-earning leads to more than one man's loss of employment and earning

Outlay (paragraph 15).

This term is described fully in paragraphs 175–9

Propensity to Consume (paragraph 129)

The term "propensity to consume" of a person or a class of persons is used in the Report to indicate the proportion of his or their total income which that person or class may be expected to spend on consumption What people do not spend on consumption they "save" and the savings become available for "investment" by themselves or others, i e for spending on means or materials of

production. As a broad generalization, the smaller the income, whether of an individual or a community, the larger is the propensity to consume, people individually and collectively spend on consumption a larger proportion of a small income than they do of a larger income Therefore, out of a given total income of a community more is likely to be spent on consumption and less is likely to be saved if the income is divided evenly between the individual members than if it is divided unevenly.

The sense in which the term "propensity to consume" is used in this Report appears also to be that in which it is used in the passage cited from J M Keynes in paragraph 129, as something which could be changed by altering the distribution of income J M Keynes's own definition of the term is given at page 90 of the *General Theory*

Real Wages (paragraph 127)

Money wages are wages reckoned in money "Real Wages" are wages in terms of how much they will buy of the things on which they are spent by most people, that is to say they take account of the cost of living Real wages may rise though money wages are falling, if the money cost of what the wage-earner buys is falling still more rapidly Real wages may fall, even though money wages are rising, if the cost of living is rising even more rapidly Obviously the calculation of real wages is affected by what articles one takes into account

Saving (paragraph 15)

Saving in this Report, like "investment," is used to indicate a course of action, though a negative course Saving means not spending part of one's income Saving is discussed in paragraphs 120-4.

Seasonal Unemployment (paragraph 169).

See "Unemployment: Frictional, Seasonal and Structural"

Structural Unemployment (paragraph 6)

See "Unemployment Frictional, Seasonal and Structural."

Transfer Payments (paragraph 183)

This term covers all payments made by public authorities which are not made in consideration of goods and services currently produced Thus they are not a part of public outlay, since outlay has been defined as "the laying out of money as demand for the products of current industry" (paragraph 175) Unemployment benefit and assistance payments, for instance, are transfer payments, while wages paid to a State employee are outlay The former are made without the State obtaining any goods or services in return, the latter are made in consideration of services rendered When the State purchases land, or any other existing asset, the payment made is a transfer payment, because the mere change in the ownership of such an asset does not in itself make any demand on the available manpower of the nation Transfer payments, therefore, are payments made by public authorities on account of pensions, relief, grants-in-aid, insurances, interest on public debt, or the acquisition of property already in existence

Unemployment Frictional, Seasonal, Structural

"Frictional Unemployment" is unemployment caused by the individuals who make up the labour supply not being completely interchangeable and mobile

units, so that, though there is an unsatisfied demand for labour, the unemployed workers are not of the right sort or in the right place to meet that demand.

"Seasonal Unemployment" means the unemployment arising in particular industries through seasonal variation in their activity, brought about by climatic conditions or by fashion.

"Structural unemployment" means the unemployment arising in particular industries or localities through a change of demand so great that it may be regarded as affecting the main economic structure of a country The decline of international trade after the first World War, involving drastic contraction of the demand for labour in British export industries, is a leading instance of structural change of this character The northward movement of industry in Britain before the first World War is a less striking instance, though perhaps sufficiently great to be called a structural change. Structural unemployment may or may not be a form of frictional unemployment

On the definition given above there cannot be actual frictional unemployment, unless there is an unsatisfied demand for labour somewhere If the total demand for labour is less than the total supply, those who are unemployed are so because of deficiency of demand not because of friction.

This does not mean that the problem of industrial friction, that is to say friction in adjusting the supply of labour to the demand, is unimportant. Assuming an unsatisfied demand for labour there may still be frictional unemployment, arising in several ways:

(*a*) Through technical change, that is the development of new industries, machines and methods, superseding old industries, machines and methods. Innumerable small technical changes take place constantly. Assuming that they do not diminish the total demand, but only change its character or location, the extent to which they result in unemployment depends on the ability of the labour supply to adjust itself to the changes in the character of the demand, that is to say on the adaptability and mobility of labour. The amount of unemployment will vary with the strength of industrial friction

(*b*) Through local variations of demand So long as production is conducted by a number of independent businesses, the demands of different employing units may vary, one rising and the other falling, even though demand remains adequate and steady in total How much frictional unemployment will result from this depends on the degree of mobility of labour and the way in which the engagement of men is organized The chronic over-stocking with labour of the casual labour industries (paragraphs 57–9) represents an acute form of frictional unemployment

(*c*) Through seasonal variations of demand Nearly all industries are seasonal to some extent, though to very different extents, but the slack and busy seasons respectively of different industries do not coincide The amount of unemployment involved in the seasonal variations of separate industries depends therefore on the extent to which they are separate for the purpose of labour supply, i e. the ease or difficulty with which men can change from one industry when seasonally slack to another which is seasonally busy Assuming adequate total demand, seasonal unemployment is a form of frictional unemployment

Whether structural unemployment should be regarded as a form of frictional unemployment or not depends on the effect of the structural change on total demand for labour Where, as between the wars, the structural change destroys demand for labour of one kind without adequate compensating increase of demand for labour of another kind, it brings about unemployment due to deficiency of demand, rather than to friction. If the structural change involves both a great decrease of demand for one kind of labour and a compensating increase of demand for another, the unemployment which results through men not being qualified or willing to meet the new demand is frictional unemployment.

The degree of industrial friction, relatively unimportant when total demand is deficient or weak, becomes of decisive importance when demand is strong, as in war, and would be of great importance under a full employment policy in peace.

Upward Phase (paragraph 72).

See "Cyclical Fluctuation "

2. STATISTICAL TERMS

Correlation Coefficient (paragraph A 6).

The correlation coefficient is a measure of relationship between two sets of quantities It is a fraction always lying between + 1 0 and − 1 0. At + 1 0 it represents perfect positive correlation; deviation from the mean of one of the elements compared is accompanied by an exactly corresponding (equal or proportionate) deviation of the other element in the same direction At − 1 0 the correlation coefficient represents perfect negative correlation, the correspondence of movements is as great, but the movements are exactly contrary to one another. In either case one of the elements contains the sole cause of all the movements in the other element or both sets of movement have a common single cause At 0 0 the correlation coefficient indicates that there is no connection at all between movements of the two elements. At any point between 0 0 and + 1·0 there may be a positive connection, and at any point between 0 0 and − 1 0 there may be a negative connection

Whether or not in any particular case there is an actual connection depends on a calculation of probability, and this depends largely on the number of pairs of quantities compared Thus the odds against getting by pure coincidence, i e without any real connection, a correlation coefficient as high as ·40 whether positive or negative are more than 100 to 1 if 40 pairs are being compared and are less than 20 to 1 for 20 pairs [1] The former is all but certainly significant of a real connection, the latter is merely suggestive

All the actual coefficients mentioned in this Report are high enough to leave no reasonable doubt of a real connection between the two sets of data compared The two weakest of them (− .35 in paragraph A 35 for relation between British industrial activity and textile exports of a year later in the forty-five years from 1815 to 1859, and + .42 for the relation between British industrial activity and

---

[1] These probabilities are derived from a table given by Professor R A. Fisher, *Statistical Methods for Research Workers*, which is reproduced by Professor F C. Mills, *Statistical Methods* (Pitman, 1932), p 701

French pig iron production in the thirty-six years from 1824 to 1849) have odds of about 50 to 1 and about 100 to 1 respectively in favour of their representing a real connection

The correlation coefficient is used most commonly to discover whether the quantities in two times series, e g wheat prices and marriages recorded over a period of years, have a definite tendency to rise and fall together But it is equally important for discovery of relations of other kinds, such as that between the increases of unemployment in each of one hundred different industries from 1929 to 1930 and from 1937 to 1938 respectively which is referred to in paragraph A.44, this example illustrates the fact that the correlation coefficient, however high, establishes only correspondence of variation and not a causal connection between the two elements. High correspondence may point simply to a common cause outside both elements In the case mentioned in paragraph A 44, the coefficient of + 58 on comparison of one hundred pairs of quantities is high enough to be decisive evidence of a real connection between the two sets of quantities It does not mean that unemployment had a tendency to rise in a certain way from 1937 to 1938 *because* it had risen so in that way from 1939 to 1940. It means simply that some common cause was at work on both occasions, i e that the trade cycle was repeating itself

A special use of correlation, illustrated in paragraph A.34 and Table 31, is in examining the time relation between different economic elements by comparing two time series simultaneously and with one of the two series advanced or lagged a year or some other period upon the other Another example of this is mentioned in the footnote to paragraph A 12, and many other examples are given in my two articles on "The Trade Cycle in Britain before 1850," in *Oxford Economic Papers*, Nos. 3 and 4

The correlation coefficients used in this study are all cases linear, and are obtained by the product-moment method described by Professor F. C Mills in *Statistical Methods*, pp. 345–53

Employment Rate (paragraph 55)

The employment rate of any body of persons available for employment at any time is the percentage of those persons who are actually in employment at that time. The employment rate, as is explained in paragraph 55, is usually got by deducting the unemployment rate from 100

Employment Volume (paragraph 68)

The employment volume of any industry or region at any time is the number of persons actually in employment at that time in that industry or region

Index Number

See "Relative and Index Number"

Means, Weighted and Unweighted (paragraph 64, footnote)

In an unweighted mean each of the quantities whose mean is being sought is treated as of equal importance In a weighted mean the quantities are given weight according to the assumed differences in their importance.

Thus in Table 26, the unweighted mean of 26 0 in the right hand column is the average of the 11 figures above it, got by adding them and dividing by 11 The small industries like lace and hemp, rope, etc., contribute as much to this

mean as the large industries like cotton and wool. The weighted mean of 28 6 is got by multiplying each of the industry figures in the column above by the number of insured males in that industry, adding the products and dividing the sum by the total number of males in all the 11 industries The largest industry —cotton—with a high percentage contraction, contributes more than any other industry to the weighted mean, which is by consequence higher than the unweighted mean.

Relative and Index Number (paragraph 64).

A relative is the quantity recorded for any economic element at any given time, e g the price of an article in a particular month or year, expressed as a percentage of the corresponding quantity at some other time, described as the "base," e g. the price of the same article in another month or year, which may be called the "base month" or "base year" The "base" quantity need not refer to a time of the same length as is covered by each of the quantities related to it, and commonly does not do so. In setting out a table of relatives the base period is usually indicated as = 100. The figures for separate industries in column 4 of Table 33, and the figures in Tables 3 and 6 are relatives An index number is a combination of relatives for a number of economic elements which are regarded as sufficiently homogeneous to justify the treating of them as a group thus in Table 28 the relatives expressing the male unemployment rate in each separate industry (on the basis 1927–36 = 100) are expressed as index numbers for groups of industries of the same general type, e g. instrumental, textile, etc An index number being a mean of relatives may be weighted or unweighted The heading to Table 28 indicates that the relatives for the separate industries have been weighted by reference to the numbers of insured persons (men and women)

A relative is a percentage expressing the relation between corresponding quantities in a time series The term is not used when a quantity of one kind is being expressed as a percentage of a quantity of another kind, e g when the number of trade unionists unemployed at any time is expressed as a percentage of the total trade union membership as in paragraph 54 This is an "unemployment percentage" or, in the language of this Report, an "unemployment rate" It is not a relative

It should be added that in using the term "relative" when the quantities of a single term series are being expressed as percentages of the corresponding quantity in a base period and restricting the term "index number" to averages of relatives for groups, I am following the American rather than the British practice Among British writers a common practice has been to use the term "index number" to cover both single series (i.e. simple percentages) and groups (means of percentages) Figures such as those given in column 4 of Table 33 and in Table 6, which are described here as "relatives," are described as "index numbers" in the Ministry of Labour tables from which they are taken. As "relative" is both the shorter and less pretentious term than "index number," and as the making of an average involves the question of weighting and thus introduces a new set of problems whose presence it is convenient to indicate by a new word, the American practice is in several ways more economical of language than the British practice

Standard Deviation (paragraph A 24, Table 27)

The standard deviation of a number of quantities is the square root of the mean of the squares of the deviations of those quantities from their arithmetic

mean To obtain it, therefore, all that is needed is to calculate the arithmetic mean of the quantities, express each quantity as an arithmetic deviation, + or − from the mean, square the deviations, obtain their arithmetic mean and extract its square root The standard deviation is the most convenient single measure of the degree of dispersal of those quantities from their mean and so from one another Applied to a time series, such as the rate of unemployment of an industry over a period of years, or the new index of industrial activity in Table 22, it reflects the range of fluctuation and thus makes easy the comparison of a range of fluctuation for different industries In Table 27 the standard deviation is used to compare the range of fluctuation in different groups of industries in different periods from 1785 to 1938

Trend and Deviation from Trend (paragraph A 3).

Owing to growth of population and other progressive changes, most economic and social time series (e g the number of tons of pig iron produced each year or the number of marriages each year) have a general movement over a period of years and may or may not be subject to fluctuations. It is necessary and important to be able, so far as possible, to distinguish between general movements and fluctuations The general movement is described as the "secular trend" or, more shortly, "trend " For the purpose of this study the trends have been calculated by the method of least squares described by Professor F C Mills, *Statistical Methods*, pp 244–64 This method gives a line (straight or curved) which is assumed to represent what would have been the quantity in each year, if the economic element recorded had grown (or declined) steadily according to its general movement and apart from the short fluctuations Deviation from trend means the difference between the actual quantity in any year and the corresponding point on the trend line described as the trend ordinate. This difference may be expressed either arithmetically (as + or − from the trend) or geometrically (as a percentage of the trend ordinate) In this study the deviations are all geometrical

Unemployment Rate (paragraph 54).

The unemployment rate of any body of persons available for employment at any time is the percentage of those persons who were unemployed, i e capable of work and willing to work but unable to find employment, at that time. The unemployment rate is often called the unemployment percentage, but, as it is often necessary to express the "unemployment rate" of one group or at one time as a relative, i e as a percentage of some other unemployment rate, it is less confusing to speak of unemployment rates than of unemployment percentages.

INDEX